

प्रकाशक  
विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्  
पटना

पञ्चम संस्करण  
वि० सं० २०१८, शक.व० १८७९, मन् १९५७ ई०  
सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य

संज्ञित

मुद्रक  
एच० एम० कामथ  
नशनल हैराल्ट प्रेस,  
लखनऊ

## समर्पण

परगत डा० काशीप्रसाद जायसवालको  
जिनकी स्मृति अठारह वर्षोंके अनन्त वियोगके बाद भी  
मेरे जीवन की प्रिय निधि है



**ebookspdf.in**

## वक्तव्य

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड के 'वक्तव्य' में यह निवेदन किया जा चुका है कि परिपक्व ने इसका प्रकाशन किस परिस्थिति में क्यों स्वीकृत किया था और इसकी मुद्रणशैली में परिपक्व की नियम-परम्परा से कुछ भिन्नता होने का कारण क्या है ,

प्रस्तुत खंड की छपाई १९५४ ई० में ही शुरू हो गई थी। पहला खंड इसके बाद छपने लगा और इससे एक वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो गया। इस खंड के प्रकाशन में अनिवार्य कारणों से विलम्ब तो हुआ, पर कठिनाइयों को देखते हुए विलम्ब स्वाभाविक जान पड़ता है। बिज पाठक इस बात का अनुमान कर सकते हैं।

पहले खण्ड से इस खण्ड का आकार डेढ़ा है। दोनों खण्ड मिलकर यह इतिहास एक हजार पृष्ठों से अधिक का हुआ है। इसकी विशालता के अनुसार लेखक की श्रमशीलता का अनुमान भी पाठक अनायास कर सकते हैं।

श्री राहुल जी की साहित्यसेवा पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने साहित्य के विभिन्न विषयों पर जितना अधिक लिखा है, उनका दूसरा कोई एक साहित्यसेवी अवतक नहीं लिख सका है। उन्हें केवल उद्भट लेखक न मानकर एक सुप्रतिष्ठित साहित्यिक सस्था ही मानना उपयुक्त होगा। उनकी नई खोज और नई प्रतिभा की न देसे हुई हिन्दी-साहित्य की समृद्धि सादर उल्लेखनीय है।

वर्तमान युग की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में एसिया का महत्त्व दिन-दिन बढ़ रहा है। उसमें भी मध्य एसिया के साथ भारत के ऐतिहासिक सम्पर्क की प्राचीनता पर ध्यान देने में इस इतिहास की उपायता और भी बढ़ जाती है। इसकी प्रामाणिकता का अनुभव स्वयं पाठक ही कर सकते हैं, क्योंकि श्री राहुलजी के बहुवर्षव्यापी मौलिक अनुसन्धान के परिणाम-स्वरूप यह इतिहास तैयार हुआ है। अब आशा है कि इससे हिन्दी के चिरकालानुभूत अभाव की पूर्ति होगी।

कार्तिक-पूर्णिमा, शकाब्द १८७९

नवम्बर १९५८ ई०

शिवपूजन सहाय

(सचालक)

## प्रस्तावना

पुस्तकके अंतिम खंडको पाठकोंके हाथ में जाते देखकर, मालूम होता है, एक बड़ा भार सिर से उतर गया। इस सारे समयमें कई बार आशा और निराशाके बीचमें भटकना पड़ा था। बाधाये कभी प्रकाशकका औरमें और कभी प्रेसकी ओरसे आ जाती थी। एक प्रेसमें प्रथम खंडके आठ-दस फार्म कर्पोज हो जानेके बाद काम रुक गया, और अंतमें प्रकाशक बदलने पर ही गाड़ी आगे चली। द्वितीय खंडको मैंने स्वयं कागज दे कर अपनी जिम्मेवारीपर प्रेसमें दे दिया, पर प्रेसकी गड़बड़ी इतनी हो गई, कि आशा नहीं थी, नैया पार होगी। खैर, 'कुफ्र टूटा खुदा-खुदा करके'। ऐसी बाधाये उपस्थित न हुई होती, तो ग्रंथ तीन साल पहले ही प्रकाशित हो गया होता।

मध्य-एशियाके इतिहासपर किसी भी भाषामें कोई विस्तृत ग्रंथ नहीं है। जो एकाध है भी, वह बहुत सक्षिप्त तथा कालमें बहुत दूरतक हमें नहीं ले जाते, और न वह आधुनिकतम सामग्रीपर आधारित है। मध्य-एशियाके इतिहासकी सामग्रीकी गवेषणा सोवियत रूसमें बहुत हुई है। किसी-किसी कालपर ग्रंथ भी लिखे गये, पर संपूर्ण कालके ऊपर लिखनेको आगेके लिये छोड़ दिया गया। इन बातों से लेखककी कठिनाई मालूम होगी। इस ग्रंथमें अनेक त्रुटियां होनी विलकुल संभव है। १९४७ के बाद की उपलब्ध सामग्रीका बहुत कम उपयोग मैंने कर पाया है। भारत में सोवियतमें प्रकाशित ग्रंथ और अनुसंधान-पत्रिकाएँ सुलभ नहीं हैं।

मध्य-एशियामें चीनी मध्य-एशिया भी शामिल है। जिसके किसी-किसी कालपर इस ग्रंथमें काफी विवेचन हुआ है, पर पूरी तौरसे लिखना बाकी है। मेरी इच्छा तिब्बत को लेते चीनके इतिहासपर एक विस्तृत ग्रंथ लिखनेकी है। यदि उसके लिखनेमें सफल हुआ, तो यह कमी पूरी हो जायगी। पर, इसमें आधुनिक और भौतिक बाधाएँ ही रास्ता रोके नहीं हैं, बल्कि हमारे स्वतंत्र देशकी नौकरशाही भी पूरी तौरसे रोड़ा अटकाने के लिये तैयार है। अंग्रेजी शासनमें सिर्फ पहली बार मुझे उपकर तिब्बत जानेकी जरूरत पड़ी थी। मेरे राजनीतिक विचार उस वक्त भी वही थे, जो आज हैं। पर, अंग्रेजी सरकार और अंग्रेज नौकरशाहोंने सांस्कृतिक कार्यके महत्वको समझते बाधा नहीं दी।

१९३४ ई० में मैं दूसरी बार तिब्बत जानेके लिये ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंट के पास गतोकमें आज्ञापत्र लेने गया। नाम मालूम होते ही वह बड़े हर्षके साथ मिले। और आज्ञापत्र ही नहीं दिया, बल्कि अधिक आत्मीयता दिखलाने के लिये तिब्बतमें अपने लिय हुए फोटो दिखलाये, कितनी ही बातें पूछी। उसीके स्थानपर १९५० में जो भारतीय सज्जन थे, वह मिलनेपर विलकुल दूसरे ही साबित हुए। उन्हें तिब्बतके बारेमें कोई जिज्ञासा नहीं थी, और शिष्टाचारके नाते ही एक-दो मिनटके लिये मिले। नौकरशाही ने एक बार पासपोर्ट देनेसे इन्कार किया, खैर, दूसरी बार कोशिश करने पर वह मिल गया। उसके लिये बड़ी उत्सुकता इसी कारण है, कि तिब्बतमें भारतीय संस्कृत-ग्रंथोंकी नई तालप्रतियोंके मिलनेकी संभावना है।

ग्रंथके प्रकाशित होनेका सबसे अधिक श्रेय श्रीजगदीशचन्द्र माथुर (तत्कालीन शिक्षा-सचिव, बिहार) और श्री शिवपूजन सहाय को है। शिवपूजन बाबू तो ग्रंथको प्रकाशित देखनेके लिये मुझसे भी अधिक उतावले थे।

ममूरी,

२०-१-५९

राहुल सांकृत्यायन

# विषय-सूची

अध्याय

पृष्ठ अध्याय

पृष्ठ

भाग १

मंगोल-हथियार

उत्तरापथ (१२००-१५५० ई०)

३ सरतक

४ उलकची

५ वेरेक (वरका)

६ मङ्ग-गू-ते (मुङ्ग-खे) तेमूर

७ तुदा-मङ्गलू

८ तोगताइ

नोगाइके साथ सघर्ष

९ उज्वेक खान

(१) आपसी सघर्ष

(२) यूरोपपर अभियान

(३) मास्को राजुल

(४) इस्लामसे सहानुभूति

१० दिनीवेग

११ जानीवेग

(१) प्लेग महामारी

(२) ईरानपर आक्रमण

१२ वरदीवेग

१३ किलदीवेग

१४ नौरोजवेग

१५ चेरकेसवेग

१६ ओर्दा शेख

१७ खिजिर

१८ कुलफा

१९ तेमूरखोजा

२० मुरीद

२१ अजीज

२२ हाजीखां

वशवक्ष

३ श्वेत-ओर्दू (१२२४-१४२५ ई०)

१. जू-छि

१ चीनमें मंगोल-व्रण (१२००-१३६८ ई०) ३

१ छिङ्ग-गिस् ३

२ उगेताइ (ताइ-चुङ्ग) ४

३ गू-युग्, गो-दान (चिङ्ग-चुङ्ग) ६

४ मुङ्ग-खे (स्यान्-चुङ्ग) ७

५ कृविलेङ्ग (गि-चू) ७

(१) मार्को पोलो १०

(२) जाति-व्यवस्था १२

६ थुवु-थेमुर (चेङ्ग-चुङ्ग) १४

७ खु-लुग् (वू-चुङ्ग) १४

८ वोन्यन्-थू (जुन्-चुङ्ग) १५

९ गेगेन्, शु-तु-फल (यिङ्ग-चुङ्ग) १५

१०. यिसु-थेमुर (ताइ-चिङ्ग-ति) "

११ रिन्-छेन्-फग्, (यू-चू) "

१२ कुसलऽ (मिङ्ग-तिङ्ग) "

१३ थुग्-थेमुर (वेन्-चुङ्ग) १६

१४ रिन्-छेन्-पल् (निङ्ग-चुङ्ग) १६

१५ थेगन्-थेमुर (शुङ्ग-ति) १६

वश-वृक्ष १७

२ सुवर्ण-ओर्दू (१२२४-१३७५ ई०) १८

१ जू-छि (तू-शि) १८

२. वा-तू खान, जू-छि-पुत्र २०

(क) वास्किर-विजय २१

(ख) बोल्गार-विजय २१

(ग) सकसिन-विजय २२

(घ) मास्को-विजय २२

(ङ) कियेफ्-विजय २२

(च) यूरोप-विजय २३

२४

२६

२६

२६

२९

२९

२९

३०

३१

३१

३४

३८

३६

३८

३८

३८

३९

४२

४२

४२

४२

४३

४३

४३

४३

४३

४३

४५

४५

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
२ ओल्गा, एमन	४६	वयव्य	७०
३ कोनिचि	४६	४ रुस हरिक-वग ( ९११-१५९४ ई० )	७१
४ वायन	४७	अवतरणिका	७१
५ नमीवृणा	४८	शक-सरमात	७१
६ एर्जन	४८	वेन्द	७१
७ मुवारक खोजा	४८	अंत	७१
८ चमिताई	४८	रुमोंके पडोसी मगोलायिन	७३
९ उरुस खान	४८	वोल्गार	७३
१० तोगनाकिया	५०	खाजार	७४
११ तेमून्वेग	५०	पेचेनेगा	७५
१२ नोमनामिन	५१	क कियेफके राजुल	७५
मास्को-ज्वम	५१	१ रुरिक	७५
तेमून्के नाप लडाडया	५५	२ ओलेग्	७७
प्रथम महाभियान	५६	३ ईगर	७८
द्वितीय अभियान	६०	४ ओल्गा, ईगर पत्नी	८२
१३ गोडरिअक	६२	५ स्व्यातोस्लाव I	८२
१४ नेमूर कुतुलुक	६२	६ व्यादिमिर	८३
१५ मादीवेक	६३	ईमाई-वर्म स्वीकार	८३
१६ पृथ्वी खान	६३	७ स्व्यातोपोल्क	८४
१७ नेमूर खान	६४	८ वारोस्लाव I	८४
१८ जलानुद्दीन जलानवेदी	६५	"एस्कया प्रान्दा"	८५
१९ ररीमवदी	६५	९ डज्यास्लाव	८६
२० चिड-गिज ओगलान	६५	स्व्यातोम्याव	८७
२१ जव्वार वदी	६६	१० स्व्यातोपोल्क	८७
२२ अविन खान	६६	११ व्यादिमिर मनोमाख	८७
२३ वग्न खान	६६	"ईगर-मेना-गाया"	८९
२४ तिरेक	६६	ख रोस्तोफ-मुज्दल-राजुल	९०
२५ उरुस मोहम्मद	६७	१२ यूरी I दीर्घबाहू	९०
२६ रंगर उरुमद	६७	१३ अन्देइ वगोल्गुवोव्स्की	९१
२७ मोहम्मद	६७	१४ ओवोल्द	९१
योग (रुकि)	६८	१५ यूरी	९२
२८ मुहम्मद मुन्तान	६९	१६ वारोम्याव	९२
२९ दीम्न वदी	६९	नवोगोमद	९३
३० तदिन वदी	६९	१७ अदेकमान्द्र नेत्रकी	९५
३१ गरीन वेन्	६९	ग मास्को महागजुल	९६
३२ रीन्द (निरा)	६९	१८ दानियल	९६
३३ गरीम	६९	२० दवान I (मरीता)	९७
३४ उरुमद, इरुनदर	७०	२१. रोमेओन	९७

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
२२. इवान II	९७	१६. तुवा (दुवा) तेमूर	१३४
२३. दिमित्रि दोन्स्की	९८	१७. तरमाशेरिन (घर्म-छे-रिङ्ग)	१३४
२४ वासिली	९९	१८. वूज़न	१३५
२५. वासिली II अध	९९	१९ जेंकिश	१३५
२६ इवान III	९९	२०. येस्सुन तेमूर	१३६
मंगोल शासन समाप्ति	१००	२१. अली सुल्तान	१३६
तुर्की	१००	२२. मुहम्मद पुलाद	१३६
अफनासीकी भारत-यात्रा	१०१	२३. काजान (गाजान)	१३६
२७ वासिली III	१०६	२४ दानिशमद	१३६
२८ येलेना	१०६	२५ वायन कुल्ली	१३६
२९ इवान IV		२६ तेमूरशाह	१३६
राज्य-विस्तार	१०७	२७ इलियास खोजा	१३७
येरमक द्वारा साइवेरिया-विजय	१०९	२८ काविलशाह	१३७
३० फ्योदर	११५	चगताई-अर्थ-नीति	१३७
वशवृक्ष	११७	साहित्य	१३७
		वशवृक्ष	१३८

## भाग २

## २ हुलाकू-वश (१२५६-१३४५ ई०)

दक्षिणापथ (१२२४-१७४३ ई०)		राजावलि	१३९
१ चगताई वश (१२२२-१३७० ई०)	१२१	१ हुलाकू, खुलागू	१३९
१ जंगताई	१२१	२ अवका	१४३
बुखारा-विद्रोह	१२१	३ अहमद तगूदर, निकोदर	१४३
राजावलि	१२५	४ अरगून	१४३
२ करा हुलाकू	१२६	५ गैखातू	१४४
३ येस्सू मङ्गू	१२६	६ वैदू	१४४
करा हुलाकू	१२७	७ गाजन	१४४
४ एरगेना	१२७	८ उल्जैतू (खुदावन्दा)	१४५
५ अलगू (अरिकबुगा)	१२८	९ अबूसईद	१४५
६ मुवारकशाह	१२९	वशवृक्ष	१४७
७. चोराक	१२९	हजारा	१४७
८ निगपई	१३१	साहित्य	१४७
९ तोका तेमूर	१३१	३ तेमूर-वश (१३७०-१५०० ई०)	१४८
१० दुवा (दावा)	१३१	१ तेमूरलग	१४८
११ कुजेक (क्चोक)	१३३	तोकतामिशपर आक्रमण	१५०
१२ तलिकू (खिजिर)	१३३	भारतपर आक्रमण	१५१
१३ केवेक	१३३	तेमूरके उत्तराधिकारी	१५४
१४ एसेनबुगा	१३३	राजावलि	१५५
केवेक (पुन)	१३४	२. खलील सुल्तान	१५५
१५ इलिकदई	१३४	३. शाहरख	१५५
		४. उलुगवेग	१५७

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
साहित्य	१५८	९ उवैदुल्ला I	१९२
५ अब्दुल्लतीफ	१५८	१० अबुल्फज	१९२
६ अब्दुल्ला	१५९	११ सैयद अब्दुल् मोमिन	१९४
७ अबूमहमद	१५९	१२ सैयद उवैदुल्ला II	१९४
८ अहमद	१६०	१३ सैयद अबुल्गाजी	१९४
कवि नवाइ	१६०	वगवृक्ष	१९५
९ मुल्तान मुहम्मद	१६२	६ खीवा-खान (१५१५-१७१४ ई०)	१९६
१० चैमुकर	१६२		
११ मुल्तान अली	१६३	१ इलवर्स	१९९
१२ जहीरुद्दीन बाबर	१६३	२ मुल्तान हाजी	१९९
साहित्य और संस्कृति	१६३	३ हसनकुल्ली	१९९
वगवृक्ष	१६४	४ सोफियान	१९९
४ यैवानी-वश (१५००-१९ ई०)	१६५	५ ब्रजुगा	२००
अबुल्गैर	१६५	६ अवानेक	२००
राजावलि	१६७	७ काल	२०१
१ मुहम्मद यैवानी	१६७	८ अकताई खान	२०१
२ कुतुनजी	१७३	९ दोस्त खान	२०२
३ अबूमहमद खान	१७७	मुहम्मद	२०२
४ उवैदुल्ला	१७८	१० हाजिम मुहम्मद	२०५
५ अब्दुल्ला I	१७९	जेन्किन्सन (अग्नेजी यात्री)	२०५
६ अब्दुल्लतीफ	१७९	११ अरब मुहम्मद	२०६
७ नोरोज मुहम्मद	१७९	१२ इस्फन्दयार	२०७
८ पीर मुहम्मद	१७९	१३ अबुल्गाजी	२०८
९ उम्मान्दर	१७९	१४ अनुशा मुहम्मद	२११
१० अब्दुल्ला II	१८०	१५ मुहम्मद एरैक (औरंग)	२१२
११ अब्दुल् मोमिन	१८२	१६ शाहिनयाज	२१२
१२ पीर मुहम्मद	१८२	१७ अरब मुहम्मद II	२१२
साहित्य संस्कृति	१८३	१८ हाजी मुहम्मद	२१२
वगवृक्ष	१८३	१९ यादगार	२१२
५ अन्नातानी (१५९९-१७४७ ई०)	१८५	वगवृक्ष	२१२
१ दीन मुहम्मद	१८५		
राजावलि	१८६		
२ यामी मुहम्मद	१८६		
३ चरी मुहम्मद	१८६		
४ सैयद उम्मान्दर	१८७		
५ सैयद नादिर, नाजिर	१८९		
६ सैयद अब्दुल् अरब	१९०		
७ सैयद मुमान्दर	१९१		
८ नुरीम	१९२		
		भाग ३	
		उत्तरापथ (१५९-१८०१ ई०)	
		१ चम्पा प्रसार (१५९८-१८०१ ई०)	२१७
		१ बीचके जार	२१७
		१ ब्रोमिन् गदुनोफ	२१७
		२ फ्योदोर	२१९
		३ दिमित्रि (मिथ्या)	२१९
		४ बागिनी मुदम्की	२२०



अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
५ ब्लादिस्लाव	२२१	१ बुरकि	२७५
२ रोमनोफ-त्रश	२२४	२ गिराई	२७५
१. मिखाइल	२२५	३. वरेदक	२७७
चीनतक प्रसार	२२७	४. कासिम	२७७
२ अलेक्सी	२२७	५ मीमाश (विनाश)	२७७
शासन-यत्र	२२८	६. ताहिर	२७७
उन्नडन विलयन	२२९	७ उजियाक अहमद	२७८
वोल्गाकी-जातिया	२३४	८ अकनजर	२७८
राजिन-विद्रोह	२३५	९. शिगाई	२७९
साइवेरियामे प्रसार	२३८	१० तववकल	२८०
चीनसे सवध	२४१	११. इशिन	२८१
साइवेरियामें विद्रोह	२४४	१२. यमगीर, जहागीर	२८२
साइवेरियामे रूसी वस्तिया	२४४	१३. तौफीक	२८२
३ फ्योदोर	२४५	वशवृक्ष	२८३
४ इवान IV	२४६	३ नोगाई	२८४
५. पीतर I	२४६	१ नोगाई (१३००-१७२४ ई०)	२८४
पूर्वमें प्रसार	२५१	१ नोगाई	२८४
शासन-सुधार	२५१	२. चुको	२८४
शिक्षा और सस्कृति	२५२	३ बुरी	२८५
पीतरवुर्ग-निर्माण	२५२	४ कराकिजिक	२८५
साइवेरिया	२५२	५. करा नोगाई	२८६
चीनके साथ सवध	२५३	२ महानोगाई	२८६
६. एकातेरिना I	२५५	१ नूरुद्दीन	२८६
७. पीतर II	२५६	२ ओकस	२८६
८ अन्ना	२५६	३ यमागुरची	२८६
९ इवान II	२५७	४ शेख ममाई	२८७
१० एलिजावेत	२५७	५. युसुफ मिर्जा	२८७
११ पीतर III	२५८	६ अली मिर्जा	२८७
१२. स्कातेरिना II	२५९	७ इस्माईल मिर्जा	२८७
प्रथम तुर्की युद्ध	२६०	८. दीनमुहम्मद	२८८
किसान-सवध (पुगाचेफ)	१६१	९ उरुस	२८९
वैदेशिक नीति	२६२	१० अल्ता	२८९
चीनसे सवध	२६३	३ कराकल्पक	२९०
शिक्षा और सस्कृति	२६४	१ ऊपरी कराकल्पक	२९१
रूस प्रतिगामिताका गढ़	२६७	२. निचले कराकल्पक	२९१
१३ पावल I	२६८	बातिरखान काइथ	२९२
साइवेरियाकी जातिया	२७१	४. मुगोलिस्तान के खान (१३२१-१५६५ ई०)	२९३
२ श्वेत-ओर्दू (१४२५-१७२८ ई०)	२७५		
राजावलि	२७५	राजावलि	२९५

અવ્યાય	પૃષ્ઠ	અવ્યાય	પૃષ્ઠ
૧ તુગલક તેમૂર	૨૯૫	૩. સેદ્દ-મે	૩૨૮
૨ ઇલિયાસ ખોજા	૨૯૬	૪ ગલ્દન I	૩૨૮
૩ ક્વિજિર મુહમ્મદ	૨૯૭	૫ છેવડ-રવ્તન	૩૩૦
૪ શમાજહાન	૨૯૮	શાસન-વ્યવસ્થા	૩૩૩
૫ મુહમ્મદ	૨૯૮	ઉપજ	૩૩૪
૬. નક્કેજહાન	૨૯૯	૬ ગલ્દન II છેરિક	૨૩૪
૭ ગેરમુહમ્મદ	૨૯૯	૭ વાયન	૩૩૫
૮ ખેડમ	૩૦૦	૮ છેવડ દોર્જ	૩૩૫
૯ શાતુક	૩૦૧	૯ દાવા છેરિક	૩૩૫
૧૦ એસેનવુગા	૩૦૧	૧૦ અમુરસના	૩૩૬
૧૧ દોન્તમુહમ્મદ	૩૦૩	વશવૃક્ષ	૩૩૭
૧૨ યૂનમ	૩૦૪	૭ વોલા-કલ્મક (૧૬૧૬-૧૭૭૧ ई०)	૩૩૮
૧૩ મહમૂદ	૩૦૬	રાજાવલિ	"
૧૪ મન્નૂર	૩૦૭	૧. સુદ્દ યૈંચી ડર્લુક	"
૧૫ સદ્દ	૩૦૮	૨ દૈ-શિક્ક	"
તિવ્વતપર જહાદ	૩૧૧	૩ ફુન્-છોગ	૩૩૯
૧૬ રશીદ	૩૧૨	૪ આયકમ્ યૈંચી	"
૧૭ અબ્દુલ કરીમ	૩૧૩	૫ છેરિક દોળ્ડુવ્	"
૧૮ મુહમ્મદ ત્વાન	૩૧૩	૬ દોળ્ડુવ્ અમ્વો	"
૧૯ ડસ્માઇલ મ્વાન	૩૧૩	૭ દોળ્ડુવ્ યૈંચી	"
વશવૃક્ષ	૩૧૪	૮ ઉવામા	૩૪૦
૫ મિરિરમ્વાન (૧૫૦૦-૧૬૫૯ ई०)	૩૧૫	કલ્મકોકા ભાગના	"
૧ દૈવક	૩૧૫	વશવૃક્ષ	૩૪૨
૨ મુર્તુજા	૩૧૫	૮ કજાક-ઓર્ડૂ (૧૭૧૮-૧૮૧૮ ई०)	૩૪૩
૩ મુર્ચુમ	૩૧૬	ક મધ્ય-ઓર્ડૂ (૧૭૧૮-૧૮૧૯ ई०)	"
૪ અર્ગી	૩૧૮	૧ પુલાદ	"
૫ ઇશિમ	૩૧૯	૨ અવુલ્ મુહમ્મદ	૩૪૫
૬. અવલડ ગિરાઈ	૩૧૯	૩ અવલડ	૩૪૬
૭ દોલન ગિરાઈ	૩૧૯	૪ વલી	૩૪૮
વશવૃક્ષ	૩૨૦	૫ લુ-ઓર્ડૂ (૧૭૪૪-૧૮૧૮ ई०)	૩૫૦
૬ જુગર-આમ્રાજ્ય (૧૫૮૨-૧૭૫૭ ई०)	૩૨૧	૧ અદિયા	૩૫૦
મલ્મક-મગોલ	૩૨૧	૨ અવુલ્-કૈર	"
મગોલ-ગજાવલિ	૩૨૧	૩. નૂરઝલી	૩૫૩
અનર-મગોલિયા	૩૨૮	૪ ફરલી	૩૫૬
વાહ્ય-મગોલિયા	૩૨૪	૫ ઇશિમ	૩૫૭
ત્રાજા	૩૨૫	૬ એચુવક	"
જુગર-ગજાવલિ	૩૨૫	૭ જતી ડરા	"
૧ ત્રગવુલ	૩૨૫	૮ શેરગાઝી	"
૨ વાનુર યૈંચી	૩૨૫	વશવૃક્ષ	૩૫૮
		ગ. મહા-ઓર્ડૂ (૧૭૮૦-૬૦ ई०)	"

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
१. एलवर्स	३५९	१८. निकोलाइ II	३९४
२. तिउल वी	३६०	लेनिन	३९५
३. कुसियन वी	"	संस्कृति-साहित्य-विज्ञान	३९६
भाग ४		साहित्य और कला	३९६
दक्षिणा-पथ (१७४७-१९१७ ई०) ३६३		रूस-जापान-युद्ध	३९७
१ जारशाहीका अंतिम प्रसार	३६५	१९०५ की क्रांति	३९८
(१८०१-१९१७ ई०)	"	जापानसे सवि	४००
१४ अलेक्सेन्द्र	"	दिसवरका विद्रोह	४०२
नोपोलियनसे युद्ध	३६६	वैदेशिक संधि	४०६
सुधार	३७०	औद्योगिक प्रगति	४०८
काकेशस-विजय	३७१	चतुर्थ दूमाका चुनाव	४१०
वोलगाके लोग	३७२	विश्व-युद्धकी तैयारी	४११
भौगोलिक अभियान	"	वल्कान-युद्ध	"
दिसवरी-विद्रोह	३७३	प्रथम विश्व-युद्ध	४१२
चीनसे संपर्क	३७४	मध्य-एसियामें युद्धका प्रभाव	४१४
१५ निकोलाइ I	"	फरवरी-क्रांति	४१५
पूजावादी विकास	३७६	२ खोकदके खान (१७४७-१८७६ ई०)	४२०
ईरान-तुर्की-युद्ध	३७७	राजावलि	"
धामिलका विद्रोह	"	१. शाह्रुख बेक	"
मध्य-एसियाकी रियासतें	३७८	२ रहीम बेक	४२१
साइबेरियामें प्रसार	३८०	३ अब्दुलकरीम बेक	"
सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रगति	३८२	४ एर्दनी बेक	"
हेर्जन (एर्जन)	"	६ आलम खान	४२२
व. ग. वेलिन्स्की	"	७ उमर खान	४२३
वैज्ञानिक	३८३	८ मुहम्मद अली	४२४
साहित्यकार	"	९ शेरअली	४२७
पुश्किन	"	१०. मुराद	४२८
१६. अलेक्सेन्द्र I	३८५	१२. मल्ला खान	४२९
तुर्की-युद्ध	३८६	१३ शाह मुराद	४३१
राजनीतिक आन्दोलन	३८७	खुदायार (पुन)	"
मध्य-एसियामें प्रसार	३८७	१४ सैयद सुल्तान	"
साइबेरिया और चीन	३८८	खुदायार (पुन)	४३२
१७ अलेक्सेन्द्र III	३९०	१५ नासिरुद्दीन	४३५
प्रथम मजदूर-आंदोलन	३९१	रूसमें विलयन	४३७
शिक्षा और संस्कृति	३९२	वशवृक्ष	४३८
साहित्य	"	३ बुखाराके अमीर (१७४७-१९२० ई०)	४३९
मार्क्सवादका प्रचार आरम्भ	३९३	१ मुहम्मद रहीम	"
		२ दानियाल वी	४४०

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
३ शाह मुराद (नगीवेला)	"	(३) बंदरशा	४६२
४ हैदर	४४४	(क) सुल्तान शाह	"
शासन-प्रवच	४४५	(ख) मीर महम्मद	"
वैदेशिक सवध	"	(ग) मीर यारवेक	"
५ हुसेन	४४६	(घ) जहादार	"
६ उमर	"	(ङ) नहमूद	"
७ नसरुल्ला	"	(४) मेमना	"
अग्नेजोकी चालें	४४८	(५) अदखुद	४६३
प्रथम अफगान-युद्ध	४५०	(६) शाविरगान	"
८ सैयद मुजफ्फरुद्दीन	४५१	(७) सरीपुल	"
रुसमे युद्ध	"	खीवाके खान (१७१४-१८८१ ई०)	
९ अब्दुल अहद	४५३	१ बाहरी वश	"
१० मीर आलम	"	१ अरक	"
शासन-प्रवच	"	२ शेर गाजी	"
वशवृक्ष	४५४	३ इल्बर्म	४६७
४ छोटे-छोटे राज्य	४५५	४ ताहिर	४६८
१ उरातिप्पा और जीजक	"	५ अबुल् मुहम्मद	"
बाबा वेक, वेक मुराद	४५५	६ अबुल्गाजी II	"
२ शहरसब्ज	"	७ काइप	"
(१) दानियाल अतालीक	"	८ अवलगाजी III	४६९
(२) खोजाकुल	४५७	२ ककुरत-वश	४७०
(३) अशुर कुली वेक	"	राजावल	"
(४) इस्कन्दर	"	१ इल्तजार	"
(५) बाबावेक	"	२ महम्मद रहीम	४७१
३. कोहिरतान	४५७	३ अल्ला कुल	४७३
उरगुत	"	असफल रुसी अभियान	४७४
४ हिमारके इलाके	४५८	४ रहीम कुल	४७६
(१) करातगनि	४५९	५ अमीन	"
(२) दरवाज	"	६ अब्दुल्ला	४७७
(३) कुलाव	"	७. कुतुलुक मुराद	"
(४) अगनान	"	८ सैयद मुम्मद	"
(५) हिसार	"	मुहम्मद फना	४७९
५ तुखारिस्तान	"	९. मुहम्मद रहीम	"
(१) खुल्म	४६०	रुमी अभियान	४८०
तिलिच अली	"	वशवृक्ष	४८७
(२) पुन्दुज	"	तुर्कमान	"
(क) मुराद बी	"	१. तुर्कमान भूमि	४८८
(ख) मुहम्मद अमीन	४७	२ तुर्कमान कब्रिले	४८९

अध्याय	पृष्ठ	अध्याय	पृष्ठ
३ तैक्को का शासन	४९१	(१) अनवर पाशा	५४२
४ पोशाक और रूपरेखा	४९३	(२) ईशान सुल्तान	५४३
५ रुमसे यद्ध	४९४	(३) फुजेल मकसूम	५४६
साइवेरिया और चीन	४८८	(४) इब्राहीम गल्लू	"
६ अग्नेजोसे तनातनी	४९७	३ तजिकिस्तान गणराज्य	"
७ रेल-निर्माण	४९९	६ तुर्कमानिस्तानमें क्रांति	
८ अश्कावाद	"		
९ मेर्व	५००	१. तुर्कमान कवीले	५४८

## भाग ५

## बोलशेविक क्रांति (१९१७-२९ ई०)

## १. रुममें क्रांति

१ रुममें लेनिन	५०३
२ करेन्स्कीकी सरकार	५०४
विद्रोहकी तैयारिया	५०७
३ राजधानीपर अधिकार	५०८
४ दास-जातियोंकी मुक्ति	५११
२ उज्बेकिस्तानमें क्रांति	

१ उज्बेक जाति	५१४
२ उज्बेक भूमि	५१७
३ क्रांतिकी लपट	"
४ बोलशेविक प्रभाव-वृद्धि	५१९
५ खोकद-स्वायत्ततावादियोंका अंत	५२०
६ समरकंद-विजय	५२४
७ बुखारा-अमीर भगा	५२५
८ उज्बेक जाति का निर्माण	६१७
३ कजाकस्तानमें क्रांति	

१ कजाक जाति	५२८
२. १९१६ का विद्रोह	५३०
३ क्रांति-सघर्ष	५३२
४ मोवियत शासनकी स्थापना	५३४
४ किर्गिजस्तानमें क्रांति	

१ किर्गिज	५३५
२ १९१६ का विद्रोह	५३६
५ ताजिकिस्तानमें क्रांति	
१ सोग़्दियोंके वंश	५२९
२. वासमची-उत्पीड़न	५४२

## मान-चित्र

१ मंगोल-साम्राज्य	४
२ वात्-विजय	१९
३ शक-वंशज	७२
४ रुरिक रुस	७८
५ मास्को-राज्य-विस्तार	९९
६ रुसिया	१०५
७ चंगताइ-राज्य	१२३
८ हुलाकू-राज्य	१४२
९. तेमूर-राज्य	१५२
१० शैवानी-अस्त्राखानी राज्य	१७५
११. खीवा खान	१९८
१२ रुस ( १७२१ ई० )	२३३
१३ साइवेरियामें विस्तार	२३९
१४ श्वेत ओर्दू	२७६
१५ जुगर-साम्राज्य	२८५
१६ मुगोलिस्तान	२९४
१७ जुगारिया	३२२
१८ मध्य-ओर्दू	३४४
१९ जनशरी प्रसार	४१८
२० मध्य-एशिया (आधुनिक)	५०४-५

## परिशिष्ट

१ रुसी भाषा और भारत	५५७
२ स्रोत ग्रंथ	५९३
३ नामान्तरण	६०३



# मध्य एसिया का इतिहास

खण्ड २





# भाग १

उत्तरापथ (१२००-१५५० ई०)



## अध्याय १

### चीनमें मंगोल-वंश

(१२००-१३६८ ई०)

#### १ छिङ्ग-गिस् (१२०६-२७ ई०)

मध्य-एसियामें मंगोलोका राज्य कोई अलग-थलग नहीं था, बल्कि कितने ही समय तक चीनपर शासन करनेवाले मंगोल हगान (खाकान, खआन, खान) को ही सभी मंगोलखान अपना अधिराज मानते थे। १३ वीं सदीमें कोरियासे पोलद और साइबेरियासे पजाव तक मंगोलोका साम्राज्य फैला हुआ था। छिङ्ग-गिस्ने अपने विशाल साम्राज्यको अपने जीवन हीमें चारो पुत्रोंमें बांट दिया था, लेकिन साथ ही यह व्यवस्था की थी, कि सभी खान अपनेमेंसे एकको अपने ऊपर मानते हुये साम्राज्यमें एक तरहकी एकता कायम रखे। घुमन्तू जातियोंमें एक तरहकी जनतन्त्रता स्वाभाविक है। घुमन्तू राजा घुमन्तूओकी अपनी जिस सेनाके बलपर देश-विजय करते हैं, उसे अपने पक्षमें रखनेके लिये सैनिक जनतन्त्रता कायम रखना जरूरी है। अपने पूर्वज घुमन्तू-राज्योंकी भांति छिङ्ग-गिस्के साम्राज्यमें भी सैनिक जनतन्त्रता थी। कोई बड़े सवालका हल, या खानका निर्वाचन कूरिल्टाईमें होता था, जो सभी राजकुमारों, सैनिक सरदारों और जन-नायकोंसे मिलकर बनी थी।

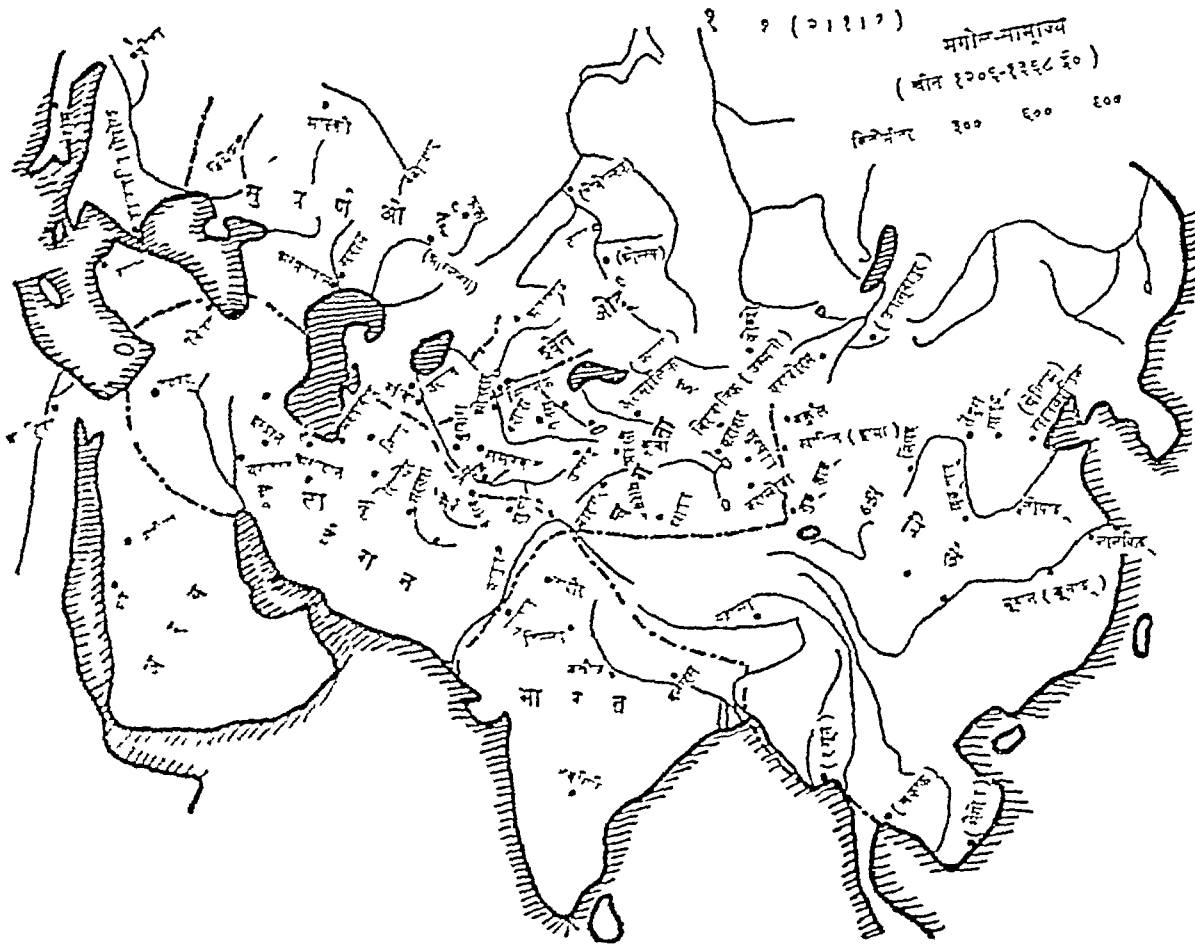
मध्य-एसियामें मंगोलोके शासनके इतिहासके समझनेके लिये जरूरी है, कि हम चीनके मंगोल-राजवंशके इतिहासको भी समझें, साथ ही सुवर्ण-ओर्दू, और ईरानके खुलागू-वंशको भी हम नहीं छोड़ सकते। इन सबका मैत्री या शत्रुताके रूपमें बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। तगुत नगरके विजयके दत्त छिङ्ग-गिस् आहत हुआ था, जिससे ही अपने चलते-फिरते प्रासाद या महा-गाड़ीपर ही वह १८ अगस्त १२२७ ई० को मर गया। दुनियामें और राजाओंको भी अपने पुत्रोंमें राजका बंटवारा करते हम देखते हैं, लेकिन उसका एकमात्र परिणाम उनका जल्दी ही छिन्न-भिन्न हो नष्ट होनेके सिवा और कुछ नहीं होता। छिङ्ग-गिस् युद्ध और शासनकी व्यवस्थामें अद्भुत प्रतिभा रखता था, इसलिये उसके बंटवारेने कोई उस तरहका दुष्परिणाम तुरत नहीं दिखलाया और करीब-करीब १२९४ ई० तक खुविलेके शासनके अन्त तक मंगोल-साम्राज्य बहुत शक्तिशाली और एकतावद्ध रहा, जिसमें छिङ्ग-गिस्की दूरदर्शिताका हाथ भी था, इसमें सन्देह नहीं। छिङ्ग-गिस्के मरनेके बादही मंगोल-विजययात्रा मन्द नहीं हुई। १२७९ ई० से सम्पूर्ण चीन, हिन्द-चीन और बर्मापर खुविले (कुविलेइ) का शासन स्थापित हुआ। पश्चिम-दक्षिणमें कितना राज्य-विस्तार हुआ, उसके बारेमें हम आगे कहेंगे। छिङ्ग-गिस्के मरनेके एक साल बाद (१२२८ ई० में) मंगोल-सेना ईरानमें अस्पहान तक पहुँची थी।

छिङ्ग-गिस्की मृत्युके बाद तुरत ही नये हगान (खान) का चुनाव नहीं हुआ। दो साल (१२२९-३०) तक छिङ्ग-गिस्-पुत्र तू-लुइ और उसकी रानीकी देख-रेखमें शासन होता रहा और इस सारे समयमें मंगोलोकी शक्ति घटनेकी जगह बढ़ती ही रही, यह छिङ्ग-गिस्की व्यवस्थाका चमत्कार था।

चीनमें निम्न मंगोल खाकान हुये—

१ छिङ्ग-गिस् (छिङ्ग-गीस, ताइ-चुङ्ग)	१२०६-२७ ई०
२ उगोताइ (ताइ-चुङ्ग छिङ्ग-गिस्)-पुत्र	१२२९-४६ "
३ गू-युग (गोदन, उगोताइ-पुत्र छिङ्ग-चुङ्ग)	१२४६-५१ "
४ मुङ्ग-खे (मङ्ग-गू थोलोइ-पुत्र स्यान्-चुङ्ग)	१२५१-५९ "
५ कुविलेइ (ह्वो-विलेइ तू-लोइ-पुत्र, छिङ्ग गिस्-पौत्र शिचुङ्ग)	१२६०-९४ "

६ थुन्-येमुर् (ह्वो-विलड-पांन् छिड-येन्-पुत्र चेड-चुड)	१२९४-१३०७ "
७ वू-लुग (धर्मपाल-पुत्र वू-चुड)	१३०७-११ "
८ वोयन्-यू (धर्मपाल-पुत्र जुन्-चुड)	१३११-२० "
९ गे-नोन् (मुदफड, वोयन्-यू-पुत्र यिड-चुड)	१३२०-२३ ई०
१० यि-मु-येमुर्, (ताड-चिड-ती कमल-पुत्र)	१३२३-२८ "
११ रिन्-छेन्-फग् (यिमु-पुत्र यू-चू)	१३२८ "
१२ कुमड, (मिड-चुड वू-लुग-पुत्र)	१३२८-२९ "
१३ युग्-येमुर्, (वेड-चुड वोयन्-यू-पुत्र)	१३२९-३२ "
१४ रिन्-छेन्-पल् (कुमल-पुत्र मिड-चुड)	१३३२-३३ "
१५ येगन्-येमुर्, (मुड-न युग्-येमुर्-पुत्र)	१३३३-६८ "



वह राज्यपाल रह चुका था। येल्युका जन्म ११९० ई० में हुआ था, इस प्रकार राज्य-शासकके इस सर्वोच्च पदपर वह ३९ वर्षके उमरमें पहुँच गया। कूरिल्टाईने जू-छि-पुत्र सुन्ताइको वातूके साथ यूरोप-विजयके लिये भेजा। मध्य-एसियाकी मगोल-सेनाने आगे बढ़कर मेसोपोतामिया, दियारबेकर, और आसपासकी भूमिका सर्वमहार किया। चीनमें अपने बचे-खुचे राज्यके लिये खैरियत मनाते किन्-सम्राट्ने मगोलोसे मुलह करनी चाही, लेकिन मगोल एक समय दो सम्राट् माननेके खिलाफ थे। किनोने जानपर खेलकर मुकाविला किया और मगोलोको १२३० ई० में दो बार करारी हार दी। किन्-खतरा इतना बढ़ गया, कि उगेताइ और उसके भाई तू-लुडने स्वयं सेनाकी वागडोर अपने हाथमें ली। इस समय गेन्सी सारा मगोलोके हाथमें था और किन् (मुवर्ण) केवल होनान्के शासक रह गये थे। मगोल कोरियापर भी हाथ साफ करना चाहते थे, इसलिये वहाके राजाने मगोल-राजदूतको मार डाला। इसपर मगोल-मेनाने आक्रमण करके १२३२ ई० में कोरियापर अधिकार कर लिया। १२३२ ई० में सफल अभियानके बाद दोनों भाई मगोलिया लौट आये, वही अवतूरमें तू-लुडका देहात हो गया। अब छिड-गिस्-पुत्रोमे जगतइ और चीन-सम्राट् उगेताइ वच रहे थे।

छिड-गिस् (चगेज) के जीवनमें ही एक बार मगोल-सेना रूसके भीतर तक विजय-यात्रा कर आई थी। लेकिन वह बहुत कुछ लूट-मारका अभियान था। अब वह विजय करके वहा अपना दृढ़ शासन स्थापित करनेके लिये ष्ठी थी। सुन्ताइने वोल्गाके किनारे अवस्थित वोल्गारोकी राजधानी वोल्गार नगरको जीतना चाहा। वोल्गारोमें पश्चिममें रहनेवाले रूसी खतरेको समझ गये थे वोल्गार-ध्वंसके बाद मगोल हमपर पड़ेंगे। इसीलिये कियेफ और स्मोलेन्स्कके रावलो (राजुलो) ने वोल्गारोकी मदद की, जिससे उनकी राजधानी बच गई।

१२३४ ई० के मई महीनेमें चीनमें ११८ वर्ष शासन करनेके बाद किन्-राजवंश समाप्त हुआ। अब दक्षिणी चीनमें सुड-वंश बच रहा था, जो काफी शक्तिशाली था, इसलिये मगोल उससे जल्दी छेड़-खानी करनेके लिये तैयार नहीं थे। किनोपर आक्रमण करते समय उन्होंने वचन दिया था, कि इस विजय के बाद हम सुड-वंश के लिये होना न खाली कर देंगे, लेकिन उन्होंने वैसा नहीं किया। अदूरदर्शी दरबारियों ने मगोल-शक्तिका ठीक अंदाजा नहीं लगा सुड-सम्राट्को भडकाया। छिड-अन् (मि-यन-फू, शेन्सीमें), लोयाड (होनान्) और पेन-किड (नानकिड) यह तीन सुड-वंशकी राजधानियां थीं। सुड-सेनापति-ने आक्रमण करके लोयाड और पेन-किडको मगोलोके हाथसे मुक्त करा लिया। यह “आ बैल मुझे मार” वाली कहावत थी। मगोलोको अब सुड-वंशकी ओर ध्यान देना जरूरी था। इतने बड़े निर्णयको हगान स्वयं नहीं कर सकता था, इसके लिये उसने १२३५ ई० में महा-कूरिल्टाई बुलाई। जिसने सुड-वंशको खतम करनेका निश्चय किया। दक्षिणी चीनके विरुद्ध तीन सेनाये भेजी गईं, जिनमें एकको सेनापति ओगोताइ-द्वितीय-पुत्र कू-तन तथा जेनरल तेगरीके नेतृत्वमें सूचाउकी ओर बढ़ना था। दूसरी सेना तुमूताइ और चाड-जूके अधीन हू-कुडके ऊपर चढ़ी, ओगोताइका तृतीय पुत्र कू-चू, राजकुमार खुन-बुका और जेनरल चागनके नेतृत्वमें तीसरी सेना क्याड-नान्की ओर बढ़ी। इसी समय जू-छीके पुत्र वातूको पश्चिम-दिग्विजयका काम सौंपा गया।

मार्च, १२३६ ई० में कू-चूने सुड-राज्यकी प्रधान नगरी सियाड-याडपर अधिकार कर लिया। मगोल-साम्राज्यकी सीमा दक्षिणमें अब याड-ची तक पहुँच गई।

खु-बिले (कुबिलेइ) के पहले मगोल-साम्राज्यकी राजधानी मगोलियामें ओरखोन् और तुला नदियोंके बीच कराकोरम थी। राजधानी कहनेसे यह न समझना चाहिये, कि वहा कोई नगर बसा हुआ था। राजधानीका मतलब इतना ही था, खान सरदारोके साथ मीलोंतक लगे नम्दे और हमरे प्रकारके तम्बुओमें अपने घोडो और पशुओके साथ रहता था। ओगोताइने पहलेपहल वहा एक विशाल प्रासाद बनवाया, जिसका उद्घाटन १२३६ ई० में हुआ। इस प्रासादके बनानेमें बहुत परिश्रम किया गया था। चीनी कलाकारो ने मूर्तियों और चित्रोंसे उसे अलंकृत किया था। इसके चारो तरफ बगीचे लगे थे, और चारो दिशाओमें चार बड़े-बड़े दरवाजे थे, जिनमेंसे एक हगान (सम्राट्) के लिये, दूसरा राज-कुमारो, तीसरा अन्त पुरिकाओ के लिये था, चौथे दरवाजेसे साधारण जनता जा सकती थी। महलके चारो ओर बड़े-बड़े सरदारोके अपने महल थे, जिनके बाद बड़ा नगर था, जिनको ओर्दू-बालिक या

कराकोरम कहते थे। नगरके चारों ओर ऊर्ची प्राकार थी। कराकोरममें सम्राट्के निजी पारिवारिक खर्चके लिये प्रतिदिन पाचसीं गाड़ी भोजन-सामग्री आती थी। उसमेंसे कुछ वह अपने परिवारके लिये खर्च करना, बाकी दूसरोंमें वितरित करना। इसी समयसे मंगोल घुमन्तुओंका सादा जीवन गनम होने लगा और वह हर वानमें दुनियाकी सभ्य जातियोंकी तकल करने लगे।

ईरान और काकेशियनकी ओर अब मंगोल अपना हाथ-पैर बड़ी दृढ़तासे बढ़ा रहे थे। १२२७ ई० में अरगन और कुग नदी तक अग्मेनियापर उनका अधिकार हो गया। उसी साल उन्होंने जार्जिया (गुर्जी) को विजय करने अग्मेनियाकी राजधानी अनीका महार किया। इसी साल २१ दिसम्बरको साद्वरियाके कामनी समूहके मध्यमें बड़े बाजार बोल्गारपर वा-तूने आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया, जो भी ऐसा कि जिसके देशनेके लिये नगरमें एक भी आश्व नहीं बच रही। पान वर्ष पहले आत्म-रक्षा करने बोल्गार नगरीने जो गुस्ताखी दिखलाई थी, मंगोलोंने उसका इस तरह बदला लिया। मिग-दनिया और अराल के उत्तर दूर तक फैली किपचक भूमिके हूणवशघन घुमन्तू लड़नेमें मंगोलोंसे कम नहीं थे, इसलिए उनपर अधिकार करना मंगोलोंके लिये टेढ़ी खीर था। १२३८ ई० में तू-लुड (थो-लोड) पुन मद्र-ने (मद्र-गु) ने अपने भाई बुद-जेकके साथ काम्पियनके किपचकोपर आक्रमण कर उन्हें जीत लिया। किपचक-राजा पनचीमन और अमेन (ओमेन)-राजा कचर ओगोला मारे गये। कोलोम्ना नगर भी मंगोलोंके हाथमें चला गया और उसका राजा रोमन ईगनपुत्र वीरगतिको प्राप्त हुआ। १५ फरवरीको मान्को ने उन्हें उन्हींने द्वादिमिन नगरपर अधिकार कर, पुरोहितोंको छोड़कर मंगोलोंने किसीको प्राणदान देना पसन्द नहीं किया। वह वस्तुतः किसी देशमें भी युद्धको केवल राजनीतिक युद्ध बनना चाहते थे और उसे धार्मिक युद्धका रूप न लेने देनेके लिये हर तरहकी कोशिश करते थे।

ओगोताइका राज्य करने ११ साल हो गये थे, जब कि दिनम्बर १२४० ई० में वा-तूकी नेनाने दियेक नगरका सर्वसत्कार किया, वहाँ की मार्ग कलाकृतियाँ और इमारतें अग्निमान् कर दी। तबमें १५ वीं नदी तकके लिये लियेक नगर उजाड़ हो गया। इसी साल अग्मेनीका राजा आवक अपनी बहिन तमना के साथ ओगोताइके दरबारमें सम्मान प्रकट करनेके लिये गया। उसी साल किपचक-राजा ओन्तिग नदवावियाकी ओर भागा।

१२४१ ई० में तंगोड-मेना लुप्तलित नगरमें दागिल हई और उसने विस्तुग तकके प्रदेशको लूटा नष्ट कर दिया। मानस मंगोल दार्कोफ नगरमें थे, फिर लूटते-मारते आग लगाने मैत्रिसियाकी ओर बढ़े। ओगोत सर्वोच्च रतिवर्गसे पान पार कर वह ब्रेनलाके सामने पहुँचे। आगे भी योजना बना वह लूटने-पाटने सिगुनिज नगरकी ओर बढ़े, जहाँपर बीस हजार सैनिकों साथ इयूक हेनरी द्वितीय मुकाबिलेके लिये तैयार था। मंगोल-सेना एक रात्र बतलाई जाती है, जिसमें सबेह है। काटड नदीके तटपर अवस्थित उस मैदानमें-जहाँ पीछे वास्नडाट (युद्धक्षेत्र) गाव वसा-९ अप्रैल १२४१ ई० को वह युद्ध हुआ, जिसने साराई नगरका फैलाव दिया। मंगोल विजय नहीं प्राप्त कर सके, और सिगियाये हुये वहाँमें जल-पानी के अभावसे सिगुनिज नगरको जलाने पीछे हटे। इस युद्धमें मरे लोगोंके कान ९ बोरे हुये थे।

उन्हीं वर्ष ही १२ मार्चका वा-तूने येन्मे साढ़े तीन दिनके गर्मसेपर हुगरोको हराया था। सिगु-निज नगरमें उन्हीं दिन दार्गावियाको नेने अद्वितीय नमूने तटपर बोलियन (यूगोस्लाविया) नगरी विजय-प्राप्त थी।

हुई थी। १२५१ ई० में मंगोलोंने लाहौरको लूटा और जलाया, इस समय दिल्लीके तख्तपर नासिर खुसरो था।

#### ४. मुङ-खे, मङ-गू, स्यान्-चुङ (१२५१-५९ ई०)

मुङ-खे थो (तो) लोइका पुत्र तथा खु-वि-लेइ (कुविलेइ) का अग्रज था। अवसे एक तरह सिहामन थो-लोइकी सत्तानमें चला गया। इन्ही दोनों भाइयोंका छोटा भाई खु-ला-कू (हुलाकू) था, जिसने ईरान और मेसोपोतामियापर भी अपनी सत्तानों के लिये विजय प्राप्त की। १२५१ ई० में ही, जिस साल कि लाहौर का सर्वमहार हुआ, मंगोल-सेनायें मेसोपोतामियामें प्रविष्ट हुईं, जहां उन्होंने दियारबेकर और मेयाफरकिनका सर्वमहार किया। इसी समय उत्तराधिकारके लिये झगड़ेका परिणाम मंगोल-राज-कुमारोंमें वैमनस्यके रूपमें दिखलाई पड़ा, जिनके लिये १२५२ ई० में कूरिल्टाई बुलाई गई। इसी कूरिल्टाईने जहां राजकुमारोंके मुकदमोंका फैसला किया, वहां जागीरों और अधिकारोंका वटवारा भी किया। मुङ-कुङ-चुङ-फू (शेन्सी), होनान् कुविलेइ (ह्विलेइ) को जागीरमें मिले। उसे मुङ-वशके खिलाफ दक्षिण-चीन में अभियान करनेवाली सेनाका सेनापति भी नियुक्त किया गया। खाकानके दूसरे भाई खुलाकू (हुलाकू) को ईरानकी ओर बढ़नेका काम सौंपा गया, जिसकी सहायताके लिये कित्तू-चुकाको नियुक्त किया गया। लेकिन अभी खुलाकूकी दिग्विजय मध्य-एसियाके पहाड़ों ही तक सीमित थी।

सबसे कड़ा सघर्ष दक्षिणी चीनमें मुङ-वशके साथ होनेवाला था, जिसके लिये कुविलेने बड़ी तैयारी (१२५३ ई०) की। शेन्सीमें उसने एक बड़ी सेना जमा की, लेकिन दक्षिणकी ओर बढ़नेमें जल्दी नहीं की—मंगोल-सेनायें पूरी तैयारी और योजनाके साथ अपना अभियान किया करती थी। १२५३ ई० में ही मंगोल-सेनाओंने पूर्वी तिब्बत ले लिया, और उसी साल मुल्तान भी उनके हाथमें चला गया। इसी साल ईसाई मिशनरी स्वरिक मुङ-खेके दरबारमें कराकोरम पहुंचा। उसने अपने यात्रा-विवरणमें मंगोल-साम्राज्य, उसके राजपथों और राजधानीका बहुत अच्छा वर्णन किया है। उसके लिखनेसे मालूम होता है, कि राज-परिवारके लोग ईसाई, बौद्ध और मुसलमान सभीकी पूजाओंमें शामिल हुआ करते थे। मार्को पोलोकी महान् यात्रा मुङ-खेके भाई कुविलेके समय हुई, लेकिन स्वरिकका यात्रा-विवरण भी कम महत्त्व नहीं रखता।

फरवरी १२५४ ई० में खुलाकूने अपनी विजय-यात्रा आरम्भ की। भारी सेनाके साथ वह ईरानकी ओर बढ़ा। ससारमें चारों तरफ मंगोलोंकी धाक जमी हुई थी। “एक बार खूनके कीचड़ और खोपड़ियोंके बड़े-बड़े मीनार खड़ा कर गावों और नगरोंको ऐसा ध्वस्त कर दो, कि वहां कोई रोनेवाला न रहे, फिर कोई मंगोलोंके खिलाफ उठनेकी हिम्मत नहीं करेगा”—उनकी यह नीति सफल हो रही थी। १२५६ ई० में लालो, पूर्व-दक्षिणी तिब्बत और आवा (बर्मा) के राजाओंने अधीनता स्वीकार की। कोरियाका राजा अधीनता और सम्मान-प्रदर्शन करने के लिये स्वयं हगान (खाकान) के दरबारमें पहुंचा। अगले साल (१२५७ ई० में) तोङ्ग-किन् (अनाम) और था नदी तककी भूमिने मंगोलोंको अपना स्वामी स्वीकार किया। मुङ-राज पूरी तौरसे खतम नहीं हो पाया था, लेकिन कुविलेइके प्रहारोंसे अब वह कुछ ही दिनोंका मेहमान था। कुविलेइकी इस सफलतापर मुङ-खेको ईर्ष्या होने लगी। दरबारियोंने उसे भड़काया, कि कुविलेइ स्वयं खाकान बनना चाहता है। कुविलेइको जब यह खबर लगी, तो वह जल्दी-जल्दी अपने भाईके दरबारमें पहुंचा। उसके सौहार्द और अधीनता-प्रदर्शनसे मुङ-खे बहुत प्रसन्न हुआ और कुविलेइके साथ स्वयं मुङ-राज्यपर आक्रमण करने चला। इसी साल हगानने अपने भाई खुलाकूको वक्षुके दक्षिणका सेनापति नियुक्त किया।

१८ फरवरी (१२५९ ई०) को मुङ-खे चुङ-क्ये (सू-चाउ) में मर गया। इस समय तक सारा मंगोल-साम्राज्य एक था, और भिन्न-भिन्न खानोंने अपनी स्वतंत्रता घोषित नहीं की थी।

#### ५ कुविलेइ, ह्वोविलेइ, स-छेन्, शि-चू, (१२६०-९४ ई०)

ह्वोविलेइ कुविलेइ खानके नामसे अधिक प्रसिद्ध है। भाईके मरनेके बाद इसने कूरिल्टाईके निर्वाचनकी प्रतीक्षा न कर तुरन्त अपनेको हगान घोषित किया, लेकिन कूरिल्टाईकी रसमको वह हटाना नहीं





मण करनेके लिये भारी तैयारी करनी शुरू की। द्वीप होनेके कारण जापानपर नौसेनामे ही आक्रमण किया जा सकता था, जिसके लिये हजारों जमी, जहाज बनाये जाने लगे।

चीनी भाषाके लिखनेके लिये वर्णमाला नहीं शब्द-संकेतका उपयोग होता है, जिसमे अक्षरोंकी तरह कुछ सुभीते भी हैं, लेकिन उसमे उच्चारण-संकेतके लिये कोई स्थान नहीं है। मगोल-भाषा उद्गुर (सिरियावाली) लिपिमे लिखी जाती थी, जिसमे डेढ़ दर्जन भी अक्षर न होनेसे उच्चारण ठीक-ठीक रखना सम्भव नहीं था। कुविलेडके कहनेपर भारतीय और उससे निकली तिब्बती लिपिसे सुपरिचित होनेके कारण फगुपाने १२६९ ई० मे मगोल-भाषाके लिये एक विशेष लिपि बनाई। इसी साल उसे कुविलेडने ता-पाउ-फा-वडकी उपाधि प्रदान की। १२७१ ई० मे कुविलेडने अपने वशका नया नाम यु-अन रखा, जिस नामसे वह वंश आज भी चीनमे प्रसिद्ध है। इसी साल वर्मा (मी-यन) के राजासे अधीनता मनवानेके लिये मगोल-सेना भेजी गई। १२७४ ई० मे जहा सिपाह-याहके विजयमे सम्राट्को बड़ी प्रसन्नता हुई, वहा यह खबर सुनकर बहुत खेद भी हुआ, कि मगोल नौसेना चु-सिमाकी खाड़ी मे जापानियों द्वारा घोर रूपसे पराजित हुई, सारा सैनिक बेड़ा नष्ट हो गया। इसमें शक नहीं उस समय जापानियोंमे भी भारी शत्रु सामुद्रिक तूफान हुआ।

अज्ञात समुद्रके बीचमे हुई चु-मीमाकी हार कुविलेडके विशाल साम्राज्य मे उसकी धाकके कम होनेका कारण नहीं हो सकती थी। हा, जापानियोंमे यह भाव जरूर पैदा हो गया, कि हमारा देश अजेय है। सचमुच ही आगेकी ६ शताब्दियों तक जापान बाहरी शत्रुओंसे बचा रहा, जब तक कि अमरीकी नौसेनाने १९ वीं शताब्दीके मध्यमें बुरी तरहसे हराकर जापानियोंकी आखे नहीं खोल दी। अगले साल १२७५ ई० मे सेनापति बायनने चिड-चाउ नगरपर आक्रमण किया। नगर-निवासियोंको प्रतिरोध करनेका यही फल मिला, कि सेनापतिके हुक्मसे लोगोंकी निर्मम हत्या की गई। इसी साल लिड-अन् राजधानी-पर भी मगोलोंने अधिकार कर लिया। तब सम्राट्की अभिभाविका सम्राज्ञीने अधीनता-स्वीकृतिके प्रतीकके रूपमे राजसिंहासनको भेजा, लेकिन सेनापति बायनको यह अधिकार नहीं था, कि वह सुड-वंशका अवशेष भी रहने दे। उसने नगर-प्रबन्धके लिये चीनियों और मगोलोंकी एक परिषद् नियुक्त की। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि उत्तरी चीन आधी शताब्दी पहिले हीसे मगोलोंके हाथमे था, इसलिये मगोल-भक्त चीनियोंकी कमी नहीं थी। चार मगोल-अफसर राजधानीकी चीजोंके संग्रह करनेके लिये नियुक्त हुये। उन्होंने भिन्न-भिन्न राज्यविभागों की मुद्रायें जमा की। अभिनेता-गारमे उन्हें बहुत-सी किताबें, वही-खाते, ऐतिहासिक स्मृतिचिन्ह, भूगोल और ज्योतिष-सम्बन्धी रेखाचित्र आदि मिले। लिड-अन् (हड-चाउ) चीनकी सबसे बड़ी नगरी थी। उसका घेरा सौ मील (२४ फरसक) था। नदीको आर-पार करने तथा दूसरे कामोंके लिये नगरमे बारह हजार पुल थे। नगर बारह विभागोंमे विभक्त था, जिनमेंसे हरएकमे बारह हजार घर तथा प्रत्येक घरमे बारह, बीस, चालीस तक व्यक्ति रहते थे। नगरके घर अधिकतर लकड़ीके थे। राजप्रासादमे बीस बड़े-बड़े हाल थे। सबसे बड़ी राजशाला खूब सजी हुई थी। उसकी दीवारोंपर ऐतिहासिक दृश्य सोनेसे चित्रित थे। सब मिलाकर नगरमें सोलह लाख आदमी रहते थे—बत्तीस हजार तोसिर्फ रंगेजोंके घर थे। सात सौ मंदिर थे। सेनापति बायनने राजमाता, रानी, सम्राट् ली-चुड और उसके अनुचरोंको खानके पास भेज दिया। महल छोड़नेसे पहले राजमाता और सम्राट्को खाकान (उत्तर) की ओर मुह करके सात बार दंडवत् करनी पड़ी। कुविलेडकी प्रधान खातून (रानी) ने राजमाता और रानीके साथ अच्छा वर्तव किया। राजधानीसे लाये सोने-चादी और दूसरे खजानेको देखकर खातून रो पड़ी। वह इस प्राचीन राजवंशके ध्वंसमे मगोल-राजवंशके उच्छेदकी छाया देख रही थी, सोच रही थी, “उस समय मेरे वच्चों की भी यही हालत होगी, जो कि आज (१२७७ ई०) इनकी हो रही है। मेरे वंशकी राजमाता, रानी और सम्राट्को भी एक दिन इसी तरह बेइज्जत हो बंदी बनना पड़ेगा।” लेकिन, मगोल-वंशका अंत सुडकी तरह नहीं हुआ, क्योंकि मगोलिया इस वंशको शरण देनेके लिये मौजूद थी।

कुविलेडका राज्यकाल केवल राजसी तडक-भडक और दिग्विजयोंके लिये ही प्रसिद्ध नहीं था, बल्कि कला और विज्ञानके भारी विकासका भी यही समय था। उसके गणितज्ञ तू-चीने १२८० ई० मे राजाज्ञा पाकर ह्वाड-हो (पीत नदी) के उद्गमका पता लगानेका काम चार मासमें खतम किया।

१२८७ ई० में तोंट-किट (हिन्द-चीन) ने अर्थातता स्वीकार की। १२०० ई० में १०३ जिन्दोमे आज भी मौजूद कजूर ( निवर्ती विषटक ) का कुविलेडने सुवर्णाक्षरोंमें लिखवाया। जापानमें नीमैनिक अभियान में अगस्त होनेपर भी कुविलेडने समुद्र-विजयके निश्चयका छोटा नहीं। मृत्युमें एक साल पहिले १२०३ ई० में उसने तीन हजार सेनाके साथ एक हजार जमी जहाज जावा आदिकी विजयके लिये भेजे। कुछ वर्षोंके बाद जावाने अर्थातता स्वीकार की।

जिम माल गुट राजधानीका पतन हुआ, उसी साल मंगोल-सेनापति तामिस्दीनने वर्मा और बंगालपर आक्रमण किया। वर्माकी राजधानीपर वह अधिकार नहीं कर सका, लेकिन दोनों देशों ने मंगोलोंकी अधिक अर्थातता जरूर स्वीकार कर ली। १२८८ ई० में वर्मापर पूरी तीरमें भी अधिकार हो गया। इसी समय कोचीन-चीनपर भी मंगोलोंने आक्रमण किया। इसी साल कुविलेड का दूत बुद्धकी दंत-धातुकी पूजाके लिये लका पहुंचा। १२८७ ई० में तोंट-किट (कोचीन-चीन) ने मंगोल-अर्थातता स्वीकार कर ली।

पैतीम साल राज्य करनेके बाद १२८८ ई० में अस्मी बपकी उमरमें कुविलेड हगानका देहान्त हुआ। "उतने बड़े साम्राज्य पर कुविलेडमें पहले किसी एक व्यक्तित्वने शासन नहीं किया था। उसके राज्यमें मारा चीन, कारिया, तोंट-किट (कोचीन-चीन), गंगासे पगे और पजाबकी बहुत-सी भागतीय भूमि, नाइवेरियामें तुर्की तकके देश, और पोलेट और हगरी तककी भूमि सम्मिलित थी।"

(१) मार्को-पोलो-कुविलेडके शासन और कालके ऊपर बेनिम-निवामी प्रसिद्ध पर्यटक मार्को पोलोकी यात्रा-पुस्तक द्वारा बहुत प्रकाश पड़ता है। १३ वीं शताब्दीमें बेनिम नगर युरोपका सबसे बड़ा व्यापार-केंद्र था। बेनिमी व्यापारियोंने सभी देशोंमें अपनी कोठिया के जाल बिछा रखे थे। इन्हीं व्यापारियोंमें दो जाहूरी-भाई मफियो और पोलो १२५५ ई० में व्यापार करने कान्स्तन्तिनोपोल आये। दोनों भाइयान वहां अपने रत्नोंका बहुत अच्छा दाम पाया। उससे उत्साहित होकर वह पापके क्षुद्र-एशियाके मंगोल-शासित प्रदेशमें सीढ़ा करनेकी गरजमें प्रविष्ट हुये। यह भूमि हुलाकू-वशके अधीन थी। वहां उन्हें कुविलेड शासनका दूत मिला, जिमने पोलोसे साथ पेकिंग चलनेका प्रस्ताव किया। मंगोल-साम्राज्यमें जितना गुरातत यातायातका प्रबंध था, उतना उसमें पहले और बादकी भी कोई शताब्दियों तक नहीं देखा गया। मंगोला का उतना आतंक था, कि कोई चोरी-बटमारी करनेकी हिम्मत नहीं करना था। युरोपमें चीनकी पूर्वी छोर तक लोग निश्चित हो स्थल-यात्रा करते थे। सामुद्रिक यात्राका भी अच्छा प्रबंध था। दोनों बेनिमी व्यापारी मंगोल-दूतके साथ कुछ समय बाद कुविलेडके दरबारमें पहुंचे। शानने उनका बड़ा सम्मान किया। उस समय पश्चिमी युरोपमें रोमके पोपका जयदम्न प्रभाव था। वह धार्मिक महत्त्व ही नहीं, बल्कि राजाओंका भी राजा था—किसी को गद्दीपर बैठाना या उतारना उनके बाये हाथका खेल था। कुविलेडने पूर्वके स्वामीके तीरपर पश्चिमी देशोंके प्रमुख पाप ग्रेगरीको एक पत्र लिखकर पोरोके हाथ भेजा। पोपने इस अवसरमें लाभ उठाना चाहा। हमें मालूम ही है, उसमें पहले ही स्वर्गिक मुद्र-पेके दरबारमें कगारोम पहुंचा था। पोपने अपने गुरुका गुरुधत पहचाननेके लिये फिर निकोलो पोलोको चीन जानेके लिये मजबूर किया। अबकी बार निकोलोने अपने भाई मफियाका ही नहीं बल्कि सत्रह सालके पुत्र मार्को को भी साथ लिया। ईरान, मध्य-एशिया, पामीर, पूर्वी-तुर्किस्तान होने तीनों पोलो चीन पहुंचे। शानने उनका बड़ा सम्मान किया। मार्को पोरोकी प्रतिभा और योग्यतामें प्रभावित हो कुविलेडने उसपर अधिक अनुकम्पा दिखलाई। उसे साम्राज्यके विभिन्न भागोंमें भौगोलिक तथा दूसरी गंजे करनेके लिये भेजा। अन्तमें बढ़ते-बढ़ते मार्को का बाल-बाल जैसे एक बड़े समृद्ध नगरका राज्यपाठ बननेका भीभाग्य प्राप्त हुआ। पोलो वाप-बैठे सत्रह साल चीनमें रहे। गणतंत्रा प्रतिम नगरके नागरिक होनेके कारण वह केवल बनिया ही नहीं बल्कि सैनिक और दूसरी शिवाओंका भी काफी ज्ञान रखते थे। उन्होंने अपने पश्चिमी दुनियाके ज्ञान-द्वारा मंगोल-शासनका बहुत लाभ पहुंचाया। यद्यपि बान्दकी प्राग्भिक नीतियों, और पापाणक्षेपक यत्र (कालुष्य) का उपयोग उद्द-गिन शानने भी किया था, लेकिन उसमें अब बहुत-से सुधार और विकास

किये गये, जिसमे पोलोका भी हाथ था। इनके सुझावके अनुसार बनाये हुये हथियारोका इस्तेमाल १२७३ ई० मे सियाङ्क-याङ्क नगरके मुहासिरमे किया गया। उस अजेय नगरीको नतमस्तक करनेमे इन यत्रोका बहुत हाथ था, इसमे सदेह नही।

पोलो वडे सम्मान और आनन्दके साथ चीन मे रह रहे थे, लेकिन उवर मातृनगरी वेनिस इतना अपनी ओर खींच रही थी, कि उनकी नजरोमे यह सारा सुख और आनन्द फीका था। उनकी प्रार्थनापर कुविलेइ खानने प्रसन्नतापूर्वक विदाई दी। इसी समय एक मगोल-राजकुमारी ईरानके मगोर-राजकुमार के साथ व्याह करनेके लिये भेजी जा रही थी। पोलो बाप-बेटो को भी उसी वधू-यात्रामे सम्मिलित कर दिया गया। अबके उनकी यात्रा समुद्र-मार्गसे हुई। वह अठारह महीने बाद पारसकी खाडी मे पहुचे। वन्दरगाहसे राजकुमारीको स्वागत कर समुरालवाले ले गये और पोलो बाप-बेटोने वेनिसका रास्ता लिया, जहा कान्स्ततिनोपोल होते १२९५ ई० मे पहुचे। तब तक कुविलेइको मरे एक साल हो गया था। हित-मित्र पोलोकी यात्राओको सुनते नही थकते थे, लेकिन साथ ही वह इस बातका विश्वास करनेके लिये तैयार नही थे, कि हगानका राजस्व प्रतिवर्ष एकपे डेड करोड सुवर्ण दुवान है, तथा उसके अधीन मिलियनो (करोडो) मानव है। इस सख्यापर विश्वास न कर उन्होने मार्कोको 'मिलियनी' (करोडी) नाम दे दिया था। उस युगमे युरोपमे पडोसी देशोके झगडे आम थे। वेनिम गणराज्यका झगडा गेनवावालोसे था। इसी लडाईमे मार्को पोलो भी भाग लेने गया और युद्धबंदी बना। अपने बंदी-जीवनमे ही मार्को पोलोने अपनी यात्रा-कथा मध्यकालीन लेखक रस्तिसियन-दे-पीसाको सुनाई, जिसने उसके आधारपर "मार्को पोलोकी यात्राये" नामक प्रसिद्ध पुस्तक तैयार की। मार्को पोलोकी यह यात्रा दुनियाकी यात्रा-पुस्तको मे सिरमौर मानी जाती है, जिसमे उसने अपने देखे हुये स्थानो, व्यक्तियो, रीति-रवाजो और दूसरी चीजोका बडा सुंदर विवरण दिया है। वह कहता है—“सम्राट्के दूत काम्-वालू (खान-बालिग, पेकिङ) से यात्रा करते समय हर पचीस मीलपर टिकान पाते है, जिसे वह लोग घोडाचौकी कहते है। प्रत्येक मजिलपर एक बडी और सुंदर इमारत उनके ठहरनेके लिये बनी है। इमारतके सभी कमरे बढिया कालीनो और कीमती रेशमी वस्त्रो से सजाये गये है। अगर कोई राजा भी इन मकानोमें आ जाये, तो वह बडे आरामसे ठहर सकता है। इन चौकियोमेंसे कितनोमें चार सौ और किन्ही-किन्हीमें दो सौ घोडे तैयार रहते है। चाहे दूतको ऐसी बे-रास्तेकी भूमिमें भी जाना पड रहा हो, जहापर टिकानकी आशा नही हो सकती, वहा भी कुछ फासलेपर ऐसा विश्राम-स्थान मिल जायेगा, जहा सभी आवश्यक चीजोका प्रबन्ध होगा। इसीलिये सम्राट्के दून चाहे जिस देशसे भी आयें, उनके लिये वहा सभी चीजें तैयार मिलती है।

“जो सम्पत्ति और समृद्धि खाकानके यहा देखी जाती है, उसे कभी किसी सम्राट्, राजा या राजुलके पास नही देखा गया। इन सभी विश्रामस्थानोमे दो लाख घोडे तैयार रहते है, और इमारते दस हजारसे ज्यादा है। सामान इतने बडे पैमानेपर और अद्भुत ढंगके है, कि उनका वर्णन करना मुश्किल है।

“इस प्रबंधसे खाकान दस दिनकी दूरीके स्थानोंके समाचार एक दिन-रातमें पा लेता है। कितनी ही बार सबेरेके वक्त काम्वालू (पेकिङ) से फल रवाना किया जाता है, और दूसरे दिन शामको वह खाकानके पास चेन्-दू (सन्दा) में पहुच जाता है। आदमी एक दिनमें दो-ढाई सौ मील चले जाते है, और उतनी ही यात्रा वह रातको करते है। इन दूतोके शरीरपर एक चीडी पट्टी बधी रहती है, जिमके चारो ओर घटिया लगी रहती है। घटिया दूरसे ही सुनाई देती है, जिसके कारण चौकीपर पहुचनेके समय दूसरा दूत वहा तैयार मिलता है, जो उसी तरह पहले दूतकी लाई चीजको लेकर घोडा दौडाने लगता है। चौकीका लेखक चीजकी प्राप्तिकी चिट आये हुये दूतको दे देनेके लिये हर वक्त तैयार रहता है। हर चौकीका लेखक दूतके आगमन और प्रस्थानका समय लिख लेता है। हर चौकीपर लगाम-चारजामा लगे तैयार ताजे घोडे मौजूद रहते है। बस उसपर चढो और पूरी चालसे दौडाओ। फिर दूसरी चौकीपर जब दूरसे घटीकी आवाज सुनाई देती है, तो दूसरा घोडा और सवार तैयार हो जाता है। जिस वेगसे वह दौडते है, वह बडा अद्भुत है। रातको भी वह उतना ही तेज चलते है, जितना दिनको, क्योंकि उनके साथ मशालची सवार होते है।

“ये घोडसवार-दूत बहुत अच्छा वेतन पाते हैं। वह इतने मुश्किल कामको बिना अपने पेट, सिर और छातीको मजबूत पट्टीमें बांधे नहीं कर सकते। वह अपने साथ एक अकित पट्टिका ले चलते हैं, जो इस बातको प्रकट करती है, कि वह बहुत जरूरी कामके लिये जा रहे हैं। इसीलिये यदि सयोगसे कहीं घोडेके अग-भग होने या गिर जाने से दूत नडकपर पड़ जाये, तो वह दूसरा घोडा ले सक ॥ है। कोई उसकी मागने इन्कार नहीं कर सकता।”

मार्को पोलोने बतलाया है, कि उस समय प्रत्येक बड़े शहरमें एक दारोगा रहता था, जिसका काम था रास्तेकी देख-भाल करना।

(२) जाति-व्यवस्था—चाहे भारतकी तरहकी कड़ी जाति-व्यवस्था न हो, किन्तु सभी सामन्ती शासनोमें जातिभेदका होना आवश्यक देखा जाता है। ६ठी-७वीं शताब्दीमें ईरानमें जातिभेद करीब-करीब उसी तरहका था, जैसा भारतमें। मगोलोमें पहले चीनमें भी जातिभेद था। मगोलोने भी अपनी प्रजाको चार वर्गोंमें बाटा था, जिनमें प्रथममें उनके अपने मगोल आते थे, द्वितीय वर्गमें से-मू (तुर्क मुसलमान), तूफान (तिब्बती), तुगुत, मध्य-एशिया तथा पश्चिमी एशिया के दूसरे वह लोग थे, जो मगोलोके साथ नमस्ती या साम्प्रतिक समीपता रखते थे। तीसरे वर्गमें उत्तरी चीनवाले थे, जो कि किन्-शासनके बाद मगोल-शासन में आये थे। चौथे वर्ग में मुङ्ग-साम्राज्यमें रहनेवाले दक्षिणी चीनी थे, जिन्होंने मगोलोका जबरदस्त प्रतिरोध किया था, इसीलिये उन्हें सबसे निचले वर्गमें रखा गया था। पहले इन्हें किमी राजकीय सेवामें भरती होनेका अधिकार भी नहीं था। चीनमें पहलेसे चली आती अधिकारियोंकी परीक्षाओंमें यद्यपि चीनियोंके सम्मिलित होनेमें कोई रुकावट नहीं थी, लेकिन चाहे चीनी परीक्षामें उच्चमें उच्च स्थान पाये, तब भी वार्ड औरकी सूचीमें उसका नाम लिखा जाता था, जब कि मगोल और से-मू दक्षिणी सूचीमें स्थान पाते थे। नौकरीमें ले लेनेपर भी चीनियोंको मगोल-भाषा सीखने और मगोलोके धर्मके प्रति सम्मान दिखानेके लिये मजबूर होना पड़ता। दंड देनेमें भी भेद-भाव रखा जाता। यदि कोई चीनी चोरी करता, तो पहले अपराधके लिये उसकी वार्ड वाहमें गोदना गोद दिया जाता, दूसरी बार अपराध करनेपर दाहिनी वार्डमें, तीसरी बार गर्दनपर, जिसे देखकर कोई भी आदमी अपराधीको पहिचान सकता था। लेकिन, उम्मी अपराधके लिये मगोलोको डम तरहका दंड नहीं दे मामूली जुर्माना लेकर छोड़ दिया जाता था। अगर कोई चीनी किसी मगोल या से-मू को मार डालता, तो उसे मृत्यु-दंड मिलता और हत्यारेके परिवारमें वन बमूल करके मृत व्यक्तिकी अन्त्येष्टि आदिका खर्च दिलवाया जाता। अगर हत्यामें मगोल होता, तो उसे शराब के नंगे, या झगड़ेके पागलपनको कारण बतलाकर जुर्माना या निर्वा-मनका दंड भर करके छोड़ दिया जाता था। १२७९ ई० की एक मगोल-राजाजाके अनुसार चीनियोंको हथियार रखनेका अधिकार नहीं था। वनस्प-बाग भी न रख पानेके कारण वह शिकार नहीं कर सकते थे। भारतके अंग्रेज शासकोंकी तरह चीनमें मगोल-शासनको भी जगह-जगह मगोल-छावनिया कायम की थी।

और भी विम्बून वर्गीकरण करने हुये मगोलोंने अपनी प्रजाको निम्न दस श्रेणियों में बाटा था—

(१) उच्च दरबारी, (२) अवीनस्थ या स्थानीय अफसर, (३) लामा (माधु), (४) नाउ-नाधु, (५) वैद्य, (६) कान्गिर और मजूर, (७) शिकारी, (८) पेशावर लोग, (९) कन्फूमी पुरोहित और (१०) भिखमगे। मगोल कन्फूमी आचार्योंको बहुत नीची दृष्टिमें देखते थे, जब कि पुराने चीनी शासनमें कन्फूमी विद्वानों का स्थान गजबशके बाद ही आता था। इनमें शक नहीं, चीनी विद्या और मन्वृत्तिके नियंत्रणको उनके अनुत्प स्थान न दे मगोलोंने बुरा किया था, लेकिन वह यह भी जानते थे, कि चीनी मन्वृत्ति और सामन्तवादके इन अर्थे पुजारियोंमें अपने लिये, हम कोई भलाईकी आशा नहीं रख सकते थे। कन्फूमी यदि केवल चीनी मन्वृत्ति और कलाके ही नेता होते, तो समझीता हो जाता अथवा यदि मगोल पूरी ताकतमें चीनी बननेके लिये तैयार होते, तब भी कन्फूमी विद्वानोंको भिक्षा-गियोंके पास बैठनेकी जरूरत नहीं पड़ती। कन्फूमी शिक्षा और विद्वानोंके प्रभावको चीनके सभी सामन्ती शासन अपने लाभके लिये टप्पेमाड करते रहे। अभी हालमें चाङ्ग-काङ्ग-शरने भी इन हथियानका पूरी ताकतमें उपयोग करना चाहा। शासनके प्रति आत्म मूदकर नदभावना और आज्ञाकारिता प्रदर्शित करना कन्फूमी शिक्षाका एक मुख्य अंग है, इसीलिये शासकोंकी उनका विशेष अनुकम्पा होनी स्वा-

भाविक है। लेकिन कन्फूसी साहित्य और शिक्षामे एकमात्र दास-मनोवृत्ति सिखलाना ही नहीं है, उसमे कितनेही और भी उच्च सांस्कृतिक तत्त्व हैं, जिनको छोड़ा नहीं जा सकता, लेकिन इसका नीर-क्षीर-विवेक करते उपयोग करना नवीन चीनमे ही सम्भव हो सकता है।

मगोल खाकान गैर-मगोल जातियोंके लिये स्वेच्छारी और कितनी ही बार अतिनिष्ठुर शासक थे, लेकिन उम निष्ठुरताका प्रयोग वह हर वक्त नहीं करते थे। यद्यपि मगोलोके साथ उनका खास पक्षपात था, लेकिन अधीनस्थ जातियोंको भी वह अधिकारोसे सँवथा वचित नहीं रखते थे। प्रायः सभी विजित देशोमे उन्होंने पुराने राजाओ और सुल्तानोको अपने अधीन शासक बनाकर रख छोड़ा, सिवाय उन देशोके जहाके लोगोने उनका जबरदस्त प्रतिरोध किया था। कुविलेईने यद्यपि खानवालिग (पेकिङ्ग) को अपनी राजधानी बना उसे भव्य प्रासादोवाली समृद्ध नगरीमे परिणत कर दिया था, लेकिन उसका भी अधिक समय तन्त्रुओके भीतर बीतता था। मगोल अपने घुमंतू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय समझते थे, इसीलिये चीन या दूसरे देशो पर शासन करनेवाले सभी मगोल-खाकानोकी राजधानिया चिडिया-रैनवसेरा जैसी ही थी। मगोल-भाषामे राजधानी और प्रासादो को सराय कहते हैं। उसका अर्थ मुसाफिरोकी सरायका हर्गिज नहीं था। मार्को पोलोके अनुसार राजपथोके हर मजिलपर "सराय" (प्रासाद) थी, शायद उसीके कारण मुसाफिरोकी टिकानको भी सराय कहा जाने लगा। राजकुमारो और बड़े-बड़े सैनिक अफमरोको राज्यके भीतर अपने-अपने भूखण्ड मिले हुये थे, जिनपर वह अपनी मर्जीके मुताबिक शासन करते थे। यद्यपि छिङ्ग-गिस्ने मध्य-एसियाके मुसलमानोके साथ बड़ी क्रूरताका वर्ताव किया था, बलख, मेर्व, तूस जैसे किनारे ही समृद्ध नगरोकी वस्तुतः उसने ईटसे ईट बजा दी थी, जिसके कारण वह फिर नहीं उठ सके, लेकिन, पीछे मगोलोका वर्ताव मुस्लिम जातियोसे अधिक सहानुभूतिपूर्ण था, यह इसीसे पता लगता है, कि इन जातियोको उन्होंने चारो वर्गोमेसे द्वितीय वर्गमे रखवा था। कुविले खानकी वर्मा और बगालपर आक्रमण करनेवाली सेना का सेनापति नासिरुद्दीन भी इसका स्पष्ट उदाहरण है—मगोल ऊँचे सैनिक पद को भी मुसलमानोको देनेके लिये तैयार थे। इसका एक और भी कारण था—चाहे मध्य-एसियाके तुर्क मुसलमान हो गये हो, लेकिन जातित वह मगोलोके भाई-बन्द थे। रूसियो और पश्चिमी जातियोके खिलाफ अभियान करते समय मगोलोने किन्चक तुर्कोसे भाईचारा लगाकर उन्हें अपनी ओर कर लिया था, जिससे उन्हें एक लडाकू जाति सहायक मिल गई।

मगोल-भाषाके प्रति मगोल-शासकोका अधिक पक्षपात स्वाभाविक था। उनके आज्ञापत्र उइगुर लिपिमे लिखी मगोल-भाषामे हुआ करते थे। १३वीं शताब्दीके आरम्भमे चली हुई यह परिपाटी १५वीं शताब्दीके आरम्भ तक तेमूरलग और उसके पुत्रोके समय तक जारी रही। कट्टर मुसलमान होते भी यह लोग छिङ्ग-गिस् की वरासतको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे। लेकिन, मगोल-भाषाका विकास जितना होना चाहिये था, उतना नहीं हो सका। "मगोल-उन्निगुवा" (तोपचिया), "युवान-चाउ-बि-गी" जैसे कुछ इतिहास या दूसरे विषयोके ग्रंथ उस समय मगोल-भाषामे लिखे गये। पीछेके मगोल-शासकोके लिये ग्रंथ अधिकतर चीनी या पारसीमे लिखे गये, जो प्रायः इतिहाससे सवध रखते थे। चीनमे मगोल-भाषामे जो ग्रंथ लिखे गये, उनके अनुवाद चीनीमे भी हुये थे, पीछे मूल (मगोल) ग्रंथ लुप्त हो गये और उनके चीनी अनुवाद भर बच रहे। कुविलेई खानने अपना ही नहीं अपने वशका भी धर्म बौद्ध-धर्मको घोषित किया और अपने गुरु फग्पा लामाको तिब्बतका राज्य प्रदान किया, किन्तु उसने बौद्ध-ग्रंथोके मगोल-अनुवादका काम बहुत आगे नहीं बढ़ाया। १५ महाभारतोके बराबर भारतीय ग्रंथोके अनुवाद कन्जुर (बुद्ध-वचनानुवाद) और तन्जुर (शास्त्रानुवाद) के नामसे तिब्बती भाषामे मौजूद थे। उनमे ( तिब्बती ) कन्जुरको कुविलेई खानने स्वयं सोनेके अक्षरो मे लिखवाया था, लेकिन उनका मगोल-अनुवाद उस समय हुआ, जब चीनसे मगोल-शासन खतम हो गया। मगोल शायद संस्कृतकी तरह तिब्बती भाषामे ही धर्म-ग्रंथो का पढ़ना ज्यादा पुण्यदायक समझते थे। आज भी मगोलियामे कन्जुर और तन्जुरके मगोल-भाषामे हो जानेपर भी उन्हें तिब्बती भाषामे पढ़ना ज्यादा पुण्यकार्य समझा जाता है। शायद यह भी कारण रहा हो, लेकिन उस समय आजकी तरह मगोलोमे तिब्बती भाषाका प्रचार नहीं था, इसलिये अधिकांश लोग तिब्बती ग्रंथोको बिना समझे ही पढ़ सकते थे।

मंगोलोंके समयमें पहले ही चीनी कलाका सुवर्ण-युग थाइ-काल (६१८-८६९ ई०) बीत चुका था, तो भी मंगोलोंने कलाका सम्मेलन-सर्वर्धन किया। नाट्य-कला के विकासमें तो उनका विशेष हाथ रहा। चीनमें संगीत, अभिनय और नृत्यका प्रयोग बड़ी साजसज्जके साथ बहुत पहलेसे चला आता था, लेकिन तीनों चीजोंका पढ़े-पैसा सुदर सम्मिश्रण नहीं हुआ था, जैसा कि मंगोल-शासकोंके सख्त-क्षणमें। मंगोल-वशने नाट्य-कला की बड़ी अभिवृद्धि की, बड़े सुदर-सुदर रंगमंच बनवाये। दरबारके समय खानके साथ भिन्न-भिन्न देशोंके राजदूत भी नाटकका अभिनय देखते थे। उन समय नाट्यके लिये जो नियम और व्यवस्था कायम की गई, उसमें चीनी रंगमंचको बहुत प्रेरणा मिली, जिसका प्रभाव आज भी देखा जाता है। चित्र-कलामें भी वस्तु-निर्वाचन, उसके चित्रण तथा प्रभावमें विशेष कार्य हुआ। मंगोल-शासक गतिमय शक्तिशाली जीवन चित्रोंकी रेखाओंमें अंकित होने लगा, पुराने कालमें चले आये शान्त-गन्धी प्रचलनका स्थान अब वीर और रौद्ररसोंने लिया। अब भी शान्त प्राकृतिक दृश्य अंकित होने थे, लेकिन घुड़सवारी, शिकार और राजके दृश्य अधिक प्रिय थे। अब बलमपन्न गतिको प्राप्तकर चीनी चित्रशैलीको आगे बढ़नेको एक नया रास्ता मिला।

### ६ युवु थेमूर, उल्द-शे-नू, चेङ्ग-चुङ्ग (१२९४-१३०७ ई०)

कुविलेडने कूगिल्ताईकी शक्तिको कमजोर कर दिया था, जिसमें खानोंके निर्वाचनमें पहले-जैसी स्वतंत्रता नहीं बरती जा सकी थी। इसीलिये अब नारे मंगोल-खानजादोंमें किसी एकको चुननेकी जगह मत खानकी मतानकों ही उत्तराधिकारी समझा जाने लगा। कुविलेडका पुत्र छिङ्ग-गेन् वापके समय ही मर गया था, इसलिये उनके पुत्र युवु-थेमूरको गद्दी मिली। अब छिङ्ग-गिस्की पात्रवी पीढ़ी चल रही थी। एक शताब्दी के विजयोंके बाद भी अभी मंगोलोंकी शक्तिका उतना ह्रास नहीं हुआ था। १२०० ई० में बमकि मिहामन-बचिन राजपुत्रने मंगोल-दरबारमें पुकार की, और मंगोल-सेनाने बमकिमें पहुँचकर उसे गद्दीपर बैठाया। कुविलेडके प्रतिद्वंद्वी अरिग्सुकाके साथ प्रतिद्वंद्विता खतम नहीं हुई थी। कैङ्गू खानने अब भी अपने उत्तराधिकारके दावेको नहीं छोड़ा था। १३०१ ई० में उसने युवु-थेमूरके ऊपर अवस्थान आक्रमण किया, जिसमें चंगताइ खानदान भी उसका सहायक था। बगकोन्मके पान लड़ाई हुई। ओगोताइ-बशी और चंगताइ-बशी दोनों खानोंको हार खानी पड़ी, कैङ्गू माना भी गया। उसकी जगहपर उनका पुत्र चापर ओगोताइ खान बना, जिसने युवु-थेमूरकी अधीनता स्वीकार कर ली। १३०३ ई० में पिङ्ग्याङ और ताङ-युआनमें, फिर १३०४ ई० में पिङ्ग-याङमें भूकम्प दिये, जिसको लेकर तरह-तरहकी भविष्यद्वाणिया की जाने लगीं। सी वर्ष पहले १२०६ ई० में छिङ्ग-गिन् खानान घोषित हुआ था, इसलिये विरोधी वह भी अफवा उड़ा रहे थे, कि अब मंगोल-वशका मिताग टूटनवाला है। १३०६ ई० में कैङ्गूका समर्थक चंगताइ दावाखान मर गया, जिसमें अगले साल युवु-थेमूर भी बाल कबलित हुआ।

### ७ खू-लुग, कू-लुक, से-सन्, वू-चुङ्ग (१३०७-११ ई०)

युवु-थेमूरने मरनेके बाद उसके भाई बमपालका पुत्र नु-लुग कूगिल्ताई बाग खानान घोषित किया गया। भूकम्पके बाद जब १३०८ में अकाल और महामारीकी बारी आई, लेकिन वह नारे साम्राज्यमें नहीं फैल सकी थी। प्रताकों प्राणोंमें मौल चुकाता पड़ रहा था, लेकिन खानानके दरबार पर उसका क्या प्रभाव हो सकता था? उसी साल चार खान तथा दूसरे दरबार में आये, जिनको बड़ी आवश्यकत हुई। चंगताइ और ओगोताइ-परिवारोंके साथ होता संधर्ष अब दब गया था, इसलिये खू-लुग घरेलू-युद्धमें निर्बल था, तो भी १३०९ ई० में युद्धमें भारी विजय हुआ। युद्धन भागीयतामें प्रभावित पूर्व-पक्षार देखके नाममें प्रसिद्ध था। यद्यपि लोग संस्कृतिमें ही आगे बड़े हुये नहीं थे, बल्कि अच्छे योद्धा भी थे। अपनी स्वतंत्रताके लिये उन्होंने कुविलेडका अवस्थान मुकाबिला किया था और जब कोई दूसरा रास्ता नहीं पड़ गया, तो उनमें से बहुत-से लोग भागकर आई (स्थान), चान (बमकि) और अहोम (गारो) में चले गये, जहाँ उन्होंने नये राजवंशोंकी स्थापना की। १३०९ ई० में उन्ही गवारोंने अपने देश परतने अवस्थान विजय किया, जिनके द्वारा मंगोलोंको भारी मुश्किल का सामना करना पड़ा।

यद्यपि कुविलेडके समय ही फग्पा (फग्स्-पा=आर्य) लामाने मगोल-वादशाहके लिये नये अक्षर बना दिये थे, लेकिन इस अक्षरमे अकित पहलेपहल तावेके सिक्के खु-लुगने १३१० ई० मे ढलवाये। इसी साल मगोल-राजकुमार तू-ला (कोकोचू-पुत्र) ने असफल विद्रोह किया। थुबु-थेमुरके समय तक अभी बाहरके मगोल-राजवंशके साथ चीनके खाकानका घनिष्ठ सवध था, उसे अधिपति माना जाता था, लेकिन अब वह सवध गिथिल होने लगा। फर्वरी १३११ ई० मे खु-लुग मर गया और उसकी जगह उसका भाई वोयन्-थू गद्दीपर बैठा।

## ८ वोयन्-थू, आयुरपरवल, आयुर्वलीभद्र, वूयन्-तू, जुन्-चुड (१३११-२० ई०)

खु-लुगकी मृत्युके साल ही उसके भाईको गद्दी मिली। ईरानका मगोल-वश कुविलेडके छोटे भाई खुलाकू-खानका था, इसलिये जिस वक्त जू-छी, चगताइ और ओगोताइ खानोका चीनके हगानसे (खकान) से मतभेद या झगडा भी रहता, उस समय भी ईरानके मगोल-वंशका हगानके साथ बहुत सीहार्द रहता। १३१२ ई० की फर्वरीमे वोयन्-थू ने अपना दूत ईरानी खान उल-जै-तूके पास भेजा। पुराने कालमे चीनमे हिजडे बनाकर उन्हें अन्त पुरमें ही बडे-बडे स्थान नही दिये जाते थे, बल्कि राज्यके ऊचे-ऊचे पदो पर भी वह पाये जाते थे। १३१४ ई० मे वोयन्-थूने सरकारी नौकरियोंमे हिजडोका प्रवेश निषिद्ध कर दिया, लेकिन इसका यह अर्थ नही, कि हिजडे अब बाट के भिखारी बन गये। उसके लिये तो अभी १९११ ई० तक प्रतीक्षा करनी थी। अगले ही साल (१३१४ ई०) एक प्रमुख हिजडेने एक सुंदर मन्दिर बनवाया। पिताकी गद्दी न पानेके कारण खुलुग-पुत्र कुसलने १३१६ ई० में चचाके विरुद्ध असफल विद्रोह किया। यह हम पहले देख चुके हैं, कि व्यापार और कृषि-उद्योगको धनका प्रधान स्रोत समझकर मगोल-शासक उनकी उन्नतिकी ओर विशेष ध्यान देते थे। डेढ हजार वर्षोंसे अधिक समयसे रेशमकी जन्मभूमि चीन अपने सुंदर रेशमी कपडोके लिये सारी दुनियामें प्रसिद्ध था। रेशम देशकी आमदनीका एक बडा भाग था। वोयन्-थूके शासन-कालमे १३१८ ई० में सरकारने तूतके वृक्ष लगाने तथा रेशमके कीडे पालनेकी विधिके ऊपर एक पुस्तिका प्रकाशित की। शायद सरकारोकी ओरसे इस तरहकी छपनेवाली पुस्तकोमे यह सबसे पहिली थी।

फर्वरी १३२० ई० में वोयन्-थू मर गया और उसकी जगहपर उसका पुत्र गेगेन् गद्दी पर बैठा।

## ९ गेगेन्, शु-तु-फल (शुद्धफल), यिड-चुड (१३२०-२३ ई०)

मगोल खान-वंशमे धर्मपाल, आयुर्वलीभद्र या शुद्धफल जैसे शुद्ध भारतीय नामोका होना कोई आश्चर्यकी बात नही है, क्योंकि अब मगोल-राजवंश ही नही साधारण जनतामे भी बौद्ध-धर्म जातीय धर्म समझा जाने लगा था। गेगेन् (ग्यु-गेन्) १८ वर्षका था, जब कि वह गद्दीपर बैठा और २१ सालकी आयुमे मर गया। उसके बाद छठे खान थुबु-थेमुरके भाई कमलका पुत्र यिसु-थेमुर गद्दीपर बैठा।

## १० यिसु-थेमुर, यिस्सुन-तइमुर, ताइ-चिड-ति (१३२३-२८ ई०)

अब खानोके शासनमें कोई विशेष बात नही थी। १३२३ ई० में “ताइ-युवान-तोड-शी” (महा-मगोल-विधान) प्रकाशित हुआ। अगस्त १३२८ ई० मे खान मर गया और उसकी जगह उसका भतीजा रिन्छेन् गद्दी पर बैठा।

## ११ रिन्-छेन्-फग्, यू-चू (१३२८ ई०)

बहुत कम समय शासन करनेके कारण कितनी ही वशावलियोंमें इसका नाम नही मिलता। रिन्-छेन्-फग् तिब्बती शब्द है, जिसका अर्थ है रत्न-आर्य। उसके बाद उसका भाई तथा खु-लुगका पुत्र कुसल गद्दीपर बैठा।

## १२ कुसलऽ, कोसल, मिड-तिड (१३२८-२९ ई०)

अब वंशकी निर्वलताके सूचक चंद दिनोंके खान होते रहे।

### १३ थुग्-थेमुर, उलजे-थू जीया-गा-तू, वेन्-चुड (१३२९-३२ ई०)

यह थोयन्-थू खाकानका पुत्र तथा गेगेन्का भाई था। इसके शासन-कालमें १३३० ई० में फिर युन्नन्में विद्रोह हुआ, जो १३३१ ई० में भी जारी रहा। इसी समय चीन में अवर्षणके कारण अकाल पड़ा। उसी सालकी एक घटना बतलाती है, कि पहलेसे चले आये नियमोंका अब भी कितनी कडाईके साथ पालन किया जाता था। खाकानने साम्राज्यकी वर्षाओंके देखना चाहा, लेकिन अधिकारीने इन्कार कर दिया। यह परिपाटी इनलिये चली आती थी, जिसमें खाकान दरबारी इतिहास-लेखकसे मनमाना न लिखवा सके, इसीलिये दैनिकीको उसे दिखलाया नहीं जाता था। थुग्-थेमुरने अपनेको अपवाद बताना चाहा, लेकिन दैनिकी लेखकने उसे दिखलानेमें इन्कार कर दिया।

### १४ रिन्-छेन्-पल्, निङ्-चुड (१३३२-३३ ई०)

रिन्-छेन्-पल् भी निव्वती यब्द है, जिसका अर्थ है रत्नश्री। यह कुसलका पुत्र था और केवल दो मान राज्य करके मर गया। इसके बाद अन्तिम खाकानका दीर्घकालीन राज्य शुरू हुआ।

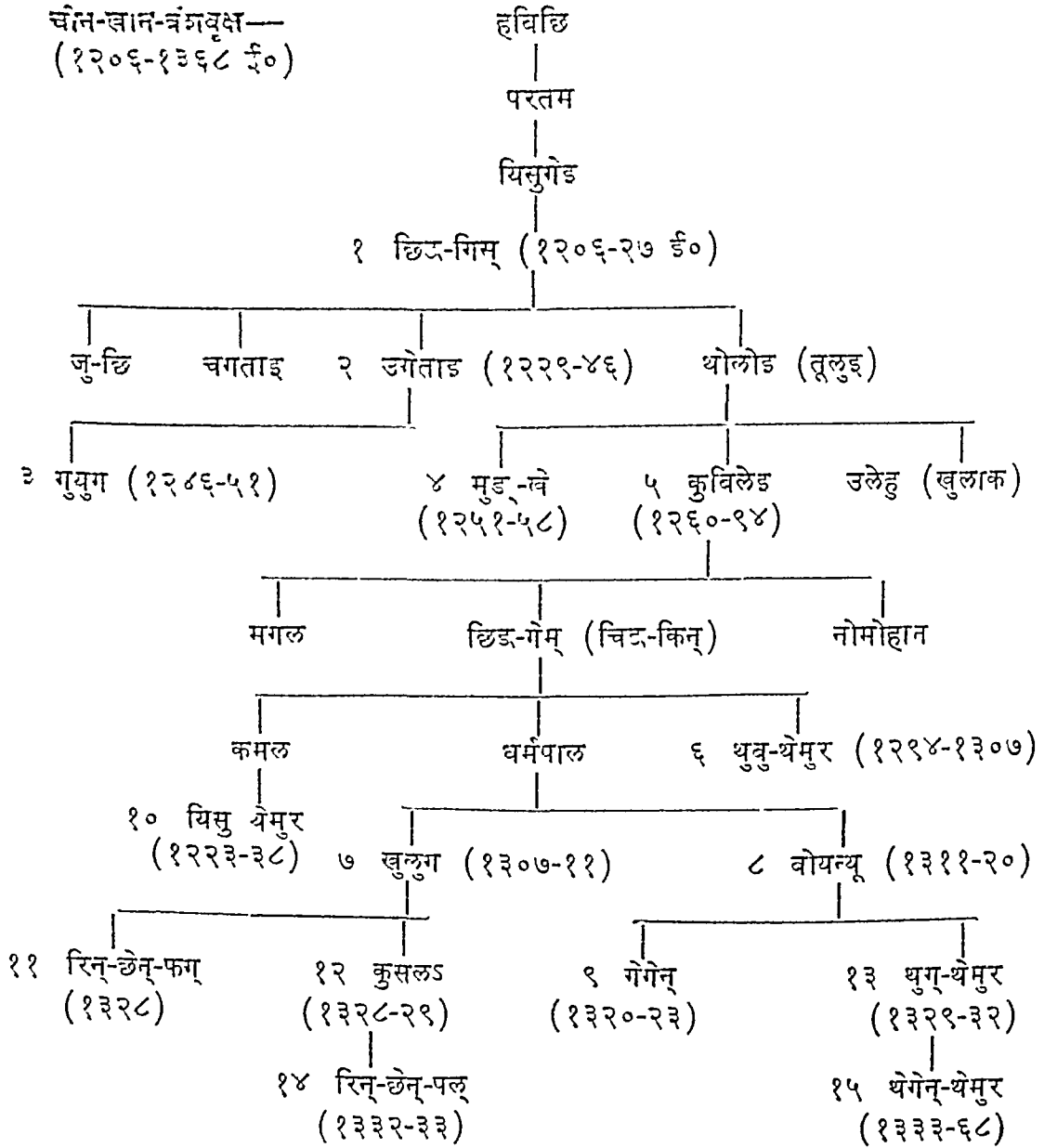
### १५ थेगन्-थेमुर, तोगोन्-तिमुर, गुड-ति (१३३३-६८ ई०)

यह थुग्-थेमुरका पुत्र था। इसने ३५ वर्ष तक शासन किया। जान पड़ता है, राजवशकी समाप्तिके लिये हर वशमें वाजिदअली शाहके पैदा होनेकी अवश्यकता होती है। थेगन्-थेमुर चरम विलासी था। लामा लोगोंका प्रभाव भी राजवशपर अब चरम सीमा को पहुँचा हुआ था। निव्वतका धर्म, तांत्रिक बौद्ध-धर्म है, जिसे लामा-धर्म कहकर किनने ही लोग उसकी मारी जिम्मेवारी निव्वतके ऊपर मढ़ना चाहते हैं। लेकिन, तांत्रिक बौद्ध-धर्म निव्वतकी उपज नहीं है। वह भारतमें पैदा हुआ और यही चरम सीमापर पहुँचकर भारतके गान्ध करनेका एक कारण बना। प्रभावशाली लामोंका खाकानके ऊपर बहुत प्रभाव था। उसका तन्त्र-मन्त्रपर बहुत विश्वास था। पञ्च मकार-उन्मुक्त व्यभिचार भी जिसका एक प्रधान अंग था—का तुलकर प्रयोग खानके यहाँ होता था। बहुत निम्न श्रेणीके यौन-दुराचार साधनके अंग माने जाते थे। मन्त्र-तन्त्र-मन्त्रि तथा भैरवी चक्र के लिये एक मकान बनाया गया था, जिसका नाम रखा गया था “निर्दोष-भवन”। वहाँ पर यौन-अतिचारकी हद की जाती थी। अन्त पुस्तिकाओंको “दिव्य नृत्य” के नामसे बहुत-सी अश्लील चित्रोंके प्रदर्शन करनेके लिये मजबूर किया जाता था। चारों तरफ विलुपिता और व्यभिचारका बाजार गर्म था। यह वही समय था, जब चीन में १३२६, १३२७, १३३४, १३३६, १३४२ और १३४६ में जवर्दस्त अकाल पड़े थे। खान, उसके दरबारी और अधिकारी भैरवी चक्रमें मग्न थे, जब कि लोग भयकर कष्टमें गुजर रहे थे। सूखा और अकालके समय किसानोंकी कोई बोज-बखर देनेवाला नहीं था। यही नहीं, अब भी उन्हें दरबारके लिये भारी करोंको देना पड़ता था। मंगोल-बैतन भी निर्दोष विदेशी शासक थे, जिनके साथ चीनियोंका कोई सौहार्द नहीं था। इस क्रूरता-पूर्ण विजयमय जीवनमें तो चीनी जनताके नाको दम हो गया। वह और अधिक दिनों तक इस दुःशासनको बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। राजधानीमें दूर दक्षिणमें याङ्-चि-उपत्यकामें विद्रोहियोंने सिर उठाया। जंगलकी आगकी तरह विद्रोह जल्दी ही सारे देश में फैल गया। विद्रोहियों का नेता चू-युवान्-चाट एक किसानका लड़का था। उसने भूख और कष्टके दिन देखे थे, इसलिये वह किसानोंको विद्रोहमें शामिल करनेमें सफल हुआ। मंगोल-नेताने विद्रोहको पहुँचे कहीं-कहीं दबाया, लेकिन थोटे ही समयमें सारी याङ्-चि-उपत्यका चू-युवान्-चाट के हाथमें चली गई। १३६८ ई० में उसने अपनेको स्वतन्त्र सम्राट् घोषित करने नान्-किङ् में मिट्ट (प्रकाश)-वशकी नींव रखी। इसी साल उसकी सेना पेकिङ्गके ऊपर चढ़ी। थेगन्-थेमुरके लिये मंगोलिया अभी सुगन्धित जगह थी, इसलिये वह वहाँ भाग गया। उस प्रकार चीनमें मंगोल-शासक अन्त हुआ। थेगन्-थेमुरके वंशज आगे मंगोलियापर शासन करते रहे, जरा समय बीतते-बीतते उनके अनेक राज्य हो गये, जिनका प्रभाव मध्य-एशियाके इतिहासपर पीछे गिरावट डाल पड़ा, जब कि १८ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्धमें मालूम होता था, मध्य-एशिया में फिर एक बार मंगोल-साम्राज्य कायम होने जा रहा है, लेकिन पलायनकी उड़ाई १७५७ ई० के समय उसका गान चीन और उसके प्रहारोंमें हो गया।



चीनके मंगोल खाकानोंके समय पहले घनिष्ठतापूर्वक किंतु पीछे गिथिलताके साथ चगताइ, जू-छि, हुलाकू आदिके राजवंशोंका संबंध रहा, इसका वर्णन आगे हम करेंगे । तू-लुइ-वश के वर्णन के बाद अब हम जू-छि-वंशको लेते हैं जिसके ग्रामनमें उत्तरी मध्य-एशिया और रूस बहुत समय तक रहे ।

चीन-खान-वंशवृक्ष—  
(१२०६-१३६८ ई०)



## अध्याय २ सुवर्ण-ओर्दू

(१२२४-१४०० ई०)

छिड-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छिके ओर्दूको "सुवर्ण-ओर्दू" के नामसे पुकारा जाता है, यद्यपि मुसलमान इतिहासकार इसे अधिकतर कोक-ओर्दू (नील-ओर्दू) के नामसे याद करते हैं, और जू-छिके ज्येष्ठ पुत्र ओर्दूके उलुगको अक-ओर्दू (श्वेत-ओर्दू) कहते हैं। इसी प्रजा इन्हें जोल्तोय (सुवर्ण-ओर्दू) के नामसे जानती है।

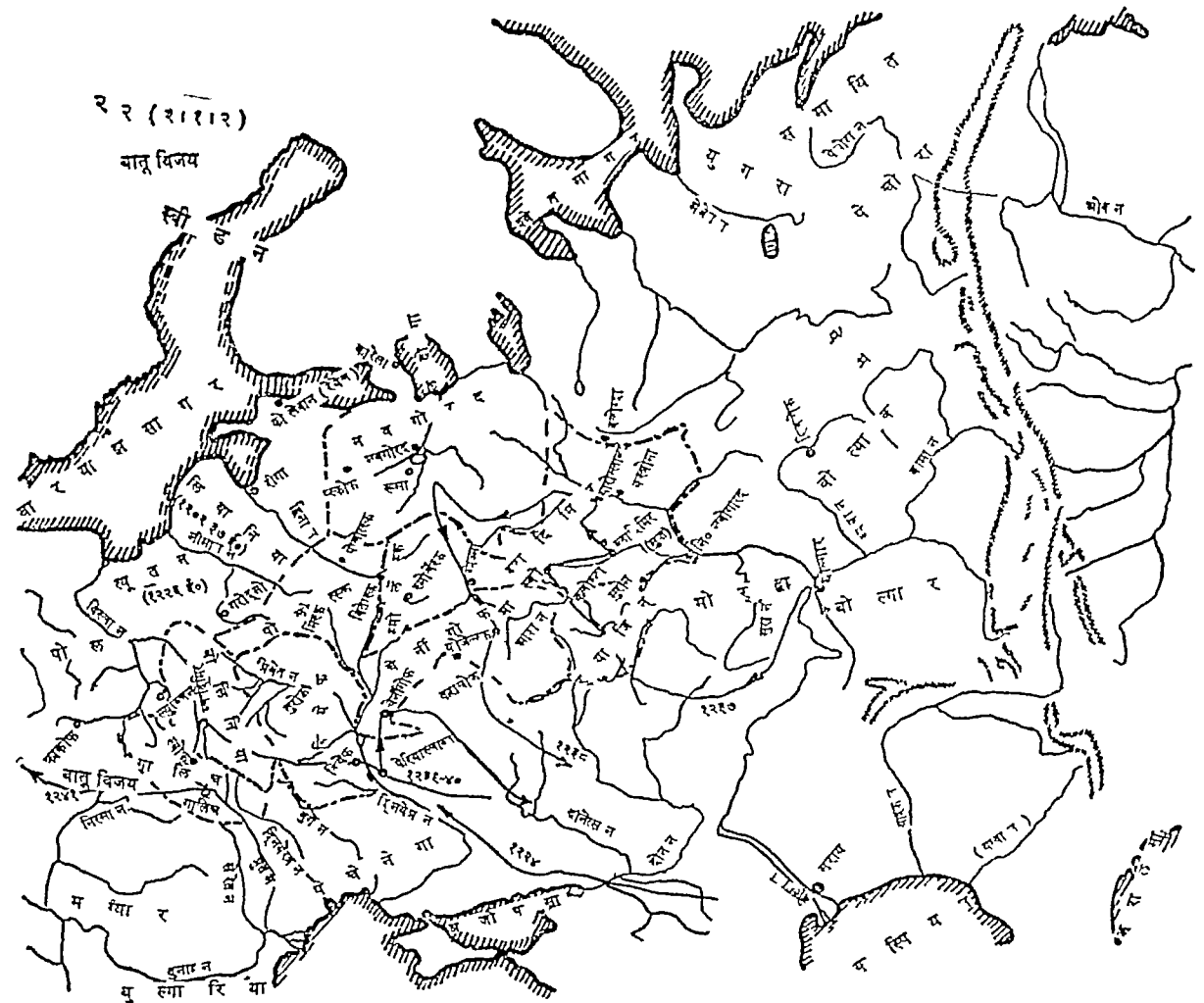
### १ जू-छि, तू-शि (म० १२२४ ई०)

छिड-गिम्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छि या तू-गिकी मृत्यु वापसे छ महीने पहले हुई थी, यह हम कह आये हैं। जू-छिके वारेमें एक मुसलमान गुमनाम लेखककी कृति "शजतुल्-अतराक" (तुर्कवश-वृक्ष) में कितनी ही बातें कही गई हैं। मंगोलियासे दूर चले गये मंगोल तुर्क-समुद्रमें चढ़ वूदोकी तरह थे, और वह उनके भीतर हजम भी हो गये। इसीलिये इस लेखकने मंगोल-वशवृक्षको तुर्क-वशवृक्ष कहा। इस तथा दूसरे ग्रंथोंके अनुसार भी छिड-गिम्को अनुपस्थित देखकर उसके प्रतिद्वंद्वी मरकितोने छिड-गिमी उलुसको मार भगाया और वह उनकी ज्येष्ठ पत्नी वुर्ते-फूजिन्को और बहुतसे आदमियोंके साथ पकड़ ले गये। वुर्ते-फूजिन् कक्रुत वर्यालेके मरदार दाई-नौबन्की पुत्री थी। यही छिड-गिस्के चार प्रवान पुत्रों और पांच पुत्रियोंकी मा थी। वुर्ते-फूजिन्के पकड़े जानेके समय जू-छि माके पेटमें ६ मासके गर्भके रूपमें था। केरइत खान ओद-खान छिड-गिस्का बड़ा समर्थक था। वह छिड-गिस्को अपना पुत्र मानता था। जब इस घटनाका पता लगा, तो उसने मरकितोपर आक्रमण कर वुर्ते-फूजिन् तथा उसके आदमियोंको छड़ा लिया, और अपनी धर्म-वधूको फिर छिड-गिस्के पास भेज दिया। इसी समय रास्ते में जू-छि पैदा हुआ। पथमें पैदा होनेके कारण ही उसका नाम जू-छि (पथक) पड़ा। पीछे चगताइ खानोका जू-छि-वशके कोक-ओर्दू और अक-ओर्दूमें मदा झगडा होता रहा। इसीलिये चगताइ विद्वानोंके इतिहास-ग्रंथोंमें जू-छिको कलकित करते हुये यह सावित करनेकी कोशिश की गई, कि जू-छि छिड-गिस्का पुत्र ही नहीं था। ममर्थक उस बातके नाशित करनेका प्रयत्न करते हैं, कि जू-छिकी मा केवल चार महीने छिड-गिस्से दूर रही, जब कि रास्तेमें जू-छि पैदा हुआ। "तुर्कवश-वृक्ष" का लेखक यह भी कहता है—“चाहे पुत्र कितना ही अच्छा हो, अमली और नकलीके प्रति पिताके प्रेममें जमीन-आसमानका अन्तर होता है। साडन् (छिड-गिम्) जू-छि खानके ऊपर हृदये ज्यादा प्रेम और स्नेह रखता था।” जू-छि खानके मृत्युकी खबर जब उलुगमें पहुची, तो उसे वापतक पहुचानेकी किसीको हिम्मत न हुई। यह काम दरबारी कवि उलुग-दुर्जोके मिरपर रखा गया। कविने हिम्मत करके पथमें उपमाके रूपमें यह खबर सुनाई, जिने सुनकर छिड-गिम् बहुत दुखी हुआ। कवि और छिड-गिस्के दुखोको तुर्की भाषाके पद्यमें प्रकट किया गया है, यद्यपि यह निश्चय है, कि छिड-गिस् तुर्की नहीं बोलता था, इसलिये यह पद्य पीछे बनाये गये हैं। तो भी इसमें नदेह नहीं, कि छिड-गिस्को अपने ज्येष्ठ पुत्रकी मरकसीके बाद भी उनके साथ अमावारण प्रेम था, इसीलिये उने बहुत दुख हुआ।

स्वारेज्म-विजयके समय छिड-गिस्ने जू-छिको पूर्वमें कयालिकमे पश्चिममें सकमीनतको दस्ते-तिस्तर (वर्तमान कजाख्स्तान), वोल्गारा, आल्यानो, बश्किरो, उरुमा और चेरकासोके देशोंके साथ बट भूमि भी प्रदान की, जहा कि तातारी (मंगोलो) के घोटोकी टापें पड़ें। जू-छिका ओर्दू यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र ओर्दू और द्वितीय पुत्र वा-नूके अधीन पहले हीमें दो उलुगोंमें बट गया था, लेकिन श्वेत-ओर्दूके सम्पादन ओर्दूने जिग नन्ह अपने छोटे भाई वा-नूको अपना अधिपति स्वीकार किया, वने ही उमरा श्वेत-ओर्दू भी अपनेरो वा-नूके सुवर्ण-ओर्दूके अधीन मानता रहा। जू-छि ओर्दूका पूर्वी

भाग (किपचक-भूमि) श्वेत-ओर्दूकी माना जाता था । सुवर्ण-ओर्दूके ३९ शासक हुये—

१ जू-छि, तू-यि छिड-गिस्-पुत्र	१२२४ ई०
२ वा-तू जू-छि-पुत्र	१२२४-५५ "
३ सेर-तक वा-तू-पुत्र	१२५५ "
४ उलकची वा-तू-पुत्र	१२५५ "
५ वेरेके, वरका, जू-छि-पुत्र	१२५५-६५ "
६ मुद-खे थे-मुर, मगू-थेमुर तोगोन-पुत्र	१२६५-८० "
७ तू-दा-मगू तोगन-पुत्र	१२८०-८९ "
८ तोगू-ताड, तोक्-तोगू, मगू-थेमुर-पुत्र	१२८९-१३१३ "
९ उज्वेक तोक्-तोगूका भतीजा	१३१३-४२ "
१० तिनी(दिनी)वेग उज्वेक-पुत्र	१३४२ "
११ जानी-वेग उज्वेक-पुत्र	१३४२-५७ "
१२ वेदी-वेग जानी-पुत्र	१३५७-५९ "
१३ कुलदी(कुल्या)वेग, जानी-पुत्र	१३५९ "
१४ नौरोज(नूरुस) वेग जानी-पुत्र	१३५९-६० "
१५ चेरकेम-वेग जानी-पुत्र	१३६० "
१६ ओरदा शेख	
१७ खिजिर	
१८ कुलफा	
१९ तेमुर खोजा	
२० मुरीद	
२१ अजीज, बाजारची	
२२ हाजी एरजन-पुत्र	



## २ वा-तू खान, सायन खान जू-छि-पुत्र (१२२४-५५ ई०)

छिद्र-गिस्के पोतोमें वा-तू पहला था, जिसने चारो उलुसोंमें एकके खानपद को दादाके जीवनमें ही प्राप्त किया। इनकी मा सू-जिन खातून ककुल-कधीलेके मरदार अची नोयनकी लडकी थी। यद्यपि वातूमें बड़ा एक और भी भाई उर्दा (ओर्दा) था, लेकिन दादाने इसे ही अधिक योग्य समझा। छिद्र-गिस् पश्चिम दिशाके महत्त्वको समझता था, इसलिए द्वितीय पुत्र होनेपर भी समझ समझ वा-तू को वापका स्थान दिया। बड़े भाई ओर्दाने भी दादाके निर्णय को दिलने स्वीकार किया, तथा उनके उलुसमें भी वातूके उत्तराधिकारियों को अपना प्रधान माना। यद्यपि रुनियोंमें वा-तूका ओर्दू सुवर्ण-ओर्दूके नामसे प्रसिद्ध है, किन्तु पूर्वी इतिहासकार उसे कोंक-ओर्दू (नील-ओर्दू)के नामसे ज्यादा जानते हैं—ओर्दोका उलुस अक-ओर्दू (च्येन-ओर्दू)के नामसे प्रसिद्ध था। जू-छि ओर्दू, हम जानते हैं, लडाकू वुगन्तुओका समूह था, जो जू-छिके मरनेपर वा-तू और ओर्दामें आधा-आधा बंट गया। ओर्दोके उलुसको वाम-दल और वा-तू को दक्षिण-दल भी कहा जाता था। वाम-दलमें वैसे वा-तूके भाई ओर्दा, तुकातेमुर, मिद्र-कुर और मिद्र-कुद्र भी शामिल थे। समकालीन इतिहासकार मिनहाजुद्दीन जुज्जानी (११९३-१२०६) ने दिल्लीमें रहते अपने मरखक नामिस्द्दीन मुहम्मदगाह (१२४६-६५ ई०) के नामसे प्रसिद्ध "तवागीखे-नामिरी" में लिखा है, कि जू-छिके मरनेपर छिद्र-गिसने वा-तूको जू-छिका स्थानापन्न बनाने हुये उसे कपचका, कगलियो, ऐमको, इलवारो, अलानो, अमियो, रुमियो, चेक्कासोकी भूमि प्रदान की, और वह सभी भूमि भी, जहापर मंगोल घोटनवारोकी टापे पड़ी। यह हम देखेंगे, कि आगे खजार-द्वन्द्व—जिसे मंगोल यिमुर-कखलया (लौहद्वार) कहते हैं—भी वा-तूके हाथमें था। इस प्रकार काकेयसमें उसके और उसके चचेरे भाई ईरानके खान गु-ला-गूकी सीमा मिलती थी। जुज्जानीके अनुसार वा-तू मुसलमानोका मित्र था। उनसे छावनियों और डेरोंमें मस्जिदें बनवा इमाम और मूअज्जिन नियुक्त किये थे। उनकी मुसलमानी प्रजामें सर्वत्र शांति और समृद्धि देखी जाती थी। इसका अर्थ यही है, कि वा-तू धर्मके बारेमें अपने दादाकी नीतिका अनुगमन करता था। लेकिन खारेज्म, कपचक और काकेयसमें ही उसकी मुसलमान प्रजा रहती थी। वशगिर ईसाई थे। वही बात रूसी तथा दूमरे लोगोकी थी। ऐसी हालतमें वा-तू यदि स्वयं ईसाई हो, तो कोई विचित्र बात नहीं थी। बहुसंख्य जनताको अधिक अनुकूल बनानेके लिये यह अच्छा टग था। अभी उन समय तक मंगोल-राजव्यवस्था बौद्ध-धर्मको जातीय धर्म नहीं बनाया था। एक तरह सत्तारके बड़े-बड़े धर्मोंकी वह परीक्षा कर रहा था। खुविलेड (कुविले) कजानने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर यद्यपि वह कदम बढ़ाया, किन्तु बौद्ध-धर्म मंगोलोका राष्ट्रीय धर्म बन गया, किन्तु खुविलेडके निर्णयको उन्ही जगहोंमें मंगोलोंन माना, जहां बौद्ध-धर्मको प्रधानता थी, अथवा जहां कोई गैर-कबीली देवी धर्म प्रचलित नहीं था। वा-तूके उत्तराधिकारी तथा अनुज वरकाने अपने आपको खुल्लमखुल्ला मुसलमान घोषित किया, जिसका उनसे अपने मंगोलोंपर बुरा प्रभाव पड़ा, जो ही पीछे पूर्वी और पश्चिमी मंगोल-साम्राज्यमें मनमंदका एक कारण भी हो पड़ा। सुवर्ण-ओर्दू ऐसी स्थितिमें था, कि यदि उसने ईसाई धर्म को स्वीकार किया होता, तो नायद आगे चलकर रूसियोंको उनके विरुद्ध धर्मयुद्धका स्थान न आता। चंगताइ और तुगा-तुगलकी साक्षात्प प्रजा मारी मुसलमान थी, जिनके कारण राजनीतिक लाभके स्थानमें उन्हें धर्मनिरपेक्ष स्वीकार करना पड़ा। चंगताइ खान तर्मेडेरिट — जो कि मुहम्मद तुगलकका समकालीन था—का नाम बौद्ध था, लेकिन पीछे वह बहुत मुसलमान हो गया। इसके कारण भारतके तुगलक सुल्तान तथा चंगताइ खानमें बड़ी घनिष्ठता स्थापित हो गई। टैंगनी खान गज्जन (१२९५-१३०६) ने पहले अपनी राजधानीमें एक सुन्दर बौद्ध विहार बनवाया, लेकिन अन्तमें राजनीतिक-कारणोंके लिये उसे धर्मनिरपेक्ष स्वीकार करना पड़ा। परं जिस तरह राजनीतिक कारणोंके लिये इस्तेमाल किया है, उन्हीं के लिये वह स्वयं उदाहरण है। सादर्यता न ले सुवर्ण-ओर्दूके खानने धर्मनिरपेक्ष स्वीकार किया, जिससे मंगोल-साम्राज्यका एक-मुसलमान सुवर्ण-ओर्दू बनने में अने मान्यताओं मजबूत करनेका स्थान। वा-तूके उत्तराधिकारी जू-छिके नामसे पुत्रों का जाता था। बौद्धों जानते हैं कि उन्हीं नामों से रहनेके कारण

पीछे इसी नदीका बोलगा नाम पडा। बोलगाके बाये तटपर अस्त्राखानसे उत्तर वा-नूने अपनी राजधानी बनवाई, जिसका नाम सराय, वा-नू-सराय (या बरका-सराय भी) पड गया। गू-युक कआनके मरने के समय (१२५१ ई०) मंगोलोंने वा-नूको अपना कआन बनाना चाहा, लेकिन तबतक उसके घोड़ोकी टापे जर्मनीकी सीमातक पहुच चुकी थी, इसलिये पश्चिम-विजेताने पूर्व जाना पसद नही किया और उनके नगर्यनपर छिड-गिन्-पुन तू-लुङ्के पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) को कआन बनाया गया।

दिग्गज १.—१२२४ ई० मे वापकी जगह बैठनेके बाद वा-नू ख्वारेज्म और उसके पश्चिमकी भूमि का शासक बना। मंगोलो की प्रथम पश्चिमी विजय रथायी नही थी, इसलिये वा-नूको फिर लडकर अपनी स्थितिको मजबूत करना पडा। ख्वारेज्म और किपचकके बहुत से भागोंने वा-नूके शासनको जल्दी स्वीकार कर लिया, किन्तु सुवर्ण-ओढ़के आगेके विस्तारके लिये उमे बहुत सघर्ष करना पडा। इसके लिये गायद वा-नू राजी न होता, यदि १२३५ ई० की अपनी दूसरी कूरिल्ताइ (महामद) मे उगेताइने प्रोत्साहन न दिया होता। इसी कूरिल्ताइमे दक्षिणी चीन तथा और भी दक्षिणके देशोके विजयका निश्चय हुआ था, और वा-नूको बोलगारो, असो और रूसियोपर अधिकार करनेका काम सीपा गया था। उसकी मददके लिये उगेताइने अपने पुत्रो गू-युक और कदगन, तु-लुङ्के पुत्र मुङ-खे (मङ-गू) और मोकू, एव जू-छिके पुत्रो ओर्दा, और तङ-गुनको सहायतार्थ दिया। इनके अतिरिक्त कुछ और खान-जादो (राजकुमारो) के साथ प्रसिद्ध सेनापति सु-ब्रो-नाइ बहादुर भी साथ था।

वा-नूकी सेना केलरोको विजय करके वाङ्किरोपर पडी। वाङ्किरोके वारेमे १२३६ ई० में साधु जुलियनने लिखा था—“पूर्वी मंगयार (हुगेरियन) या वाङ्किर काफिर है। उन्हे न सच्चे ईश्वर-का ज्ञान है और न वह हमारे देवताओको पूजते है। वह जगली जानवरोकी तरह रहते है, खेनी नही करते, घोड़ो और भेडोका मास खाते, दूध, दूधकी शराब (कूमिस) और खून पीते है। उनके पास घोडे और हथियार प्रचुर परिमाणमे है और वह बडे लडाकू है। उनमे एक कथा मशहूर है, कि मंगयार हमारे देगसे गये, किन्तु कहा गये, यह नही जानते।” लेकिन जहातक वाङ्किर सरदारो और सामन्तोका सवध था, वह अधिकतर ईसाई थे, यह पूर्वी इतिहासकारो के लेखोसे भी मालूम होता है।

(क) वाङ्किर-विजय—महाकूरिल्ताइके निर्णयके बाद जो महाअभियान शुरू हुआ, उसके अनुसार १२३८ ई० मे यायिक (ऊराल) नदीके तटपर वा-नूकी साढे चार लाख सेना एकत्रित हुई। इसमे ककली (कगली), नैमन, कराग्विताई आदि कबीलोके सैनिक अधिक थे। सेनाको तीन भागो में बाटा गया—(१) मुङ-खे और वे-चुकके अधीन एक सेना सकसिन (निम्न बोलगा उपत्यका) के सरदार पचिमान (राजधानी सुमरकद) के विरुद्ध भेजी गई, (२) दूसरी सेना सुवोताइके अधीन बोलगारोके विरुद्ध। (३) स्वयं वा-नूने दुश्मनकी सख्या और शक्तिका पता लगानेके लिये अपने भाई सेवानको दस हजार सैनिकोके साथ आगे भेजा। सेवानने हफ्तेके भीतर लीटकर दुश्मनकी जवर्दस्त शक्ति का पता दिया। दोनो ओरकी सेनाये एक नदीके किनारे आमने-सामने खडी हुई। इतिहासकार जुवैनी (१२२६-८३ ई०) के अनुसार वाङ्किर सेनाको देख वा-नू अपने शिविरमे चला गया और किसीसे एक शब्द भी न कह बस भगवान्से प्रार्थना करते खूब रोना रहा। उमने सभी मुसलमानोको भी एकत्रित करके दुआ मागनेके लिये कहा। हमरे दिन युद्ध करनेका निश्चय हुआ। मंगोल सेना रात-को ही नदी पार करनेमे सफल हुई और उसके प्रहारमे केलरोके पैर उखड गये। वा-नूकी जवर्दस्त विजय हुई, दुश्मन भारी सख्यामे काम आये, उनकी बहुत-सी सपत्ति हाथ आई। उसी जाडेमें वा-नूके सेनापति सुवोताइने खदान उपत्यकापर अधिकार किया।

(ख) बोलगार-विजय—१२३८ ई० में सुवोताइ (मुङ-नाइ) ने बोलगा-उपत्यकाके तटपर अवस्थित बोलगारोकी राजधानीपर आक्रमण किया। बोलगारोने ब्लादिमिरके महारावल द्वितीय जार्ज व्सेवोल्द-पुत्रसे सहायता मागी। उसका भाई नवोग्रादका शासक तथा अभी-अभी कियेफके सिंहासनपर बैठनेवाला था, जिसके बाद नवोग्रादका शासक प्रसिद्ध रूसी वीर तथा कियेफ-रावलका पुत्र अलेक्सी नेव्स्की हुआ। इस प्रकार कियेफ, नवोग्राद और ब्लादिमिर तीनों राज्य एक ही परिवारके हाथमे थे। रूसियो और बोलगारोकी सम्मिलित सेनाने मंगोलोका जवर्दस्त मुकाबिला किया।

(ग) सकुम्भ-विजय—मुद्र-गूने सकुम्भोंको हराया। पश्चिमानने अपने अनुयायियोंके साथ जंगलमें शरण ली। लेकिन मगोठ भगोटोको फिरसे मुकाबला करने लायक क्यों छोड़ने लगे? मुद्र-गूने जगह-जगह अपनी सैनिक चीकिया स्थापित की और अतमें पीछा करने-करते बोल्गा नदीके दाहिने ओर जा दबाया। पश्चिमानके अनुयायियोंमें बहुतसे मारे गये। बंदियोंमें स्त्री-वस्त्र तथा अन्य पश्चिमान हाथ आया और गुस्ताखीके अपराधमें मुद्र-गूनेके हुक्ममें उनके सामने ही पश्चिमान-के दो टुकड़े कर दिये गये।

(घ) मास्को-विजय—उसी ग्रीष्म (१०३३ या १०३८ ई०) में खानजादा (राजकुमारों) ने नमियोंके नगर अग्यान (र्याज़न) पर आक्रमण किया। तीन दिनमें ही नगरने अधीनता स्वीकार कर ली। उस समय निम्विर्क, पेन्ज़ा, तम्बोफ नामके पीछे प्रसिद्ध स्थानोंमें मोर्देवीन लोग बसते थे, जिनका अपने पड़ोसी नमियोंमें अच्छा संबंध नहीं था। उन्होंने मगोलोंके लिये गुप्तचरका काम किया। उन्होंने पता पाकर मुद्र-गूने और वा-नूकी सम्मिलित सेनाके सीमाती नगर र्याज़नके ऊपर आक्रमण किया था। र्याज़नके गवर्नर जार्जे मगोलोंमें लड़नेमें सफलता न पा अपने पुत्र पयोदरको भेड़के साथ वा-नूके पास भेजा। वा-नूने भेंट स्वीकार की, लेकिन साथ ही पयोदरमें उनकी बहन और बेटियोंको भेजनेके लिये कहा और यह भी, कि वह अपनी सुन्दरी भार्या एडफ्रेमिया को दिखलावे। पयोदरने कहा—“तुम्हारे राजकुमार अपनी स्त्रियोंको काफ़िरोको नहीं दिखाया करते। इसपर वा-नूके हुक्ममें वह वही मार दिया गया, जिसकी खबर पा अपना सतीत्व बचाने के लिये उसकी स्त्रीने अपने पुत्रके साथ छतमें गिरकर जान दे दी। अब भी वर्तमान र्याज़नमें हम कीगपर पुगने (स्तान्या) र्याज़न का ध्वज मौजूद है।

(१) र्याज़न-विजयके बाद वा-नूकी सेना ओकाके किनारे-किनारे कोशेमा पहुँची और उसपर अधिकार कर मास्को (मस्को) जा उसे लूटा-जलाया। फिर वह मुज्दलकी राजधानी व्यादिमिरके ऊपर पड़ी। नवगोर्द जाने १४ मार्च १०३८ ई० को बोरोखोत्स्की (चेर) और तोरयकनर भी जला दिया, लेकिन मगोठ बोल्गाके उद्गम मेलिगोरने आगे नहीं बढ़े। मगोठोंके नामने “ग्राम चुन हो गये, नमियोंके मुद्र हमियेके नामने घासकी तरह गिरने लगे।”

(२) हमरी सेना इसी समय वा-नूके भाई वरेके नेतृत्वमें बोल्गा और दोनके बीचके किस्चकोके ऊपर पड़ी। किस्च-मन्दार कोनियक देश छोड़ अपने बंधुओं (मग्यारों) के पास हंगरीकी ओर भागा।

(३) तीसरी सेना नेदान, वृज़् और वूरीके नेतृत्वमें मारी ठोमोंके ऊपर पड़ी, जो कि उस समय दक्षिण-पश्चिमी समयमें रहते थे।

(४) चौथी सेना वाकेयमसी पहलियोंकी ओर चेरकामियोंके पीछे पड़ी। १०३८ ई० की गर्मियोंमें चेकाम-राजा तुकान मारा गया और १०३९ ई० में मगोठोंने वाकेयमके दरबारपर आक्रमण किया।

मास्कोकी तफ़्त बढ़ने समय उसी राजन रोमनने प्रतिरोध करने मगोठोंके हाथ अपने प्राण खोये। तीन दिनके समयमें बाद मगोठोंने मास्को (मस्को) को ले लिया और वहाँके राजकुल (क्याज़) व्यादिमिर (उग्यनसु) को मार डाला। फिर वह लोगोंने कुछ रस्के नगरीको बिल्कुल लूटने-जलाते चीजोंको नाश करने आगे बढ़े, जिसमें पीछेमें उनपर प्रहार करनेवाला कोई न रह जाय। उस समय गगन में छोटे-छोटे गज्जोंमें बड़ा हुआ था। वह भला कैसे मगोठोंके टिड्डी-दल्ला मुकाबला कर सके? उसी जगहोंमें भागते लेकिन वहाँमें भी पतङ्कर मारे जाते।

वा-नूके दो नौनेने मुहागिरोंके बाद भी कोशेमा नर नहीं हुआ, जेदन तथा वूरीकी सेनाओंके तलवारोंके तलवे उससे बाद ही उसपर अधिकार हो पाया। मुस्लिम इतिहासकारोंके अनुसार चेर-मोंके १३५ हिज़री (१०३६-३८ ई०) के ज़ातोंमें मुद्र-गूने और जेदनने आक्रमण किया, और वा-नू की सेना मारा गया।

(५) शिबेर-विजय—१०३९ ई० के बादमें वा-नूके नेतृत्वमें प्रधान सेना इतिरेग-उपत्यकाके शिबेर-विजय की। राज्यों की सैन्य शक्तोंने गंगा दक्षिण-पश्चिमी नमियोंने भी एक होकर

मुकाविला नहीं कर पाया। मंगोल रूसी राजुलोको भगाते कियेफ पहुँचे। ६३७ हिजरी (१२४० ई०) की शरद्मे कआन \* ओगोताइ का बुलावा आनेसे गो-युक और मुङ्ग-खे कियेचक-भूमिके रास्ते मंगोलिया लौट गये, लेकिन वा-तूकी विजय-यात्राका सबसे बड़ा कदम अब उठनेवाला था।

वा-तू अपने भाइयो कदन, वूरी और वू-चेकके साथ रूसियो और कालीटोपियो (स्याहकुलाह) की ओर बढ़ा। इसी समय दिसम्बरमें नौ दिनों के मुहासिरेके बाद उसने महानगर मनकेरकानको ले लिया। मनकेरकान रूसका सबसे पुराना और वैभवशाली नगर कियेफका ही नाम था, मंगोलोंने नगरकी होली जला दी, जिसमें गताव्दियोंसे जमा होती कलाकी वस्तुये तथा भव्य इमारते नष्ट हो गईं। तबमें १५वीं गताव्दी तक कियेफ उजाड़ रहा।

१२४१ ई० (६३८ हि०) में ओगोताइ मरा, वमतमें वाकी खानजादे भी वाश्किकी भूमि होते मंगोलिया लौट गये। इसी साल वा-तूने वाश्किर-राजाको नष्ट किया।

(च) युरोप-विजय—१२३८ ई० में १२४० ई० के वसततककी वा-तूकी विजय-यात्रा अभूतपूर्व है। इसी समय उसने वोल्गाके कवीलोको परास्त किया, रूसी नगरोंको जीता, काला सागरके मैदानोंको अपने हाथमें किया, कियेफको ध्वस्त किया, और फिर अपने सैनिक दलोको दक्षिणी पोलैंड (रुथेनिया) की ओर भेजा। उस समय रूसकी तरह पोलैंड भी बहुत-से छोटेछोटे राज्योमें बटा हुआ था। मार्च १२४१ ई० में जब जाडोकी वर्ष पघली, तो मंगोलोके सैनिक शिविर कारपेथीय पर्वतमालाके ऊपर लेम्बरमें थे।

जनवरी १२४१ ई० में मंगोल गोलैनियामें लूट-मार मचाते पोलैंडकी राजधानी क्राकोके पास पहुँचे। १८ मार्चको पोलोको पराजित कर २४ मार्चको मंगोल-सेनापति वैदरने क्राकोको जलाया। मंगोल फिर सिलेसिया और रतिवरमें ओडर नदीको पार कर दब्रेस्जव नगरके सामने पहुँचे। ६ अप्रैलको मंगोलोंने पोलो और त्युतानिक सरदारों (राजुल हेनरी आदि) की सेनाओंको लिग्नित्जके पास वालस्टाट (युद्धक्षेत्र) नामक स्थानमें हराया। लिग्नित्ज, ओत्माखन, वोलातीजको लूटते-जलाते मईमें वह मोरावियामें पहुँचे। वहाँ त्रोपनके इलाके तथा दूसरे स्थानोंका उन्होंने सहार किया। फ्रासके राजा लुईके पास पत्र लिखते हुये इस ध्वस-लीलाका वर्णन एक ईसाई पादरीने इस प्रकार किया है—  
“जर्मनीके सभी राजुल, राजा तथा पुरोहित एव हगरीके भी लोगोंने हाथमें सलीव लेकर तातारोंके खिलाफ अभियान किया। हमारे भाइयोंने जो बतलाया है, यदि वह ठीक है, और भगवान्की इच्छासे वह पराजित हो गये, तो तुम्हारे देश (फ्रांस) तक कोई ऐसा नहीं है, जो तातारोंके मुकाबिलेमें खड़ा हो सके।”

वा-तूके दुश्मनको मग्यार-राजा बेलाने शरण दी थी। मंगोलोके लिये यह भी एक बहाना मिला। चालीस हजार बढ़ी वा-तूकी सेनाके लिये रास्ता बनाते थे। वा-तूकी एक सेना मोलदाविया, कुमासिया, त्रान्सिल्वानियाको नष्ट करते शोरसोवा पहुँची, उसने नगरको मलियामेट कर दिया। बेलोकी सेनाको १२ मार्चको रुथेनियन डाइके पास हार खानी पड़ी थी। सरविया होते वोल्गारिया में दाखिल हो २५ दिसम्बरको मंगोलोंने वहाँके ग्रामों-नगरोंका सर्वसंहार किया। प्लातेन झीलसे होते मंगोल क्रोसियाकी ओर बढ़कर स्पाल्त्रो समुद्रतट पर पहुँचे और कतारोंको ध्वस करते अलवानियामें जा दाखिल हुये। वहाँसे मईमें कदनकी सेना वोल्गारिया होते लौटकर वा-तूके पास पहुँची। उनकी गति कितनी तेज थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि वह तीन दिनमें सत्तर मीलकी यात्रा करके पेस्त (बुदापेस्त) नगर पहुँच गये।

सुवोदाइ और वा-तू तीन सेनाओंके साथ कारपेथीय पर्वतमालाके भीतरसे दुश्मनके दक्षिणी पक्षकी ओर बढ़े थे। गलीसियासे हुगरीमें घुसकर सुवोदाइकी सेना मलदावियाकी ओर लौट पड़ी। रास्तेमें जो भी प्रतिरोधी सैनिक-टुकडिया मिली, उनका सफाया करते उसकी सेना पेस्तमें प्रधान सेनासे अप्रैल-के आरम्भमें—लिग्नित्जके युद्धके जरा-सा ही पहले—आ मिली। इस सेनाको यह पता नहीं था, कि उत्तरमें क्या हो रहा है। उसने ओडेरके तटपर अवस्थित मंगोल-सेनाप कैदू और उसके भाइयोंके साथ सबध

\* कग्रान=कगान=खाकान=खान खान=राजाधिराज (सम्राट्)

स्थापित करनेके लिये एक सेना भेजी। उगोलिनके विघषकी टोटी सेना हारी, और विघष अपने तीन साथियोंके साथ जान बचाकर निर्भीक तरह निकल भागा। मगोलोंका अभियान प्रलयकी ध्वम-लीला जैसा था, जिसमें मारे युरोपमें उनका आतंक मचा हुआ था। सभी मुकाबिला करनेकी तैयारी कर रहे थे। मुद्गर-फ़ाम भी सैनिक सहायताये भेज रहा था। हुगरीके राजा बेला चतुर्थने एक लाखकी सेना तैयार की थी, जिसमें मगयार (हूगेनियन), क्रोन, जर्मन तथा फ़्रेच सैनिक भी शामिल थे। मगोलोंकी सैनिक चाल बही थी, जो कि उनके पूर्वज हूणोंकी, और उससे वे अक्सर सफल होते रहे, शत्रु-सेनाके मानसे मगोल पीछे हटने लगते। जब शत्रु डमे पराजय समझकर वे खेडके खदेडना शुरू करते, तो मगोल चारों तरफ़से उन्हें घेर लेते। निर्णायक युद्ध-स्थल के एक तरफ़ नाथो नदी थी, दूसरी तरफ़ द्राबालनाओमें डका तोकथ पर्वत, तीसरी तरफ़ लोमनिदजके घने जंगलों में डके बड़े पहाड़। सूर्योदयके समय वा-नूकी सेना पुलकी ओर आगे बढ़ी और उसने वहाँकी रक्षक सेना पर एकाएक आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया। अब मगोलोंकी प्रधान सेना पुलके पार दीड़ी। शत्रु-सेनामें भगदड़ मच गई। युद्ध बड़े जोरका हुआ और दोपहरके करीब ही उसकी समाप्ति हो सकी। इसी समय मुबोताई बेलाकी सेनाके पीछे पहुँचा। हूगेनियन जान लेकर भगे और मगोल उनका पीछा करने लगे। दो दिनके रास्तेतक सड़को-पर युरोपियनोंकी लाशें पड़ी हुई थी—चालीस हजार आदमी मारे गये थे। बेलाका भाग्य था, जो कि अपने तेज दौड़नेवाले घोड़ोंकी सहायतासे वह बच निकला। वह दुताइ (दन्यूव) के किनारे-किनारे छिपना भागता रहा और मगोल उसकी तलाशमें फिरते रहे। अन्तमें बेला कारपेथीय पर्वतमालामें पहुँचा। मगोलोंने मगयार राजधानी पेस्तमें आग लगा दी। वह बढ़ते हुये आस्ट्रियामें न्यूस्टाट तक पहुँचे। भगोटे जर्मनो और वाहेमिया (चेको) को एक आर छोड़ने वह दक्षिणकी ओर मुड़ अट्रियातक समुद्रतटपर पहुँचे और केवल रगूमा को छोड़कर समुद्रतटके सभी नगरोंको उन्होंने लूटा-जलाया। दो महीनेके भीतर मगोल घोड़ोंने युरोपकी एलवा नदीके उद्गमसे अट्रियातकके समुद्रतटतक रौंद डाला। उन्होंने तीन महामेनाओ, एक दर्जन छोटी सेनाओंको हराया और ओलमुत्ज छोड़कर इस भूभागके मारे नगरोंको पगलित किया। स्टैनबर्गके बारोम्नावने अपने बारह हजार सैनिकोंके साथ ओलमुत्जकी बड़ी जहादुरीने रक्षा की थी। युरोपके तत्कालीन राजा हुगरीका बेला और फ्रांसका सत लुई दोनोंही योग्य थे, लेकिन मुबोदाइ, मद्गू, कै-नू और वा-नू जैसे महान् सेनापतियोंके सामने उनकी एक भी न चली।

जिन वस्तु मगोल दावानलकी तरह युरोपकी ओर बढ़ रहे थे, उसी वक्त कैसर फ्रेडरिक द्वितीय और पोप ग्रेगरी नवम का द्वंद्व चल रहा था। दोनोंने तुरन्त अपने सवर्षको बंद कर दिया। धर्मयुद्धका प्रचार होने लगा। कैसर नेपत्तम और निमित्रीका स्वामी था। वह अल्पस पर्वतमालाके पारके सभी देशोंमें अधिकार जमाना चाहता था। पोप इसके लिये तैयार नहीं था। अगस्त १२४० ई० से अप्रैल १२४१ तक—जब कि मगोल युरोपको रौंद रहे थे—फ्रेडरिकने महतराज (पोप) के नगर फायनकाको घेर रक्खा था, जिसे अन्तमें उसने अपने हाथमें कर लिया। दूसरी ओर पोपने २० मार्च १२३९ ई० को फ्रेडरिकको धर्म-ग्रहिण्य कर दिया। मालूम है कि फ्रेडरिकके विरुद्ध पोपने धर्मयुद्धकी घोषणा की और जर्मन राजकुलोंके एक समुदायको फ्रेडरिकके खिलाफ लड़नेके लिये तैयार किया। युरोपकी यह कमजोरी बनना रही थी कि वा-नूके मकल करनेकी देर थी, फिर उग्लिश-चैनेल तक कोई भी शक्ति उसकी सेनाओं तक नहीं पहुँचती थी।

**मगोल-हथियार**—नाथु कान्पीर्ना दून बनाकर जिन वस्तु मगोलिया भेजा गया, उसमें घोड़ा ही पहलें लगायेकी १२३४-४२ ई० वाली विजय-यात्रा हुई थी। कारपीनी दरबारमें इसीलिये भेजा गया था, कि जातानमें उगाइयाकी निर्मम हत्या बंद करनेके लिये प्रायत्ता करे। कारपीनीने अपने यात्रा-दिनारामे मगोलोंकी अजेय शक्तके बारेमें लिखा है—

“कोई भी अकेला राज्य या देश तास्ताग (मगोला) का मुकाबिला नहीं कर सकता। तास्तारोकी तास्ते देस बर्तकी नहीं, बल्कि दाव-पेंचकी होती है। युरोपवालोंकी अपेक्षा तास्तारोकी सभ्यता और जातीयता और शक्ति भी बड़ होती है। हमारी सेनाओंको भी तास्तारोकी तास्ते देस का मुकाबिला करने, और उन्हींके युद्ध-निधमोनों के हाथोंके साथ पालनेकी जरूरत है।



जहा तक सम्भव हो युद्धक्षेत्र ऐसा चुनना चाहिये, जहा चारो ओरकी चीजे दिखलाई पडती हो । सेनाको एक निकायमे नही लाकर खडा करना चाहिये, बल्कि उसे कई विभागोमे विभक्त करके रखना चाहिये । पता लगानेके लिये चारो तरफ चर भेजने चाहिये । हमारे सेनापतियोको रात-दिन अपनी सेनाओको सजग, सदा हथियारबद तथा युद्धके लिये तैयार रखना चाहिये । तारतार शैतानकी तरह सजग रहते है ।

“अगर ईसाई दुनियाके राजा और शासक मंगोलोके बढावको रोकना चाहते है, तो उन्हें एक सयुक्त परिषद् बनाकर एक उद्देश्यके साथ प्रतिरोध करना चाहिये । ईसाई-राजाओको चाहिये, कि वह अपने सिपाहियोको मजबूत धनुषो, लवी कमानो और तोषो से हथियारबद करे । यही हथियार है, जिनसे तारतार लडते है । इनके अतिरिक्त सैनिकोको अच्छे लोहेकी गदाओ अथवा लवे बेटवाले गडासोको रखना चाहिये । वाणके फौलादी फलोको तारतारोके ढगसे खूब लाल रहते नमक-मिले पानीमे डुबाकर तैयार करना चाहिये । इस तरह वह कवचके भीतरतक घुस सकते है । हमारे आदमियोके पास अच्छे शिरस्त्राण तथा कवच होने चाहिये, जिसमे उनकी रक्षा हो सके । घोडोके लिये भी यही बात है । जो इतने हथियारबद नही है, उन्हें पीछेकी पाती मे रखना चाहिये ।”

आस्ट्रियामे न्यूस्टाटपर पहुचकर मंगोलसेना अपनी जन्मभूमि (मंगोलिया) से ६ हजार मील दूर पहुची थी, और यहापर भी अजेय सावित हुई ।

साधु सेवलरीने मंगोलोके हथियारोके बारे मे लिखा था—

“उनके कवच भैसके चमडोके बने होते है, जिनके ऊपर जजीरे खिची रहती है । वह अभेद्य होते है जिसके कारण सैनिकका अंग सुरक्षित रहता है । वह अपने सिरपर लोहे या चमडेके शिरस्त्राण पहनते है । टेढी तलवार, धनुष-वाण उनके हथियार है । उनके वाणोके फल चार अगुल चीडे—हमारे फलोसे अधिक लवे और लोहे, हड्डी या सींगके बने होते है । उनके दात इतने छोटे होते है, कि वह धनुषकी प्रत्यचाओके ऊपर नही लग सकते । उनकी ध्वजायें छोटी तथा चमरीके काले या सफेद पूछोकी होती है, जिनके सिरेपर ऊनका गुच्छा रहता है । उनके घोडे छोटे, सुडील और मेहनती तथा सभी तरहकी कठिनाइयो को सहनेके लिये तैयार होते है । वह बिना रिकावके सवार हो उन्हें चट्टानो या दीवारोपर हरिनकी तरह कुदा सकते है ।”

यह सभी स्वीकार करते है, कि तत्कालीन जगत्मे सेना-सवधी इजिनियरी-निपुणता जितनी मंगोलोके पास थी, वैसी उस समय युरोपमे कही नही थी । उनके पाषाण-क्षेपक (कतापुल्ल) और वारूदकी तोपे गजब ढाती थी ।

जर्मन सीमात नगर लिग्निट्जसे लेकर वोल्गाके किनारे तक शायद ही कोई नगर हो, जो वा-तूकी ध्वस-लीलासे बचा हो । नगर मंगोलोकी आखोमें काटेकी तरह चुभते थे । यही नही, कि वहा उनके लिये प्रतिरोधकी सभावना थी, बल्कि स्थिर वासी लोग जिस भूमिको जोतते-बोते थे, वह मंगोल सैनिकोको अपने घोडो और पशुओके चरनेके लिये आवश्यक थी । इसीलिये वह नगरो और बस्तियोको उजाड उन्हें घासका मैदान बना देना चाहते थे । वा-तूका युद्ध मंगोलो और युरोपियोका ही नही बल्कि घुमन्तू-पशुपालो और स्थिर बस्तीवाले किसानोका भी युद्ध था । यदि इसी समय ओगोताइ न मर गया होता और मंगोल-सेनापतियोको लौटनेका बुलावा न आता, तो इसमें कोई शक नही, कि युरोपकी चप्पा-चप्पा भूमिको मंगोल-सवारोने रौद डाला होता, सारे नगरोको जला दिया होता । उनकी सफलताका कारण बतलाते हुये एक इतिहासकारने लिखा है—“घुमन्तू जातिया यद्यपि अनियमित सेना है, किंतु उन्हें बहुत आसानीसे गतिशील किया जा सकता है । वह सजग हो तैयार खडी रहती हैं । जो कुछ उनके पास है, उसे बूढो, स्त्रियो और बच्चोकी रक्षामे छोडकर वह हर समय कूच करनेके लिये तैयार रहते है । ऐसी जातिके लिये युद्ध कोई विशेष घटना नही है । घुमन्तुओंके लिये लवी यात्राये थोडेसे परिवर्तनके सिवा और कुछ नही है । उनके घोडे और रसद सब साथ-साथ होती है ।”

मंगोल आखिरतक घुमन्तू रहे । जहा यह उनकी शक्तिका एक बहुत भारी कारण था, वहा यही उनकी कमजोरीका भी मुख्य कारण था । रूसी इतिहासकार करमाजिन (१७६५-१८२६ ई०) के अनुसार—“अगर वे कृषिजीवी बन गये होते, तो शायद रूस अभी भी मंगोलोके अधीन होता ।”

वा-तूने विजय-यात्राने लौटकर मास्कोके महाराजुल यारोस्लाव ज्येवोलद-पुत्रको सारे रूसी राज-लोका सरदार बना दिया। इन्हीं समयसे मास्कोकी प्रधानता शुरू हुई। दो साल बाद गु-युक कथानके राज्याभिषेकके समय यारोस्लावको मंगोलिया भेजा गया, जहासे वह लौट नहीं सका। इसी महोत्सवमें फ्रानिस्कन नावु जान प्लानो कारपीनी (११८२-१२४६ ई०) भी शामिल हुआ था, जो पोप इन्नोसेन्ट-द्वारा मंगोल-सम्राट्को ईसाई बनानेके लिये भी भेजा गया था। वह १६ अप्रैल १२८४ ई० को ल्योन्ससे चला और जर्मनी, बोहीमिया, ब्रेस्लो, ब्राको, वोल्दमीर (वोल्हूनिया), कियेफ (४ फरवरी १२४६ ई०), तारतार-राज्य कानियेफ, ओरेन्जा (दूनियेपर दक्षिणतट), दोन, वोल्गा (वातूमराय), यायिक (उराल-नदी), कोमानियाकी पूर्वी सीमा, कण-ली, दुश, यानीकेन्त (सिरतट), तलस (तरस), इमिल, ओगोताइ-शिबिर, नेमन (२८ जून) होते राजधानी कराकोरममें पहुँचा। कारपीनीने अपनी यात्राका जो वर्णन किया है, उसमें उनके रास्तेके देशोंका अच्छा परिचय मिलता है। वा-तूके दरबारमें उसने पत्नियोंसहित खानको तख्तपर बैठे देखा। खानजादे (राजकुमार) बेचोपर बैठे थे, जिनमें पुरप तख्तकी दाहिनी ओर और स्त्रिया बाई ओर थी। उसके वर्णनसे यह भी मालूम होता है, कि मुङ्ग-खेके कथान चुने जानेमें वा-तूका खान हाथ था। उस समय छिड-गिम्-वशका वही सबसे बड़ा और सम्मानित राजकुमार था, इनलिये उसकी बातको कोई नहीं काटता था। मुङ्ग-खेने पश्चिमकी दिग्विजय में वा-तूकी बड़ी सहायता भी की थी। मंगोल वा-तूको कितने सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे, यह उसके सायन (भले राजा) के नामसे सिद्ध है।

१२५५ ई० में मुङ्ग-खेके राज्याभिषेकके समय वा-तू स्वयं नहीं जा सका। उसने अपनी जगह अपने पुत्र सरतकको भेजा था। इसी समय (१२५५ ई०) इतिल (वोल्गा) के तटपर वा-तूका देहान्त हो गया।

### ३ सरतक वा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

वा-तूने अपन ज्येष्ठ पुत्र सरतकको मुङ्ग-खे कथानके सिंहासन-महोत्सवमें भेजा था। वही वा-तूके मरनेकी खबर पा मुङ्ग-खे कथानने उसे सुवर्ण-ओर्दूके खानकी यारलिक (शासनपत्र) प्रदान करके भेजा। लेकिन वह अधिक दिनोत्तक नहीं जिया। समकालीन मंगोल इतिहास-लेखक रशी-दुद्दीन (१२४८-१३१८ ई०) के इतिहास 'जामेउत-तवारीख' के अनुसार वा-तूके मुख्य पुत्र चार थे—गरतक, तुकात, जवगान और उलकची। सरतक निस्सतान मरा और उसकी जगहपर उसके भाई उलकचीको गद्दी मिली।

### ४. उलकची वा-तू-पुत्र (१२५५ ई०)

कथानके याग्यिकके अनुसार वा-तूकी जेठी रानी वोरकचिन खातूनने उलकचीको गद्दीपर बैठाया, लेकिन वह भी जल्दी ही मर गया। अब वा-तूके मतस्वी भाई बेरेकेके लिये रास्ता साफ था।

### ५ बेरेक (वरका) जू-छि-पुत्र (१२५५-६५ ई०)

बेरेक अपने भाईके नमान ही दृढ़ योद्धा और शामक था। वह भाईके मरनेके साल ही पश्चिममें फैले विगाल मंगोल-राज्यका खान बना। बेरेकने भाईके समयमें (१२३८ ई०) ही किपचकोकी भूमिमें विजय प्राप्त की अपनी योग्यताका परिचय दिया था। कुछ इतिहासकारोंके अनुसार बेरेक प्रथम मंगोल गान्तुगा था, जिनने ज्यंगम-धर्म बखूल किया, यद्यपि उनका यह अर्थ नहीं, कि उसके समय हीसे सुवर्ण-ओर्दूके खानोंमें इस्लामकी प्रवृत्ति चल गई। उनके लिये अभी आठवें उत्तराधिकारी उज्वेक (१३१३-४० ई०) के जानेही प्रतीक्षा थी, जो कि वा-तूकी पाचवीं पीढ़ीमें पैदा हुआ था। 'शजरतुल्-अतराक' के अनुसार वरका खान मुमगान था। कुछ इतिहासकोंमें लिखा है, कि वह मुमलमान-नामसे पैदा हुआ था। दूसरी प्रवृत्ति यह है—पैदा होनेपर बहुत चाहा, कि वरकाकी माका दूध उसे दें, लेकिन उसने तबतक दूध नहीं पिया, जबतक कि एक मुमगान आग्निको उसे दूध पिानेके लिये रख नहीं दिया गया। यदा तबतक वह अपने माँके दूधमें अनुत्तम जव चारों ओर घूमता भ्रमण करता रहा था, उन्हीं समय सयोगसे वह इस्लामके पुनर्प्राप्त युगानमें पहुँचा, जहा उसे एक मुस्लिम मतमें शिक्षा प्राप्त करनेका सौभाग्य

मिला, कहते हैं, “वह महान् सत (शेख) वजुरगवार हजरत शेख सैफुद्दीन वाखरजी थे, जोकि महान् हजरत शेख नजमुद्दीन कुवराके उत्तराधिकारी थे । महान् शेखके हुकुमसे वह दशते-किपचकमे हाजी तुरकानकी ओर गया, जहा ईतल नदीके तटपर खुलाकू खान (तूलिखान-पुत्र) की विशाल सेनाके साथ भारी युद्ध हुआ । दरवेशोंके पुण्य-प्रतापसे खुलाकूकी हार खानी पड़ी ।”

दूसरी कहावत—जिसमे सच्चाईका अंश ज्यादा मालूम होता है—जुजजानी द्वारा उद्धृत है, जिसके अनुसार बेरेकके पैदा होनेपर उसके बाप जू-छिने—“इस लडकेको मैं मुसलमान बनाऊंगा” यह निश्चय कर उसके लिये मुसलमान धाय रखी, खोजदमे उसे इमामो और मौलवियोंसे कुरान पढवाया । वा-तूका बेरेकके ऊपर विशेष प्रेम था । भाईके युद्धोमे उसके तीस हजार मुसलमान सवार घोड़ोकी पीठपर नमाजकी आसनी (जायनमाज) बांधे हुये चलते थे । वहा गरीयतकी सख्त पाबन्दी होती थी । मुसलमानो में कोई शराब नही पीता था । जुजजानी यद्यपि मूलत ईरानका रहनेवाला था, लेकिन वह गुलामोके शासनके अतमे नासिरुद्दीन मोहम्मदशाहके समय (१२४०-६५ ई०) दिल्ली आकर रहने लगा था । उसने अपने इतिहासमे बेरेकके सबधमे तत्कालीन कयाका उल्लेख करते हुये लिखा है—“६५७ हि० (१२५८ ई०) में समरकदसे नूरुद्दीन सूफीके महन्त जलालुद्दीन सूफीके पुत्र अशरफउद्दीन दिल्लीमें व्यापारके लिये आये । वह अपने साथ इस्लामके बादशाह नासिरुद्दीनके लिये बेरेककी भेंट भी लाये थे । वह बेरेकके पक्के मुसलमान बादशाह होनेके बारेमे बातें करते थे, जिनमेसे दोको जुजजानीने अपने ग्रंथ “तवकाते-नासिरी” मे उद्धृत किया है—(१) समरकदमे किसी ईसाईका बेटा मुसलमान हो गया । बापने हाकिमोंके दरबारमें फरियाद की, कि मेरे बेटेको बहकाकर मुसलमान बनाया गया है । स्थानीय हाकिमने भी उसका पक्ष लिया । जब इसका पता बेरेकको लगा, तो उसने मुल्लोके पक्षमे निर्णय दिया । यह याद ही है, कि मंगोल-शासक धर्मके बारेमे विलकुल तटस्थ रहते थे, जिसका बहुत कुछ पालन उनके अधीन मुसलमान अफसरोंको भी करना पड़ता था । गद्दीपर बैठनेके तीसरे सालकी यह बात बेरेकके कट्टर मुसलमान होनेका पता देती है । हो सकता है, इसीलिये उसने हिंदुस्तानके इस्लामी बादशाहके साथ सबध स्थापित करना चाहा । (२) दूसरी बात—बा-तूके बाद सरतक गद्दीपर बैठा । वह अपने मुसलमान चाचा (बेरेक)को उसके अनुरूप सम्मान नही प्रदान करता था । इसके बारेमे कहनेपर सरतकने जवाब दिया—“तू मुसलमान है, और मैं ईसाई-धर्मका माननेवाला हू । मेरे लिये मुसलमानका मुह देखना भी ठीक नही है ।” बेरेकने इस अपमानसे दुःखित हो रोते-रोते रातभर अल्लाहसे प्रार्थना की और अल्लाहने दुआ सुनकर सरतकको मार दिया । जुजजानीके अनुसार बेरेकका राज्य किपचको, सकसिनो, बोलगारो शकलाओ, रूसियोंकी भूमि तथा रूमके उत्तर-पूरवतक फैला हुआ था—जेन्द और ख्वारेज्म उसके राज्यमे थे ।

बेरेकके गद्दीपर बैठनेके समय नवोग्राद (० गोरद) गणराज्यके महाराजुल अलक्सान्द्र नेन्स्की तथा उसके भाई सुज्दलके राजुल आन्द्रेइने वधाई और भेंट भेजी थी । वा-तूकी पश्चिमकी विजय-यात्राको फिरसे जारी करनेका बेरेकको ख्याल आया, लेकिन पीछे खुलाकू (ईरान) खानके साथ झगडा हो जानेसे वह वही उलझा रहा और पश्चिमी यूरोपको मंगोल-खतरेसे मुक्ति मिली । तो भी १२५९ ई० मे बेरेकने अपने सेनापतियो वुरुन्दे, नोगाई और तुतुबुगाको दिग्विजयके लिये भेजा था । वह लुव्जिन होते विस्तुला नदी पार कर २ फरवरी १२५९ ई० को सेन्दोमीर पहुंचे । और जगहोमे लूट-मार और अधीनता स्वीकार करानेमे कोई दिक्कत नही हुई, लेकिन सेन्दोमीरवालोने प्रतिरोध किया, जिसपर मंगोलोने वहाके लोगोका कत्ले-आम कर दिया । पोलैंदकी तत्कालीन राजधानी काको फिर नष्ट हुई । मंगोल-सेना ओपेलनतक पहुंची, जहासे लूटके साथ भारी सख्यामे ईसाई दासोंको लिये लौट गई । बेरेककी दो राजधानिया थी—वा-तूसराय और बुल्गारी, जिनमें बुल्गारी बुल्गारो (बोलगारो) की पुरानी राजधानी वर्तमान कजानके आसपास बोलगा और कामा नदियोंके सगमपर अवस्थित थी ।

**खुलाकूसे संघर्ष**—“तारीख-शेखेउवेस” (१३५६-७४ ई०) के अनुसार : “उस समयके रवाजके अनुसार बेरेकके कितने ही अमीर, खानजादे (राजकुमार) और सैनिक गर्मियोंको आजुर-वाइजानमें

बिताया करते थे। इलखान (खुलाकू) भी जाडोमे चगातू और गर्मियोमे अलदकमे रहता था। मराय-वेरेकने मुहम्मदावाद (अरानि) होने गुस्तास्क तक वह अरावो (गाडियो) पर आते।" आजुर-वाइजान आजकी तरह उस समय भी दो राज्यों में बंटा था—उत्तरी भाग मुवर्ण-ओर्दूके हाथमे था और दक्षिणी भाग इलखान (खुलाकू-वग) के हाथमे। मंगोल ओर्दू अपने-अपने पशुओंके साथ चरवाहीके लिये सारी भूमिमें बिखरा रहना, उसका जाडा और गर्मी बितानेका अर्थ केवल एक जगहपर रहकर मनोबिनोद करना नहीं था। झगड़ेके लिये वहां कोई भी कारण पैदा होना आसान था। वेरेकके भाई दुआल (मोवाल) के पुत्र तुतार (ततार)ने कुछ गुस्ताखी की, जिसके लिये उसे खुलाकूके पास लाया गया। खुलाकूने उसे उसके चचा—वेरेक (वरका) के पास भेज दिया। वेरेकने फिर उसे खुलाकूके पास कान मलनेके लिये भेजा। उसे यह स्याल नहीं था, कि भतीजेको खुलाकू मौतका दण्ड देगा, लेकिन खुलाकूमे सब कुछ पहले ही प्यारा हो चुका था। मुवर्ण-ओर्दूके जमीरोने कुछ छेड़-छाड़ की, और खुलाकूको उन्हें दंड देनेके लिये सेना भेजनी पड़ी थी। अमीर हारे। उनमें से अमीर निकुदेरके अधीन कुछ मंगोल-सेना खुरामानके गन्तें भागी। उसने गजनी और बिनिकके पहाडोको लेते मुलतान और लाहौरतक अपना अधिकार जमाया। कुमार ततारके मारे जानेके बाद अब दोनों वशोमे शत्रुताकी आग जोरमे भड़क उठी। वेरेक इस्लामका वादशाह था और खुविले खानका भाई खुलाकू काफिर। वेरेकने उसके ऊपर इल्जाम लगाया—“उस (खुलाकू) ने मुसलमान नगरोको नष्ट किया, इस्लामी वशोको खत्म किया, अकारण ही खिलाफतका जट-मूलमे उच्छेद किया।” भतीजेका बदला लेनेके लिये वेरेकने ततारके पुत्र नोगाइको तीन तुमान<sup>२</sup> (तीन हजार) सेना देकर वापके खूनका बदला लेनेके लिये भेजा। वह शिरवान पहुंचा। उबर पाकर खुलाकूने सारे ईरानमे सेना जमा कर तीन तुमान सेना शिरामून नोयन, अबताइ नोयन और ममगरके नेतृत्वमें भेजी। २० अगस्त १२६२ ई० को स्वयं खुलाकूने भी अलतगासे प्रस्थान किया। अक्तूबर-नवम्बर १२६२ ई० (जुलहिजा ६६० हि०) में दोनों ओरकी भारी लड़ाई हुई। अबताइ नोयनने शिरवानमे एक फरसख (कोम) पर मुलतानचुका नदीके किनारे नोगाइको बुरी तरहसे हराया। नोगाइ जान लेकर भागा। इलखानकी सेनाने २० नवम्बर १२६२ ई० (६ मुहर्रम ६६० हि०) आगे प्रस्थान किया। दग्वन्दके घाटेमें—जहां काकेगम पहाड तथा कास्पियन समुद्र एक दूसरेके बिल्कुल नजदीक था जाते हैं—फिर जमकर जवर्दस्त लड़ाई हुई। वेरेककी सेना फिर हारी। खुलाकूकी सेनाने दग्वन्द पार हो कियचक भूमिको लूटा-वरवाद किया। तो भी मुवर्ण-ओर्दूके खानकी शक्ति अभी क्षीण नहीं हुई थी। वह सेना एकत्रित करते अवसर ढूढता रहा। इलखानकी सेना लौटते हुये तेरक नदीके तटपर पहुंची। जाटोके कारण नदीका पानी जम गया था। १३ जनवरी १२६३ ई० को सबेरेसे शामतक उलखानी सेना उसपरसे पार होती रही। यकायक नदीकी जमी बर्फ टूट गई, जिससे बहुत-से लोग पानीमें डूब मरे। खुलाकूकी सेना मुवर्ण-ओर्दू मैनिकोकी मार खाती पीछे हटी। इसी समय २२ अप्रैल १२६३ को खुलाकू युद्धमे घायल हो गया, जिससे ८ फरवरी १२६४ ई० को वह मराग-जगातमें मर गया। लेकिन अब वापके कामको उसके योग्य बेटे अबका खान (आरिक बूगाखान) ने अपने हाथमे ले लिया।

१२ जुलाई १२६५ ई० में अबकाखानने राजकुमार यशमूतके नेतृत्वमें एक बड़ी सेना शिरवानकी ओर भेजी। खान स्वयं जाडोमे माजन्दरानमे रहा। उबर उत्तरमे राजकुमार नोगाइ भी सेना ले शिरवानकी ओर चढ़कर अकसू नदीके तटपर पहुंचा। यशमूत कुग नदी पार हो गया। १४ नवम्बर १२६५ ई० को दोनों सेनाओंमें लड़ाई हुई, जिसमें तुगाचारका बाप कायर बूगा मारा गया। सेनापति नोगाइ भी गिने आहत हुआ। मुवर्ण-ओर्दूकी सेना नितर-वितर हो शिरवानकी ओर लौटी। अब वेरेक स्वयं तीस तुमान<sup>२</sup> (तीन हजार) सेनाके साथ आया और दक्षिणमे अबकाखान भी मुकाबिलेके लिये चला। दोनों सेनायें तुग नदीके दोनों तटोपर आमने-नामने पत्तिबद्ध हुईं। १४ दिनतक यही हालत रही। वेरेक नदी पार होनेका कोई अवसर न देन ऊपर पहाडमें कहीं पार होनेके म्यालमे नदीके किनारे-किनारे निर्ग—री आन चला, लेकिन अमफर-मनोग्य हो गन्तेंमें ही उदरशूल (कुलज) की बीमारीमे मर

<sup>१</sup> “शाने-उन्-नाराय” (ग्यीबुद्दीन) २ १ तुमान=१० हजार।

गया । दोनों प्रतिद्वंद्वी बरेक और खुलाकू मर गये, लेकिन उनकी दुश्मनी खतम नहीं हुई । बरेककी लाशको सड़कमे वदकर वा-तूसरायमे ले जा भाईके पास ही दफन कर दिया गया ।

बरेककी सेना खुलाकूसे उलझनेके पहले इस्ताम्बूल (कन्स्तन्तिनोपोल) तककी भी विजय-यात्रा कर चुकी थी, जबकि वहाके राजाने क्रिम नगरको सुवर्ण-ओर्दूके खाकानको प्रदान किया था ।

बरेककी मृत्युके बाद फिर वा-तूकी सतानोमे गद्दी चली गई और तोगोन-पुत्र मङ्गू तेमूर खान बना ।

## ६. मङ्गू तेमूर, मुङ्गू-खे तेमूर (१२६५-८० ई०)

खुविले खाकानने बरेकके बाद मुङ्गू-खे तेमूरको खानपदकी यारलिक भेजी । यद्यपि उस समय मङ्गू तेमूर खुविलेका कृपापात्र था, लेकिन पीछे उसके विरोधी ओगोताइ-वशी कँदू खानका समर्थक बन गया, जिससे खुविले उसका विरोधी हो गया । रूसके राजुल मङ्गू तेमूरके आज्ञाकारी सामंत थे । सुवर्ण-ओर्दू की राजधानी सराय (सराय चिक)मे युरोपीय राजा और राजकुमार भी भेट लेकर कोर्निस वजानेके लिये आते थे । अब मंगोल-वश सभ्यता और संस्कृतिका प्रतीक समझा जाता था । रूसके राजुल और महाराजुल मंगोल पोशाक और दरबारी रीति-रवाजोको अपने लिये आदर्श मानते थे । इस आदर्श का अनुगमन १८वीं सदीके आरम्भतक किया जाता रहा, जब कि प्रथम पीतरने इन पुराने तरीकोको तुच्छ समझ रूसका युरोपीकरण शुरू किया । मङ्गू तेमूरके १५ सालके शासनमे सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति और राज्यविस्तारमे कमी नहीं हुई । हा, खुलाकू-पुत्र अबकाखानके साथ चलते झगडेके कारण वह कोई नया काम नहीं कर सका । मङ्गू तेमूर अपने न्याय और बुद्धिमानीके लिये प्रसिद्ध था, जिसके लिये ही उसे लोगोने केलेकखानका नाम दे रखा था ।

## ७ तुदा-मङ्गू तोगोनपुत्र (१२८०-८४ ?)

तुदा-मङ्गू तुकूकान (तोगोन) का तृतीय पुत्र तथा मङ्गू तेमूरका भाई था । इसकी रानी तुरे कुतुलुक और दादी वा-तूकी प्रभावशाली रानी बोरकचीन दोनों—अलची तातार कबीलेकी थी । तुदा-मङ्गू निर्वल शासक था । जिससे लाभ उठाकर मङ्गू तेमूरके पुत्रो—अलगू और तुगरल एव तोगनके ज्येष्ठ पुत्र तरबू (दरतू) के पुत्रो कुनचोग और तुला बुकाने मिलकर खानको पागल कहकर उसे गद्दीसे उतार पांच सालतक मम्मिलित राज्य किया ।

यस्सू-मङ्गू ( . -१२८९ ई० )—“शजरतुल-अतराक” ने यस्सू-मङ्गूको तुदा-मङ्गूका उत्तराधिकारी कहते—“यस्सू मुङ्गू-खान विन-तोगान विन-वातू-खान विन-जोजी-खान विन-चगिस-खान”—पाचवा खान लिखा है । सुवर्ण-ओर्दूके ये पांच साल ऐसे गृह-कलहके थे, जिसमे जहां-तहां अनेक खान बने हो, यह संभव है । इस अव्यवस्थाका अंत तोकतोगूके खान बननेके साथ हुआ ।

## ८ तोगताइ, तोकतोगू, मंगूतेमूर-पुत्र (१२८९-१३१३)

सेनापति नोगाइ अपने ओर्दूकी इस दुरवस्थाको चुपचाप देख नहीं सकता था । अतमे उसकी नजर मङ्गू तेमूरके पुत्र तोकतोगूके ऊपर पड़ी । तोकतोगूकी मा उलजइ खातून केलमिश अकाखातूनकी पोती या नतिनी थी । अराजकताके समय राजकुमारोकी हत्या आम बात थी, जिसके डरके मारे तोकतोगू भाग गया । बरेकचरके पुत्र विलिकचीने उसकी सहायता की । उसने वा-तू और बरेकके समयके प्रसिद्ध सेनापति नोगाइको बुलवाया । अका (ज्येष्ठ) कहकर तोगताइने बहुत लल्लो-चप्पो करके उसे अपनी ओर कर लिया । नोगाइका ओर्दू उजी (दुनियेपर)की उपत्यकामें रहता था । वही सेना और सेनपोको एकत्रित कर नोगाइने समझाते हुये कहा, कि मुझे सायन (वा-तू) खानने आज्ञा दी थी, कि उलुस (ओर्दू) को छिन्न-भिन्न होनेसे बचाना । नोगाइको अपने विरुद्ध होते देख तरबू और मङ्गू-तेमूर के पुत्र पितामह नोगाइके साथ हो गये । नोगाइने कहा—अपने झगडेका फैसला उलुसको छिन्न-भिन्न करके नहीं, बल्कि कूरिल्ताई (महासद) के निश्चयके अनुसार करो । तोगताइने इसी बीच सेना जमा कर इतिल (बोल्गा) उपत्यका में पहुंच राजधानीको ले लिया । लेकिन नोगाइ तोगताइके हाथमें खेलना

नहीं चाहता था। तोगताइने उसे बहुत सी भेंट-पूजा देकर अपनी ओर मिलानेका असफल प्रयत्न किया, तो भी अभी दोनोंका सवध बहुत बिगड़ा नहीं था। इसी बीच धर्मको लेकर दोनोंमें भयानक अनबन हो गई।

**नोगाइके साथ सघर्ष**—तोगताइका समुर सलजीदइ वरगान प्रसिद्ध ककुरत कबीलेका पुराना अमीर था। उसकी बीवी केलमिश अकावातूनकी पुत्री अलजई खातून तोगताइकी प्रभावशाली रानी थी। केलमिश अकाने अपने पुत्र याइलगका व्याह नोगाइकी पुत्री कवकसे करना चाहा। नोगाइने इसे स्वीकार किया और दोनोंका व्याह हो गया। व्याहके थोड़े ही समय बाद कवक खातून मुसलमान बन गई। उसका पति तथा समुर-परिवार बौद्ध (उडगुर) था, इसलिये कवकके साथ याइलग और उसके माता-पिता घृणा करने लगे। लडकीने अपने मा-बाप और भाईको इसके बारेमें कहा। नोगाइ बेटीका अपमान नहीं देख सका और उसने नोगताइसे माग की—“यदि मेरे और अपने बीच पिता-पुत्रका सवध कायम रखना चाहता है, तो सलजीदइ करजूको मेरे हाथमें दे दे। तोगताइ अपने समुरके साथ ऐसा वर्ताव कैसे कर सकता था? उसने समझानेकी कोशिश की—“वह मेरा पिता और सरक्षक रहा है। पुराना अमीर है। कैसे उसे शत्रुके हाथमें दे दू?” नोगाइकी बीवी चवी बड़ी चतुर स्त्री थी। उसके तीनो पुत्र—जूखे, तेके और तूरी—सरकारी सेनाके कुछ हजार आदमियोंको वहका कर इतिल (बोल्गा) पार भाग गये। तोगताइने नोगाइसे हजारी सेनाको लौटा देनेके लिये कहा, लेकिन उसने तबतक वैसा करनेमें इन्कार कर दिया, जबतक कि सलजीदइ या उसका पुत्र याइलग उसके पाम नहीं भेज दिया जाता। अब सीधे सघर्ष होना निश्चित हो गया।

तोगताइ नोगाइकी शक्तिको जानता था। उसने उससे भिड़नेके लिये अक्टूबर-नवम्बर १२८९ ई० (६९८ हि०) में उजी (दनियेपर) के तटपर तीस तुमान (तीन लाख) सेना जमा की। उस साल जाटोमें दनियेपरकी धार नहीं जमी, इसलिये सेनाको पार ले जाना संभव नहीं हो सका। नोगाइ अपनी जगह बैठा रहा। सन् १३०० ई० के वसंतमें तोगताइके ओर्दूने तान नदीके तटपर गर्मी बिताई। सीवी लडाई करनेकी जगह खुर्यैट सेनापति कल-बल-छलसे काम लेना चाहता था। ऊपरसे उसने खानको कहला भेजा—मैं चाहता हूँ, कूरिल्टाई बुलाकर फैसला किया जाय। लेकिन, दूसरी ओर धोखा देकर वह तोगताइके ऊपर आक्रमण करना चाहता था। खानको यह पता लगते देर न हुई। उसने जल्दी-जल्दी सेना जमाकर तान-उपत्यकाके बखनियारी (नजीमारी) स्थानपर लडाई की। तोगताइको हारकर सरायकी ओर भागना पड़ा। इसी समय अमीर माजी, मुतान (मुवान) और समुर तीन अमीर नोगाइका साथ छोड़ अपने खानके पाम चले गये। तोगताइ फिर तैयारी करने लगा। उसने बहुत कालसे दरबदके घट्टपाल रहते आये बलग-पुत्र तमातोकतूको बुला भेजा और उसके नेतृत्वमें एक बड़ी सेना नोगाइके विरुद्ध भेजी। नोगाइको लड़नेकी हिम्मत नहीं हुई। वह उजी (दनियेपर) नदीकी ओर लौट गया। क्रिम नगरमें पहुँचकर उसने बहुतमें लोगोंको दासके रूपमें बँचनेके लिये बंदी बनाया। लोगोंने तोगताइके पाम मदेश भेजा—“हम इलखान (तोगताइ खान) के सेवक और अनुचर हैं। यदि स्वामीकी आज्ञा हो, तो हम नोगाइको पकड़कर भेज देंगे।” नोगाइके पुत्रोंको इसकी भनक लग गई और उन्होंने एक हजार सेना उनके ऊपर भेजी। हजारी सेनापतिने नोगाइके दूसरे पुत्र तेकेको खान बनानेका लोभ देकर धोखा रचा। इसपर तेकेने आक्रमण कर हजारी सेनाको हराया और उसके अमीरका मिर कटवा लिया। नोगाइ दलके भीतरके झगड़ोकी खबर तोगताइको बराबर मिल रही थी। वह साठ तुमान (६ लाख) सेनाके साथ उजी पार हो तरकू (वरकू?) नदीके तटपर पहुँचा, जहापर कि पहले नोगाइका ओर्दू रहा करता था। नोगाइके पाम तीस तुमान थे, लेकिन वह स्वयं बीमार था। उसने आदमी-द्वारा तोगताइके पाम मदेश भेजा—“तेरे सेवक (मैं) ने नहीं जाना, कि स्वयं स्वामी पचारा है। उसकी गरदारी तथा सेना तेरी (इलखानकी) है। सेवक बूढ़ा निरबल आदमी है। उसने मारे जीवन तेरे पिताकी सेवा की।” ऊपरसे इस तरहकी बातें करते भी नोगाइने अपने पुत्र जूकेको एक बड़ी सेना के तरकू नदी पार हो तोगताइपर आक्रमण करनेके लिये कहा। यह मालूम होनेपर तोगताइने भी प्रहार करनेका हुक्म दिया। युद्धमें नोगाइ और उसके पुत्रोंकी पूरी तीरसे हार हुई। हजार सवारोंके साथ

नोगाइके पुत्र भागकर केलारो और वाश्किरोमे चले गये । घायल नोगाइ सत्तर सवारोके साथ भागा जा रहा था, जब कि तोगताइके रूसी सैनिकोने उसे रास्तेमे पकड़ लिया । नोगाइने कह दिया—  
“मैं नोगाइ हूँ, मुझे तोगताइ खानके पास ले चलो ।” रूसी सैनिक उसे ले चले, लेकिन नोगाइ रास्तेमे ही मर गया ।

विजयके बाद तोगताइ वा-तूसराय लौटा । नोगाइ-पुत्रोको कही त्राण नहीं दिखाई पड़ा । यह हालत देखकर उसकी मा चवी और तूरीकी मा वाइलकने सलाह दी, कि खानके शरणमे चले चलो । इससे नाराज होकर पुत्रोने उनको मार डाला ।

नोगाइ केवल एक सफल महासेनापति ही नहीं था, बल्कि वह कुटिल नीतिका पक्का खिलाडी था । शायद धर्मकी बात बीचमे न आ गई होती, तो बात यहातक न पहुँचती । १३वीं सदीके अंत होते-होते मंगोल-सरदार और सैनिक बौद्ध धर्मको पूरी तौर से अपना चुके थे और इस्लामके प्रति उनका रुख सहानु-भूतिका नहीं था, यद्यपि राजकाजमे अब भी वह तटस्थताका व्यवहार करते थे । वह नहीं चाहते थे, कि राजवश और सामंतवशमे अरबोका धर्म फैले । यद्यपि सुवर्ण-ओर्दू और खुलाकूके वशमें घोर शत्रुता थी, लेकिन खुलाकूका इस्लामके ऊपर अत्याचार और खलीफा-वशका उच्छेद करना मंगोलोमे अभिमानकी बात समझी जाती थी । वह क्यों पसंद करते, कि उनके घरमे ही विभीषण पैदा हो ।

नोगाइने जब तोगताइ खानसे झगडा मोल लिया, तो उसने अपने पुराने शत्रु तथा वापके घातक खुलाकू-वशसे भी सहायता लेनेकी कोशिश की । उसने खुलाकूके पुत्र अबका खानके पास अपने पुत्र तुरी तथा पत्नी चूवी (चवी) के साथ अपनी एक लड़कीको भी व्याहके लिये भेज दिया । अबकाने भी तुरीकी अपनी कन्या प्रदान की । वह कुछ समयतक ईरानमे रहकर नोगाइके पास लौट आये । झगडा और बढ़नेपर नोगाइने ईरानके खान गजन (१२९५-१३०४ ई०) से मदद मागी, लेकिन गजन इसके लिये तैयार नहीं था । उसने मदद देने हीसे नहीं इन्कार कर दिया, बल्कि तोगताइको सदेह न हो, इसके लिये जाडा अरानि (दक्षिणी काकेशस) मे न बिता बगदादमे बिताया । वह बराबर नोगाइको तोगताइसे मिलकर रहनेके लिये कहता रहा ।

तोगताइने तुलाबुगाका पक्ष लेनेके अपराधमे अपने भाई तुगरलको मरवा दिया था । फिर भाईकी विधवाको अपनी रानी बना तुगरलके बेटे उज्वेकको खतरनाक चेरकासोके देशमे भेज दिया । चौबीस वर्षके सघर्षमय जीवनके बाद उसके हृदयमे पश्चात्ताप होने लगा था । उसने यह बात अपनी रानीको बतला दी और दो बेगोको राजकुमार उज्वेकको बुलानेके लिये भेजा । अभी उज्वेक नहीं आया था, इसी बीच (९ जुलाई १३१२ ई० \*) इतिल (वोल्गा) नदीमे नौका-विहार करते तोगताइ डूबकर मर गया । तोगताइ-पुत्र तुगल जानता था, कि उज्वेक अपनी माके प्रभावसे गद्दीका मालिक बन जायगा, इसलिये उसने उसके मारनेका षड्यंत्र रचा । उज्वेकको यह बात मालूम हो गई । सरायमे आनेके बाद उसने महलमें घुसकर तुगलको मार डाला ।

## ९. उज्वेक खान तुगरल-पुत्र ( १३१३-४० ई० )

उज्वेकका शासन इसलिये भी महत्वपूर्ण है, कि इसके समयसे सुवर्ण-ओर्दू पूरीतौरसे मुसलमान बनने लगा ।

(१) आपसी सघर्ष—उज्वेकके शासनारम्भके समय जो षड्यंत्र हुआ था, उसके बारे मे “तारीख-हैदरी” (हैदर राजा १६११-१८ ई०) के अनुसार तोगताइके बाद अमीरो और नोयनोने बादशाह चुननेके वारेमे एक सभा की, जिसमें वह उज्वेकको गिरफ्तार कर उससे पूछनेवाले थे, कि क्यों तुमने छिड़-गिस्के यस्तकको छोड़कर अरबोके धर्मको अपनाया । इसी समय एक अमीरने आखसे इशारा किया, और उज्वेक पेशाब-पाखानेका बहाना करके सभासे निकलकर भाग गया । फिर सेना जमाकर लड़कर उसने बीस राजकुमारो और तोगताइके दो पुत्रोका कतल कर १३२२ ई० (७२२ हि०) में अपने राज्यको निष्कटक किया । तबसे जू-छि खानाका उलुस “उज्वेक-उलुस” कहा जाने लगा । आरम्भिक सहायताओके लिये उज्वेकने कुतुलुक तेमूरको खुरासान वरुश दिया ।

खानके अपने परिवार तथा अमीरोके परिवारोंमें अब धर्मको लेकर झगडा और भी ज्यादा बढ़ चला। नोगाईकी लडकीका मुसलमान होना एक अलग-थलग घटना नहीं थी। हमें मालूम है, सुवर्ण-ओर्दू और दूसरे मंगोल खानोंकी सेनाओंमें भी मंगोल-सैनिक दालमें नमकके बराबर थे। सारे मध्य-एशिया और उसके उत्तरके घुमटू तुर्क एक बार अवश्य मंगोलोंके खिलाफ खूब लड़े, किंतु परास्त होनेके बाद वह लुडकती वर्षाकी गेदकी तरह मंगोल ओर्दूका अंग बनते गये। विजयोंमें उनका पहले हीसे बहुत हाथ था, और उनकी लूटको वह अपना उचित हक समझते थे। तब भी मंगोल और अ-मंगोलमें अंतर रक्खा जाता था, यह हम चीनके वारेमें लिखते वक्त बतला चुके हैं। यद्यपि मंगोल खान दूसरोंकी लडकिया लेनेमें एतराज नहीं करते थे, उनके हरम देश-देशकी सुन्दरियोंसे भरे थे, लेकिन वहां भी प्रधानता मंगोल रानियोंकी ही थी—बापकी ओरसे छिद्र-गिसूका रक्त और माकी ओरसे शुद्ध मंगोल सामंतका रक्त होना आवश्यक समझा जाता था। शक्तिशाली खानों के समय चाहे बहुसंख्यक तुर्क सैनिक इस भेदभावको वर्दाश करते हो, लेकिन अब परिवर्तित अवस्थामें वह बराबरीका दावा करने लगे थे। समरकंद हो या तबरेज, मराय-बातू हो या काश्गर, सभी जगह मंगोलोंकी अलग सत्ता बनाये रखनेकी बराबर कोशिश की गई, किंतु आगिर वह बूढ़ बनकर तुर्कसमुद्रमें मिल गये और उनके शासनके अंत होनेके कुछ ही समय बाद यह जानना भी मुश्किल हो गया, कि कौन मंगोल है। और तो और, स्वयं “गर्जतुल-अतराक” जैसे इतिहासकारने भी तुर्क और मंगोलका भेद भुलाकर मंगोल-वश-वृक्षको तुर्क-वश-वृक्ष लिखा।

अपने वीर पक्षपाती सेनापतियोंको हराकर उज्वेकने यह दिखला दिया, कि अब मंगोलों की नहीं, बल्कि तुर्कोंकी तूनी बोलेगी। १३१५ ई० में सुवर्ण-ओर्दूके विद्रोही सेनापति बावाने अपने ओर्दूके साथ ईरानमें जा उलजैतू खान (१३०४-१७ ई०) के पास शरण ली। अभी ईरानी इलखान मुसलमान नहीं हुए थे, इसलिये उलजैतू बावाकी मददके लिये तैयार था। बावाने ईरानसे ख्वारेज्मके ऊपर आक्रमण किया और उज्वेकके कृपापात्र कुतुलुक तेमूरको मार भगाया। चंगताइ खान इस्सन “जेल-जामे-उत्तवारीख” के अनुसार बावा ओगुलकी घटना सितंबर १३१५ ई० (जमादी II अंतिम ७१५ हि०) को हुई, जब कि वह अपने तुमान (दस हजार मेना) के साथ उज्वेकसे नाराज होकर खुलाकू-वशी खान उलजैतू के पाम चला गया। फिर वहाँमें डेढ़ हजार सवारोंको लेकर उज्वेकके सामंत कुतुलुकके ऊपर प्रहार करने ख्वारेज्म गया। कुतुलुककी हार हुई और उसकी मारी सेना बावा ओगुलकी ओर हो गई। ख्वारेज्मके शहरो—जमशवर, गरवीन, हजारास्प, हजाराजमीन, कात, केरमारोन, शावकान आदिको लूटकर उसने उजाड़ दिया, लोगोपर बड़े जुल्म किये। बावा ओगुलके सैनिकोंने पतियोंके सामने उनकी वीवियोंके साथ व्यभिचार करनेमें भी आनाकानी नहीं की। ७०० के करीब इमाम और अशरफ (कुलीन लोग) जान बचानेके लिये मीनारपर चढ़गये थे। बावाने लकड़ी जमाकर आग लगानेका हुक्म दिया। सासतसे मरनेकी जगह बापोने अपने बेटोंको मीनारसे नीचे गिरा दिया। बावाके हाथमें पचास हजार कैदी और लूटकी अपार संपत्ति आई। जब इसकी खबर चंगताइ खान एमेनबुगाको खोजन्दमें मिली, तो उस (इस्मिन बुगा या यम्माबुग १३०९-१८ ई०)ने अपने पड़ोसमें बावाकी सफलता देखना पसंद नहीं किया। वह बीस हजार सवारोंके साथ एक महीनेके रास्तेको हफ्तेमें पूरा करके ख्वारेज्म पहुँचा। बावा ओगुलमें जयदस्त लड़ाई हुई, जिसमें उसके बहुतसे आदमी मारे गये। बावाने बंदियोंको छोड़ दिया। लूटकी संपत्तिमें भी उसे हाथ डोना पडा और वह कुछ सवारोंके साथ जान बचाकर मेवंकी ओर भागते चंद थाहजादोंके साथ उलजैतूके पाम पहुँचा। चंगताइ और वा-तूके बशोंमें अब दोस्ती हो गई थी।

अपने ख्वारेज्मके उज्वेकका बहुत नाराज होना स्वाभाविक था। उसने इसमें उलजैतूका हाथ समझा। फिर दोनों ओरमें दूनोका आना-जाना होने लगा। यह खबर जब चंगताइ खान इस्मिनबुगा ने सुनी, तो उसने उज्वेकको अपनी ओर मीननेका प्रयत्न करते हुये मदेश भेजा—“तेमूर कआन (चीन) कहता है, कि उज्वेक क्या वादगाह है? मैं उसकी वादगाही दूसरे उलुम (ओर्दू) को दे दूंगा।” इस पर उज्वेक भी कजानने विगड उठा।

सर्पाकी गवर्नेमें पहुँचे ही मिनवर १३१५ ई० (जमादी अंतिम ७१५ हि०) को चीनमें कआनका महादूत कियान-वशी अकबुका ईरानकी राजधानी तबरेजमें पहुँचा। अमीर हुसैन गूरगान ईरानी-खानका



प्रमिद्व अमीर था। वह उस समय उज्वेकके सीमातके प्रदेश अरनिसे तवरेजमे आया हुआ था। उसने महादूतकी जियाफत की और खानेके समय प्यालेको बैठे-बैठे अकबुकाके हाथमे देना चाहा। अकबुका डम्पर नाराज हो दुत्कारते हुये बोला—“तू सामन और दुर्गपाल होते मेरे सामने बैठा चाहता है, कि मैं तेरे हाथमे प्याला ले लू। तू छिड-गिसी यास्सा और पुराने शिष्टाचारको भूल गया?” अमीर हुसेनने भी उसका मीधा जवाब दिया—“अमीर इस समय दूत होकर आया है, न कि छिड-गिसी यास्साका शिक्षक बनकर।” महादूत चुप हो गया।

कआनके दूत ने सुलतानियोमे जा उलजैतू खानसे कआन का सदेश कहा—“यदि बाबा ओगुल स्वयं ख्वारेज्मपर आक्रमण करने गया, तो उसे मेरे पास भेज दो।” खानने कहा—“मुझे खबर नहीं, मैं ऐसे बुरे कामकी हरगिज इजाजत नहीं दे सकता था।” उलजैतू नहीं चाहता था, कि बौद्ध धर्मके पक्षपाती बाबाका समर्थन कर उज्वेक खानको जहाद घोषित करनेका मौका दे। आखिर वह स्वयं इस्लामके केंद्र (ईरान, इराक, शाम) का शासक था, जहादकी हवा उसके देशमे भी घातक साबित होती। उसने उज्वेकके दूतके सामने बाबाको मरवा डाला और भारी भेंटके साथ स्नेहपूर्ण सदेश देकर महादूतको लौटा दिया।

१३१७ ई० (७१८ हि०) मे उलजैतू मरा। उस समय अभी उसका उत्तराधिकारी अबू-सईद छोटी उमरका था। यह खबर जब दग्ते-किपचक गई, तो उज्वेकके मुहमे पानी भर आया। वेशुमार सेनाके साथ वह दरवदके रास्ते ईरानकी ओर बढ़ा। खान अबू-सईद (१३१७-३४ ई०) भी अपने अमीरोके साथ करावागकी ओर चला। अमीर चोवान एक बड़ी सेना ले गुर्जिस्तान (जार्जिया) के रास्ते उज्वेकके मुकाविलेके लिये बढ़ा। अमीर ईमन कुतुलुक भी एक बड़ी सेना ले तवरेजसे अरान (शिरवान) की ओर रवाना हुआ। दरवदसे खबर आई, कि उज्वेक दश्तेखिजिर (खजारोका मैदान) पार हो आगे बढ़ दरवद पहुच गया है। शिरवानको लूटते-पाटते उज्वेक कुरा नदीके तटपर पहुचा। कुरा नदी जहा चीनके व्यापारके लिये कास्पियन समुद्रतटसे कालासागरके पास तक व्यापार-धाराका काम देती थी, वहा वह खुलाकू और बा-तू-वशोके सघर्षका मुख्य स्थान रही। अमीर चोवानने उज्वेकके ऊपर इतने कौशलसे आक्रमण किया, कि उसे हार खानी पड़ी।

अमीर चोवान हुसेनका सितारा अब बहुत ओजपर बढ़ा। अबू-सईदकी नावालिगीका लाभ उठाकर उसने सारे राज्यको अपने हाथमे ले लिया। उसका मन बहुत बढ़ गया, और वह उज्वेकको और भी कडा सबक सिखानेकी तैयारी करने लगा। भारी सेना जमाकर फिर वह शिरवान पहुचा। सेनाके एक भागको दरवद पार तेरक नदीकी ओर भेजा और स्वयं अपने पुत्रोके साथ पहलेके परिचित गुर्जिस्तानके रास्ते आगे बढ़ा। लेकिन अबके उज्वेकके सामने उसकी नहीं चली और उसे खाली हाथ लौटना पडा। चीनमे कआन [बोयन्-थू-१३११-२० ई० या गेगेन १३२०-२३ ई०] को खुलाकू-वश और बा-तू-वशके खानोमे इस पारस्परिक खूनी सघर्षसे बहुत चिंता हो रही थी। उसने अपना एलची (जनदूत, महादूत) भेजा, जो पहले उज्वेकके पास गया। फिर उसके एलचीको भी साथ लेते वगदादमे अबूसईदके पास पहुचा। अमीर चोवानने उनका बडा सत्कार-सम्मान किया और चीनी राजदूतको हमदानके रास्ते विदा किया और उसके करावाग पहुचनेसे पहले ही जाकर आरामका सब तरहसे प्रबंध किया। कआनके एलचीपर इसका बहुत प्रभाव पडा और उसने अपने मालिकसे जाकर अमीर चोवान हुसेनकी बड़ी तारीफ की। कआनने खुश होकर अमीर चोवानको चारो उलुसो (बातू, खुलाकू, चंगताइ और चीन) का अमीर बनाते हुये उसके नाम चार यारलिक (शासन-पत्र) भेजे। अमीर चोवानका जिस समय इस तरह सम्मान और शक्तिवर्धन हुआ, उसी समय उसके अपने पुत्र हसन और तालिश वापसे नाराज हो ख्वारेज्म भाग गये, जहासे वह उज्वेक खानके पास पहुचे। उज्वेकने उनका बडा सम्मान किया और अच्छे-अच्छे दर्जे दिये। पीछे हसन चेरकामो द्वारा युद्धमें मारा गया और तालिश अपनी मौत मरा।

अक्टूबर १३३० ई० (७३१ हि० = १५ अक्टूबर १३३०-३ अक्टूबर १३३१ ई०) को अमीर हुसेन (चोवान) के पुत्र अमीर शेख अलीकी पुत्री अनुशिरवान खातूनका व्याह उज्वेकके पुत्र तथा उत्तराधिकारी दिनीवेकके साथ हुआ।

(२) युरोपपर अभियान (१३२३-२४)—ईरानमें फरनेसे पहले उज्बेक युरोपकी खबर लेना चाहता था। ईरानके साथ बराबर अनिर्णीत युद्ध होते रहनेसे बहुत लाभ नहीं था, जब कि युरोपके समृद्ध नगर लाभके खाम साधन थे। १३२३ ई० में उज्बेककी सेनाने लिथुवानियापर आक्रमण किया। कन्स्तन्तिनो-पोलके विजतीन "सम्राटो" के लिये भी यह बहुत सकट का समय था। मंगोलोको प्रमत्त रखनेके लिये कन्स्तन्तिनोपोलके सम्राटो और उनके सरदारोंने अपनी सुन्दर कन्याये भेंट की, तो भी वह जान नहीं बचा पाये। १३२४ ई० में मंगोल अट्रियानोपोलपर एक लाख बीस हजार सेनाके साथ चढ़ आये। उन्होंने थ्रेस प्रदेश (युरोपीय तुर्की और बुल्गारिया) को चालीस दिनोतक लूटा, बहुत-सी संपत्ति और दासोकी तरह बेचने के लिये भारी सख्यामें वदी उनके हाथ आये। जब श्रेयवालो ने चोरोकी तरह आकर हमला करनेकी निंदा की, तो मंगोल-सेनापति तासवुगा (ताशवेग) ने जवाब दिया—"हम ऐसे शासक के अधीन हैं, जिसकी आज्ञा जब होती है, उसी वक्त हम आगे बढ़ते, पीछे हटते अथवा उसी जगहपर जमे रहते हैं।"

(३) मास्को राजुल—रूसी राजुलोंके अब भी अलग-अलग राज्य थे। मंगोलोंने शासनके सुभीतेके लिये मास्कोके महाराजुलको सबका मुखिया बना दिया था, किंतु वह यह नहीं चाहते थे कि, सारा रूस एक राजनीतिक इकाई बन जाये। सुवर्ण-ओर्दूकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी। इस्लामने शक्तिशाली बनानेकी जगह आपसी झगड़े पैदा करके मंगोलोको निर्बल करना शुरू कर दिया, जिससे रूसी फायदा उठा सकते थे और मास्कोके महाराजुल जार्जने फायदा उठाया भी। उसने अपने चचा त्वेगके महाराजुल मिखाईलके खिलाफ खानका कान भरा और उसे २२ नवम्बर १३१९ ई० को अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा। उज्बेक बौद्धोका शत्रु था और इस्लामका कट्टर पक्षपाती, लेकिन ईसाई पादरियोके साथ उसका वर्तव्य अच्छा था। मास्कोके ऊपर उसकी विशेष कृपा थी। मास्कोके राजुलने रूयानके राजुलको अपने अधीन बनाया। चचेरे भाई दिमित्र (त्वेर) ने इसीमें अच्छा समझा, कि दो हजार रूबल\* वार्षिक पर अपने महाराजुल पदसे इस्तीफा दे दे, लेकिन वह वापके हत्यारेको क्षमा नहीं कर सकता था, इसलिये २१ नवम्बर १३२५ ई० में उसने मास्को-राजुलके पेटमें तलवार घुसेटकर उसका वदल लिया। इवान खलीता (१३२५-४१ ई०) अब मास्कोका राजुल बना। वह उज्बेकका और भी कृपापात्र था। उसके बाप यूरीकी हत्याको उज्बेकने एक राजभक्तका वलिदान माना। लेकिन इवान केवल राजभक्त नहीं रहना चाहता था, वह घृणास्पद मंगोलोंके जुयेको हटाकर मारे रुमकी एकतावद्ध करना चाहता था। इसीके शासनकालसे मास्को मारे रुमकी राजधानी बनने लगा, और इसीके समय तातारो (मंगोलो) को निकाल बाहर करनेके लिये रूसमें संगठन होने लगा। लेकिन साथही, इसी वक्त दक्षिणी और उत्तरी रूसमें भेदकी खाई ज्यादा हो चली। इवानने ब्लादिमिरको केवल कुछ समयके लिये ही राजधानी माना, तब भी वह श्रमर मास्कोमें रहता था। थोड़े ही समय बाद उसने राजधानीको विल्कुल मास्कोमें बदल दिया। यही नहीं उसने रूसी ईसाई संप्रदाय (ग्रीक चर्च) के महासंघराज (मेथ्रोपोलितन) को भी अपना केंद्र ब्लादिमिरमें हटाकर मास्को लानेके लिये तैयार किया, और ४ अगस्त १३२६ ई० को मेथ्रोपोलितन-मास्को चला आया। इवानने मास्कोमें पत्थरका पहला गिरजा बनवाया। उसने खानके दरबारकी कई यात्रायें कीं। १३३३ ई० में उज्बेकने उसे बहुतसे सम्मान प्रदान किये। अगले साल १३३४ ई० में वह फिर खानके ओर्दूमें था। इवानका प्रतिद्वंद्वी राजुल अलेक्सांद्र (त्वेर) जगह-जगह धक्के खाता उकता गया। उसने बोला—"ओह, अगर मैं इसी तरह निर्वासित रहूंगा, तो मेरे वच्चे उत्तराधिकारविहीन रह जायेंगे।" अन्तमें उसने उज्बेकको यह कहकर आत्म-समर्पण किया—"महान् खान, मैं तुम्हारे प्रोधका पात्र हूँ। मैं अपने भाग्यको तुम्हारे हाथोंमें देता हूँ। भगवान् और तुम्हारा हृदय जो चाहता हो, वहीं मेरे नाश करेंगे। तुम्हें मुझे क्षमा करने या दंड देनेका अधिकार है। क्षमा करनेपर मैं तुम्हारी दया-के लिये भगवान्में प्रार्थना करूंगा और दंड देना है, तो उसके लिये मैं अपने मिरको अर्पण करता हूँ।" उज्बेकने उसे क्षमा कर दिया और त्वेर (आधुनिक कालिनिन) का राज्य देकर सम्मानित किया।

\* उस समय रूबल तीन-चार इंच लंबा एक श्रगुल चौड़ा चादीका टुकड़ा होता था।

लेकिन चालाक इवान इतनेसे हार माननेवाला नहीं था। उसने तरह-तरहकी चुगलिया खाई। अलेक्साद्रको फिर बुलाया गया और २८ अक्टूबर १३३९ ई० को पुत्र-सहित उसे मार डाला गया। उज्वेकद्वारा कत्ल किये गये रूसी राजुलोमें ये दोनों छठे और सातवे थे।

एक तरफ इवान खानकी चापलूसी करनेमें सभी दरवारियोंका कान काटता था, दूसरी तरफ वह नहीं चाहता था, कि उसकी जाति मंगोलोके सामने इस तरह सिज्दा करते नाक रगड़ती रहे। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया था, कि जबतक अनेको राजुलोमें बटी रूसी जातिको एक नहीं किया जाता, तबतक मंगोलोका जुआ हटाना संभव नहीं। अलेक्साद्रको खतम करवानेसे पहले १३३३ ई० में मुज्दलके राजुलके निस्सतान मरनेपर उसके राज्यको उमने अपने राज्यमें मिला लिया। वह दृढ़ शासक था। उसने अपने राज्यमें व्यवस्था स्थापित की, और सबको आज्ञा पालन करनेके लिये मजबूर किया। रूसियोंने देखा महाराजुल और दूसरे राजुलोके राज्यों में कितना अंतर है। उमने पहलेसे मौजूद दुर्ग (क्रेमल, क्रेमलिन) को फिरसे बनवाया, मास्कोको लकड़ीके प्राकारमें घिरवाया। क्रेमलिनके अतिरिक्त उसने कई गिर्जे बनवाये, जिनमें सत मिखाइल राजदेवदूत भी एक है, जिसमें आगे रूसी राजुल दफन किये जाने लगे। शांति और व्यवस्थाके कारण मास्कोका व्यापार भी बढ़ चला। उत्तरके देशोके माल हान्स-सघके व्यापारी लाते और दक्षिणके मालको अजोफ समुद्रके रास्ते गेनोवाके व्यापारी। उसने मोलोगा नदीके मुहानेपर खोलोपगोरोदकमें पहला व्यापारी मेला लगवाया, लोगोंके ठहरनेके लिये सत्रह यात्रिगृह बनवाये। इस मेलेमें साढ़े तीन हजार चादीका रूबल इवानको मिला। देश और महाराजुल दोनोंकी संपत्ति और समृद्धि बढ़ रही थी। इवानने अपने रुपयेसे नवगोरोद, व्लादिमिर, कोस्त्रोमा और रोस्तोफमें मिलिक्यत खरीदी। खानके लिये अपनी प्रजासे कर उगाहना आसान काम नहीं था। कर उगाहनेवाले अधिकारी ही बीचमें बहुत-सा पैसा खा जाते थे। इवान तुरत कर वेवाक करनेके लिये तैयार था, फिर खानको और क्या चाहिये? १८ वीं सदीमें भारतमें प्रचलित नीतिको दुहराते उसने कर उगाहनेका अधिकार इवानको दे दिया। रूसी जनताको भी यह पमद आया, क्योंकि तातारोंके नामसे रूसियोंमें आतंक छा जाता था। खानके कर उगाहनेवाले जब हथियारबंद मंगोलोके साथ करके लिये घूमते, तो लोगोका प्राण निकलने लगता। इवान अब इस कामको बड़ी चतुरतासे करने लगा, जिसके कारण रूसियोंके एकतावद्ध होनेमें बड़ी सहायता मिली। उमने क्रेमलिनसे घोषणा की, कि अबसे हमारे परिवार तथा प्रजाके भीतरके झगड़ोको हमारे वायर (अमीर) निपटाया करेंगे। अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके ऊपर वह जरा भी दया दिखानेके लिये तैयार नहीं था। एक ओर रूसमें वह यह चाल चलते अपनेको मजबूत करनेके लिये साम और दाम दोनों तरीकोको अस्तियार कर रहा था, दूसरी ओर वह जानता था, कि उज्वेकको भी अपने हाथमें रखनेकी आवश्यकता है। वह बीच-बीचमें दौड़कर खानके दरवारमें पहुंचता और उसे बड़ी-बड़ी भेंटो और चापलूसियोंसे मुग्ध किये रहता। महाराजुल और खानमें कभी वैमनस्य नहीं हुआ, तथा दोनों एक ही साल (१३४० ई०) मरे।

इसमें शक नहीं, उज्वेक अपने ओर्दूको मुसलमान बनानेमें ही बड़ा सहायक नहीं हुआ, बल्कि चाहे अनिच्छासे ही सही सारे रूसपर मास्कोके एकाधिकारको कायम करानेमें भी उसका बड़ा हाथ था। उज्वेककी डम कार्रवाईसे मास्कोके महाराजुलकी ही शक्ति नहीं बढ़ी, बल्कि रूसी चर्चने भी उससे लाभ उठाया। रूसियोंके ऊपर अब चर्चका एकच्छत्र प्रभाव था। चर्चकी संपत्ति विशाल हो गई, उज्वेकके दिये हुये गावोंने चर्चकी भू-संपत्तिको और बढ़ा दिया। जैसे मास्को-महाराजुलके हाथमें शक्तिका केंद्रीकरण हुआ, उसी तरह चर्चके महासघराजने पादरियोंपर अपना एकाधिपत्य जमाया, जिसके लिये कि रोमन कैथलिक चर्चने पहले हीसे उदाहरण स्थापित कर दिया था।

महाराजुल और महासघराजके लिये उज्वेकने छूट कर दी थी। व्यापार और लोगोंके परिश्रमसे समृद्ध रूसकी संपत्ति उसे चाहिये थी, जो बिना तरद्दुदके खानके पाम पहुंच रही थी। पर जहातक रूसी जनसाधारणका सबब है, उसकी अवस्था पशुओंसे भी बदतर थी। मंगोल सैनिको और अफसरोके सामने पहले हीसे जहा उन्हें दात निकालना और पूछ हिलाना पड़ता था, वहा अब वह महा-

गजुलके वायव्ये भी शिकाय थे। तर्फी इतिहासकार करमाजिनके अनुसार—“किमिया और कूवानके यहर्दी सारी जानिके जीवन-रक्तको जोकोकी तरह पी रहे थे।

१३३४ ई० में ईरानपर फिर आक्रमण करनेके लिये उज्जेकने अभियान किया। अवं-मईद मुका-दिलके लिये आनेवाला था, लेकिन इसी बीचमें वह मर गया। उसके उत्तराधिकारी अरपा खानने आगे बढ़कर मानना करना चाहा, लेकिन दोनों ही पक्ष अपने अपने ऊपर पूरा भरोसा नहीं रखते थे, इसलिये उन्होंने बिना लड़े ही लौट जाना पसंद किया।

उज्जेकका शासन-काल किपचक (मुवर्ण-ओर्दू) के इतिहासमें समृद्धि की चरम सीमाका है। उज्जेकने अपने राज्यमें शांति और व्यवस्थाको इतनी अच्छी तरहमें कायम किया था, कि पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण चारों तरफमें व्यापारियोंका ताता लगा रहता था। उनकी सेना भी बड़ी जवर्दस्त थी। लेकिन उसने भी अधिक वह अपनी कूटनीति और भेदनीतिमें काम लेता था। ईरानके खुलाकू-खाने अगडा चढ़ने रहनेके कारण यूरोपके देश उसकी चोटमें बहुत कुछ बचे रहे। छिद्र-गिन् खानके समयमें ही मंगोल अंतर्राष्ट्रीय व्यापारको प्रोत्साहन देने आये थे। काला सागरके तटपर जहां कभी ग्रीक और रोमक व्यापारियोंके बड़े-बड़े दुर्गबद्ध केंद्र थे, अब वहां वेनिस, गेनोवा और दूसरे स्थानोंके यूरोपीय व्यापारी उसी कामकाज में लगे थे। अगस्त १३३५ ई० में उज्जेकके प्रतिनिधि कुतुलुब बेगने वेनिसके वाणिज्य-दूतके साथ संधि की और अस्पताल की गिर्जेके पीछे बाजारके लिये वेनिसके व्यापारियोंको जगह दी। विक्रयके ऊपर ३ सैकड़ा कर सरकारको मिलना निश्चित हुआ था।

तीस साल राज्य करनेके बाद १३४२ ई० में उज्जेक मरा। उज्जेकके मिकोपर उसका नाम निम्न रूपमें लिखा मिलता है—“नयाजुद्दीन उज्जेक खान”, “महम्मद उज्जेक खान”, “उज्जेक खान आदिल”।

(४) इस्लाममें सहानुभूति—“शजरतुल अतगक” के अनुसार उज्जेक जानने मुसलमान होनेमें पहले आठ साल राज्य किया और मुसलमान होनेके बाद तीस साल तक। लेकिन इन बातोंमें संदेह है, जैसा कि पहलेके वाक्योंमें मालूम है। उज्जेक खानको आठ साल तक काफिर रखनेमें इस लेखकका मतलब यही मालूम होता है, कि कुतुबुद्-दुनिया (जगत्-ध्रुव) महात्मा जर्गी अताके उत्तराधिकारी महात्मा मयद अताकी महिमाओं बटाया जाय। वह यह भी लिखता है, \* कि उज्जेक अपने नारे उलुमके साथ मयद अताके हाथ मुसलमान हुआ। तबसे किसीके पूछनेपर उसके उलुमके लोग अपने सरदार (बादशाह)के उलुमगा नाम लेते हैं, उसीमें उलुमका नाम उज्जेक-उलुम पड़ गया।

१३१८ ई० में ही उज्जेकने बेमुल्कके राजा और कउपुतली खलीफा तामिरके पास मिस्रमें भेठके साथ पत्र भेजा था, जिसमें उसने लिखा था—“मेरे राज्यमें अब सिर्फ मुसलमान हैं। गद्दीपर बैठते ही मैंने उत्तरी बर्खाओको वह दिया, कि या तो इस्लाम स्वीकार करो या लड़ाई लो। जिन्होंने स्वीकार नहीं किया, उन्हें मैंने लटक कर अर्थात्तना स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया।” लेकिन उज्जेकके राज्यमें तर्फी भी थे, जो मुसलमान नहीं हुये, इसलिये उज्जेकके अपने राज्यमें सिर्फ मुसलमानोंके इतने ही दानवा यही अर्थ है, कि अब मुद्दर उताके थोड़े-से वाशिदोंके सिवाय उसकी सारी एशियाई प्रजा इस्लामको स्वीकार कर चुकी थी।

उज्जेकने इस्लामिक धर्मको साथ प्रतिष्ठता स्थापित करनेकी बड़ी कोशिश की। उसने अपनी गजुलकी व्यापार मित्रके धार्मिक नासिरमें किया था। मुस्लिम इतिहासकारोंका कहना—“वह बड़ा बहादुर और दयालु था”, जो उज्जेकके अपने कालमें गलत साबित होता है। उसका राज्य ६०० फरसंग (योजन) लंबा था, वह स्वारेज्ममें पोटैन्टकी सीमाकी दूरीमें मालूम है।

(५) इन्त-वतूता-मगहर पर्यटक इन्त-वतूता १३३३ ई० में किमिया होते दग्ने-किपचक (मुवर्ण-ओर्दू भूमि) पहुंचा। वह उस देशमें वारेमें लिखता है—“वृक्ष-वनस्पतिहीन मैदान है, जहां न पहाड़ हैं न

\* “अर रने ति अज रंगा सीपुग्मद कि ई आगुदा कीन्त । नाम सरदार व पादशाह खुदाग कि उज्जेक वृक्ष, सी-गुग्मद, वडा नदर अज्जआजमा मगदुम् आमद सीनूम व-उज्जेक शुदअद ।”

जगल । लोग कडेको ईंधनके तौरपर एस्तेमाल करते है । खानकी राजधानी (सराय) एक चलती-फिरती नगरी है, जिसमे सडके है, मस्जिदे है, भोजनगृह है, जिनका धूआ उनके चलते-फिरते समय ऊपर उठता रहता है । उज्वेक दुनियाके सात बडे राजाओमें है—कन्स्तन्तिनोपोलका तककीर (सम्राट्), मिस्रका सुलतान, उभय-ईराकका राजा (इलखान), तुर्किस्तान-अतर्वेदका शासक, भारतका महाराजा और चीनका फगफूर (भगपुत्र, देवपुत्र) ।” बतूताने खानके बारेमे लिखा है—“प्रत्येक शुक्रवारको नमाजके बाद खान एक सुनहले चँदवेके नीचे सोने-चादी और कीमती जवाहिरोसे जडे सिंहासनपर बैठता है । उसकी बगलमे उसकी एक-एक तरफ दो-दो चारो वीविया बैठती है । सिंहासनके सामने उसके दो पुत्र खडे होते है—एक दाहिने और एक बाये । खानके सामने उसकी लडकिया बैठ गई । जब कोई रानी आई तो खानने खडा हो उसका हाथ पकडकर बैठनेका स्थान बतलाया । वह कभी परदा नही करती । इसके बाद बडे अमीर आये, जो कि सिंहासनके दाहिने और बाये कुर्सियोपर बैठते है । उनके बाद खानके भतीजे तथा दूसरे राजवशी शाहजादे खडे हुये । उसके बाद बडे अमीरोके पुत्रोने अपने दर्जेके अनुसार स्थान ग्रहण किया । जब सब बैठ गये, तो दूसरे लोग भीतर आकर खानको सलाम करके अपने दर्जेके अनुसार अपनी जगहोपर जा बैठे । शामकी नमाजके बाद पटरानी लौट चली । उसके पीछे सुदर-सुदर दासिया और परिचारिकाये चल रही थी । वह गाडियोपर बैठी थी । आगे-आगे सवार और पीछे-पीछे सुदर ममलूक (राजदास) रथका अनुगमन कर रहे थे । सुलतान (खान) की वीवियोका बहुत भारी सम्मान किया जाता है । उनमेसे प्रत्येकका अलग महल होता था, जिनमे उनके अपने अनुचर और सेवक रहते है । ओर्दूमे आकर हरएक भेंट करनेवालेसे आगा की जाती है, कि वह खानकी हर एक रानीके सामने जाकर सम्मान प्रदर्शित करेगा ।

बुल्गार नगरी (कजान) सुवर्ण-ओर्दूकी दूसरी राजधानी होनेके कारण अपने पुराने वैभवसे वंचित नही हुई । उसकी प्रसिद्धि सुनकर इब्न-बतूता खानके शिविरसे दस दिनके रास्तेको तीन दिनमें पारकर वहा पहुचा । उसने लिखा है—“यहा रात इतनी छोटी होती थी, कि रात्रिकी नमाज आरम्भ करनेसे पहले बहुत थोडा समय भुझे शामकी नमाज पढनेके लिये मिला । मध्य-रात्रिके बाद जल्दी ही सुबहकी लाली छा गई । अघेरेकी भूमि यहासे चालीस दिनके रास्तेपर और उत्तरमे है, जहा कुत्तोवाली बेपहियेकी गाडियोपर यात्रा की जाती है । सारा रास्ता बर्फसे ढका रहता है, जिसपर आदमी या जानवरका पैर नही टिकता । कुत्तेका नाखून बर्फमे चुभकर उसे फिसलनेसे रोकता है । इस अधिकार-भूमिमे व्यापारी छोड कोई दूसरा आदमी नही जाता । व्यापारी सैकडो बेपहियेकी गाडियोमे रसद, पानी, ईंधन आदि लेकर जाते है । वहा न वृक्ष है न पत्थर न घोडे । उनका पथ-प्रदर्शक एक अनुभवी कुत्ता होता है, जिसके लिये हजार दीनार देना पडता है । नेता-कुत्तेके खडा होते ही सारे कुत्ते खडे हो जाते है । नेता-कुत्तेका मालिक भी उसे कभी दड नही देता । खानके समय कुत्तोको पहले खाना दिया जाता है । वहा व्यापार बदलेन द्वारा होता है । व्यापारी अपने मालको निश्चित स्थान-पर रखकर हट जाते है । दूसरे दिन जानेपर अपने मालकी जगह उन्हें सेवल, एरमिनके मृग-छाले और सिजावके समूर मिलते है । वह यदि सतुष्ट हुये, तो ले आते है, नही तो छोडकर हट आते है, फिर और माल बढ़ाकर रक्खा जाता है । न पसद आनेपर व्यापारीका माल छोड देते है । व्यापारियोको भी यह मालूम नही है, कि यह देनेवाले कौन है—आदमजाद या राक्षस ।”

लम्बे दिनोका वर्णन तेमूरलंगकी विजय-यात्रामे भी आता है । कजान ५६ उत्तरी अक्षांशके पास होनेसे वहा दिन और रातका बहुत अधिक बडा होना स्वाभाविक है । यह उस समयके सम्य जगत्का सीमांत नगर था, जिसके बाद साइबेरियाकी जन-जातियोका देश शुरू होता था, जिनके वंशज कोमी और खान्ती आदि अब भी वही रहते है, लेकिन अब वह बतूता और दूसरोके देवदानव नही, बल्कि सम्य और शिक्षित आदमजाद है ।

उज्वेकने ग्रीक राजा अन्द्रोनिकसकी लडकी (वेइलुन खातून) से व्याह किया था । इस व्याहको रूसके महासघराज थेओगोनोसने कन्स्तन्तिनोपोल जाकर स्वयं करवाया था । इसी रानीके माथ बतूता उसके बापके घर भी गया था । बतूता वातूसरायसे ख्वारेज्म और अफगानिस्तान होते भारतकी ओर

आया। उसने लिखा है, कि क़िपचक-तुर्कोंका सबसे बड़ा नगर ख्वारेज़्म है, जिसपर उज्वेकका शासन है, जिसका अमीर खानके उपराजके तौरपर बहा रहता था। वतूताने ख्वारेज़्मकी बड़ी प्रशंसा की है—“ख्वारेज़्मियों जैसे संस्कृत और उदार आदमी मैंने कहीं नहीं पाये और न उनके-जैसे पन्देशीके साथ स्नेह रखनेवाले। अगर कोई मस्जिदमें नमाजके समय अनुपस्थित होता, तो मस्जिदके सामने ही इमाम उसे पीटना। इस कामके लिये हर एक मस्जिदमें एक कोड़ा रहता है।” उज्वेकके इस्लामिक वर्मराज्यका यह अच्छा नमूना है—लोगोंसे ज़बर्दस्ती अल्लाहकी वदगी करवाई जाती थी। यद्यपि पुराने मुसलमानोंके साथ इस तरहकी कड़ाई थी और-अपनी प्रजाको उज्वेकने ज़बर्दस्ती मुसलमान बनाया, लेकिन ज़हातक ईसाई प्रजाका सम्बन्ध था, वह उनके साथ धर्मान्विता नहीं दिखलाता था।

## १०. दिनीवेग, तिनीवेग, उज्वेक-पुत्र (१३४२ ई०)

उज्वेकके बाद उसका पुत्र दिनीवेग गद्दीपर बैठा। उसके दो और भाई जानीवेग तथा खिजिर-वेग थे। जानीवेगने भाईके खिलाफ विद्रोह किया। लड़ाईमें दिनीवेगकी हार हुई। जानीवेगने उसे पकड़कर मार डाला और खुद गद्दीपर बैठ गया। अपने दूसरे भाई खिजिरवेगसे भी खतरा देखकर उसे भी उसने मरवा दिया।

## ११. जानीवेग, उज्वेक-पुत्र (१३४२--५७ ई०)

जानीवेगने सोलह साल राज्य किया। बातू-वशका यह अन्तिम शक्तिशाली खान था। नियम और व्यवस्थाका वह अपने बापकी तरह ही बहुत पावन्द था। ईसाके समय खुलाकू वशके पतनमें ईरानमें अशांति और अव्यवस्था मची हुई थी, जिसके कारण बहुत से धनी-मानी तबरेज सराह, अर्दवील, बेरगान, तग़चवान आदि शहरोको छोड़-छोड़कर डबेर आ बसे। अभी भी सुवर्ण-औरू केवल एसिया हीतक सीमित नहीं था। १३४३ ई०में खानकी सेनाने पोलैंडपर आक्रमण किया—उसी साल पोलैंड टिठियोका शिकार हो चुका था। लूट-पाट करते हुये क़िपचकोने लुबलिन नगरको जा घेरा, लेकिन वह उसे नष्ट नहीं कर सके।

१३४६ ई०में मांस्कोका महाराजुल निमओन (१३४२-५३ ई०) जानीवेगके दरबारमें पहुँचा। उसने भारी भेंट खान और उसके परिवारके सामने पेश की। जानीवेगने भी प्रसन्न होकर महाराजुलको बहुत उपहार और खजाना दी। लियुवानिया अब भी ईसाई नहीं हुआ था। अब भी वहाँ कुछ पुराने वेदोंके देवताओंकी पूजा होती थी। वहाँका राजा ओल्गर्द मांस्को-महाराजुलका भारी प्रतिद्वंद्वी था। ओल्गर्दपर जर्मनोंने आक्रमण शुरू कर दिया। उसने अपने भाई कोरिगदको खानके पास मदद मागनेके लिये भेजा। निमओनने चुगली खाई, जिसपर खानने लियुवानी कुमारको उसके हाथमें दे दिया। उग्र महाराजुलका दूसरा प्रतिद्वंद्वी पोलैंडका राजा कसिमिर था, जिसने १३३९ ई०में गलिनियाको रेने पडोमके बोल्टूनिगा प्रदेशको भी अपने हाथमें कर लिया था। इसी महाराजुल इमे कैसे पनद करता? वह गनानकी ईसाई सम्प्रदाय (अर्थोडक्स चर्च) का अनुयायी था और कसिमिर कट्टर रोमन कथलिक। कसिमिर स्याब ईसाई पादरियोंको अपने धार्मिक रीति-रवाजोंको छुड़ाकर ज़बर्दस्ती कैथलिक बनाता था। उसके तांग गैंग उसमें विगडकर लियुवानियोंके पक्षपाती हो गये और उन्होंने इसी महामहाराजको भी प्रेरित किया, कि महाराजुल निमओनको कहकर लियुवानी कुमार कोरिगदको मुक्त करा दें। इसके लिये उन्होंने मुक्ति-दान भी दिया। महाराजुलने अपने वशकी राजकुमारी दुत्रियानाको लियुवानियाके लॉफ़िर राजा ओल्गर्दसे दान करनेके साथ व्याह दिया, कि उसकी सत्तान ईसाई बनाई जाये। ओल्गर्दने इस प्रकार शक्ति-सन्ध करके पोगोसों बोल्टूनियामें मार्ग भगाया। १५ फ़रवरी १३४७ ई०में जानीवेगने बेनिनियोंके साथ संधि की और उन्हें तानामे बाजारके लिये एक जगह प्रदान की।

(१) प्लेग महामारी—१३८५ ई०में एशिया और यूरोपके देशोंमें भयंकर बाले प्लेगकी महामारी फैल गई। इसका उत्पत्ति चीनमें हुआ था, जहाँ उसमें एक जगह तीन लाख आदमी मर गये। बाल्मियन समुद्रके दोनों तटोंके प्रदेश इस प्लेगके मारे उजाड़ हो गये। तुर्किस्तान, ख्वारेज़्म, मराठ-सबसे बड़ा-

कार मच गया। आरमेनिया, अवखाजिया, चिरकासके लोग, क्रिमियामे वसे यहूदी, गेनोवा और वेनिस-वाले भी तवाह हो गये। आगे वह ग्रीस, सिरिया (शाम) और मिस्रमे भी फैली। गेनोवावाले व्यापारियों-के जहाज उसे अपने साथ इताली, फ्रांस, इंग्लैंड और जर्मनीमे ले गये। लंदनमे इसके प्रकोपसे एक कब्रिस्तानमे पचास हजार मुर्दे गाड़े गये। पेरिसके आतंकित लोग गुस्सेके मारे यहूदियोंका सहार करने-के लिये तैयार हो गये। वह समझते थे, प्लेग लानेवाले यही यहूदी हैं। १३४९ ई० में वह स्कंदनेवियामे पहुँची, फिर प्सकोफ और नवोग्रादके रूसी नगरोंमे भी। प्सकोफके एक-तिहाई आदमी मर गये, शहरका शहर बीमार हो गया था। पैसा खर्च करनेपर भी धनियोंको नसँ नहीं मिलती थी। भयके मारे बीमार मा-बापको छोड़ वच्चे भाग जाते थे। लोग बहुत अधिक धार्मिकता दिखलाने लगे थे और धनी लोग धार्मिक कार्योंमे बड़ी उदारतासे खर्च करते थे। उस सालके जाडोमे प्लेग तो बढ हुई, लेकिन उसके बाद पेचिश (हँजा) तथा खूनके कँकी बीमारी शुरू हुई, जिसमे आदमी मुश्किलसे दो-तीन दिन जी पाता। घुमन्तुओपर प्लेगका प्रभाव और भी भयकर हुआ था।

१३५१ ई०मे भारी अकालसे पीड़ित ब्रातिस्लावापर मंगोलोंने आक्रमण किया। वहाके राजुलने हुगरीके राजा लुईसे मदद मागी और उसकी सहायतासे वह मंगोलोंको भगानेमे सफल हुआ—पोल राजा कसिमिरने भी इस समय उसकी सहायता की थी। दनियेपर नदी अभी भी कुछ समयके लिये मंगोलोंके हाथमे थी, लेकिन गेलिसिया पोलोंके हाथमे चली गई थी। लघुरुस (आधुनिक उक्रेन) लियुवानियाके हाथ मे तबसे १६वीं सदी तक रहा। इस प्रकार लघु-रूसी छिन्न-भिन्न होकर शक्तिहीन हो रहे थे। पड़ोसी युरोपीय राजाओ तथा मंगोलोंके अत्याचारोंसे पीड़ित पूर्वी स्लावोंकी सहानुभूति अब और अधिक मास्कोकी ओर होती जा रही थी। इसके दो परिणाम हुये—(१) कितने ही लोगो ने दनियेपर और दोनके तटपर जा घुमन्तू राज्यके रूपमे वहा अपने जापोरोशियान और दोन कसाकके दो गणराज्य स्थापित किये, और (२) दूसरे लोगोने हुगरीके रोमन कैथलिकोंके अत्याचारसे भागकर पहिले मंगोलोंकी भूमिमे, फिर वहा भी पीड़ित होनेके बाद मोल्दाविया और वलाचियामें जाकर अपनी रियासते कायम की।

मास्कोके महाराजुल सिमोनने अब पहली बार “सर्वरूसमहाराजुल” की उपाधि धारण की। १३५३ ई० में उसके मरनेके बाद उसके भाई इवानको जानीवेगने उसका उत्तराधिकारी बनाया।

१३५५ ई०में ईरानके इल्खान-वशका नाश हो चुका था। इससे फायदा उठाकर सेनापति चोवान तेमूर-शाहके पुत्र मलिक अशरफने आजुरबाईजानपर अधिकार कर लिया। मलिक अशरफके अत्याचारोंसे लोग परेशान हो देश छोड़कर भागने लगे। ख्वाजा शेख कही (कुजी) शीराजकी ओर भागा और वहासे फिर शामको। दूसरे प्रसिद्ध सत ख्वाजा सदरुद्दीन अर्दबेली ने गेलानका रास्ता लिया। काजी मोहीउद्दीन वुरदङ सरायवरका भागा और वहा अपने उपदेशोंके लिये मशहूर हुआ। उसके उपदेशोंमे जानीवेग भी शामिल होता था। उस वक्तकी मलिक अशरफ गरदी (राक्षसी)का बडा साफ चित्र शेखशादीने खीचा था, जिसे “तारीख शेख-उवेस” (ज० ओ० पृष्ठ २३०) के लेखकने उद्धृत किया है—“ईरानसे चगताइ देशमे जा उसने उस देशको अपने अधीन किया। कुछ समय अपनी जगह रही। फिर कहते हैं, तीन रोजसे अधिक कही नहीं बैठी और तरक नदी पार हो दरबन्द आई। वहासे शिरवान पहुँची। उसने अपना एलची मलिक अशरफके पास भेजकर कहलवाया कि मैं खुलाकूके उलुसको जव्त करनेके लिये आ रही हूँ, तू चोवानका पुत्र हूँ, जिसका नाम चारो उलुसोंमें तथा यारलिकमें था। अब तीन उलुस मेरे हुकूममें हैं। मैं चाहती हूँ, कि जूजी (तूती) के उलुसका अमीर तुझे बनाऊँ, इसलिये खडा हो जा और मेरा स्वागत कर।’ मलिक अशरफने जवाब दिया—‘हे उलुस-वरकाके बादशाह, मेरा सम्बन्ध अबका (हलाकू-पुत्र) के उलुससे नहीं है। यहाका बादशाह गजज है, जिसके अमीरका पद मेरे पाम है।’

(२) ईरानपर आक्रमण—मोहीउद्दीनन एक दिन अपने उपदेशके बीचमे तबरेज और मलिक अशरफ-के अत्याचारोंका ऐसे शब्दोंमे चित्रण किया, कि श्रोता रोने लगे, जानीवेग स्वयं रो पडा। मोहीउद्दीनने यह भी कहा, कि बादशाहको हस्तावलम्ब देना चाहिये, जिसमें प्रजाके ऊपर होते इन अत्याचारोंका

अन्त हो। अगर वादशाह ऐसा नहीं करता, तो क्यामतके दिन अल्लाह उससे जवाब तलब करेगा। जानी-वेगके मनमें बातके मनानेके लिये मोह्नीउद्दीनके उपदेशसे भी ज्यादा ईरानके समृद्ध राज्यका लोभ था।

जानीवेगने एक महीनेमें मौ नुमान (दस लाख) सेना तैयार कर ली और वह मन् ७५८ हिजरी-में (२५ दिसम्बर १३५६ ई०-१३ दिसम्बर १३५७ ई०) तवरेजकी ओर रवाना हुआ। कुरा नदी पार करनेकी खबर मलिक अशरफके पास पहुची, तो पहले उसने इसपर विश्वास नहीं किया, फिर अपने सैनिकोंको जमा किया। लेकिन उनके अत्याचारोंके कारण लोग अब उनकी आगमें कूदनेके लिये तैयार नहीं थे। वह शम्शेराजानी पहुचा। इसमें पहले उसने अपनी खातूनो (रानियों), लडाकियों, खजाने, सोना-चादी और जवाहर तथा दूसरी चीजोंको आलिंगकके किलेमें भेज दिया था, जिन्हें उसने चार सौ ऊटों और हजार खजानेके ऊटोंपर लदवाकर मगवा लिया। शम्शेराजानीमें बहुतसे लोग जमा हुये थे, जिनमें एक बड़ी सेना तैयार करके उसने कूजानकी ओर भेजा। फिर खबर मिली, कि वादशाह जानीवेग अर्दवील पहुच गया। लोग कह रहे थे—वादशाहके फौजकी रिकाव लकड़ोंकी है, उसके घोड़ोंकी लगामें रस्सियोंकी हैं।

जानीवेगके बारेमें पहुचती इन खबरोंको सुनकर मलिक अशरफ बहुत डर गया। उसने ख्वाजा लूलू माजलू और ख्वाजा शकर खाजिन (कोपाथ्यथ) को बुलाकर कहा—“खातूनो (रानियों) और खजानोंको लेकर रवाजा रशीदके चक्केपर पहुचाओ और वहां मेरा इन्तजार करो। मैं उजान जा रहा हू। अगर मनोरथ सफल हुआ, तो तवरेज आना। अगर बात उल्टी हुई, तो खुईकी ओर जाना, मैं वहां आकर मिल जाऊंगा।” उन्हें भेजकर वह खुद उजानकी ओर रवाना हुआ। पहले दिन मेहरानरुद नदीके तटपर मुमतादादमें टेंरा डाल उसने दो दिन विश्राम किया। कितने ही अमीर, जो सावाकी ओर चले गये थे, यहां मलिक अशरफके पास आ गये। उसने उन्हें सोना, घोड़ा, हथियार आदि देकर रवाना किया। अखीजूक सेनप भी उनमेंसे था, जो अगले दिन कूच करके मईदावाद (अवदावाद) गया। उसने वहां लोगोंसे सैनिकोंके लिये अपने घरोंको खाली कर देनेके लिये कहा। उसके नौकरोंमें दो हजार मर्द थे। वह खाने-पीने-रहनेकी तैयारी कर रहे थे, तभी जवर्दस्त आधी-पानी आई।

उजानमें अशरफके भेजे हुये सैनिक एकत्रित हो गये थे, इसी समय जानीवेग सराहकी ओरसे आ पहुचा। विरोधी सेनाको देखकर उसने हुकुम दिया, कि छिड़-गिस्के शिकार खेलकी तरह इन्हे चारों ओरमें घेर लो। अशरफके अमीरोंने जब यह हालत देखी, तो वह अपनी जान लेकर भाग निकले। मलिक अशरफ अब भी मईदावादके पुर्णेपर खड़ा था। इसी समय शेख जलकी (बालखजी) ने उसके कानमें कुछ कहा। उसने समझ लिया, कि लउनेमें कोई फायदा नहीं और वह तवरेजकी ओर भाग चला। उस रात वह शम्शेराजानीमें ठहरा, फिर सबेरे अपनी खातूनोके साथ खजानेको लिये रवाना हुआ। लेकिन खजाने-पर उसके गन्वाले ही हाथ नाफ करने लगे। खातूनो भी डबड़-उधर बिखर गईं। मलिक अशरफ यह हालत देखकर गुईकी ओर चला। महम्मद बालखजीका घर इसी इलाकेमें था। उसने एक ओर मलिक अशरफका स्वागत करने हुये अपने घरमें उसे ले जाकर ठहराया और दूसरी ओर जानीवेगके पास उनकी खबर भेज दी। जानीवेगने अमीर वयामको इस कामके लिये भेजा, लेकिन घरको घेरकर दूखनेपर अशरफ वहां नहीं मिला। इसपर अमीर वयाम और उसके साथी ख्वाजा महमूदने लोगोंकी सभी चीजें जल कर लीं। फिर अमीर वयाम मलिक अशरफको पकड़नेके लिये तवरेज गया। मडक-ने गुजरने वक्त लोगोंने उसके ऊपर रात्र फेंककर बड़ी वेडज्जती की, और उसे ख्वाजा शेख कुजीकी सा मोर्वयदवेके घर ले गये। अमीर काऊम शिरवानी वहां मौजूद था। मौलाना मोह्नीउद्दीन बेरदईके हाथको चूमकर अशरफ लेने लगा। काऊमने उसे हारम दिया। इसके बाद उसे वादशाह जानीवेगके पास ले गये। वादशाहने पूछा—“तुम देखो तूने क्यों बरवाद किया?” उसने जवाब दिया—“नौकरोंने बरवाद किया, उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।”

वादशाह जानीवेग उजानमें हसनरुद (अष्टनरुद) की ओर रवाना हो क्यूक (कूकी) के नजदीक पहुच वहांमें लौट पड़ा। उस रात्र लोगोंने चेंती बहुत की थी। जब यह बड़ी सेना उधरसे गुजरी, तो



खेतोमें एक बाल भी न रह गई। कविके कथनानुसार “जालिम गया और उसका जुल्मका कायदा रह गया। आदिल गया और उसके नेक नामकी याद रह गई।”

जानीवेगने चाहा, कि मलिक अशरफको मृत्यु-दंड न दे अपने साथ अपने देश ले जाये, लेकिन फाऊस और काजी मोहीउद्दीनने बतलाया—“अगर वह जिंदा रहेगा, तो इस मुल्कके लोग कभी चैनसे नहीं रह सकेंगे।” जानीवेगको उनकी सलाह माननी पड़ी। मलिक अशरफको घोड़ेसे नीचे उतारते समय उसकी दोनों तरफ तलवारे खड़ी कर दी गई, जो उसकी बगलो में घुस गई। उसके शिरको काटकर तबरेज ले जा मस्जिद-मरागियानके दरवाजे पर टाग दिया गया। तबरेज-निवासी खुशी मनाते दान-पुण्य करने लगे। जानीवेग दस हजार सवारोंके साथ वहां दीलतखाना में उतरा। एक रात रहकर सबेरेकी नमाज उसने मस्जिद स्वाजा अलीशाहमें पढ़ी। उसके साथ आये हुये सैनिक सड़को और नदियोंके किनारे ठहरे थे। इनमेंसे कोई किसी मुसलमानके घरमें नहीं घुसा।

अशरफकी लोलपतापर एक पद्य मशहूर है—

“देखो कैसे अशरफ गदहा अपने भाग्यको उघाड़ रहा है।

अपने लिये मृत्यु और जानीवेगके लिये अपना सोना बटोरता ॥”

इस प्रकार १३ सालमें अशरफने जुल्म और अत्याचार करके जो खजाना जमा किया था, उसे जानीवेग ले गया।

ईरानमें इस प्रकार व्यवस्था कायम कर जानीवेग अपने बड़े बेटे बरदीवेगको पचास हजार सेना देकर वहाका शासक नियुक्त कर अली अशरफकी लड़की सुलतानवस्त और उसके पुत्र तेमूर-ताशको साथ ले किपचकभूमि लौटा। महमूद दीवानने बड़ा महोत्सव मनाते बरदीवेगको तब्रेजके तख्तपर बैठाया। अमीर जारुकके पुत्र सराय तेमूरको वजीर बना महमूद भी जानीवेगके पीछे-पीछे रवाना हो गया।

जानीवेग लौटकर वीमार पड़ गया। मरणासन्न देखकर उसके खैरखाहोने बरदीवेगके पास इसकी खबर भेजी। बरदीवेग जानता था, कि तब्रेजका तख्त किसी समय भी हमारे हाथसे छिन जायेगा, इसलिये तथा सबसे बड़ा पुत्र होनेके ख्यालसे भी वह तब्रेजसे जल्दी-जल्दी दरबन्दकी ओर रवाना हुआ और दस सेवकोंके साथ आधी रातको चुपचाप तुगलुवाईके घरपर पहुँचा। संयोग ऐसा हुआ, कि जानीवेग वीमारी से अच्छा हो गया और उसे खबर मिली, कि बरदीवेग आ गया है। उसने तोगाय तुबलु खातूनसे इसके बारेमें पूछा। खातूनने बेटेकी मुहब्बतसे झूठ बोल दिया। जानीवेगने तुबलुवाईको एकान्तमें बुलाकर चाहा कि उससे भेद लें। तुबलुवाई झूठ बोल बाहर आ बरदीकी सलाहसे उसी समय लोगोंको लेकर भीतर घुसा, और एक फरशिद्वारा जानीवेग खानको २१ जुलाई १३५७ ई० को उसके विस्तरेपर मरवा डाला।

रूसी उसे “भला” जानीवेग कहते थे, जिससे मालूम होता है, कि रूसियोंके साथ उसका बर्ताव अच्छा रहा। इसका यह भी अर्थ है, कि मास्कोके महाराजुलोको अपनी शक्ति बढ़ाने और सारी रूसी जातिको एकताबद्ध करनेके मनसूबेमें जानीवेगकी ओरसे कोई बाधा नहीं हुई। जानीवेगके सिक्के १३४० से १३५७ ई० तकके मिलते हैं, जो सराय गुलिस्ता, नई सराय, नयागुलिस्ता, नया ओर्दू, ख्वारेज्म, मोक्सी, बरचिन और तब्रेजकी टकसालोमें ढाले गये थे।

जानीवेगके इस्लामप्रेमको मुस्लिम इतिहासकारोंने स्वीकार किया है। उज्बेकके मरनेके चढ़ही महीने बाद गद्दी सभालते उसने अपने बापके कामको आगे बढ़ाया और सारे उज्बेक-उलुसको मुसलमान बनाया, तमाम बौद्ध मदिरो (बुत-खानो) को धराशायी कराया, बहुत-सी मस्जिदों और मदरसों को बनवा मुसलमानोंके फायदेके लिये सभी तरहकी बातें की। चारों तरफसे मौलवी और विद्वान् उसके यहाँ आते थे। दशते-किपचकके अमीरोंके पुत्र इस समय बहुत विद्याव्यसनी हो गये थे। अनुनीम अस-कन्दरके अनुसार “उनकी महिमा आज भी मजलिसों और महफिलोंमें गाई जाती है, और उस मुल्कका हर एक रस्म-रवाज इस्लामी देशोंके बाशिन्दों जैसा है।”

## १२ वरदीवेग जानी-पुत्र (१३५७-५९ ई०)

वरदीने अपने बापको ही मरवाकर सतोष नहीं किया, बल्कि जिस विस्तरेपर वह मारा गया था, उसीपर उसने बापके घातक फरगिको बैठा आज्ञा माननेसे इन्कारियोंको मरवाने का इरादा किया। तुगलुबार्डने उसकी बातको पसन्द किया और आज्ञा स्वीकार करानेके वहाने वह सारे ही बारह शाह-जादोको वहाँ जमा करवा मरवाने लगा। वरदीका आठ महीनेका एक सहोदर भाई था। तायदोलू खातूनने उसे गोदमें लिये आकर बहुत मिन्नत की, कि इस मासूम बच्चेको क्षमा कर दे। वरदीवेगने उसे हाथमें धीन जमीनपर पटककर वहीं मार दिया। उसने तीन साल तक दृढ़तापूर्वक शासन किया।

जहातक रूसी राजकुलोका सम्बन्ध है, महाराजुल इवान (मास्को), राजुल वासिली (त्वेर), उसके भतीजे व्सेवोलोद (खोल्म) के पदोंके लिये वरदीवेगने अपनी स्वीकृति दी।

१३५६ ई० में मास्कोका महाराजुल इवान मर गया, इसी साल किलदीवेग (कुलफा) ने वरदीवेगको कत्ल कर दिया।

## १३ किलदीवेग, कुलफा (१३५९ ई०)

किलदीवेगने वरदीवेगके कत्लके साथ उसके शुरू किये गये वगोच्छेदके कामको पूरा कर दिया। अब कोक (सुवर्ण)-ओर्दू राजवशका एक भी नामलेवा नहीं रह गया। सारे ओर्दू में गडबडी मच गई। अमीरोने अधिकारको अपने हाथमें रखनेके लिये वरदीवेगके हत्यारेको जानीवेगका पुत्र कहकर गद्दीपर बैठाया। हर अमीर अपनी वक्तिको बटानेके लिये पीठ पीछे पड़्यत्र रच रहा था। इसी पड़्यत्रमें अमीर यर्गाल-बुगा, अमीर अहमद और अमीर नाउ-गू-दाई निर्वासित हुये। इसी समय सरकारके एक बड़े अधिकारी नगसबाई (?) ने किलदीवेगको मार एक दूसरे आदमीको गद्दीपर बैठाया, जो कि तीन रोज बाद मारा गया।

## १४ नौरोजवेग, १५ चेरकेसवेग (१३७४ ई०)

ये दोनों भी अभी तब कुछ दिनोंके लिये सिंहासनपर बैठे। फिर कोक (सुवर्ण) ओर्दूके अमीरोने ध्वेतओर्दूके खान जिमताउके पाम जा गद्दी ममालनेके लिये बहुत निमन्त्रण और आवेदन किया, लेकिन उसने उसे न स्वीकार कर अपने भाई ओर्दाशेखको भेजा।

## १६. ओर्दाशेख

ध्वेत-ओर्दूका यह राजकुमार बातूके सिंहासनपर बहुत दिनोंतक नहीं टिक सका। किसीने “कैसे ओक-ओर्दूके सिंहासनपर अब-ओर्दूका आदमी बैठेगा” कह एक रात तलवारसे ओर्दाशेखका काम तमाम कर दिया। इसपर अमीरोने कुछ वेगुनाह आदमियोंके ऊपर अपराध लगाकर मरवाया।

## १७. खिजिर ससीबूगा-पुत्र

अब ओर्दाशेखके भाई खिजिर ओगलानको गद्दीपर बैठाया गया, जो भी नौ महीना राज्य करनेके बाद खतम हुआ।

आगे सिंहासनपर अनुनीम अम्बन्दरने निम्न खानोंका होना बतलाया है—

## १८ कुलफा, ससीबूगा-पुत्र

खिजिरके एक बहन भी बाब्रनाही न बरके मर जानेके बाद उसके भाई कुलफाको गद्दीपर बैठाकर नौ महीने बाद उसे भी कत्ल कर दिया गया।

## १९ तेमूरखोजा, ओर्दाशेख-पुत्र

फिर तेमूरखोजा अमीरोका खिलौना बना । वह बड़ा ही व्यभिचारी निकला । लोग दो साल तक उसे बर्दाश्त करते रहे । एक रात किसी स्त्री के साथ बलात्कार करनेके लिये घरमें घुसा देख, पतिने अनजाने ही उसे तलवारके घाट उतार दिया ।

## २०. मुरीद ओर्दाशेख-पुत्र

इसने तीन सालतक राज्य किया, लेकिन अब इन खानोमें बदचलनी विशेषकर अप्राकृतिक व्यभिचारका मर्ज बहुत फैल गया था । अपने अमीरुल्-उमरा (अमीरोके अमीर) मोगलबक-पुत्र इलियासके सुदर लडकेपर मुग्ध हो मुरीदने चाहा, कि बापको मारकर उसका स्थान बेटेको दे दे । यह भेद मुरीद-खानकी खातूनको मालूम हो गया । उसने इर्ष्या या बेवकूफीसे यह खबर इलियासके पास भेज दी । उसने अवसर न दे खानको ही मार डाला ।

## २१. अजीज तेमूरखोजा-पुत्र

इसकी आदत भी अपने पूर्वगामियों जैसी थी और इसने प्रसिद्ध सत सैयद अताके वशवाले एक लडकेको भ्रष्ट किया । भेद खुलनेपर पश्चात्ताप करके उस लडकेसे इसने अपनी लडकी ब्याह दी, लेकिन तीन साल बाद फिर वही चाल चलने लगा, जिसके कारण उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा ।

## २२ हाजी खा 'एर्जन-पुत्र

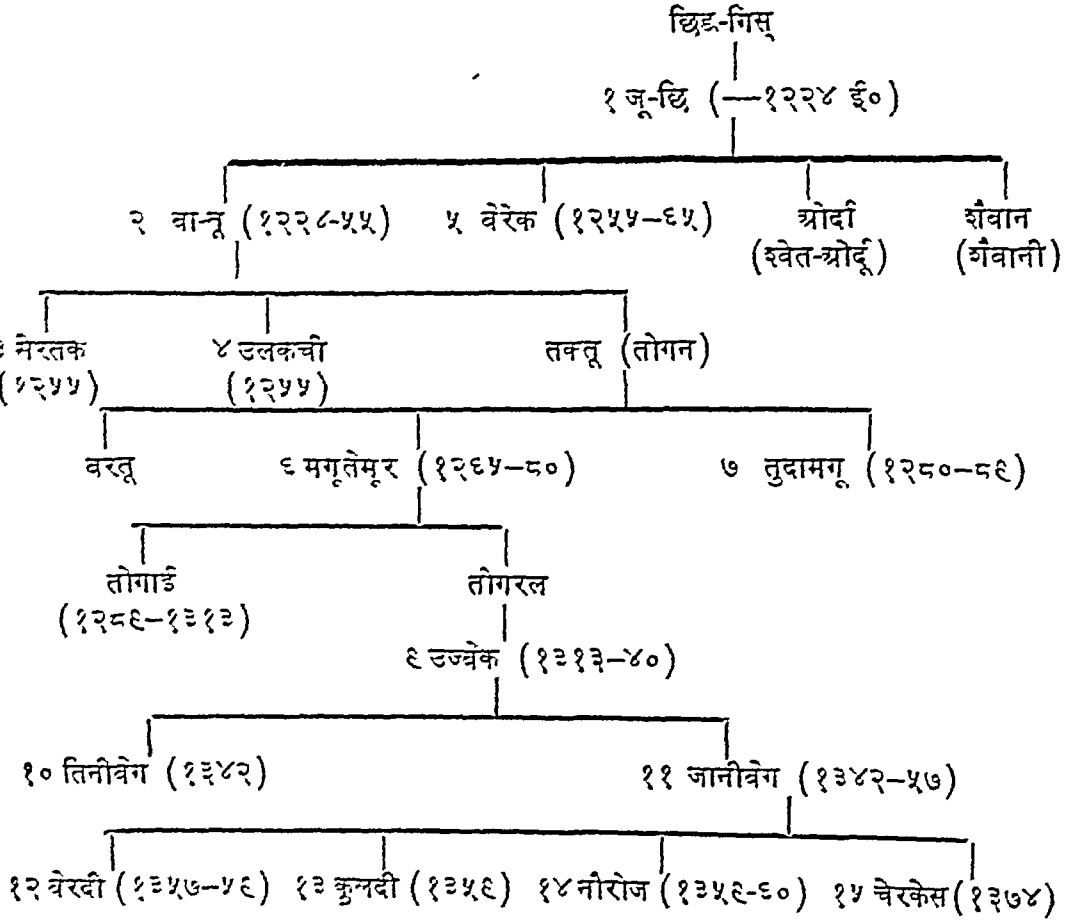
श्वेत-ओर्दूके खान एर्जन (१३१६-४४ ई०) के पुत्रको अब बलिका बकरा बनानेके लिये लाया गया । वह कुछ दिनों तक अच्छा रहा, फिर खानदानी बदचलनी का भूत इसके सिरपर भी सवार हुआ । एक बार तोबा की, लेकिन फिर वही रफ्तारे-ब्रेढगी । अन्तमें वह आधी रातको अपने सोनेके वस्त्रोंमें ही मार डाला गया ।

अनुनीम अस्कन्दरके अनुसार हिजरी सन् ७५१\* से ७६५ के बारह सालोंमें आठ बादशाह हुए । इसके बाद श्वेत-ओर्दूके खान उरुसखानने श्वेत-ओर्दू और कोक-ओर्दूको इकट्ठा करके शासन करना शुरू किया, जिसका परिणाम तोकतामिशके रूपमें एक बार जू-छिके वशका चरम उत्कर्ष तथा तेमूर-लगाके प्रहारके कारण उसका सत्यानाश हुआ ।

सुवर्ण (कोक)-ओर्दूके रूपमें मंगोल-शक्ति आधे युरोपतक छा गई । रूसके तो सभी शासक उसके अधीन दाससे थे । यद्यपि मंगोलोंने अपने इन अधीन लोगोंपर बहुत अत्याचार किये, लेकिन तब्रेज और दूसरी जगहोंके निर्मम हत्याकांडोंके सामने वह कुछ नहीं थे । मंगोलोंके शासनके साथ ही वाणिज्य और शिल्पकी बड़ी वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जहां मंगोल शासकोंको बहुत लाभ हुआ, वहां मास्कोको आगे बढ़नेका मौका मिला और धीरे-धीरे पुरानी वुल्गार नगरीका स्थान मास्कोने ले लिया । व्यापार द्वारा प्राप्त प्रचुर धन-राशिके बलपर मास्कोके महाराजुलोंने सुवर्ण-ओर्दूके खानोंको अपने वशमें कर अपनी शक्ति बढ़ाई, रूसका एकीकरण करना शुरू किया और अन्तमें रूसकी शक्तिके उत्कर्ष तथा जू-छि-वशके आंतरिक कलहके कारण सुवर्ण-ओर्दूका अस्तित्व खतम हो गया । इसी कालमें मास्कोके महाराजुलोंने खानकी ओरसे कर उगाहनेका अधिकार पा अपनी ओरसे इस कामपर अपने अधीनस्थ बायरोको लगाया—रूसी प्रजा अब बायर, महाराजुल और खान तीनोंके उत्पीड़न तथा शोषणके नीचे दबकर कराहने लगी । उसका स्वतंत्रता-प्रेम और जनतात्रिकताकी भावना लुप्त हो चली, और अत्याचारके मारे कितने ही रूसी भाग-भागकर दूसरी जगहोंमें जाकर बसने लगे ।

\* ७५१ हि० (११ मार्च १३५०—२७ फरवरी १३५१ ई०), ७६५ हि० (१० अक्तूबर—२७ सितंबर १३६३ ई०)

सुवर्ण-ओर्दू-खान-वंगवृक्ष  
(१२२४-१३७४ ई०).



## श्वेत-ओर्दू

(१२२४-१४२५ ई०)

### १ जू-छि (तू-शी) खान

छिङ्ग-गिस्के ज्येष्ठ पुत्र जू-छि के वारेमें हम पहले बतला चुके हैं। उसके मरने के बाद उसका सिंहासन ज्येष्ठ पुत्र ओरदाकोन मिलकर वा-तूको मिला। ओरदाको वापके राज्यका पूर्वी भाग मिला, लेकिन उसने अपने बशको वा-तूके सिंहासन के अधीन माना। ओरदाका उलुस श्वेत-ओर्दू (अक-ओर्दू) नामसे प्रसिद्ध हुआ, जिसके खान निम्न प्रकार थे :—

	काल
१ जू-छि, छिङ्ग-गिस्-पुत्र	—१२२४ ई०
२ ओरदा जू-छि-पुत्र	१२२४ „
३ कोनिचि ओरदा-पौत्र, सर्तकई-पुत्र	—१३०१ „
४ बायन कोनिचि-पुत्र	१३०१ „
५ ससीवूगा बायन-पुत्र	१३६६ „
६ एर्जन ससीवूगा-पुत्र	१३६६-४४ „
७ मुवारक खोजा एर्जन-पुत्र	१३४४ „
८ चिमतई एर्जन-पुत्र	१३४४-१३६१ „
९ उरुस चिमतई-पुत्र	१३६१-७० „
१०. तोकताकिया उरुस-पुत्र	१३७० „
११ तेमूरवेग उरुस-पुत्र	१३७०-७५ „
१२. तोकतामिश तुलि-पुत्र	१३७५-६७ „
१३ नूजी ओगलान	१३६५
१४ तेमूरकुतुलुक, तेमूरवेग-पुत्र	१३६५-१४०० „
१५ शादीवेग, तेमूरवेग-पुत्र	१४००-८ „
१६ पूलाद तेमूरवेग-पुत्र	१४०८-१० „
१७ तेमूर कुतुलुक-पुत्र	—१४११ „
१८ जलालुद्दीन तोकतामिश-पुत्र	१४११-१२ „
१९ करीमवरदी तोकतामिश-पुत्र	१४१२-
२० कपक, किवेक	.
२१. चिङ्ग-गिज	१४१७ „
२२ जव्वारवरदी तोकतामिश-पुत्र	„
२३ मुहम्मद	१४२२-३८ „
२४ वीराक, वुराक, वुरक	१४२५-२८ „
२५. सैयत अहमद	...
२६ दरवीस	...
२७ किवेक	—१४२२
२८ उलुग मोहम्मद	१४३७

## २ ओरदा, एसन, एछन जू-छि-पुत्र (१२२४-)

ओरदाके राज्यके भीतर मिगनाक, तरम, उत्तरार जैसे प्रसिद्ध वाणिज्य-नगर थे। इसके ओर्दूके दक्षिण और दक्षिण-पूर्वमें चंगताई, पूर्वमें ओगोताई तथा पश्चिममें वा-तूका ओर्दू था, जिसका कि यह श्रग माना जाता था। उत्तरमें वह साइबेरियाके भीतर तक घुसा हुआ था। ओरदाका ओर्दू (पशुपाल सैनिक परिवार-समूह) गर्मिया बलकाश समुद्रके पासकी चरागाहोंमें बिताता और जाडोंमें मिर नदीपर चला आता था। ओरदाका पुत्र कूली खुलाकूके ईरान-विजयमें शामिल होनेके लिये स्वारेज्मसे दहिस्तान और माजदरान गया था।

## ३ कोनिचि, कोची ओरदा-पौत्र, सतर्कई-पुत्र (-१३०१ ई०)

मंगोल इतिहासकर रगीदुद्दीन\* (१२४७-१३१७ ई०) के अनुसार यह ओरदा (श्वेत) उलुसका बहुत समयतक शासक रहा। अरगून खान (१२८४-१२९२ ई०) और गजनखान\* (१२९५-१३०४ ई०) के साथ इसका बहुत अच्छा सम्बन्ध था और उनसे मीगातो और दूतोंका आदाना-प्रदान होता था। कोनिचि अमावारण मोटा था, कोई घोड़ा उसे ढो नहीं सकता था, इसलिए वह गाड़ी पर एक जगहसे दूसरी जगह जाता था। इसके पुत्रोंमें मुख्य चार थे—बायन, बचकरतड, चगुनबुका, मकुदई। मारको पोलोने इसके बारेमें लिखा है —

“मुद्गर उत्तरमें एक खान है, जिसका नाम कोनिचि है। वह तारतार (मंगोल) है और उसके सारे लोग तारतार हैं, जो नियमपूर्वक तारतार धर्मको मानते हैं। यह बड़ा ही पागविक धर्म है, लेकिन वह उनका उभी तरह पालन करते हैं, जैसे कि छिद्-गिस् और दूसरे मुख्य तारतार। खान किसीके अधीन नहीं है, यद्यपि वह छिद्-गिस् खानके गाही बगका तथा महान् कजान (कुविले खान) का नजदीकी सबधी है। इस खानके पास न नगर है न महल। वह और उनके लोग सदा या तो खुले मैदानोंमें रहते हैं या बड़े पहाड़ों और उपत्यकाओंमें। वह अपने जानवरोंके दूध और मांसपर गुजारा करते हैं। उनके पास अनाज नहीं होता। खानके पास बहुमुखक लोग हैं, लेकिन वह किसीके साथ युद्ध नहीं करता। उनकी प्रजा बड़ी गतिमें रहती है। उनके पास भारी मत्स्या में पशु—ऊट, घोड़े, बैर, गाय, भेड़ें आदि हैं।

“उनके देशमें तुम्हें वीम मुठ्ठीसे अधिक लम्बे तथा बिल्कुल नफेद विशालकाय भालू मिलेंगे। वहां बड़ी-बड़ी काशी लोमटिया, जंगली गदहे और भारी मत्स्यामें सेबल होते हैं। यही सेबल वह जन्तु है, जिनके नमड़ेकी बहुमूल्य पोशाक बनती है, एक-एकका दाम हजार बेजत (सिकके) होते हैं। वहापर बेयर (नमूनी जन्तु) भी बहुनायतमें होते हैं और फरऊनी चूहे भी। इन्हींके शिकारपर लोग सारी गर्मिया जीते हैं। वस्तुन वहां सब तरहके जंगली जानवर बहुनायतमें होते हैं, क्योंकि उनका देश बहुत दुर्गम और बन्ध है।

“उन खानका देश ऐसा है, जहां घोड़े नहीं जा सकते, क्योंकि वहापर बहुनायतमें झीले और चश्मे हैं, साथ ही बहुत बर्फ, काँच और दलदल भी है, जिसपर घोड़े नहीं चल सकते। यह कठिन मुल्क तेरह दिनोंके गन्तव्यका फैला हुआ है। हर दिनकी यात्राके बाद एक टिकान है, जहापर कि सब तरहका निजाम है। प्रत्येक टिकानपर घर बने हुये हैं, जिनमें चालीस कुत्ते तैयार रहते हैं। यह कुत्ते आकारमें गड़गेंगे कम नहीं होते। यही कुत्ते एक टिकानमें दूसरी टिकानतक सवारी-गाड़ियोंको खींचते हैं। इनकी गाड़ियां गिना पशुओंकी होती हैं। गाड़ोंके ऊपर भातूका चमड़ा रखकर सवार बैठ जाता है। हरेक गाड़ीको ६ कुत्ते खींचते हैं। कुनोका कोई कोंचवान नहीं होता। अगली टिकानपर नये कुत्ते और गाड़ी तैयार मिलती हैं।..

“तेरह दिनकी यात्राके अन्तपर आसपासके पहाडो और उपत्यकाओ के रहनेवाले लोग बड़े शिकारी होते हैं। वह उन बहुमूल्य छोटे-छोटे जन्तुओको पकड़ते हैं, जिनसे कि उनको भारी लाभ होता है। यह जन्तु हैं—सेबल, एरमिन, वेयर, एरकुलिन, काली लोमड़ी तथा और बहुत-से प्राणी। इन्हीके चमडोका बहुमूल्य समूर बनाया जाता है। शिकारी जाल इस्तेमाल करते हैं...। उस प्रदेशमें सर्दी इतनी अधिक है, कि लोगोके सारे निवास घरतीके भीतर होते हैं, वह सदा भूधरे हीमें रहते हैं।”

मार्को पोलोने यहा जिस देशका वर्णन किया है, वह साइबेरिया है, इसमें सन्देह नहीं। उसे यह खबर कुबिलेके दरबारमें गये कोनिचिके दूतमडलसे मिली होगी।

इतिहासकार अबुल्-फेदाके अनुसार कोनिचि वामियान और गजनी तथा कुछ काबुलके पासवाले प्रदेशोका भी शासक था। खुलाकूके ईरान-विजयके समय उसकी मददके लिये अये अक-ओर्दूवालोने यह स्थान अपने हाथमें कर लिये थे, इस प्रकार अक-ओर्दूका यह दक्षिणी भाग उत्तरी भागसे बिल्कुल अलग-थलग था, बीचमें चगताई-वंशकी भूमि थी। ओरदा-पुत्र कुलीने खुलाकूकी मदद करते समय अफगानिस्तानके उत्तर-पश्चिमवाले इस प्रदेशपर अपना शासन स्थापित करके भी उसे श्वेत-ओर्दूके अधीन ही रखा। खुलाकूको पीछे कुलीसे इतना भय लगा, कि उसने उसे जहर दिलवा दिया।

१२९३ ई० में कोनिचि (कुवी) का दूतमडल इलखान (ईरानी शासक) जयखातूके दरबारमें आया था। कोनिचि हिजरी सन् ७०१ (१३०१-१३०२ ई०) में मरा।

#### ४ बायन कोनिचि-पुत्र (१३०१-९०)

बायनको पिताका राज्य कुछ संघर्षके बाद मिला। शायद इसे उत्तरवाला भाग ही मिला, वामियान-गजनाको उसके भाई कुबलुक (क्यूलुक) ने ले लिया। बायनके हाथमें यह दक्षिणी भाग न जाने पाये, इसके लिये चगताई खान दावा और ओगोताइखान कैदूने भी कुबलुककी मदद की थी। बायनका दूसरा भाई मड-ताई था। इसकी बीवी नुकुलुन खातून प्रभावशाली ककुरत कबीलेकी थी। पिताके मरनेपर मंगोल प्रथाके अनुसार तीन सौतेली मायें तरकुजिन, जिकथुन् और अलताचू भी इसकी बीविया बनी। इन चारोके अतिरिक्त उसकी तीन और बीवियोका भी पता लगता है। श्वेत-ओर्दूका दूसरा खानजादा-कुतुकू-पौत्र, तेमूरबूका-पुत्र कुबलुक (कोबलेक, क्यूलुक)से बायनका जवर्दस्त संघर्ष रहा। १३०९ ई० में कुबलुकने दक्षिणी राज्य (वामियान-गजना) छीना था। थोड़े दिनों बाद बायनने फिर उसपर अधिकार कर लिया। कैदू और दावा कुबलुककी पीठपर थे और बायनका राज्यकेन्द्र चगताई राज्यके पार दूर पड़ता था, तो भी ख्वारेज्मसे इलखानके इलाकामें होते श्वेत-ओर्दूकी सेनायें गजनी पहुंच सकती थी। सुवर्ण-ओर्दूके साथ बायनका बहुत अच्छा संबंध था, लेकिन तोगताइ खान नोगाइकी लडाइयोमें फसे होनेसे कोई बड़ी मदद करनेमें असमर्थ था। बायनने इलखान गजनको मदद देनेके लिये लिखा, और उसने मदद भी दी। समकालीन इतिहासकार रशीदुद्दीन लिखता है—“हमारे काल में अठारह बार बायनने कुबलुकसे लडाई की।” कुबलुकके साथ हो कैदू और दावाकी भी सेनायें लड़ती रही। कैदूके मरनेके बाद जब उसका पुत्र चापर ओगोदाइ-उलुसका खान बना, तो तोगताईने उसे कई बार लिखा, कि दावा खानको कुबलुककी मदद करनेसे रोको, लेकिन बापकी तरह वह भी कुबलुककी पीठपर था। उसने जवाब दिया—“गजनसे लड़ते समय कुबलुकने हमारी सहायता की, इसलिये हम उसकी मदद करते हैं।” हिजरी सन् ७०२ में बायनने अपने बापके समयके अमीर केलस तथा तुकतेमूरके नेतृत्वमें एक बड़ी भेंट भेज, गजनको कहलवाया कि हम चापर और दावाके विरुद्ध लड़ने जा रहे हैं, तोगताई खान हमारा सहायक है। उसने दो तुमान (बीस हजार) सेना हमारे पास भेजी। सेना आगे बढ़ी, लेकिन कैदू और चगताईके उलुसोने बीच में पड़कर कआनकी सेनासे उसे

मिलने नहीं दिया। कुबलुकने उनकी सहायतासे हमारा कुछ इलाका छीन लिया। औरदा-उलुसका अधिक भाग हमारे साथ है, आदमियोंकी हमें कमी नहीं है। हा, पैसेकी जरूरत है। इसपर गजनने वायन और उसके खातूनोंके लिये बहुत-से बहुमूल्य उपहार तथा काफी सोना भेजा।

१३०९ ई० में कुबलुक शक्तिशाली था। उसने उसी समय गजना और वामियानको छीन लिया था। उसके बाद उसका पुत्र कमतिमूर वहां का शासक बना। श्वेत-ओर्दूके लोग वायनके भाई मुद्-ताईकी ओर थे।

### ५. ससीवूगा वायन-पुत्र (१३१९ ई०)

वायनके बाद उसका पुत्र ससीवूगा सिरपारखाले राज्यका स्वामी बना और गजना-वामियान अब कोनिचि-पुत्र मुद्-ताईके हाथमें चला गया। ससीवूगाकी मा कुतुलुन (नुकुलुन) खातून थी। काजी अहमद गफफारी (मृत्यु १५७७-७८ ई०) ने अपने ग्रंथ "नस्खजहानारा" में नमीकी नौकाका पुत्र बतलाया है और कहा है, कि वह अपने भाईके बाद गद्दीपर बैठा, लेकिन रखादुद्दीन जैसे नमसामयिक तथा मंगोल-व्यक्तिके एक प्रामाणिक इतिहासकारके सामने गफफारीकी बातका मूल्य नहीं है।

### ६. एर्जन, एविजन, ससीवूगा-पुत्र (१३१९-४४)

एर्जनका पचीम मालका शासन श्वेत-ओर्दूकी शक्ति और समृद्धिकी चरमसीमाका था। अपनी योग्यताके कारण वह उज्बेक खानका बहुत ही कृपापात्र था। राज-काजमें चतुर होते हुये, वह बड़ा विद्याप्रेमी था। उसने उत्तरार, सावरान, जद, वारजकद नगरोंमें बहुतसे मदरसे, खानकाहे (मठ) और मस्जिदें बनवाईं। मार्को पोलो द्वारा वर्णित, कोनिचिकी बरबर प्रजाके समयमें अब अक-ओर्दू कहासे कहा चला गया था? छिद्द-गिन्के तारतारो के पुराने वर्णन छोड़कर अब वह कट्टर मुसलमान हो चुके थे। इतिहासकार अनुनीम अस्कन्दरके<sup>१</sup> अनुसार "एर्जनने सारे तुर्किस्तान (अक-ओर्दू) को स्वर्गोपम (खुदबरी) बना दिया"। श्वेत-ओर्दूको ऐसी समृद्धि फिर स्वप्नमें भी नहीं मिली। उज्बेकके खानने एर्जनको गद्दीपर बैठाया था। पीछे इसके लडके खिजिर ओगलान और खुलफा उज्बेकके मिहामनपर बैठे, यह हम पहले बतला चुके हैं।

पचीम माल राज्य करनेके बाद ७४५ हि०<sup>२</sup> में एर्जन मरा और सिगनाक नगरमें इसकी कब्र बनाई गई।

### ७. मुवारक खोजा एर्जन-पुत्र (१३४४ ई०-)

यह भले वापका नानायक लडका निकला। अपने लोभ और बदमाशीके कारण ६ महीने मुश्किलमें राज्य कर पाया। इसके बाद दो मालतक अलताईके पहाड़ों और किरगिजों की भूमिमें मारा-मारा फिर्ना रहा। मरनेके बाद इसे भी सिगनाकमें दफनाया गया।

### ८. चिमताई एर्जन-पुत्र (१३४४-६२ ई०)

जानीबेगने इस भलेमानुस खान को गद्दीपर बिठाया। सुवर्ण-ओर्दूके मिहामनके खाली होनेपर वहांके अमीरोंने बहुत चाहा, कि चिमताई वातूके सिंहासनपर बैठे, लेकिन उसने कबूल नहीं किया। इसीके समय बन्दीबेग, जानीबेग और किलदीबेगके दुराचार और अन्यायपूर्ण शासन हुये थे। सुवर्ण-ओर्दूके अमीरों (शासकों) के चरम पतनको देखते हुये उसने अपने सिंहासनपर ही मनुष्ट रहना पसन्द किया। बहुत जोर देनेपर उसने अपने भाई औरदा शेवको वहां भेज दिया।

### ९. उरुस खान चिमताई-पुत्र (१३६१-७० ई०)

यह बड़ा ही मनस्वी खान था। सुवर्ण-ओर्दूकी नैयाके टगमगानेके समय इसने अपने वापपर बहुत जोर दिया, कि वोक-ओर्दूको भी अक-ओर्दूमें मिला लिया जाय, लेकिन चिमताईने नहीं माना। अब

<sup>१</sup> ज० ओ० पृष्ठ २७० । २ १५ मई १३४४-३ मई १३४५ ई० ।



गद्दीपर बैठनेके बाद उसने सकल्प किया, कि सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूको मिलाकर छिड़-गिस्के पुत्र जु-छि और पौत्र वा-तूके समयके वैभवको पुनः स्थापित किया जाय। इसने गद्दीके महोत्सवके समय ही जल्से में अपने इन विचारोंको प्रकट किया। अमीरोंने उसे पसंद किया। उन्हें बड़े-बड़े इनाम दिये गये। लेकिन उसके अपने वंशके तुका-तेमूर परिवारवाले तुर्गुखाजा (तुलीखाजा) ने इसका विरोध किया, जिसके लिये उसे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा—तुर्गुखाजा मनकिशलकका शासक था। पिताकी इस हत्याका बदला लेनेकी भावना ने उसके पुत्र तोकतामिशको उत्तेजित किया। लेकिन, अभी वह कम उमरका था, इसलिये क्या कर सकता था? तोकतामिश एक बार ओर्दूसे भाग गया, लेकिन लौटके आनेपर उसकी उमरका ख्याल करके क्षमा कर दिया गया। जब उरुस खान कोक-ओर्दूका भी स्वामी बन गया, तो तोकतामिश फिर भागकर विश्वविजेता तेमूरलग (१३०७—१४०४ ई०) के पास गया। उस समय तेमूरलग चंगताई ओर्दूके दक्षिणी राज्यको अपने हाथमें करके उत्तरी राज्य (मुगोलिस्तानपर) पांचवा आक्रमण करना चाहता था। तेमूरने अपने सेनापति तेमूर उज्जेकको खानजादा तोकतामिशका स्वागत करनेके लिये भेजा। समरकन्द पहुँचनेपर तेमूर उज्जेकने खानजादेको तेमूरके सामने पेश किया। तेमूरने तोकतामिशका राजसी स्वागत करते हुये सोना, जवाहरात, हथियार, बहुमूल्य पोशाक, घोड़े, ऊट, तम्बू-ध्वजा-पताका, नगाड़े तथा दास-दासी प्रदान किये और विदा करते वक्त उसे “पुत्र” कहकर सम्बोधित किया। तेमूरने उसे सावरान, उतरार, सिगनक, सैरान, सेराय तथा किपचकके दूसरे नगरोंका स्वामी (शासक) बनाते यायिक (उराल) और सिर नदीके बीचके प्रदेशका राज्य प्रदान किया। यह भूभाग उरुस खानके अधीन था; इसलिये यह मान-प्रदान केवल मौखिक ही हो सकता था। उरुस खान चुप नहीं रह सकता था। उसने अपने पुत्र कुतुलुकबूगाको तोकतामिशका मुकाबिला करनेके लिये भेजा। कुतुलुकबूगा लडाईमें घायल होकर दूसरे दिन मर गया, तो भी तोकतामिशकी हार हुई और उसे फिर भागकर तेमूरलग की शरण लेनी पड़ी। लगडे तेमूरने फिर उसका पहले ही जैसा सम्मान करके फिर नई सेना दी। उरुस खानके ज्येष्ठ पुत्र तेगूताकियाने फिर तोकतामिशको हराया। तोकतामिश बड़ी मुश्किलसे सिर नदी तैरकर पार हुआ। उसका पीछा करते हुये कजनजी बहादुरने तीरसे उसके हाथको घायल कर दिया था। घासमें पड़े तोकतामिशको अकस्मात् तेमूरलग द्वारा दिये मन्त्री इतिगू बेरलसने देखा। फिर वह उसे लेकर बुखारामें तेमूरके पास पहुँचा। तेमूरने फिर उसे और भी बड़े साजोसामान तथा सेनाके साथ भेजा। इस समय यदकू (मङ्गुत या तिमिर कुतुलुकका पुत्र) तोकतामिशका समर्थक बनकर बुखारा चला आया था। उसने खबर दी, कि उरुस खान बड़ी सेना लेकर लड़नेके लिये आ रहा है। केपेक मङ्गुत और तुलजियानने तेमूरके दरबारमें जाकर उरुस खानके सदेशको कहा—“तोकतामिश मेरे पुत्रको मारकर तुम्हारी शरणमें चला आया है। तुम मेरे शत्रुको मेरे हाथमें अर्पण कर दो, यदि इन्कारी हो तो मैं युद्ध घोषित करता हूँ। हमें अब युद्धक्षेत्र चुनना होगा।”

तेमूरलगने उत्तर दिया—“तोकतामिशने अपनेको मेरी शरणमें दे दिया है। मैं उसकी रक्षा करूँगा। जाकर उरुस खानसे कह दो, कि उसकी ललकारको ही स्वीकार नहीं करता, बल्कि मैं और मेरे सिपाही सिंहकी तरह—जो कि जंगलमें नहीं बल्कि युद्धक्षेत्रमें वास करते हैं—लड़नेके लिये तैयार हैं।”

तेमूरलगने अमीर यदकूकोइको समरकन्दका शासक नियुक्त कर १३७६ ई०के अन्तमें प्रस्थान कर उतरारके मैदानमें डेरा डाला। उरुस खान अपनी सेनाके साथ वहाँसे चौबीस फरसक दूर सिगनाकमें था। एक जबर्दस्त आधी-पानी आया, जिसके बाद भयकर सर्दी हो गई। इसकी वजह से तीन महीनेतक कोई सैनिक कार्रवाई नहीं हो सकी। फिर तेमूरने कताई बहादुर और मोहम्मद मुलतानशाहको रातमें आक्रमण करनेका हुक्म दिया। जबर्दस्त सघर्ष हुआ। उरुस खान-पुत्र तेमूरमलिक अगेलानने तीन हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया। कताई बहादुर और एरेक तेमूर मारे गये, तेमूरमलिक भी आहत हुआ। तेमूरलगकी विजय हुई। उसने अबू-मोहम्मद मुलतानशाह और अमीर मर्वशेरको भी पता लगानेके लिये भेजा।

लडाई आगे नहीं हो सकी। उरुस खान दशतेकिपचक लौट गया और तेमूरलग केश (शहरसब्ज) की ओर। ती साल राज्य करनेके बाद १३७० ई० में उरुस खान स्वाभाविक मृत्युसे मर गया।

अनुकूल समय देखकर तेमूर फिर दक्तेकिपचककी ओर रवाना हुआ। उसके सेनाग्रका सेना-पति तोकतामिश था, जो बड़ी तेजीसे बढ़ते हुये पंद्रह दिनमें सैरामकामिश (हरिनोके नरकट) में पहुँच गया और एकाएक आक्रमण करके उसने शहरको लूट लिया। वहाँसे उसे बहुतसे घोड़े, ऊट और भेड़े हाथ लगी।

## १० तोग़ताकिया, उरुस-पुत्र (१३७०-- )

पिताकी जगहपर यह गद्दीपर बैठा, लेकिन दो ही महीने बाद मर गया। इसके बाद इसके भाई तेमूरवेग (तेमूर मलिक) को गद्दी मिली।

## ११ तेमूरवेग, तेमूरमलिक उरुस-पुत्र, मोहम्मदखान-पुत्र (१३७०-७५ ई०)

यद्यपि सिंहासनके लिये उसका प्रतिद्वंद्वी तेमूर लग जैसे विख्यात विजेता की सहायता-प्राप्त तोकतामिश था, लेकिन तेमूरवेगको इसकी परवाह नहीं थी। वह हृदयपूर्ण ऐश्वर्य था, रात-दिन शराबमें मस्त रहता। उसके अत्याचारोंसे लोग परेशान थे। तो भी तोकतामिशने इसके ऊपर आक्रमण करके फिर एक बार हार खाई। लेकिन तेमूरवेगके अत्याचारोंसे उसके बड़े-बड़े अमीर भी परेशान थे। उनको विश्वास होने लगा था, कि इसके रहते श्वेत-ओर्दूको अच्छे दिनोंकी आशा नहीं हो सकती। एक प्रसिद्ध अमीर औरंग तेमूरने तेमूर लगके पास भागकर उसे और उभाड़ा। तेमूरने उसके गयासुद्दीन, तरखन, तोमन तेमूरके बख्शी खोजाके साथ भेजा। जागीर मागनेपर न देनेसे नाराज होकर एक और अमीर उज्वेक तेमूर भी तेमूर लगके पास भाग आया, जिसने उससे कहा—“तेमूर मलिक दिन-रात शराबमें मस्त पड़ा रहता है। पहर भर दिनतक सोता रहता है, जो कि भोजनका समय है। किसीकी हिम्मत नहीं, कि उसे जगाये। लोग अब उससे उकता गये हैं, और चाहते हैं, कि तोकतामिश आवे।” उस समय तोकतामिश सिगनकमें था। तेमूरने तोकतामिशको खबर दी। तेमूरवेगने जाडो (१३७७ ई०) को करातागमें बिताया। १३७७ ई० में तेमूर लगने तोकतामिशको हमला करनेके लिये हुक्म दिया। इसी जाडेमें तेमूरवेगका एक बड़ा भारी दरबारी कापवहादुर भी उसका साथ छोड़कर तोकतामिशके पास चला आया। तोकतामिशने आक्रमण करके तेमूरवेगको पूरी तौरसे हरा दिया और उरुसखोजा द्वारा विजयका समाचार तेमूरलगके पास भेजा। तेमूरने भारी खुशी मनाई, उरुसखोजाको खलअत और सुनहला क़मरबन्द दिया, लीटनेके समय धन और घोड़े प्रदान किये।

जाटोंमें फिर ताततामिश सिगनकमें रहा तेमूरवेगका पीछा करते पश्चिमी किपचकके मेमक स्यानकी ओर बढ़ा।

उसपर भी तेमूरवेगको होंग नहीं आया। वह ७८५ हिजरी (६ मार्च १३८३-२३ फरवरी १३८४) में निर्णायक लड़ाई लड़नेके लिये करातालकी ओर बढ़ने लगा। तेमूरवेगने गद्दीपर बैठते समय वेवकूफीसे अक-ओर्दूके एक तुमान (मेराय मोलकुल) को अपने चचेरे भाई मोहम्मद अगलानको दे दिया था। अब उसने मोहम्मदको तोकतामिशके विरुद्ध लड़नेके लिये कहा। मोहम्मद जानता था, कि ओरदा-उनुस तोकतामिशके पक्षमें हैं। उसने तेमूरवेगको मना किया, जिसपर तेमूरवेगने उसे तोकतामिशका पक्षपाती कहकर भारी मनामें मरवा डाला और वही उसने मीगद खाई, कि जो भी मेरी इच्छाके विरुद्ध जायेगा, उसकी यही हालत होगी।

तोकतामिश और तेमूरवेगमें करातालके पास ममाडमें लड़ाई हुई। तेमूरवेगने हारके साथ प्राण भी गंवाये। उसी लड़ाईमें एक स्वामिभक्त अमीर बर्निजक पकड़कर विजेता तोकतामिशके पास लाया गया। तोकतामिश बर्निजककी ईमानदारीपर पूरा विश्वास रखता था। उसने उससे कहा—“अगर तू मुझे अपना वादगाह माने, तो मैं तेरे सम्मान और अधिकारको जरा भी कमी नहीं करूँगा, बल्कि राज्यकी बागडोर तेरे हाथमें सुपुर्द कर दूँगा।” बर्निजकने जवाब दिया—“मैंने अपने जीवनका सबमें अच्छा भाग तेमूरवेगकी मर्शमें बिताया। मैं इसे महन नहीं कर सकूँगा, कि उसके सिंहासनपर कोई नज़र पड़े। जो तुझे तेमूरवेगकी गद्दीपर बैठा देयना चाहे, उसकी आगवै फूट जाय। अगर तू मेरे ऊपर

कृपा करना चाहता है, तो मेरा सिर काटकर तेमूरके सिरके नीचे रख दे, और उसकी लाशको मेरी लागपर लिटा दे, जिसमे उसका कोमल शरीर धूलमे न लिपटे ।” तोकतामिशने उमकी इच्छा पूरी की ।

## १२ तोकतामिश तूलि-पुत्र (१३७५-९७ ई०)

तोकतामिश बापकी हत्याका बदला ले सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दूके सम्मिलित सिंहासनपर बैठा । उसकी मा कुतन कुनचेक प्रसिद्ध ककुरत कबीलेकी अमीरजादी तथा मनस्विनी स्त्री थी । इतिहासकार अनुनीम असकदर के अनुसार तोकतामिश बहुत ही मुस्तैद, प्रतापी, सुदर तथा स्वभावसे भी सुदर वादगाह था । वह अपने न्याय और सदाचारके लिये प्रसिद्ध था । अस्कन्दरके अनुसार उसमें दोष यही था, कि उसने अपने उपकारक तेमूरलगसे कृतघ्नता की । तेमूरवेकपर विजयप्राप्त करते ही तोकतामिशने अपने सारे उलुसको सुव्यवस्थित किया ।

तोकतामिशने वेरेकसरायको अपनी राजधानी बनाया । बा-तूने अस्त्राखानके पास वर्तमान सेली-त्रेन्नोय गावकी जगह अपनी राजधानी—वातू-सराय बनाई थी । उसके भाई वेरेक (१२५५-६६ ई०) ने वोल्गाकी शाखा अखतूवे नदीके तटपर आधुनिक स्तालिनग्रादके समीप सराय-वेरेकके नामसे नई नगरी बसाई, लेकिन वातू सरायसे हटाकर वेरेक सरायमें राजधानी ले जाना उज्वेक खानका काम था । तोकतामिशके समय सुवर्ण-ओर्दू राज्य एक बार फिर ख्वारेज्मसे पश्चिममे रूसी राजुलोके भीतर, तथा क्रिमिया, काकेशसके दरबन्द तथा वाकूतक फैल गया । पश्चिममे राज्यसीमा दनियेस्तर नदी, और पूरवमे तबोल-इरतिश-सगम एव मध्य सिर-दरिया थी । तोकतामिशने सत्रह साल (१३६२ ई०) तक अच्छी तरह शासन किया, फिर इतिहासकारोके अनुसार उसे शरारत सूझी और वह तेमूरलगसे छेड़खानी कर बैठा ।

१३८० ई० मे तोकतामिशके क्रिमिया-शासक रमजनने वेनिसगणके प्रतिनिधि अन्द्रेय वेनेरिसके साथ व्यापारिक समझौता किया ।

मास्को-ध्वंस (१३८२ ई०)—तोकतामिश जू-छिके पुत्र ओरदाके वशका नहीं था, बल्कि उसका पूर्वज छिङ्ग-गिस्वशी राजकुमार तुका-तिमुर था । ममाइ (करातालके पास) की विजयके बाद वह पूर्वी और पश्चिमी दोनों किपचको—सुवर्ण-ओर्दू और श्वेत-ओर्दू—का स्वामी बना । विजयकी खबर सुनते ही रूसी राजुल जल्दी-जल्दी अपनी भेंट और तलवार चढानेके लिये उसके दरबारमे पहुँचे । मास्को-महाराजुल दिमित्रिके दो कवचधार कुतुलुकबुंगा और मोक्स दूसरे खड्गधारियोंके साथ भिन्न-भिन्न राजुलोकी राजधानियोमे खानकी सुनहली मोहरलगी यारलिकके साथ गये । लेकिन तोकतामिश इतनेसे सतुष्ट नहीं होनेवाला था । वह कर लेते हुए खानोकी प्रभुताको पूर्ववत् स्थापित करना चाहता था, जिसे उठा फेंकनेकी रूसी राजुलोने इधर कोशिश की थी । उसने खानजादा अकखोजाको सात सौ सिपाहियोंके साथ यह कहला भेजा, कि रूसी राजुल भेंट और तलवार ही नहीं भेजें, बल्कि खुद वेरेक-सरायमे हाजिरी देनेके लिये आयें । अकखोजाने स्वयं निज्नीनवोगोरद (निचला नवीन नगर) मे ठहर दूसरे दूतको सदेशके साथ मास्को भेजा । हालहीमे दोनके तटपर महाराजुल दिमित्रिको जो विजय प्राप्त हुई थी, उससे गर्व करते उसने जानेमे आनाकानी की । सालभरकी तैयारीके बाद उसे एकाएक खबर मिली कि सेना पार करनेके लिये तारतारोने बुल्गारोकी नावें पकड ली हैं, र्याजनका राजुल पथप्रदर्शक वन उन्हे ओका नदी पार करानेके लिये रास्ता दिखला रहा है । इस खबरको सुनकर बहुतसे राजुलोने हिम्मत हार दी । महाराजुलके धर्मपिता निज्नीनवोगोरदके राजुल दिमित्रिने अपने दो पुत्रोको खानके दरबारमे भेज भी दिया । उस समय खानका शिविर सिरनागमे था, जहा वह तोकतामिशसे मिले ।

मास्को-महाराजुल दिमित्रि राजधानीको वायरोके हाथमे छोड सेना-संग्रहके लिये कोस्त्रोमाकी ओर गया । ओका नदीपर अवस्थित सेपूकोफ नगरको लेकर तोकतामिश मास्कोपर चढा । गिर्जोंके घटे वजाकर नागरिकोको इकट्ठा कर एक बड़ी सभा की गई, पुराने रूसी रवाजके मुताबिक प्रति-

रक्षाके लिये बहुमतके अनुसार फैमला लेना था। तबतक कितने ही लोग गहर छोड़कर भाग चुके थे, जिनमें महानधवायक कुत्रियान भी था, जो त्वेर चला गया था—कुत्रियान रूसी नहीं था, इसलिये उसकी कायरताको लोगोंने विशेष तौरसे बुरा माना। गहरमें खलबली मची हुई थी। इसी समय एक तरुण लियुवानी राजकुमार ओसतेडको दिमित्रिने मास्को भेजा—ओसतेड प्रसिद्ध लियुवानी राजा ओलगर्दका पाँच था। उसके कामोको देखकर लोगोके दिल कुछ मजबूत हुये। पामके गावोके किसान भी अपने सामान और परिवारोंके साथ मास्कोमें शरण लेने चले आये थे। उन्होंने भी ओसतेडकी पुकारको सुना। नगरकी रक्षाके लिये माधुओने भी हथियार मागे। इस प्रकार अप्रशिक्षित किन्तु बहादुर नागरिकोंकी कई पल्टने प्राकारकी रक्षाके लिये तैयार हो गई। बहुत समय नहीं बीता, कि जलते गावोंके धूने तार-तारोंके आनेकी सूचना दी। २३ अगस्त १३८२ई० को तारतार उपनगरमें पहुँच गये। आक्रमणकारियों में कितने ही रूसी भापा जानते थे। उन्होंने महाराजुलके वारेमें पूछा। जवाब मिला—वह मास्कोमें नहीं है। नगरको घेरकर तारतारोंने बाणोंकी वर्षा करते बहुतसे नगर-निवासियोंको मार डाला, लेकिन रूसियोंने भी जो भी हाथ आया उसीसे तारतारोंका मुकाबिला किया—उन्होंने उनपर उबलते पानीको फेंका, बड़े-बड़े पत्थर गिराकर तारतारोंको चकनाचूर किया। तीन दिनतक जवर्दस्त आक्रमण होता रहा—छेरियत यही थी, कि किपचकोंके पाम तोपखाना नहीं था। इस तरह काम न चलते देख तोकता-मियाने छलमे काम लेना चाहा। उसने अपने कुछ सरदारों तथा निजनीनवोगोरदके दोनों राजुलपुत्रोंको भेजकर कहाया खान लोगोको अपनी आज्ञाकारी प्रजा समझता है। उनके प्रति उसका कोई दुर्भाव नहीं है। वह केवल अपने शत्रु महाराजुलको चाहता है। वह तुरत नगरको छोड़ जानेके लिये तैयार है, यदि उसके पाम भेंट भेजी जाये और भीतर आकर नगरको देख लेनेका मौका दिया जाय। ओसतेडने माधुओ, वायरो और लोगोमें मलाह ली। उन्होंने निजनीनवोगोरदके राजुलके दोनों पुत्रों वासिली और मिमेशोनकी इस बातपर विश्वास किया, कि खान अपने वचनको नहीं तोड़ेगा। नगरके फाटक खोल दिये गये। मूल्यवान् भेंट लिये ओसतेड आगे-आगे, उसके पीछे सलीब लिये हुये माधु, फिर वायर और माधारण जनता चली। ओसतेडको सीवे खानके तम्बूमें ले जाकर मार डाला गया। फिर सकेत पाते ही हजारों तारतारोंने नगी तलवारें ले लोगो को जवह करना शुरू किया। फिर वह नगरमें घुस पड़े। बिना नेताके निपाटियोंमें भगदड़ मचनी ही थी। वह औरतोंकी तरह रोते-कादते सड़कोंपर डयर-डयर भागने लगे। तारतारोंने वूटो, बच्चों, स्त्रियों और साधुओमें कोई भेद न कर सबको तलवारके घाट उतारा। गिजाँके दरवाजोंको खोलनेपर वहा रक्खी हुई गावके लोगोकी सम्पत्ति मिली, जिसे तारतारोंने लूट लिया। वहा चादी-मौनकी मूर्तिया, बहुमूल्य भाड तथा दूसरी चीजें बड़े भारी परिमाण में मिलीं। महाराजुलका खजाना, वायरो (सामन्तों) और धनी व्यापारियोंकी चिरकालसे जमा होती सम्पत्ति तारतारोंके हाथ लगी। इसके साथ सबसे बड़ी हानि जो हुई, वह थी पुरानी पुस्तकों और स्मृतियोंकी तारतारों द्वारा होनी जानना। सम्पत्ति लूटनेके बाद उन्होंने घरोंमें आग लगा दी, फिर तारतारोंके झुटकों आगे-आगे हावते पामके खेतोंमें जाकर उन्होंने भोज किया।

तोकतामियकी सेना मारने मरने फैल गई। ब्लादिमिर, ज्वेनीगोरद, यूरियेफ, मोजाइस्क, दिमिशियेफ आदि रूसी नगरोंकी भी वही गति हुई, जो मास्कोकी। पेरेडम्लाव (यारोस्लाव) नगर आगवा भेंट हुआ, लेकिन लोग नावसे भाग निकलनेमें सफल हुये। कलोम्नापर भी अधिकार करके तोकतामिय लौट गया। आना पार हो अपने पथप्रदर्शक जातिद्रोही र्याजन-गजुलके राज्यको उसने वहीं निर्दयतासे साथ नष्ट और नष्ट-भ्रष्ट किया।

रूसकी गजुलाना जो काम उनने दिनोंमें हो रहा था, उसपर भारी चोट पहुँची। इवान और सेमियोनने सानोकी चापनकी तरफ देशमें जो समृद्धि पैदा की थी, उसका सर्वनाश हो गया। लोग कहने लगे—“तारतारोंपर न विजयी होनेवाले ‘हमारे पुग्वा’ भी हमारे जैसे अभाग नहीं थे।”

यद्यपि तोकतामियने महाराजुल और उसकी राजधानी मास्कोका सर्वनाश कर दिया, लेकिन उसने ऐसा, कि बिना महाराजुलकी महारानके पहरेकी तरह रूसियोंमें कर उगाहने और अपनी आज्ञा के अनुसार नफा नही प्राप्त कर सक्ता, उनलिये उसने फिर अपने पूर्वगामियोंका साम्राज्य स्वीकार

किया। अपने एक मुरजा (मिर्जा) के द्वारा उसने दिमित्रिके पास सहृदयता दिखलाते हुये सदेश भेजा—  
अब भी तुम मेरी अधीनता स्वीकार कर पहलेकी तरह काम करो। दिमित्रिने अपने पुत्र वासिलीको भेजा। मास्कोके नष्ट हो जानेपर मूल्यवान् भेंट कहासे भेजी जा सकती थी? तो भी तोकतामिशने वासिलीके साथ अच्छा बरताव किया। उसने महाराजलकुमारको दरबारमें जामिनके तौरपर रक्खा और मास्कोके ऊपर नये कर लगाये।

खानोकी शक्तिको क्षीण हो जानेपर रूसका प्रतिद्वन्द्वी लिथुवानियाका राजा समझा जाता था। अवतक लिथुवानी ईसाई धर्मको न स्वीकार कर वैदिक देवताओके भाईवन्दोको ही अपना इष्टदेव मान रहे थे। उनकी वीरताके कारण ईसाई समुद्र इन काफिरोके द्वीपको अपने भीतर बर्दाश्त कर रहा था। एक इतिहासकार लिखता है—“बहुतसे लोग शायद यह नहीं जानते, कि १४ वी सदीके अततक मध्य-युरोपके इतना नजदीक विलेनुस नगरीमें काफिरोका धर्म राजधर्म था।” \*लिथुवानी राजा लादि-स्लाउस (ह्लादश्रवा) ने पोल-राज्यकी उत्तराधिकारिणी कुमारी हेदविगके साथ ईसाई धर्म स्वीकार करते हुये व्याह किया। इसी समय राजाके साथ उसके साथियोने भी वपतिस्मा लिया। युरोपके धर्मपरिवर्तनवाली कहानी लिथुवानियामे भी दुहराई गई और विलनामे काफिरोकी जितनी मूर्तिया और पवित्र वृक्षस्थल थे, सबको एक ओरसे ईसाई पादरियोने नष्ट कर दिया। पुराने पुरोहितोको उनकी मृगछालाकी पोशाकके बदलेमें सफेद पोशाक बाटी गई। लिथुवानियाके राजाको इसकी जरूरत क्यों पड़ी? अपने पड़ोसियो को देखते हुये ग्रीक और रोमन सस्कृतिसे लिथुवानियाके सरदार भी प्रभावित हुये बिना नहीं रहे। भीतर ही भीतर सस्कृतिके साथ धर्मका भी प्रभाव उनमेंसे कितनो हीपर पडता जा रहा था, जिससे आगे चलकर काफिर और ईसाईका सवाल सिंहासनके लिये खतरेका कारण हो सकता था। उधर लादिस्लाउसने देखा, कि ईसाई धर्म स्वीकार करनेपर मैं पोल राज-कुमारीके साथ पाणिग्रहण कर पोलन्दका भी स्वामी बन जाऊंगा, इसलिये हजारो वर्षोंसे चली आई लिथुवानी सभ्यता और धर्मके बहुतसे चिह्नोको मिटा देनेमें उसने हाथ बटाया। महाराजल दिमित्रिका तोकतामिशके साथ फिर अच्छा सवध स्थापित हो गया, इसलिये लिथुवानियन राजाके आक्रमण करने-पर उसे तोकतामिशका एक भारी सहारा मिल गया। १३८६ ई० मे दिमित्रिके मरनेपर उसका पुत्र वासिली महाराजल बना।

पश्चिमकी दिग्विजयके बाद तोकतामिशने अपने राज्यके पूर्वी भागकी व्यवस्थामे हाथ लगाया। उसने विरोधियोको बड़ी निष्ठुरतासे पीस डाला, जिसमें उसकी अपनी वीवी तावलुइने भी अपने प्राण खोये। तेमूर लगसे झगड पडना अकारण नहीं था। जू-छिके समयसे ही ख्वारेज्म उसके उलुसका था, जिसे तेमूरने जबर्दस्ती छीन लिया था। उरुस खानके समय, जो राज्यमें गडबडी मची थी, उससे फायदा उठाकर हुसेन सूफी यड-हदाई-पुत्र (ककुरत) ने ख्वारेज्मके कात और खीवा जिले हडप लिये। तेमूरने देखा, कि हुसेनकी पीठपर कोई नहीं है, इसलिये ‘ख्वारेज्म जगताई-उलुसका है’ कहकर उसे मागा। तेमूर यद्यपि एक बड़ी सल्तनतका स्वतंत्र शासक था, लेकिन उसने जगताई वशके खानको समरकन्दकी गद्दीसे नहीं उतारा और अपने लिये केवल अमीरकी साधारणसी पदवी स्वीकार की थी। इस प्रकार उसने जगताई खानकी ओरसे ख्वारेज्मपर दावा किया। हुसेन सूफीने उसका जवाब दिया—“तलवारसे जीता तलवारसे ही लौटाया जा सकता है।” तेमूर दौड पडा। कातमे कुछ थोडेसे प्रतिरोध के बाद शहरपर तेमूर लगका अधिकार हो गया। निर्मम हत्या हुई, स्त्री-वच्चो सहित बहुतसे लोग दास बनकर विकने के लिये बदी बनाये गये। हरे-भरे ख्वारेज्मको तेमूरकी आगमें जलना पडा। कातसे हुसेन सूफी भाग गया, और थोडे दिनो बाद मर गया। तेमूर लगने दया दिखाते हुये हुसेन सूफीके पुत्र युसुफ सूफीको इस शर्तपर वहाका शासक बनाया, कि वह अपनी चचेरी बहिन तथा सुन्दरताके लिये सर्वत्र प्रसिद्ध सेविनवेईको तेमूर-पुत्र जहागीरके साथ व्याह दे। युसुफने पहले तो बात मान ली, लेकिन जल्दी ही उसने गर्तको तोटकर कातको लूटना और लोगोको भगाना शुरू कर दिया। दड देनेके लिये १३७२ ई० मे तेमूर फिर

आया। युसुफने आत्ममर्पण किया। सेबिनवेड (खानजादी) का व्याह जहागीरके साथ हुआ और युसुफको क्षमा मिली। दो साल बाद १३७४ ई० में फिर तेमूरको कातके रास्ते ख्वारेज्मकी ओर बढ़ना पड़ा, लेकिन अपने किनी अमीरकी ओरसे समरकंदपर खतरा होनेकी खबर सुनकर वह लौट गया। इसी साल उमने तोकतामिशको क़िपचकोका खान स्वीकृत किया था।

जिस समय तेमूर-लग उत्तरगर्म उरुस खानमें लड़नेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय युसुफ सूफीने बुगारा जिलेपर आक्रमण करके लूट-मार मचानी शुरू की। तेमूरने उसे हिदायत करनेके लिये दूत भेजा, जिने युसुफने जेलमें डाल दिया। इसके बाद एक दूसरे दरवारी दूतको तेमूरने रेगमपरताजी कस्तूरीसे निक्का आसनपत्र देकर भेजा। युसुफने इस दूतकी भी वही गति की। बुखाराके पास उमने कुछ तुर्कमानोंके ऊट दूट लिये। १३७८ ई० के वसंतमें राजधानीके सामने पहुँचकर युसुफने कहा—“इतने मुसलमानोंको मरवानेकी जगह यही अच्छा है, कि आओ हम दोनों द्वन्द्व-युद्ध करके हार-जीत का फैसला कर लें।” तेमूरने इसे स्वीकार किया। मित्रोंके व्रजित करनेपर भी शाही कवच और गिरस्त्राण पहनकर तेमूरने द्वन्द्व-युद्धके लिये नगरद्वारसे बाहर जा युसुफको ललकारा, लेकिन वह लड़नेके लिये सामने नहीं आया। उसी समय तेरमिजसे कुछ ताजे खरबूजे (मरदे) आये, जिनमें से कुछको मोनेकी थालमें रखकर, तेमूरने अपने दुश्मनके पास भेजा, लेकिन युसुफने उन्हें मोरीमें फेंक दिया और लानेवालेको थाल वरग दिया। फिर दोनोंमें घमामान लड़ाई शुरू हुई। नगरका मुहासिरा करके युसुफने उस समयके पुराने ढगके तोप-खानेमें प्रारारको तोड़नेकी कोशिश की। मुहामिरा तीन महीने छ दिन रहा। युसुफ सूफी इसी बीचमें अमकत होकर मर गया। तेमूरके हाथ भारी हीरा-मोतीका खजाना आया। उमने सभी बारीफो, हकीमो और विद्वानोंको मित्रयो-वचचोंके एक बड़े समूहके साथ ख्वारेज्मसे पकड़कर केश (गहरमब्ज) भेज दिया। इस प्रकार १३७६ ई० में ख्वारेज्मपर तेमूर-लगका अधिकार हुआ।

पूर्व और पश्चिमकी सफलताओंके कारण तोकतामिशको अपनी शक्तिपर विश्वास हो गया था। इधर युसुफ सूफीकी लडाइयोंमें वह यह भी समझता था, कि तेमूर-लग अजेय नहीं है। जू-छिके मिहामनका मालिक और छिद्र-गिमी शाहजादा होकर वह कैसे वर्दास्त कर सकता था, कि ख्वारेज्म एक मामूली तुर्क सरदारके हाथमें चला जाय। वह जानता था, कि चगताई खान केवल गुटिया बनाकर समरकंदके मिहामनपर रखा गया है। तोकतामिशने ख्वारेज्म मागा, लेकिन मुहमे वैसा न कहकर भी तेमूर-लगका जवाब भी हुसैन सूफी जैसा ही था—“तनत्रारमें जीता तलवारमें ही लौटाया जा सकता है।” तोकतामिश तेमूरके विरुद्ध सिर-दनिया पाग ही नीचे समरकंदकी ओर बढ़ सकता था, अथवा ख्वारेज्मपर आक्रमण कर सकता था, लेकिन उसे तेमूर-लगका निर्बलस्थान वहाँ नहीं मालूम हुआ। उमने खुलाकूकी राजधानी तबरेज—जोकि अब तेमूर-लगके हाथमें थी—को नक्ष्य कर काकेशीय दरबन्दके रास्ते अभियान किया। उसके साथ बंक बुलाद, ऐमावेक, यागलीवेक, गजनशी आदि बारह आंगलान (राजकुमार) थे, जिनका मुखिया पुतादवेक था। तोकतामिशकी सेनाने मिरवान होने हुये आजुरबाइजानके भीतर घुसकर तबरेजको घेर लिया। लोगोंको जब यह खबर मिली, तो वे अपने कूचों और मृद्वन्तोंमें दान्तोंको डाल मोचाप्रदी कर हथियारबंद हो अपने-अपने मुहल्लोंकी हिफाजत करने लगे। आक्रमणकारियोंने नागरिकोंके प्रतिरोधको बहुत मजबूत देखा। वह शम्सेगाजानीमें उनरे और गमजान स्थान इन्होंने किये आठ दिनतक नगरका चक्कर लगाते रहे। जब कोई वैसा स्थान या अवसर नहीं मिला, तो उन्होंने आदमी भेजकर अमीर वलीको मुहल्ले करनेके लिये बुलाया। अतमें तै हुआ, कि अमीर जनी शहरमें दो सौ पचास तुमान मोना दिखवा दे, जो कि तोकतामिशकी सेनाके घोड़ोंकी नालों का दामभर ही था। बृहस्पतिवार १३८१-८२ ई० (७८७ हि०) को शहरके मालिकों और स्वाजाओंको जमात निम्नत्र गिरा गया कि हर मालिक एक तुमान नकद दे। ढाई सौ तुमान भेज देनेके बाद लोग निर्बल हो गये। उन्होंने नैयारी दीनी कर दी और बहुतोंने हथियार भी उतार दिये। उसी समय तोकतामिशकी सेना शहरके ऊपर दृढ़ पड़ी और ज्वन तथा लूटका आज़ार गरम हो गया। प्रतिरोधकी शक्ति नित-दिन होती गई थी। तोकतामिशकी सेनाने तेमूर-लगके तबरेजको आठ दिनतक लूटा और

कतल किया, जिसमें करीब एक लाख आदमी बड़ी निर्दयतासे मारे गये। किपचकोने किसीपर दया नहीं दिखलाई। उन्होंने लोगोको नगा मादरजाद करके सडको, कूचो, मुहल्लोमें बर्फपर बैठा दिया। स्त्रियो, लडकियो और छोकरोमें जिन्हें सुन्दर देखा, उन्हें लिया, बहुतसे आदमियोको भी बदी बनाया, फिर धरोमें आग लगा दी। तोकतामिशने मास्कोमें जो किया था, उसीकी आवृत्ति उसकी सेनाने तबरीजमें की, और यही बात पीछे तेमूर-लगने दिल्लीमें दुहराई। एक इतिहासकार ने लिखा है—“काफिरोने लोगोपर वह जुल्म किया, कि लिखनेवाला यदि एक सालतक लिखता रहे, तो नहीं पूरा कर सकता। इस शहर और इन मुसलमानोपर क्या-क्या नहीं बीती ?”

अमीर वली सुलतानियासे जा चुका है, यह सुनकर उनको उसपर विश्वासघाती होनेका सदेह हुआ। तोकतामिश की सेनाने सुलतानिया और दूसरी जगहोको भी उसी तरह लूटा-पाटा। इसके बादभी तबरीजके लोगोमें कुछ सुगवुगाहट देख फिर दो दिन दो रात उसे कतल और लूटका शिकार बनाया। फिर कितने ही किपचक नखजवानकी ओर अरानिके प्रदेशमें जा लूट-मार करने लगे, कुछ इसी कामके लिये कराबाग चले गये। जाडा खतम होने से पहले ही दो लाख बदी बना तोकतामिश आये रास्ते लौट गया। तेमूर इस समय ईरानके झगडोमें फसा था, इसलिये आजुरवाइजानके सर्वसंहारकी बातको सुनकर भी दिल मसोसकर रह गया। तोकतामिश अपने साथ प्रसिद्ध कवि कमालको लेता गया था, जिसने चार सालतक राजधानी बेरेकसारायमें रहकर उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

### तेमूरके साथ लडाइया

**प्रथम युद्ध**—ईरानके झगडेसे छुट्टी पाकर १३८७-८८ ई० (७८६ हि०) के बसतमें तेमूर-लग उरुस नदीके तटपर था, जबकि उसने सुना कि तोकतामिश दूसरी बार दरबदकी ओरसे आकर आक्रमण करना चाहता है। तोकतामिशके अमीरोने मना किया, कि तेमूर अब भीतरी झगडोसे छुट्टी पाकर मुकाविलेके लिये तैयार है, इसलिये लडनेके लिये नहीं जाना चाहिये। लेकिन, तोकतामिशने उनकी बात नहीं मानी। खुलाकू-वशियो और बातू-वशियोके पुराने युद्धोकी तरह फिर उत्तरसे तोकतामिश की सेना कुरा नदीके तटपर पहुँची और दक्षिणसे तेमूर भी वेरदआ होते वहा पहुँचा। उसने नदीपार की खबर जाननेके लिये गुप्तचर भेजे, जिन्होंने लडाई करके भारी क्षति उठाई। फिर कुमकके लिये आई तेमूरी सेनाने तोकतामिशकी विजयिनी सेनापर आक्रमण करके उसे बुरी तरह हराकर दरबदतक उसका पीछा करके बहुतसे बदी बनाये। तेमूरने कृतघ्नताके लिये बहुत फटकारकर तोकतामिशके बदी अमीरो-को खलअत और घन देकर घर भेज दिया।

इस विजयके बाद तेमूरने सरकार तुर्कमान सरदार करामोहम्मदसे लोहा लिया और फिर फारस-पर आक्रमण कर उसे अपने राज्यमें मिला लिया। इसी समय डाकियाने आकर खबर दी, कि तोकतामिश अतवेंद (मावरा-उन्नहूर) की ओर बढ़ रहा है। तोकतामिशने सिगनकसे प्रस्थान कर सावरानपर आक्रमण किया, लेकिन तेमूरी सेनापतिके जबर्दस्त प्रतिरोधके कारण उसे मुहासिरा उठा लेना पडा। इसके बाद तोकतामिश दूसरे इलाकोको तबाह करने लगा। प्रतिरोध करनेके लिये तेमूर-पुत्र शाहजादा उमरशेख मिर्जाने एक बड़ी सेना ले सिर-दरिया पार हो आगे बढ़ते उतरारसे पांच फरसक पूरब युकलिक स्थानमें तोकतामिशकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन उसे हार खानी पडी। अदिजानमें पहुँचकर उसने अपनी बिखरी सेनाको फिरसे एकत्रित किया। इसी समय पता लगा, कि मुगोलिस्तानके शासक अकातूराने भी विश्वासघात करके चढाई कर दी है और वह सैराम तथा ताश्कदके नजदीक पहुँच गया है। उमरशेखने अकातूराने पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। तोकतामिशके किपचक समृद्ध सोगद-देशको लूटनेके लिये आगे बढ़ रहे थे, जिनका एक दल बुखाराके सामने पहुँच गया था, जिसने वहाके सुन्दर प्रासाद जेंदगिर-सरायको जला दिया। तेमूर उनकी ओर लपका। नजदीक आनेपर शत्रुकी सेनामेंसे कुछ दशतेकिपचक (कजाकस्तान)की ओर कुछ ख्वारेज्मकी ओर भागे। तेमूरने अपने अफसरों—बेरातखोजा और कुकिलताशको युकलिककी पराजयके लिये दंड दिया—“कुकिलताशको दाढी-मूँछ मुडवा चेहरेको काले-लाल रंगसे रंगा, सिरको स्त्रीकी तरह सजा शहरमें नगे पैर दौड़ाया गया।”

युमुफके मरनेके बाद स्वारेज्म उनके भाई मुलेमान सूफी तथा वहनोई इलिकमिम ओगलान (किपचक राजकुमार) के हाथमें था। यह दोनों तोकतामिशको अपना प्रभु मानने लगे, इसपर तेमूरने उनके विरुद्ध चढ़ाई की। तेमूरी सेनाके हराबलके सचालक शरणागत श्वेत-ओर्दू राजकुमार तेमूर कुतुबुल ओगलान और कुजी ओगलान थे। वगदादके और शेरिस नदीके पार होनेके बाद पता लगा, कि दोनों राजकुमार तोकतामिशके पास भाग गये। ग्राहजादा मीराशाह (तेमूर-पुत्र)ने पीछा करके उनको पकड़ लिया। तेमूर स्वारेज्मकी राजधानी उरगज पहुँचा। उसे नगर और निवाणियोंपर इतना गुस्सा आया था कि उसने नगरको गिरवाकर वहाँ जो बुना दिया और निवासियों को समरकन्द भेज दिया। फिर तीन साल बाद ही नगरके पुनः स्थापनाके लिये हुकुम दे इस कामपर उसने मुसिकी यत्तिकी कुचीन-युवकों नियुक्त किया। मुसिकीने नगरको फिरसे बनवाकर लोगोंको बनाया, उरगज, कात और खीवाके चारों ओर नगर-प्राकार बनवाये।

तोकतामिशने देव लिया, कि अब तेमूर-नगके साथ मामूली छेड़खानीसे काम नहीं चलेगा। उसने १३८८ ई० (७९० हि०) में अपने महाअभियान शुरू करनेके पहले बहुत भारी सेना जमा की। इस सेनामें चिरकामी, बुल्लार, किपचक, क्रिमियावानी, कफा, अलानिया, अजक, वाव्किर और रूसी सभी जातियोंके सैनिक थे। पता लगनेपर तेमूर भी भारी सेना ले समरकन्दमें ६ फरसख पर अवस्थित सगन्ज स्थानमें मुकाम किया। वहाँसे उसने अपने सारे राज्यमें सेना जमा करनेके लिये तवाची भेजे। उन साल जाड़ा बहुत मसल रहा। चारों ओर जमीन बर्फमें ढकी हुई थी। पता लगा, कि किपचक हराबल इलिकमिश ओगलानके नेतृत्वमें मिर-दरियापार हो ओतरार (उतरार)के पास अजक-जैरतुवमें डेरा डाले हुये हैं। तेमूरने तुरत हमला करना चाहा, लेकिन उसके अमीरोंने घुटने टेककर प्रार्थना की, कि और सेनाके आनेतक प्रतीक्षा की जाय। तेमूरने नहीं माना। बर्फ कहीं-कहीं घोटके छानीतन थी। उसीमें स्थानीय सेना ले वह रात-दिन कूच करने लगा। रास्तेमें उमरखे मिर्जा अपनी सेना ले आ मिला। पीछेमें रास्ता काटनेके लिये सेना भेजकर दूसरे दिन तैलम्बार पहाड़ पार करनेपर दुश्मन सामने दिखाई पड़ा। भयकर युद्ध हुआ। तोकतामिशकी बुरी तरह हार हुई। मिर-दरिया पार करके उसने जो गवती की थी, उसके कारण बहुत-से सैनिक डूब गये और अधिक सख्याको तेमूरने बेरकर मार डाला। तोकतामिशका राज्य-सचिव ऐरदीवरदी वदी बनाकर तेमूरके पास लाया गया। तेमूरने उसका बहुत सम्मान कर बहुत-से उपहार दे लौटा दिया। तेमूरने स्वयं लौटकर फरवरी ७९१ हि० (३१ दिसम्बर १३८८-२१ नवंबर १३८९ ई०) में समरकन्दके पास अकारमें डेरा डाला।

बसन्त (१३८९) शुरू होने-होते खुरमान, बलख, कुन्दुज, बतलान, बदश्या, खुत्तलान, हिसार, नादुमान आदि नाना देशोंमें सेनाये आ पहुँची। खोजन्दके सामने दूसरी भी और कितनी ही जगहोंमें मिर-दरियाके ऊपर नावोंके पुल बनाये गये। १३८९ ई० (७९१ हि०) के प्रारम्भमें अभियान शुरू हुआ। आरिम (अर्च) नदीके किनारे दुश्मनके हराबलपर तेमूरी सेनाने एकाएक आक्रमण कर दिया। तोकतामिशकी सेनाने नावगानपर अगस्त आक्रमण किया और उसे यम्मी (तुकिस्तान) की ओर हटनेके निम्ने मजबूर होना पड़ा। यहीं खुली जगहमें तोकतामिशकी सारी सेना पड़ी हुई थी। तेमूरको सामने आता देखकर तोकतामिशकी सेना भाग चली। तेमूरने पीछा किया और कुछको पकड़ लिया। अब तेमूर-नगने अलतुमुनामें जाकर डेरा डाला। तेमूरके सामने इस वकत दो शत्रु थे, एक तोकतामिश और दूसरा चंगानगी उत्तरी शाखा मुगोनिस्तान (राजधानी अय्मालिक) का खान। दोनोंमें मुगोनिस्तानका खान रम बलिष्ठ मालूम हुआ, इसलिये उसीको पहले खतम करनेके ख्यालमें तोकतामिशके पीछे न बढ़कर तेमूर समरकन्द लौट आया।

### प्रथम महाअभियान (१३९० ई०)

तेमूरने अपनी तरह समझ लिया, कि इन्नेकिपचक (तोकतामिशके राज्य) का अभियान खेल नहीं है, इसलिये उसने बड़ी सैन्यारी ली—तुर्का और ताजिकोंकी भारी सेना जमा की, सालभरके लिये



रसद इकट्ठा की। हर एक आदमीको हुकुम दिया कि वह एक धनुष, तीस बाण, एक प्रत्यचा और एक कमरबंद जमा करे। सारी सेना घोडसवार थी। हर एक घोडसवारको एक घोडा फाजिल अपने साथ रखना था। दस आदमियोंके ऊपर एक तबू, दो वेलचे, एक फरसा, एक हसिया, एक आरा, एक कुल्हाडा, एक रुखानी, सौ सुइया, सवा चार सेर रस्सी, एक बेलका चमडा और एक मजबूत तवा दिया गया। सेनाको सरकारी घोडोके साथ शिरस्त्राण, कवच और नकद पैसा भी दिया गया था। ताश्कद छोड़नेके बाद तेमूरने हुकुम दिया, कि महीनेमें प्रतिव्यक्ति साढे आठ सेर आटा मिलेगा। रोटी, कुल्चा (बिस्कूट) आदि शिविरमें किसीको नहीं मिलेगा। खानेके लिये जल्दी-जल्दी आटेकी लपसी बना लेनी होगी। तेमूरने वृश्चिक राशिमें समरकद छोड़ जाडेको समरकद जिलेमें ही बिताया। आगेके लिये प्रस्थानसे पहले खोजन्दमें उसने वहाके प्रतापी सत शेख मस्लहतके मकबरेका दर्शन करके उसपर दस हजार दीनार चढाये। ताश्कदमें तेमूर चालीस दिनतक सख्त बीमार पडा रहा। उसकी सेनाके पथप्रदर्शक तेमूर कुतुलुक ओगलान, तेमूर मलिकखान, गूनेजी ओगलान, इदिकू उज्बेक थे, जिनमेंसे पहले तीन किपचक राजकुमार थे। १६ जनवरी १३६१ ई० को अपनी प्रियतमा भार्या तथा मुगोलिस्तानके हाजीबेक इरखानकी पुत्री चुलपान मलिक आगाके साथ तेमूरने प्रस्थान किया।

कुछ दिनोतक सेना कारासमनमें ठहरी। यहा तोकतामिशके दूत तेमूरके दरवारमें आये। उन्होने शाहवाज और नौ घोडे भेटकर दडवत् पड धरतीपर ललाट रगडकर सम्मान प्रकट करते अपने मालिककी प्रार्थना दुहराते हुये कहा—“बुरी सलाहमें पडकर तोकतामिशने विद्रोह किया, अब वह क्षमा मागता है।” तेमूरने बाजको अपने हाथपर बैठाकर कहा—“सारी दुनिया जानती है, कि मैंने तोकतामिशकी रक्षा की, कितनी कुर्बानिया करके उसे तख्तपर बैठाया, लेकिन मुझे अनुपस्थित देख उसने तबरीजपर आक्रमण कर दिया। मैं अफसोस प्रकट करनेपर क्षमादानके लिये तैयार था, फिर भी उसने दुष्ट काफिरो को साथ ले मेरे सीमातपर आक्रमण किया। काफिरोने दूर-दूरतक लूट-मार की। जब मैं अपनी प्रजाकी सहायताके लिये पहुचा, तो वह नीचता दिखलाते हुये हट गया। अब वह फिर मुझे झूठे वचनोद्वारा धोखा दना चाहता है। उसने बहुत बार विश्वासघात कर लिया है, अब वह मुझे फिर धोखा नहीं दे सकता। मैं उसे दड देनेके मसूवेसे आया हूँ, और उसे बिना पूरा किये नहीं छोडूंगा। तो भी अगर वह ईमानदारीसे अपनी सदिच्छा दिखलाना चाहता है, तो अपने प्रथम-मन्त्री अलीबेकको मेरे पास भेज दे। मैं राज्यका हित देखते बुद्धिके अनुसार कार्रवाई करूंगा।”

तेमूरने दूतोके लिये भारी दावत दी। उन्हें कमखाबके कफतान (जामे) भेट किये, साथ ही खास स्थानमें टिकाकर निगाह रखनेके लिये ताकीद भी कर दी।

२१ फरवरी १३९१ ई० को युद्ध-महापरिषद् बैठी। युद्धके पक्षमें निर्णय करके ज्योतिषियोंसे शुभमुहूर्त ठीक करवाया गया। तोकतामिशके दूत लौटा दिये गये। तेमूरी सेनाने कूच किया। उसकी सेना यस्सी (आधुनिक तुर्किस्तानशहर), कराचुक (तुर्किस्तानसे पाच फरसखपर सिर नदीमें गिरने-वाली नदीके ऊपर), और सावरानके रास्ते आगे बढ़ते उत्तरकी ओर मुडकर ६ सप्ताह वृक्ष-वनस्पति-हीन मैदानमें चली। बहुतसे घोडे रास्तेमें चारे बिना मर गये। ६ अप्रैल १३६१ ई० को तेमूरी सेना नीले पानीवाली नदी (सरूक उजेन, सरीसू) के तटपर पहुची। नदी बढी हुई थी, इसलिये थके हुये घोडोको कुछ दिनो विश्राम दिया गया। २६ अप्रैलको प्रसिद्ध मैदान (कुनचुकताग=लघु-पर्वत) पर पहुची। दो दिन और चलनेपर इस प्रदेशका सबसे बडा पहाड उलुगताग (महापर्वत) आया—पहिले इन पर्वतोका नाम ओरताग (उच्च पर्वत) और करताग (गदा पर्वत) था। आगूज तुर्की-के खान अपनी गर्मिया यही बिताते थे। इन पहाडोसे बहुत-सी नदिया निकलती हैं। तेमूर-लग उलुगतागके ऊपर चढा और वहापर उसने २८ अप्रैल १३६१ ई० को शिला-लेख खुदवाकर एक पाषाणस्तंभ स्थापित करवाया।

यह शिलालेख आजकल लेनिनग्रादके एरमिताज-संग्रहालयमें है। अभिलेखमें ऊपर तीन पक्तिया अरबीमें, फिर आठ पक्तिया उइगुर-लिपि तथा तुर्की भाषामें हैं। उइगुर लिपिके कायदेके

अनुसार इस लेखकी पकितया ऊपरसे नीचे न हो वायेसे दाहिने तथा अरबी पकितयोके समानान्तर है। तुर्की भाषामें मूल लेख निम्न प्रकार है —

- १ तरिक येती यूज तोकसन उचन्दा कोइ
- २ यिल याजनिंग अरा ए तुरान निंग सुल्तान इ
- ३ तेमूर वेग डकी युज मिंग सेरनि विलए इसमी उचुन तोकतामिश कान निंग
- ४ कनिगा थोडरिदी वू येरगे येतिप वेलगू वोलसुन तैप
- ५ वू ओवा-नी कोपरदी
- ६ तट-री निसफत वेरगेई इगल्ला
- ७ तट-री इन किगीगे रहमत किलगे विज-नी दुआ विलाये
- ८ याद किलगे ।

[“७६३ हि० सन् (१३६१ ई०) के वसत के मध्यमे तुरान-सुल्तान तेमूरवेग दो लाख सेनाके साथ तोकतामिश-खानसे लटनेके लिये आया । यहा पहुचकर (उसने) इस स्तम्भ (चिह्न) को स्थापित किया । यदि भगवान् चाहे, तो वह लोगोको मोहार्द देवे और हमें आशीर्वादपूर्वक याद कराये ।”]

आगे प्रस्थान करने सेना दूसरे दिन इलान्चुक (सर्प-सदृश) नदीपर पहुची । आठ दिन और चलनेके बाद अताकरागुई (अनाकरागुई, करातुरगई) नदीपर पहुची । अवतक ताश्कद छोडे चार मास हो चुके थे । रसद कम होने लगी थी । एक भेडका दाम मौ कुवेक (दीनार) हो गया था, अन्न भी उसी तरह महगा था । तेमूरी सेना जंगली चिडियोंके अडे, सभी तरहके जानवरोंके मास, यहातक कि घास भी खानेके लिये मजबूर हुई । उसके लिये तोकतामिशसे भी अधिक निष्ठुर उसके देशकी प्रकृति साबित हुई । रसदमे सिर्फ आटा, वाजरा और घास मिला हुआ सूप (रस) मिलता था । सिपाहियोंका ही खाना अफसर भी खाते थे । इन बयावानमे शिकारोकी कमी नही थी । छिड-गिसूके महाशिकारकी प्रणाली लोगोको भूली नही थी । ६ मई १३६१ ई० को उसी शिकारको रचा गया । आदमियोने दूर तककी भूमि घेर ली । घिरावेमे पडे हरिन तथा दूसरे जानवर बडी सख्यामे मारे गये । वह इतने अधिक फने थे, कि उनमेंसे सिर्फ मोटे-मोटे जानवरोको ही मारा गया । तेमूरकी भारी सेनाके लिये कितने ही दिनोंके बान्ते माम मिल गया । आगे बढ़ती हुई वह तोबोल नदीके उद्गमके पाम पहुची । वही तेमूरने अपनी सेनाकी परेड देखी—भालो, तलवारो, खाडो, गदाओ, चर्मकी ढालोसे सज्जित बाघवा चमडा ढाले घोडोंपर सवार सैनिक अफसर उसके साथ थे । तेमूरने स्वयं अपने सिरपर पशराग-जडित एक मुकुट पहिना था । उसके हाथमें गदा थी, जिमके निरे पर वेलका चेहरा था । तेमूरने अपनी सेनामे इनाम बाटा । मेना “सुरिम” (घावो) का नारा बुलन्द करते बाजेकी आवाज-पर अपने बादशाहके माननेमे सनामी देती निकली ।

फिर ज्योतिषियोने शुभमुहूर्त देखा और १२ मईको मिर्जा मुहम्मद सुल्तान बहादुर (तेमूर-पौत्र) नी अधीनतामें हरावन सेना आगे बढ़ी । दो दिन जानेपर दुश्मनका पता उसके छोडे डेरोंसे लगा, जिनमें अन्न भी आग मीनूद था । अन्तमें वह तोबोल (छोटा बृक्ष)—जो कजाकोकी तीव्रुल और रूसियोंकी तावुला नदी है—के तटपर पहुचे । पार होनेके बाद पता लगानेवाली टुकडीने लौटकर बतलाया, कि नत्तर जगहांमे आग मिनी, किन्तु दुश्मनका वही पता नही । यह सुनकर तेमूर भी जल्दी-जल्दी तोबोलतट-पर पहुचा । उसके तुरन्तमान सरदार शेख दाऊदके दलने लगातार जल्दी-जल्दी दो दिन-रातके कूचके बाद कुछ नोपड़ोंको देखा । वह प्रतीक्षा करने लगे । जब उनमेंसे एक मवार निकला, तो उसे पकड-कर तेमूरके पाम ले आये । पृष्ठपर दर्दने कहा—“मैंने एक महीने पहले तोकतामिशके देशको छोटा । कुछ दिन हूये दस वक्त्रचवारी सैनिक मैंने पानके जगलमें छिपे देखे ।” तेमूरने उनके पीछे सिपाही भेजे, जो कुछो मान बागीयो बडी बनावर ले आये । उनमे निश्चित खबर पा फिर सेनाने जल्दी-जल्दी कूच करना शुरू किया । २६ मईको तेमूर यायिक (उराल) नदीके तटपर था । नदीके ऊपरकी ओर पार

कर ६ दिन चलनेके बाद सेमुर नदीके तटपर जाकर सेनाने डेरा डाला। वहा पता लगा, कि तोकतामिश-की सेना हाल हीमे यहासे हटी है। तेमूरने हुकुम दिया—“चुपचाप आगे बढ़ो और रातको आग मत जलाओ।”

४ जून १३६१ ई० को तेमूर डक (शकमाराकी शाखा) के तटपर था। तोकतामिश उस समय केर्क अथवा कोरुक (सूखा)-गुल नामक झीलके ऊपर डेरा डाले बुल्गार (कजान) और अजक क्रिमिया के ओर्दूके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, साथ ही उसने यायिक (उराल) के घाटोपर छापामार तैनात कर रखे थे। अब भूमि दलदलवाली थी, जिसमे चलना तेमूरके सवारोके लिये बहुत मुश्किल था। जल्दी ही खबर आई, कि शत्रुकी तीन पल्टने आगे पडी है। तेमूरने युद्धव्यूह रचनेका हुकुम दिया और ढाल, तूणीर और पैसे बाटे। एक वदीसे—जिसे पीछे मार डाला गया—पता लगा, कि तोकतामिश गहरी चाल चलकर अपने शत्रुओको फसाना चाहता है। सैनिक अफसर मुवश्शिर बहादुरद्वारा पकडे चालीस बंदियोको भी बडी निष्ठुरतापूर्वक मारा गया—शायद साथमे वदी लेकर आगे बढ़ना तेमूर पसंद नही करता था। इन बंदियोने कहा, कि हम केर्कगुलमे तोकतामिशके पास जा रहे थे, लेकिन उसे नही पा सके। अतमे शत्रुकी एक सेनाका पता लगा। ऐकू तिमूर वरलस अपने दलको लेकर आगे पता लगानेके लिये बढ़ा। शत्रुकी बडी सेना देखकर सात-आठ आदमियोके साथ स्वयं पृष्ठरक्षा करता वह पीछे लौटा। देखते ही शत्रु उसकी ओर दौड़े। एक तीरसे वरलसका घोडा घायल हो गया और दूसरे तीरसे वह स्वयं भी आहत हुआ, लेकिन वह खबर देनेके लिये बेतहाशा घोडेको दौड़ाता रहा। घोडा गिर गया, तो उसने दूसरे घोडेको लिया। उस घोडेको भी शत्रुओने तीरसे घायल किया और वे घेरकर मुवश्शिरका सिर काटकर साथ ले लौट गये, कुछ साथी भी उनके हाथ लगे। इसी समय एक दूसरी तेमूरी सेना आ गई, जिसके कारण शत्रुओने पीछा करना छोड दिया।

तेमूरके यहा अमीर-पुत्रोको तरखनकी उपाधि थी, जिन्हें शाही तबूमे किसी वक्त भी आनेकी इजाजत थी। छिड़-गिस्के समय भी तरखनकी पदवी प्रचलित थी। तेमूरने तरखनो और उनके वंशजोके नौ कसूर माफ कर रखे थे।

चलते-चलते तेमूरी सेना ५४° अक्षांशमे पहुंची, जहा गर्मियोमे असली रात नही होती और गोधूली-के बाद ही उषा चली आती है। इसके कारण यह सवाल पैदा हो गया, कि रातके अभावमे चौबीस घटेमें पांच बार नमाज पढनेकी व्यवस्था कैसे की जाये। इमामने फतवा देकर रातकी नमाजसे लोगोको छुट्टी दे दी। तोकतामिशकी यही नीति थी, कि पीछे हटते-हटते शत्रुको उसके मुख्य स्थानसे दूर खींचते ऐसी जगह लाओ, जहा रसद-पानी दुर्लभ हो जाय। तेमूरने युद्ध-परिषद् बुलाई और सेनापतियोसे सलाह करके बीस हजार सेनाके साथ उमरशेख मिर्जाको आगे शत्रुके ऊपर भेजा। इसी समय ५-६ दिन वर्ष पडती रही, जिसके कारण सर्दी बहुत बढ़ गई। सोमवार १८ जून (१३६१ ई०) को आसमान साफ हुआ। अब बुल्गारोके देशमें कन्दुर्च स्थानमें पहुंचकर तेमूरने अपनी सेनाको व्यवस्थित करते हुये कुरानके फातेहा सूर (अव्याय) की सात आयतो (पक्तियो) के अनुसार उसे सात डिवीजनोमे बांटा। थकी होनेपर भी सेनाका उत्साह मंद नही था। तेमूरने रिश्त देकर काम लेना चाहा और तोकतामिशके झडावरदारमे ठहरा लिया, कि युद्धके समय वह झंडेको गिरा देगा। जब अमीर अकतागको वामपक्षका सेनापति वन युद्ध छेड़नेको कहा, तो उसने तोकतामिशसे माग की, कि हमारे सबकी हत्यारे अमीरको इसी वक्त मेरे हवाले किया जाय। तोकतामिशने युद्धके बाद देनेका वचन दिया, लेकिन वह इससे सतुष्ट नही हुआ और अपने सारे अकताग (श्वेत-पर्वत) कबीले तथा कितने ही दूसरे आदमियोके साथ चला गया। तेमूरके क्षुद्र-एसियापर आक्रमण करते समय यह अकताग कबीला दोवरूजामें रहता था। हालमें वह दन्यूवपार अद्रियानोपोलमें बस गया था।

युद्ध आरंभ करनेसे पहले तेमूरने घोडेसे उतरकर दो रकूअ (नमस्कार) नमाज पढी। सेनाने “अल्लाह अकबर” और “सुरून” का नारा लगाया। ढोल और लोहेके झांझ बजे। इसी समय अलीके वंशज तथा शरीफोके मुखिया सैयद वरकाने विजयकी भविष्यद्वाणी करते सिर नगा करके हाथ उठा हुआ की। शेखुल्-इस्लाम (इस्लामके महागुरु) अहमदजानके वंशज इमाम ख्वाजा जियाउद्दीन युसुफ

और शेख इस्माईल कुरानकी आयत पढ़ रहे थे—“ओ मुसलमानो, अल्लाहके आगीवादीको याद रखो। वही है, जो कि तुम्हारे ऊपर हथियार चलानेवाले शत्रुओंके हथियारोको रोक देता है। अल्लाहसे दरो। विज्जसियोंको उमपर विज्जाम करना चाहिये।” मुट्ठीभर ककड़िया लेकर दुश्मनकी ओर फेंकते हुये इमामने चिल्लाकर कहा—“उनके चेहरे काले हो जायें।” फिर तेमूरकी ओर मुह करके इमाम बोला—“जहा जाहे जा, अल्लाह तेरी रक्षा करेगा।”

चतुर्थ सेनाके कमांडर अमीर मेफुदीनने सबसे पहले आक्रमण किया और शत्रुके वाम-पक्षको तोड़ दिया। तोक्तामिशके आदमियोंने चारो ओर फैलकर उसे घेरना चाहा, लेकिन उन्हे रोककर पीछे ठकेल दिया गया। वामपक्ष कुछ नष्ट हो गया और कुछ पीछे हटनेके लिये मजबूर हुआ। इनके बाद दूसरे सेनापति अपनी सेना लेकर आगे बढ़े। भयकर हत्याकांड होने लगा। तोक्तामिशने नेमूरके केंद्र-दक्षिणपक्षके प्रहारको रोकना असम्भव समझकर उसके वाम-पक्षपर प्रचंड प्रहार किया। वामपक्ष टूट गया और मुख्य भागसे उसके कितने ही अंग अलग हो गये। तोक्तामिशने वस्तुतः बीचसे चीरकर पीछा जा घरा। बड़ी भयकर अवस्था थी। तेमूरने आदमियोंको विज्वास पैदा करनेके लिये अपने पोते अबूवकरको हुकुम दिया। उसने गारदके दम हजार सवारोको ले वहा जा घोड़ेसे उतरकर कहा—“तबू गाडो, आग जलाओ, खाना तैयार करो।” इसका प्रभाव तोक्तामिशके ऊपर पड़ा और जब तेमूरकी रिवतके कारण उसके झडावरदारने झटकेको नीचा कर दिया, तो उसकी रही-मही हिम्मत भी टूट गई। वह पीछे हटकर गुरजी या लिथुवानियाके राजा वितुत (वियोन्द) के पास भागा। युद्ध तीन दिनतक होता रहा, जिसमें एक लाख कपचक मारे गये। तेमूरको भारी परिमाणमें रमद और दूसरी चीजें मिली।

युद्ध-क्षेत्रमें ही डेरा डलवा विजयके लिये अल्लाहको धन्यवाद देते नेमूरने सेनामें इनाम बांटे और हर दम आदमीमेंसे नातको शत्रुका पीछा करनेका हुकुम दिया। वह बोलातक गये, जिसमें कतलसे बच गये शत्रुओंमेंने कितने ही डूब गये और थोड़ेसे ही प्राण बचाकर निकल पाये; जिनके भी बीबी-बच्चे, गुलाम और वन-सृष्टि तेमूरी सेनाके हाथ लगे। तोक्तामिशका रनिवास भी पकड़ा गया। नेमूरी-सेनाने अजक (त्रिमिया), सेराय, मेरायचुक, हाजीतरखन (अस्त्राखान) तक लूट-मार और व्वसलीला मचाई। गुदरुण ओर्दके लिये यह इतना जवर्दस्त प्रहार था, कि उसके बाद वह फिर अपनी पुरानी स्थिति में नहीं पहुंच सका। उसकी जनसंख्या बहुत कम हो गई, बोलातट उजाड़ हो गया और शताव्दियोंके पश्चिममें दनी वहाकी समृद्धि एतम हो गई। तेमूरने उरतुपा (स्तावरोपोल) जिलेके कदुरताके नज्दीक अपना छिद्र गाड़ा। थोड़ाओने यहा विश्राम किया। उनके साथ घोड़े, ऊटो, ढोरो, भेड़ो और तरण वान-दानियोंकी भारी सत्था थी। रूप-रंगमें अत्यंत सुन्दर पांच हजार तरण-तरणिया तेमूरकी सेनामें गई। लूटका माल इतना मिला कि सारी सेना सतुष्ट हो गई। उरतुपामें छत्र्वा दिन रहकर तेमूरने विजयोत्सव मनाया। यहीपर लघुविजय (फनेहनामा-कुचुक) लिखा गया।

उम्के बाद तेमूर नमस्कदकी ओर लौटा। अक्टूबरमें वह सावरानमें था, फिर उत्तरार होन राजधानी नमस्कद पहुंचा।

बागलानन निये उरगुर अक्षर तथा मंगोल भाषा में २० मई १३६३ ई० की लिखी हुई तोक्तामिशकी या तिय (शासनपत्र) माचामें अब भी मौजूद है, जिसमें मालूम होता है, कि १३६१ ई० की भारी पराजयके बाद फिर वह अपनेको नमालने लगा था और तीन-चार वर्षोंमें इतना ममल गया, कि तेमूरको फिर उसको तरफ ध्यान देना पड़ा।

द्वितीय अभियान (१३९५ ई०)—२८ फरवरी १३६५ ई० को फिर तेमूरने तोक्तामिशके विरुद्ध प्रस्थान किया। उन्हे अन्त मुगल कुल गनिया मुलतानिया (ईगन) भेज दी गई और कुछ नमस्कदमें गयी गई। शत्रुसेना अन्तान्गोको दूत भेज तेमूरने तोक्तामिशकी समझाने-बुझानेकी कोशिश की, लेकिन उन्हा उनर बड़ा उद्धतपूर्ण था। दूत लौटकर काकेयानके नानुओपर काम्पियन

समुद्रसे पाच फरसख (लीग) दूर अपने स्वामीसे आकर मिला । उस वक्त वाम-पक्ष नमुद्र-तटसे पहाडके ऊपरतक बिखरा पडा था । अबकी तेमूरी सेनाने काकेशसके चरणोमे कास्पियनके पश्चिमी किनारेका रास्ता लिया था । सेनाको दरबदके दुर्गम घाटीको गार करनेमे दिक्कत नही हुई । तोकतामिशकी प्रजा काइतकने छेड़खानी की, जिन्हे तेमूरने भयकर हत्या करके खतम कर दिया, उनके गावोको नष्ट कर दिया । सेना आगे बढ़ती चली । तोकतामिश तेरेक नदीके किनारे मुकाविलेकी प्रतीक्षामे बैठा हुआ था, लेकिन तेमूरी सेनाको देखते ही वहाँमे भाग चला । पहिले कुरापर और तेरेकपर तेमूर तथा तोकतामिश एकत्रित हुये थे । २२ अप्रैल १३६५ ई० को दोनोमे युद्ध हुआ । शत्रुके सेनापतियोके आगे बढ़नेकी खबर पाकर तेमूरने अपनी सत्ताईस सेनाओके साथ आक्रमण कर शत्रुको पीछे हटा दिया । पीछा करते हुये उसके आदमी अधिक दूरतक चले गये, जिसके कारण तोकतामिशकी सेनाने मुडकर जब हमला किया, तो उन्हे तितर-बितर होकर पीछे भागना पडा । यह खबर सुनकर शत्रुने और भी पीछा किया । तेमूर उनपर वाणोकी वर्षा करने लगा । उसका तरकश खाली हो गया । तलवार और भाला भी टूट गये । इसी समय तोकतामिशके सैनिकोने उसे घेर लिया । इस समय शेख नूस्दीन और उसके पचास बहादुरोने घोडेसे उतरकर वाणवर्षा करके तेमूरको आड दिया । दूसरे अमीर भी दुश्मनकी तीन गाडियोको पकड़ने-में सफल हुये, जिनकी मददसे उन्होने मोर्चा-बदी कर दी । सेना आसपास जमा होने लगी, वाजे बजने लगे । शत्रुने समझ लिया, कि उसका प्रधान शिकार कहा है, किन्तु वह इस मोर्चाबन्दीको नही तोड सका । इसी समय शत्रुके दक्षिणपक्षको तेमूरी सेनाने ध्वस्त कर दिया । तो भी तेमूरके वामपक्षकी स्थिति अच्छी नही थी । शत्रुने उसे तोडकर चारो ओरसे घेर लिया था । अपने कमांडरके हुकुमपर सैनिक घोडेसे उतर अपनी-अपनी ढालोके नीचे घुटने समेटकर बैठ गये । चारो ओरसे वर्षाकी बूदोकी तरह हथियारोके प्रहार होने लगे । इसी समय जहानशाह बहादुर अपने घोडसवारोको लेकर दौडा, और प्रहार करनेवाली शत्रुसेनाके दोनो पक्षोपर टूट पडा । पलडा पलट गया । वह और उसके साथी दूसरे सेनापतिने मिलकर शत्रुके वामपक्षको मार भगाया । फिर केंद्रके साथ सघर्ष आरम्भ हुआ । कपचक सेनापति यागलिबीने तेमूरी सेनापति उसमान बहादुरको द्वयुद्धके लिये ललकारा । दोनो मैदानमे उतरे । उनके अनुयायियोने भी अपने सेनापतियोका अनुकरण किया । यागलिबी शायद पोलराजा यागेलोन था । सघर्ष भयकर हुआ, किन्तु अतमे कपचक सेनाको हारना पडा । तोकतामिश ओगलानो (राजकुमारो) और नोयनो (अमीरो) के साथ भागा । तेमूरी सेनाने उसका पीछा करके भारी सख्यामें कपचकोको तलवारके घाट उतारा । जो बदी हाथमे आये, उन्हें भी पीछे प्राणोसे हाथ धोना पडा । इस विजयसे प्रसन्न हो तेमूरने सिर नगा करके घुटने टेक अल्लाहके सामने दुआ पढी । अमीरोने तेमूरके ऊपर रत्नोकी वरसा की । तेमूरने लूटके माल और अपने पासके धनमेंसे भी सैनिकोमें खूब उदारतापूर्वक इनाम बाटा ।

तोकतामिशका पीछा करते हुये वोल्गाके किनारे-किनारे तेमूर उकाकतक गया और वोल्गाके तूरातू घाटपर थोडी देर ठहरा । उसने उरुस खानके पुत्र तथा अपने शरणागत कोडरिअक ओगलान को सुनहली खलअत और कीमती कमरबद प्रदान करके उज्जेक रिसालेके साथ कपचकोका खान बनाया । तोकतामिश वोल्गारोके जगलोमें भागा । पहले ही अभियानवाले घाटसे वोल्गा-पार हो तेमूर सोने, चादी, समूर और दूसरे बहुमूल्य मृगछालो, रत्न-मणि, मोतीकी अपार राशि तथा भारी सख्यामे सुन्दर लडके-लडकियोको लिये दनियेपरकी ओर चला । उसके किनारे मडकिरमान स्थानमे जाकर बरकियारोक ओगलानके डेरेपर जा पडा और उसे बिल्कुल नष्ट कर दिया । बरकियारोक मुश्किलसे जान बचाकर भागा । पीछा करते तेमूरी सेनाने दोनके तटपर उसके रनिवासको जा पकड़, लेकिन बरकियारोक भाग निकला । तेमूरने ओगलानके रनिवासके साथ अच्छा बर्ताव किया, और घोड तथा दूसरी भेंटे दे उसे बरकियारोकके पास भेज दिया । मीराशाह अपनी सेना लेकर दूसरी ओर गया हुआ था । उसने एलात्ज किलेको सर किया । मास्कोका तरुण महाराजुल वासिली अपने चचा ब्लादिमिरको राज-धानी सौंप ओका नदीके पीछे कलोम्नाकी ओर भाग गया । वहासे उसने महासबराजको लिखा, कि कुमारी (मरियम) देवीकी प्राचीन मूर्तिको मास्को ले जाओ, जिसमे देवीके प्रतापसे नगरकी रक्षा हो ।

भवतोकी दो पातियोंके बीचमें मूर्ति लाई गई। लोग चिल्ला रहे थे—“भगवान्की मा, रुमको बचाओ।” मास्कोके एसम्पन गिर्जमें कुमारीका बड़ा स्वागत किया गया। तेमूर दोनमें कुछ दूर आगे बढ़कर लौट गया। भगवान्की माने मास्कोको बचा लिया, नहीं तो तेमूरने उसकी वही दशा की होती, जो कि उसने चार वर्ष बाद १३६८-६९ ई० में दिल्लीकी की। तेमूरने कुमारीके प्रतापसे नहीं, बल्कि शरद् और हेमन्तके कठोर जाड़ेके भयसे बहा और रहना पसन्द नहीं किया। वह दक्षिणमें चलकर अजक (त्रिमिया) पहुँचा। लोगोंकी मारी प्रार्थना व्यर्थ गई। उसने मुसलमानोंको अलग करके बाकी लोगोंको एक ओरसे कटवा दिया और शहरमें आग लगावा दी। फिर कूवान और जार्जियामें मत्यानाश मचाने आगे बढ़ा। काकेशसके युद्धको उसने बर्मयुद्ध (जहाद) घोषित किया था। भारतकी भाँति ही उसने इस देशको भी काफ़िरोंको मिटाकर शुद्ध करना चाहा। उनकी वस्तियोंको तेमूरी सेनाने जला दिया, उनके गिर्जों और मूर्तियोंको नष्ट कर दिया। हाजीतरखन (अम्नाखान) नगरमें विश्वासघातकी खबर पा जाडोमें तेमूर बहा पहुँचा। लोगोंने बोल्गाके पानीकी वर्ष जमाकर शहरके चारों ओर प्राकार बना दरवाजे काट रखे थे, लेकिन तेमूरके सामने बर्फका मोटा ढुंग नहीं ठहर सका। भीतर घुस मनुष्यों, पशुओं और मपत्तिकों हटानेका हुकुम दे उसने नगरमें आग लगा दी। वहाँ से तेमूर कपचकोकी राजधानी सराय-वेरेकमें पहुँचा। वहाँ भी नागरिकोंको भेड़ोंकी तरह जवह करके शहरमें आग लगा दी।

इस प्रकार कपचक देशको पूरी तौरसे बरबाद करके तेमूर दरबद और आजुरवाडजानके रास्ते लौटा। वह अपने साथ बहुतसे कपचकोकी भी ले आया था, जिनमें बोल्गारीके पासवाले बोल्गातटके निवासी कराकल्पक (काली टोरी) भी थे, जिनकी सताने आज अराल-समुद्रके पाम कराकल्पकियों के स्वायत्त-नागराज्यमें बनी हुई है।

इसके बाद तेमूर बहुत नहीं जिया, और १३६९ ई० में मर गया। इसका वर्णन हम यथास्थान करेंगे।

तेमूरके लौट जानेपर तोक्तामिश फिर १३६८ ई० में सरायवेरेक पहुँचा, लेकिन तेमूर कुतुलुक्ने तबतक उसे नभाल लिया था। कुतुलुक्ने तोक्तामिशको मार भगाया। वहाँसे अपनी बीवी, दो पुत्रों, सजाने और बहुतने अन्यायियोंके साथ भागकर बह कियेफ गया। सुवर्ण-ओर्दूका वह अंतिम महान् शासक था। जिस तरह उसके वैभवका मितारा चमका, उसी तरह वह अस्त भी हो गया।

## १३ कोडरिअक ओगलान नूजी, ओगलान, उरुस-पुत्र (१३९६ ?)

नूजी नागल उस समय तेमूर-लगके दरबारमें रहता था, जबकि तेमूरने कपचकोपर द्वितीय अभियान किया। एक इतिहासकारके अनुसार तोक्तामिशकी पराजयके बाद तेमूरने उसे जू-छिका उलुम ७८८ हि० (२ जून १३७४-२० मई १३७६ ई०) में दे दिया, लेकिन इस सन्तुम गलती मालूम होती है, क्योंकि तेमूरका दूसरा अभियान १३९४ ई० में और पहला अभियान १३९० ई० में हुआ था।

## १४ तेमूर कुतुलुक, तेमूरवेक-पुत्र (१३९५-१४०० ई०)

तेमूर-नागल सबसे पहले आयमणके समय ७८९ हि०, (१० जून १३७७ ई०-२६ जून १३८० ई०) यह तेमूर-नागलके साथ था और तोक्तामिशकी प्रथम पराजय होनेके बाद ७९३ हि० (६ दिसम्बर १३८० ई०-२८ नवम्बर) में तेमूरने उसे उसके उलुमका खान बनाया। द्वितीय अभियानमें तेमूरने कपचकमें हटने ही तोक्तामिशमें इसका स्वयं हुआ। नौगाई नरदार इदिक कुतुलुकके पक्षमें था। वह तोक्तामिशको नो मार भगानेमें सफल हुआ, लेकिन उसके पूर्वी भागपर तोडरिअक उरुस-पुत्रका अधिकार बना रहा। १३९७ ई० में लियुवानी राजा वित्तुने तेमूर कुतुलुकके ऊपर आयमण में और कई हजार नागरिकोंको उसने म्नी-बन्नोंके साथ पकड़ के गया। ये नारनार पीछे यावना और घातों बीचमें बग गये। ईसाइयोंने बीचमें इस्लामको कायम रखना उनके लिये मुश्किल था, उसलिये वह दार्जी पटोमी पातियामें मिश्रित होकर ईसाई बन गये, और केवल तागनार उनका नामभर रह गया। तेमूर कुतुलुक्ने बड़ी ज़रूरी फिर अपनी शक्तिको इतनी मजबूत कर ली, कि उसने वित्तुतके

भाग की, कि अपने राज्यके कियेफ नगरमे भागे तोकतामिशको मेरे पास भेज दो। वितूतके इन्कार करनेपर उसने आक्रमण कर दिया और ५ अगस्त १३६६ ई० को लिथुवानी और किपचक मेनाओ मे भारी लड़ाई हुई। वितूतको अपने वास्दी हथियारोपर बहुत भरोसा था, जिनका आविष्कार मंगोलोके वास्दी हथियारोके सहारे हालमे ही युरोपमे किया गया था। लेकिन उस समयकी तोपे अभी बहुत आरम्भिक अवस्थामे थी, दागनेसे पैदा हुई गर्मीको उनकी धातु वर्दाग्त नहीं कर सकती थी। कुतुलुककी सेनाने पीछे जाकर लिथुवानी पवितको तोड़ दिया। लेकिन, तोकतामिश वहासे निकल चुका था, वितूतको भी जान लेकर भागना पड़ा। लिथुवानी सेना नष्ट हो गई। किपचकोने भगोडोका पीछा कर कितनो हीको मारा और कितनोको बंदी बनाया। तारतारोने लुत्स्कतक लिथुवानी राज्यको लूटा। उन्होने कियेफ नगरपर भारी जूरमाना लगाया। इसके बाद सात सालतक और तोकतामिश इधर-उधर भटकता फिरा। अन्तमे वह पश्चिमी साइबेरियाके तुमान-जिलेमे शादीबेकेके हुगुमसे इदिकूके हाथो मारा गया।

कुतुलुक ८०२ हि० (३ सितवर १३६६ ई०-१२ अगस्त १४०० ई०) मे वोल्गाके किनारे कजान नगरमें मरा।

### १५. शादीबेक, तेमूरबेक-पुत्र (१४००-१४०८ ई०)

किपचकोका पूर्वी भाग अब भी कोइरिअकके हाथमें था। उसके पश्चिमी भागपर शादीबेक शासन करने लगा। बीचमे हुई गडबडीके कारण शोख होकर मास्कोके महाराजुल वासिलीने कई सालोसे कर नहीं भेजा था। १४०५ ई० मे कर उगाहनेके लिये खानका दूत मास्को पहुचा। तेमूर कुतुलुकने लिथुवानी राजाको पाठ पढाकर अपनी काफी धाक जमा ली थी, इसलिये महाराजुलने दूतकी भी भेट-पूजा की और कर भी वेवाक कर दिया। ८०८ हि० (२३ दिसवर १४०५-२१ जनवरी १४०६ ई०) मे शादीबेक का अमीर इदिकू स्वारेज्मको तेमूरियोसे छीन अमीर अकाको वहाका राज्यपाल बना लौट गया। शायद इसी साल ईद-रमजानके दिन इराकियोकी एक बडी जमात तेमूरी मिर्जा खलील सुल्तानसे नाराज हो गई और समरकंद छोडकर ख्वारेज्म चली गई। तुगा तेमूरखानके पौत्र दुकमान बादशाहके पुत्र पीरबाद-शाह तेमूरी सुल्तान अबूसईदके डरसे भागकर माजन्दरान (ईरान) में भाग गया था। वह वहासे ख्वारेज्ममे आ गया, जब उसने देखा कि वह तेमूरियोके हाथसे निकल गया है। इपीर बादशाहको इराकियोने स्वारेज्मका बादशाह बनाया और मिर्जा खलीलके दिये हुये धनको उसे भेट दे वह माजन्दरान चले गये। ख्वारेज्मका हाकिम अब भी अका था।

शादीबेक ८११ हि० (२७ मई १४०८-१५ मई १४०९ ई०) मे मर गया।

### १६ पूलाद खान, तेमूरबेक-पुत्र (१४०८-१४१० ई०)

भाईकी जगहपर पूलाद गद्दीपर बैठा और अमीर इदिकू सारी सल्तनतका वजीर-आजम बना। उसने अकाको लौटा उसकी जगह वगजलेको ख्वारेज्मका राज्यपाल बनाया।

पश्चिमी राजा कही खानोकी शक्तिको कमजोर न समझ ले, इसलिये १४०९ ई०की शरदमें तारतारोने दक्षिणसे दनियेपरकी ओर बढ़ते लिथुवानियापर आक्रमण किया। मास्कोके महाराजुलने कर वाकी रक्खा था और ऊपरसे तोकतामिशके पुत्रको भी शरण दी थी। पूलादने इस अपराधके लिये दंड देनेके वास्ते एक बडी सेना मास्कोके विरुद्ध भेजी। महाराजुल वासिली केवल तोपो और जाडेपर भरोसा कर सकता था, इसलिये रानीको लेकर वह कस्त्रोमा भाग गया। दिसवर १४१० को तारतार सेना मास्कोके सामने पहुची। तीस हजार सेना महाराजुलके पीछे पडी, और उसने पेरियेस्लाव्ल, जालेस्की, रोस्तोफ, दिमित्रोफ, सेरपूकोफ, निजनी-नवोग्राद और गोरदेत्स नगरोको लूटकर जला दिया। एक बार फिर रूसियोको वा-तू और तोकतामिशके दिन याद आने लगे। रूसी इतिहासकार करमाजिनके अनुमार-“अभागे रूसी प्रतिरोध करनेकी जगह भेडोके झुडकी तहर भेडियोद्वारा पीछा किये जा रहे थे।” उनमेंसे कुछ कतल किये गये, कुछ तारतार धनुर्धारियोके बाणोसे बिधे। तरुण दास बनाने-बैचने के लिये पकड

लिये गये, सयान कपडे छीनकर नगे करके जाडेमे मरने के लिये छोड दिये गये। आदमियोको एक दूसरेके साथ जजीरोमे बाध दिया गया और एक तारतार चालीससे अधिक आदमियोको कावूमे रख सकता था। लेकिन, मास्कोका मुहासिरा सफल नहीं रहा। दूसरा चारा न देखकर इदिकू तीन हजार रूबल जुरमाना लेकर लौट गया। लौटने वक्त उमने रयाजन नगरको लूटा। इदिकूने इसी समय महाराजुलको पत्रमे लिखा था—

“इदिकू, राजुल-पुत्रो और राजकुमारोसे सलाह लेनेके बाद वासिलीको अभिनदन भेजता है। यह मालूम करके, कि तुमने तोकतामिगके पुत्रोको शरण दी है, महान् खानने मुझे आज्ञा दी, कि तुम्हारे विरुद्ध चटाई कट। तुम हमारे व्यापारियोके साथ ही दुर्व्यवहार नहीं करते, बल्कि तुमने हमारे दूतोका भी बड़ा अपमान किया है। अपने बूढ़े आदमियोमे पूछो, कि क्या पहले कभी ऐसा होता था। उस समय रूस अपनी राजभक्तिके लिये मशहूर था। वह खानका पवित्र सम्मान करता था और नियमपूर्वक कर अदा करता था। हमारे व्यापारियो और दूसरोके प्रति सम्मान प्रदर्शित करता था। इसकी जगह तुमने क्या किया? जब तेमूर कुतुलुक मिहामनपर बैठा, तो क्या तुम स्वयं आय या तुमने अपने राजकुमारो या अपने एक वायरको भी भेजा? तेमूरके मरनेके बाद शादीबेकके आठ वर्षोके शासनकाल में क्या तुमने एक बार भी आज्ञाकारिताका कोई भी काम किया? और अतमें पूलाद खानके तीन वर्षोके सिंहासनपर बैठनेके कालमे क्या तुम या जेठे रूसी राजपुत्रोमेसे कोई अपने कर्त्तव्यको पालन करनेके लिये ओर्द्धमें गया? तुम्हारे सारे काम अपराधपूर्ण हुये। जब फेदोर कोसका जीता था, तो सारे रूषी उसकी सलाह मानकर अच्छा वर्तान करने थे, लेकिन तुम अब उसके पुत्र जानकी बात नहीं मानते, जो कि तुम्हारा कोपाव्यक्ष और मित्र है। तुम बड़ोकी सलाह माननेसे इन्कार करते हो, जिसका परिणाम देख ही रहे हो, तुम्हारे देशकी वरवादी हो रही है। अगर तुम इससे वचना चाहते हो, तो अपने सबसे बुद्धिमान् वायरो—इनिया, पीतर, जान निकितिच आदिकी बात मानो और अपने किसी बड़े अमीरके साथ वह भेंट भेजो, जिसे रूस जानीबेकके पास भेजा करता था। रूसी लोगोकी गरीबीकी वाते बताकर तुमने जो खानको बहलाना चाहा है, वह सब झूट है। हम तुम्हारे देशके कोने-कोनेको देख चुके हैं। हम जानते हैं कि हर दो हलके ऊपर तुम्हें एक रूबल कर मिलता है। यह पैसा कहा जाता है? हम तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नहीं करना चाहते। तुम क्यों एक अभागे भगोडेकी तरह काम कर रहे हो? नोचो और अकलकी बात मानो।”

लेकिन महाराजुलके ऊपर इदिकूके उपदेशका कोई असर नहीं हुआ, क्योंकि वह किपचकोकी भीतरी हालतको अच्छी तरह जानता था।

८१३ हि० ( ६ मई १४१०—२४ अप्रैल १४११ ई० ) में पूलाद खानको तेमूर खानने मार भगाया।

### १७. तेमूर खान, तेमूर कुतुलुक-पुत्र (१४१०-१४११ ई०)

उतिहासकार अब्दुरजाक नमन्कदी (१४२२ ई०) के अनुसार \* यह तेमूर कुतुलुक खानका पुत्र था, लेकिन गपफारीने इसे शादीबेकका पुत्र कहा है। शायद यह तेमूर कुतुलुकका ही पुत्र था। पूलाद खानके वंश राज्याका हर्ता-कर्ता अमीर इदिकू था, इसलिए उसको दवाये बिना तेमूर अपनेको मुरशिद नहीं समझता था। इदिकू भागकर स्वारेज्म जा तैयारी करने लगा। तेमूरने अजक बहादुर और गजनमे नेतृत्वमे भेजा भेजा। स्वारेज्म-शहर (उरगज) से दस दिनके रास्तेपर साम नामक स्थानमें लड़ाई हुई। स्वारेज्मका राज्यपान बगजले मारा गया और इदिकू हारकर स्वारेज्म भाग गया—यह शायद ८१८ हि० ( २४ अप्रैल १४११—अप्रैल १४११ ई० ) के आरम्भकी बात है। तेमूरके सेनापति दक्कित और गजन भी पीछा करते हुये स्वारेज्म पहुँचे। उन्होंने ६ महीना इदिकूको मुहामिरेमे रक्का। इन्ती समय पता लगा, कि तोकतामिग-पुत्र जनालुद्दीनने तेमूरको हराकर गद्दी छीन ली।

\* 'मतन-उल्-नार्दन-व-मज्म-उल्-बहरन'



## १८. जलालुद्दीन, जलाबेर्दी, सेलेनी, तोकतामिशका ज्येष्ठ पुत्र (१४१४ ई०)

जलालुद्दीनने गद्दी सभालते ही ख्वारेज्ममें लड़ते किपचक सेनापतिके पास पैगाम भेजा, कि इदिकू हमारा दुश्मन है, उसे पकड़ लाओ। फिर उसने दूसरा सदेश भेजा, कि अगर इदिकू अपने पुत्र सुल्तान महमूद तथा उसकी पत्नी (जो कि जलालकी बहन भी थी) को मेरे पास भेज दे और सिक्का तथा खतवा मेरे नामसे जारी करे, तो उससे लड़ाई मत करो। अमीर गजन भी जलालुद्दीनका बहनोई था। उसने सुलह करनी चाही। उधर दकिना तेमूर खानका बहनोई था, इसलिये उसने दूसरे सदेशकी ओर ध्यान नहीं दिया। इसी समय तेमूरखानके फिर लौट आनेकी खबर मिली। गजनने दकिनाको शराव पिला मतवाला कर अपने नौकर जान ख्वाजाको भेज तेमूरको मरवा दिया। यह खबर सुनकर जलालुद्दीनने अमीर गजनको बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुये सदेश भेजा, कि गजन खा मेरा अमीर है, उसका हुकुम मानो। अमीर दकिनाने तेमूरके लिये लोगोको बहकाया। लेकिन ख्वारेज्मका मुहासिरा और जोरका हुआ। अमीर खिजिर ओगलान राजकुमार होनेसे दर्जेमें सबसे बड़ा था। उसके बाद दकिना फिर गजनका दर्जा था। किपचक सेनापतियोने अमीर इदिकूसे सुलह कर लेना ही अच्छा समझा, क्योंकि जलालुद्दीन खानकी वैसी ही आज्ञा थी। अमीर इदिकू सुलह करनेके बाद शहरसे बाहर निकल आया। खूब एक दूसरे की जियाफतें होने लगी। सेनापति मुहासिरा हटाकर किपचक भूमिकी ओर लौटे जा रहे थे। इसी समय बलूकिया गावमें उनकी कजुलई बहादुरसे मुलाकत हुई। उसने बिना सर किये ही लौटनेकी बात लेकर ताना मारा—“ख्वारेज्मको देखल किये बिना कैसे लौटे जा रहे हो?” अमीरोने कहा—“हमने सात महीना मुहासिरा करके युद्ध किया, लेकिन शहर सर नहीं कर सके, तेरे पास तो चार हजारसे वेशी मर्द भी नहीं हैं। लौटनेकी सलाह हुई। हमने सुलह कर ली। इदिकू अपने पुत्रको खानके पास (जामिन) भेजेगा।”

कजुलईने उत्तर दिया—“मैं अकेला ही इदिकूके लिये काफी हूँ” और वह गर्वके साथ ख्वारेज्मकी ओर चल पड़ा। अमीर इदिकूको भी खबर लग गई। सेना कम होनेसे वह चालसे काम लेना चाहता था। वह दिनमें छिपा रहता और केवल रातको सफर करता। नजदीक आनेपर इदिकूने अपनी सेनाको दो भागोंमें बांटकर एक भागसे कहा, कि तुम थोड़ा लड़ करके पीछे हटो और रास्तेमें पुराने नम्दोके बंधे वोगचोको फेंकते आओ। युक्ति काम कर गई। कजुलईकी सेना वोगचोको बटोरनेके लिये बिखर गई, इसी समय इदिकू टूट पड़ा। कजुलई मारा गया। इदिकूने उसके सिरको झंडे-पताके आदिके साथ ख्वारेज्म भेजा। कजुलईके भगे हुये आदमियोने जब अपने सेनापतिके झंडेको चलते देखा, तो समझा कि वह विजय-यात्रा करते हुये ख्वारेज्म जा रहा है, तो वह छिपी जगहोंसे आकर वहां पहुंचे और इदिकूके जालमें हजारों आदमी फस गये।

इतिहासकार गफफारी (मृत्यु १५७६ ई०) के अनुसार\* “जलालुद्दीन और करीमवरदी कपक जव्वारवर्दी, मोहम्मदखान और दूसरे राजकुमारों जैसोने कुछ समयतक हकूमत की।” इस तरह अब किपचककी राजावली जल्दी-जल्दी बदलते खानोंके कारण गडबडीमें पड़ गई। कुछको छोड़कर यह कहना मुश्किल है, कि कौन खान किसके बाद गद्दीपर बैठा।

## १९. करीमबर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१४ ई०)

करीमबर्दी कुछ दिनोतक गद्दीपर रहा। शायद इसे जव्वारवर्दीने मार डाला, जिसका भी शासन थोड़े ही दिनोतक रहा।

## २०. चिड़-गिज ओगलान (१४१४ ई०)

समरकंदीके अनुसार चिड़-गिज ओगलानको जव्वारवर्दीने हराकर स्वयं गद्दी संभाली।

\* “नस्ख-जहानारा” ।

## २१. जब्बारवर्दी तोकतामिश-पुत्र (१४१७ ई०)

इसीके समय ८१५ हि० (१३ अप्रैल १४१२—२ अप्रैल १४१५ ई०) में तेमूर-लंगके पुत्र शाह्रूख ने ख्वारेज्मके ऊपर सेना भेजी, जिसमें खुरासानके अमीर अली, और अमीर इलियासखोजा दोनो सेनापति थे। अन्तर्वेदसे भी पाच हजारकी सवार सेना ले सेनापति मूसा आया। दोनो सेनाये ख्वारेज्म-मे आकर मिल गई। इस समय इदिकूका पुत्र मुबारकशाह ख्वारेज्मका राज्यपाल था, जिसने सेनाकी खबर पाकर डरके मारे बापके पास भाग जाना पसन्द किया। मुल्लाओ और नगरके बड़े-बड़े लोगोने नगरको शाह्रूखकी सेनाके हाथमें समर्पण कर दिया। दूसरे सेनापति लौट गये, अमीर शाह-मुल्क कुछ समयतक देशके सुप्रबन्धके लिये ठहरकर ८१४ हि० (३ अप्रैल १४१३—२२ मार्च १४१४ ई०) को राजधानी हिरात चला गया।

## २२. दर्विस खान

शायद यह उरुसखान-वंशज था। इसने थोटे ही दिनो राज किया।

## २३. चकरा खान (१४१६ ई०)

यह उरुस खानका वंशज था। यह कुछ समयतक तेमूर-पुत्र मीराशाह और पीत्र अबूवकरके दरबारमें रहा था। अमीर इदिकूने इसे किपचक बुलाया। अबूवकरने ६ हजार सवार साथ कर दिये, जिनके साथ सिल्ट वरगर नामक एक युरोपीय सैनिक भी था। गुरजी, शेरवान, दरबद, अस्त्राखान होते यह सेना सेतजुलेत सराय (?) पहुँची। वहाँ कितने ही ईसाई रहते थे, जिनका एक विशप भी था। सिल्ट वरगर ने लिखा है, कि वहाँके पादरी लैटिन जानते थे, लेकिन प्रार्थना और गीत तारतार भाषामें करते थे। इदिकूके साथ चकरे और सिल्ट वरगर भी इपविस (सिविर) की ओर गये—यही साइबेरिया नाम का सबसे पुराना उल्लेख मिलता है। सिल्ट वरगरका कहना था, कि साइबेरियामें तीस दिन लवा एक पहाट है (शायद उसका अभिप्राय उराल पर्वतसे है)। उसके आगे निर्जन भूमि पृथिवीके छोरतक चली गई है। उस पहाटके निवासी जगली तथा दूसरोसे भिन्न हैं। केवल उनके हाथ और चेहरोपर केश नहीं होते, नहीं तो सारा शरीर केशोंसे ढका होता है। वह पहाडोमे जानवरोंका शिकार करते हैं और पत्ता तथा घास जो भी मिलता है, उसीपर गुजारा करते हैं। इलाक़ेके शासकने इस जगली जातिकी एक स्त्री, एक पुष्प एवं गदहेसे-बड़े-नहीं एक जगली घोड़े तथा दूसरे जानवर इदिकूके पास भेजे थे। मार्कोपोलोकी तरह सिल्ट वरगरने लिखा है, कि वहाँ कुत्ते हैं, जो गाड़ी खींचते हैं। इन गाड़ियोंमें ममूरी छाले भरे रहते हैं। ये कुत्ते गदहोंके बराबर होते हैं और जगली लोग इन्हें खाते भी हैं। निवासियोंको उगिने (उगरी) कहा जाता है। जब उनमें कोई अविवाहित तरुण मर जाता है, तो उसे बढिया कपडा पहनाते हैं, भोज करते हैं, फिर लाशको अर्थीपर रखकर ऊपर सुन्दर चदवा टागकर जलूस निकालते हैं। आगे-आगे तरुण-जन सुन्दर पोशाक पहने चलते हैं, पीछे-पीछे मा-बाप और दूसरे सबघी रोते दृष्टे अनुगमन करते हैं। खाने-पीनेकी चीजोंको कन्न पर ले जा वही श्राद्ध-भोज करते हैं। चारो ओर बैठे तरुण खाते-पीते हैं, और सबघी रोते रहते हैं। उस भूमिके आदमी रोटी नहीं खाते, मटर छोड़कर वहाँ कोई अनाज नहीं होता।

चकरा नौ मास ही गद्दीपर रहा, फिर उलुक मोहम्मदने आक्रमण करके उसे भगा इदिकूको भी बंदी बना लिया।

## २४. किवेक, कपक, तोकतामिश-पुत्र (१४२२ ई०)

उलुक मोहम्मद ग्वय गद्दीपर न बैठकर दूसरोको राजा बनाता रहा, इसीसे किवेकको भी पश्चिमी किपचक की गद्दीपर बैठनेका मौका मिला। इसी समय अपने पिता कोइरियकके मरनेपर बोरक पूर्वी किपचक-मिहाननपर बैठा। १४२२ ई० में उसने किवेकको हराया, लेकिन दूसरे साल नई सेना एकत्रित कर किवेक फिर लटनेके लिये लौटा।

## २५ उलुक मोहम्मद खान

यह तूका-तेमूर-परिवारका और उरुसखानियोका विरोधी था । इसीने बोरकखानको हराया ।

## २६. सैयद अहमद खान

शायद यह उलुक मोहम्मदके बाद गद्दीपर बैठा । बच्चा ही था, जबकि अमीरोने इसे खान बनाया, जिस पदपर वह सिर्फ पैतालीस दिन रहा ।

१७ मार्च १४१६ ई० को मुगीसुद्दीन उलुगबेक (शाहर्ख-पुत्र) का डेरा खोजन्द नदी (सिरदरिया) के तटपर शाहर्खिया नगरके सामने था । इसी समय ख्वारेज्मसे खबर मिली, कि जब्बारवर्दीने चिङ्ग-गिज ओगलानको भगा उज्वेक—उलुसको अपने हाथमें कर लिया है । मिर्जा उलुगबेक सिर-दरिया (सेहून) पर पुल बनवा सफर महीने (३१ मार्च—२८ अप्रैल १४१६ ई०) के अन्तमें समरकन्द पहुँच गया । उज्वेक-देश (दशतेकिपचक) से भागकर आये ख्वाजा लाकके पुत्रोंने प्रार्थना की, कि उज्वेक-देश बरवाद हो रहा है, उसे बचाये ।

## २७. मोहम्मद खान तोकतामिश-पुत्र (१४२२-१४२५ ई०)

शायद ८२२ हि० (२८ जनवरी १४१६—१६ जनवरी १४२० ई०) में (छिङ्ग-गिस् ओगलानका सवधी) बोरक ओगलानने उज्वेक (किपचक) राज्यसे भागकर मिर्जा उलुगबेक गूरगानके पास आ “हस्तचुम्बन” का सौभाग्य प्राप्त किया । उलुगबेकने उसपर बहुत कृपा दर्साई । कुछ समय वह समरकन्दमें उसके पास रहकर फिर अपने देश लौट गया । मिर्जा उलुगबेक भी ताशकन्दसे आगे कूच करके बुरलकके पास पहुँचा । वहाँ उसे उज्वेककी ओरसे भागकर आये बलखू नामक आदमी ने उज्वेक-राज्यकी बरवादीकी खबर दी, जिसका समर्थन वहाँसे आये व्यापारियोंने भी किया । इससे मालूम होगा, ज-छिङ्ग-उलुस या दशतेकिपचक अब उज्वेक देश कहा जाने लगा था ।

अब्दुर्रजाक समरकन्दी शाहर्खके समय “वकाया-निगार” (घटना-लेखक) था । उसने ८२४ हि० (६ जनवरी—२५ दिसबर १४२१ ई०) के “वकाया” (घटनाओ) को लिखते हुये बतलाया है—“सुल्तान केशजीने करावाग (ईरान) से दशतेकिपचकमें जा मुहम्मदखानकी अधीनता स्वीकार की । खानने उसके साथ बड़ा अच्छा बरताव किया और शाहर्खकी सल्तनतके प्रति अपना सद्भाव प्रकट किया । सुल्तान केशजी वहाँसे जीकदा महीने (२८ अक्टूबर—२६ नवम्बर) को लौटा । यद्यपि उत्तरी घुमन्तुओ-में आपसमें खूनी गृह-कलह छिड़ा हुआ था, लेकिन उसके कारण दक्षिणके ग्रामो-नगरोंके निवासी निश्चिन्त नहीं रह सकते थे ।” गृह-युद्धोंके कारण भी उत्तरके घुमन्तुओका टिड्डीदल दक्षिणकी ओर प्रस्थान कर सकता था । समरकन्दने ८८५ हि० (२६ दिसबर १४२१—१४ दिसबर १४२२ ई०) के “वकाया” में फिर लिखा है—“दशतेकिपचकसे उज्वेक विलायतके बादशाह मुहम्मदखानके पाससे आलमशेख ओगलान और पूलाद अपने साथ शिकारी वाज्र, घोड़े आदि उपहार लेकर आये । शाहर्खने प्रति-उपहार रूपमें उन्हें सोना, घोड़े, कुलाह, कमरबंद आदि खानके लिये तथा एलचियोंके लिये भी उचित इनाम दिये ।” इससे मालूम होता है, कि मुहम्मदखान और शाहर्ख दोनों आपसमें अच्छा सवध बनाये रखनेकी कोशिश कर रहे थे । ८२६ हि० (२ नवम्बर १४२६—२१ अक्टूबर १४२७ ई०) के “वकाया” में लिखा है—शाहर्ख कुछ दिनो ग्रीष्म-निवासके वास्ते बदगिस इलाकेमें गया था, इसी बीचमें शाहर्खका नौकर ख्वारेज्म-राज्यपाल (अमीर) ने ख्वारेज्मसे आकर निवेदन किया, कि बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूको अपने हाथमें कर लिया, उज्वेक उलुसका अधिकांश बोरककी ओर हो गया । लेकिन जान पड़ता है, १४२५ ई० में भी अभी मुहम्मदखानके शासनका विल्कुल अंत नहीं हुआ था, क्योंकि ८३० हि० (२ नवम्बर १४२६—२१ अक्टूबर १४२७ ई०) के “वकाया” में लिखा है, कि ८२८ हि० (२३ नवम्बर १४२४—१२ नवम्बर १४२५ ई०) में बोरक ओगलानने मुहम्मदखानके ओर्दूपर अधिकार कर लिया । सारा उलुस उसके अधीन हो गया ।

खानोंके इस परिवर्तनसे मालूम होगा, कि अब तोकतामिशके पुत्रों और पीत्रोंका आपसमें सघर्ष चल रहा था। एकवार फिर उरुसके पीत्र बोरकने सिंहासनपर अधिकार जमाया।

बोरक खान, बुरकि, कुइजी-पुत्र (१४२५-२८ ई०)—बोरकको यह सफलता दक्षिणमें मिली थी। तोकतामिशके वाद उमकी मतानों और तेमूरकी सतानोंमें आपसमें पैतृक वैमनस्य चलता रहा। दक्षिणने उरुखानकी मतानोंका पक्ष लिया और मिर्जा उलुगवेककी सहायतासे बोरकको सफलता मिली। लेकिन सफल घुमन्तू सरदार कभी कृतज्ञता माननेके लिये तैयार नहीं होते, यह बात किसीसे छिपी नहीं है। राजगद्दी सभालेके बाद ही ८२६ हि० में वह मिर्जा उलुगवेककी सीमापर अवस्थित मिगनाक नगरमें आया। इससे पहले ८२३ हि० (१७ जनवरी १४२०—५ जनवरी १४२१ ई०) में वह उलुगवेकके पास शरणार्थीके तौरपर आया था और उलुगने उसे शिक्षा और सहायता देकर विलायत-उज्वेक भेजा था।

तोकतामिशकी तरह बोरक खानने दक्षिणकी ओर मुह फेरनेसे पहले रुसकी ओर विजय-यात्रा की थी। १४२६ ई० में तारतारोंने ग्याजन नगरको लूटा। तीन साल बाद कजानके तारतारोंने गालिच, कोस्त्रोमा आदि नगरोंको बरबाद किया। १४३० ई० में तारतार राजकुमार हैदर लिथुवानिया के भीतर घुस गया और उसने तीन सप्ताह मुहामिरा करनेके बाद मस्केन्स्को सर किया। इसी अब कर रोकनेकी हिम्मत नहीं कर सकते थे। १४३७ ई० में कुचुक (छोटे) मुहम्मदने उलुक मोहम्मद खानको मार भगाया। उलुकने उसमें जाकर शरण ली, लेकिन कुचुकने उसे वहाँसे निकलनेके लिये मजबूर किया। उलुक बुल्गारोंकी भूमिमें चला गया, वहाँ कजान नगरको उसने फिरसे बसाया और कजानके खान-बगकी स्थापना की। इनसे मालूम होगा कि अभी किपचकोंकी शक्ति विल्कुल खतम नहीं हुई थी।

बोरक खानने मिगनाक में आकर मिर्जा उलुगके पास यह कहकर एलची भेजा—“आपकी सहायता और शिक्षासे मुझे सिंहासन मिला, इसके लिये मैं बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ, लेकिन सिगनाक हमारे श्वेत-ओर्दू बशकी राजधानी है, उसे हमें दे दिया जाय।” इधर वह उलुगखानसे चिकनी-चुपड़ी बातें कर रहा था और उधर उसके आदमी मिगनाक इलाकेपर हाथ सफा करनेमें लगे थे। वहाँके तेमूरी हाकिम अमीर अरसलन ग्याजा तरखनने उलुगवेकके पास खबर भेजी, कि ओगलानके नीकर (अफसर) इलाकेको बरबाद कर रहे हैं, अपनेको पूरा हाकिम समझकर सरकारका मजाक उड़ा रहे हैं। उलुगवेकने भारी सेना जमा करके उधर बूच करनेका निश्चय किया, लेकिन उसके वाप आहूखने युद्धकी बरबादीको बतलाते हुये उसे बचना करने में रोकते हुये भी राजकुमार (मिर्जा) मुहम्मदकी अधीनतामें सेना दे अतबेदकी ओर भेजा। जोकीने १७ फरवरी १४२७ ई० को समरकंदकी ओर प्रस्थान किया और वहाँ जाकर बड़े भाईकी सेनामें मिला गया। सुकुन-सेनाने आगेकी ओर बूच किया। इतनी भारी सेनाको देखकर बोरक एक बाग़ दर गया, लेकिन वह अपने पूर्वजोंकी भूमि लेने आया था, क्या मुह लेकर पीछे लौटता? किपचक-सेना एकाएक शत्रुके उपर टूट पड़ी। मिर्जा उलुगवेकको अपनी सख्ताका अभिमान था, लेकिन किपचकोंने उसके छत्रके छूटा दिये। पामा पलटने लगा। सैनिक उलुगवेकके घोड़ेकी बाग पकड़कर उसे मैदानमें ब्रह्म पाये। भारी सेना हारकर समरकंदकी ओर भागी। उज्वेकोंके हाथमें भारी संपत्ति आई। इतनी ध्वजगद्दी मच गई, कि लोग समरकंद नगरके दरवाजोंको बंद करने लगे। उन्हें बहुत समझा-बुझाकर रोका गया। बोग्कानी सेनाने तुर्किस्तान और अतबेदके सारे इलाकोंको लूटा और बरबाद किया। यह सब ग्याजानमें आहूखके पास पहुँची।

उन घटनाओं कादित कर दिया, कि उद-उत नामनयाही चुस्त घुमंतुओंके सामने निर्वल नावित होनी है। आहूखको अब हंगश आजा, जय मतग नामने दिखाई पड़ा। लेकिन, उज्वेकोंके तेमूर-बगका स्थान लेनेमें अभी गोन मरीजी देर थी, जबकि तेमूरी आहूजादा बाबरको मध्य एशियाई अतबेद छोड़कर भारतीय जनबेदता गगना नापना था। आहूखको एन बड़ी सेना लेकर समरकंद आया देख

बोरकको वहासे हटना पडा। शाहख इस अभियानसे ६ अक्टूबर १४२७ ई०को खुरासान लौटा। दक्षिणमें इस तरह सफल हो बोरक अपने पूर्वी पड़ोसी चंगताईवशकी उत्तरी शाखाके राज्य मुगोलिस्तान-पर जा पडा। ८३२ हि० (११ अक्टूबर १४२८—२६ सितंबर १४२९ ई०) में उलुगवेकने अपने बाप शाहखके पास हिरात खबर भेजी, कि बोरक और मुगोलिस्तानके सुल्तान महमूदमें भारी युद्ध हुआ, जिसमें सुल्तान महमूदने बोरकको कतल कर दिया।

## २८ मुहम्मद सुल्तान, तेमूरखान-पुत्र, तुगलक-तेमूर-पौत्र (१४२५-३८ ई०)

बोरकके बाद मुहम्मद सुल्तान गद्दीपर बैठा। ख्वारेज्मका तेमूरियोके हाथमें जाना किपचकोको बहुत खटकता था, आखिर जू-छिके राज्यका आरम्भ ख्वारेज्मको लेकर हुआ था। मुहम्मदने ८३४ हि० (१९ सितंबर १४३०—८ सितंबर १४३१ ई०) के अंतमें अपनी सेना ख्वारेज्मपर भेजकर वहां बहुत लूट-पाट मचाई, लेकिन वह उसे ले नहीं सका। मुहम्मद सुल्तानने अपनी राजधानी क्रिममें बनाई थी।

## २९ दौलत बर्दी

बोरक जिस वक़्त अपने पूर्वके पड़ोसियोंसे लड़ने गया था, उसी समय मुहम्मद पश्चिमी किपचकका खान बन बैठा, लेकिन जल्दी ही दौलत बरदी तोकतामिश-पुत्रने उसे हटा दिया। वह तीन दिन ही शासन करने पाया था, कि बोरक खान फिर आ गया।

## ३०. कादिर बर्दी

शायद यह तोकतामिशका पुत्र था, जिसे इदिकूने मारा। इदिकू भी लडाईमें या सिर-दरियामें डूबकर मरा।

## ३१ शादीबेक

गयासुद्दीन शादीबेकने भी थोड़े ही समय शासन किया। मुहम्मद सुल्तान तेमूर-खान-पुत्रके समयसे ही किपचककी राजनीतिक अवस्था इतनी अस्त-व्यस्त रही, कि राजावलीका ठीकसे पता नहीं लगता।

## ३२ सैयद खान, सैदक खान

इसने कुछ दिनोतक शासन किया, फिर जानीबेकका पोता और सैयद खानका पुत्र कासिम खान गद्दीपर बैठा।

## ३३. कासिम खान, सैदक खान-पुत्र (१५०९-१५२३ ई०)

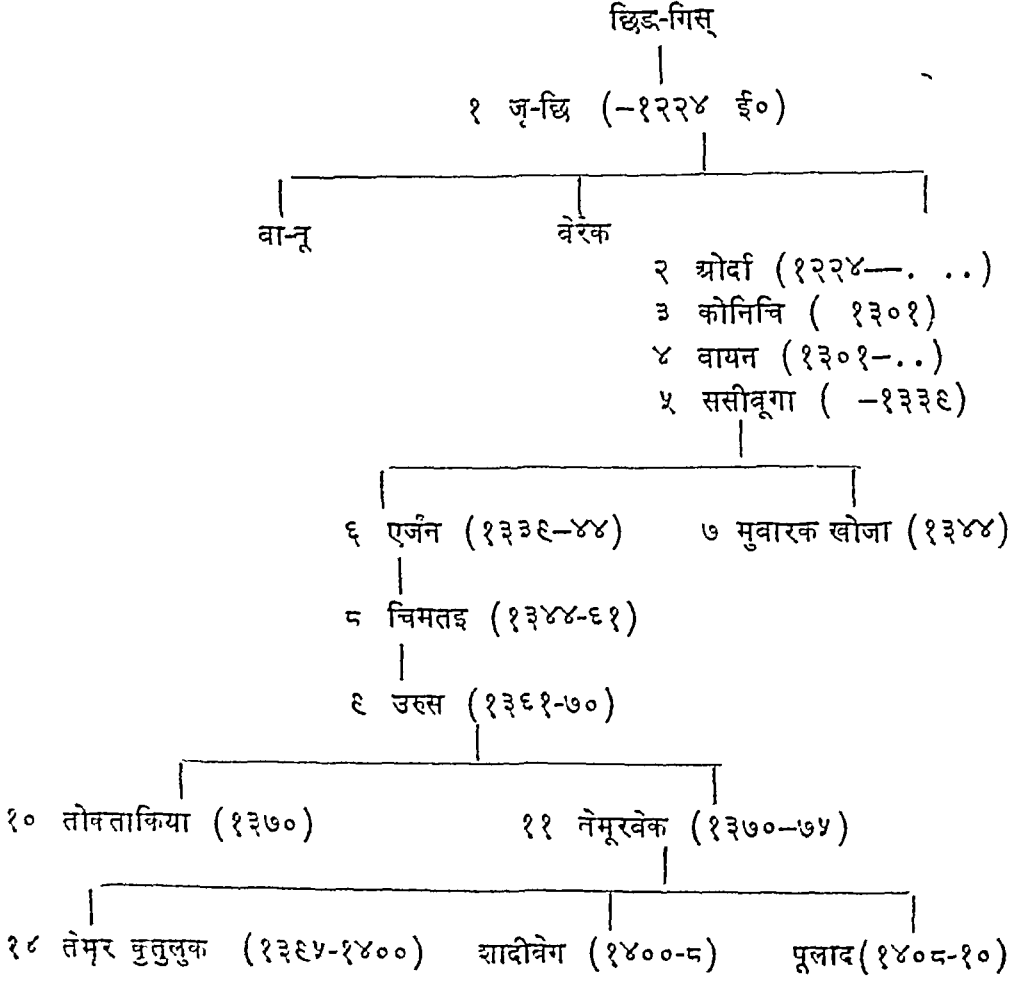
दश्ते-किपचकका खान होते ही कासिम खानको सैबक खानसे मुकाबिला करना पडा। ६१५ हि० (२१ अप्रैल १५०९—९ अप्रैल १५१० ई०) में सैबक खानने चढाई करके कासिमको हराया। ६३० हि० (१० नवम्बर १५२३—२८ अक्टूबर १५२४ ई०) में कासिम खान मरा।

## ३४ अकनजर, हकनजर खान, कासिम-पुत्र (१५२३)

बापके बात अकनजरको गद्दी मिली। अब श्वेत-ओर्दूके दो टुकड़े हो गये थे, जिनमें एकका शासक अकनजर था, और दूसरेके जू-छि-पुत्र शैवानके वंशज।

## श्वेत-ओर्दू-खान-वशवृक्ष

( —१२२४-१४१० ई० )



## रूस (रूरिक-वंश)

(९११-१५९४ ई०)

### अवतरणिका

मध्य-एसियाके इतिहासको स्पष्ट करनेके लिये चीन और ईरानके तत्कालीन इतिहासके साथ रूसके इतिहासका भी कुछ परिचय आवश्यक है, क्योंकि शताब्दियोंतक वह एक दूसरेको प्रभावित करते रहे हैं। ईरान जहाँ अपनी भाषा और सस्कृतिसे मध्य-एसियाके साथ समीपता स्थापित करता है, वहाँ चीन काफी समयतक उसके ऊपर सीधे राजनीतिक प्रभाव रखता रहा। रूसका प्रभाव यद्यपि आरम्भमें अधीन-जातिके सिवा और रूपमें नहीं देखा जाता, किन्तु आगे वह बढ़ते-बढ़ते सबसे अधिक प्रभावशाली हो जाता है। हालकी दो शताब्दियोंमें तो मध्य-एसियामें बहुतसे परिवर्तन लाते रूस आज एक नये ससारका निर्माण कर रहा है। ऐसी स्थितिमें रूसी इतिहासपर सिंहावलोकन किये बिना हम मध्य-एसिया की कितनी ही बातोंको समझ नहीं पायेंगे।

#### (क) शक-सरमात

शकोके विशाल देश (शकद्वीप)के वारेमें हम पहले कह आये हैं और यह भी बतला आये हैं, कि शक और सिथ एक ही थे। इन्हीकी कालासागर और कास्पियन समुद्रके उत्तरमें रहनेवाली शाखा सरमात कही जाती थी। आगे यह नाम भूलसा जाता है, और ईसाकी प्रथम शताब्दीमें वेनिद (वेन्द) और अत दो नये लोग हमारे सामने आते हैं, जो शक-सरमात-वशके ही हैं।

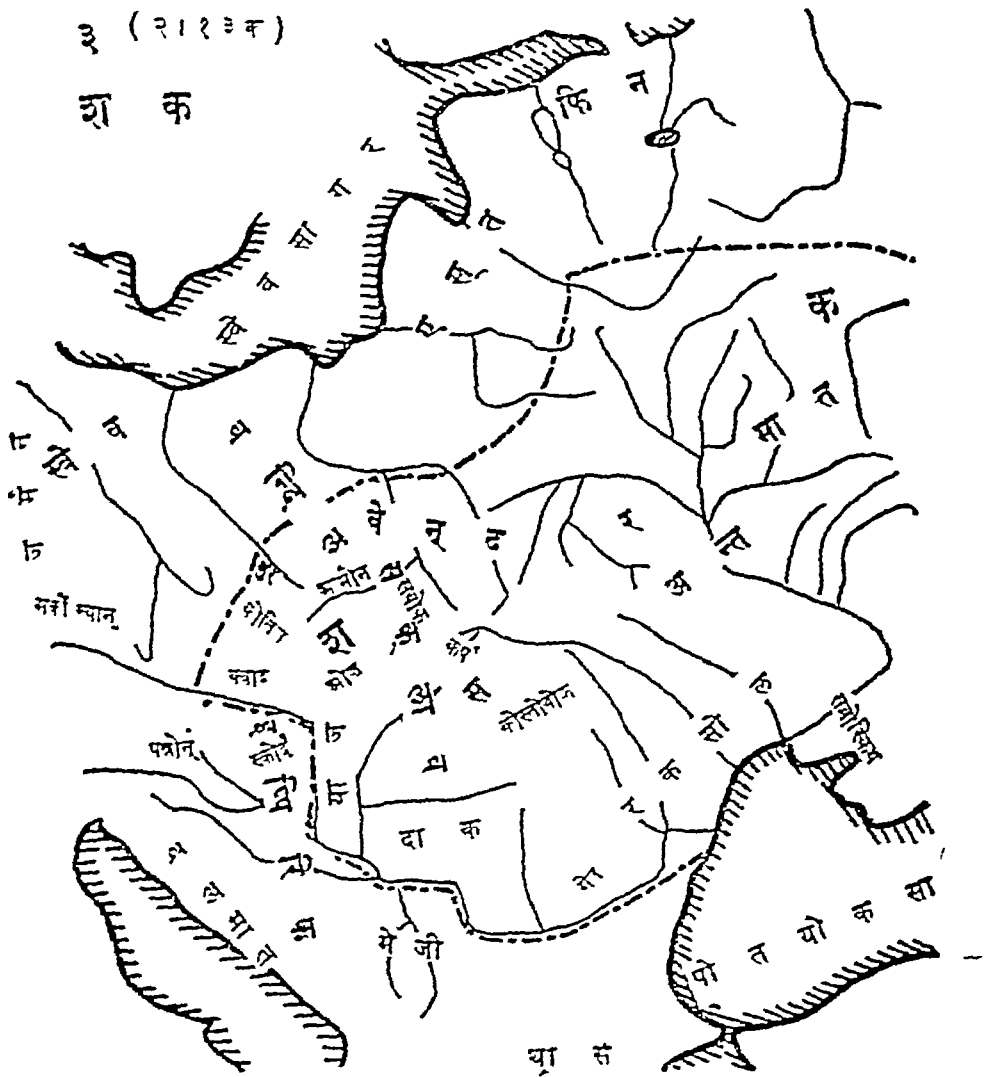
वेन्द—वेन्दका शब्दार्थ है जलनिवासी या नदीनिवासी। यह विस्तुला नदीसे दनियेपर और दनियेस्तर नदियोंके ऊपरी भागोंमें रहते थे, यही पश्चिमी स्लावो (पोल, चेक, स्लावक) के पूर्वज थे।

अन्त—अन्तका शब्दार्थ है सीमातवासी। ईसाकी प्रथम शताब्दीमें यह दनियेस्तरसे दोनतककी भूमिमें रहते थे।

पूर्वी और पश्चिमी स्लावोंके अलावा शक-सरमातोंकी एक दक्षिणी शाखा भी थी, जिससे दक्षिणी स्लाव (युगोस्लाव) खोरवात, सर्व (मकदूनी) और वोल्गारी स्लाव जातियाँ निकली। रूसी विद्वान् अ० अ० शाहमातोफके अनुसार सारी रूसी जातियाँ—रूसी, उक्रइनी और बेलोरूसी—अतोंकी सतान हैं, लेकिन अकदमिक म० स० ग्रुसेव्स्की अतोंको केवल उक्रइनोंका पूर्वज मानते हैं।

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें चीनसे पश्चिमी देशोंका जो व्यापार-मार्ग खुला था, वह भारत और ईरानतक ही सीमित नहीं था, बल्कि ई० पू० द्वितीय शताब्दीमें ही दक्षिणी रूस भी इस व्यापारिक क्षेत्रके भीतर था—ख्वारेज्मसे रूसका बहुत घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध था। उस समय वोल्गा नदीका नाम फिन भाषामें रा था, जिसे तुर्कोंने इतिल बनाया और फिर तटपर बुल्गारोंके रहनेके कारण वोल्गा नाम पड़ा। हूणोंकी बाढ़के आनेसे पहले ईसाकी प्रथम शताब्दीमें उरालके पास तुर्क जातियाँ रहती थी—चुवाश, याकूत (साइबेरिया) और आधुनिक तुर्क एक ही जाति-के हैं।

रुसियोका सबब अतोसे है । यह अत ईसाकी चौथी सदीमें दनियेस्तरसे दोनके आगेतक फैले हुये थे । इनके पश्चिमी पडोसी गाय क्रिमियामें तथा दनियेस्तरके पश्चिममें रहते थे । अतोका सबमे पुराना उल्लेख हमें केचमें प्राप्त एक अभिलेखमें मिलता है । चौथी सदीमें हूणोकी वाढ आकर अतोको उत्तरकी और टकेलती गाथोके ऊपर आ पडी । ३७६ ई० में हूण-राजा वलम्बरने गाथ-राजा वीनीतरको लडाईमें मार उनकी खोपड़ीका प्याला बनाया । हूणोद्वारा भगाये गये गाथ अपने पडोसी अतोके ऊपर पडे । इस संघर्षमें अत-राजा वोग अपने पुत्रो और मत्तर सामंतोंके साथ मारा गया ।



हूँताने कुछ समयतक दन्यूव और तिमिया नदीके बीचमें अपना राज्य कायम किया । पाचवी नदीके पूर्वार्धमें इनके राजा अत्तिना (मृत्यु ४५३ ई०) के प्रनापसे सारा पूर्वी युरोप कायता था ।

झणोंके बाद पाचवीं नदीमें आवारोंकी वाढ़ पूर्वसे पश्चिमकी ओर चली। तुर्कोंके प्रहारके मारे उनके पहुँचके स्वामी अब जान बचानेके लिये पश्चिमकी ओर भागे। इसीपर तुर्कोंके राजा गिनजीबुनने कहा था—“वह (आवार) चिड़िया नहीं है, जो कि हवामें उड़ जायेगे। तुर्कोंकी तलवारोंसे भागकर, मछली नहीं है, कि गहरे पानीमें चले जायेंगे। जायेंगे पृथ्वीपर ही। जब मैं हफेतालोमें लडाई सतम कर लूँगा, तब आवारों पर पड़ूँगा, तब वह मेरे हाथमें नहीं निकल सकेंगे।” आवारोंने दक्षिणी समुद्रमें पहुँचकर कान्स्टान्तिनोपोलमें रोमके सम्राट्के पान अपना दूत भेजकर शरण मागी। १६२ ई० के आनपास सम्राट् बोन्नीनियनने उन्हें बसनेके लिये भूमि दी। काना नागरके पश्चिमी



किनारेपर पुरानी स्किफिया (शक)-भूमिमें पहुचकर इस्त्रा (दन्यूव) के तटपर जा उन्होंने विश्राम किया ।

आवारोकी वाढ आनेपर फिर हूणोकी तरह अपने लिये खतरा देखकर अतोने सुलह करनेके लिये उनके पास अपने राजा मेजमिर इदरी-पुत्र तथा केलायस्त आदि सरदारोको समझौता करनेके लिये भेजा, लेकिन आवारोने उन्हें मार डाला । रोमने आवारोको शरण दी थी, क्योंकि उसके लिये इस टिड्डीदलसे वचनेका कोई दूसरा रास्ता नहीं था । आवार रोमन-साम्राज्यके भीतर लूट-मार करना अपना हक समझते थे । पूर्वी-रोमन (विजन्तीन) सम्राट् मावरिक (५८२-६०२ ई०) के समय अत विजन्तीनकी सैनिक सेवा करते थे । उस समय स्लावोका यह सबसे शक्तिशाली कबीला था । सम्राट् फोक (६०२-६१० ई०) और हेराकिल (६१०-६४१ ई०) के समय भी अत शक्तिशाली बने रहे, यद्यपि अब विजन्तीन सम्राटोंके ध्यान को इधरसे हटाकर सासानियो (ईरानियो) और अरबोंके सघर्षोंने अपनी ओर खींच लिया था । ७वीं सदीमें इस प्रकार हम अतोको विजन्तीनके घनिष्ठ सवधमें देखते हैं । निश्चय ही अतोका ऊपरी वर्ग (सैनिक और शासकीय प्रधान) ग्रीसकी पिछली सस्कृतिसे बहुत प्रभावित थे । १०वीं-११वीं शताब्दीके कियेफके रूसी लोग अतोके खूनके ही नहीं, बल्कि उनकी सस्कृतिके भी उत्तराधिकारी थे । अत कृषि जानते थे, लेकिन अधिक उत्तरवाले उनके लोग पशुपालनपर ज्यादा ध्यान देते थे । दासता भी उनमें प्रचलित थी । अकदमिक न० स० देर्जाविनके अनुसार १—“१०वीं सदीके कियेफ रूस (और कियेफ राजुल) उसी भाषाको बोलते थे, जिसे कि छठी सदीके अत लोग, उसी पेरुनको पूजते और उसी पुराने पथपर चलते थे, जिसपर छठी सदीके अत ।”—उनके देवताओंमें स्वारोग, सरोग-पुत्र स्वारोजिक (स्वारोचिष), दाजवोग (सूर्य, यह भी स्वारोग-पुत्र) मुख्य थे । देवियोंमें लादा (ह्लादा), वेस्ना (वसता), देवा और जीवा प्रधाना थी ।

१०वीं सदीके अरब लेखक मसऊदीके अनुसार—“उनमें कुछ ईसाई भी हैं, कुछ काफिर, जो सूर्यकी पूजा करते हैं ।” इसके दो शताब्दी बाद प्राय १२०० ई०में इब्राहिम बेसिफ शाह-पुत्र लिखता है—“इनमें कुछ ईसाई और दूसरे सूर्य या नभकी पूजा करते हैं ।” ९४९ ई०में लिखते हुये कान्स्तन्तिन वगरया नरोद्नी उनके अग्निपूजक होनेकी भी बात करता है । १२वीं शताब्दीमें लिखते हुये किरिलिता तुरेव्स्कीने उन्हें वृक्ष, नदी, पर्वत और जल की पूजा करनेवाला बतलाया है ।

१० वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें रूसके पडोसी खाजार, महा-वोल्गार और विजन्तीन थे, जिनके साथ वह व्यापार करते थे । अरब लेखक इब्न-हौकल (९७६-९७७ ई०) भी खाजारो और वोल्गारोके साथ रूसोके व्यापारकी बात कहता है ।

### (ख) रूसोके पडोसी मगोलायित

बोल्गार—हूणोके आनेसे पहले ही उरालके पास मगोलायित जातिके लोग बसते थे, शायद वोल्गार उन्हीमेंसे थे । चौथी सदीमें हूणोके वोल्गासे पश्चिम पहुचनेके तुरत ही बाद वोल्गार, कास्पियन समुद्रके पश्चिमोत्तरीय मैदानोंमें देखे गये, लेकिन वहा वह ज्यादा दिनोतक नहीं ठहर सके, क्योंकि दूसरे घुमतू उनकी जानके गाहक बन गये । इन्ही वोल्गारोंमेंसे कुछ भागकर पश्चिममें दन्यूवो-के किनारे पहुचे, जहा स्थानीय स्लावोंमें वह घुल-मिलकर अपनी रूपरेखा और भाषाको भी खोकर अब वुल्गारिया-निवासियोंके नामपर ही अपना चिह्न छोड गये । दूसरा भाग वहासे वोल्गातटपर गया, जहा उसने वोल्गार-राज्यको स्थापित किया और ‘रा’ और इतिल नामसे मशहूर नदीको वोल्गा नाम दिया । यह वोल्गार निम्न और मध्य-वोल्गाकी उपत्यकाओंमें पहले निरे घुमक्कड पशुपाल रहे, फिर एक अरब-लेखकके अनुसार वह जौ-नोहूकी खेती भी करते थे । इनकी राजधानी कामा और वोल्गाके सगमसे कुछ नीचे बड़ी ही समृद्ध व्यापारिक नगरी थी, जहा हर साल रूस, काकेशस, विजन्तीन और मध्य-एसियाके व्यापारी आते थे । वोल्गार अपनेसे उत्तरवाले देगको “अघकार भूमि”

१ “स्लावियाने व-द्रेव्नोस्ती” पृ० १८ ।

कहते थे। वहासे वह अपनी बीजोने बदलकर ममूर लाने थे। मुसलमान व्यापारियोंके सपर्कमें आनेमें उनमें मुस्लिम मस्जिद और बरम फैला और १० वीं सदीतक वोल्गार नामक और सरदार मुसलमान बनकर अरबोंकी नकल करना अभिमानकी बात समझने लगे। उन समयतक वह अपना निक्का भी टालने लगे थे।

१०वीं सदीके आरम्भमें इल्-फजलान एक अरब दूत-मंडलका मदस्य बनकर वोल्गारोकी भूमिमें गया था। उसने अपनी यात्राका एक बड़ा ही सुन्दर वर्णन छोड़ा है। वोल्गार राजधानीसे नातिदूर दूत-मंडलका स्वागत करने हुये उसे एक विशाल तथा अच्छी तरह मुसज्जित तबूमें ले जाया गया, जिसमें अरमनी गलीचें बिछे हुये थे। हमी कमखावने टैके सिहाननपर खान बैठा था। उसके दाहिनी ओर मरवार बैठे थे। मामके टुकड़ों और मनुकी गरावसे मेहमानोंकी जियाफत की गई। इल्-फजलानने वहा हमी व्यापारी भी देखे। वह बड़े ही लवे-तगडे तथा हर वक्त कटार, छुरी और तलवार लटकाये फिरते थे।

यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि वोल्गार और खाजार राज्योंके स्थापित होनेके बाद वोल्गातट यूरोप और एशियाके व्यापार-मार्गका महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया। वोल्गाका ऊपरी भाग पश्चिमी हिना नदीके पान पहुंच जाता है, जो कि वाल्टिक समुद्रमें गिरती है। इसी तरह फिनलन्डकी खाड़ीके लिये भी जलपथ थोड़ी ही दूरपर मिल जाता है। इन नदियोंके बीचके स्थल-मार्ग दुर्गम पहाड़ोंके नहीं थे, इन्हींलिये व्यापारी इन स्थल-मार्गपर अपनी नावोंको ढकेल कर ले जाते थे। ८ वीं-१० वीं शताब्दियोंमें व्यापारके लिये वहा भारी सख्या में अरब व्यापारी आते थे, जो मांस खरीदनेके बदले भी अपने छोटे-छोटे चांदीके सिक्के देने थे। ये अरब निक्के उन समय पूर्वी यूरोप, वाल्टिक-राज्यों, जर्मनीविद्या और जर्मनीतकमें प्रचलित थे।

खाजार—६ठी-८वीं सदी में मंगोलियासे अराल और कस्पियन समुद्रतक जो घुमन्तू तुर्क रहते थे, इन्हींमें खाजार भी थे। ६ठी सदीमें वोल्गारोकी तरह खाजार भी काकेगमके उत्तरमें चरवाही करते थे। ८ वीं सदीमें इन्होंने निम्न वोल्गा-उपत्यकामें अपना राज्य स्थापित किया। अब वह अर्ध-घुमन्तू हो गये—जाइंमें नगरोंमें रहते और गर्मियोंमें अपने ऊटो, घोड़ो, भेड़ोंको लिये मैदानोंमें चरवाही करते। पशुपालन ही उनकी मुख्य जीविका थी, इनके अतिरिक्त थोड़ी-सी खेती और अंगूरकी बागवानी भी कर लेते थे। इनका शानक एक शकान होता था, जो गजकाजमें सीवे भाग न लेकर देवतासा माना जाता था। उनके महायक और सरदार शासनका काम देखते थे। पहले इनकी राजधानी बलाजर (दक्षिणी दागिस्तान) थी, लेकिन ७२०-२३६०में अरबोंने आक्रमण करके इनकी राजधानीको जब ध्वस्त कर दिया, तब इन्होंने वोल्गा और सागरके संगमपर वोल्गाके डेल्टामें इतिलको अपनी राजधानी बनाया। व्यापारकी भी भावी भविष्य होनेके कारण इतिल एक बड़ी नगरी बन गई। शकानका ईटका महल एक हीनमें था, जिसको नावोंके पुलद्वारा किनारेमें मिला दिया गया था। नगर-प्राकारके बाहर लकड़ीके घर तथा घुमन्तुओंके तबू रहते थे। इन्हींमें खारेज्मी, अरब, ग्रीक, यहूदी, भारतीय आदि व्यापारी आकर रहते थे। इतिलजी बाजारोंमें नारी दुनियाका माल भरा रहता था। खारेज्मके पान होनेके कारण वहावालासा वहाके व्यापारमें विशेष हाथ था। उन समय खाजार-शकान और उनके सरदार ममदमान नहीं यहूदी थे। दोनके तटपर खाजारोका एक और भी बड़ा व्यापारिक नगर सरकेल था। इस नगरके निर्माणमें विजन्तीन (रोम) दजीनियरोने महायता की थी। उत्तर और पूरवके घुमन्तुओंमें रजा बननेके लिये नगर दृढ़ प्राङ्गणोंमें घिरा था। दक्षिणमें वर्तमान मखचकलामे नातिदूर ममदर नामका एक और भी महदर रहता था, जिसके पान अगरेके बहुतने बाग थे। ९वीं शताब्दीमें खाजार अपने उत्कर्षकी चरम सीमापर पहुंचे थे। अजोफ-समुद्रके तटतक तथा शिमियाका भी कुछ भाग खाजारोंके शासनमें था। इतिनेन और ओगाकी उत्पत्त्याओंमें रहनेवाली स्लाव जानिया इन्हें कर देती थी। उत्तरमें उनकी सीमा मध्य-यूरोपमें वोल्गारोंसे मिलती थी। कस्पियन समुद्रका नाम खाजार समुद्र (बहीरा गाना) उन्होके कारण पड़ा, जिसे पीछे मुसलमानोंने हज्जत खिजिरके नाममें जोड़कर खिजिर-समुद्र बना दिया।

**पेचेनेग**—खाजारोके पडोसी पेचेनेग भी तुर्की जातिके थे, जो ९वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें यायिक (उराल) और इतिल (वोल्गा) नदियोंके बीचमें घुमक्कड़ी करते थे । ९वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें दूसरे घुमनुओंके साथ संघर्ष होनेके कारण यह पश्चिममें जा दोन और दनियेपरके बीचकी भूमिमें घूमने लगे । इनकी सख्या काफी थी । मंगोलियाके हूणोंके समयसे ही हम देखते हैं, कि घुमनुओंके ऊपरी वर्गमें संस्कृतिका अभाव होना आवश्यक नहीं है—पेचेनेगके सोने-चादी के बर्तन, कमरबंद आदि पुरातत्त्वकी सामग्रिया जो खुदाइयोमें मिली हैं, उनसे यह बात सिद्ध होती है । पेचेनेग अपने पडोसी स्लावोंको सबसे ज्यादा हानि पहुंचाते थे ।

### (ग) कियेफके राजुल

पुराने अतोंके वंशज ८वीं-९वीं शताब्दीमें छिन्न-भिन्न हो गये । बेटा होनेपर उसके हाथमें वह तलवार पकड़ाते थे, किंतु बिखरी हुई तलवारे शक्तिहीन साबित हो रही थी । ९वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें एक बड़ी निराशाजनक स्थितिमें रूस लोग रह रहे थे, यद्यपि उनकी वीरतामें जरा भी कमी नहीं आई थी । बिखरी हुई तलवारे इकट्ठा करनेवाले व्यक्तिकी प्रतीक्षा हो रही थी । ऐसे व्यक्तिके आनेके लिये रास्ता भी साफ था । रूसके भीतरसे कई वणिक्पथ पूरवमें चीन, दक्षिणमें विजन्तीन और ईरान, पश्चिममें युरोपकी ओर जाते थे । स्कैंडेनेवियाके व्यापारी बहुमूल्य रेशम, समूरी छाल, अवर तथा दूसरी चीजोंका व्यापार करने आते थे । वाल्तिक समुद्रसे पश्चिमी द्विना होकर वोल्गा नदीसे मिलनेवाले रास्तेकी बात हम कर चुके हैं । स्कैंडेनेवियावाले फिनलंद खाड़ीसे नेवा नदीको पकड़ उसके उद्गम इल्मन झीलमें पहुंच लोवात नदीद्वारा ऊपरकी ओर चलने । वहांसे उन्हें पश्चिमी द्विना नदी पर पहुंचनेमें थोड़ी दूरतक नावको स्थलमार्गपर घसीटना पड़ता । इल्मनसे दूसरी नदी द्वारा वह थोड़ा स्थलमार्ग पारकर वोल्गा नदीके वणिक्पथपर पहुंच जाते । इसी तरह दनियेपर पहुंचनेका भी जल-स्थल-मार्ग था । इन वणिक्पथोंपर जहां व्यापारियोंके सार्थ चलते थे, वहां कुछ लोग व्यापारके साथ लूट-पाट भी भारी लाभका साधन मान उससे वाज नहीं आते थे । पश्चिमी युरोपमें स्कैंडेनेवियाके निवासी नार्समेन उस समयके बड़े साहसी यात्री थे, जो व्यापारके साथ लूट-मारको भी अपना पेशा बनाये हुये थे । वह सशस्त्र सगठित दलोंमें हो रूसमें व्यापार करनेके लिये आया करते । उन्होंने ९वीं शताब्दीमें रूसके भीतरसे जानेवाले मार्गोंको अपना क्रीडाक्षेत्र बनाया । नार्समेन वरगीके नामसे अधिक प्रसिद्ध थे । अपने कोनुग (राजकुमारों) के नेतृत्वमें लूट-मारके लिये उन्होंने अपने सैनिक दल सगठित किये थे । वह स्लावों और दूसरे लोगोंके ऊपर आक्रमण करके उनकी मूल्यवान् चीजोंको जहां लूट लेते, वहां स्त्री-पुरुषोंको पकड़ ले जाकर कन्स्तन्तिनोपोलके बाजारोंमें अथवा वोल्गारों और खाजारोंकी राजधानियोंमें बेंच देते ।

### १ रूरिक

इन्ही वरगियोंमेंसे कुछने ग्रीक जानेवाले मार्गमें अपनी गढ़िया बना ली, वह स्थानीय स्लावोंपर शासन करते हुये उनसे कर उगाहने लगे । कितनी ही बार स्लाव विगड़कर वरगी कोनुगोंको मार डालते, फिर कोई स्थानीय स्लाव राजुल राज करने लगता । परंपरा कहती है, कि ९वीं शताब्दीके मध्यमें रूरिक (रोयरिक, रोरिक) नामक एक साहसी वरगीने नवोगोरोदमें अपना अड्डा जमाया । नवोगोरोद कालासागर और दनियेपर नदीसे उत्तर जानेवाले रास्तेपर एक बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान था । रूरिकका भाई सिनेउस व्येलोओजेरो (श्वेत सरोवर) पर जम गयो । फिनलंदकी खाड़ीसे वोल्गा और उरालवाला वणिक्पथ वहीसे होकर जाता था । तीसरा भाई त्रुवोर इज्वोरस्क नगरपर डट गया, जो कि वाल्तिकसे आनेवाले रास्तेका केंद्रीय नगर था । इन तीनों भाइयोंके अतिरिक्त दो और वरगी कोनुग अस्कोल्द और दिरने कियेफ नगरको अपने हाथमें किया । ग्रीसके पथपर कियेफ बहुत महत्त्वपूर्ण नगर था । इसी तरह वाल्तिकसे पश्चिमी द्विनाके मार्गपर भी वरगियोंने अपनी गढ़िया बना रखी थी । वरगी आकर स्लावोंकी भूमिमें अधिकतर लूट-मार करते, फिर धनको लेकर अपने देश लौट जाते । उनमेंसे कितने ही रूस-राजुलोंके अनुचर अथवा स्वतंत्र सरदार बनकर भी बस गये । वरगियोंसे

स्लावोंका नाकामें दम था, पर वह नख्शामे पीछेके मंगोलोंकी तरह बहुत थोड़े थे। वरगी सरदार स्लावोंमें भी अपने अनुचर भरती करते थे। रुममें स्थायी तौरसे बसनेवाले ये वरगी स्लाव-समुद्रमें बहुत जल्दी ही अपने नामोंको मिटा हम बन गये, रुमी भाषा बोलने तथा पेस्न और स्वारोगकी पूजा करने लगे। हरिक, उसके भाइयों-तथा नायियोंकी भी यही हालत थी।

हरिक-वंशावली—हरिकके वंशमें निम्न राजा हुये —

क क्रियेफ	काल
१ हरिक	६०० ई०
२ ओलेग, हरिक-पुत्र	—६११ "
३ ईगर, रोरिक-पुत्र	६११-४५ "
४ ओलगा, ईगर-पत्नी	६४५-५७ "
५ स्थातोस्लाव I ईगर-पुत्र	६५७-७३ "
६ व्लादिमिर I स्थातोस्लाव-पुत्र	६७५-१०१५ "
७ स्थातोपोल्क I व्लादिमिर-पुत्र	१०१५-१६ "
८ यारोस्लाव I व्लादिमिर-पुत्र	१०१६-५४ "
९ इज्यास्लाव I यारोस्लाव-पुत्र	१०५४-७३ "
स्थातोस्लाव II यारोस्लाव-पुत्र	१०७६ "
इज्यास्लाव I (पुन )	१०७३ "
१० स्थातोपोल्क II इज्यास्लाव-पुत्र	१०७३-१११३ "
११ व्लादिमिर II मनोमाख	१११३-२५ "
स रोस्तोफ-सुज्दल	
१२ यूरी I दीर्घबाहू, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र	—११५७ "
१३ अद्रेयी, वगोल्फूवोव्स्की यूरी-पुत्र	११५७-७४ "
१४ व्सेवोलोद I यूरी-पुत्र	११७६-१२१२ "
१५ यूरी II व्सेवोलोद-पुत्र	१२१२-१२३८ "
१६ यारोस्लाव II व्सेवोलोद-पुत्र	१२३८-४६ "
स्थातोस्लाव III व्सेवोलोद-पुत्र	१२४७-४८ "
अद्रेयी II यारोस्लाव-पुत्र	१२४६-५२ "
१७ अलेक्सांद्र नेव्स्की यारोस्लाव-पुत्र	—१२६३ "
ग मास्को जार	
१८ दानियल	१२६३-१३०३ "
१९ यूरी III दानियल-पुत्र	१३०३-२५ "
२० इवान I खनिता, दानियल-पुत्र	१३२५-८१ "
२१ मेमेग्रोन, इवान-पुत्र	१३४१-५३ "
२२ इवान II इवान-पुत्र	१३५३-५६ "
२३ दिमित्र इवान II-पुत्र	१३५६-८६ "
२४ वासिली I अब, दिमित्र-पुत्र	१३८६-१४०५ "
२५ वासिली II अबमासिली-पुत्र	१४२५-६२ "
२६ इवान III वासिली II-पुत्र	१४६२-१५०५ "
२७ वासिली III इवान III-पुत्र	१५०५-३३ "
२८ गेनेना, वासिली III-पत्नी	१५३३-३८ "
२९ जॉन इवान, वासिली III-पुत्र	१५३८-८४ "
३० फ्योदोर, इवान IV-पुत्र	१५८८-६८ "

## २ ओलेग रूरिक-पुत्र (९११ ?)

१० वीं शताब्दीके आरम्भमें रूरिक-पुत्र ओलेग दनियेपर-उपत्यकाके कुछ भागोका स्वामी था। पुराने इतिहासकार लिखते हैं, कि ओलेग पहले नवोगोरदके स्लावोपर शासन करता था, किन्तु पीछे वह दनियेपर-उपत्यकामें चला गया और स्मोलेन्स्क त्रिविचीको जीतकर नीचेकी ओर बढ़ते अपने दोनों देशभाइयो अस्कोल्द और दिरको मारकर उसने कियेफपर अधिकार कर लिया, जहासे पडोसके ब्रेव्ल्यान लोगोको अपने अधीन करते हुये खाजारोके अधीनस्थ सेवेरियान और रादिमिची स्लावोको अपने अधीन किया। इस प्रकार ओलेग नवोगोरद और कियेफ दोनोंका स्वामी बन जानेके बाद दनियेपर वणिक्पथका भी स्वामी हो गया। धीरे-धीरे और कितने ही छोटे-छोटे राजुलोको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर कर वह “रूसका महाराजुल” बनकर दूसरे राजुलोपर शासन करने लगा। कियेफके महाराजुलके अधीन हो अब दनियेपर-उपत्यका और इल्मन-सरोवरके स्लाव एकताबद्ध हो गये। इस एकताबद्ध राज्यको रूस कहा जाने लगा। यह कहना मुश्किल है, कि रूस किस भाषाका शब्द है। जो भी हो १०वीं शताब्दीके आरम्भमें बहुत-से स्लाव कबीलोको, जो कियेफके शासकके अधीन एकताबद्ध हुये थे, उनको यही नाम दिया गया, और इतिहासमें उन्हें “कियेफ रूस” कहा जाने लगा।

यद्यपि कियेफ राजुलोकी अधिकांश प्रजा स्लाव थी, लेकिन उनमें कुछ मेरिया, वेसी और चुद जैसी अरसी कबीले भी थे। अभी ये जातिया आर्थिक तौरसे अधिक विकसित नहीं थी। पशुपालन, शिकार, कुछ कृषि और मामूली दस्तकारी उनकी जीविका थी। अभी वह एक दूसरेके ऊपर आर्थिक तौरसे इतने निर्भर नहीं थे, कि उनका एक घनिष्ठ सघ बन जाता। ये पूर्वी स्लाव कृषि-समूहों (वेर्व) में जीवन बिताते अभी भी जनयुगके रीति-रवाजोको पकड़े हुये थे। उनकी भूमि साझेमें हुआ करती थी, लेकिन रूरिकोके अधीन एकताबद्ध होनेपर व्यापारका सुभीता और भी बढ़ा, जिससे उनके भीतर धनी-गरीब होने लगे। गरीब अपने धनी बंधुओके कमकर बनने लगे। भूमिपर भी वैयक्तिक अधिकार माना जाने लगा। इस प्रकार उनके भीतर सामंती संवध कायम हो गया।

आगे कियेफ-राज्यने पूर्वी युरोपमें विशेष महत्त्वका स्थान प्राप्त किया। विजन्तीन (पूर्वी रोम) का प्रभुत्व सारे कालासागर और उसकी तटवर्ती भूमिपर था। अल्प-विकसित जातिया कभी अपने लूट-मारसे उसको चिढ़ाती थी और कभी विजन्तीनके शासक स्वयं लूट-मार करनेपर उतारू हो जाते। ऐसे ही किसी आक्रमणके बदलेमें ८६० ई० में स्लावोंने वज (ग्रोक) वृक्षोको खोखला करके अदुनोदेरेव्की (एकदारुक) नावोका बड़ा तैयार किया और कान्स्तन्तिनोपोल वदरगाहके छोर (सुवर्ण-शृंग) पर पहुचकर राजधानीके लिये खतरा पैदा कर दिया। तूफानने स्लावोकी एकदारुक नावोको तितर-बितर कर दिया, नहीं तो इसमें सदेह नहीं, कान्स्तन्तिनोपोल उनकी दयाका भिखारी होता। ९११ ई० में फिर उन्होंने अपनी प्रभुता दिखलाकर अपने अनुकूल संधि करवाई।

९१३-९१४ ई० में स्लावो (रूसो) ने अब कास्पियनके किनारोपर भी आक्रमण शुरू कर दिया। इसके लिये वह अपनी नावोको अजोफ सागर होते दोन नदीमें ले जाते और उसी जगहपर अपनी नावोको कंधोपर उठाकर बोलगामें पहुचाते, जहा दोनो नदिया एक दूसरेके बहुत समीप पहुच गई हैं और जहा १९५२ ई० के वसंतमें यातायातके लिये बड़ी नहर चालू हो गई। रूसलोग बोलगासे नीचे कास्पियन समुद्रमें जा काकेशसकी वस्तियोंमें लूट-मार करते। कितनी ही बार खाजार भी उनको अछूता नहीं छोड़ते, और रूसोको भारी हानि उठानी पड़ती।

ओलेगका शासन काफी लंबा था, संभवतः १०वीं शताब्दीके उत्तरार्धके आरम्भतक। अपने चालीस सालके राज्यमें उसने रूसको एक-राज्य बनानेका ऐतिहासिक काम पूरा किया। उसके कामका कितना महत्त्व है, यह इसीसे मालूम होगा, कि कार्ल मार्क्सने “१८वीं सदीमें गुप्त कूटनीति” (अध्याय ५) में उसका उल्लेख करते हुये कहा है —

“रूसके प्राचीन नक्शे हमारे सामने उससे कहीं अधिक विशाल युरोपीय क्षेत्रको प्रदर्शित करते हैं जिसका कि वह आज गर्व कर सकता है। ९वीं शताब्दीमें ११वीं शताब्दीतक उसका लगातार बढ़ाव इसी-

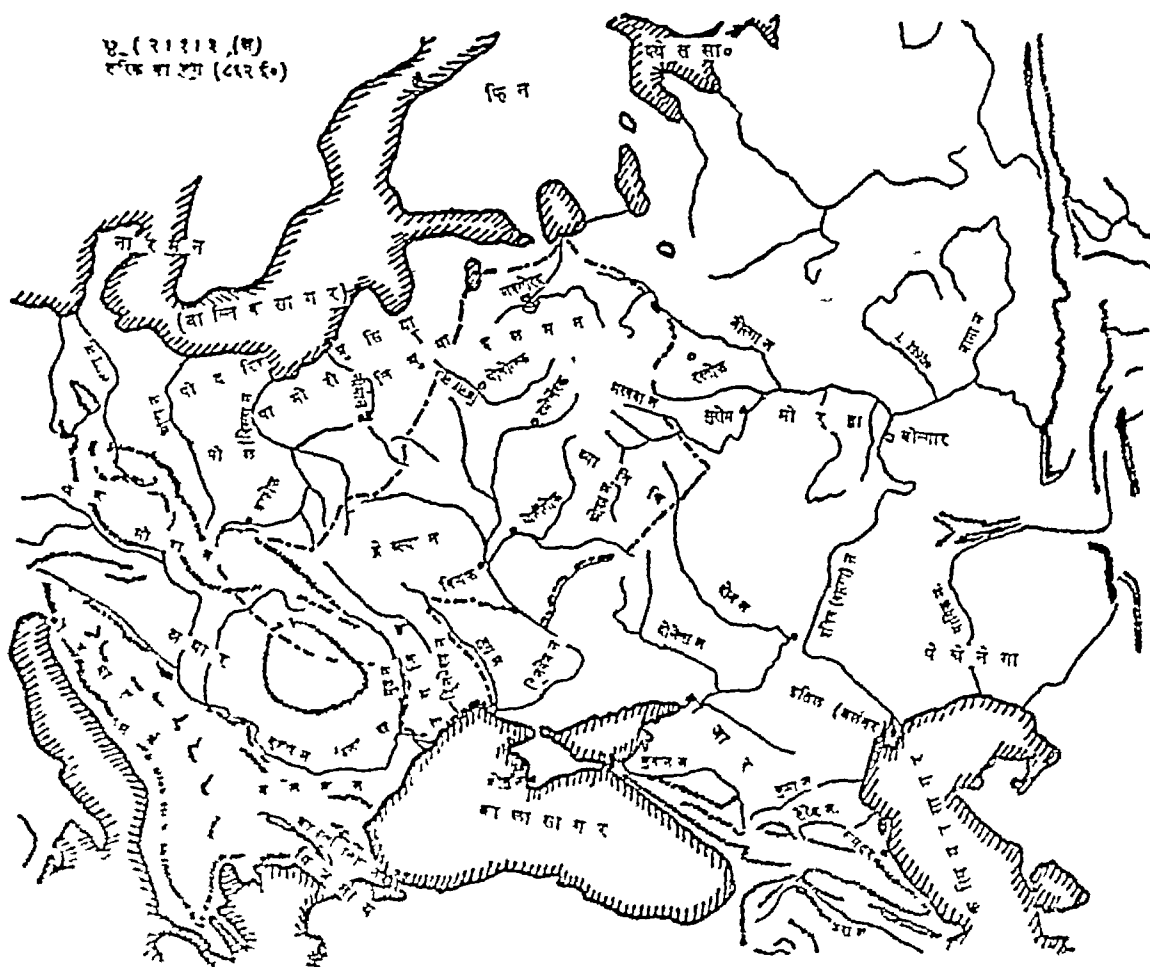
की ओर मकेत करना है। हम ओलेगको अट्ठामी हजार आदमियोंके साथ विजन्तीनपर आक्रमण करते, उसे कान्स्तन्तिनोपोल राजधानीके फाटकपर विजय-चिह्नके तौरपर अपनी ढाल स्थापित करते, और निम्न (पूर्वी रोम) साम्राज्यको सम्मानहीन सचि करनेको मजबूर करते देखते हैं। ईगर आगे उसे (विजन्तीनको) अपना करद बनाता है। स्व्यातोस्लाव इस बातको गौरवके साथ कहता है—‘ग्रीक मुझे सोना, मूल्यवान् वस्तुएँ, चावल, फल और गराव भेजते हैं, हुगरी ढोर और घोड़े देती हैं, रूससे मधु, मोम, समूरी छाल और मनुष्य मिलते हैं।’ ब्लादिमिर किमिया और लिवानिया (बाल्टिक प्रदेश) को जीतता है, और ग्रीक सम्राट्की कन्याको उम्मी तरह छीनता है, जैसा कि नेपोलियनने जर्मन सम्राट् से किया।”

मार्न्सके इस उद्धरणसे मालूम होगा, कि रूस १० वीं शताब्दीमें कहासे कहा पहुँच गया।

### ३ ईगर रूरिक-पुत्र (९११-४५ ई०)

१०वीं शताब्दीके द्वितीय पादमें ओलेगके स्थानमें उसका भाई ईगर कियेफका महाराजुल बना। उसने अपने भाईकी सफलताओंको आगे बढ़ाकर और भी कितने ही राजुलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया, दक्षिणी वुग नदीकी उपत्यकाको जीता और कियेफके शासनके खिलाफ विद्रोह करनेवाले द्रेव्ल्यानोको कर देनेके लिये मजबूर किया। ९४१ ई०में ईगरने विजन्तीनके विरुद्ध एक भारी सामुद्रिक अभियान किया। रूसोंने कान्स्तन्तिनोपोलकी बहुत-सी वस्तियोंको व्वस्त किया, लेकिन अतमें ग्रीक वेडेने उन्हें अपने बदरगाहमें कालामागरकी ओर खदेड़ दिया। वहासे जाकर रूसोंने धुद्र-गसियाके तटको लूटा-बरवाद किया। बड़ी मुश्किलसे ग्रीक-सरकार एक भारी स्थल-सेना भेजकर वहासे उसे हटानेमें सफल हुई। ईगरके पोत और हथियार अभी विल्कुल आरम्भिक अवस्थामें थे, जबकि “ग्रीक

छ. (२।१।३, (ग)  
रूस का रज (८।१२ ई०)



अग्नि” के नामसे प्रसिद्ध एक तरहका भभकनेवाला तरल पदार्थ ग्रीक अपने शत्रुओंपर फेंकते थे। “ग्रीक अग्नि” के सामने ईगरके सैनिक वेडेको बहुत बुरी तरहसे हारना पडा। आगसे बचनेके लिये बहुतसे रूस \* पानीमें कूदकर डूब मरे। वच्चे-खुच्चे पोत अपने देगकी ओर लौटे। यद्यपि ग्रीकोने उस समय रूसोको हरा दिया, लेकिन इन अर्ध-धुमत् लडाकू जातियोंके लिये एक बारकी हार कोई महत्व नहीं रखती। इसलिये ग्रीक सरकारने ६४५ ई०में ईगरके साथ एक नई संधि की, जिसमें व्यापारिक सवध स्थापित करनेके साथ उभय पक्षके शत्रुओंके विरुद्ध सैनिक मित्रताकी शर्तें भी स्वीकृत की गई थी।

३३२ हिजरीके आरंभ (४ सितंबर ६४४ ई०)में रूसोंने कास्पियन तट-भूमिको अपना लक्ष्य बनाया था। कास्पियन तटको लूटते हुये वह कुरा नदीके भीतर घुस गये और ऊपरकी ओर बढ़ते उन्होंने वरदग्ना नगरीको ले लिया। यहासे वह आसपासके इलाकोमें लूट-मार करने लगे। लेकिन यहाका जलवायु अनुकूल न होनेसे बीमारीके कारण बहुतमे रूस मर गये, उनकी सख्या कम हो गई। इसी समय अरब फौजोंने उन्हें एक किलेमें घेर लिया। बड़ी मुश्किलसे रातके अंधेरेमें वह नावोंमें पहुच अपने प्राणों और लूटे धनको बचाकर भागनेमें सफल हुये।

कियेफ रूसके राजुलोने दूसरोके धनको लूटना और पुरुष-स्त्रियोंको पकडकर दास बनाना अपने वैध शासनका एक अंग मान लिया था। वह पिछले सालकी जमा की हुई लूट और वदियोंको नावोंपर चढाकर दनियेपर नदीसे कालासागरकी ओर भेजते। दनियेपरके जलप्रपात रास्तेमें पडते, जिनपर नावे टूटकर चकनाचूर हो जाती, इसलिये ऐसी जगहोंपर उन्हें बल्लोके सहारे कंधेपर उठाकर आदमी ले जाते। लूटके मालके लिये यहा पडोसी लुटेरे पेचेनेगोके आक्रमणका भारी डर रहता और कितनी ही बार उनकी अन्यायोपाजित संपत्ति पेचेनेगा (तुर्की) घुमन्तुओंके हाथमें चली जाती। दनियेपरके मुहानेमें पहुचकर यात्री आरामकी सास लेते और भगवान्से कृतज्ञता प्रकट करते। वहा एक छोटे द्वीपपर अवस्थित वज (ओक) वृक्ष-देवताको भेंट-पूजा चढाते। फिर कालासागरके पश्चिमी किनारेसे होते वह कान्स्तन्तिमोपोल जारग्राद (राजनगरी) जाते। वहा वह अपने दासों, समूरी छालों और दूसरी चीजोंको बेचकर बदलेमें कपडा, शराब, फल तथा शौकीनीकी दूसरी चीजे खरीद लेते।

अपनी प्रजासे कर उगाहनेमें इन राजुलोका व्यवहार बहुत कठोर होता था। इसके लिये लडाकू द्रेव्यान (दीहानी) अक्सर विद्रोह कर उठते थे —“अगर भेडियेको भेडोके गल्लोमें आनेका चस्का लग गया, और वह न मारा गया, तो वह सारी भेडोको निगल जायेगा”—कहते हुये ३१ अगस्त ६४५ ई० को उन्होंने अनुचरोसहित ईगरको मार डाला।

अभी रूस ईसाई नहीं हुए थे। इसी समय ईगरके शासनकालमें ही ६२२ ई० में मुसलमान पर्यटक इब्न फजलानने वोल्गाके किनारेके नगरोकी यात्रा की थी। उसने रूसोके वारेमें लिखा है —“मैंने रूसोको उस समय देखा, जबकि वह अपने पण्य द्रव्योंको लेकर इतिल (वोल्गा) के किनारे आये थे। मैंने उनके जैसे सर्वांगपूर्ण आदमी कहीं नहीं देखे। वह खजूरके वृक्षकी तरह (सीधे तथा) लालवर्णके होते हैं। वह न कुर्ता पहनते हैं, न कफतान (जामा), बल्कि उनमेंसे पुरुष एक तरहका चोगा जैसा कपडा पहनते हैं, जिसे एक बगलसे डालकर अपनी एक (दाहिनी) बांह खुली रखते हैं। हर एक आदमी अपनी तलवार, छुरे और कटारको नहीं छोडता। इनकी तलवारें लम्बी तथा लहरदार होती हैं। पैरसे कघेतक उनके शरीरपर हरे वृक्षों, मूर्तियों और दूसरी चीजोंके चित्र बने होते हैं। उनकी प्रत्येक स्त्रीके नितम्बके पास पतिकी संपत्तिके अनुसार लोहे, तावे, चादी, सोनेकी डिविया लटकती रहती हैं। हर एक डिवियामें एक छल्ला होता है, जिससे बंधी छुरी नितम्बपर लटकती है। वह अपने कठमें सोने और चादीकी मालाये पहनती हैं। हर एक पुरुष जब दस हजार दिरहमका सौदा कर लेता है, तो अपनी स्त्रीके लिये एक माला और बीस हजार दिरहमका सौदा करनेपर दो माला खरीद देता है। हर दस हजार दिरहम सौदेकी वृद्धिके साथ मालाकी सख्या भी बढ़ती रहनी है, जिससे स्त्रीके पास बहुत-सी मालायें हो जाती हैं। उनके यहा मिट्टीकी बनी हुई हरी गुरियाको सबसे अच्छा अलंकार समझा

\* आजके रूसी नामसे भिन्न कियेफके इन पुराने लोगोको “रूस” कहा जाता था।

जाता है। यह मिट्टी जहाजोपर होती है, जिसको वह बहुत दाम देकर खरीदते हैं—एक गुरियाका दाम एक दिरहम। अल्लाहके सृष्टि करनेके समयसे ही ये गंदे हैं, पाखाना-मेशावके समय सफाई नहीं करते, बिल्कुल जगली गंदहो जैसे। वह अपने नगरमें आकर इतिल (बोल्गा)के घाटपर उतरते हैं—इतिल बड़ी नदी है। नदी-नटपर बहुतसे लकड़ीके घर बने हैं, जिनमें वह ठहरते हैं। एक-एक घरमें दस-बारह आदमी या कम-बेसी जमा हो जाते हैं। प्रत्येकके पास मोठा होता है, जिसके ऊपर वह बैठता है। हरएकके पास अपनी सुन्दरी दासी होती है, जो उसके सामान को देखती है। कभी-कभी वह एक दूसरेके खिलाफ लड़नेके लिये जमा हो जाते हैं और कभी व्यापारके लिये निकलते हैं। प्रातदिन मवेरे दासी बड़ी डोलमें पानी भरकर ला अपने स्वामीके पास रख देती है। स्वामी उसमें अपना मुह, हाथ, बाल और मिर धोता है। उसीमें पोटा-खखार फेंकता है। जब वह अपना काम कर लेता है, तो दासी डोलको उठा ले जाती है और उसीमें अपने स्वामीकी तरह मुह धोती-धाती है। इसी तरह उसी बाल्टीके पानी को घरमें रहनेवाले सब इस्तेमाल करते हैं। अपने मुह-बालको धोते हैं।

“नावमें आनेपर उनमेंसे हरएक अपनी रोटी, मास, दूध और पानकी चीजे लेकर बड़े जगलमें चला जाता है, और पृथ्वीपर बने मनुष्य जैसे चेहरेके सामने भेंट-पूजा रखकर कहता है—“स्वामी, बग (भगवान्), अपने सामान और दास-दासीके साथ, सबोलके समूरी छालोके साथ मैं दूरसे आया हूँ।” इस प्रकार अपने सभी सीदोका नाम गिनाकर फिर कहता है—“मैं तेरे पास यह भेंट ले आया हूँ।” फिर वह भेंटको देवताके सामने रखते कहता है—“मैं चाहता हूँ, कि तू मेरे व्यापारमें सोना-चादीके पैसोंको देनेमें सहायता करे।” व्यापार अच्छा होनेके बाद फिर वह प्रार्थना करता है—“मेरे स्वामीने मेरी इच्छा पूरी की, मुझे जरूर उसकी भेंट-पूजा करनी चाहिये।” फिर वह कितने ही बैलो और भेड़ोको ले जाकर वलि चढ़ा कुछ मास उसी बड़े वृक्षके नीचे छोड़ देता है, बैलो और भेड़ोंके गलेको उसी वृक्षके नीचे काटकर जमीनपर रख आता है। जब रात आती है, तो कुत्ते आ उन्हे खा जाते हैं। तब वह फिर कहता है—“मेरा बग (भगवान्) मेरे ऊपर प्रसन्न है, उसने मेरी सारी वलि खा ली।” उनमेंसे जब कोई वीमार पड़ता है, तो उसके लिये एक ओर झोपड़ी बनाकर वहा उसे रख देते हैं। वीमारके लिये थोड़ी-सी रोटी और पानी रखनेके सिवा न कोई वहा जाता है और न उससे बातचीत करता या मिलता-जुलता है। अगर वह अच्छा हो जाता है, तो मायमें जाता है, अगर मर जाता है, तो उसे जला देते हैं। यदि वह दाम होता है, तो उसे घरतीपर छोड़ देते हैं, जहा उसे कुत्ते और गिद्ध खा जाते हैं। . . .

मुझे बतलाया गया, कि वह मरनेके बाद अपने सरदारोकी बहुत धूमधामसे अत्येष्टि-क्रिया करते हैं। मैं उनमें देखना चाहता हूँ। मुझे उनके एक बड़े आदमीके मरनेकी खबर मिली। मैं उसे देखने गया। उन्होंने अर्थोपर ढाककर मुझको दस दिनोतक रक्खा। इसी बीच मुझको कफन सीने और दूसरे काम होते रहे। अत्येष्टि यही है, कि गरीब आदमीके लिये वह छोटी-सी चिता बना उसपर लाशको रखकर जला देते हैं। वही आदमी होनेपर उनकी सम्पत्तिको इकट्ठा करके उसके तीन भाग करते हैं, जिसमेंसे एक भाग परिवारको मिलता है, दूसरे भागसे वह कपडा-लत्ता खरीदते हैं और तीसरे भागसे श्राद्धके दिनके गान-गानको चीजें लाते हैं। अपने स्वामीके मरनेके बाद उसकी दासी साथ जलती है। वह उसे रात-दिन शराब पिलाकर मस्त रखते हैं, जिससे कोई-कोई हाथमें प्याला लिये ही मर जाती है। जब कोई सरदार मर जाता है, तो उनका परिवार मृतपुरुषके दाम-दामीसे पूछता है—“तुममेंसे कौन स्वामीके साथ मरेगा?” उनमेंसे कोई कह उठता है—“मैं”। जब एक बार ‘मैं’ कह दिया, तो उसके लिये मरना अनिवार्य हो गया, वह अपनी बातमें मुवर नहीं सकता। अधिकतर साथ जलनेका काम दामिया करती है। जब वह आदमी मरा, जिसके बारेमें मुझे बतलाया गया था, तो उसकी दासियोंमें पूछा गया—“कौन उसके साथ मरेगा?” उनमेंसे एक दामिनी कहा—‘मैं’। उन्होंने उसी समय उसके ऊपर दो दासिया नियुक्त की, जिनमें वह उनकी रखवाली करें। मृतकके लिये वह दूसरे काम करने लगे। उन्होंने कफन तैयार किया और जो दूसरी आवश्यक चीजे थी, उन्हें भी तैयार किया। दामी रोज खूब आनन्दमें खाती-पीती। जब दसवा दिन आया, तो मैं भी नदीपर गया, जहा चिता तैयार थी। चिताके ऊपर बहुत-सी नटिया रखी थीं। उसीके ऊपर लाकर अरथीको रख दिया गया। फिर वह मेरी समक्षमें न आनेवाली



भापामें कुछ कहते हुये एकके-पीछे एक चलने लगे । लाग अब भी अर्थीमें पड़ी थी । फिर उन्होंने मोठा ला चितापर रख उसे ग्रीक रेशमी कपड़े, तकिये आदिसे ढाक दिया । फिर एक बूढ़ी स्त्री आई, जिसे कि वह लोग मृत्युका देवता (यमदूता) कहते हैं । वह मोठे पर बैठ गई । उम्मीके कहनेके अनुसार सिलाई तथा दूसरे काम होने हैं । वही दासीको मारती है । उन्होंने उसे चितापर बैठा दिया, फिर मरनवालेके पहने हुए कपड़ेको वहां रक्खा । उसीके सामने उन्होंने मद्य, फल और वाद्ययंत्र (बलालैका) रक्खा । सफेद चेहरा हो जानेके निवा मुर्देमें कोई परिवर्तन नहीं दीख पड़ता था । उन्होंने उसके ऊपर रेशमी कुर्ता, जामा, मदली, जरीदार जूता आदि रक्खा, सिरके ऊपर रेशमी बड़ी टोपी रक्खी । फिर चितापर उसके कपड़ोको बिछाकर तकिया रक्खी । फिर पान (मद्य), फल रख दिया । कुत्तोने आ चिताको गिरा-पड़ा दिया । फिर मृत पुरुषके सारे हथियारोको उन्होंने क्रमसे उसके पास सजा दिया । फिर उसके दो घोड़ोको लाकर उन्होंने वही तलवारसे मारकर उनके मांसको चितापर रख दिया । फिर वह दो बैल लाये । उन्हें भी उसी तरह मारकर चितापर फेंक दिया । फिर मुर्गी-मुर्गा लाये, उन्हें भी मारकर वही डाल दिया । फिर मरनेके लिये तैयार दासी लाई गई, जिससे हरएकने कहा—“अपने स्वामीसे कहना, कि हमने केवल उसके प्रेमसे यह सब किया ।” दामीने अपना पैर चितापर रख अपनी भापामें कुछ कहा । उसे हटा दिया गया । फिर उसने वही किया, जो कि पहली बार किया था । फिर उसे तीसरी बार हटाया गया । उसने फिर वही किया । फिर उसे उन्होंने मुर्गी दी जिसे उसने सिर मरोड़कर फेंक दिया । उन्होंने मुर्गीको उठाकर उम्मी चितामें डाल दिया । मैंने दुभापियेसे पूछा, कि उस दासीने क्या कहा ? उसने जवाब दिया—‘उसने पहली बार कहा—‘हा, मैं अपने बाप और अपनी माको देखती हूँ ।’ दूसरी बार उसने कहा—‘हा, मैं देखती हूँ अपने मरे हुये वधुओको, मानो वह (यहा) बैठे हुये हैं ।’ फिर उसने तीसरी बार कहा—‘हा, मैं देखती हूँ अपने स्वामीको, जैसे वह बड़े सुन्दर हरे-भरे राइ (स्वर्ग) में बैठे हैं, उनके साथ पुरुष और वच्चे भी हैं । वह मुझे बुला रहे हैं । मुझे उनके पास ले चलो ।’ पीछे उसे चितापर ले गये, और चीजे निकालकर उस यमदूता बुडियाको दे दी, जो दामीको मारने जा रही थी । फिर बुडियाने पैरोके कंडोको निकालकर, उनमेंसे दोको दासीको दे दिया । फिर उसे चिताके पासकी झोपड़ी में ले गये, जहा पुरुषोंने उसे प्यालेमें गराव लाकर दिया । उसने उसे पिया । दुभापियेने मुझसे कहा, ‘वह अपनी सहेलियोंके साथ प्रार्थना कर रही है ।’ फिर उसे दूसरा प्याला दिया गया । उसने उसे ले पीते हुये एक लम्बी गीत गाई । लेकिन बुडिया प्याला पीनेसे रोककर उसे वहा ले गई, जहा उसका स्वामी लेटा हुआ था । मैं देख रहा था, कैसे वह छटपटा रही थी । उसने अपने सिरको चौतरे और चिताके बीचमें किया, और बुडियाने गलेसे पकड़कर उसे चौतरेपर पहुँचाया । फिर पुरुषोंने लकड़ियोंको पीटना शुरू किया, जिसमें कि (दासी का) रोना-चितलाना सुनाई न दे, और आगे दूसरी दासिया डरकर अपने स्वामीके साथ मरनेसे इन्कार कर दे । फिर मरनेवाली दासीको लाकर उसके स्वामीकी वगलमें रख दिया—दो ने उसके पैरोको पकड़ रक्खा था, दोनों उसके हाथोको, यमदूता बुडियाने उमे गलेसे पकड़ा था । पुरुषोंने उसे तान रक्खा था । बुडियाके मामने बड़ा खाड़ा रक्खा था, जिसे उसने दासीकी पसलियोंके बीचमें घुसेड़ दिया । दो पुरुषोंने भी उसपर प्रहार किया । अभी भी वह मरी नहीं थी । फिर मृत पुरुषके बहुत नजदीकके सवधीने आकर एक जलती लकड़ी उठा उससे चितामें आग लगा दी । फिर दासीको उसके स्वामीके पास ले आकर रख दिया गया । इसके बाद लकड़ीके टुकड़ोको लिये लोग आये और उन्हें चिताके काठपर फेंक दिया । आग पहले घासमें लगी, फिर चितामें, फिर लाशमें । आग जलने लगी । इसी समय जोरकी हवा चली, जिससे आगकी लपटे धाय-धाय करके बलने लगी । मेरे पास एक रूस पुरुष खड़ा था । उसने मुझसे कुछ कहा । मैंने दुभापियेसे पूछा—‘उसने क्या कहा ।’ दुभापियेने जवाब दिया—‘वह कहता है, अरबके लोग (मुसलमान) मूर्ख हैं । वह जिम आदमीसे प्रेम करते हैं, उसे ले जाकर जमीनमें गाड़ देते हैं, जहा उसे कीड़े-मकोड़े खा जाते हैं । हम (रूस) तो उसको आगमें जला देते हैं और वह तुरन्त राइ (स्वर्ग) में चले जाते हैं ।’ फिर उसने मुस्कराते हुये लम्बी हसी हसते कहा—‘देखो, इसीसे खुश होकर भगवान् ने हवाको भेजा है । फिर नदीके तटपर सजाई चिताकी जगहपर श्वेत सफेदा-वृक्षके टुकड़ेपर उस पुरुष और रूसोके राजाका नाम लिखकर रख दिया गया ।’

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि भारतमें सतीप्रथा शकोंके साथ ईसवी-सन्के आरम्भमें आई। हमारे शक तथा रूसी एक ही वंशके थे, यह हम वतला चुके हैं। इसीलिये दोनोंकी सतीक्रियामें कितनी ही समानता देखकर आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नहीं है।

#### ४ ओलगा, ईगर-पत्नी (९४५-५७ ई०)

ईगरका उत्तराधिकारी उसका पुत्र स्वातोस्लाव छोटा बच्चा था, इसलिये राज्यका शासन उसकी मा ओलगाने सभाला। ओलगा स्लाव थी, इसलिये रुरिककी तीसरी पीढ़ीमें स्वातोस्लाव भाषा और आकृति मवमें स्लाव था।

#### ५ स्वातोस्लाव I, ईगर-पुत्र (९५७-७३ ई०)

स्वातोस्लावने अपने बाप-दादोके विजय और वीरतापूर्ण कामोको और आगे बढ़ाया। उसका मारा जीवन अभियानोंमें बीता। वह कभी अपनी यात्राओंमें रमदकी गाड़िया नहीं ले जाता, अपने घोड़ेकी जीनका तकिया बनाकर धरतीके ऊपर सो जाता और आधे पके हुये घोड़ेके मांसको खाता। स्वातोस्लावने कभी घोखा देकर शत्रुपर आक्रमण नहीं किया। जब किसीके विरुद्ध चढ़ाई करता, तो पहलेसे दूतद्वारा सदेश भेज देता—‘मैं तुम्हारे विरुद्ध कूच करना चाहता हूँ।’

स्वातोस्लावसे पहले ही दनियेपर-उपत्यका और इल्मन सरोवरका प्रदेश कियेफ राज्यमें सम्मिलित था। स्वातोस्लावने पहले दनियेपरसे पूरवमें रहनेवाली स्लाव-जातियोंकी ओर ध्यान दिया और ओका-उपत्यकाके व्यापारियों लोकोको जीतनेके बाद दूसरोके ऊपर आक्रमण किया। १० वीं शताब्दीके साठवें सालके आसपास उसने वोल्गाके किनारेके वुल्गारो और खाजारोको हराया, फिर उत्तरी काकेशसपर आक्रमण कर वहाँके कसोवी (चिरकाम) और यासी (ओसेती) जातियोंकी भी वही हालत की। ९६७ ई० में उसने दन्यूवतटवासी वुल्गारोके ऊपर चढ़ाई की, जो अब नामके ही वुल्गार थे, नहीं तो भाषा, आकृति आदिमें उसी स्लाव जातिके थे, जिसका कि उनका विजेता। इस आक्रमणका यही कारण था, कि वुल्गार अपने पन्थेमी ग्रीक (पूर्वी रोम) सम्राट्पर बराबर आक्रमण करते उन्हें जबर्दस्त हारपर हार दे रहे थे। ग्रीक रोकनेमें असमर्थ थे, इसलिये उन्होंने स्वातोस्लावको मददके लिये बुलाया। उसने वुल्गारोको पूरीतीरमें हराकर दन्यूवतटपर अवस्थित वुल्गारियाकी राजधानी पेरेया (स्लावेत्स) में स्थायी तीरसे अपनी छावनी स्थापित करनेकी योजना बनाई। स्वातोस्लावने कहा—‘यहाँ यह मेरे देशका केंद्र है। यहाँ सभी अच्छी चीजें—मोना, कीमती कपड़े, शराब और फल ग्रीकोकी ओरसे प्रवाहित होने रहते हैं, चिको तथा मगयारोके देशोंसे चादी और घोड़े एवं रूमोके देशसे समूरी छाल, मधु, मांस और दास-दासिया आती हैं।’

स्वातोस्लावके स्परगके वारेमें ग्रीक ऐतिहासिकोंने लिखा है—“वह कदमें मझोला—न बहुत बड़ा न बहुत छोटा था, उमकी भौहें घनी, आँखें नीली, नाक छोटी, दाढ़ी मुड़ी और मिर घुटा था। केवल गोपड़ीके ऊपरी भागमें लंबे बाल थे। उच्च कुलका परिचायक वालोका एक गुच्छा (गिखा) उमके सिरमें एक ओर था। उमकी गर्दन मोटी, कंधा चौड़ा, मारा शरीर सुन्दर सुडौल था। उमके एक कानमें गोनेका मणिजटित कुटल था। उमकी पोशाक एक सफेद म्वच्छ कुर्तेके सिवा और कुछ नहीं थी।”

रुग्वि-मत्तानोंके शासनके समय रूसके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें निम्न राजुल थे—नवोगोरद, रस्तोफ-गुज्दन, मुरमो-र्याजन, स्मोलेन्स्क, कियेफ, चेर्नीगोफ, सेवेर, पेरेयास्लाव्न्, वोल्निन्स्क, गानित्स, पोलोत्स, तूरोफ, पिन्स्क, जिनके नीचे कितने ही छोटे-छोटे ठामुर होने थे। कानासागरके पामवाला मैदान उस समय तुर्कोंके हाथमें था, जो पेंचेनेग, तुर्की, वेरेन्दे, चेर्नीवोवुक्र (कराकल्पन) जैसे भिन्न-भिन्न कबीलोंमें बंटे थे—पेंचेनेगोका देश कियेफ की भूमिमें एक दिनके रास्तेपर पड़ता था।

## ६ व्लादिमिर, स्ल्यातोस्लाव-पुत्र (९७३--१०१५ ई०)

स्ल्यातोस्लावको अपने अभियानोसे फुसंत नही थी। अपनी अनुपस्थितिमें राज्यका भार उसने अपने तीन पुत्रोंपर छोड़ रक्खा था। ज्येष्ठ पुत्र यारोपोल्क पोल्यानोकी भूमि—जिसमें कियेफ नगर भी था—का शासन करता था। ओलेगके अधीन द्रेव्ल्यानोकी भूमि थी, और नवोगोरद व्लादिमिरको मिला था। बापके मरते ही तीनो भाइयोंमें झगडा शुरू हुआ। यारोपोल्क और ओलेग युद्धमें काम आये, और पूर्वी स्लावोकी भूमि व्लादिमिरके शासनमें एकताबद्ध हो गई। इसके बाद व्लादिमिरने गालिच (हालिज) के प्रदेशको अपने राज्यमें मिलाया और विरोध करनेवाले पोलोके ऊपर आक्रमण किया। व्लादिमिरने अपने पड़ोसी लिथुवानियोंपर भी आक्रमण किये, लेकिन उसका ध्यान सबसे अधिक पेचेनेगोकी ओर था, जो कि उसकी दक्षिणी सीमापर आक्रमण करते रहते थे। उसने इन घुमंतुओंसे प्रतिरक्षाके लिये जगह-जगह गढ़ियां बनवाई और वहां अपने लडाकू लोगोंको लाकर बसा दिया।

ईसाई-धर्म स्वीकार—अभी तक कियेफ रूस अपने पूर्वजोंके धर्मपर ही आरुढ़ थे। यद्यपि उनका व्यापारिक और सैनिक तौरसे भी ग्रीसके साथ घनिष्ठ संबंध था, जिसके कारण ईसाई पुरोहित भी अपने व्यापारियोंके साथ उनके यहां आया करते थे। ईगरके समय भी कियेफमें ईसाइयोंके कुछ गिर्जे थे। पहले ही निकोलाइ ख्रिसोवेर्द (९७६-९९१ ई०) ईसाई-प्रचारक बनाकर स्लावोंमें भेजा गया था। इसमें सदेह नही कि आभिजात्य वर्गमें कितने ही ईसाई-धर्मको स्वीकार कर चुके थे, तो भी अभी अपने जनयुगके (कवीलाशाही) पूर्वजोंके धर्मको रूस छोड़ना नही चाहते थे। जनयुगका धर्म अपने-अपने कवीलो देवताओं और रीति-रवाजोंके साथ घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध रहता है। जब राज्यकी सीमा कवीलोको तोड़कर आगे बढ़ती है, तो राज्य की एकतामें कवीलाशाही धर्म बाधक होता है, फिर किसी सामन्ती धर्म को स्वीकार करनेकी जरूरत पड़ती है, ता कि वह राजा और भिन्न-भिन्न कवीलोवाली प्रजाके भीतर पहिले के रक्तसंबंधके टूटनेपर अपने (धर्म) द्वारा एक नये सबंधको स्थापित करे। स्लावोंसे बाहरभी राज्यविस्तार होनेके कारण अब व्लादिमिरको एक व्यापक धर्मकी आवश्यकता पड़ी। इसके लिये उसका ध्यान यहूदी धर्मकी ओर भी गया था—हमें मालूम है, कि खाजार् खगान यहूदी धर्मके माननेवाले थे। पुरानी ऐतिहासिक परंपरासे मालूम होता है, कि ९८६ ई० में व्लादिमिरने यहूदी धर्म स्वीकार करना इन्कार कर दिया। रूसोंके सगे भाई बुल्गारियावाले ईसाईधर्मको स्वीकार कर चुके थे। काला समुद्रके उत्तरी और पूर्व-उत्तरी तटपर क्रिम, खोरसुन आदि नगरोंमें धनी ईसाई ग्रीक व्यापारी रहते थे, जिन्होंने वहां अच्छे-अच्छे गिर्जे बना रक्खे थे। व्लादिमिरने रोम-दरवार की तडक-भडक, उसके कला-कौशल और विचार-धारा को भी देखने-सुननेका मौका पाया था। अपने पास-पड़ोसकी गौराग जातियोंमें इस्लामको न फैला देखकर उसकी ओर उसका आकर्षण नही हो सकता था। इन सामान्ती धर्मोंके मुकाबिलेमें स्लावोंका पुराना धर्म ओझा-सयाना-पुरोहितोका धर्म था, इसमें पुराने जनयुगीन ठाकुरोकी प्रतिष्ठा अधिक थी, जो नवजात उच्चवर्ग के लोगोंको सम्मान नही देना चाहते थे, जो कि उनके लिये प्राचीन कालसे सुरक्षित था। इन्ही नये अकुलीन ठाकुरोंने पले ईसाईधर्मकी ओर हाथ बढ़ाया। कहा जाता है, ईगरकी विधवा ओलगाने भी ईसाई-धर्म स्वीकार किया था, जो असदिग्ध नही है। ९८७ ई० में विजन्तीन साम्राज्यके भीतर एक बड़ा विद्रोह उठ खडा हुआ था। इसी समय उत्तरसे दन्यूवके बुल्गारोंने भी हमला करना चाहा, जिसपर विजन्तीन सरकारने व्लादिमिरको सहायताके लिये बुलाया और ९८८ ई० में व्लादिमिरके साथ संधि की। व्लादिमिरने ग्रीक-सम्राट्की बहिन अन्नासे व्याह करनेकी इच्छा प्रकट की। सम्राट्ने इस शर्तपर व्याह करना स्वीकार किया, कि व्लादिमिर ईसाई-धर्मको स्वीकार करे। उस समय कान्स्तान्तिनोपोलमें दो सम्राट् राज्य कर रहे थे, अन्ना दोनो हीकी बहिन थी। विद्रोह-दमन करनेके उपहारस्वरूप अन्ना मिलनेवाली थी, लेकिन जब काम निकल गया, तो सम्राटोने अपने वचनको पूरा करनेमें ढिलाई दिखानी शुरू की। इसपर व्लादिमिरने आक्रमण करके क्रिमिया प्रायद्वीपके खेर्सोनेस (खोरसोन) नगरको घेर लिया, और विजन्तीनको अपना वचन पालनेके लिये मजबूर किया। उसी समय व्लादिमिरने ग्रीक-चर्चकी पद्धतिके अनुसार वपतिस्मा ले राजकुमारी अन्नासे व्याह किया। ९८८ ई० में खोरसोनसे रानी अन्नाके साथ कियेफ लौटने पर उमने कियेफके सारे लोगोंको जवर्दस्ती दनियेपर नदीमें

डुवकी लगवा ग्रीक-पादरियोद्वारा उन्हें वपतिस्मा दिलवाया। वर्मान्विताके पागलपनमें पुराने स्लाव-देवताओंकी मूर्तियाँ—जो अधिकतर काठकी होती थी—जला दी गईं। महादेवता पेस्तकी एक मूर्ति दनियेपरमें फेंक दी गई। इसी तरह जवर्दस्ती वपतिस्मा दिलवा थोड़े ही दिनोंमें प्रायः सारे नागरिक रूस ईसाई बना दिये गये, लेकिन गावोंमें पेस्त-पूजकोंकी समाप्ति इतनी जल्दी नहीं हो पाई।

### ७ स्व्यातोपोल्क I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१५-१९ ई०)

व्लादिमिरके मरते ही उसके पुत्रोंमें गद्दीके लिये जो भयकर संघर्ष शुरू हुआ, उसमें स्व्यातोपोल्कने अपने भाइयों—वोरिस, ग्लेब और स्व्यातोस्लाव—को मारकर कियेफकी गद्दी ले ली। डमपर पिताके समयसे ही नवोगोरदका शासक व्लादिमिर-पुत्र यारोस्लावने नवोगोरदवालोंकी मददमें स्व्यातोपोल्कपर आक्रमण किया। स्व्यातोपोल्क हारकर अपने ससुर पोलन्दके राजुलके पास भाग गया। दामादकी मदद करनेके लिये पोलन्द राजुल वोल्गेस्लाउस्ने रूसपर आक्रमण किया और पश्चिमी वुगके किनारे यारोस्लावको हरा कियेफमें दाम्बिल हो अपने दामादको गद्दीपर बिठाया। पोलोने इतने हीसे सतोप न कर देशमें लूट-पाट मचानी शुरू की, जिसका प्रतिरोध रूसोंने भी बहुत जोरसे किया। जब लूट-पाटवर नगरों और गावोंमें जाड़ा बितानेके लिये पोल इकट्ठा हुये, तो लोगोंने बिद्रोह करके उन्हें मार डाला। वच्ची-खुच्ची सेनाके साथ वोल्गेस्लाउस् पोलन्द भागा। पोलोकी सहायतासे वचित स्व्यातोपोल्कको यारोस्लाव और उसके नवग्रादियोंके हाथ हार खानी पड़ी और भागते समय वह मारा गया।

### ८ यारोस्लाव I, व्लादिमिर-पुत्र (१०१९-५४ ई०)

यारोस्लाव अब कियेफ और नवोगोरदका महाराजुल बना, लेकिन अभी भी एक प्रतिद्वंद्वी उसका भाई स्मिस्लाव मौजूद था, जोकि काकेशसके समीप तमन प्रायद्वीपमें तमूतरकानका शासक था। उसने आक्रमण करके यारोस्लावने मेवेस्क भूमि तथा चेरनीगोफ नगरको छीन लिया। दनियेपर नदी दोनों भाइयोंकी सीमा बनी। १०३६ ई० में भाईके मर जानेपर सेवेस्क प्रदेशको फिर यारोस्लावने कियेफ-राज्यमें मिला लिया। यारोस्लावके समय ईसाई-धर्मने कियेफ-रूसोपर पूर्ण विजय प्राप्त की, ईसाई-चर्च (धर्ममंघ) का संगठन हुआ, और क्रान्तिन्तिनोपोलके महामघराजने रूसोंके लिये एक मघराज नियुक्त किया। कियेफके पान पेचेस्क-मठ इन्ही समय बना, जिसने शासकवर्गमें शिक्षा फैलानेमें बड़ा काम किया।

कियेफ-राज्य अब वुगोपके महत्त्वपूर्ण राज्योंमेंसे था। ग्रीक-संवघके कारण उसका सांस्कृतिक तत्व भी ऊँचा हो गया था। यारोस्लाव-परिवारका संघ अब पश्चिमी यूरोपके राजघरानोंमें होने लगा था। यारोस्लावकी बहिन पोल-राजामें व्याही थी। उसके दामादोंमें फ्राम, नार्वे और हुगरी (मंग्यार) के राजा थे। यद्यपि यारोस्लावने पोलन्दकी सहायतामें सिंहासन पाया था, लेकिन अब वह इतना शक्तिशाली था, कि पोलन्दके भीतरी मामलोंमें दखल देता था। वोल्गेस्लाउस्के मरनेके बाद पिताके राज्यमें छीने गये गालिच प्रदेशको उसने फिर ले लिया। १०४३ ई० में उसने अपने पुत्र व्लादिमिरके नेतृत्वमें एक अनपन्न अभियान क्रान्तिन्तिनोपोलके विरुद्ध भेजा। पश्चिमकी ओर बाल्तिक प्रदेशपर जर्मन आक्रमण करने लगे थे। यारोस्लावने प्रतिरक्षाके लिये यूरियेफ (एस्तोनियामें तरतू) नगरको बसाया, और बाल्तिक लॉन्गों अपने अधीन कर लिया। उसने वोल्गाके किनारे अपने नामसे यारोस्लाव नगर बनाया। उदिणमें पेचेनेगोमें उसका संघर्ष बराबर जारी रहा।

यारोस्लावके समयमें ही पहला गानून-ग्रन्थ (विधान-संहिता) “यारोस्लान्स्की-प्राव्दा” के नामसे नोंपाटि हुई, जिसपर ईसाई विद्वानोंन गाननोंका प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। इसी प्राव्दा (कानून) द्वारा जनसुनने वाले अपने मनका बदला देना मानी जातिके लिये आवश्यक होनेकी जगह पवित्राग्ने मददगारकी ही समित्त मन्त हुये गता गया—“अगर कोई आदमी दूसरेको मार डाले तो भाई का बदला भाईने, बाल्का बच्चा पुत्र, पुत्रका बदला भाई-भतीजा-भाजा भी। अगर कोई बदला

लेनेवाला न रह जाय, तो मरे हुये आदमी के लिये चालीस ग्रिवना (दो सौ ग्रामकी चादीकी सिल्ली) देना होगा।" यारोस्लावके पुत्रके शासनकालमें बदला लेनेके विधानको ही उठा दिया गया, और इस प्रकार जनयुगकी एक पुरानी प्रथाको सामंतयुगने ममाप्त कर दिया।

मुख्यवस्थित रूसी चर्चके स्थापित हो जानेपर अब वाकायदा पुस्तकें भी लिखी जाने लगी, बाइबल तथा दूसरे धार्मिक ग्रंथोंके साथ-साथ ग्रीक इतिहास-ग्रंथोंका अनुवाद करते, रूसी लिखित साहित्यका आरंभ किया गया। यारोस्लावके समयमें ही रूसका इतिहास लिखनेका प्रथम प्रयत्न किया गया, जिसे कि उसके मरनेके बाद पेचेर्स्क-मठने संपादित किया। इसको "आरंभिक-इतिहास" (नचलनया लेतोपिस्) कहते हैं। इसमें राजुलोकी जीवनीया, और बहुत-सी कहानीया जमा की गई हैं। मूल पुस्तक अपने १११६ और १११८ के संहोधित संस्करणोंके रूपमें "पुराने वर्षोंका इतिहास" के नाममें अब भी मौजूद है। यारोस्लावके समयमें ही कियेफमें ग्रीक वास्तु-शास्त्रियोंकी देख-रेखमें सोफिया-गिर्जे का निर्माण हुआ। विजन्तीन ढांचेको लेते हुये भी इसमें रूसी वास्तुकलाका सम्मिश्रण किया गया। ११ वीं शताब्दीकी रूसी कलाकी यह सर्वोत्कृष्ट इमारत है। गिर्जेके भीतरकी दीवारोंपर सुन्दर भित्ति-चित्र और फर्श-पर बढिया पच्चीकारीका काम है। उस समयके विदेशी यात्री कियेफके वैभवको देखकर उसे "कान्स्टन्तिनोपोलका प्रतिद्वंद्वी" कहने थे। कियेफके नमूनेको लेकर यारोस्लावके पुत्र ब्लादिमिरने नवो-गोर्दमे भी उसी तरहका सोफिया-गिर्जा बनवाया।

आर्थिक ढांचा—यह कह चुके हैं, कि ९वीं शताब्दीसे पहले रूस कृषिजीवी थे, यद्यपि नगरी और दनियेपर-उपत्यकासे दूरके जंगलोंमें रहनेवाले अब भी पशुपालनपर अधिक निर्भर करते थे। अभी भी उनका राजनीतिक ढांचा बहुत-कुछ जनयुगीन था, और राजुलोको अपने लोगोंकी रायका बहुत ख्याल रखना पड़ता था। न पसंद आनेपर लोग साफ जवाब देते थे—"राजुल, हम तो नहीं जाते, तु अपनी लड़ाई जाके लड़।" लेकिन ११ वीं शताब्दीमें पहुँचते-पहुँचते जनयुगीन ढांचेके स्थानपर सामंती ढांचा कायम हो गया था, जिससे जहाँ सामंतोंकी शक्ति बढ़ी, वहाँ साधारण जनतामें सांपत्तिक विषमता भी बढ़ी। कुछ लोगोंके पास भूमि और संपत्ति अधिक आ गई, और इस प्रकार बहुत खेनोवाले धनी जमींदारोंका एक वर्ग पैदा हो गया, जिन्हें बायर कहा जाता था। ये राजुलोके बड़े सहायक थे। इनके अतिरिक्त मठोंके पास भी बहुत धन-धरती हो गई। उनके महत भी बायरोकी तरह राजुलोके समर्थक थे। अबतक धरतीपर जो वैयक्तिक नहीं बल्कि पंचायती अधिकार चला आता था, वह खतम होने लगा। बड़े-बड़े शहरोंके आसपास राजुलो, बायरो और मठोंके गांव बस गये थे। दास अभी तक लूटकर बेचनेके ही काममें आते थे। खेतोंमें काम करनेके लिये गरीब किसान और मजदूर ज्यादा लाभदायक समझे जाते थे, जिन्हें कि कर्ज खिला या दूसरी तरहसे जमींदार अपना बंधुवा बना लेते थे। लेकिन अभी ११वीं शताब्दीमें भी अधिकांश किसान समूहबद्ध होकर रहते राजुलोको केवल कर दे दिया करते थे। ११ वीं शताब्दीके अन्ततक यह स्वतंत्र किसान-समूह बहुत-कुछ अपने अधिकार खो चुके थे। बहुत दवानेमें जातीय स्वतंत्रताकी भावना जब कभी जाग उठती, तो वह राजुलो और बायरोके खिलाफ विद्रोह कर उठते, या अन्यत्र भाग जाते। भागा हुआ किसान पकड़नेपर दास बना दिया जाता।

"रूसक्या प्राव्दा"—यारोस्लावके समय निर्मित विधान (प्राव्दा) के आधारपर ही उसके पुत्रों और पीढ़ीके समय "रूसक्या प्राव्दा" (रूसी विधान) के नामसे एक विधान-संहिता बनी, जिसमें उन विधानोंको खासतौरसे स्थान दिया गया, जिनके द्वारा जनसाधारणको जमींदारों (बायरो) और मामंतों की संपत्तिपर हाथ बढानेसे रोका जाता था—खेतकी मेड़ तोड़ने और पशुओंके चुराने आदिके अपराधमें जुर्मानोंका विधान किया गया। बायरका अपने दास और अर्धदास रियायापर क्या अधिकार है, इसे भी उसमें बतलाया गया। जनयुगसे खूनके बदलेमें खूनीसे सारे कबीलेको बदला लेनेका जो अधिकार चला आता था, और जिसे यारोस्लाव-प्राव्दाने केवल परिवारके व्यक्तियोंतक ही सीमित कर दिया था, उसकी जगह अब "रूसक्या प्राव्दा" ने "विरा" (अर्थदंड) का विधान करने उसका परिमाण चालीस ग्रिवना निश्चित कर दिया—बायरको मारनेपर यह जुर्माना दूना (अस्सी ग्रिवना) देना पड़ता, लेकिन

दामके मारनेपर विरा न दे केवल दाम-स्वामीको पचास ग्रिवना दे देना पर्याप्त समझा जाता था। “रस्कया प्राव्दा” में यह भी कहा गया है—“अगर किसी आदमीपर तलवारसे प्रहार किया गया हो लेकिन वह मरा न हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना, और घावकी चिकित्साके लिये ग्राह्य आदमीको एक ग्रिवना पानेका अधिकार होगा। अगर एक दात तोड़ दिया गया हो और मुहसे खून निकला हो, तो जुर्माना बारह ग्रिवना और दातके लिये एक ग्रिवना देना होगा।” मधु अब भी आयका एक अच्छा माधन समझी जाती थी और चीनी-गुडके अभावमें रस्कोंके लिये वही एकमात्र मिठाईकी चीज थी। गराव बनानेमें भी उसका बहुत व्यवहार होता था, इसीलिये “रस्कया प्राव्दा” ने विधान किया था—“अगर कोई आदमी ऐसे वृक्षको काटे, जिसमें जंगली मधु-मक्खिया रहती हो, तो तीन ग्रिवना जुर्माना और आधा ग्रिवना वृक्षका (दाम) देना होगा।”

पहले चीजोंके विनिमयका माध्यम जंगलके इलाकोंमें पशु-चर्म और खेतवाले इलाकोंमें पशु था। इसीलिये पुराने समयमें पैसेको “स्कोत” (पशु) या “कुनी” (चर्म) कहते थे। रूसोंके पास अपना सिक्का नहीं था। अरबों, ग्रीकों या पश्चिमी युरोपवालोंके सिक्के उस समय रूसोंमें भी चला करते थे। ११ वीं शताब्दीके आरम्भमें ग्रीक सिक्कोंकी नकल करते कियेफ रूसोंने भी थोड़ेसे अपने-अपने सिक्के ढाले, जिनके ऊपर राजकुलका चेहरा बना रहता—सिक्कोंका रवाज अधिकतर नगरोंमें था।

## ९ इज्यास्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०५४—७३ ई०)

यारोस्लावके मरनेके थोड़े ही दिनों बाद रूसोंकी एकता भग होने लगी और यारोस्लावके पुत्र स्वतंत्र रूपसे अपने-अपने प्रदेशोंपर शासन करने लगे। सबसे बड़ा लड़का इज्यास्लाव कियेफ और नवो-गोर्दका स्वामी बना। दूनियेपरके वणिक्पथपर ये दोनों बहुत महत्वपूर्ण नगर थे, इसलिये इज्यास्लावका स्थान बहुत महत्व रखता था। दूसरे पुत्र स्व्यातोस्लावको चेर्नीगोफका इलाका मिला और व्सेवोदको पेरेयास्लाव्ल और रोस्नोफ-मुज्दल। दूसरे इलाके दूसरे राजकुमारोंके हाथोंमें चले गये। पहले तीनों बड़े लड़के आपसमें मेलसे रहते, मिलकर शत्रुओंसे देशकी प्रतिरक्षा करते थे, कभी-कभी इकट्ठा होकर राजकाजकी बातोंमें मलाह भी करते थे। १०६८ ई० में जब कियेफके कारीगरों और किसानोंने विद्रोह किया, तो उन्होंने इकट्ठा होकर अपने बापकी “प्राव्दा” का मशौघन और परिवर्धन किया। यारोस्लावके पुत्रोंके मरम भयकर शत्रु थे तुर्कजानीय पोलोवत्सी—अपनी भाषामें इनका नाम दूसरा ही होगा, लेकिन रूसी उन्हें इसी नामसे पुकारते थे। यारोस्लावके शासनके खतम होनेके समय ११ वीं शताब्दीके मध्यमें ही पूरवमें आकर पोलोवत्सियोंने आक्रमण करके कालासागरके उत्तरवाली मैदानी भूमिपर अधिकार कर लिया और वहाँ रहने पेचेनेगोको पश्चिममें दन्यूबकी ओर भगा दिया। पोलोवत्सी घुमंतू पशुपान थे। उनके बहुतमें छोटे-छोटे कबीले थे, जिनके अपने-अपने खान (राजा) हुआ करते थे। पशुओंपर निर्भर होनेके कारण वह एक जगहमें दूसरी जगह घूमा करते और समय-समयपर रूसोंकी भूमिपर चढ़ाई कर उनके पशुओं और पुष्प-स्त्रियोंको पकड़कर लौट जाते। उनका आक्रमण बड़ा ही भयकर और अचानक होता। ग्रीक लेखक उनके बारेमें कहते हैं—“पोलोवत्सी पलक मारते-मारते प्रकट होकर लुप्त हो जाते हैं। आक्रमण खतम होने ही लूटके मालमें लदे अपने घोड़ोंको कोड़ोंसे मारते वह आधीनी तरह निकल जाते हैं, मानो वह उड़नी हुई चिड़ियाको पकड़ना चाहते हैं। तुम्हारे आख उठाने देखनेमें पहले ही वह निम्न चुके रहते हैं।” १०६८ ई० में इज्यास्लाव अपने दोनों भाइयों स्व्यातोस्लाव और व्सेवोदके साथ पोलोवत्सियोंको दबानेके लिये गया, लेकिन दुर्गे तरहमें हारकर उन्हें युद्ध-क्षेत्रमें भागना पड़ा। इज्यास्लाव कियेफ पहुँचा। पोलोवत्सियोंके आक्रमणों और लूटमार ने मध्यम जमानेमें उकटते ही इज्यास्लावमें माग की, कि हमें हथियार दो और साथ चलकर शत्रुओंसे लड़ो। इज्यास्लावको भय लगने लगा, कि वहाँ वह हथियार मेरे ही विरुद्ध न उठाये जाय। उसने इन्कार करनेपर लोगोंने राजकुलमें महलको बूट और बग़दाद कर, उसकी जगह उसकेद्वारा जेनमानेमें बद कोनोम्ने राजकुल व्सेवोदके मुक्त कर कियेफका राजकुल घोषित किया। इज्यास्लाव भागकर पोलद पहुँचा, जहाँ पोलोवत्सी राजा वॉल्मेस्लावकी सहायता ले कियेफ लौटा। व्सेवोद विजयागघात करके

चुपचाप रातको पोलोत्स्क भाग गया। इज्यास्लावने लोगोसे भारी खूनी बदला लिया। पोल सैनिक कियेफ राज्यके नगरोमे जगह-जगह छावनी डालकर रहने लगे। उन्होने अपने अत्याचारोसे इतना तग किया, कि लोगोने जानपर खेलकर उनकी हत्या कर डाली।

पोलोवत्सी जैसे जवर्दस्त शत्रु सिरपर थे, तो भी यारोस्लावके बेटोकी एकता देरतक नहीं रह सकी। विदेशियोसे मदद लेकर इज्यास्लावने फिरसे सिंहासनपर अधिकारकर जनताके ऊपर जो अत्याचार किये, उनसे लोगोमे उसके प्रति भारी घृणा पैदा हो गई। इससे फायदा उठाकर १०७३ ई० मे स्वातोस्लाव और व्सेवोलदने आक्रमण करके इज्यास्लावको कियेफसे भगा दिया। अब स्वातोस्लाव कियेफकी गद्दीपर बैठा।

## स्वातोस्लाव, यारोस्लाव-पुत्र (१०७३--१११३ ई०)

स्वातोस्लाव थोड़े ही दिनोतक भाईको सिंहासनसे वंचित रख सका। इज्यास्लाव भागकर जर्मन-सम्राट और रोमके पोपके पास मदद मागने गया, और अंतमे पोलोकी मददसे उसने फिर अपने सिंहासनको प्राप्त किया, लेकिन वह थोड़े ही समय बाद अपने भनीजोसे लडते हुये मारा गया।

यारोस्लावके पीत्रोमे भी बराबर सघर्ष जारी रहा—कभी कोई किसीको भगाता और कभी कोई फिरसे अपने राज्यको प्राप्त करता। आपसकी लड़ाई और पोलोवत्सियोके आक्रमणोसे देशकी हालत बहुत बुरी हो गई थी। इसीलिये १०६७ ई० मे कुछ प्रभावशाली राजुलोने ल्यूबेकमे जमा होकर सौचा—“हम क्यों रूस-भूमिको नष्ट कर रहे हैं?” उन्होने कहा—“हम आपसमे एक दूसरेके साथ विश्वासघात करनेका उपाय सोच रहे हैं। पोलोवत्सी हमारे देशका तहस-नहस करते इस बातसे प्रसन्न हैं, कि हम आपसमे लड़ रहे हैं। आओ, आजसे हम मेलसे रहे।” उन्होने अंतमें यह निश्चय किया, कि हरएक राजुल अपने पैतृक राज्यको अपने पास रखे। अब कियेफ इज्यास्लावके पुत्र स्वातो-पोल्कके हाथमे रहा।

## १० स्वातोपोल्क II, इज्यास्लाव-पुत्र

जब एक दूसरेके हित परस्परविरोधी हो, तो इस तरहके भावुकतापूर्ण आदर्शवादी फैसले देर तक कैसे माने जा सकते थे? हमने भिन्न-भिन्न देशोमे ऐसे अवसरोपर राजुलो और राजाओकी परिषदें होती, और उन्हें अच्छे निर्णयो पर पहुँचते देखा है। पर आर्थिक स्वार्थोकी चट्टानोके ऊपर उनके चकनाचूर होते भी देर नहीं लगती। स्वातोपोल्कको कियेफका अधिकार मिला और उसके चचेरे भाई व्लादिमिरको उसके पिता व्सेवोलदका पेरेयास्लाव राज्य मिला।

## ११ व्लादिमिर मनोमाख, व्सेवोलद-पुत्र (१११३-२५ ई०)

व्लादिमिर विजन्तीन-सम्राट कान्स्तन्तिन मनोमाख का धेवता था। इस सम्बन्धका उसे अभिमान भी था, इसीलिये वह व्लादिमिर मनोमाख (एक-राजा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। परिषदके उठते देर नहीं हुई, कि फिर राजुलोमे झगडा शुरू हो गया। स्वातोपोल्कने अपने एक राजुल भाई वासिल्कोको धोखेसे पकड़कर उसके प्रतिद्वंद्वी दाविद ईगर-पुत्रके हाथमे दे दिया, जिसने उसे अन्धा करके जेलमे डाल वासिल्कोके नगरोपर अधिकार कर लिया। इसपर व्लादिमिर मनोमाखने दूसरे राजुलोका नेतृत्व करके वासिल्कोके छुड़ानेके लिये आक्रमण कर उसे मुक्त कर दिया। ११०० ई० मे राजुलोकी दूसरी परिषद् हुई, जिसमें उन्होने दाविदको व्लादिमिरके सिंहासनसे वंचित कर दिया। आपसी सघर्षके समय पोलोवत्सियोकी खूब वन आई, और वह रूसकी भूमिमें बहुत भीतरतक लूट-मार करने लगे। परिषद्मे मनोमाखने मिलकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान करनेका प्रस्ताव किया, जिसे मानकर सभी रूसी राजुलोने व्लादिमिर मनोमाखके नेतृत्वमे पोलोवत्सीके ऊपर चढ़ाई की। सामूहिक शक्तिके सामने पोलोवत्सी बुरी तरहसे हारे, और विजेता रूस ढोरो, घोडो, ऊटो, लूटके माल तथा बन्दिओके साथ लौटे। ११११ ई०मे उन्होने फिर एक अभियान किया, जिसमें वह पहलेसे भी अधिक सफल रहे।

म्यातोस्लाव १११३ ई० में मरा, उसके बाद ही कियेफमें विद्रोह उठ खड़ा हुआ, जो नगरमें दीहातमें फैलने लगा। माधरण जनताके इस विद्रोहका कारण वायरों और सूदखोरोका अत्याचार था। विद्रोहियोंने गहरमें उनके घरोंको लूटकर नष्ट-भ्रष्ट किया। इसके कारण वायर, महन्त और छोटे-मोटे मामन्त उठने लगे। कियेफके धनियोने व्लादिमिर मनोमाखके पास सदेश भेजा—“आओ राजुल, कियेफमें। अगर तुम नहीं आओगे, तो यह समझ रखो, कि और भी बहुत बुरी बातें होगी—माधरण लोग वायरा और मठोंको तग करेगे।”

व्लादिमिरने अपने अनुचरोसहित आकर विद्रोहको दबा दिया, लेकिन केवल बलपूर्वक दवानेमें काम नहीं चल सकता था, इसलिए उसने जनमाधारणके ऊपर होने अत्याचारोंको भी कम किया। कियेफ ले लेनेके बाद व्लादिमिरने देशको और अधिक छिन्न-भिन्न होनेसे बचाना चाहा, और दूसरे राजुलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। जो नहीं मानते, वे, उन्हे उनके नगरोंसे बचिन करनेकी उसमें क्षमता भी थी, इसलिए सभी राजुलोंने उसे अपने ऊपर माना। व्लादिमिरने एक बार फिर अपने पुरखोंके बैभवको स्थापित कर दिया। युरोपके दरबारोंमें भी व्लादिमिरकी बड़ी वाक थी। ग्रीक-मम्राट् कान्स्तन्तिन मनोमाख उसका नाना ही था। उसकी एक पोती एक ग्रीक राजकुमारसे व्याही थी। व्लादिमिरकी बहिन जर्मन-मम्राट्से व्याही थी, और व्लादिमिर स्वयं इंगलिश-राजाका दामाद था। उस समय विजन्तीन-राज्यमें जो गृह-कलह चल रहा था, उसमें भी उसने दखल दिया। व्लादिमिरकी मेना दन्यूवके किनारेतक पहुची, और वहां अपने दावेको प्राचीन रूस-भूमि (उस्मार्टल) पर स्थापित किया।

व्लादिमिर बड़ा ही निर्भीक और बहादुर पुरुष था। उसने अपने पुत्रोंको फटकारने हुए एक बार लिखा था—“अपनी जान बचानेके लिये शत्रुके सामनेसे मैं कभी नहीं भागा और खतरेका सदा निर्भयतापूर्वक सामना करता था। वच्चो, न तुम मेनामें डरो और न पशुमें। तुम्हारा काम पुम्पोचित होना चाहिये। मैंने रात या दिन, मर्दी या गर्मी कभी अपनेको आराम देने नहीं दिया।” वह शिकारका बड़ा शौकीन था, जिसमें कई मर्तबे उसने अपनेको खतरेमें डाला। दो मर्तबे जंगली बैलने उसे अपनी सींगपर उठा लिया, एक बार हरिनने सींगसे घायल किया, एक बार एक जंगली सूअरने उसकी बगलसे लटकती तलवारको तोड़ दिया, एक भालूने उसके कपड़ोंको फाड़ डाला और एक भयंकर जानवरने एक बार हमला करके उसे और उसके घोड़ेको गिरा दिया।

व्लादिमिर केवल एक निर्भीक योद्धा ही नहीं बल्कि शिक्षित पुरुष भी था। राजपरिवार-में शिक्षा और नमस्कृतिका अधिक प्रसार होनेमें उसे भी शिक्षित होना ही था। उसका पिता ज्येष्ठोद्द एक शिक्षित व्यक्ति था, जो पांच विदेशी भाषाओंको जानता था। स्वयं मुशिक्षित व्लादिमिरने पिताके महत्त्वको दिखाने हुए एक बार अपने पुत्रोंको लिखा था—“जो तुम जानने हो, उसे न भूलो, और जो नहीं जानते, उसे पढ़ो।” वह बड़ा स्वाध्यायप्रेमी था। अपनी नैतिक यात्राओंमें भी वह सदा अपने पास पुस्तकें रखता था। उसने “वच्चोकी शिक्षा”के नाममें एक दिलचस्प पुस्तक लिखी थी।

व्लादिमिर कियेफ-रूमके शासनकी अन्तिम चकाचांध करनेवाली ज्योति था। देशमें जो विप्लव प्रारम्भ हो गया था, उसे व्लादिमिर थोड़े ही समयतक रोक सका। उसके मरने ही फिर रूस-भूमि अनेक छोटी-छोटी रियासतोंमें बंट गई, जगह-जगह स्वतंत्र राजुल शासन करने लगे। इनमेंमें कुछ महत्त्वपूर्ण रियासतें थीं—कियेफ, चेरनीगोफ, गालिच, म्मोलेत्स्क, पोलोत्स्क, तुगोफ-विन्स्क, नेम्पोरु-मुज्दन्, र्वाजन्, नवोगार्द और व्लादिमिर-वोल्हुत्स्क। ये सभी राजुल म्यातोस्लाव-पुत्र व्लादिमिरने बगल थे। कियेफ अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता था, इसलिए वह राजुलोंकी छाना-छानटीका बगल अग्रणी बना रहा। नैतिक जीवनमें अनन्यस्य विचारों राजुल अब कियेफका कोई गान नहीं रखते थे। जहां व्लादिमिर मनोमाख अपने घोड़े, बाज और रनोंईका भी काम



अपने नाँकरोपर न छोड़ अपने हाथो करनेके लिये तैयार रहता, वहा इन राजुलोका जीवन आरामपसदीका था। इन्ही बातोके कारण राजुलोकी शक्ति भी कम हो गई, और धनी वायर अब राजुलोको अपनी बात माननेके लिये मजबूर कर सकते थे, इसीलिये हर बातमें वह उनकी सलाह लेते थे। राजुल अगर कोई बात अपने योद्धाओकी सम्मति बिना करते, तो वह जवाब देते—“राजुल, तूने हमारी रायके बिना यह निश्चय किया, इसलिये हम तेरे साथ नहीं जायेंगे।” इस समय पुराने समयकी प्रभावशालिनी सस्था ‘वेचे’ (पचायत) का भी महत्त्व बढ़ गया था—वेचे नागरिकोकी पचायत थी, जिसपर वायरो और धनी नागरिकोका भारी प्रभाव था। जब किसी बातका निर्णय करना होता, तो घटा बजाकर या चिल्लाकर नागरिकोको वेचे (सभा) के लिये जमा किया जाता। अगर वेचे प्रस्तावको स्वीकार करती, तो लोग चिल्लाकर कहते—“हम सब चलेंगे और हमारे बच्चे भी।” लेकिन कभी-कभी नगरके लोग राजुलकी लड़ाईमें शामिल नहीं होना चाहते, तब कहते—“राजुल, मेल करो, नहीं तो अपनी विपत्ता आप सभालो।” इस प्रकार १२ वीं शताब्दीमें कोई राजुल वेचेकी रायके बिना किसी शत्रुके साथ युद्धसे अपनी प्रतिरक्षा करनेकी हिम्मत नहीं रखता था। राजुलके सिंहासनपर बैठनेके समय वेचे पहिले उससे अपनी शर्तें मनवाती। ऐसे भी अवसर आये, जब कि नापसन्द होनेपर वेचेने राजुलको निकाल बाहर किया और किसी दूसरे राजकुमारको यह कहकर निमंत्रित किया—“आ राजुल, हम तुझे चाहते हैं।”

उस समय एक तरफ वेचेका अधिकार बढ़नेसे वायरो और धनिक नागरिकोके हाथोमें अधिक शक्ति आ गई थी, तो दूसरी तरफ बाहरी शत्रुओसे अच्छी तरह मुकाबिला करनेके लिये रूसमें कोई मजबूत सगठित शक्ति नहीं रह गई थी। इसी समयकी स्थितिमें एक अज्ञात कवि ने “ईगर-सेना-गाथा” लिखी थी।

**ईगर सेना-गाथा**—कालासागरके उत्तर एक मगोलायित घुमत्तू कबीला पोलोवत्सी ९वीं-१०वीं शताब्दी में रहता था। कियेफ-रूसोके साथ इसका बहुत दिनोतक संघर्ष रहा। रूसी भाषाका आदिकाव्य “ईगर-सेना-गाथा” इन्ही संघर्षोंके संवधमें लिखा गया है। पोलोवत्सी इतने प्रबल थे, कि रूस उनसे अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ थे, जिसका एक कारण यह भी था कि, रूस स्वयं बहुतसे छोटे-छोटे टुकड़ोंमें बंटे थे, जिनमें आपसमें बराबर लड़ाई होती रहती थी। पोलोवत्सी जब हमला करने आते, तो काफी प्रतिरोध नहीं कर सकते थे। इन युद्धोका सबसे ज्यादा सत्यानाशी प्रभाव गावोंके किसानों-पर पड़ता था। “सभी नगर और गांव निर्जन हो गये थे। हम उन खेतोंपरसे गुजरे, जिनमें कभी घोड़ों और ढोरोके झुंड तथा भेड़ोंके गल्ले चरा करते थे। लेकिन, वहा सभी चीजे वीरान पड़ी थी। अनाजके खेतोंमें जंगल जम गया था, जिसमें वन्य पशु रहा करते थे।” पुराने इतिहास-लेखकका कथन पोलोवत्सी-आक्रमणोंके असरको बतलाता है। पोलोवत्सी भारी सख्यामें रूसोको बंदी बनाकर अपने साथ ले जाते थे। “आफतके मारे, भूख-प्याससे काले पड़े वे अभाग अपरिचित देशकी ओर वस्त्रहीन नगें पैर कदम बढ़ा रहे थे। उनके पैर काटोसे छिल गये थे। आखोंमें आसू भरकर वह एक दूसरेसे कहते थे—“मैं अमुक और अमुक नगरका हूँ।” दूसरा जवाब देता—“मैं अमुक और अमुक दीहातका हूँ।” रूसी भाषाके इस कलापूर्ण अमर लघु-काव्यमें राजकुमार ईगरका पोलोवत्सी घुमत्तुओके साथके संघर्षका वर्णन है। १२ वीं शताब्दीके अंतमें किसी अज्ञात लेखकने इसे लिखा था। सेवेर्स्क राजुलोने तग आकर पोलोवत्सीके खिलाफ अभियान किया, जिसका नेता राजुल ईगर स्व्यातोस्लाव-पुत्र था। जब रूस-राजुलोसे उसने अपने साथ आ मिलनेके लिये कहा, तो सेवेर्स्क राजकुमारोने इन्कार कर दिया। पीछे उन्होंने अपना स्वतंत्र अभियान किया, जिसमें वह बुरी तरहसे हारे, ईगर बंदी हुआ। कविने रूस-भूमिके महान् वीरके तौरपर ईगरका चित्रण किया है—“सैनिक उमगोंसे भरे उसने अपने सैनिकोंका नेतृत्व करते हुये रूस-भूमिकी रक्षाके लिये पोलोवत्सियोंके ऊपर अभियान किया।” ईगरने अपने सैनिकोंसे कहा—“भाइयो और योद्धाओ! बंदी बननेसे मर जाना अच्छा है। मैं चाहता हूँ अपने भालेको पोलोवत्सी मैदानके छोरसे तोड़ डालूँ। रूसजन! मैं चाहता हूँ, तुम्हारे साथ अपने सिरको गिरा

दू, या अपने शिरस्त्राणसे दोनके जलको पीऊ ।” “काफी लोहित मदिरा वहा नही थी, रूस वीर अपने युद्ध-भोजको खतम कर रहे थे । उन्होंने अपने वधुओको पान करनेका अवसर दिया, और रूस-भूमिके लिये स्वयं अपने जीवनका उत्सर्ग किया ।” युद्धक्षेत्रमें पड़े हुये वीरोके शवोको देखकर कौवे किस तरह अपना भोज कर रहे थे, इसे कविने कितने शक्तिशाली शब्दोंमें चित्रित किया है —

“भाई भाईसे बोला—‘यह मेरा है,

और यह भी मेरा है, राजुल छोटीको बड़ी चीज कहने लगे, विश्वासघात के लिये ।

और म्लेच्छ पोलोवत्सी विजयी बनकर रूस-भूमिमें आये ।”

रूस-राजुलोको एक होनेके लिये कवि कहता है —

“प्रभुओ, अपने पैरोको सुनहली रिकावोंमें रक्खो,

आजके अपने ऊपर होते अत्याचार तथा रूस-भूमिके लिये,

स्व्यातोस्लाव-पुत्र वीर ईगरके धावोंके लिये ।”

रूसी भाषाके इस आदिकाव्य (वीरगाथा)से रूसी साहित्यका आरम्भ होता है और समस्त रूसी जातिको विदेशियोंके विरुद्ध एक होनेका सदेश देता है । अगली शताब्दियोंने देखा, कि वह सदेश व्यर्थ नही गया । ईगरके खूनका रूस बदला चाहे पोलोवत्सीसे न ले पाये हो, लेकिन उन्होंने रूसके शत्रुओंसे सदा बदला लिया । इसी काव्यके वीर नायकके नामपर रूसमें पुरुषोका सबसे अधिक प्रचलित नाम ईगर पाया जाता है । द्वितीय महायुद्धमें स्तालिनग्रादसे फासिस्तोको खदेडते हुये हजारों रूसी सैनिकोंने दनियेपरके तटपर पहुचकर अपने शिरस्त्राणोंसे उस पवित्र जलको पीकर ईगरकी अपूर्ण इच्छाको पूरा किया ।

### ख रोस्तोफ-सुज्दल-राजुल

१२ वी शताब्दीमें जब दनियेपर-उपत्यकाकी रूस-भूमि पोलोवत्सीके आक्रमणोंका शिकार हो अपने ऐतिहासिक महत्त्वको खो बैठी थी, इसी समय उत्तर-पूर्वी रूस-भूमिमें वोल्गा और ओका नदियोंके बीच रोस्तोफ-सुज्दलका एक नया राज्य स्थापित हुआ, जिसने रूसके इतिहासमें महत्त्वपूर्ण काम किया । यह भूमि कियेफ जैसी उर्वर नही थी । जगली भूमि थी, जिसमें जगली जानवर और मधुमक्खिया बहुत थी, नदियोंमें मछलियोंकी बहुतायत थी, लेकिन जहातक खेतीलायक भूमिका सवध है, ऐसी भूमि कल्याज्मा नदीके तटपर ही थी । ओका और उसकी शाखा मस्क्वा नदीके किनारे रहनेवाले स्लाव जातिवा नाम व्यातिची था । समय-समयपर आसपासके स्लाव भी यहा आकर बसते जा रहे थे । रोस्तोफ यहाका प्रधान नगर था, जिसका उल्लेख पहले-पहल १०वी शताब्दीमें मिलता है । इस भूमिकी दूसरी प्राचीन नगरी सुज्दल थी । यारोस्लावके शासनकालमें उसने अपने नामसे यारोस्लाव्ल नगरको ११ वी शताब्दीमें बनाया । व्लादिमिर नगरको मभवत व्लादिमिर मनोमाखने १२ वी शताब्दीमें कायम किया । इस प्रकार व्यातिचियोंकी इस भूमिमें रोस्तोफ, सुज्दल, यारोस्लाव्ल और व्लादिमिर-चार नगर थे, पाचवा नगर मस्क्वा (मास्को) आगे स्थापित होकर जगद्विख्यात बननेवाला था ।

व्यातिची स्लावोंके पटोममें मेरिया, वेसी और मोर्दावी रूसी-भिन्न जन-जातिया रहती थी, जिनका मुख्य काम था शिकार, मधु-मग्नह तथा थोड़ी-सी खेती । इनके अलग-अलग कबीलोपर अपने-अपने ठाकुर शासन करते थे । रूसियोंके ईर्माई हो जानेके बाद भी यह लोग बहुत समयतक अपने जन-जातीय धर्मको मानते थे । इस समय ओका और वोल्गाके तटोपर यह काफी मध्या में बसते थे ।

१० वी शताब्दीमें रोस्तोफ-सुज्दलके इन्नाक तथा दनियेपर-उपत्यकामें भी रूसी और अ-रूसी लोगोंके गैतों और भूमियोंको बायगे और महताने अपने हाथमें कर लिया था और जन-साधारण वधुवाने रक्ष पाये थे—ओका और वोल्गाके बीचके लोगोंको पादरियोंने जवर्दस्ती ईर्माई बनाया था ।

### १२ यूरी I दीर्घबाहू, व्लादिमिर मनोमाख-पुत्र (११५७ ई०)

१२ वी सदीके पूर्वार्धमें रोस्तोफ-सुज्दलमें एक स्वतंत्र राजकुनका शासन कायम हुआ था, जिसका प्रथम गद्दीधर व्लादिमिर मनोमाखका पुत्र यूरी था । यह धनी बायरोकी जमीनको जवर्दस्ती छीन लेनेमें

आनाकानी नहीं करता था, शायद इसीलिये उसका नाम “दोलगोस्की”—दीर्घबाहू पडा। जहा पीछे मास्को नगर बसा, वही वायर कुचकाका गाव था। यूरीने उस गावको ले मास्को नदीके किनारे वही अपने लिये एक महल बनाया, जहापर ११४७ ई० में उसने अपने मित्र चेर्नीगोफके राजुलका स्वागत किया था। यह गाव सुज्दल और चेर्नीगोफ दोनों रियासतोंकी सीमापर था। यूरीने पहले मास्कोके चारोतरफ एक लकड़ीकी दीवार बनवाई, जिसे ११५६ ई० में दुर्गके रूपमें परिणत कर दिया। यूरी अपने समयका सबसे अधिक शक्तिशाली रूसी राजुल था। उसने वोल्गा-तटवाले बुल्गारोंको कई बार लड़ाईमें हराया और पुराने नगर नवोगोरदको अपने राज्यमें मिला लिया। कियेफपर भी अधिकार करके कियेफ-राजुल बनकर वह ११५७ ई० में मरा।

### १३ अन्ड्रेइ वोगोल्युवोव्स्की, यूरी-पुत्र (११५७-७४ ई०)

यूरीके पुत्र अन्ड्रेइके शासनकालमें रोस्तोफ-सुज्दलकी शक्ति और बढ़ी। उसने पड़ोसके कितने ही राजुलोंको अपना सामंत बनाया। ११६९ ई० में उसने अपने सामन्तोंकी सेनाके साथ कियेफ-पर आक्रमण किया और तीन दिनोतक उस प्राचीन नगरीको लूटा। अगले साल अन्ड्रेइने नवोगोरदके ऊपर अपनी सेना भेजी, लेकिन नवोग्रादियोंने उसे बहुत हानि उठाकर खाली हाथ लौटनेके लिये मजबूर किया। नवोगोरद अन्नके लिये सुज्दलपर निर्भर था। अन्ड्रेइने वहां अन्नका जाना रोक दिया, जिसके कारण नवोगोरद आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर हुआ। ११६९ ई० की लूट और व्सलीलाके बाद कियेफ शताब्दियोतक सभल नहीं सका, लेकिन सुज्दल-राज्यका नगर व्लादिमिर अन्ड्रेइकी राजधानी बनकर खूब फलने-फूलने लगा। अन्ड्रेइने अपनी नई राजधानीका निर्माण पश्चिमी युरोपके कलाकारों और वास्तु-शास्त्रियोंके परामर्शानुसार बड़े भव्यरूपमें किया। इसी समय व्लादिमिरमें प्रसिद्ध उपेन्स्की गिरजा बनाया गया, जिसके चित्रोंमें पाश्चात्य कलाका प्रभाव दिखाई पड़ता है। व्लादिमिर नगरके पास वोगोल्युवोवो (भगवत्-प्रिय) उसकी दुर्गवद्ध जमींदारी थी, जहापर अन्ड्रेइ अक्सर रहा करता था, इसीलिये उसको “वोगोल्युवोव्स्की” कहा जाने लगा। वह वायरोकी शक्तिको बढ़ते नहीं देखना चाहता था, इसीलिये उसने कुचका जैसे कितने ही वायरोको मार भगाया और अपने दरबारियोंमें साधारण जनोको रक्खा। लोग कहते थे—“राजुलकी जमींदारीमें घासके चप्पलमें घूमना वायरकी जमींदारीमें मुन्दर जूता पहनके घूमनेसे अच्छा है।” अन्ड्रेइने जनसाधारणसे आये अपने दरबारियों और नगर-निवासियोंकी सहायताके आधारपर रूसी रियासतोंको सगठित करनेकी कोशिश की, लेकिन अभी उनके आर्थिक सबंध इतने दृढ़ नहीं थे, कि यह सगठन मजबूत होता। इसीलिये वायरोका उच्छेद करना उसके लिये संभव नहीं हुआ। तो भी वायरोको वह बहुत असंतुष्ट कर चुका था। उन्होंने पड़्यत्र करके ११७४ ई० में वोगोल्युवोवोके प्रासादमें चुपकेसे घुसकर अन्ड्रेइको मार डाला। इसके बाद भारी लूट-पाट मची। वायर बहुत नाराज थे। वह केवल अन्ड्रेइकी हत्यासे ही संतुष्ट नहीं हुये। उन्होंने उसके भाइयोंको भी वंचित करके उसके भतीजोंको शासन करनेके लिये निमंत्रित किया। लेकिन व्लादिमिरके नागरिकों और अन्ड्रेइके छोटे दर्जेके अनुचरोने वायरोकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। वायरोने धमकाया—“हम व्लादिमिरको जलाकर खाक कर देंगे या वहां अपने पसन्दनिक (नगरपाल) अनुशासन करने के लिये भेजेंगे।” तो भी वह अपने मनोरथमें सफल नहीं हुये। नागरिकों और साधारण जनताकी सहायतासे अन्ड्रेइका भाई व्सेवोलद यूरी-पुत्रने वायरोको हराकर उन्हें अपनेको राजुल स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया।

### १४ व्सेवोलद, यूरी-पुत्र (११७६-१२१२ ई०)

व्लादिमिर (कल्याज्मातटी) राजधानी बननेके बाद अब रोस्तोफ-सुज्दल राज्यका नाम व्लादिमिर राज्य हो गया। व्सेवोलदने “व्लादिमिर-महाराजुल”की उपाधि धारण की। उसने नवोग्रादवालोंमें अपने पुत्रों और भतीजोंको गामकके तौरपर स्वीकर करवाया। स्मोलेंस्कके राजुलोंने भी उसकी अधीनता स्वीकार की। र्याज़नके न माननेपर राजुलको जेलमें डाल अपने पुत्रको वहां

ले जाकर बैठा दिया। जब लोगोंने इसका विरोध करना चाहा, तो उसने र्याज़नका बहुत तहस-नहस किया। उसकी इतनी तत्परता देखकर भी “ईगर-सेना-गाथा” के कविने स्वेवोलदके लिये कहा—

“महाराजुल स्वेवोलद अपनी नावोंके पतवारोंसे,  
तू वोल्गाके पानीको बिखरा नहीं सकता,  
और न अपने सैनिकोंके शिरस्त्राणोंसे दोनको उलीच सकता।”

वोल्गाके बुलवार अब भी शक्तिशाली थे, जिनसे स्वेवोलदने कई लड़ाइया लड़ी। पोलोवत्स्कीके खिलाफ भी उनकी भूमिमें उसने एक बहुत बड़ा अभियान किया। स्वेवोलदने सुदूर गुरजी (जार्जिया) के राजाके साथ मवघ स्थापित किया और वहाँके कारीगरोंको बुलवाकर राजधानीमें द्मित्रोफ गिर्जा बनवाया। स्वेवोलद पिताकी तरह ही वायरोसे घृणा करता था। अपने बहुतसे पुत्रोंके कारण लोगोंने स्वेवोलदका नाम “वोल्सोये ग्नेज्दा” (भूरिश कुलाय) रख दिया था। स्वेवोलदके मरनेके बाद उसके हर एक पुत्रको अलग-अलग ठकुराइया मिली, जिनकी सख्या पुत्रोंके समय पाच और पौत्रोंके समय बारह हो गई। इनमें परिवारके ज्येष्ठ व्यक्तिको व्लादिमिर नगरका राज्य तथा “व्लादिमिर-महाराजुल” की उपाधि मिलती।

### १५ यूरी स्वेवोलद-पुत्र (१२१२-१२३८ ई०)

स्वेवोलदके मरनेके बाद व्लादिमिरके राजुलोंने ओका और मध्य-वोल्गाके बीचमें रहनेवाले रूसी-भिन्न जातियोंकी भूमिको हड़पना शुरू किया। केवल मोर्दावी कितने ही समयतक और अपनी स्वतंत्रता कायम रख सके। महाराजुल यूरीने १२२१ ई०में ओका और वोल्गा नादियोंके सगमपर निज़्नीनवो-गोरद (निचला नवोगोरद, वर्तमान गोर्की) नगर और दुर्गकी स्थापना की। यहाँसे रूसी राजुल मोर्दावियोंकी भूमिमें लूट-मार करते थे। मोर्दावियोंने अपने राजा पुरगसके नेतृत्वमें जबर्दस्त प्रतिरोध किया और एक बार उन्होंने निज़्नीनवोगोरदपर आक्रमण करके उसकी बाहरी वस्तियोंको जला दिया।

यूरीको प्रभुता दिखलानेका अब मौका नहीं रह गया था, क्योंकि गद्दीपर बैठनेके समय (१२१२ ई०) जो मंगोल लूफान सुदूर चीनमें अपनी प्रलयलीला मचा रहा था, वह अब उसके घरमें पहुँच गया। यूरी अपनी मेनाके साथ वोल्गाके उत्तरमें मित नदीके करीब वोल्गाकी एक शाखाके किनारे एक बड़े मैदानमें पड़ा हुआ था। उसको खबर मिली, कि बुलवार राजधानीको मंगोल नष्ट-भ्रष्ट कर चुके। मंगोलोंका मुकाबिला करनेके लिये रूसी राजुलोंका एक होता आवश्यक था, जिसके लिये वह तैयार नहीं थे। र्याज़न मंगोलोंका पहला शिकार होता था, जिसके बाद यूरीकी बारी थी, लेकिन यूरीने र्याज़नको सहायता देनेसे इन्कार कर दिया। मंगोलोंने र्याज़नको दखलकर उसको भूमिमात् कर दिया। फिर व्लादिमिरपर आक्रमण करके उसे नष्टकर आमपासकी ठकुराइयोंके लोगोंको अपनी तलवारोंसे घामकी तरह काट डाला। एक गहरीनेके भीतर उन्होंने १४ नगरोंको दखल किया और जलाया, मान्को भी जिनमें एक था। अब (१२३८ ई०) में वा-तूके मंगोल मित नदीके पासवाले मैदानमें अग्रस्थित यूरीकी सेनापर पड़े। यूरी लड़ाईमें काम आया। वा-तू नवोगोरदकी भूमिपर भी बढ़ना चाहता था, लेकिन रास्तेके जंगलों और दलदलोंने उसे आगे बढ़ने नहीं दिया। इसके बाद मंगोलोंने जियेफ और सुदूर पश्चिममें गानिच-वोनोहुन्सके राज्योंको लेते पोलन्द तथा पूर्वी यूरोपके और भी गिनने ही राज्योंका ध्वंस किया। रूसियोंके ऊपर अब मंगोलोंका कठोर शासन स्थापित हो गया, लेकिन मंगोल जानते थे, कि सीधे शासन करनेसे किसी रूसी राजुलद्वारा शासन करना बेहतर है। इसलिए उन्होंने यूरीके भाई जारोस्लावकी व्लादिमिरका महाराजुल मान लिया।

### १६ यारोस्लाव स्वेवोलद-पुत्र (१२३८-१२६ ई०)

र्याज़नकी नियत करनेवाली सलाह न कर वा-तूने उसके मुख्य-मुख्य नगरोंमें अपने नगरपाल

(बसकाकी) नियुक्त किये । मगोल कर उगाहनेमें कितनी निर्दयता करते थे, इसे एक जनगीत बतलाता है—

यदि किसी आदमीके पास पैसा नहीं,  
तो उससे वह उसका वच्चा लेते ।  
यदि आदमीके वच्चे न होते,  
तो उससे उसकी बीवी लेते,  
यदि आदमीके गृहिणी न होती,  
तो उससे वह उसके शरीरको ही लेते ।

एक समकालीन लेखक मगोल अत्याचारके बारेमें लिखता है — “हमारे पुरखों और भाइयोंके खूनमें भूमि पानीकी तरह भीग गई, हमारे बहुतसे भाई और वच्चे बंदी बनाकर (तारतार) ले गये, हमारे गावोंमें जगल लग गये, हमारी कीर्ति धूमिल हो गई, हमारा सौंदर्य नष्ट हो गया, हमारा धन गैरोंकी संपत्ति बना, हमारे श्रमका फल काफ़िरोके हाथमें चला गया, हमारा देश विदेशियोंके हाथमें पड़ गया ।” ऐसी स्थितिमें यदि रूसमें विद्या और सस्कृतिका ह्रास हुआ, तो कोई आश्चर्य नहीं । रूसी नगरोंकी होली मचाते समय मगोलोंने प्राचीन रूसी साहित्य और कलाकी भी होली मचा दी ।

लेकिन सब तरहसे रूसियोंको निरीह और निर्बल बनाते हुये भी मगोलोंने उनके हाथमें एक बड़ा हथियार दे दिया था, वह था व्लादिमिरके महाराजुलोंको दूसरे रूसी राजुलोंके ऊपर मानना । यह काम उन्होंने किसी परमार्थ बुद्धिसे नहीं किया था—वल्कि इस प्रकार समयपर नियमपूर्वक करकी भारी राशिको प्राप्त करना उनके लिये बहुत आसान हो गया था । मगोल खान अपने डमी स्वार्थके कारण व्लादिमिरके शासकको “व्लादिमिर और सारे रूसका महाराजुल” स्वीकार करते हुये उसे पारल्लिक (अधिकार-पत्र) देते थे । कर उगाहनेके लिये जो एकता कायम हुई थी, वह मगोल-शक्तिके क्षीण होनेके समय एक सबल राजनीतिक शक्तिमें परिणत हो गई ।

नवोगोरद—पूर्वी स्लाव अभी भी जनयुगीन समाजहीमें थे, जबकि कियेफ-रूसकी स्थापना हुई थी । वस्तुतः भिन्न-भिन्न परिस्थितियोंके कारण पूर्वी स्लावोंका सामाजिक विकास अपने पश्चिमी पड़ोसियोंके बराबर नहीं हो पाया था । इसमें अपने शक पूर्वजोंके समयसे ही चली आती उनकी स्वच्छंद लडाकू वृत्ति भी काम कर रही थी । वह पशुपाल-जीवनको पूरी तौरसे छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे । यद्यपि ईसवी-सनके आरम्भ और बादकी चार शताब्दियोंमें हूणोंके पहुँचनेसे पहिले ही निम्न दनियेपर आदि प्रदेशोंमें स्लावोंने नागरिक-जीवन स्वीकार कर लिया था, और महाराजुल व्लादिमिरके ईसाई-धर्म स्वीकार करने से बहुत पहले ही ग्रीक सस्कृतिसे उनके पूर्वज अतोंका घनिष्ठ सवध स्थापित हो गया था, लेकिन अभी अधिकांश रूस जनयुगके मनोभावोंको ही अपनाये हुये था । रूसी भाषाका हमारी सस्कृत और प्राकृत भाषाकी तरह सरलपणात्मक रह जाना—शब्द और धातुकी रूपावलियोंका सस्कृत जैसे चलना—भी शायद उसी सामाजिक मद परिवर्तनके कारण हुआ । हमारे यहाँ ईसाकी ६ठी-७वी शताब्दीमें भाषा जहाँ श्लिष्ट रूपको छोड़, विश्लिष्ट बन चुकी थी, वहाँ रूसी भाषा आज भी बहुत-कुछ श्लिष्ट है । यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि रूसके सामाजिक संगठनमें जनयुगीन जनतांत्रिकताके भाव बहुत पीछेतक काम करने रहे । कियेफ रूसकी शक्तिके निर्बल होनेपर छोटे-छोटे राजुलोंके साथ बेचेका प्रभाव भी इसी बातको बतलाता है । जहाँ दूसरे राज्योमें यह साधारण जनोकी जनतांत्रिकता अपने राजुलोंको अधिक स्वच्छदता न देनेका कारण बनी, वहाँ नवोगोरदके नागरिकोंमें इसने आभिजात्यवर्ग के गणराज्यका रूप लिया और समय-समयपर होनेवाला वहाँका राजुल पूरी तौरसे गणसभा—बेचे—के हाथमें था । नवोगोरदकी परिस्थिति ही ऐसी थी, जिसने उसे एक गणतांत्रिक नगरके रूपमें विकसित होने दिया । यह स्लावोंकी एक बहुत पुरानी नगरी वोल्गाके उद्गमके पास इल्मन सरोवरमें पूर्वीय वणिक्पथके ऊपर बसी हुई थी । वहाँ हाट और मेलेका मैदान था । इसी मैदानमें नगरकी बेचे बैठा करती थी । पासके मुहल्लेमें मुख्यतः व्यापारी, शिल्पकार और मजदूर बसते थे । नगरके पूर्वकी ओर—मोफिड्सकया—में एक दुर्ग था, जिसमें प्रसिद्ध सोफिया गिर्जा खड़ा था । यही नवोगोरदका बड़ा पादरी (बिशप) रहता था ।

नवोगोरद नगरसे नवोगोरद-राज्य आरम्भ हो जाता था, जो ओनेगा और लदोगा सरोवरो एव फिनलन्डकी खाड़ीतक फैला हुआ था। नवोगोरदके वायव्य और व्यापारियोंके जहा-तहा गाव और खेतिया (कर्मन्ति) थी। उन्होंने पूरवमें उरालकी पहाडियोतककी आदिम जातियोंको अपने अधीन कर रखा था, जिनसे वह बरके रूपमें बहुमूल्य ममूरी छावें और चादी वसूल करने थे। व्यापार, जंगल और शिकारकी उन्नत नवोगोरदकी समृद्धिके कारण थे। अनाजके लिये उन्हें अपने पड़ोसी सुज्दलपर निर्भर रहना पड़ता था। नवोगोरदका मध्य वाल्मिक समुद्रके वणिक्पथमें था, जिनके जरिये वह युरोपके साथ व्यापार करते थे। जर्मन और स्वीड् व्यापारी भी इस व्यापारमें उनके सहभागी थे। वर्षमें दो बार जर्मन "अतिथि" व्यापारके लिये नवोगोरद आया करते थे। गर्मियोंके "अतिथि" फिनलन्ड खाड़ीसे नेवा नदी होकर नाव द्वारा आते, और जाडोंके "अतिथि" वाल्मिक तट (लिवोनिया) में वर्षार फिमलनेवाली बिना पहिये की गाडियो (स्लेज) द्वारा आते। उत्तरी युरोप और नवोगोरदसे व्यापार करनेवाली जर्मन नगरियों को १८ वी सदीमें हमे कहा जाता था। नवोगोरदके व्यापारी रूसकी चीजोंको इन हसीय नगरियोंके माध्यमद्वारा जहा युरोपमें पहुंचाने, वहा स्वयं युरोपीय वस्तुओंको उनमें लेकर वह रूसके नगरोंमें फैलाने। शिकारपर जीवन बितानेवाली मुद्गर उन्नरकी नेल्मी नाममें प्रसिद्ध जातियोंसे (जिन्हें नवोगोरदीय लोग समाहित कहते थे) कोमनी समूह मिलते थे। समोयित अधिक उत्तरके तुद्रा-क्षेत्रमें रहते थे। उनमें दक्षिण नायगा भूमिमें कोमी शिकारी रहते, उत्तरी उराल की ढलानों पर युग्रा कहे जानेवाले लोग रहते थे—जो कि आजकलकी मन्मी (बोगुल) और खान्ती (ओस्तियाक) जातिया हैं। इनकी भूमि (जिसे बुल्गार "अवकारभूमि" कहते थे), अपने समूरी जानवरोंके लिये प्रसिद्ध थी। तुद्रावाले लोगोंकी मुख्य जीविका थी वारहूमिगा पालना, जल-पक्षियों और ध्रुवक्षीय लोमडियों का शिकार करना। इन पिछड़ी हुई जातियोंके निरकुश राजा थे नवोगोरदीय वायर और व्यापारी। उनके अत्याचारोंमें सभी-कभी मजबूर होकर वह विद्रोह भी कर बैठती थी। ११८७ ई० में युग्रा लोगोंने नवोगोरदके वर उगाहनेवालोंको मार डाला, जिसपर कई सालतक नवोगोरदसे उनपर सैनिक अभियान भेजे जाते रहे।

नवोगोरद नगरका मध्यमें प्रभुताशाली वर्ग था वायव्यका। मध्यमें अच्छी भूमि और विजित क्षेत्र उनके हाथमें थे, जिनमें वह अपने अर्धदानों और किसानोंकी मददमें अविद्या (पोलोविना) पर खेती कराने थे। वायर अपने ग्राममियावों का बंधन छोड़कर जाने नहीं देते थे। हम्नशिल भी यहापर बहुत उन्नत था, लेकिन शिपराज भी वायव्य और व्यापारियोंके अधीन थे। गरीब मजदूरोंका काम था माल ढोना और नावें चला। उस प्रकार इस गणराज्यकी संपत्तिके मालिक थे वायर और व्यापारी। काले (चोर्निये) गरीब लोग उनके लिये अपना जीवन और श्रम भेंट करते थे। रूसी नगरोंकी तरह नवोगोरदमें भी एक राजकुल रहता था, लेकिन यहाकी वेचेकी शक्ति मध्यमें अधिक थी। १२ वीं शताब्दी के प्रथम पादमें वायव्य और व्यापारियोंद्वारा नियमित वेचेने इस बातका स्थापित किया, कि वहा के सभी मुक्त-ग्रामिण नवोगोरदकी वायव्यमें जाने जायें। ज्वादिमिर मनोमाखके पीछे ब्लेवोलदके राजकुल होनेकी समय ११३६ ई० में वेचेने विद्रोह कर दिया, क्योंकि ब्लेवोलद कुछ अधिक स्वतंत्रतामें काम लेना चाहता था। विद्रोहियोंने दो सहीनेतक ब्लेवोलद और उसके परिवारको बंदी रख फिर मुक्त कर दिया। मध्यमें वेचेकी शक्ति सर्वोपरि हो गई। यद्यपि नवोगोरद अपने यहा नदा एक राजकुल रखता था, लेकिन वह सभी भी राजकुल कुछ स्वतंत्रता दिखाने लगता, तो उसे वारिया-विस्तर वायके निबल जाना पड़ता। वेचेने सभिधानों लिये लोगोंको पट्टे बजाकर सूचना दी जाती, सभी लोग मैदानमें इकट्ठे होते। सभी-सभी एक ही समय वेचेकी बैठक में गोत्रिया और गोष्पिक्या दोनों जगहोंपर होने, दोनोंके निर्णय सभी-सभी एक ही समयमें भिन्न होने, ऐसी अवस्थामें दोनों वेचेका बोलबोला पुलके आस्पाव अगढ़ा होता। उस प्रकार वायव्य निरकुश शासनके स्थापित होनेने पहले ही नवोगोरदमें एक नवज प्रजातांत्रिक संस्था का जन्म था।

जर्मन राजाओं प्रसिद्धताके अपने व्यापार करने लिये नवोगोरद आते थे। १२वीं शताब्दी में उन्होंने फिनली शिना नदीके मुहानेपर अपनी एक व्यापारिक बस्ती स्थापित की, जो कि हमें रूसी

भूमिपर अनधिकार-चेष्टा थी। उन्होंने व्यापारके साथ-साथ ईसाई-धर्मके प्रचारका भी आड लिया जिसमें उन्हें रोमके पोपकी सहायता प्राप्त थी। लोग पूर्वजोकी पुरानी सस्कृतिके प्रतीक अपने धर्मको छोड़कर ईसाई बननेके लिये तैयार नहीं थे, इसपर पोपने उनके विरुद्ध धर्मयुद्ध घोषित कर दिया। उत्तरी जर्मन व्यापारियोने लिवोनिया (बाल्तिकतट) के विजय करनेका इसे अच्छा मौका देख इसके लिये जहाज दिये। बड़ा पादरी नियुक्त होकर जब अपने धर्मयोद्धाओंके साथ लिवोनिया आया, तो वहाके लोगोंने कहा—“अपनी सेना लौटा दो। हमें तलवारसे नहीं, बल्कि शब्दोंसे समझाओ।” लेकिन वह तो तलवारसे ईसाई-धर्मका प्रचार करने आये थे। उनके पास देशियोकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हथियार थे। लडाईमें उन्होंने लिवोनियावालोंको हराया, लेकिन बड़े पादरीका घोड़ा उसे शत्रुके दलमें ले गया, जहा प्रथम विगपको धर्म-प्रचार करते हुये गद्दीद बननेका मौका मिला। जर्मनोने सारे देशको लूट-मारकर वरदाद कर दिया। नये विगप अलवर्टने पश्चिमी द्विनाके मुहानेके पास १२०१ ई० में रीगा नगरको बसाया। वहा जर्मन उपनिवेशियोको बसाकर व्यापार और धर्म-प्रचार किया जाने लगा। अगले साल (१२०२ ई० में) खड्गवीरके नामसे पोपने एक नई धर्मसेना संगठित करनेकी आज्ञा प्रदान की। यह वीर अब खुलकर देश-विजय करने लगे। लोग विरोध करते, तो वह ग्रामो और नगरोंको जला देते, सभी पुरुषोंको मार डालते और स्त्रियो और बच्चोंको दास बनाकर बेच देते। लोग भागकर जगलोमे चले जाते, जहा यह धर्मसैनिक उनको गिकार करते पकड़ते। एक जर्मन सम-सामयिक लेखकके अनुसार—“वह उन्हें पीटते हुये गावमे ले आते। भगोडोका पीछा करते रास्तोमे होते उनके घरोंमें घुस उन्हें बाहर घसीटकर मार डालते। जो अपनी छतों या लकड़ीके टालोपर चढ़कर आत्मरक्षाका प्रयत्न करते, उन्हें पकड़कर काट डालते। गावसे भागते हुये लोगोको उनके खेतों में भी पीछा करते। वहासे यदि पवित्र देववनोकी तरफ भागते, तो वह देववृक्ष उनके खूनसे लाल हो जाते। पाचसौसे अधिक आदमी लडाईके स्थानमे और बहुतसे खेतोमे, रास्तोपर तथा दूसरी जगहोंमें मारे गये।” ईसाके धर्मके प्रचारका कैसा सुंदर तरीका था।

जर्मन धर्मयोद्धा इसलिये भी सफल हो रहे थे, क्योंकि लिवोनीय लोगोमें एकता नहीं थी। विशप अलवर्टके मरनेके बाद लिवोनी धर्मयोद्धाओंको कई बार बुरी तरहसे हार खानी पड़ी, जिससे उनका धार्मिक उत्साह कम होने लगा। इसी समय एक दूसरी जर्मन धर्मसेना—त्युतोनिक आकर मौजूद हुई। यह धर्मसेना १२वीं शताब्दीमें फिलस्तीनमें मुसलमानोंके साथ लड़नेके लिये स्थापित की गई थी, जिसे पोपने इस नये धर्मक्षेत्रमें भेज दिया। जब लिथुवानी जातिके प्रसी कवीलोकी भूमि—नीमेन और विस्तुला नदियोंके द्वाबे—में इन त्युतोनिक धर्मयोद्धाओंके पैर पड़े, तो वहा कार्ल मार्क्सके अनुसार—“१३वीं शताब्दी के अन्तमे यह समृद्ध देश निर्जन भूमिमें बदल गया, गाव और जुते हुये खेतोंकी जगह जंगल और दलदल आ मौजूद हुये। लोगोमेसे कितने ही मार डाले गये, कितनोंको बंदी बनाकर ले गये और बाकी लिथुवामे भागनेके लिये मजबूर हुये।”

१२३७ ई० मे लिवोनी खड्गवीर और त्युतोनिक धर्मसेना बाल्तिक प्रदेशको जीतनेके लिये एकताबद्ध हो गई।

### १७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की, यारोस्लाव-पुत्र (१२६३ ई०)

जर्मन धर्मयोद्धाओंके अतिरिक्त स्वीड व्यापारी भी नवोगोरदकी भूमिपर आख गड़ाये हुये थे। जर्मन धर्मवीर बाल्तिक तटको दखल कर रहे थे, और स्वीड व्यापारी फिनलन्डकी खाड़ीपर हाथ साफ करना चाहते थे, जिसमे कि वह पूर्वी युरोपके व्यापारके एकमात्र स्वामी बन जाये। १२४० ई० मे स्वीड राजा कौन्ट वर्गरके नेतृत्वमें नेवाके ऊपर स्वीडोने आक्रमण किया, लेकिन नेवाके मुहानेपर उनके उतरते ही नवोगोरदके महाराजुल अलेक्सान्द्रने उनपर भीषण प्रहार किया। इस समयतक वा-तू खानका राज्य पूरी तीरसे स्थापित हो चुका था, और महाराजुल अलेक्सान्द्रने वा-तूकी कृपा प्राप्त कर ली थी। राजनीतिक चाल हीमें नहीं, बल्कि सैनिक कौशलमें भी अलेक्सान्द्र असाधारण पुरुष था। एक समकालीन लेखकके अनुसार—“विजय करते हुये वह अजेय था।” अलेक्सान्द्रके नेतृत्वमें नवोगोरदके सैनिकोंने

अद्भुत वीरताका परिचय दिया। स्वीड पूरी तौरसे पराजित हुये और वह अपने जहाजोंपर बैठकर भाग निकले। नेवा-तटपर हुई इसी विजयके उपलक्ष्यमें अलेक्साद्रका नाम अलेक्साद्र नेव्स्की पड़ गया। आज भी मोवियन इसके दूमरे मन्दिरके मवमे बड़े नगर लेनिनग्रादके प्रसिद्ध राजपथका नाम नेव्स्की है।

अलेक्साद्रने और भी लडाइया लड़ी, लेकिन इसके पहले एक बार उसे वेचेका कोषभाजन हो नवो-गोरदके निर्वाचित होना पड़ा था। पर जब वाल्तिक-तटमें जर्मनोंने आक्रमण किया, तो वेचेने फिर उसे बुला लिया, और कई लडाइयोंमें उसने जर्मनोंको बुरी तरहसे हराया, जिनमें ५ अप्रैल १२४२ ई० को लड़ी गई "वर्फकी लडाई" निर्णायक साबित हुई। नवोगोरदके लोगोंने पांच सौ जर्मन वर्मवीरोको मारकर उन्हें मान भीलतक खदेड़ा और पचास बंदी बनाये। इस युद्धमें हारनेके बाद जर्मन वीरोने फिर इसी भूमिकी ओर हाथ बढ़ानेकी हिम्मत नहीं की।

नवोगोरदवालोंने ही अपनेसे पश्चिम वाल्तिकके रास्तेपर स्कोफ नगर स्थापित किया था, जो १४वीं शताब्दीमें नवोगोरदमें स्वतंत्र हो एक गणराजीय नगरमें परिणत हो गया। स्वतंत्र गणनगर होते हुये भी नवोगोर्द और स्कोफके लोग अपनेको व्लादिमिर-महाराजुलके अधीन मानते थे। १४वीं शताब्दीके प्रथम पादमें व्लादिमिर-राज्यके भीतर एक और घेन्लू मघर्ष त्वेर तथा मास्कोके राजुलोंके बीच शुरू हो गया। यह दोनों नगर ऐसी जगह स्थित थे, जहापर मंगोल मुश्किलमें पहुँच पाते थे, इसीलिये दूसरी जगहोंके भी कितने ही शरणार्थी यहां आकर बस गये थे, जिसकी वजहसे दोनों नगरोंका आर्थिक विकास बड़ी तेजीमें हुआ। त्वेर ऊपरी वोल्गा तथा उसकी शाखा त्वेरत्साके संगमके पास बसा हुआ था। नवो-गोर्दने वोल्गा होकर कास्पियनतक जानेवाले वणिक्पथको त्वेरमें होकर गुजरना पड़ता था। इसी व्यापारके कारण त्वेरके नागरिक बड़े समृद्धिशाली हो गये थे।

मास्को नगर वोल्गामें गिरनेवाली ओका नदीकी शाखा मास्क्वाके तटपर अवस्थित था। ऊपरी वोल्गासे ओकाकी ओर सीधा आनेवाला वणिक्पथ मास्कोकी भूमिमें गुजरता था। यहाँमें निम्न-वोल्गाकी ओर भी आनानीमें जाया जा सकता था, साथ ही दोनोंका ऊपरी भाग नजदीक होनेके कारण अजोफ और कालामागर होते पूर्वी यूरोपका वणिक्पथ भी यहाँमें खुला हुआ था—क्रिमिया और कालामागरके तट-पर इतानीके व्यापारियोंने अपनी बहुतसी व्यापारिक वस्तिया बसा रखी थी। इन्हीं कारणोंमें मास्को-को विकासवा त्वेरमें भी अधिक नुमीना प्राप्त था।

## ग मास्को महाराजुल

### १८ दानियल, अलेक्सान्द्र नेव्स्की-पुत्र (१२६३-१३०३ ई०)

१३वीं शताब्दीके आरम्भमें मास्कोकी एक छोटीसी रियासत थी, जिसमें मास्को नगर तथा राजा और ज्वेनीगोन्दके दो और छोटे-छोटे कस्बे सम्मिलित थे। लेकिन अब उसपर अलेक्सान्द्रका पुत्र दानियल राज्य बन रहा था, जो अपने पिताकी तरह ही योग्य और महत्वाकांक्षी था। १३०१ ई० में उसने मास्क्वा और ओकाके संगमपर अवस्थित कलोम्ना नगरको ले लिया। १३०२ ई० में उसे पानके परेयारत्वन राज्यका उत्तराधिकार मिला, जिसके कि अधीन पहिले मास्को था। अब मास्को ज्यादा बढ गया था, तो भी अभी वह त्वेर (आधुनिक व्लादिमिर) का मुकाबिला नहीं कर सकता था, विशेष-तः इर्गानर भी कि मंगोल खानने वहाँके महाराजुल मिखाइल चारोस्नाव-मुश्को १४ वीं शताब्दीके आरम्भमें ही "व्लादिमिर-महाराजुल" स्वीकार कर लिया था। किन्ती इसी राजुलको अधिक शक्तिशाली बनाने दिया जाये, उसके लिये मंगोल खानोंकी यह नीति थी, कि वह कभी एकका समर्थन करते आगे नहीं बढ़ेंगे। उज्जव खानने व्लादिमिरके महाराजुलको अधिक शक्तिशाली देख मास्कोके राजा यी दानियल-पुत्रका पक्ष लेना शुरू किया।

### १९ यूरी III दानियल-पुत्र (१३०३-२५ ई०)

यहाँमें त्वेर उज्जव खानकी इतनी बुरा थी, कि उसने अपनी बहिनको यूरीमें ब्याह दिया और त्वेर पर राज्य करने के लिये मंगोल सेना साथ कर दी। उज्जव खानको मुस्लिम इतिहासकार



पक्का मुसलमान कहते हैं, तो भी राजनीतिमें वह इस तरहके व्याहको बुरा नहीं समझता था। यह भी याद रखनेकी बात है, कि पश्चिमके मंगोल शासकोंमें सभी मुसलमान नहीं हुये, बल्कि कितने ही व्याह-शादीके सम्बन्धसे ईसाई होकर रूसियोंके भीतर हजम हो गये। मंगोलोकी सहायताके बाद भी यूरीकी हार हुई और उसकी रानी—उज्वेककी बहिन—ब्रदिनी बनी, और उसी अवस्थामें मर भी गई। यूरीने खानके सामने त्वेर-महाराजुल मिखाइलके ऊपर इल्जाम लगाया, कि उसने उसे जहर देकर मरवा दिया। खानने मिखाइलको मृत्युदंड दिया और यूरीको महाराजुलका पद प्रदान किया। इसी समयसे मास्कोका सितारा चमकने लगा। यूरी बहुत दिनोतक इस पदका उन्भोग नहीं कर सका और वह मिखाइलके एक पुत्रद्वारा मारा गया। उज्वेकने यूरीके हत्यारेको मरवा डाला, लेकिन मास्कोको अधिक शक्तिशाली न होने देनेके लिये अबकी महाराजुल-पदको उसने मिखाइलके पुत्र अलेक्सांद्रको प्रदान किया। पर, रूसके आर्थिक जीवनमें मास्कोकी जैसी स्थिति थी, उसके कारण पासा पलटा नहीं जा सकता था।

## २० इवान I खलीता, दानियल-पुत्र (१३२५-४१ ई०)

मास्कोमें यूरीका स्थान उसके भाई इवान I ने ले लिया, जिसका नाम खलीता (पैसेका थैला) पड़ गया था, क्योंकि उसके पास बहुत पैसा था। इवान खलीता ही नहीं था, बल्कि वह बड़ा चतुर और कुटिल शासक भी था। मास्कोकी शक्ति बढ़ानेके लिये वह हर तरहके हथियारोको इस्तेमाल करनेके लिये तैयार था। उस समय रूसी सघराज व्लादिमिर नगरमें रहता था—कियेफके नष्ट हो जानेके बाद सघराजकी गद्दी यही चली आई थी। यूरीने कोशिश की थी और इवान खलीताने भी कोशिश करके सघराज पीतरको इस बातके लिये राजी कर लिया, कि वह अपनी गद्दीको व्लादिमिरसे मास्को ले आये। तबसे मास्को रूसके सबसे बड़े धर्माचार्यकी राजधानी बन गया, जिससे मास्कोकी शक्ति बढ़नेमें बड़ी सहायता मिली। अब धार्मिक बहिष्कारकी धमकी देनेसे छोटे-मोटे राजुल भी मास्कोकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार हो जाते। धर्मराजका कोश भी मास्को-राजुलकी सहायता करनेके लिये तैयार था। इवान खलीता मंगोल खान, उसकी खातूनो और अनुचरोपर सोनेकी वर्षा करनेके लिये तैयार रहता था, फिर वह क्यों न उसके पक्षमें होते? १३२७ ई० में खानने अपने दूत चोलखानको एक बड़ी मंगोल सेनाके साथ त्वेरके विरुद्ध भेजा। मंगोलोंने नगरको लूटना शुरू किया, इमपर लोगोंने विद्रोह कर दिया और चोलखान तथा उसके सैनिक खतम कर दिये गये। इवान खलीताने दौड़कर खानके पास पहुँच त्वेरको दंड देनेके लिये अपनी सेवार्यें पेश की। खानने उसे एक बड़ी मंगोल सेना दी। इवानने त्वेरपर आक्रमण करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। त्वेरके महाराजुल अलेक्सांद्रने भागकर स्कोफमें शरण ली। सघराजने स्कोफवालोको धार्मिक बहिष्कारकी धमकी दी। उनसे सहायता न पा महाराजुल लिथुवानिया भाग गया। पीछे वह त्वेर लौटा और खानने भी उसे क्षमा कर दिया, पर पीछे फिर इवान खलीताकी चालोमें पड़कर खानने उसे ओर्दूमें बुलवाकर मार डाला। मास्को-राजुलका मनोरथ सिद्ध हुआ और १३२८ ई० में उसे महाराजुलका पद मिल गया। यही नहीं, सारी रूस भूमिसे कर उगाहनेका इजारा भी खानने खलीताको दे दिया। खलीता समयसे पहले ही नगद कर वेवाक करने के लिये तैयार रहता था, फिर खान क्यों नहीं वैसा करता? इवान खलीताने अपने शत्रुओको दवाने तथा मास्कोकी शक्तिको बढ़ानेमें किपचक (मंगोल) खानका खूब इस्तेमाल किया। उसके मरने समयतक मास्को राज्य काफी विस्तृत हो चुका था, और उसका प्रतिद्वंद्वी त्वेर अपनी समृद्धिके बहुतसे साधनोको खो चुका था। अब सारी मास्क्वा-उपत्यका (कलोम्नासे मोजाइस्कतक) मास्को-महाराजुलकी थी—मास्को-साम्राज्यकी नींव पड़ गई।

## २१ सेमेओन, इवान I-पुत्र (१३४१-५३ ई०)

खलीताके मरनेके बाद महाराजुल पद उसके पुत्र सेमेओनके हाथमें रहा।

## २२ इवान II, इवान I-पुत्र (१३५३-५९ ई०)

भाईके बाद इवान I गद्दीपर बैठा, फिर उसका पुत्र दिमित्रि मास्कोका स्वामी बना।

## २३ दिमित्रि दोन्स्की, इवान II-पुत्र (१३५९-८९ ई०)

महाराजकुलको तरुण देखकर पड़ोसी राजुलोने मास्को-राज्यपर हाथ फेरना चाहा, लेकिन दिमित्रिको पीठपर अब सघराज अलेक्सी और मास्कोके बायरोंका हाथ था। जिनके प्रयत्नसे खानने दिमित्रिको महाराजकुलवा पद प्रदान किया। बायरोंने बालक दिमित्रिको घोड़ेपर चढ़ाकर प्रतिद्वंद्वी सुज्दल राजुलपर आक्रमण कर दिया और हाथसे निकल गये ब्लादिमिर-नगरपर फिर अधिकार कर लिया। दिमित्रिके ३६ वर्षके शासनमें मास्कोकी शक्ति बहुत बढ़ी, जिसमें एक कारण (मंगोल सुवर्ण-ओर्दूकी) शक्तिनवा कमजोर होना भी था। १३६६ ई० में दिमित्रिने मास्कोको पत्यरकी दीवारोंसे दुर्गबद्ध किया, इसमें पहले उसके चारों ओर वजकी लकड़ीका नगर-प्राकार था। उसने त्वर, र्याजन और निम्नोनोंमोन्दके राजुलोपर जवर्दस्त आक्रमण किये, जिसपर उसके शत्रुओंने लिथुवन राजा ओलिगर्दसे मदद ली, और तीन बार मास्कोके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन मास्को अजेय साबित हुआ। पादरी, नगरराज अलेक्सी और बायर सब तरहसे मदद देनेके लिये तैयार थे। मास्कोने कोमी जातिके लोगोको अपने अधीन कर उन्हें ईसाई बनानेका प्रयत्न किया। ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ मास्कोकी शक्ति बढ़ती गई। शक्तिसे मदद मास्कोने मंगोलोंमें भी छेड़-छाड़ शुरू की। अब मंगोलोंका सुवर्ण-ओर्दू छोटे-छोटे गानोंमें बंट चुका था, जिनमें सबसे शक्तिशाली ममाईखान था। मास्कोकी इस छेड़छाड़की मंगोलोंमें बदलाव करते ? ममाईने १३७८ ई० में र्याजनपर आक्रमण करनेके लिये एक तारतार सेना भेजी, जिसका लक्ष्य था मास्कोकी ओर बढ़ना। लेकिन ममाईकी सेनाको वोल्गा नदीके किनारे भारी हार खानी पड़ी। ममाईने अब लिथुवानी राजा जागिएलोमे समझौता किया और स्वयं एक बड़ी सेना लेकर नदियोंके लिये आगे बढ़ा। र्याजनके राजुलने अपने प्रतिद्वंद्वी मास्कोके महाराजकुलके विरुद्ध ममाईसे मिल कर लिया। उधर महाराजकुल दिमित्रिने भी डेढ़ लाखकी सेना एकत्रित कर ली थी। जातीयताके जोशमें आग्र भागी नम्यामें रूसी राजकुलके अंटेके नीचे डकट्टा हो गये थे। यही नहीं, राजा ओलिगर्दके दो लिथुवानी राजकुमार भी वेनोम्नी और लिथुवानी सैनिकोंके साथ ममाईसे युद्ध करनेके लिये आये। दिमित्रि-न अपने सेनामहिता ओकापार हो दोनों किनारे पहुँच युद्ध-परिपद बुलाई। कुछ लोगोकी राय थी "दोनोंके पास जाओ राजकुल" और दूसरे कह रहे थे "मत जाओ, वहाँ बहुत शत्रु है।" दिमित्रि मना करने-वाला तो बात न मान दोनपार हो गया। ८ मिनम्बर १३८० ई० को कुलिकोवोका भीषण और निर्णायक युद्ध हुआ। कुलिकोवोका युद्धक्षेत्र नेप्र्यादा नदी और दोनों के संगमपर अवस्थित था। युद्ध भीषण हुआ, कई मौतोंकी घन्टी गूँगने लान हो गई, जहाँ जगह-जगह लाशें पड़ी थी। तारतारोको पहले युद्ध गहरना हुई, लेकिन छठी गमय छिपे हुये रूसी सैनिकोंने अपना पीछा करते तारतारो पर पीछेकी ओरसे आक्रमण कर दिया। ठीक समयपर हुये इस जवर्दस्त प्रहारसे तारतारोकी पूरी हार हुई। वह जान बचानेके लिये भाग निकले और रूसी सवारोंने पीछा करके उनके शिविरको भी जला दिया। दोनपार हुये रूसी युद्धके विजयके उपलक्ष्यमें दिमित्रिको "दोन्स्की" (दोनवाला) कहा जाने लगा।

दो नवम्बर को दो दिन बाद तोकनामिशने लड़ते हुये ममाई मारा गया। उसके बाद तोकनामिशने १३८२ ई० में महाराजकुल पर आक्रमण कर दिया। महाराजकुल दिमित्रि तैयार नहीं था, इसलिये रूसी भागी करनेको पर उत्तर जाना गया। बायरोंने भी जान लेकर भागना चाहा, इसपर मास्कोमें शिष्टाचार था। रूसीयता-प्रेमी नगरवासियों ने श्रेष्ठतम (दुर्ग) के फाटकपर पहरेदार बैठा दिये, जिससे महाराजकुल और नगरराज अतिशय घोर नगरमें बाहर न जाने पाये। तोकनामिशकी सेनाने नगरपर आक्रमण किया। नागरिकोंने उसका पूरा प्रतिरोध किया। तीन दिनतक लड़ाई करनेके बाद भी नगर पर उस नागरिकोंने छत्रों चढ़ाये। मुखाया दे नगरके दरवाजेको खुलवाया और नगर पर उसका अधिकार किया। इससे बाद रूसी लोग फिर शिष्टाचार का करने लगे। यद्यपि कुलिकोवोके युद्धके बाद भी, रूसी सैनिकोंके युद्धमें मुक्त नहीं कर दिया, किन्तु उनके मनमें अब यह भाव पैदा हो गया था, कि जो शक्तिशाली नगरोंके अन्तर्गत नगरोंका नगर बनाने हेतु।

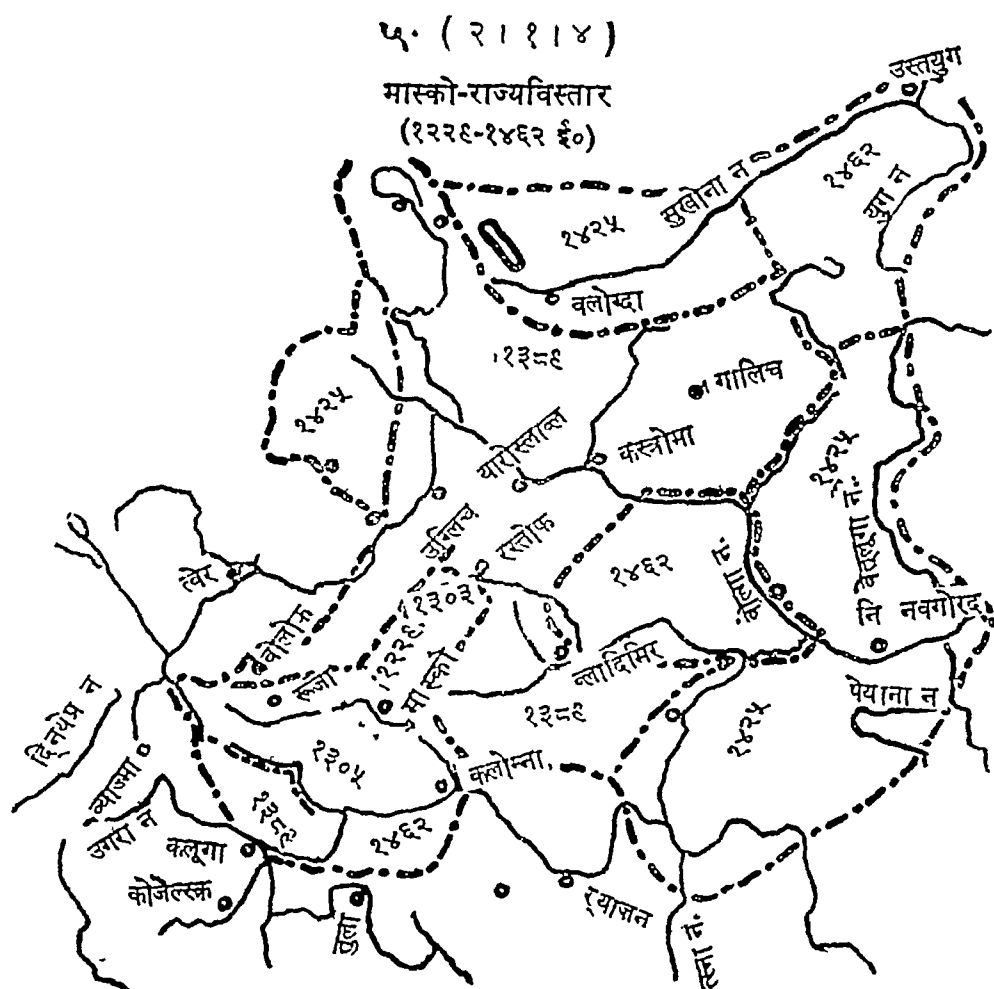
## २४. वासिली I, दिमित्र-पुत्र (१३८९-१४२५ ई०)

पिताके कामको पुत्रने और आगे बढ़ाया। वासिलीने निज़नीनवोगोरदको ले लिया।

## २५ वासिली अध II वासिली I-पुत्र (१४२५-६२ ई०)

वासिलीके पुत्र वासिलीको अपने मनोरथमें अधिक सफलता प्राप्त करनेमें सबसे भारी बाधा पारिवारिक सघर्ष था। उसका चचा यूरी स्वयं महाराजुल बनना चाहता था। खानने वासिलीको जब यह पद प्रदान किया, तो दोनोंमें खुला सघर्ष शुरू हो गया, जो बीस सालतक जारी रहा। इस सघर्षमें कितनी ही बार मास्को एक हाथसे दूसरे हाथमें जाता रहा। एक बार वासिली तीर्थयात्राके लिये त्रयोत्सा गया हुआ था, उसी समय उसके प्रतिद्वंद्वी राजुल शेम्याकाके सिपाहियोंने उसे पकड़कर मास्कोमें ले जा अधा कर दिया, जिसके कारण उसका नाम त्योम्नी (अध) पड़ गया। वासिलीने फिर जल्दी ही अपने राज्यको प्राप्त कर लिया, और उसके बाद उसकी शक्ति फिर बढ़ी।

१४ वी सदीके अन्तमें रूसमें ईसाई-धर्मके प्रचारके साथ-साथ विद्याका प्रचार भी कमसे कम उच्च वर्गमें काफी था, लेकिन अध वासिली “निर्ग्रन्थ और निरक्षर” था, जिससे सिद्ध है, कि अभी रूसी सामन्तवर्गमें विद्याकी उतनी आवश्यकता नहीं मानी जाती थी।



## २६ इवान III, वासिली अध-पुत्र (१४६२-१५०५ ई०)

पीढ़ियोंसे धीरे-धीरे संचित होती मास्को-राजशक्ति अब बिल्कुल स्पष्ट दिखने लगी। इवान III सारे उत्तर-पूर्वी रूसका एक सुसंगठित राज्य बना लिया। नवोगोर्द अभीतक मास्कोसे अपनेको स्वतंत्र



भी इवानने अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। उसने उरालकी ओर भी कई अभियान भेजे। १५०० ई० में इवानकी सेनाने उराल पर्वतश्रेणी अर्थात् युरोपकी सीमासे पार हो एसियाकी सीमासे पैर रखवा। वहाके निवासी नेन्सी अब मास्कोके करद बन गये। राज्यविस्तारके प्रयत्नमें कितनी ही बार उसे बाधाका भी सामना करना पडा, लेकिन बाधाओके होते भी इवान आगे बढ़नेमें सफल रहा। सैनिक-शक्ति तो उसकी प्रबल थी ही, किन्तु उससे भी अधिक उसकी कूटनीति काम कर रही थी। क्रिमिया और साइबेरियाके तारतारोको मुवर्ण-ओर्दूके अवशेषमें भिडाकर उसने अपना काम निकाला।

मास्को नगरी जहा एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानी हो गई थी, वहा वह व्यापारका भी सत्रसे बड़ा केंद्र थी। जाडोमें वर्ष बनी हुई मास्क्वा नदीके ऊपर व्यापारी अपनी दूकानें रखते थे। एक युरोपीय यात्रीने उस समयका वर्णन करते हुये लिखा है—“सारे जाडेभर अनाज, मास, सूअर, ईबन, भुस और दूसरी आवश्यक चीजे बेचनेके लिये वहा लाई जाती है। नवम्बरके अन्तमें मास्कोके पास-पडोमके लोग अपनी गायो और सूअरोको मारकर नगरमें बेचनेके लिये लाते हैं। यह बड़ा आनन्दका दृश्य होता है, जबकि वर्षके ऊपर चमडे निकाले हुये जानवरोको बहुत भारी परिमाणमें अपने पैरोपर हम खड़ा देखते हैं।”

इवान III ने मास्कोको एक बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय शक्तिमें परिणत कर दिया। उसने शासन, सेना, और कोशको जहा केंद्रित कर दिया, वहा सैनिक हथियार और कौशलमें भी बहुत वृद्धि की। इवानने पश्चिमी युरोपसे कारीगरोको बुला तोपे ढलवाकर रूसी तोपखानेको मजबूत किया। उसकेद्वारा स्थापित रूसी तोपखाना तबसे ही दुनियाका सबसे शक्तिशाली तोपखाना बन गया, जिसे सोवियत-कालमें भी रूसने अक्षुण्ण रखा—हिटलरकी सेनाओको भगानेमें रूसी तोपोंका काफी हाथ रहा। इवानको अब सभी राजा अपनी उच्च विरादरीमें सम्मिलित करनेके लिये प्रस्तुत थे। जर्मन-सम्राट्ने राजाकी उपाधि देनी चाही, लेकिन इवानने “मुझे उसकी आवश्यकता नहीं” कहकर लेनेमें इन्कार कर दिया। पोपने भी उसकी ओर मित्रताका हाथ बढ़ाया। वेनिसके धनी गणराज्य तथा पश्चिमी युरोपके दूसरे व्यापारी कालासागर और क्रिमिया होते मास्को पहुंचने लगे। इवानने पश्चिमी युरोपसे तोप ढालनेके लिये ही कारीगर नहीं मगवाये, बल्कि वास्तुशास्त्री तथा शिल्पशास्त्रियोंको भी बुलाया।

इवानके प्रभावको बढ़ानेके लिये इसी समय एक और भी अच्छा मौका मिल गया। ईसाई धर्म कैथोलिक और अर्थोदक्स दो सम्प्रदायो (चर्चों) में विभक्त है, जिसमें कैथोलिक पोपका केंद्र रोम नगर है और ग्रीक अर्थोदक्स चर्चका महासंघराज कान्स्तन्तिनोपोलमें रहता था। १४५३ ई० में तुर्क सुल्तानने कान्स्तन्तिनोपोलपर अधिकार करके पूर्वी रोमक (विजन्तीन) साम्राज्यको खतम कर दिया। तुर्कोंका राज्य कालासागर-तट, काकेशस और बलकानमें दन्यूब नदीके किनारे बीना नगरके पासतक फैल गया। वेनिस और पोपकी मध्यस्थतासे इवानन अन्तिम ग्रीक सम्राट्की भतीजी सोफिया पालेओलोगससे व्याह किया। वेनिस और रोमको आशा थी, कि इस प्रकार वह इवानकी शक्तिसे तुर्कोंको खतम करनेमें सफल होगे, लेकिन इवान किसीका हथियार बननेके लिये तैयार नहीं था। क्रिमियाके खानोंद्वारा इवानने तुर्कोंके साथ सम्बन्ध स्थापित किया। ईरानसे भी उसने सम्बन्ध स्थापित किया। इस प्रकार मास्कोके व्यापारी कान्स्तन्तिनोपोल और ईरान तककी यात्रा करने लगे। इन्ही व्यापारियों में त्वेर (कलनिन) नगरका अफनासी निकितिन भी था, जिसने १४६७-७२ ई० में ईरानके रास्ते समुद्रद्वारा भारतकी यात्रा की थी। अफनासीने अपना यात्राविवरण “खोजेनिये जा-त्रि-मोर्या” (तीन समुद्रों पारकी यात्रा) लिखकर हमारे लिये छोड़ा है।

अफनासीकी भारतयात्रा—त्वेरके रूसी सौदागर निकितिन अफनासीने “तीन समुद्रों पारकी यात्रा” की थी। वह मास्को-द-गामाके भारत पहुंचने (१४९८ ई०) से ३२ वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमें आ वहमनी (बीदर) सुल्तान मुहम्मदशाह III (१४६२-८३) के राज्यमें ६ वर्ष (१४६६-७२ ई०) तक रह रूस लौट स्मोलेन्स्कमें मर गया। उसके यात्रा-विवरणके कुछ अंग हैं —

मैं पवित्र म्या (त्राता) के निजे में महान् राजुल मिखाइल बोरिसपुत्र और त्वेर के प्रधान पादरी गेनान्दीनी कृपामयी अनुमति प्राप्त कर रवाना हुआ। वोल्गा नदी से चलकर पवित्र शहीद बोरिस और उनके 'जिवो नचालन्या ओट्ज़ा' (जीवन प्रदायक त्रिमूर्ति) के पवित्र मठ में पहुँचा। साधु मकरी और उनके भाई मुझे गाथीवाँद दिया। (फिर) मैं उगलिच गया। उगलिच से कोस्त्रोमा (त्वेर) के पवित्र अलेक्सांद्रो पाम पहुँचा। मारे रुस के शासक ने मुझे स्वतंत्र जीवन प्रदान किया। इसी तरह मुझे निज्नीनोवोगोर्द में उपमर्यादक मिखाइल किस्लेफ और जकात-अफमर इवा सारा के पास जाने की अनुमति मिल गई।

मैंने पहले ही वानिलो और पापी (मैं) चल पड़े थे। फिर भी मुझे (निज्नी) नवोगोर्द में शाह निखान के ताना राजदूत हमनवेग के लिये प्रायः दो सप्ताह रुकना पड़ा। वह महाराजुल इवा के पास नष्ट ब्रज लेकर आया था। मैं जहाज पर चढ़ उसके साथ वोल्गा की राह चला और कुशलपूर्वक बत्तान, उर्दा, ओगलान, मराड और बरेकेजाम लाघ गया।

हम ब्रुजान नदी में पहुँचे। वहाँ हमें तीस बरमाश तातार मिले। उन्होंने हमें गलत खबर दी, कि राजानस वानिग या तीन या तातागे के साथ पड़ा मोदागरो की राह देख रहा है। गिरवान के राजदूत तानवेग ने उनमें प्रत्येक को तीन-तीन मलमल के थान दिये, जिसमें वे हमें अस्त्राखान के आगे तक पहुँचा दें। मैं अपना जहाज छोड़कर अपने साथियों के साथ राजदूत के जहाज पर सवार हो गया। हम अस्त्राखान तक पहुँचे, (आकाश में) बाद चमक रहा था, इसी समय वहाँ के हाकिम ने हमें देख लिया। उन्होंने तातागे को चिल्लाकर कहा—भागना मत! और उसने हमारे पीछे अपने सिपाही छोड़ दिये। ब्रुजान पहुँचने पर उन्होंने हम पापियों को पकड़ लिया, और हममें से एक को गोली मार दी। हमने भी उनके दो आदमी मार डाले। हमारे छोटे जहाज को वहाँ रोककर उन्होंने लूट लिया और मेरा गाँव मामान नौकाने साथ ही उनके बन्जों में चला गया।

बर्जा नौकाने (भागवर) हम समुद्र-तट तक पहुँचे, लेकिन (हमारी) नाव वोल्गा के मुहाने पर जमीन पर टप गई। ताना वहाँ हम आ पकड़ कर और नाव को पानी में खींच ले गये। उन्होंने (हम) चार मलमलों को पकड़ लिया और वानियों को समुद्र की ओर भगा दिया। वह हमें बहाव के विरुद्ध जाने नहीं दे दे, जिसमें हम उनके विरुद्ध खबर न दे दें।

अब हम दो नावों में दम्बन्द (काम्पियन) समुद्र की ओर चले। एक में राजदूत हमनवेग, हम रुसी पापी राजानो—युन दग आदमी थे और दूसरी में छ मास्कों के और छ त्वेर के निवासी चल रहे थे। इस नाविक साधने हम नूफानम पट गये और तट से टकरा जाने से छोटी नाव के लोगों को केताकोने

हम कोइतुलमे शिरवान शाहके पास पहुँचे । हमने उससे बड़ी मिन्नत की, कि वह हमपर दया करे और हमारे रूस लौटनेमें मदद करे, पर हमारी सख्या बहुत थी । उसने हमें कुछ न दिया । बहुत रो-धोकर हममेंसे हर एकने अपनी राह ली । जिनको रूसमें काम था, वह रूस चले गये, कुछ उधर जिधर उनकी आखें ले गईं गये, कुछ शेमाखमें ही पड़े रहे और कुछ काम करने वाकू चले गये ।

मैं फिर दरबन्दसे वाकू गया, जहा कभी नहीं बुझनेवाली अग्नि (ज्वालामाई) सदा जलती रहती है । वाकूसे मैं समुद्रकी राह चपकुर जा वहा छ महीने रहा । फिर जाकर माजन्दरानके मुल्कमें सारामें एक महीने रहा । उसके बाद मैं आमूल गया और वहा एक महीने रहा । फिर आमूलसे मैं देमावन्द गया और देमावन्दसे रैं (तेहरान) । यही मुहम्मद (पैगम्बर) के पोते और अलीके बेटे शाह हुसैनकी हत्या हुई थी और उसके शापसे सत्तर नगर नष्ट हो गये थे । रैंसे मैं गजान आया और वहा एक महीना रहा । गजानसे नाइन और नाइनसे येज्द (उयेज्द), जहा मैं एक महीना ठहरा । येज्दके बाद मैं सिर्दजान आया और फिर तारूम, जहा मवेगियोकी चारों 'अल्वीन' के बदले खानेको खजूर देते हैं ।

तारूमसे मैं लार गया और लारसे बन्दर । यही ओरमुज्द (ओर्मुज) का बन्दर है । फिर भारतीय सागर, जिसे फारसीमें हिन्द-समुद्र कहते हैं । ओरमुज बन्दरसे समुद्र केवल चार मील है ।

हिन्दू मास नहीं खाते, न तो बाज्र मवेशीका, न भेडका, न मुर्गे-मुर्गियोंका और न मछलीका । वह सूअर भी नहीं खाते, यद्यपि देशमें सूअरोंकी बहुतायत है । दिनमें वह दो बार भोजन करते हैं, और रातमें कुछ नहीं खाते । वह शराब नहीं पीते और न दूसरा ही ऐसा पेय, जो नशा कर दे । वह मुसलमानोंके साथ नहीं खाते-पीते । उनका भोजन अच्छा नहीं होता । वह आपसमें भी एक दूसरेके साथ नहीं खाते-पीते, ( यहातक कि ) अपनी पत्नियोंके साथ भी नहीं (खाते) । वह चावल और रोगन (घी) मिली खिचड़ी और अनेक प्रकारकी सब्जिया खाते हैं, जिन्हें वह रोगन (घी) या दूधके साथ पकाते हैं । वह दाहिने हाथसे खाते हैं, बायें हाथसे कुछ नहीं खाते । वह चम्मचका इस्तेमाल नहीं जानते । सफरके समय हर आदमी अपना भोजन (खीर) आप पकाता है । भोजनके समय वह पर्दा कर लेते हैं, जिसमें मुसलमान उनका खाना न देख ले । अगर मुसलमान खाना देख ले, तो हिन्दू उसे नहीं खायेगे । खाते समय वह अपनेको कपड़ेसे भलीभाँति ढाक लेते हैं, जिसमें कोई उन्हें देख न सके ।

रूसियोंकी ही भाँति हिन्दू भी पूर्वकी ओर मुह करके प्रार्थना करते हैं । वह दोनों हाथ ऊपर उठाकर सिरपर रख लेते हैं, फिर जमीनपर पड़ जाते हैं, यही उनका प्रणाम (साष्टांग प्रणाम) करना है । भोजनके पहले उनमेंसे कुछ (लोग) अपने हाथ-पाव धोते हैं और कुल्ला करते हैं । देवालियोंमें कोई दरवाजा नहीं होता, उनका रुख पूर्वकी ओर होता है—कुछ मूर्तियोंका मुख उत्तरकी ओर भी होता है । जब हिन्दुओंमें कोई मर जाता है, तो उसके शरीरको जलाकर राखको पानीमें डाल देते हैं । जब किसी औरतके वच्चा होता है, तो पति उसे ले लेता है । लडकेका नामकरण पिता करता है और लडकीका माता । उनके आचार-व्यवहार अच्छे नहीं हैं और न उनमें कोई शर्म है । मिलते और अलग होते समय वह ईसाई साधुओंकी भाँति अपने दोनों हाथ जमीनकी ओर कर लेते हैं, कुछ बोलते नहीं ।

दाबुलसे कालीकट २५ दिनका रास्ता है, कालीकटसे सिंहल (लका) १५ दिनका । सिंहलसे जावत (जावा) १ महीनेका, जावतसे पेगू (बर्मा) २० दिनका, पेगूसे चीन और महाचीन फिर एक महीनेका । यह सारी यात्रा समुद्रकी राह है । चीनसे खिताईकी यात्रा खुश्कीसे छ महीनेकी और समुद्रसे चार दिनकी है । भगवान् मेरी रक्षा करे ।

बीदरमें तीन दिनो तक चाद प्रायः पूरा चमकता है । हिन्दुस्तानमें गर्मी बहुत नहीं है । ओर्मुज और वहरैनमें—जहा मोती निकलती है—बड़ी गर्मी पडती है, जहा, वाकू, अरब, मिस्र और लारमें भी । खुरासानमें गर्मी इतनी ज्यादा नहीं, लेकिन चगताई (मध्य-एसिया) में बहुत है । शीराज, येज्द और कजानमें गर्मी है, पर वहा जोरकी हवा चलती है । गीलानमें बड़ी गर्मी है, बहुत पसीना निकलता है । दाबुल, खुम्स और दमश्क भी गरम हैं । अलेफ इतना गरम नहीं । शेवास्त और जाजियागे सभी कुछ बहुतायतसे मिलता है । वैसे तुर्कीमें भी सब चीजोंकी बहुतायत है । रूमानियामें फल बहुत है और खानेकी सभी चीजें

गन्ती है। पोटोलियामें फन सब जगहोंमें अधिक होते हैं। भगवान् रूसकी रक्षा करे, भगवान् उसे दबाये। इन मंगोलोंमें रूसके समान (अच्छा) कोई दूसरा मुल्क नहीं, यद्यपि वहाके वायर अच्छे नहीं हैं। परन्तु रूसकी भूमि बनावी जा रही है, उसमें बड़ी मलाई होगी। मेरे भगवान्, भगवान्, भगवान्, भगवान् (बोग् मोड) ।

हे मेरे भगवान्, मेरी आजाये तुझपर लगी है। मेरे भगवान्, मेरी रक्षा कर ले। मैं नहीं जानता कि हिन्दुस्तानमें किवरको जाऊ। ओर्मुजमें तुरामानको राह नहीं, चगतार्डके लिये रास्ता नहीं और दहरैन और यज्दके लिये भी कोई मार्ग नहीं। सर्वत्र विद्रोह हो रहे हैं, सर्वत्र बादशाह मगाये जा रहे हैं, मिर्जा जहान शाहको उजून (हमन) वेग ने मार डाला है, सुल्तान अबू-सईदको जहर दे दिया गया है। उजून (हमन) वेग अब शीराजमें है, पर उस मुल्कने उसको स्वीकार नहीं किया है। बादशाह मोहम्मद उसके पास नहीं जाता, वहा जानेमें उसे खतरा मालूम होता है। और फाटि रह गई है। (मेरे) मस्का जानेका मतलब है मुसलमान हो जाना। ईसाई होनेकी वजहसे माना जानेमें (मेरी) रैगियन नहीं, क्योंकि वहा जाने ही मुसलमान बना लिया जाऊगा। हिन्दुस्तानमें रहना मतलब है, अपने पान जो कुछ है, सबको खर्च कर डालना, क्योंकि यहाका रहन-सहन महंगा है। मैं अपने दाहू, पर मेरा रोजाना खर्च ढाई अलतीना (अगर्फी) है। यहा मन भरकर शराब मैंने नहीं पी।

हम मन्दन पहुंचे। वही मैंने पानग (डिस्टर) त्योहार मनाया। फिर तीन दिनोमें ओर्मुज पहुंचा। २० दिन आमुज ठहर मैं लार गया और वहा तीन दिन रहकर बारह दिनकी यात्राके बाद शीराज पहुंचा, जहा सात दिन रहा। शीराजमें पंद्रह दिनकी यात्रा कर अवरकुन पहुंचा और वहा दस दिन ठहर, नी दिनमें येज्द पहुंचा, जहा ८ दिन रहा। येज्दमें पांच दिनमें अस्पहान पहुंचा, और वहा छ दिन ठहरा। वहांसे साफान जा पांच दिन रहा। कायानमें कुम गया। कुमसे सवा, सवासे सुल्तानिया और सुल्तानियासे तर्कान। तर्कानमें मैं हगनवेगके कबीलेमें पहुंच, उनके बीच १० दिन ठहरा। वहासे कही जानेका रास्ता न था, लुप्टा चढ़ रही थी। हमनवेगने तुक मुल्तानके विरुद्ध अपनी ४० हजार सेना भेजी थी। सेनाने गियास और तहतपर खट्वा कर लिया, तकातमें आग लगा दी। उन्होंने अममपर भी अधिकार कर लिया, अपने साथ लठ लिये, फिर बह किरमानकी ओर बढ़े। मैंने सेनाका साथ छोड़ आरजित्जान (रैगैग) को गह ली और वहांमें त्रेपोजन्द जा पहुंचा।

पांच फरे दिन ही मैं त्रेपोजन्द पहुंचा और पांच दिन वहा ठहर, एक जहाजपर जा कफाका किराया छोड़ दिया, तथा कफामें जकात कर देनेके लिये कुछ निक्के बढ़ाये।

मेरे जहाज फौज्दा और शामकने भार्दने मुझे बड़ा नुकसान पहुंचाया। वह मेरा सारा सामान लूट लिया और शान्ते महलमें उतरा गे गया, और चूकि मैं हगनवेगके कबीलेकी ओरमें जा रहा था, इस-लिये गियास निर्दोशगने दिने मेरी तनागी ली।







अभिनय किया जाता था। बालक इवान मेधावी था। छोटी उमरसे ही उसने लिखना-पढ़ना सीख लिया था। उसे किताबोंके पढ़नेका बड़ा शौक था। स्वयं सुशिक्षित सघराज मकरीने इवानके ऊपर बहुत प्रभाव डाला था। लडकपनसे ही अपनी आखोंके सामने वायरोको लूटते, खून-खराबी करते देख, स्वयं उपेक्षित हो इवानके स्वभावमें क्रूरता भी सन्निविष्ट हो गई थी।

ऐसे होनहार बालकको बहुत दिनोतक गुडिया वनाके नहीं रक्खा जा सकता था, विशेषकर जब कि वायरोमें स्वयं आपसी खूनी सघर्ष चल रहे थे। सत्रह वर्ष की उमर (१५४७ ई०) में इवानने सिंहासनको सभालते हुये पूर्वजोंकी “महाराजुल” उपाधिसे सन्तुष्ट न हो जारकी उपाधि स्वीकार की। इवान IV पहला रूसी जार था—जार-क्जार-कैज़र-कैसर अर्थात् रोमक सम्राट्का ही विगडा रूप है।

वायरोने अपनी सामन्ती जागीरदारिया फिरसे स्थापित कर ली थी। उसके कारण लोगोंकी वुरी हालत थी। उन्होंने १५४७ ई० में मास्कोमें ग्लिन्स्की दलके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसी समय भारी आग लग जानेसे नगरका बहुत-सा भाग जल गया था, जिसके कारण लोगोंकी हालत और भी खराब हो गई और वह ग्लिन्स्कियोंकी स्वेच्छाचारिताके खिलाफ उठ खड़े हुये। वह जारकी नानी अन्ना ग्लिन्स्कयाके ऊपर जादूसे नगरमें आग लगानेका दोष लगाते थे। विद्रोहमें ग्लिन्स्की वंशका एक आदमी मारा गया और बाकी जान लेकर भाग गये। जार स्वयं वोरोव्योवो गाव (वर्तमान लेनिन-पर्वत) में भागकर जा छिपा।

जब विद्रोह दबा दिया गया, तो साधारण जनताकी सतान एक चतुर और ईमानदार अफसर अलेक्सी अदाशेफ शासनका मुखिया बना। अदाशेफने अपने साथ एक प्रभावशाली दरबारी पादरी सेल्वे-स्तर तथा कुछ शक्तिशाली वायरोको मिला इज्जान्नया रादा (वृत-परिषद्) बनाई, जिसकी रायके बिना तरुण जार कोई निर्णय नहीं कर सकता था।

**राज्य-विस्तार**—इवान IV के शासनारम्भके समय उत्तर-पूर्वी रूस एकताबद्ध हो चुका था। अब रूसका विस्तार आसपासकी जातियोंको जीतकर ही किया जा सकता था। वासिली III के समयमें क्रिमियाके खानकी मददसे कजानके तारतारोंने अपनेको स्वतंत्र कर लिया था, इसलिये इवानको कजानके खानसे सबसे पहले भुगतना था, जिसके लिये तारतारोंने रूसी भूमिपर लूट-मार मचाकर बहाना भी पैदा कर दिया था। कजान मध्य-वोल्गाके ऊपर एक महत्त्वपूर्ण नगर था, जिसके विरोधी शक्तिके हाथमें रहनेपर वोल्गा-कास्पियनका वणिक्पथ खतरेमें पड़ जाता था और पूर्वमें उराल तथा आगेके विस्तारकी गुजाइश नहीं रह जाती थी। उधर तुर्कीने कालासागरको अपनी झील बनाकर काके-शसतक अपनी बाह फैला ली थी। अस्त्राखान और कजानके खान भी हमेशा तुर्कीकी ओर आशा लगाये रहते थे। इस प्रकार पूरवसे रूसको खतरा भी था। इवानने पहले कजानको खतम करनेका निश्चय किया। १५५० ई० का महाभियान असफल रहा, इसपर उसने १५५१ ई०के वसन्तमें मारियोंकी भूमिमें वोल्गाके पहाड़ी किनारेपर स्वीयाजस्क नगर बनाया, जो कि कजानके सामने पड़ता था। मारी लोग अबतक कजानको कर देते थे, अब वह जारको कर देनेके लिये मजबूर हुये। स्वीयाजस्कका दृढ़ दुर्ग बन जानेके बाद रूसी कजानको घेर सकते थे। कजानके तारतारोंने जबर्दस्त प्रतिरोध किया, लेकिन रूसियोंके पास डेढ़ लाख सेना थी, दूसरे उनके पास शक्तिशाली तोपखाना भी था। नगरके भीतर तीस हजार तारतार सेना थी। कुछ महीनेतक तारतारोंने प्रतिरोध किया, लेकिन जब शक्तिशाली तोपोंने नगरके प्राकारको उड़ा दिया, तो वह कहातक प्रतिरोध करते? अन्तमें २ अक्टूबर १५५२ ई०को रूसी कजानको दखल करनेमें सफल हुये। कजानके पतनके साथ तातारोंका प्रतिरोध खतम नहीं हुआ। वह कई सालोतक लड़ते रहे, उनके सहायक तारतार ही नहीं, मारी, उदमुत, चुवाश और मोर्द्वी जैसी रूसीभिन्न जातिया भी थी। कजानके उच्छेदके बाद पहलेके खान और सामन्तोंकी अधिकांश सम्पत्तिको इवानने अपने अफसरो और पादरियोंमें बांट दिया और लोगोंको अर्थदान बना दिया। कितने ही जारभक्त तारतार सामन्त अभी भी अपनी भूमिके मालिक रहे। इस प्रकार वोल्गाकी जनता चक्कीके दो पाटोंके नीचे पिसने लगी। कजानके विजयके बाद बाश्किरोने भी इवान-

की अधीनता स्वीकार की। फिर उनमें भी पूर्व साइबेरियाके खान यादगारने १५५५ ई० में मास्कोको कर देना स्वीकार किया। अगले साल १५५६ ई० में अस्त्राखानकी वारी आई। मास्कोकी सेनाको वहासे खानको भगानेमें कठिनाई नहीं हुई। अस्त्राखान नगर ले लेनेके बाद सारी वोल्गा नदी रुसके हाथमें थी। कास्पियनके तटपर बसा अस्त्राखान अब मध्य-एसिया और ईरानके साथ होनेवाले व्यापारका केंद्र बन गया। उत्तरी काकेशसके छोटे-छोटे अमीर बराबर आपसमें लड़ते रहते थे, जिससे इवानको मर्का मिला, और उसने तेरेक नदीके किनारे एक किला बनवाना चाहा। लेकिन इवान अभी तुर्कीसे झगडा नहीं मोल लेना चाहता था, इसलिए तुर्कीके दवाव देनेपर उसने नगर बनानेका ख्याल छोड़ दिया। तो भी रुनी कसाक (स्वतंत्र किसान) नहीं रहे और वह तेरेकके तटपर बराबर बने रहे। तारतार मवार लूट-मारको आमदनीका एक वैध साधन मानते थे, खासकर काफिरोके विरुद्ध बैसा करना तो पुण्यका काम था, इसलिए घोड़ोंपर चढ़े वह बराबर इस ताकमें रहते थे, कि कैसे रुसकी भूमिमें घुसकर वहा लूट-मार मचाई जाये। इसके लिये मास्कोको मैदानी जगहोंमें जगह-जगह फौजी चौकिया-स्तानित्सा (धाना)—स्थापित करनी पड़ी। स्तानित्सामें एक ऊंचा मीनार या वृक्ष होता था, जिसपर बैठा एक नैनिक बराबर देखता रहता। जैसे ही दूर धूल उठती दिखाई पडती, वह उतरकर घोड़े-पर चढ़ दूसरी स्तानित्सामें खबर देता, वहासे दूसरा सवार तीरकी तरह निकलता, इस प्रकार बहुत जल्दी ही खबर मास्कोक तक पहुंच जाती, और प्रतिरोधका उचित प्रवध कर दिया जाता।

कास्पियनतटको लेकर अब रुस केवल स्थलशक्ति नहीं रह गया था, किन्तु कास्पियन वस्तुतः एक महा-सरोवर है, जिसका महासमुद्रसे कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कमीको दूर करनेके लिये बाल्टिक समुद्र-तटपर अधिकार करना जरूरी था, जिसमें कि रुसका पश्चिमी यूरोपके देशोंसे सीधा सवध हो जाये। जब बाल्टिकतट (लिवोनिया) की ओर इवानने हाथ बढ़ाया, तो लिवोनियाके पड़ोसी लिथुवानिया, स्वीडन और डेन्मार्क चुप रहनेवाले नहीं थे। पर जारकी शक्ति (धन और जनका बल) इतनी बढ़ चुकी थी, कि समुद्रपारने आकर लिवोनियाको मदद देना मुश्किल था। जर्मन धर्मसेनाने अच्छी तरह डटकर प्रतिरोध किया, लेकिन ब्रूनेवाल्लडमें उसे जो हार खानी पड़ी, उसके बाद वह फिर सफल नहीं सकी। जनवरी १५५८ ई० में इवानने लिवोनियाके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। कितने ही महीनोंकी लड़ाईके बाद लिवोनियाका बहुत ही महत्वपूर्ण बंदरगाह रीगा रुसियोंके हाथमें चला गया। उसके बाद यूरियेफ नगरकी वारी आई और आगे १५६१ ई० तक सारी लिवोनिया इवानके हाथोंमें थी। सामने खतरेको देखकर पड़ोसी राज्य रेवेल (तल्लिन) ने स्वीडन और डेनमार्कको अपना सरक्षक बनाया और अवजिष्ट लिवोनियाने पोलराजा तथा लिथुवानियाके शासककी शरणमें जाना पसन्द किया। इस तरह लिवोनिया कई राज्योंमें बंट गया। अब रुसको पोलन्द, स्वीडन और डेन्मार्कके साथ बीस वर्षतक लड़ना था।

लिवोनियामें बराबर सफलता ही नहीं होती रही, बल्कि कभी-कभी रुसियोंको वहा हानि भी उठानी पड़ी थी। ऐसे समयमें बायर फिर अपना सर उठाना चाहते थे। वह जारके हाथमें सारी शक्ति नहीं रहने देना चाहते थे। इवान इस तरहके घरेलू झगड़े पसन्द नहीं कर सकता था, उसने १५६५ ई० में शासन-प्रवधको नये तरहसे संगठित करना चाहा। बायरोपर उसको विश्वास नहीं था। एक दिन यकायक वह अपने विश्वास-पात्र शरीर-रक्षकोंके साथ मास्को छोड़कर वहामें सौ किलोमिटरपर अवस्थित दुर्ग-बद्ध अलेक्सेन्द्रोवा-स्लोदोवा गावमें चला गया। वहासे उसने सधराजको पत्र लिख बायरोकी विश्वास-घातकी तानिका बनाकर भेजते हुये सिहामन छोड़ देनेकी घोषणा की। इसपर मास्कोके नागरिकों, पादरियों और कितनेही बायरोने जारके पास जाकर मास्को लौटचलनेके लिये बड़ी प्रार्थनाकी। इवानने स्वीकार किया, और मास्को लौटकर उसने विश्वासघाती बायरोको दंड दे राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सत्रोंग) की बैठक बुलाई। उसके साथ ही उसने "ओप्रेचिन्ना" (पृथक् राज्य) के नामसे अपने विश्वास-पात्रोंका एक अंग नगटन तैयार किया, जो जारके हुकुमको बजा लानेके लिये बराबर तैयार रहती थी। इवानने अपने नारे राज्यको दो भागोंमें विभक्त किया—जेम्स्चिना (भूमिक) जिनका शासन बायरोकी दूमा (समझ) जारके अधीन रहकर करनी थी और ओप्रेचिन्ना, जो सीधे जारके अधीन

थी। ओप्रेचिनिनावाली भूमिमें राज्यके सबसे अच्छे तथा केंद्रीय प्रदेश थे, जिनका सैनिक और आर्थिक महत्त्व सबसे ज्यादा था। स्वयं मास्को नगरको भी इसी तरह दो हिस्सोंमें बांट दिया गया था। जेम्स्चिना भागमें वायर और ओप्रेचिनिना भागमें वेवोद (राजपुरुष) दोनों साथ-साथ काम करते थे। ओप्रेचिनिनाकी राजधानी अलेक्सेन्द्रोवा-स्लोवोदोवा थी, जहापर जार अपनेको अधिक सुरक्षित समझता था। ओप्रेचिनिनाका काम था सामन्तों (वायरो) की शक्तको कमजोर करना और छोटे-छोटे भूमिपति-सरदारोंका एक वर्ग तैयार करना।

जार इवान निरकुशताको राजाका आवश्यक अधिकार समझता था। उसका कहना था—राजशक्ति भगवान्की ओरसे मिली है। जारकी आज्ञाका उल्लंघन करना महापाप है। जारकी सभी प्रजा उसकी सेवक है, उसको अपनी प्रजाको क्षमा करने या मारनेका अधिकार है। जारकी शक्तको सीमित करना अपराध है, क्योंकि इसके कारण देशकी प्रतिरक्षा खतरेमें पड़ जाती है।

इवान अपनी शक्तको इस तरह दृढ़ करते हुये रूसकी आर्थिक और सैनिक शक्तको मजबूत करता जा रहा था। इसी समय १५७१ ई० में क्रिमियाके खान दौलत गिराईने एकाएक आक्रमण कर दिया और प्रतिरोधका मौका दिये बिना क्रेमलिन छोड़ सारे मास्कोको जलाकर भारी सख्‍यामें बढ़ियो-को दास बनाकर बेचनेके लिये पकड़ ले गया। दूसरे साल १५७२ ई० में जब फिर उसने अपनी लूटमार-को डुहराना चाहा, तो ओका नदीपर ही जेम्स्की वेवोदोने रोककर मास्कोको बचा लिया। जेम्स्की वेवोद वायर थे। उनकी इस सेवाको देखकर जारको अब ओप्रेचिनिना की आवश्यकता नहीं मालूम हुई और उसी साल उसने उसे तोड़ दिया। इवानने रूसमें एक धर्म, एक नाप-तोल और एक भूमि-नाप स्थापित कर रूसकी एकताको और आगे बढ़ाया।

१५७६ ई० में पोलन्दके राजा सिगिस्मद अगस्तसके मरनेके बाद स्तिफन बथोरी राजा निर्वाचित हुआ। उसने जर्मन और हुगेरियन सैनिकोंकी भरती तथा तोपखानेके विकासद्वारा अपनी शक्तको बढ़ाकर १५७६ ई०में रूसके जीतनेके लिये अभियान किया। १५८१ ई०में एक लाख सेनाके साथ उसने प्स्कोफको घेर लिया, लेकिन सारी शक्ति लगाकर भी वह उसे ले नहीं सका। इवानको केवल पोलन्दसे ही लड़ना नहीं था, बल्कि स्वीडनने भी इसी समय लिवोनियाके लिये उसपर आक्रमण कर दिया। स्वीडिश सेनाको आसानीसे सफलता मिली। यद्यपि इवान अपने राज्यकी प्रतिरक्षामें सभी जगह असफल रहा, लेकिन प्स्कोफके प्रतिरोधने उसे अवसर दे दिया, कि अच्छी शर्तोंके साथ अपने शत्रुओंसे समझौता कर ले। इवानने लिवोनियाको छोड़ दिया और बथोरीने रूसी नगरोपरसे अपना अधिकार हटा लिया। इसी तरह स्वीडनके सामने भी उसे समझौता करना पड़ा। इस प्रकार उसका पचीस साल (१५५८-८३ ई०) का संघर्ष अधिकतर बेकार गया, जब कि १५८४ ई० में इवान मरौ।

इवान सुशिक्षित, दूरदर्शी और कुशल शासक था। वह अच्छा लिख लेता था। लेकिन, कभी-कभी उसपर सनक सवार हो जाती, तो वह क्रूरकर्मा सिद्ध होता, जिसके ही कारण लोगोंने उसका नाम ग्रीज्नी (क्रूर) रख दिया था। एक बार क्रोधाध हो उसने अपने बेटे राजकुमार इवानपर डंडा चला दिया, जिससे वह मर गया। इवानका शासन रूसके इतिहासके लिये बड़ा महत्त्व रखता है, और देशके शक्तिशाली और एकताबद्ध करनेमें उसकी सेवाओंको आज भी बड़े आदरसे याद किया जाता है।

**येरमकद्वारा साइबेरिया-विजय**—इवानके शासनका एक महत्त्वपूर्ण काम है, रूसका साइबेरियाकी ओर विस्तार। हम कह आये हैं, कि वासिली III और उसके पिताके समय ही रूसका विस्तार उरालकी जनजातियोंकी ओर हो चुका था। साइबेरियाकी बहुमूल्य समूरी छालें सोना-जवाहरके दाम विकती अपना विशेष आकर्षण रखती थी। इसलिये बहुतसे साहसी रूसी शिकारी और व्यापारी उरालकी ओर जा वसे थे, इन्हींमें नवोगोर्दसे आया एक व्यापारिक परिवार स्ट्रोगनोफ भी था। वस्तुतः स्ट्रोगनोफका पूर्वज पहले सुवर्ण-ओर्दूका एक तारतार मिर्जा (राजपुरुष) था। ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर उसका नाम स्पीरिदोन पड़ा। चौकठेमें मढ़ी गोलियों (अवकस) द्वारा गिनती करनेका

रवाज चीनमें पहिलेहीसे था, रूसमें इसका रवाज स्पीरिदोनने ही चलाया। मुसलमानसे ईसाई होने-के कारण मंगोलोंने उसे पीट-पीटकर मार डाला, इसी कारण उसके परिवारका नाम स्त्रोगोन (पीटन) पड़ा। स्पीरिदोनके पुत्र तथा कोस्मेसके पुत्र लूकसने जार वासिली अधको कजानके खानसे छुड़ानेमें पैसेमें सहायता की थी, इसलिये उसे नमककी खानोकी इजारादारी मिल गई, जिससे वह बहुत धनी हो गया। वासिलीने ग्रेगोरी और याकूब दो स्त्रोगोनोफ-भाइयोंको कामा नदीके पासवाले प्रदेशमें चुनोव्याके तटपर अपनी रक्षाके लिये दुर्ग बनानेका अधिकार दे दिया था, जिसमें कि वह साइबेरियनो और नोगाई तारतारोसे अपनी रक्षा कर सके। स्त्रोगोनोफ अपने पास सैनिक और तोपें रख जारकी ओरसे इलाकेका शासन-प्रवर्ध भी करते थे। उन्हें गावोंके वसाने, नमककी खानोंको चलाने तथा कर देकर मछली और नमकको बीस वर्षतक बेचनेका ठेका मिला था। स्त्रोगोनोफने १५५८ ई०में चुनोव्या नदीपर ककोरका कसबा बसाया, १५६४ ई०में केरगेदानका किला और कुछ ही साल बाद सेल्वा नदीके किनारे कितनी ही और बस्तिया बसाईं। अंग्रेज ईस्ट इंडिया कम्पनीकी तरह अनेक व्यापारियोंकी कम्पनीकी जगह यहाँ एक परिवारको व्यापार, राज्यशासन और देश-विजयका अधिकार दे दिया गया था। ईस्ट इंडिया कम्पनीकी तरह कितने ही साहसी तरुण और गुडे स्त्रोगोनोफके राज्यकी ओर भी आकृष्ट हुये थे। १५७२ ई० में स्त्रोगोनोफोंने एक विद्रोहमें चेरेमिसो, ओस्तियाको और वाश्किरोको जीतकर वहाँ जारका राज्य घोषित किया। स्त्रोगोनोफोकी इस तरह साइबेरियामें प्रगतिको वहाँ का राजा कुचुम खान (१५५५-६५ ई०) अपने लिये खतरेकी बात समझता था, जो जारकी अधीनता स्वीकार करनेवाले यादगार खानको हटाकर अब स्वयं खान बना था। उसने जुलाई १५७३ ई० में बहुतसी रूसी बस्तियोंको नष्ट करनेके लिये अपने भाई अलताकुलके पुत्र महमेतकुलको भेजा। महमेतकुल जारकी प्रजा बने ओस्तियाकोको मार उनके वीवी-वच्चोको पकड़ ले गया। उसने एक रूसी य याक चेवाकोफको भी मार डाला। नोगाई मिर्जा दीन अहमदकी पुत्रीसे अपने बेटे अलीका व्याह करनेके कारण कुचुमको बहुत अभिमान हो गया था। स्त्रोगोनोफोंने जार इवानसे आक्रमणकारियोंको दंड देनेकी स्वीकृति पानेके साथ निम्न बातोंकी भी आज्ञा मागी—तोबोल नदीके तटपर बस्तिया बसानगर और दुर्ग बनाना, नोपखानेका उपयोग तथा सैनिकोंकी भरती करना, एक सीमित समयतकके लिये लोहा, रागा, सीमा, गधककी खानोंमें काम जारी करना। जारने प्रार्थनाको स्वीकृत करते हुये ३० मई १५७४ ई० को आज्ञा दी, कि वह हमारी प्रजा ओस्तियाको और वोगलोकी रक्षा करें, और इतिश-उपत्यकाके तारतार खानोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करें। राजाज्ञामें स्त्रोगोनोफोके लिये यह भी रियायत दी गई थी, कि वह बुखारावालो और कजाकोंके साथ बिना शुल्क दिये व्यापार कर सकते हैं। जारने अधिकार तो मुहमागेसे भी अधिक दे दिया, लेकिन उसे काममें लानेकी दोनो भाई-स्त्रोगोनोफोंमें शक्ति नहीं थी। ६ सालके भीतर ही दोनो भाई मर गये और उनकी अपार सम्पत्तिका मालिक छोटा भाई मिमाग्रोन स्त्रोगोनोफ-परिवारका मुखिया हुआ, जिसके सहायक याकूब-पुत्र माखिम और ग्रेगोरी-पुत्र निकितम् थे।

काकेशनके उत्तरमें दोन नदीके तटपर बसे स्वतंत्र लडाकू किसान—कसाक—ईरान और बुखाराके तरफमें आनेवाले व्यापारियोंके कारवाको लूटना अपना अधिकार समझते थे। उनकी हिम्मत इतनी बढ़ गई थी, कि एक बार उन्होंने ईरानी शाहके पाम भेंट लेकर जाते जारके दूतमंडलको भी लूट लिया। उनके मारे निम्न-बाल्गा-उपत्यकामें आतंक छाया हुआ था। १५७७ ई० में इवानने उनके विरुद्ध सेना भेजकर उन्हें तितर-बितर कर दिया। इस समयके भागनेवाले कसाकोंकी एक टुकड़ी अपने आतमन (मर्दार) येरमक निमोवियेफके नेतृत्वमें कामा नदीकी ओर गई। येरमक (येरमोलाई, हेरमोलोस) को माखिम स्त्रोगोनोफने अपने नये बसाये नगर ओरेलमें इस स्थानसे नीकर रख लिया, कि उसके दलका उपयोग साइबेरियाके खानके विरुद्ध करेंगे। स्वामीकी आज्ञा पा येरमक अपने आदमियोंके साथ ८ अक्टूबर १५७८ ई० में प्रस्थानकर चुनोव्या नदीके किनारे-किनारे चल ८ अक्टूबर १५७८ ई० को सिलवा तग पहुँचा। वहाँ उसने एक दुर्ग बनाया, जिसका नाम पीछे येरमकोवो-नोरोदिची पड़ा। जाहॉमें

येरमक वही ठहरा। उसने अपने तीन सौ कसाकोको वोगुलोके देशमें भेजा, जो कि साइबेरियन खानकी सीमातकका पता लगा लूटके मालसे लदे लौट आये। येरमकके साथ तीन ईसाई पुरोहित और एक साधु भी थे, इसलिये उसे साधारण डाकू नहीं कहा जा सकता। येरमककी इन सफलताओं को देखकर स्त्रोगोनोफने उसे तीन तोपें, प्रत्येक सैनिकके लिये डेढ़ सेर बारूद, डेढ़ सेर सीसा, तीन पुड (सवामन) आटा, दो पुड बकला, एक पुड विस्कुट, एक पुड नमक, ढाई पुड मक्खन दिया—आदमी पीछे नमक लगाया हुआ एक सूअर, हर सौ आदमीपर एक पवित्र मूर्तिके साथ एक झंडा भी दिया। रात-दिन तैयारी करनेके बाद कुछ रसदको वही छोड़ येरमकका दल चल पड़ा। येरमक अपने साथियोंके मनोविनोदके लिये बाजे ले जाना नहीं भूला। कसाक सेनाका मुख्य-सेनापति येरमक था और दूसरे सेनापति थे इवान कोल्जोफ, इवान ग्रोसा तथा वोगदान ब्रियास्गा। इनके अतिरिक्त कुछ छोटे-छोटे और भी अफसर थे। कसाक सैनिकोंका संगठन शक्तिक और दशकके रूपमें था। उस समय रूससे ओव नदीकी ओरके रास्ते क्रमशः निम्न प्रकार विभक्त होते थे —

(१) विम नदी—वुचेगदा—विश्चेरा नदी (कामकी शाखा)—लोसवा नदी—तावदा नदी—तोवोल नदी—ओव।

(२) विम नदी—वुचेगदा—इशमा नदी—पेचोरा नदी—शोकुर नदी—सिगवा (लपिना)—ओव नदी।

(३) वुचेगदा—इशमा नदी—आलेस नदी—इलिश नदी—सोसवा नदी—ओव नदी।

(४) वुचेगदा—इशमा नदी—वुचेगदा—इशमा नदी—उसा नदी—सोव नदी—ओव—नदी।

इन रास्तोंमें सबसे अधिक प्रचलित था—सिगवा और सोसवा होकर जानेवाला रास्ता।

इतिहासकार मूलरके अनुसार येरमककी सेनामें पाच हजार आदमी थे, जब कि साइबेरियन पवाडा उनकी सख्या आठ सौ चालीस बतलाता है। इस सैनिक टुकड़ीने रूसके लिये उस विजयका आरम्भ किया, जिसने कुछ ही समयमें सारे साइबेरियाको जारके चरणोंमें डाल दिया।

५ जुलाई १५७६ ई० (भारतमें अकबरके शासनकाल)में येरमक-सेनाने प्रस्थान किया। कुछ जिरियानी लोग उनका पथप्रदर्शन कर रहे थे। चुसोवया नदीकी ऊपरी धार उथली और धीमी थी। येरमक-दल अपनी छोटी नावे लेकर इसी धारसे उत्तरकी ओर बढ़ा। सेराव्रेंकाके तटपर वह जाडोंके लिये रुक गये। यहांके निवासी वोगलोंने रूसियोंके साथ अच्छा बर्ताव किया, लेकिन कसाकोने उन्हें निष्ठुरतापूर्वक लूटकर इसका बदला दिया। उनके इस अत्याचारके कारण आगेके सारे कबीलोंमें आतंक और घृणा पैदा हो गई। १५८० ई०के वसंतके आनेपर येरमक-दल फिर आगे चला। उरालकी नाटी पहाड़ियोंको पारकर वह बरदाके पनढरपर पहुंचा, जो कि ध्रुवीय महासागर तथा कास्पियनमें जानेवाले जलका विभाजक है। जहापर वह जाडोंके लिये ठहरे, वहांसे दस वर्स (कोश) चलनेपर लडाई शुरू हो गई, साथ ही बीमारीने भी शत्रुका काम किया, जिसके फलस्वरूप अब केवल सोलह सौ छत्तीस कसाक बच रहे। लेकिन येरमक और उसके साथी हिम्मत हारकर पीछे लौटनेवाले नहीं थे। वह १२ मई १५८० ई० को खाना हो जल्दी ही तगिल नदीके तटपर पहुंच गये। पहिलेकी नावोंको वह पीछे छोड़ आये थे, इसलिये कुछ सप्ताह ठहरकर यहां उन्होंने नई नावे बनाई, जिनपर चढ़कर वह तुरा नदीके तटपर पहुंचे। यहां एक तारतार सरदार पेपच (पस) रहता था, जो पड़ोसी वोगलो-का भी शासक था। उसने तीर-धनुष चलाया, लेकिन बारूदी हथियारोंके सामने तीर-धनुष क्या करते? उसके आदमी भाग गये और येरमक-दलने उनके डेरोको दखल करके लूट लिया। कसाक लूटते-पाटते तुराके किनारे-किनारे आगे बढ़े। चिडगी (त्यूमेन) नगरको उन्होंने बड़ी आसानीसे ले लिया। इस उपजाऊ इलाकेमें उन्होंने शरद्-निवास करके चारों ओर लूट और छालेके रूपमें कर वसूल किया। येरमकने एक टुकड़ीको कुचुमखानके सीमात तुरा-तोवोलके संगमपर बसे तुरखन किलातक भेजा। वहां एक तरखन (राजकुमार) रहता था। उस समय कुचुमखानका तहसीलदार कुतुगाई भी तरखनके पास आया हुआ था। कसाक आक्रमण कर कुतुगाईको अपने साथ पकड़ ले गये। येरमकने बहुत खातिर करके उससे बहुतसी बातोंका पता लगाया, और उसे इनाम तथा खान, उसकी खातूनो और कुमारोंके

लिये भेंट देकर विदा किया। येरमककी चालको कुचुमने समझ लिया और रूसी पोगाकमे लौटे कुतु-गाईकी वानोपर विध्वाम न कर सेना जमा करनी शुरू की।

मई १५८१ ई० में येरमक-दलने तुरासे आगे प्रस्थान किया। थोड़ा ही आगे जानेपर ६ तार-तार-गजकुमारोंके अर्धीन आई मेनाके साथ भारी युद्ध हुआ। विजय कसाकोके साथ रही। उन्होंने बड़ी निष्ठुरतापूर्वक शत्रुओंको कत्ल किया। लूटका जो माल हाथ आया, उसे बाकी बचे हजार कमाक माय नहीं ले जा सकते थे। उन्होंने बचे मालको जमीनमे गाड़ दिया और फिर नावपर तोबोल नदीमे आगे बढ़े। नदीके ऊँचे किनारोपर भुर्ज वृक्षोंके जंगल थे, जिसमे छिपकर तारतार लडते, लेकिन बन्दूकोंके नामने उन्हें भागना पड़ता। आगे बढ़नेपर तोबोलनदी जहा पतली हो गई वहा तारतारोंने जजीर बावकर नावोंको रोकनेकी कोशिश की। येरमक वहा १६ जुलाईको पहुँचा। तारतार यसाउल अलीशेरकी एक भी न चली और येरमक उन्हें मारता-पीटता आगे निकल गया। अन्तमें वह तोबोल और तावदा नदीके संगमपर पहुँचे, जहासे कि रूसका व्यापार-मार्ग जाता था। प्रस्थान करते वक्त येरमक-दलने यहीतक आनेका निश्चय किया था। लेकिन येरमक उतनेमे सतुष्ट होनेवाला नहीं था। आठ दिन वहा ठहरकर उमने कुचुमके राज्यके बारेमें और जाननेके वास्ते फिर आगेके लिये प्रस्थान किया। कुचुमने तारतारों, ओम्नियाको और बोगुलोकी एक सेना जमा कर उमे महमेतकुलके अर्धीन प्रतिरोध करनेके लिये भेजा, राजधानी सिविरकी रक्षाके लिये नई खाई बनवाई और पास-पड़ोसके तारतार अमीरोंको भी अपने नगरोंको दुर्गवद्ध करनेके लिये कहा। चुवास-पर्वतके पास इतिश नदीपर कुचुमने मोर्चाबंदी कराई। येरमक जब तावदासे आगे बढ़ने मिर्जावाखान-गाव (वाखान्स्की-युर्त) मे पहुँचा, तो महमेतकुल वहा लडनेके लिये तैयार था। यद्यपि महमेतकुलके पास दसगुने (दस हजार) नवार थे, लेकिन पाच दिनके युद्धके बाद उसे बुरी तरहसे हारना पडा। येरमकके मारे अभियानका यही नवने बड़ा युद्ध था। बारूदी हथियारोंके सामने तीर-धनुषकी क्या पेश जाती? तारतारोंने कुछ नीचे नुरवाके संगमपर फिर अमफन प्रतिरोधकी कोशिश की। इसके आगे तोबोल और इतिशके संगममे १६ वर्न् पहले एक मरोवरपर फिर कुचुमके दवारी कराचिनके नेतृत्वमें तारतार जमा थे। उनकी मर्या देखकर कसाक कुछ भयभीत हो लौटनेकी सोचने लगे, लेकिन एक बोगोल बूढ़ेने तारतारोंकी कमजोरीको बतलाकर उनकी हिम्मत बढ़ाई। इस प्रकार येरमक-दल लडते-लडते आगे बढ़ता गया। १२ अगस्त १५८१ ई० तक अब उनके पास लूटमें बहुत भारी परिमाणमें सोना, चादी, मोती, जवाहिर, पशु, अनाज और मनु आ गया था। इसी समय ग्रीक ईसाई सम्प्रदायके अनुसार चौदह दिनका व्रत आया। येरमकने चौदह दिनकी जगह चालीस दिन व्रत रखनेका हुक्म दिया।

२६ मिनम्बरको फिर कसाकोंने प्रस्थान किया। अब वह इतिश नदीमें जा रहे थे। उन्होंने तारतार-कुमार अतिवकी वस्ती (माउस्त्रोफनी) को आमानीसे ले लिया। सामान नावोंपर लदा था। सह्या भी कम हो गई थी। वह सोचने लगे लौटें या आगे बढ़ें। अन्तमें उन्होंने आगे बढ़नेका ही निश्चय किया। अब वह खानके राज्यके गर्भमें पहुँच रहे थे। कुचुम अपने लोगोंके साथ चुवासके दुर्गवद्ध प्रदेशमे प्रति-रोधके लिये तैयार था। कुचुमका आक्रमण इतना जवर्दस्त था, कि येरमक और कोल्जोफ भी “भग-वान् बचाये” चिन्नाते आगे बढ़े। तारतार अपने (शायद अब) मरदार को घेरे हुये खडे थे, इमाम और मुल््लाह “या मुहम्मद” पुकार रहे थे। कसाक मोर्चेके तीन खुले स्थानोंकी ओर दौडे। महमेतकुल नटाईमें घायल हुआ था, जिमे इतिशपर नावद्वारा पहुँचाया गया, बाकी सेना हताश हो भागने लगी— भागनेवालोंमे सबसे पहले ओम्नियाक मरदार थे, उनके बाद तारतार। कुचुम कुछ खजानेके साथ इतिशकी शाखा इलिस नदीकी ओर भागा। इस युद्धमें एक सौ मत्तर रूपी मारे गये, जिनके लिये बहुत पोटैतक तबोन्क नगरके गिर्जामें विशेष प्रार्थना की जाती थी। कुचुमने कजान या बुखारामे लौटनेकी दो नौपें मगवाई थी, जिन्हें भागने वक्त उमने इतिशमे फेंक दिया था। कसाकोंने निकालकर उन्हें प्रियकी मींगान बनाया। चुवास, विजिक, मुमगन, अवालक नगरोंके तारतार-अमीर कुचुमके साथ भाग गये। कुचुम भागने समय थोड़ी देरतक तोबोल नदीके तटपर अविस्थित यालतुरामें ठहरा था।



७ नवम्बर १५८१ ई० को येरमक सदलवल राजधानी सिविरमे दाखिल हुआ। वहाकी छोटी कोठरियोमे मुश्किलसे खान और उसके अनुचर रह सकते थे। राजधानीकी एक ओर इर्तिश नदी और दूसरी ओर सिविरका नामकी एक छोटी नदिका वह रही थी, बाकी दो तरफ धुस्सकी मोरचेबर्दी थी। मकान सारे लकड़ीके थे, इसलिये पीछे उनका कोई अवशेष नहीं रह गया। खानकी राजधानीमें समूरी छाल तथा दूसरी बहुमूल्य वस्तुयें भारी परिमाणमें मिली, लेकिन आहारकी कोई चीज नहीं प्राप्त हुई।

विजयके तीन दिन बाद देमियान्का नदीसे होते एक ओस्तियाक सरदार येरमकके पास सम्मान प्रदर्शन करनेके लिये आया। वह अपने साथ समूर, मछली तथा दूसरी खाद्य वस्तुयें ले आया था। येरमक ने थोडासा कर लेकर खातिर-सम्मान प्रदर्शन करके उसे लौटा दिया। धीरे-धीरे भय छूट गया और इतिश तथा तोवोल-उपत्यकाओंके और बहुतसे कबीले भेट ले-लेकर पहुंचने लगे। लेकिन, अभी सिविरखानने हथियार रख नहीं दिया था। अन्नके अभावमे मछली रूसियोका प्रधान खाद्य थी। बीस रूसी मछली मारने गये थे। महमतकुलने एकाएक आक्रमण करके उन्हें मार डाला। येरमकने पीछा करके महमतकुल और उसके आदमियोको इतिश नदीके तटपर अवस्थित शम्सिन्स्की गावमे पकड़कर घोर बदला लिया। कुछ ही आदमी अपने सरदारके साथ वहासे बच निकले। इस विजयके बाद अमीर इशवरदीने येस्केल्विनियान (तावदा) झीलसे आकर अधीनता ही नहीं स्वीकार की, बल्कि और छोटे-छोटे राजाओंसे अधीनता स्वीकार करानेमें रूसियोकी सहायता की। सुकलेन (शायद वोगल) सरदारने भी छालोके रूपमें कर प्रदान किया।

सिविर-विजयकी खबर देनेके लिये येरमकने अपने साथी इवान कोल्जोफको मास्को भेजा, जिसके साथ कुचुमके अधीनता स्वीकार करनेका पत्र भी था। कोल्जोफ जाड़ेके मध्यमें बर्फवाला जूता पहने, समूरके कोटसे शरीर ढाके लम्बी-पतली वेपहियेकी गाड़ीको कुत्तों और बारहंसगोसे खिंचवाते इशवरदीको पथप्रदर्शक बना तावदासे पहाड़ोके रास्ते होते चेरदिन पहुंचा।

इससे कुछ पहले चेरदिनको एक वोगल सरदारने लूटा था। वहाके कमांडर वासिली पेलेपेलि-जिनने जारके पास शिकायत भेजी थी, कि स्त्रोगोनोफोने दोनवाले विद्रोही कसाकोको शरण दी है, जिन्होंने वोगलोको लूटा, उसीसे नाराज होकर उन्होंने हमारे ऊपर आक्रमण किया। इसपर जार इवानने नाराज हो २८ नवम्बर १५८२ ई० को स्त्रोगोनोफोके पास सख्त पत्र लिखकर येरमक तथा उसके साथियोको बुरा-भला कहा था। लेकिन इसके थोड़े ही समय बाद जब कोल्जोफने अपने साथियोंके साथ मास्को पहुंचकर सिविर-विजयकी खुशखबरी दी, तो जारने अपनी बातको वापस ले लिया और दो मूल्यवान् कवच, एक चादीका प्याला, अपने पहननेका एक समूरी चोगा, तथा कितने ही और कपड़े येरमकके लिये और दूसरे इनाम उसके साथियोंके लिये भेजकर कोल्जोफको लौटाया।

महमतकुल अभी भी हाथ नहीं आया था। १५८२ ई० के शुरूमें पता लगते ही येरमकने साठ सैनिकोको उसपर अचानक हमला करनेके लिये भेजा। इतिशके किनारेसे नातिदूर तुलार झीलके पास, जहा पीछे कुलारेप्स्कया स्लोवोदा गाव बसा, एक जगह डेरा डाले पड़े महमतकुलपर कसाक टूट पड़े। अपने बहुतसे आदमियोको मरवाकर महमतकुल बदी बना। कुचुमके विरुद्ध महमतकुल अच्छा जामिन मिला, यह समझकर येरमक बहुत खुश हुआ, और उसने उसे बड़ी खातिरके साथ सिविर नगरमें अच्छी तरह रखा। कुचुम भागकर इशिम नदीकी ओर चला गया। वही सिविरके पुराने खान बेग-फुलातके पुत्र सैदियतने बुखारासे लौटते समय कसाकोसे मेल करके अपने पिताके शत्रुपर आक्रमण कर दिया। तबतक सबसे शक्तिशाली अमीर मिर्जा कराचा भी कुचुमका साथ छोड़ चूलिम्स्कोये सरोवर-पर चला गया था। सैदियतके आक्रमणने कुचुमकी हालत और बुरी कर दी।

१५८२ ई० के वसतमें येरमकने पचास सैनिकोके साथ वोगदान ब्रियास्गाको इतिशके तारतारो तथा ओस्त्रियाकोसे कर उगाहनेके लिये भेजा। तारतारोने प्रतिरोध किया। उनकी गद्दी अरिन्द्-

सियकाके तटपर थी। कसाकोने आक्रमण करके उसे तोड़ दिया। यह तारतार अभी भी मुसलमान नहीं थे। वह अपनी खून लगी तलवारको चूमते थे। सैनिकोंने वहाँ बहुतसे छाले और रसद येरमकके पास भेजी। फिर आगे बढ़ने हुये कितने ही और कबीलोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। तुरतेस नदीके तारतार तथा पडोसी उवाती तारतारोंने भी अधीनता स्वीकार की। इतिशके किनारेके उग्रोंने भी वर देना स्वीकार किया। कसाक-टुकडी इतिशके साथ-साथ ओव नदीतक जा फिर सिविर-नगरमें लौट आई। रास्तेमें उन्हें कितनी ही बार लडना पडा, लेकिन उनका एक भी आदमी नुकसान नहीं हुआ।

१५८२ ई० की गर्मियोंको येरमकने सिविरमें विताया। फिर महमतकुलके साथ बहुतसी भेंट और शुल्ककी वस्तुयें देकर उसने मास्को दूतमंडल भेजा। १५८३ ई० में ब्रियाजगाने जो रास्ता पकडा था, उसी रास्ते वह इतिशके नीचे ओवकी ओर चले। आगे तावदा नदीके तारतारोंसे भारी लडाई हुई, झील लाशोंके मारे गदी हो गई, इसीलिये उसका नाम पगन्नुये ओजेरो पडा।

जारने नवविजित सिविर (साइबेरिया) देशपर शासन करनेके लिये पाच सौ कसाकोंके साथ सेमिओन दिमित्रि-पुत्र वोल्खोव्स्कीको २२ मई १५८३ ई० को मास्कोसे रवाना किया। वह नवम्बरमें सिविर पहुँचा। इसके बाद ही साइबेरियामें अकाल पड गया। येरमकका अभियान इतना निष्ठुर और ध्वमकारी था, कि वहाँ अन्न मिलना मुश्किल हो गया। कितने ही कसाक भूखके मारे मर गये। उसके बाद चर्मरोगने आफत ढाई। वोल्खोव्स्की स्वयं मौतका शिकार हुआ। मिर्जा कराचाने कजाकोंसे सुरक्षित रखनेके वहाँने कोल्जोफ और उसके चालीस साथियोंको बुलाकर मार डाला। तारतारों और ओस्तियाकोंने अब आम विद्रोह कर दिया, जिसके कारण कितने ही कर-उगाहनेवाले कसाक मार डाले गये। कराचाने अन्तमें मिविर नगरको भी घेर लिया। येरमकके ऊपर नगरकी रक्षाका भार छोड़कर अधिकांश कसाकोंने रातके वक्त सोसकानमें पडे कराचाके डेरेपर छापा मारकर उसे दखल कर लिया। मारे जानेवालों में कराचाके दो पुत्र भी थे, लेकिन कराचा भाग निकलनेमें सफल हुआ। फिर सेना जमा करके तारतारोंने हमला किया। उस वक्त दुश्मनकी गाड़ियोंसे मोरचावदी करके रूसियोंने उनका मुकाबिला किया। काफी हानि उठानेके बाद तारतार भाग गये। अब रूसियोंकी धाक चारों ओर जम चुकी थी। पास-पडोसके तारतारों और ओस्तियाकोंने समझ लिया, कि प्रतिरोध करनेसे कोई फायदा नहीं हो सकता, इसलिये उन्होंने अधीनता स्वीकार की, सिविरमें अब खाने-पीनेकी चीजें काफी आने लगी।

साइबेरियाका नाम इसी सिविर नगरके कारण पडा, यद्यपि रूसी भाषामें मिविरका अर्थ उत्तर (दिशा) भी है। मिविर नगर साइबेरियाके कीमती समूरोंके व्यापारका बड़ा केंद्र था, इसलिये वहाँ बुखाराके व्यापारी भी आया करते थे। मुमकिन है, साइबेरियाके समूर और अल्ताईके सोनेके लिये मध्य-एशियासे यहाँ आनेवाला मार्ग वही पुराना वणिक्पथ हो, जिससे बुखाराके वाणिज्य-सार्थ यहाँ आया करते थे। बुखाराके कारवाके आनेका समय था। पता लगा, कुचुम उसपर हमला करना चाहता है। येरमकने कारवाकी रक्षायें ढेड़ सौ सैनिक भेजे और स्वयं भी बगाई नदीके सगमत्तक गया। कारवा नहीं आया। येरमक अपने दलको लेकर वेगुइशेव्स्कोये सरोवरपर अवस्थित तारतार-राजकुमार वेगुइशके गढ़पर आक्रमण किया, प्रतिरोध करनेमें प्रायः सारे तारतार मारे गये। इसके बाद येरमकने शमसा और वियाचिक, साला, कोदंकपर चढाई की। सालामें थोडा-सा प्रतिरोध हुआ। कोदंकके आदमियोंने भागकर जंगलमें शरण ली। तेवेन्दा (तुवेन्दा) के तारतार-राजा येलिगइने अपनी मुदरी लडकीका येरमकसे व्याह करना चाहा, किन्तु येरमकने विवाहसे इन्कार करते हुये उसे अभय वचन दिया। कुचुम इसी लडकीको अपने लटके लिये चाहता था। इशिमके मगमकी लडाईमें पाच कसाक मारे गये। बाकी दल इतिशके साथ-साथ आगे चला। अउसकाकुन झीलके ऊपर प्रमिद्ध तारतार किला कुल्लरा था, जो कलमक मंगोलोंसे सीमापरी रक्षाके लिये बनाया गया था। उसके ऊपर पाच रोज घेरा डाल लौटते वक्तके लिये छोडे बरतान-दहनने इतिशके पूरव कुल्लारचोव झीलके ऊपर अवस्थित ताशदकान नगरपर आक्रमण किया, जो

विना लडाईके ही सर हो गया । फिर शिस् और इतिशके सगमपर बसे तारतारोंके अन्तिम गाव शिसतमकपर पहुचे । कसाक गरीबोंसे कर नहीं थोड़ी-सी भेट लेते थे, जिसका प्रभाव साधारण जनतापर अच्छा पड रहा था । जब वह लौटनेके लिये ताशदकान पहुचे, तो बुखाराके कारवाके आनेकी खबर मिली । उससे मिले विना ही कसाक-दल येरमकके नेतृत्वमें सिविरकी तरफ लौटा । वह अपने पहलेके एक डेरे-येरमकोवा पेरेकोफ-के पास एक भीटे (ज़रेवो गोरोदिची) पर पहुचे, जिसके वारेमें तारतारोंका कहना था, कि यह उसी कूसिम-नुरा (कुमारी दुर्ग) का अवशेष है, जिसको कि कुमारियोने अपने लहगेमें मिट्टी ढो-ढोकर बनाया था । दुश्मनसे अब कसाक निश्चित हो गये थे, इसलिये विना सतरी रखे ही उन्होंने वहा डेरा डाल दिया । कुचुमके चरने तीन बन्दूको और कितने ही कारतूसोको ले जा कसाकोके वारेमे उसे खबर दे दी । वह अपने आदमियोके साथ आकर उनपर टूट पडा । येरमक शत्रुओकी पातीको चीरता नदीके किनारे उस स्थानपर पहुचा, जहापर अपनी नावोके होनेकी उसे आशा थी । नाव न पाकर वह नदीमे कूद पडा । जारने जिस कवचको उसकी रक्षाके लिये भेजा था, वही उसके मरनेका कारण बना-कवचके बोझके मारे १७ या १८ अगस्त १५८५ ई० को येरमक नदीमें डूबकर मर गया । इस प्रकार एक क्रूर किन्तु साहसी पुरुषकी जीवन-यात्रा समाप्त हुई ।

येरमकका शव अबालकसे १२ वर्स्तपर २५ अगस्तको येपचिन्स्की नामक तारतार गावमें मिला । कवचका एक भाग और ओस्तियाकोकी देवमूर्तिसे वेलेगोस्कके लिये एक घटा बनाया गया और दूसरे भागको मिर्जा कैदोलको दिया गया । येरमकका चोगा राजकुमार सैदियतको मिला, और तलवार तथा कमरबन्द मिर्जा कराचाको । मुल्लोने पूजाके डरसे येरमककी कबरको छिपा दिया ।

इस लडाईसे सिर्फ एक आदमी बच निकला, जिसने सिविरमें जाकर खबर दी । तारतारोंसे भयभीत नेताविहीन एक सौ पचास भूखे कसाक २७ अगस्त १५८४ ई० को सिविर छोडकर लौटनेके लिये मजबूर हुये । कुचुमने उन्हें नहीं छोडा और अपने पुत्र अलीको भेजकर सिविरपर फिरसे अधिकार कर लिया । जल्दी ही पुराने खानवशके राजकुमार सैदियतने अलीको मार भगाया । साइबेरियाका अभियान निष्फल नहीं हुआ, और न रूसियोका पैर तोबोल नदीके तटपर सिविर नगरतक ही आकर रुक गया ।

### ३०. फयोदर, इवान IV-पुत्र (१५८४-९८ ई०)

इवान IV ने क्रोधाघ हो अनजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र इवानको मार दिया । क्रूर इवानके मरनेके समय उसके दो पुत्र जीवित थे, जिनमेंसे फयोदर उसकी पहिली बीबी अनस्तासिया रोमनोवासे था और दूसरा शिशु दिमित्र उसकी अन्तिम स्त्री मरिया नागायासे । अनस्तासिया रोमनोफ वशकी थी, जो कि जल्दी ही रूरिक-वशका स्थान लेनेवाला रूसका अन्तिम राजवश बनने जा रहा था । फयोदर रूसका जार बना और जारकुमार दिमित्र अपनी मा और नानावश ( नगाय ) के साथ उगलिच नामके छोटेसे नगरमें एक छोटी-सी जागीर देकर निर्वासित कर दिया गया । दिमित्र बहुत दिनोतक नहीं जिया, और १५९१ ई०में मर गया । फयोदर चिररोगी, बहुत दुर्बलबुद्धि किन्तु साधु स्वभावका आदमी था । वह अपना सारा समय भगवान्की भक्तिमें बिताता । गिर्जेके घंटोको बजाते उनकी टुन-टुनकी आवाज सुननेमें उसे बडा आनन्द आता था । लोग खुलेआम उसे मूर्ख कहते थे । राज्यका शासन जारके सबधियों और उसके कृपापात्र बायरोंके हाथमें चला गया, जिनमें बायर बोरिस फयोदर-पुत्र गदुनोफ जल्दी ही सबसे अधिक प्रभाव-शाली बन गया । गदुनोफ-परिवार पुराने रूसी राजुल-वशोंमेंसे नहीं था, इसलिये वह उच्चकुलीन होनेका दावा नहीं कर सकता था । लेकिन इवान IV के अन्तिम दिनोमें बोरिसका प्रभाव बहुत बढ गया था, जिसमें उसकी बहिन इरिनाका जार फयोदरसे ब्याह होना भी एक कारण था । वैसे बोरिस गदुनोफ बडा ही योग्य और गुणीपुरुष था, यद्यपि उसने ईसाई-धर्मके अनुसार पुस्तकोकी शिक्षा अच्छी तरह नहीं पाई थी । कुलीन बायर पुराने रीति-रवाजोका पालन करना आवश्यक समझते थे, किन्तु बोरिस उनकी पर्वाह नहीं करता था । वह विदेशियोसे मिलने-जुलनेमे जरा भी आनाकानी नहीं करता था ।

अपने वहनोईकी ओरसे शासनका भार मभालते ही उसका पहला काम था, अपने काममें बाधा देनेवाले बायरोको दरवारसे निकाल बाहर करना। वह स्वयं विदेशी राजदूतोसे मुलाकात करता और अपने घरमें राजदरवार जैसा ठाट रखता था। गदुनोफ ग्रीक चर्चके महत्त्वको समझता था। इस चर्चका सबसे बड़ा महन्त या महासघराज कान्स्तन्तिनोपोलमें रहता था, जो कि १४५३ ई० में सुल्तान मुहम्मद उसमानअली तुर्कके हाथमें चला गया था। यह कैसे पसंद किया जा सकता था, कि ईसाई-धर्मके एक बड़े सम्प्रदायका महागुरु ईसाई-विरोधी सुल्तानके मातहत रहे। १६ वीं सदीके अन्तमें महासघराज जव-तव मास्को आने लगा था, जहा उसे बहुत भेंट-भूजा मिलती थी। इसी तरहकी एक यात्रामें महासघराज जेरेमिया जव मास्को आया, तो गदुनोफने उससे रूसी चर्चके लिये एक पृथक् सघराज होनेकी स्वीकृति ले ली। १५८६ ई० में इस प्रकार बना प्रथम रूसी सघराज योव गदुनोफका अनुगामी था।

जार पयोदरके शासनके अन्तिम वर्षोंमें सारा शासनयंत्र वोरिस गदुनोफके हाथमें चला गया। गदुनोफकी सफलताओंने भी उसके प्रभावको बढ़ानेमें सहायता की। लिवोनियाके युद्धमें रूसके हार खानेपर वाल्तिक तटको स्वीडनने दखल कर लिया था, जिसके कारण पश्चिमी युरोपसे रूसका सीधा सवब नहीं रह गया था। गदुनोफने इसके लिये १५६० ई० में स्वीडनसे लड़ाई शुरू की, और १५६५ ई० की सविके अनुसार स्वीडनको मजवूर होकर फिनलन्ड खाड़ी और लदोगा-सरोवरके तटके भूभाग (इवान-गोरद, याम, कोपोरये, करेला) को दे देना पड़ा। उस समय-राज्यके सामने किसानोंकी एक बड़ी समस्या थी—रूसी किसान भूमिपतियोंके शोषण और अत्याचारके कारण अपने गावोंको छोड़ दक्षिण-पूर्व और उत्तरकी सीमात-भूमिमें बसते जा रहे थे, जिसके कारण खेतोंका जोतना मुश्किल हो गया था। उन्हें मजबूर करके रखनेके लिये स्वीडनसे युद्ध होते समय (१५६२-६३ ई०) ही किसानोंकी गणना की गई थी। उस वक्त जो किमान जिस जमींदारके अधीन दर्ज किये गये थे, उन्हें १५६७ ई० की राजघोषणाके अनुसार वही रहनेके लिये मजबूर किया गया।

१५६८ ई० में जार पयोदरके मरनेके साथ प्राचीन रुरिक-राजवंश समाप्त हो गया। जेम्स्की सवोर (राष्ट्रीय परिषद्) ने १५६८ ई० में बैठक करके वोरिस गदुनोफको नया जार चुना।

रुरिक-वंशने रूसके लिये बड़ा ही ऐतिहासिक काम किया। इसीके शासनकालमें जनयुगके अवशेषों को खत्म करके रूसमें एक शक्तिशाली सामन्ती व्यवस्था कायम की गई, फिर रूसके भिन्न-भिन्न टुकड़ोंमें बटी रियासतोंको डकट्टा करके बृहत्तर रूस देशके निर्माण करनेका प्रयत्न किया गया। इसमें मगोलोंने आकर दो शताब्दियोंतक कुछ बाधा जरूर डाली, लेकिन अन्तमें फिर एकीकरणका काम बहुत जोरसे शुरू हुआ और रूसकी सीमाएँ उत्तरमें फिनलन्डकी खाड़ी, पश्चिममें वाल्तिक-समुद्र, दक्षिणमें कास्पियन सागर और पूरवमें मिविर नगरतक फैल गईं। दक्षिणी सीमा कालासागरतक पहुँच जाती, लेकिन कान्स्तन्तिनोपोलके तुर्कोंने (१४७५ ई० में) क्रिमियाके खानको अपने अधीन करके उधरका रास्ता रोक दिया। यद्यपि आगेकी पौन शताब्दी रूसके लिये बहुत अच्छी साबित नहीं हुई, लेकिन साथ ही एक बार जहातक वह अपने पैरोंको रख चुका था और जहा जनताका स्वार्थ सहायता देनेके लिये मौजूद था, वहामें उसे पीछे हटाना नहीं जा सकता था। रूसको और आगे ले चलनेका काम अब प्रथम पीतरको करना था, जो कि औरगजेवका तरुण समकालीन था। अकबरकी मृत्युसे सात वर्ष पहले पयोदरका देहान्त हुआ। देशके एकीकरण और दृढताके लिये जैसे अकबरने भारतमें काम किया था, वही वाम रुरिक-वंशके १६ वीं शताब्दीके जारोंने किया। अकबरके कामको औरगजेवने बेगार कर दिया, लेकिन रूसके सीभाग्यमें उसे जार पीतर जैसा दूरदर्शी शासक और चतुर सेनानायक मिला, जिसने रूसने पिछड़ेपनको हटानेका काम बड़ी सफलतापूर्वक किया।

रुरिक-वंशवृक्ष  
(....६११-१५६८ ई०)

१ रुरिक ( ६११-?)

२ ओलेग  
(६११ ई०)

३ ईगर=४. ओलगा (६४५-५७)  
(. ६४५)

५ स्व्यातोस्लाव I (६५७-७३)

यारोपोल्क

ओलेग

६ व्लादिमिर I (६७३-१०१५)

७. स्व्यातोपोल्क (१०१५-१६)

८ यारोस्लाव (१०१६-५४)

९. इज्यास्लाव (१०५४-७३)

स्व्यातोस्लाव II  
(मृ० १०७६)

व्सेवोद

१० स्व्यातोपोल्क  
(१०७३-१११३)

११ व्लादिमिर II मनोमाख (१११३-१५)

ओलेग  
(मृ० १११५)

मिस्तस्लाव

१२ युरी I दीर्घबाहु (सुज्दल)  
(-११५७)

स्व्यातोस्लाव  
(मृ० ११६४)

१३ अन्द्रेइ (११५७-७४)

१४. व्सेवोद (११७६-१२१२)

ईगर (वीर)  
(मृ० १२०२)

१५ युरी II (१२१२-३८)

१६ यारोस्लाव II

१७ अलेक्सान्द्र नेव्स्की (-१२६३)

यारोस्लाव (त्वेर)  
(मृ० १२७२)

१८ दानियल (मास्को) (१२६३-१३०३)

१९. युरी III (१३०३-२५)

२० इवान I खलीता (१३२५-४१)

२१ सेमग्नेन (१३४१-५३)

२२ इवान II (१३५३-५६)

२३ दिमित्रि (१३५६-८६)

युरी

२४ वासिली I (१३८६-१४२५)

२५ वासिली II अघ (१४२५-६२)

२६ इवान III (१४६२-१५०६)

२७ वासिली III (१५०५-३३)

२८. इवान IV (१५३३-५०)



## भाग २

दक्षिणापथ ( १२२४-१७४७ ई० )





## चगताई-वंश

(१२२२-१३७० ई०)

छिड़गिस्के मरने के बाद उसका राज्य चार उलुसोंमें विभक्त हुआ—(१) जू-छि-उलुस या सुवर्ण-ओर्दू (किपचक-राज्य), जिसके बारेमें अभी हम कह चुके हैं, (२) ओगोताई-उलुस, चगताईके उत्तर-पूर्वमें था, जिसके खान एमिल और कुवानमें रहते थे, (३) तूलुइ-उलुस, जो कि ओगोताई उलुस-के उत्तरमें था और (४) चगताई (जगताई, जगदाई)-उलुस जिसके हाथमें अन्तर्वेद, सप्तनद और पूर्वी तुर्किस्तान था। इन चारों उलुसोंके अतिरिक्त कुविलेड खानके अनुज खुलाकूने ईरान, इराक, शाम और आजरवाइजानमें अपना एक अलग राजवंश कायम किया था। छिड़-गिस्ने ही अपना राज्य चार भागोंमें विभक्त करके चारों पुत्रोंको दे दिया था, लेकिन साथ ही चारों उलुसोंके खानोंको एक कआन (महाखान) के अधीन रहनेकी व्यवस्था भी कर दी थी। यह व्यवस्था बहुत-कुछ १३वीं शताब्दीके अन्त (कुविलेके मृत्युके समय १२६४ ई०) तक चलती रही, जिसमें सबसे अधिक बाधा ओगोताई और चगताई-उलुसोंकी ओरसे दी गई।

### १. जगताई, छिड़-गिस्-द्वितीय पुत्र (१२२७-४२ ई०)

छिड़गिस्ने अपने द्वितीय पुत्र चगताई (जगताई, छगताई) को जो भूभाग दिया था, उसमें अन्तर्वेद (आमू और सिर-दरियाके बीचका भाग), काश्गर, बदख्शा, बलख—अर्थात् उइगुर डांडे, अल्ताई और हिन्दूकुश पर्वतमालाओंके बीचके देश शामिल थे। चगताई-भूमिमें आजकल चीनी-तुर्किस्तान, सोवियत कजाकस्तान-किर्गिजस्तान-उज्बेकिस्तान-ताजिकिस्तान-तुर्कमानिस्तान और अफगानिस्तान शामिल हैं। चगताईवंशने ७७१ हि० (१३७० ई०) तक १४६ वर्ष राज्य किया, फिर उसका स्थान तेमूर और उसके वंशजोंने लिया। लेकिन, तेमूरकी सत्तानोंने अबू-सईद (१४५१-६६ ई०) तक चगताई-वंशके किसी व्यक्तिको गुडिया खान बनाकर कायम रखा। जिस तरह अब्बासी खलीफोंकी राजशक्ति खतम हो जानेपर भी बगदादमें उन्हें कठपुतली खलीफा बनाकर कायम रखा जाता रहा, उसी तरह छिड़-गिस्के वंशकी पवित्रताका खयाल करके चगताई खानोंको समरकन्दकी गद्दीपर रखा जाता रहा। चगताई-उलुस १२२७ ई० से १३१८ ई० तक रहा। उसके बाद राज्यशक्तिको हथियानेके लिये मंगोल और अ-मंगोल, स्वदेशी और विदेशी दलोंका झगडा उठ खड़ा हुआ, जिसमें अन्तर्वेदमें स्वदेशी तुर्कोंका पलड़ा भारी हो गया और इस प्रकार अन्तर्वेद (मावरा-उन्-नह) और मुगोलिस्तानके दो राज्य पैदा हो गये। चगताई खानकी राजधानी अल्मालिक इलि-उपत्यकामें वर्तमान कुलजा नगरके पास थी।

छिड़-गिस्के अन्त पुरमें पाच सौ खातूने (रानिया) और बेटिया थी। हरेक बड़े विजयमें हाथ लगी सुंदर राजकन्याओंमेंसे एकको हरएक सेनापति अपने कआनके पास भेजना आवश्यक समझता था। बापकी तरह उसके लड़कोंके भी बड़े-बड़े रनिवास थे, तो भी प्रमुख रानिया (खातूनें) मंगोल-वंशकी ही होती थी।

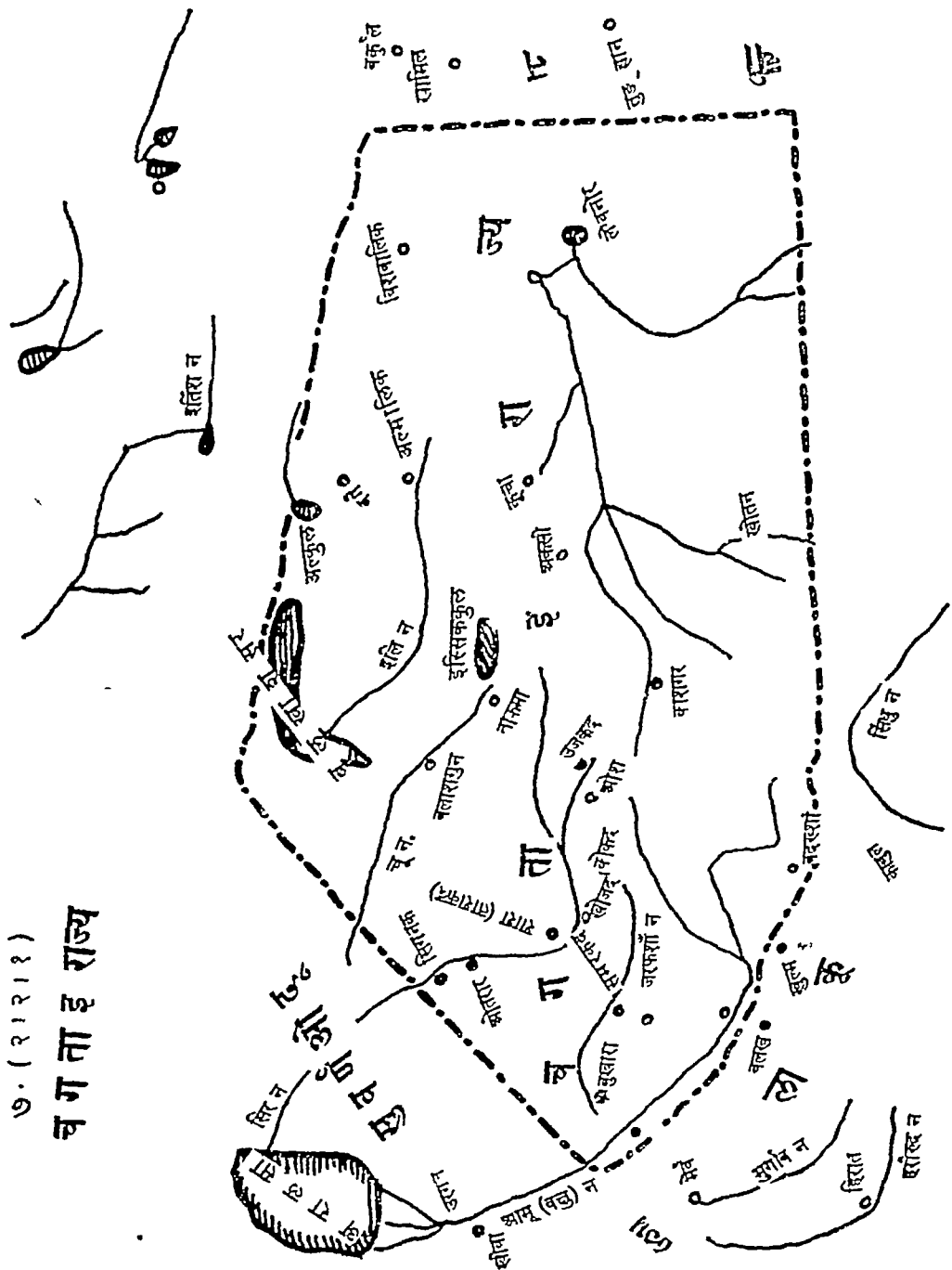
चगताई खान अपने पिताके यस्सा (नीतिशास्त्र) का पंडित तथा उसपर अक्षरशः चलनेवाला माना जाता था। यस्साके अनुसार घरेलू जानवरोंको जबह (हलाल) करना या दिनमें बहते पानीमें नहाना वर्जित था। जगताईने यस्साके विरुद्ध आचरण करनेपर एक मुसलमानको मृत्युदंड दे दिया था। उसका शासन दृढ़ किंतु न्यायानुमोदित था। उसके राज्यमें डाकका बहुत अच्छा प्रबन्ध था। यद्यपि वह जवर्दस्त

पियवकड था, किंतु राजकाजके देखनेमें गफलत नहीं करता था। लोग उसके कठोर नियमोंको भी मानते, क्योंकि वह भरसक अन्याय नहीं होने देता था। उसके यहाँ सभी धर्मों और जातियोंके लोग समान थे। समान दृष्टिमें देखे जानेका यह अर्थ नहीं था, कि मंगोलोंके समान ही दूसरे लोगोंको भी माना जाता था। उसकी प्रजामें अविकाश मुसलमान थे, इसलिये उसने मुसलमानोंको बड़े-बड़े दर्जे दिये थे, तो भी बड़े पदोंपर मंगोलोंके बाद तुर्कोंको अधिक देखा जाता था। इसका कारण भी था—केवल दक्षिणके थोड़ेसे अंशको छोड़कर उसकी प्रजा अविकाश तुर्क थी। तुर्कों और उनके सरदारोंने तुर्क जातिके इतिहासमें प्रवेश करनेके समय (६ठी सदीके मध्य) से ही सैनिक जीवनको नहीं छोड़ा और वह अब भी जब-तब घुमन्तू जीवनका भी अभिनय करते थे, क्योंकि मध्य-एशियामें घुमन्तू जीवनको सैनिक जीवनका पर्याय ममज्ञा जाता था। चंगताई और जू-छिके उलुस तुर्कोंके ऊपर शासन करते थे। अतमें इन उलुसोंके मंगोल भी इन्हीं तुर्कोंमें विलीन हो गये। लेकिन, चंगताई खानके लिये अभी वह समय दूर था। चंगताईने यलजपुत्र मसूदवेगको अन्तर्वेदका शासक नियुक्त किया था, जो कि तुर्क मुसलमान था। मसूद पहले चीनमें भी शासक रह चुका था। उस वक्त राज्यमें व्यक्ति-कर आमदनीका एक बड़ा स्रोत था, जो सम्पत्तिके अनुसार प्रतिव्यक्ति एकसे सात तक (११० जूयेनी) होता था। सभी धर्मोंके पुरोहित करसे मुक्त थे।

अपने गुरुतातातुगाकी शिक्षासे चंगताईने फायदा उठाया था। गुरुने शिक्षा दी थी—शासकको न्यायपरायण और उत्साही होना चाहिये। समरकन्द तथा बुखाराकी जगह अल्मालिकको राजधानी बनाना चंगताईके बाद उसके वंशजोंको भी पसंद आया, क्योंकि वहाँ उनके बहुसंख्यक घोड़ों और पशुओंके चरानेके लिये विशाल चरागाहें थी। अभी राजशक्ति मंगोल तलवारोंके ऊपर निर्भर थी, जो ऐसे खानको कभी नहीं पसन्द करते, जो पूर्वजोंके जीवनको छोड़कर नगरके-विलासी जीवनमें फस गया हो। मंगोलोंका शासन आर्थिक शोषणका था ही, इसलिये सारी निष्पक्षता दिखलानेपर भी मुल्ला मंगोल काफ़िरोके विरुद्ध लोगोंको भड़का दिया करते थे, जिसके कारण विद्रोह हो जाना आमान था।

**बुखारा-विद्रोह (१२३२ ई०)—**१२३२ ई० में बुखारामें मंगोलोंके विरुद्ध जो विद्रोह हुआ, उसका नेता एक छलनी बनानेवाला महमूद था। वह बुखारासे तीन लीग (योजन) दूर तारावमें पहले-पहल १२३२-३३ ई० (६३० हि०) में प्रकट हुआ। उसने दावा किया—अल्लाने मुझे दिव्य शक्ति देकर भेजा है। पहले शायद भूत भगानेका काम करके उसने अपने प्रति लोगोंके मनमें विश्वास पैदा किया। मुसलमान हो जानेपर भी पुराने भूत-प्रेत लोगोंके मनसे गये थोड़े ही थे—मुसलमान भी जिन, शैतान आदिपर विश्वास करते थे। महमूदकी दिव्यशक्तिको पहले उसकी बहिनने स्वीकारा, फिर उसके दूसरे बित्तने ही अनुयायी बने। सब जगह हल्ला हो गया है, कि सत महमूदके पास जो जाता, उसकी बीमारिया छूट जाती है। फिर अवे-ल्ले-नगडे बड़ी भारी सख्यामें उसके पास पहुचने लगे। जब २०वीं गताब्दीके मध्यमें उड़ीसाके नैपालवावाके पास लोग रेलों-मोटरो-विमानोंसे दौड़ने लगे, तो आजने सवा मात नौ वर्ष पहलेके अन्तर्वेदके लोगोंका ऐसा करना कौनसी आश्चर्यकी बात थी? महमूदका यश तारावमें चलकर राजधानीमें पहुचा। मुल्ला गम्बुद्दीन महमूदने पहले हीसे भविष्यद्वाणी लिख छोड़ी थी, कि मुसलमानोंका मुक्तिदाता तारावमें पैदा होगा। धर्मांध महमूदने जल्दी ही देखा, कि उसके अनुयायियोंकी सख्या बहुत अधिक हो गई है और वह मंगोलोंके विरुद्ध उठ खड़े होने के लिये उनको आज्ञा भर चाहते हैं। इस परिस्थितिको देखकर बुखाराके राज्यपाल और दूसरे अधिकारी घबड़ा उठे। उन्होंने उस समय खोजदमें अवस्थित मसूदवेगके पास सलाहके लिये खबर भेजी और इधर नये पैगम्बरको दुआ देनेके लिये बुखारा बुलवाया। मौका पाने ही उस पागलको मरवा चलनेवाला निश्चय किया गया था, किंतु महमूद उतना पागल नहीं था। उसे पड़्यन्नका पना लग गया। उसने साय चलने रखी मंगोलोंकी ओर मुह करके एकाएक उनके विश्वासघातके लिये भगवाना करने वहाँ—मैं तुम सबको इसी समय अवा कर देता हूँ। मंगोल रक्षियोंके दिलमें इसका भारी भय छा गया। उन्होंने इसे उसकी दिव्यशक्तिका प्रमाण ममज्ञा। बुखारामें महमूदका स्वागत

राजसी ढगसे हुआ। उसे सल्जूकी सुल्तान सजरके वनवाये महलमें ठहराया गया। दर्शन करनेवालो की भारी भीड लगने लगी। लोग यह सोचकर अपनी जीभ निकाले खडे होते, कि महमूदके थूककी एक वूद हमारे मुहमे चली जाये और हम सारे रोगो और आफतोंसे मुक्त हो जायें। बुखाराके मुल्लो और अमीरोने इम अद्भुत सतको अपनी दुकानदारी और अधिकारके लिये खतरनाक समझा। उन्होने मगोलोको उसे मार डालने की सलाह दी। सब होते भी महमूदको उनके फदेसे निकलकर पडोसके पहाडमे भाग जानेमे कोई अडचन नही हुई। लोग पैगम्बरके पीछे-पीछे चले। किसानोने हल्ला उडाया, कि पैगम्बर हवासे उडकर उस पहाडमे चला गया। लोगोकी भक्ति ओर भी वढ गई। महमूदने जब देखा, कि शासक उसका प्राण लेनेके लिये तैयार है, तो उसने हथियार उठानेके लिये हुकुम देते हुए कहा "अब समय आ गया है, कि काफिरोको कतल कर दिया जाय।" थोडे ही समय बाद महमूद पैगम्बर और सुल्तानके रूपमे एक भारी अधविश्वासी भीडको लिये बुखारामे दाखिल हुआ। उसने मुल्ला शम्शुद्दीन महमूदको बुखाराका सदरे-जहान नियुक्त किया, और लोगोको हुकुम दिया, कि घनियो तथा



अमीरोंको लूटो। अपने भक्तोंको उनसे विश्वास दिलाया—“मेरे पाम एक गुप्त सेना है, जो हवामे मेरे हुकुमकी प्रतीक्षा कर रही है। देखो उन हस्तिवस्त्रधारियोंको और उन दूसरे श्वेतवस्त्र-धारियोंको, जैसे ही मैं नकेत करूँगा, वह हमारी मददके लिये उतर आयेगे।” भीडमें एक आदमीने कहा, “हा, मैं देख रहा हूँ।” फिर अभीने वही बात दुहराई। महमूदने अगले जुमा (शुक्रवार) को अपने नामका खुतबा पढ़ाया। उसने वनियोंकी सम्पत्ति जब्त कर ली। बुखाराकी मुदरिया बहुत भारी नश्यामें उसके घरमें चली आई। बुखाराके बनी-मानी करमीनाकी ओर भाग गये, और वहाने मंगोल सैनिकोंको लेकर फिर बुखारा आये। महमूद अपने एक शागिर्दके साथ निहत्था ही उनसे मिलने चला गया। अवशिष्टाचारियोंकी भारी भीड भी पीछे-पीछे थी। इसी समय अकस्मात् बूल लिये आधी उठी, जिसमें आदमी एक-दूसरेको देख नहीं सकते थे। चमत्कारोपर विश्वास करने-वाले मंगोल डरके मारे भागने लगे। बुखारियोंने पीछा करके उनमेंसे बहुतोंको मारा, लेकिन इसी समय उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, कि उनका पैगम्बर मारा जा चुका है। महमूदका स्थान उसके भाई ने लिया, लेकिन वह एक ही मस्ताह शासन कर सका। इसी समय मंगोल सेनापति इल्दिर नोयन और जेद्गिन कुरजी काफी सेना लेकर आ पहुँचे। पहले ही आक्रमणमें महमूदके अनुयायी भाग खड़े हुए। मसूदवेगने मंगोलोंको नगर लूटनेसे तबतक रोके रखा, जबतक कि खानके पामसे आज्ञा न आ जाय। चगताईने लूटनेकी आज्ञा नहीं दी।

मंगोलों और उनके सरदारोंके बारेमें कितने ही लोग ख्याल करते हैं, कि वह वर्वर थे, लेकिन एक युरोपीय लेखक बन्नेरीका कहना है—“मंगोलोंका सवध ऐसी जातियोंसे हुआ था, जो सभ्यताके उच्च तलपर थी। अपनी जन्मभूमि (मंगोलिया) की तरहकी खुली जगहोंके लिये उनके दिलोंमें भारी प्रेम था। नगरों और वस्तियोंको वह भ्रष्टाचार और नामर्दीका स्रोत मानकर बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे।” उनके लिये आदर्श जीवन था पशुपालोंका—अर्थात् अपने पशुओंको लिये सफेद नन्देके तम्बुओं में खुली जगहोंमें रहना। बस्ती और नगरके वासियोंको वह तबतक छोड़ना नहीं चाहते थे, जबतक कि वह आज्ञाकारी रहें। बल्कि, ऐसे लोगोंके लिये वह युद्धव्यस्त नगरोंको फिरसे बसानेमें सहायता और प्रोत्साहन देते थे। इराक के जैमे कितने ही गृह्य उनकी लडाइयोंके कारण उजड़ गये थे, लेकिन मंगोलों ने वहाँके लोगोंको घुमन्तू जीवनकी ओर लौटानेका प्रयत्न नहीं किया। काश्गर प्रदेशकी अवस्थामें कुछ भेद था। मंगोलोंने जल्दी ही इस प्रदेशको अपने हाथमें कर लिया था। तरिम-उपत्यका उस समय उड्गुरोंकी थी, जो दौदघर्मी रह सस्कृतिमें अधिक विकसित हो चुके थे। वह अब घुमन्तू नहीं बल्कि बस्तीमें रहना पसन्द करते थे, और उन्होंने चीनी तुर्किस्तानके नागरिक जीवनको स्वीकार कर लिया था। उड्गुरों (कराखानियों)के उत्तराधिकारी कराखिताई भी जन्दी ही नागरिक जीवनके प्रभावमें आ गये थे। लेकिन, जिस तरह पञ्चमी तुर्किस्तानमें नगरोंके जीवनको फिरसे स्थापित करनेमें चगताइयों ने सहायता की, वही बात पूर्वी तुर्किस्तानमें नहीं हुई। वहाँ उजटे हुए नगर फिर नहीं बस सके, न टूटी नहरे फिरसे जागी की जा सकी, जिसके कारण हरे-भरे गाव और मुदर नगर वालुकासमुद्रमें डूब गये।

मंगोलोंके शासनकालमें दूसरी विद्याओंका प्रचार और विकास रुक गया, हा, इस्लामिक धर्म-ग्रन्थ और उगमे भी ज्यादा सूफी-मतोंका प्रभाव अवश्य बढ़ा। इस समयसे सूफीमतों (खोजो, शेखो) का प्रभाव इन भूमिमें इतना जबरदस्त स्थापित हो गया, जितना किसी दूसरे इस्लामी देशमें देखा नहीं जा सकता। इसी समयमें इन सत्तोंके परिवारोंने स्थायी तौरसे देशका धार्मिक और सांस्कृतिक नेतृत्व अपने हाथोंमें ले लिया। मतों और सूफियोंकी ओर लोगोंका इतना झुकाव शायद इसीलिये हुआ कि मंगोलोंने विजयी इस्लामको धूलमें मिला दिया था। सत्तारमें किसी ओरसे आज्ञा न रह जानेपर अब लोगोंका ध्यान गृह्यियोंके चमत्कारपूर्ण रहस्यवादी उपदेशों और विचित्र जीवनकी ओर खिंच गया।

चगताईके शासनके आरम्भ होने ही मंगोलोंद्वारा ध्वस्त नगरों और गावोंको फिरसे आबाद करनेके लिये सबसे जल्दी बात थी, भयभीत किसानों और कारीगरोंको समझा-बुझाकर काममें लगाना। हम ऐसा करने हैं, नगरोंके भीषण नर-संहारके समय भी मंगोलोंने कारीगरोंको प्राण-दान देकर

उनके दिलमें विश्वास कायम करनेकी कोशिश की थी। चगताई-शासकोके सहानुभूतिपूर्ण भावने भी लोगोके दिलमें विश्वास पैदा किया। मसूदवेग चगताई खानका परम विश्वासपात्र अधिकारी था, तो भी उसके अधीनस्थ नगरोमें कितने ही मंगोल शासक भी नियुक्त थे, जैसे समरकन्दका शासक जोङ्ग-सान ताउ-फू और बुखाराका बुका-बोशा, जिनमें पहला गायद चीनी था। चगताईका वजीर हेजिर तुर्क था। मसूदने लोगोकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये मदरसे भी कायम किये। १२३४ ई० में बुखाराके मसूदवेग और शेरकुली मदरसोमें हजार विद्यार्थी पढते थे।

गर्मियोमें चगताई खानका निवास कूयाश (सूर्य) अलमालिकके पास कोक (नील) पर्वत में रहता था। जाडोमें वह मेराउरिक (? मेराउजिक)—इलामे रहता, जो इलिके तटपर था। कूयाशके पास चगताईने कुतुलुग (पवित्र) गाव बसाया था। चीनी पर्यटक चान-चुनके अनुसार चगताई का ओर्दू इलि नदीके दक्षिणी किनारेपर—शायद उसी जगह जहा कि उमके उत्तराधिकारीका ओर्दू—उलुस-इफ या उलुस-इकमें था। चगताईका इल-अलरगू (सबसे बड़ा नगर) अलमालिक था। चगताईकी उइगुर प्रजामे अब भी कुछ बौद्ध थे, और कुछ ईसाई। इन दोनों हीके साथ मुसलमानोकी सख्त दुश्मनी थी। अभी सप्तनदके मुस्लिम जिलोमें भी काफी गैर-मुस्लिम रहते थे—उदाहरणार्थ, चू-उप-त्यकाके नेस्तोरी। १२५३ ई० में जब ख्वरिक इधरसे गुजरा, तो कयालिकसे उत्तर तीन फासीसी मील (ल्यू, १३॥ वर्स्) पर उसने एक गाव देखा, जिसके मारे निवासी ईसाई थे और वहापर उनका गिर्जा भी था। इस्सिकुल सरोवरके तटपर भी इसी नामके एक नगरमें १४वीं सदीमें अर्मनी साधुओके मठ थे। मार्को पोलोके अनुसार चगताई स्वयं ईसाई था। जो भी हो, मुसलमानोको जानवरोके हलाल करने और बहते पानीमें नहानेके लिये मृत्युदंड देना, उन्हें भडकानेके लिये काफी था। इसी भावको प्रकट करते चगताईकी मृत्युपर किसी मुसलमानने पद्य लिखा था—

“जिसकी डरसे कोई पानीमें नहीं उतरता था,  
वह डूब गया गहरे समुद्रमें।”

आज्ञाका विरोध करनेके लिये चगताईके हुकुमसे ६२६ हि० (३० XI १२२८-२१ X १२२९ ई०) में मुल्ला अबू-याकूब-यूसुफ सैकाकी मारा गया, जिसकी कब्र १६वीं सदीमें भी तेकेस नदीके तटपर मौजूद थी। लेकिन, यह सब होते हुए भी चगताई मुसलमानोका द्वेषी नहीं था, यह इससे भी सिद्ध है, कि उसके बहुतसे राजविभागोके प्रमुख मुसलमान थे। सबसे शक्तिशाली और धनी व्यापारी कुतुबुद्दीन खवास-अमिद था। ख्वारेज्मशाह मुहम्मदकी एक कन्या कुतुबुद्दीनसे व्याही थी और दूसरी चगताईके हरममें थी।

चगताईने अपने जीवनमें ही ओगोताई कआनकी सम्मतिसे अपने पोते करा हुलाकूको अपना उत्तराधिकारी बनाया था। वह दिसम्बर १२४१ ई० में मरा।

चगताई-वशमें निम्न खान हुये—

१ चगताई, छिडगिस्-पुत्र	१२२७-४२ ई०
२. करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र	१२४२-४६ "
३ येस्सू मङ्गू, चगताई-पुत्र	१२४६-५१ "
करा हुलाकू (पुन)	१२५१ "
४ ओरगाना खातून, कराहुलाकू-पत्नी	१२५१-५९ "
५ अलगू, अरिकबुगा, बेदार-पुत्र	१२५९-६५ "
६ मुबारकशाह करा हुलाकू-पुत्र	१२६६ "
७ बोराक इसुनदावा-पुत्र	१२६६-७१ "
८ निकपाई सरवान-पुत्र	१२७१-७४ "
९ तोका तेमूर कदमी-पुत्र	१२७४-८२ "
१० दुवा, दावा, बोरा-पुत्र	१२८२-१३०७ "

११ कुजेक, कोन्चोग्, दुवा-पुत्र	१३०७-८ ई०
१२ तनिक, त्विजिग, कदमी-पुत्र	१३०८-९ "
१३ केवेक, दुवा-पुत्र	१३०९ "
१४ एनेन्नुका, ईमनवुका, दुवा-पुत्र	१३०९-१८ "
केदेक (पुन)	१३१८-२६ "
१५ इलिकदई, इलिविगिदई, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१६ दुवा तेमूर, दुर्ग तेमूर, दुवा-पुत्र	१३२६ "
१७ नग्मा घेरिन, मजर, दुवा-पुत्र	१३२६-३४ "
१८ वजन, वोजन, दुवा-तेमूर-पुत्र	१३३४ "
१९ जेङकिम खलील, एवुगेन-पुत्र, दुवा-पौत्र	१३३४-३८ "
२० येस्मुन तेमूर, एवुगेन-पुत्र	१३३८-४० "
२१ अमी मुन्तान, ओगोताई-वधज	१३४०-४२ "
२२ मुहम्मद पुलाद, कोन्चोग-पुत्र	
२३ काजान, गाजान, यमाडर-पुत्र	१३४६ "
२४ दानियामन्द, ओगोताई-वधज	१३४६-४८ "
२५ बायनकुनी, मूरग ओगलान-पुत्र	१३४८-५८ "
२६ तेमूरशाह	१३५८-
२७ उलियाम खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र	-१३६३ "
२८ काबिलशाह	१३६३-६६ "

## २ करा हुलाकू, मोतुगान-पुत्र (१२४२—४६ ई०)

छिद्गिस् जिम वक्त हिन्दूकुश-पर्वतमालाके अजेय दुर्ग वामियान पर आक्रमण कर रहा था, उसी समय उसका अत्यन्त प्रिय पौत्र मोतुगान मारा गया। थायद बापके मारे जानेपर छिद्गिस्का भागी शोक करना करा हुलाकूके लिये चगताईके प्रेम और उत्तराधिकार पानेका कारण हुआ। गद्दीपर बैठने समय करा हुलाकू छोटा था, इसलिए राजकाजका भार अभिभाविकाके रूपमें उसकी दादी एवु-गकिन्ते अपने हाथमें लिया। अभिभाविकाने पहिला काम यह किया, कि हकीम मजीदुद्दीन और अपने पतिके वृत्तापाय वजीर हेजिरको हकीमने मिलकर चगताई खानको मरवानेके इल्जाममें मरवा डाला। उसने अपने बहनोंके हत्यार अहमदको अपना वजीर बनाया। अभी अवस्था ठीक नहीं हुई थी, कि इसी समय ओगोताई कथान मर गया और क्यूकने जवर्दस्ती कथानपदको ले लिया। उसने अपने सभी विरोधियोंको उनके पदमें निकाल दिया, जिनमें एवुमकेन भी थी। क्यूकने ६४५ हि० (८ V १२४७—२८ III १२४८) में इस्मुनको चगताई-उलुसका खान नियुक्त किया, जिसके कारण केवल अलमालिकमें ही नहीं, बल्कि चगताई-उलुसमें गटवटी फैल गई। मसूदवेगको भी भागकर बातूके पास गरण लेनी पड़ी। कथानग निर्वोचन १२४६ ई० तक नहीं हो सका था। कूरिन्ताई (महामन्द) की बैठकमें ओगोताईके पुत्र क्यूक (गूरु) को कथान चुना गया। क्यूक ईसाई-धर्मका पक्षपाती तथा चगताईकी तरह ही उल्लाम-विरोधी था। अब साम्राज्यमें ईसाईयोंका मान बहुत बढ़ गया था। ग्यूक कथानने करा हुलाकूको हटाकर जगताई-पुत्र येस्मू-मुद्दे (येस्मू-मद्गू) को खान बनाया।

## ३ येस्मू मद्गू, येस्मू-मुद्दे-खे (१२४६-५१ ई०)

येस्मू-मुद्दे ने नदी नगरमें मन्त्र रहता था, राजकाजका काम उसकी रानी तुगाशी देखती थी। साम्राज्यमें उसे उसका हवन जैसा योग्य व्यवस्था-अभिदा (वजीर) मिला था। खयाम हवयने जगताई गान्ते हवय पुत्रों गय अपने एक-एक पुत्रको तगा नक्का था। येस्मू-मुद्देके दरबारमें विद्वान् बहा-दुरीय मेगोतानी रहता था। उसका पिता फरगानाका येकुन्-उल्मास और मा कराखानी वधजा थी। गूरु-ये समय धान भागी सेनाके साथ पश्चिममें दिक्विजयके लिये भेजा गया था। इसी समय हुलाकू-

को दक्षिणमे दिग्विजयके लिये भेजा गया । अभी यह दिग्विजय-सेना कयालिक नगरसे सात दिन पर अवस्थित (सप्तनदके दक्षिणके अलाताऊ पर्वतके पास) अलाकामकमे थी, कि गूयुक कआनके मरनेकी खबर मिली । अब तुलुइका ज्येष्ठ पुत्र तथा कुविलेईका बड़ा भाई मुङ्ग-खे (मङ्ग-गू) कआनकी गद्दीपर बैठा । ओगोताईके पौत्रोंने इसका विरोध किया । वह समझते थे, कि गूयुकके बाद अब उनके उलुसका कआन होना चाहिये । इस विरोधमे येसू-मङ्ग-गू भी ओगोताईके पौत्रोंके साथ था । १२५१ ई० मे राजधानी कराकोरममें कूरिल्लाई बुलाई गई, जिसमे मुङ्ग-खेके गद्दीपर बैठनेका बड़ा विरोध हुआ । मगोलोमे भीषण सघर्ष शुरू हो गया । सतहत्तर बड़े-बड़े सरदार मारे गये, और बहुतसे खानजादे दूर-दूर निर्वासित कर दिये गये, जहा कितनेही मर गये । चगताई-गद्दीसे वचित करा हुलाकूने मुङ्ग-खेका पक्ष लिया । कआन अब भला येसू-मङ्ग-गूका क्यों पक्ष लेने लगा ? करा हुलाकूने अपने भाई वुरीके साथ एक बड़ी सेना ले चढाई की । येसू-मङ्ग-गू, तुगाशी खातून और वुरी आसानीसे पकड़ लिये गये । तुगाशी करा-हुलाकूको दे दी गई । येसू-मङ्ग-गू और वुरी भागकर वातूके ओर्दूमे चले गये, जहापर वुरीको मृत्युदंड दिया गया, और उसके वारह भाइयोंके साथ येसू-मङ्ग-गूको भी उसकी जन्मभूमिमे भेज दिया गया । येसूको फिर खानका स्थान मिलनेवाला था, किन्तु वह रास्ते हीमे मर गया । तुगाशी खातूनपर मुकदमा चलाकर उसे घोड़ेके नीचे रोंदवाकर मरवाया गया ।

### करा हुलाकू (पुन १२४६ ई०)

करा हुलाकूके राज्य सभालनेपर हवश आमिद फिर वजीर हो गया । उसने बहाउद्दीनको जेल-में डाल दिया । बहाउद्दीन ने कवितामें बहुत स्तुति की, लेकिन सब बेफायदा । रानी एरगेनाने नमदेमे लपेट ठोकरें लगवाती उसकी हड्डी तुड़वाई । करा हुलाकू अधिक दिन नहीं जी सका । उसके बाद उसकी रानी ओरगाना (एरगेना) ने गद्दी सभाली ।

### ४ एरगेना, ओरगाना, करा हुलाकूपत्नी

एरगेना मजुलता, गौदर्य, और प्रतापमे अपने समयकी तीन अद्वितीय मगोल-राजकुमारी बहिनोमेंसे थी, जिनके बारेमें कहा जाता था, कि दुनिया का कोई चित्रकार उनके रूपको अपनी तूलिकासे चित्रित नहीं कर सका—तीनो बहनें चगताई, वान्तू और खुलाकू-वशी खानोकी रानिया थी ।

मुङ्गखे कआनद्वारा पश्चिमके दिग्विजयार्थ भेजी गई सेनाओमेंसे कराकुरम और विशवालिगसे आनेवालियोंको चगताई-भूमिमें मिलना था । वहासे कयालिक और ओतरारके बीच पहुचनेपर ओरदा (जूछि-पुत्र) के पुत्र खकिरिन (खूकिरान) को इस भारी सेनाका सचालक बनना था । लेकिन अब वातू और मुङ्गखे कआनमे मतभेद हो गया था । मुङ्गखेने इसी बातको साधु खरिकसे कहा था—“जैसे सूर्य अपनी किरणोंको सर्वत्र फैलाता है, उसी तरह मेरी और वातूकी राज्यशक्ति भी देश-देशमे फैली हुई है ।” यह कहना इसी बातको सिद्ध करता है, कि अब कआनका वातूपर कोई दबाव नहीं था । कआन और वातूकी सीमा तलस (तरस) से थोड़ा पूरबमें मिलती थी ।

प्रधान-वजीर हवश हमीद (अमीद) और उसका पुत्र नासिख्दीन राजकाजमे ओरगानाकी सहायता करते थे । रानीकी योग्यतासे कोई इन्कार नहीं करता । इतिहासकार वस्साफके अनुसार ओरगाना स्वयं वौद्ध थी । १२८४ ई० मे ओरगाना अल्मालिकमें ही थी, इसी समय कआनका अनुज तथा रानीका बहनोई खुलाकू पश्चिमी एसियाके दिग्विजयके लिये आते हुए उससे मिला । वहासे खुलाकू की सेना सप्तनद और सिर-उपत्यका होते १२५५ ई० के वसतमे समरकन्द पहुची । इससे दो साल पहले (१२५३ ई० में) साधु खरिक सप्तनदसे गुजरा था । उसने अपने यात्रा-विवरणमे इस प्रदेशका अच्छा वर्णन किया है । लडाईके ध्वसके रूपमें उसने इलितटपर मिट्टीकी दीवारोवाले अनेक खडहर देखे थे । उससे कुछ दूरपर एक प्रसिद्ध नगर इलानवालिग था, जहासे १२५५ ई० में अर्मनी राजा गयतोन गुजरा था । उसने लिखा है—पहाडसे निकलकर बहुतसी नदिया बलकाश झीलमें गिरती है । यहीपर कयालिक नामका बड़ा नगर था । जहा बहुतसे व्यापारी रहते थे । यहाकी मैदानी भूमिमे पहले बहुतसी वस्तिया थी, जिन्हे तारतारोने ध्वस्त कर दिया । सप्तनदके उत्तरी भागमे अब

मंगोल घुमन्तू रहा करते थे। इतिहासकार जुवेनीके अनुसार मुङ्गघे कआनने उज्जन्दको करलुकवशी अरमलननानके पुत्रको प्रदान किया था।

हुलाकू (गुलाकू)ने ईरान पहुच वहाने चाट्टेको किमी काममे डलि और चूके बीचकी भूमि (मप्पनद) द्वारा कआनके पास भेजा। यह चीनी यात्री १२५६ ई० मे सप्तनद होकर गया था। वह इस प्रदेशका नाम ड-नू (ड-नू) बतलाता है और बहता है, कि वहा बहुतसी जातियोकी वस्तिया है। उस समय इस प्रदेशमें बहुत बृल थे।

ओरगानाने मप्पनद और अन्तर्वेदपर दस सालतक अच्छी तरह आसन किया।

कआनके मग्नेपर फिर जो उथल-पुथल हुई, उससे चगताई-उलुममे भी गडबडी मची। मुङ्गखे-कआन ६५८ हि० (१८ XII १२५६—७ XI १२६० ई०) मे मरा। अब कआनके सिंहासनके निये मुङ्गखेके दो भाइयों कुविले और अरिकवुगाका झगडा हुआ। अरिकवुगाने अलगूको और कुविले ने वुरी-पुत्र अविष्काको चगताई खान बनाया। अलगूकी शक्ति ज्यादा मजबूत थी। उसने ओरगानाको भगाकर अलमालिककी गद्दी नभाल ली।

### ५ अलगू, अरिकवगा, वेदार-पुत्र (१२५९-६५ ई०)

कुविलेद्वारा निर्वाचित चगताई खान अविष्काको रास्तेमे ही कुविलेके प्रतिद्वंद्वीने बदी बना लिया, लेकिन पीछे अलगूने इसका बदला कुविलेके प्रहारके समय सहायता देनेसे साफ इन्कार करके दिया। यही नहीं, उसने अरिकवुगाके तीन कर उगाहनेवालोको पकडकर उनके पामके पैमोको छीनकर मरवा टाला, और इसके बाद वह खुल्लमखुल्ला कुविलेका समर्थक बन गया।

तुकिस्नान माग अलगूके राज्यमे सम्मिलित था। उसके पास डेढ लाख सवार-सेना थी। ओरगानाने अरिकवुगाका पथ लेते उसके पास सदेख भेजा, इसपर अलगूने पाच हजार सैनिकोके साथ उचा-चर और विकी आंगलान तथा अमीरोमेमे हवय अमीर-पुत्र मुलेमानको भी वित्तिकची और अविष्काके साथ समरबन्द, बुवारा तथा अन्तर्वेदके दूसरे इलाकोमें सीमानोकी रक्षाके लिये भेजा। अलगूको सुवर्ण-ओर्दूके खिलाफ खारेजमे भी सफलता मिली।

इस विश्वासघातमे नाराज होकर अरिकवुगाने कुविलेके मकटकी पर्वाह न कर अलगूपर चढाई कर दी। ऐसा अच्छा मौका पाकर कुविलेने आक्रमण करके राजधानी करार्कोरमको अरिकवुगामे छीन लिया। उधर अरिकवुगाने भी अलगूमे चगताईराजधानी अलमालिक ले ली। अलगू भागा, और काइगर, खोजन्द होने समरबन्द पहुचा। अरिकवुगाने ६६२ हि० (४ XI १२६३—२४ X १२६४ ई०) के जटोंको अरमानिकमे बिताया। उसने अलगूके अनुयायियोंके साथ बडा निष्ठुर वर्ताव किया, और पाम-पटोंके उलाकोको इतना उजाड दिया, कि भयकर अकालके मारे हजारो आदमी मर गये। अरिकवुगाके इस दूर वर्तावमे उसके अच्छे-अच्छे सेनापतियोने साथ छोड दिया। तब उसे होश आया और समझतेके लिये तैयार हुआ। ओरगाना और मसूदवेग बातचीत करनेके लिये नियुक्त किये गये। अन्तमे चगताईका प्रदेश अलगूको दे देना पडा। खाली कोशको भरनेके लिये मसूदवेगने फिर प्रयत्न करना शुरू किया। अलगूका एक और भी दूसरा भयकर प्रतिद्वंद्वी था आंगोताईका पीत्र कंदू (काइ-दू), निम्ने शत्रूकी सहायतामे अन्तर्वेदके उत्तरी भाग—तुकिस्नान प्रदेश—को हटपनेकी कोशिश की, लेकिन, अरिकवुगामे छूटो पाकर अलगूने उसे मार भगाया। ओरगाना अलगूकी प्रिया पत्नी थी, जिसकी मृत्युके बाद ही समय बाद ६६४ हि० (१३ X १२६५—३ IX १२६६ ई०)में अलगू भी मर गया। अन्तिम समयमे अलगूको नदेह हो गया था, कि ओरगाना अन्तर्वेदके मुसलमानोका अधिक पक्षपात करती है, जिसे ही पापके कारण वह मरी।

अलगूका प्रतिद्वंद्वी कंदू बहुत समयतक कुविले खानका भी जेबदस्त प्रतिद्वंद्वी रहा। कुविलेको कआनका सर्वाधिकार और सभी तरहके भौतिक साधन प्राप्त थे, किंतु कंदूको केवल अपने कांशल तथा वीरताके दाम पर लटना था। उसने न कभी शराब पी और न कूमिस ही। पहले वह पहाडोके भीतर छिपकर अपने और अलगूके लड़ता रहा। फिर उसने वेरेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) और अलगूके बीचमें



झगडा डलवा दिया । वेरेकने किसी ज्योतिपीसे सुना था, कि कैदू बहुत भारी आदमी होगा, इसलिये वह उसकी सहायताके लिये तैयार होगया । जू-छि उलुसकी मददसे कैदू काफी शक्तिशाली हो गया, और उसने अलगूकी एक बड़ी सेनाको हराकर नष्ट कर दिया । अलगूने दूसरी जबरदस्त सेना भेजी, जिसने ओतरारके पास वेरेक खानको हराया—यह १२६५ ई० के अन्त या १२६६ ई० के आरम्भ की बात है । इन आरम्भिक लडाइयोंके बाद अलगूको सफलता मिलने लगी और वह अपने सभी इलाकोंको अपने हाथ में करनेमें सफल हुआ ।

## ६ मुबारकशाह, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६ ई०)

इतिहासकार जमाल करशीके अनुसार ओरगाना-पुत्र मुबारकको १२६६ ई० में आहनगर उपत्यकामें खान बनाया गया । चगताई खानोंमें वह पहला मुसलमान था, यद्यपि अभी खानोंका इस्लाम अधिकतर दिखावेके लिये था । सारी प्रजाके मुसलमान होनेके कारण ऐसा करनेमें लाभ था । मुबारकको बहुत कोमलप्रकृति और न्यायप्रिय कहा जाता है । कुविलेने उसको चगताई खान स्वीकार कर भी उसके सौतेले भाई बोराकको उसका उपराज बनाया, जिसमें कहीं मुबारककी शक्ति ज्यादा न बढ़ जाये । इस समय अब चगताई-राज्यके भीतर मुल्की, गैरमुल्की, मगोल-अ-मगोलका सवाल छिड़ गया था, जिसके उठानेमें बोराकका भी हाथ था । निम्न सिर-उपत्यका भी अब कैदूके हाथमें चली गई थी । कैदूके चालीस पुत्र अलग-अलग सेनाओंके सेनापति थे । लूटप्रेमी, घुमन्तू मगोल और तुर्क बड़ी सख्या में कैदूके झंडे के नीचे चले गये थे । कैदू अन्तर्वेद ही नहीं, कुविलेके राज्यको भी लेना चाहता था । कुविलेने उसके विरुद्ध अपने पक्षको मजबूत करनेके ख्यालसे बोराकको मुबारकका उपखान बनाकर अल्मालिक भेजा था, लेकिन बोराकने शुरूसे ही कैदूके साथ सहानुभूति दिखलानी शुरू की । दोनोंने बुखारा और समरकन्दके हथियार बनानेवाले (वस्साफ) के अनुसार ६६१ हि० ( १५ X १२६२-६ X १२६३ ई० ) में सोलह हजार कारीगरोंको भेंडोकी तरह आपसमें बांट लिया । इनमेंसे पांच हजार बातूको, तीन हजार हुलाकू को और बाकी कअानको मिले । उज्जद और पूर्वी तुर्किस्तानमें भी बोराकको सफलता मिली । इन सफलताओंके बाद अब मुबारकको गद्दीपर बनाये रखनेकी जरूरत नहीं थी, इसलिये सितम्बर १२६६ ई० में उसे बन्दीखानेमें डाल दिया गया, और सौतेले भाई बोराकने सीधे गद्दी सम्भाल ली ।

## ७ बोराक, करा हुलाकू-पुत्र (१२६६-७१ ई०)

कैदू कुविलेके विरुद्ध सफल नहीं हो रहा था, जूछि-उलुस भी प्रबल था, इसलिये वह चगताई-राज्य से ही कुछ छीन सकता था, इसीलिये बोराक और कैदूमें पूर्वी सिर-उपत्यका और सप्तनदके लिये झगडा हो गया । १२६८ ई० में जूछि-उलुसके खान मङ्गू-तेमूरकी सहायतासे कैदूने सिर-उपत्यकाको अपने हाथमें कर लिया । लेकिन उसके कुछ ही समय बाद कैदू और मङ्गू-तेमूरमें लडाई हो गई । इस अवसरसे फायदा उठाते हुए बोराक भी कैदूके ऊपर चढ़ दौड़ा, । दोनोंमें सेहून (सिर-दरिया) के तटपर लडाई हुई । कैदू और किपचक-सेनाकी हार हुई । बहुतसे लोग मारे गये या बन्दी बने, भारी सम्पत्ति लूटने मिली । यह खबर सुनकर मङ्गू-तेमूरने अपने चचा वेरकेचरको पांच तुमान (पचास हजार) सेना देकर भेजा । उसने बोराकको बुरी तरह हराया । वह समरकन्दकी ओर भी बढ़ना चाहता था, लेकिन कैदूने उसे मना कर दिया ।

इस युद्धमें हारकर बोराक अन्तर्वेदकी ओर भागा । उसकी सेना बिना लूटका माल पाये ही लौट रही थी, इसलिये उसे सतुष्ट करना आवश्यक था । बोराकने इसके लिये बुखारा और समरकन्दके लोगोंको केवल शरीर ले नगरसे बाहर निकल जानेका हुकुम दिया, जिसमें कि सेना नगरको लूटकर अपना मनोरथ पूरा कर सके । लोगोंके बहुत रो-धोकर विनती करने, भारी कर देने तथा हथियार बनाने वाले सिकलीगरोके रात-दिन हथियार बनानेके लिये वचन देने पर बोराकने अपने इरादोंको छोड़ दिया । बड़े जोरसे तैयारी होने लगी और बोराक जल्दी ही फिर लड़नेके लिये तैयार हो गया ।

कैदू केवल योग्य सैनिक ही नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था । वह अरिक्बुगा की गलतीको दुहरा नहीं सकता था । वह जानता था कि मेरा सबसे जबरदस्त शत्रु कुविले खान है,

इसलिये उमने ज़ान्तिसे काम लेना चाहा और मेल करानेके लिये बोराकके लगेटियायार किपचक ओगलानको उसके पास भेजा। बोरकने अपने मित्रका खूब स्वागत किया। दोनोंने एक दूसरेको प्याला दिया, मलाह हुई, कि जूछि, चगताई और कैदूके उलुमोंके बीच मित्रता स्थापित करनेके लिये एक कूरिल्ताई (महापरिपद) बुलाई जाय।

६६७ हि० (१० IX १२६८-१ VIII १२६९ ई०) के वसंत (मार्च-अप्रैल १२६९ ई० में) तलम और केंजककी मैदानी भूमिमें कूरिल्ताई एकत्रित हुई। कैदू और बोराक दोनों अपने-अपने रक्त तथा नुवर्णसे मिश्रित मदिराको एक साथ शान्तिचपकमें पीकर एक-दूसरेके अदा (परम मित्र) बने। कूरिल्ताईमें कैदूने कहा था—“हमारे महान् पितामह (छिङ्-गिस्) ने दुनियासे युद्ध किया तलवार और बाणके बलपर विजाल राज्य स्थापित किया। जब हम अपने पुर्खाकी ओर देखते हैं, तो हम सब भाई भाई हैं। लेकिन हममें कुछ भी मेल नहीं।” इसके जवाबमें बोराकने कहा—“बात ठीक है। मैं भी उसी वृक्षका फल हूँ। मेरे पास भी थोड़ा-बहुत यूर्त (ओर्दू) है। चगताई और ओगोताई (कैदूका पिता-मह) छिङ्-गिस् खानके ही पुत्र थे। ओगोताई क़ानसे कैदू, चगताईसे मैं, जेठे भाई जूछिसे बेरकेचर और मङ्गू-तेमूर और कनिष्ट भाई तू-लुईसे हुलाकू और कुविले हैं।

“हमारे समयमें पश्चिमातका स्वामी मङ्गू-तेमूर खताई-माचीनका राजा कुविले खान है, जिसके राज्यकी लम्बाई-चौड़ाईको भगवान् ही जानता है। पश्चिमानमें आमुसे सिरिया और मिस्रतक पिता-द्वारा अजित राज्यका खान अबका है। दोनोंके बीचमें हमारा राज्य, तुकिस्तान और किपचक है। मैंने अपना क़मूर नहीं मालूम होता।’ इमपर कैदू और बोराक दोनोंने कहा—“सत्य तुम्हारी ओर है। अब यही निर्णय है, कि आजके बाद हम एक दूसरेके विरोधी नहीं बनेंगे।”

इस प्रकार गरमागरम भाषण करते और भावुकता दिखलाते हुए मंगोल-राजवशियोंने आपसमें मेल किया। उनके लाखों घोड़ों और पशुओंके लिये चरागाहोंकी आवश्यकता थी, जो गर्मीकी अलग और जाटेकी अलग होती थी। गर्मीके दिनोंमें ओर्दू ऊँची ठंडी जगहोंमें जाकर अपने तम्बू लगाता और जाटेके दिनोंमें ऐसी जगहपर, जहाँ हवा और सर्दी कम होती तथा कुछ घास-चारा भी मिल सकता था। कूरिल्ताईने याङलक (गरम चरागाह) और किङलक (सर्द चरागाह) निश्चित कर दिये गये। कैदूके ओर्दूको मत्तनदमें स्थान दिया गया। मुस्लिम इतिहासकार कैदूकी न्यायप्रियताके बड़े प्रशंसक हैं—कैदूने सफ़त युद्ध करके अपने राज्यमें व्यवस्था कायम की थी।

कूरिल्ताईके फैमलेका प्रभाव ज्यादा दिन नहीं रहा। जब आर्थिक स्वार्थ एक-दूसरेके विरोधी हो, तो स्थायी मेल कैसे हो सकता है? बोराकको इस बटवारेके कारण अन्तर्वेदका एक-तिहाई हिस्सा—खोजदमें समरकन्दके पासतककी भूमि—कैदूको देना पड़ा। बोराक इस क्षतिको पूर्ण करनेके लिये आमुके दक्षिण (हुलाकूके राज्य) खुरासानपर चढ़ा। लूट-पाटके मारे किमान भागने लगे। गावोंके उजड़ जाने पर भारी अनाजका सामना करना पड़ता, इसलिये दोनों खानोंने बजीर मसऊदवेगको भेजकर किसानों को सान्त्वना देनेका प्रयत्न किया। बहुतत इमबक्त बड़ी बुरी अवस्थामें था। बोराक अबका खान (ईरान) पर चढ़ाई करनेके लिये उतावना हो रहा था। मसऊदने ऐसा न करनेकी मलाह दी, तो गुस्सेमें आकर बोंगवन उसे नात कोड़े लगवाये, जिसके लिये पीछे उसे खेद हुआ। तो भी उमने अपना सकल्प नहीं छोड़ा। रुपये-मैने का हिसाब करनेके बहाने मसऊदवेग अबका (इलखान) के पास गया, लेकिन उसका असली उद्देश्य था इलखानकी सैनिक स्थितिका पता लगाना। इलखानको पता लग गया। बड़ी मुश्किलसे मसऊदवेग जान बचाकर भाग सका। इस तरह असफल होनेपर चगताई खानने ईरानमें रहते चगताई-राजकुमार निकूदरको फोर्टनेके लिये एक गुप्तचर भेजा। अंतमें अपने पुत्र बेग-तेमूरको एक तुमान सेना के साथ राजस्थानके लिये भेजा। कैदूने भी कितने ही राजकुमारोंको भेजा देकर बोराककी महायताके नियंत्रण में, जिनमें मौतूगन-मोत्र बुरी-मुत्र अहमद, चगताई-मोत्र सरखान-मुत्र निकवेई ओगुल, और ओगोताई-मोत्र कैदू-मुत्र बानिगू (यानगू) थे। सभी लोग बलु (आमु दरिया) पार होनेके लिये तेरमिजकी ओर रवाना हुए। दूसरी सेना गू-युक बखान-मोत्र, हकुरखान-मुत्र चुवाद, तथा कैदू-पुत्र किपचकके साथ गीवामें बलु नदी पार होनेके लिये भेजी गई। एक और भी सेना मङ्किशलकसे होते कोकानू

कुचुकके नेतृत्वमे रवाना हुई। अपने पुत्र बेक तेमूरको दस हजार सेना दे बोराक अन्तर्वेदमें छोड़ नावोके पुलसे वक्षु पार हुआ। उसका कैम्प मेर्बेमे पड़ा, जहासे उसने अपने सैनिकोको कुविले कप्रानके भतीजे खुलाकू-पुत्र अबकाके सारे देशको लूटकर वरवाद करनेका हुकुम दिया। उस समय खुरासान का राज्यपाल अबका-पुत्र अरगून था। बोराककी सेना खुरासानमें दाखिल हुई और उसने बदखशा, कीसिम, शापूरगान, तालिकान, मेर्व-शायान, तथा नेशापोर (२८ अप्रैल १२६६ ई०) तकके प्रदेशको लूटा और उजाड़ा। थोड़ेसे प्रतिरोधके बाद सारे खुरासानपर बोराकका अधिकार हो गया। उसका मुकाबिला करनेके लिये अबका आजुरवाइजानसे चला। हेरातके पास दोनो सेनाओंमें लड़ाई हुई, जिसमें बोराकको हार खानी पड़ी। अबकाने पराजित सेनाका पीछा किया। शायद सारी चगताई सेना नष्ट हो जाती, लेकिन सेनापति जलेरताईने बड़े कौशलसे उसे नष्ट नहीं होने दिया। अबकाने अन्तर्वेदके बहुत से इलाकोको लूटा। उस वक्त मंगोलोके सामने मुसलमान चापलूसी करते कहातक गिर गये थे, इसका उदाहरण यह घटना है—अबकाने खाते समय एक बार अपने वजीर शम्शुद्दीनकी ओर चाकूके नाकपर सूअरका मांस रखकर बढ़ाया। वजीरने जमीन चूमकर इस अत्यन्त हराम भोजनको खा लिया। इसपर खानने अपना प्याला उठाकर उसकी तरफ किया। उसके न लेनेपर अबकाने कहा—“इसने प्याला लेने से इन्कार करके मुझे नाराज नहीं किया, लेकिन यदि इसने मांसको लेनेसे इन्कार किया होता, तो मैं उसी चाकूसे इसकी आंखें निकाल लेता।”

जिस समय बोराकने खुरासानपर सफल आक्रमण किया, यदि उसी समय उसके मित्रोंमें फूट न हो गई होती, तो शायद अबकाको इतनी आसानीसे सफलता न मिलती। बोराकका अदा (परम मित्र) किपचक ओगलान चगताई सेनापति जलेरताईके किसी बर्तावसे असंतुष्ट हो साथ छोड़कर चला गया। बोराकने उसे दंड देनेका वचन दिया भी, किंतु किपचक ओगलान नहीं रुका। गू-युक कप्रानके पुत्र जवात ने भी इसी समय साथ छोड़ दिया। अबकाने एक और चाल चली। उसने बोराकके तीन दूतोंको पकड़ सासत देकर उनसे यह स्वीकार करवाया, कि हम अपने खानकी ओरसे गुप्तचरका काम करने आये हैं। वह मृत्युकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे, कि इसी समय धूलिवूसरित घावने आकर खबर दी—“मेरे स्वामी! दरबन्द (कास्पियन) की ओरसे शत्रुओं (किपचकों) ने भारी सख्यामें आकर देशपर घावा बोल दिया है, पश्चिमी प्रदेश तलवार और आगसे ध्वस्त किये जा रहे हैं।” अबका यह खबर सुनकर आजुरवाइजानकी ओर चला गया और बोराकके दूतोंको भागनेका मौका मिल गया। बोराक विजयने कुछ निश्चितता हो गया, किंतु, फिर अचानक लौटकर अबकाने हेरातके पास बोराककी जबरदस्त हार दी। बोराक इस लड़ाईमें घायल हुआ। अपनेको खतरेमें डालकर सेनापति मेरगुल और जलेरताईने बोराकको निकालकर वक्षुपार न कराया होता, तो बोराककी जान न बचनी।

इस भीषण पराजय और मित्रोंके विश्वासघातके बाद बोराक ६६६ हि० के वसंत (मार्च-अप्रैल १२७१ ई०) में मर गया।

### ८ निगपई, सरवान-पुत्र (१२७१-७४ ई०)

नये खानके शासनकालमें भी चगताई और ओगोताई उलुसोका झगडा जारी रहा। कैदूने निगपईको खान बनाया, इसपर बोराक और अलगूके पुत्रोंने विद्रोहकर दिया। इस संघर्षमें जरफशा-उपत्यका के सारे नगर नष्ट हो गये। निगपई पीछे कैदूके विरुद्ध हो गया और उसके साथ लड़ते हुए १२७४ ई० में मारा गया।

### ९. तोका तेमूर, कदमी-पुत्र (१२७४-८२ ई०)

निकपाई और तोका तेमूरका नाम कितनी ही वंशावलियोंमें नहीं मिलता, जिसका कारण यही हो सकता है, कि उनका शासन गृह-युद्धोंके समयका था, जिसमें एकसे अधिक राजकुमार तख्तके दावेदार थे।

### १०. दुवा, तुवा, दावा, बोराक-पुत्र (१२८२-१३०७ ई०)

चगताइयोंमें दुवा बहुत शक्तिशाली खान, और कैदूका पक्का साथी था। उसके लिये इसने कैदूसे खानोसे बहुतसी लड़ाइया लड़ी। प्रसिद्ध इतिहासकार शम्शुद्दीन जुवैनी इसका वजीर था। अबका

की मेना लूट-पाट करते ६७१ हि० (२६ VII १२७२-१६ VI १२७३ ई०) में बुखारा पहुंच महान् नगरको लूट वहाके नागरिकोंमेंसे पचास हजारको बन्दी बना जब लौट रही थी, तो मेनापति चापरने आक्रमण करके उनमेंसे किनने ही बन्दिओंको छुड़ा लिया। तीन साल बाद फिर अबकाने आकर देशको बरबाद किया, जिसका सुवार दुवाके शासनकालमें ममऊदबेगके योग्य प्रबन्धके कारण हो पाया। श्वेत-ओर्दूके वायन खानसे भी दुवाका विशेष झगडा था, क्योंकि वह कैदू और दुवाके विरोधियोंका पक्षपाती था। १३वीं सदीके प्रथम वर्षमें इन दोनों दलोंने अठारह लडाइया लड़ी। वायनके पीठपर नेमूर कयान था, सुवर्ण-ओर्दू और इलखान (ईरान) भी वायनके दलमें सम्मिलित थे—दुवाके विरुद्ध उत्तर-पश्चिममें तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू) और वायन (श्वेत-ओर्दू) की सेनायें थी, दक्षिण-पश्चिममें गाजनखान (ईरान) और दक्षिण-पूर्वमें बदख्शाका शासक भी चीन-सम्राट् (कुबिले) के पक्षपाती थे। इनने जयदस्त शत्रुओंने घिरे रहने भी देशकी समृद्धि और राज्यकी शक्तिको बनाये रखना दुवा की योग्यताका परिचायक था।

कैदूके चालीस पुत्र थे, यह हम कह आये हैं। उसने छिद्-गिस् खानकी तरह अपने राज्यको अपने ४० लडकोंमें बांट दिया था—बड़ेको चीन सीमान्तपर, बेंकेचेरको जूछि सीमातपर सरवानको अफगानिस्तानमें सर्वज्येष्ठ पुत्र चापरको सबसे अधिक मघर्षके स्थान सप्तनदमें रक्खा था। कैदूकी-पुत्री खुतुलुन चागा भी बड़ी ही वीर तरुणी थी। अपने पिताके अभियानोंमें भाग लेनेके कारण उसने व्याह नहीं करना चाहा। कैदू उसे बेटी नहीं, बेटेकी तरह प्यार करता था। उसने उसे स्वयंवर चुननेके लिये कहा। जब कोई वर नहीं मिला, तो गाजन खान (ईरान) को देना चाहा, लेकिन खुतुलुन चागाने यह पसन्द नहीं किया और अपने पिताके बड़े दरबारी एक चीनीको अपना हाथ दिया। कैदू करगीके अनुसार १३०१ ई० में (दूमरोके अनुसार १३०३ ई० के वसंतमें) लडाईमें मरा। उसका मृत शरीर चू और इलि नदियोंके बीचके ऊँचे पहाड मित्रालिकमें दफनाया गया।

कैदूके मरनेके बाद अब दुवा सबसे प्रभावशाली खान था। उसने १३०३ ई० के वसंतमें चापर को कैदूका उत्तराधिकारी बनाया, जिससे कैदू-पुत्रोंमें झगडा उठ खडा हुआ। बाहर भी शत्रुओंका भय था ही। तोकताई (सुवर्ण-ओर्दू खान) ने वायनके शत्रु कुडलुको समर्पण करनेकी माग की। इन्कार करनेपर उसने दो तुमान मेना दे वायनकी पीठ ठोकी। फरवरी १३०३ ई० के आरम्भमें वायनका दूत दुवा और चापरके साथ मिलकर लडाई करनेकी बात तै करने बगदाद गया।

दुवा एक कुशल सैनिक ही नहीं था, बल्कि कैदूकी तरह एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी था। यद्यपि पतित द्वित्र-भिन्न करनेवाले विरोधी तत्त्वोंसे उसे लडना पड रहा था, लेकिन वह समझ रहा था, कि यदि चंगतई इसी तरह चलती रही, तो कुछ ही समयमें अन्तर्वेद, सप्तनद, किपचक और ईरान-इराक में छिटगिस्-बशका नाम मिट जायेगा। इसीलिये वह सोच रहा था, कि कयानकी अधीनतामें सभी उलुगुंका एक भग्न बनना चाहिये। उसने इसके लिये एक योजना बनाई—(१) सभी आपसमें शांतिसे रहते कयान (चीनने मंगोल सम्राट्) को अपना प्रभु मानें, (२) सभी देशोंमें व्यापारकी स्वतन्त्रता हो। उसने इस योजनाको सबसे पहले कयान तोग्तोगूके पास भेजा, जिसने उसे बहुत पसन्द किया। इसके बाद अगस्त १३०४ ई० में चापर और दुवाके दूत योजनाको लेकर ईरान गये। वहा तथा पीछे जूछिके दरबारमें भी इस योजनाका स्वागत नहीं हुआ, शायद उन्होंने इसे दुवाकी एक चाल समझा।

चंगतई राजकुमार अपने युत्नोंको लेकर चरागाहोंमें घूमा ही करते थे, जहा किसी छोटीसी शान्तरी भी देख झगडा हो पडता स्वाभाविक था। १३०४ ई०में अन्तर्वेदमें चापरका कुछ चंगतई राज-दुमागेने साथ झगडा हो गया। उसके लिये तरुणोंके लडकपनपर अफसोस प्रकट करने लोग समझीता मंगनेने लिये ताशतन्दम जमा हुये। ओगोताईके राजकुमार जोचोकबालिकमें चापरके भाई शाहके युवपर दृढ़ पडे। उन समय दुमाता मेनापति दक्षिण-सप्तनदके अरपा-उपत्यकामें हेमत-वास कर रहा था। शाह अपने साथ हजार आदिमियोंके साथ भागकर अपने भाई बेंकेचेरके पास पहुंचा। विरोधी राजदुमागेने कयान-शाहीके पागवाने नगरीको घेरा। चापरको यह खबर कयानकी सेनामें लडते ही भेजा गया। वहाने हार मानकर वह तीन सवारोंके साथ भागकर दुवाके पास गया।

रशीदुद्दीनके अनुसार दुवा १३०६ ई० में मरा और वस्साफके अनुसार १३०७ ई० में ।

### ११. कुजेक, कुचोक, दुवा-पुत्र (१३०७-८ ई०)

दुवाके मरनेपर वरकुलसे बुलाकर कुजेकको अलमालिकके पास सेवकुन स्थानमें गद्दीपर बिठाया गया । यह युलदुजमें मरा । इसके समयमें भी गृह-युद्ध जारी रहा, और बुरीवाशीके पास तथा सिर-उपत्यकाके पूर्वी भागमें कई लडाइया हुई । अपने प्रतिद्वंद्वी ओगोताई राजकुमार कुरसेवेसे लडकर भागते समय कुजेक मारा गया ।

### १२ तलिकू, तलिक, खिजिर, कदमी-पुत्र (१३०८-१० ई०)

बुरीको १२५१ ई० में कतल किया गया था, यह हम बतला चुके हैं । उसीका पुत्र तलिकू अब गद्दीपर बैठा । इस समय जल्दी-जल्दी खानोका बदलना यही बतला रहा था, कि अब सत्ता दरबारियोंके हाथमें थी और खान उनके खेलके मुहरे थे । मुस्लिम दरबारियों और प्रजाको प्रसन्न करनेके लिये तलिकूने खिजिरके नामसे अपनेको मुसलमान घोषित किया, जिससे मंगोल राजकुमार नाराज हो गये—अबतक मंगोलोंने बौद्ध धर्मको जातीय धर्मके तौरपर स्वीकार कर लिया था, इसलिये वह नहीं पसन्द कर सकते थे, कि उनका खान मुसलमान बन जाये । इसी भावनासे प्रेरित हो तीन सौ सवारोंके साथ दुवा-पुत्र केवैकने रातको भोजके समय खेमेंमें घुसकर खानको मार डाला । वस्साफके अनुसार तलिकू ७०८ हि० (२१ VI १३०८-१२ V १३०९ ई०) में गद्दीपर बैठा, दूसरे इतिहासकारोंके अनुसार ७०९ हि० (११ VI १३०९-२ V १३१० ई०) में गद्दीपर बैठा, तथा ७१० हि० (३१ V १३१०-२१ IV १३११ ई०) में उसकी मृत्यु हुई ।

### १३ केवैक, दुवा-पुत्र (१३१० ई०)

केवैक बहादुर और स्पष्टवादी खान था । चापरने पिताकी शत्रुताको उसके पुत्र केवैकतक कायम रखवा, लेकिन उसे हार खानी पड़ी । अब चगताई-उलुस अस्त-व्यस्त हो चुका था । चापरने त्युकमें, बड़-केचर और उरुस-पुत्रोंके साथ मिलकर केवैकके ऊपर चढ़ाई की, लेकिन उसे इलि नदीके पश्चिममें पराजित होना पड़ा । फिर इलिके रास्ते जाकर उसने त्युकमेंको हराकर उसके युर्तको छिन्न-भिन्न कर दिया । त्युकमेंने पूरवमें भागकर कआनके पास चीनमें जाना चाहा । भागते समय त्युकमेंकी भिडत केवैककी सेनासे हो गई, जिसमें वह मारा गया । राजकुमारोंके इस घरेलू सघर्षोंके कारण कृषि और व्यापारको भारी क्षति हुई । केवैकने इस सघर्षको वन्द करनेके लिये ७०९ हि० (११ VI १३०९-२ V १३१० ई०) में कूरिल्टाई बुलाई और उसके इस निर्णयको स्वीकार किया, कि गद्दी उसके भाई एसेनबुकाको दी जाय, और वह कआनके अधीन रहे ।

### १४. एसेनबुगा, ईसनबुका, दुवा-पुत्र (१३१०-१८ ई०)

कैदूका विशाल राज्य अब छिन्न-भिन्न हो गया था, और उसका अधिकांश चगताई-उलुसके हाथमें चला आया था । कैदूके पुत्रोंमेंसे शाहके पास कुछ इलाके रह गये थे । एसेनबुगाने राज्यके भीतर और बाहर शान्ति स्थापित करनेका प्रयत्न किया । इसके लिये उसने १३१२ ई० में उज्वेक खान (सुवर्ण-ओर्दू) के साथ मित्रता स्थापित की, जो १३१५ ई० तक रही, जबकि चगताई और जूछि दोनों उलुसोंने अपने शत्रु उलजैतू (ईरान) पर आक्रमण किया । चगताई सेनाने इलखानी सेनाको हराकर हेरात तक उसका पीछा किया । चार महीनेतक यह प्रदेश चगताइयोंके हाथमें रहा और उनकी सेनाने वहां बहुत अत्याचार किये ।

कआन वयन्तुका ओर्दू जाडोंमें कोबुक-तटपर और गर्मियोंमें एसुन मोरान (ईतिश-शाखा) पर रहता था । ऐसे ही समय एसुन मोरानके पास उसका चगताई उलुससे झगडा हो पड़ा । कआनकी दूसरी सेना उस समय चालीस दिनके रास्ते पर थी । तोकाजीके नेतृत्वमें कआनकी सेनाने एसेनबुगाके हेमत-वास (इस्सिकुलके समीप) और ग्रीष्मवास (तलसके समीप) को लूटा-पाटा । इस समय (१३१२ ई०) एसेनबुगाकी उज्वेक खानके साथ मित्रता थी । जब कआनकी सेनाके आक्रमणकी बात एसेनबुगाको मिली, तो वह खुरासान छोडकर उत्तरकी ओर लौटा । लेकिन इलखान उल्जैतू खुदाबन्दा

ऐसेनके अत्याचारोंको कैसे भूल सकती था ? ऐसेनबुगामे नाराज उसका मुसलमान हुआ भाई यसाउर उस समय ईरानमें रहता था। उल्जैतूने उसे सेना देकर ७१६ हि० (२३ III १३१६-१४ II १३१७ ई०) में वधुपार भेजा। ऐसेनबुगाकी भारी हार हुई और वह अन्तर्वेद छोड़कर भाग गया। उल्जैतूकी सेना-ने देशमें लूट-मार मचाई, और उसने बुखारा, समरकन्द और तेरमिजके निवासियोंको बीच जाड़ेमें ज़बर्दस्ती दूसरे स्थानोंमें भेज दिया, जिसके कारण उनमेंसे हजारों मर गये।

ऐसेनबुगा १३१८ ई० में मरा। प्रसिद्ध पर्यटक डव्न-वतूताके अनुसार वह शायानी (बौद्ध) धर्मको मानता था, यद्यपि मुसलमानोंके साथ उसका वर्तव्य अच्छा था।

### केवेक पुन. (१३१८-२६ ई०)

केवेकने डमलिये गद्दी छोड़ी थी, कि चगताई-उलुसके आपसी झगड़े मिट जायें और राजशक्ति मजबूत हो, लेकिन ऐसेनबुगाके अत्याचारोंने अवस्था और गोचनीय बना दी। केवेक फिर गद्दीपर बैठा, लेकिन वह एकता स्थापित करनेमें सफल नहीं हुआ। चगताई-उलुस अब दो भागोंमें बंट गया। अन्तर्वेदमें मुसलमान (तुर्क) अमीरोंका प्रभाव अधिक था और पूर्वी भागमें मंगोल अमीरोंका। पूर्वी भाग-सप्तनद और पूर्वी तुकिस्तान-मुगोलिस्तान के नामसे इसी समय अलग होने लगे, जिसका प्रथम खान ऐसेनबुगा-पुत्र तुगलुक तेमूर हुआ। केवेकद्वारा गद्दीसे वंचित होनेका बदला ऐसेनबुगाके पुत्रने इस बटवारे द्वारा लिया। अब भी केवेकके शासनमें अफगानिस्तान, अन्तर्वेद और सप्तनदका बहुतसा भाग था। केवेकने अपनी राजधानी नखशेवमें रखी, और वहाँसे ढाई फरसख\* पर अपने लिये एक करशी (महल) बनवाया, जिसके ही कारण पीछे नकशेवका नाम करशी पड़ गया। डव्न-वतूताके अनुसार केवेकको उसके भाई तरमाशेरिन (धर्म-छे-रिड) ने मार डाला।

### १५ इलिकदर्ई, इलचीगिदर्ई, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

केवेकके बादके खान जल्दी-जल्दी बदलते रहे या वजीरोंके हाथकी गुडिया बने रहें। इसी समय बौद्धिक मिशनरियोंने ईसाई-धर्मके प्रचारमें बड़ी सरगर्मी दिखलाई।

### १६ तुवा-तेमूर, दुवा-तेमूर, दुरी तेमूर, दुवा-पुत्र (१३२६ ई०)

खान बननेमें पहले यह एक पूर्वी जिलेका ठाकुर था। वहाँ रहते १३१५ ई० में इसके पास चीन-में महायता आई थी। गद्दीपर यह कुछ ही महीनों रह पाया, क्योंकि इसके भाईका हत्यारा तरमाशेरिन राज्यपर घात लगाये हुए था।

### १७ तरमाशेरिन, धर्म-छे-रिड, दुवा-पुत्र (१३२६-३४ ई०)

धर्म-छे-रिड नस्कून धर्म और तिब्बती छेरिड, (दीर्घायु) दो शब्दोंसे मिलकर बना है। इसका नाम ही बतलाता है, कि चगताई-उलुसपर बौद्ध-धर्मका कितना प्रभाव था, लेकिन तरमाशेरिनने अपनेको बटुटेर मुसलमान मिट्ट करनेकी कोशिश की। राजवशका डूबता मितारा मुसलमान बनकर अवलम्ब बूढ़ रहा था। तरमाशेरिन १३२६ ई० के अन्तमें गद्दीपर बैठा और खान बनते देर नहीं लगी, कि उसने मुसलमान बन यसाउरीन नाम धारणकर धार्मिक कर्तव्यपालन करनेके लिये अफगानिस्तान और पंजाब तक जहाद (धर्मयुद्ध) शुरू कर दिया, लेकिन इसी समय अलमालिक और राज्यका पूर्वी भाग हाथसे निकलकर मुगोलिस्तानके खानके हाथमें चला गया। मुगल-राजकुमारोंका प्रभाव अब खतम हो चुका था। इस्लाम नुस मुसलमान अमीर सर्वेसर्वा थे। यह मंगोलोंकी संस्कृतिपर इस्लामकी विजय थी। इस्लाम केवल उन्नाम और गैर-उन्नाम धर्मका ही झगड़ा नहीं था, बल्कि युद्धजीवी घुमन्तू पंथ टुपि-यापाग-नीधी स्थायी निवासियोंका भी द्रष्टा बन रहा था। युद्धजीवी घुमन्तुओंमें मंगोल ही नहीं बल्कि भारी तन्नाम नुस भी शामिल थे।

तरमाशेरिन तरमाशेरिनने ७२५ हि० (१८५३ १३२४—८५१ १३२५ ई०) में राज्य पर किया था, लेकिन नये नागोंने मन्गीने ज़बर्दस्ती हान साकर वधुपार भेजा। डव्न-

\* १ फरसख = ६ मील = १० मील = ३ मीलके लगभग।

वतूता दो महीनेतक बुखारामे तरमागेरिनका मेहमान रहा । वह इसे बडा ही पक्का मुसलमान कहता है । अपने समसामयिक दिल्लीके सुल्तान मुहम्मद तुगलकके साथ इसका बहुत अच्छा संबंध था और तुगलककी इस्लाम-भक्तिका वह अनुकरण भी करना चाहता था । इब्न-वतूताने लिखा है—एक बार किसी धार्मिक भूलके लिये मुल्ताने तरमाको लोगोके सामने फटकारा । खानने उसे बुरा न मान आसू बहाते हुए तोवा किया । इब्न-वतूताके अनुसार उसने अपने सिंहासन और प्राण इस्लामके लिये न्योछावर कर दिये थे ।

इस्लामकी इतनी अधभक्ति देखकर मंगोल-राजकुमार चुप रहनेके लिये तैयार नहीं थे, आखिर उन्हें भी धर्म-भक्ति करनेके लिये तिव्वतसे बौद्ध-धर्म मिल चुका था । १३३४ ई० में दुवा तेमूरके पुत्र वूजनके नेतृत्वमे विद्रोह हुआ—इब्न-वतूताके अनुसार वूजन मुसलमान था, जो सदिग्ध है । तरमा हारकर भारतकी ओर भागा जा रहा था । बलखके राज्यपाल तथा केवेकके पुत्र यङगीने उसे पकडकर वूजनके पास भेज दिया, जिसने उसे समरकन्दके पास कतल करवा दिया ।

### १८ वूजन, बोजन्द, दुवा तेमूर-पुत्र (१३३४ ई०)

अपना-अपना मतलब सिद्ध करनेके लिये दरबारमे अब इस्लामी और इस्लामविरोधी दो दल हो गये थे । वूजन इस्लामविरोधी दलका अगुवा था—इन्हें मंगोल और गैर-मंगोल दल कहना ज्यादा उपयुक्त होगा । वूजन ईसाइयो और यहूदियोका अधिक पक्ष करता था—बौद्धोका उसके राज्यमें अभाव-सा था । इसके अल्पकालीन शासन मे ईसाइयो और यहूदियोके मन्दिर अधिक बने, प्रचार भी बढा । इससे पहले १३२६ ई० में ही दोमनिकन साधु थामस मन्तजोला अन्तर्वेदमे कैथलिक धर्मका प्रचार करने आया था । मंगोल-शासक मुस्लिम धर्माधतासे भय खाते चाहते थे, कि उनकी प्रजापर मुल्लोका एकाधिपत्य न रहे, इसीलिये वह बौद्ध-धर्मके साथ-साथ ईसाई धर्मको भी प्रोत्साहन देते थे । वूजन अपने प्रतिद्वंद्वी बहुतसे अमीरो और राजकुमारोको जरा-जरासे सदेहपर बहुत क्रूर दंड देता था । इसके कठोर शासनसे लोग तिलमिलाकर विद्रोह कर बैठे, जिसमें प्रसिद्ध ताजिक नेता हुसेन कर्तने प्रमुख भाग लिया । अरपाखानसे खुरासानको छीननेके लिये वूजन जब बुखारामे था, उसी समय अन्दखोई और शापूरगान (सिवोरगान) के तुर्क कबीलोने अरलत और एवरदीको लूटा । तुर्कोने अपने सजातीय तथा अत्यन्त प्रभावशाली अमीर कजगनसे सहायता ली । हेरातके शासक मलिक हुसेन तथा वजीर अलाउलमुल्क खुदावन्दजादा (तेरमिज)ने भी उनकी सहायता की । लडाईमें वूजन पकडा गया और उसे उसके शत्रुओके हाथमे दे दिया गया । इब्न-वतूताके अनुसार यसाउर-पुत्र खलीलने वूजनको मार डाला और १३३४ ई० में ही जेंकिश (चेगिज) ने उसका स्थान लिया ।

### १९ जेंकिश (जिकशी), खलील, दुवा-पौत्र, एबुगेन-पुत्र (१३३४-३८ ई०)

यह भी इस्लामी पार्टीका नहीं बल्कि मुसैवीके अनुसार बौद्ध था । मंगोलोने किसी दूसरेको खान बनाया, जिसपर जेंकिश ताराजमे मंगोलोको हराते अलमालिक पहुचकर गद्दीपर बैठा । फिर आगे बढ़ने उसने विशवालिग और कराकोरम (मंगोलिया) को ले लिया, जिसपर कअान (चीन-सम्राट्) को दब-कर सुलह करनी पडी । अलमालिकमें वजीर अलाउलमुल्क खुदाबदजादाको शासनके लिये छोडकर वह समरकन्द लौट आया, लेकिन पीछे सदेह हो जानेपर उसने अलाउलमुल्कको मरवा डाला । विशवालिक और कराकोरमके विजयकी बात कहातक ठीक है, इसे नहीं कहा जासकता, लेकिन १३३२ ई० में जेंकिशने चीन-दरबारमे भेट भेजी थी । वह अधिकतर अलमालिकमे रहता था । कैथलिक मिशनरी वहा बडे जोरसे धर्म-प्रचार कर रहे थे । कैथलिक चर्चने फ्रासिस्कन साधु निकोलाई (मिखाइल) को चीनका आर्चबिशप (लाट-पादरी) बनाकर भेजा था । अलमालिकमे जेंकिशके दरबारमें उसका बडा सम्मान हुआ । कुछ ही समयमें राजधानीमें पादरियोका भारी जमाव हो गया—वरगडीका रिचार्ड, अलक-सदरियाका साधु फ्रासिस्क, रायमुन्द और इमी तरह कितने ही और धर्म-प्रचारक वहा मौजूद थे । खानका सात वर्षका पुत्र वपतिस्मा लेकर योहन बना । स्पेनिश साधु पसखालिस १३३८ ई० में धर्म-प्रचारार्थ उरगजसे अलमालिक जा पाच महीने रहा ।

आगे नैकिय और मलिक हुमेनमें लडाई हुई। हुमेनने उसे पकड़कर क्षमा कर दिया। उस समय जैकिन हेरातमें था, जबकि १३४७ ई० के वसंतमें वतूना वहासे भारतके लिये प्रस्थान कर रहा था।

## २० येस्मुन तेमूर, एमुन, एवुगेन-पुत्र (१३३८-४० ई० ?)

बोटे दिन राज्य करनेके बाद ओगोताई-राजकुमार अली सुल्तानने उसे हटाकर इसका स्थान लिया। इनमें बोटे समय पहले मप्तनदमें ईसाइयोंपर भारी अत्याचार हुए और आठ शताब्दियोंसे चला आया नेन्तोरीय सम्प्रदाय वहांसे सर्वदाके लिये उच्छिन्न हो गया।

## २१ अली-सुल्तान, ओगोताई-वजज (१३४०-४२ ई० ?)

अली-सुल्तान मुस्लिम पार्टीका था, किंतु इसके जुल्मने ईसाई ही नहीं मुसलमान भी पनाह मागने थे।

## २२ मुहम्मद पुलाद, पोलाद, कुजेक-पुत्र (१३४२ ई० ?)

अली-सुल्तानको हटाकर कुछ समयतक यह चगताई खान रहा।

## २३ काजान, गाजान, यसाउर-पुत्र (७३३-४७ हि०\* ?)

वह भी बड़ा अत्याचारी था। इसके उरके मारे दरबारी पहले अपनी वसीयत करके तब खानके पास जाने थे। उनके १३-१४ सालके शासनमें चारों तरफ आतक फैला रहा। प्रभावशाली वजीर वजगनने उसमें पिछे हटानेके लिये विद्रोह कर दिया। पहली लडाई ७४४ हि० (२६ मई १३४३—१५ अप्रैल १३८४ ई०) अथवा मीरखोजन्दके अनुसार १३४५ ई० में हुई, जिसमें खान जीता और अमीर वजगन की एक आख तीर लगनेमें फूट गई। सफल होनेपर भी खान शत्रुओंका पीछा नहीं करना। उसने जाड़ा करशीमें बिताया। मस्त जाड़े और हिमवर्षाके कारण घोड़े और घोड़ा लादनेके बहुतने पशु मर गये। ७४७ हि० (२४ अप्रैल १३४६-१५ मार्च १३४७ ई०) में फिर लडाई हुई, जिसमें खानकी हार हुई और उसका अत्याचारी शासन खतम हुआ।

## २४ दानिशमन्द, ओगोताई-वजज (१३४६-४८ ई०)

अमीर वजगनको एक गुडिया खानकी जरूरत थी। उसने ओगोताई दानिशमन्द ओगलान (राजकुमार) को लाकर गद्दीपर बिठाया। दो साल बाद उसमें मन ऊब गया, फिर उसने वायन कुल्लीको गद्दीपर बिठाया।

## २५ वायन कुल्ली, सुरगू ओगलान-पुत्र, चगताई-वजज (१३४८-५८ ई०)

वजगनके अनुकूल होनेमें यह दम मालतक खान बना रहा। अमीर कजगन एक तो स्वदेशी तुर्ग था, दूसरे बड़ा ही चतुर और न्यायप्रिय भी, इसलिये वह बहुत जनप्रिय था। कजगनके मरनेपर उसका लड़का अब्दुल्ला वजीरआजम (महामंत्री) बना, जिसने वायनको कुदुजमें गिकार करते समय जवन बरखा दिया—अब्दुल्ला वायनकी बीबीका याग था। अब अब्दुल्लाने तेमूरशाह ओगलानने गद्दीपर बिठाया।

## २६ तेमूरशाह (१३५८—ई०)

क्रिश्चियन धर्मकी उतनी जान और पवित्रता स्थापित हो गई थी, कि खानके सिंहासनको कोई नेनेही स्मिन्न नहीं करता था। स्वयं तेमूरखानने भी खान बनना नहीं चाहा और विश्वविजयी होनेके बाद भी वह "अमीर तेमूर" या "सुल्तान तेमूर" ही बना रहा। अब्दुल्लाका प्रभाव वापके बराबर नहीं था। तेमूरशाहको जिन तरह गद्दीपर बिठाया गया, उसमें दरबानी नागज हो गये। अमीर वायन मुदज अब्दुल्लाके विरुद्ध चलाई करनेके लिये जब नमस्कन्दकी ओर जा रहा था, तो रास्ते में केश (गजगज) का सामना हाजी विरलस भी उसके साथ हो गया—यही हाजी नैफुडीन विरलस तेमूर



लगका चचा था। अब्दुल्ला हारकर अन्दराव (अफगानिस्तान) की ओर भागा, और उसने अपना वाकी जीवन वही बिताया। चगताई-शासनकी बागडोर अब अत्यन्त अयोग्य भारी पियक्कड़ सेलदूज तथा हाजी विरलसके हाथोंमें थी। सारे राज्यको अमीरोंने अपनी-अपनी रियासतोंमें बांट लिया, जिसमें केश (शहरसब्ज) और आसपासका इलाका विरलसको मिला। चारों ओर गृहयुद्ध और अराजकताका दौरा दौड़ा था।

## २७. इलियास खोजा, तुगलक-तेमूर-पुत्र (-१३६३ ई०)

तेमूरशाहकी जगह इलियास गद्दीपर बिठाया गया। चगताई-वंशकी पश्चिमी शाखाकी जहाँ यह अवस्था थी, वहाँ उत्तर-पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खान अभी इतने शक्तिहीन नहीं हुए थे। अन्तर्वेदकी अवस्थाके बारेमें सुनकर अलमालिकका खान तुगलक तेमूर एक बड़ी सेना लेकर समरकन्दकी ओर चला। आपसमें लड़ते छोटे-छोटे अमीर भला उसका मुकाबिला कैसे कर सकते थे? हाजी सैफुद्दीन विरलस (तेमूरका चचा) बिना लड़े ही खुरासानकी ओर भाग निकला। उसके भाई तुरगाई विरलसके तरुण पुत्र तेमूर लगने चचासे राय लेकर तुगलक तेमूरसे भेंट की। तरुणसे खान इतना प्रभावित हुआ, कि उसने केशके निवासियोंपर अत्याचार नहीं किया। तुगलक तेमूरने अन्तर्वेदकी जीत कर अपने पुत्र इलियास खोजाको समरकन्दमें उपराज घोषित कर तेमूर लग विरलसको विश्वास-पात्र जान वजीर (अमात्य) नियुक्त किया। तुगलक तेमूर काश्गरकी ओर लौट गया। अमीरोंके आपसी झगड़ोंमें पड़ना तेमूरने पसन्द न कर बुखारा तथा खीवा होते कास्पियनतटवर्ती रेगिस्तानोंका रास्ता लिया। इस निर्जन भूमिमें वह कितने ही समयतक मारा-मारा फिरता रहा। अन्तमें वह अपने केश लौटे कुछ साथियोंको लेकर वक्षु नदीके दक्षिण चला गया। ७६५ हि० (१० अक्टूबर १३६३-३० अगस्त १६४६ ई०) में कुदुजके पास दानियालकी सेनाको हराकर तेमूर उसका पीछा कर रहा था, इसी समय तुगलक तेमूर खानके मरनेकी खबर आई और इलियास खोजा समरकन्द छोड़कर वापकी गद्दी सभालने अलमालिक चला गया। तेमूर लगने तुरत अन्तर्वेद लौट सरदारोंकी कूरिल्टाई बुलाकर काबिलशाहको खान घोषित किया।

## २८ काबिलशाह (१३६३-६९ ई०)

काबिलको छिड़-गिस्-वंशका अन्तिम चगताई खान तो नहीं कह सकते, क्योंकि तेमूरके वंशने भी अबू-सईदके समय (१४६७-६४ ई०) तक छिड़-गिसी राजकुमारोंको बराबर समरकन्दकी गद्दीपर गुडिया खान बनाये रक्खा। ८ अप्रैल १३६७ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) तक काबिलशाह बहुत कुछ अपने पूर्वजों जैसा ही खान रहा। उसके बाद तेमूरने वाकायदा अपनेको शासक घोषित किया, यद्यपि उसने खान-परंपराका उच्छेद नहीं किया।

**चगताई-अर्थनीति**—मंगोल-शासन धुमन्तू सैनिक सामन्तोंका शासन था, जो अपनेसे भिन्न जातियोंके लिये निरकुश था, किन्तु जहातक मंगोल सामन्तों और राजकुमारोंका सबध था, खानके लिये बहुमतकी इच्छाका उल्लंघन करना आसान काम नहीं था, क्योंकि सेना उनकी थी। मंगोल शासक नागरिकों और ग्रामीणोंकी गाढ़ेकी कमाईको उड़ाना अपना हक समझते थे। पहले कितने ही समयतक इनके भीतर सैनिक जीवन कायम रहा, किन्तु आगे बिलासिता बढ़नेके कारण उसका ह्रास होने लगा। इसके साथ ही राजपरिवार और सामन्त-परिवारोंकी सख्या बढ़नेके कारण प्रजाका शोषण-उत्पीड़न और भी भयकर होने लगा। उनके सहकारी तुर्क धुमन्तू थे, जो देशमें शताब्दियों पहलेसे अपना प्रभाव जमाये हुए थे, और छिड़-गिस्की सेनामें दूध-पानीकी तरह मिल गये थे। वह अब अपने स्वार्थोंको हाथ से जाने देनेके लिये तैयार नहीं थे। मंगोल-राजपरिवार और मंगोल अमीर-परिवारोंकी निर्वलताके समय तुर्कोंने शासनकी बागडोर भी अपने हाथमें सभाल ली। प्रजाका शोषण पूर्ववत् जारी रहा, तो भी अन्तर्वेदकी सम्पत्तिका महाप्रतोट—अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य और सुंदर दस्तकारी—सूखा नहीं था।

**साहित्य**—मंगोलोंके सर्वसहारी प्रहारके बाद साहित्यकी और धाराएँ रुकसी गईं, लेकिन धर्मशास्त्र (शरीयत), धार्मिक साहित्य, सूफी साहित्य, मदिरावाद फूलता-फलता रहा। मुल्लो और

सूफियोकी मगोल-दरबारमे बड़ी इज्जत थी। जिसके कारण इस्लामिक शरीयतका प्रभाव भी बढ चला। कहना चाहिये शरीयत और सूफीमतका इतना प्रभाव मध्य-एसियाकी जनतापर पहिले कभी नही पडा था। कुछ परिवारोने शरीयत और सूफीवादके लिये अपनी पुस्तैनी गद्दी बना ली, और उनका सम्मान पैगम्बरोकी तरह होने लगा। इन परिवारोमे सिताजी और खावन्द बहुत प्रसिद्ध थे। जमालुद्दीन मिताजी—मृत्यु ६४० हि० (१ VII १२४२-२२ V १२४३ ई०)—एक सूफी कवि था, जो ६२८ हि० (१ XI १२३०-३० IX १२३१ ई०) में खोजन्दमें आकर बस गया था, और मगोलोके आक्रमणके समय ६४० हि० में मरा। बुखाराके खावन्द-परिवारका अमीर शम्शुद्दीन-पुत्र कमालुद्दीन अच्छा कवि था, जिसके कई दीवान (कविता-संग्रह) मौजूद हैं। इसने “मिन्हाजुल्-मुजक्करीन” के नामसे भक्तमाल जैसा एक जीवनचरितात्मक ग्रन्थ लिखा। इलखान अवकाकी सेना-द्वारा ६७१ हि० (२६ VII १२७२-१६ VII १२७३ ई०) में बुखाराकी लूटके पहले ही दिन कमालुद्दीन मर गया। शाह फखरुद्दीन, मुल्ला ताजुद्दीन इस समयके दूसरे साहित्यकार थे। मुल्ला ताजुद्दीन ७३० हि० (२५ X १३२६-१५ IX १३३० ई०) में मरा। इसने “वोस्ताने-मुजक्करीन” लिखा। तरमाशेरिनके बाद मगोल-राजवश जल्दी-जल्दी मुसलमान होने लगा। मगोलोके लिये इस्लामके समुद्रमें डेढ ईंटकी अलग मस्जिद बनाकर रहना आसान नही था। मगोल-राजवश बौद्ध-सन्तो और लामाओ की अधभक्ति सीख चुका था, अब वही अधभक्ति उनकी सूफियोके प्रति हो गई। मानके बढनेके साथ सूफियोकी सख्या भी बहुत बढी। मुल्लाओका गढ बुखारा अब सूफियोका भी गढ बन गया, इसीलिये उस समय किसी कविने लिखा था—

“बुखारा मीरवी दीवाना।

लायक जजीरे-जिदानखाना।”

(बुखारा जा रहा है पागल, वह तो जेलखानेकी जजीर जैसा है।)

चगताई-वंशवृक्ष—

(१२२२-१३७० ई०)

ओगोताई

छिद्-गिस्

१ चगताई (१२२७-४२ ई०)

मोतुगान

सरवान

३ येस्सुमगू

वेदार

इसुनदावा

२ कराहुलाकू = ४ ओरगाना वुरी  
(१२४२-४६) (१२५१-५६)

८ निकवेइ  
(१२७१-७४)

५ अलगू ७ वोरक  
(१२५६-६५) (१२६६-७१)

६ मुवारक कदमी अहमद  
(१२६६)

१० दुवा  
(१२८२-१३०७)

९ तोकतेमूर १२ तलिकू  
(१२७४-८२) (१३०८-१३)

११. कोन्चोग  
(१३०७-८)

१३ केवेक  
(१३०६)

१४ एमेनबुका  
(१३०६-१८)

१५ इलिकदई  
(१३२६)

१६ दुवातेमर  
(१३२६)

१७ तरमाशेरिन  
(१३२६-३४)

एबुगन

२२ मु० पूलाद

मुहम्मद

१८ वूजन  
(१३३४)

२१. अगो-मुल्तान  
(१३४०-४२)

१९. जेटकिय  
(१३३४-३८)

२० येस्सुन  
(१३३८-४०)

## अध्याय २

### हुलाकू-वंश

(१२५६-१३४७ ई०)

हुलाकूने ईरान-इराक तथा दूसरे देशोंको विजय करके अपने वंशकी स्थापना की थी। हुलाकू-के बाद इसकी राजधानी तन्जीज हो गई। सभी मंगोल खानोंके ऊपर कयान (खाकान, हागान) माना जाता था। उसके नीचे भिन्न-भिन्न उलुसोंके खानोंको इलखान कहते थे। इल या एल जन (कबीले) का पर्याय है। इसीसे एलची शब्द निकला, जिसका अर्थ है जनदूत या राजदूत। पीछे "इलखान" ईरानी मंगोल-राजवंशके लिये रूढ़ हो गया।

इलखानोंकी नामावली निम्न प्रकार है--

१ हुलाकू, तुलुइ-पुत्र	१२५६-६४ ई०
२ अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र	१२६४-८२ "
३ अहमद तगूदर, हुलाकू-पुत्र	१२८२-८४ "
४ अरगून, अबका-पुत्र	१२८४-९२ "
५ गैखातू, अबका-पुत्र	१२९२-९५ "
६ बैदू, तरगई-पुत्र	१२९५ "
७ गाजन, अरगून-पुत्र	१२९५-१३०४ "
८ उलजैतू, अरगून-पुत्र	१३०४-१७ "
९ अबूसईद उलजैतू-पुत्र	१३१७-३५ "
१० अरपगोन, सूसू-पुत्र	१३३५-३६ "
११ मूसा, अली-पुत्र	१३३६-३७ "
१२ मुहम्मद येल, कुतुलुग-पुत्र	१३३७-३८ "
१३ सातीबेग, उलजैतू-पुत्र	१३३८-४० ,
१४ शाहजहा तेमूर, अलाफेफ-पुत्र	१३४० "
१५ सुलेमान, युसुफशाह-पुत्र	१३४०-४४ "
१६ नौशेखा	१३४४ "

### १ हुलाकू, खूलागू, तुलुइ-पुत्र (१२५६-६४ ई०)

हुलाकू (जन्म १२१६ ई०) छिड़-गिस्के पुत्र तुलुइका बेटा चीनके प्रसिद्ध कयानो मुङखे और कुविलेडका अनुज था। मुङखेन १२५२ ई०में जो कूरिस्ताई बुलाई थी, उसमें ईरान-इराकके विजयका भार हुलाकूके ऊपर दिया गया। हुलाकू कूच करते हुए १२५३ ई०के मार्चमें अलमालिकके पूर्वके पहाड़ों में पहुँचा। फरवरी १२५४ ई०में चंगताईकी राजधानी अलमालिकमें उसकी साली रानी ओरगानाने उसका स्वागत किया। सितम्बर १२५५ ई० में अपनी सेनासहित वह समरकन्द पहुँचा और २ जनवरीको उसने वक्षु पार कर लिया। फिर खुरासान होते मध्य-ईरानमें पहुँच हसन बिन-सब्बाहके गढ़ अल्-मौतकी विजय करके ध्वस्त कर दिया। कवि खैयाम और इस्लामी चाणक्य निजामुलमुल्कके सहपाठी तथा इस्माईली सम्प्रदायके मुखिया हसन बिन-सब्बाह (सब्बाह-पुत्र) ने शिष्योंको जीते-जी स्वर्गकी सैर करानेका प्रवन्ध करते हुये अल्मौत नामका नगर और दुर्ग स्थापित किया था। हसनके चेलोंसे राजाओ और राजमन्त्रियोंको भी प्राणोंका डर बना रहता था, इसीलिये कोई उसे छेड़ता नहीं था। हुलाकूने

२० येस्सुन  
(१३३८-४०)

## अध्याय २

### हुलाकू-वंश

(१२५६-१३४७ ई०)

हुलाकूने ईरान-इराक तथा दूसरे देशोंको विजय करके अपने वंशकी स्थापना की थी। हुलाकू-के बाद इसकी राजधानी तब्रिज हो गई। सभी मंगोल खानोंके ऊपर कयान (खाकान, हागान) माना जाता था। उसके नीचे भिन्न-भिन्न उलुसोंके खानोंको इलखान कहते थे। इल या एल जन (कबीले) का पर्याय है। इसीसे एलची शब्द निकला, जिसका अर्थ है जनदूत या राजदूत। पीछे "इलखान" ईरानी मंगोल-राजवंशके लिये रूढ हो गया।

इलखानोंकी नामावली निम्न प्रकार है---

१ हुलाकू, तुलुइ-पुत्र	१२५६-६४ ई०
२. अक्का, अरिक्बुगा, हुलाकू-पुत्र	१२६४-८२ "
३ अहमद तगूदर, हुलाकू-पुत्र	१२८२-८४ "
४ अरगून, अक्का-पुत्र	१२८४-९२ "
५ गैखातू, अक्का-पुत्र	१२९२-९५ "
६ बैदू, तरगई-पुत्र	१२९५ "
७ गाजन, अरगून-पुत्र	१२९५-१३०४ "
८ उलजैतू, अरगून-पुत्र	१३०४-१७ "
९ अबूसईद उलजैतू-पुत्र	१३१७-३५ "
१० अरपगोन, सूसू-पुत्र	१३३५-३६ "
११ मूसा, अली-पुत्र	१३३६-३७ "
१२ मुहम्मद येल, कुतुलुग-पुत्र	१३३७-३८ "
१३ सातीवेग, उलजैतू-पुत्र	१३३८-४० ,
१४ शाहजहा तेमूर, अलाफेफ-पुत्र	१३४० "
१५ सुलेमान, युसुफशाह-पुत्र	१३४०-४४ "
१६ नौशेरवा	१३४४ "

### १ हुलाकू, खूलागू, तुलुइ-पुत्र (१२५६-६४ ई०)

हुलाकू (जन्म १२१६ ई०) छिड़-गिस्के पुत्र तुलुइका बेटा चीनके प्रसिद्ध कयानो मुडखे और कुविलेडका अनुज था। मुडखेन १२५२ ई०में जो कूरिल्टाई बुलाई थी, उसमें ईरान-इराकके विजयका भार हुलाकूके ऊपर दिया गया। हुलाकू कूच करते हुए १२५३ ई०के मार्चमें अलमालिकके पूर्वके पहाड़ोंमें पहुंचा। फरवरी १२५४ ई०में चंगताईकी राजधानी अलमालिकमें उनकी साली रानी औरगानाने उसका स्वागत किया। सितम्बर १२५५ ई० में अपनी सेनासहित वह समरकन्द पहुंचा और २ जनवरीको उसने वक्षु पार कर लिया। फिर खुरासान होते मध्य-ईरानमें पहुंच हसन बिन-सब्बाहके गढ़ अल्-मौतको विजय करके ध्वस्त कर दिया। कवि खैयाम और इस्लामी चाणक्य निजामुल्मुल्कके सहपाठी तथा इस्माईली सम्प्रदायके मुखिया हसन बिन-सब्बाह (सब्बाह-पुत्र) ने शिष्योंको जीते-जी स्वर्गकी सैर करानेका प्रवन्ध करते हुये अल्मौत नामका नगर और दुर्ग स्थापित किया था। हसनके चेलोंसे राजाओं और राजमंत्रियोंको भी प्राणोंका डर बना रहता था, इसीलिये कोई उसे छेड़ता नहीं था। हुलाकूने

इस गढ़को तोड़कर उसे हमेशाके लिये नष्ट-भ्राष्ट्र कर दिया, और उसके बाद इस्माईली फिर अपने लिये वंसा मुदृढ़ दुर्ग नहीं बना सके। इसी इस्माईली सम्प्रदायके गुरु हमारे यहांके आगाखान है, या यों कहिये, हुलाकूकी आश्रीमें उड़े पत्तोमेंमें एक है। मार्च १०५७ ई० को हुलाकूने हम्दानके लिये प्रस्थान किया। छिद्द-गिस्की दिग्विजयमें उसके सेनापति हम्दानतक ही आ पाये थे। यहांसे हुलाकूको उस रास्तेपर जाना था, जिसपर मंगोल घोड़ोंकी टाप नहीं पड़ी थी। ईरानके जिस भागको छिद्द-गिस्के सेनापतियोंने जीता था, उसपर भी अभीतक मंगोल शासन पकड़ा नहीं हो पाया था। हुलाकू अब इस कामको बड़े दृढ़तासे करता चल रहा था। १८ जनवरी १२५८ ई०को वह खलीफाकी राजधानी बगदादके पूर्वमें था। ४ फरवरीको उसने दुर्जेअली किलेको घेरा किया। खलीफा पूरी तौरसे पराजित हो १० फरवरीको हुलाकूके शिविरमें कोरनिश करने गया। यद्यपि खलीफाकी राजशक्ति तीन गताब्दियों पहले ही खत्म हो चुकी थी, लेकिन इस्लामके पोपके तौरपर उसका सम्मान अब भी बहुत अधिक था। देश-देशके स्वतन्त्र मुस्तान उसके पास बड़ी-बड़ी भेंटें भेजकर उसके दिग्गज चार अक्षरोंके नामोंको बड़े अभिमानपूर्वक अपने नामके साथ जोड़ते थे। खलीफाका हुलाकूके दरबारमें सलाम बजाने जाना वंसा ही था, जैसा कि हालमें सूर्यदेवीके पुत्र जापानके मिकादोका अमेरिकन जनरल मैकआर्थरके नामने दबवन् करना। लेकिन हुलाकू मापको पालनेके लिये तैयार नहीं था। वह समझता था, खलीफा मुसलमानोंको भड़का सकता है, इसीलिये बड़े लडकेके साथ खलीफाको उसने २० फरवरी को मरवा दिया।

बगदादपर अधिकार करके विजित देशकी व्यवस्थाके लिये कुछ समयतक हुलाकू रुका, फिर वह पश्चिमकी विजय-यात्राके लिये निकला, और २५ जनवरी १२६० ई० को जाकर उसने हलब (अलेप्पो) पर अधिकार किया। शाम (सिरिया) की राजधानी (दमिश्क) की ओर बढ़नेपर उसका मुकाबिला मिन्त्रके मन्तूक मुस्तान मफुहीन फीरोजसे पड़ा। हुलाकूके सेनापति कीतू-बुगाने मिस्त्रियोंके पाम निम्न शब्दोंमें अन्तिमैत्यम् भेजा—

“तुमने मुना होगा, कैसे हमने एक विशाल साम्राज्यको जीता, कैसे हमने पृथिवीकी गदगियोंको टूटकर शुद्ध किया, और अशुभ लोगोंको कत्ल कर डाला। तुम्हारा काम है, भागना और हमारा काम है पीछा करना—जहां भी तुम जाओ, जिस रास्तेसे भी जाओ, वहां तुम्हारा पीछा करना। तुम कैसे हमसे बच सकते हो? हमारे छोड़े बड़े तेज हैं, हमारे बाण बड़े तीक्ष्ण हैं, हमारी तलवार बड़ी जैनी है, हमारे हृदय पहाड़की तरह कठोर हैं, हमारे सैनिक बालूके कणोंकी तरह असंख्य हैं। किले हमें रोक नहीं सकते, न दियार ही। हमारे विरुद्ध तुम्हारी प्रार्थनाओंको भगवान् नहीं सुनेगा। तुम हीन उपायोंमें अपनेको बचाना चाहते हो और शपथ-पूर्वक की हुई प्रतिज्ञाओंको तोड़ते हो। विद्रोह और अशुभस्था तुम्हारे भीतर फैली हुई है। अपने अभिमानके लिये तुम्हें अब भयकर दण्ड मिलनेवाला है। अन्यायी अपने माध्यमे विज्ञा लेने जा रहे हैं। हमारे साथ युद्धका मसूवा रखनेवाले अब पछतानेवाले हैं। जो हमारी शरणमें आना चाहते हैं, केवल उन्हींकी रक्षा होगी। अगर तुम हमारी आज्ञा और पेश की हुई शर्तोंको मानोगे, तो हमारे वैभवमें भागीदार बनोगे, यदि प्रतिरोध करोगे, तो नष्ट हो जाओगे। आत्महत्या मत करो। जिसे पहलेसे सजग कर दिया गया है, उसे अपने लिये सावधान रहना चाहिये। तुमने कहा गया है, कि हम काफिर हैं, पर हम तुमको पापी समझते हैं। जिस भगवान्की आज्ञा अमिट है, जिसका फैसला पूर्णतया न्यायानुमोदित है, वही तुम्हारे ऊपर हमें विजयी बना रहा है। हमारी आज्ञाओंमें तुम्हारी सबसे जबरदस्त सेनायें भी आशमिन्की एक छोटीसी टुकड़ी हैं। तुम्हारे प्रसिद्ध वीरोंको भी हम तुम्हारे समझते हैं। तुम्हारे राजाओंको हम घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। जवाब देनेमें जड़ी करना। ऐसा न हो, कि युद्ध तुम्हारे ऊपर आग लगा दे और तुम्हारे ऊपर अपनी विनगरिया फैलने लगे। हमारा कहना न बनोगे, तो जो भयकर भयानक तुम्हारा होनेवाला है, उसमें कहीं आश नहीं पा सकोगे और तुम अपने देशको रेगिस्तान बना दोगे। हम पहलेसे चेतावनी देकर तुम्हारी भलाई करना चाहते हैं, तुम्हें तुम्हारी नीचतामें डराना चाहते हैं। अब तुम ही एकमात्र (हमारे) शत्रु रह गये हो, जिसके विरुद्ध हम लड़ कर रहे हैं। तुम्हारे और जो लोग भी देवी आदेशका अनुगमन करते हैं, सीतों

डरते हैं; उनके लिये भी सुरक्षाका यही रास्ता है, कि वह कथानकी आज्ञाको माने। मिस्त्रको कहो— हुलाकू इस भूमिके बड़ोको अपमानित करने आ रहा है, वह वच्चोको वहा भेज देगा, जहा बूढ़े गये हैं।”

इसका जवाब सुल्तान फीरोजने इस प्रकार दिया—

“ओ तरुण, तुमने अभी-अभी अपना जीवन आरम्भ किया है, इसीलिये तुम जीवनकी ओर इतना कम ध्यान देते हो। तुमने अभी दम दिनोंकी ही समृद्धि और सीभाग्यका उपभोग किया है। ऐसा होनेपर भी तुम सारी दुनियासे अपनेको बड़ा समझते हो और अपनी आज्ञाको भवितव्यताकी आज्ञा मानकर उसे अनिवार्य समझते हो। तुम क्यों मुझसे ऐसी माग कर रहे हो, जिसे कि तुम पा नहीं सकते? क्या तुम अपनी चालाकी, अपनी सैनिक शक्ति और अपनी हिम्मतसे एक भी तारको बन्दी बना सकते हो? तुम शायद नहीं जानते, कि पूरवसे पश्चिमतक अग्लाके बन्दे, धर्मात्मा पुरुष, राजा-रक, वच्चे-बूढ़े, सभी इस (मेरे) दरबारके दास हैं, वह मेरी सेना है। जब मैं अलग-अलग प्रतिरोधियों को इकट्ठा हो जानेकी आज्ञा दूंगा, तो पहले ईरानके मामलेको ठीक करूंगा, फिर तूरान (तुर्किस्तान) पर चढ़ूंगा और वहा हर एक आदमीको उसके पदार्थ स्थापित करूंगा। इसमें मदेह नहीं, कि मेरे इस कामके परिणाम-स्वरूप पृथिवीपर अशांति और गड़बड़ी फैलेगी, लेकिन यह सब मैं बदला लेनेके लोभसे नहीं करता और नहीं लोगोकी बाहवाही लूटना चाहता हू। मैं इसके लिये उत्सुक नहीं, कि सेनाके बजते बाजोके साथ आदमी मारे जाय। मैं दुआ या शापको भी नहीं पसन्द करता। मेरे, कथान और हुलाकू—सबके पास एक-सा ही दिल है, एक-सी ही भाषा है। अगर मेरी तरह तुम भी मित्रताका बीज बोना चाहते हो, तो मेरे सेवकोंकी खाइयो और मोर्चाबन्दियोंसे तुम्हारा क्या काम है? भलाईके रास्तेको पकड़ो और खुरासान लौट जाओ। यदि तुम लड़ना ही चाहते हो, तो मेरे पास हजारों सेनाये हैं, जो कि बदला लेनेके समय आनेपर समुद्रको सुखा देंगी।”

३ मिनम्बर १२६० ई० को मंगोल और ममलूक सेनाओंमें भीषण लड़ाई हुई। यद्यपि ममलूक सुल्तान-खलीफाने अपने लिखे अनुसार ईरान और तूरान (मध्य-एशिया) की ओर पैर नहीं बढ़ाया, लेकिन हुलाकूकी सेनाको उसने पूरी तौरसे हराकर अफ्रीकामें बढ़नेका रास्ता बन्द कर दिया। हुलाकू की विजयिनी सेनाको ही मितियोंने नहीं रोका, बल्कि तेमूरलगकी विजययात्रा भी यही आकर खत्म हो गई। नील-उपत्यका एक छोटासा देश है। वह कैसे विजयविजेताओंकी सेनाओंको रोक सका, इसका कारण उतनी उसकी अपनी शक्ति नहीं थी, जितनी कि बड़ीसे बड़ी सैनिक शक्तिका भारी विखरावके कारण अन्तमें क्षीण हो जाना—तरिम, चू, मुरगात्र, जरफशा (मोग्द) और खुद हमारे यहां की प्राचीन तरस्वती (-घग्घर) भारी जलप्रवाहको लेकर चलती है, लेकिन अन्तमें उनके पानीको मोखते हुए रेगिस्तान उन्हें अपनेमें लीन कर लेता है।

मिस्त्रकी ओर आगे न बढ़ सकनेपर हुलाकू लौट पड़ा। तब्रेजको लेकर १२ सितम्बर (१२६० ई०) को उसने आगेकी विजययात्रा शुरू की, और दियारबेकर, जजीरा, रोहा (एदेस्सा), अर्नान और निसिनीके नगरोपर अधिकार किया। रोहाके पास हुलाकूने मंगोल सैनिक शक्तिका एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया, जिसे देखने के लिये रोम और अर्मनीके राजा भी उपस्थित थे। दमिश्कपर अधिकार करनेके बाद हुलाकूने दुनियाका सबसे पहला कागजी नोट (चाउ) जारी किया, दूसरे इतिहासकारोका मत है, कि वह पहलेपहल १२ अप्रैल १२६४ ई० को तब्रेजमें जारी किया गया।

विजयोके बाद हुलाकूने मरगाको अपनी राजधानी बनाया, जिसे उसका लडका तब्रेजमें ले गया।

हुलाकू और उसके चचेरे भाई बरका खान (१२५५-६५ ई०) का पहले मेल था, उसके बाद दोनोंमें झगडा होनेका कारण बरकाने हुलाकूके इस्लाम और खिलाफतके ध्वंस करनेकी बात बतलाई, लेकिन वस्तुतः झगडा काकेशसपर अधिकारका था।

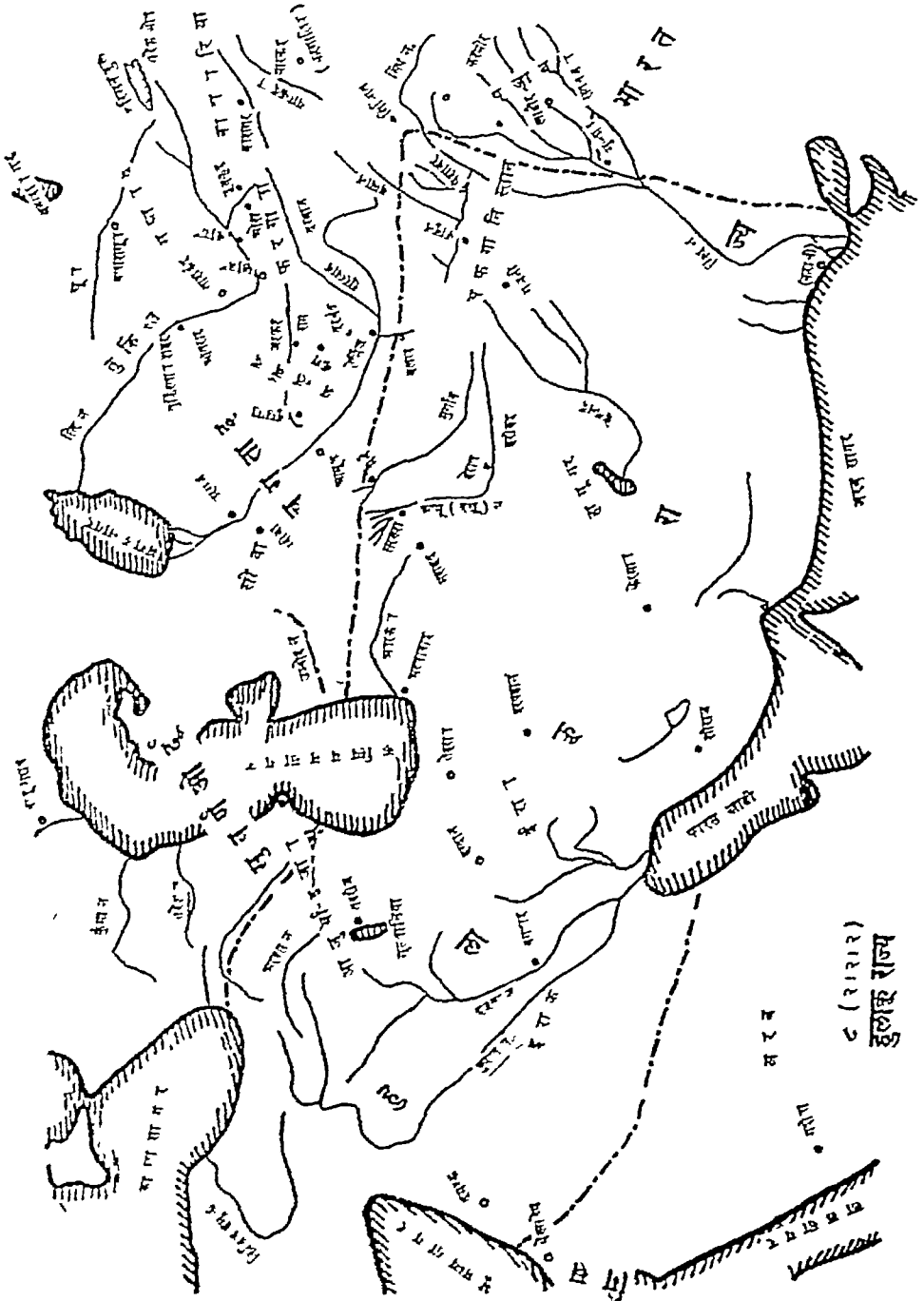
काकेशसकी ओर बढ़ते हुए अब जूछि-उलुसकी सीमा नजदीक आ गई तो अनिश्चित विजित देशोके लिये दोनोंमें झगडा शुरू हो गया। यह बातला आये है, कैसे ११ नवम्बर १२६२ ई० को जूछि-उलुसके खान बरेकसे मुकाबिला करनेके लिये हुलाकूकी सेना दरबन्द पहुची, लेकिन वही बरकाके सेनापति नोगाईने उसे हराकर पीछे हटा दिया। बरका और मिस्त्र-सुल्तान फीरोज दोनों हुलाकूके शत्रु

थे। "शत्रुका शत्रु मित्र" की नीतिके अनुसार सुवर्ण-ओर्दू और मिस्त्र में मेल-जोल करनेका प्रयत्न होने लगा। १२६३ ई० के शरद में बरकाका दूतमंडल मिस्त्र के मुल्तान के पास पहुँचा।

मिस्त्र और दरबन्दकी हारोके बाद हुलाकूने समझ लिया, कि हमारे राज्यका जितना विस्तार हो सकता है, उतना हो चुका। इसीलिये अब वह शासन-प्रबन्धमें लग गया। १२६४ ई० में उसने कई शासन-मुबार स्थिते। १२ रबी II ६६३ हि० ( ८ फरवरी १२६४ ई० ) को हुलाकू जगात (मेरगाम) में मर गया।

हुलाकूकी पटरानी ओइरोत (मंगोल)-राजकुमारी कूवेक (ओलेज) खातून थी।

हुलाकूके अलमौतके किलेके ध्वस्त करते समय डस्मार्डली पोप अलाउद्दीन मुहम्मदने मुहम्मदिक नामिन्दगीन तूसी (१२०१-७४ ई०) को अपने बन्दीखानेमें डाल रखा था। तूसी बहुमुखी प्रतिभाका बनी था। हुलाकूने उसकी कदर की। तूनी हुलाकू और उसके बेटे अबका खानके शासनकालमें बहुत सम्मानित रहा। उसने "जिज्ञे डलग्वानी" नामसे एक पचाग बनाया।





## २. अबका, अरिकबुगा, हुलाकू-पुत्र (१२६४-८२ ई०)

अबका बापकी तरह ही एक कुशल सैनिक और शासक था। बापके समय बेरका खानसे जो झगड़ा हुआ था, वह इसके समयमें भी जारी रहा। बेरकाके उत्तराधिकारी बातू-पुत्र मङ्गू-तेमूर (१२६५-८० ई०) के साथ भी इसकी लड़ाई होनी रही। नोगाई-द्वारा पिताकी हारका बदला लेनेके लिये अबकाने राजकुमार यशमुतके अधीन एक बड़ी सेना ले १६ जुलाई १२६५ ई०को प्रस्थान किया। कुरा-तटपर पहुँचकर दोनों ओरकी सेनाये दाव-पेच दूढ़ने लगी, और लड़ाई नहीं हो पाई।

२६ नवम्बर १२७० ई०को कुविलेका भेजा यारलिक (शामन-पत्र) जगातमें मिला। अबका बराबर अपने चचा कुविलेका पक्षपाती रहा, जब कि चगताई और ओगोताई-वशके खान उनके प्रति-द्विधी थे। जगातई-खान बोरक अबकासे खुरासान को छीनकर बहुत दिनोंतक अपने अधिकारमें नहीं रख सका। अबकाने खुरासानका बदला ६७२ हि० (२६ VII १२७२-१६ VI १२७३ ई०) में अन्तर्वेद तथा ध्वाराको लूटकर लिया।

फारसीका महान् कवि (मुशर्रिफुद्दीन) सादी (११८४-१२६२ ई०) हुलाकू और अबका-के समयमें ही हुआ था, जिसने अपने दो महान् ग्रन्थों “बोसता” और “गुलिस्ता” को १२५७-५८ ई० में लिखा था। लेकिन, सादी-जैसा स्वतन्त्रचेता पुरुष मंगोलोका दरबारी नहीं हो सकता था। सर्वश्रेष्ठ सूफी कवि मौलाना जलालुद्दीन रूमी (१२०७-७३ ई०) भी हुलाकू और अबकाके समयमें ही हुआ था। रूमी वस्तुतः रूममें नहीं बल्कि १२०७ई० में बलखमें पैदा हुआ था, जहाँसे वह अपने बापके साथ नेशापोर (खुरासान) गया और अन्तमें मक्का और दूसरी जगहोंकी यात्रा करते बापके साथ क्षुद्र-एसियाके कोन्या (इकोनियम्) नगरमें रहने लगा। इसकी प्रसिद्ध कृति “मस्नवी” (कथाकाव्य) में सत्ताईस हजार शेर हैं, जिसका स्थान दुनियाके महान् काव्योंमें है। सादी और रूमी हुलाकू-अबकाके कालकी उपज हैं, इसलिये उनकी कविताओपर उस समयकी स्थितिका प्रभाव पड़ना जरूरी है। सादीने वैरागियों और दरवेशोंकी जिंदगी पसन्द की, और मौलाना रूमीने वेदान्ती रहस्यवाद स्वीकार किया, इसका कारण मंगोलोकी ध्वमलीलासे पैदा हुआ निराशावाद था।

## ३. अहमद तगूदर, निकोदर, हुलाकू-पुत्र (१२८२-८४ ई०)

अबकाके मरनेपर उसके भाईने गद्दी सभाली। उसने अपनी अयोग्यताको ढकनेके लिये इस्लाम स्वीकार किया, जिसपर मंगोल विगड गये और अबकाके पुत्र अरगूनने उसे मार डाला।

## ४. अरगून, अरगोन, अबका-पुत्र (१२८४-९२ ई०)

हुलाकूके समयसे ही राज्यका वजीर-आजम ख्वाजा शम्शुद्दीन चला आता था। उसके प्रभावको न सहकर अरगूनने ६८३ हि० (२० III १२८४-८ II १२८५ ई०) में उसे मरवा दिया। अरगूनको परेशान करनेके लिये बाप-दादोके समयसे ही किपचकोके साथ झगड़ा चला आ रहा था। २१ सितम्बर १२८६ ई० को अरगूनका शिविर मेरागमें पड़ा था। छिटपुट झड़प होती ही रहती थी। इसी बीच २६ मार्च १२९० ई० को दूतोंने आकर खबर दी, कि किपचक-सेना आगे बढ़नी दरबन्द 'आ पहुँची है। किपचक और इलखानके झगडोंमें दरबन्दका ज्यादा महत्त्व था। किपचकोके आनेकी खबर पाकर अरगूनने तुकाल, शिकतुर नोयन और कुजुकवलके नेतृत्वमें एक बड़ी सेना २७ मार्चको रवाना की। इस सेनामें तुगाचार और दूसरे मंगोल अमीर भी थे। २१ अप्रैल (१२९० ई०) को सेनाका हरावल करासू नदीपर पहुँचा। मेगलान बुका आदिके नेतृत्वमें उत्तरसे दो तुमान (बीस हजार) किपचक-सेना आ रही थी। इलखानियोंने नदी पारकर उभरकर आक्रमण किया। दुश्मनके तीन सौ सवार मारे गये और कितने ही बन्दी बने। ३ मई १२९० ई० को अरगून विलियासुवरमें पहुँचा। अन्तमें राजकुमार बँदूने विद्रोह करके इसे मार डाला।

१ दरबन्द (द्वारबन्ध) दो थे, जिनमें एक मध्य-एसियामें तेर्मिजके उत्तरके पहाड़ोंका लोहद्वार था, और दूसरा बाकूसे उत्तर काकेशस पर्वत तथा कास्पियन समुद्रके मिलनस्थानपर।

सादी शाराजी इनीके समय (६६१ हि०) मरा। सादीने हिंदुस्तान, काश्गर और पश्चिममें मिन्नतकी यात्रा की थी। हुलाकूके शीराजके राज्यपाल अलाउद्दीन और उसके भाई दोनों वजीरआजम शम्शुद्दीन सादीके बड़े भक्त थे, जिनके कारण सादीका परिचय अबकासे हुआ था, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि अरगूनसे भी उसका परिचय था। सादीका वादशाहोसे ज्यादा मेल-जोल न था, तो भी उसने लिखा है—

वादशाह सायये-खुदा वाशद् ।

साया वा-आत आगना वाशद् ।

(राजा भगवान्की छाया है। छाया है यदि वह भगवान्में परिचित हो।)

अल्लामा कृतुबुद्दीन (मृत्यु १३११ ई०) तत्रेजी अपने समयका बड़ा विद्वान् था। अरगूनका कृपापात्र कवि औहदी (मृत्यु १३३७ ई०) इसी समय हुआ था। यही समय था, जब कि भारतमें अमीर खुसरो-जैसा फारसीका महान् कवि पैदा हुआ। खुसरोका बाप छिड़गिरी हमलेके मारे बहुतसे दूसरे तुर्कोंकी तरह मध्य-एशियासे भागकर भारत चला आया था। अमीर खुसरो जब मुल्तानके हाकिम मुल्तान मुहम्मदके दरबारमें था, उसी समय ६८३ हि० (२० III १२८४-८ II १२८५ ई०) अरगून खानके एक सेनापति तेमूर खानने बीस हजार सवार लेकर पंजाबपर हमला किया, और लाहौर, दीपालपुरको लूटते-मारते वह मुल्तानकी ओर बढ़ा। मुकाविलेके लिये गया मुल्तान मुहम्मद मंगोलो के सामने हारा और मारा गया। अमीर खुसरो और उनके साथी दूसरे कवि हसन देहलवी भी अपने स्वामीके साथ इस मघर्षमें गरीब थे। मंगोल दोनोंओ बन्दी बनाकर बलख ले गये। अमीर खुसरो दो मालतक बलखमें रहा, जिनके बाद उसे छुट्टी मिली और वह लौटकर दिल्ली चला आया। इस घटनाका धडा ही कर्णापूर्ण वर्णन अमीर खुसरोने अपनी कवितामें किया है, जिनको हम पहिले उद्धृत कर चुके हैं।

#### ५ गैखातू, अवका-पुत्र (१२९२-९५ ई०)

अरगूनके बाद बेटेको वचित कर भाईको गद्दी मिलना यही बतलाता है, कि अभी सैनिक जन-तन्त्रताका मंगोलोमें बिलकुल उच्छेद नहीं हुआ था। गैखातूका समयकालीन किपचक खान तोकताई बड़ा ही शक्तिशाली था, लेकिन पीडियोंमें लड़ते-लड़ते तब आकर अब वह चाहता था, कि काकेगसके लिये चलनी रहनेवाली लडाई बन्द की जाय। उसने कोनिचि ओगलान (राजपुत्र) को शातिदत्त बनाकर १३ जुलाई १२९३ ई० को भेजा। २८ मार्च १२९४ ई० (२८ रबी II ६९३ हि०) को तोकताईका भेजा दूसरा दूतमंडल भी आया, जिनके मुखिया राजकुमार कलिनतई और उलाद थे। दलननोरमें उनमें बातचीत कर २ अप्रैल १२९४ ई०को गैखातूने बड़े सम्मानके साथ उन्हें विदा किया। किपचकोकी ओरसे अब इलखानको कुछ निर्दिष्टता-भी थी।

#### ६ वैद्द, तरगई-पुत्र (१२९५ ई०)

वैद्द अधिक दिनोत्तक गामन नहीं कर पाया और जल्दी ही उसे हटाकर गाजनने मिहामन बतल कर लिया।

#### ७ गाजन, अरगून-पुत्र (१२९५-१३०४ ई०)

गाजन इस्लामका धर्मराज कहा जाता था। इसमें शक नहीं कि उसके समयसे ईरानके मंगोल-राजव्यपार इस्लामका प्रभाव बहुत जोरसे पड़ने लगा। किपचक खानने फिर जगड़ा शुरू हो गया। ३ मई १३०१ ई०को तोकताई खानका दूत आया, लेकिन मुलह नहीं हो सकी। इसपर गाजन एक बड़ी सेना ले मिरवान और गुजिस्तान होते दरबन्द पहुँचा। तोकताईको उसकी सेनाके सामने हारकर भागना पड़ा। इलखानके प्रतिद्वंद्वी मिन्चके मुल्तान-खलीफाके साथ किपचक खानका नवय अन्ध था, यह बतना चुके हैं। मिन्चका मुल्तान केवल राजा ही नहीं बल्कि खलीफा (धर्मगुरु) भी था। किपचक खान ने उसे अपनी मददकी दी थी। गाजनने अरगूनसे काजी नासिगद्दीन तन्नीजी और काजी कमालुद्दीन मोसली को दूत बनाकर तोकताईके पास भेजा। मिन्ची दूतमंडल हिल्लामें आकर गाजनसे बातचीत कर रहा था। इसी समय २१ जनवरी १३०२ ई०को तोकताईके भी दूत तीन सौ सवारोंके साथ आ पहुँचे।

गाजन किपचक-दूतमंडलसे बहुत अच्छी तरह मिला। तोकताई अपने प्रभावशाली वृद्ध सेनापति नोगाईके झगड़ेसे निवृत्त चुका था, और अब अरार्नि और आजुर्वाइजानको लेना चाहता था। उसका कहना था— पिनामह ड्रिडगिस्ने यह प्रदेश वातू खानको दे दिया था। लेकिन, गाजन तलवारसे जीते इलाकेको वातसे कैसे लौटा सकता था? उसने धमकी दी—यदि हमारी बात नहीं मानोगे, तो तुम्हारे विरुद्ध करा-कोरमसे क्रियातकक्री सारी शक्ति तथा दस तुमान (एक लाख) सेना उरोमे तैयार खड़ी है। गाजनने यह भी कहा—हुलाकूके समयसे ही यह भूमि हमारी है। भूमि लौटानेकी बात तलवारकी भाषामें ही हो सकती है।

३० जनवरी १३०३ ई०को नववर्षका पर्व आया। राज्यके वजीर, अमीर, गुरजी (जार्जिया) अर्मेनी, रोमके राजा एव खुरासान-मिस्त्र-सिरिया आदिके लोग भी भेंट लेकर आये। तीन दिन तीन रात बड़े धूमधाममें महोत्सव मनाया गया। दान-इनाममें इस्लामके सुल्तानने बड़ी उदारता दिखलाई। इतिहासकार वस्साफ गाजनको इस्लामका सुल्तान कहता है, लेकिन इस्लामका सुल्तान बननेसे पहले गाजनने ईरानमें एक बड़ा बौद्ध विहार बनवाया था। पर, जब उसने देखा, चीन और मगोलिया यहांसे बहुत दूर है, इसलिये वहां सर्वत्र प्रचलित बौद्ध-धर्म इस्लामी ईरान-इराकमें कोई सहायता नहीं दे सकता, तो वह मुसलमान हो गया।

गाजनके समय रशीदुद्दीन फजलुल्ला (१२४७—१३२८ ई०) गणित, दर्शन और चिकित्सा-शास्त्रका उच्च कोटिका विद्वान् था। अबकाका वह विश्वासपात्र दरबारी था। गाजनने उसे अपना वजीर बनाया। अबूसईदने थोड़े दिनोंके लिये उसे हटा दिया था, पीछे उल्जैतूको विरेचनमें जहर देकर मारनेका अपराध लगा, उल्जैतूके पुत्र इब्राहिमने उसे मरवा दिया। रशीदुद्दीन अपने समयका बहुत बड़ा इतिहासकार भी है। उसकी पुस्तक “जामे-उत्-तवारीख” एक विशाल और बहुमूल्य इतिहासग्रन्थ है।

### ८. उल्जैतू, मुहम्मद खुदाबन्दा, अरगून-पुत्र (१३०४—१७ ई०)

इलखानोने वगदादके खलीफाको खतम किया, लेकिन मिस्त्रके खलीफाका वह कुछ विगाड नहीं सके। वगदादका खलीफा सुन्नियोका धर्मगुरु था, और मिस्त्रका खलीफा शियोका। उल्जैतूने इस्लाम-प्रेम दिखलानेके लिये अपना नाम मुहम्मद खुदाबन्दा रखा। ईरान अभी शियोका नहीं हुआ था, लेकिन उल्जैतूने अपनेको शिया दिखलानेके लिये शियोके वारह इमामोंके नामवाले सिक्के चलाये। उल्जैतूका अपने प्रतिद्वंद्वी किपचकखानो तोकताई और उज्वेक (१३३३—४० ई०)से मुकाबिला था। ३१६ ई०में किपचक-राजकुमार बावा ओगलान भागकर उल्जैतूकी शरणमें आया। उसने उसे सहारा दिया। बावा तुरत ही अपनी सेना लेकर ख्वारेज्मपर चढ़ गया, जो उज्वेकखानके राज्यमें था। इसके लिये उज्वेकने दूत भेजा और किस तरह बावा ओगलान ख्वारेज्मसे मारकर भगाया गया, यह हम पहले कह आये हैं।

मगोलोके शासनकालमें जिस तरह शरीयतके विद्वानों और सूफी कवियोंकी कृतिया अधिक प्रचलित हुई थी, उसी तरह फारसी गद्य-कथासाहित्यके विकासका भी यही समय था। तुगराई (मृत्यु १३२४ ई०) मशहदी इस समयका बहुत बड़ा कथाकार था, जिसके “मिरातुल्-मफतूह”, “कुजुल्-मअानी”, “चश्मये फौज” आदि कितने ही कथाग्रन्थोका बहुत मान हुआ।

### ९. अबूसईद, उल्जैतू-पुत्र (१३१७—३५ ई०)

अबूसईद कम उमरमें ही गद्दीपर बैठा था, इसीलिये शासनका सारा प्रबन्ध उसके सेनापति अमीर चोवानके हाथमें था। चोवानने उज्वेक खानकी सेनाको खदेडकर दरबन्दके पार तरेक नदीतकके प्रदेशको लूटा था, इसलिये उसका प्रभाव बहुत अधिक हो गया था। उसके नौ पुत्रोंमें सबसे बड़ा अमीर हसन खुरासान और माजदरानका राज्यपाल था, और हसनका बड़ा पुत्र तालिश अस्पहान पारस-केर-मानका। हसन और तालिशका वापसे झगडा हो गया, जिससे चोवानने उनपर आक्रमण कर दिया। हसन और तालिश दहिस्तानके रास्ते ख्वारेज्म भागे। वहाके राज्यपाल अमीर कुतुलुक तेमूरने उनका स्वागत करते उज्वेकखानके पास भेज दिया। उज्वेकने उनकी बड़ी खातिर की। चेरकासियोंके खिलाफ उज्वेक खानकी ओरसे लडते हुए हसन घायल हो गया। उज्वेकने बड़ी चिकित्सा कराई, लेकिन वह न बचा। उसका लडका बहुत दिनोंतक जीता रहा।

७३५ हि० (१ सितम्बर १३३४-२३ जुलाई १३३५ ई०) में उज्ज्वेकखानकी सेनाने फिर दक्खेखाजार—कास्पियनके उत्तर-पश्चिमतटके मैदानी प्रदेश—के रास्ते अरान और आजुर्बैजानपर आक्रमण करनेके लिये प्रस्थान किया। अबूसईद भी खबर सुनकर मुकादिलेके लिये चला, किन्तु करावाग-में ३१ अक्टूबर १३३५ ई० (१० रबी I ७३६ हि०) को इस “दीनदार नेककिर्दार बादशाहके प्राण-पट्टीने शरीरके पिजड़ेसे उडकर उत्तम स्वर्गको वर बनाया।” उज्ज्वेकखानने अपनी सेनासहित आगे बढ़ कुरा नदी तकके सारे इरखानी प्रदेशको बरवाद कर दिया। तारीफ यह कि मुसलमान इतिहासकारोंके लिये अबूसईदकी तरह उज्ज्वेक खान भी धर्मराज था। दरवारी कवि श्रीहदीने अपने सरदरक अबूसईदकी तारीफमें अपनी मस्तवी “जामेजम” में लिखा है—

दो जहा रासिलये-ईद जदन्द ।

-सिक्क वर-नाम वूसईद जदन्द ॥

दर्-चमन गुफ्त बुलबुल ओ कुमरी ।

मदहि-गुल गुली उलुल-अमरे ॥

(दोनों लोकोकी खुशीका पारितोषिक किया, अबूसईदके नामपर सिक्का चलाया। उपवनमें बुलबुल और कुमरीने इस फूलकी तारीफ की।)

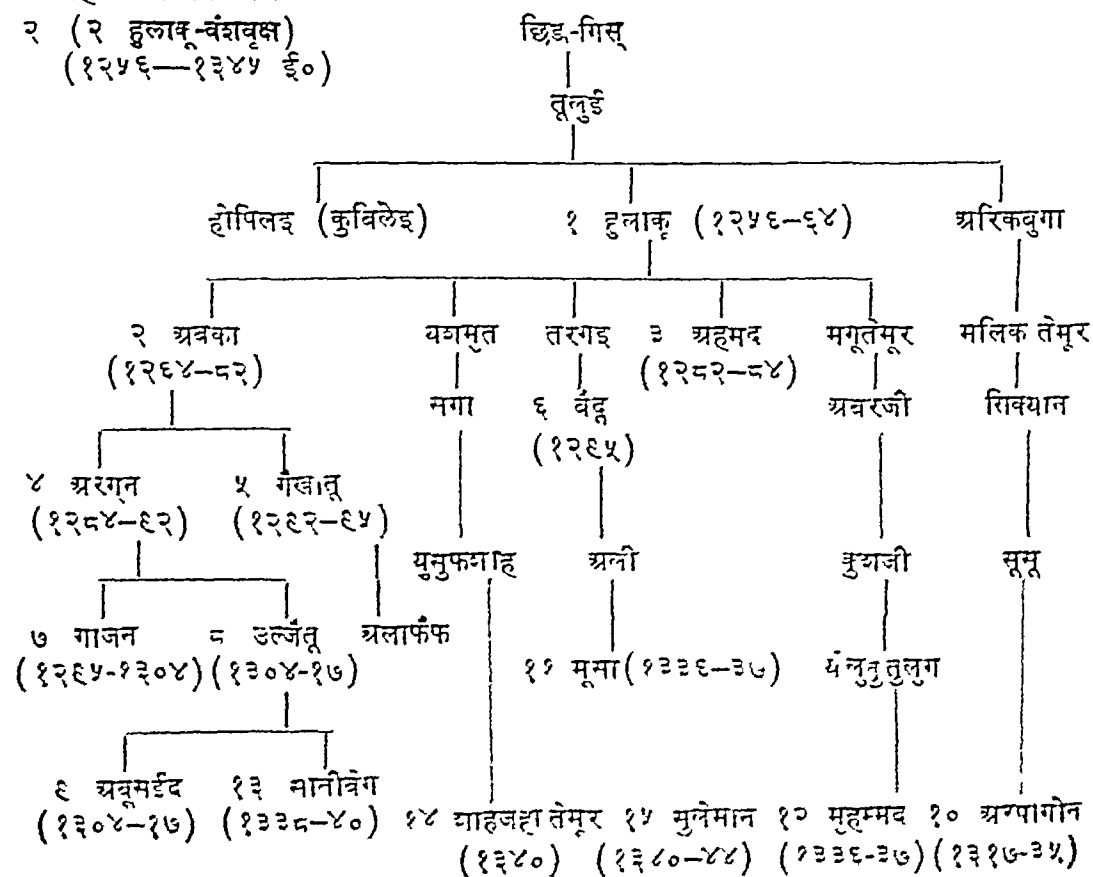
अबूसईदके मरनेपर भारी शोक मनाया गया। मस्जिदोंके मीनारोंको शोक-प्रकाशक कपड़ोंसे ढाक दिया गया था।

अबूसईदके बाद हुलाकू-वंशका पतन बहुत जल्दी-जल्दी होने लगा और ग्यारह वर्षोंके भीतर ६ खान गद्दीपर बैठे।

अबूसईदके समय “तारीखे गुजीदा” नामक इतिहासके बहुत सुंदर ग्रंथका लेखक हमदुल्ला मुस्तीफी (मृत्यु १३४६ ई०) हुआ था। मुस्तीफीने अपने ग्रंथको प्रसिद्ध इतिहासकार रशीदुद्दीनके बेटे गयासुद्दीनको समर्पित किया था। इस ग्रंथके उद्धरण फज्जुल्ला-मुत्र अब्दुल्ला गीराजी (मृत्यु १३२८ ई०) ने अपने ग्रंथ “तारीखे वस्साफ” में दिये हैं। दिल्लीके फारसी कवि अमीर खुसरो (१२५३-१३२५ ई०) का यह समकालीन था।

२ (२ हुलाकू-वंशवृक्ष)

(१२५६—१३४५ ई०)



अबूसईदके बाद अब छिड़गिरी राजकुमार पूरी तौरसे मुसलमान थे। मगोल अब सस्कृतिहीन नहीं थे, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता, न्यायप्रियता आदि गुणोंके कारण उनकी सस्कृति उच्च स्तरकी थी; किन्तु इस्लामके समुद्रमें उनका कोई बम नहीं चला। दरबारियोंने जब शक्ति हथिया ली, तो गुडिया खानको कभी अपने शक्तिशाली वजीरोंको प्रसन्न करनेके लिये और कभी प्रजाके प्रभावशाली वर्गको अपनी ओर करनेके लिये इस्लाम लाना जरूरी था। अन्तमें मगोल-वशकी समाप्ति होकर इसकी जगह पांच छोटे-छोटे राजवंश कायम हुये, जिनका अन्त नेमूरलगने अपने दिग्विजयमें किया। यह पांचो खानदान थे—(१) जलायर, (२) मुजफ्फरी, (३) सर्वदारी, (४) वनीकर्त और (५) चोवानी। जलायर सुल्तान ओवेसके बाद सुल्तान अहमद हुआ, जिसे १३६० ई०में तेमूरने सतम किया।

**हजारा**—मगोलोंके शासनकालमें जो मगोल इधर आकर रह गये थे, उनमेंसे कुछ तो साधारण तुर्क जन-समूहमें विलीन हो गये, किन्तु कुछ घुमन्तू हिन्दूकुश (हिन्दूकोह)की उपत्यकाओंमें जाकर कृषक और पशु-पालका जीवन बिताने लगे। इनके पचीस कवीले थे, जो आजकल हजाराके नामसे अफगानी-ताजिकों और वक्षु-उत्तकके दक्षिणवाले तुर्कोंके बीचमें रहते हैं। इनकी भाषा तुर्की नहीं, एक तरहकी फारसी है, लेकिन बाबरके समयतक यह मगोल-भाषा बोलते थे। अबुलफजल (अकबरके प्रधान-मन्त्री)ने इन्हें मङ्गल खानका वंशज कहा है, और यह भी उल्लेख किया है, कि इनकी स्त्रिया पुरुषों जैसी ही लडनेमें बहादुर होनी हैं। अफगानिस्तान और मोवियत मध्य-एशियाके सुन्नी मुसलमानोंके महासमुद्रके बीचमें अपनेको शिया बनाये रखना हजारोंकी विशेषता है। विद्वानोंने इनकी भाषामें कितने ही मगोल शब्द भी ढूँढ निकाले हैं।

**साहित्य**—इलखानियोंके समयमें फारसी गद्य-पद्य-साहित्यकी रचनाये बढी, यद्यपि इस साहित्यमें निराशावादकी ही प्रधानता है। इस कालकी कविता तीन श्रेणियोंमें बाटी जा सकती है—सूफी रहस्यवाद, गजल (प्रेम-पत्र), कसीदा (स्तुतिप्रशंसा) और उपदेश।

इनमें सूफी कवि थे—फरीदुद्दीन अत्तार (१११६-१२२६ ई०)—जिसे प्रथम मगोल आक्रमणमें एक मगोल सैनिकने मार डाला, सादी, औहदी, इराकी और मगरदी।

गजलके कवि थे—मौलाना रूमी, सादी और हाफिज।

कसीदाके कवि—कमाल इस्माईल और सुलेमान सावजी।

उपदेशात्मक रचना करनेवालोंमें निपुण थे—सादी और इब्न-अमीन।

## तेमूर-वंश

( १३७०-१५०० ई० ) .

### १ तेमूरलग ( १३७०-१४०५ ई० )

तेमूरके पिता तुगई बरलसको अमीर कजगनने केश (शहरसब्ज) और नरखोव (करगी) के इलाके दिये थे। अपने स्वरचित जीवनचरित्र "तुजुकाते-तेमूर" <sup>१</sup> में तेमूरने लिखा है—“बारह वर्षकी उमरमें ही मुझे अपनी असाधारण बुद्धि और दिमागी शक्तिका पता लगने लगा, और मैंने अपनेको अध्ययन और आत्मसंयमका अभ्यासी बनाया। अठारह सालकी उमरमें मैं खेलो और बहादुरीके विनोद-कार्योमें अपनी चतुराईके लिये कम अभिमान नहीं रखता था। मैं अपना समय कुरान पढ़ने, शतरंज खेलने तथा बहादुरीके अनुरूप दूसरे खेलोमें बिताता था।” १३५६ ई० में तेमूरके पिताने उसे अमीर कजगनके पास दूत बनाकर भेजा। कजगन उससे इतना प्रसन्न हुआ, कि उसने अपने लड़के सेलाखानकी बेटी ओलजे तुगकान खातूनमें उसका ब्याह कर दिया और “मिगवाणी” (सहस्रपति) का पद दे हुमेन कर्न (खुरामान) के विरुद्ध अभियानमें जाते समय तेमूरको अपने साथ ले गया। अभियान सफल रहा, किंतु इसी समय कजगनकी हत्या कर दी गई और थोड़े ही समय बाद तेमूरका गिता भी मर गया। अमीर कजगनके पौत्र अमीर हुसेनके साथ तेमूरकी मित्रता हो गई। अभी वह अमीर कजगनकी हत्याका बदला लेनेकी सोच रहे थे, कि मुगोलिस्तानका खान तुगलक (ध्वजाधारी) अन्तर्वेदपर चढ़ दौड़ा।

हम कह आये हैं, कैसे अन्तर्वेदके चंगतई-राज्यकी डावाडोल स्थितिको देखकर जाते (सीमाती) मुगोलिस्तानके खान तुगलक (ध्वजाधारी) तेमूर ने ७६१ हि० ( २३ XI १३५६—१३ X १३६० ई० ) में काश्गरके रास्ते आकर आक्रमण किया। खोजन्द नदी पार कर लेनेपर अमीर वायजीद जलायर उससे आ मिला। दोनों शहरसब्ज (केश) की ओर बढ़े। तेमूरलगके चचा हाजी विरलसने पहले मुकाबिला करनेका स्याल किया, लेकिन फिर उसे व्यर्थ समझकर खुरामानकी ओर भागना ही अच्छा समझा। चचाकी सलाहसे तेमूरलग किस तरह लौटकर समरकन्दमें प्रधान बना, इसके बारेमें हमने अन्यत्र बतलाया है। तेमूर और उसके वंशज अपनेको छिड़-गिस्-वशी सिद्ध करनेकी बहुत कोशिश करते हैं। भारतमें तो उसके वंशजोंने अपने खानदानका नाम ही मुगल रख दिया। लेकिन, वस्तुतः वह छिड़गिस्-वशज नहीं थे। कृद्य इतिहासकारोंने उन्हें चंगतई-सेनापति कराचार नोयनके वंशका बतलाकर मंगोल सिद्ध करनेकी कोशिश की है, लेकिन वस्तुतः विरलस मुकं थे। हा, वह उन तुर्कोंमेंसे थे, जो कि मंगोलोके मध्य-एशियाकी ओर बढ़नेके समय उनकी सेनामें बहुत भारी सदयामें शामिल हो गये। वह मंगोलोके विश्वासपात्र सारदारोमेंसे थे, लेकिन जब मंगोल-शक्ति निर्बल हो गई, तो वह उनके तुर्क-प्रतिद्वंद्वी बन गये। अमीर कजगनके बाद इनका जोर अन्तर्वेद और तुर्किस्तान (मध्य-सिर-उपत्यका) में बढ़ा। मंगोल-राज्यकी वंश-घाटके समय तेमूरका पिता हाजी तुगई विरलस तुर्कोंकी कोरकान (गूरगान) याखाका मुखिया और केश (शहरसब्ज) इलाकेका स्वामी बन गया, जिसके मरनेपर उसका उत्तराधिकारी उनका भाई हाजी विरलस हुआ—

१ “तुजुकाते-तेमूर” (तेमूरके नियम) तुर्कीमें लुप्त तथा फारसी अनुवादमें ही प्राप्य है।

२ जन्म ७३० हि० ( २५ X १३२६—१५ IX १३३० ई० ), गद्दी ७४८ हि० ( १३ IV १३४७—३ III १३४८ ई० ), मुनलमान ७८४ हि० और मृत्यु ७६४ हि० ( २१ X १३६२—११ IX १३६३ ई० )

हाजी विरलसको किन्ही-किन्ही इतिहासकारोंने तेमूरलगका भाई भी लिखा है । तेमूरलगके बापका स्थान हाजी विरलसने लिया, इसमें कोई मतभेद नहीं है । यही केश नगरमें ५ शवान ७३६ हि० (१६ मार्च १३३६ ई०) को तेमूर पैदा हुआ । बचपनसे ही उसमें नेतृत्वके लक्षण दिखलाई पड़ने लगे । लड़कोंकी पचायत और शिकारमें निपुणता दिखलाकर साबित कर रहा था, कि वह एक कुशल शासक और सैनिक होगा । तुगलक तेमूरने तेमूरलगके आनेपर उससे प्रभावित हो उसे केशका हाकिम बना दिया । जब खान काशगर लौट गया, तो अमीरोमें झगडा बढ चला । अगले साल ७६२ हि० (११ XI १३६०—२ X १३६१ ई०) में खान फिर अन्तर्वेद आया और अमीरो-को भगाकर उसने समरकन्दपर फिर अधिकार कर वहाका शासन अपने पुत्र इलियास खोजा ओगलानके हाथमें दिया और तेमूरलगको उसका मुख्य-पारिषद् (अतालीक) नियुक्त किया । लेकिन तेमूरकी दूसरे अमीरोसे नहीं पटी और वह अमीर कजगनके पौत्र तथा अपने साले अमीर हुसेनकी खोजमें भाग निकला ।

समरकन्दसे भागनेके बाद तेमूर कराकुमके उमी रेगिस्तानकी ओर गया, जो कि उत्तराभिमुख वधुसे कास्पियन समुद्रतक फैला हुआ है । यहा उसे बहुत तकलीफ उठानी पड़ी । निर्जन मरुभूमिमें खानेका भी ठिकाना नहीं था । तेमूर अपने तुजुकातमें लिखता है—मैं और मेरी पत्ति-परायणा पत्नी ओल्जाई अमीर हुसेनसे मरुभूमिमें मिले और फिर महीने भर रात-दिन रेगिस्तानमें भटकते रहे । कितनी ही बार हमें अन्न और जल भी मुयस्सर नहीं हुआ । अन्तमें एक तुर्कमानने हमें पकड़कर बन्दी बना लिया और ओल्जाईको एक ऐसी पशुशालामें ले जाकर बन्द कर दिया, जो पिस्मुओ और खट-मलोसे भरी थी । तेमूर किसी तरह साले और वीवीके साथ वहासे भागकर केश पहुंचा । थोड़े ही दिनो-में उसके पुराने साथी उसके पास जमा हो गये, जिनके साथ वधु पार हो वह दक्षिणके इलाके (पुराने बाह्लीक) में चक्कर काटता रहा । अन्तमें लूट-पाट करनेके लिये भीस्तानके ऊपर आक्रमण किया और बलूचियोमें एक किला छीन लिया । लेकिन जल्दी ही लोगोंने उसके ऊपर आक्रमण किया, जिममें उसके पैरमें चोट लग गई और वह जिन्दगीभरके लिये लग (लगडा) हो गया । मगोलो और तुर्कों-में तेमूर नाम बहुत अधिक पाये जाते हैं, जिनसे अलग करनेके लिये वह इतिहासमें तेमूर-लग (तेमूर लगडा) के नामसे प्रसिद्ध हुआ । तेमूरके साले हुसेनने इसी समय बलखपर अधिकार कर लिया । तेमूर भी वही चला गया । धीरे-धीरे तेमूरके पद्वह भी अनुयायी हो गये । ७६५ हि० (१० अक्टूबर १३६३—३० अगस्त १३६४ ई०) में इलियास खोजाकी सेनाके साथ उसकी प्रथम भिडत वधुके बाये तटपर कुदुजके नजदीक हुई । यद्यपि इलियासकी सेना पाचगुनी थी, लेकिन तेमूरने उसपर पूर्णतया विजय प्राप्त करके सेनाको नदी पार भगा दिया । इसी समय पिताके मरनेकी खबर सुनकर इलियास बापकी गद्दी समालने अलमालिककी ओर दौड़ा, और तेमूर बहुत आसानी-से जेतो (मगोलिस्तानियों) को अन्तर्वेदमें निकालनेमें सफल हुआ । अब तेमूर अपनी जन्मभूमि-का स्वामी था, लेकिन प्रतिद्वन्द्वियो और बाघाओकी कमी नहीं थी, इसलिये उसने प्रभावशाली मरदारो की एक कूरिल्ताई बुलाई, जिसमें रिक्त मिहासतपर कायिलशाहके बैठानेका निर्णय हुआ । तेमूर-वशने अबूसईदके समय (१४५१-५२ ई०) तक मगोल खानोको समरकन्दकी गद्दीपर बनाये रखा, जो यही बतलाता है, कि अन्तर्वेदके लोगोमें छिद्दगिमी राजवशके साथ एक त्रिशेष तरहका लगाव स्थापित हो गया था । खानकी जगह समालनेपर तेमूरको भारी विरोधका सामना करना पड़ता ।

जोडा बीतते ही इलियास खोजा एक बड़ी सेना लेकर फिर अन्तर्वेदकी ओर आया । तेमूरका शिविर उस समय चिनाम और तागकन्दके बीचमें था । हुसेनने सिर-दरियाको पार कर लिया । लडाईमें दो हजार आदमियोंको मरवाकर हुसेन अपनी राजधानी सालीमराय (नदीके परले तट-पर) चला गया और तेमूर करजीकी ओर भागा । जेतोंने फिर समरकन्दको ले लिया । इसी समय तेमूरकी मददके लिये जेतोके घोडोंमें महामारी फैल गई, जिसमें बहुत सारे घोडे मर गये और उन्हें अपना सामान पीठपर ढोनेके लिये मजबूर होना पड़ा । वह अन्तर्वेद छोड़कर चले गये । तेमूरके लिये यह बहुत अच्छा अवसर मिला था, किन्तु इसी समय हुसेनसे उसका विगाट हो गया, जिनके

कागण उससे पूरा फायदा नहीं उठा सका। हुसेनने पहले धोखेमें तैमूरको खरम करवाना चाहा, जब उसमें सफलता नहीं मिली, तो उसके खिलाफ अमीर मूसाको भेजा। मूसा बलखमें बंधु पार हो उत्तरकी ओर बढ़ा, लेकिन तैमूरने उसे हरा दिया। फिर हुसेन स्वयं सालीमरायसे एक भारी सेना लेकर चला। तैमूर करगी होते बुझारा लौटा फिर अन्तर्वेद छोड़ खारेज्मकी ओर भाग गया। हुसेन अब मारे अन्तर्वेदका स्वामी था। तैमूरने जाड़े भर तैयारी की। वसंत ऋतु होते ही एक छोटी किन्तु बहुत ही मुगिष्ठित और बहादुर सेनाके साथ आक्रमण कर उसने ताशकन्द ले लिया, फिर नमरकन्द और करगीमें अपने प्रतिद्वंद्वीकी सेनाको चारों तरफ जलायर अमीर कैखुमरोसे जा मिला। कैखुमरोने अपनी लड़कीका तैमूरके पुत्र जहागीरने व्याह कर भारी सेनामें उसकी मदद की। तैमूरने पीछे मूड़कर हुसेनको बंधुपार मार भगा दिया। जेतोके सामन्त अमीर जलायरसे तैमूरका मेल हुसेनके लिये बहुत भयकर था और अन्तमें उसने वहनोडिसे संधि कर ली। हुसेनको तैमूरने उसके विरोधी सामन्त वदस्साके हाकिमको उवानेमें सहायता भी दी। लेकिन, जब तैमूरके ऊपर जेताने प्रहार किया, तो हुसेनने विस्वासघात किया, और अन्तमें हारकर तैमूरके हाथमें बन्दी हुआ। तैमूर उसे मारना नहीं चाहता था, लेकिन उसके अमीरोंने बहुत जोर दिया और अन्तमें ७५१ हि० (५ VIII १३६६—२६ VI १३७० ई०)में उसे अपने वहनोडिमें मरवाना पड़ा।

अब तैमूरका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं रह गया था। इसी समय १३६६ ई०में बलखमें उसने एक बड़ी कूरिल्टाई बुलाई, जिसमें चंगतई-राज्यके सभी अमीर, तैमूरके गाढ़े दिनों और तग़्गाईके साथी तथा उसके पुराने प्रतिद्वंद्वी भी शामिल हुए। सबने तैमूरको अपना शासक स्वीकार किया और मंगोलो तथा उनके पूर्वजोंके समयमें चली आई प्रथाके अनुसार ८ अप्रैल १३६६ ई० (१० रमजान ७७१ हि०) को तैमूरनगको एक सफेद नमदेपर बिठाकर उसे चारों ओरसे पकड़कर उठाया, और धर्मगुरु नैयब वरकाद्वारा अल्लाहकी दुआ पढ़े जानेके बाद अमीर घोषित किया। बंधुके दक्षिणवाले प्रदेशपर अपना दृढ़ शासन स्थापित कर तैमूरने नमरकन्दको अपनी राजधानी बनाया।

७८२ हि० (७ IV १३८०—२६ II १३८१ ई०) में तैमूरने अपने पुत्र मीराशाहको खुरानानपर अधिकार करने के लिये पहले भेज फिर स्वयं भी वहां पहुंचा। इस समय ईरान कई राजवंशों में बंटा हुआ था। उनमें सर्वश्रेष्ठ था, जिसके—(१) अहमदुरजाक (एक वर्ष दो मास), (२) मनऊद (७ वर्ष), (३) मन्शुवीन, (४) नोगान तैमूर, (५) कस्माव हूवर, (६) यहिया करनी, (७) हान दम्गानी, (८) अली मोवियद अहमदुरजाक—आठ शासकोंने उत्तरी ईरानपर पैनीन साल शासन किया। अन्तिम शासक अहमदुरजाकने तैमूरकी अधीनता स्वीकार कर ली। खरामानमें ईरानको राजधानी बना करके शासन कर रहा था। तैमूर इसी वंशके खिलाफ चला। राजधानीके पास भारी लड़ाई हुई। क्योंकि नगर काबूखान, तूम, नेगापोर, मज्जवार ध्वस्त होकर ईंटों और मिट्टीके ढेर हो गए। खुराखानके बाद तैमूरने भीस्मान, बतुचिस्तान और अफगानिस्तानपर आक्रमण किया। इस प्रकार १३८६ ई० (७८८ हि०)में वह ईरानपर आक्रमण करनेके लिये स्वतंत्र था। अफगानाना नारा इलाका और पारस मुज्जफरी-वंशके हाथमें था। इराक और आजरबाइजानके अनाबे अब भी इल्खानी अमीर चौबानके वंशके हाथमें थे। बगदादने बिना प्रहारके ही अधीनता स्वीकार कर ली, इस प्रकार विनाफतकी राजधानी तैमूरके हाथमें आ गई।

ईरानपर विजय प्राप्त करनेके बाद तैमूर नमरकन्द लौटा। नमरकन्दका भाग्य जाग उठा। तैमूरने अपने दरबारको बड़े ही श्रद्धाके साथ सजाया। नमरकन्दमें एकने एक सुंदर महल, मस्जिदें और मदरसे बनवाये, जिनके बनानेके लिये राम, ईरान और भारततकके वास्तु-शास्त्री और मिल्की बुलाये गये। लावांजी नगरमें देश-विदेशोंके दान-शामियोंमें बाफ़ी नमरकन्दमें लाये गये, जिनके बाग़ नमरकन्दके शिल्प और उद्योगों के लिये बहनेमें बड़ी सहायता मिली।

तोक्तामिशपर आक्रमण—इसी वंश पट्टेके आशय-प्राप्त विपक्षी खान तोक्तामिशने तैमूरका शत्रुता हो गया और उसे अपने उत्तरी बंधुगी यकिको नोडनेकी अवश्यता पड़ी। तोक्तामिश मिरद-गिदारे गन्ने मरत न होनेपर १३८५ ई०में कावेगमके रास्ते तत्रेजपर जा पड़ा, और इस्खानियोंके



समयसे चले आते इस समृद्ध नगरको लूटकर बर्बाद कर दिया। इसका बदला लेनेके लिये १३८७ ई० में तेमूरने काकेशसके रास्ते दरबन्द पहुँच तोकतामिशको वरी नरह हराया। १३८८ ई० (७६० हि०) में तोकतामिशने सिरदरियाकी ओरसे भारी आक्रमण किया। तेमूरको उसके लिये ७६२ हि० (२० XII १३८६—१० XI १३९० ई०) में प्रथम महाभियान करना पड़ा। वह सिरदरियाके पार हो उत्तरमें बढ़ने-बढ़ते ६ अप्रैलको बोल्गागेकी भूमिमें अवस्थित कचुकताग (लघु-पर्वत) में पहुँचा। फिर उलुगताग (महापर्वत) पर चढ़कर उसने आसपासकी भूमिका अवलोकन किया। यहीपर उसने २८ अप्रैल १३९१ ई० को एक शिलालेख लिखकर स्थापित किया।

आगे तोकतामिशको तेमूरने कैसे हराया, इसका वर्णन हम पहिले कर चुके हैं \*।

उस करारी हारके बाद भी तेमूरके हटते ही तोकतामिश फिर सबल हो उठा, जिसके लिये तेमूरको २५ फरवरी १३९३ ई० में दूसरा महाभियान काकेशसके रास्ते कास्पियनसे पश्चिम-पश्चिम करना पड़ा। १३ अप्रैलको वह तेराक नदीपर पहुँच गया। तोकतामिशको हारकर पीछे भागना पड़ा। तेमूर उसका पीछा करके आगे बोल्गाके किनारे-किनारे सराय पहुँचा। नगरवासियोंको धर छोड़ बाहर निकल जानेका हुकुम दे उसे खूब लुटवाया। फिर मास्कोकी ओर जाना चाहता था, जिसके लिये भगवान्की मा (मरियम) का बड़ा जुलूस निकाला गया, बड़ी पूजा-प्रार्थना की गई, और भगवान्की माने मास्कोको बचा लिया। तेमूरने क्रिमियाके बड़े नगर अजाकको भी लूटा। सोना, चादी और रतन लदवाये तथा सुदूर दास-दासियोंके समूहको लिये वह दरबन्दके रास्ते लौटा। तेमूरकी विजय-यात्राओमें छिड़गिस्की विजय-यात्राने प्रेरणा दी थी, लेकिन जहाँ छिड़गिस् हर एक विजयपर अपना दृढ़ शासन स्थापित करता था, वहाँ तेमूरके बहुतसे अभियान केवल लूटमारके लिये होते थे।

७६६ हि० (५ X १३९६—२६ VIII १३९७ ई०) में पाँच सालकी अनुपस्थितिके बाद तेमूर राजधानी समरकन्द लौटा। वक्षु-तटपर अपनी खातूनो, पुत्रियों-पौत्रियों तथा राज-कुमारोंके साथ पहुँचनेपर लोगोंने उसका अपार स्वागत किया। खुशीमें उसने सोना और जवाहर लुटाये। तेमूर साठ वर्षका हो चुका था। इसी समय उसने तौकेल खानमसे शादी करके उसे “दिलकुशा” प्रासाद प्रदान किया। अभी भी उसकी लूटसे तृप्ति नहीं हुई थी, और अब उसकी नजर सिंधु और गंगाकी ओर थी।

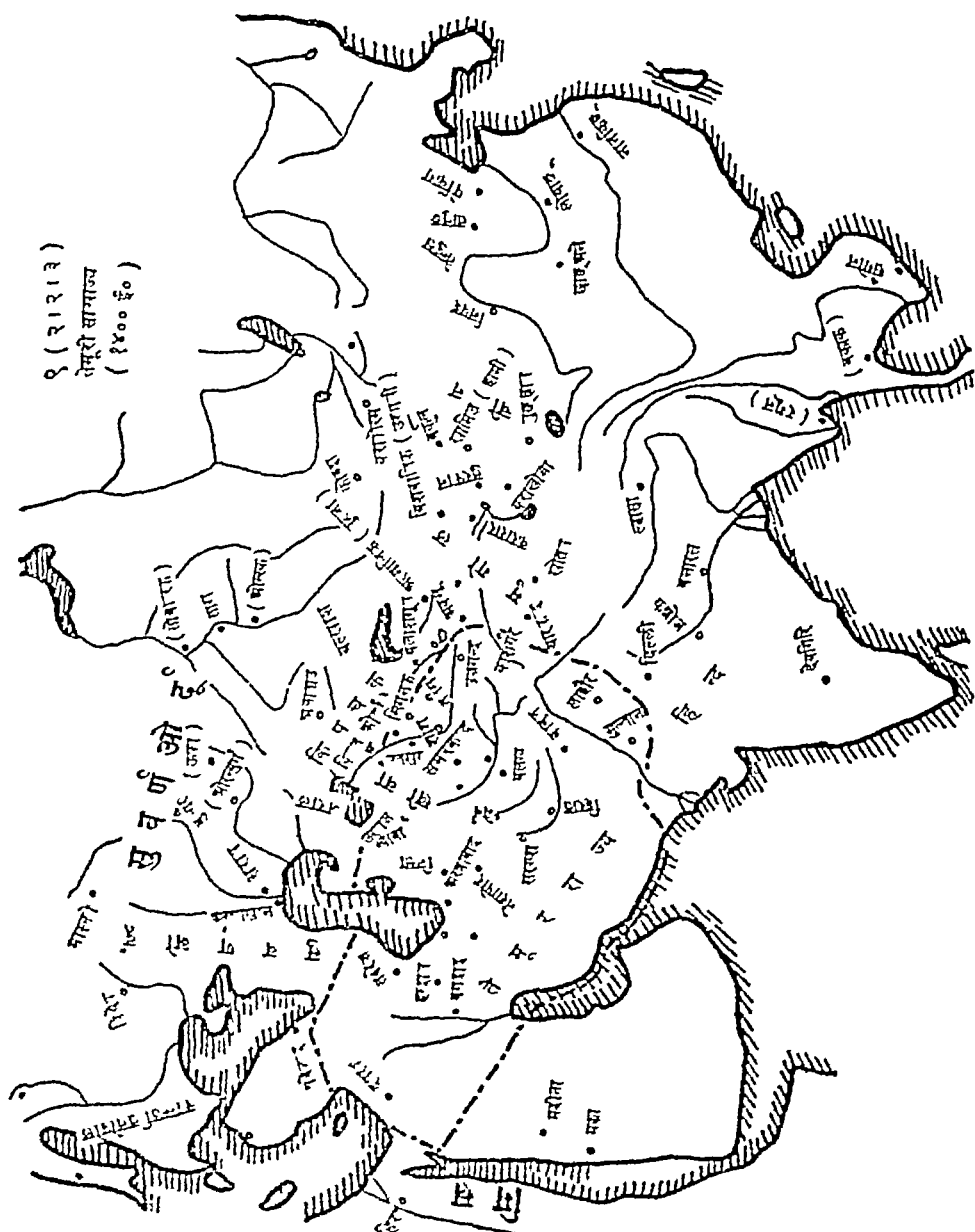
**भारतपर आक्रमण**—८०० हि० (२४ IX १३९७—१५ VIII १३९८ ई०) को उसने भारतके लिये प्रस्थान किया। उसका पौत्र पीर मुहम्मद पहले ही आकर मुल्तानका मुह्रासिरा किये हुये था। तेमूर बलख और हिन्दूकोहके रास्ते काबुल पहुँचा। ८०१ हि० के पहले दिन (१३ सितम्बर १३९८ शुक्र) उसने सिंध नदीको पार किया। रास्तेमें नगरोको लूटता और लोगोंकी लाशोंसे सड़कोको पाटता जब सतलजके किनारे पहुँचा, तो पीर मुहम्मद भी उससे आ मिला। फिर भारतकी राजधानी दिल्लीकी वारी आई। वदियोंके मारे जल्दी चलनेमें रुकावट हो रही थी, इसलिये उनसे छट्टी पानेके लिये उसने एक लाख वदियोंको कतल करवा डाला। यह इतना अमानुषिक कार्य था, जिसे करनेकी हिम्मत कुछ जल्लाद नहीं कर सकते थे, इसलिये सारी सेनाको हुकुम हुआ, कि हर एक आदमी इस काममें सह्यता करे। इतिहासकार नासिरुद्दीन इसका बड़ा कष्टपूर्ण वर्णन करना है। उसके लिये अपने पद्वह हिन्दी दासोंका मारना बहुत मुश्किल हो गया था। जो जरा भी ढिलाई करता, उसे पीटा जाता। अपने व्यापार और राजसी वैभवके लिये प्रसिद्ध दिल्लीने अपना खजाना तेमूरके लिये खोल दिया, लेकिन तेमूरने दया नहीं दिखलाई। वही हालत मथुराकी हुई—वहाँके मंदिर ध्वस्त कर दिये गये और मूर्तियाँ तोड़ दी गईं। रास्तेमें हर एक आदमीको मारते और लूटनेसे बची हर एक चीजको नष्ट करते तेमूर हरिद्वारकी ओर पहाड़के भीतरतक घुस गया। उसके इतिहासकारोंने गढ़वालके पर्वतवासियोंके भीषण प्रतिरोधका वर्णन किया है, लेकिन तब भी वहाँकी राजधानी तेमूरके हाथसे बच न सकी। कुछ लोगोंका मत है, कि तेमूर देहगढ़न-

की तरफ गया था, लेकिन उस समयके अलकनन्दा और भागीरथीके प्रदेशोका केन्द्र हुनकी उपत्यका नहीं, बल्कि श्रीनगरके आसपास कहीपर था। वहासे उमे लूटमें बहुतसा धन मिला था।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि तेमूरकी भारतपर चढाई केवल लूट-पाटके लिये हुई थी। भारतमें अपार सम्पत्ति और लाखो दास-दागी लेकर तेमूर उमी साल (१३६८ ई०) मगरकन्द लौट गया।

सिरिया-विजय करते समय वहाके शासक मिलके ममलूकोको हुलाकूकी तरह तेमूर भी नहीं दवा पाया। दुबारा हम्ला करके वह उनके हाथमे दमिश्कको ही छीन मका।

सिरिया-विजयके बाद ८०५ हि० (१४०३ ई०) के वसतमें क्षुद्र-एशियाकी विजयके लिये तेमूर सिवात और करागहर होते यनकुरु (अगोरा) के मैदानमे पहुच सुल्तान वायजीदसे भिडा। उसमानअली तुकसेना तेमूरके सामने पूरी तीरसे पराजित हुई। मुल्तान वायजीद अपने रनिवासके साथ तेमूरका बदी बना। अब सारे क्षुद्र-एशिया (भूमध्य-सागरसे काला-सागरके तटतक) का स्वामी तेमूर था। यहासे लौटकर जब तेमूर ममरकन्द गया था, उसी समय स्पेनके राजा तृतीय हेनरीका दूत दोन ख्य गोनजा-



लेज दे क्लावियो समरकन्दमे उसके दरवारमे पहुँचा। क्लावियोने अपनी यात्राका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। तेमूरका दरवार उस समय एक बड़े ही विशाल और कीमती तम्बूके भीतर लगा हुआ था। उसकी रानिया बिना किसी परदेके तेमूरके पाम तख्तपर बैठी थी। यही नहीं, तेमूरकी खातूनों (रानियों)ने अपनी मध्य-गोष्ठीमे क्लावियोको अलग निमन्त्रित करके सम्मानित किया था। इससे स्पष्ट है, कि तेमूरके समयतक अभी मध्य-एशियाके तुर्क राजपरिवारमे परदा-प्रथा जारी नहीं हुई थी, लेकिन उसके वंशजोंने भारतमे पहुँचकर जल्दी ही उसे अपना लिया।

जनवरी १४०५ ई० (८०७ हि०—१० VII १४०४—३१ V १४०५ ई०)मे फिर तेमूर अपनेको विजय-यात्रासे रोक नहीं सका। पश्चिममे उसके घोड़ोंकी टाप रूसकी भूमितक पहुँच चुकी थी, लेकिन जबतक पूरवमे चीन-विजय न कर ले, तबतक वह छिड़गिस्के समकक्ष कैसे हो सकता था? इसीलिये जाडेमे ही उसने अभियान कर दिया। लेकिन, फरवरीमे सिरतटपर ओत-रारमें पहुँचकर बीमार हो १७ फरवरीको वही मर गया। चरित्रलेखक अहमद अरबशाह-पुत्रने जाडेके मुहसे तेमूरके वारेमे कहलवाया है—

“ओ क्रूर अत्याचारी, अपनी गतिको रोक! कबतक तू दुखी दुनियाको अपनी तलवार और आगसे नष्ट करता रहेगा? अगर तू शैतान है, तो यह भी समझ ले, कि मैं भी एक शैतान हूँ। हम दोनों बूढ़े हैं, हम दोनोंके सामने एक ही लक्ष्य है, और वह है दासोंको अपने जूए के नीचे लाना। अगर तू मानव-जातिका उच्छेद करना जारी रखेगा और दुनियाकी निर्जन और ठडी बनाएगा, तो समझ ले मेरी सास उससे भी कहीं अधिक ठडी और ध्वंसकारी है। तू अभिमान करता है अपनी उस असख्य सेनापर, जो कि तेरा हुकुम वजा लानेके लिये दौड़ पड़ती है और जिसके द्वारा तू सभी चीजोंको नष्ट-भ्रष्ट कर सकता है, तो मेरे इन जाडेके दिनोको भी याद कर, जो कि सर्वशक्तिमान्के श्वासोंकी मददसे हर चीजके नष्ट करनेकी क्षमता रखते हैं। मैं किसी बातमे तुझसे कम नहीं। जरा देर ठहर! बदला लेनेके लिये मैं अभी पहुँच रही हूँ और तेरी सारी आग और क्रोध मेरी वर्षाणी आधी द्वारा लाई ठडी मौतसे तुझे नहीं बचा सकते।”

तेमूर अपने वारेमे “मेन् तिङ्गी-कुली तेमूर” (मैं भगवान्का दास तेमूर) लिखता था, लेकिन जिस भगवान्का दास तेमूर था, वह अवश्य ही निष्ठुर रहा होगा। छिड़गिस् और उसके उत्तराधिकारियोंने भी तलवार और आगसे दुनियाको जीता था, लेकिन अनावश्यक हत्याके वह इतने पक्षपाती नहीं थे, जितना कि खूनका प्यासा तेमूर। ईरानी शियोंको दासके तौरपर वेंचना, एक बड़ी समस्या थी, क्योंकि मुसलमानको दास नहीं बनाया जा सकता। इस समस्याको मुल्ला शमशुद्दीनके इस फतवाने हल कर दिया—शिया मुसलमान नहीं हैं, बल्कि काफ़िरोसे भी बदतर हैं।

यदि तेमूर चाहता, तो अपनेको खान (बादशाह) क्या खलीफा घोषित कर सकता था। तेमूरकी सेना उसके कौशल और सार्वत्रिक विजयोंके कारण उसपर इतना विश्वास रखती थी, और उसके हुकुमकी इतनी पाबन्द थी, कि अपार सम्पत्तिके लूटनेमें लगी होनेपर भी तेमूरके ना करनेपर अपने हाथोंको तुरत रोक देती थी। ऐसी अधभक्त सेनाके बलपर पैगम्बर बनना उसके लिये बिल्कुल आसान था। कवियोंके प्रति तेमूरकी विशेष सहानुभूति नहीं थी, लेकिन वह दरवारमे कवियों, गायकों, सूफियोंका सत्कार करता था। नकशबन्दी दरवेशोंके सम्प्रदायका संस्थापक ख्वाजा वहीउद्दीन [मृत्यु ७९१ हि० (३१ XII १३८८—२१ XI १३८९ ई०)], ख्वाजा अहरार, ईशान मखदूम कासानी और सूफी अल्लामदारपर उसकी बड़ी आस्था थी। कवियों और सूफियोंने उसके खूबखार सैनिकोंके मनको नरम करनेमे शायद ही कुछ काम किया हो।

वोल्फेके अनुसार तेमूर “लम्बे-चौड़े कदका आदमी था। उसका सिर असाधारण तौरसे बड़ा तथा ललाट चौड़ा था। रंग उसका बहुत ही सुन्दर लाली लिये हुये गौरा था। उसके लम्बे बाल जन्मसे ही (ईरानी) पुराण-प्रसिद्ध जालकी तरह सफेद (ब्लैंड) थे। अपने कानों में वह दो बहुमूल्य हीरे पहना करता था। उसके चेहरेपर हमेशा गंभीरता और एक तरह की उदासी छाई रहती थी। उसे

हास-परिहास और चुहल बिल्कुल पसन्द नहीं थी, खाम करके झूठका तो वह बहुत भारी वस्तु था। झूठकी जगह वह अपनी रायके विरुद्ध सचको ज्यादा पसन्द करता था। तेमूर जिस बात या लक्ष्यको पकड़ लेता था आज्ञा दे देता, उसे फिर उलटता नहीं था। अतीतके लिये उसे कभी अफसोस नहीं हुआ और न अनागतकी आशामें उमने कभी आनन्द मनाया। उसे कवि और विद्वपक पसन्द नहीं थे। उसे प्रिय थे चिकित्सक, ज्योतिषी, धर्मशास्त्री। वह अक्सर अपने सामने शास्त्रार्थ कराया करता। सबसे ज्यादा भक्ति उसकी दरवेशों (साधु-संतों)के ऊपर थी, जिनके आशीर्वादसे वह अपनी विजयोंकी सफलता समझता था। लिखना-पढ़ना वह जानता था और जीवन-घटनाओंपर उसने अपनी लेखनी चलाई भी है। उसकी स्मृति बहुत तेज थी। वह अरबी नहीं जानता था, लेकिन तुर्की, मंगोल और फारसी भाषाये अच्छी तरह जानता था। वह कट्टर मुसलमान नहीं था, क्योंकि वह छिड़गिस्के यासा (तुरा) को कुरानके ऊपर मानता था। उसने अपने कानून (तुजुक)को यामामे लेकर बनाया। बाबर और अकबरने भी अपने पुरखा तेमूरका ही अनुकरण किया। प्रसिद्ध ही है, कि भारतीय मुगल राजकुमारोका खतना नहीं होता था। तेमूर यात्रियों और दरवेशोंसे दूसरे मुल्कोंके बारेमें जहा ज्ञान प्राप्त करनेकी कोशिश करता था, वहा डम कामके लिये उसने खुद भी अपने आदमी दूसरे देशोंमें भेज रखे थे।

तेमूरके उत्तराधिकारी—और बातोंमें छिड़गिस्का अनुकरण करते भी तेमूरने अपने राज्यको नहीं बाटा। उसने अपने जीवनमें ही अपने पौत्र (जहागीर-पुत्र) पीर मुहम्मदको अपना उत्तराधिकारी चुना था। तेमूरकी मृत्युके समय वह कधारमे था। उनके आनेसे पहले ही दूसरे पुत्र खलील मुल्तानने मेनाके बलपर अपनेको अमीर घोषित कर दिया। तेमूर-पुत्र शाह्रुख हिरात (खुरासान)का शासक था, सिंहासनके लिये उसका भी दावा था। उमे खुरासान, सीस्तान और माजन्दरानका राज्य मिल गया, तो भी वह चुप न हुआ। खलील सुल्तानकी राजगद्दीकी घोषणा सुनकर शाह्रुख भी अपने एक मेनापतिको हिरातमें छोड़ बंधुकी ओर चला। खलील और पीर मुहम्मदने समझौता कर लिया, कि खलीलके बाद पीर मुहम्मद उत्तराधिकारी होगा। दोनोंकी संयुक्त शक्तिके सामने शाह्रुख उम वक्त कुछ नहीं कर सका, लेकिन दो साल बाद उमने अन्तर्वेदको खलीलने छीन लिया, और ८१७ हि० (२३ III १४१४—११ II १४१५ ई०) तक अस्पहान और शीराजतक बढ़कर तेमूरके प्रायः सारे राज्यका शासक बन गया। मरकन्द, बुखारा, हिरात, मेर्व, सदर्जवार, शुस्तर, अस्त्रावाद और शीराज-जैसे नगर उसके हाथमें थे।

साहित्य और कला—यद्यपि तेमूरने ललित कलाओंके लिये सहृदय हृदय नहीं पाया था, लेकिन दुनियाके दूसरे बादशाहोंके दरबारी ठाटको बहुत पसन्द करता था, इसीलिये अनिच्छापूर्वक भी उसके द्वारा कलाको प्रेरणा मिली। वास्तुकलाके लिये विशेष तीरमे, क्योंकि उमे महलो, मस्जिदों और अच्छी-अच्छी इमारतोंके बनानेका बड़ा शौक था। मरकन्दमें अब भी उसकी बनवाई कुछ इमारतें मौजूद हैं। उसके समय इस दिशामें जो कार्य आरम्भ हुआ, उसकी पूर्णता उसके लड़के शाह्रुख और पोते उलुगवेगके समय हुई। तेमूरने १३७१ ई०में तुरकान आकाका रोजा मरकन्दमें बनवाया था, जो शार्हजिदाके नामसे अब भी एक सुन्दर इमारत है। बीबी खानमकी मस्जिद (मरकन्द में) १३९९-१४१४ ई०में तैयार हुई थी, जो आज यद्यपि बहुत टूटी-फूटी अवस्थामें पहुंच गई है, किन्तु है एक सुन्दर इमारत। तेमूरकी अपनी समाधि “गोरे-जमोर” जिसे उसके लड़के शाह्रुखने बनवाया, अब भी मरकन्दकी भव्य इमारत है।

तेमूरके शासकी एक बहुत बड़ी देन है अरबी लिपिकी नस्तालीक शैली। अरबके आरम्भिक कलाओंके समय अरबी भाषा कूफी लिपिमें लिखी जाती थी जिसका स्थान जल्दी ही टेढ़ी-मेढ़ी नस्ख लिपिने लिया। आज भी कुरान और अरबीकी पुस्तके इसी लिपिमें छपी मिलती हैं। लेकिन तेमूरके दरबारी मोरअली तफ्रेजी [ जन्म ७८१ हि० ( १९ IV १३७९—९ III १३८० ई०)—मृत्यु-८०७ हि० ( १० VIII १४०८—३१ V १४०५ ई०) ] ने नस्ख लिपिके टेढ़े-मेढ़े कवियोंको तीव्र कर सीधा कर दिया, और उसने एक बहुत ही सुन्दर लिपि “नस्तालीक” निकाल आई। अरबी-भिन्न

फारसी आदि भाषाओंके लिए नस्तालीक़ लिपि बहुत पसन्द की गई। भारतमें भी उर्दू इसी लिपिमें लिखी जाती है। छापेके जमानेमें टाइपकी सुविधाके कारण “नस्ख” फिर आगे बढ़ गई—ईरानमें उसीमें पुस्तकें और अखबार छपते हैं। लोगोको बहुत अफ़मोस है, कि टाइपोके बनानेमें सुविधा न होनेके कारण मुद्रण-कलाने नस्तालीक़को उपेक्षित कर दिया। लेकिन हमारे यहाँ उर्दूके लिये टाइपोसे अधिक लियोका प्रचार है, जिसके कारण उर्दूमें अब भी तेमूरके समयकी देन ‘नस्तालीक़’का बहुत प्रचार है। नस्तालीक़के प्रचारमें सबसे अधिक हाथ हिरातके सुलेखकोका है, जिन्होंने लेखन-कलाका मान इतना ऊँचा कर दिया, जहापर उसके बाद फिर वह नहीं पहुँच सका।

राजावलि—तेमूर-वंशमें निम्न सुल्तान हुए —

१ तेमूर-लग	१३७०-१४०५ ई०
२ खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र	१४०५-६ ,,
३ शाहख़, तेमूर-पुत्र	१४०६-४७ ,,
४ उलुगवेग, शाहख़-पुत्र	१४४७-४९ ,,
५ अब्दुल्लतीफ, उलुग-पुत्र	१४४९-५१ ,,
६ अब्दुल्ला, शाहख़-पुत्र	१४५१-५२ ,,
७ अब्सईद, मीराशाह-पुत्र	१४५२-६९ ,,
८ अहमद, अब्सईद-पुत्र	१४६९-९३ ,,
९ सुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र	१४९३-९४ ,,
१० बैसुकर, मुहम्मद-पुत्र	१४९४-९७ ,,
११ सुल्तानअली, मुहम्मद-पुत्र	१४९७-१५०० ,,
१२ बाबर, उमरशेख-पुत्र	१५००-१ ,,

## २ खलील सुल्तान, तेमूर-पुत्र (१४०५-६ ई०)

खलील सुल्तानमें बहुतसे गुण थे, लेकिन वह सीमासे अधिक साख़र्च था, जिसके कारण खजाना खाली होते देर नहीं लगी। उसमें दूसरी कमजोरी यह थी, कि वह भी नूरजहा-प्रेमी जहागीरकी तरह शादमुल्कका गुलाम था। इन कारणोंसे जल्दी ही उसके बड़े-बड़े समर्थक उदासीन या अलग हो गये। १४०६ ई०में खुदादाद और शेख नूरुद्दीनने स्वामीसे विद्रोह करके समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। उस समय तो किसी तरह उसे बचाकर अगले साल नूरुद्दीनके साथ सुलह कर ली, लेकिन, फिर खुदादादने दूसरे अमीरोको मिलाकर समरकन्दपर आक्रमण कर दिया। बातचीतके बहाने विद्रोहियोंने सुल्तानको बहकाकर उसे कैद कर लिया और नगरपर उनका अधिकार हो गया। यह खबर सुनकर शाहख़ने अपने सेनापति शादमुल्कको खुदादादको दंड देनेके लिये भेजा। खुदादाद समरकन्द छोड़कर भाग गया। शादमुल्क खुले दरवाजो समरकन्दके भीतर घुसा। उसने रानी शादमुल्कके साथ बड़ा ही घृणाजनक दुर्व्यवहार किया, जो शाहख़के लिये अच्छा नहीं था। शाहख़ अपने तरुण पुत्र उलुगवेगको राज्यपाल बना समरकन्दमें रख हिरात लौट गया। खलील उस समयतक भागकर मुगोलिस्तानमें चला गया था, किंतु शादमुल्कका वियोग वह नहीं सह सका और हिरातमें जाकर उसने अपने भाईको आत्मसमर्पण कर दिया। शाहख़ने उसे सम्मानपूर्वक हिरातका राज्यपाल बना दिया, लेकिन वह उसी साल मर गया।

## ३ शाहख़, तेमूर-पुत्र (१४०६-४७ ई०)

तेमूर खानदानका यह सबसे बड़ा और प्रतापी बादशाह था। बहुत दिनोंसे हिरातमें रह जानेके कारण उस नगरके साथ इसका इतना प्रेम हो गया था, कि तेमूरकी गद्दी सभालनेपर भी उसने अपनी राजधानी समरकन्दमें नहीं बदली। तेमूर-वंश और मध्य-एशियाकी कला और साहित्यका

चरम उत्कर्ष शाहखके समय हुआ। उसने अपने बड़े पुत्र उलुगवेगको समरकन्द (अन्तर्वेद) का शासक बना दिया था, जिसने वहाँ अपनी सुसज्जित और विद्याप्रेमका परिचय दिया।

अब्दुर्रजाक समरकन्दी शाहखका बहुत कृपापात्र इतिहासकार था। इसने "वकाया" लिखना शुरू किया, जिसकी परिपाटी भारतमें भी मुगलवशने जारी की। तत्कालीन इतिहासके लिये सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओंके ये दरबारी अभिलेख बहुत ही उपयोगी हैं। समरकन्दीके ग्रन्थ "मतल-सादेन" में प्रतिवर्षकी घटनाओंका उल्लेख है। ८१२ हि० ( १६ मई १४०९-६ अप्रैल १४१० ई० ) की "वकाया" लिखते समय वह कहता है— 'उज्बेकमुल्क (किपचक)के स्वामी पुलाद खानका अमीर अदिकू बहादुर और अमीर ईसाके नोकर (अफसर) दूत बनकर आये। उन्होंने शिकारी जानवर और दूसरी चीजे भेंट की। मिर्जा (राजकुमार) मुहम्मद जौकीके लिये लडकीकी खास्तगारी करते हुये शाहखने खानके लिये बहुतसी भेंटें और दूतोंके लिये बहुतसे इनाम दिये।' अगले साल भी राजधानी हिरातमें "बलायत-उज्बेक" और "दग्ते-किपचक"से अमीर अदिकू दरबन्दके रास्ते और अमीर शेख इब्राहीम गरवानके रास्ते दूतमंडल लेकर आये।

८१५ हि० ( १३ अप्रैल १४१२ ई०—४ मार्च १४१३ ई० )में समरकन्दी लिखता है—स्वारेज्मको लेकर शाहखका किपचकोंके साथ संघर्ष हो गया। ८२२ हि० ( २८ जनवरी—१९ दिसम्बर १४१९ ई० ) में किपचक खान बुराकने उलुगवेगके ऊपर आक्रमण किया। तेमूरने जैसे तोकतामिशको संरक्षण देकर आगे बढ़ाया और अन्तमें वह भस्मासुर बनने लगा, वही बात बुराक खानने अपने भूतपूर्व सहायक और संरक्षक उलुगवेगके साथ की। ८३० हि० ( २ नवम्बर १४२६-२३ सितम्बर १४२७ ई० )में बुराक ओगलानने अन्तर्वेदपर भीषण आक्रमण किया। समरकन्दमें लोग इतने डर गये, कि उन्होंने नगरका दरवाजा बन्द करनेका विचार शुरू किया। उलुगवेगके हारकर भागनेकी खबर सुनकर शाहख स्वयं एक बड़ी सेना लेकर समरकन्दकी ओर आया और बुराकको अन्तर्वेद छोड़कर भागना पड़ा।

शाहखने थोड़े ही समयमें तेमूरद्वारा विजित प्रायः सारे साम्राज्यको अपने हाथमें कर लिया। उसके बाद जब-तब स्वारेज्म या मिर-दरियाकी ओर किपचको (उज्बेको)के आक्रमणका मुकाबिला करना पड़ता था, नहीं तो वह अपने समयको साहित्य, संगीत और कलाके विकासमें लगाता था। संगीतका वह प्रेमी ही नहीं था, बल्कि उसने इसके लिये स्वयं बहुतसे गीत बनाये थे। ८२०-२३ हि० ( १४१७-२० ई० ) में शाहखके दरबारमें चीनमें एक दूतमंडल आया, जिसके उत्तरमें ८२३ हि० ( १७ I-७ XII १४२० ई० )में शाहखने अपना दूतमंडल चीन भेजा। शाहखका बड़ा लडका उलुगवेग ज्योतिष और गणितका विद्वान् तथा भारी संरक्षक था। इसी तरह उसका छोटा लडका वैसुकर पुस्तको और ललित कलाका बड़ा प्रेमी था। वैसुकरने इस दूतमंडलके साथ नक्काश (चित्रकार) स्वाजा गियामुद्दीनको कर दिया था, जिसमें कि वह चीनी जीवनके हर पहलूको चित्रित करके लाये, तथा चीनी चित्रकलाको नजदीकसे देखे।

८३९ हि० ( २७ जुलाई १४३५-१६ जून १४३६ ई० )में स्वारेज्मकी ओरसे दूतने खबर दी कि किपचक शासक अबुल्खैर ओगलानने अचानक दग्ते (किपचक-मैदान)की ओरसे स्वारेज्मपर आक्रमण कर दिया है और वहाँका राज्यपाल मुल्तान इब्राहीम शादमुल्क-पुत्र भाग गया है। शहरको संरक्षित करके किपचकोने उसे लूटा वरवाद किया, फिर अपने देश लौट गये। ८४४ हि० ( २ जून १४४०-२३ अप्रैल १४४१ ई० )में अस्त्रावादकी ओरसे खबर आई, कि दग्तेकी ओरसे आकर उज्बेक-सेना मुल्कमें लूट-पाट मचा रही है। वहाँका शासक अमीर हाजी यमुफ जलाल कुतलुग कुछ नहीं कर सका। "वकायानिगार" (घटना-लेखक) समरकन्दीने लिखा है— "कहीं-कहीं उज्बेक-सैनिक कजाक होकर (उज्बेक कजाक-युद्ध) माजन्दरान प्रदेशमें भी घुस आये और वहाँसे लौट गये।" १४४० ई०में अभी "कजाक" शब्द एक विशेष जातिका वाचक नहीं हुआ था, बल्कि उज्बेकोंके लुटेरपनेको दिसलाने के लिये ही यहाँ कजाक शब्दका प्रयोग हुआ, लेकिन पीछे उज्बेक (किपचक)

तुर्कोंके एक भागको कजाक कहा जाने लगा, जिनके ही नामपर आज सोवियत सघका दूसरे नंबरके सबसे बड़े गणराज्यका नाम कजाकस्तान है और आज कजाक शब्द लुटेरेका पर्यायवाची नहीं समझा जाता ।

अन्तर्वेदपर किपचको (उज्बेको)का आक्रमण १४१२ ई०से ही होने लगा था । उसके बादके अट्ठाईस वर्षोंमें उनके साथ बहुतसे संघर्ष हुये । पहले वह मध्य-सिर-उपत्यका और ख्वारेज्मतक लूट-पाट मचाते थे, पीछे अब माजन्दरानतक हाथ बढ़ाने लगे । यद्यपि अभी अन्तर्वेदके उज्बेकोके हाथों-में जाननेमें साठ वर्षकी देरी थी, किंतु उनका आतंक अभीसे छटा गया था और १४४० ई०में शाहर्खने हुकुम दिया था—“हर साल दसहजारी अमीरोमेंसे कुछ वलायत-माजन्दरानमें जा सजग रहते वास करे ।” इसके बाद मिर्जा बैसुकर, फिर मिर्जा अलाउद्दीन दोनों राजकुमारोंने भी वहां जाकर डेरा डाला । इसी साल अमीर हाजी युसुफ जलील, उसका भाई अमीर शेख हाजी और दूसरे दसहजारी अमीर अपनी सेना लेकर वहां पहुंचे, किंतु यकायक उज्बेक सेना उनके ऊपर टूट पड़ी और अमीर हाजी युसुफ मारा गया ।

८४५ हि० (२२ मई १४४१ ई०—१२ अप्रैल १४४२)में शाहर्खने इतिहासकार अब्दुर्रजाक के नेतृत्वमें एक दूतमंडल भारत भेजा । तेमूरियोंके कितने उदार विचार थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि शाहर्खने अपने दूतमंडलको दिल्ली या बहमनी रियासतके पास न भेजकर उस समयके दक्षिणके सबसे शक्तिशाली हिंदूराज्य विजयनगरमें भेजा, जिसमें एक सुभीता यह भी था—ईरान शाहर्खके राज्यमें था, जिसका समुद्रके रास्ते भारतके साथ व्यापारिक संबंध विजयनगरके समुद्र-तटद्वारा स्थापित था । यह दूतमंडल हिरातसे चलकर केरमानके रास्ते ओरमुज्द बदरगाहपर पहुंचा, जहांसे जहाजमें बैठकर भारत आया । अब्दुर्रजाकने विजयनगरका बहुत ही सुंदर वर्णन “मतलऽसादेन”में किया है ।

राज्यपाल होनेके समय भी शाहर्खने हिरातको बहुत ही समृद्ध और अलंकृत किया था, लेकिन जब उसने उसे तेमूरी राज्यकी राजधानी बना दिया, तो हिरात सारे इस्लामिक जगत्का एक बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र बन गया । विद्वानों और कला-विशारदोंका वहां बड़ा सम्मान था । वावरने अपने ग्रंथमें लिखा है, कि हिरात-जैसा शहर दुनियामें नहीं है । हिरातमें चित्रकलाकी एक खास कलम—सूक्ष्मचित्र—का आरम्भ किया गया, जो कि शायद पहिले समरकन्दसे वहां आई । हिरात नगरके पश्चिमोत्तरमें शाहर्खने १४१८—३७ ई०में अपनी रानी गौहरशादका रौजा मस्जिदके साथ बनवाया । यह वहांकी सबसे सुंदर इमारत है । शाहजहा भी एक समय खुरासान गया था, जिसका ही प्रधान नगर हिरात है । हो सकता है ताजमहल बनानमें उसे यहांके गौहरशादके रौजेसे प्रेरणा मिली हो । इस रौजेका निर्माण कवामुद्दीन शीराजी नामक एक कुशल वास्तुशास्त्री-ने किया था । यही गौहरशाद उलुगबेग और बैसुकरकी मा थी, जिससे शाहर्ख बहुत प्रेम करता था । बैसुकरने हिरातमें एक किताबखाना बनवाया था, जिसकी इमारत अत्यन्त सुंदर ही नहीं थी, बल्कि वहापर पुरानी पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रह था, और कितने ही सुलेखक पुस्तकोंको लिखते रहते थे । हुसेन बैसुकरने १४३० ई०में “आहनामा”की एक बहुत ही सुंदर प्रति लिखवाई, जो कि आजकल तेहरानके संग्रहालय में है ।

#### ४. उलुगबेग, शाहर्ख-पुत्र (१४४७—४९ ई०)

उलुगबेगने अपने पिताके उपराजके तौरपर एकतालीस वर्ष (१४०६—४७) तक समरकन्दमें रहते अन्तर्वेदका शासन किया । ज्योतिष और गणितके विकासमें उसने खासतौरसे सहायता की । तारों और ग्रहोंके ठीक-ठीक वेधके लिए उसने एक बहुत बड़ी वेधशाला समरकन्दके पास कोहक नदीके ऊपर बनवाई, जिसका आरम्भ ८३२ हि० (११ अक्तूबर १४२८—१ सितम्बर १४२९ ई०) में हुआ था । इसके दरबारमें तथा वेधशालाके विद्वान् काजी जादरूम गयासुद्दीन, जमशीद मोहीउद्दीन काशानी, इसराईली (यहूदी) सलाहुद्दीन थे । यहीपर प्रसिद्ध सारणी ८१४ हि० (५ जुलाई १४३७—

२६ मई १४३८ ई०) में तैयार हुई। उलुगवेगकी वेधशालाके व्यवस्थापक नगरके पूर्वी उपान्तमें चोपान-अता पहाड़ीपर अब भी मौजूद है। उसकी ज्योतिष मारणी—“जीजे-उलुगवेग”—मदियो-तक यूरोपमें भी मान्य रही। पूर्वके देशोंमें बनी सभी ग्रह-मारणियोंमें यह सबसे अधिक पूर्ण और शुद्ध थी। इसमें—(१) समय और युग, (२) समय-माप, (३) ग्रह-कक्षा, (४) नक्षत्र-तारोंके स्थान दिये गये हैं। इनका बहुत ही सुंदर पहला संस्करण प्रोफेसर ग्रीफसने १६४२-४८ ई० में आक्सफोर्ड में छपवाया था। डाक्टर टामस हाइडने १६६५ ई० में इनका लातिनी अनुवाद प्रकाशित कराया। उलुगवेगकी नक्षत्र (तारा)-सूची इतनी पूर्ण है कि आज भी खुली आँखोंसे दिखलाई देनेवाले उतने ही (डेट हजार) तारोंकी सूची बन पाई है। समरकन्दको उलुगवेगने मध्य-एशियाकी उज्जयिनी बना दिया था।

उलुगवेगके बनवाये महल, मस्जिद, मदरसे वास्तु-कलाके अत्यन्त सुंदर नमूने हैं। अगर उसके पिताने हिरातको मध्य बनाया, तो उलुगवेगने समरकन्दको भी उसमें पीछे नहीं रहने दिया। उसके महलोंको सजानेके लिये चीनके सुंदर चित्रकारों और कलाकारोंने आकर वर्षों काम किया था। चीनी वर्तनोंका उसके पास बहुत ही सुंदर संग्रह था।

८५० हि० (२९ III १४४६—१७ II १४४७ ई०) में पिताके मरनेपर नेमूरी सिंहासन-का अब उलुगवेग उत्तराधिकारी था, इसलिये उसे समरकन्द छोड़कर हिरात जाना पड़ा। उलुगवेग नैतिक योग्यता नहीं रखता था, न कूटनीतिका पटिन ही था, इसीलिये वह दो मालमें अधिक घामन नहीं कर सका। जल्दी ही उसके प्रतिद्वंद्वी अलाउद्दौलाने समरकन्दका किला उसमें छीन उलुगवेगके पुत्र अब्दुल्लनीफको बंदी बनाया। उलुगवेगने आक्रमण करके मुलहकी सबसे पहली शर्त यह रखी, कि अब्दुल्लनीफको भेज दिया जाय। दूसरी शर्त अलाउद्दौलाने पूरी नहीं की, जिमने फिर लड़ाई शुरू हुई। अलाउद्दौला हारकर मगहद (खुरामान) की ओर भागा। इसी समय तुर्क-मानोंने हिरातको और उज्बेकोने समरकन्दको लूटा। उलुगवेगने वर्षों लगाकर “चीनीखाना” को चीनी कलाकारों द्वारा अलंकृत करवाया था और सुंदर चीनी वर्तनोंका अद्भुत संग्रह करवाया था। उन सबको पल मारते-मारते उज्बेकोने नष्ट कर दिया। जल्दी ही पुत्रवत्सल पिताके विरुद्ध अब्दुल्लनीफने विद्रोह कर दिया और आक्रमण करके उसे बन्दी बना दिया। उसने इतनी ही नृशंखता नहीं दिखलाई, बल्कि चुपकेसे एक ईरानी गुलाम भेजकर बापको मरवा दिया।

उलुगवेग बहुत ही कोमल स्वभावका आदमी था, कला और विज्ञानके पीछे तो वह पागल था। उसकी कोमलहृदयताने तोक्नामिशकी कहानियोंको जानते दृष्टे भी बोरक ओगलानका सरक्षक बनवाया। उसके विद्या-प्रेमकी प्रतीकके रूपमें बुखारामे उसके हुकुमसे बने एक मदरसेमें बहुत सुंदर अक्षरोंमें अब भी एक छोटाना अभिलेख मौजूद है। “तलवल-इम फरीजत अला-कुल्ले सुव स्लेमन्व मुस्लेमान” (विद्या पटना हरएक मुसलमान स्त्री-पुष्पका कर्तव्य है)।

साहित्य—खोजा इस्मत बुजारी उलुगवेगका राजकवि था। उसके अतिरिक्त खियाली, बुरन्दक, नन्म खृग्यानी आदि भी दरबारके पारसी कवि थे—अभी तुर्कोंको साहित्यकी भाषा नहीं स्वीकार किया गया था, तो भी उलुगवेगके पिता शाहम्बने तुर्की गीत बनाये थे। उमरगेख-पुत्र सुल्तान इस्कन्दर और खलील मिर्जा दोनों राजकुमार फारसीके कवि थे। शाहम्बके लड़के बंसुकरका पुत्र बाबर मिर्जा सुदूर प्रतिभाशाली कवि था जो तन्पाईमें ही मर गया। वह भारतके मुगल-सम्राट् बाबरने भिन्न था। तुर्की कवि मिर्जा अहमद मिर्जाने “लताफतनामा” के नामसे एक मननवी (कथाकाव्य) लिखी थी। इसी वयमें आने पैदा होनेवाला जहीम्दीन बाबर तलवारका ही बनी नहीं, बल्कि सरस्वतीवा बन्-पुत्र भी था।

### ५. अब्दुल्लनीफ, उलुग-पुत्र (१४४९-५१ ई०)

पिताने ल्याने नृशंख अब्दुल्लनीफको निश्चित ही राज्य भोगनेका मौका न मिला। पिता तथा अपने प्याने मध्यजियोंकी निर्मम हत्या मामलोंके लिये जोई अज्ञातवास बान नहीं समर्थ



जाती, इसीलिये सस्कृतमे कहावत मगहूर है—“जनकभक्षा राजपुत्रा” (पिताके भक्षक होते हैं राज-पुत्र) । अब्दुल्लतीफका एक बड़ा प्रतिद्वंद्वी तेमूर-पीत्र मीरागाहपुत्र अवूसईद (सम्राट् वावरका दादा) था । उसे अब्दुल्लतीफने हरा दिया । किंतु अब्दुल्लतीफके महापापको अधिक दिनोतक वर्दाश्त नहीं किया जा सकता था । उलुगवेगके एक स्वामिभक्त सेवकने इस आततायीको ८४५ हि० (१४ फरवरी १४५०-५ जनवरी १४५१ ई०)में मार डाला ।

### ६ अब्दुल्ला, शाहरूख-पुत्र (१४५१-५२ ई०)

साल-साल दो-दो सालके लिये गद्दीपर बैठनेवाले तेमूरी शासकोने अब बनला दिया, कि वगकी नया डावाडोल हो रही है । अब्दुल्लाने उन्ही उज्वेकोकी सहायतासे समरकन्दको प्राप्त किया, जो कि तेमूरी-वशका स्थान लेनेवाले थे । “वकायानिगार” समरकन्दीने ८५५ हि० (३ फरवरी १४५१-२५ दिसम्बर १४५३ ई०)में लिखते हुए बतलाया है—“इसी बीच राजसेवकोने खबर दी, कि उज्वेक वादगाह अबुलखैर खान (१४२८-६८ ई०)—जो बहुत दिनोसे अपने दरवारका दोस्त और शुभेच्छु है—आज्ञा पानेपर सेवामे आना चाहता है । सुल्तानकी स्वीकृति पाकर अबुलखैर जल्दी-जल्दी अब्दुल्लाके ओर्दूमे आया । सुल्तानने उसका बड़ा स्वागत किया । (पीछे) अबुलखैरने समरकन्द-विजयकी तदवीर अवूसईदको बतलाई । फिर दोनो यस्सी नगरके सीमातसे ताशकन्द और खोजन्द-के इलाकेमे आये । जब अब्दुल्लाको पता लगा, कि अवूसईद उज्वेक खानकी सेनाके साथ आ रहा है, तो वह एक बड़ी सेना ले कोहक नदी पार हो आगे बढ़ा । दोनो सेनाएं आमने-सामने खड़ी हुई और दोनोमे २२ जून १४५१ ई० शनिवार ( २२ जमादी II ८५० हि० )को भयकर लड़ाई हुई जिसमे अब्दुल्ला मारा गया और भारतीय मुगल-वश-सस्थापक वावरका पितामह, अवूसईद विजयी हुआ ।

### ७ अबूसईद, मीराशाह-पुत्र (१४५२-६९ ई०)

अबुलखैरको उसकी सहायताके लिये अवूसईदने बहुतसी भेट दे कृतज्ञता प्रगट की, और अब्दुल्लतीफकी हत्यामें हाथ रखनेवालोको भी दंड दिया । शाहरूखके मरनेके बादसे ही जो गृह-कलह चल रहा था, उसे दवानेमें अवूसईद सफल हुआ । तेमूरी वशका यह अन्तिम शक्तिशाली सुल्तान था । जैसा कि पहले बतला चुके हैं, अभी भी छिड़-गिस्वशी खान समरकन्दकी गद्दीपर बैठा करते थे । अन्तर्वेद, पूर्वी ईरान और अफगानिस्तान अवूसईदके राज्यमे थे । वह चतुर सैनिक और कुशल शासक था । इसका समकालीन तुर्कीका सुल्तान मुहम्मद II था, जिसने १४५३ ई०मे कांस्तान्तिनोपल लेकर बलकान (युरोप)में इस्लामी राज्यकी स्थापना की ।

रबी I ८६४ हि० (२६ दिसम्बर—२५ जनवरी १४४९—६० ई०)के आरभमे इसके दरवार में कलमको (मगोलो) और किपचकोके दूत आये, जिनका अवूसईदने बहुत सम्मान किया । लेकिन उत्तरके घुमन्तुओकी मित्रता वादलके छाहसे बढ़कर नहीं होती । ८६९ हि०के जमादी II ( फरवरी १४६५ ई० )के मध्यमे खबर मिली, कि किपचक खान अबुलखैरके भाई सैयद यक्का सुल्तानको अमीरो ( उच्च अफसरो )ने ख्वारेज्ममे पकड़कर हिरात भेज दिया, जहा वह बन्दीखानेमे पड़ा है । अवूसईदने उसे अपने पास बुलाया, और “उस सदाचारी सुभक्त तरुण”को बहुत सम्मानपूर्वक घोड़ा, सोना, कुलाह और इनगम प्रदान कर बलायत उज्वेकमे भेज दिया । लेकिन उज्वेक घुमन्तू इन उपकारोंको देरतक कैसे याद रख सकते थे, जब कि दक्षिणके समृद्ध नगरोंको लूटकर ही वह मौजका जीवन बिताते अपने सैनिकोंमे अनुशासन कायम रख सकते थे । ८७२ हि० ( २ अगस्त १४६७—२२ जून ६८ ई० )की घटनाके बारेमे समरकन्दीने लिखा है—मरदुमें-उज्वेक ( उज्वेक लोगो )के प्रहारमे अन्तर्वेदको हरसाल जहमत और बर्बादी उठानी पड़ती रही, लेकिन इस साल वहासे ऐसी खबर नहीं आई । इसी समय ख्वारेज्मसे दूतने आकर कहा, कि किपचकोकी भूमिसे देरसे कजाक हुये मिर्जा सुल्तान हुसेनने ख्वारेज्मपर आक्रमण किया । तेमूरी अमीर उसके सामने नहीं टिक सके, और मिर्जाने ख्वारेज्म-को पामाल किया । यह खबर सुनकर अवूसईदने अपने सभी उच्च सेनापतियोंको ख्वारेज्म जानेका

आदेश दिया, लेकिन उवर आजुर्वाईजानमें भी उजुन हमनवेगने खतरा पैदा कर दिया था, इसलिये उमी साल अबूसईद मेना लेकर उवर गया और लडाईमें बन्दी हुआ। उजुन हसन (१४६७-७८ ई०) ने अबूसईदको गाहन्खकी वेगम गौहरशादके पुत्र यादगार मिर्जाके हाथमें दे दिया, जिमने अपनी माकी हत्याका बदला लेते अबूसईदको मार डाला। अबूसईदके ग्यारह पुत्रोंमें एक उमरखेख मिर्जा था। इसीका पुत्र वावर था। जिमने भारतमें मुगल-साम्राज्यकी स्थापना की।

अबूसईदको भी मुन्दर इमारतोके बनानेका बड़ा शौक था। आज भी उसकी लडकी सुल्तान खाविन्द बिकीके रोजेकी मुन्दर इमारत समरकन्दमें “इशरतखाना”के नाममें मौजूद है।

## ८ अहमद, अबूसईद-पुत्र (१४६९-९३ ई०)

अहमद एक मामूली बुद्धिका आदमी था, ऊपरसे वह कभी शराबमें मतवाला रहता और कभी भक्ति और खुदाके डरमें गर्क। इसके समयमें दरवारी अमीर अक्सर विद्रोह करते रहे। खुरासान बिल्कुल स्वतन्त्र हो गया, जिमपर तेमूर-बगी सुल्तान हुमेन (१४६९-१५०६ ई०) हिरातमें शासन करता रहा। अहमदने अपने भाई उमरखेखको फरगाना देकर उसे दूसरोंके हाथों में जानेमें बचा लिया। उमरखेखके फरगानामें शासन करते समय ही उसका पुत्र वावर पैदा हुआ। अहमदके मत्तार्डम मालके शासनमें समरकन्दको फिर तरक्की करनेका मौका मिला।

कवि नवाई—हिरातने स्वतन्त्र होकर अपने गौरवको फिर लौटा लिया। हुमेन मिर्जा (१४६९-१५०६ ई०) के शासनकालमें हिरातने साहित्य और कलामें चरम उन्नति की, जिसका बहुत कुछ श्रेय तुर्की साहित्यके कालिदाम अली शेर नवाईको है। नवाई १४४१ ई०में हिरातमें पैदा हुआ था। उसके बचपन और जीवनका भी अधिकतर भाग हिरातमें बीता। वह शिक्षा प्राप्त करनेके लिये समरकन्द भेजा गया। वहाका सबसे बड़ा बनी दरवेश मुहम्मद तरखन उसका सरक्षक था। सुल्तान अहमद मिर्जाके समय नवाई बुखारा और समरकन्दका सबसे बड़ा जमींदार था। हिरातमें रहते बचपनमें हुमेन मिर्जा नवाईका सहपाठी था। जब हुमेन मिर्जा हिरातकी गद्दीपर बैठा, तो उसने समरकन्द में सुल्तान अहमद मिर्जाको नवाईको भेजनेके लिये लिखा। समरकन्दमें रहते वक्त नवाईको जिन लोगोंके सम्पर्कमें अधिक आना पड़ा था, उनमें नूफी मत खोजा उवैदुल्ला अहरार मुख्य था। सत-महन्त होनेके साथ खोजा अहरारकी जमींदारीका ठिकाना नहीं था। कहावत है—कोई आदमी अपने गदहेपर चढ़ा अन्तर्वेदमें उत्तरसे दक्षिणकी यात्रा कर रहा था। सैकड़ों मील चलता गया, लेकिन जब भी किसी लहलहाते खेतके बारेमें पूछता, तो लोग कहते—‘यह खोजा अहरारका है।’ इसपर मुसाफिरने अपने गदहेको भी खेतकी तरफ हाकते हुए कह दिया—“जा तू भी खोजा अहरारका हो जा।” खोजा अहरारकी महिमा सबसे अधिक इसलिये फैली कि वह अपनी अपार सम्पत्तिका उपयोग परोपकारमें करता था। नवाई भी बहुत भागी जमींदार था, अहरारकी प्रेरणासे उसने भी अपनी सम्पत्तिको वैसे ही कामोंमें खर्च करनेका निश्चय किया।

सुल्तान हुमेन नूष्मचित्र, मुलेखनकला, वास्तुकला और नगीतका बड़ा प्रेमी था। अली शेर नवाई तो विद्वानों और कलाकारोंका अपने सुल्तानमें भी बड़ा सरक्षक था। हिरातमें एशियाके ही भिन्न-भिन्न देशों के व्यापारी नहीं आते थे, बल्कि १८९४ ई० में एक फ्रान्सीसी कारवा भी आया था। भारत, चीन आदि के व्यापारी तो सदा ही आते रहने, इसलिये यहापर विद्वानों और कलाकारोंके लिये विचार-विनिमयका अच्छा अवसर मिलता था।

१४६९ ई०में समरकन्दमें लीटनेके बाद १४८७ ई०तक नवाई सुल्तान हुमेनके दरबारका एक बहुत ही शक्तिशाली अमात्य था। दरबार छोड़नेके बाद उसने अपने बड़े-बड़े निर्माण-कार्य आरम्भ करने पूरे किये। उसकी बनवाई सबसे बड़ी इमारत “इमशान” (मस्जिद) बीस साल-में तैयार हुई, जो हिरात नगरके बाहर यजील नहरके किनारे अवस्थित थी। कितने ही हजार आदमी इसके बनानेके लिये रोज काम करने थे। जितनी ही बार नवाई स्वयं मजदूरोंकी तरह काम करता। “इखलास” के भीतर मुन्दर मदर्सा, खानवाह तथा मस्जिद बनी हुई थी। खानवाहमें पश्चिम

“खानकाह-शफाइया” (सार्वजनिक अस्पताल) था, जहापर अपने समयके प्रसिद्ध चिकित्सक हकीम गयासुद्दीन मुहम्मद चिकित्सा करते थे। यहाकी बहुतसी इमारतोंमें “मदरसा निजामिया” भी था, जिसमें अच्छे-अच्छे अध्यापक नियुक्त थे। नवाईने और जगहोंपर भी खानकाहे और मदरसे बनवाये, जिनमें “मदरसा-खुसरविया” मेंवके अब्दुल्लाखान-किलेमें अवस्थित था। खुरासान और ईरानके दूसरे स्थानोंमें मुसाफिरोके आरामके लिये नवाईने पचास रवाते (धर्मशालाएँ) बनवाई थी। उसके आश्रित इतिहासकार खोन्दमीरके अनुसार नवाईने हम्माम (स्नानागार) और चौदह मस्जिदे इस्तिखर सेरख्स और अस्त्रावादमें बनवाई थी।

नवाईको जहा अपने परोपकारी कामोंके लिये खोजा अहरारसे प्रेरणा मिली थी, वहा उसकी काव्यप्रतिभाको निजामी (११६१—१२०३ ई०) और जामी (१४१४—९२ ई०) की कविताओंसे भारी प्रेरणा मिली थी। जामी नवाईका समकालीन था, और हिरातके पास हीमें रहता था। फारसी भाषाका वह अन्तिम महाकवि था। यद्यपि नवाईने “फानी” (नाशमान) के नामसे फारसीमें भी कविताएँ की हैं, लेकिन वह अमर है अपनी तुर्की कविताओंके कारण। आजकल मध्य-एशियाकी सबसे प्रगतिप्राप्त उज्बेक जातिका वह परम श्रद्धाभाजन कवि है। उज्बेक राजधानी ताशकन्द में नवाई नाट्यशालाके नामसे एक बड़ी ही विशाल और सुन्दर रंगशाला स्थापित की गई है। नवाई-की जीवनीको लेकर उज्बेक-लेखक ऐवकने एक उपन्यास “नवाई” लिखा है, जिसपर उसे स्तालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। नवाईने सत्तरसे अधिक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें उसका “खमसा” (पंचक) सबसे अधिक प्रसिद्ध है। जिन विषयोंको लेकर नवाईने अपने पांच काव्य लिखे, उन्हींपर पहले निजामीने और उसके बाद खुसरो देहलवी (१२५३—१३२५ ई०) ने भी सुन्दर काव्य लिखे हैं—

निजामी (११६१—१२०३)	खुसरो (१२५३—१३२५)	नवाई (१४४१—१५०१)
१. मख्जनुल् - असरार	मत्लुल-अनवार	खैरतुल्-अबरार
२. खुसरो-व-शीरी	शीरी-खुसरो	फरहाद शीरी
३. सिकदरनामा	आईने-सिकन्दरी	सद्दे-सिकन्दरी
४. लैला-व-मजनू	मजनू-लैला	लैला-मजनू
५. हफ्त-पैकर	हस्त-बहिस्त	हफ्त-किश्वर

नवाईसे पहले तुर्की भाषाने साहित्यमें ऊँचा स्थान नहीं प्राप्त किया था। यद्यपि नवाईने अपनी कृतियोंको हिरातमें बैठकर लिखा था, लेकिन हिरातमें तुर्कोंकी काफी सख्या रहते भी, वह खुरासानी ईरानी भाषाका प्रदेश था। पूर्वी तुर्की भाषा (चगुताई तुर्की) में भी स्थानोंके अनुसार भेद हो गया था, और सबसे शिष्ट अन्दिजान (फरगाना) की तुर्की समझी जाती थी। बाबर स्वयं वही पैदा हुआ था। उसने बाबरनामामें नवाईकी भाषाके बारेमें लिखा है\*—

“अन्दिजान ऐले नयग लफ्जे कलम बेरल, रास्ते तोर हानी हो जू केम नीर अली शेर नवाई नयग मुसन्निफाते वावजूद, हरेदा नशो-नुमा तापैव तोर बोतेल बेल दो।”

(अन्दिजानके लोगोंकी भाषा भीर अली शेर नवाईके ग्रन्थोंकी भाषासे मिलती है, जिसे कि उसने हिरातमें लिखा था।)

अन्दिजान काश्गरसे दूर नहीं है। तुर्की साहित्यकी सबसे पहिली पुस्तक “कुतदगु-विलिक” काश्गरमें नवाईसे तीन शताब्दी पहिले लिखी गई थी। “कुतदगु-विलिक” की भाषा प्राचीन उइगुर भाषासे बहुत घनिष्ठ सबंध रखती है। हम कह आये हैं, कि उइगुर और तुर्क पहले एक ही जातिका नाम था। प्राचीन उइगुर भाषाके नमूने कितने ही बौद्ध सूत्रोंके अनुवादके रूपमें अब भी प्राप्त हैं। छिड्गिस् और उसके बेटों-पौतोंके राज्यमें किपचक, ईरान और अन्तर्वेदके सभी जगहके दरबारों और आफिसोंमें उइगुर लेखक हुआ करते थे, जिनमें अधिकांश भिक्षु थे, जिसके कारण

\* “बाबरनामा” पृष्ठ २ ख (लन्दन १९०६ ई०)

लेखकों वकनी (मिथुका उइगुर अपभ्रंश कहा जाने लगा। इसी प्राचीन उइगुर भाषा और लिपि-का प्रचार नारे चंगताई राज्यमें हुआ और पीछे इसे चंगताई भाषा कहा जाने लगा। जब अन्तर्वेदमें उज्बेकोंका शासन स्थापित हुआ, तो वहाके सभी तुर्क उज्बेक कहे जाने लगे, तबमें इस भाषाका नाम उज्बेकी पड़ गया। आजकल वह इसी नामसे प्रचलित तथा उज्बेकिस्तान गणराज्यकी राज्यभाषा है। मंगोल चंगताई तुर्कोंमें विलीन हो गये, इसीलिये पीछे कहा जाने लगा—“तुर्क काँम लारी जूजी दून्दान युग व जगताई” ( जू-छि चंगताई तुर्क काँमके थे )।

नवाईका काम मुन्दर इमारतों और उपकारी मस्थाओंके निर्माण तथा काव्योत्तक ही सीमित नहीं था, वह विद्वानों और कलाकारोंके लिये कल्पवृक्ष था। एशियाका एक अद्वितीय चित्रकार कमागुद्दीन बेहजाद (मृत्यु १५२१ ई०) नवाईके ही सरक्षणमें आगे बढ़ा, जिसे कि “नजाक्ते कलम बेनजीर” (तुलिकाकी कामलतामें अनुपम), “मूरतेहालका मुसव्विर” (यथारूप चित्रणकर्ता) और “द्वितीय मानी” कहा जाता है। मानी ईरानका पैगम्बर (२१६-२७६ ई०) चित्रकला-में भी अद्वितीय समझा जाता था। मानीकी चित्रकलाके नमूने अब प्राप्त नहीं हैं। ईसाकी तीसरी सदीके बाद चित्रकलाके एकसे एक दुश्मन दुनियामें आये, जिनके हाथमें मानीके चित्रोंका वच निरालना नभव नहीं था। लेकिन बेहजादके बनाये हुये चित्र अब भी दुनियाके संग्रहालयोंमें मिलते हैं।

मुल्तान अली मशहदी, मीर अली मजनु, मुहम्मद शिकावी जैसे नव समयके लिये अनुपम मुलेखक नवाईके दरबारमें थे। मुल्तान अलीने नवाईके “खम्मे”की एक प्रति १४९२-९ ई०में लिखी थी, जो कि आजकल लेनिनग्रादके राजकीय लोक-गुस्तकालय (प्राच्य ५६०)में मौजूद है, जिसमें लेखक ने लिखा है—“खम्मा मीर अली शेर नवाई बन्दने किदलउलकुत्ताव मौलाना मुल्तान अली मशहदी” (मीरअली शेर नवाईका पचक, लेखकशिरोमणि मौलाना मुल्तान अली मशहदीके अक्षरोंमें) मुल्तान अलीको बड़ापेमें भी अपनी लेखनीपर कितना अभिमान था, यह उसकी प्रतिलिपि की हुई एक पुस्तक के अन्तमें मौजूद निम्न पद्यमें मालूम होगा—

मरा उम्र शस्त व-में शुद वेगकम् ।

हतोजम् जवानस्त मुष्की कलम् ॥

तवानम् हतोज अज खफी-वो-जली ।

नविस्तन् कि अल्-अव्द मुल्तान् अली ॥

(मेरी उम्र कम-ब्रेगी तिरमठ हो गई, किन्तु अभी भी मेरी काली कलम जवान है। अब भी मैं मूढ और म्यूठ हस्ताक्षर मुल्तान अलीके नाय लिख सकता हूँ।)

नवाईका देहान्त २ जनवरी १५०१ ई०को हुआ।

## ९. मुल्तान मुहम्मद, अब्दुल्ला-पुत्र (१४९३-१४ ई०)

भाऊके मरनेके बाद पाच तरण भतीजोंको भारकर मुहम्मद ममरकन्दकी गद्दीपर बैठा। यह बड़ा दूर, पिययउ और व्यभिचारी था, जिसके कारण उसके अमीर विरुद्ध हो गये और थोड़े ही समय बाद उसकी शायद अकाउ-मृत्यु हो गई।

## १०. वैसुंकर, मुहम्मद-पुत्र (१४९४-१७ ई०)

बापके मरनेपर मसऊद, मुल्तान अली और वैसुंकरमें तत्त्वके लिये झगडा हुआ, और अन्तमें अन्तर्गत गालसी उसमें वैसुंकर मुल्तान बना। अहमदके समयमें ही उत्तरके उज्बेक और देशके भीतर अर्माग बहुत शक्तिशाली होने लगे। वैसुंकरकी तरफाँमें उनको और भी आगे बढ़नेका मौका मिला, जिसमें आपनि करनेपर अर्मागने वरगीमें उसके भाई मुल्तान अलीको बुलाया। वैसुंकर भाग गया, किन्तु पीछे फिर अर्मागने उसे ही बुलाकर गद्दीपर रहने दिया। मुल्तान अली बुवागकी ओर भागा और फिर खुदकी तैयारी करनेके बाद बुवागमें ममरकन्द आया। इसका भाई मसऊद भी उसकी

सहायतार्थ दक्षिणसे आया। उमरशेख-पुत्र बाबर मिर्जा इस समय खोकन्द (फरगाना) का स्वतन्त्र शासक था। उसकी भी नजर समरकन्द पर थी। चारो ओरसे निराश होकर वैसुकर अपने भाई मस-ऊदकी शरणमें [ ९०३ हि० ( ३० VIII १४९७—२१ VII १४९८ ई० ) ] भागा, जिसके पास ही रहते ९०५ हि० ( ८ VIII १४९९—२८ VI १५०० ई० ) में वह गुमनाम मरा।

### ११ सुल्तान अली, मुहम्मद-पुत्र (१४९७—१५०० ई०)

तेमूरी राज्यको बाबर और सुल्तान अलीने आपसमें बांट लिया। दोनों ही कम उमरके थे, इसलिये शासनकी बागडोर अमीरोंके हाथमें थी। सुल्तान अली तीन साल ही राज्य कर पाया, कि एक सौ चालीस वर्ष पुराने तेमूरी वंशके दीपकको उज्ज्वेकोके खान शैबानीने बुझा दिया। बाबरने वंशकी नैयाको डूबनेसे बचानेकी कोशिश की, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

### १२ जहीरुद्दीन बाबर, उमरशेख-पुत्र (१५००—१ ई०)

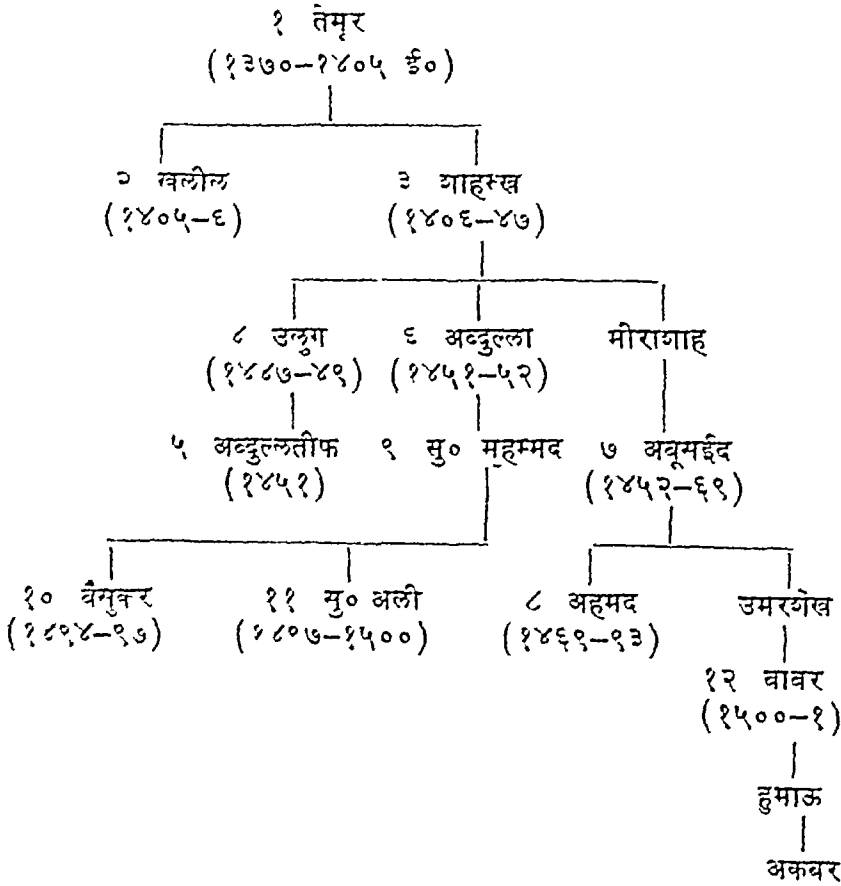
हम कह चुके हैं कि अहमदके समरकन्दकी गद्दी सभालनेके समय उसका भाई उमरशेख फरगानाका शासक रहा। बाबर वहीपर १४८१ ई० में पैदा हुआ और बापके बाद फरगानाका शासक बना। शैबानीके समरकन्दपर पैर जमानेसे पहले बाबरने भी समरकन्दकी ओर हाथ फैलाया था, लेकिन उज्ज्वेक सेनाने उसे हरा दिया। समरकन्द लेकर मुहम्मद शैबानी निश्चित नहीं रह सका। एक बार बाबरने समरकन्द, मियानकुल और करशीसे उसे भगा दिया, लेकिन बुखारासे उज्ज्वेकतक भी चिपटे रहे। अगले साल ९०७ हि० ( १७ VII १५०१—७ VI १५०२ ई० ) में शैबानीने बड़े जोरका आक्रमण किया, और बाबरके पैर उखड़ गये। समरकन्दसे भगाये जानेपर बंधुपार हो बाबरने कुदुज ले लिया। ईरानी शाह इस्माईलकी मदद लेकर और किस तरह बाबरने बारह सालतक तेमूरकी भूमि लेनेका प्रयत्न किया, इसे हम आगे बतलायेंगे। कुदुजसे ही बीस हजार सेना जमा करके बाबरने ९०९ हि० ( २६ VI १५०३—१६ V १५०४ ई० ) में काबुलको दखल कर लिया और वहांसे भारतपर आक्रमण करके १५२६ ई० में लोदियोसे दिल्लीका तख्त छीनकर मुगल-वंशका संस्थापक बन गया। जो बाबर मुट्ठीभर उज्ज्वेक घुमन्तुओंके सामने सारे प्रयत्न करनेके बाद भी टिक नहीं सका, वही बाबर हिंदुस्तानको जीतनेमें सफल हुआ, यह यही बतलाता है कि उस समयकी परिस्थितिमें सैनिक तौरसे घुमन्तू जितने मजबूत थे, उतने स्थिर बस्तीवाले नहीं। साथ ही हिंदुस्तानकी लड़ाईने कभी लोकयुद्धका रूप नहीं लिया, लड़नेवाले मुट्ठीभर सामन्त और उनके अनुचर थे, अधिकांश जनता शासकोंके अत्याचार और स्वेच्छा-चारसे तग होकर इतनी निराश थी कि वह यही कहती थी—“कोउ नृप होय हमहि का हानी।”

**साहित्य और संस्कृति**—अब भी तेमूरवंशी छिडगिस्के “यासा” (विधान) और तेमूरके “तुजुक” (व्यवस्था) को मानते थे, और मुसलमान होते हुये भी धर्मांध नहीं थे। तेमूरवंशके रूपमें मध्य-एशियामें तुर्कजाति गौरवके शिखरपर पहुंची। इस समय बड़े-बड़े विद्वान् और कलाकार पैदा हुए। तेमूर स्वयं कलम चलाना जानता था। उसका पुत्र शाहखुं सुन्दर गीतोंका लेखक था। उलुगबेग गणित और ज्योतिषका विद्वान् तथा संरक्षक था। उसका छोटा भाई वैसुकर पुस्तकों और चित्रकलाका प्रेमी था। बाबर कवि-लेखक, शासक-योद्धा था। इस कालमें बुखारा, समरकन्द और मेर्वंमें बड़े-बड़े धर्मशास्त्री (फकीह, दार्शनिक और कवि हुये, जिनमें फारसीका कवि जामी (१४१४—१४९२ ई०) और तुर्की साहित्यका सर्वश्रेष्ठ कवि नवाई (१४४१—१५०१ ई०) भी थे। तुर्की भाषाका मान सबसे अधिक इसी समय हुआ। अरब खलीफोंके समय अरबी भाषा सरकारी भाषा थी। ताहिरियोने अरबीकी जगह फारसीको दी, तबमें फारसी ही राजकाज और साहित्यकी भाषा समझी जाने लगी। तेमूरियोने यद्यपि फारसीको स्थानच्युत नहीं किया, लेकिन तुर्कीका सम्मान जरूर बढ़ाया, जिसमें नवाई और बाबरका हाथ बहुत अधिक था। बाबरकी देखादेखी जहागीरने भी तुर्कीमें “तुजुक जहागीरी” लिखी, लेकिन शायद वह आखिरी मुगल था, जो कि भारतमें अच्छी तुर्की बोल-लिख सकता था। तुर्की वैसे सभी मध्य-एशियाके तुर्कोंकी भाषा थी,

लेकिन जैसा कि हमने पहले कहा, अन्दिजान और काशगरमें बोली जानेवाली तुर्कीको ही साहित्यकी भाषा माना गया। तुर्की भाषाके सबवसे यह कहा जा सकता है कि जितना ही पूरव जाये, उतना ही वह अधिक लिप्ट रूपमें मिलनी है। यहां तुर्की भाषामे हमारा मतलब पूर्वी तुर्कीमें है, जिसे पहले चगताई और आजकल उज्बेकी कहा जाता है। यारकन्द काशगरकी भाषाका भी इसी भाषामे सबब है। पश्चिमी तुर्कीमें तुर्कमानी, आजुरवाईजानी और उममान अली (तुर्की राज्यकी) भाषाएँ सम्मिलित हैं, जो आपसमें भेद रखने हुये भी एक दूसरेसे बहुत समानता रखती है।

तेमूगी-वशवस—

(१३७०-१५०० ई०)



## शैबानी-वंश

अबुलखैर—तोकतामिशके सुवर्ण-ओर्दूके गौरवको पुन जागृत करनेका प्रयत्न विफल होनेपर तूरान-अधित्यका (किरगिज-स्तेपी)का स्वामी दुराक खान हुआ, जिसने तेमूरियोको बहुत तग किया। उसके बाद अबुलखैर [ जन्म १४१३ ई० (८१६ हि०) ] का प्रताप बढ़ा। इसका पौत्र तथा अन्तर्वेद-विजेता शैबानीके नामसे मशहूर है। वह जू-छिके पुत्र शैबानके वंशका था।

शैबानी-वंश यद्यपि छिङ्गिस्-पुत्र जू-छिके पाचवे लड़के शैबानके नामसे प्रख्यात हुआ, लेकिन वह मुहम्मद शैबानीके अन्तर्वेद जीतनेसे पहले किपचक या उज्बेक नामसे प्रसिद्ध था। उज्बेक खान (१३१३-४० ई०) सुवर्ण-ओर्दूका एक शक्तिशाली शासक तथा इस्लामका धार्मिक धर्मराजा था, इसीलिये जू-छिका उलुस, विशेषकर बानू-वंशकी प्रजा पीछे उज्बेकके नामसे प्रसिद्ध हुई है, यह हम बतला चुके हैं। जू-छि-उलुस आरम्भ हीमें बानू और ओर्दूके उलुसोमें विभक्त हो गया था, जिसमें बानूका उलुस सुवर्ण-ओर्दू और ओर्दूका ज्वेत-ओर्दूके नामसे पुकारा जाता था। उज्बेक सुवर्ण-ओर्दूका खान था, इसलिये सुवर्ण-ओर्दूवालोका ही नाम उज्बेक पड़ना चाहिए, लेकिन पीछे इसका उतना ध्यान नहीं रखा जाता रहा, और सारे जू-छि-उलुस या किपचक-जातिको उज्बेक कहा जाने लगा। हम यह भी देख चुके हैं, कि इन्हीं उज्बेको या किपचकोको लूट-मार करनेके कारण अन्तर्वेदी कजाक कहने लगे, जिससे आगे किपचकोकी एक शाखा कजाक नामसे प्रसिद्ध हुई। जू-छिकी सातवी पीढ़ीमें अबुलखैर किपचकोका जबरदस्त खान हुआ, जिसने अन्तर्वेदकी राजनीतिमें दखल दिया। बाबरके दादा अबूसईदको तख्तपर बैठानेमें उसका मुख्य हाथ था। उज्बेक-राज्यका संस्थापक वस्तुतः यही अबुलखैर था। अभी बीस सालका भी नहीं हुआ था, कि उसने तेमूर-पुत्र शाहर्खके कुछ इलाकोको छीन लिया। उज्बेक गद्दीका मालिक बननेसे पहले उसे सुवर्ण-ओर्दूके मुखिया मुस्तफा खानको हराना पड़ा, जिसमें मिली भारी लूटकी सम्पत्तिको अपने अमीरो और सैनिकोमें बांटकर वह सर्वप्रिय हो गया। निम्न-सिर-दरियाके तटपर अवस्थित सिगनक किपचकोके हाथसे निकल गया था। अबुलखैरने उसके ऊपर आक्रमण किया और शाहर्खके स्थानीय राज्यपालको आत्मसमर्पण करना पड़ा। फिर अबुलखैर आगे बढ़कर अककुरगान, अरक, सूजक और उजकन्द ले सूजकपर बस्तियार सुल्तान, सिगनकपर मनाहदान ओगलान और उजकन्दपर बखसमवी मगुतको शासक नियुक्त किया। उसने जाड़ा सिर-उपत्यकामें बिताते १४४८ ई०के वसंतमें इलाककी ओर बढ़नेकी तैयारी की। इसी समय पता लगा, कि शाहर्ख मर गया, और उलुगवेग गद्दी सभालने खुरासानकी ओर गया है। समरकन्दको अरक्षित-सा देख अबुलखैरने उधर कूच कर दिया। समरकन्दके राज्यपाल जलालुद्दीन वायजीदने बहुत-सी भेंट देकर अबुलखैरके पास कहलवाया—“उलुगवेग सदा खानके साथ अच्छा संबंध रखता था, इसलिये यही अच्छा है, कि खान हमारी भेंट स्वीकार करके लौट जाय।” अबुलखैर बिना समरकन्दको लूटे ऐसा करके अपने अमीरो और सैनिको को सन्तुष्ट नहीं रख सकता था। समरकन्दपर अधिकार कर विशेष तौरसे “चीनी-खाना”की चित्रशालाकी दीवारोपर सुन्दर-सुन्दर पच्चीकारी किये चित्रोको उज्बेकोने अपनी गदासे मारकर तोड़ दिया। सोनेके कामको उन्होंने सोनेके लोभसे कुरेदकर निकाल लिया। इस प्रकार “कई वर्षोंके परिश्रमके बाद बने हुये कलाके कामोको कुछ घटोमें उन्होंने नष्ट कर दिया।”

शाहर्खके उत्तराधिकारियोमें उसका पौत्र अबदुल्ला मिर्जाने आपसी झगडोमें हारकर तुर्किस्तानकी ओर भाग यस्सी (तुर्किस्तान शहर)के किलेपर अधिकार कर लिया। अबुलखैर

भागी सेना दिये अबूमईदको गद्दी दिलानेके वास्ते समरकन्द आया । गर्मियोंकी गर्मीमें उसे भागनेके लिये मजबूर होना पड़ रहा था । इसी समय उसने येदेची ( मन्त्रद्वारा वर्षा कगनेवाले ) को वर्षा वरमानेके लिये कहा । कहते हैं, वर्षा हुई, और अबुल्खैरकी सेना जीजक-के रेगिस्तानके रास्ते आमातीने पार हो गई । अब्दुल्ला उस समय तुर्किस्तान, अन्तर्वेद, बदखा और काबुलका स्वामी था । बुलालगरके तटपर कनवानके मैदानमें अवस्थित शीराजमें अबूमईद-समर्थक अबुल्खैरकी उज्जेक-सेना और अब्दुल्लासे १४५२ ई० ( ८५५ हि० ) में लड़ाई हुई । अब्दुल्लाने राज्य और प्राण दोनों गवाये । अबुल्खैरने पकड़े हुये वदियोंको छोड़ दिया और अपने सैनिकोंको लूटनेमें मना किया । समरकन्दमें उसने स्वयं बागे-मैदानमें डेरा डाला, और उनके अमीर कगुलमें ठहरे । एक बड़ा दरवार रचाकर अबुल्खैरने अबूमईदको गद्दीपर बैठाया । फिर वह अपनी इस्लाम-भक्ति और शास्त्रोंके ज्ञानका परिचय देता अन्तर्वेदके शेखुल्-इम्याम ( इम्यामिक-धर्मराज ) में किनने ही समयतक मत्स्य करता रहा । अबूसईदने राज उसके पास भेंट और मौजात भेजी, तथा उलुगवेगकी पुत्री राविया सुल्तान बेगमको अबुल्खैरको प्रदान किया । याति स्थापित करके अबुल्खैर दशतेकिपचककी ओर लौट ही रहा था, कि जुगारियाके कठमक राजा उजतेमूर यैगीकी जीभमें पानी भर आया, और उसने अन्तर्वेदकी ओर बढ़ना चाहा । इसपर अबुल्खैर और कलमकोकी सेनाएँ नूरतुकाईके इलाकेमें चिर नदीके पास कोक-कायानामे एज्-दुमरेमें भिड़ी । कलमकोने उज्जेकोको करारी हार दी । उज्जेक और कठमक दोनों ही घुमन्तू लडाकू जातिया थी, जिनमें उज्जेक जहा तुर्क मुसलमान थे, वहा कलमक मगोल बौद्ध । १५वीं नदीके मध्यमें जो बौद्ध मगोलोंने किपचक भूमि और अन्तर्वेदकी ओर पैर बढ़ाना शुरू किया, तो अगली तीन शताब्दियोंतक वह रुके नहीं, और जैसा कि हम आगे देखेंगे, एक समय उनकी सफलताओंको देखकर सम्भावना होने लगी थी, कि अपने पूर्वज छिड्-गिम्की तरह शायद वह भी नारे पूर्वी-पश्चिमी तुर्किस्तान, किपचक-मगोलियाके मालिक बनें । कोक-कायानामे हारकर अबुल्खैर सिगनककी ओर भागा । कलमकोने ताशकन्दके प्रदेश तथा तुर्किस्तान और साहमखिया आदि नगरोंको लूटा, फिर वह सैराम होते चू-उपत्यकाके रास्ते लौट गये । शायद यह तेमूर यैगी अंडरोद मगोलोंके दक्षिणपञ्च (मेगोन-नार) का चिड्-माड् (उपराज) तथा एमेन जानका उन्नाविगरी था । कलमक परम्परामें अबुल्खैरको वोल्गारी खान कहा गया है । अपने इसी अभियानमें वोयोत मगोलोंने सबसे पहले नाम पैदा किया । खोगोत कबीलेके प्रमुख अब्दुल गददनके दो पुत्र अगक तेमूर और वर्गन तेमूर संयुक्त शासक थे ।

उन युद्धके बाद अबुल्खैरका ध्यान अब दशतेकिपचककी ओर ज्यादा हुआ, जिसके कारण यह भूमि अर्धवत् समृद्ध हुई । १४५५ ई०में एक बार फिर अबुल्खैरने तेमूरी लतीफ-पुत्र मोहम्मद मिर्जा को गद्दीपर बिठानेके लिये अपनी सेना भेजी, मगर अबूमईदसे हारकर उसे खाली हाथ लौटना पड़ा । अबुल्खैरके धन और प्रतापको बढते देख उसके सबधियोंने ईर्ष्या करके विद्रोह कर दिया, जिसमें ८५८ हि० ( १४६१ ई० ) में अबुल्खैर मारा गया । अबुल्खैरका राज्य किरगिज स्टेपीके पश्चिमी भागपर था । १४६५ ई० ( ८७० हि० ) के आसपास कुछ उज्जेक अबुल्खैरसे असन्तुष्ट हो अ-छि-बयसी एक दूसरी शाखाके सुल्तान गिराई और जानीवेगके साथ मुगोलिस्तानमें भाग गये जिनको वहाके खान उमानबुगाने स्वागत कर चू-नदीके पास अपने राज्यके पश्चिमी भागमें स्थान दिया । उन्हींको पीछे उज्जेक-कजाक और अन्तमें कजाक कहा जाने लगा । कजाक सुल्तानोंका राज्य उन प्रसार १४६५ ई०में शुरू हुआ, और १५३३ ई० ( १६० हि० ) तक वह पुरानी उज्जेक-भूमिमें अधिकांश भागोंमें शासक हो गये । १४६९ ई० ( ८७८ हि० ) में अबुल्खैरके मरनेपर सिन्धु की उज्जेक फिर मुगोलिस्तानमें अपनी भूमिमें लौट आये । अबुल्खैरने स्वाग्रेज्म और निम्न गया बाद-सिग-उपायगावर अधिकांश कर लिया था । अबुल्खैरके पुत्र थे—बुदगू या शाह बुदग, गोंग सुल्तान, अज्जमूर महम्मद, हेंदर, मजर, अग्रीम, कूचुनजी, मुडुनचि, अबयून और सैयद बान । सिन्धु नगरपर पुर्तगाली जहाज उठ गये । स्वाग्रेज्म-शासक बादशाहकी मनानोंने शास-



कर जवर्दस्त सघर्ष हुआ। वूदगकी कजाकोके खानो—गिराई और जानीवेगसे भी बहुत प्रति-  
द्विष्टता थी, जो कि सिर-उपत्यकामे रहते थे। कजाकोकी मददके लिये मुगोलिस्तानका खान यूनस  
आया। युद्धमे वूदगने हारकर अपना शिर कटवाया। इसी वूदग (वदाग)का पुत्र था अबुल्-  
फतह मुहम्मद गैवानी, जिसने अन्तर्वेदमे शैवानी-वशका शासन स्थापित किया। जिस समय  
उज्बेक दक्षिणमे मध्य-एसियाकी ओर बढ़ रहे थे, उमी समय रूस, तारतारो (मगोलो)के जूयेको  
फेंककर मजबूत हो रहा था। मुहम्मदने पहले-पहल १५०० ई० (९०६ हि०)मे अन्तर्वेदको जीता,  
किन्तु इसी समय उन्नीस वर्षकी आयुमे वावरने आकर उसे बुखारा छोड़ सब जगहोसे खदेड़ दिया।  
अगले साल १५०१ ई० (९०७ हि०)मे वावरको मुहम्मद शैवानीने सारे अन्तर्वेदसे भगा दिया  
और १५०५ ई० (९११ हि०)तक फरगाना भी वावरके हाथसे जाता रहा, यही नहीं, ख्वारेज्म,  
हिंमार (ताजिकिस्तान) और मेर्वको भी शैवानीने ले लिया।

राजावलि—शैवानी-वशके खानोकी नामावली निम्न प्रकार है —

१ मुहम्मद शैवानी, वूदग (वदाग)-पुत्र	१५००-१२ ई०
२ कूचुनजी, अबुल्खैर-पुत्र	१५१२-३० ,,
३ अबूसईद, कूचुनजी-पुत्र	१५३०-३२ ,,
४ उवैदुल्ला, महमूद-पुत्र	१५३२-४० ,,
५ अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र	१५४० ,,
६ अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र	१५४०-५१ ,,
७ नौरोज अहमद, सूयुनजी-पुत्र	१५५१-५६ ,,
८ पीर मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१५५६-६१ ,,
९ इस्कन्दर, जानीवेग-पुत्र	१५६१-८३ ,,
१० अब्दुल्ला II, इस्कन्दर-पुत्र	१५८३-९६ ,,
११ अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र	१५९६-९७ ,,
१२ पीर मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१५९७-९९ ,,

## १ मुहम्मद गैवानी, वदाग-पुत्र (१५००-१२ ई०)

मुहम्मदका जन्म १४५१ ई०मे हुआ था। बापके मारे जानेपर उसके नाना उइगुर शेख हैदरने  
उसका पालन-पोषण किया था। उस समय किपचक-भूमिकी शक्ति निर्बल थी। उसके शासक थे—सैदिक,  
ऐवक (गैवानी ओर्दूके खान हाजी मुहम्मदका पुत्र), अरवशाहकी सताने, श्वेत-ओर्दूके खान बोराकके  
पुत्र जानीवेग और गिराईवेग उसके बाद मगित या नोगाई खान या यमगुरची, अब्बास और मूसा। नाना-  
के मरनेपर मुहम्मद और उसके भाई महमूदको अमीर कराचिनवेगने अपने सरक्षणमे ले लिया। हैदर-  
को ऐवकने हरा दिया, इसपर अमीर कराचिन अस्त्राखानी कासिमखानके दरवारमें भाग गया, जहा उसके  
साथ मुहम्मद और महमूद दोनों भाई भी गये। कासिमखानने अपने अमीरलउमरा तेमूरवेग नोगाईके  
सरक्षणमे दोनों भाइयोको दे दिया। जिस समय सुवर्ण-ओर्दूके ऐवक खानने अस्त्राखानको भी आ घेरा  
उस समय मुहम्मद और महमूद तरण थे। दोनोंने कराचिनके साथ लड़ते हुये शत्रुओकी पाती तोड़कर  
निकल भागनेमे सफलता पाई। फिर मुहम्मद अपने पुराने देश निम्न-सिर-उपत्यकामें लौटा। लोग खान-  
पुत्रोके झंडेके नीचे आकर खड़े होने लगे। मुहम्मद कजाकोके खान जानीवेग-पुत्र इराचीके साथ सावरान  
के पास लडा, किन्तु असफल हो उसे बुखाराकी ओर भागना पडा। तेमूरी अहमद मिर्जिके राज्यपाल  
अमीर अब्दुल अली तरखनने उसे बुखारामें बड़े सम्मानके साथ रक्खा। फिर अहमद मिर्जाने अपने  
पास बुलाकर उसका बहुत अच्छी तरहसे आतिथ्य किया। दोनों भाई दो सालतक बुखारामे रहे।  
इस बीचमे वह अन्तर्वेदसे अच्छी तरह परिचित हो गये। इसके बाद अब्दुल अलीको साथ लिये  
दोनों खानजादे अपनी जन्मभूमिकी ओर बढे। अरतक किलेके पास जानेपर खोजा वेगचिकने—  
जो कि अपने कबीलेका मुखिया तथा किपचकोके सबसे पुराने अमीरोमेंसे था—किलेकी कुजी लाकर

मुहम्मदके हाथमें दे दी। इस आरम्भिक सफलताके बाद मुहम्मद सिगनक शहरकी ओर बढ़ा। वहाँ उसे मगित (नोगाई) सरदार मूसाका दूत मिला, जिम्ने उसे दशेकिपचकका खान बननेके लिये अपने स्वामीकी ओरसे निमन्त्रण दिया। मुहम्मद उसके पाम गया और मूसाके प्रतिद्वंद्वी कजाक खान वेरेदकको हरानेमें मुहम्मदने सहायता की, पर अब मूसा बहानेवाजी करते कहने लगा, कि मगित लोग राजी नहीं हैं। निराश होकर मुहम्मद शैवानीने दशेकिपचकमें लौट मूजकपर अधिकार कर जानीवेग-पुत्र मुहम्मद सुल्तान (कजाक)से कई लड़ाइया लड़ी, लेकिन अतमें हारकर उसे मगिगलक (कास्पियनतट) होते स्वारेज्मकी ओर भागना पड़ा। खुरागानके शासक सुल्तान हुसेन मिर्जाके राज्यपाल अमीर नासिरुद्दीन अब्दुल खालिक फीरोजशाहने उसे बहुत-सी मूल्यवान् भेंटें प्रदान की। स्वारेज्मसे कराकुल होते मुहम्मद बुखारा पहुँचा और फिर अली तरखनके साथ समरकन्द। अन्तर्वेदके बादशाह अहमद मिर्जाकी मुगोलिस्तानके खान महमूद खानसे ताशकन्द-शाहरुखियाके लिये लड़ाई हो रही थी, जिसमें अहमद मिर्जाके साथ १४८८ ई०में मुहम्मद शैवानी भी शामिल हुआ। सिर-दरियाकी शाखा चिर (चिरचिक) के तटपर दोनों सेनाओंकी भिड़त हुई। शैवानीने अपने उपकारमें विश्वासघात करते शत्रुके साथ चुपके-चुपके सलाह कर ली थी, कि यदि मुझे अपना सिंहासन मिल जाय, तो मैं अपने सपक्षियोंमें गडबडी पैदा करके उनका साथ छोड़ दूँगा। अगले दिन मुगोलिस्तानी सेना चिर (चिरचिक) नदी पार हुई—पैदल सेना आगे-आगे थी, और रिसाला पीछे-पीछे। शैवानीने अपनी योजना पूरी की। सुल्तान अहमद मिर्जा हारा और उसके बहुतसे आदमी भागते हुये नदीमें डूबकर मर गये। मुगोलिस्तानी खानने पारितोषिकके रूपमें मुहम्मद शैवानीको तुर्किस्तान शहर दे दिया। लेकिन तुर्किस्तान शहर श्वेत-ओर्दके खानोंका था, इसलिये कजाक खान जानीवेग और गिराईका मुगोलिस्तानके खान महमूदके साथ झगडा होना जरूरी था। महमूदने शैवानीकी सहायता की, अवलखैरके पुराने सैनिक भी मुहम्मद शैवानीके झंडेके नीचे आ जुटे थे। मुहम्मदके उज्वेकोने जानीवेग और गिराईके कजाकोसे लोहा लिया। आसपासके कई किलोको हाथमें करके शैवानी सिगनकपर चढ़ा, जहाँ कजाक खान वेरेदकसे भिड़त हुई। इसी समय पता लगा कि फीरोजशाह स्वारेज्मसे खुरामान गया हुआ है। फिर क्या, मुहम्मद शैवानी स्वारेज्मपर चढ़ दौड़ा। कई दिनोंके आक्रमणके बाद भी वह सफल नहीं हुआ। इसी समय फीरोजशाह लौट आया। शैवानीने स्वारेज्म छोड़कर वुलदुमके किले-पर आक्रमण किया, जिसका ध्वसावशेष खीवासे ८८ वर्स (२४३ फरसख) पर अब भी मौजूद है। इसके बाद वेजिर (वेसिर) शहरको जा लिया, किन्तु खुरासानी सेनाने आकर उसे वहाँसे भगा दिया। फिर मुहम्मद शैवानी कितने ही नगरोंको लूटते-पाटते इलाक और अस्त्रावादतक गया। इसी समय मुगोलिस्तानके खान महमूदका निमन्त्रण मिला और वह ओतरार (उत्तरार) चला गया।

सावरानके लोगोंका वहाँके दारोगा (राज्यपाल) कुल मुहम्मद तरखनके साथ झगडा हो गया। उन्होंने उसे निकाल बाहर कर नगरकी कुजी मुहम्मदके भाई महमूद शैवानीको दे दी, और सारे तुर्किस्तान (मध्यसिर-उपत्यका)के लोगोंने दोनों शैवानी भाइयोंको अपना शासक मान लिया। इसी समय कजाकोने आक्रमण करके महमूदको पकड़कर कजाकमरदार कासिम—जो कि महमूदका मौमेरा भाई था—के हाथमें दे दिया। कासिमने कुछ दिन रखकर सैनिक पहरेमें उसे मूजकके लिये रवाना किया, किन्तु रास्तेमें महमूद भाग निकला, और उसने उगुजमान पहाड़पर जाकर भाईसे भेंट की। फिर दोनों भाई ओतरार गये। थोड़े ही समय बाद कजाक खान वेरेदकने ओतरारपर आक्रमण किया, लेकिन कुछ दिनों बाद मुल्ह हो गई।

मुहम्मद इधरमें छुट्टी पा यस्पी (तुर्किस्तान) जा वहाँके दारोगा मुहम्मद मजीद तरखन \* को कैद कर ओतरार लाया, लेकिन मुगोलिस्तानके खान महमूदने आकर उसे छोड़ाकर समरकन्द भेज दिया। अभी तक महमूद खान (मुगोलिस्तानी) मुहम्मद शैवानीपर बहुत विश्वास रखता था, लेकिन अब उसे मालूम हो गया, कि वह बड़ा ही अविश्वसनीय और खतरनाक आदमी है, इसीलिये वह

\* तरखन = राजकुमार (तुर्की)

उज्बेकोका साथ छोड़ कजाकोकी ओर हो गया। कजाकोने यस्सीको लेना सम्भव नहीं समझा, इसलिये ओतरारपर आक्रमण करके महमूद सुल्तानको घेरना चाहा, लेकिन उसमें वह सफल नहीं हुये। फिर दोनों दलोंमें सुल्ह हुई और कजाक खान बेरेदकने अपनी दो बहिनोमेंसे एकको मुहम्मद शैबानी और दूसरीको उसके पुत्र मुहम्मद तेमूरको दिया। मुहम्मद शैबानी जैसे भी हो तैसे अपना मतलब सिद्ध करनेवाला आदमी था, उसे वचन, शपथ या उपकारका कोई ख्याल नहीं था। अपने राज्यविस्तारमें उसने किसी भी तरीकेको इस्तेमाल करना उठा नहीं रक्खा। ईमानदारी तो उसे छू नहीं गई थी। महमूद खानने उसकी बहुत सहायता की थी, लेकिन उसके मनमें भी उसने सदेह पैदा कर दिया। तो भी मुगोलिस्तानी खान समरकन्द और बुखाराके जीतनेकी अपनी योजनामें शैबानीका उपयोग करना चाहता था। लेकिन उससे शैबानीकी शक्तके बढ़नेमें ही सहायता मिली।

१४९७ ई०में बाबरने समरकन्दको लेनेके लिये आक्रमण किया, उस समय महमूद शैबानी बाबरके प्रतिद्वंद्वी सुल्तान बैसुकर मिर्जाके बुलानेपर ओतरारसे गया। सुल्तान महमूद शैबानीको जीजकमें पहुँचकर हार खानी पड़ी, तब उसका भाई मुहम्मद शैबानी मदद करने आया। अबकी बार एक हजार जेतो (मुगोलिस्तानी खानकी सेना) ने धोखा दिया, और मुहम्मदको भी मुहंकी खानी पड़ी। शैबानीके लिये ईमान-धर्मकी पाबन्दी जरूरी नहीं थी, लेकिन सूफियों और शेखोंकी करामातपर उसका बहुत विश्वास था। एक बार उसने शेख मसूरको भोजन कराया। जब वह दस्तरखानके कपड़े को बीचसे उठा रहा था, तो शेखने कहा—“तुझे मालूम नहीं, कि इस कपड़ेको बीचसे खींचकर नहीं, बल्कि चारों कोनोंसे मोड़कर उठाया जाता है। इसी तरह देशको उसकी राजधानीपर दखल करके नहीं, बल्कि उसके सीमान्तोपर अधिकार करके जीता जाता है।” इस गुरुमन्त्रके बाद मुहम्मद शैबानी अपने अनुयायियोंको लेकर अतर्वेदके समृद्ध और सुखी इलाकोके ऊपर चढ़ दौड़ा जिसका कि कोना-कोना वह अपने भगोड़े जीवनमें देख चुका था। लूटका माल मिल रहा था, इसलिये धूमन्तू सैनिकोंकी क्या कमी हो सकती थी? शैबानीकी सेनामें दशतेकिपचकके सभी इलाकोके उज्बेक शामिल थे, पीछे खीवासे भी कितने ही मगित आ मिले। तुर्किस्तान और ओतरारके शासक उसके दो चचा कूचुनजी और सुईउनिच थे, जो अपने सबधी हमजा सुल्तान और महबूब सुल्तानके साथ एक बड़ी सेना लेकर भतीजोंके दलमें शामिल हो गये। उत्तरमें धूमन्तुओंकी इतनी जवर्दस्त शक्ति तैयार हो रही थी, और उधर दक्षिणमें तेमूरी सुल्तान आपसमें दगल लड़ रहे थे। गृह-युद्धके भड़कानेमें बाबरका मुख्य हाथ था। वापसे मिले फरगानापर सतुष्ट न रहकर उसने १४९७ ई०में समरकन्दको आकर ले लिया, लेकिन थोड़े ही दिनों बाद उसे छोड़ना पड़ा और वहाका शासन महमूद मिर्जा-पुत्र सुल्तान अलीके हाथमें चला गया। एक उज्बेक रखेली जूरे-वेगी आगा सुल्तान अलीकी मा थी, शायद इस कारण भी दूसरे शाहजादे उसे गद्दीपर देखना नहीं चाहते थे। लेकिन अब तेमूरी सुल्तान दरबारियोंके हाथके कठपुतली भर रह गये थे, इसलिये असली शक्ति सुल्तान अलीके हाथमें नहीं थी, बल्कि चार सौ सालोंसे शेखुल्-इस्लाम होते आये वगके मुखिया खोजा अहिया सर्वेसर्वा था।

मुहम्मद शैबानीको तेमूरियोंकी भीतरी कमजोरिया अच्छी तरह मालूम थी। अन्तर्वेदके और स्थानोंकी लूट-मारसे शक्तिशाली बन वह १५०० ई० (९०६ हि०)में समरकन्दपर पहुँचा। दस दिनतक उसने नगरको घेरे रक्खा। शेखके पुत्रने दरवाजेसे निकलकर शैबानी सेनाको हरा पीछे ढकेल दिया, लेकिन शैबानीने मौका पा चहार-राह दरवाजेसे नगरमें घुसनेमें सफलता पाई और बिना प्रतिरोधके ही वह बागेनौके ग्रीष्मप्रासादमें पहुँच गया। अब उसे नगरके भीतर रह गये शत्रुओंसे लड़ना था। युद्ध मध्याह्नमें शुरू हो आधी राततक जारी रहा। मुहम्मद शैबानीने वीरता दिखलानेमें खतरेकी बिलकुल परवाह नहीं की। दूसरे दिन खबर मिली, कि अब्दुल अली तरखनका पुत्र और कितने ही और तरखन (राजकुमार) बुखारासे सहायताके लिये आते दबूसियाका मुहासिरा किये हुये हैं। यह खबर सुन उज्बेकोने समरकन्दके मुहासिरके लिये थोड़ीसी सेना छोड़ पहले तरखनोकी ओर मुह मोड़ और उन्हें हराकर वे बुखाराके ऊपर जा घमके, जिसके सर करनेमें बहुत कठिनाई नहीं

हुई। शैवानीने वहा कुछ सेना और अपने अन्त पुरको रखकर कराकुलपर आक्रमण किया। इसी समय बुखारावालोने उज्वेक-सेनाको मार डाला। खबर मिलते ही शैवानीने तुरन्त लौटकर बुखारा शहर-पर अधिकार करके वहाके नागरिकोंसे बहुत सख्त बदला लिया। फिर वह समरकन्दपर आया, जिसके विजयमें अली मिर्जाकी अपनी मा—जोकि उज्वेक जातिकी थी—ने विश्वासघात किया। बाबर उमके बारेमें लिखता है—“अपनी जडता और मूर्खताके कारण उसने शैवानी खानके पास गुप्त रीतिमें सदेश भेजकर प्रस्ताव किया, कि यदि तुम मेरे साथ व्याह करो, तो मेरा लडका इस शर्तपर समरकन्दको समर्पण कर सकता है, कि जब तुम अपने पैतृक राज्यको प्राप्त कर लोगे, तो इस नगरको मेरे बेटे सुल्तान अली को दे दोगे।” इसी कारण चहार-राह दरवाजा अरक्षित मिला। जब शैवानी बागे-मैदानमें पहुँचा, तो सुल्तान अली मिर्जा बिना किसीसे कुछ कहे कुछ अनुचरोके साथ चहार-राह दरवाजेसे निकलकर शैवानीसे मिला। शैवानीने उसकी कोई इज्जत न कर उसे निचले आसन पर बैठाया। सुल्तान अलीके जानेकी खबर सुनकर खोजा अहिया भी पहुँचा, लेकिन शैवानीने चार मी वपोंके शेखुल्-इस्लाम-वशका कुछ भी ख्याल न कर उठकर उसका स्वागत भी नहीं किया, और खूब कड़े-कड़े शब्दोंमें उसे फटकारा—“अभागो दुर्बल स्त्रीने पति पानेके लालचसे अपने खानदान और लउकेकी इज्जतको धूलमें मिला दिया, लेकिन उसके साथ भी अच्छा वर्ताव नहीं हुआ, क्योंकि शैवानी उमको अपनी रखेलिनोके बराबर भी नहीं समझता था।” १५०० ई० (९०६ हि०)में समरकन्दको सर करनेके बादसे शैवानीका सन-जलूस (अभिषेक-मवत्) चला। तीन-चार दिन बाद सुल्तान अलीको उसने मरवा डाला, फिर खुरामानकी ओर यात्रा करते समय तुरन्त ही उसने विश्रामघाती खोजा अहिया और उसके दो पुत्रोंको कत्ल करवा दिया।

शैवानी और उसके अमीरोंको समरकन्द जैसा समृद्ध-सुन्दर नगर मिला, “लेकिन उसके सैनिकों-का नागरिक जीवनसे प्रेम नहीं था। नगरमें कुछ दिनो रहनेके बाद शैवानीने अपने सात-आठ हजार सैनिकोंके साथ खोजा-दीदारके पास जा डेरा लगाया।” दो हजार सैनिक शहरके आसपासमें छावनी डाले पड़े रहे और नगरके भीतर सिर्फ छ सौ सैनिक रह गये थे। १९ सालके बाबरको जब यह पता लगा, तो उसने दो सौ चालीस आदमियोंको लेकर बड़े साहसका काम करना चाहा। नगरके सैनिकोंको सजग देखकर उमें कितनी ही बार अपने इरादोंको रोकना पड़ा। लेकिन एक रात खोजा अब्दुल मकरम सत्तर या अस्सी आदमियोंको लिये भोगाकपुल होते प्रेमियोंकी गुफाके सामनेसे नगर-प्राकार फादनेमें सफल हुआ और पीछेसे जा फीरोजा दरवाजाके रक्षक सिपाहियोंके ऊपर टूट पड़ा। इस आक्रमणमें दरवाजेके गारदका कमांडर फाजिल तरखन मारा गया। मुकरमके आदमियोंने कुल्हाड़ेसे ताला तोड़ दरवाजा खोल दिया। अब बाबर भी शहरके भीतर दाखिल हुआ। इस समयके बारेमें बाबर लिखता है—“नागरिक गहरी नीदमें थे, लेकिन दूकानदारोंने जब अपनी दूकानोंसे झाँककर देखा और उन्हें अमली बातका पता लग गया, तो उन्होंने शुकिया अदा करनेके लिये भगवान्में प्रार्थना की। नगरके बाकी लोग भी जल्दी जाग उठे और अपने लोगोंकी सहायता पा हमने पागल कुत्तेकी तरह उज्वेकोंको हर एक कूचे और सड़कमें पत्थरों और लकड़ियोंसे पीट-पीटकर मारा।” चार-पाँच सौ उज्वेक सैनिक मारे गये। उज्वेकोंकी ओरसे नियुक्त नगर-कोतवाल जानेवफा जान बचाकर शैवानीके पास भागा। बाबर मदरसा-उलुगवेगकी ओरसे होते मेहराबोवाली शाला (उलुगताक)में जाकर बैठा। नागरिकोंने नये तेमूरी वादशाहको वधाई दी। दूसरे दिन मालूम हुआ, कि आहनीदरवाजा (लौहद्वार) अब भी शत्रुओंके हाथमें है। बाबर पन्द्रह-वीस आदमियोंके साथ उधर दौड़ा, लेकिन उमके पहुँचनेसे पहले ही नगरके गुडोंने उन्हें बाहर निकाल दिया था। जब मुहम्मद शैवानीको यह खबर मिली, तो डेढ़ सौ सवारोंके साथ आकर उसने दरवाजा आहनीपर आक्रमण करना चाहा, लेकिन उसे व्यर्थ समझकर वह लौट गया। समरकन्दपर अधिकार हो जानेके बाद आसपासके बहुतसे इलाकोंसे उज्वेक मार भगाये गये। मोगद और मियानकुलपर बाबरका अधिकार था, और खोजार तथा करशीपर बाकी तरखन (बुखारा-राज्यपाल)का। मेवमें लौटकर शैवानी-मेनाने सिर्फ बुखाराको अपने हाथमें लौटा पाया।

— उस साल तो यही मालूम हो रहा था, कि बाबर फिर तेमूरकी कीर्तिको जगाके रहेगा, लेकिन शैवानी भी चुप रहनेवाला आदमी नहीं था। उसने तैयारी करके १५०१ ई०के वसन्तमें कराकुल और दबूसिया ले लिया। अप्रैल या मई १५०१ ई०में शैवानीसे लड़नेके लिये बाबरने सरेपुलके पास जाकर मोर्चाबन्दी की। उसके शिविरसे शैवानीका शिविर चार मीलपर था। चार-पाच दिनोतक दोनों दलोंमें मामूली झड़प होती रही। यद्यपि अभी मददके लिये आनेवाली सेनाकी प्रतीक्षा करनेकी जरूरत थी, लेकिन ज्योतिषियोंका बतलाया मुहूर्त बीता जा रहा था, इसलिये सहायता आनेसे पहले ही बाबरने युद्ध छेड़ दिया। उज्बेकोकी युद्धविद्यामें एक ज्यादा प्रचलित चाल थी “तुलुगमेह” अर्थात् शत्रुके पार्श्वको प्रहार करके मोड़ देना, दूसरी चाल थी सरपट दौड़ते बाण-वर्षा करना, इसके लिये सेनानायक और सिपाही दोनों पीछा किये जानेपर सरपट लौट पड़ते। शैवानीकी सेना बाबरसे कहीं अधिक थी। इसी समय मुगोलिस्तानकी सेनाने बाबरके साथ धोखा दे दिया। बाबरकी पूरी हार हुई। वह अपने दस-पन्द्रह अनुयायियोंके साथ कोहक नदीकी धारमें कूद पड़ा। सवार और घोड़े दोनों वस्त्रदार थे, जिसके कारण उनके शरीरपर भारी बोझा था, तो भी किसी तरह भागकर वह रातसे पहले ही समरकन्द पहुँचे। बाबरने इस समयके अपने उतावलेपनके ऊपर एक शेर लिखा—

“जो उतावला होकर जल्दीमें अपनी तलवारपर हाथ रखेगा,  
वह उस हाथको अफमोस करते हुये अपने दातोसे काटेगा।”

उलुग-मदरसेमें चादर-सफेदके नीचे ठहरकर बाबर शहरके बचानेकी तैयारी करने लगा। नगरके बहुतसे निकम्मे और फजूलके “गाजी” हर मुहल्ले और कूचेसे बड़ी सख्यामें आकर मदरसेके फाटक-पर “पैगम्बरकी जय” करते उतावलापन दिखला रहे थे। तजर्वेकार लोग रोकनेकी कोशिश करते, तो उन्हें वह गाली सुनाते। बात न मानकर वह गये और उज्बेकोसे खूब पिटे। बाबरने पीछे हटते समय रक्षा करनेके लिये सेना भेजी, लेकिन तबतक गाजियोंकी भीड़ पिटकर तितर-बितर हो चुकी थी। अब सिपाहियोंको नगरके मुहासिरेकी लड़ाई लड़नी थी। बीच-बीचमें सैनिक बाहर निकल छापा मारकर कितने ही शिर काट लाते। मुहासिरेके कारण नगरमें बाहरसे खुराक आनी बन्द हो गई, जिसके कारण भीषण भुखमरी और अकाल पड़ा। गरीब लोग कुत्ते और गदहोका मांस खाने लगे। घोड़ोको वृक्षोका पत्ता खिलाया जाता। ऐसी स्थितिमें कितने दिनोतक अपनेको रोके रखता, समरकन्दको आत्मसमर्पण करना पड़ा। बाबरकी बड़ी बहिन खानजादा विदेशी लुटेरे शैवानीके हाथ-में पड़ी। अपनी माँ और कुछ दूसरी औरतोंको साथ लिये बाबर आधी रातको नदीको पारकर समरकन्दसे भाग निकलनेमें सफल हुआ। जीजकमें पहुँचनेपर उसे एक नई दुनिया जान पड़ी, जब समरकन्दकी भुखमरीके बाद उसे बढिया मोटा मांस, बारीक आटेकी अच्छी तरह पकी हुई रोटी, मीठे तरबूजे और स्वादिष्ट अगूर भारी परिमाणमें मिले—चरम अकालसे वह चरम सुकालमें पहुँच गया था। अब सोगद (अन्तर्वेद)का स्वामी शैवानी था। उसने मुगोलिस्तानी खान महमूदको अगूठा दिखला दिया, जिसने जाकर ताशकन्द-शाहरुखियाको हाथमें किया। जाडोमें सिर नदीके जम जानेपर उसे आसानीसे पार हो शैवानीने ताशकन्द शाहरुखियाको लूटा। १५०२ ई०में मुगोलिस्तानी राज्यपाल सुल्तान अहमद तम्बोलने अपने मालिकसे विद्रोह करके शैवानीको सहायताके लिये बुलाया। शैवानीने पहुँचकर महमूद खानको बुरी तरहसे हराया, और उसके साथ आया बाबर मिर्जा जान बचाकर फरगानाके दक्षिणवाले पहाडोमें भाग गया। मुगोलिस्तानी खानको दौलत सुल्तान खानम (अपनी बहिन), तथा अम्बा सुल्तान खानम, कुरुज खानम आदि कई राजकुमारियोंको जून १५०३ ई०में भेंट देनी पड़ी। शैवानी फरगानाके मुख्य नगरोमें उज्बेक छावनिया रखकर लौट आया।

१५०५ ई०तक सारा फरगाना, ख्वारेज्म और हिसार (ताजिकिस्तान) आदिके इलाकोपर भी शैवानीका अधिकार हो गया। अब वह अपनी सारी सेना ले तेमूरके द्वितीय पुत्र उमरशेखके वंशज हुसेन बेकरासे खुरासान छीननेके लिये दक्षिणकी ओर बढ़ा। पहले साल वह बलख नगरतक अपना अधिकार करके समरकन्द लौट गया। हुसेनने अपने पड़ोसी ईरानी शाह इस्माईल और बाबरने भी

मदद मागी। बाबर ९०९ हि० (१५०३-४ ई०) में काबुलका राजा बन चुका था। वह भी हुमेनकी मददके लिये खुरासान आया, लेकिन तबतक हुसेन मर चुका था, और उसके दोनों बेटों राज्यके बटवारे को लेकर भयकर फूट पैदा हो गई थी। शैबानी जैसे भयकर शत्रुको शिरपर देखकर भी ऐसा करना बाबरको बहुत बुरा लगा—“दस फकीर एक चट्टानपर बैठ सकते हैं, किंतु दो राजाओंके लिये मारा भूमंडल छोटा है।” बाबर निराश होकर लौट गया। ९१२ हि० (१५०७ ई०) के वसन्तमें शैबानी फिर मेना ले बंधु पार हुआ, और रास्तेके इलाकोंको जीतते जूनमें मुरगाव नदी भी पार हो गया। खुरासानकी राजधानी हिरात नगरी तुरन्त उसके हाथमें आ गई। वहाका किला कुछ देर-तक प्रतिरोध करता रहा, लेकिन दो-तीन सप्ताह बाद किलेमें भी आत्मसमर्पण किया। शैबानीने हिरातके साथ इतनी मेहरबानी की, कि एक लाख तका कर लेकर कला और विज्ञानके इस महान् केन्द्रको अपने लुटेरे उज्बेकोंके हाथों बरबाद होने नहीं दिया। शैबानीने अपनी सेनाके साथ शहरके बाहर डेरा डाला। हुमेन बेकराके बेटे मुजफ्फर हुसेन मिर्जाकी बीबीके सौंदर्यको सुनकर अट्ठावन वर्षका शैबानी उमपर मुग्ध हो गया। उसने उसे अपने हarem में दाखिल किया। हिरातके राजभवनमें उसे भारी परिमाणमें सोने-चांदीके वस्त्र, बहुमूल्य लाल, हीरे, मोतिया तथा दूसरे रत्न प्राप्त हुये।

उसकी सेनाने बाकी तेमूरी राजकुमारोंको हराते सारे खुरासानको अपने हाथमें कर लिया। बाबर शैबानीमें हारा और जला-भुना हुआ था, इसलिये उसे अपने शत्रुमें केवल दोष ही दोष दिखलाई पड़ते थे। शैबानी कवि था, और उसकी कविताये बुरी नहीं होती थी, लेकिन “बाबरनामा” में बाबर लिखता है—“विल्कुल अज्ञ होते भी उसने ढिठाई दिखलाते हुये काजी अस्तियार और मुहम्मद मीर युमुफ (खुरासाने प्रसिद्ध मुल्ला) जैसे विद्वानोंके सामने कुरानकी व्याख्या करते व्याख्यान दिया। उसने कलम उठाकर सुलेखक मुल्ला सुल्तान अली और चित्रकार बेहजादके लेखों और चित्रोंका सशोधन किया। वह अपने उवा देनेवाले शेरोंको मेम्बरसे पढ़कर सुनाता था, और उन्हें उसने लिखवाकर चारसूमें टगवा दिया था।” आधुनिक कालके तुर्की साहित्यके एक विद्वान् वाम्बेरीने शैबानीकी कविताके बारेमें लिखा है—“शब्द और अर्थ दोनोंकी दृष्टिसे शैबानीकी कविता पूर्वी तुर्की साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ कृतियोंमें है, और उसमें पता लगता है, कि शैबानीको तुर्की, फारसी और अरबीका ज्ञान बहुत अच्छा था।”

शैबानीने बाबरका पीछा भी करना चाहा, लेकिन कंधार नगरके मुहासिरमें असफल रहनेके कारण वह काबुलकी ओर नहीं बढ़ा। १५०८ ई० में उसने मुगोलिस्तानके खान महमूदको ताश-कन्दमें जाकर हराया। खानने फरगानाके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन अपने पांच पुत्रोंके साथ प्राण खोनेके सिवा उसे कुछ हाथ नहीं लगा।

पूर्वी और दक्षिणी प्रतिद्वन्द्वियोंसे निपटनेके बाद भी अभी उत्तरमें कजाक खान कासिमके दो लाख सैनिक मौजूद थे। जाटोंमें दोनोंके ओर्दू घास-चारेके सुभीतेवाले स्थानमें डेरा डाला करते थे। शैबानीका ओर्दू उस समय कुस्कमें था। १५०९-१० ई० के जाटोंमें एक दिन कासिम खान अपनी सेनाके साथ आ पहुंचा। उज्बेकोंने अपने लूटेके मालको छोड़ दौड़कर शैबानीको खबर दी। शैबानीने तुरन्त पीछे हटनेके लिये नगरा बजवाया और जाटोंके अन्ततक उज्बेक बड़ी अस्तव्यस्त अवस्थामें ममरकन्द पहुंचे।

यह कह चुके हैं कि मंगोल कबीलोंके अवशेष हजारोंके नामसे अफगानिस्तानके पश्चिमी पहाटोंमें रहते थे। शैबानी १५१० ई० में उनपर आक्रमण करनेके लिये हिंदूकोहके भीतर घुस गया। लेकिन लौटते वकन हेरमन्दकी उपत्यका में उसे आदमियों और पशुओंकी बड़ी क्षति उठानी पड़ी। खुरा-सानमें पहुंचनेपर उसके पास दो मेनाए आ गई और उसने क्षतिग्रस्त मेनाको तुर्किस्तान जानेकी छुट्टी दे दी।

शैबानीका प्रतिद्वंद्वी ईरानी शाह इस्माईल नवमें अधिक शक्तिशाली था। उसने आजुरवाइजानी तुर्क-वंश (श्वेन-मेय) का उच्छेद करके मारे ईरानपर अधिकार करते हुये सफावी-वंश (१४९९-१५२४ ई०) की स्थापना की थी। वह कैसे देख सकता था, कि पूर्वी ईरान-खुरासानपर उज्बेकोंका

अधिकार हो। ९१६ हि० ( १० IV १५१०-१ III १५११ ई० ) में उसने खुरासान पर आक्रमण किया। उस समय उज्बेकोकी सेना हिरात में एकत्रित हुई थी। शैबानीकी सेना इस्माईलकी अपेक्षा कम थी। वह हिरात में छावनी छोड़ मेर्वकी ओर लौटा। मशहदकी तीर्थयात्रा समाप्त कर शाह इस्माईल ने उज्बेकोका पीछा किया। तूकेराबादके पास दोनों सेनाओं में जबर्दस्त लड़ाई हुई, शैबानी हारा और शाहकी सेना उसे मेर्वकी दीवारों तक खदेड़ ले गई। शैबानी मेर्व में दुर्गबद्ध हो गया और शहरके आस-पास शाह इस्माईल ने घिरावा डाल दिया। इस तरहकी कायरता दिखलानेके लिये शाहने शैबानीको फटकारते हुये चिट्ठी लिखी। यद्यपि शैबानी इस तरहकी व्यर्थकी वीरता दिखलानेका नहीं, बल्कि कल-बल-छलका पक्षपाती था, लेकिन उस वक्त अपने बीस हजार घुड़सवारोंको लिये इस्माईलकी चालीस हजार सेनाके साथ लड़नेके वास्ते मैदान में चला आया। लोगोंने उसे प्रतीक्षा करनेकी सलाह दी, लेकिन उसने नहीं माना और सामने और पीछे दोनों तरफसे आक्रमण कर दिया। इसमें शक नहीं, उज्बेकोने युद्धमें बड़ी बहादुरी दिखलाई, लेकिन सख्यामें दून सफावी भी लड़नेमें निर्बल नहीं थे। उज्बेक-सेना छिन्न-भिन्न हो गई, शैबानी पांच सौ सवारोंके साथ भागकर पशुओंके एक हाते में जा छिपा। दूसरी तरफ द्वार न होनेसे नदी-तटकी ओर प्राकारसे उज्बेक सैनिक एक दूसरेके ऊपर कूदे, खानको कूदनेमें चोट आई। दुश्मनोंने उसके शरीरको आदमियोंके ढेरमेंसे निकालकर मार डाला, और शैबानीका सिर काटकर शाहको भेंट किया। उसने आज्ञा दी, कि शैबानीके शरीरको टुकड़े-टुकड़े करके राज्यके भिन्न-भिन्न भागोंमें प्रदर्शित किया जाय। इस्माईलने उसके चमड़ेमें भूसा भरकर तुर्क-सुल्तान बायजीदके पास भेज दिया। बायजीद मुन्घियोंका सबसे बड़ा नेता था, और इस्माईल शियोका, इसलिये उसने तुर्क-सुल्तानके पास सुन्नी भाई तथा महान् उज्बेक-नेताकी इस दुर्गति को दिखलाना चाहा। शैबानीकी खोपड़ीमें सोना मढ़वाकर इस्माईलने गरावके प्यालेके तौरपर प्रदर्शन कराया।

इसमें शक नहीं, शैबानी उत्तरी घुमन्तुओंका अन्तिम सबसे बड़ा विजेता था, जिसने मध्य-एशियामें एक बड़े राज्यकी स्थापना की। लेकिन इसी समय ईरानमें सफावी जैसा शक्तिशाली वंश स्थापित हो गया, जिसने ईरानको शिया घोषित करके पूर्वी और पश्चिमी सुन्नी देशोंके बीचमें पञ्चरका काम किया। वक्षु (आमू-दरिया) तक इस्माईलने बढ़कर फिर उसे एक बार ईरान और तुरानके बीचकी सीमा बनाई।

## २ कूचुनजी (१५१२-३० ई०)

२

शैबानी घुमन्तू राजवंश था, इसलिये हजारों वर्षसे स्थापित अपनी पुरानी व्यवस्थाके अनुसार उसके हर एक राजकुमारको छोटे-छोटे प्रदेशका राजा बनाया जाता था। वह अपने ऊपर एकको खान मानते थे। खानके मरनेपर वंशके सभी कुमार मिलकर उसका उत्तराधिकारी खान तथा आवश्यकता होनेपर कलगा (युवराज) चुनते थे, इसमें योग्यतासे अधिक रिश्ते और उमरमें सर्वज्येष्ठका ख्याल काम करता था।

मेर्वमें शैबानीकी जो दशा हुई, उसकी खबर सुनकर बाबर काबुलसे अपने पूर्वजोंके देशकी ओर चला, लेकिन नेताके मर जानेसे शैबानी-सेना नष्ट नहीं हो गई थी। जानीबेग सुल्तान उस समय उपराज था, जिसके झंडेके नीचे फिर बड़ी सेना इकट्ठी हो गई। इसी सेनाने मुगोलिस्तानका कल्ले-आम किया था, जिसमें "तारीख रशीदी" का लेखक इतिहासकार हैदर बाल-बाल बचा था। बाबर अपनी सेना ले आमू पारकर खुत्तलके प्रधान शहर दशतेकुलाकमें पहुँचा। यहाँ वक्षुके पास फिर दोनों सेनाओंमें झड़प हुई, लेकिन शक्ति आजमा लेनेपर दोनोंने लड़नेकी हिम्मत नहीं दिखलाई। बाबर वक्षु पार हो कुदुज लौट गया और शैबानी-सेनापति हमजा सुल्तान हिसारको। मेर्वसे शाह इस्माईलने शैबानीकी वीवी खानजादा वेगमको भेज दिया था, जो अपने भाई बाबरसे जा मिली। बाबरने इसके लिये इस्माईलको बहुत धन्यवाद देते हुये अन्तर्वेद जीतनेके लिये उससे सैनिक सहायता मांगी।

शाह इस्माईलकी भेजी सेनाको भी साथ ले बाबर फिर पहाड़ी रास्तेसे आमू दरिया पारकर उत्तरकी

और बढ़ा। आमकी एक शाखा मुरावपर पुलेमगीनको हमजा मुल्तान दखल किये हुये था। बाबरको मालूम हो गया, कि दुश्मन बहुत शक्तिशाली है, तो भी माहम करके पुलकी आगा छोड़ नदी पार करनेकी कोशिश की। लेकिन, जल्दी ही उसे एक दुर्गम रास्तेमें आवदराकी ओर लौटना पड़ा। उज्बेक उसका पीछा कर रहे थे। आधी रातको खबर लगी, कि उज्बेक नजदीक आ गये हैं। बाबरने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया और हमजा मुल्तान तथा मेहदी मुल्तान बाबरके बन्दी बने। बाबर चगनाइयोकी पूर्वी शाखावाले मुगोलिस्तानके खानका नाती था, इसलिए चगताई-बगज होनका दावा करता था। उसने इस सफलताके बाद और भी आगे बढ़कर दरबन्दे-आहनी (लोहद्वार) तक उज्बेकोका पीछा किया। यार मुहम्मद नज्म-शानी (द्वितीय तारा)ने करगीको लूटा और लोगोंको कत्ल किया। अब पामीरमें हिमार और खुत्तलान, खोजर तथा आमुके दक्षिण कुदुजके प्रदेश बाबरके हाथमें आ गये। दर्रा-खैवरमें दरबन्दतकके प्रदेशको कुछ समयके लिये अपने हाथमें करके बाबरको प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी, लेकिन वह जबतक समरकन्दमें पहुँचकर तेमूरके तख्तपर नहीं बैठता, तबतक अपनी सफलतामें सन्तुष्ट नहीं हो सकता था। उसके इस मनोरथको पूरा करनेके लिये शाह इस्माईलने भारी सेना भेजी। उज्बेक सेनापति उवैदुल्लाने करगीमें मोर्चाबन्दी कर रखी थी, बाकी उज्बेक समरकन्द भाग गये थे। बाबरने साठ हजार सयूक्त सेनाके साथ आक्रमण करके उवैदुल्लाको हराकर बाकी उज्बेकोको भी किजिलकुमके रेगिस्तानमें भगा दिया। दूसरे उज्बेक सुल्तानोंको जब पता लगा, तो नामने होकर लड़नेकी जगह उन्होंने तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका)की ओर भागना ही अच्छा समझा। बाबर अब मारे अन्तर्वेदका स्वामी था।

८ अक्तूबर १५११ ई०को समरकन्दमें बाबर तेमूरके सिंहासनपर बैठा। इस वक़्त उसे कितनी प्रसन्नता हुई होगी, इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं। उसे क्या पता था, कि यह आठ महीनोंकी चादनी है। हा, उसके बाद उसे एक और भी विशाल और वैभवशाली साम्राज्यको भारत में स्थापित करनेका मौका मिलेगा। इस समय “बाबरका राज्य” तारतारी रेगिस्तानोंमें गजनी और काबुलतक था, जिसमें कुदुज, हिमार, समरकन्द, बुखारा, ताशकन्द, सेरम, खाकन्द (फरगाना) आदि नगर सम्मिलित थे। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि खुरासान अब शाह इस्माईलका था।

लेकिन शाहकी मदद बाबरके लिये बहुत महंगी पड़ी। उसने शाहके नामका खुतबा पढ़वाया। एक शिया वादशाहके नामका खुतबा पढ़े जाते देख सुन्नी अन्तर्वेद कैसे सन्तुष्ट हो सकता था? बाबरने स्वयं ईरानी पोशाक धारण की, और अपनी सेनाको भी वैया ही करनेका हुक्म दिया। खासकर ईरानी टोपी धारण करनी अनिवार्य कर दी, जिसमें शियोंके वारह इमामोंके चिह्न बने हुये थे, और पोशाकमें एक लम्बी लाल पट्टीको लगानेके लिये कहा, जो कि बीचमें होकर पीठके पीछे लटकती थी, जिसके कारण ईरानियोंको किजिल-बास (रक्त-केश) कहा जाने लगा। बाबर जरूर समझता होगा, कि शिया-धर्म, शियोंकी बेग-भूषा तथा शिया इस्माईलको अपना प्रभु स्वीकारकर वह मुन्नियोंका कोप-भाजन बनेगा, लेकिन उसके लिये और कोई रास्ता नहीं था। प्रजाके अनन्तोपकी खबर उज्बेकोको लगी, और १५१२ ई०के वसन्तमें एक उज्बेक-सेना ताशकन्दकी ओर बढ़ी, दूसरी रेगिस्तानके रास्ते उवैदुल्लाके नेतृत्वमें यर्कण्डुप (मप्तकूप) होती बुखाराकी ओर। ताशकन्दमें मुकाबिला करनेके लिये बाबरने सेना भेज दी, और स्वयं उवैदुल्लाकी ओर चला। कुलमलिकमें दोनोंमें जबर्दस्त मर्षा हुआ, लेकिन यह चमत्कारसे कम नहीं था, जो कि १८ अप्रैल १५१२ ई०में बाबरकी चालीस हजार सेनाको तीन हजार उज्बेकोंने हरा दिया—अर्थात् एक उज्बेक दस बाबरी सैनिकोंमें भी अधिक युद्धक्षमता रखता था। पीछे भारतपर विजय प्राप्त करनेके समय हर एक बाबरी सैनिक शायद हिंदुस्तानी सैनिकोंसे दसगुनीने अधिककी क्षमता रखता था। इसमें कारण नागरिक विलासितापूर्ण जीवन तथा पारस्परिक फूट हो सकती थी।

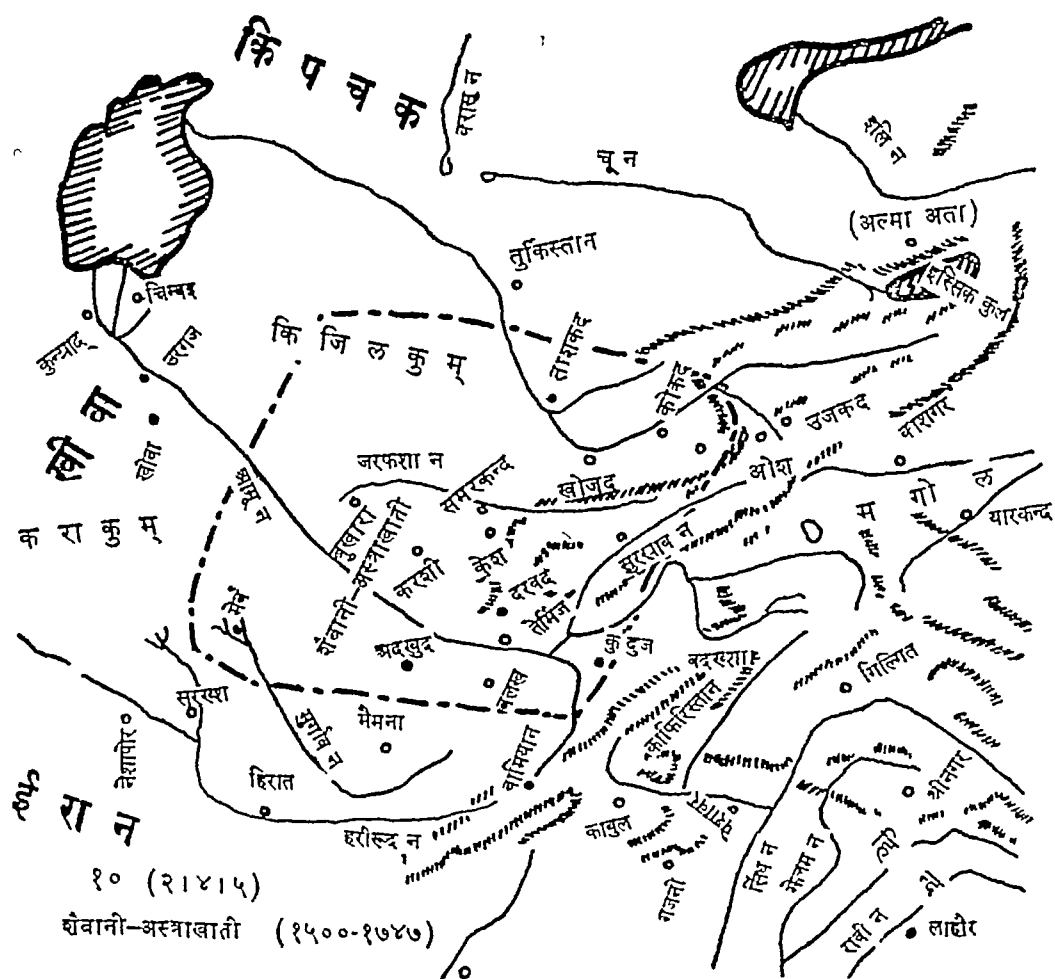
कुलमलिकमें हारनेके बाद बाबरके लिये समरकन्दमें भी धारण नहीं थी। अब वह शाह इस्माईलके पास जानेंके लिये दरबन्दकी ओर चला। दरबन्दमें भी मोर्चाबन्दी हो चुकी थी। शाह इस्माईलने



यार मुहम्मदके नेतृत्वम साठ हजार तुर्कमान भेजे, जिन्होंने उज्बेक सेनापति हमजाको हराकर लौहद्वार (दरबन्द) पार हो खोजार (गुजार), करशीको लूटा। करशीमें पन्द्रह हजार नागरिकोंको बिना यह ख्याल किये कत्ल कर डाला गया, कि वह उज्बेक है या स्थानीय नागरिक, बूढ़े-बच्चे हैं, या स्त्री। इसी कत्ले-आममें कवि बीनाई भी मारा गया। शिया अपनी धर्मान्धताका परिचय दे रहे थे। बाबर समझ गया, कि अब उसे अन्तर्वेद क्षमा नहीं कर सकता, इसलिये अपनेको उसने अलग कर लिया। इसके वारेमें हैदरने लिखा है—“इस्लाम (सुन्नी-धर्म)का प्रभाव कुफ्र और अविश्वासके ऊपर विजय पाने लगा, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। आक्रमणकारी बुरी तरहसे हारे, और उनमेंसे अधिकांश युद्धक्षेत्रमें मारे गये। गिज्दुवानके वाणीने करशीके खूनका बदला लिया। मीर नजीम तथा दूसरे सभी तुर्कमानोंके मुख्य सेनानायक नगरमें भेज दिये गये।”

मीर नजीमके दबदबके वारेमें वही इतिहासकार लिखता है—उसके रसोईखानेमें प्रतिदिन सौ भेडे, असख्य मुर्गे-मुर्गिया, हंस, बतके और चालीस व्वार्त (५६० सेर ?) दालचीनी, केसर और दूसरे मसाले इस्तेमाल होते थे। उसके खानेकी तश्तरिया या तो बिल्कुल सोनेकी थी या बहुत मूल्यवान् चीनी मिट्टीकी। अब बाबरने सदाके लिये अन्तर्वेदसे बिदाई ली, और वह काबुल लौट गया।

जिस वक्त दक्षिणमें बाबर-इस्माईल और उज्बेकोंका इस तरह सघर्ष हो रहा था, उमी समय मुगोलिस्तानके खानने पूरवसे अन्दिजानके रास्ते प्रधान उज्बेक-सुल्तान सुयुन्जिक खानके ऊपर आक्रमण किया और जरफशा-उपत्यकामें समरकन्दसे चालीस मील पूर्व बिशकन्द (पजकन्द) में उसे पूरी तौरसे हरा दिया। यह वह समय था, जब कि बाबर ईरानी सेना लेकर समरकन्दकी ओर बढ़ रहा था।



बुखारासे उत्तर गिज्दुवानमें शाह इस्माईलके सैनिकोंका जानीबेग-सुल्तानने किस तरह मुकाबिला किया, इसे “तारीख रशीदी”में मिर्जा हैदरके शब्दोंमें सुनिये—

“उज्जेक मुल्तान उनी रातको किलेके भीतर प्रविष्ट हुये, जिस रात तुर्कमान (इस्माईलके सैनिक) और बाबर घुमे थे। तुर्कमान और बाबर महलके सामने छावनी डालकर मोचविन्दीके यंत्रोंको ठीक-ठाक करनेमें लगे हुये थे। मूर्खोंद्वयके समय उन्होंने उपनगरमें अपनी मेनाओंको शत्रुकी ओर मुह करके खड़ा किया। दूसरे पक्षने भी लड़ाईकी तैयारी की। उज्जेकोंके उपनगरमें होनेमें युद्धक्षेत्र बहुत नकरा था। उज्जेक-पैदल-सेनाने चारों ओरसे बाणोंकी वर्षा करनी शुरू की, और जल्दी ही इस्लामकी ताकतने कुफ्र और नास्तिकताके हाथको तोड़ दिया, सच्चे धर्मकी विजय घोषित हुई। इस्लामके विजयी वीरोंने धर्मविद्वेषियोंके झंडेको गिरा दिया। तुर्कमान पूरी तौरसे हारे, उनमेंमें अविकाश लड़ाईके मैदानमें मारे गये। करशीमें तलवारसे जो धाव हुये थे, उनको बदलेके बाणोंकी सिलाईने मी दिया। विजेताओंने मीर नजीम और नभी तुर्कमानोंको नरकमें भेज दिया, बादशाह (बाबर) निगश और दुखी हों हिमारकी ओर लौटा।”

बाबरका यह अन्तिम प्रयत्न था। उसने काबुल लौटकर अब अपनी शक्तिको हिन्दुस्तान जीतने में लगाया।

गिजदुवानके युद्ध ९१८ हि० (१९ III १५१२-७ II १५१३ ई०)के बाद शैबानी सुल्तानोंने अपने तुर्ग और याम्माक (कानून)के अनुसार मुहम्मद शैबानीके चचा कूचुनजीको अपना खान बनाया और सूयुन्जिक कलगा (युवराज)के पहले ही मर जानेके कारण जानीवेग कलगा बनाया गया। लेकिन वह भी पहले ही मर गया। जानीवेगने शैबानी सुल्तानों (राजकुमारों)में इलाके बांट दिये, जिसमें कूचुनजीको मयरकन्द, सूयुन्जिकको ताशकन्द, उवैदुल्लाको कराकुल-करशी-बुखारा और जानीवेगको मयरकन्द-मियानकुल-कर्मीना मिला।

ताशकन्दपर आक्रमण करनेवाली सेनाका मंचालक सूयुन्जिक था। उसने नगरपर अधिकार कर लिया। १५१२ ई०में सुल्तान सईद खान मंगोलिस्तानीने पांच हजार सेना ले फरगानासे होकर सूयुन्जिकके उपर आक्रमण किया। विश्वकन्दमें हार खाकर सुल्तान सईद अन्दिजान पहुँचा। गिजदुवानमें भारी विजय प्राप्त करनेके बाद सूयुन्जिकने सईदकी ओर मुह किया, लेकिन सईदने अन्दिजान, अक्सी और मरगिनानमें मजबूत सैनिक छावनिया रख दक्षिणके पहाड़ोंका रास्ता लिया। सईदने कजाकोंके शक्तिशाली खान कानिमको महायताके लिये बुलाया, जो कि शैबानियोंका भी शत्रु था। दशैकपचकके गर्भमें रहनेवाले इम खानके पाम बड़ी भारी मेना थी। वह सईद खानकी मददके लिये दक्षिणकी ओर चला। मौरामके राज्यपालने बिना लड़े ही किलेकी कुजी कासिमके हाथमें दे दी। फिर कजाकमेना गस्तेके नगरो और गावोंको लूटनी-पाटनी ताशकन्दकी ओर चली। १५१३-१४ ई०में सूयुन्जिक कजाकखानके प्रतिरोधमें हीलगा रहा। १५१५ ई०में कासिमने किसी दूसरी दिशामें लूट-पाट करनेके लिये अभियान किया, तब कजाकोंमें छुट्टी पा उज्जेक फरगानाकी ओर मुड़े। सुल्तान सईद खान बिना मुकाबिला किये ही काशगरकी ओर भाग गया, जहाँ उसने कई माल धासन किया। फरगानापर फिर उज्जेकोंका अधिकार हो गया।

गिजदुवानकी विजयमें शाह इस्माईलकी सेनाकी जो गति हुई थी, उसमें उज्जेकोंकी हिम्मत बढ़ गई और उन्होंने एक बार बलव्रतक घुमकर खुरामानमें लूट-पाट की, लेकिन जब शाह इस्माईलकी सेनाके प्रहारका भय लगा, तो वह पीछे हट आये। शाह इस्माईल १५२३ ई०में मर गया, और उसका बालकपुत्र नहमास (१५२४-७६ ई०) तख्तपर बैठा। इस समय फिर उज्जेकोंको मौका मिला और १५२५ ई०में उवैदुल्ला एक बड़ी मेना ले मेर्व जीतते खुरामानकी ओर बढ़ा। अप्रतिरक्षित मशहद नगरने आत्मनमर्पण किया। उवैदुल्ला तूमको भी लेते अस्थावाद पहुँचा, और अपने पुत्र अब्दुल अजीजको वहाँका शासक बना बलखकी ओर लौटा। आजुरवाईजानमें मेना आई, लेकिन उसे उज्जेकोंने बोम्नाममें हरा दिया, और अस्थावाद अब्दुल अजीजके ही हाथोंमें रहा।

उवैदुल्ला ने जाड़ोंको गोरियान (गोरी सुल्तानोंकी मूलभूमि)में बिताया। १३४ हि० (२७ नितम्बर १५२७-१७ अगस्त १५२८ ई०)में उसने रात सामतक हिरातका मुहामिरा किया। शाह नहमास एक बड़ी मेना ले उसके मुकाबिलेके लिये आया, जिसे देख उवैदुल्ला हट गया।

फिर उसने ईरानी शाहसे मुकाविला करनेके लिये भारी तैयारी शुरू की, और डेढ़ लाख सेना लेकर दक्षिणकी ओर चला—छिड़-गिस्के बाद इतनी बड़ी सेना वक्षु पार नहीं हुई थी। यद्यपि ईरानी सेना-में पचास हजार ही आदमी थे, लेकिन वह बड़े तजर्वेकार और अनशासन-सपन्न थे। उन्होंने (टर्कीके) उस्मानी तुर्कोंके साथ अनेक सफल लड़ाइया लड़ी थी। युरोपने मगोलोसे सीखकर बारूदके हथियारोमे बहुत तरक्की कर ली थी। उस्मानी तुर्कोंने उनसे तोप और पलीतेकी बन्दूकोका इस्तेमाल सीखा था। उस्मानी तुर्कोंके प्रतिद्वन्द्वी सफावी इन नये शक्तिशाली हथियारोके बिना कैसे सफलता पा सकते थे ? आविष्कारोके इतिहाससे मालूम है, कि युद्ध-सम्बन्धी आविष्कार सबसे जल्दी प्रचलित हो जाते हैं। तहमास्पकी सेनामे दो हजार तोपची और छ हजार बन्दूकची थे। उज्बेकोकी सेना यद्यपि तीनगुनी थी, लेकिन उनके हथियार वही पुराने—तीर-घनुष और तलवार-भाले थे। शाह तहमास्प मशहद और हिरातके रास्ते जामके समीप पहुँचा—मुख्य सेना मशहदमे डेरा डाले पड़ी थी। बीस हजार ईरानी सवारोको दुश्मनकी छावनीका पता लगानेके लिये भेजे गये हिदायत दी गई, कि कोई आदमी अपनेको खाइयोसे बाहर न दिखलाये। इधर मन्त्रशास्त्रियोको लगा दिया गया था, कि वह जादू करके शत्रुको ऐसा बना दे, कि उनमेंसे एक भी बच निकलने न पाये। अभी तैयारी पूरी नहीं हुई थी, कि शाह तहमास्पने युद्ध करनेकी ठान ली। २५ सितंबर १५२९ ई० को जाममे दोनो सेनाये एक दूसरेसे भिड़ी। यह ९ मुहर्रम करबलामें इमाम हुसेनकी शहादतका दिन था, इसलिये शिया शाहने इसी पवित्र दिन युद्ध छेड़ना अच्छा समझा। बीचमें तोपोको रक्खे बीस हजार चुनी हुई सेना खड़ी थी, जिनके साथ शाह भी था। उज्बेक पाश्वर्षपर आक्रमण कर दोनो छोरोको पीछे ढकेल पीछेसे भी डेरोको लूटने लगे। लेकिन पाश्वर्षोके इस प्रकार ढकेल दिये जानेपर भी केन्द्र मजबूत रहा। ठीक समय-पर तोपोको बाधनेवाली जजीरे गिरा दी गई और वह आग और गोले उगलने लगी। तिगुना जनबल रखते हुये भी उज्बेक घास-मूलीकी तरह कटने लगे। युद्धक्षेत्रमे उनके पचास हजार आदमी काम आये, लेकिन उन्होंने बीस हजार अपने शत्रुओका भी सहार किया। उज्बेकोकी भारी हार हुई।

तहमास्पके विजयसे बाबर प्रसन्न नहीं शक्ति हो उठा। उसे डर लगा, कही वह खुरासानसे हमारे राज्यकी ओर भी न बढ़ आये। बाबरने अपने बेटे हुमायूँको पचास हजार सेना देकर आगे बढ़नेका हुक्म दिया—हुमायूँ उस वक्त पिताकी ओरसे बदल्शाहा राज्यपाल था। बेटेको इस तरह रवाना करके बाबर स्वयं मुगोलिस्तानी राजकुमार सुल्तान वेसके साथ समरकन्दकी ओर चला। वेसके भाई शाह कुल्लीने हिसारको ले लिया। तुरसुन मुहम्मद सुल्तानने तैमिज और कबादियानपर हाथ साफ किया। जिस समय हुमायूँ इस प्रकार, कूचुनजी खानको तहम-नहस करनेमें व्यस्त था उसी समय बाबर आगरामें कूचुनजीके दूत अमीन मिर्जाकी बड़ी आवभगत कर रहा था। भोजके बाद सिरकमाश मलमलका जामा, और बहुमूल्य बटन, सोना तथा दूसरी चीजें भेंटमे पा ३१ जनवरी १५२९ ई०को उज्बेक-दूत बाबरसे विदा हुआ। दूत अमीन मिर्जाको एक खाड़ा, एक कमरबन्द, एक हाथीका अकुश तथा कई हजार तका इनाम मिला था। इसी तरह दूतकी बीबी मेहरबान खानम और उसके पुत्र पूलादको भी बाबरने भेंट-इनाम देनेमे बड़ी उदारता दिखलाई। दूतको क्या पता था, कि जिस समय पिता उसकी इतनी खातिर कर रहा है, उसी समय उसका बेटा (हुमायूँ) उज्बेकोके राज्यमे आग और तलवारका जौहर दिखला रहा है।

लेकिन इस भीषण संग्रामके खतम करनेका समय यकायक आ गया, जब कि १५३० ई०मे कूचुनजी मर गया और उसी सालके दिसम्बरमे बाबरकी प्रार्थना स्वीकृत हुई—हुमायूँ बीमारीसे बच गया, लेकिन उसके बदलेमें अल्लाने बाबरको बुला लिया।

### ३ अबूसईद खान (१५३०-३२ ई०)

कूचुनजी (अबुल्वैर-पुत्र)के राज्यकालमें ही उसके उत्तराधिकारी (कलगा) चुने गये सूर्युन्जिक तथा जानीबेग खोजा (मुहम्मद-पुत्र) मर गये, इसपर कूचुनजीके पुत्र अबूसईदको खान चुना गया। पिताकी भांति इसने भी अपनी राजधानी समरकन्दमे रक्खी। लेकिन, उज्बेक मैनिक-

शक्ति का मर्चा लक अब उवैदुल्ला था, जो खुसरो के रहता था । ईरानियों से एक बार बुरी तरह से हार खाने के बाद भी उवैदुल्ला फिर खुरासान की ओर बढ़ना चाहता था, मगर अबूमईद और दूसरे मुल्तान (राजकुमार) इससे सहमत नहीं थे । वारुद के हथियारों ने इन घुमन्तुओं की हिम्मत तोड़ दी थी । ईरान का मछलीवाला झंडा एक बार फिर सारे खुरासान पर फहराने लगा । तहमास्प ने अपने भाई बहराम मिर्जा को अपना उपराज बनाकर खुरासान का शासक बनाया । उवैदुल्ला सेना का प्रधान-सेनापति था, इसलिए उसने राय न होने पर भी १५३१ ई० में मगहद की ओर अभियान किया, लेकिन वहाँ से हार खाकर भागने के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगा । घुमन्तू टिड्डी-दल की तरह हार से भय खाकर सदा के लिये पीछे नहीं भाग सकते । १५३२ ई० में उज्बेक-सेना ने हिरात, मशहद, अम्बवाद और सज्जवार तक के सारे प्रदेश को डेढ़ साल तक लूटा-बरबाद किया । घिरावे में पड़े हिरात शहर के लोगों ने अन्नाभाव में कुत्ते-विल्लियों को खाकर खतम कर दिया । शहर आत्म-समर्पण करने की सोच रहा था, इसी समय तहमास्प को पश्चिम में उस्मानी तुर्कों ने छूटी मिल गई और वह खुरासान की ओर बढ़ा, जिस पर उवैदुल्ला लौट गया । ६३६ हि० (३ VIX १५३२-२४ VI १५३३ ई०) में अबूमईद मर गया ।

#### ४ उवैदुल्ला, महमूद-पुत्र (१५३२-४० ई०)

विजेता मुहम्मद शैबानी का भतीजा उवैदुल्ला खान बनकर और भी निरकुश हो गया । १५३५ ई० में उसने फिर खुरासान में लूट-मार करने के लिये सेना भेजी, और अगले साल खुद खुरासान की ओर बढ़ा । चार मामूली हिरात पर उसका अधिकार रहा, जिसमें उसने शियोपर बहुत अत्याचार किये । गाह तहमास्प का पूरब में ही जवर्दस्त शत्रु नहीं था, पश्चिम में उस्मान अली तुर्कों से उसका मर्प चलता रहता था, जिसमें राजनीतिके साथ-साथ शिया-सुन्नी का झगडा भी शामिल हो जाने से युद्ध का रूप बहुत भीषण होता था । जब वह अपनी अधिकांश सेना ले पूरब की ओर बढ़ता, तो पश्चिम का शत्रु प्रहार करने लगता, और जब वह पश्चिम की तरफ मुह करता, तो पूरब की ओर से प्रहार होने लगता । जब गाह तहमास्प खुरासान में उवैदुल्ला के खिलाफ सेना लेकर आया, तो उवैदुल्ला देश लौट गया । तोपो और बंदूकों के डर के मारे अब उज्बेक जमकर लड़ने की हिम्मत नहीं करते थे, लेकिन खुसरो ने लूट-मार करने के लिये वह दो-तीन बार और जाते रहे ।

इसी बीच खीवा (स्वारेज्म) में उज्बेकों का एक और स्वतंत्र राज्य कायम हो गया, जिसके कारण बड़ा गड़बड़ा फैल गई । उसमें फायदा उठा उवैदुल्ला अपने अमीरों के साथ उरगज के ऊपर बढ़ा । स्वारेज्म के राजकुमार मद्गिगलक की ओर भाग गये । उरगज पहुँचकर उवैदुल्ला ने उन्हें पकड़ने के लिये सेना भेजी और अबानेक खान अपने सारे लोगों के साथ बेजिर से उत्तर वेगातकिरी स्थान में पकड़ा गया । उवैदुल्ला ने अबानेक को उमरगाजी के हाथ में दे दिया, जिसने उसे मारकर अपने बाप की हत्या का बदला लिया । उवैदुल्ला ने स्वारेज्म को अपने पुत्र अब्दुल अजीज के हाथ में दे दिया । वहाँ के निवासी सरतो (फारसी भाषाभाषियों) और तुर्कों को उवैदुल्ला ने नहीं छोड़ा । उज्बेकों को चार भागों में बाँटकर उसने बुखारा (उवैदुल्ला), मरकन्द, ताशकन्द और हिमारे के मुल्तानों को दे दिया । लेकिन अबानेक खान का पुत्र दीन मुहम्मद अब भी अपनी रियासत देस्तन का स्वामी था । उसके पास उरगज से भी कितने ही भगोड़े आ गये थे । दीन मुहम्मद ने खीवा पर घावा कर दारोगा (राज्यपाल) और उसके आदमियों को हराकर मार दिया । हजारों का दारोगा भी जान लेकर भागा । अब्दुल अजीज की भी हिम्मत उरगज में रहने की नहीं हुई, और वह भी वहाँ से विमका । खबर सुनकर उवैदुल्ला चार हजार सेना लेकर पहुँचा, जिसके मुकाबिले के लिये दीन मुहम्मद भी अपने तीन हजार सैनिकों के साथ तैयार था । अमीरों ने मना किया, लेकिन दीन मुहम्मद ने नहीं माना । घोड़े में उतरकर उसने अपने कुर्ते पर मिट्टी फेंकते हुए कहा—“मेरे अल्लाह, मैं अपना आत्मा-प्राण तेरे हाथों में देता हूँ और अपना गरीर घर्तनों को ।” फिर उसने पीछे मुह फेरकर कहा—“मैं अपने को मरा हुआ समझता हूँ । तुममें से जिसको अपना प्राण मुझसे ज्यादा प्यारा हो, वह मेरे साथ आगे न बढ़े, जिसको नहीं वह आये ।”

यह कहकर दीन मुहम्मद फिर घोट्टेपर चढा । उसके सैनिक भी उत्साहसे भरे उसके पीछे-पीछे चले । पहली भिडतमें ही उन्होंने दुश्मनको भारी क्षति पहुचाई । दोनों उज्बेक जातिके ही लोग थे, इसलिये समझौतेकी बात चलने लगी । इसी बीच ६४६ हि० (१६ V १५३६-८ IV १५४० ई०) में अबैदुल्ला मर गया । इतिहासकार हैदरके अनुसार पिछले सौ सालोंमें अबैदुल्ला जैसा बादशाह नहीं हुआ था । वह बड़ा ही सदाचारी, नम्र, धार्मिक, सयमी, न्यायपरायण, उदार और वीर पुरुष था । उसने अपने हाथसे कई कुरानकी प्रतियां लिखीं । तुर्की-अरबी-फारसीका वह कवि तथा संगीतज्ञ था । उसके समयमें राजधानी बुखारा हुसेन मिर्जिके हिरातकी याद दिलाती थी ।

### ५ अब्दुल्ला I, कूचुनजी-पुत्र (१५४० ई०)

यह थोड़े ही समय बाद मर गया, और फिर उसका भाई गद्दीपर बैठा ।

### ६. अब्दुल्लतीफ, कूचुनजी-पुत्र (१५४०-५१ ई०)

१५२६ ई० में बलख जीतनेके बाद उसे जानीबेगके पुत्र पीर मुहम्मदके बेटेको दे दिया गया था । अब्दुल्लतीफके समय १५४७ ई० में अपने भाई हुमायूँसे विद्रोह करके बाबर-पुत्र कामरान काबुलसे बलखकी ओर भागा । पीर मुहम्मदने उसका स्वागत किया और उसे सेना देकर लौटाया । कामरानने गोरी और बकलानपर अधिकार कर लिया । इस समय पीर मुहम्मद उसके साथ था और यहीसे सेना देकर लौट गया । प्रतिद्वन्द्वी भाईकी इस तरह सहायता करनेके लिये बादशाह हुमायूँ बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने बलखके विरुद्ध अभियान किया । हुमायूँ इस वक्त अन्दराब, तालिकान होते नारीडाडेको पार हो निलवरकी सुन्दर उपत्यकामें होते बकलान पहुँचा और सेनाको ऐबकके ऊपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया—बलख-राज्यमें ऐबक एक बहुत ही उर्वर और समृद्ध इलाका है । ऐबक ले लेनेके बाद खोलम होते हुमायूँकी सेना आगे बढ़ी, लेकिन प्राकृतिक और मानवी प्रतिरोध इतने कड़े हुये, कि उसे लौटना पड़ा । हुमायूँके लौट जानेपर कामरानने बदल्शापर असफल आक्रमण किया । अब्दुल्लतीफके शासनकालमें की यही एक महत्त्वपूर्ण घटना है । ६५६ हि० (२६ दिसबर १५५१-१८ नवम्बर १५५२ ई०) में अब्दुल्लतीफ मर गया ।

### ७. नौरोज मुहम्मद, सूयुनजी-पुत्र (१५५१-५६ ई०)

उज्बेक और उरमानअली तुर्क-राज्योंके बीचमें सुन्नियोकी घृणाके पात्र सफावी शियोका राज्य था, जिनसे दोनों लड़ने रहते थे । इसके कारण दोनों सुन्नी तुर्क-शासकोंके बीचमें अब बहुत घनिष्ठता स्थापित हो चुकी थी, जिसे व्याह-शादीद्वारा भी दृढ़ करनेकी कोशिश की जाती थी । नौरोजके शासन कालमें दोनों राज्योंमें द्वंद्वोका बहुत दानादान होता रहा ।

### ८ पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५५६-६१ ई०)

पीरमुहम्मदके शासनके वारेमें यही कहा जा सकता है, कि अभी शैबानियोकी शक्तिका ह्रास होना शुरू नहीं हुआ था ।

### ९. इस्कन्दर, जानीबेग-पुत्र (१५६१-८३ ई०)

इस्कन्दरके शासनकालमें राज्यका सर्वोत्तम उमका पुत्र अब्दुल्ला था । अब्दुल्लाने १५५६ ई० में बुखाराकी शाखाको खतम कर दिया । फिर ६६८ हि० (२२ IX १५६०-१३ VII १५६१ ई०) में उसने अपने पिताको “खाकानेजहा” (दुनियाका राजा) घोषित किया । ६८६ हि० (१० III १५७८-२६ I १५७९ ई०) में उसने समरकन्दकी शाखाको भी खतम कर दिया, जिससे पहिले १५८१

ई०में बाबाजान मुल्तानपर उसने विजय प्राप्त कर ली थी। अब्दुल्ला असावारण आदमी था, इसमें सन्देह नहीं। जीजकमें समरकन्दकी ओर आनेवाले रास्तेमें जीलानउति डांडेपर एक चट्टानके ऊपर उसने एक अभिलेख खुदवाया है—“रेगिस्तानको पार करनेवालो और जलथलके यात्रियोंको मालूम होना चाहिये, कि ६७६ हि० (२६ मई १५७१-१५ अप्रैल १५७२ ई०)में खलाफतके सहायक, महाखाकान सर्वशक्तिमान् महाखान इस्कन्दरखान-पुत्र अब्दुल्लाके तीस हजार सैनिकों, और बोरका खानके पुत्रो दरवेशखान-बाबाखान आदिकी सेनाओंके बीचमें युद्ध हुआ। उनकी सेनामें सुल्तानके पचास सम्बन्धी और तुर्किस्तान-ताशकन्द-फरगाना-दशतेकिपचकके चालीस हजार योद्धा थे। तारोंके सौभाग्यसूचक समायोगसे शाहकी सेनाको विजय प्राप्त हुई। उपर्युक्त मुल्तानमें बहुत-से मारे गये, और बहुतसे बन्दी हुये। इस एक महीनेके भीतर इतना खून बहा, कि जीजक नदीके पानीके ऊपर खून तैरता रहा।”

यह स्मरण रखनेकी बात है, कि चट्टानोंपर अभिलेख खुदवानेवाले मध्य-एशियामें बहुत कम ही खान और सुल्तान हुये।

६८७ हि० (२८ II १५७६-१६ I १५८० ई०)में बाबाखानने ताशकन्द ले अपने भाई दरवेशको मार डाला। अब्दुल्लाको यह खबर खोकन्दके इलाकेमें मिली। उसने पहुँचकर ताशकन्दके पाम बाबाको हराकर भगा दिया। अब्दुल्लाको सूचना मिली, कि वह कजाकोंके बीच जाकर छिपा है। इसपर उसने उसे पकड़नेके लिये तलस और सैरामतक सेना भेजी। १५७६-८० ई०में कजाकोने यस्मी और सरवान ले लिया, फिर मरवान-मुल्तानके नेतृत्वमें बुखारातक और बादमें समरकन्दतकके इलाकेको लूटा। इसी बीच बाबाका कजाकोंके साथ झगडा हो गया और वह उनके कई मरदारोंको मार, उनके खान सिगार्डको हराकर भारी लूटके मालके साथ ताशकन्द लौटा।

बाबाने फिर अब्दुल्लाकी नींद हराकर दी और १५८१ ई०में वह उसके विरुद्ध उजकदतक पहुँचा। जब उसका डेरा कराताउमें पड़ा हुआ था, उसी समय सिगार्ड खान उसके पास आया, जिसे उसने खोजन्द शहर प्रदान किया। कजाकोंमें और घनिष्ठ मित्रता करनेके लिये बुखारामें एक बहुत बड़ा जल्मा मनाया गया, जिसमें अब्दुल्लाके पुत्र अब्दुल-मोमिन और सिगार्डके पुत्र तवक्कलने खेलमें अपनी मित्रहस्तता दिखलाई। १५८३ ई०में अब्दुल्लाने फरगाना और अन्दिजानको जीता, जिसमें कजाक तवक्कल खान उसका सहायक रहा। बाबा सुल्तानके पतनके बाद तुर्किस्तान और ताशकन्दने अब्दुल्लाकी अधीनता स्वीकार की। इसी साल पिताके मरनेपर अब्दुल्ला शैवानी-तख्तपर बैठा।

## १० अब्दुल्ला II, इस्कन्दर-पुत्र (१५८३-९६ ई०)

अब्दुल्ला अकबरका समकालीन था। बापके समयमें भी मारा राजकाज तथा दिग्विजय अब्दुल्ला ही करता रहा। अब्दुल्लाकी सबसे बड़ी इच्छा थी, मुहम्मद शैवानीके साम्राज्यकी सीमाओंतक अपने राज्यको पहुँचाना, जिसमें वह बहुत कुछ सफल भी हुआ। शैवानियोंका वह सबसे बड़ा खान था। इस्कन्दरके मरनेके वक्त वह खोजन्दमें था। वहीं शैवानी-मुल्तानोंने उसे अपना खाकान चुना, और मक्काके जमजमके पानीमें भिगोकर पवित्र किये गये मफेद नम्देके ऊपर बैठाकर उसे अपने कंधोंपर उठाया। इस प्रकार छिड़-गिम् और उसके पहलेसे चली आई नम्दारोहण (सिहामनारोहण) की रस्म अदा की गई। अमीर वहासे जमीन गये, जहामें गद्दी पानेकी खबर दी गई। अपने पिताके समयमें ही अब्दुल्लाने कजाक-मरूमूमिसे काबुलकी सीमातकके बहुतसे प्रतिद्वन्द्वियों और शत्रुओंको परास्त किया, और छोटी-छोटी रियासतोंमें बटे उज्ज्वेक-राज्यको एकताबद्ध किया था। उसके राज्यकी सीमा उत्तरमें मिर नदीमें आगेकी मरुभूमितक तथा पूरवमें काश्गर और खोतनतक थी।

दक्षिणमें अकबर और सफावी शाहके साम्राज्य उसके आगे बढ़नेमें बाधक थे, लेकिन बलख और बदखशाको उसने दिल्लीसे छीन लिया था ।

शाह तहमास्पके मरनेपर अब्दुल्लाकी शक्ति और भी अधिक बढ़ी । स्वारेज्म आपसी फूटसे अस्त-व्यस्त था, जिसका अन्त करनेवाला शाह अब्बास (१५८७-१६२९ ई०) ईरानके अत्यन्त शक्तिशाली शाहोंमेंसे था । १५८५ ई०में शाह अब्बासको उस्मानी तुर्कोंकी लड़ाईमें फसा देखकर उज्बेकोंने हिरातपर आक्रमण कर दिया और नौ महीनेके मुहासिरेके बाद उसपर अधिकार कर लिया । इस लड़ाईमें राज्यपाल अलीकुल्ली खान शामिल और कितने ही दूसरे ईरानी सेनापति काम आये । सुन्नी-उज्बेक शिष्टोंको काफ़िरोसे भी बदतर मानते थे, इसलिये उन्होंने हिरातियोंके साथ बहुत कठोर वर्ताव किया । सदियोंसे शिया-सुन्नी मुल्ला कलमकी लड़ाई लड़ रहे थे, और उनके सुल्तान अपनी तलवारों द्वारा एकको मिटाकर इस भेदको मिटाना चाहते थे । तरुण शाह अब्बास जब कजवीनसे अपनी सेना लेकर खुरासानकी ओर बढ़ा, तो अब्दुल्ला चुपकेसे मेर्व होते बुखारा लौट गया । मशहद पहुँचनेपर अब्बासको पता लगा, कि तुर्कोंने गुरजी (जार्जिया)पर आक्रमण कर दिया है । अब्बास जल्दी-जल्दी उधर लौटा, लेकिन लड़ाईमें उसकी हार हुई । इसकी खबर पाते ही अब्दुल्ला मशहदपर चढ़ दौड़ा । उसके हरावलका नेतृत्व अब्दुल-मोमिनके हाथमें था, जिसने मशहदपर भारी अत्याचार किये । अब्दुल-मोमिन बड़ा ही बर्बर, क्रूर, महत्वाकांक्षी आदमी था । वह एक बड़ी सेना लिये दीन मुहम्मदके साथ जल्दी-जल्दी आगे बढ़ा । हिरातका राज्यपाल तथा अब्दुल्लाका विश्वासपात्र सेवक कुलवावा कोकलताश भी उसके साथ था । इस सेनाने पहले नेशापोरपर आक्रमण किया । कुछ थोड़ेसे आदमी पकड़कर छोड़ दिये गये । नेशापोरको लूटकर वह शियोंके पवित्र नगर मशहदपर चढ़े—लूट-मारके भयसे बहुतसे गांवके लोग भी मशहदको सुरक्षित समझ बहा चले आये थे । इतने आदमियोंके लिये अन्न कहासे मिलता ? अकाल पड़ गया । पहले ही प्रहारमें नगरपर उज्बेकोंका अधिकार हो गया, और वहाके राज्यपाल उम्मत खान उस्ताजलूका सारा प्रयत्न व्यर्थ गया । अब्दुल-मोमिनके सैनिकोंने शहरके भीतर जाकर देखा, कि “बहुसंख्यक स्त्री-पुरुष, सत और विद्वान्, सभी इमाम रजाके रौजेके बाहरी आगनमें इस आशासे जमा हो गये हैं, कि स्थानकी पवित्रताके कारण शायद उन्हें प्राणदान मिल जाय । लेकिन, उज्बेक शिया-पवित्रस्थानको कब माननेवाले थे ? उन्होंने बिना किसी विचारके जो भी चीज सामने आई, उसे काटा और नष्ट कर दिया ।” पैगवरके नातीकी मतान इमामरजाके वंशजोंको भी उन्होंने नहीं छोड़ा—वह बेचारे अपने पूर्वज शहीदकी कब्रसे लिपटे हुये थे । कहा जाता है, अब्दुल-मोमिन स्वयं उस समय मीर अलीशेखके महलसे तमाशा देख रहा था, जब कि उसके आदमी अपनी तलवारोंको इन निरपराध स्त्री-पुरुषोंके खूनसे रंग रहे थे । न जाने कितने अच्छे-अच्छे विद्वान् और धर्मशास्त्री भी इस हत्याकांडमें मारे गये । हजारों आदमियोंके करुण क्रंदनसे भी उज्बेकोंका दिल नहीं पसीजा । सिर्फ सड़को और आगनोंको ही नहीं, बल्कि पवित्रतम स्थानों और मस्जिदोंको भी उन्होंने खूनसे रंग दिया । मशहदके हत्याकांडमें अलीके वंशजोंकी कब्रोंको भी अब्दुल मोमिन ने नहीं छोड़ा, और उन्हें तोड़-फोड़कर नष्ट कर दिया । तीन शताब्दियोंसे तीर्थयात्री और दूसरे धार्मिक लोगोंने जो मूल्यवान् भेंटें—अतिविशाल सोने और रुपयेके दीपस्तम्भ, बहुमूल्य धातुओं और रत्नोंसे जटित कवच, दुर्लभ रत्न, तथा दूसरी कितनी ही अनमोल चीजें—इमामरजाकी समाधिपर चढ़ाई थी, उन सबको विजेताओंने लूट लिया । यही नहीं, उन्होंने वहाके विशाल पुस्तकालयको भी ध्वस्त कर दिया, जिसमें पुराने सुल्तानोंके दान दिये कितने ही प्रसिद्ध कुरानके अत्यन्त सुन्दर कलापूर्ण हस्तलेख थे । “शियोंकी पुस्तकें” कहकर उन सबको घसीटकर सड़कोपर ले गये और फाड़कर उन्हें पूरी तौरसे नष्ट कर दिया । सुन्नी विजेताओंने मुर्दोंके ऊपर भी रहम नहीं किया । इमाम रजाके पास सोये शाह तहमास्पकी लाशको जलाकर उन्होंने हवामे उड़ा दिया ।

शाह अब्बास उस समय बीमार था, इसलिये तेहरानसे नहीं आ सका । जैसे ही स्वस्थ हुआ, वह तैयारी करने लगा । लेकिन अधिकांश खुरासान—हिरात, मशहद, सेरह्स, मेर्व, खाप, जाम, फूसड, गोरियान—अब्दुल्लाके हाथमें करीब-करीब उसकी मृत्युके समयतक रहा ।

१५८६ ई० में ही अब्दुल्लाको खुरामानकी ओर गया जानकर उत्तरसे कजाकोने लुटेरोके घर-को लूटनेका निश्चय किया और तबक्कल खान तथा उमके भाई इशिमके नेतृत्वमें वह अन्तर्वेदपर चढ़ आये। लूटकर जब वह रेगिस्तानकी ओर लौट रहे थे, तब अब्दुल्लाके भाई उवैदुल्लामें उनका मुकाबिला हुआ।

जिदगीभर मर्घर्ष करने हुये भी अब्दुल्लाका जीवन असफल रहा, ऊपरसे अन्तमें पुत्र अब्दुल मोमिन-के वर्तमानमें उसे और दुःखी बना दिया। उत्तरके कजाक उसे दम नहीं लेने दे रहे थे। १५९६ ई०में उनके खान तबक्कलने फिर चढ़ाई की, और ताशकन्दको लूटा, फिर ताशकन्द एवं समरकन्दके बीचमें अब्दुल्लाको बुरी तरह हराया। उधर शाह अब्बास खारेज्मके उज्बेकोसे दोस्ती कर उनकी मददसे मेवं, मगहद और हिरातको छीननेके लिये तैयार था। इस प्रकार अब्दुल्लाने अन्तमें अपनी आखोके सामने ही अपने कियेपर पानी फिरत देखा और ६ फरवरी १५९७ ई०को अर्थात् अकबरमें आठ वर्ष पहले बेटेके हाथों प्राण खोया।

## ११ अब्दुल मोमिन, अब्दुल्ला II-पुत्र (१५९६-९७ ई०)

अब्दुल्लाके मरते ही देशमें अराजकता फैल गई। पिताको मारकर तख्त लेनेकी इच्छा रखनेवाले पुत्रने गद्दी मभालने ही पहले पिताके विव्दामपात्र मेवकौको मरवाना शुरू किया, जिसके कारण दरवारी उसके खूनके प्यासे हो गये। उसे चागे और पड्यत्र ही पड्यत्र दिखाई देता था। जुलाई १५९७ ई०में गर्मीमें बचनेके लिये वह रातमें यात्रा कर रहा था। मशालची और कितने ही सवार उमके साथ थे। उरातिपा और जमीनके बीचमें एक सकरा दर्रा आया, जिसमें मशालचीके साथ सिर्फ दो सवार एक साथ गुजर सकते थे। इसी समय इस आततायीके ऊपर वाणोंकी वर्षा होने लगी। मोमिन घायल होकर गिर पड़ा, और हत्यारोने तुरन्त उसका गिर काट लिया। दूसरे दिन पीछेमें आनेवालोंने पोशाकसे उमके घड़को पहचाना। इस प्रकार छ महीना शासन करनेके बाद इस राक्षसने सचमुच ही नरकका रास्ता पकड़ा।

## १२ पीर मुहम्मद, जानीबेग-पुत्र (१५९७-९९ ई०)

अब्दुल मोमिनके मरनेपर तख्तके बहुतमें दावेदार उठ खड़े हुये, लेकिन शैबानी-वंशके अन्तिम खान बननेका मौभाग्य पीर मुहम्मदको हुआ। जुलाई १५९८ ई०में शाह अब्बासने हिरातके पास कूलेसालारमें उज्बेकोको करारी हार दी, और उनमें सब्जवार, मगहद और हिरात छीन लिया। देशकी इस अवस्थाकी खबर कजाकोको भी मिले बिना नहीं रही, और तबक्कल अपने मत्तर-अस्सी हजार सवारोंके साथ तुर्किस्तान-शहर, अक्मी, अदिजान, ताशकन्द, समरकन्दको लूटते-अधिकार करते बुगारा पहुंचा। पीर मुहम्मद पंद्रह हजार सैनिकोंके साथ नगरमें घिर गया। बारहवें दिन फाटकसे बाहर निकल उसने कजाकोको बुरी तरह हराया। लुटेरोके विशद लोग एक हो गये थे। मियानकुलके उजुनमकालमें दुश्मनोंसे फिर मुकाबला हुआ। बाकी मुहम्मद भी युद्धके आरम्भके समय भाग ले रहा था, लेकिन इसी समय खुरामानमें अब्बासद्वारा उज्बेक-सेनाके घोर पराजयकी खबर पहुंची। कजाकोसे महीनेभर केवल जब-तब झड़प करते रहनेके बाद युद्ध हुआ, जिसमें दोनोंकी बहुत क्षति हुई। तबक्कल घायल न हो जाता, तो शायद उज्बेकोका उसी समय खातमा हो जाता। तबक्कल ताशकन्द लौटकर मर गया, और एक नन्दाबन्दी शेख (मावु)ने बीचमें पड़कर कजाको और उज्बेकोमें मुलह करवा दी। बाकी मुहम्मदको समरकन्द मिला, लेकिन वह तो पीर मुहम्मदसे तख्त छीनना चाहता था। पीर मुहम्मद समरकन्दमें लड़ते वक्म मारा गया, और बाकी मुहम्मदकी इच्छा पूर्ण हुई। बाकी मुहम्मद अब्दुल्ला II की बहिन जोहरा खानम तथा जानीबेग मुल्तानका बेटा था। पीर मुहम्मदके साथ शैबानी-वंशका अन्त हुआ।



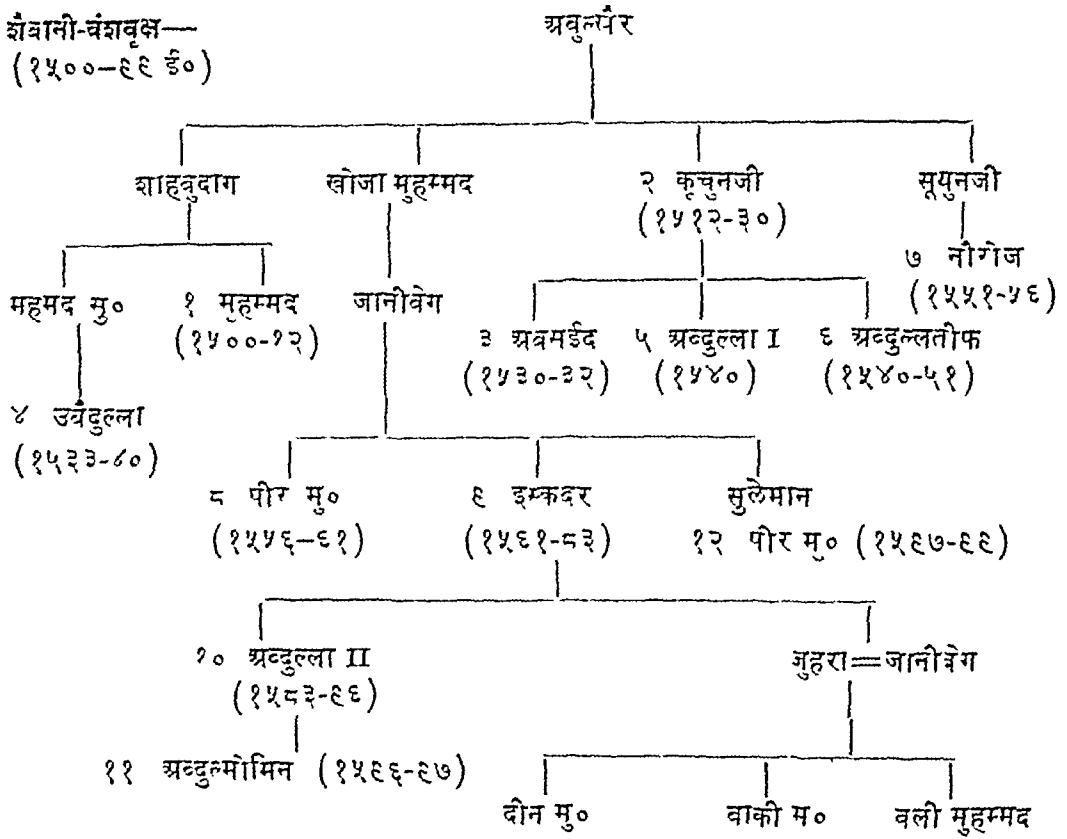
इतिहास-लेखक बेम्बरीके अनुसार शैबानियोंके कालमें पूर्वी और पश्चिमी इस्लाम पूरी तीरसे अलग हो गया, और उसने वह रूप लिया, जो उमका आज भी मौजूद है। ईरान, चीन (सिद्ध-व्याग) और हिन्दुस्तान पूर्वी इस्लामके अन्तर्गत हुये और पश्चिमके देश पश्चिमी इस्लाममें। चीन और मध्य-एशियाके मुसलमानोंमें साधु-संतों, जादूगरों और ज्योतिषियोंका बहुत ज्यादा मान था। यदा-तासी (जादूके पत्थर)से वह वायु-जल-नियंत्रण, रोगमुक्ति और युद्धमें विजय प्राप्त करना चाहते, इस्लामसे भी अधिक उसके सन्तों और सूफियोंपर विश्वास रखते थे। मंगोलोंके शासनकालमें मुठ्ठीभर मुल्लों और सूफियोंके खानदानोंने धर्मकी इजारादारी अपने हाथमें ले ली थी, जिनके सामने अत्यन्त शक्तिशाली और स्वेच्छाचारी सुल्तान भी शिर झुकानेके लिये तैयार थे। यह लोग राजा और प्रजा दोनोंके भक्तिभाजन थे—साधारण जनता समझती थी, कि उनके पास दिव्य शक्ति है। उनके प्रति सुल्तान और खान केवल भारी सम्मान ही नहीं दिखलाते थे, बल्कि अपनेको उनका तुच्छ सेवक साबित करनेकी कोशिश करते थे। मखदूम आजम मौलाना खोजकी काशानी—प्रसिद्ध खोजा अहरारका शिष्य—अपने त्याग और वैराग्यपूर्ण जीवनके लिये बहुत माननीय समझा जाता था, और अपनी दिव्य शक्तिके कारण लोगोंमें सम्मान ही नहीं भयकी दृष्टिसे भी देखा जाता था। वह २१ मर्हूम ६४६ हि० (७ मई १५४२ ई०) में मरा। उसकी समाधि देहबंदमें है, जहापर हालतक लोग भारी मख्यामें तीर्थयात्राके लिये जाते थे।

**साहित्य-संस्कृति**—गैबानी-कालमें तुर्की भाषा और साहित्यका सर्वत्र प्रचार हुआ। कितने ही कवि अब केवल तुर्की (उज्बेकी) में ही कविता करते थे, यद्यपि अन्तर्वेदके गाव-गावमें भी ताजिकोंके रहनेसे पुरानी भाषा फारसीका इतना प्रचार था, कि प्रायः सभी तुर्क स्त्री-पुरुष द्विभाषी थे। इन कवियोंमें सबसे प्रसिद्ध उज्बेक-राजकुमार मुहम्मद सालेह था, जिसके पिताको तेमूरियोंने स्वारेज्म-के राज्यसे वंचित कर दिया था वह तरुणार्द्धमें ही गैबानियोंके दरबारमें चला आया। अपने महाकाव्य “शैबानीनामा” द्वारा किसी-किसीके मतेमें वह नवाइसे भी बड़ा कवि है। इस समयके दूसरे बड़े कवि थे—अमीर अली कियातिव, प्रथम गैबानी-राजकवि मुल्ला नीरक, मुल्ला मुशफिकी (मृत्यु १५८५ ई०), काजी पायन्दा, जमीनी, वजीर। पायन्दाने कुलवावा कोकलतागकी प्रशंसामें एक काव्य लिखा, जिसमें विदीवाले अक्षरों (वे, ते, जीम, चे, खे, जाल, जे, गीन, ज्वाद, जोम, गैन, फे, काफ और नून) का प्रयोग नहीं किया। शीरी खोजा उवैदुल्लाकालीन, और खैर हाफिज [मृत्यु ६८१ हि० (१५७३-७४ ई०)] इस कालके मशहूर मगीतकार और गायक थे—खैर हाफिज अब्दुल्लाके दरबार-में था।

शैबानीकालमें खान, खानजादों तथा अमीरोंने मस्जिदों, मदरसों और रौजोंको बनानेमें होड़-सी लगा रखी थी। वजीर कोकलतागने १५२७ ई० (६३४ हि०) में समरकन्दमें अपने नामकी विशाल मस्जिद बनवाई, जिसके सगमर्मरके मेम्बर (वेदी) को कूचुनजी खानने प्रदान किया। अब्दुल्ला खानका बनवाया मदरसा बोनशेविक क्रांतिके पहलेतक मौजूद था। इसके विशाल फाटकपर कुरानकी आयते लिखी हुई हैं, जिसके एक-एक अक्षर दो फिट लम्बे हैं। अब्दुल अजीज खानने अरबोंके वक्तकी बनवाई मोगक मस्जिद (फारसी मंदिर)की मरम्मत करवाई और बुखारासे थोड़ी दूरपर अवस्थित खोजा बहाउद्दीनके सुन्दर मकबरेको बनवाया। अबसईदने समरकन्दमें एक बड़ा मदरसा बनवाया। करोडपति मीर अरबने बुखारामें एक मदरसा स्थापित किया, जिसके बारेमें हालके लेखकोंने लिखा है—“यह सारे मध्य-एशियाका सबसे अधिक धर्मस्व-मपत्ति रखनेवाला मदरसा है।”

इस समयके सुल्तानोंमें सभी जगह कवि होनेकी बड़ी लालसा थी, और उनमेंसे कुछको कविकर्ममें सफलता भी मिली। इस्माईल, तहमास्प, अब्बास फारसीके कवि थे। मुहम्मद गैबानी, उवैदुल्ला, अब्दुल्ला II भी कवि थे। बावर, हुमायूँ और अकबरने भी कविता की, जिनमें बावर तो तुर्की भाषा का आज भी एक श्रेष्ठ कवि माना जाता है।

शैबानी-वंशवृक्ष—  
(१५००-६६ ई०)



## अस्त्राखानी (१५९९--१७४७ ई०)

### १ दीन मुहम्मद (१५९८ ई०)

सुवर्ण-ओर्दूकी राजधानी सरायवरका जब व्वस्त हो गई, और जू-छिका उलुम कई टुकड़ोंमें बंट गया। उस वक्त उनके एक खानकी राजधानी वोल्गा और कास्पियनके संगमपर अस्त्राखान थी। सुवर्ण-ओर्दूके प्रसिद्ध खान कूचुक मुहम्मदका पुत्र अहमद उसका उत्तराधिकारी बना। कूचुकका दूसरा पुत्र चुवाक सुल्तान था, जिसका पुत्र मगिगलक और पीत्र यार मुहम्मद थे। जब रूसियोंने अस्त्राखानको भी छीन लिया, तो यार मुहम्मद खानने भागकर बुखारामे इस्कन्दर खानके पास शरण ली। अस्त्राखानी और शैवानी दोनों ही जू-छिके वंशज थे। इस्कन्दरने यार मुहम्मदका बहुत सम्मान किया और उसके लड़के जानीवेग सुल्तानके साथ अपनी लड़की जोहरा खानमका व्याह कर दिया। जानीवेग ९७५ हि० (८ जुलाई १५६७-२८ मई १५६८ ई०) की विजय-यात्राओमें अपने सारे अब्दुल्लाके साथ रहा। अब्दुल्लाके समय उसके भाजे दीन मुहम्मदने खुरासानके कई शहरोपर शासन किया, अन्तमें वह निसा और अवीवर्दका राज्यपाल बना। अब्दुल मोमिनने उसके पिता जानीवेगको जेलमें डाल दिया था, इसपर विद्रोह करके दीन मुहम्मदने हिरात लेनेका असफल प्रयत्न किया। अब्दुल मोमिनके मरनेके बाद ईरानी फिर खुरासानको जीतनेका प्रयत्न करने लगे। इसने भी हाथ-पैर फैलानेकी कोशिश की। अब्दुल मोमिनके बाद शहर-शहरमें खान (राजा) बनते जा रहे थे। दीन मुहम्मदने भी मक्का-मदीनासे लौटे अपने दादा सुल्तान यार मुहम्मदके नामसे खुतवा और सिक्का चलाना चाहा। मेर्वमें कासिम सुल्तानने अपना राज्य कायम किया, लेकिन जल्दी ही वह मार डाला गया। मेर्वको भी दीन मुहम्मदके छोटे भाई वली मुहम्मदने बड़े भाईके नामसे दखल कर लिया। जुलाई १५९८ ई०में नूर मुहम्मदको हराकर शाह अब्बासने हिरात ले लिया। दीन मुहम्मद हारकर भागा जा रहा था, लेकिन शाही कपड़ोंके कारण पहचाना गया और काराई घुमन्तुओने उसे मार डाला। बाकी मुहम्मदने तबकलसे लड़कर पराजित होते समय खबर दी और उसे समरकन्दका राज्य मिला।

शायद हिरातमें कुलेसालारके निर्णायक युद्धके समय ही यार मुहम्मद और जानीवेग मारे गये, यद्यपि इससे पहले ही हिरातमें यार मुहम्मदने अपनेको खान घोषित कर दिया था। दीन मुहम्मदके मरनेपर उसके स्वामिभवत नौकर खाकी यमाउलने खानम और उसके दोना बच्चों इमामकुल्ली और नादिर (नासिर)को अपने घोड़ेकी पीठपर दोनों ओर रखकर सरपट भागते हुये उनकी जान बचाई। नादिर मुहम्मदके पैरमें गोली लग गई, जिससे वह जन्मभरके लिये लगडा हो गया। बाकी मुहम्मद और वली मुहम्मद अन्तर्वेदमें थे। बाकी मुहम्मदने राज्य सभाला। इतना कहनेसे यह मालूम होगा, कि यद्यपि बाकी मुहम्मदके गद्दी सभालनेके बाद एक नये अस्त्राखानी राजवंशकी स्थापना हुई, किन्तु वस्तुतः दोनों ही राजवंश उज्बेक जातिके ही थे। सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी मुसलमान खान उज्बेकके नामसे फिचकोकी यह मज्ञा हुई, यह हम कह आये हैं। शैवानी और अस्त्राखानी ही नहीं, बल्कि दोनोंके उत्तराधिकारी तथा अन्तिम राजवंश मगीत भी उज्बेक ही था। बोल्शेविक क्रांतिने मगीत-वंशका उच्छेद करके वहा सोवियत गणराज्य कायम कर देशको उज्बेकिस्तान नाम दिया।

राजावलि—इस वंशमें निम्न खान हुये —

१ दीन मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१५६८ ई०
२ वाकी मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र, इस्कन्दर-नानी	१५६६-१६०५ "
३ वली मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र	१६०५-८ "
४ सैयद इमामकुल्ली, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६०८-४२ "
५ नादिर मुहम्मद, दीन मुहम्मद-पुत्र	१६४२-४७ "
६ अब्दुल अजीज, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६४७-८० "
७ सुभानकुल्ली, नादिर मुहम्मद-पुत्र	१६८०-१७०२ "
८ मुकीम, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७०२-७ "
९ उवैदुल्ला I, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७०७-१७ "
१० अबुल्-फैज मुहम्मद, सुभानकुल्ली-पुत्र	१७१७-४७ "
११ अब्दुल मोमिन, अबुल्-फैज-पुत्र	१७४७ "
१२ उवैदुल्ला II, अबुल्-फैज-पुत्र	१७५१ "
१३ अबुलगाजी, इब्राहीम-पुत्र इमामकुल्ली-वंशज	

## २ वाकी मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र (१५९९-१६०५ ई०)

हम बतला चुके हैं, कि कैसे दीन मुहम्मदने पहले ही खुरासानमें अपनेको स्वतन्त्र खान घोषित किया। अब्दुल मोमिनके मारे जानेके बाद उसने अन्तर्वेदकी ओर पैर बढ़ाया और वहाका शासक बन गया। वस्तुतः वाकीने ही अस्त्राखानी वंशकी नींव रखी। इसने हिसारके पहाड़ी इलाके (ताजिकिस्तान)को मर किया और इसके भाई वली मुहम्मदने बलखको ले लिया, जिसे कि पीर मुहम्मदके भाई इब्राहीमने ईरानमें आकर हथिया लिया था। इब्राहीमके गिया होनेसे लोग नाराज थे, साथ ही वह पियवकड और बहुत क्रूर भी था। उसे हटा उवैदुल्लाको बैठाया गया, जिसे वली मुहम्मदने हिमारेसे आकर भगा दिया। काराई तुर्कमानोंने उसके भाई दीन मुहम्मदको मारा था, उसका बदला लेनेके लिये वाकी मुहम्मदने १६०२ ई०में कुदुजपर हमला किया। उज्वेकोने अपने पुराने शत्रुओं (तुर्कमानों)में बड़ा ही निष्ठुर बदला लिया। बहुत-से तुर्कमान भागकर कुदुजके किलेमें बन्द हो गये। किला बहुत मजबूत था। उज्वेकोने बारूद लगाकर दीवारके एक बड़े भागको उड़ा दिया, जिसके साथ सैकड़ों तुर्कमान भी चिथटे-चिथड़े होकर उड़ गये। फिर आक्रमण करके किलेको ले उज्वेकोने किसीको जीवित बन्दी नहीं बनाया। तुर्कमानोंके काराई कवीलेको इस लड़ाईमें विन्कुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, जिसके बाद वह फिर अपनेको सभाले नहीं सके—काराई तुर्कमान शाह अब्बासके सहायक थे। उज्वेकोने आपूरगान और अन्दखूईको ले विलुक-अकचीतक देशको लूट-मारकर उजाड़ दिया। ईरानी इनके मुकाबिलेके लिये आये, लेकिन बलखके पाम बावर अब्दुलके मकबरेके नजदीक उनमें महामारी फैल गई। ऊपरमें उज्वेकोने दोनों ओरसे हमला कर दिया। शाह अब्बास बड़ी मुश्किलसे कुछ हजार आदमियोंके साथ जान बचाकर भाग सका।

१६०५ ई०में वाकी बीमार पड़ा और असाध्य रोगसे मुक्ति पानेके लिये एक प्रसिद्ध सत शोध आलिम अलीजानकी धरणमें गया। देखने उसे बहुत (आमू-दरिया) की ताजी हवा सेवन करनेकी सलाह दी। वाकी मुहम्मदको खटोलेमें लिटा नावपर ले गये। वह कई दिनोतक नदीकी हवा खाता घूमता रहा। अन्तमें रजब १०१४ हि० (१२ नवम्बर-१२ दिसम्बर १६०५ ई०) में अर्थात् अकबरकी मृत्यु-महीने रजब १०१४ हि० में मरा।

## ३ वली मुहम्मद, जानीवेग-पुत्र (१६०५-८ ई०)

यह बड़ा ही शराबी और व्यभिचारी था, ऊपरमें लोग इसके वजीर शाहवेग कोकलताशके जुल्मोंसे भी परेगान थे, हमलिये इसके भतीजे सैयद इमामकुल्लीके नेतृत्वमें विद्रोह हो गया। वली ईरानकी ओर

भागा । शाह अब्बाससे अस्सी हजार सेनाकी मदद ले वह फिर वक्षुकी ओर चला । मखदूम आजमके वशज खोजा मुहम्मद अमीनसे इमामकुल्लीको सहायता प्राप्त हुई । खोजा (सत)ने अपने सूफियोंके चोगेके ऊपर धनुष-बाण लटकाकर पहला तीर छोड़ा, फिर दुआ पढ़कर मुट्ठीभर मिट्टी शत्रुओंकी ओर फेंक दी—जिसका अर्थ था, शत्रु अधे हो जाय । तुमुल युद्ध हुआ । मामियान सरोवरके किनारे इस युद्धमें वली मुहम्मदने तख्त गवा अपनेको भतीजेके हाथमें बंदी पाया । शायद भतीजा चचाको छोड़ भी देता, लेकिन शेखका हुक्म था, इसलिये कत्ल किये बिना कैसे रह सकता था ? वली मुहम्मदके पुत्र रुस्तम और रहीम ईरान भाग गये ।

#### ४. सैयद इमामकुल्ली बहादुर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६०८-४२ ई०)

यह जहागीर और शाहजहाका समकालीन था, और भारतीय मुगल-साम्राज्यसे इसकी सीमा मिली हुई थी । जिस वक्त अब्दुल मोमिनने मशहदमें कत्लेआम किया था, उसी समय इमामरजाके वंशजोंके मुखिया अबूतालिवने दीन मुहम्मदके घोड़ेकी लगाम पकड़कर अपने परिवारके लोगोंके प्राणोंकी भिक्षा मागी । दीन मुहम्मद उनके वचानेके लिये उसी मुहल्लेमें ठहरा और उसने अबूतालिवकी बेटी जोहरा वानूसे व्याह किया । इसी जोहरा वानूसे इमालकुल्ली और नजर (नादिर मुहम्मद, नासिर) मुहम्मद पैदा हुये । यद्यपि बापकी ओरसे यह उज्ज्वेक या छिड़-गिस्के वंशज होनेका अभिमान कर सकते थे, लेकिन पैगवर मुहम्मदकी बेटेकी सत्ता होनेके कारण आगे अब अस्त्राखानी खानोंने अपने नामके साथ सैयद लगाना शुरू कर दिया । इमामकुल्लीका दीर्घकालीन शासन अन्तर्वेदकी उन्नति और समृद्धिका समय था । उसके शासनकी यह एक और भी विशेषता थी, कि इसने बिना किसी युद्ध और विजयकी लूट-पाटके अपने राज्यको खुशहाल बनाया । अपने भाई नादिर (नजर) को इसने बलखका राज्यपाल बनाकर मुगल-साम्राज्य की सीमापर रख दिया । इमामकुल्ली दृढ़ शासक होते हुये भी बड़ा ही धार्मिक, शिक्षित, सन्तसंग-प्रेमी और स्पष्ट वक्ता था । राजधानी बुखारा इस समय धन-जन, कला-सौंदर्यसे भरी फल-फूल रही थी । इमामकुल्लीका पड़ोसी शाह अब्बास शक्तिशाली होते हुये भी एक बार भारी मुहकी खा चुका था । हा, उत्तरके कजाक और कल्मक अब भी खतरनाक थे, जिसके लिये इमामकुल्लीको १६१२ ई०में कजाको और कल्मकोको हरानेके लिये सिर-दरियाके उत्तरमें अशगरा और कराताग-तक जाना पड़ा । उसने अपने इकलौते पुत्र इस्कन्दरको ताशकन्दका राज्यपाल बनाया । कुछ ही समय बाद वहां विद्रोह हो गया, जिसमें पुत्र मारा गया । विद्रोहको दवानेके लिये इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको भी बलखसे बुला लिया, और सारी सेना लेकर ताशकन्दको घेर लिया । ताशकन्दियोंने प्रतिरोध करनेका निश्चय किया । इकलौते बेटेकी मृत्युसे पागल इमामकुल्लीने शपथ कर ली थी, कि मैं तबतक हत्याकांडको बन्द नहीं करूंगा, जबतक कि ताशकन्दियोंका खून मेरी रिकावतक न पहुंच जाये । नगर सर होनेपर लूट-मार शुरू हुई । कुछ घंटोंके कत्लके बाद लोगोंने खानको बहुत समझाया, लेकिन वह तो प्रतिज्ञा कर चुका था । तब मानवरक्त-से भरे एक हीजमें घोड़ेपर चढ़कर वह खड़ा हुआ । खून रिकावतक पहुंच गया, खानकी प्रतिज्ञा पूरी हुई, और निर्मम हत्या बन्द हुई । लेकिन यह विजय स्थायी नहीं थी । कुछ ही सालों बाद कजाकोने ताशकन्दको फिर अपने हाथमें कर लिया । इमामकुल्लीने भी मघर्बको बेकार समझकर कजाकखान तुरसुनसे सुलह करके १६२१ ई०में ताशकन्दको उसके हाथमें दे दिया ।

इमामकुल्लीके ऊपर इकलौते पुत्रकी मृत्यु और ताशकन्दमें वही खूनकी नदीका, जान पड़ता है, बड़ा भारी प्रभाव पड़ा था । वह कितनी ही बार शाही लिबामको छोड़ फकीरोका चोगा पहिन बुखारामें घूमता था । उस समय उसका वजीर नजर दीवानवेगी और उसका भक्त अब्दुल वसी भी साथ रहता था । इस प्रकार वह अपनी आखी प्रजाकी दशा देखना चाहता था । कवि “तुरावी” और मुल्ला “नखली” उसके बड़े कृपापात्र थे । खान खुद भी कवि था । एक तरुण मुल्ला किसी मुन्दरीपर मुग्ध हो गया । त्योहारके लिये प्रेमिकाके पास सुन्दर पोशाक भजकर उमने अपने प्रेमका परिचय देना चाहा, लेकिन मुल्लाके पास इतना धन नहीं था । सोचा “माले-काफिरा हस्त वर-मोमिन

हलाल" (काफिरोका माल मुसलमानोंके लिये हलाल है)। उस समय क्या बोन्शेविक क्रांतिके होनेतक हिन्दू जीहरियो और महाजनोकी कितनी ही दूकानें बुखारामें थी। मुल्लाने हिन्दू जीहरीकी दूकान तोड़नेका निश्चय किया और अपने दो नौकरोंके साथ वहा पहुचकर ग्रामानीसे दरवाजेको खोल लिया। फिर रत्नोकी एक पिटारीके साथ निकलकर सड़कपर आया। डमी बीच आहुट पा हिन्दू जीहरी जाग उठा और हल्ला मचाते हुये जाकर उसने मुल्लाकी गरदन पकड़ी। उधर मशाल हाथमे लिये पहेदेदार भी पहुच गया। मुल्लाने तुरन्त मारकर मशालको गिरा दिया, और अंधेरेमें बोल उठा—“ओह, नजर दीवानबेगी, तुमने बडा मर्खतापूर्ण मजाक किया।” जवाब मिला—“आला हजरत (परमभट्टारक), मैं नही, यह अन्दुल बमी कुरजी था।” पहेरेवालेको जब मालूम हुआ, कि खानका दल भेस बदले आ पहुचा है, तो वह डरकर भाग निकला। हिन्दू जीहरीने खानसे प्रार्थना करते पहेरेवालेके कर्तव्य न पालन करनेकी शिकायत की। पूछ-ताछ करनेपर मुल्लाके प्रेम और साहसकी सारी बातका पता लग गया। खानने जीहरीके मालको लौटवा दिया, लेकिन मुल्लाकी दिक्कतोंको देखकर उसे दट न दे इतना पारितोषिक दिया, जिसमे वह अपनी प्रेमिकाको भेंट भेज सके।

१६२० ई०मे रूसी जार मिखाइल फ्योदर-पुत्र (मृत्यु १६४५ ई०)ने इमामकुल्लीके पास यह सिखलाकर अपना दूतगडल भेजा, कि किसीको भेंट-वखशीश न देना, खानके तख्तके पाम बुलानेपर ही जाना, यदि दूसरा दूत हो, तो उसके आमनके नीचा होनेपर ही अपने आसनपर बैठना। जारका दूत बुखारा पहुचा। महलके एक अफसरने जारके पत्रको लेना चाहा, लेकिन रूसी दूतने उसे देनेमे इनकार किया। जारकी ओरसे अभिनन्दन भेंट करने हुये जब जारका नाम लिया गया, तो खान उठकर खडा नही हुआ। इसपर दूतने कहा—“मभी राजागोका कायदा है, जारका नाम लेनेपर खड़े हो जानेका।” इमामकुल्लीने इस ढिठाईका जवाब नरमीसे दिया—“बहुत दिनके बाद रूसी राजदूत आया है, इसलिये मैं वैसा करना भूल गया, मेरी मशा अनादर करनेकी नही थी।”

इमामकुल्लीने जहा जारके साथ दीर्घ-सम्बन्ध स्थापित किया था, वहा उसने अपने सिंहासना-रोहणकी सूचना देनेके लिये जहागीरके पास भी अपना दूत भेजा था। रसीले जहागीरने इमाम-कुल्लीकी वेगमका भी कुशल-मगल पूछा, जो कि मुस्लिम शिष्टाचारके विरुद्ध था। लेकिन जहागीर मुस्लिम शिष्टाचारका उतना प्रेमी नही था, उसका वग मुस्लिम गरीबतसे ज्यादा छिड़-गिरी यास्साको मानता था। उसने मुस्लिम सुल्तानों और इस्लामिक रवाजोको धत्ता बत्ताते हुये अपने सिक्कोपर मूर्तिया अकित कराई थी। जहागीरको बुखाराके दूतने इतना ही जवाब दिया, कि मेरा मालिक सासारिक इश्कसे मुक्त है, वह इस दुनियाकी चीजोसे प्रेम नही करता। इसपर जहागीरने तुरन्त जवाब दिया—“तुम्हारे खानने कब इस दुनियाको देखा, जो कि उसे इतना वैराग्य हो गया ?” इमामकुल्लीका दूत वैद्य था। परिहास करनेके बाद भी जहागीरने उसे बहुत-सा मोना, पगार तथा जरीके काम किये हुये एक तम्बूको देकर विदा किया। बहुत जोर देनेपर शिकारके समय खान दूतसे मिलनेके लिये राजी हुआ। दूतने सुनहले तम्बूमे मारी भटोको सजा दिया। इमामने शिकारमे लौटते वक्त एक नजर डाली, फिर रहीम परवानेजीकी ओर मुह करके बोला—“ले जा, इस सबको हमने तुझे दे दिया।” दूसरे दिन भारतीय दूतने दरबारमें एक तलवार पेग करते हुये खानसे कहा—“अकबर आहूको दो बढ़िया तलवारे मिली थी, जिनमेंमे एकको सम्राट्ने अपने लिये रख लिया है, और दूसरेको उसने अपने भाईके पाम मित्रताके चिह्नके तौरपर भेजा है।” खानने हाथमे लेकर तलवारको मियानसे निकालना चाहा, किन्तु वह नही निकली, इसपर उसने कहा—“तुम्हारी तलवारोका निकालना बहुत मुश्किल है।”

दूतने जवाब दिया—“केवल यही ऐसी है, क्योंकि यह शात्तिकी तलवार है, अगर यह युद्धका हथियार होती, तो अपने मियानसे तुरन्त निकल पडती।”

“नखली” और “तुरावी” दोनों दरवारी कवियोंमे प्रतिद्वन्द्विता रहा करती थी। खानने उनके बारेमे हिन्दी दूतकी राय पूछी, जिमने तुरन्त जवाब दिया—“ओ खान, तुराव (मिट्टी)से ही

नखल (खजूर) उगती है।" इस तरह उसने दोनों कवियोंको प्रसन्न रखनेकी कोशिश की। जहागीर-का दूत १०३६ हि० ( २२ सितम्बर १६२६ ई०—१३ अगस्त १६२७ ई० ) में बुखारासे लौटा। इसके बाद ही जहागीर मर गया और शाहजहा गद्दीपर बैठा। मुगल बाबरके समयसे ही अपने पूर्वजोंकी भूमिकी ओर चाहभरी दृष्टिसे देखा करते थे। इसी इच्छाको पूरी करनेके लिये शाहजहा एक बड़ी सेना ले काबुलसे आगे बढ़ा। खबर पाकर इमामकुल्ली भी अपने भाई नादिर, दम भतीजों-के साथ एक बड़ी सेना ले बलख पहुँचा। सभी पैदल थे, सिर्फ इमामकुल्ली घोड़ेपर सवार था। लोग भेंट करनेके लिये आये। इमामके लिये रास्तेमें पावडे बिछा दिये गये। बड़ा स्वागत हुआ। फौजी तैयारी करते इमामकुल्लीने दादखा हाजी मभूरको दूत बनाकर शाहजहाके पास काबुल भेजा। शाहजहाने कहा—“मैं तो सिर्फ सूबोंको देखनेके लिये आया हूँ।” नादिरकी शियोसे मित्रता थी, जिससे ईरानके साथ उसका अच्छा सम्बन्ध रहा, तो भी मेवके लिये एक बार उसने प्रसफल कोशिश की। १६२१ ई०में भी नादिरने पायन्दा मिर्जाको दूत बनाकर उसके द्वारा पचास तुर्किस्तानी घोड़े मुगल-दरबारमें भेजे थे। अठतीस सालके शासनके बाद इमामकुल्लीने अपने भाई नादिरको बलखसे बुलाकर राज्य सौंप दिया। इस समय वह बीमारीके कारण ग्रन्था हो गया था। जुमाकी नमाजके बाद उमने अपने सामने भाईके नामका खुतवा पढ़वाया और फिर अन्तिम जीवन वितानेके लिये मदीनेका रास्ता लिया। सारे लोग यह दृश्य देखकर रो रहे थे।

#### ५ सैयद नादिर मुहम्मद, नाजिर, नासिर, दीन मुहम्मद-पुत्र (१६४२-४७ ई०)

नादिरके खजानेमें अपार धन था, जो आठ हजार ऊटोका भार (चालीस हजार मन) आका जाता था। उसकी घोड़सालमें आठ हजार घोड़े थे। उसके पास कीमती छाले पैदा करनेवाली अस्मी हजार कराकुल भेंडे थी, कीमती गुलाबी साटनसे भरी चार सौ सन्दूकें थी। इतनी सम्पत्ति उसे मिली थी। वह उसे वाटकर नाम कमाना चाहता था, लेकिन भाईने प्रजारजनद्वारा जितनी कीर्ति अर्जित की थी, वह उसे मिलनी संभव नहीं हुई।

नादिर-पुत्र अब्दुल अजीजने पिताके रुष्ट होनेपर उसे मनानेके लिये क्षमापत्र लिखा। दूसरा भाई सुभानकुल्ली समझाने गया। विद्रोह दवानेके लिये भेजा गया पुत्र कुतुलुक सुल्तान विद्रोह करके कुदुजके किलेमें दुर्गबद्ध हो गया। पिताकी आज्ञा पा किला सर करके सुभानने उसे मरवा डाला। इसपर नादिरने कहा, कि मैंने मारनेके लिये नहीं कहा था। सुभान महत्त्वाकांक्षी था। वह चाहता था कि मुझे “कलाखान” (महसेनापति)की पदवी प्राप्त हो। न मिलनेपर वापसे वागी हो उसने बापके खिलाफ दिल्लीके बादशाह शाहजहासे मदद मागी। शाहजहाने अपने दोनों पुत्रों मुरादबख्श और औरंगजेबको एक बड़ी सेना देकर भेजा। खूसरू सुल्तानने बलखमें प्रतिरोध करना चाहा, लेकिन उसे बन्दी बनाकर भारत भेज दिया गया। किमीने इसी बीच नादिरको बतलाया, कि हिन्दी सेना तुम्हारी मददके लिये नहीं, बल्कि बलखपर अधिकार करने आई है। इसपर नादिर रातको ही अपने खजानेको जमा करके शहूरगान और अन्दखुदकी ओर से भागकर शाह अब्बास II के पास चला गया। उसकी मा इमामरजाकी सतान थी, इसलिये अब्बासने उसका बड़ा सम्मान किया। उधर चगताई (शाहजहाकी) सेना आगे बढ़ती गई, और उसने बंधुके दक्षिणके नगरोंमें अपने शासक नियुक्त किये। सारे उज्बेक भागकर बंधुपार चले गये। दो सालतक आम् दरिया (बक्ष्) और हिन्दूकोहके बीचके प्रदेशपर शाहजहाका शासन रहा। भारत जैसे गरम मुल्कके सैनिक यहाकी सर्दिके मारे परेशान थे। मुगल इतिहासकारने लिखा है—“जो घरसे बाहर निकलते, वह ठंडा होकर मर जाते, और जो भीतर रहते, वह अपनेको गरम करनेके लिये आगके सामने झुलसते रहते।” भारतीय सेनाने, इसमें शक नहीं, हिन्दूकोह पार करके इस इलाकेको बहुत बरवाद कर दिया, जिसके कारण बलखमें अकाल पड़ गया। १०६० हि० (४ जनवरी १६५० ई०—२५ नवम्बर १६५० ई०)के जाडोमें एक खरवार (गदहेका बोल) अनाजका दाम हजार फ्लोरिन (रुपये) था। जाड़ा बहुत ही सख्त था। अन्तमें जब हिन्दी सेनाको लौटनेके लिये मजबूर होना पड़ा,

तो एक ओर हिन्दूकोह (हिंदूकुश) के ऊँचे दर्रोंकी सर्दीने भारी सस्यामे वलि लेनी शुरू की और दूसरी ओर उज्ज्वेक मैनिकोने उन्हें गिद्धकी तरह नोचना शुरू किया। हजारोंकी सस्यामे लोग रास्तेमें मर गये। अगले साल "तारीख फुकीमखानी" का लेखक जब दूत बनकर इसी रास्ते भारतकी ओर आ रहा था, तो उसने सब जगह भारतीयोंके ककालोंके ढेर देखे।

मेना लौटानेसे पहले शाहजहाने नादिरको अपना राज्य सभाल लेनेके लिये कहा। नादिर लौटा, लेकिन उसके बेटोंमें झगडा हो गया, जिसपर नाराज हो नादिरने राज्यको वाटकर\* मदीनेका रास्ता लिया। वह रास्ते ही में मर गया, पर उसकी लाश मदीनेमें उसके भाईके पाम दफनाई गई।

नादिर खानके प्रिय पुत्र कासिम सुल्तानके वारेमें इतिहासकारोंका कहना है, कि अस्त्राखानियोंमें कोई इतना बहादुर, बुद्धिमान्, उदार और साहसी नहीं हुआ। वह अच्छा कवि और सुन्दर गद्य-लेखक था। एक हजार शेरोंका उसका दीवान (कविता-संग्रह) मौजूद है, जिसमें उसने सायब इस्पहानीका अनुमरण करते बहुतसी रचनायें की हैं। "तुरावी" और "नखली" दोनों इस समयके कवि थे, इसे हम बतला आये हैं।

बुखारामे अब युरोपके नये हथियारोंका प्रचार हो चला था, लेकिन उलुगवेगके बाद विज्ञानकी ओर बढ़नेका कोई प्रयत्न नहीं हुआ। अब तो वहाँ धर्म और मुल्लोने अपना एकच्छत्र राज्य कायम कर दिया था। शैबानियोंके शासनके अन्तिम कालमें युरोपीय व्यापारी अन्धनी जैकिन्स १५५८-५९ ई० में बुखारा पहुँचा था, इससे पहले पोलो भ्रान्त-युगल तीन साल (१२६४-६७ ई०) बुखारामें रहे थे, जब कि चंगताई खानोंका राज्य था और बुखाराकी कोई प्रगति नहीं थी। बुखारा पहले भी समय-समयपर अन्तर्वेदकी राजधानी रहा, किन्तु अस्त्राखानियोंके शासनके आरम्भ होनेके साथ-साथ वह अब स्थायी राजधानी बन गया।

## ६. सैयद अब्दुल अजीज, नादिर-पुत्र (१६४७-८० ई०)

गद्दी सभालनेके बाद अब्दुल अजीजने अपने भाई बलख-शासक सुभानकुल्लीको रास्तेका काटा मझ हटाना चाहा। इस कामके लिये उसने अपने दूसरे भाई (कवि) कासिम मुहम्मदको भेजा। लेकिन कामिमको हारकर हिमागकी ओर भागना पडा, और सुभानकुल्लीको युवराज कबूल करके समझौता करना पडा। स्वारेज्म बहुत समयमें अस्त्राखानियोंके अधीन रहता चला आया था, लेकिन १६६३ ई०में अब्दुलगाजीने स्वतन्त्र होनेका निश्चय कर लिया। वह निम्न-वक्षु-उपत्यकासे बुखारियोंको भगाते हुये अन्तर्वेदके भीतर घुस आया। करमीनामें अब्दुल अजीजने उसे हराया। अब्दुलगाजीने घायलकी हालतमें नदी तैरकर अपनी जान बचाई। लेकिन उन्को एक हारसे हार माननेवाले थोड़े ही होते हैं? अब्दुलगाजीने दूसरी बार तैयारी की, और अकेले लूटते-पाटते वह बुखाराके दरवाजेतक पहुँच गया। उसका उत्तराधिकारी और पुत्र अनुशा खान और भी साहसी निकला। उसने १०७६ हि० (१४ VII १६६५-४ VI १६६६ ई०) में एक बड़ी सेना लेकर चढ़ाई की। उग वक्त अब्दुल अजीज करमीना गया हुआ था। उसकी अनुपस्थितिमें अनुशाने बुखारापर अधिकार कर लिया। अब्दुल अजीज भी कम साहसी नहीं था। वह केवल चालीस अनुयायियोंके साथ बुखाराके अर्क (किले) में घुस गया और लोगोंको युद्ध करनेके लिये तैयार किया। स्वारेज्म वालोंके सभी विश्वास हो गये और सामूहिक शक्तिके बलपर अब्दुल अजीजने अनुशाको बुरी तीरसे हराया। अब्दुल अजीज शरीरमें महाकाय था, लेकिन जूता उसके पैरोंमें चार सालके बच्चे जैसा लगता था। युद्धमें वह बड़ा ही साहसी और काममें तत्पर रहता था। अपने पूर्वजोंसे उसने भी शोखो और सूफियोंकी आदत सीख ली थी, और कितनी ही बार दूसरे सामारिक कामोंको छोड़कर एकांतमें ध्यान और भजन करने लगता। उसने भी अन्तमें अपने भाई सुभानकुल्लीको तख्त देकर मदीनेका रास्ता लिया।

\* वाटमें सुभानकुल्लीको बलख और खोजा माल्को ऊपरी-वक्षु-प्रदेश मिला।



प्रसिद्ध सुलेखक मुल्ला हाजी इसके यहाँ सात साल तक रहा, और उसने खानके लिये “हाफिज” का दीवान उतारा ।

### ७. सैयद सुभानकुल्ली, नादिर-पुत्र (१६८०-१७०२ ई०)

गद्दीपर बैठनेके बाद इसने अपने पुत्र इस्कन्दरको “कलाखान” बनाया, लेकिन दो वर्ष बाद उसके भाई मसूरने जहर देकर उसे मरवा दिया । पिताने फिर तीसरे पुत्र अब्दुल्लाको बनाया, उसे भी दूसरे बेटेने कत्ल करवा दिया । बेटेके इस विद्रोहसे वह बहुत परेशान था । उसके मंत्री मुकीम खानने व्यापारियों और कारीगरोंपर भारी टैक्स लगाकर चीन और यूरोपके कारीगरोंद्वारा बनाई सुन्दर कलाकी चीजों और गोटेवाले मखमल लिये । चार महीने बाद वह भी पड़्यत्रका शिकार हुआ । फिर चौथे पुत्र मसूरको राज्यपाल बनाया ।

इसी समय खीवासे भी झगडा उठ खडा हुआ । खीवाके अमीरने १०६५ हि० (२० XII १६८३-६ XI १६८४ ई०)में बुखारापर चढाई की । सुभानकुल्लीके सेनापति मुहम्मद बीने उसे मार भगाया, लेकिन दूसरे साल फिर उसने आक्रमण किया । इसके बाद ११०० हि० (२६ X १६८८-१६ IX १६८९ ई०)में खीवाका खान बुखाराके दरवाजेतक पहुच आया था । अब भी मुहम्मद बीने उसे बुरी तरहसे हराकर पीछे भगाया । कुछ समयके लिये खीवाने सुभानकुल्लीकी अधीनता भी स्वीकार की ।

ख्वारेज्मका खान अनुशा बडा शक्तिशाली शासक था । उसे भगानेमें मदद देनेके लिये सुभानकुल्लीने अपने बेटे सादिकको बुलाया, लेकिन उस वक्त उसके शासित इलाके (बलख)में भी भीतरी-बाहरी झगडे थे, इसलिये वह वहाँ लौट गया । इस बेहुक्मीके लिये सुभानने अपने बेटेको दड देना चाहा, इसपर उसने बगावतका झडा खडा कर दिया । उसने इससे पहले अपने दो भाइयों अब्दुल गनी और अब्दुल कयूमको मारकर औरगजेबके पास मैत्री करनेका प्रस्ताव किया । यह खबर सुनकर १६८५ ई०में सुभानकुल्ली अपने पुत्रके विरुद्ध खानाबाद पहुचा, जहासे उसने बहुत स्नेहपूर्ण पत्र भेजकर उसे क्षमा कर देनेका वचन दिया, किन्तु जब पुत्र आया, तो उसके पैरोमें बेड़ी डलवा कालकोठरीमें बंद कर दिया, जहा वह तीन महीने बाद (१६८६ ई०में) मर गया ।

इस समय तुखारिस्तानके दो कबीलो मेमना-अब्दखुदवाले मिंग, और बलखके पासके क्पिचकोमें बडी लडाई थी । सुभानकुल्लीने मशहदकी तीर्थयात्रा करनेकी सोची । इसी वक्त खीवाके खान अनुशाके बुखाराकी ओर लूटपाट करनेकी खबर आई । सुभानकुल्ली आया और उसके सेनापति मुहम्मद बीने खीवाकी सेनाको बुरी तरह हराया । अनुशा अपने ही लोगोद्वारा मारा गया, और उसका पुत्र एरेग सुल्तान ख्वारेज्मकी गद्दीपर बैठा ।

औरगजेबको दिये वचनके अनुसार सुभानकुल्लीने महमूद जान बीके नेतृत्वमें खुरासानपर एक सेना भेजी, जो देशको लूटकर बहुतसे स्त्री-वच्चोको बंदी बना लौट आई । इसी बीचमें एरेंगकी सेनाने फिर बुखारापर घावा किया । दस दिनतक बुखारावालोंने मुकाबिला किया, लेकिन जबतक बदश्शा-बलखका राज्यपाल महमूद बी अतालीक नहीं पहुचा, तबतक ख्वारेज्मियोंको दबाया नहीं जा सका । अतालीकके आनेपर ख्वारेज्मियोंकी हार हुई और खीवाके आदमियोंने पड़्यत्र करके एरेंग खानको मार डाला । सुभानका शासन खीवावालोंने स्वीकार किया । १६८७ ई०में वहाँ उसके नामका खुतवा और सिक्का चला और सुभानने शाहनियाज इशिक आकाको वहाँका राज्यपाल नियुक्त किया । सुभानका तुर्कीके सुल्तान अहमद II (१६९१-९५ ई०)के साथ भी दौत्य-मवव था, जिसके पास प्रशंसा करते हुये उसने अपने पत्रमें लिखा था—“फ्रेक काफिरो और अभागे अर्धामियों (किजिलवासो) को भूतलसे नष्ट कर देने-जैसे अल्लाहके महान् काममें आप लगे हैं ।” मुस्लिम जगत्में इस समय बुखाराका नाम बडे गौरवसे लिया जाता था । औरगजेबने सुभानकुल्लीके पाम दूतके साथ एक हाथी और कितनी ही और मृत्यवान् भेडे भेजी । तुर्कीका सुल्तान अहमद II उसे प्रशंसापूर्ण पत्र लिखते समय “भाई”के नामसे संबोधित करना नहीं भूलता था ।

मुभानकुल्लीको पटने-लिखनेका भी शौक था। उसने ग्रीक-चिकित्सकों—गैलन और हिप्पोक्रेत— तथा वूअली मेनाकी पुस्तकोंके आधारपर तुर्की भाषामें वैद्यकपर एक पुस्तक लिखी, जिसमें रोगमुक्तिके एक बड़े साधन गडा-ताबीजको लिखना वह नहीं भूला।

अस्सी सालकी उमर हो जानेपर उसने अपने पुत्र मुकीमको बलवसे बुलाकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, और १११४ हि० (२८ V १७०२-१८ IV १७०३ ई०) में मर गया।

### ८ मुकीम, मुभानकुल्ली-पुत्र (१७०२-७ ई०)

मुकीम खानको गद्दी सभालते ही अपने बड़े भाई उवैदुल्लाके विरोधका सामना करना पड़ा। मगीत कबीरेका शक्तिशाली सरदार रहीम बी बड़े भाईका समर्थक था, इसलिय पाच सालतकके बड़े संघर्षके बाद मुकीमको अपने हाथमें शक्ति देनेमें सफलता मिली।

### ९ उवैदुल्ला I, मुभानकुल्ली-पुत्र (१७०७-१७ ई०)

अब अस्त्राखानी वधमें भी गुडिया मुल्तान होने लगे। उवैदुल्ला, मगीत-सरदार रहीम बीके हाथ-का कठपुतली था।

१११४ हि० (१७ V १७०३-८ IV १७०४ ई०)में ककुरत कबीलेवालोंने उवैदुल्लाके शहर खानाबादपर आक्रमण किया। अतालीक महमूद बी उनमें लड़ने गया, जिसमें उसका भाई अव्दुल्ला मारा गया। महमूद बीने इस खतरनाक कबीलेको पूरी तौरसे दंड देनेके लिये आज्ञा मागी, क्योंकि उन्होंने वधुकी भूमिमें लूट-मार मचा रखी थी। मुकीम खानकी आज्ञा पा महमूद बी जल्दी-जल्दी कूच करने हुये तीन दिनमें कवादियान निकटपर पहुँचा, जिये कि ककुरतोंके सहायक दुश्मन कबीलेने दण्ड कर रक्खा था। महमूद बीके सामने उन्होंने आत्मसमर्पण किया। कवादियानमें एक मेना खान महमूद बी ककुरतोंके विरुद्ध चला, जो अपने डेरे और चीज-वस्तुओंको छोड़कर भाग गये। महमूदने बहुतोंको मारा, लेकिन दुश्मनोंके पामीरके पहाड़ोंमें भागकर छिप जानेपर पीछा करना आसान नहीं था। अतालीक महमूद बीने वन ले लटकों-वच्चोंको छोड़ दिया। फिर उसने तगि-दीवान और वदे-हम्मकी और उनका पीछा किया और ककाई किलेमें डेरा डाल चारों ओर सेना भेजकर ककुरत कबीलेको नष्टप्राय कर दिया। जब वह बलब लौटा, तो मुकीमने उसे और उसके नायियोंको बहुत मृत्यवान् खिलअत तथा दूसरी भेंटें प्रदान की।

### १० अवुल्फैज, मुभानकुल्ली-पुत्र (१७१७-४७ ई०)

उवैदुल्ला खान अतालीक रहीम बीमें-जगड पड़ा, जिसके लिये उसे अपने प्राणोंमें हाथ धोना पड़ा। रहीमने उसका जगह अवुल्फैजको खान बनाया। उज्बेकोंने उसके समय भी खुरामानपर आक्रमण करना जारी रक्खा। ऐसे ही एक आक्रमणमें उन्होंने नादिर (पीछे दिल्ली लूटनेवाले महान् विजेता नादिरशाह)का पकड़ लिया था। १७१८ ई०में उज्बेकोंने अब्दाली-अफगानोंके सरदार आज्ञादुल्लामें मेल करके खुरामानको लूटा। मेके-कुल्ली खानके अग्रीन तीस हजार ईरानी मेना आई, जिनमें खुरामानमें बारह हजार उज्बेक-सेनाको हराया, लेकिन उसे खुद उज्बेकोंके मित्र अफगानोंसे हारना पड़ा।

१७३६ ई०में ईरानी सेनापति नादिरशाहने गुरजी (जाजिया)में उसमानी तुर्कोंको बुरी तरहसे हराकर उत्तर-पूर्वकी ओर नजर फेरी, और उसके पुत्र रजाकुल्ली खानने अवुल्फैजकी सेनापर आक्रमण किया, लेकिन उसी समय इनमें खीवामें अपने उज्बेक भाइयोंकी सहायताके लिये आ गया, जिनसे उनकी जान बच गई।

१२३६-३८ ई०में नादिरने कपारका मुहासिर करने समय अपने पुत्र रजाकुल्लीका वादगियों और मरचा (मरवेचकों)के रास्ते अफगानोंके दोस्त अमीरदादा (अन्दखुद)के खिलाफ

भेजा । पड़ोसी घुमन्तुओने अलीमरदाका साथ छोड़ दिया और रजाकुल्लीने उसे बन्दी बनाकर वापके पास भेज दिया । रजाकुल्लीने गापूरगान और अबसी ले बलखको भी जीत लिया, फिर वक्षुपार हो अबुल्फैजकी शक्तिको नष्ट करना चाहा, लेकिन इसी समय ख्वारेज्मके खान इलवर्सने आकर फिर अपने भाई उज्वेकोको बचा लिया । हार खानेके बाद नादिरने रजाकुल्लीको इस वहानेसे बुला लिया—‘उच्च तुर्कमान कुलो तथा छिड़-गिस् खानकी सतानोके पैतृक-देशोंपर हाथ नहीं मारना चाहिये ।’—यह अगूर खट्टे-जैसी बात थी ।

नादिर दिल्ली लूटनेके लिये चला गया और लौटते समय पेशावरमे उसे अबुल्फैजका पत्र मिला, जिसमे लिखा था—“मैं पुराने वंशकी अन्तिम सतान हू । मैं तुम्हारे जैसे शक्तिशाली बादशाहका विरोध करने की काफी शक्ति नहीं रखता, इसीलिये मैं अलग रहकर तुम्हारी भलाईके लिये दुआ करता रहता हू । तो भी, यदि तुम मुलाकात करके मुझे सम्मानित करना चाहते हो, तो मैं एक अतिथिके तौरपर तुम्हारा उचित सत्कार करूंगा ।” अबुल्फैजने अपने दोस्त खीवाके खानको भी वैसा ही करनेको कहा । लेकिन नादिरशाहने इस चापलूसीभरी बातको बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखा । दिल्लीसे तीन सौ हाथियो, मोनी-हीरा-जटित तम्बू, बहुत-सी सम्पत्ति और ग्राहजहाके प्रसिद्ध सिंहासन तख्त-ताऊसके साथ लौटकर नादिर कुछ दिनों हिरातके पूर्वके पहाड़ो (कोहिस्तान) मे ठहरा । यहीसे उसने रूसी साम्राज्ञी एलिजावेथ (१७४१-६१ ई०) तथा अबुल्फैजके पास कुछ भेटे भेजी ।

नादिरने अब इलवर्सके सत्यानाश करनेका निश्चय किया । वह बुखाराके सीमान्तपर वक्षुतटके करकी स्थानमे पहुँचा, जहापर अस्त्राखानियोका सर्वेसर्वा रहीम वी भेंट लिये उपस्थित था । वहासे नादिर चारजूय गया । तीन दिनमे वक्षुपर नावोका पुल बनवाकर बहुतसी सेनाको खजानेकी रक्षाके लिये छोड़ वह बुखारासे एक मजिल पहले कराकुलमे पहुँचा । अबुल्फैजने सुन्दर अरब घोड़ोकी भेंट लिये अपने अमीरो और मुत्लाओके साथ स्वागत किया । नादिरशाहने खानको बैठनेके लिये स्थान देते उसे “शाह” के नामसे सम्बोधित किया । अबुल्फैजने अपनी बेटीको नादिरशाहसे व्याहा और नादिरने अपनी बहिनको अबुल्फैजके भतीजेके लिये दिया । रहीम वीको नादिरशाहने खानकी उपाधि देकर छ सौ तुर्कसेनाका नायक बनाया । इस तरह बुखाराको अपने अधीन कर वह खीवाकी ओर बढ़ा । इलवर्सने अधीनता स्वीकार करानेके लिये आये नादिरके दूतको मरवा दिया था । नादिर अब उसके ऊपर चढ़ा । इलवर्स खानकाहके किलेमे घिर गया । तीन दिनकी गोलाबारीके बाद इलवर्सने अपनेको नादिरके रहमपर छोड़ दिया, और खूनखार नादिरने उन्तीस प्रधान अफसरोंके साथ उसे कत्ल करवा दिया । चारजूय लौटकर नादिरने अपनी नव-विवाहिता वीवीको उसके पिता-के पास भेज दिया । मेर्वके रास्ते जब वह खुरासानमे पहुँचा, तो वही २३ जून १७४७ ई०को उसके एक अनुचरने उसे मार डाला ।

नादिरशाहकी मृत्युकी खबर पाकर अब रहीम वीने अबुल्फैजको गद्दीपर बैठाये रखनेकी जरूरत नहीं समझी, और उसे पैमनारमें मीर अरबके मदरसेमें कैद कर दिया । ईरानी इसपर क्षुब्ध हुये, तो रहीमने कहा—“मैं तो मामूली उज्वक हू । नादिरशाहने तो न जाने कितने बड़े-बड़े खानदानी राजाओको लूटा-मारा ।” ईरानी सेना जब रहीम खानको घेरनेका मसूवा बाधने लगी, तो रहीमने गिलजई अफगानोका कान भरा—नादिरने तुम्हारे देश कन्धारको अब्दालियोके हाथमे दे उन्हे भूमि, स्त्री और बेतन देनेका वचन दिया है । उन्होने उसकी बात मान ली । रहीम वीने उसी रात अबुल्फैजको मार डाला । दूसरे दिन ईरानियोने रहीम वीसे सुलह कर ली । अपने तोपखानो, तम्बूओ और रसदके सामानको छोड़ जानेके लिये रहीम वीने उन्हें अच्छी भेंट देकर देश लौट जानेकी छुट्टी दे दी । इस प्रकार कुछ ही महीनोमें रहीम वीने ईरानियोके प्रभुत्वको बुखारासे खतम कर दिया ।

## ११ सैयद अब्दुल् मोमिन मुहम्मद, अबुल्फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अबुल्फैजको मारकर अभी रहीम वी सीवे गद्दीपर बैठनेके वारेमें निश्चय नहीं कर पाया था । उसने अपने दामाद तथा निहत खानके पुत्र अब्दुल् मोमिनको गद्दीपर बैठा दिया । एक दिन मीठे खरबूजे कपडेसे ढाककर खानके पास आये थे । बीबीने पूछा—“क्या है ?” उसने जवाब दिया—“तुम्हारे बापका शिर है, जिसने मेरे बापको मारकर देशपर अधिकार कर लिया है ।” बीबीने यह बात बापसे कह दी और रहीमने अब्दुल् मोमिनको कुयेमें ढकेलकर मरवा दिया ।

## १२ सैयद उवैदुल्ला II, अबुल्फैज-पुत्र (१७४७ ई०)

अफगान—अफगानोंका उत्कर्ष इसी समय होने लगा । महमूद वीके समय सुलेमान पर्वत-श्रेणीमें उनका एक छोटा-सा कबीला था, जिसने अपनी शक्ति बढ़ाते-बढ़ाते एक समय वधुसे सिन्ध-तटतककी भूमि ले ली । जातिकी तौरपर सिन्ध-तटतक अब भी पख्तून (अफगान) रहते हैं, लेकिन पश्चिममें काबुलके पासकी कोहदामन-उपत्यकासे ही ताजिकों, फिर हजारों और अन्तमें उज्बेकोंके इलाके आ जाते हैं । तो भी वधु (आम्)के तटतक अब भी अफगानिस्तानकी राज्यसीमा है । १८वीं सदीके आरम्भमें अर्थात् औरंगजेब और उसके कुछ उत्तराधिकारियोंके समयतक उज्बेकोंसे बचनेके लिये अफगान भारत और ईरानके वादगाहोंकी प्रजा बनकर उन्हें कर देते थे । लेकिन जब सफावी-वश (१४६६-१७२२ ई०)का सितारा डूब गया, तो गिलजई कबीलेके सरदार महमूदके नेतृत्वमें अफगानोंने अस्पृहानतकपर आक्रमण करनेका प्रयत्न किया, जहासे नादिरने उन्हें मार भगाया । इस अन्तिम एसियाई महान् विजेताके पतन, भारतीय “मुगल”-साम्राज्यके क्षीण होने एवं उत्तरमें बुखाराके उज्बेकोंमें फैली गडबडीसे फायदा उठाकर अफगानोंने वधु और मिघके बीचके नादिरके जीते हुये देशको हड़प लिया । अहमदशाह दुरानी (अफगान-सरदार)ने नादिर-वशज तथा तेमूरके पाँच शाहसुख मिजसि मेल करके ११६६ हि० (८ XI १७५२-२६ IX १७५३ ई०) में वधुसे दक्षिणवाले इलाकोंको बुखारासे छीन लिया, जिसमें मैमना, अन्दखूई, आकचा, शापूरगान, जेरपुल, खुल्म, बलख, बदरशा और वामियान अवस्थित है । विजेता अफगान सेनापति वेगीखान पीछे सदर-आजम अहमदका उत्तराधिकारी बना । १२०३ हि० (२ X १७८८-२३ VIII १७८९ ई०) में तेमूरशाहको बहावलपुरके अभियानमें फसा देख उज्बेकोंने वधु पार हो अपने बहुतसे इलाकोंको फिर ले लिया । १२०८ हि० (६ VIII १७९३-३० VI १७९४ ई०) में तेमूरशाह मर गया, जिसकी जगहपर उसका पुत्र शाहजमा काबुलकी गद्दीपर बैठा । इसीके समय बुखाराके मगीत अमीर मासूमने हमला किया, और बलख घिरा रहा । शाहजमा उस समय भारत और खुरासानके अभियानोंमें व्यस्त था, किन्तु जब उससे उसने छट्टी पा ली, तो मासूमने लड़नेकी जगह उससे सुलह करना ही अच्छा समझा । शाहजमाके प्रतिद्वन्द्वी भाई शाह महमूदको अमीर मासूमने १२१४ हि० (५ VI १७९६-२६ IV १८०० ई०)में बुखारामें शरण दी ।

वेगीखानको वधुके दक्षिणवाले प्रदेशके जीतनेके उपलक्षमें सदर-आजमकी उपाधि मिली । अमीर मासूम और वेगीखान मगीती अमीर शाह मुरादकी भी उपाधि थी, जो कि रहीम वीका भतीजा था ।

अस्त्राखानी कालकी इमारतोंमें मदरसा-शेरदिल भी है, जो १६१० ई०में बना था ।

## १३ सैयद अबुल्गाजी, इब्राहीम-पुत्र (१७४७ ई०)

रहीम वीके हाथका यह अन्तिम अस्त्राखानी कठपुतली खान था, जिसके बाद रहीमने स्वयं गद्दी सम्भाल ली ।

अस्त्राखानी-वंशवृक्ष—  
(१५१५-१७४७ ई०)

इस्कन्दर (शैवानी)

जुहरा = जानीवेग

१ दीन मु०  
(१५६८)

२ बाकी मु०  
(१५६६-१६०५)

३ वली मु०  
(१६०५-८)

४. इमामकुल्ली (१६०८-४२)

५ नादिर मु० (१६४२-४७)

रजव मु०

६ अब्दुलअजीज  
(१७४७-८०)

७ सुभानकुल्ली  
(१६८०-१७०२)

खुदायार अतालीक

इब्राहीम

१३ अबुल्गाजी  
(१७४७)

८ उवैदुल्ला I  
(१७०७-१७)

८ मुकीम  
(१७०२-७)

१० अबुल्फैज  
(१७१४-४७)

दानियालबी

११ अब्दुल् मोमिन  
(१७४७)

१२ उवैदुल्ला II  
(१७४७)

शम्शवानू = शाहमुराद

## खीवा-खान

(१५१५-१७१४ ई०)

ख्वारेज्म अब अपनी राजधानी खीवाके नामसे प्रसिद्ध होने लगा था। ख्वारेज्मकी भूमि पश्चिममें कास्पियन और दक्षिणमें खुरामानसे अलग करनेवाले रेगिस्तान कराकुम और पूर्वमें बुखारासे अलग करनेवाले रेगिस्तान किजिलकुममें घिरी हुई वालुका-समुद्रमें द्वीपकी तरह है—उत्तरमें अराल समुद्रके दोनों तरफ भी मरुभूमि है। इस अपार वालुका-रागिके भीतर रहने भी ख्वारेज्म हमेशासे बड़ा ही उर्वर और समृद्ध देश, तथा युरोपके साथके व्यापारका केंद्र रहा। रेगिस्तानोंके कारण ही दक्षिण और पूर्वके राज्योंकी अपेक्षा इसका सम्बन्ध वोल्गा-उपत्यकासे अधिक रहा। सदिशतक जू-छि उलुमने इसपर शासन किया। बहुत पीछे सफावियोंने मौका पाकर खीवाको अपने हाथमें कर लिया। लेकिन, जब उज्बेकोने मुहम्मद शैवानीके नेतृत्वमें अन्तर्वेदको जीता, तबसे उज्बेकोकी ही प्रधानता खीवापर भी हो गई। १५१० ई०में शैवानीको हराकर गाह इस्माईलने ख्वारेज्मको बाटकर वहां अपने तीन राज्यपाल नियुक्त किये—(१) खीवा-हजारास्प, (२) उरगज, (३) वेसिर (वेजिर)। ख्वारेज्ममें सुन्नी धर्मकी प्रधानता थी, और सफावियोंने गिया-धर्मको राजधर्म घोषित किया था। इससे फायदा उठा उमर गाजीने गियोंके विरुद्ध ख्वारेज्मियोंको उभाड़ना शुरू किया और दो साल बाद ही हुशामुद्दीन कतल नामक एक धार्मिक नेताने वेमिरके लोगोंको समझाकर उज्बेक खान वरकाके पुत्र इलवर्मको लाकर गद्दीपर बैठा दिया।

वरका खान जू-छि-पुत्र शैवानके प्रपौत्र पूलाद खानके पुत्र अरवशाहकी सत्तानीमें से था। अबुल्खैरके दादा इब्राहीम अंगलानका भाई यही अरवशाह सुवर्ण-ओर्दूके छिन्न-भिन्न टुकड़ोंमेंसे एकका खान था—अरवशाह और इब्राहीम दोनोंने वापकी सम्पत्तिको आपसमें बांट लिया, इस प्रकार अरवशाह भी एक छोटाना खान (राजा) बन गया। इब्राहीमके पोते अबुल्खैरने अपनी शक्ति कितनी बढ़ाई, इसका वर्णन हम तेमूरी-वशके वर्णनमें कर आये हैं। अरवशाहके बेटे हाजी तुली (तुगलक हाजी) का एक ही पुत्र तेमूरशाह था, जो कि कलमकोके युद्धमें मारा गया। उइगुरोके सरदारने तेमूर-शेखकी शानसे विदाई देने समय पूछा, तो खानमने कहा—“मुझे तीन महीनेका गर्भ है।” इसपर उइगुर घुमन्तू थम गये। यह खबर पाकर कुछ दूर चले गये नेमन कबीलेवाले भी ठहरकर बच्चेके पैदा होनेकी प्रतीक्षा करने लगे। छिन्न-गिम्के पवित्र खूनकी इतनी महिमा थी, कि अपने भावी खानकी आगाममें उन्होंने अपने लाखों पशु-प्राणियोंके साथ वहां ठहर जाना आवश्यक समझा। छ महीने बाद खानको बच्चा पैदा हुआ, जिसका नाम यादगार रक्खा गया। उइगुरोने दूसरे कबीलोंके पास मयूनुजी (भेट) भेजनेके लिये न्योता भेजा। नेमन काला घोड़ा भेजकर यादगारके ओर्दूमें लौट आये। उनके आनेपर माने गोदमें ले वापके तम्बूमें खानके आसनपर बच्चेको बिठा दिया। उइगुरोने अधिक सम्मान दिखलानेके लिये अपने स्थानको खानके दरबारमें नेमनोंको दे दिया। इसी तरह और भी कितने ही कबीले खबर पाकर अपने खानके पास लौट आये, लेकिन उइगुर और नेमन यही दोनों उज्बेक कबीले खानके कराची (विपत-सपत्तके साथी) रहे।

बड़ा ही यादगारने अपने उलुमका अच्छा नेतृत्व किया। उसके चार पुत्र हुये—वरका (वेरेका), अमीन, अमीनक और अलक। १५वीं सदीका समय था, लेकिन अभी भी मंगोल भाषा विल्कुल विस्मृत नहीं हुई थी, यह खानजादोंके नामसे पता लगता है। अमीन अरबी नहीं मंगोल-भाषाका शब्द है, जिसे अरबीमें जान, फारसीमें होश, और उज्बेकी तुर्कीमें तिन कहते हैं। “शैवानीनामा”में चारों पुत्रोंको वरका, अबलक, अवका और इलवानेक कहा गया है। वरका शरीरमें बहुत ही शक्ति-

शाली था। उसके समयमें अबुल्खैर दस्ते-किपचकका सबसे शक्तिशाली खान था। उसने १४५५ ई०में वरकाके नेतृत्वमें एक सेना बुखाराके खान अब्दुल्लतीफके पुत्रकी मददके लिये भेजी। उज्बेक अपने सहयोगी बुखारियोंसे झगड पडे, और सोगद इलाकेके लूटके मालको ऊटोपर लादे लौट गये। कुछ समय बाद दो नोगाई खानों मूसावेग और कुजाश मिजकि वीचमें लडाई हो गई। कुजाशके जीतनेपर मूसाने वरकासे सहायता मागी—नोगाई-वंश ज्यादा सम्माननीय समझा जाता था। वरकाने इस शर्तपर सहायता देनी स्वीकर की, कि मेरा पिता यादगार खान बनाया जाये और मूसा उसका प्रधान वेक (अमीर) बने। मूसाने स्वीकार किया। सफलताके बाद यादगारको सफेद नम्देके ऊपर उठाकर बाकायदा खान घोषित किया गया। यादगार खान अभियानपर चला। उसके हरावलका नायक मूसावेग था। जाडेके दिन थे। जमीन बर्फसे ढँकी थी। घास-चारेका ठिकाना नहीं था। घोडे दुबले होते गये और रसद खतम हो गई। लौट चलनेकी बात कहनेपर वरकाने इन्कार कर दिया। एक पहाडीपर चढकर देखा, तो (उश्तुर्त) के परे एक उपत्यकामें कुजाश मिजकि तम्बू दिखाई पडे। वरकाने तुरन्त आक्रमण कर दिया। कुजाश पकडकर मारा गया, और उसके डेरे लूट लिये गये। वरका सुल्तानने कुजाशकी लडकी मलाई खानजादाके साथ व्याह किया। इस घटनाके कुछ ही समय बाद यादगार मर गया। अबुल्खैरकी मृत्यु भी इससे थोडा ही पहले हुई थी। अबुल्खैरकी मृत्युके बाद उसके उज्बेक जहा-तहा बिखर गये। उज्बेक कहावत है—“अगर तुम दुश्मनको अपने बापके घरकी ओर दौडते देखो, तो तुम्हें उसके साथ होकर लूटमें भागीदार बनना चाहिये।” वरका भला अबुल्खैरके घन और शक्तिकी लूटमें क्यों पीछे रहता ?

कुछ सालो बाद अबुल्खैरका पौत्र प्रसिद्ध विजेता मुहम्मद शैवानीका डेरा निम्न सिर-उपत्यकामें वरका सुल्तानके पास पडा था। उसने अपने आदमियोंको हुक्म दिया—“रातको घोडोपर चढकर जाओ, और सूर्योदयके वक्त वरकाके तम्बूपर टूट पडो, दूसरी किसी चीजका ध्यान न करके सिर्फ उसको पकड लाओ।” वरका अपने तम्बूमें था। उसने घोडेके टापकी आवाज सुनी, और उमी समय कंधेपर एक समूरी चोगा डालकर नगे पैर सरकडेके जगलोमें घुस गया। बर्फ पडी हुई थी। एक सरकडेने उसके पैरको धायल कर दिया, लेकिन वह उसकी परवा न कर सिर-दरियाके किनारे उगनेवाले उन्ही सरकडोके घने जगलमें छिपा रहा। शैवानीके आदमी इधर-उधर पूछ-ताछ करने लगे, जिसपर उइगुर कवीलेके एक ईनक (सरदार) मुगाने कह दिया, कि मैं ही वरका हू। उसे पकडकर मुहम्मद शैवानीके पास ले गये। शैवानी वरकाको अच्छी तरह पहचानता था। उसने मुगासे पूछा, कि तुमने झूठ क्यों कहा। इसपर मुगाने जवाब दिया—“मैंने उसका बहुत नमक खाया है। मैं उसकी विपत्ति-सपत्तिमें साथी रहा हू। मैंने सोचा, यदि मैं उसका पीछा करनेवालोमेंसे कुछको इस तरह फसा रखूँ, तो उसे भागनेका अच्छा मौका मिलेगा। वाकी, अब जो तुम्हारी मर्जी हो, मेरे साथ करो।” शैवानीने प्रसन्न हो उसे इनाम देकर छोड दिया। उधर शैवानीके कुछ आदमी खूनसे पता पा वरकाको पकड लाये। शैवानीने उसे मार डाला, और उसके शिविरको लूट लिया। वरकाकी विधवा खातून अबुल्खैरके द्वितीय पुत्र खोजा मुहम्मद सुल्तानकी वीवी बनी। उसे पहले ही गर्भ था, जिससे जानीवेग (अब्दुल्ला खानका दादा) पैदा हुआ। वरकाके पहले हीके दो पुत्र इलवर्स और वलवर्स थे, जिनमें वलवर्स दोनो पैरोसे लुज था। इन्ही दोनो भाइयोमेंसे एक इलवर्सको हुशामुद्दीनने बेसिरकी गद्दीपर बैठाया।

राजावलि—वरका-वंशी खीवा-खान निम्न प्रकार हुये—

- १ इलवर्स, वरका-पुत्र
- २ सुल्तान हाजी, वलवर्स-पुत्र
- ३ हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र
- ४ सोफियान, अमीनेक-पुत्र
- ५ बुजुगा, अमीनेक-पुत्र
- ६ अवानेक, अमीनेक-पुत्र





## १. इलबर्स, बरका-पुत्र (१५१५ ई०)

इलबर्सको बुलाकर इधर छिपा रक्खा गया और उधर षड्यंत्रियोने घृणास्पद शिया ईरानियोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें मार डाला, केवल एक ईरानी भागकर जान बचा पाया। दूसरे दिन ईरानी राज्यपालके महलमें लाकर इलबर्सको खान घोषित किया गया। उज्ज्वेक और सरत (फारसीभाषी) दोनों ही सुन्नी होनेसे शियोंके साथ घृणा करते थे। उन्होंने इस समय बड़ा उत्सव मनाया। इसके बाद यगी शहर और तेरसेकने भी इलबर्सकी सेनाके सामने गिर झुकाया। इलबर्सने अपने भाई बलबर्सको “विलि-किच”की उपाधि दे यगीशहरका शासक बनाया। उरगजमें अभी ईरानी राज्यपाल सुल्तानकुल्ली अरब शासन कर रहा था, लेकिन तीन ही महीने बाद इलबर्सने सुल्तानकुल्लीको भी महलमें पकड़कर सभी नौकरोके साथ मार डाला। हजारस्प और खीवाकी छावनियोंने वहाके सरतोसे राय पूछी, तो उन्होंने रहनेके लिये जोर दिया। दस्तेकिचकसे अब इलबर्सने अपने भाई-बड़ोको बुलाया और बूढ़े उइगुरकी बात नहीं मानी—“उज्ज्वेकोमें वादशाहकी महिमा अपने अधीनोके प्रेमपर निर्भर करती है।” यादगारके सभी पुत्र मर चुके थे, किन्तु अबलेक खानका एक पुत्र और अमीनेक खानके छ पुत्र अपने परिवारों और ओर्दूके साथ आकर उरगजमें बस गये। इलबर्स स्वयं बेजिरमें रहता था। उसके भाई-बड़ोने खीवा और हजारस्पको इतना लूटा और बरबाद किया, कि इन शहरोंको और कातको भी ईरानी छोड़ गये। १५२३ ई०में शाह इस्माईल मर चुका था। खुरासान पर्वतश्रेणीके उत्तरवाले महीने और देरूनतक उसके सभी राज्यपाल अपने स्थानोंको छोड़कर भाग गये। उज्ज्वेकोके लिये खुरासानियों और तुर्कमानोंके ऊपर लूटके अभियान करनेकी छूट मिल गई। इन अभियानोंमें लुज बलबर्स रथपर चढ़कर अगुवा बनता था। किजिल-बासोपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्ष्यमें इलबर्सके सात पुत्र गाजी (धर्मयोद्धा) कहलाये।

## २. सुल्तान हाजी, बलबर्स-पुत्र

इलबर्सके मरनेपर दोनों भाइयोंके पुत्रोंमें सबसे बड़ा सुल्तान हाजी गद्दीपर बैठा, किन्तु राज्यकी सारी शक्ति उसके चचेरे भाई सुल्तान गाजीके हाथमें रही। सुल्तान गाजी बहुत ही धनी और स्वेच्छाचारी था। एक साल राज्य करनेके बाद सुल्तान हाजी मर गया, और उसके बाद यादगार-वंशकी ज्येष्ठतम सतान होनेसे हसनकुल्लीको खान बनाया गया।

## ३. हसनकुल्ली, अबलेक-पुत्र

उरगजको इसने अपनी राजधानी बनाया। इलबर्स और अवानेकके पुत्रोंने इसके ऊपर आक्रमण किया, और मुहासिरेके कारण उरगजमें भुखमरी शुरू हो गई। चार महीने बाद उसने आत्म-समर्पण किया। हसनकुल्लीपर अगकनाईके वक्का दोष लगाया गया था, जिसके लिये उमके ज्येष्ठ पुत्र बलाल सुल्तानको मारकर बदला लिया गया। हसनकी विधवा और दूसरे पुत्र समरकद भेज दिये गये।

## ४. सोफियान, अमीनेक-पुत्र

अमीनेक (अवानेक)का पुत्र सोफियान उरगजमें खान बना। खानजादोंमें रियासतोंका फिरसे वितरण किया गया, जिसमें बरका सुल्तानके पौत्रोंको बेजिर, यगीशहर, तेरसेक, देरून, खुरासान और मगिशलकके तुर्कमान मिले। अवानेक खानके चार पुत्रोंको खीवा, हजारस्प, कात, बलदुमाज, नीकीची सूबुई (नदी-तटका इलाका), वगाबाद, निमा, अवीबर्द, चिहारदे, मेहीने, जेजे तागबुई (पहाड़ी इलाका), और साथ ही आमू, बलखान और देहिस्तानके तुर्कमान भी मिले। उस समय अबुल्गाजीके अनुसार वक्षु नदी बलखानमें कास्पियन समुद्रमें गिरती थी, और आजकल जहां विकराल रेगिस्तान खड़ा है, वहां बहुतसे समृद्ध ग्राम और नगर बसे हुये थे। पाच शताब्दियों बाद, अब फिर कास्पियन समुद्रकी और वक्षुकी एक धारा मनुष्योंके हाथोंद्वारा मोड़ी जा रही है, जिसके कारण फिर इस मृत भूमिमें जीवन संचार होनेवाला है। बलखानके नजदीक रहनेवाले इरसारी तुर्कमानोंने कुछ

समयतक मोफियानको कर दिया, इसके बाद खानकी ओरसे कर उगाहनेके लिये जव आदमी भेजे गये, तो उन्हें इन घुमन्तुओंने मार डाला। इसपर मोफियान एक बड़ी सेना ले इरसारियो तथा पडोसी खुरामानके मलूरियोके डेरोपर आक्रमण करके लूट-मार करने बहुतसे स्त्री-वच्चो और सम्पत्तिको अपने साथ ले गया। उस समय कितने ही तुर्कमानोंने चू-तटकी निर्जल-अधित्यका (प्लेटो) में शरण ली थी। उन्हें चारो ओरसे घेर लिया गया, जिनके कारण बहुतसे प्यासके मारे मर गये। अवानेक-पुत्र अगताईको उन्होंने वचन दिया, कि हम तुम्हारी सत्तानके सदा भक्त रहेंगे। अगताईने बीचमें पडकर प्रत्येक मारे गये कर-उगाहकके लिये हजार भेडे अर्थात् कुल चालीस हजार भेडे दंड देनेपर समझौता करा दिया। इरसारियोने सोलह हजार, खुरामानी मलूरियोने सोलह सौ, और तेके-यारिक-यामूत—इन तीन कबीलोने आठ हजार भेडे दी। कुछ समय बाद तुर्कमानोकी जनगणना करके उनके ऊपर निम्न प्रकार कर लगानेका निश्चय हुआ—

इनगकी मलूर (भीतरी सलूर)	१६०००,	तथा उसके ऊपर	१६००	खानकी रसोईके लिये।
हसन कबीला	१६०००	और	१६००	" " "
अरवाजी (भीतरी सलूर)	४०००	और	४००	" " "
गोकलान	१२०००	और	१२००	" " "
अदकली (खिजिर)	}	इन तीनों वस्तु-तटवामी कृपक कबीलोको अपनी उपज		
अली		और भेडोमेंसे कुछ कर और अदकली (सैनिक) भी देने		
तीवेची		पडे।		

मोफियानके मरनेपर खीवा उसके पुत्रोको खोरिशके रूपमें मिला।

## ५. वुजुगा, अमीनेक-पुत्र

भाईका स्थान जिस वक्त वुजुगाने लिया, उस वक्त बुखाराके उग्रदुल्ला खान और ईरानी शाह तहमास्पके बीचमें सघर्ष हो रहा था। ख्वारेज्मी भी इससे फायदा उठानेके लिये पील-कुपस्कीतक जा खोजन्द और अस्पेराई (अस्त्रावादके समीप) पर टूट पडे। शाह तहमास्पके ऊपर पश्चिमसे उसमान-अली तुर्क भी प्रहार कर रहे थे। दुश्मनोंमें फूट डालनेके लिये शाह तहमास्पने छिड़-गिस् खानके खूनसे मन्त्रय जोडनेके लिये वुजुगा खानसे पुत्री मागी। खानने अपनी पुत्री न होनेसे अपनी भतीजी तथा मोफियान खानकी पुत्री आइशाको देना चाहा। विवाहपत्र लिखवानेके लिये लडकीका भाई आगिम सुल्तान गया। शाहने उसका कजवीनमें स्वागत-सत्कार किया और खोजन्द-शहर (ईरान)को उसे जागीरमें दिया। उसने मोनेके नौ डले, चादीके नौ डले, अच्छी जातिके सुसज्जित नौ घोडे, रेशमके ऊपर मोनेके काम किये नौ तम्बू तथा समुचित कालीन और तकिये, एक हजार थान रेशम, आदि वुजुगा खानके लिये भी भेंट भेजे। इसके फलस्वरूप कुछ समयके लिये ख्वारेज्मी उज्बेकोने ईरानी सीमापर लूट-मार बन्द कर दी। काफी दिनोंतक राज्य करनेके बाद वुजुगा मर गया और उसकी जगह उसका भाई अवानेक खान बना।

## ६ अवानेक, अमीनेक-पुत्र

वुजुगाके तीनों पुत्रो दोस्त मुहम्मद, ईस मुहम्मद और वुस्ममेंसे पहले दोनोंको कातकी जागीर मिली। अवानेककी दो बिया मगीत कबीलेकी थी, और एक दामी थी। दासीसे उसका पुत्र दीन मुहम्मद हुआ, जो लडकपनमें ही युद्धके खेल खेला करता था। उस समय अस्त्रावादके पासका इलाका उरगजके उज्बेकोके हाथमें था। दीन मुहम्मद बीस सालका हो गया। उसने इस इलाकेकी अपने लिये मागा। न देनेपर उसने चानीस सहायकोके साथ जाकर एक तुर्कमान ब्रेक (सरदार)के ऊटो और भेडोको लूट लिया। तुर्कमान ब्रेकने अपने स्वामी मुहम्मद गाजी मुल्तान डलवर्स-पुत्रको इसकी खबर दी। मुहम्मद गाजीकी बहिनकी शादी हाल हीमें अवानेक खानसे हुई थी। उसने छपा मारकर दीन मुहम्मदको पकड, लूटे मालको छीन, कुछ दिनों बदी रख उसे हाथ-पैर बांधके घोडेपर सवार करके बापके

पास भेज दिया। लेकिन दीनू (दीन मुहम्मद) ऐसा-वैसा आदमी नहीं था। उसके लिये उसके साथी अपना खून-पसीना एक करनेके लिये तैयार थे। उन्होंने रास्ते हीमें दीनूको छ्ड़ा लिया। दीनूने बाप और सौतेली मा तमगाज चुराको झूठी चिट्ठी लिखी, कि तमगाजकी वहिन बहुत बीमार है। वहिन और वहनोईकी चिट्ठी पाकर मुहम्मद गाजी आया, तो पता लगा, चिट्ठी जाली थी। वहिनने भाईको बहुत सावधान कर दिया। इसी समय दीनूके आदमियोंके पैरको आहट सुनकर मुहम्मद गाजी अस्तबलमें रक्खी सूखी लोदके ढेरमें जा छिगा, किन्तु आदमियोंने उसे पकड़ लिया और उसकी गर्दन काट दी। यह खबर बेजिरमें गई। निहत सुल्तानके भाई सुल्तान गाजीसे मिलने अली सुल्तान गया था। उसने भाईके वधका गुस्सा अली सुल्तानको मारकर निकाला—“खूनका बदला खून” घुमन्तू कबीलोका एक सर्वोपरि विधान है। इलवर्सका ओर्दू बेजिरमें रहता था और अवानेकका ओर्दू उरगजमें। खानने अपने कबीलेवालोंको मना किया, लेकिन वह अली सुल्तानके खूनका बदला लेनेके लिये अधीर थे। दोनोंका किर-मगिशलकके छोरपर अवस्थित कुमकदमें युद्ध हुआ, जिसमें अवानेककी जीत हुई। इलवर्सके खानदानको मारकर सामानको लूट लिया गया। सुल्तानकी बेया उलुग तूवे अपने लड़को और लड़कियोंके साथ बुखारा जानेके लिये छोड़ दी गई, जहापर बलबर्ष सुल्तानका भी परिवार पहलेसे ही रहता था। अब सारा ख्वारेज्म अवानेक खानके लड़कोका था। खानने अपने लिये उरगज रख बाकी अपने बेटे-पोतोमें बांट दिया। दीन मुहम्मदको सुल्तान गाजीवाला देरून इलाका मिला।

सुल्तान गाजीके दो पुत्र उमर गाजी और शेर गाजी बुखारामें रहने लगे थे। उमरने बापके खूनका बदला लेनेके लिये अब्दुल्ला खानसे सैनिक सहायता ले अवानेकपर आक्रमण किया, और उसे मारकर पितृ-ऋण चुकानेमें सफल हुआ।

इस झगड़ेके बाद भी देरूनका इलाका दीन मुहम्मदके हाथमें रहा, जहा अवानेकके दो बेटे भी ख्वारेज्मसे भागकर आ गये थे। दीन मुहम्मदने खिजिर कबीलेकी शाखा अदकालीके बेक (सरदार) को सैनिक सहायता देनेके बदले तरखून (राजकुमार) की पदवी और सेनामें वामपक्षमें स्थान पानेका सम्मान प्रदान किया, तथा अदकालियोंको उज्ज्वेकोमें गिने जानेका प्रलोभन दे अपनी ओर कर लिया। इस प्रकार एक हजार अदकाली सैनिक मिले। तीन हजार और सैनिकोंको जमाकर दीन मुहम्मदने खीवापर चढ़ाई कर दी, और बुखारासे आई अब्दुल्लाकी सेना को हराकर १५३६ ई०के आसपास परिवारकी रूठी लक्ष्मीको मना लिया।

### ७ काल, अमीनेक-पुत्र (१५३९-४६ ई०)

लेकिन ख्वारेज्मका खान अब भी अवानेकका भाई काल खान हुआ, जिसने सात वर्षतक शासन किया। उसके समयमें ख्वारेज्म कितना वनधान्यपूर्ण था, वह इस कहावतमें सिद्ध है—“काले खानने गद्दी पकड़ी, एक पैसेमें रोटी तगड़ी।”

### ८ अकताई खान, अमीनेक-पुत्र (१५४६ ई०)

नये खानने बेजिरको अपनी राजधानी बनाया। काल खानके पुत्रोंको कात नगरकी, उसी तरह सोफियान खानके पुत्रो यूनस और पहलवान-कुल्लीको भी जागीर मिली थी। लेकिन, बुजुगा खान, अवानेक खान और अकताई खानके बेटोंने मिलकर अपने इन सत्रधियोंको भगा दिया और वह बुखारामें शरण लेनेके लिये मजबूर हुये। छिने हुये इलाकेकी बाटमें अवानेक खानके पुत्र अली सुल्तानको देरून दिया गया, उसके भाई महमूदको उरगज, हाजिमको बगावाद, दीन मुहम्मदको निसा और अजीवर्द, और बुजुगाके दोनों पुत्रो ईश और दोस्तको खीवा-हजारास्प मिले। सोफियानके पुत्र यूनसने नोगाइयोके प्रसिद्ध सुल्तान इस्माईलकी लड़कीसे व्याह किया। वह अपने चालीस अनुचरोंके साथ बुखारा जा रहा था। तबतक उस समय निर्जन था और लोग उरगजके पास डेरा डाले हुये थे। इसी समय यूनसको अपने पूर्वजोंकी सम्पत्तिकी लौटानेका ख्याल आया, और रातमें अपने साथियोंके साथ महलमें घुसकर उमने राज्यपाल सरी मुहम्मद सुल्तानको पकड़ पहरेंमें अकताई खानके पास बेजिरमें

भेज दिया। नैनिक और नागरिक महमूदमे परेगान थे, इमलिये उन्होंने यूनसका स्वागत करने हुये उमे खान घोषित कर दिया। अकताई सेना लेकर आया, लेकिन उसे हारकर भागना पडा। यूनस और अकताईकी पुत्रीके बेटे कानिम सुल्तानने पीछा करके नानाको पकडकर उरगज लेजा चुपकेमे अकताईको इस तरह मार डाला, कि उसके शरीरपर कोई बावका चिह्न नहीं दिखाई पडता था—मालूम पडता था, जैसे वह स्वाभाविक मृत्युसे मरा हो। निहतकी लाशको उसके परिवारके पाम बेजिरमे भेज दिया गया। मृत खानके पुत्रोंने बदला लेनेके लिये उरगजपर चढाई की, और यूनसको बुखारा भाग जाना पडा, लेकिन किसी अनुचरने छिपे हुये कासिम सुल्तानको पकडा दिया। उरगज जत्रुओंके हाथमे गया, और कानिम कत्ल कर दिया गया। सोफियान खान और काल खानके वगका उच्छेद हो गया और अबानेक खानके लडके खुरामान भाग गये। फिर बटवारा हुआ, अकताई खानके परिवारको बेजिर और उरगज मिले, और बुजुगा खानके पुत्रो ईम, दोस्त और दुम्मको खीवा, हजारागप और कातके इलाके।

## ९ दोस्त खान, बुजुगा-पुत्र (१५५६ ई०)

दोस्त बटे ही नरम स्वभावका आदमी था। भाई ईसने उरगज मागा, और अपने लिये मिर्फ खीवा-को रखनेके लिये कहा। दोस्तके देनेपर भी हाजिमने इन्कार कर दिया। इसपर ईसने हाजिमको वहासे हटानेके लिये हमला कर दिया। मात दिनतक मुहासिरा करनेपर भी सफलता नहीं मिली। इनपर विमियाकर उसने उडगुर और नेमन कबीलेके आदमियोंको छोड बाकी सभी वदियोंको बडी निष्ठुरतामे मार डाला, और फिर खीवा जाकर इन कबीलोंके उज्जेकोको वहासे भगाकर उनका स्यान दुम्मन कबीलेको दे दिया। कुछ समय बाद १५५६ ई०में वह फिर उरगजपर चढा, और सात दिनके असफल मुहासिरेके बाद घोबेमे नरनोंके मुहल्लोमे घुम गया। अकताईका पुत्र नेमन उडगुर कबीलेवालोंके साथ बेजिरकी ओर हट गया। कुछ समय बाद हाजिम मुहम्मदने अपने भाइयो तथा अबानेक-पुत्र अली सुल्तान एव दीन मुहम्मद-पुत्र अबुल्सुल्तानकी महायतामे उरगजपर आक्रमण किया। चार महीनेके मुहासिरेके बाद किला तोडनेके लिये आक्रमण करने समय ईम सुल्तान मारा गया। कुछ नैनिकोंने खीवामे जा दोस्त मुहम्मदको भी मार डाला। इसके दो लडके वहासे भागकर बुखारा जा वहीं मरे। खीवा-राजवशमे राजपरिवारोका कत्लेआम और उच्छेद आम बात थी। अब बुजुगा खानका वग समाप्त हो गया। यह घटना ९६५ हि० (२४ X १५५७-१४ IX १५५८ ई०) की है।

## १० हाजी मुहम्मद, हाजिम, अकताई-पुत्र (१५५६-१६०२ ई०)

हाजिम अकबरका समकालीन था। खान घोषित होने समय इसकी उमर उन्तालीस सालकी थी। इमने बेजिरको अपनी राजधानी बनाया, और अली सुल्तानको उरगज, हजारास्प तथा काल मिले। हाजिमके भाई महमूदको आधा खीवा, उलुग-तूवे-ताश-कूनिशके तुर्कमान, दूसरे भाई नेमूरको आधा खीवा मिला। दीन मुहम्मदके पोते नूर मुहम्मदके इलाके मेवपर हमला किया करते थे। दीन मुहम्मदको निसा और अबीवर्द मिला था, यह हम बतला आये है, जहासे वह बराबर ईगनके गियोपर जहाद किया करता था। शाह तहमास्पने सेना भेजकर अबीवर्दको छीन लिया। दीन मुहम्मद इसपर सीधे बजबीन चला गया। वह साहसका पुतला था। शत्रुके हाथ मारे जानेका उने कोई डर नहीं था। फिर शाहकी जाली चिट्ठी लाकर उसने अबीवर्दको खानी करवा लिया। फिर एक्-एक् करके विजिल-नाम (गिया) वादशाहके अनुयायियोंको मारा। तहमास्प उसे दंड देनेके लिये आया, तो दीन मुहम्मदने चालीम-यचान आदमियोंके साथ सीधे शाहके पाम जा उसके दामन का चूमा। शाहने अपना एक हाथ उसकी गर्दनपर और दूसरा हाथ छातीपर रखकर देखा, उसकी साम विजुन स्वाभाविक-सी चम रही है। इसपर उसने आश्चर्य करने हुये कहा—“जरूर यह (हृदय) पत्थरका है।”

फिर दीनूके सम्मानमें शाहने एक बड़ी दावत की और क्षमा करके अबीवर्द भी उसे प्रदान कर दिया।

बुखाराके खान अब्दुल्लाने मेर्वमें योलुम वीको अपना राज्यपाल नियुक्त किया था। लोगोंने विद्रोह कर दिया, इसपर तीस हजार सेना लेकर अब्दुल्ला आया। योलुमने दीन मुहम्मदसे मदद मागी। दीन मुहम्मद अपने सवारोंके साथ उस जगह पहुंचा, जहापर मुरगाव नदी बालुका-राशिमें अन्तर्धान हो जाती। उसने अपने सवारोंको दोनों बगलोमें वृक्षकी डालिया बाधकर धीरे-धीरे चलनेके लिये कहा। धूलसे आसमान छा गया। बुखारी सेना उसे देखकर डर गई। एक ओरसे दीन मुहम्मदकी भारी सेना और दूसरी तरफ योलुमकी फौज, दोनोंके बीचमें पडकर मरनेकी जगह बुखारियोंने घर लौट जाना ही अधिक पसन्द किया। दीन मुहम्मदने इग प्रकार मेर्वपर अधिकार करके अपनेको वहाका खान घोषित किया, और वही रहते चालीस वर्षकी उमरमें ६६० हि० (१८५१-५२-५३ ई०) में मरा। उसने अपने द्वितीय पुत्र अबुल मुहम्मदको अपना कलखान (युवराज) बनाया था, जो उसके बाद मेर्वकी गद्दीपर बैठा।

एक समय अबुल मुहम्मदके पुत्र जलालने खुरासानपर आक्रमण किया। प्रतिरोधके लिये ईरानियोंने मगहदमें सेना जमा की। दोनों ओरकी सेनाओंमें लड़ाई हुई, जिसमें अपने दस हजार उज्बेकोंके साथ जलाल मारा गया। अबुल मुहम्मदको अपने इकलौते पुत्रके मारे जानेका भारी सदमा हुआ, जिसका इलाज हकीमोंने दूसरा पुत्र प्राप्त करना बतलाया। मेर्वकी एक लोली (डोम या रोमनी) स्त्री वीवीजेह तम्बुरिन बजा और चित्र खींचकर जीविका कमाती थी। उसने व्याह नहीं किया था, किन्तु उसके पास चार सालका लडका था। उसी लडकेको लाकर घोषित कर दिया गया कि, यह अबुल मुहम्मदका लडका है। अबुल मुहम्मदने उसका नाम नूर मुहम्मद रखा। यही नूर मुहम्मद अबुलके मरनेके बाद मेर्वके गद्दीपर बैठा। कितने ही सालों बाद हाजिमके पुत्रोंने यह कहते हुये उसपर आक्रमण किया—“हम लोली (वेर्या) के लडकेको नहीं मान सकते।” इसपर नूर मुहम्मदने बुखारावालोंके पास मदद भेजा—“मैं तुम्हारी ओरसे राज्यपाल होनेके लिये तैयार हूँ।” अब्दुल्ला खानने आकर मेर्वको तो ले लिया, लेकिन साथ ही नूर मुहम्मदको अगूठा दिखला दिया। नूर अब उरगजमें हाजिमकी शरणमें गया। अबानेक-पुत्र अली सुल्तानको उरगज-हजारास्प-कातके अतिरिक्त निसा, अबीवर्द और तागवुई भी मिले थे। वहामें वह बसत और गर्मियोंमें बराबर खुरासानपर आक्रमण करके पीलकुमरुकी, तरशीज, तरबेत, जाम और खारकारमें लूट-मार मचाया करता था। अली सुल्तानसे नूर मुहम्मदमें जुरजान, जार्जरूम, कराइलू और अस्त्रा-वादको जीत लिया। अब उसके पास चालीस हजार सेना थी। वह अपने प्रत्येक उज्बेकको प्रतिवर्ष सोलह भेडें देता था, जिसके लिये तुर्कमानोंसे कुछ कर लेता, कुछ ईरानकी लूटमेंसे, और एक पचमाश भाग अपने पाससे भी देता था। एक बार उसने ईरानियोंकी पंद्रह हजार सेनाको हराकर पांच हजार घोड़े पकड़े थे। ईरानको इन्हीं चढाईयोंमें ६७६ हि० (२६ VI १५६८-१७ V १५६९ ई०) में अली सुल्तानके मारे जानेके बाद उसका पुत्र सजर निसामें उसका उत्तराधिकारी हुआ, किन्तु पच्चीस वर्षकी आयुमें ही निस्सतान मर गया। अली सुल्तानके मरनेपर हाजिम खानने बेजिरको अपने भाई मुहम्मद सुल्तानको दे दिया और स्वयं जाकर उरगजमें रहने लगा। तुर्कोंके सुल्तान—जो सुन्नियोंका खलीफा भी था—का दूत मिलकर शियोपर हमला करनेकी प्रेरणा देनेके लिये हिन्दुस्तान गया था। अब वह उसी बातके लिये बुखारा आया। बुखारासे वह उरगज और मगिशलकके रास्ते जब लौट रहा था, उसी समय हाजिमके पुत्र मुहम्मद इब्राहीमने उरगजमें उसे लूट लिया और मुश्किलसे यात्रा भरके लिये थोड़ासा पैसा छोड़ दिया। बुखाराका खान अब्दुल्ला इसपर नाराज हो गया। उधर कास्पियनके पश्चिमी तटका इलाका गिरवान तुर्कके सुल्तानके हाथमें था। अन्तर्वेदके व्यापारियोंको उरगजसे आगे मगिशलक पहुंच जहाजसे कास्पियन पार कर गिरवानके रास्ते यात्रा करनी पडती थी, क्योंकि कास्पियनका दक्षिणी तट शिरोके हाथमें था, जहा सुन्नी व्यापारियोंके जान-मालकी खैरियत नहीं थी। उक्त घटनासे एक साल पहले हाजी किरतास एक बड़े कारवा और मक्काके तीर्थयात्रियोंके साथ उरगज पहुंचा। उसे भी पुलाद सुल्तानके पुत्र वात्रा सुल्तानने लूटकर

बुखाराकी ओर खदेड़ दिया। नूर मुहम्मदने मेर्वको लेकर अब्दुल्लाके मनोरथको असफल कर दिया था, इसलिये अब्दुल्लाने बड़ी तैयारी की। हाजिम खान अपने उज्जेकोपर विश्वास नहीं करता था। वह अपने पुत्र मुहम्मद इब्नाहीमके हाथमें उरगजको छोड़ अपने दूसरे पुत्र अरब मुहम्मद सुल्तानकी जागीरमें बैठन चला गया। बुखारी सेनाके आनेपर ख्वारेज्मी-उज्जेक खीवा और हजारस्प आदि नगरोको छोड़ वेजिर \* भाग गये।

खीवाने निकला दो हजार परिवारोका विशाल गिरोह किसी उत्सवके जलूमकी तरह मालूम होता था। पातीसे खड़ा होनेमें उन्हें आधा दिन लगा था। उन्होंने अपनी गाड़ियोपर घरकी मुर्गियो, चटाइयो और मभी चीजोको लटका रक्खा था। बुखारी सेनाने खीवापर अधिकार कर नागरिकोंके साथ मित्रतापूर्ण घोषणा करके वेजिरका रास्ता पकड़ा। रास्तेमें उमने पुनाद सुल्तानके अनुचरोको तितर-वितर करते हुये उनका सामान लूट लिया। वेजिरमें आपसमें फूट थी, इसलिये वह ग्रन्थमें कैसे मुकाबिला करते? एक मासतक नगरका मुहामिरा रहा। बुखारी अब्दुल्ला खानने माग की थी—“मैं केवल बाबा सुल्तानको दंड देनेके लिये आया हूँ, तुम मेरे पास निर्भय चले आओ।” खान स्वयं अब्दुल्लाके गिविरमें चला गया, और इस प्रकार आपसी फूटके कारण सारा ख्वारेज्म बिना एक भी प्रहारके अब्दुल्लाके हाथमें चला गया। अब्दुल्ला वहाके भिन्न-भिन्न शहरोमें अपने राज्यपाल नियुक्त करके १००२ हि० (१७ IX १५६३-१८ VIII १५६४ ई०) में बुखारा लौट गया। पीछे अपनी शपथकी कोई पर्वा न करके अब्दुल्लाने बीस-बाईस राजकुमारोंको अक्सूमें डुबाकर मरवा दिया और लोगोंके ऊपर भारी कर लगाया। हाजिम खान अपने बच्चे-बच्चे सुल्तानोंके साथ भागकर शाह अब्बास I के पास चला गया, और उसका पुत्र सुईउनिच मुहम्मद अपने दो पुत्रोंके साथ काफिर गियोंके पास जाना पसंद न कर तुर्कीमें शरणार्थी हुआ। इस समय अब्दुल्लाका खूनखार पुत्र बलखका राज्यपाल अब्दुल मोमिन सफावियो (ईरानियों) से लड़ रहा था। ख्वारेज्ममें सेना कम रह गई थी, यह खबर पाकर हाजिमके पुत्र अरब मुहम्मदने चुपचाप अस्त्रावादके लिये प्रस्थान कर दिया। पीछे हाजिम भी आ पहुँचा। तुर्कमान मदद करनेके लिये तैयार ही थे। इस प्रकार अरब मुहम्मदने १००४ हि० (६ XI १५६५-२७ VII १५६६ ई०) में कई शहरोको ले लिया। लेकिन जब अब्दुल्लाने भारी सेना भेजी, तो दुश्मन तितर-वितर हो गये। हाजिम अस्त्रावाद होते शाहके दरबारमें पहुँचा। अब्दुल्लाको बाबा सुल्तानसे मुकाबिला करनेके लिये हजारस्पका चार मासतक मुहामिरा करना पड़ा। अन्तमें बाबा सुल्तान पकड़कर मारा गया और ख्वारेज्मपर फिर बुखाराका शासन स्थापित हो गया।

१००५ हि० (२५ VIII १५६६-१६ VII १५६७ ई०) में अब्दुल्लाके मरनेपर शाहने स्वयं सेना लेकर वोस्तामपर चढ़ाई की, और हाजिम तथा उसके पुत्र अरब मुहम्मदको ख्वारेज्म जानेके लिये आदेश दिया। हाजिम उस समय पदह आदिमियोंके साथ कुरेन पहाड़ों में एक तेँके कबीलेके डेरेमें था। अब्दुल्लाके वाद उमके उत्तराधिकारी अब्दुल् मोमिनके भी कत्लकी खबर सुनकर वह आठ दिनमें चलकर उरगज पहुँच गया, और उमका शासन फिरसे ख्वारेज्मपर स्थापित हो गया। उसने अपने पुत्र अरब मुहम्मदको खीवा और कात दिया, पीछे इमकन्दियारको हजारस्प, और अपने लिये उरगज तथा वेजिरको रक्खा। जिन उज्जेकोको जवर्दस्ती बुखारा ले जाया गया था, वह भी लौट आये। इसी समय नूर मुहम्मद भी ईरानसे अपनी पुरानी जागीरमें लौट आया था। नूर मुहम्मद उज्जेकोको सताता और तुर्कमानों तथा सरतोका पक्षपात करता था। यह खबर सुन शाह अब्बासने एक मामके मुहासिरेके वाद मेर्वको उससे छीन लिया। अबीवर्द, निमा और देरून भी शाहके हाथमें चले गये, जहापर उसने अपने राज्यपाल नियुक्त किये। नूर मुहम्मदको वह पकड़कर अपने साथ ईरान ले गया, जहा वह बन्दीखानेमें मरा।

\* वर्तोल्लिके अनुसार इसका ध्वमावशेष उस्तुर्तकी अद्वित्यकामे चिकके नजदीकका देवकेमकेन है, अथवा कुन्या-उरगजके दक्षिण-पश्चिम २४ मीलपर अवस्थित शेरवानका ध्वमावशेष है, जो बक्षु-कारिपयन नहरके बननेकी प्रतीक्षामें नौया हुआ है।

हाजिम मुहम्मद १०११ हि० (२१ VI १६०२-१२ V १६०३ ई०) में मरा।

जेन्किन्सनकी यात्रा—हाजिम मुहम्मदके शासनकालमें अंग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन खीवासे गुजरा था। उसके यात्रा-विवरणसे उस समयकी बहुतसी बातोंपर प्रकाश पड़ता है। जेन्किन्सनने १३ अप्रैल १५५८ ई०को अपने मालके साथ मास्को छोड़ा और १४ जुलाईको वह अस्त्राखान पहुँचा। अपने मालके ढोनेके लिये वहाँ उसने वनी-वनाई नाव खरीदी, और कास्पियन समुद्रके उत्तरी तटसे होते यायिक (उराल) और यम्वा नदियोंके मुहानोंको बाईं ओर छोड़ने वह २७ अगस्तको मगिगलकमें उतरा। उसके साथ और भी कितने ही ईरानी तथा तारतार व्यापारी अपनी नावोंमें चल रहे थे। मगिगलकके राज्यपालने ऊटोका इन्तिजाम कर दिया। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि उसे काफी भेंट-पूजा देनी पड़ी। जेन्किन्सन अब अपना माल ले स्थल-मार्गसे वेजिर पहुँचा। वह लिखता है—लोग बड़े नोचनेवाले हैं। मुझे प्रत्येक ऊटके लिये तीन रुमी चमड़े और चार लकड़ीके वर्तन देने पड़े, राज्यपालको अलग नौ चमड़े और चौदह दूसरी चीजें भेंट देनी पड़ी। जिस कारवामे जेन्किन्सन चल रहा था, उसमें हजार ऊट थे। पांच दिनकी यात्राके बाद वह मगिगलकके उस इलाकेपर पहुँचा, जिसपर तेमूर सुल्तानका अधिकार था। सुल्तानने बड़ा अच्छा वर्ताव किया और जेन्किन्सनको मास और घोड़ीका दूध दिया। उसने उससे पदह रुबलकी चीजें ली, लेकिन उसके बदलेमें एक घोड़ा इनाम दे अपने तम्बूमें अंग्रेज व्यापारीकी जियाफत भी की। वहाँसे रेगिस्तानके भीतर बीस दिनका रास्ता चलना पड़ा। खानेके लिये एक घोड़ा और एक ऊट मारना पड़ा। पानी कभी दो दिनपर मिलता था, सो भी खारा-सा। अब कारवा कास्पियनकी एक खाड़ीपर पहुँचा, जहाँके तुर्कमान सरदारने धमकाकर पैसा वसूल किया। जेन्किन्सन लिखता है कि, इस समय (१५५८ ई०) वक्षु (आमू-दरिया) यहीपर कास्पियन-समुद्रमें गिरती है।

६ अक्टूबरको खाना होकर तीन दिनकी यात्राके बाद वह शहर वेजिर (सेलीजर)में पहुँचा। अजीम (हाजिम) खान अपने तीन भाइयोंके साथ यही रहता था। जेन्किन्सनने ६ अक्टूबर (१५५८ ई०)को खानसे भेंट की, और भेटके अतिरिक्त उसके जारका पत्र भी उसे दिया। खानने घोड़ेके मास और दूधसे दावत कर, रास्तेके लिये सुरक्षा-पत्र भी दिया। वेजिरका दुर्ग एक ऊँचे पहाड़पर था। खानका घर बहुत ऊँच-खावड़ और दुर्बल मिट्टीका था। लोग बहुत गरीब थे। दक्षिण का इलाका अधिक उर्वर था। उसने लिखा है—“यहाँ एक बड़िया फल दौरी (तरबूजा) होता है, जो बहुत बड़ा और उसमें पानी भरा होता है। लोग खानेके बाद पेयकी जगह इसे खाने हैं। एक और भी फल है, जिसे खरबूजा कहते हैं, और वह खीरेके जैसा बड़ा पील रंगाका तथा मोठा होता है। एक और भी अनाज जेगुर (बाजरा) होता है, जिसके डठल वेतकी तरह ऊँचे होते हैं और उसके सिरेपर चावलकी तरह दोनोंके गुच्छे लगते हैं, मानो छोहारोंके लच्छे हैं। सिंचाईके लिये वक्षुमें इतना पानी ले लिया गया है, कि नदी अब कास्पियनतक नहीं पहुँचती।”

वेजिरसे दो दिन चलनेके बाद जेन्किन्सन उरंगज पहुँचा। यहाँ भी कर देना पड़ा। जेन्किन्सनने हाजिमके भाई अली सुल्तानसे भेंट की, जिसने गृहयुद्ध करते सात वर्षोंमें चार शहर लिये और खोये। युद्धके कारण यहाँ बहुत कम व्यापारी आते थे, इसलिये मालकी बिक्री अच्छी नहीं थी। जेन्किन्सन केवल चार केरसियोंको बेच सका। वहाँसे कास्पियनतकका प्रदेश तुर्कमानोंका देश कहा जाता था, और शासक थे हाजिम खान और उसके भाई। “जो भिन्न-भिन्न माताओं और कुछ दासियोंके पुत्र होनेसे एक-दूसरेसे ईर्ष्या करते, एक-दूसरेको खतम करनेकी कोशिश करते हैं।” आपसके युद्धमें उनमेंसे हारकर कोई बच निकलता, तो आमतौरसे साथ ही उसके अनुचर भी रेगिस्तानमें चले जाते, और रास्तेके पानी लेनेके पड़ावोंपर छापा मारते। इसी प्रकार वह कारवाको लूटते रहते, जबतक कि फिर वह घरेलू सघर्षके लिये अपनेको काफी मजबूत न कर लेते।

उरंगज छोड़कर वक्षुके किनारे-किनारे सी मील चलनेपर जेन्किन्सन एक स्थानपर पहुँचा, जिसको वह आरदोक कहता है—यहाँ तेज प्रवाहवाली धारा थी, जो कि वक्षुको छोड़नेके बाद हजार मीलपर उत्तरमें जा भूमिमें विलीन हो जाती है, फिर प्रकट होकर खिताई समुद्रमें जाकर

मिलती है। आगे जेन्किन्सनको कात नगर मिला। वहाके लोग हाजिमके भाई सरामेत सुल्तानकी प्रजा थे। जेन्किन्सनने सुल्तानको अपने प्रत्येक ऊट मालके लिये एक रुमी लान चमड़ा और दूसरे कर दिये। सुल्तानने उनके साथ प्रतिग्रीही भेज दिये। "प्रतिरक्षी भी खाऊमल थे। तीन दिन जानेके बाद उन्होंने और आगे जानेके लिये भारी रकम मागी और न देनेपर वह लौट गये। फिर कारवाके खोजे (स्वामी) वहीं मुकाम करनेपर जोर देकर भेडकी पसलीकी हड्डिसे शुभाशुभ मगुन विचारने लगे। वह डम हड्डिको जलाकर उसकी राखकी स्याही बनाकर कुछ अक्षर लिख रहे थे। इसी समय एक निर्वासित राजकुमारने अपने कुछ अनुयायियोंके साथ जबर्दस्त आक्रमण किया, लेकिन व्यापारियोंने भी उसका मुकाबिला किया।" जेन्किन्सनके पास कुछ बन्दूकें थी, जिन्होंने इस समय बड़ा काम दिया। लोगोंने अपने पशुओं और बन्दूकोका मोर्चा बना लिया, और उसके पीछेसे गोलिया दागी जाने लगी। रातके वक्तमें डाकू सुल्तानने सदेश भेजा, कि हम मुसलमानोंको छोड़ देंगे, यदि तुम अपने क्रिस्तान साथियोंको हमारे हाथमें दे दो। लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ अन्तमें कुछ भेद और एक ऊट देकर जान छुटानी पड़ी। यात्री फिर वहाँमें बुझा गये। जब व्यापार करके जेन्किन्सन उरगज लौटा, तो उसके जारके पास जानेवाले हाजिम खानके चार दूत भी उसके साथ हो लिये। १५६५ ई०में जार पयोदरके पाम खीवाने नये राजदूत भेजे गये थे।

## ११. अरब मुहम्मद, हाजिम-पुत्र (१६०२-२१ ई०)

अरब मुहम्मद जहागीरका समकालीन था। इसने अपने पुत्र अम्फन्दयारको हजारस्पकी जगह कातका डलाका दिया। कुछ समय बाद १६०२ ई०में यायिक-तटनिवासी हजार रुमी वमाकोने आकर उरगजको लूटा और हजारसे अधिक नागरिकोंको मार डाला। वह लूटे मालको हजार गाडियोंपर ले चले। अरब मुहम्मदने उनके रास्तेको काट दिया, जिसमें कसाक रेगिस्तानमें भटक गये, जहा पानीके अभावके कारण उन्होंने पशुओंका खून पी प्यास बुझाई। पाच दिनतक उन्हें खून भी नहीं मिला और ऊपरमें उज्ज्वेक चारों ओरसे आक्रमण कर रहे थे। एक बार उज्ज्वेक पीछेमें उनकी गाडियोंके मोर्चोंके भीतर घुस गये और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डालनेमें मफल हुये। सिर्फ एक मी कनाक किसी तरह बचकर अरालके किनारे पहुँचे। उन्होंने तूकके किलेके पाम अपना किला बनाया और कुछ समयतक वह मछरी खाकर जीते रहे। अन्तमें अरब मुहम्मदने उनके किलेको दखल कर लिया।

पूर्वसे कल्मक-मगोल अरालकी ओर पैर फैलाते हुये अब यहा भी आकर आक्रमण करने लगे। वह खोजाकुल और शेख जलील पर्वतके बीचमें पहुँचकर तूकतक उज्ज्वेक डेरोको लूटकर बूरीचीके रास्ते लौट गये। अरब मुहम्मदने पीछा करके माल और बंदियोंको छुड़ा लिया, लेकिन कल्मक हाथ नहीं आये। कुछ समय बाद नेमन कबीलेवालोंने डलवर्म खानकी मतान खुमरो सुल्तानको अपना खान बननेके लिये बुलाया, जिसने पड्यत्र किया, लेकिन परदा खुल जानेपर खुमरो और पड्यत्री नेता मारे गये। दो साल बाद फिर पड्यत्र हुआ। इसके दस साल बाद (१६१५ ई०) कल्मकोंने आकर बड़ी लूट-मार मचाई। मोलह माल राज्य करनेके बाद १६१८ ई०में हवश इनवर्सके दो मोलह और चाँदह मालके पुत्र अरब मुहम्मदसे विद्रोह कर खीवाने उरगजपर चढ़ आये। छोकरे मला इतनी हिम्मत कैसे करने, अमलमें यह काम उनके अनुचरोंका था, जिनकी मख्या लूटकी लालचसे बहुत बढ़ गई थी।

बीवाके बानोंमें इस तरहका विद्रोह और वशोन्धेद असाधारण घटना नहीं समझी जाती थी, यह हम देख चुके हैं।

१०१३ हि० (३० V १६०४-३० IV १६०५ ई०)में (इतिहासकार अबुलगाजीके जन्मके एक साल पहले) अरब मुहम्मदने एक नहर खुदवाई, जो तूक, उरगज हाँती अराल समुद्रमें गिरती थी। बुला (अबतूवर-नवम्बर)मानके आते ही इस नहर को बन्द कर दिया जाता, और फसलके कट जानेपर फिर खोल दिया जाता था। कुछ मानों बाद यह एक तीरकी मारमें अधिक चौड़ी कर दी गई।



इस नहरके कारण खेतीको इतना फायदा हुआ, कि गेहू बहुत सस्ता हो गया। सारे इलाकेमें गेहूकी फसल खड़ी दिखलाई पड़ती थी। दोनों खान-पुत्रोंने अन्न-भंडारोंको खोलकर अनाजको गरीबोंमें बांटना शुरू किया। अन्तमें उन्हें बेजिर शहर और उस इलाकेमें रहनेवाले तुर्कमानोंको देकर समझौता किया गया। दोनों चार हजार अनुयायियोंके साथ वापसे मिलकर बेजिरमें जा पांच साल तक शांतिपूर्वक रहे। छठे साल (१६२० ई०) जब खान उरगजमें था, उसी समय इलवर्सने आक्रमण करके खीवा ले अपने पांच सौ आदमियोंको भेजकर वापको भी बन्दी बना लिया। खजाना लूटकर उसने “कुत्तो और चिड़ियोंमें बिखेर दिया, और बेगोको निकाल बाहर किया।” इसके बाद वह बेजिर लौट गया। अब अस्फन्दयार और अबुलगाजी (प्रसिद्ध इतिहासकार) वापके सहायक बन गये, और दोनोंने मिलकर इलवर्स सुल्तानके ऊपर आक्रमण किया। इलवर्स किर (उस्त-उर्त)की ओर भागा, और उसका माल-असबाब लूट लिया गया। अबुलगाजीने वापको बहुत समझाया, कि विद्रोहियोंको इसी वक्त नष्ट कर देना चाहिये, लेकिन वापका सहायक अता-लीक हुसेन हाजी भीतरसे विद्रोहियोंके पक्षमें था। उसने वैसा नहीं होने दिया। अस्फन्दयार भी बहुत आगे बढ़ना नहीं चाहता था। हवश और इलवर्स दोनों अबुलगाजीके भारी शत्रु थे। इस अपूर्ण अभियानके बाद अरब मुहम्मद खान खीवा लौटा, अस्फन्दयार हजारास्प गया और अबुलगाजीको कात मिला। पांच महीने-बाद अब खानको अबल आई, और उसने अपने पुत्रोंको खुले तौरसे आक्रमण करके दंड देना चाहा। अली सुल्तानकी खुदवाई नहर तस्ली-यामिगके तटपर लड़ाई हुई। खान हारकर बंदी बना। हवशने वापको अवा कर तीन वीवियों और दो छोटे पुत्रोंके साथ उसे छोड़ दिया। अब हवश अस्फन्दयारके पीछे पड़ा। अबुलगाजी डरके मारे कात होने बुखारा भाग गया। अस्फन्दयार अपने दूसरे दो भाइयों गरीफ और ख्वारेज्मशाहके साथ हजारास्पमें किलाबन्द हो गया—यह १०३० हि० (२६ XI १६२०-१७ X १६२१ ई०)की बात है। चालीस दिनके मुहासिरेके बाद दोनों पक्षोंमें समझौता हुआ—अस्फन्दयार मक्का चला जाये, गरीफ मुहम्मदको कात मिले और ख्वारेज्मशाह तथा अफगान दोनों छोटे भाई वाप-माके साथ खीवामें रहे। अगले साल (१६२२ ई०) इलवर्सने वाप, अपने भाई ख्वारेज्मशाह और अस्फन्दयारके दो पुत्रोंको मरवा डाला और दूसरे भाई अफगानको मरवानेके ब्रिये हवशके पास भेज दिया—लेकिन हवशने उसे रूस भेज दिया, जहां वह १६४८ ई०में मरा। हाजिम सुल्तानकी लड़की अलतून खानिम—अफगानकी विधवा—ने कासिमोफमें अपनी बहनवाई तकियामें पतिके शवको दफनाया।

## १२. इस्फन्दयार, (अस्फ०) अरब-पुत्र (१६२२-४२ ई०)

यह शाहजहाका समकालीन था। ख्वारेज्ममें तुर्क और सरत दो जातिया बसती थी। सरत पुराने वाशिये ईरानी जातिके थे, और तुर्क जातिमें तुर्कमान पुराने कगलियों या गूजोंकी सतान थे, जिनका सलजूको और उसमानअली तुर्कोसे निकटका सम्बन्ध था। उज्बेक वहां मुहम्मद गैबानीके साथ आये थे। सरतोंका शासन उठे युग बीत गये थे, लेकिन तुर्कमानोंके पूर्वज सलजूक बहुत दिनोंसे इस भूमिके शासक थे, इसलिये वह अब भी अपनेकी स्वामी समझते थे। इसीलिये उनसे तथा नये स्वामी उज्बेकोसे बराबर संघर्ष होता रहता था। यदि खान तुर्कमानोंका पक्ष करता, तो उज्बेक नाराज होते, उज्बेकोका करता, तो तुर्कमान शत्रु बन जाते। अरब मुहम्मदने यही गलती की थी, कि उसने दोनोंको सभालकर नहीं रक्खा। वापकी पराजयके बाद अस्फन्दयार शाह अब्बासके पान ईरान भाग गया और उससे सहायता लेकर देखून और बलखान पर्वतको लेनेमें सफल हुआ। यही तेके, सारिक और यामूत तुर्कमान कबीलोंके तीन सौ जवान उससे आ मिले। उसने रातके वक्त बक्षु-तटपर तूक किलेके सामने पड़े हवशके डेरेपर छापा मारा। लेकिन हवश प्राण बचाकर इलवर्सके पास जानेमें सफल हुआ। इलाकोका फिरसे बटवारा हुआ, जिनमें हवशको उरगज और बेजिर (बजीर) और इलवर्सको खीवा-हजारास्प मिला। गरीफ और अबुलगाजीके अनुचरोंने भी मदद दी थी, किन्तु हारकर अस्फन्दयारको मगिशलक भागना पड़ा। अपने सहायक तीन हजार

तुर्कमानोको लेकर फिर वह उरगज पहुँचा, जहाँ बीस दिनतक लड़ाई होती रही। इनवर्म अन्तमें पकड़कर मार डाला गया। हवश पहले काराकल्पकोमें भागा, फिर यम्बाके नोंगाड्योंमें पहुँचा, जिन्होंने उसे पकड़कर अस्फन्दयारके पास भेज दिया और उसने भाईके खूनमें हाथ रंग लिया। अस्फन्दयार उज्जेकोके विरुद्ध तथा सरतो और तुर्कमानोका पक्षपाती था। सरतोमें लड़ाईमें मदद नहीं मिल सकती थी, किन्तु बड़े-बड़े बनी व्यापारी इन्हींमें थे, जिनमें उनकी बड़ी मदद मिलती थी।

### १३ अबुलगाजी, अरब-पुत्र (१६४३-६३ ई०)

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक अबुलगाजी १०१४ हि० (१६ व १६०६-६ IV १६०५ ई०)में पैदा हुआ था। उसके बाप अरब मुहम्मद खानने उसी साल उरालके काफिर क्माक-रमियोंको हराया था, इसीलिये बच्चेका नाम अबुल-गाजी (काफिरोमें लड़नेवाला) रक्खा गया। इनवर्मके साथ बापकी लड़ाईमें वह दक्षिणपक्षका कमांडर था, जिसमें एकके बाद एक उसके तीन घोड़े मारे गये। बापकी हार होनेपर वह एक अनुचरके साथ भाग निकला। शत्रु उसका पीछा कर रहे थे। आकर एक बाण मुहमें लगा, जिसमें जबड़ेकी हड्डी टूट गई। लेकिन बहुत-तक घने फरस (झाड़)के जंगलोंमें वह छिपनेमें सफल हुआ। फिर अपने कवच और हथियारोंको फेंककर घोंटेपर नदीमें कूद पड़ा। प्यासा घोंडा पानी पीनेके लिये जरा रुकना चाहता था, लेकिन पीछा करनेवाले शत्रु बाण छोड़ रहे थे। कोडा नहीं था, कि घोड़ेको मारकर आगे बढ़ाये। बावके कारण मुहमें खून भरा हुआ था, अपने भारी कवचके कारण घोंडा पानीमें डूबने लगा और नाक-कान ही थोड़े-थोड़े बाहर निकले हुये थे। इसी समय अबुलगाजीको बूढ़े नैनिककी बात याद आई—“चारजामेमें उतर एक पैरको रिकावमें और दूसरेको घोड़ेकी पूछपर डाल चारजामेके पिछले छोरको एक हाथसे पकड़े—दूसरे हाथसे लगामका डशारा करने चले, तो पानीमें भी बोल हलका करनेमें सहारा मिलता है।” उसने ऐसा ही किया और वह महीमलामत नदी पार हो गया। वह कात पहुँचा। वहाँसे कितने ही आदमी, नये घोड़े और रसद ले वह समरकन्द पहुँचा, जहाँ इमामकुली खानने उसका अच्छा स्वागत किया। इसके दो साल बाद भाई अस्फन्दयार खान घोषित हुआ। अबुलगाजी और शरीफ फिर देश लौट आये। अबुलगाजीको उरगज और शरीफको वैजौरके डलाके मिले। अस्फन्दयारने अपने पास खीवा, हजारारस और कानको रक्खा। लेकिन देरतक शांति कहा रह सकती थी? जल्दी ही भाइयोंमें फिर झगडा उठा। अस्फन्दयार सरतो और तुर्कमानोका पक्षपाती था, और उसके दोनों भाई उज्जेकोके। फमल कट जानेके बाद १६२४ ई०में अबुलगाजी अस्फन्दयारसे मिलने खीवा गया। तीन दिन रहनेके बाद घोड़े कम लिये थे, इसी समय खानने हुक्म दिया, कि सभी नेमनो और उइगुरोको कत्ल कर दिया जाय। बातकी बातमें सी उज्जेक मार डाले गये। इतना ही नहीं हजारारस और खस्तमीनारेसीमें डेरा डाले सभी खानभक्त उज्जेक बूढ़े-बच्चीतक मार डाले गये, किमी नैमन और उइगुरको जीता नहीं छोड़ा गया। शरीफको इन दोनों कबीलोंको कत्ल करनेके लिये उरगज भेजा गया, और अबुलगाजीको मार डालनेकी गरजमें खीवामें रोक लिया गया। इसी समय उज्जेकोने धमकी दी, कि यदि अबुलगाजीको नहीं छोड़ा गया, तो हम राज्य छोड़कर चले जायेंगे। छोड़ दिये जानेपर अबुलगाजीने उरगज पहुँचकर उसे जनगून्थ-सा पाया। बहुत नदी पहले पासमें बहती थी, अब उसने अपनी पुरानी धारा छोड़कर नई धारा पकड़ ली थी। अबुलगाजी तूकके किलेमें ठहरा, जहाँ शरीफ भी उससे आ मिला। दोनों भाइयोंके आमपास भारी मर्यामें उज्जेक जमा हो गये। उन्होंने तुर्कमानोपर आक्रमण करनेका विचार किया, लेकिन इसका पता तुर्कमानवेक मुहम्मद हुसेनको लग गया, और वह अपने अनुयायियोंके साथ अस्फन्दयारके पास चला गया। अब दोनों भाई उज्जेकोको लिये खीवापर चढ़े। खाइवानाक नहरके ऊपर बने ताशकुपुरुक (पापाणपुल)पर कितने ही भूखसे अवमरे तुर्कमान मिटे, जिन्हें उन्होंने मार डाला। लेकिन इसी समय कात्मक-मंगोल उनके ऊपर आ पड़े और वह रिनने ही उज्जेकोको पकड़ ले गये। कर्मन्नेका आतक इतना छाया हुआ था, कि अबुलगाजीके कितनेही सहायक नाथ छोट गये। खीवाके तुर्कमानोको हिम्मत और मदद मिल गई। उन्होंने चरमीके पास

छ दिनतक युद्ध किया, लेकिन कोई फैसला नहीं हुआ, इसपर घर लौट जानेकी सलाह हुई। इसी समय अस्फन्दयारने तुर्कमानोको वढावा दिया। यद्यपि तुर्कमानोकी सख्या उज्बेकोसे दसगुनी थी, लेकिन तो भी युद्धका परिणाम अनिश्चित ही रहा। अस्फन्दयारने गर्मिया खीवामें बिताई, अबुलगाजी और शरीफ उरगजमे रहे। १६२८-२९ ई०में एक पुच्छलतारा निकल रहा था, जिसे भारी असगुन माना जाता था। उज्बेकोमेंसे कुछ अन्तर्वेदकी ओर भाग गये और कुछ तुर्किस्तानमें, इस प्रकार उनके निम्न तीन बड़े-बड़े भाग हुये—(१) बुखाराकी ओर जानेवाले, (२) मगीतो (नोगाइयो)में जानेवाले, (३) कजाकोमें जानेवाले। अबुलगाजी उज्बेकोके उस गिरोहके साथ था, जो कजाकोकी भूमिमें गया और शरीफ बुखारावालोके साथ। तीन साल बाद (१६३१-३२ ई०) उनमेंसे दो हजार परिवार फिर ख्वारेज्म लौट आये, जिनमें आठ सौ बुखारावाले परिवार भी आकर मिल गये। अब यह लोग अरालमें सिरके गिरनेवाले इलाकेमें पशुचारण करने लगे। अस्फन्दयारने उन्हें चैनसे नहीं रहने दिया और आक्रमण करके उनका नाम-निशान मिटा दिया।

अबुलगाजी कजाकखान इशिमके पास जाकर रहने लगा। वहा उसका परिचय राजकुमार तुरसुनसे हुआ, जिसके साथ वह दो साल ताशकन्दमें जाकर रहा। इशिमने तुरसुनको उसी समय मार डाला, लेकिन अबुलगाजीको इमामकुल्लीके पास बुखारा जाने दिया। यहा उसे अस्फन्दयारके अत्याचारोसे ऊब गये ख्वारेज्मी तुर्कमानोका निमंत्रण मिला और वह खीवा पहुचा। अस्फन्दयार हजारोस लौट गया था। इसी बीच शरीफ भी अबुलगाजीसे आ मिला और दोनोने मिलकर अस्फन्दयारपर आक्रमण करके उसे हरा दिया। लेकिन इतनेसे सघर्ष खतम नहीं हुआ। फिर कितनी ही लडाइया और लूटपाट होती रही। एक बार अबुलगाजीको खुरासानमें वेगलरवेगने पकडकर हमदानमें शाह अब्बास I के पौत्र शाह शफीके पास भेज दिया, जिसने उसे अस्पहानमें नजरबन्द कर दिया—अबुलगाजीको दस हजार तका पेंशन और रहनेके लिये मकान मिला था। १६३०-४० ई०तक अबुलगाजी इस तरह ईरानमें बदी रहा। उसने धीरे-धीरे आठ घोडे खरीदकर भिन्न-भिन्न जगहोमें छिपा रक्खे। यही उसके कुछ विष्वासपात्र नौकर भी आ मिले। अबुलगाजी स्वय एक नौकर-का साईस बना। घोडे तैयार कर लिये गये थे। नगाडखानेमें जिस वक्त मध्य-रात्रिका नगाडा बज रहा था, उसी वक्त वह सडकसे होकर निकल पडा। द्वारपर पहुचकर उसने चिल्लाकर कहा—“खोलो दरवाजा”। दरवाजा खुल गया और अबुलगाजी अपने साथियोके साथ चलता बना। बोस्तामके पास जब वह एक कब्रिस्तानसे गुजर रहा था, तो वहा कोई मुर्दा दफन किया जा रहा था। अबुलगाजीने वही एक गरीब सैयदसे बातचीत करके रसद तथा तीन घोडोके बदलनेका प्रबन्ध किया। गलतीसे उसने मगजका रास्ता पूछ लिया, जिससे लोगोको सदेह हो गया, कि यह भगोडे उज्बेक कैदी हैं। प्रत्युत्पन्नमति अबुलगाजीने झट बहाना कर दिया, कि हम शाहके चिरकासी मुहम्मद कुल्लीवेग हैं—और एक प्रसिद्ध मुल्ला—से मिलने जा रहे हैं। इस तरह चिरकामी मुहम्मद कुल्लीवेग बनकर अबुलगाजीकी जान बची। आगे जाकर जब वह रेगिस्तानके छोरपर पहुचे, तो मगिशलकके कितने ही भगोडे तुर्कमान आ मिले। उनसे मालूम हुआ, कि वोल्गाकी ओरके कल्मकोने आक्रमण किया था, वह बहुतसे पशुओको लूट ले गये। अबुलगाजीने अपना परिचय दिया। तुर्कमानोने उसे अपने पाम जाडा बित्तानेके लिये निमंत्रित किया। जाडोके बाद वसतमें अबुलगाजीको तेक्के (तुर्कमान) कवीले—जो कास्पियनके पूर्वी तटके पासके बलखान पहाडमें रहते थे—के पास जानेको कहा। वहा जाकर अबुलगाजीने दो साल बिताये। फिर वह मगिशलक पहुचा, जो कि अब कल्मकोके अधीन था। कल्मक सरदारको जब बात मालूम हुई, तो उसने अबुलगाजीको बुलाकर सालभर नजरबन्द रक्खा। अन्तमें १६४२ ई०में वह उरगज लौटनेमें सफल हुआ। इसके छ महीने बाद अस्फन्दयार मर गया, शरीफ मुहम्मद दो साल पहले ही मर चुका था, इसलिये ख्वारेज्मकी गद्दी अब अबुलगाजी वहादुरके लिये हाजिर थी।

जहा खूनखराबी और लूट-मारको खेल समझा जाता हो, और हर एक बातका फैसला केवल तलवारसे किया जाता हो, वहा जीवन कैसे व्यवस्थित रह सकता है ? आश्चर्य तो यह है, कि इतनी

मारकाट रहनेपर भी रुमके साथ होनेवाला व्यापार अब भी बन्द नहीं था। व्यापार सचमुच ही बड़ी-बड़ी लडाइयोंके भीतरसे भी अपना रास्ता निकाल लेता है। दोनों लडनेवाले सरदार भेंट-पूजा लेकर व्यापारीका रास्ता छोट देते हैं। स्वारेज्ममें बड़ी अशान्ति थी, जब कि अस्फन्दयारकी मौतके मालमर बाद अबुलगाजी अरालके उसी इलाकेमें खान घोषित हुआ, जहापर बक्षु अराल-समुद्रमें गिरती है। इस इलाकेमें प्रायः सारे ही उज्बेक बसते थे। स्वारेज्मके बाकी भागोंमें अस्फन्दयारके दो पुत्रों युगन और अशरफके अनुयायी तुर्कमान रहते थे। ख़ुतवा उस समय बुखाराके खान नादिर मुहम्मदके नाममें पढ़ा जाता था, जिसके पाम अराफ जामिनके तौरपर रहता था। अबुलगाजीने दो बार चढ़ाई करके खीवाके उपनगरको लूटा। नादिर मुहम्मदने खीवा और हजारारूपमें अपने राज्यपाल नियुक्त किये थे और अस्फन्दयारकी विधवाको उसके एक पुत्र और कन्याके साथ करशीमें रहनेके लिये भेज दिया था। बुखारी राज्यपाल वस्तुतः नैतिक कमांडर था, नागरिक शासन अस्फन्दयारद्वारा नियुक्त तुर्कमान अमलोंके हाथमें था। इसी समय बुखारामें खानका पीत्र तथा खुसरो सुल्तानका पुत्र कामिम सुल्तान निगानीके लिये स्वारेज्म आया, किन्तु वह तुर्कमान अमलोंसे छेड़खानी नहीं करता था। कामिमके आनेकी खबर सुनकर अबुलगाजीने और सेना जमाकर खीवापर चढ़ाई की। बुखारी सेना बहुत अधिक थी, जिसमें लडनेके लिये अबुलगाजीकी सेना कई टुकड़ियोंमें बंट गई। खीवाके हजार नैनिकोंमें आठ सौ कवच-धिरस्त्राणमें इस तरह ढकेहुये थे, कि उनकी मिर्फ आखें दिखलाई पड़ती थी। अबुलगाजीके आदमियोंमेंसे केवल पांच कवचधारी थे। लेकिन अबुलगाजीने बहुत अच्छी तरहमें ब्यूह-रचना की। लडाईका फैसला होनेमें पहले ही याकूब तुपितको भेजकर कामिमको बुखारा बुला लिया गया। बड़े समय बाद नादिर स्वयं बुखाराका खान नहीं रहा और उसके बेटे (अमीरो) ने उसके बेटे अब्दुल अजीजको तख्तपर बैठाया। खीवामें नियुक्त बुखारी सेना भी अब भाग गई और १६४४ ई०में अराल-नदमें आकर अबुलगाजीने खीवापर अधिकार कर लिया। अबुलगाजीने मार्बजनिक धर्मादानकी घोषणा करतेहुये भगोडे तुर्कमानोंको लौटनेके लिये कहा। भगोडे तुर्कमानोंके नन्दार गुताम बहादुर, दीन मुहम्मद, उनउनवेगी और उरसवेगीने हजारारूपके पासके रेगिस्तानमें डेरा डालकर अपने अब-शकालो (जेठो)को भेज आत्म-समर्पण किया। खानके वचन देकर बुलानेपर वह आये थे, लेकिन जियाफतमें गाना शुरू करनेके समय ही अबुलगाजीके हुक्मसे उनका कल्लेआम शुरू हुआ। तुर्कमान भारी सख्यामें मारे गये, माल-अमबाव लूट लिया गया और उनके बीबी-बच्चे दाम बना दिये गये। इस हत्याकांडके बाद अबुलगाजी खीवा लौटा, और थोड़े समय बाद उसने तेयेनमें तुर्कमानोंके एक दूसरे समूहपर आक्रमण करके उन्हें लूटा-मारा। यही खीवा और बलखके भगोडोंने वामे-बुरनियामें पनाह लेनेके लिये एक पत्थरका किला बनाया था। उन्होंने अपने परिवारको कराक़्नी भेज दिया। उनपर भी आक्रमण करके अबुलगाजीने एक-एक आदमीको मार डाला, और नगे हाथों कराक़्नीमें पड़े उनके डेरोको भी लूट लिया। लेकिन मंगोल कांशोत (कलमक) स्वारेज्मके लिये अब एक भारी समस्या हो उठे थे। १६४८ ई०में अबुलगाजीने उन्हें हराया, तो भी व्यापार करनेके लिये आये तोरगुत (मंगोल) सरदार वायनको सुरक्षित पर जाने दिया। १६५१ ई०में अबुलगाजी उनके सरदारके साथ वैराज तुर्कमानोंको नष्ट कर औरतो-बच्चोंको पकड़ ले गया। अगले साल तूजके अमीरो और सारिक तुर्कमानोंकी बारी आई, इसी साल तोरगुत (बोला) कन्मकोने हजारारूपके पान लूट-मार की, जिन्हें अबुलगाजीने भगाकर बहुत दूरतक पीछा किया।

इस प्रकार कुछ सालोंकी मरगरमीके बाद अबुलगाजीने सभी तुर्कमानोंको दबाकर कितने ही समय तक आनिपूर्वक राज्य किया। १०४६ हि० (५ VI १६३६-२६ VI १६३७ ई०)में उसके भाई शरीफने दामाद मुबानकुल्लीने अपने भाई अब्दुल अजीज खान (बुखारा)के खिलाफ मदद मांगी। वस्तीम स्वारेज्मी कुमारोंके मूनका बदला लेनेका यह अच्छा मौका था। अबुलगाजीने मदद दी और उनके सेनापति बेककुली डरनेकने कराबुलके इलाकेको लूट-मारकर उजाड़ दिया और वह बुखाराके पासके गांव सुइउनि-बवालातक जाकर कूकैर्दलिक लौट आया। फिर उसी साल बुखारी सेनाको

हराकर कराकुलको जला चारजूयके इलाकेको भी उसने वरवाद किया। कुछ महीने बाद (१६५४-५५ ई०) वह याइजी इलाकेको नैरेजेमतक लूटते कराकुल होने भारी सख्यामे युद्धवदियोंको लिये खीवा लौटा। यह सब देखते हुये भी अब्दुल अजीज खानको सामने आनेकी हिम्मत नहीं हुई। १०६५ हि० (११ XI १६५४-२ X १६५५ ई०) मे ही ख्वारेज्मियोने करमीनापर अधिकार करके लूटा। इन लडाइयोमें अबुलगाजी स्वयं शामिल होता था। एक बार खतरेसे बचानेके उपलक्षमे अबुलगाजीने अपने पुत्र अनुशा (अनुशाह) को एक झंडा, एक सेना तथा हजारारूपकी कमांड प्रदान की। अबुलगाजीने १६५८ ई०मे बरदजा इलाकेको लूटा, जिसमें कि बुखारा शहर है। १६६१ ई०मे उसने फिर बुखारा इलाकेको लूटा। इस तरह अपने सहवर्मियोंको अनेक बार लूटने-मारनेके बाद उसका ख्याल काफ़ीरोको लूटकर पुण्य कमानेका हुआ। इसके लिये उसकी नजर ईरानी किजिल-वासो और वोल्गाके पासवाले कल्मकोपर पड़ी। उसने दूतद्वारा अब्दुल अजीज खानके पास सुलहका प्रस्ताव भेजा, और शासनका काम अनुशाको सौंप दिया। लेकिन उसे पुण्य-अर्जनका अवसर नहीं मिला और घोर युद्ध तथा अशांतिके बीस सालके शासनके बाद वह १०७४ हि० (५ VIII १६६३-२५ VI १६६४ ई०) मे मर गया। एक तरफ वह खूनका प्यासा निपट इवापद था, तो दूसरी तरफ उसकी लेखनीने एक बड़े ही सुन्दर इतिहास-ग्रंथको हमारे लिये छोड़ा। अपने समकालीन औरगजेवके कितने ही अवगुण उसमें भी थे।

### १४. अनुशा मुहम्मद बहादुर, अबुलगाजी-पुत्र (१६६३-८६ ई०)

बापने बुखाराके साथ मैत्री कर ली थी, लेकिन वेदा उसे माननेके लिये तैयार नहीं था। उसने बुखाराके नजदीक जूयेवारके खोजोको जाकर लूटा। उस समय अब्दुल-अजीज खान करमीनामें था। खबर सुनते ही वह दौड़ा। आधी रातको जब वहा पहुंचा, उस समय नगर ख्वारेज्मियोंके हाथमे था। केवल चालीस दासोको लिये उसने रक्षि-सैनिकोंके ऊपर पड़ अपने लिये रास्ता बनाया, और लड़ते-लड़ते वह आर्क (किले)में जा पहुंचा। उसने ख्वारेज्मियोंके कले-आमका हुक्म दे दिया। उज्बेको, ताजिको या विदेशी व्यापारियोंमे जिनके हाथमें भी हथियार था, सभी शत्रुओंके ऊपर टूट पड़े—नगर के बाहर जानेवाले सारे रास्ते बाड़े खड़ी करके बन्द कर दिये गये थे। ख्वारेज्मियोंका भीषण सहार हुआ, लेकिन अनुशा एक छोटी-सी टुकड़ीके साथ भागकर ख्वारेज्म पहुंचनेमें सफल हुआ। इस मारके कारण थोड़ी देरके लिये अनुशाकी हिम्मत टूट गई।

यद्यपि अब्दुल अजीज खानने ख्वारेज्मियोंके आक्रमणका सफल प्रतिरोध किया, लेकिन तब भी १६८० ई०मे अब्दुल अजीजको सुभानकुल्लीके लिये गद्दी खाली करनी पड़ी। सुभानका आरम्भिक शासन बेटोंके विद्रोहके कारण कमजोर था, इसलिये अनुशाको फिर हिम्मत हुई, और उसने १६८३ ई०में आक्रमण करके नगरो और गावोंको बुखारा शहरके आसपास तक ध्वस्त कर दिया और बहुत से माल और युद्धवदियोंके साथ लौट गया। सुभानने हाल हीमे विद्रोह करनेवाले अपने पुत्र सादिकको सहायताके लिये बुलाया, लेकिन रास्तेमे उसने सुना, कि अनुशाने खुरासानपर आक्रमण करके वहा अपने नामका सिक्का और खुतबा चलाया है। हिसार (ताजिकिस्तान) और खोजन्दके अमीर भी अब खुली तौरसे सुभानकुल्लीसे विद्रोही बन गये और उसके कितने ही दरबारी भी अनुशाके पक्षमें हो गये। यह स्थिति देखकर सादिकने बुखारा जानेकी जगह लौटकर बलखकी रक्षा करना अधिक पसन्द किया। इसपर खानने बदख्शाके राज्यपाल महमद बी अतालिकको बुलाया, जिसने गिज्दुवानमें अनुशाकी सेनाको पूरी तौरसे हरा दिया, यह हम पहले बतला चुके हैं। अगले साल (१६८५ ई०) खानको बलखके झगडेमे फसा देखकर बुखाराके द्वारपर अनुशा फिर आया, किन्तु मुहम्मदजान अतालीकने बलखसे आकर फिर उसे हरा दिया। इसके कुछ समयबाद जब सुभानकुल्ली मशहदमें तीर्थ-यात्राके लिये गया था, तो अनुशाने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण किया, लेकिन लोगोंने एक होकर भयकर हत्याके साथ ख्वारेज्मियोंको दूटनेके लिये मजबूर किया—

इस नश्वर्यमे बहुतने स्वारेज्मी नेता भी मारे गये। अनुशा फिर चढाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन अमीरोने मना करते हुए कहा, कि कलमक बडी सेना लेकर हमारे ऊपर आक्रमण करने आ रहे हैं, उनमे लडनेके लिये एरेंक (औरंग) को मेनाका मचालक बनाकर भेजो। मेना हाथमें आते ही एरेंकने बापको पकड लिया और लाल लोहेसे दागकर उसे अया बना तल्लमे उतार दिया।

### १५ मुहम्मद एरेंक, औरंग, अनुगा-पुत्र (१६८६-८७ ई०)

स्वारेज्मके दरबारमें भी जितने ही अमीर सुभानकुल्लीके पक्षमें थे। एरेंकने सुभानकुल्लीके पक्षवाले अमीरोको देग-निकाला दे दिया, फिर बुखारी सेनाको खुरासानमे गई जानकर बुखारापर चढाई की। सुभानकुल्लीने दस दिनतक नगरकी रक्षा की, फिर महमूद वी अतालीक आ गया, जिसने बुखाराके नगर-प्राकारके नीचे स्वारेज्मियोंको हरा उनमेसे बहुतोको बन्दी बना लिया। इस बीच सुभानपक्षी अमीरोने उरगजमे पड्यत्र कर रक्खा और लौटते ही एरेंकको जहर देकर मार डाला।

### १६ शाहनियाज खान (१६८७-१७०२ ई०)

स्वारेज्मके खानोका वज गोत्र-बन्धके लिये हृदमे अधिक बढनाम हो गया था, जिसके कारण वहाके अमीर उन्हें पनन्द नहीं करते थे, इसलिये एरेंकके मरनेके बाद विद्रोहियोंने सुभानकुल्लीके पान कोई शानक प्रदान करनेके लिये अपना गिष्टमडल भेजा। सुभानकुल्लीने शाहनियाज इगिक आकाको राज्यपाल बनाकर भेज निक्का तथा खुतवा अपने नाममे जारी कराया। सुभानका शासन कई नानांतर रहा। उसने १७०० ई०मे रूसी जार पीतर I के पास दूत भेजकर प्रार्थना की, कि हमारे देगको अपने मरझगमे ले लो। उसी साल ३० जुलाईको पत्रद्वारा पीतरने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। १७०२ ई०मे सुभानकी मृत्युके बाद, जान पडता है, शाहनियाजका शासन भी खतम हो गया।

### १७ अरब मुहम्मद II, अनुगा-पुत्र (१७०२ ई०)

१७०२ ई०मे पीतर I ने एक मित्रतापूर्ण सदेश भेजकर अरब मुहम्मद और उसके लोगोको अपनी प्रजावे तीरपर स्वीकार किया, इस प्रकार हम देख रहे हैं कि औरंगजेबके शासनके अन्तिम समयमें रूसी जारकी वाह स्वारेज्मतक पहुंच चुकी थी।

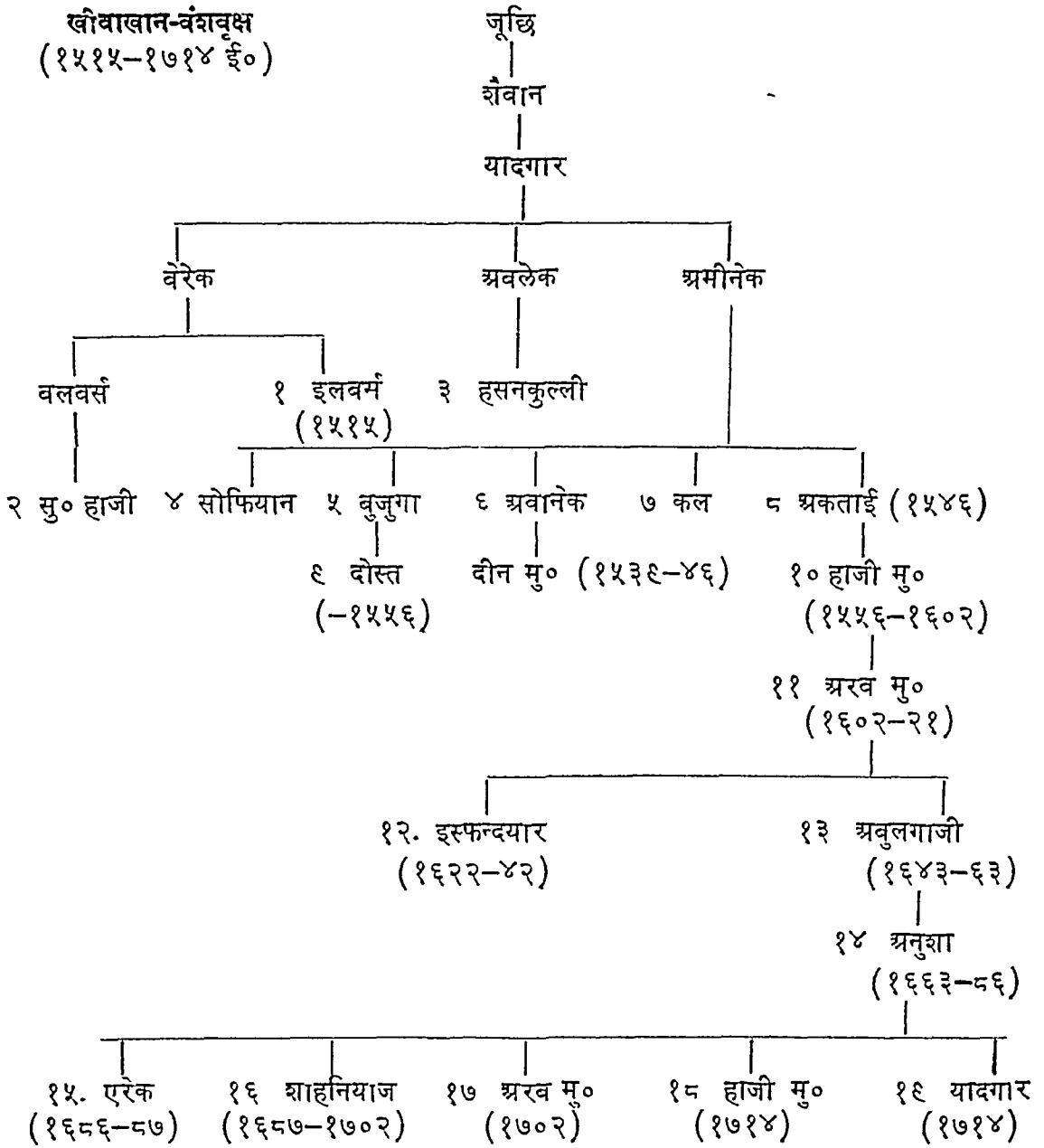
### १८. हाजी मुहम्मद वहादुर, अनुगा-पुत्र (१७१४ ई०)

इसके बारेमे इतना ही मालूम है, कि १७१४ ई०मे इसका दूत पीतरबुर्गमें पीतर I के दरबारमें पहुंचा था।

### १९. यादगार, अनुगा-पुत्र (१७१४ ई०)

यह १७१४ ई० मे मरा था। जान पडता है, यह अधिक समयतक राज्य नहीं कर पाया। इसके नाथ बरेका खानकी सत्तानोका शासन स्वारेज्ममे खतम हो गया, और उनका स्थान बाहरसे नये-नये आते खानोने लिया।

खीवाखान-वंशवृक्ष  
(१५१५-१७१४ ई०)







# भाग ३

## उत्तरापथ



## अध्याय १

### रूसका प्रसार

(१५९८-१८०१ ई०)

#### १. वीचके जार

१. वोरिस गदुनोफ (१५९८-१६०५ ई०)

१६वीं सदीके अन्ततक रोरिक-वशके नेतृत्वमे रूसका किस तरहसे एकीकरण और प्रसार हुआ, इसके बारेमे हम कह आये हैं। रूरिकवशी अन्तिम जार फ्योदोर इवान-पुत्रके मरनेके साथ १५९८ ई०में रूरिक-वशके खतम होनेपर वोरिस गदुनोफ जार बना। विवाह-सबध तथा फ्योदोर-के समय शासनकी वागडोर हाथमे रखनेके कारण गदुनोफको कठिनाई नहीं हुई और १५९८ ई० में “जेम्स्की सवोर” (राष्ट्रीय परिषद्)में एकत्रित सामन्तो और व्यापारियोंके बहुमतने वोरिस गदुनोफको मास्कोका जार निर्वाचित किया। वोरिसने इवानIVकी नीतिपर चलते हुये देशमें व्यवस्था कायम रखनेकी सफल कोशिश की। पुराने राजुलो और सामन्तोके परिवार हमेशा देशको विकेन्द्रित करनेकी कोशिश करते थे, इसलिये इवानIIIकी तरह गदुनोफको भी उन्हें कड़ाईसे दवाना पड़ा। निकिता रोमन-पुत्र और उसके परिवारवाले—जो पीछे रोमनोफके नामसे प्रसिद्ध हुये—गदुनोफके लिये सबसे अधिक चिंताके कारण थे। रोमनोफोका सबध जार फ्योदोरसे था, और नागरिकोमे उनके मुखिया फ्योदोर निकित-पुत्रके बहुतसे अनुयायी थे। गदुनोफने गुप्त सूचनाओके बलपर उनपर षड्यंत्र करनेका आरोप लगाया, और सभी भाइयोको उत्तरकी ओर निर्वासित कर दिया। फ्योदोर रोमनोफ इसी समय पापा फिलारेतके नामसे साधु बन गया। अपने भूमिपति शत्रुओको गदुनोफने दबा दिया, लेकिन इसी समय किसान विद्रोहके रूपमे दूसरा भारी खतरा उठ खड़ा हुआ।

१६०१ ई०में रूसमें अकाल पड़ गया—पहले बहुत वर्षा हुई, फिर शरदके आरम्भ हीमें पाला पड़ा, जिसके कारण सारी फसल बरबाद हो गई और वसतमे खेतोमे कोई अनाज नहीं पैदा हुआ। वसतकी वोआईके लिये किसानोके पास बीजतक नहीं रह गया। लोग भूखके मारे घास और भोजपत्रकी छाल खा रहे थे। कोई-कोई गाव तो सारा-का-सारा मर गया। मास्कोकी सड़कोपर भी बिना दफनाई लाशें पड़ी हुई थी। यह भयकर अकाल तीन वर्ष (१६०१-१६०३ ई०)तक रहा। तालुक-दारो, मठो और व्यापारियोंके पास भारी परिमाणमे गल्ला था, लेकिन उन्होने उसे महंगे भावो-पर बेचकर धन जमा करना पसंद किया। सामंतो और जमींदारोने उस समय खाना देनेसे इन्कार करके अपने सेवकोतकको भी भगा दिया। भुखमरोके विद्रोहका भय देखकर गदुनोफने हुक्म दिया, कि सरकारी बखारोको खोलकर लोगोमे अनाज बांटा जाय, लेकिन बांटने वालोने उसमे भी अपने लिये खूब पैसे बनाये। सरकारके पास इतना गल्ला भी नहीं था, और जिनके पास बहुत गल्ला था, वह मूल्यके और भी अधिक बढ़नेकी आशामे अपनी बखारोको खोलना नहीं चाहते थे। “मरता क्या न करता”के अनुसार अब भूखसे मरते किसानो और अर्धदासोने अपनी टुकडिया बना जमींदारो और वनियोको लूटना शुरू किया। उनमेंसे कुछ दोन-उपत्यका और ब्र्यास्कके जगलो-में चले गये। १६३० ई०मे खलोपको कसलोपके नेतृत्वमे किसानोकी एक बड़ी टुकड़ी राजधानी (मास्को)के पास पहुची, जिसकी जारकी सेनासे एक भयकर लड़ाई हुई, जिसमे जारका वीरवद (राज्यपाल)इवान वसमानोफ मारा गया। बड़ी मुश्किलसे जारकी सेनाने राजधानीसे विद्रो-

हियोंको भगा पाया। खलोपको कसलोप आहत होकर पकड़ा गया, लेकिन जल्दी ही मर गया। बहुतसे किसान और अर्ध-दासोंको जारके बोयवदोने मास्कोकी ओर आनेवाली सड़कोंके किनारोंके वृक्षों-पर लटकाकर फासी दे दी।

इसी समय प्रतिद्वंद्वी पोलन्दने रूसकी इस हालतसे फायदा उठाया और पोल-राजा सिगिस्मद III ने एक मिथ्या दिमित्रि I को अपने हाथका हथियार बनाना चाहा। रोमन कैथलिक धर्मराज पोपको जब यह खबर मिली, तो उसने भी दिमित्रिका समर्थन किया। अफवाह फैलाई गई, कि जार-पुत्र दिमित्रि उगलिचमें मारा नहीं गया, बल्कि वह भागकर पोलन्द चला गया। वोरिस गदुनोफ जिम समय गद्दीपर बैठा, उसी समय उक्रइने पान (सामन्त) आदम विन्नियो-वियेच्कीके गढ़में एक आदमी प्रकट हुआ, जिसने अपनेको इवान IV का पुत्र दिमित्रि घोषित किया। मास्को-सरकारको जब यह पता लगा, तो उसने उसके बारेमें कहा—यह दिमित्रि एक भूतपूर्व साधु ग्रिगोरी ओतरेपयेफ है, जो कि कस्त्रोमाके एक छोटेसे सामन्ती घरानेमें पैदा हुआ। ग्रिगोरी जवानीमें कितने ही मठोंमें घूमता रहा, फिर उसने अपना कुछ समय मास्कोमें बिताया, और अतमें दूसरे तीन साधुओंके साथ पोलन्द भाग गया। आधुनिक इतिहासकारोंका कहना है, कि मिथ्या दिमित्रि कौन था, इसका पता लगाना मुश्किल है।

पोल अमीरोंने मिथ्या दिमित्रिके प्रकट होनेकी खबरका बड़ा स्वागत किया। उसे विस्नियोवियेच्कीके एक सबधी तथा सम्बोरके बोयबोद यूरी म्निस्जेफके पास पहुंचाया गया। १६०४ ई०के वसंतमें राजा सिगिस्मद III ने राजधानी क्राकोमें दिमित्रिका स्वागत किया। उस समय तुरत रूसके साथ खुली लड़ाई करना पसंद नहीं किया गया, लेकिन इस बातकी कोशिश की गई, कि दिमित्रिके पक्षपाती उसकी सेनामें आकर शामिल हो। पोल अमीरोंको रूसके घनका लोभ था, इसलिए वह दिमित्रिकी हर तरहसे सहायता करनेके लिये तैयार थे। दिमित्रिने पोप, पोलन्दके राजा तथा अमीरोंको बहुत बड़े-बड़े वचन दिये। पोपको खुश करनेके लिये उसने कैथलिक-धर्म स्वीकार किया और सभी रूसियोंको कैथलिक बनानेका बीड़ा उठाया। पोल-राजाको उसने स्मोलेन्स्क नगर तथा चेर्निगोफके इलाके (सेवेर्स्क)को देनेका वचन दिया। म्निस्जेफ परिवारको उसने नवगोर्द और पुस्कोफ प्रदेशका शासक बनानेका वादा करते कहा, कि जारके खजानेसे जो कुछ भी पैसा और रतन-जवाहर मिलेगा, वह तुम्हारा होगा। इस शर्तपर यूरी म्निस्जेफने अपनी लड़की मरीनाका ब्याह मिथ्या दिमित्रिसे करना कबूल किया—मरीना रूसी जारित्सा (जारानी) बनती। दिमित्रिके लिये सारी तैयारी सम्बोरमें होने लगी। तैयारीके बाद १६०४ ई०के शरदके अन्तमें चार हजार पोल-सेना तथा कई सौ रूसी कसाकोंके साथ दिमित्रिने कियेफके पास द्नीयेपर नदी पार किया। बिना प्रतिरोध किये ही कितने ही नगरोंने दिमित्रिकी अधीनता स्वीकार की। वोरिस गदुनोफके शासनसे असंतुष्ट अकालके मारे कितने ही भगोड़े किसान, अर्ध-दास तथा छोटे-छोटे सैनिक भी उसके झंडेके नीचे जा खड़े हुये। बहुतसे किसान सचमुच ही उसे इवान IV का पुत्र समझने लगे। उनको यह भी विश्वास था, कि वह हमें अर्ध-दासतासे मुक्त कर देगा। १६०४ ई०के अन्तमें मास्कोकी सेना दिमित्रि द्वारा घेरे गये नवगोर्द-सेवेर्स्कको मुक्त करनेके लिये पहुंची। मिथ्या दिमित्रिने चाहा, कि बिना लड़े सेवेर्स्ककी ओर चला जाय। जनवरी १६०५ ई०में वह सेवेर्स्कके पास दोबरोनीची गावमें हारकर अपने बचे-बचूचे आदमियोंके साथ पुतिवल्की ओर भाग गया। विजय प्राप्त करनेके बाद भी गदुनोफकी हाल बेहतर नहीं हुई। विद्रोहियोंके नये-नये दल आकर आक्रमण करते रहे। जारकी सेना क्रोमीके किलेको घेरे हुई थी। दोनके कसाक दिमित्रिकी ओर होकर लटने लगे। इसी समय जारकी सेनाने भी दिमित्रिके विरुद्ध लड़नेसे इन्कार कर दिया और बहुतमें सिपाही मैदान छोड़कर घर चले गये। इसी अवस्थामें अप्रैल १६०५ ई०में गदुनोफ एकाएक मर गया। सामन्तोंने तुरन्त उसके सोलह वर्षके पुत्र फ्योदोरको जार घोषित कर दिया।

गदुनोफके शासन-कालमें ही १५९८ ई०में साइबेरियामें जाकर रूसी प्रवासियोंके बसने-का पहिला उल्लेख मिलता है। जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेके बाद ये लोग उगलिचसे भागकर पूर्वमें

चले गये थे । साइबेरियामे रूसियोंकी कुछ बस्तिया बल्कि पहले ही १५८७ ई०मे तबोल्स्क नगरकी स्थापनाके समयसे बसने लगी थी । १६०४ ई०मे तोम्स्क नगर भी स्थापित हो गया ।

## २ फ्योदोर, बोरिस-पुत्र (१३ अप्रैल-१ जून १६०५ ई०)

फ्योदोरको गद्दी नहीं बल्कि थोड़े दिनोंके लिये खाली सिंहासनपर बैठकर रूसकी राजा-बलीमे नाम लिखवानेका मौका मिला । गदुनोफके हटते ही मिथ्या दिमित्रिका रास्ता खुल गया । क्रोमामें जो बची-खुची सरकारी सेना रह गई थी, वह भी पीतर बसमानोफकी अधीनतामें दिमित्रिकी ओर चली गई । सामन्त पहिले हीसे गदुनोफसे घृणा करते थे, क्योंकि वह राजुलोके अस्तित्वको खतरेमें डाले हुये था । राजुल वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीने पहले उगलिचमे जार-पुत्र दिमित्रिके मरनेकी गवाही दी थी । अब उसने अपनी बातसे इन्कार करते कहा, कि गदुनोफ जार-पुत्रको मारना चाहता था, किंतु वह जान बचाकर भाग गया । वह जिंदा है और अब राजधानीकी ओर आ रहा है । दिमित्रिके दूतोंके मास्को पहुंचनेपर अमीरोंने जार फ्योदोर और उसकी माको मार डाला । दिमित्रिने बिना किसी विरोधके जून १६०५ ई०में अपने सहायक पोलोके साथ रूसी राज-धानीमें प्रवेश किया—यह अकबरकी मृत्युका साल था ।

## ३ दिमित्रि, मिथ्या (१६०५-६ ई०)

दिमित्रिने जारके पुराने सिंहासनपर बैठते ही अपने असली रूपको दिखलाना शुरू किया । पहले उसने असतुष्ट किसानोंको विश्वास दिलाया था, कि हम तुम्हारी हालत बेहतर बनायेगे, लेकिन अब उसने फिर जमींदारों और सामन्तोंकी पूर्व-स्थितिको मजबूत करना शुरू किया । ऊपरसे जो पोल अमीर और दूसरे अनुचर आये थे, वह अपनेको रूसियोंका विधाता समझते उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार करते दोनों हाथोंसे नोच-खसोट कर रहे थे । दिमित्रिके चारों तरफ भाड़ोंके विदेशी नौकर भरे हुये थे । दिमित्रि स्वयं बहुत भारी परिमाणमें पैसा पोलन्द भेज रहा था । अब लोगोंकी आखें खुली और मास्कोके नागरिकोंने खुल्लमखुल्ला शिकायत करनी शुरू की । १६०६ ई०के वसंतमें दिमित्रिकी बीबी मरीना आई, जिसके साथ पोल अमीरोंका एक बड़ा दल बहुतसे अनुचरोंको लिये आया । मरीनाके साथ दिमित्रिका विवाह-महोत्सव बड़े ठाट-बाटसे मनाया गया, कई दिनोंतक मौज होते रहे । शराबमें मस्त उसके विदेशी सहायकोंने इस समय और भी गजब ढाया, जिससे जनता क्रोधमें पागल हो गई । राजुल वासिली शुइस्कीने इस अवस्थासे फायदा उठा पड़्यत्र रचा और १७ मई १६०६ ई०को घण्टेकी आवाजके सकेतको सुनते ही लोग मुकाविले के लिये खड़े हो चिल्ला उठे—“चलो लितवो पर ! लितवोकी क्षय ! !”—रूसी उस समय पोलोको लितवा कहते थे । मिथ्या दिमित्रिको जब खतरेकी खबर मिली, तो महलके सामने काफी भीड़ जमा हो चुकी थी । जान बचानेके लिये खिडकीसे कूदा, जिसके कारण वह वुरी तरह घायल हो गया । लोगोंने पहुंचकर उसे तुरन्त ही मार डाला । कुछ दिनों बाद मिथ्या दिमित्रिके शरीरको जला उसकी राख एक तोपमें भरकर उसे उसी ओर मुह करके दाग दिया गया, जिधरसे वह आया था । सारे नागरिक शहरमें ढूढ़-ढूढ़कर पोल अमीरों और दरबारियोंको मारने लगे । पत्थर, छुरा, डंडा जो कुछ भी हाथ आया, उसीसे उन्होंने हथियारबंद पोलोपर आक्रमण किया । दो हजार पोल मारे गये और बाकियोंने मोर्चाबिंदी छोड़ें आत्म-समर्पण कर दिया । बायरोको डर लगा, कि विद्रोही जनसाधारण कहीं उनके विरुद्धभी कुछ न कर बैठें, इसलिये उन्होंने सबसे पहले सिंहासनपर किसीको बैठाकर राजशक्तिको मजबूत करना जरूरी समझा । उन्हें राष्ट्रीय परिपद (जेम्स्की सवोर)को बुलाने, की हिम्मत नहीं हुई । डर रहे थे, शायद अधिकांश नागरिक और अमीर भी विरोध करें, इसलिये पुराने राजुलवशी वासिली इवान-पुत्र शुइस्कीका नाम बिना निर्वाचनके ही १९ मईको क्रैमलिनके सामने जमा हुये लोगोंके बीच जारके तौरपर घोषित कर दिया ।

इस गडवडीके समयके जार निम्न थे—

१ वोरिस गदुनोफ	१५९५-१६०५ ई०
२ फ्योदोर, वोरिस-पुत्र	१३ अप्रैल-१ जून १६०५"
३ दिमित्रि (मिथ्या)	१६०५-६ "
४ वासिली, इवान-पुत्र शुइस्की	१६०६-१०"
५ ब्लादिस्लाव, सिगिस्मद-पुत्र	१६१०-१३ "

#### ४ वासिली शुइस्की, इवान-पुत्र (१६०६-१० ई०)

शुइस्कीने वायरोको वचन दे दिया था, कि मैं तुम्हारी सम्मतिसे राज्य करूंगा, और त्रास (सलेव) के ऊपर कमम छाई थी, कि विना वायरोकी दूमा (ससद)की रायके मृत्युदंड नहीं दूंगा, न दंडित-पुरुषके सववियोंकी सम्पत्ति जप्त करूंगा। रूसके भिन्न-भिन्न नगरोंमें उसके जार होनेकी घोषणा की गई। धनी वायरोने सबसे अधिक लाभके पदोंपर झपट्टा मारा, और उन्होंने फिर मनमानी करनी शुरू की। पुराने राजुलवगों और नये जमींदार-वनियो—वायरो—के स्वार्थ एक नहीं थे। सामन्त कब वरदास्त करने लगे, कि सभी बड़े-बड़े पदों को वायर दखल कर लें। जल्दी ही विद्रोह उठ खड़े होनेकी शका होने लगी। वायरोने प्रतिरक्षाके लिये क्रैमलिनमें तैयारी शुरू की, उसकी दीवारोंपर तोपें लगा दी, और खाइयोंके ऊपरके पुलोंको हटा दिया।

किसान-विद्रोह (१६०६-८ ई०)—किसानोंने विद्रोह किया, लेकिन वह सगठित नहीं था। जहाँ-तहाँ छिटपुट लोग सरकारके विरुद्ध आक्रमण कर रहे थे, जिससे सरकारी सेनाको अच्छा मौका मिला, और एक जगहके विद्रोहको दबा देनेपर दूसरी जगहके विद्रोहको दवाना आसान था। सबसे ज्यादा खतरनाक और जवर्दस्त विद्रोह था मजदूरो, अर्थ-दासों और कसाकोंका, जिसका नेता इवान वलो-त्निकोफ (१६०६-७ ई०) था। अपनी जवानीके समय वलोत्निकोफ एक वायरका अर्थ-दास था, जिसके अत्याचारोंसे परेशान हो वह दोन-उपत्यकाके कसाकोंमें भाग गया, जहाँ वह तार-तारोंके हाथमें पड़ गया। उन्होंने उसे दास बनाकर तुर्कोंके हाथमें बेच दिया। कुछ दिनों तक वलोत्निकोफ दूसरे वदियोंकी तरह पैरोंमें वेड़ी पहने नावकी पतवार चलाता रहा, लेकिन थोड़े ही समय बाद वह तुर्कोंकी दामतासे मुक्त होनेमें सफल हुआ। तुर्कोंने यूरोपके भिन्न-भिन्न देशोंमें कितने ही साल घूमनेके बाद रूसी सीमातके भीतर लौट आया। इसी समय शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हुआ था। वलोत्निकोफने विद्रोही सेनाका नेतृत्व स्वीकार किया। सामायिक लेखक उमकी असाधारण शारीरिक शक्ति, तीक्ष्ण बुद्धि और बहादुरीकी प्रशंसा करते हैं। विदेशी लेखक उसे "युद्धवीर" कहते थे। युद्धोंमें उसने अपनी सैनिक प्रतिभाका अच्छा परिचय दिया था। जहाँ-कहीं भी वलोत्निकोफकी सेना जाती, किसान अपने जमींदारोंके विरुद्ध होकर उसकी सेनामें आ मिलते। शहरके गरीब भी उमकी तरफ हो जाते। वलोत्निकोफकी सेना पुतिवल्से जल्दी-जल्दी त्रोमी, सेरपुखोफ और कलोम्ना होनी मास्कोकी ओर बढ़ी। अक्टूबर (१६०६ ई०)के मध्यमें वलोत्निकोफ मास्कोके सामने पहुँचा। राजधानीके चारों तरफ प्रतिरक्षाके लिये तेहरी पत्थरकी दीवार तैयार की गई थी। वलोत्निकोफ उसे सर नहीं कर सका, फिर मुहासिरा करके बैठ रहा। उमने नागरिकोंसे अपील करते पत्र लिखकर लोगोंमें बटवाया, किसानों और अर्थ-दासोंको कहा—अपने वायरो और जमींदारोंको खतम कर डालो, मैं तुम्हें राजुलोंकी भूमि प्रदान करूंगा। वलोत्निकोफकी सेनामें कुछ असतुष्ट राजुल भी थे, जिन्होंने इस खतरेको देखा। रघाजनके सामने तथा ल्यापुनोफ-भ्रातृयुगल वलोत्निकोफका साथ छोड़कर शुइस्कीकी ओर हो गये। इन्पर जारकी सेनाकी हिम्मत और शक्ति बढ़ी, जिसके साथ ही कितने ही और अमीर जारकी ओर हो गये। वलोत्निकोफको बची-बची सेना लेकर दक्षिणकी ओर हटना पड़ा। उसने जाकर कलूगामें छावनी डाली। १६०७ ई०के वसंतमें जारकी सेनाने कलूगाको घेर लिया, लेकिन इसी समय विद्रोहियोंकी एक नई सेना वलोत्निकोफकी मददके लिये आ गई और शुइस्कीकी सेनाको बुरी तरहमें हार घेरा उठाकर भागना पड़ा।

वलोत्तिकोफ आगे बढ़कर तुला पहुँचा, जहाँ कसाकोका एक नया दल उससे आ मिला । इसी दलमें पीतर नामक एक आदमी था, जो अपनेको जार फ्योदोर (इवान-पुत्र)का बेटा कहता था, यद्यपि वस्तुतः फ्योदोरका कोई बेटा नहीं था । गर्मियोंमें शुइस्की एक बड़ी सेना जमाकर चार महीनेतक तुलामें वलोत्तिकोफपर आक्रमण करता रहा । जारके सेनापतियोंने देखा, कि वलोत्तिकोफको जल्दी हराया नहीं जा सकता और जाड़में घेरा रखना मुश्किल होगा, इसलिये उन्होंने पासकी उपा नदीके ऊपर एक ऊँचा बाध बाध दिया, जिससे नदीका पानी इकट्ठा होकर जोरसे शहरके भीतर बढ़ा, जिससे वलोत्तिकोफकी रसद और वारूद बह गई । इसपर समर्पणकी बात होने लगी । जार वासिलीने वचन दिया, कि मैं सभी विद्रोहियोंको क्षमा कर दूँगा, लेकिन उसने अपनी वचनका पालन नहीं किया । इवान वलोत्तिकोफको उत्तरमें करगोपोलकी ओर भेजकर अघा करके डुबा दिया गया, और बहुतसे दूसरे विद्रोहियोंको खलोपी (गृहदास) और अर्धदास बनाकर अमीरोको दे दिया गया । वलोत्तिकोफ मारा गया, उसके सैनिक तितर-बितर हो गये, लेकिन शुइस्कीके विरुद्ध विद्रोह नहीं दबा । वोल्गा-उपत्यकाके मोर्द्विन और मारी (चेरेमिसी) विद्रोही बने और उन्होंने रूसी किसानों और अर्ध-दासोंको साथ लेकर निज्नी-नवोगोरोदको घेर लिया । उस समय तो जारकी सेना उन्हें हटानेमें सफल हुई, लेकिन १६०८ ई०की शरदमें सारी मध्य-वोल्गा उपत्यका विद्रोही बन गई ।

इधर देशके भीतर इस तरहकी विद्रोहाग्नि जल रही थी, उधर पोल भी चुप नहीं बैठे थे । उन्होंने यह अफवाह फैलाई, कि मास्कोमें खिडकीसे कूदकर मरनेवाला आदमी वस्तुतः दिमित्रि नहीं था, बल्कि दूसरे आदमीने अपनी जान देकर जार दिमित्रिके भागनेमें सहायता की । यह अफवाह यद्यपि दिमित्रिके मरनेके दिनसे ही उड़ाई जाने लगी थी, लेकिन उसका प्रभाव उस समय अधिक नहीं पड़ा । १६०८ ई०के वसतमें एक नया जार-पुत्र मिथ्या दिमित्रि II मास्कोके सीमातपर प्रकट हुआ । उसके साथ पोलदकी सरकारी सेना और दूसरे बहुतसे सैनिक थे । लिथुवानी सामन्त यान सपिएहा ७५०० पैदल और सवार सेना लेकर आया, हेतमन रोजिन्सकी भी चार हजार आदमियों के साथ पहुँचा । इसी तरह दोन और जापोरोज्ये कसाक भी मिथ्या दिमित्रि IIके साथ आ मिले । वोल्खोफके पास १६०८ ई०के वसतमें जारकी सेनाने हार खाई और दिमित्रि IIकी मुख्य सेना कलूगा और मोजाइस्कके रास्ते मास्कोकी ओर बढ़ी । उन्होंने मास्कोपर अधिकार करनेकी विफल कोशिश की । इसके बाद पोलोने राजधानीसे थोड़ी दूरपर मास्कवा नदीके ऊँचे तटपर अवस्थित तुशिनो गावमें मोर्चाबंदी करके डेरा डाला, जिसके ही कारण लोगोंने मिथ्या दिमित्रि IIको “तुशिनो जार” अथवा “तुशिनोका चोर” कहना शुरू किया । मास्कोकी स्थिति बहुत बुरी हो गई थी । नगरमें आहारका अकाल था । कितने ही बायर और राजुल शुइस्कीके पतनको निश्चित समझकर मिथ्या दिमित्रिके पास चले गये । मास्कोपर घेरा डालकर मिथ्या दिमित्रिकी सेनाने आसपासके महत्वपूर्ण स्थानोंपर अधिकार करना शुरू किया । राजधानीसे सत्तर किलोमीटरपर अवस्थित त्रोइत्स्क-सेर्गियेफ मठ (आधुनिक जागोर्स्क)को पोलोने लेना चाहा । लेकिन रक्षाके लिये पासके किसान भी मठकी ऊँची दीवारोंके भीतर पहुँचे हुये थे । मठने अपनी तोपों और सैनिकोंके बलपर पोलो और दिमित्रिकी सेनाको मार भगाया । ऊपरी वोल्गाके नगरोंमें उसे जरूर सफलता मिली, क्योंकि वहाँके लोग जार और बायरोसे इतनी घृणा करते थे, कि उन्हें मिथ्या दिमित्रि सच्चा दिमित्रि मालूम होता था ।

लेकिन दिमित्रिको जितनी सफलता होती जाती थी, उतना ही उसके सहायक पोलोका अत्याचार और अपमानजनक वर्ताव बढ़ता जाता था । वह नगरोंमें पहुँचकर व्यापारियोंके मालको छीनते, किसानों और कारीगरोंपर भारी कर लगाते, जरा भी आनाकानी करनेपर उनके घरों और खेतोंकी फसलको जला देते । कितने ही रूसी बायरो और जमींदारोंकी सम्पत्तिको क्षतिपूर्तिके तौरपर उन्होंने छीन लिया । लोग उनके विरुद्ध खड़े होनेके लिये मजबूर हुये । छिटफुट होते विद्रोह १६०८ ई०में देशव्यापी गोरिल्ला-युद्धके रूपमें परिणत हो गये ।

शुइस्कीने देखा, कि वह अकेला दोनो ओरकी मारको नही वर्दाश्त कर सकता, इसलिये उमने स्वीडेनके राजा चार्ल्स नवमसे मददके बदलेमें सधि द्वारा करेला (केल्होल्म)के नगर और आमपासके प्रदेशको स्वीडेनको दे दिया । चार्ल्सने इसके बदलेमें पोलोको भगाने तथा जारकी शक्तिको मजबूत करनेके लिये सहायता देनेका वचन दिया । स्वीडेनने १६०९ ई०के वसतमें पंद्रह हजार सेनाके साथ जेकब देलागारदीको भेजा । इस सेनामें स्वीड्, जर्मन, अंग्रेज, फ्रेंच और दूसरे कितने ही देशोंके भाडेके सैनिक थे । शुइस्कीका भतीजा राजकुमार स्कोपिन-शुइस्की भी अपने रूसी सैनिकोंको लिये इस सेनाके साथ हो गया । सेना रास्तेमें कितने ही नगरों और कस्बोंको मुक्त करती तुर्गिनोकी ओर बढ़ी । पोल भी आखिरी दाव लगानेके लिये तैयार थे । १६०९ ई०के ग्रीष्ममें भिन्न-भिन्न पोल सेनाओंने जगह-जगहपर आक्रमण करके लूट-मार की, और इसी सालकी शरदमें पोल राजा सिगिस्मदIIने एक बड़ी सेना ले रूसके भीतर घुसकर स्मोलेन्स्क नगरपर घेरा डाल दिया । मीचे रूस और पोलन्दके बीच खुलकर लड़ाई होने लगी । सिगिस्मदको अब मिथ्या दिमित्रIIकी अवश्यकता नही थी । जनवरी १६१० ई०में मिथ्या दिमित्रII पोल सहायतासे वचित हाकर तुर्गिनोसे कलूगाकी ओर भागा । उसके साथ अब भी कुछ पोल इस आशासे चल रहे थे, कि शायद मास्कोका सिंहासन आखिरमें उसको ही मिले । दिमित्रिका पक्ष लेनेवाले रूसी वायरो और राजुलोने आगा छोड़कर सिगिस्मदके साथ समझौता करना चाहा, और पोल राजाके पुत्र व्लादिस्लावको मास्कोका जार स्वीकार करते हुये ४ फरवरी १६१० ई०में सधि की । सिगिस्मदने अपने पुत्रकी ओरसे वचन दिया, कि वह अमीरो और जमींदारोंके अधिकारोंपर प्रहार नही होने देगा और भगोड़े किसानोंको उनके पास लौट जानेके लिये मजबूर करेगा ।

#### ५. व्लादिस्लाव सिगिस्मद-पुत्र (१६१०-१३ ई०)

मार्च १६१० ई०में रूसी-स्वीडिश सेना मास्कोके भीतर दाखिल हुई । उवर मास्कोपर अधिकार करनेके लिये एक पोल सेना पहुंची, जिसके विरुद्ध शुइस्कीने अपने भाई दिमित्र शुइस्कीके नेतृत्वमें एक सेना भेजी । जून १६१० ई०में क्लुगिनो गावके पास दोनो सेनाओंमें लड़ाई हुई, लेकिन लड़ने समय जर्मन और स्वीड भाडेके सैनिक रूसियोंका साथ छोड़कर पोलोकी ओर मिल गये—उन्हें तो पैसोंमें काम था । पोलोंने स्वीडोको स्वतन्त्रता-पूर्वक लौट जानेकी इजाजत दे दी । जुलाई १६१० ई०में मास्कोके नागरिकोंमें भूखे मरनेकी और शक्ति नही रह गई, और उन्होंने वासिली शुइस्कीके खिलाफ विद्रोह कर दिया । वायरो और राजुलोने वासिलीको पकड़कर उसे साधु बननेके लिये मजबूर किया, जिसमें कि वह राजकाजमें दखल न दे सके । शासन-भार अब सात बड़े-बड़े वायरोकी बनी सरकारके हाथमें चला गया, इसीलिये इस सरकारको सेमी-वायर्-श्चिना (सात वायर शासन) कहा जाता था । वायरोने अपनी स्थितिको मजबूत नही देखी, इसलिये उन्होंने इस अर्धपर व्लादिस्लावको मास्कोका जार बनना स्वीकार किया, कि वह वायरोके साथ मिलकर शासन करे । विश्वासघातियोंने समझौता करके पोल-सेनाको मास्कोके भीतर आने दिया । सघराज फियारेत तथा कुछ और वायरोका एक प्रतिनिधि-मंडल स्मोलेन्स्ककी दीवारोंके बाहर सिगिस्मदII ने मिलकर सधि करनेके लिये गया । लेकिन, पोलोंने इन देशद्रोहियोंको उनके कियेका अच्छा मजा चखाया और नवको पकड़कर पोलन्द भेज दिया । इन प्रतिनिधियोंने मास्कोमें गुप्त रीतिसे चिट्ठियां भेजकर अपनी हीन स्थिति और पोलोंके विश्वासघातके बारेमें सूचित करते कहा, कि पोलोंकी अधीनता स्वीकार मत करो, आपमें इसके बारेमें राय करो तथा हमारे पत्रको "नवो-गोरद, वलोग्दा और निजनीमें भेज दो, जिसमें सब इस बातको जान लें ।" पोल राजाकी मशा वम्नुन नव्य मास्कोका जार बननेकी थी ।

मास्कोके भीतर पहुंचकर फिर पोलोंने मनमानी शुरू कर दी, और जरा भी विरोध करनेपर लोगोंको तुरन्त गिरफ्तार करके बंदीखानेमें डाल दिया जाता । पोल अमीरोने क्रैमलिनमें जार-के बजानेको लूट लिया । उवर अपने राजाके नेतृत्वमें एक पोल सेना स्मोलेन्स्कको घेरे रही ।



उत्तरमें स्वीडोने फिनलन्द-खाड़ीके दक्षिणी तटपर अधिकार करके नवोगोरदको खतरेमें डाल दिया। व्यापारियों और कारीगरोंकी हालत बुरी हो गई थी, क्योंकि नगरोंके भीतर आपसी व्यापार विल्कुल बंद हो गया था। जमींदारों और अमीरोंकी हालत भी खराब थी, क्योंकि उनके खेतोंमें काम करनेके लिये आदमी नहीं रह गये थे।

मास्कोमें पोलोने बहुत कोशिश की, कि लोग पोल-राजाकी राजभक्ति स्वीकार करे, लेकिन वह इसके लिये तैयार नहीं थे। जिन बायरोंने विश्वासघात करके पोलोको बुलाया था, उनके खिलाफ घृणाजनक पत्रप्रसारित हो रहे थे। रूसी चर्चका प्रधान सघराज हर्मोगेनने भी इसी समय पोलोके विरुद्ध अपने विचार प्रकट किये और १६१० ई०के अन्तमें उसने भिन्न-भिन्न नगरोंमें अपनी घोषणा भिजवाकर कहा, कि राजधानीकी मुक्तिके लिये रूसी जनताको आगे बढ़ना चाहिये। सघराजकी घोषणाने लोगोंको और भी उत्तेजित कर दिया। जब इसकी खबर पोलोको मिली, तो उन्होंने सघ-राजको जेलमें डालकर तरह-तरहकी यातना देनी शुरू की, लेकिन उसने हिम्मत नहीं छोड़ी।

व्लादिस्लावको जारका सिंहासन तो मिला, लेकिन उसे और उसके बापको रूसियोंने चैनसे रहने नहीं दिया। मास्कोको मुक्त करनेके लिये सारे देशमें तैयारी होने लगी। जनवरी १६११ ई०में रूयानके वोयवोद (राज्यपाल) प्रोकोपी ल्यापुनोफने मास्कोकी मुक्तिके लिये स्वयसेवकोंका सगठन शुरू किया, जिसमें पहिले मुख्यतः दक्षिणी जिलोंके अमीरोंकी सैनिक टुकड़ियां शामिल हुईं। ल्यापुनोफने कसाको और अर्धदासोंको भी पैसे और मुक्तिका लोभ देकर अपनी ओर खींचा। शक्ति बढ़ाकर एक सैनिक टुकड़ी राजकुमार दिमित्रि मिखाइल-पुत्र पजास्कीके नेतृत्वमें पोलोके ऊपर प्रहार करने लगी। इस सेनाका हरावल ठीक समयपर मास्कोके पास पहुंचा, और पोल तथा देशद्रोही बायरोंने मास्कोमें आग लगा दी। जलते हुये घरोंके बीच लड़ाई जारी रही, पर अंतमें धूये और आगकी ज्वालाने रूसी सेनाको शहरसे बाहर निकलनेके लिये बाध्य किया। राजकुमार पजास्की इसी लड़ाईमें घायल हुआ। कुछ महीनेतक मास्कोके बाहर रहकर फिर कोशिश की, लेकिन वह राजधानीको मुक्त नहीं करा सके। ३० जूनको सेना-सगठनके बारेमें कसाको और सामन्तोंने आपसमें समझौता किया, जिसमें सामन्तोंका प्रतिनिधि ल्यापुनोफ था और राजकुमार दिमित्रि त्रुवेत्स्की तथा अतमन इवान जारुत्स्की कसाकोके प्रतिनिधि थे। समझौता ठीकसे चला नहीं, दोनों पक्षोंमें जव-तव झगडा हो उठता। ३० जूनको वह यहातक बढ़ा, कि कसाकोन प्रोकोपी ल्यापुनोफको मार डाला, जिसके बाद स्वयसेवक-सगठन छिन्न-भिन्न हो गया। सामन्त अपने सैनिकोंको लेकर चले गये और सिर्फ कसाक सैनिकोंका एक भाग मास्कोके सामने रह गया।

उधर स्मोलेन्स्कके प्रतिरक्षियोंने करीब-करीब दो सालतक पोलन्दकी भारी सेनाका मुकाबिला किया। पोल राजाने तोपोंके गोलोंसे सफलता न पाकर बड़े-बड़े वादोंसे फुसलाना चाहा, लेकिन स्मोलेन्स्कके नागरिक इसके लिये तैयार नहीं थे। जून १६११ ई०के आरम्भमें पोल किलेकी दीवारको एक जगह उड़ानेमें सफल हुये, नागरिकोंने जलते हुये नगरकी सड़कोंमें आखिरी लड़ाई लड़ी। बहुतोंने शत्रुके हाथमें पड़नेकी जगह आगकी ज्वालामें कूदकर जान दे दी। सत्तर मन वारूदके एक ढेरमें आग लगा दी गई, जिससे रूसियोंके साथ बहुतसे पोल भी चिथड़े-चिथड़े उड़ गये। बहुत थोड़ेसे प्रतिरक्षी पोलोके हाथ बंदी हुये। जिस समय स्मोलेन्स्कको पोलोने लिया, उसी समय स्वेडोने उत्तरमें नवोगोरद नगरपर अधिकार किया।

कसाको और सामन्तोंके झगड़ोंके कारण यद्यपि सैनिक स्वयसेवकोंका सगठन छिन्न-भिन्न हो गया था, लेकिन रूसियोंने पोलोके विरुद्ध अपनी तलवार मियानमें नहीं रक्खी। निजनी-नवोगोरदने फिरसे स्वयसेवकोंके सगठनमें आगे बढ़कर काम किया और मास्कोकी लड़ाईमें घायल प्रसिद्ध वीर राजकुमार दिमित्रि पजास्कीको सेनाका संचालक बननेके लिये नियुक्त किया। चारों ओर फिर एक नया उत्साह दिखाई देने लगा। मास्कोमें पोलोको जब पता लगा, कि हमारे विरुद्ध एक बड़ी भारी सेना जमा हो रही है, तो उनमें घबराहट मच गई। उनसे भी ज्यादा

भयभीत थे देशद्रोही वायर । उन्होंने लोगोसे बहुत कहा, कि पोल राजकुमार व्लादिस्लावकी अधीनता स्वीकार करो, लेकिन लोग इसके लिये तैयार नहीं हुये ।

१६१२ ई०के वसन्तमें स्वयसेवक-सेना निजनी-नवोगोरदसे यारोस्लाव्ल पहुची । सब जगह लोग बड़े उत्साहके साथ स्वागत करते आ-आकर उममें भर्ती हो रहे थे । यारोस्लाव्लमें सेना चार महीने रही । यहापर उन्होंने राष्ट्रीय सरकार संगठित की और शासन-प्रवक्त्रके भिन्न-भिन्न विभाग कायम किये । स्वयसेवकोमें भिन्न-भिन्न नगरोंके अमीर, तथा सभी वर्गोंके आदमी, कसाक, किसान और स्त्रेलेत्सी (वनुर्वर) ही नहीं, बल्कि तारतार, मारी और चुवाश जैसे अ-रूसी जातियोंके भी लोग सम्मिलित थे । येनाने अपना केंद्र यारोस्लाव्लमें रक्खा, लेकिन उसकी टुकडिया चारों तरफ फैलकर देशको पोलोंमें स्वतन्त्र करने लगी । पोल आकर उसके भिन्न-भिन्न इलाकोमें फैल तो गये थे, लेकिन उनको देशका परिचय कम था, इसलिये हर जगह ग्रामीणोंको पथ-प्रदर्शनके लिये मजबूर करते । कितने ही पथ-प्रदर्शकोंने उन्हें ऐसी जगह पहुचा दिया, जहा वह रूसी स्वयसेवको के हाथमें पड़कर नष्ट हो गये । ऐसे ही पथ-प्रदर्शकोंमें कस्त्रोमाका एक किसान इवान सुसानिन था । उसने पोलोंका पथप्रदर्शन करते उन्हें इसुपोव्स्कोयके दलदलमें डाल दिया । पोलोंने सुसानिनको मार डाला, लेकिन वह स्वय दलदलमें मरनेमें नहीं बचे । पीछे इवान सुसानिनका पद्य-नाटक (ओपेरा) बना, जो आज भी रूसियोंमें बहुत जनप्रिय है ।

१६१२ ई०के अगस्तके अन्तमें स्वयसेवक-सेनाका मुख्य अग मास्कोकी दीवारोंके नीचे पहुचा । यद्यपि उनका जवरदस्त प्रतिरोध हुआ, लेकिन वह मास्को नदीके तटपर पहुचे बिना नहीं रहा । स्वयमेवकोका एक मुख्य सेनापति कुजमा मीनिन चार सौ आदमियोंके साथ नदीके पार हो पोलोंके पक्षपर प्रहार करने लगा । पोल इसकी आशा नहीं रखते थे, इसलिये पहली ही चोटमें भागकर अपने डेरोमें घुस गये । चार सौ गाडियोंमें भरी उनकी रसद कुजमाके आदमियोंके हाथमें पड़ी । मास्कोमें डेरा डाले पड़ी पोलसेनाको अब न कहींसे अन्न मिलता और न बाहरमें सहायता आनेकी आशा थी । अन्तमें लडाई और भूखकी मारसे परेशान हो २६ अक्टूबर १६१२ ई० को क्रैमलिनके फाटककर लडाई करते उन्होंने आत्म-समर्पण किया और मास्को मुक्त हो गया ।

## २ रोमनोफ-वंश (१६१३ १९१७ ई०)

मास्कोको मुक्त करनेके बाद जारके निर्वाचनके लिये राष्ट्रीय सभा (जेम्स्की सवोर)को बुलाया गया । सभामें सबसे ज्यादा जनप्रिय वायर रोमनोफ थे, जिनकी लडकिया जार इवान IV और पयोदोरको व्याही थी । सामन्तो और वायरोको उनसे भूमि, किसान तथा दूसरी चीजों के मिलनेकी आशा थी । रोमनोफ-परिवारका प्रधान व्यक्ति फिलारेत था, जो कि रस्तोफका सघराज किन्तु अब पोलदमें बंदी होकर चला गया था । वह साधु भी था, इसलिये जार नहीं बन सकता था । १६१३ ई०के आरम्भमें राष्ट्रीय सभाने उसके सोलह वर्षके पुत्र मिखाइलको जार निर्वाचित किया, जो बुद्धि और आचरण दोनोंमें दुर्बल था ।

रोमनोफ-वंश रूसका अन्तिम राजवश था, जो कि अक्टूबरकी मृत्युके मात साल बाद अस्तित्वमें आ १९१७ ई०की बोल्येविक क्रान्तितक शासन करता रहा । इस वंशके अन्तिम आठ जार नाममात्र के ही रोमनोफ थे, वह वस्तुतः जर्मन थे, जिनके कारण दरबारमें हमेशा जर्मनोंकी तूती बोलती रही । इस वंशमें निम्न जार हुये—

१ मिखाइल, फिलारेत-पुत्र	१६१३-४५ ई०
२ अलेक्जान्द्र I, मिखाइल-पुत्र	१६४५-७६ "
३ पयोदोर, अलेक्जान्द्र I-पुत्र	१६७६-८२ "
४ इवान I, अलेक्जान्द्र I-पुत्र	१६८२-९६ "
५ पीतर I, अलेक्जान्द्र I-पुत्र	१६९६-१७२५ "
६ एवानेस्किना I, पीतर I-पत्नी	१७२५-२७ "

७ पीतर II, अलेक्सान्द्र-पुत्र	१७२७-३० ई०
८. अन्ना, इवान V-पुत्री	१७३०-४० "
९ इवान VI, अन्ना-पुत्र	१७४०-४१ "
१० एलिजावेथ, पीतर I-पुत्री	१७४१-६१ "
११ पीतर III, पीतर I-नाती	१७६१-६२ "
१२ एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी	१७६२-९६ "
१३. पावल I, पीतर III-पुत्र	१७९६-१८०१ "
१४ अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र	१८०१-२५ "
१५ निकोलाइ I, पावल I-पुत्र	१८२५-५५ "
१६ अलेक्सान्द्र II, निकोलाइ I-पुत्र	१८५५-८१ "
१७ अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र	१८८१-९४ "
१८ निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र	१८९४-१९१७ "

### १. मिखाइल, फिलारेत-पुत्र (१६१३-४५ ई०)

वस्तुतः शासनसूत्र मिखाइलके नामसे अब उसकी मा और सवधियोंके हाथमे था । नई सरकारको देशमे व्यवस्था कायम करनेमें काफी दिक्कतका सामना करना पडा । अस्त्राखानमे भागे हुये जारुत्स्कीने अपनेको जार दिमित्रि घोषित किया, लेकिन उसको सहायता नही मिली और अन्तमें लोगोने उसे और उसकी स्त्री मरीनाको पकडकर सरकारके हवाले कर दिया । जारुत्स्कीको मास्कोमें फासी हुई, मरीना जेलमें मरी और उसका बच्चा भी फासीपर चढा दिया गया । यद्यपि पोलन्दसे सघर्ष कम हो गया, लेकिन रूसकी भीतरी कमजोरियोंको देखकर स्वीडो-ने नवोगोरदपर अधिकार करके सघर्ष जारी रखवा । उनसे छुटकारा १६१५ ई०मे प्सकोफमे उनके प्रसिद्ध योद्धा राजा गस्ताव अदल्फसको हराकर ही हुआ । रूसी भी लडाई बढाना नही चाहते थे, क्योंकि उसके कारण देशका व्यापार तथा सारा आर्थिक जीवन चौपट हो गया था, लोगोकी हालत बुरी थी । इंग्लैण्ड और हालैण्डको बीचमे डालकर १६१७ ई०के आरम्भमे, स्टोलवोवोकी सधि हुई, जिसके अनुसार स्वीड सेनाने यद्यपि नवोगोरद और उसके इलाकेको खाली कर दिया, लेकिन फिनलन्द-खाडीका सारा तट तथा कितने ही नगर अपने हाथमे ही रखे, इस प्रकार रूस वाल्तिक समुद्रसे वंचित रहा । व्लादिस्लाव अभी भी रूसी सिंहासनकी आशा नही छोडे था । १६१८ ई०मे वह एक बार मास्कोतक पहुचा, लेकिन वहासे मार भगाया गया । आखिर उसने भी १६१८ ई०के अन्त में साढे चौदह सालके लिये मास्कोके साथ सधि कर ली, लेकिन स्मोलेन्स्क और आसपासके इलाके तथा सेवेर्स्क (चेरगीनोफ)के इलाकेको पोलोने नही छोडा । इस सधिके बाद जारका पिता फिलारेत रोमनोफ वदीखानेसे मुक्त हुआ । मास्को पहुचनेके तुरन्त ही बाद उसे सारे रूसी चर्चका महा-सघराज बना दिया गया और अबसे जीवनभर (१६१९-३५ ई०) वही रूसका वास्तविक शासक था । सभी राजादेश जार और उसके वापके नामसे निकाले जाते थे । फिलारेतको महास्वामी ("बेलीकी गमुदार")की उपाधि मिली थी । वह अब धर्म और राज्य दोनोका कर्णधार था । इस असीम शक्तिको इस्तेमाल करके उसने केन्द्रीय सरकारको बहुत मजबूत किया । मास्कोने १६३२ ई०में स्मोलेन्स्कको लौटानेकी कोशिश की, लेकिन पोलन्दने राजनीतिक चालसे क्रिमियाके तारतारोको मास्कोसे उलझा दिया, और इस प्रकार उस साल स्मोलेन्स्कका अभियान व्यर्थ गया । १६३३ ई०मे महासघराज फिलारेत मर गया ।

इस समय पोलन्दके पड्यन्त्रके कारण मास्कोके दक्षिणी सीमातको क्रिमियाके तारतारोसे बहुत खतरा पैदा हो गया था । वह जब-तब रूसके भीतर घुसकर गावो और गहरोमे लूटपाट मचाते थे । प्रतिरक्षाके लिये दक्षिणी सीमातकी मोर्चाबिंदी अब आवश्यक हो गई थी । तारतार दोनके कसाको-पर भी हमला करते थे, इसलिये वह भी उनको दवानेके लिये सब तरहसे तैयार थे । क्रिमियाके

तारतारोकी पीठपर उठकर तुर्कीका सुल्तान भी था, जिसका अधिकार काकेशससे अजोफ समुद्रके तक था। १६३७ ई०में दोनके कसाकोने अजोफके किलेपर आक्रमण किया। दोन नदीद्वारा अजोफ-समुद्रके भीतर पहुँचनेमें तुर्कोंका यह किला भारी बाधक था। दो महीनेके मुहासिरेके बाद कसाकोने किलेको सर कर लिया। तुर्की सुल्तान इसे कैसे बरदाश्त कर सकता था? उसने १६४१ ई०में शक्तिशाली तोपखानेके साथ एक भारी सेना उनके विरुद्ध भेजी। मुट्ठी भर कसाक सेनाने चौबीस बार तुर्कोंके आक्रमणको विफल कर दिया। अन्तमें एक और बड़े आक्रमणके समय उन्हें मास्कोसे सहायता मिली। मिखाइलकी सरकार विना जेम्स्की सवोर (राष्ट्रीय सभा)की सम्मति लिये तुर्कोंके साथ युद्ध नहीं छेड़ना चाहती थी। सभाने उसके लिये स्वीकृति नहीं दी, इसपर सरकारने कसाकोको अजोफ छोड़कर चले आनेकी आज्ञा दी।

यह १७वीं सदीका मध्य या शाहजहाका समय था। उस समय भारतके किसानोंकी भी हालत उसके किसानोंसे बेहतर नहीं थी। जमीन बड़े-बड़े जमींदारों और सामन्तोंकी थी, जो अपने विलासितापूर्ण जीवनके लिये उनका अधिकसे अधिक शोषण करते थे। किसानोंके लिये अपने गावोंमें अब आया नहीं रह गई थी। उनमेंसे कितने ही किसानों छोड़कर व्यापारी बन गये और कुछ दूसरी जगहों में भाग गये। १७वीं शताब्दीके ये जमींदार अपने किसानों, अर्धदासों और कारीगरोंके हाथके कामों से सतुष्ट नहीं थे। राजधानीके धनी अमीर और बायर इतालीके मखमल, इंगलैण्डके ऊनी कपड़े और विदेशी समूरी टोपियोंको पहनते थे। उनको बहुमूल्य आभूषणों और विदेशी शराबोंका चसका लग गया था। उनके घरोंमें बहुत तरहकी विदेशी चीजे इस्तेमालमें आती थी और यह सारी विलास-शामग्री किसानोंकी कमाईसे मिले पैसोंके बलपर ही खरीदी जा सकती थी। उदाहरणके लिये उस समयके एक बहुत बड़े बायर वोरिस डवान-पुत्र मोरोजोफको ले लीजिये। उसके पास तीन सौ गाव थे, जिनमें चालीस हजार अर्धदाम रहते थे, जिनसे उसे दस हजार रूबल मासिककी आमदनी थी, जो आजकलके हिमाचलसे लाखों रुपया होगा। उसकी बहुतसी बखारे थी, जिनमें लाख पूद (१ पूद=१८ मेर) अनाज भरा रहता था। पोलन्दके साथकी लड़ाईमें अनाजका भाव महंगा हो गया। उस समय अपने अनाजको बेचकर मोरोजोफने बहुत पैसा जमा किया। उसकी जमींदारीमें सात सौ नौकर थे, जो किसानोंकी अलग नोच-खसूट करते रहते थे। मोरोजोफके पास इतना पैसा जमा हो गया था, कि उसने उससे लोहेका कारखाना, पीटाश-कारखाना कायम किये और अपने किसानोंको वहाँ जाकर काम करनेके लिये मजदूर किया। उसके पीटाशको विदेशी व्यापारी खरीद ले जाते थे।

अब कारखानोंके बढ़ानेकी आवश्यकता समझी जाने लगी थी। लड़ाईके लिये लोहेकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है, इसलिये लोहेकी उपज बढ़ाने के लिये एक डच व्यापारी एडरु विनियस को लोह-धनो(ओर)में काम करनेका ठेका दिया गया और उसने तुलामे पहला लोहेका कारखाना खोला, जिससे आगे चलकर तुला रूसका लौह-केन्द्र बन गया। उसके कुछ समय बाद एक स्वीडने मास्कोके पास काचका कारखाना खोला।

कारखानोंका रवाज यद्यपि बढ़ने लगा, लेकिन अब भी व्यापार रूसके आर्थिक जीवनमें खास स्थान रखता था, जिसके कारण कितने ही विदेशी राज्योंसे उसका घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ। इसी समय पश्चिमी युरोपसे व्यापार करनेके लिये अर्खेन्गेल्स्क प्रधान बंदरगाह बन गया। गर्मियोंमें जब समुद्र बर्फसे मुक्त रहता, तो बहुत-से अंग्रेज, डच और जर्मन जहाज अपना-अपना माल लेकर वहाँ पहुँचते—जिसमें ऊनी कपड़े, रेशमी कपड़े, मूल्यवान् वस्त्र तथा दूसरी विलासिताकी चीजे होती। रूसी व्यापारी नावोंमें साइबेरियाके समूर, चमड़े, भागके कपड़े, पीटाश, शूकरमांस तथा गावों और नगरोंके कारीगरोंकी बनावी और भी कितनी ही चीजें भरकर उत्तरी द्विना नदीसे ही अर्खेन्गेल्स्क पहुँचते। वहाँ दोनों ओरसे क्रय-विक्रय होता। एशियाके साथ व्यापार मुख्यतः अस्त्राखानद्वारा होता था, जहापर बुखारी और ईरानी व्यापारी पूर्वी देशोंके मालको लेकर पहुँचते थे। इस व्यापारमें लाभ उठानेके लिये हमारे भारतीय व्यापारी और कुछ कारीगर भी अस्त्राखानमें

जा पहुँचे थे। इवान IV ने भारतीय कारीगरोको वहाँसे मास्को बुलवा मगवाया था। व्यापारके बढ़ानेके कारण अब नगरोकी सख्या और समृद्धि बढ़ने लगी और धनी व्यापारियोका एक अलग वर्ग स्थापित होने लगा। देशकी शांति और केन्द्रीकरणने इस काममें बड़ी सहायता की।

**चीनतक प्रसार**—रूसका विस्तार साइबेरियामे पूर्वकी ओर हो रहा था। ऐसी अवस्थामे चीनके बारेमें ज्यादा जानकारी प्राप्त करना उसके लिये आवश्यक था। बुखाराके व्यापारी जहाँ एक ओर अपने कारवाको लेकर चीनमें पहुँचते थे, वहाँ दूसरी ओर वह अस्त्राखान भी आते थे। सम्भव है, उनके साथ कुछ चीनी भी रूसमें पहुँचे हों, लेकिन रूस अब पेकिङ्गसे ज्यादा नजदीकका सबंध स्थापित करना चाहता था। १५६७ ई०में ही पेत्रोफ और यालीसेफ नामक दो कसाकोको इसलिये भेजा गया, कि वह पड़ोसी लोगोकी भाषा, रीति-रवाज आदिके बारेमें जानकारी प्राप्त करें। उन्हें विशेषकर चीन-राज्य, मंगोलोकी भूमि और ओब महानदीके बारेमें जानकारी प्राप्त करनी थी। वह पेकिङ्गकी ओर बढ़ते हुये कलगनतक पहुँचे। लेकिन देवपुत्र सम्राट्के लिये वह कोई भेंट नहीं लाये थे, इसलिये सम्राट् मू-चुङ् (१५६६-७२ ई०)के दरबारमें गये बिना ही उन्हें लौटा दिया गया। १६०८ ई०में फिर इसके लिये कोशिग की गई, जिसमें मंगोल राजा अलतनखाकी फिर सहायता ली गई, लेकिन इसका भी कोई परिणाम नहीं निकला। इसके बाद जार मिखाइलके समय १६१६ ई०में तुमे-नेत और पेत्रोफ नामक दो कसाकोको तोवोल्स्कसे इसी कामके लिये भेजा गया। वह चीन तो नहीं पहुँच सके, लेकिन अलतन खानके दरबारमें कुछ समयतक रहे और खानने रूसी जारके अधीन होना स्वीकार किया। १६१९ ई०में पेंटलिन और मदोफ भेजे गये। वह भी अपने साथ भेंट नहीं लाये थे, इसलिये चीनी सम्राट्के दर्शनसे वंचित रहे। हा, उन्हें चीनकी ओरसे एक चिट्ठी दी गई, जिसे लेकर वह तोवोल्स्क लौटे, लेकिन उस चिट्ठीको उस समय कोई नहीं पढ़ सका, और डेढ़ सौ साल बाद १७७६ ई०में पेकिङ्गमें लाकर एक जेसुइत पादरीकी सहायतासे उस चिट्ठीका अनुवाद कराया गया।

इस प्रकार मिखाइलके समयमें चीनके साथ कोई वाकायदा दौत्य-संबंध स्थापित नहीं किया जा सका।

मिखाइलके मरनेके बाद उसका पुत्र अलेक्सी सोलह वर्षकी आयुमें गद्दीपर बैठा।

## २ अलेक्सी, मिखाइल-पुत्र (१६४५-७६ ई०)

लडके जारको वाज उड़ाने और दूसरे खेलोका बड़ा शौक था और राज्यकी सारी शक्ति एक धनी बायर वोरिस इवान-पुत्र मोरोजोफके हाथमें थी, जिसने सभी ऊँचे पदोपर अपने भाई-भतीजे-भाजोको भर दिया। जारके वशसे और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये उसने एक साधारण बायर मिलोस्लाव्स्कीकी एक लडकीका ब्याह जार अलेक्सीसे करवा उसकी दूसरी लडकीको स्वयं ब्याह लिया। पोलन्दके युद्धके कारण देशकी आर्थिक हालत बहुत खराब हो गई, और साथ ही युद्धमें असफलता भी रही। मोरोजोफको सबसे पहले राजकोषकी स्थिति सुधारनी थी, इसके लिये उसने जहाँ सैनिकोका वेतन कम किया, वहाँ कई कर लगाये, जिनमें सबसे भारी नमकपर था। नमक इतना महंगा हो गया, कि लोग मछली सुरक्षित रखनेके लिये उसे खरीदकर नहीं लगा सकते थे, जिसके कारण हजारों मन मछलिया सड़ने लगी, और मोरोजोफको जल्दी ही इस करको उठा देना पड़ा। इन सब कारणोंसे लोगोकी हालतपर इतना बुरा असर पड़ा, कि अलेक्सीके आरम्भिक शासनकालमें कितने ही विद्रोह हुये। १ जून १६४८ ई०को तीर्थ-यात्रासे लौटकर जार मास्को आया, तो लोगोंने उसके पास जाकर मोरोजोफकी लूट-खसूटके बारेमें शिकायत की। उस दिन आवेदन-पत्र देनेवालोको कोडोकी मारसे भगा दिया गया, लेकिन दूसरे दिन एक जन-समूहने क्रैमलिनके दरवाजेसे राजमहलमें पहुँचकर माग की, कि नगर-कोतवाल ल्योन्ति प्लेश्चेयेफको हमारे हवाले किया जाय। ल्योन्ति बड़ा ही क्रूर और पाशाविक अत्याचारी था। बायर शान्त करनेके लिये आये, लेकिन उन्होंने उन्हें भगा दिया। इसके बाद जनताने बायरो और सरकारी अफसरोंके धरोपर आक्रमण किया। एक बड़ा अफसर मार डाला गया, नगरमें जगह-जगह

आग लगा दी गई, सन्वन्त जारने प्लेशचेयेफ और त्रखानियोतोफ दो जालिम दरबारियोंको जनता के हाथमें दे दिया, जो उसी समय मार डाले गये। फिर लोगोंने मोरोजोफके शिरकी माग की। लाल मैदान\*में भारी भीड़ उमड़ आई थी। जारने लोगोंके सामने कसम खाकर अपने आदमियों द्वारा कहलवाया, कि मोरोजोफको सरकारसे निकाल दिया जायगा। उसी रातको उसे मास्कोसे निकालकर एक दूरके मठमें भेज भी दिया गया। इसी समय कितने ही असतुष्ट सामन्त भी आ गये और नागरिकों तथा सामन्तोंने मिलकर जारके पाम आवेदन भेजा, कि एक नई विधान-संहिताके बनानेके लिये जेम्स्की सवोर (राष्ट्रीय सभा)को बुलाया जाय।

मास्कोके अतिरिक्त दूसरे शहरोंमें भी विद्रोह उठ खड़े हुये थे, इसलिये जारको राष्ट्रीय सभा जल्दी-जल्दी बुलानी पड़ी। सभाके सदस्योंमें बहुमत नागरिकों और जनपदीय सामन्तोंका था। सभी मागोंको मान लिया गया और जनवरी १६४९ ई०में नई विधान-संहिता स्वीकार की गई। शाहजहाके कालमें वनी इस विधान-संहिताद्वारा किसानोंके ऊपर सामन्तोंका पूरा अधिकार स्थापित करके उन्हें अर्ध-दास बना दिया गया। नागरिकोंको यह अधिकार मिला, कि सभी वायरो और चर्चकी जायदाद दीहात नहीं नगरोकी मानी जाय, और उन्हें सामन्तों और अमीरोंकी तरह कर उगाहने और राजमेवाओंका अधिकार मिले। १६५० ई०में नवोगोरद और प्सकोफमें विद्रोह हो गये, जिनमें प्सकोफका विद्रोह विशेष तौरसे खतरनाक था। लोगोंने जारके वीरवद (राज्यपाल)को हटाकर वहा स्वायत्तशासन स्थापित कर लिया और जारसे माग की, कि वीरवदकी अदालतमें हमारे अपने प्रतिनिधियोंको बैठनेकी इजाजत होनी चाहिये। मास्कोने इसका जवाब दिया—“कभी ऐसा नहीं हुआ, कि वायरो और वीरवदोंके साथ अदालतमें कमेरे (मूजिक) बैठें।” प्सकोफके विरुद्ध सरकारी सेना गई, लेकिन उसे बुरी तौरसे हारना पडा। पीछे जब वहाके वनियो और अमीरोंने देखा, कि इस सघर्षमें उनका भी ठौर-ठिकाना नहीं रहेगा, तो उन्होंने विश्वासघात करके जारके निरकुश अधिकारको फिरसे स्थापित करनेमें मदद दी—१६५० ई०के विद्रोहोंको दमन करनेमें भावी महासघराज निकोनका खास हाथ था।

शासन-प्रश्न —जारका अधिकार अमीम था। जो कानून और नियम बनाये गये थे, उनका अन्तिम लक्ष्य यही था, कि अर्ध-दासों और किसानोंके ऊपर वायरोका पूरा अधिकार रहे। जार सबके ऊपर स्वेच्छाचारी शासक ही नहीं था, बल्कि देशका वह सबसे बड़ा वायर (जमींदार) भी था। अमीरों और दूसरे जमींदारोंके लिये यह जरूरी था, कि जारकी शक्ति खूब दृढ़ हो, जिसमें वह उनके वर्ग-स्वार्थकी रक्षा कर सके। जारकी इच्छा ही सारे देशके लिये विधान थी। सामन्ती कुलोंके वायर भी अपनेको जारका सेवक कहते थे और गाव या नगरके साधारण लोग तो अपनेको वह भी नहीं कह सकते थे। वह जारके “नन्हेंमें अनाथ” थे। जारको सम्बोधित करनेपर वह अपनेको छोटा बनाते हुये पीतरकी जगह पेटरुशका (पीतरवा), इवानकी जगह इवासका (इवनवा) कहते थे। जारको वह देवता मानते हुये घरतीपर ललाट रखकर उसे प्रणाम करते।

राज्यके महत्वपूर्ण विषयोंपर निर्णय करनेका काम जारके दरबारी वायरोकी दूमा (परिषद्) करती थी। इस परिषद्में केवल सामन्त (राजुल) और वायर ही सम्मिलित होते थे, लेकिन १७वीं शताब्दीमें साधारण कुलके प्रभावशाली नये वनी भी उममें सम्मिलित कर लिये गये।

सरकारी दफ्तरोंके कई दर्जे और विभाग थे। एक विभागका नाम “प्रिकाजी” था, जिसका मुखिया एक वायर और जिसके एक-दो सहायक-लेखक (घाकी) होते। आफिसके साधारण कामोंको पद्याचिये (निम्न-लेखक) करते। नैतिक काम-काजकी व्यवस्था अलग थी। रज्यादनी-प्रिकाज (सैनिक आफिस) मेना-सचालन विभागका काम करता था। स्ट्रेलेत्स्की आफिसका काम था, स्ट्रेलेत्स्की सैनिकोंके कामको देखना, पमोल्स्की प्रिकाज (दूत-कार्यालय) विदेश-विभागका काम देखता। स्थानीय शासन-प्रबन्धके मुखिया वीरवोद (राज्यपाल) होते, जो राज्यके नगरोंके शासनके लिये

\*लाल या “रानी” रूसी शब्दका अर्थ मुदर और रक्त दोनों हैं, पहिले इसका अर्थ “सुदर मैदान” लिया जाता था, किन्तु बोलशेविक क्रांतिके बादमें क्रांतिके प्रिय रंग लालको माना जाने लगा।

वायरो और सामन्तोमेंसे नियुक्त किये जाते । वोयवोद नगरके सैनिक और असैनिक सभी अधिकारो का प्रमुख था । वही न्याय प्रबन्ध करता, नगर और उसके इलाकेके लोगोसे कर उगाहता, एक तरहसे वह अपने इलाकेका स्वच्छद जार था ।

**चर्च सुधार**—रूस सदियोंसे ग्रीक चर्चका पक्का अनुयायी था । चर्चके साधुओ-पुरोहितो, एव मठो-गिर्जोंका जाल गावोमे भी बिछा हुआ था, लेकिन तबतक अभी उसका पूरी तौरसे केन्द्रीकरण नहीं हुआ था—यही नहीं कितने ही कर्मकांड और रीति-रवाजको लेकर चर्चकी कई शाखाये हो गई थी । स्कोफमे लोगोके आन्दोलनको दवानेमे मदद देनेवाला निकोन अब महासघराज था । निकोन मठोकी जायदादके साथ अपनी इच्छानुसार जैसा चाहता वैसा करता । उसके पास बहुत भारी निजी सम्पत्ति थी । वह चर्चके भीतर अपनेको सर्वशक्तिमान् जार समझता था । उसके अत्याचारोंके कारण साधु-पुरोहित उसे “जगली जानवर” कहते थे । निकोनने चाहा, कि भेदोको मिटाकर सारे चर्चको एक कर दिया जाय । इसके लिये उसने पूजा-पद्धतियो और रीति-रवाजोमें परिवर्तन करनेकी आज्ञा दी । निकोनके सामने पश्चिमी चर्चके रोमन-पोपका उदाहरण मौजूद था । उसने अपनेको पूर्वी चर्चका पोप बनाना चाहा । ग्रीक और कियेफके सुशिक्षित साधुओ-ने पद्धतियो और क्रिया-कलापोके सशोधनका काम किया । निकोनने आज्ञा दी, कि पहले जैसे दो अगुलियोंसे सलेव खीच पूजाकी मुद्रा की जाती थी, अब उसे तीन अगुलियोसे करना चाहिए । बढ़ते-बढ़ते उसने इस सिद्धान्तको भी चलाना चाहा, कि आध्यात्मिक (धार्मिक) शासन सासारिक शासनसे ऊपर है “आध्यात्मिक शासन सूर्यकी तरह है, जब कि सासारिक शासन चन्द्रमा जैसा है—चन्द्रमा अपना प्रकाश सूर्यसे प्राप्त करता है ।” निकोन “महास्वामी” (बैलीकी गसूदर) की उपाधि धारण कर राजकाजमे भी दखल देने लगा—सैनिक अभियानो तकके लिये भी आज्ञा निकालने लगा । उसकी इस अनधिकार चेष्टासे सामन्तो और अमीरोमे भारी असंतोष पैदा हो गया । यद्यपि वह चर्चको मजबूत करनेके निकोनके प्रयत्नको पसंद करते थे, लेकिन नहीं चाहते थे, कि महासघराजके सामने जार अकिंचन हो जाये । होते-होते इस वैमनस्यने भयकर रूप धारण किया, जिसपर निकोन एकाएक अपने पदको छोड़ एक मठमे एकातवासी बन बैठा । उसने समझा था, कि दरबारी खुशामद करते उसे फिरसे पद सभालनेके लिये प्रार्थना करेगे, लेकिन उसे निराश होना पड़ा । निकोनके कामोकी जाच करनेके लिए जारने १६६६ ई०मे दो ग्रीक सघ-राजोकी समिति बनाई । समितिने अपना निर्णय दिया, कि निकोनने राजशक्ति हथियानेका प्रयत्न किया । तो भी उसके चर्च-सबधी सुधारोको स्वीकार किया गया । निकोनको एक साधारण साधु बनाकर उत्तरके एक मठमें निर्वासित कर दिया गया ।

निकोनने जो सुधार किये थे, उससे यद्यपि रूसी चर्चमे एकता स्थापित हुई, लेकिन कितने ही सनातनियोने इन सुधारोको माननेसे इन्कार कर दिया । उन्होने “रस्कोल्निकी” (मतभेदी) अथवा पुराणविश्वासी नामसे अलग सम्प्रदाय बना लिया । आज भी रस्कोल्निकी कितनी ही जगहो-मे काफी सख्यामे मिलते हैं । इन विरोधियोमें एक मास्कोका अब्बाकुम था, जिसे उसके विरोधके लिये पूर्वी साइबेरियामे निर्वासित कर दिया गया, जहा प्रायः दस वर्षोंतक जारके वोयवोदोने उसके साथ बड़ा कठोर वर्ताव किया । निर्वासनके बाद अब्बाकुमने रूस लौटकर फिर अपने कामको शुरू किया । अब उसे उत्तरमें पुस्तोजेर्स्क स्थानमें बंदी बनाकर एक अघेरे तहखानेमें डाल दिया गया । राज्यको इतने हीसे सतोष नहीं हुआ, बल्कि १६८१ ई०में अब्बाकुमकी होली जलाई गई । बहुत दिनोंतक रस्कोल्निकी सम्प्रदायका मुख्य केन्द्र रूससे बाहर रूमानियामें था । क्रान्तिके बाद ही उनके साथका भेदभाव दूर हुआ, और उनका केन्द्र रूसकी भूमिमें चला आया ।

**उक्रइनका मिलन**—१५६९ ई०में लिथुवानिया और पोलन्दमे एक समझौता हुआ, जिसके अनुसार दोनो एक हो गये । उसी समयसे उक्रइनका बहुत बड़ा भाग पोलन्दके हाथमे चला गया । उक्रइन्नी लोग पोल जमीदारो और सामन्तोके जूयेके नीचे कराह रहे थे । सबसे अच्छी भूमिको लेते बढ़ते-बढ़ते दनियेपर नदीके बाये तटके गावोंके भी स्वामी पोल बन गये । ऐसे आर्थिक शोषण, राज-

नीतिक अत्याचार और दुर्व्यवहारको उकड़नी लोग कबतक चुपचाप बर्दाश्त करते ? स्याव जातिके होनेपर भी पोल जहा कैथलिक होनेसे रोमके पापाको भगवान्‌का अवतार मानते, वहा उकड़नी ग्रीक चर्चके अनुयायी थे। पोल अमीर और जमींदार चाहते थे, कि उनके किसान भी रोमके पापाको मानें, ताकि बिना चू-चिराके हमारे जूथेको उठाते रहे। इसके लिये भी कोशिश की जाने लगी, कि कैथलिक और ग्रीक चर्चको एक मधमें मिला दिया जाये। योजना यह थी, कि दोनों चर्च पूजा-पद्धति अपनी-अपनी रखे, लेकिन रोमके पापाको अपना प्रमुख मानें। इस कामके लिये १५९६ ई०में ब्रेस्त नगरमें एक चर्च-सभा बुलाई गई। सभाका बहुमत इसे नहीं पसंद करता था, कि ग्रीक-चर्च रोम-चर्चके अधीन हो जाये, तो भी अल्पमतके निश्चयको स्वीकार करते पोल राजाने वैसा राजादेश निकाल दिया। इसपर असंतोष बढ़ना ही था। धार्मिक एकताकी आडमें असल उद्देश्य तो था, किमानो और कमेरोपर अमीरोका निर्वाह अधिकार स्थापित करना। अन्याचारोके मारे कितने ही उकड़नी और वेलोस्सी किमान भागकर निम्न-दुनियेपर-उपत्यकाकी खात्री जगहोंमें चले गये जो आपरोजे कमाकके नाममें प्रसिद्ध हुये। इसी समय हमी जमींदारों के अत्याचारोंमें बचनेके लिए बहुतसे किमान दोन-उपन्यकामें भाग गये, जो दोन-कसाक कहलाये। उकड़नके भगोड़े किसानोंने दुनियेपरके जल-प्रपातके पास खोतित्सा द्वीपमें अपना एक दुर्ग बनाया। अवनक तुर्क और क्रिमियाके तारतार उकड़नकी भूमिमें घुमकर लूट-मार करना अपना हक समझते थे, लेकिन अब आपरोजे कसाक काठासागरके तटकी उनकी भूमिमें हाथ माफ करने लगे। इनका कोई एक निश्चित निवासस्थान नहीं था। जब लूट-मारसे काफी माल प्राप्त हो जाय, और थोड़ेसे पशु-पालनसे काम चल जाये, तो स्थायी बस्ती बाधनेकी क्या आवश्यकता ? कहीं-कहीं उनके मोर्चाबंदी किये उरे होते थे, जिन्हें भेच कहा जाता था। बसतके आरम्भमें कसाक सेचपर जमा होने। उस समय यह द्वीप जनसकुल हो उठता। इसी समय कमाक अपना मुखिया (अतमन) तथा दूसरे मेनानायक निर्वाचित करते। मैकडो कसाक बीरी (वेद) की लकड़ीकी नावे बनाने या मरम्मत करनेमें लग जाते, हथियारोको ठीक करते। सब तैयारी हो जानेके बाद इन्हीं नावोंपर चढ़कर वह बड़ी तेजीसे कालासागरमें पहुच जाते, और फिर तट-भूमिपर लूट-मार शुरू कर देते। कभी-कभी तो वह सुल्तानकी राजधानी कान्स्तान्तिनोपोलतक भी बाबा मारते। उनकी नावोंकी गति इतनी तीव्र होती, कि तुर्क सतरी खतरेकी खबर भी नहीं दे पाते थे। जाडोमें कसाकोकी सेच जनशून्य हो जाती। उस समय वह अपने लूटेके मालको ले जाकर उकड़न और पोलन्दके नगरोंमें बेंच दूसरी चीजें खरीदते।

१६वीं शताब्दीके अन्तमें आपरोजे कसाकोकी सख्या काफी बढ़ गई। पोल राजा स्तेफन बाथोरीने उनकी सैनिक क्षमताको देखकर उन्हें अपना सचिकावद्ध (रजिस्टरबद्ध) सैनिक बनाना शुरू किया—जिमके कारण ऐसे कसाक “रजिस्टरबद्ध कसाक” कहे जाने लगे। उनकी राज्य-की ओरसे कुछ वेतन तथा शहरोंमें रहनेके लिये मकान मिलते थे। रजिस्टरमें नाम लिखे कसाकोकी सख्या बहुत कम थी। १६वीं शताब्दीके अन्तमें आपरोजे कसाकोमें भी घनी-नारीवका भेद स्थापित हो गया। राजा उनके सरदार (हेतमन, अतमन) को अपना अफसर बनाता।

घनी-नारीवके भेदने उकड़न और वेलोरसियामें जनसाधारणको विद्रोह करनेके लिये मजबूर किया। इन विद्रोहोंमें आपरोजे कसाक प्रायः किमान-विद्रोहियोंका साथ देते—कभी-कभी रजिस्टर-बद्ध कमाक भी उनके महायक बन जाते। विद्रोही किमान पोल जमींदारोंकी गाडियोंमें आग लगा देते, और हाथ लगनेपर उन्हें मार भी डालते। पोल फिर सेना लेकर आते और किसानोंमें बड़ी क्रूरताके साथ बर्दाश्त लेते। इस वक्त भी कितने ही विद्रोही किमान अपने गावोंको छोड़कर मध्य-दुनियेपरके घने जंगलोंमें भाग जाते, जहासे अपने शत्रुओंपर छापामारी करते।

१६३० ई०के आसपास आपरोजेकी सेच पोलैंके खिलाफ एक बार फिर उठी, जिसे आमानीसे दबा दिया गया, क्योंकि उनके घनी मुखिया और सरदार विश्वासघात करनेके लिये तैयार थे। पोलैंने आपरोजे कमाकोको उकड़नमें घुमनेसे रोकनेके लिये दुनियेपरके प्रपातके ऊपर कोदकम फ्रेंच



इजीनीयरके तत्त्वावधानमें एक किला बनवाया, जिसके तैयार हो जानेपर पोल हेतमनने कसाकोके साथ मजाक करते हुये कहा—“कोदकके वारेमें तुम क्या सोचते हो ?”

“मानव हाथोने जिसे बनाया, वह मानव हाथोद्वारा नष्ट किया जायेगा ।”—यह जवाब कसाक सरदार बगदान ख्मेल्नित्स्कीका था ।

कुछ वर्षों बाद सचमुच ही कसाकोने कोदक दुर्गको नष्ट कर दिया, और १६३८ ई०से पहले पोल सेना उक्रइनके विद्रोहको नहीं दबा सकी ।

१६४८ ई०के वसतमें फिर लोगोने पोलन्दके खिलाफ विद्रोह कर दिया । इस विद्रोहके आरम्भक ज़ापरोज़े कसाक और उनका नेता बगदान (भग-दत्त) ख्मेल्नित्स्की था । बगदान उक्रइनमें बहुत जनप्रिय था । वह शिक्षित था । कियेफकी अकदमीमें उसने पढा था, और लातीनी भाषा भी जानता था । कसाकोके कितने ही साहसपूर्ण अभियानोंमें उसने भाग लिया था । अभी वह बीस वर्षसे कुछ ही बड़ा था, कि पोलोंके साथ मिलकर उसने तुर्कोंके खिलाफ लड़ाई लड़ी थी । उस समय तुर्कोंकी सीमा पोलन्दसे मिलती थी, और कितने ही उक्रइनी गांव तुर्कोंके हाथमें थे, जिनके साथ तुर्क बड़ा दुर्व्यवहार करते थे । बगदानका बाप चेचोरा जासीके पास तुर्कोंकी लड़ाईमें मारा गया और बगदान स्वयं तुर्कोंका बंदी बना, जहा उसे दो सालतक रहनेके बाद मुक्ति मिली । बगदान एक अच्छा खाता-पीता समृद्ध जमींदार था, और पोल राजकीय सेनाके रजिस्टरमें भी उसका नाम था । लेकिन, उसके देशभाइयो (उक्रइनियो)के साथ पोलोका जैसा दुर्व्यवहार हो रहा था, उसके कारण बगदान अपनेको रोक नहीं सका । पोलोका शासन मनमानी था । एक दिन एक पोल जमींदारने दखल करनेका सरकारी परवाना ला एकाएक बगदानकी जमींदारीपर अधिकार कर लिया, और सारे परिवारको जज़ीरोमें बाध दिया । बगदानने जब न्याय करनेकी बात कही, तो पोल जमींदारने बगदानके दम वर्षके लडकेको कोड़ेसे पीटते हुये मार डाला । बगदानने राजाके दरबारमें जाकर न्याय पानेकी कोशिश की, लेकिन वहासे भी उसे खाली हाथ लौटना पडा । जो भी थोड़ीसी धन-दौलत-जमींदारी उसके पास थी, वह खतम हो चुकी, साथ ही उसके बेटेकी निर्मम हत्या की गई, उसे भी वह भूल नहीं सकता था । उसने अच्छी तरह समझ लिया, कि इन सारे अत्याचारोका कारण देशकी परतन्त्रता—उक्रइनका पोलन्दके हाथमें रहना है । उसने अपने कसाक-मित्रोको जमा करके उनका एक दल बनाया, और फिर उनसे पूछा—

“क्या हम अपने भाइयोको इस हालतमें छोड़ दें ? देशमें सभी जगह मैंने अपनी आखो भयकर अत्याचार होते देखा है । हमारे अभागे भाई हमसे सहायता माग रहे है ।”

इसके जवाबमें एक बूढ़े कसाकने कहा—“अब तलवार उठानेका समय आ गया है, पोलोंके ज्येको उतार फेंकनेका समय आ गया है ।” पोल जमींदारोको भी इसकी भनक लग गई, और उन्होने बगदानको जेलमें डाल दिया, लेकिन वह भागकर ज़ापरोज़े पहुंचनेमें सफल हुआ । अब उसने सगठित रूपसे पोल जमींदारोपर घावा बोलना शुरू किया । पोल अपना सब कुछ छोड़ जान लेकर भागने लगे । यह खबर सुन उक्रइनमें और जगहोमें भी विद्रोह होने लगे । बगदानने सोचा, हमारी शक्ति और भी मजबूत हो सकती है, यदि क्रिमियाके तारतार खानसे मित्रता हो जाये । इसके लिये वह स्वयं क्रिमियाकी राजधानी व्क्सीसराय गया । खान उस समय पोल-राजासे बहुत नाराज था, क्योंकि कितने ही वर्षोंसे उसने भेट नहीं भेजी थी । खानकी ओरसे बगदानका बड़ा स्वागत हुआ, और अपने उद्देश्यमें सफल होकर लौटा । खानने बगदानकी मददके लिये अपने एक राजकुमारके नेतृत्वमें तारतार सैनिक भी भेजे । कसाकोने बगदानका भारी सम्मान करते अपनी सभामें उसे कसाक सेनाका हेतमन (मुखिया) घोषित किया और हेतमनके दर्जेका चिह्न एक बुलवा (गदा) भेंट की ।

१६४८ ई०के वसतसे कसाकोने पोलोपर खूब जोरके साथ आक्रमण करना शुरू किया । मईके आरम्भमें बगदानने एक बड़ी पोल सेनाको हराया, जिसमें कसाको और तारतारोको बहुत-सा लूट-का माल मिला । सफलताके साथ-साथ अब बगदानके अभियानोने उक्रइनी जनताके मुक्ति-युद्धका

रुन किया। १६४८ ई०के सितम्बरमें पोट मेताकी विन्याका नदीके तटपर और भी भयकर हार हुई। इस हारके बाद वगदानके लिये पोल-राजधानी वारसाका रास्ता खुल गया था। वगदान उक्रइन-से पोलोकी ल्वोफ और जामोस्तयेतक खदेडकर कियेफ लौटा। लोगोंने उक्रइनके मुक्तिदाताके तीरपर उमका स्वागत किया। तीन सौ वर्षोंतक पोलोकी गुलामीमें रहनेके बाद कियेफ अब स्वतन्त्र हुआ था। पोल सरकारने उक्रइनकी शक्तको समझ लिया और मधि कर लेनेमें ही भलाई समझी। वगदानने माग या प्रतिज्ञा की—“मैं सारी उक्रइनी जनताको पोलोकी गुलामीसे मुक्त करके ही दम लूंगा।” पोल दूतोंके साथ बातचीतका कोई फल नहीं हुआ, इसपर १६४९ ई०के ग्रीष्ममें वगदानने नया अभियान शुरू किया। क्रिमियाके तारतार अब भी उसके साथ थे, लेकिन पोलोंने प्रलोभन देकर खानको अलग कर दिया और वगदानने अपनी शक्तको देखते हुये सधि करना ही पसन्द किया। इस सधिके अनुसार उक्रइनका स्वतन्त्र शासन स्थापित हुआ, जिसका हेतमन वगदान माना गया। रजिस्टरबद्ध कमाकोंकी संख्या छ हजारसे चालीस हजार कर दी गई।

१६४९ ई०की ज्वोरोफकी यह शान्ति-सधि भी उक्रइनको पूरी स्वतन्त्रता नहीं दिला सकी। पोल इस सधिको अपनी आगेकी नैयारीके लिये सिर्फ वहाना बनाना चाहते थे। १६५१ ई०के आरम्भमें उन्होंने फिर पश्चिमी उक्रइनपर आक्रमण कर दिया। उसी सालके वसतमें एक बड़ी सेना लेकर पोल-राजा स्वयं चढ़ आया। पोपने अपने पोल-अनुयायियोंको इस धर्मयुद्धमें भाग लेनेके लिये घोषणा की—उक्रइनियोंके साथ युद्ध करनेमें जो भी पाप होगा, हम उसको क्षमा करते हैं। वगदानके साथ क्रिमियाके खानकी सेना थी, लेकिन ऐन-म्रीकेपर जून १६५१ को वेरेस्तमें तारतारोंने घोषणा दे दिया। वगदानने जल्दीमें खानके पास जाकर सेनाको लौटनेके लिये कहा, लेकिन खानने सेना लौटानेकी जगह वगदानको ही अपने पास पकड़ रक्खा। विना नेताके भी कसाक और उक्रइनी किसान कितने ही दिनोतक मोर्चा बाधे पोलोंसे लड़ते रहे। उन्होंने एक असाधारण शक्ति और हिम्मतके धनी पुरुष बोगुनको अपना नेता चुना। कसाकोने अपने पराक्रमका खूब परिचय दिया। एक घिरी कसाक-टोलीके पास पोलोंने आत्मसमर्पण करनेके बदले प्राणदान देनेका वचन दिया, जिसका जवाब था—“हमें अपने प्राण प्यारे नहीं हैं। हम शत्रुकी दयाको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं।” यह कहकर वह एक-दूसरेमें गले मिल पोलोंके ऊपर टूट पड़े। तीन सौ कसाकोमेंसे एक-एक वीर-नातिको प्राप्त हुआ। इतनी वीरता दिखलानेके बाद भी पोल सेनाको रोक नहीं जा सका। महीने भर बाद जब खानने वगदानको छोटा, तो कियेफ पोलोंके हाथमें चला गया था और तारतारोंने देशको लूटकर बरबाद कर दिया था। १६५१ ई० की शरदमें जो सधि करनी पड़ी, उसके अनुसार सारे सघर्षमें प्राप्त सभी चीजोंको हाथसे खो देना पड़ा। पोल जमींदार फिर उक्रइन लौटे और विद्रोहमें शामिल होनेके दंडस्वरूप किसानोंके ऊपर अकथनीय अत्याचार करने लगे। किसान अपने गावोंको छोड़-छोड़ दूनियेपरके बायें तटपर जमा हो वहासे रूसी राज्यके भीतर जाकर बसने लगे। पोलोंके अधीनकी उक्रइन-भूमि जल्दी ही जन-शून्य होने लगी, भगोडे उक्रइनी जाकर उत्तरी दोनेत्सकी ऊपरी उपत्यकाकी उर्वर-भूमिको आबाद करने लगे। पोल राजाने क्रिमियाके खानके साथ शांति स्थापित कर उसे चालीस दिनके लिये उक्रइनी जनताको लूटनेकी खुली इजाजत दी थी। क्रिमियाके तारतारोंने लूटते-पीटते हजारों स्त्री-पुरुषोंको ले जा जिन्दगीभर दाम रहने के लिये बँच दिया। इन्हींके बारेमें एक उक्रइनी लोकगीतमें कहा गया है—

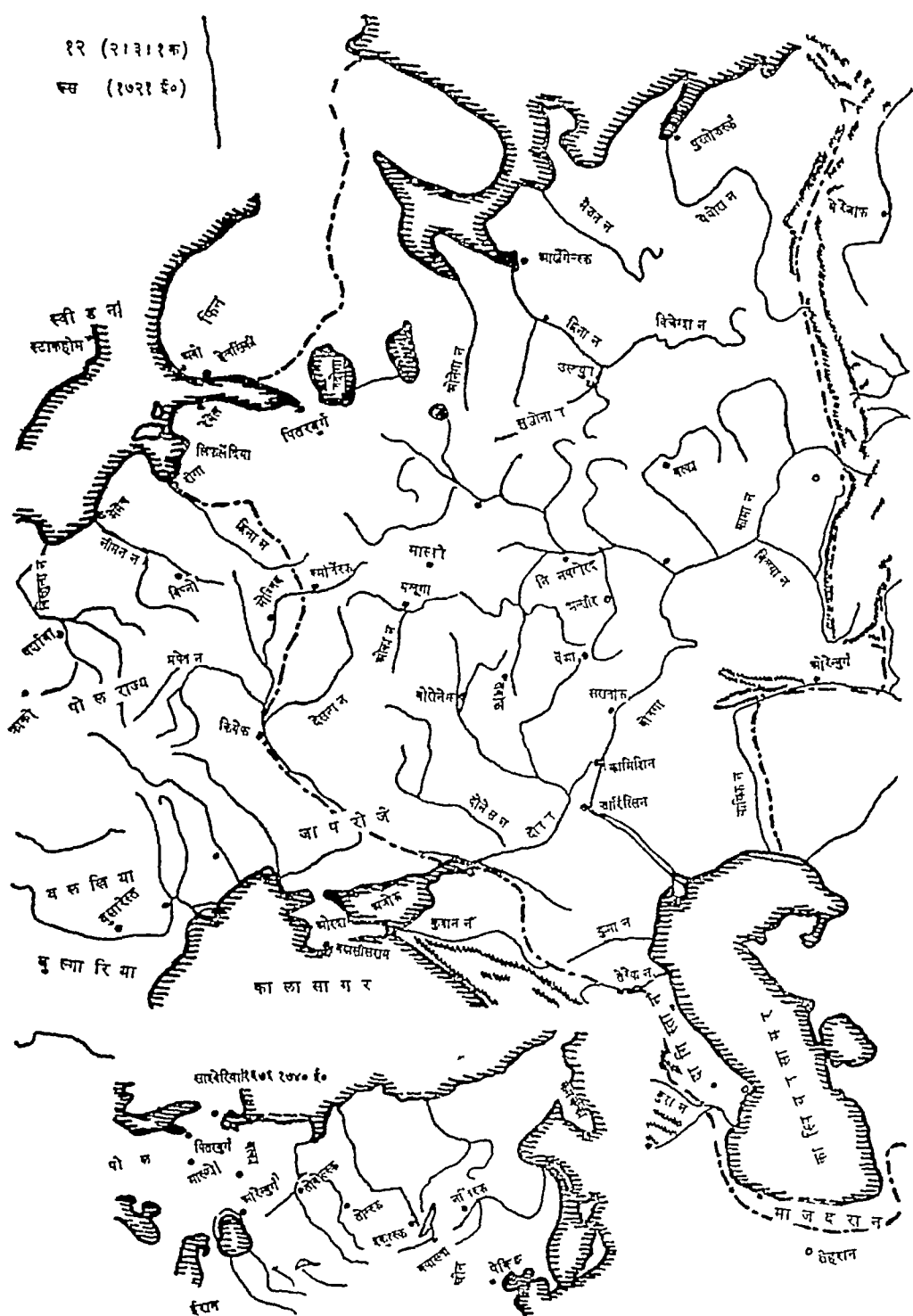
“उक्रइनी लोग दुःख भुगत रहे हैं, उन्हें कहीं छिपनेकी जगह नहीं,

घुमन्तू सवारोंके ओढ़ू बच्चोंके शरीरपर दौड़ रहे हैं,

कौमल शिशुओंको रौंदते,

उनके पीछे हथियार—जजीरमें बंधे जालिम खानके शिकार।”

१६४८-५१ ई०की लड़ाईयोंसे उक्रइनियोंको इस बातका पता लग गया, कि विना बाहरी महायताके पोलोंके हाथमें अपने देशको मुक्त नहीं किया जा सकता। इसीलिये जब १६५२ ई० में उक्रइनके किसान और कसाक दूसरी बार विद्रोह करनेके लिये तैयार हुये, तो वगदानने



उक्रेनको रूसमें मिला लेनेके लिये मास्को-सरकारसे वातचीत शुरू की । १६५३ ई०के शरद् में मास्कोमें “जेम्स्की सवोर”के अधिवेशनमें निश्चय हुआ, कि उक्रेनको अपने सरक्षणमें ले लिया जाय, और पोलन्दके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की जाय । ८ जनवरी १६५४ ई०में उक्रेनी कसाकोके प्रतिनिधियोंका सम्मेलन—रादा—पेरेयास्लाव्लमें हुआ, जिसमें मास्कोके दूत भी शामिल हुये थे । रादाको सम्बोधित करते वगदानने अपने लोगोकी दयनीय अवस्थाका चित्र खींचते हुये कहा था—

“तुम सब जानते हो, कि हमारा शत्रु हमें पूरी तौरसे मिटा देना चाहता है, जिसमें हमारी भूमिमें रूस (उक्रेनी) नाम फिर कभी न लिया जा सके । इसीलिये तुम चार शासकोमें से किसी एकको अपने लिये चुन लो पहला है तुर्कीका सुल्तान, जो कि ग्रीकोपर जुल्म ढा रहा है, दूसरा है क्रिमियाका खान, जिसने हमारे भाइयोके खूनसे अनेक बार अपने हाथोको रंगा है, तीसरा है पोल-राजा, जिसके अमीरोके अत्याचारके बारेमें कहनेकी अवश्यता नहीं और चौथा है महारूसका पूर्वी जार ।”

हजारों कठोने एक जवाब दिया —“हम पूर्वी जारके अधीन रहना चाहते हैं।”

इसके बाद मास्कोमें समझौता हुआ, और रूसने उकड़नके स्वायत्त-शासनके अधिकारको स्वीकार किया—उकड़नी सरकारके लिये लोकनिर्वाचित हेतमन (प्रधान) बनाना स्वीकार किया गया। उकड़नके लिये स्वेच्छाचारी जारका शासन भी पोलोंमें कम कठोर नहीं था, पर उकड़नी और वेलेरुसी भाषा, वर्म और मन्कृतिमें रूसियोंके सगे भाई थे, इसलिये उनको यही रास्ता अच्छा लगा। फिर १६५४ ई० में पोलोंसे लडाईं शुरू हुई, जो बीच-बीचमें रुकती हुई तेरह वर्ष (१६५४-६७ ई०) तक चली। इसी युद्धमें प्रायः मारी वेलेरुसिया भी पोलोंसे मुक्त हो गई। रूसकी विजयिनी सेना लियुवानियाके मुख्य नगर विलनोमें दाखिल हुई। उवर सारी उकड़न-भूमिको मुक्त करते हुये वगदान और मास्को के बोयबोद पोलन्दकी सीमाको पार हो लुबलिन नगरको लेनेमें सफल हुये। इसी बीच १६५६ ई० में स्वीडनके राजा दशम चार्ल्सने भी पोलन्दके ऊपर आक्रमण करके वारसा (वरमावा), काको और दूसरे पोल-नगरोपर अधिकार कर लिया। इस अचानक प्रहारके कारण पोल मास्कोके साथ शांति-भिक्षा मागनेके लिए तैयार हो गये। पर, शांति अस्थायी ही हो पाई, क्योंकि पोलन्द सारे उकड़न और वेलेरुमियापर अपने अधिकारको छोड़नेके लिये तैयार नहीं था। वास्तिक समुद्रतट रूसके लिये इस समय खतरनाक था—जबतक स्वीडनको समुद्रतटमें भगाया न जाय, तबतक रूस अपनेको सुरक्षित नहीं समझ सकता था। इसके लिये १६५६ ई०में स्वीडनने लडाईं शुरू हो गई, लेकिन कुछ सफलता होनेपर भी युद्ध कई वर्षोंतक अनिर्णायक रूपमें चलता रहा। अन्तमें १६६१ ई०में रूसने अपनी असफलता स्वीकार करते यथापूर्व-स्थितिको मानते करसिकी-मवि-पत्रपर हस्ताक्षर कर दिया। वगदान १६५७ ई०में मरा। वह यह देखकर प्रसन्न था, कि उकड़न अब जालिम पोलोंसे मुक्त है।

वोल्गाकी जातिया—१७वीं सदीमें अब भी वोल्गाके दोनों तटोंके घने जंगलो और मैदानोंमें उराल-अल्ताई-वशकी अ-रूसी जातिया रहती थी। व्यत्का नदीकी पूर्वी वनभूमिमें उदमुर्त (वोल्याक), रहने थे। वोल्गाके बाये तटपर व्यत्का और वेतुल्गा नदियोंके बीचमें तथा वोल्गाके दक्षिणी तटपर, वोल्गा और सुरा नदियोंके बीचमें मारी (चेरेमिसी) लोग रहते थे। मारियोंके पड़ोसमें चुवास और मोर्विनी रहते थे, जिनकी वस्तिया निम्न ओका और ऊपरी सुराकी भूमिमें थी। निम्न कामाके दोनों तटोंपर तातारों (तारतारों)की वस्तिया थी। वाशकिर (तुर्क) कामाके दक्षिणी-पूर्वकी भूमि एवं ऊफा नदीके किनारे बसते थे। कुछ वाशकिर उरालके परे तवोल् नदीके ऊपरी भागमें भी रहते थे। इन सभी जातियोंको इवान IVने कजानके खानपर विजय प्राप्त करनेके बाद अपनी प्रजा बना लिया था। जारकी सरकार १५५२ ई०तक वोल्गा-भूमिके अपने पराजित लोगोंसे वही कर वसूल करती थी, जो कजानके खान तथा उसके मामन्त उनमें लिया करते थे। जारके कर उगाहनेवालोका वर्ताव भी इन लोगोंके साथ अच्छा नहीं था, कितनी ही बार वह लोगोंके पशुओं और अन्नको जप्त कर लेते। रूसी महन्तों और जमींदारोंने भी वहाकी बहुत-सी उर्वर भूमि और जंगलोपर अधिकार कर लिया था—इन जंगलोंमें भारी सख्यामें कीमती समूरी खालवाले जानवर रहते थे। ग्रीक चर्चने यहाके लोगोंको निकोनके समय जबरदस्ती ईसाई बनानेमें बड़ी सरगरमी दिखलाई। ईसाई पुरोहित मोर्विनी गावोंके किसानोंको जमाकर वपतिस्मा दे उन्हें बाध्य करते, कि वह अपने पवित्र वनों-उपवनो और पितरोंकी कब्रोंपर वने लकड़ीके ढाचोंको जला दें।

वाशकिर लोग मुख्यतः पशुपाल थे। वह समूरी जानवरोंका शिकार, जंगली मधुका सचय और मछुवाही भी किया करते थे। १७वीं सदीमें अब वह कहीं-कहीं खेती करने लगे थे, और जहां-तहां लकड़ीके वने उनके झोपड़े भी खड़े होने लगे थे। ग्रीष्ममें वह अपने ढोरो और घोड़ोंको चरानेके लिये चरागाहोंमें और शरदके अन्तमें अपने जाड़ेके निवास-स्थानोंमें चले जाते। पहले उनमें अपने छोटे-छोटे कवीलोका जनसत्ताक संगठन था, लेकिन अब वह पुराने समयसे चला आता संगठन टूटने लगा था। भूमिपर कवीलेका नाझी अधिकार हटकर अब उसके बड़े और अच्छे भागपर तरखनो (राजकुमारों) और वातुरों (बहादुरों)का अधिकार हो गया था। इस प्रकार घनी-गरीब-

का वर्ग-भेद उनमें स्थापित हो चुका था। बागकिर रूसी सरकारको कई तरहके मूल्यवान् समूरी खालोको करके रूपमें देते थे। १७वीं सदीमें अब रूसी महत् और जमीन्दार भी इनकी भूमिमें पहुँचकर घने जंगलो, मछलीभरी नदियों, नमककी खानों, हरे-भरे चरागाहों, तथा खेतीके लिये उपयुक्त वज्र भूमिको अपने हाथमें करने लगे। इसके कारण पशुपाल वाशकिरोको बड़ी बाधा होने लगी, जिसके लिये असतोष और विद्रोह करनेका परिणाम यही हुआ, कि बहापर ऊफा जैसे कितने ही दुर्गर्बद्ध नगर रूसियोंने स्थापित कर दिये।

वोल्गा-प्रदेशकी अ-रूसी जातियोंमें कलमक (कलमख) भी थे। कलमक मंगोलोकी एक शाखा थी, इसे हम आगे बतलायेंगे। वह १६३० ई०के आसपास निम्न-वोल्गाकी भूमिमें आये। पहले यह घुमन्तू जाइसन सरोवरके उत्तरकी पहाड़ियोंमें विचरते थे, जिसे जुगारिया भी कहा जाता है। कलमकोंके कई भिन्न-भिन्न कबीले थे, जिनका अलग-अलग राजा होता था। वैसे सभी कबीले एक-दूसरेसे स्वतन्त्र थे, लेकिन जब सारी जातिके ऊपर कोई खतरा आता, तो सबसे शक्तिशाली जातिके राजाके अधीन वह अपना लडाकूस्थ स्थापित कर लेते। १७वीं सदीके आरम्भमें कलमकोंके एक बहुमुख्य कबीलेका डेरा इर्तिश नदीके ऊपरी भागमें था। इर्तिशके किनारे येरमककी विजयके बाद रूसियोंकी बहुतसी बस्तिया बस गई थी। इर्तिशके इन कलमकोंने रूसी कसबोंपर आक्रमण करना शुरू कर दिया, जिसका बदला भी लिया जाने लगा। फिर दक्षिण-पश्चिमकी ओर बढ़ते १६३० ई०के आसपास उन्होंने यायिक (उराल) और वोल्गाके बीचकी भूमिको दखल कर लिया। १६५६ ई०में कलमकोंने रूसकी अधीनता स्वीकार की। १७वीं सदीके अन्त तथा १८वीं सदीके आरम्भमें वोल्गा-कलमकोंका शासक आयुका बड़ा शक्तिशाली खान था। यद्यपि उसने जारकी अधीनतासे इन्कार नहीं किया, लेकिन वह अपनेको स्वतन्त्र समझता था, और वोल्गाके किनारेके रूसी नगरोपर आक्रमण करनेसे भी वाज नहीं आता था। जो कलमक जुगारियामें रह गये थे, उन्होंने १७वीं सदीके अन्ततक एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया, जो धीरे-धीरे साम्राज्यका रूप लेने लगा।

रूसी शासकोंके अत्याचारके कारण वोल्गाके लोग जब-तब विद्रोह कर बैठते थे, लेकिन १६६२ ई०में इस विद्रोहने खतरनाक रूप लिया। उस साल एक ही समय वाशकिर-भूमि और पश्चिमी साइबेरियाके बहुत भागोंमें वगावत हो गई। येरमकद्वारा पराजित सिविरके कूचुम खानके एक वंशजने तातारों, वाशकिरो और पश्चिमी साइबेरियाके बोगुलो (मसियो)के विद्रोहका नेतृत्व किया। विद्रोहियोंने रूसियोंके किलेबंद नगरोपर आक्रमण किया, उनके मठों और बस्तियोंको नष्ट कर दिया। यह विद्रोह कई सालतक चलता रहा। विद्रोहके दमन कर देनेके बाद जारशाही सरकार ने वाशकिरोकी और कितनी ही भूमि छीन ली, वाशकिर जवानोंको जबरदस्ती सेनामें भर्ती करके क्रिमियामें लड़नेके लिये भेजा। इसके कारण १६७५ ई०के आसपास फिर विद्रोह उठ खड़ा हुआ। छिटपुट होते विद्रोहोंको १६८२ ई०में सैयद सादिर जैसा नेता मिल गया। कलमकोंका प्रधान आयुका खान भी वाशकिरोकी सहायता करने लगा। लेकिन, अन्तमें दौद्ध कलमको और मुसलमान वाशकिरोकी प्रतिद्वंद्विता इतनी बढ़ी, कि कलमक जारकी ओर हो गये, और विद्रोहको कुचल दिया गया।

राजिन-विद्रोह—जार अलेक्सी (अलेक्सान्द्र)के कालमें रूसकी राजशक्ति और सीमा बहुत बढ़ी, लेकिन देशमें सघर्षों और विद्रोहोंके भीतरसे ही। इन विद्रोहोंमें स्तेपन राजिनके नेतृत्वमें हुआ किसानोंका विद्रोह बड़ा भयंकर था। भूखे गरीब कसाकोंमें अशांतिका होना स्वाभाविक था। इसी अशांतिका नेता येरमक था, जिसने साइबेरियामें रूसकी सीमाको बढ़ाया। कसाक स्वभावतः स्वच्छन्दताप्रेमी तथा लडाकू होते हैं। रूसी बोयबोद उनको नाराज होनेका बहुत मौका दे देते थे। १६६६ ई०में कसाक आतमन (सरदार) वासिलीने दोनके गरीब कसाकोंको मास्कोके विरुद्ध भड़काया और एक बड़ी कसाक सेना ले तुलातक पहुँच गया। उसके साथ दक्षिणी जमींदारोंके कितने ही अर्ध-दास किसान भी शामिल हो गये। इसी समय दोनके गरीब किसान विद्रोहियोंको

आतमन स्तेपन तिमोफेयेफ-पुत्र राजिन-जैमा नेता मिल गया। १६६७ ई०के वसंतमें राजिन अपने सैनिकोंको लिये दोनसे वोल्गाकी ओर बढ़ा। उसके कमाकोने जार, महामघराज और घनी व्यापारियोंकी अनाज तथा दूसरी पण्य वस्तुओंसे लड़ी बहुत-सी नावोंको पकड़ लिया, जिनमें देश-निकाला पाये पैरोमें बेड़ी पड़े कितने ही बंदी भी थे। उन्हें मुक्त करके राजिनने बंदियों, स्त्रैलेत्सी (राज-मैनिको) और मल्लाहोंसे कहा—“अब तुम सब स्वतन्त्र हो, जहा इच्छा हो वहा जाओ। मैं तुम्हारे साथ जबरदस्ती नहीं करूंगा। जो कोई मेरे साथ रहना चाहता है, वह स्वतन्त्र कमाक माना जायगा। मैं केवल वायरो और घनी जमीदारोंमें लड़नेके लिये आया हूँ, गरीबों और सीधी-सादी जनता-को भाड़के तौरपर मैं अपना भागीदार बनानेके लिये तैयार हूँ।”

इसके बाद राजिनके कसाक नावोंपर चढ़कर अस्त्राखानके किलेसे वृत्ते कास्पियनमें गये। फिर अपने पच्चीस नावोंमें जा उन्होंने यायिक (उराल) नदीके तटपर बसे यायित्स्क नामक दुर्गबद्ध नगरपर अधिकार कर लिया। राजिनने जाड़ोंको यायिकके तटपर बिताया। अगले साल वह समुद्रसे होकर ईरानके तटपर पहुंचा। उसके पास कई हजार कसाक थे। उसने कास्पियन-तटवर्ती काकेशसकी भूमिको लूटा, और ईरानके शाहके पास कई आदमी भेजकर कहलवाया, कि मैं और मेरे कसाक तुम्हारे देशमें मदा रहनेके लिये तैयार हैं, क्योंकि हम मास्कोके वायरोके अत्याचारको नहीं सह सकते। शाहने राजिनके दूतोंको पकड़कर मरवा दिया। इसपर कसाकोंने ईरान-के नगरोंमें लूट-पाट करनी शुरू की। शाहने पचास नावोंमें सैनिक भरकर भेजे, लेकिन राजिनने उनमेंसे अधिकांशको डुबा दिया। सफलता होनेपर भी इन लड़ाइयोंमें कसाकोंको बहुत क्षति उठानी पड़ी, जिससे उनकी सहाय्य कम होनी जा रही थी। वचे हुआमे बीमारी फैलने लगी, इसलिये राजिन वायरोके राज्यसे बाहर ईरानमें रहनेका ख्याल छोड़कर १६६९ ई०की शरदमें फिर अस्त्राखान पहुंचा। उसकी अनुपस्थितिके समय अस्त्राखानकी छावनी और मोर्चाबंदीको बहुत मजबूत कर लिया गया था। राजिनने दोनकी ओर जानेके लिये इजाजत मांगी। अस्त्राखानके वीयवोद जानते थे, कि नगरके अधिकांश लोगोकी सहानुभूति राजिनके साथ है, इसलिये उन्होंने इस शर्त-पर उन्हें जानेकी इजाजत दी, कि वह अपने लूटके माल और हथियार समर्पित कर दें। अस्त्राखानके गरीबोंने बड़े उत्साहके साथ राजिनका स्वागत किया। वह उमें बत्का (बापू) कहते थे। राजिनके कसाक पहले फटे-चीथड़ोंमें गये थे, लेकिन अब वह गोटेदार रेशमी कपड़े पहने हुये थे। राजिनने खूब दिल खोलकर सोनेकी मुहरों और दूसरी चीजोंको लोगोमें बांटा। हथियार रखनेमें इनकार करके अपनी हथियारबंद सेनाके साथ राजिन दोनकी ओर चल पड़ा। अस्त्राखानके निवासियोंमेंसे भी कितने ही उसके साथ हो लिये।

चारों ओरसे दोन-कसाक राजिनके झंडेके नीचे आने लगे। इसके बाद कई बार जार-शाही सेनासे उसने सफल मुकाबिला किया। जारित्सिन (आधुनिक स्टालिनग्राद)के निवासियोंने उसे शहरपर अधिकार करनेमें मदद दी। १६७० ई०के वसंतमें राजिन दूसरी बार वोल्गाके किनारे पहुंचा। पहले वह सावारण लूटेरेके तौरपर आया था, यद्यपि उसकी उदारताकी ख्याति उसी समय चारों ओर फैल गई थी, लेकिन अब वह कई हजार अनुशासन-सम्पन्न सेनाका कमांडर था। वह वीयवोदों, अमीरों और घनी व्यापारियोंका दुश्मन था, लेकिन गरीबोंका पक्षपाती और दामोका हर जगह मुक्तिदाता। राजिनकी दानशीलता, उदारता और गरीबोंके प्रति प्रेम ऐसी आकर्षण-की चीज थी, जिससे वह चारों तरफ मशहूर हो गया। जारित्सिन लेनेके बाद उसने अब रूसके भीतर बढ़नेका निश्चय किया, लेकिन इसमें पहले उसने अस्त्राखानपर अधिकार करके निम्न-वोल्गामें अपनी सत्ता जमा लेना आवश्यक समझा। अस्त्राखानके वीयवोदने स्त्रैलेत्सीकी एक सेना राजिन-के विरुद्ध भेजी, लेकिन सैनिक अपने अफसरोको मारकर विद्रोहियोंमें जा मिले। जून १६७० ई०में राजिन अस्त्राखानके पास पहुंचा। पत्थरकी दीवारोंसे घेरकर नगरको बहुत मजबूत कर लिया गया था, दीवारों और मीनारोंपर तोपें लगी थी, लेकिन बहुतसे स्त्रैलेत्सी तथा नगरके लोग राजिनके स्वागतके लिये अघीर थे। गोघूलीके समय घंटे बजने लगे, यह इस बातका संकेत था कि कसाकों-

ने आक्रमण कर दिया है। कसाक अघेरेमें चुपचाप किलेके पास आ सीढिया लगाकर दीवार फाद नगरके भीतर कूद पड़े। नागरिक भी उनकी मददके लिये दीवारके पास प्रतीक्षा कर रहे थे। नगरके समर्पण करनेकी सूचना तोपोकी पाच आवाजसे दी गई। राजिनके कसाकोके साथ अस्त्राखानके गरीब भी शामिल हो गये और उन्होंने वहाके अमीरो तथा प्रतिरोधकोको मार डाला। सबेरा होते-होते अस्त्राखानपर राजिनका पूरा अधिकार था।

राजिनकी विजय-यात्रा अब शुरू हुई। जारके स्ट्रेल्स्की और साधारण लोग राजिनकी सहायता करनेके लिये हर जगह तैयार थे। उसने सरातोफ (पुराना सरातोफ वोल्गाके बाधे तटपर था), समारा (आधुनिक कुइविशेफ)को आसानीसे अपने हाथमें कर लिया, लेकिन सिम्बिर्स्क (आधुनिक उलियानोव्स्क)को लेनेमें बड़े जबरदस्त प्रतिरोधका सामना करना पड़ा। उसके आदमी गाव-गावमें घूमकर राजिनके नामसे कह रहे थे—“सभी उत्पीड़ितों और गरीबोंको विद्रोहके लिये खड़ा हो जाना चाहिये।” राजिन यह भी कहता था—“मैं महाप्रभु (जार)के लिये देशद्रोही वायरो और अमीरोसे लड़ रहा हूँ।” वह नहीं जानता था, कि जार उसी वर्गका सबसे शक्तिशाली आदमी है, जिसके विरुद्ध उसने जहाद छेडी है। प्रायः एक महीनेतक राजिनने सिम्बिर्स्क नगरका मुहासिरा किया। १६७० ई०के अक्टूबरके आरम्भमें नई सेना आ गई, और एक घनघोर लड़ाई हुई। तलवारोंकी खपाखपमें वीर राजिन निश्चक लड़ता दिखाई पड़ता। उसके मिरपर एक गोली लग गई थी, एक पैर भी गोलीसे घायल हो गया था, तो भी वह लड़ रहा था। सारी वीरता दिखलानेपर भी सुशिक्षित सुशस्त्रित बहुसंख्यक जार-सेनाके सामने राजिनको हार खानी पड़ी। वह थोड़ेसे कसाकोके साथ दोनों ओर निकल भागा। राजिनके हारनेके बाद भी वोल्गाकी भिन्न-भिन्न जातियों—कलमक, तातार, मोर्व्दिनी, मारी, चुवाश और वाशकिर—तथा दाहिने तटके प्रदेशोंके रूसी किसानोंने विद्रोहको बहुत समयतक जारी रक्खा। जारकी सेना इन विद्रोहियोंसे खूनी बदला लेने लगी। बड़ी किसानोंको वह पकड़कर अर्जमस नगरमें ले गये, जहाँ उन्हें बड़ी सासत देकर मारा गया। नगरके चारों ओर फासीकी टिकटिया खड़ी कर दी गई थी। एक विदेशी प्रत्यक्षदर्शिन लिखा है, कि तीन महीनेके भीतर अर्जमसमें ग्यारह हजार आदमियोंको फासीपर चढ़ाया गया। किसानोंके नेताओंने अन्तिम समयतक बड़ी निर्भयताका परिचय दिया। जल्लादने एकसे पूछा—

“तुम क्या करना चाहते थे ?”

“हम मास्कोको लेना और तुम्हारे सभी वायरो, अमीरो और लिखनीचदोंको मार डालना चाहते थे।”

एक किसान स्त्री-नेता अल्योनाको जलाकर मारनेका दंड दिया गया। वह दडाज्ञा सुनकर जरा भी न घबड़ाई और मरते समय बोली—

“जैसे मैं लड़ी, यदि वैसे ही दूसरे भी लड़े होते, तो राजुल यूरी (सेनापति)को हमारे मामनेसे जान लेकर भागना पड़ता।”

१६७१ ई०के आरम्भमें वोल्गाके दक्षिण-तटके विद्रोहियोंको दवानेमें सफलता मिली। अब जारशाही राजिनके पीछे पड़ी थी। अप्रैल १६७१ ई०में उसे पकड़कर मास्को ले गये, जहाँ राजिन को भीषण सासत दी जाने लगी, लेकिन तब भी उसने मुहसे एक बार भी आह नहीं निकाली। जून १६७१ ई०में उसको मारनेसे पूर्व जल्लादोंने पहले हाथों और पैरोंको काट दिया, फिर सिरको घडसे अलग कर दिया। जारकी सरकारने राजिनको मारकर मतोपकी सास ली, लेकिन साधारण जनताके लिये राजिन मरा नहीं। वह समझती थी, कि वायरोने किसी दूसरेको मारा है, राजिन तो अब भी वचकर कही छिपा हुआ है। वह फिर एक बार हम दुखियोंकी मददके लिये आयेगा।

जनताका राजिनके प्रति कितना सद्भाव था, वह लोकगीतोंकी निम्न पवित्तियोंसे मालूम होगा—

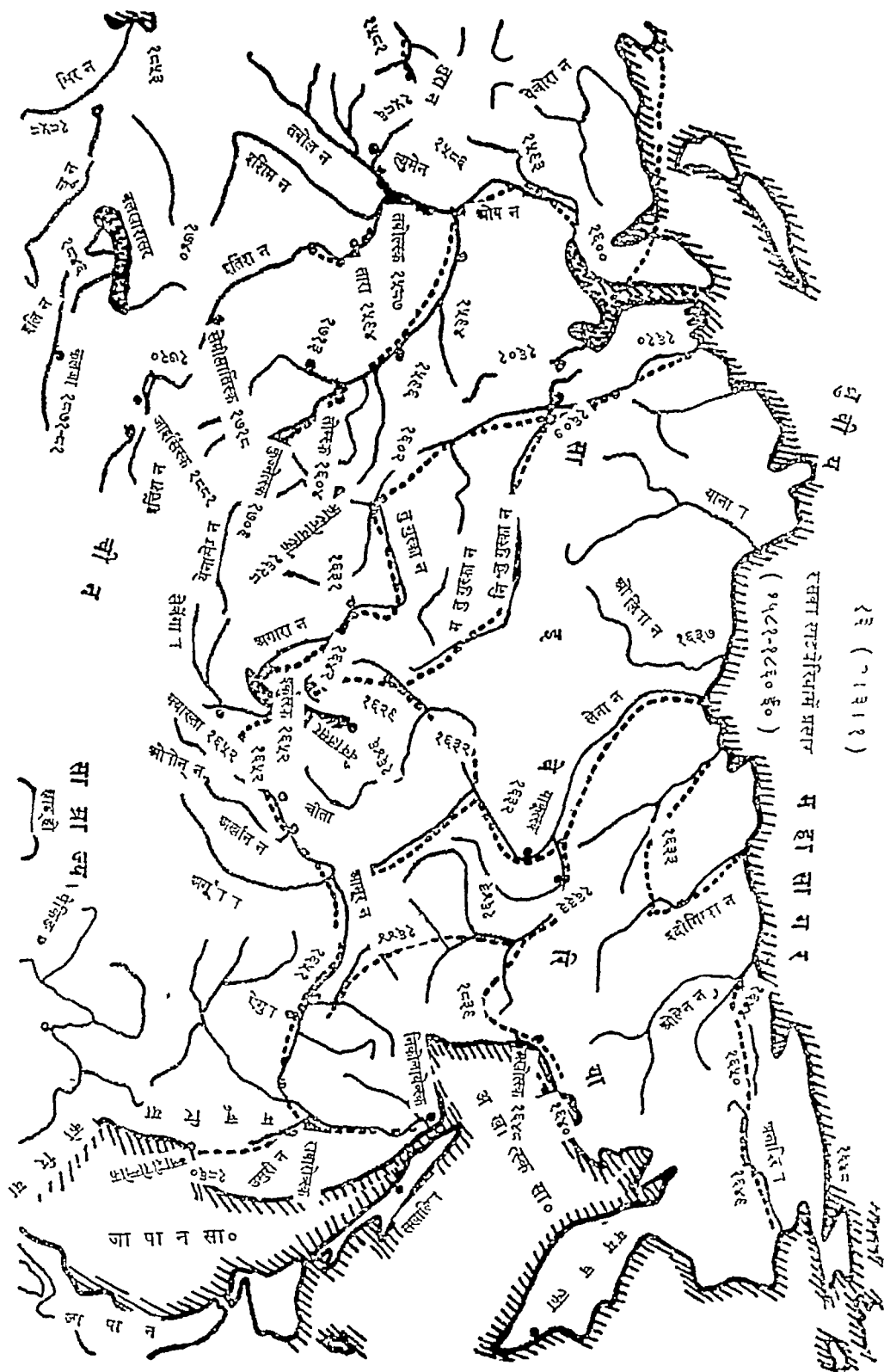
उठ है सूर्य, है मैले-कूचैले,  
तू जो कि पहाड़ोंके ऊपर डम प्रकार छाया है,  
जो कि हरे उगे हुये पौधोंपर छाया है,  
हमारी हड्डियोंको गरमाओ । हम ईमानदार जन हैं ।  
यद्यपि हम गरीब हैं, किन्तु हम किसीका जूआ नहीं उठायेंगे,  
चोर हम नहीं हैं, और न भयकर डाकू,  
स्तेपान राजिन हमारा नेता हैं ।

रूसी भाषाका कालिदास पुष्पकिन स्तेपन राजिनको रूसी इतिहासका अत्यन्त काव्यमय पुरुष कहता है ।

साइबेरियामें प्रसार—हम पहले कह चुके हैं, कि कैसे येरमकने सिविरके खानको हराकर रूसी सीमाको ओवर और इतिश नदीके तटतक पहुँचा दिया । साइबेरियाके जंगलोंसे मिलनेवाली समूरी खाले सोनेके भाव विकती थी, और साथ ही वहाके लोगोंको पकड़कर दाम बनाकर बेचना भी आमदनीका एक अच्छा खासा स्रोत था, इसलिये रूसी व्यापारियों और साहसियोंका उधर खिंचना स्वाभाविक था । समूरी खालोंको पहले वह वहाके स्थानीय शिकारियोंके हाथसे खरीदते थे । फिर रूसी शिकारियोंने स्वयं जंगलोमें दूर-दूर तक घुसकर शिकार करना शुरू किया । यह शिकारी कभी-कभी ऐसे स्थानोंमें पहुँचने लगे, जहापर जारके सैनिक कभी नहीं पहुँच पाये थे । इसी तरह कुछ पीढ़ियोंमें रूसी येनिसेइसे अखोत्स्क समुद्रतक अपना अधिकार स्थापित करनेमें सफल हुये । जहा नदियोंका सहारा था, वहा शिकारियों और व्यापारियोंकी टोली नावोंपर चढ़कर जाती, फिर नावोंको आदमियोंके कवोंपर उठाकर एक नदीसे दूसरी नदीमें परिवर्तित कर लेते । जार गदुनोफके कालमें रूसी व्यापारी और शिकारी मंगोलियामें पहुँच चुके थे । गदुनोफके समय वहा एक बड़ा सैनिक अभियान भेजा गया था । स्थानीय शिकारी (नेन्सी) इमे वर्दीश्ट कैसे करते, लेकिन अपने पुराने हथियारों और विखरी हुई अल्प-संख्याके वलपर बेचारे सफल प्रतिरोध कैसे करते ? रूसी दूर-दूर जंगलोंमें लकड़ीके किले बनाकर जम जाते । इस प्रकार उन्होंने निम्न-येनिसेइ-उपत्यकाके मार्गपर अधिकार कर लिया । उसके कुछ समय बाद उन्होंने मध्य-ओवर और मध्य-येनिसेइमें भी पहुँच १६१९ ई०में येनीसेइस्क नगरकी स्थापना की । यहासे अब वह बेवेकी, वूर्यत तथा उम प्रदेशके दूसरे लोगोंको अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर करने लगे । दस वर्ष बाद येनिसेइ नदीके तटपर आस्तोयास्क नगर स्थापित हुआ, लेकिन यहा किरगिजोंने उनसे जबरदस्त मुकाबिला किया । पर, मुकाबिलेमें डरकर रूसी अपने आगेके प्रसारको रोक नहीं सकते थे । येनिसेइस्क नगरसे अगारा नदीके किनारे चलते हुये रूसी बैकाल महासरोवरपर पहुँच गये । १७वीं शताब्दीके मध्यमें उन्होंने अगाराके बैकालसे निकलनेके स्थानके पास ही इकुत्स्कका शरद्धकालीन निवास-स्थान बनाया । वूर्यत मंगोल अपनी वीरताके लिये प्रसिद्ध थे । उन्होंने अपनी भूमिपर हस्तक्षेप करते देखकर रूसियोंके साथ जबरदस्त संघर्ष किया, जिसमें असफल होकर कितने ही मंगोलिया चले गये, लेकिन वहाके मंगोल-सामन्तोंके अत्याचारके कारण कितनी हीने फिर लौटकर जारके जूबेको अपने कंधेपर रक्खा । इसी समय येनिसेइसे लेना नदीकी ओर जानेवाला महत्वपूर्ण रास्ता स्थापित किया गया । रूसियोंने अफवाह सुनी थी, कि लेनाके किनारे समूरी खालोंकी खानें भरी पड़ी हैं, जिसे सुनकर येनिसेइस्क और मंगजेया दोनों जगहोंसे रूसी माहमियोंकी भीड़ टूट पड़ी । उन्होंने लेना-उपत्यकाके निवासी याकूतोंके ऊपर प्रहार करके उनकी समूरी खालों, पशुओं (बारहसिंगों)पर ही हाथ नहीं साफ किया, बल्कि स्त्री-वच्चोंको भी बेचनेके लिये बंदी बनाया । व्यापारियों और शिकारियोंकी पहुँच स्थापित होते ही येनिसेइस्कके सैनिक अधिकारियोंने लेनाके तटपर याकुत्स्क नामका गढ़ स्थापित किया । कुछ ही समय बाद जारने याकुत्स्कके लिये बोयबोद (राज्यपाल) भेजना शुरू किया । याकुत्स्कमें जम जानेके बाद सैनिक, व्यापारी और शिकारी और भी आगेके अज्ञात इलाकोंकी खोजमें लग पड़े, और उत्तर-पूर्वमें ध्रुवक्षीय समुद्रके तट तक याकूगिरो (ओदुगियाँ)के प्रदेशमें पहुँच करके उनसे कर लेने लगे ।



रूसी शिकारी पहाड़ोंमें जब लेनाके उद्गमकी ओर पहुँचे, तो उन्हें खबर लगी, कि शित्का और जेयामे अन्न और चादी भरी पड़ी है। तुगुस लोगोंने भी इस खबरकी पुष्टि की। इसपर साइबेरियाके वोयवोद गोलोविनने १६४३ ई०में अपने एक क्लर्क वाक्तेयारोफकी अधीनतामें सात आदमियोंको पता लगानेके लिये उक्त दोनों नदियोंकी उपत्यकाओंकी ओर भेजा। वाक्तेयारोफ इस कामके योग्य नहीं था, इसलिये वह खाली हाथ लौट आया। फिर उसी साल गोलोविनने पोयार्कोफके नेतृत्वमें एक बड़ी टोली यह कहकर भेजी, कि वहाँके लोगसे जाकर कर उगाहो, और जो देनेसे इन्कार करे,



उनमें लड़ाई करो । जेयाके तटपर पहुँचनेपर पोयार्कोफको अन्नके लिये निराश होना पड़ा । वहाँके लोग अधिकतर चीनसे आये अनाजपर गुजारा करते थे । पोयार्कोफ ने अपने सत्तर आदमियोंका पाममें रहनेवाले दौरी लोगोकी वस्तियोंमें भेजा, लेकिन उन्होंने रूसियोंको अपने गावोंके भीतर आने नहीं दिया । खाली हाथ लौटनेपर अपने लोगोंने उन्हें रसद देनेमें इन्कार कर दिया । इसका परिणाम यह हुआ, कि उन्हें अब स्थानीय लोगोको लूट-मारकर जीवन-यापन करनेके लिये मजबूर होना पड़ा । वसतके आनेपर यह टुकड़ी नावपर दमेयानदीके नीचेकी ओर बढ़ी । स्थानीय लोगोको खूनखार रूमियोंका पता पहले हीमें लग गया था, इसलिये वह उनको आते मुनकर भाग निकले । तो भी तीन गिलियक पकड़े गये, जिनके द्वारा रूमियोंने कर उगाहनेमें सफलता पाई । आगे बढ़ते-बढ़ते रूमियोंने आमूर नदीके मुहानेपर पहुँच जाड़ा वितानेके लिये वहाँ डेरा डाल दिया । मङ्गली जून १६४६ ई०में याकुत्स्क लौटी । अभियान सफल रहा, क्योंकि उन्होंने एक नई भूमिका पता लगाया, लेकिन साथही उनकी यात्राद्वारा लोगोमें बड़ा भयनचार हो गया । अज्ञात कालसे पूर्वी साइबेरियाकी यह जातिया चीनको कर दिया करती थी, इसलिये अब उन्होंने चीन सरकारतक अपनी गुहार पहुँचाई ।

१६४८ ई०में रूसी व्यापारियोंके एक समूहने कोलुमा नदीके मुहानेके पूर्व ध्रुवीय समुद्र-तटकी भूमिके वारेमें पता लगानेका निश्चय किया । उन्हें मालूम हुआ, कि समुद्री जानवर वालरस वहाँ जाकर बच्चे देता है । वालरसका दात बहुत महंगा विकता था, इसलिये वह उस अज्ञात भूमिकी ओर खिंचे । इसके लिये याकुत्स्कके व्यापारियोंने कसाक मिमाओन देझन्येफके नेतृत्वमें सात नावों के साथ एक अभियान भेजा । यह लोग कोलुमाके मुहानेसे समुद्रके किनारे-किनारे आगे बढ़े । नावें मजबूत नहीं थी, इसलिये अधिकतर टूट-फूट गईं, तो भी देझन्येफकी कुछ नावोंको एक तूफान बहाकर अमेरिका और एशियाको मिलानेवाली समुद्रकी उस पतली धारमें ले गया, जिसका नाम पीछे वेरिंगकी खाड़ी पड़ा । उस समय युरोपमें कोई नहीं जानता था, कि एसिया और अमेरिकाकी सीमाओंको केवल एक पतलीसी सामुद्रिक प्रणाली अलग करती है । आजकल एसियाके उत्तर-पूर्वीय अन्तिम अन्तरीपको देझन्येफ अन्तरीप कहा जाता है । इस प्रकार हम देखते हैं, शाहजहाके शासनके अन्तिम वर्षोंमें ही रूसी साइबेरियाके पूर्वी छोरतक पहुँच गये । जाच-मडताल करनेवालोंने लेनाकी शाखा अलदल नदीसे होते अखोत्स्क समुद्रके तटपर पहुँचकर वहाँ अखोत्स्क (गिकारवाला) गढ़ स्थापित किया, और बेचारे एवेंकी लोगोंने वारुदी हथियारोंके सामने प्रतिरोधको व्यर्थ समझकर अधीनता स्वीकार की ।

पश्चिमी संस्कृतिका प्रभाव—१७वीं सदीके रूसमें अभी शिक्षाका प्रसार केवल अमीरों और व्यापारियोंमें था । स्त्रियाँ सिर नहीं ढकती थी, किन्तु जबतक विवाहित नहीं हो जाती, तबतक पुट्रोंसे अलग रहती । वह अपरिचितकी ओर देखनेकी हिम्मत नहीं कर सकती थी । धनियोंकी स्त्रियाँ अपना समय पूजा-याठ या गोटा बनानेमें लगाती । अमीरोंकी पोशाक बहुत भारी होती थी । बाहरी चोगा एड़ीतक पहुँचता था, और लम्बी आस्तीन भी छोड़ देनेपर धरतीको छूनेसी लगती थी । उत्सवके समय बहुत मूल्यवान् उनी या रेगमी कपड़े पहने जाते थे । हीरा-मोती-जटित सोने या चादीके बड़े-बड़े बटन चोगोमें लगते थे । सामन्त लोग समूरकी बड़ी लम्बी टोपी पहिनते थे, जो नीचेकी अपेक्षा ऊपर अधिक चौड़ी होती जाती और इतनी भारी होती थी, कि आदमी सिरको आसानीसे घुमा नहीं सकता था । पुरुष वालोंको काटकर रखते थे, लेकिन दाढ़ीको बड़ी सावधानीसे बढ़ाते थे । बिना दाढ़ीके आदमीको समझा जाता था, कि वह हर तरहके पाप कर सकता है । दाढ़ी मुडाना स्वयं भी पाप-कर्म था । लेकिन, १७वीं सदीमें ही पश्चिमी युरोपका प्रभाव धीरे-धीरे रूसके उच्च वर्गपर पड़ने लगा । व्यापारने पश्चिमी यूरोपके व्यापारियोंसे रूसका मवब बहुत धनिष्ठताके साथ स्थापित कर दिया था । अब कितने ही यूरोपी रूममें लोहे, काच आदिके कारखाने स्थापित करने लगे थे । मास्को और दूसरे नगरोंमें बहुतसे ग्रीक, अंग्रेज, जर्मन, डच और पोल व्यापारी तथा शिल्पी रहने लगे थे । उनमेंसे कुछ चंद दिनोंके लिए आते और कितने ही रूसी नगरोंके बानी हो गये थे । मास्कोकी सरकार विदेशियोंको—विशेषकर शिक्षितों, सैनिक विशेषज्ञों, डाक्टरों, चित्रकारों तथा

दूसरे कलाकारो-शिल्पियोको—अपने यहा आकृष्ट करनेकी कोशिश करती थी। सभी विदेशी कामके नहीं थे। उनमेंसे कितने ही मौज उड़ाने, या गुप्तचरी करनेके लिये आते थे, पर इसमें भी शक नहीं, कि कितने ही अपनी विद्या और अनुभवसे रूसियोको लाभ पहुंचाते थे। १६वीं सदीके अन्तमें ही मास्कोमें विदेशियोंके रहनेके मुहल्ले बन गये थे, जिन्हे पीछे “जर्मन (मह) वस्ती” कहा जाता था। १७वीं सदीके मध्यमें उन्हें योर्जा नदीके किनारे प्रेयोनज्जेन्स्कोये गावके पासमें परिवर्तित कर दिया गया। कितने ही रूसी इनके सम्पर्कमें आकर युरोपीय सस्कृतिके प्रभावित होते रहे—यह कहनेकी अवश्यता नहीं, कि आजकी तरह उस समय भी रूसियोंके लिये “यूरोपा” एक दूसरा ही महाद्वीप था। पश्चिमी युरोप सस्कृतिके साथ-साथ विलासितामें भी बहुत आगे बढ़ा हुआ था। मास्कोके अमीर पुष्प-स्त्री भी इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस और दूसरे युरोपीय तथा पूर्वी देशोंमें राजदूत बनकर जाते थे। रूसी व्यापारी भी कोशिश कर रहे थे, कि अपनी पण्य-वस्तुओंको सीधे युरोपके नगरोंमें जाकर बेंचे, लेकिन विदेशी व्यापारी इसमें हर तरहकी बाधा उपस्थित करते थे।

उच्च वर्ग ही नहीं रूसी शिक्षित तथा बुद्धिजीवी वर्गपर भी पश्चिमी युरोपका प्रभाव पड़ने लगा था। जार अलेक्सी मिखाइल-पुत्रके समयका एक प्रभावशाली वायर ओरदिन-नाश्चोकिन् युरोपके नमूनेपर शासन-प्रबन्ध संगठित करनेका पक्षपाती था। उक्रइनके रूसमें मिल जानेसे, पोलैन्ड और पूर्वी युरोपके साथ सांस्कृतिक सम्पर्क स्थापित होनेमें बड़ा सुभीता हुआ। शताब्दियोंके सिद्धहस्त कियेफके मूर्तिकार, चित्रकार तथा दूसरे कलाकार मास्कोमें आकर काम करने लगे। वायरोके घरोंमें उक्रैनी विद्वान् शिक्षकका काम करते थे। एक सुशिक्षित बेलोरूसी साधु सिमेओन पोलोत्स्की जार अलेक्सीके परिवारमें शिक्षक था। पोलोत्स्कीने नाटक और कविताये लिखी। उसके पद्य बहुत प्रसिद्ध थे। वह साहित्य और काव्यशास्त्रकी भी शिक्षा देता था। बहुतसे विदेशी विद्वानोंने इतिहास, युद्धविज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, भूगोल, प्राकृतिक विज्ञान तथा दूसरे विज्ञानोंकी पुस्तकें १७वीं सदीमें रूसी भाषामें अनुवादित की। यह याद रखना चाहिये, कि यही हमारे यहा औरगजेवके शासनका समय था, जिसमें जहादी लड़ाइयां छोड़ विद्या-विज्ञानकी चीजोंकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया था। रूसी शिक्षित अब सिर्फ धार्मिक साहित्य हीसे सतुष्ट नहीं थे, वह पश्चिमकी धर्मनिरपेक्ष कहानियों और उपन्यासोंको अपनी भाषामें पढ़ने लगे थे। अमीरो तथा व्यापारियोंके दैनिक जीवन और वेश-भूषापर भी पश्चिमका प्रभाव पड़ने लगा था। १७वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें शराबी साधुओ, लोभी न्यायाधीशों, और घूसखोर अमलो, तथा मूर्ख अमीरोंके ऊपर व्यग्य करते कितने ही प्रहसन लिखे गये थे। संक्षेपमें कहा जा सकता है, कि अब साहित्यमें वास्तविक जीवन—वस्तुवाद—के लानेकी कोशिश की जाने लगी थी। साहित्य हीमें नहीं, रूसी चित्रमें भी वस्तुवाद घुसने लगा था। प्रसिद्ध कलाकार सिमोन उशाकोफकी कला वास्तविकताका दर्पण-सी थी, जिसमें तत्कालीन जीवनकी झाकी मिलती थी। उस वक्त भी आजकी तरह बहुतसे कलाकार ऊटपटांग-बेढगी टेढी-मेढी रेखाओं और रंगोंके पीछे इतने पागल थे, जिन्हे कलाका वास्तविकताके पास जाना फोटोग्राफी मालूम होता है। १७वीं शताब्दीमें पहले-पहल मास्कोके दरबारियोंको नाट्यकलाका परिचय मिला, जब महावस्तीके एक पुरोहित गेटफ्रिड ग्रेगोरीने जार अलेक्सीके शासनकालमें रूसी विद्यार्थियों और जर्मन नटोंसे एक नाटकमंडली बनाई, और ऐतिहासिक कहानियोंको लेकर रंगमंचपर नाटक खेले। पीछे एक खास मकान बनाकर रूसी भाषामें लिखे नाटकोंका भी अभिनय होने लगा। अभिनयके समय एक खास आसनपर बैठकर जार भी उसे देखता था, लेकिन जारानी अलग एक परदेमें बैठकर ही देख पाती थी। नवीनताकी तरफ अभिरुचि इतनी बढ़ गई थी, कि महासघराज निकोन्ने जल-भुनकर सभी देशी वाद्ययंत्रोंकी होली जला डालनेकी आज्ञा दी।

**चीनसे सबध—**जार अलेक्सीने अपना पत्र देकर पेट्रिलियेफको १६५९ ई०में चीन-सम्राट् शी-चू (१६४४-१६६१ ई०) के पास भेजा। सम्राट्ने उससे मुलाकात की। इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि रूसी दूतको दरबारमें कोतौ (साण्टाग प्रणिपात) करना पड़ा। रूसी दूतको दस पूड (४ मन) चाय देकर बिदा किया गया। चाय शायद यह पहली बार स्थलमार्गसे मास्को पहुंची। इसके बाद १६६९ ई०में अबलिनके अधीन और १६७५ ई०में परजेन्निफोफके नेतृत्वमें रूसी कारवा (वाणिज्य-

सारथ) उरगा-कलगनके रास्ते चीन भेजे गये । अमली राजकीय दूतमंडल १६७५ ई०में गया, जब कि निकोलाइ स्पाथेरीको जारने अपना दूत बनाकर चीन दरबारमें भेजा । सम्राट्ने उसका अच्छी तरह स्वागत किया, संगीतके साथ दूध-मक्खनसे बनाई चायकी दावत की । चीनी दरबार-के वृत्तमें व्यवहार अबुद्धिमत्तापूर्ण ही नहीं अपमानपूर्ण भी होते थे, किसी गलतीसे नाराज होकर सम्राट्ने जारकी भेटको करके रूपमें स्वीकार कर स्पाथेरीको हटा दिया ।

आमूर-विजयसे व्यापारियोंको भारी लाभ हुआ था । उमें देखकर १६४९ ई०में एक व्यापारी घेरोफेड खवारोफने अपना समय और धन एक अभियानके संगठनमें लगाया । वोयवोद फ्रास-वेकोफने भी पैसे और सहानुभूतिसे उसका उत्साह बढ़ाया । डेढ सौ स्वयसेवक तैयार किये गये, जिनके लिये हथियार, भोजन-सामग्री खवारोफने प्रस्तुत की । आमूर-निवासियोंपर विजय प्राप्त करनेके लिये प्रस्थान कर पहले वह ओलेकमाके रास्ते चले, जो नया रास्ता था । आगे पहाड़ पार करनेमें लोगोंने कोई कठिनाई नहीं उपस्थित की, लेकिन उन्हें रुसियोंकी क्रूरताका पता लग गया था, इसलिये जहां-कहीं भी वह पहुंचते, लोग अपने गावोंको छोड़कर भाग जाते । पहली दो वस्तियोंमें उन्हें एक भी आदमी का पूत नहीं मिला, तीसरी वस्तीमें पहुंचनेपर तीन सवार मिले । खवारोफने बहुत समझानेकी कोशिश की, कि हम केवल शांतिके साथ व्यापार करनेके लिये आये हैं, लेकिन जैसे ही सवार लोगको पता लगा, कि यह उन्हीं सत्यानाशी वर्गोंमेंसे हैं, तो वह भाग चले । खवारोफके आदमी तीन दिनतक व्यर्थ ही उनका पीछा करते रहे । पाचवे जनशून्य गावमें एक बुढ़िया मिली । पता लगानेके लिये उमें बहुत सासत दी, लेकिन बुढ़ियाने जो बातें बतलाईं, वह पीछे झूठ निकली । अन्तमें खवारोफको खाली हाथ ही इर्कुत्स्क लौटना पड़ा, तो भी वह वोयवोदको यह समझा सका, कि यदि आमूर-प्रदेशको जीता जाय, तो वहांसे काफी अनाज मिल सकता है ।

खवारोफ इर्कुत्स्कमें उतने ही समय तक ठहरा, जितनेमें रसद और हथियार-सहित एक अच्छे दलको संगठित करके वह फिर अपने कामको शुरू कर सके । अबकी बार वह आगे बढ़ते हुये अलवाजीन पहुंचा । वहांके दौरी लोगोंने एक दिन दोपहरसे शामतक लड़ाई की, लेकिन तोपो और बन्दूकोंके सामने तीर-धनुष क्या कर सकते थे ? खवारोफने अलवाजीनको अपना केन्द्र बना जल्दी-जल्दी उसे किलाबन्द किया और पड़ोसके गाव गुडगुदारपर एकाएक आक्रमण करके लोगोंको रूसका करद बनाया । गुडगुदारोकी अवस्था देखकर दूसरे लोगोंने भी अधीनता स्वीकार करनेमें ही भलाई समझी । एक-एक आदमीसे कई-कई वार कर वसूल किया गया । इसकी शिकायत करनेपर खवारोफने लोगोंको इकट्ठा होकर बात करनेके लिये बुलाया । तीन सौ आदमियोंकी सभामें खवारोफने उनसे मारी बातें पूछी । इसके बाद कुछ समयतक रूमियोंका वर्ताव वहांके लोगोंके साथ मित्रतापूर्ण रहा । दौरी रुसियोंके डेरोमें आते, रुसियोंको भी अपने घरोंमें निमंत्रित करके काफी रसद-पानी देते । खवारोफको अब उनपर विश्वास हो गया था, लेकिन एक दिन सबेरे ही उठनेपर उसने देखा, कि सभी दौरी अपना गाव छोड़कर भाग गये हैं । जाड़ेका मौसिम था, बहुत दूरतक दौड़-धूप नहीं की जा सकती थी, आहार भी काफी नहीं था । खवारोफके दलके लिये आगे बढ़नेके सिवा दूसरा रास्ता नहीं था । अपनी नावोंमें चढ़ आमूरके नीचेकी ओर चलते अचनी नामक मछुओंके इलाकेमें पहुंचकर उन्होंने डेरा डाल दिया । स्थानीय लोगोंका प्रतिरोध व्यर्थ था ।

चीन-दरबारमें की गई पुकारकी अब सुनवाई हुई, और एक चीनी सेना रुसियोंके विरुद्ध भेजी गई । आरम्भमें चीनियोंने मफलता पाई, लेकिन सम्राट्ने अपने जेनेरलको हुक्म दिया था, कि रुसियोंको बिना मारे बंदी बनाना चाहिये । इससे खवारोफके आदमियोंको सुविधा मिल गई, और उन्होंने चीनियोंको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया । खवारोफके मुट्ठीभर आदमी कितने दिनतक लड़ते रहते ? अन्तमें चीनियोंने अलवाजीनके किलेको सर करके उसे नष्ट कर दिया, जिसे सालभर बाद रुसियोंने फिर बना लिया, और तब चीनियोंकी तोपोंने प्रायः सालभर तक व्यर्थ ही उसे सर करनेका प्रयत्न किया ।

१६५४ ई०में खवारोफकी जगह स्तेपानोफ नियुक्त किया गया । वह सुगरी नदीके नीचेकी ओर बढ़ते हुये उमी सालके मई महीनेमें एक चीनी सैनिक टुकड़ीसे मिला । दोनों ओरसे गोला-गोली

चले । चीनियोंके जवरदस्त प्रहारसे रूसी नावोपर चढ़कर नीचेकी ओर भागे । चीनियोंने नदीतटके निवासियोंको गाव छोड़कर देशके भीतर चले आनेके लिये कहा, जिसमें रूसी सैनिक उन्हें तकलीफ न दे सके, और स्वयं आहारसे वंचित हो भूखे मरे । बीचके समयमें चीनी दूसरी लड़ाईकी तैयारी करते रहे । ३० जून १६५८ ई०में सुगारी नदीके मुहानेपर फिर लड़ाई हुई । इस युद्धमें दो सौ सत्तर आदमियोंके साथ स्तेपानोफका पता नहीं लगा, और करीब उतने ही कसाक पहाड़ोंमें भाग गये । अब उनका काम चोरी-डकैती (कज़ाकी) करना रह गया । इस लड़ाईके बाद नेचिन्स्कतक आमूकी घाटा शत्रुके खतरसे मुक्त हो गई । चीनियोंने निश्चित हो अपनी सेना लौटा ली । लेकिन इसी समय नेचिन्स्कको मदद मिली । इलिम्स्कके कसाक अपने वीरवोदको मारकर भाग गये और उन्होंने पहाड़के परले पार सखालिन और यालुम नदियोंके सगमपर अलवाजीनका किला बनाया, जिसे चीनी और तातार याकसा कहते थे । अलवाजीनके ये कसाक अपनी शक्ति और इलाकेको बराबर बढ़ाते जगह-जगह गढ़ियोंको कायम करके दौरी और दुचैरी लोगोसे कर उगाहन लगे ।

१६८३ ई०में अलवाजीनके कसाकोंने बीस चीनी शिकारियोंको जीते-जी गाड़ दिया । यह खबर सुनकर चीन सरकार बहुत नाराज हुई । उसने एक चीनी सेना भेजी, जिसने १२ जून १६८५ ई०में अलवाजीनको घेरकर वहाँ चीनका झंडा गाड़ दिया । चंद ही दिनोंके प्रतिरोधके बाद अलवाजीनियोंने आत्म-समर्पण किया । किलेको बिल्कुल तोड़ दिया गया । चीनी सेना वहाँसे अग्रसर हुई । उनके जानेके बाद कसाकोंने लौटकर जाड़ोंमें अलवाजीनको फिरसे तैयार कर लिया । चीनी सेना फिर अग्रसर आई, और उसने ७ जुलाई १६८६ ई०में दूसरी बार अलवाजीनका मुहासिरा किया । इसी समय रूससे एक प्रतिनिधिमंडल आया, जिसने सम्राट् खाड्-सी (शेङ्-चू १६६१-१७२३ ई०) से जारकी ओरसे निवेदन किया, कि जार युद्धसे नहीं शांतिके साथ मामलेका फैसला करना चाहते हैं । खाड्-सीने निवेदनको स्वीकार करके मुहासिराको उठा लेनेका हुक्म दे दिया । यही समय था, जब कि एलियोत (ओयरोत) और खलखा मंगोलोंके बीचमें रूसी सीमातके पास लड़ाई हो रही थी । चीनियोंने रूसी अधिकारियोंके पास पत्र भेजकर शिकायत की, कि रूसी सीमातके लोग हमारे यकसा और चूनिपचूको लूटते-मारते, तथा चीनी शिकारियोंके साथ बुरा बर्ताव करते हैं । उन्होंने यकसाके वीरवोद अलेक्सीपर इल्जाम लगाया, कि उसके दुर्व्यवहारोंसे मजबूर होकर जेनेरलको यकसा मुहासिरा करना पड़ा, जिसमें यकसाको अन्तमें आत्मसमर्पण करना पड़ा । पत्रमें आगे लिखा गया था —

“तो भी परमभट्टारकने यह समझकर रूसियोंके साथ उनके पदके अनुसार बर्ताव करनेके लिये आज्ञा दी, कि रूसी राजुल वीरवोदके कामको नहीं पसंद करेंगे । यही वजह है, जो यकसाके एक हजार रूसी सैनिकोंको बंदी बनानेके बाद उनके साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया गया, बल्कि जिनके पास घोड़े, हथियार या रसद नहीं थी, उन्हें यह चीजे देकर इस घोषणाके साथ लौटा दिया, गया, कि हमारे सम्राट् युद्ध पसंद नहीं करते, वह अपने पड़ोसियोंके साथ शांतिपूर्वक रहना चाहते हैं । परमभट्टारककी इस उदारतासे अलेक्सीको बहुत आश्चर्य हुआ, और उसने आखिरीमें आसू भरकर कृतज्ञता प्रकट की ।”

कुछ समयतक बातचीत करनेके बाद सम्राट् खाड्-सीने रूसी और चीनी प्रतिनिधियोंको मिलकर बात करनेके लिये निपचू स्थान निश्चित किया । ३१ जून १६७९ ई०को चीनी प्रतिनिधिमंडल क्या सेना-मंडल निपचू पहुँचा, जिसमें अफसर, सिपाही और नौकर-चाकर लेकर नौ-दस हजार आदमी, तीन-चार हजार ऊट और कम-से-कम पंद्रह हजार घोड़े थे । वीरवोदने शिकायत की, कि चीनी सुलह नहीं लड़ाई करनेके लिये आये हैं और रूसी दूतमंडलने १८ जुलाईतक यह कहते हुये आने-से इन्कार कर दिया, कि दोनों तरफके आदमी समान सख्यामें होने चाहिये । अतमें चीनियोंने निम्न बातें कहकर समझौता किया रूसी भी उतनी ही सख्यामें आ सकते हैं, लेकिन बैठकके समय प्रतिनिधियोंको तलवार छोड़कर दूसरा कोई हथियार साथ नहीं लाना चाहिये । घोखा न किया जाय, इसके लिये रूसियोंकी तलाशी चीनी, और चीनियोंकी तलाशी रूसी लेवे । बड़े-छोटेका रयाल हटाने-के लिये दोनों राजदूतोंका तम्बू एक दूसरेसे सटा रहे, जिसमें वह अपने-अपने तम्बूमें बैठकर बातचीत कर सकें ।

समझातेके लिये एकत्रित यह सम्मेलन वस्तुतः दोनो राज्योके वैभवका प्रदर्शन था। रूसी तम्बू बहुत साफ-सुथरा था। उनके भीतर तुर्की कालीन बिछा हुआ था। चीनी तम्बू अपेक्षाकृत सादा था, जिसके बीचमें एक लम्बी बेच रखी हुई थी। जब दोनो राजदूत अपने तम्बूओमें पहुँचे, तो रंगीन ध्वजा-पताकायें फहरा रही थी, नगारे बज रहे थे। रूसी दूतने पहले थोड़ेसे उतरकर कुछ कदम आगे बढ़कर चीनी राजदूतसे पहले तम्बूमें पवारनेके लिये प्रार्थना की। बीचमें एक मेज रखकर दोनो राजदूत आमने-सामने बेचोपर बैठ गये। अनुचर खड़े रहे, और दुभापिये मेजके छोरपर बैठे। बैठनेके बाद बातचीत शुरू हुई। दोनो ओरसे इतनी बट-बटकर मांगें पेश की गईं, कि उनमेंसे कोई उन्हें मान नहीं सकता था। गरबिलोन चीनी दूतमंडलका दुभापिया था। उसके कहनेके मुताबिक “वस इतना ही बढ़े कि दो कदम पीछे हटे।” कई दिनोंतक मोल-भाव होता रहा। ऐसा मालूम होने लगा, कि सवि-वार्ता भग हो जायगी, लेकिन अन्तमें किसी तरह समझौता हुआ। ६ मितम्बरको सधिपत्रका अन्तिम मनीषा तैयार करके उच्च स्वरसे पढ़ा गया, और फिर मुहर और हस्ताक्षर करके दोनो पक्षोको एक-एक प्रति दी गई। ९ मितम्बर १६८० ई०को अन्तमें “दोनो पक्षोके मुख्य प्रतिनिधियोने खड़े होकर सधिपत्रकी प्रतिको हाथमें ले अपने-अपने प्रभुओंके नाममें, सारे सप्ताहके प्रभु सर्वशक्तिमान् भगवान्की शपथ लेकर अपने मनकी ईमानदारीका प्रदर्शन किया।” इनके बाद दोनो ओरसे भेंटें दी गईं। युरोपके किसी राज्यने त्रिन्कुल समानताके तलपर की गई चीनकी यह पहली सधि थी।

**साइबेरियामें विद्रोह**—बहुत थोड़े समयके भीतर ही रूसियोंने उरालमें अखोत्स्क समुद्र तककी भूमिपर अधिकार कर लिया था। रूसी अफसर साइबेरियाके निवासियोंपर भारी कर लगाने लगे, उधर रूसी व्यापारी मस्ती गराव पिलाकर मिट्टीके मोलबहुमूल्य समूरी छालोको लोगोंमें छीनने लगे। लोग विद्रोह करनेके लिये मजबूर होते, दबाये जाते, लेकिन कुछ वर्षों बाद फिर उठ खड़े होते। एक बार वह याकुत्स्क नगरको नष्ट करनेमें करीब-करीब सफल हो गये थे। बुर्यात मंगोल और एवेंकी हथियार रखनेके लिये तैयार नहीं थे। जार अलेक्सीके शासनकालमें पश्चिमी साइबेरियामें भी एक जबरदस्त विद्रोह हुआ था।

**साइबेरियामें रूसी वस्तियाँ**—रूसमें अखोत्स्क पहुँचनेमें एशियाके सबसे चौड़े उत्तरी भागको आरपार करना पड़ता है। यह प्रदेश इतना मर्द है, जिसके सामने रूसकी सदीं लड़कोका खिलवाड है, लेकिन तो भी १७वीं सदीमें व्यापार और शिकार रूसियोंको उधर खींच ले गये। सरकार सैनिकोंके साथ कितने ही दूसरे लोगोंको भी वहाँ भेजने लगी। थोड़े ही समय बाद सरकारने समझा, कैदियोंको वहाँ भेजकर बसाना अच्छा है। हमें मालूम है, आस्ट्रेलियाको भी बसानेके लिये पहले अंग्रेज कैदी ही भेजे गये थे—वह अंग्रेज कैदियोंके लिये कालापानी बना था। वायरो और अमीरोंके लिये विद्रोही गरीबोंमें पिंड छुड़ानेका यह अच्छा मौका था। दूसरी तरफ अपने प्रभुओंके अत्याचारोंसे पीड़ित कितने ही किसानोंने भी मुक्त हवामें साम लेनेके स्थालसे साइबेरियामें प्रवास करना शुरू किया। पहले वह उरालतक पहुँचे, फिर आगे बढ़ने लगे। साइबेरियामें जगह-जगह किलाबंदी करके बहुतसे सैनिकोंको रखना पड़ता था। उनके लिये अन्न भी एक समस्या थी, क्योंकि साइबेरियाके अधिकांश कबीले अभी शिकारी अवस्थामें थे, खेतीको एक तरह वहाँ नये तौरपर शुरू करना था। जो किसान साइबेरिया जाते, उन्हें मुफ्त भूमि मिलती, और बीज-रुपया उधार दिया जाता। इसके बदलेमें वह “प्रभुके लिये” एक निश्चित मात्रामें खेती करके अनाज सरकारको दे देते। रूसके किसानों और साइबेरियाके किसानोंमें यही अन्तर था, कि यहाँ वह किसी जमींदारके लिये नहीं, बल्कि जारके लिये काम करते थे। किसानोंके अतिरिक्त बहुतसे रूसी व्यापारी भी आकर साइबेरियामें बस गये, जिनमेंसे कितनोंने अपनी खेती-बारी कायम कर ली और कुछ सैनिक सेवामें भी दाखिल हो गये। इस तरह १७वीं सदीके अन्ततक अर्थात् औरगजेवके अन्तिम वर्षोंतक साइबेरियामें जगह-जगह रूसी वस्तियाँ और गाँव बस गये थे। रूसियोंने साइबेरियामें उत्पादनको बढ़ाकर औरोंको भी बहुत प्रोत्साहन दिया। धीरे-धीरे खेतीका प्रसार बढ़ा और १७वीं सदीके अन्ततक पश्चिमी साइबेरियाके दक्षिणी जिग्रे कृषिप्रधान हो गये। रूसी प्रवासियोंने एशियाके उत्तरी भागकी खोज-पड़ताइमें बहुत काम किया। उन्होंने वहाँ लोहेकी बुनो, और नमककी खानोंका पता लगाकर काम शुरू

किया । रूसी यात्रियोंने अपने यात्रा-विवरण तथा साइबेरियाके नक्शे प्रकाशित किये । रूसी सरकारके लिये साइबेरिया अर्थागमका एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्रोत था । वहाकी बहुमूल्य समूरी छालोकी पश्चिमी युरोप, चीन और ईरानमें बड़ी माग थी । इस आमदनीसे सरकार अपने सैनिक खर्च और नौकरोके वेतनको देनेमें समर्थ थी ।

### ३ फ्योदोर, अलेक्सी-पुत्र (१६७६-८२ ई०)

जार अलेक्सीके मरनेके बाद उसका पुत्र फ्योदोर गद्दीपर बैठा । इसने दो बार व्याह किया, जिसमें पहली स्त्री मीलोस्लाव्स्की-कुलकी कन्यासे उसकी सोफिया आदि कई लडकिया तथा दो पुत्र फ्योदोर और इवान हुये । मरनेसे थोड़ा समय पहले जार अलेक्सीने नारुशिकन कुलकी कन्या नतालिया किरिलोन्नासे व्याह किया । नतालिया जारके एक कृपापात्र बायर अर्तमान मत्वयेफ परिवारमें पाली-पोसी गई थी, जहाँ उसे पश्चिमी सस्कृतिके घनिष्ठ सवधमें आनेका मौका मिला था । मत्वयेफका घर युरोपीय ढंगसे सजा रहता था । उसके पास युरोपीय अभिनेताओकी एक मडली थी । १६७२ ई० में नतालियाको एक पुत्र पैदा हुआ, यही पीछे महान् जार पीतर I हुआ । अलेक्सीके मरनेके बाद फ्योदोर जब गद्दीपर बैठा, तो उसकी उम्र चौदह वर्षकी थी । वह मस्तिष्क और शरीरका बड़ा ही दुर्बल बालक था । जारके अन्तिम समयमें नतालियाके सवधके कारण नारुशिकनोका प्रभाव बढ़ गया था, लेकिन फ्योदोरके मातृ-कुलके होनेसे मीलोस्लाव्स्कियोंने अधिकार अपने हाथमें सभाल लिया । पश्चिमी युरोप और बाहरी देशोंके प्रथम प्रभावके परिणामस्वरूप १६८७ ई०में मास्कोमें प्रथम स्थायी शिक्षण-संस्था “स्लावानिक-ग्रीक-लातिन-अकदमी”के नामसे स्थापित हुई ।

नारुशिकन इसे वर्दाश्त करनेके लिये तैयार नहीं थे, कि मीलोस्लाव्स्की दरबारमें सर्वेसर्वा हो जायें । आखिर उनका भी नाती जार-पुत्र पीतर था । जार फ्योदोर १६८२ ई० में निस्सतान मर गया, उसके उत्तराधिकारी उसके दो भाई—सहोदर इवान तथा सौतेला पीतर थे । इवान यद्यपि उमरमें बड़ा, लेकिन दिमागसे बहुत कमजोर था । फ्योदोरके शासनकालमें मीलोस्लाव्स्कियोंने जो मनमानी की थी, उसके कारण वह अप्रिय-से हो गये थे, इसलिये जारके जीवित-कालमें ही उन्होंने नारुशिकनोके साथ मैत्री स्थापित की । जैसे ही जार फ्योदोर मरा, महासद्वराज और बायरोने छोटे जारकुमार पीतरको जार घोषित कर दिया । महलके सामने जमा हुई भीड़ने बड़ी हर्ष-ध्वनिसे इसका स्वागत किया, लेकिन मीलोस्लाव्स्की कुल इसे माननेके लिये तैयार नहीं हुआ । उन्होंने स्ट्रेल्त्सी (सैनिकों)को भडकाया, जिनको कि काफी समयसे वेतन नहीं मिला था । ५ मई १६८२ ई० को स्ट्रेल्त्सी बहुतसी तोपे अपने अधिकारमें कर झड़ा लिये नगाड़ा बजाते क्रैमलिनके भीतर घुस गये । लोगोंने हल्ला उड़ाया, कि नारुशिकनोने इवानको मार डाला, इसपर पीतरकी मा नतालियाने दोनों भाइयों—इवान और पीतरको लाकर खिडकीपर खड़ा किया । लेकिन स्ट्रेल्त्सियोंका क्रोध शांत नहीं हुआ । वह महलके भीतर घुस गये, और सबसे पहले जिस आदमीको उन्होंने खतम किया, वह था नारुशिकनोका मुखिया राजुल दोल्गोरुकी । शामतक बायरोको पकड़-पकड़कर वह मारते रहे । वह बायरोको घसीटते हुये सैनिक मजाक उड़ाते थे—“यह बायर लरमोदानोव्स्की है, दूमाके सदस्यके लिये रास्ता दीजिये ।” मारे गये आदमियोंमें बायर अर्तमान मत्वयेफ और जारानीके दो बड़े भाई भी थे । अन्तमें जारानीने स्ट्रेल्त्सियोंके पैंतीस वर्षके बाकी वेतनको देनेका वचन दिया और उनके आग्रहपर इवान और पीतर दोनोंको संयुक्त जार घोषित किया गया—इवानको प्रथम जार माना गया । उनकी नावालिंगीके समय राजभगिनी सोफिया सरक्षिका घोषित की गई ।

सोफियाका शासन—सोफियाका सबसे घनिष्ठ मित्र “प्रथम मंत्री” राजुल वासिली गोलिस्तिन उस कालके सबसे सुशिक्षित बायरोमें से था । वह चाहता था, कि देशमें नये सुधार किये जाय । लेकिन, अभी रूसको पोलैंडसे निवटना था । इसी समय तुर्कीके साथ पोलदका वैमनस्य बढ़ा, जिससे उसे रूसके साथ समझौता करनेके लिये मजबूर होना पड़ा । तुर्कीके विरुद्ध पोलद और वेनिस (इटाली) को मदद देनेके लिये आस्ट्रियाने सवि की थी । तुर्कीके साथ युद्ध छिड़ा हुआ था । मित्र-शक्तियोंने बीनामें तुर्कीकी सेनाको हराया, और सुल्तानको आस्ट्रियन राजधानीका मुहा-

सिरा उठाना पड़ा। अभी भी तुर्कीको पूरी तरह दबाया नहीं जा सका था, इसलिये मित्र-शक्तियोंको रूसकी सहायताकी अवश्यकता पड़ी। इस प्रकार १६८६ ई० में पोल-राजाने मास्को अपना दूतमंडल भेजा, और कुछ समयकी बातचीतके बाद दोनों देशोंमें “सनातन” संधि हो गई। पोलदने कियेफ और उसके पासके थोड़ेसे इलाकेको रूसको देना स्वीकार किया और रूसने तुर्की मुल्तानके सामन्त क्रिमियाके खानमें तुरत लड़ाई छेड़नेका वचन दिया। १६८७ ई० में राजुल वासिली गोलित्सिनके अधीन पहली रूसी सेनाने क्रिमियापर आक्रमण किया, लेकिन उसे पूर्णतया असफल होकर लौटना पड़ा। फिर १६८९ ई० के वसंतमें और भी बड़ी सेनाके साथ गोलित्सिन तातारोंके किले पेरकोफ पर पहुंचा, जिसे तातारोंने क्रिमियाके स्थलडमटमव्यके सबसे सकरे स्थानपर बनाया था। गोलित्सिन इस किलेको नहीं ले सका, और फिर उसे लौटना पड़ा। इतना धन और प्राण गवाकर असफल होनेका परिणाम मोफियाकी सरकारके लिये अच्छा नहीं हुआ। लोगोंने खुलकर असंतोष प्रकट करना शुरु किया।

#### ४ इवान VI, अलेक्सी-पुत्र (१६८२-९६ ई०)

यद्यपि इवान और पीतर दोनों सयुक्त जार घोषित हुये थे, लेकिन सरक्षिका सोफिया इवानकी सहोदरा थी, इसलिये एक तरहमें शक्ति उसके हाथमें होनेसे पीतर उपेक्षितमा था। अपनी माके साथ उपनगरमें पीतरका समय अधिकतर प्रेयोब्रजेन्स्कोयके महलमें बीतता था। वहां जगलोंमें वह अपने लगेटिया यारोंके साथ मिपाहियोंका खेल खेला करता। वह मिट्टीके छोटे-छोटे किले बनाते, फिर उसपर आक्रमण करनेका दाव-पेच लगाते। कुछ सालों बाद पीतरने अपने साथियोंकी दो नकली पलटनें बनाई, जिनमेंसे एकका नाम उसने प्रेयोब्रजेन्स्की रक्खा और दूसरेका नाम मेमखोनोव्स्की—ये दोनों गांव पाम-पासमें थे। एक बार अपने दादाकी चीजोंमें पीतरको एक पालवाली विदेशी नाव मिली। पीतरने अब उसे लेकर नौचालनका खेल शुरू कर दिया। मास्कोके एक विदेशी निवासी ब्राटने उसे नौ-मचालनकी शिक्षा दी। ब्राट पहले नौसेनामें रह चुका था। मास्कोके पास वहनेवाली नदी यउजा (यौजा) छोटी थी, इसलिये पीतर अपनी नावको लेकर इज्माइलोवोके तालावमें पहुंचा। लेकिन वह भी नावके मोड़ने-माड़नेके लिये पर्याप्त नहीं था, इसलिये पीतर अब माकी आज्ञा लेकर पेरेया-स्लाव्लके बड़े सरोवरमें गया। उसकी बहिन मोफिया पीतरके इन सैनिक खेलोंमें लगे रहनेको पहले पसंद करती थी, क्योंकि इस प्रकार वह दरबारके पड़्यत्रोंकी ओर ध्यान नहीं दे सकता था, लेकिन आयुके बढ़नेके साथ-साथ पीतरके नकली सैनिक अमली होते जा रहे थे। पीतर सत्रह वर्षका हो गया था। उसके लड़कपनके खेलकी दोनों पलटने अब यूरोपीय ढंगपर शिक्षित मास्कोकी पलटन बन गई थी। मोफियाको जब खतरेका पता लगा, तो उसने रास्तेके इस काटेको अलग करना चाहा। उसने अपनेको कागज-पत्रोंमें “परमशामक” लिखना शुरू किया। वह स्ट्रेलित्सियोंको अपनी ओर मिलानेके लिये उनको भोज-भाज देने लगी। पीतर और सोफियाके सबंध बिगड़ते गये। अन्तमें अगस्त १६८९ ई० की एक रातको पीतरको खबर लगी, कि मोफिया आक्रमण करनेके लिये स्ट्रेलित्सियोंको तैयार कर रही है। पीतर नुरन्त घोड़ेपर सवार हो त्रोंयत्स्क-सेर्गियेफके दुर्गबद्ध मठमें पहुंचा। वहीपर उसकी “नकली” पलटन जमा हो गई और एक स्ट्रेलित्सियोंकी पलटनके साथ कितने ही अमीर और कुछ बायर भी आ मिले। स्ट्रेलित्सियोंके भड़कानेका मोफियाका सारा प्रयत्न विफल हुआ। पीतरके समर्थकोंकी मख्या दिनपर दिन बढ़ती गई, और महीने बाद शक्ति पीतरके हाथमें आ गई। सोफियाको मठमें बाधुनी बनके रहनेके लिये मजबूर होना पड़ा, और उसके सहायक राजुल वासिली गोलित्सिनको उत्तरमें निर्वासित कर दिया गया।

#### ५ पीतर I, अलेक्सी-पुत्र (१६९६-१७२५ ई०)

औरंगजेबके शासनके अन्तके साथ हम भारतके इतिहासको आधुनिक इतिहासके रूपमें बदलते नहीं देखते, लेकिन पीतरके शासनके साथ रूस आधुनिक जगत्में प्रवेश करता है। जैसा कि पहले कहा गया, १६८२ ई० में अपने भाई इवानके साथ पीतर भी सयुक्त जार घोषित हुआ। असली राजशक्ति



को हाथमे लेनेमे वह १६८९ ई० मे सफल हों गया था, तो भी अभी उसका भाई इवान १६९६ ई० तक जारके तौरपर मौजूद रहा। पीतरकी मा ऐसे परिवारकी कन्या थी, जिसमे पश्चिमी युरोपके फैशन बहुत कुछ स्वीकृत किये जा चुके थे। मास्कोमे कितने ही पश्चिमी युरोपके व्यापारी, विद्वान् और शिल्पी रहते थे, जिनके मुहल्लोमे भी पीतर जाया करता था। पश्चिमी युरोपमे उस समय ज्ञान-विज्ञानकी रोगनी फैलने लगी थी, आधुनिक युद्धकला तथा सामरिक यंत्रोका विकास हो रहा था। पीतर जैसे प्रतिभाशाली तरुणको साफ मालूम होने लगा, कि रूसको महान् बनानेके लिये हमे पश्चिमी युरोपसे बहुतसी बातें सीखनी होगी। उनके सीखनेके लिये सिर्फ वादशाही हुक्मसे काम लेना बेकार समझ, वह स्वयं आस्तीन समेटकर सीखनेके लिये दिलोजानसे कूद पड़ा। पीतरके शासनके प्रथम अठारह वर्ष औरगजेवके अन्तिम वर्ष थे। यह भी उल्लेखनीय बात है, कि पीतरका दूत भारत आकर औरगजेवसे सूरतमे मिला था। पीतर रूसको जहा एक सुसंगठित शक्तिशाली राष्ट्रके रूप मे बड़े तेजीसे परिणत कर रहा था, वहा हिन्दुस्तानी औरगजेवका काम उससे बिल्कुल उलटा था। पीतर ज्ञान-विज्ञान और सहिष्णुता द्वारा रूसका एकीकरण कर रहा था, और औरगजेव धर्मान्धता द्वारा मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करनेके प्रयत्नमे राष्ट्रको छिन्न-भिन्न कर रहा था। औरगजेवकी अदूरदर्शिताका फल भारतने १७०७ से १९४७ ई० तक भोगा। यही समय है, जब कि पीतरकी जमाई नीवपर रूस दुनियाका अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्र बन गया। यह आश्चर्य करनेकी बात नहीं है, यदि बोल्शेविक पीतरकी प्रशंसा करते नहीं थकते। वस्तुतः वह रूसके सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र-निर्माताओमे से था।

वहिन सोफियाके शासनके खन्म होनेके बाद पीतरकी मा नतालिया अभिभाविका बनी। पीतरने माके काममे दखल देना पसंद नहीं किया। वह अपने सैनिक खेलको और गम्भीरताके साथ खेलता रहा। अपने सहायकोकी मददसे एक युद्धपोत बनाकर उसने पेरेयास्लाव्ल सरोवरमे उतारा। थोड़े ही दिनों बाद वह उसे लेकर ध्रुवक्षीय अर्खगल्स्कमे गया, जहापर पश्चिमी युरोपके बड़े-बड़े जहाज आया करते थे। यहा पहलेपहल उसने उन जहाजोको देखा, जो कि महासमुद्रोको चीरते दुनियाके दूर-दूरके देशोम जाया करते थे। उसका जिज्ञासु हृदय उन्हें देखकर न जाने किन-किन कल्पनाओमे लीन हो गया। वहीपर एक पुराने रकाट जेनरल पेट्रिक गोर्डनसे उसने परिचय प्राप्त किया। गोर्डनने उसे अपने सामुद्रिक युद्धोकी बातें सुनाई। डच टिमरमानसे वह यही गणित और तोप चलानेका ज्ञान प्राप्त करने लगा। प्रतिभाशाली होनेके कारण थोड़े ही दिनोंमे वह अपने शिक्षककी भी गलतिया निकालने लगा। पीतरकी यह प्रथम तैयारी थी। वह क्रिमियासे गोलिर्सनकी असफलताओका बदला लेना चाहता था। रूसने आस्ट्रिया और पोलदके साथ हो तुर्कीसे लड़नेके लिये संधि की थी, किन्तु उसने अभी उसमे पूरा मनोयोग नहीं दिया था। अजोफके किलेके बारेमे क्रिमियाके खानसे बातचीत चली, लेकिन उसने उसे देनेसे साफ इन्कार कर दिया। अजोफ किलेमे इस समय तुर्कीकी सेना रहती थी। उसपर बिना अधिकार किये रूसी दोन द्वारा कालासागरमे नहीं पहुच सकते थे। पीतरने अब अपने खेलोको छोड़कर वास्तविक युद्धमे उतरनेका निश्चय किया। १६९५ ई० के वसंतमे तीस हजार सेना लेकर नावो द्वारा वह ओका नदीसे वोल्गा होकर जहा वोल्गा और दोन एक दूसरेके बहुत नजदीक होती हैं, (जहा पर १९५२ ई० मे वोल्गो-दोन नहर जारी की गई है) वहा नावोको कघोपर उठाकर दोन नदीमे पहुचाया गया। इसी समय पीतरने अपने एक पत्रमे लिखा था—“कोजुकोफमे हमे बड़ा आनन्द आया था (यही मास्कोके उपनगरमे पीतरने सैनिक प्रदर्शन किये थे), और अब हम खेलके लिये अजोफ जा रहे हैं।” अभी पीतरके पास युद्धपोत नहीं थे इसलिये वह समुद्रकी ओरसे किलेको नहीं घेर सकता था। तुर्की सेनाको कुमक मिलनेमे कोई दिक्कत नहीं थी। उन्होंने शरद् आरम्भ होते-होते रूसियोपर इतने जोरका प्रहार किया, कि उन्हें अजोफका मुहासिरा उठा लेना पड़ा।

इस हारने पीतरके लिये बड़ी शिक्षाका काम दिया। उसने अनुभव किया, कि बिना नौसेना के काम नहीं चल सकता, इसलिये सारे जाडोमे वह सैनिक पोतोंके निर्माण करनेमे दिलोजानमे पिल पड़ा। वोरोनेज नदीके किनारे दोनके सगमसे नातिदूर बज, देवदारके जगलोके नजदीक रहनेसे वही पोतोंका निर्माण किया जाने लगा। इस काममे पीतर स्वयं अपने हाथसे आरेखीचने और वसूला चलानेमे

भी पीछे नहीं रहता था। जारकी इतनी तत्परता देखकर दूसरोमे क्यों न उत्साह होता ? जाटा खतम हो १६९६ ई० का वसंत आया। इसी समय अजोफके पास रूसियोका एक बहुत बड़ा जहाजी वेडा देखकर तुर्कोंको बहुत आश्चर्य और उससे भी अधिक परेशानी हुई। यह कहने की अवश्यकता नहीं, कि अभी वाप्प-इजनोंका युग नहीं था। तुर्की सैनिक वेडेमे लड़नेकी हिम्मत नहीं थी। पीतरने जल और स्थल दोनों मार्गोंमे अजोफके किलेको घेर लिया। कान्स्तान्तिनोपोलमे कोई मदद नहीं मिली, इसलिए ग्रीष्म के अन्ततक तुर्कोंने आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन पीतर जानता था, कि अजोफ ले लेनेसे ही काम नहीं चलेगा। कालामागरके तटपर तुर्कोंके और भी कितने ही सैनिक अड़े थे। अभी तक अधिकचरा ज्ञान रखनेवाले युरोपीय लोगोमे पीतरने पश्चिमी युरोपकी बातें सीखी थी, इसलिये वह स्वयं वहा जाकर सीखनेके लिये तैयार हो गया।

मा राजकाज सभाले हुई थी, इसलिये देशमे पीतरकी उतनी अवश्यकता नहीं थी। मुस्लिम तुर्कोंके विरुद्ध पश्चिमी युरोपके राज्योंसे घनिष्ठ सवध स्थापित करनेके उद्देश्यमे मास्कोने एक महादूत-मंडल भेजा, जिसमे भेस बदलकर पीतर स्वयं शामिल हो गया। वह वहामे अपने साथ विशेषज्ञो, इंजीनियरो, तोपचियो आदिको लाना चाहता था। १६९७ ई० मे दूतमंडल मास्कोमे चला था, जिसके साथ पीतर मिखाइलोफके नाममे एक साधारण जहाजी भी था। उसकी मशा युरोपकी सभी बातोंको गभीरतासे सीखनेकी थी। पीतरने पीछे अपनी मुहरमे खुदवा रक्खा था—“मे गुरुओंकी खोजमे रहने वाला विद्यार्थी हूँ।” औरगजेव और पीतरके अन्तरको यहा हम साफ देख सकते हैं। दूतमंडलके पहले ही पीतरने कोइनिग्सवर्ग नगरमे पहुंच तोप चलानेकी कला सीखी। वहासे फिर वह हालैंण्डके सारडम नगरमे पहुंचा, जो कि अपने पोत-निर्माणके कामके लिये बहुत प्रसिद्ध था। पीतर एक साधारण लोहारके घरमे बसकर मामूली बढईकी तरह जहाजी कारखानेमे काम करने लगा, लेकिन वह अधिक दिनोतक अपनेको छिपा नहीं सका। बहुतसे डच-व्यापारी रुम गये हुये थे, उनकी आखे साढे छ फुटके तगडे जवानको देखकर कैसे चूक सकती थी ? लोगोसे बचनेके लिये पीतर वहामे आम्स्टर्डम चला गया, और वहा एक सवमे बडे जहाजी कारखानेमे काम करने लगा। यह एक-दो दिनके दिखावेका काम नहीं था। पीतर चार महीनेतक आम्स्टर्डममे काम करता रहा, तबतक जबतक कि जिस जहाज के निर्माणमे वह स्वयं भी काम कर रहा था, वह पानी मे नहीं उतार दिया गया। जहाजमे काम करनेके समयके बाद वह दूसरे कारखानो, मिस्त्रीखानो और म्युजियमोमे जाता, डच वैज्ञानिको और कलाकारो के साथ बातचीत करता। हालैंण्डमे पीतर इगलैंड गया। वहा उसने वहाकी शासन-व्यवस्थाका अव्ययन किया। वह एक बार पालर्यामेटके अधिवेशन को भी देखने गया। दो-महीनेतक टेम्सतटपर डेप्टफर्डके कारखानेमे पोत-निर्माणकी कलाको व्यवहारिक तौरसे सीखता रहा।

समकालीन भारतमे क्या हम किसी ऐसे मुगल युवराज या शाहजादेको देख सकते थे ? पीतर अपने और अपने देशके बारेमें ‘होनहार विरवानके होत चीकने पात’ की कहावतको सिद्ध कर रहा था।

इगलैंडमे पीतर आस्ट्रियाके सम्राटके साथ सैनिक सवधके बारेमे बातचीत करनेके लिये आस्ट्रिया गया। इस सारे पर्यटनसे महादूतमंडलको मालूम हो गया, कि तुर्कोंके विरुद्ध कोई बहुत बड़ा समझौता नहीं हो सकता। युरोपमे स्पेनके उत्तराधिकारको लेकर अलग ही विरोध शुरू हो गया था, जो कि अन्तमे तेरह साल (१७०१—१७१४ ई०) के युद्धके रूपमे परिणत हो गया। आस्ट्रियाके राजवंशका सारा ध्यान स्पेनकी ओर था। वह तुर्कोंके विरुद्ध रूसके साथ समझौता कैसे करता ? उल्टे उसने तुरत तुर्कोंके साथ सवध कर ली, जिसमे कि स्पेनकी ओर पूरा ध्यान दे सके। अपनी यात्रामे जहा पीतरने पश्चिमी देशोंकी नई-नई प्रगतिको देखा और उनसे कितनी ही बातें सीखी, वहा उसके दिलमें यह देखकर मुई चुभ रही थी, कि स्वीडनने अब भी वाल्तिक-तटमे रुमको बचित कर रक्खा है। समुद्रका रास्ता रूसके लिये कहींमे नहीं था। पीतरकी दूरदर्शी आखें देख रही थी, कि कोई भी राष्ट्र बिना समुद्रके सहारे—बिना समुद्रपर विजय किये—अपनेको सुरक्षित और शक्तिशाली नहीं बना सकता। युरोपीय शक्तियोंको तुर्कोंके विरुद्ध कुछ करनेके लिये नहीं तैयार देख, पीतरने पहले स्वीडनसे वाल्तिक-तटको छीननेका निश्चय किया। तुर्कोंकी अपेक्षा स्वीडन ही उस वक्त अधिक निर्वल शत्रु भी था। उमने झट तुर्की और क्रिमियाके खानमे सवध कर ली।

शायद पीतर अभी और कुछ समयतक विद्यार्थी बनकर पश्चिमी युरोपमें घूमता, लेकिन इसी समय स्त्रैल्लिसयो (गारद सैनिकों) के विद्रोहकी खबर मिली। स्त्रैल्लिसी मास्कोमें गारदका ही काम नहीं करते थे, बल्कि वह अपना अधिक समय छोटे-छोटे व्यापारों और दस्तकारीके कामोंमें भी लगाते थे। पीतरने राजधानीमें लौटकर उनसे माग की, कि तुम्हें अपना सारा समय सैनिक सेवामें देना होगा। इस विद्रोहसे फायदा उठानेके लिये राज्य-वचिता साधुनी सोफिया चुपके-चुपके स्त्रैल्लिसयोसे मिलकर पड़्यत्र करने लगी। १६९८ ई०के ग्रीष्ममें तोरोपेत नगरकी छावनीमें रहनेवाले स्त्रैल्लिसयो की चार पल्टने बलवा कर मास्कोकी ओर चल पड़ी, लेकिन पीतरके जेनरल गोर्डनने राजधानीके पास उन्हें आसानीसे हरा दिया। यह खबर पीतरको बीनामें मिली। सुनते ही वह बहुत जल्दी मास्कोके लिये चल पड़ा। रास्तेमें वह पोलदके राजा अगस्तससे मिला। दोनोंने मिलकर स्वीडनके विरुद्ध लड़नेका निश्चय किया। कहीं लोग राजधानीमें उसके स्वागतके लिये बड़ी तैयारी न कर दे, इसलिये वह एक दिन यकायक पहुंचकर महलमें भी न जा प्रेयोत्रजेस्कोय गावके अपने साधारणसे वगलेमें चला गया। खबर पाते ही दूसरे दिन सबेरे, बड़े-बड़े वायर, अमीर, व्यापारी और नागरिक स्वागत करने पहुंचे। पीतरने उनके साथ बड़े प्रेमसे मुलाकात की, लेकिन पुराने दस्तूरके मुताबिक उसने किसीको भी धरती पर मत्था टेककर प्रणाम करने नहीं दिया। इसी स्वागतके समय पीतरने कितने ही वायरोकी लम्बी दाढ़ियोंको कैची ले अपने हाथसे कतर दिया। पीछे उसने राजादेश निकालकर लम्बी दाढ़ी और ढीलमूढाल रूसी चोगा पहननेका निषेध कर दिया। स्त्रैल्लिसी-विद्रोहके बारेमें खोज करनेपर पता लगा, कि इसके पीछे सोफियाका हाथ है। जगह-जगहपर फासीकी टिकटिया खड़ी करके उसने स्त्रैल्लिसयोके १९५ मरगनोंको नवोदेविची भिक्षुणी मठके जगलोके सामने फासीपर लटकवा दिया—सोफिया इसी मठमें रहती थी। सब मिलाकर बारह सौ स्त्रैल्लिसयोको प्राणदंड दिया गया। पीतरने मास्कोस्थित उनकी पल्टनको तोड़ दिया, सोफियाको पड़्यत्र करनेके लिये इतना ही दंड दिया गया, कि अब वह साधुनियोंके घूँघटको पहिनकर एकान्तवास करनेके लिये मजबूर की गई।

अब पीतरकी तन्मयताके साथ स्वीडनसे निवटनेकी तैयारी करनी थी। किसानों, अर्धदासों तथा मुक्त आदिमियोंको भर्ती करके उसने एक नई सेना संगठित की। सैनिकोंकी वर्दी उसने पश्चिमी युरोपकी नकलपर बनवाई और सबेरेसे रात होनेतक मास्कोके उपनगरमें यह नये रगरूट कवायद-परेडमें लगे रहते। तीन महीनेके भीतर बत्तीस हजार सेनाको शिक्षा दी गई—इसी बीच कान्स्तान्तिनोपोलमें दूत भेजकर पीतरने अगस्त १७०० ई० में तुर्कीके साथ संधि की थी। इस संधिके अनुसार तुर्कीने अजोफपर रूसका अधिकार कबूल कर लिया। इसके बाद तुरत पीतरने अपनी सेनाको स्वीडन-अधिकृत नारवाके किलेपर प्रहार करनेका हुक्म दे दिया। बाल्तिक समुद्रमें पहुंचने के लिये नारवाका लेना आवश्यक था। पीतरका मुकाबिला एक नई सेनासे था। उसे रसद और हथियारोंके प्रवधमें कितने ही दोषोंका पता लगा। सिपाहियोंको पेटभर खाना नहीं मिलता था, खाइयोंमें सर्दीसे तकलीफ, इसलिये बीमारी फैली। खबर पाते ही स्वीडनके राजा चार्ल्सने सहायताके लिये प्रयाण किया। अन्तमें रूसियोंकी हार हुई, उनके बहुत-से सैनिक तथा सारा तोपखाना स्वीडनके हाथमें पड़ गया। लेकिन, पीतरके लिये हरएक असफलता नई तैयारीका अवसर देती थी। उसने सारी शक्ति लगाकर बड़ी तेजीसे सेनाको फिरसे संगठित करना शुरू किया। तोपोंके ढालनेके लिये उसने गिर्जोंके बहुतसे विशाल घंटोंको गला डाला और एक सालके भीतरही तीन सौ तोपें तथा नारवामें गवाई सेनासे भी दुगुनी सेना तैयार कर ली। पहले वायरोको जन्मत जेनरल वननेका अधिकार था, लेकिन अब पीतर ने उनके लिये भी वाकायदा शिक्षा लेनेका नियम बना दिया। १७२१ ई० में—औरगजेवकी मृत्युके छ साल पहले—रूसी सेना फिर लडाईके लिये तैयार थी। शेरमेतोफके नेतृत्वमें एक रूसी सेनाने स्वीडोको दो बार हराकर बाल्तिक-तटके लिफलदिया प्रदेशपर अधिकार कर लिया। १७०३ ई०में रूसी सेनाने मरियतबुर्गको सर किया, अगले साल दोरूपत और नारवा उनके हाथमें थे। इस समय पीतर नेवा नदीके वाम तटपर इग्रियामें लडाईका संचालन कर रहा था। १७०२ ई०की शरदमें नेवा नदीके उद्गम लदोगा-सरोवरके तटपर अवस्थित स्वीडोके अधिकृत नोटबोर्गपर अधिकार कर

लिया। पीतरने इस किलेका नाम बदलकर श्लुमेलबुर्ग (कुजीनगर) रखवा, क्योंकि यह नेवा नदी होकर फिनलन्डकी खाड़ीमें पहुचनेकी कुजी थी। १७०३ ई०के वसंतमें आगे बढ़कर समुद्र-सगमसे नाति-दूर नेवाके बायें किनारेपर अवस्थित स्वीड किले नेन्स्कान्सपर अधिकार कर इसी जगहपर पीतर और पाल किलेकी नींव रखी और कुछ लकड़ीके मकान बनवाये—यहीसे पीतरबुर्ग (आधुनिक लेनिन-ग्राद) आरम्भ हुआ, जो बोल्शेविक क्रांतिके समयतक रूसकी राजधानी रहा। पीतरका एक बहुत बड़ा सकल्प पूरा हुआ—रूसकी सीमा समुद्र-वेलातक पहुच गई।

लेकिन, लडाईका मतलब केवल प्राणोंकी ही क्षति नहीं, बल्कि अपार धनकी भी क्षति है, जिसके लिये किसानोंका सबसे अधिक दोहन होना था। पीतरने नगरोंमें दाढ़ी रखना निषिद्ध कर दिया था, लेकिन जो दाढ़ी-कर देनेको तैयार थे, वह उसे रख सकते थे—इस करकी रसीदके तौरपर एक तावेका सिक्का मिलता था। ग्रामीणोंको दाढ़ी रखनेकी स्वतन्त्रता थी, लेकिन नगरमें आनेपर उन्हें भी दाढ़ी-कर चुकाना पड़ता। दाढ़ीको उस वक्त धर्मके साथ संबंधित समझा जाता था, इसलिये पीतर के इस कामसे लोगोंके नाराज होनेका मौका था, लेकिन वस्तुतः सबसे अधिक असंतोष था आर्थिक कठिनाइयोंके कारण। जगह-जगह छोटे-मोटे विद्रोह हुये। एक बड़ा विद्रोह ३० जुलाई १७०५ ई० को अस्त्राखानमें हुआ, जिसमें बोयबोद और कितने ही राजकर्मचारी मार डाले गये। फील्ड मार्शल शेरमेतोफके नेतृत्वमें पीतरकी सुशिक्षित सेना जब गई, तो विद्रोहियोंको क्या आशा हो सकती थी? मार्च १७०६ ई०में तोपोकी मारके सामने अस्त्राखानको आत्म-समर्पण करना पड़ा, जिसपर आठ महीनेतक विद्रोहियोंने अपना शासन स्थापित कर लिया था। अस्त्राखानके विद्रोहके समाप्त होने के तुरन्त ही बाद दोनमें एक विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इससे तीन वर्ष पहले १७०४ ई० में वागकिरोने भी विद्रोह किया था, जिसमें विद्रोहियोंके नेताओंने त्रिमियाके खान या तुर्कीकी खलीफाके अधीन अपना स्वतन्त्र राज्य कायम रखनेका इरादा किया था। पीतरने १७११ ई० तक अपनी शक्तिशाली मेनाके बलपर सभी जगह विद्रोहोंको दबा दिया।

स्वीडनके साथ अभी अन्तिम निर्णय नहीं हो पाया था। उक्रइनका हेतमन (राजप्रमुख) इवान माजेपा पीतरसे असंतुष्ट हो स्वीडनके राजा चार्ल्ससे साठ-गाठ कर रहा था, इसलिये भी स्वीडन की हिम्मत बढ़ी थी। माजेपाने रूसके खिलाफ भड़काकर अपने लोगोंको विद्रोह करनेके लिये तैयार करना चाहा, लेकिन वह उसमें सफल नहीं हुआ। चार्ल्स अप्रैल १७०९ ई०में सेना लेकर आया और उसने पोलतावाके किलेको घेर लिया। पोलतावाले लेनेपर स्वीडनके लिये मास्कोका रास्ता खुल जाता। पीतरको तुर्कीसे भी डर था, तो भी वह अपनी प्रधान-सेना लेकर पोलतावाकी ओर दौड़ा। २७ जून १७०९ ई० को पोलतावाके पास वोर्स्कला नदीके किनारे वह निर्णायक युद्ध हुआ, जिसने रूस के इतिहासको आगे बढ़ानेमें भारी सहायता की। युद्धके दिनसे पहलेवाली शामको पीतरने रूसी मेनाके लिये जो आदेश दिया था, उसके कुछ अंश निम्न प्रकार हैं—

“जवानो, वह घड़ी आ रही है, जो हमारे देशके भाग्यका फैसला करेगी, इसलिये यह मत सोचो, कि तुम पीतरके लिये लड़ रहे हो। तुम लड़ रहे हो उस राज्यके लिये, जो कि पीतरको सौंपा गया है, तुम लड़ रहे हो अपने परिवारके लिये, अपनी जन्मभूमिके लिये। अजेय कहे जानेवाले दुश्मन की प्रसिद्धिमें हिम्मत न हारो, क्योंकि यह प्रसिद्धि झूठी बात है। इस प्रसिद्धिको तुमने कई बार अपने विजयों द्वारा झूठा मिट्ट किया है। जहातक पीतरका सबध है, तुम यह गाठ बांध लो, कि उसे अपना प्राण प्रिय नहीं है।”

लडाई शुरू हुई। रूसियोंका प्रहार इतना जबरदस्त था, कि स्वीडोमें भगदड़ मच गई। वह भारी मख्यामें खेत आये। कुछ थोड़ी-सी सेना ले चार्ल्स और माजेपा तुर्कीकी ओर भागे, बाकी सेनाने आत्म-समर्पण किया, जिसकी मख्या बीस हजार थी। उस समय स्वीडनकी सेना युरोपमें सबसे अच्छी मानी जाती थी। पीतरने उसे हराकर सारे युरोपमें रूसकी धाक जमा दी।

उत्तरमें समुद्रके रास्ते भागना मभव न देखकर चार्ल्स तुर्कीकी ओर भागा था। उसने तुर्कोंको भड़काया, जिसपर तुर्कीने १७१० ई०में रूसके विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। पीतर तुरत चालीस हजार मेना ले दन्यूब (डुनाइ) नदीकी ओर चल पड़ा। करीब दो लाख तुर्क सेनाने आगे बढ़कर प्रुथ नदीके-

किनारे १७११ ई० में पीतर और उसकी सेनाको घेर लिया। रूसी सेनाकी भीतरी हालत बहुत बुरी थी, लेकिन तुर्की सेनापतिको इसका पता नहीं था, इसलिये उसने समझौतेकी बात स्वीकार की। पीतर बेवकूफीभरी वीरताका पक्षपाती नहीं था। उसने अजोफको तुर्कीके हाथमें दे अपनी सेनाको बचा लेनेमें सफलता पाई।

तुर्कीसे छुट्टी पाकर फिर उसने स्वीडनकी तरफ मुह फेरा और १७१४ ई० में अवकी उसने हंगो अन्तरीप (फिनलन्द) में स्वीडनकी नौसेनापर भारी विजय प्राप्त की। इस नौसैनिक पराजयके बाद स्वीडनने रूससे समझौतेकी बातचीत शुरू की, लेकिन पीछे उसे तोड़ दिया, जिसपर १७२० ई० में रूसको दूसरी नौसैनिक विजय प्राप्त करनी पड़ी। अब वाल्टिक-तट फिर रूसका हो गया। यही नहीं, कुछ ही वर्षोंके भीतर रूसकी नौसैनिक-शक्ति भी बहुत बढ़ गई। अन्तमें १७२१ ई० में सधि करके स्वीडनने फिनलन्द-खाड़ीका तट और रीगा-खाड़ीकी तटभूमि, करेलियाका कुछ भाग—जिसमें विपुरी भी था—और दूसरे प्रदेश रूसको दे दिये।

**पूर्वमें प्रसार**—यद्यपि पीतरको स्वीडनके साथ बहुत सालोतक फसा रहना पड़ा, लेकिन उसका ध्यान अपने पूर्वी सीमातसे कभी नहीं हटा। इसके शासनमें १७१५ ई० और १७२० ई० के बीच सारी ऊपरी इतिश-उपत्यका रूसके हाथमें चली गई। इसी नदीके तटपर ओम्स्क और सेमीप्लातिन्स्क जैसे कितने ही किले बनाये गये। ऊपरी इतिशसे बुखारा और खीवाका वणिक्पथ जाता था। मध्य-एसियाकी ओर भी अपनी विजय-यात्राको बढ़ानेके लिये पीतरने कास्पियन समुद्रको इस्तेमाल किया। १७१६ ई० में राजुल बेकोविच-चेरकास्कीके नेतृत्वमें एक छोटी-सी सैनिक टुकड़ी ने खीवाके खानको गद्दीपर बैठानेके लिये मुवारकवादी देनेके वहाने पहुंचना चाहा, लेकिन रेगिस्तानमें उसे घेरकर नष्टप्राय कर दिया गया, और इस प्रकार पीतर कास्पियन-तटसे आगे अपनी बाह फलानेमें सफल नहीं हुआ। इधरसे असफल होकर १७२२ ई० में पीतरने काकेशसके विरुद्ध स्वयं एक अभियान का नेतृत्व किया। काकेशसके सामन्तो—विशेषकर गुर्जी, अर्मेनियाके छोटे-छोटे राजा, व्यापारी तथा ईसाई पादरी—मुस्लिम ईरान या तुर्कीकी जगह ईसाई रूसको अधिक पसंद करते थे। ईरानको काकेशसमें हार खानी पड़ी और उसने १७२३ ई० की सधिके अनुसार कास्पियनके अपने बहुत-से तटभागको रूसियोंको दे दिया, जिसमें पश्चिमी तटपर दरबंद, वाकू और पूर्वी तटपर अस्त्राबाद भी शामिल थे, लेकिन रूस इस भूमिको बहुत दिनोतक अपने हाथमें नहीं रख सका।

**शासन-सुधार**—पीतरके सैनिक सुधारों और उसके कारण मिली सफलताओंके बारेमें अभी हम देख चुके हैं। पीतरने व्यवस्थित सेनाको कायम किया, जिसमें वाकायदा रंगरूट भर्ती किये जाते, वर्दी और हथियार दे उनको खूब कवायद-परेड कराई जाती। पश्चिमी यूरोपमें तोपोंको खींचने के लिये घोड़ागाड़ियोंका इस्तेमाल जब हुआ था, उससे पचास वर्ष पहले ही पीतरका तोपखाना घोड़ों द्वारा खींचा जाता था। राजप्रबन्धमें भी पीतरने कई बड़े-बड़े परिवर्तन किये। १७०८ ई० में उसने राज्यको आठ गुबर्नियों (सरकारों) में बांट दिया, गुबर्नियाका शासक एक गवर्नर होता था, जो कि सीधे केन्द्रीय सरकारसे सवध रखता था। पहले गुबर्निया बड़ी-बड़ी बनाई गई, जिन्हें १७१९ ई० में बांटकर पचासी प्रदेशोंके रूपमें परिणत कर दिया गया। प्रदेशोंको फिर कितने ही जिलोंमें विभक्त किया गया। प्रदेशों और जिलोंके शासक गवर्नर (राज्यपाल) और वॉयवाद होते थे।

यह नहीं कहा जा सकता, कि पीतर नवीनताका अग्रभक्त था, लेकिन उसके कितने ही सुधारों से एक प्रभावशाली वर्ग असंतुष्ट जरूर था। पीतरकी पहली बीबी योदोकिया लोमुवनामे उसका एक पुत्र राजकुमार अलेक्सी हुआ था। रूढ़िवादियोंने अलेक्सीके ऊपर आगा लगा रखी थी, क्योंकि वह पादरियों और अपने ननिहालके लोगोंकी देखरेखमें पला था। अलेक्सी उतावला हो गया था, कि कब बाप मरे और गद्दी उसके हाथमें आये। पीतरने कई बार अपने बेटेको मावधान किया—“अपने देशके सम्मान और समृद्धिके बढ़ानेमें जो भी बात महायक हो, उसके साथ प्रेम करो। यदि मेरी सलाह नहीं मानोगे, तो मैं तुम्हें अपना माननेसे इकार कर दूंगा।” अलेक्सीने बापकी बात नहीं मानी, और विद्रोह करके आस्ट्रिया भाग गया। आस्ट्रिया भला पीतरका कोप-भाजन बननेके लिये उसके पुत्रको क्यों शरण देनेके लिए तैयार होता? पीतरने पुत्रको वहामे पकड़वा मगवाया, खाम अदालतमें अभि-

योग चलवाया। अदालतने अलेक्सीको मृत्युदंड दिया, लेकिन उससे पहले ही वह जेलमें मर गया। अलेक्सीकी मौतने रूढ़िवादियोंकी आशापर पानी फेर दिया।

**शिक्षा और सस्कृति**—पीतर शिक्षाके महत्त्वको अच्छी तरह समझता था। उस समयके भारतमें अभी प्रेसोकी छपाईका पता नहीं था, रूसमें भी अभी उनका प्रचार थोड़ा ही हुआ था। पहलेसे चले आते धार्मिक पुस्तकोंके स्लावानिक अक्षरोंके टाइप छापेकी दृष्टिसे कुछ दोषपूर्ण थे। पीतरने सुधार करके उनको वह रूप दिया, जो कि आज भी रूसीके लिये इस्तेमाल होता है। १७०८ ई०के बाद सिवा गिरजाकी प्रार्थना-पुस्तकोंके सभी पुस्तके अब नये टाइपमें छपने लगी। शिक्षा-प्रचारके लिये विदेशी पुस्तकोंका रूसीमें अनुवाद होने लगा। गणित, पोत-निर्माण, दुर्ग-निर्माण, वास्तु-विद्या, युद्ध-शास्त्र आदि विषयोंपर पश्चिमी यूरोपमें लिखे गये कितने ही अच्छे-अच्छे ग्रंथोंके रूसी अनुवाद छापे गये। रूसी इतिहासपर भी कितने ही ग्रंथ प्रकाशित हुये। पहला रूसी अखबार “वेदोमोस्ती” मास्कोमें औरगजेवके मरनेके चार वर्ष पहले (१७०३ ई०) छपना शुरू हुआ, जो पीछे पीतरवुर्ग राजधानीसे निकलने लगा। अभी तक रूसी पचागमें ईसाई पचागका अनुसरण करते हुये सन् सृष्टि-संवत्सरसे गिना जाता था, और नया वर्ष पहली सितम्बरको आरम्भ होता था। १ जनवरी १७०० ई० को यूरोपके कितने ही देशोंमें स्वीकृत जूलियस कैसर द्वारा स्थापित जूलियन पचागको पीतरने मान लिया। लेकिन जूलियन पचागमें भी अधिक शुद्ध ग्रेगरी पचाग यूरोपके कितने ही देशोंमें प्रचलित था, जिसे वोल्गेविक क्रान्तिके बाद ही रूसने अपनाया। पीतरके शासनकालमें मास्को और पीतरवुर्गमें कितनी ही शिक्षण-संस्थाएँ स्थापित हुईं। १७०२ ई०में विदेशी अभिनेताओंको निमंत्रित करके मास्कोमें नये ढंगसे रंगमंचकी भी स्थापना हुई, जिसमें “ओरेशोक विजय” के नाम का एक नाटक पीतरके विशेष आग्रहपर खेला गया था। सभी दिशाओंमें सामाजिक परिवर्तन इस समय बड़ी तेज गतिसे हुआ, लेकिन इसमें सन्देह नहीं, कि यह परिवर्तन उच्चवर्गके ही भीतर हुआ।

**पीतरवुर्ग निर्माण**—स्वीडनपर लड़ाईमें विजय प्राप्तकर नेवाके दाहिने तटपर पीतरने “पीतर और पाल” नामक किलेकी स्थापना की थी। उस समय यहाँ आसपासमें बहुत घना जंगल तथा जहाँ-तहाँ छोटे-छोटे गाँव थे। इसी जगह पीतरने अपने नामसे नगर बसाना शुरू किया। पीतरने पहले अपने लिये ही जयाची द्वीपपर एक लकड़ीकी छोटी-सी झोपड़ी बनवाई, जिसके बाद दूसरे बायरों और व्यापारियोंने पासमें घर बनाने शुरू किये।

पोल्तावाकी विजय (जून १७०९ ई०) के बाद पीतरने राजधानीको मास्कोसे पीतरवुर्ग लानेका निश्चय किया। हजारों किसान और शिल्पकार नगरके बनानेमें लगा दिये गये। दलदली जमीन भी बहुत थी, जिसके भीतर घुटनों तक डूबे काम करना पड़ता था। हजारों मजूर बीमारीसे मरे, उनका स्थान दूसरे हजारोंने लिया। पीतरवुर्गको मास्कोकी तरह नहीं बनाया जा रहा था। यहाँ पुरानेको बढाना नहीं, बल्कि सारे नगरको आरम्भसे ही नया बनाना था, इसलिये इसकी सड़कें सीधी बनीं। पहले हीसे योजना बनाकर नगर बनानेमें जो सुभीता होता है, वह पीतरवुर्गको प्राप्त हुआ। पीतरने पश्चिमी यूरोपकी राजधानियों और मकानोंको देखा था, इसलिये वह चाहता था, कि उसकी राजधानीमें ईंट और पत्थरके मकान बने, इसके लिये उसने दूसरे नगरोंमें ईंट-पत्थरके मकानोंका बनाना निषिद्ध करके वहाँसे राजों और मेमारोंको बुलवा लिया। नगरको सुंदर और कलापूर्ण बनानेके लिये उसने कितने ही विदेशी वास्तुशास्त्रियोंको भी बुलवाया। जैसे-जैसे पीतरवुर्गका प्रताप बढता गया, वैसे ही वैसे मास्कोकी अवस्था गिरती गई। बनी व्यापारी और बायर नई राजधानीमें चले गये, सरकारी दफ्तर भी मास्कोसे हट गये। पंद्रह-बीस वर्षोंके भीतर ही एक छोटे-से गाँवसे बढकर पीतरवुर्ग सत्तर हजार लोगोंका नगर बन गया।

**साइबेरिया**—पीतरसे पहले ही प्रशान्त-महासागरतक रूसकी सीमा जा लगी थी। युद्धके स्वर्चके लिये अपार धनकी अवश्यकता थी, जिसके लिये धनके सभी स्रोतोंके पता लगानेकी कोशिश की गई। इसी प्रयत्नमें नई भौगोलिक खोजों और नये प्रदेशोंपर अधिकार प्राप्त करनेका मौका मिला। १६९७-९८ ई०में एक स्क्वेट्सी अफसर व्लादिमिर अत्लसोफके नेतृत्वमें एक छोटी टुकड़ी अनादिर नदीके तटपर अवस्थित अनादिरकी चाँकीसे वारहसिंघोसे खीची जानेवाली वेपहियेकी गाड़ी

द्वारा कमचत्काके किनारे पहुँची, और उसने वहाँके लोगोसे मुख्यतः समूरके रूपमें कर उगाहना शुरू किया। अतलसोफ पहला आदमी था, जिसने कमचत्का प्रायद्वीपका पता लगाकर उसके बारेमें लिखा। कमचत्का-निवासी (कमचादल) अभी जनयुगमें रहते थे। वह कबीलेगाही समाजसे ऊपर नहीं उठे थे। उनके एक-एक जन (कबीले) में कुछ सौ तम्बू होते थे। मछुवाही उनकी जीविका थी। जनोमें आपसमें बराबर लड़ाई होती रहती थी। उनके हथियार थे—धनुष-बाण। वह बाणोंके फल चकमक-पत्थर या हड्डीसे बनाते थे। अतलसोफने कमचादलोके बीचमें शासन दृढ करनेके लिये एक रूसी छावनी स्थापित की, जहापर कसाक और सैनिक रहा करते, जिनका काम जारके शासनको मजबूत रखनेके साथ लूटपाटकर अपने लिये धन बटोरना भी था। १७३१-३२ ई०में कमचादलोने कई विद्रोह किये। इनके नेता वही थे, जो कि रूसमें रहकर बारूदी हथियारोंका इस्तेमाल जान गये थे, लेकिन रूसियोने उन्हें आसानीसे दबा दिया। फिर धीरे-धीरे उनकी जन-व्यवस्था टूटने लगी।

**चीनके साथ सबध—**नेचिन्स्क की संधिके (सितम्बर १६८९ ई०) साथ चीनका रूसमें दौत्य-सबध स्थापित हुआ। उस संधिको प्रमाणबद्ध करने तथा व्यापारिक सबध सुधारनेके लिये मास्कोने १६९२ ई०में अपने एक जर्मन सेवक येवर्ट यमम्राट इङ्सको भेजा। वह अठारह महीनेमें चीचीहार नगरमें पहुँचा। चीनी सीमातपर पहुँचनेपर एक चीनी मदारिन (अफसर) आठ रक्षक सैनिकों तथा तीन लोहेकी तोपोंके साथ स्वागतके लिये आया। चीनी मदारिनने इङ्सकी खूब पुरतकल्लुफ दावत की, फिर उसने भी मदारिनको युरोपीय ढंगसे दावत दी। राजधानीमें भी उसका उसी तरह स्वागत किया गया। तीन दिनोतक उसकी जियाफत होती रही। इङ्सने इसके बारेमें लिखा है—“मेरे लिये जो मेज रखी गई थी, वह प्रायः वर्गाकार थी, जिसके ऊपर एकके ऊपर एक सत्तर तश्तरिया रखी गई थी, जो सभी चादीकी थी।” घोड़ीके दूधकी बनी शराब (कूमिस) को सोनेके प्यालेमें रखकर दिया गया। अन्तमें १२ नवम्बर १६९२ ई०में उसे दरबारमें सम्राट् खाड्-सीके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने सम्राट्के सामने अपना राजकीय प्रमाणपत्र पेश किया। शायद उसे साष्टांग दंडवत् (कौतू) करनी पड़ी, जिसके बारेमें एक अग्रेजने लिखा है—“राजदूत अपने आसनपर ले जाये गये, इसी समय जब सम्राट् अपने सिंहासनसे उतर रहा था, यकायक चीनियोने अपने घुटनोंको मोड़ सिरको धरतीपर तीन बार टेका। हमें भी प्रतिहारोने वहाँ ले जाकर उसी तरह प्रणाम करने के लिये मजबूर किया।” इङ्सने १९ फरवरी १६९४ ई०में पेकिङ छोड़ा, जिसमें पहले फिर उसे सम्राट्से मिलनेका मौका मिला। सम्राट् खाड्-सीने १७१२-१७१६ ई०में तू-ली-शिन्को दूत बनाकर तर्गत कलमकोके खानके दरबारमें बोल्गा-तटपर भेजा। उस समय पीतर स्वीडनके साथ लड़ाईमें लगा हुआ था, इसलिये वह बोल्गाके तटपर आये चीनी दूतको बुलाकर नहीं मिल सका। इस चीनी दूतमंडलका यद्यपि बाहरी उद्देश्य था आयुका खानके स्वास्थ्यके बारेमें पुछार करना तथा आयुका-के भतीजे राजकुमार ओ-ला-यू-छू-योरको उसके पूर्व पदपर स्थापित करनेकी इच्छा प्रकट करना, लेकिन दूतको यह भी आज्ञा दी गई थी, कि वह मास्को राजधानीमें जाकर जारसे भी मिले। चीन लौटते समय जब तू-ली-शिन् रूसी सीमातपर पहुँचा, तो रूसी अफसरने उसे सैनिक सम्मानके साथ सेलिगिन्स्की शहरमें पहुँचा था, जहाँ बोयबोदने उससे बातचीत की। तोवोल्स्कमें आनेपर साइबेरियाके राज्यपाल राजुल गजारिन मिला, जिससे तू-ली-शिन्ने राजकाजके बारेमें बहुत देरतक बातचीत की। यहाँ पर तू-ली-शिन्को सूचित किया गया, कि जार अपनी सेनाके संचालन करनेमें लगा हुआ है, नहीं तो वह बड़ी प्रसन्नतासे चीनी राजदूतसे मिलता। आयुकासे मिलनेके बाद तू-ली-शिन्ने पेकिङमें लौट कर सम्राट्को एक रिपोर्ट दी, जिसमें लिखा था

“इस प्रकार उत्तर-पूर्वमें रूसी राज्य अल्पजन तथा वयावानीसा इलाका है, यद्यपि अत्यन्त प्राचीन कालसे आजतक हमारे चीन-साम्राज्यके साथ उसका सबध नहीं रहा, और हमारे इतिहास-लेखकोने भी रूसियोका उल्लेख नहीं किया और न आजतक कभी एक भी चीनी आदमी वहाँ पहुँचा, तो भी सभी दिशाओंकी तरह वहाँ भी हमारे देवोपम सम्राट्की महिमा और महान् गुण प्रभाव डाले बिना नहीं रहे। दुनियाके सभी दसो हजार राज्य सम्राट्की हितकारी सरकारके मरक्षणमें हैं।” रूस

केवल अब चीनके साथ खुला सवध स्थापित करने लगा है, लेकिन चालीस या पचास साल पहले भी, जब कि दोनों साम्राज्योंकी सीमाये निश्चित नहीं हुई थी, सूचनाओं द्वारा हमारे साम्राज्यके बहुतसे अच्छे गुण वहाँ ज्ञात थे ।”

पीतरके प्रथम दूतमंडलने यह भी तै किया, कि रूसी वणिक्-सार्थ थोड़े समयके बाद बराबर जाया करे । लेकिन रूसी जवरदस्त पियक्कड थे, जिसके कारण अक्सर झगड़े हो जाया करते था, जिससे सम्राट् साइ-मीने सवध-विच्छेद करनेकी धमकी दी । इसपर १७१९ ई०में पीतरने इस्माइलोफ्के नेतृत्वमें एक विशेष दूतमंडल भेजा । इस्माइलोफ्के साथ एक अंग्रेज जान वेल भी था, जिसने उसके बारेमें बहुत सी ज्ञातव्य बातें लिखी हैं । इस दूतमंडलको चीनी सीमातक पहुँचनेमें सोलह महीने लगे थे । सम्राट्के विशेष प्रतिनिधिने वहाँ उनका स्वागत किया । वेलने अपने विवरणमें लिखा है

“हमारे पथदर्शकने रोमोमें कुछ स्त्रियोंको चलते देखकर दूत (इस्माइलोफ्)से पूछा—यह कौन हैं और कहा जा रही हैं ? उसे बतलाया गया, कि वह हमारी मंडलीकी हैं, और हमारे साथ चीन जा रही हैं । इसपर चीनी प्रतिनिधिने कहा—पेकिङ्गमें पहले हीमें काफी औरते हैं । अबतक कोई भी युरोपीय स्त्री चीन नहीं आई, इसलिये सम्राट्की विशेष आज्ञाके बिना मैं उन्हें ले जानेकी जिम्मेदारी नहीं ले सकता । यदि आप जवाबकी प्रतीक्षा करें, तो इसके लिये हम एक सार्थ भेजनेके लिये तैयार हैं, लेकिन सदेगवाहक छ सप्ताहसे पहले नहीं लौट सकता । इसपर यही ठीक समझा गया, कि असवाब को ले आनेवाली गाड़ियोंके साथ स्त्रियोंको मेल्लिगिन्स्की लौटा दिया जाये ।”

जिम घरमें रूसी दूतमंडलको ठहराया गया था, उसको दस बजे रातको सम्राट्की अपनी मुहर लगाकर बंद कर दिया जाता था, जिममें कोई आदमी भीतर-बाहर आ-जा न सके । राजदूतके कहने पर यह नियंत्रण हटा दिया गया । इस्माइलोफ्ने पहले साष्टांग प्रणिपात करनेमें इन्कार कर दिया, लेकिन पीछे उसने इस शर्तपर कबूल किया, कि चीनी दूत भी रूसी दरबारमें वहाँकी प्रथाके अनुसार साष्टांग प्रणाम करेगा । वेलने रूसी दूतके दरबारमें जानेका वर्णन निम्न शब्दोंमें किया है

“हमें प्रायः पाव घटा प्रतीक्षा करनी पड़ी । पिछले दरवाजेसे सम्राट् शालमें प्रवेशकर मिहासनपर बैठा । इस समय सभी लोग खड़े हो गये । अब महाप्रतिहारने कुछ दूरपर खड़े राजदूतको शालके भीतर आनेके लिये कहा, और उसे एक हाथमें पकड़े तथा दूसरे हाथमें राजकीय प्रमाणपत्र थामे ले चला । सीढियोंपर चढ़नेके बाद उसने पूर्वनिश्चयानुसार प्रमाणपत्रको वहाँ स्थित एक मेजपर रख दिया । सम्राट्ने राजदूतको पास आनेका निर्देश किया, और उसी वक्त प्रमाणपत्रको लिये अलौईके साथ वह मिहासनके पास गया । फिर घुटना टेकते हुये उसने पत्रको सम्राट्की ओर बढ़ाया, जिसने अपने हाथसे उसे छू दिया । फिर परमभट्टारक जारके स्वास्थ्यके बारेमें पूछकर राजदूतसे कहा—परमभट्टारक जारके लिये मेरे हृदयमें इतना मित्रतापूर्ण और प्रेमका भाव है, कि मैंने उनके पत्रको लेनेमें अपने साम्राज्य की प्रचलित प्रथाके पालन करनेका ख्याल नहीं किया ।

“थोड़े समयतक यह भेट होती रही । उस समय राजदूतके अनुचर शालके बाहर खड़े रहे । पत्रके देनेपर हमने भयंसा, कि अब काम खतम हो गया । फिर महाप्रतिहारने राजदूतको लौटाकर अनुचरको हुक्म दिया कि नी वार मत्था टेककर सम्राट्के प्रति सम्मान प्रदर्शित करें । महाप्रतिहारने खटा होकर तारतार (मगोल) भाषामें “मोरगू” और “वोस” में बोलते हुये आज्ञा दी । मोरगूका अर्थ है सिर झुकाना और वोसका खड़ा होना ।”

वेलके लिखनेमें मालूम होता है, कि रूसी दूतमंडलको यद्यपि बहुत-से दरबारी अपमानजनक शिष्टाचारोंको पालन करनेके लिये मजबूर होना पड़ा, लेकिन उनका सत्कार-सम्मान इतनी अच्छी तरहसे हुआ, कि वह सबको भूल गये । इस्माइलोफ्के विदा हो-जानेके बाद उसका सचिव देलाग रूसी-प्रतिनिधिके तौरपर पेकिङ्ग (पेचिङ्ग)में रह गया, लेकिन उसकी स्थिति एक नजरबन्द जैसी थी । जिस वक्त देलाग पेकिङ्गमें था, उसी समय मगोलोंके एक चीनाधीन कबीलेने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली, इसपर पेकिङ्गमें किसी भी रूसी कारवाका आना निषिद्ध कर दिया गया । देलागके साथ बमहा दुर्व्यवहार हुआ, जैसा कि उसने स्वयं लिखा है



“मुझे आदेश है, कि हमारे दोनो साम्राज्योंके बीचमे अधिक घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये पूरा प्रयत्न करू, लेकिन मैं उन्हें—प्रधान मंत्रीको—बतला देना चाहता हूँ, कि इस अवसरपर चीनी सचिवालयने (मेरे साथ) जो वर्ताव किया, उससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। (आपको) यह ख्याल दिलसे हटाना नहीं होगा। परमभट्टारक जारके स्वीडनके साथ हो रहे युद्धको सम्मानपूर्वक समाप्ति पर ही सब कुछ निर्भर करता। शायद जिस वक्त मैं यह बातें कर रहा था, उसी समय सचमुच शांति-संधि की जा रही थी। उसके बाद इसमें कोई बाधा नहीं हो सकती, कि मेरे स्वामी (जार) धीरज खोकर कहीं अपने हथियारोंको इस ओर न घुमा दे।”

लेकिन चीनी प्रधान-मंत्री ऐसी धमकियोंकी कोई पर्वाह नहीं करता था। अन्तमें देलागको चीन दरबारसे चले जानेकी छुट्टी मिली और सत्रह महीना रहनेके बाद एक कारवाके साथ वह चीनकी राजधानीसे रवाना हुआ। इस प्रकार पीतरके समय चीन-रूसका सबंध अच्छा नहीं रहा। पीतरके मरनेपर यद्यपि बाहरी शक्तियोंसे सघर्षने भयकर रूप धारण नहीं किया, लेकिन उसके बादके सैंतीस वर्षों (१७२५-६२ ई०) में चीन में छ प्रासादी क्रांतियां हुईं। पीतरके उत्तराधिकारियोंमें अन्ना इवान-पुत्री, और पीतर III अयोग्य और विलासी थे। उनके समयमें दरबारियोंके हाथमें राज-शक्ति चली गई थी। पीतर II और इवान VI गुड़िया जार थे। पीतर I ने १७२२ ई० में बनाये अपने विधानमें सम्राट्के हाथमें यह अधिकार दे दिया था, कि वह स्वयं अपने उत्तराधिकारीको चुन सकता है। लेकिन वह अन्त तक उत्तराधिकारीके बारेमें किसी निश्चयपर नहीं पहुंचा। वह मृत युव-राज अलेक्सीके पुत्रको उत्तराधिकासी नहीं बनाना चाहता था, अपनी रानी एकातेरिनाको भी राज देने में आनाकानी कर रहा था, और अपनी लड़कियों एलिजाबेथ या अन्नाके बारे भी उसने कोई निश्चय नहीं कर पाया था। लेकिन उसके मरनेके बाद दरबारियोंके एक प्रभावशाली समुदायने पीतरकी रानी एकातेरिनाको गद्दीपर बैठा दिया।

## ६. एकातेरिना I, पीतर-पत्नी (१७२५-२७)

अपने दो सालके शासनमें उसने किसी योग्यताका परिचय नहीं दिया। दरबारके एक प्रभाव-शाली सामन्त मेशिकोफने एकातेरिनाको पीतर I के पौत्र तथा अलेक्सीके पुत्र पीतर II को अपना उत्तराधिकारी बनानेके लिये तैयार किया। युवराजसे अपनी लड़कीका ब्याह करके वह अपने प्रभावको बढ़ाना चाहता था।

एकातेरिनाके समय १७२७ ई०में एक रूसी दूतमंडल सावा ब्लादिस्लाव-पुत्रकी अधीनतामें पेकिङ भेजा गया। इस दूतमंडलका काम अबतक गये सभी दूतमंडलोंसे बड़ा ही लाभदायक साबित हुआ। सावाने २७ अगस्त १७२७ ई०को जिस संधिपत्रको स्वीकृत करानेमें सफलता पाई, वह सवा शताब्दियों (जून १८५८ ई०) तक मान्य रहा। इतनी देरतक रहनेवाली संधियां बहुत कम ही देखी जाती हैं। इसी समय रूस और चीनके बीचकी सीमा रेखा पूर्वमें क्यास्तासे ऐंगून नदीके मुहानेतक और पश्चिममें क्यास्तासे सुइयान-पर्वतमालाके एक डांडे श्विनादाबेगतक निर्धारित की गई। यह भी स्वीकार किया गया, कि हर तीसरे वर्ष रूसी कारवा पेचिङ आ सकते हैं, तथा यह भी कि पेचिङमें एक स्थायी रूसी दूतावास स्थापित किया जायगा, और रूसी अपने धर्मके अनुसार पूजा-पाठ कर सकेंगे। राजदूतके निवासमें रूसी और लातीनी भाषाओंके जाननेवाले चार तरुण विद्यार्थी रह सकेंगे, जिनका खर्च चीन बर्दाश्त करेगा, और शिक्षा समाप्त करनेके बाद वह लौटनेके लिये स्वतन्त्र रहेंगे। इस दूत-मिशनके ऊपर चीन सरकारको प्रतिवर्ष हजार चादीके रूबल और दस मन चावल खर्च करैना पड़ता था। रूसी सरकार उसपर सोलह हजार चादीके रूबल खर्च करती थी, जिसमेंसे एक हजार रूबल अलबाजीन कसाकोकी पेचिङमें रहती तरुण मतानोंकी शिक्षापर खर्च होता था। यद्यपि इस संधिके अनुसार रूसी हर साल अपने कारवाको भेज सकते थे, लेकिन वस्तुतः १७२७ ई० और १७६२ ई०के बीचमें केवल छ कारवा गये। व्यापारके लिये कई तरहके निर्वंध थे, जिनके कारण निराबाध व्यापार नहीं हो पाता था। बिना एक साल क्यास्तामें रहे कोई चीनी व्यापारी बड़ा

रूसियोंके साथ व्यापार नहीं कर सकता था, सरकार उन्हींको लाइसेंस देती थी, जो कि रूसी भाषा लिख-सकते थे । व्यापार बदलेनमें होता था, किसी भी तरहके मिक्केका इस्तेमाल विस्तृत वर्जित था । चीनी व्यापारी पहले क्याखता जाते और अपने पसंदके मालको चुनते, फिर रूसी व्यापारी उन्हीं बातके लिये मैमाचेन आते । अपनी सरकारों द्वारा नियुक्त कमिश्नर (आयुक्तक) चायके माध्यमसे हर एक चीजका दाम निश्चित करने । चीनी व्यापारी चायके बदलेमें ऊर्ता कपड़े, चमड़े, छाले जैसी चीजे लेते ।

### ७. पीतर II, अलेक्सी-पुत्र (१७२७-३० ई०)

एकातेरिनाके मरनेके बाद मेशिकोफने अपने ही महलमें पीतरको गद्दीपर बैठाया । उस समय वह बारह वर्षका लटका था । उसके नामपर मेशिकोफ अब शासन करने लगा । धीरे-धीरे मेशिकोफके प्रति लोगमें बहुत असंतोष पैदा हो गया और उसे पकड़कर बेरियोजोफ (साइबेरिया) में निर्वासित कर दिया गया । अब उसका स्थान दोल्गोरोकी राजकुल-वधने लिया । उसने अपनी कन्यासे सम्राट्का व्याह करना चाहा । यह याद रखना चाहिये, कि पीतर ने अपने लिये "सम्राट्" (एम्पेरातोर) की पदवी धारण की थी, जिसका प्रयोग अन्तिम जारतक होता रहा, यद्यपि लोग अधिकतर जारकी उपाधि ही इस्तेमाल करते थे । व्याहकी तैयारी हो ही रही थी, इसी बीच पीतर II बीमार होकर मर गया । पीतरके माय रोमनोफ वंशकी पुरुष-संतानोका अन्त हो गया, इसके बाद रोमनोफ कुमारिया तथा उनके जर्मन पतियोंकी सताने रूसपर शासन करती रही । ये जर्मन जार पूरीतरसे रूसियोंमें मिल नहीं सके, उनके दरबारोंमें जर्मनोंका बाहुल्य था ।

पीतर IIके समयकी एक उल्लेखनीय घटना है बेरिंगका भौगोलिक अभियान । १७वीं सदीके मध्यमें रूसियोंने कामचत्का तकका पता लगाकर उसपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था, और मिमओन देजनिओफने चुकोत्स्क प्रायद्वीपका चक्कर लगाकर सिद्ध कर दिया था, कि एसिया और अमेरिकाके बीचमें एक पतली-सी खाड़ी है । लेकिन यह बात १८वीं सदीके आरम्भमें भूल गई । अपनी मृत्युमें जरा-सा पहले पीतरने एसिया और अमेरिकाके मिलन-स्थानके बारेमें अधिक खोज-पता लगानेके लिये एक अभियान भेजनेकी आज्ञा दी । इस अभियानका नेता रूसी नौसेनाका एक अफसर तथा टेनमार्क-निवासी वीटस बेरिंग नियुक्त किया गया । पहले अभियान (१७२८-३० ई०)में बेरिंग (अपने नामसे प्रसिद्ध होनेवाली) खाड़ी तक गया, लेकिन उसने अमेरिकन तटभूमिकी पड़ताल नहीं की । दो साल बाद बेरिंग फ्योदोरोफ और खोज्देफ दो रूसी सैनिक और भूगोलशास्त्रियोंके साथ गया । अबके उसने सिर्फ एशिया और अमेरिकाके तटोपरकी ही जाच-पड़ताल नहीं की, बल्कि वहाका पहला नक्शा तैयार किया । उसके बाद अमेरिका-तटके अलास्का प्रायद्वीपको रूसियोंने १७९७ ई०में अपना उपनिवेश बनाया, जिसे कि जारने १८६७ ई०में अमेरिकी के हाथमें बेच दिया ।

### ८. अन्ना, इवान V-पुत्री (१७३०-४० ई०)

पीतर IIके मरनेके बाद कुछ समयतक निजी परिषद् (प्रिवी कांसिल)ने शासनसूत्र अपने हाथमें लिया । इस परिषद्में दो पुराने राजकुल-वंशी गोलित्सिन और दोल्गोरोकीका प्रभुत्व था । राजकुल ६० स० गोलित्सिन बहुत भारी जमींदार था, और परिषद्में उसकी चलती भी काफी थी । वह इंग्लैण्ड और स्वीडनकी नकलपर राज्य-व्यवस्था करनेका पक्षपाती था, जिसमें शासनमें जमींदारोंका पलड़ा भारी होता । उसके प्रस्तावपर परिषद्ने पीतर I के भाई जार इवानकी पुत्री अन्ना को राजमिहामन प्रदान किया । अन्नाका व्याह पीतरने एक जर्मन राजकुल (कूरलडके ड्युक)के साथ किया था । ड्युकके मरनेके बाद बराबर वह वहीं रहती थी । परिषद्के सामन्तोंने कई शर्तें रखीं, जिनके बारेमें अन्नाने कहा "मैं सभी बातोंको बिना चू-चिराके माननेका वचन देती हूँ ।"

दरबारी चाहते भी नहीं थे, कि अन्ना राजकाजमें अधिक भाग ले, और वह भी अपने आनंद-विलासमें समय काटना चाहती थी, जिसके लिये भारी परिमाणमें धन प्राप्त करना ही उसका

लक्ष्य था। पीतरवुर्गके हेमन्तप्रासादमे अपने चाटुकारोंसे घिरी वह अपना दिन बिताती थी। उसने अपने एक जर्मन दरबारी वीरेनको अपनी तरफसे राजकाज सभालनेका काम दे दिया था। वीरेन एक निर्वुद्धि और अशिक्षित जर्मन अमीर था। उसने सभी प्रभावशाली पदोपर जर्मनोको लाकर भरना शुरू किया। वही वैदेशिक विभागका संचालन करते थे, और वही रूसी सेनाके सेनानायक थे। वीरेन रूसियोंको बड़ी तुच्छ दृष्टिसे देखता था। उसने कभी रूसी भाषा नहीं सीखी। लोगोसे पैसे ऐठकर जर्मनीमें वह अपने लिये भूमि खरीदता तथा अपनी बीवीके लिये मूल्यवान् कपडो और रत्नोको जमा करता। अन्नाके शासनके साथ रूसमें जर्मनोका जबरदस्त प्रवेश शुरू हुआ, जो कि अन्तिम जारके समय हदतक पहुँच गया। रूसियोंके मनमें जर्मनोके इस वर्तविसे यदि विद्वेष होने लगा, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। अन्नाके शासनकालमें कालासागरके तटपर अधिकार करनेके लिये तुर्की और क्रिमियाके साथ लड़ाई (१७३५-३९ ई०) हुई। रूसने तुर्की सेनाको कई जगह हराया। १७३९ई० में तुर्कोंके साथ हुई संधिके अनुसार रूसको समुद्रतक दनियेपर नदीके दोनों तट मिल गये। लेकिन लड़ाईपर जो खर्च करना पड़ा, उसके कारण देशके जनसाधारणकी आर्थिक स्थिति बहुत बुरी हो गई।

१७३७ ई०में अन्नाके शासनकालमें चीन और रूसके साथ व्यापारिक सवध अच्छे हो गये थे, इसलिये कारवाके व्यापारकी इजारेदारी किसी व्यापारीको न देकर खुला व्यापार करनेका रास्ता खोल दिया गया। व्यापारियोंको पेकिङ भी जानेकी जरूरत नहीं थी। रूसी व्यापारी क्यास्ता में आके ठहरते और चीनी मैमाचिनमें—दोनों ही स्थान सीमातपर पास-पास थे। चीनी सरकार ने चीनी व्यापारियोंपर कुछ निर्बंध लगा रखे थे, जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं, और उसके कारण व्यापारमें कुछ अडचन होती थी।

## ९ इवान VI, अन्ना-पुत्र (१७४०-४१ ई०)

अन्नाकी कोई सतान नहीं थी, इसलिये उसकी भतीजी अन्ना ल्योपोल्द-पुत्रीके बेटे इवानको राजगद्दी दी गई। नये जारकी मा एक जर्मन ड्युक (ब्रन्सविक)से व्याही गई थी। १७४० ई०में अभी तीन महीनेका बच्चा ही था, जबकि इवानको गद्दीपर बैठा दिया गया। जारको कुछ करना-धरना भी नहीं था, इसलिये उसके बच्चे होनेसे कुछ वनने-विगडनेवाला नहीं था। उसकी मा राजमाता अभिभाविका घोषित की गई, लेकिन उसका शासन एक सालसे अधिक नहीं रहा। सभी जगह विदेशी जर्मनोको देख राजधानीमें देशी अमीरोंके दिलमें आग लग रही थी। सैनिक अफसरो और सिपाहियों में भी इसके लिये असंतोष फैला हुआ था। फ्रांसके राजदूतने भी पड़्यत्रमे सहायता दी, और २५ नवम्बर १७४१ ई०को पीतर I की पुत्री एलिजाबेत् यकायक अपने अनुचरो और गारदकी एक टुकड़ीके साथ महलमें घुस आई। गारदोने तुरन्त अन्ना ल्योपोल्द-पुत्री और उसके परिवारको पकड़ लिया और जर्मनोके साथ काफी दुर्व्यवहार करके एलिजाबेत्को साम्राज्ञी घोषित कर दिया। शिशु सम्राट् इवानको श्लेशेल्बर्गके किलेमें बंद कर दिया गया, जहा उमे एकातेरिना IIके शासनकाल (१७६२-९६ ई०) में मार डाला गया।

## १०. एलिजाबेत्, पीतर I-पुत्री (१७४१-६१ ई०)

एलिजाबेत्के शासनकालमें रूसी सामन्तोका प्रभाव काफी बढ़ा, और अमीरोंके फायदेके लिये कई नियम और विधान बनाये गये। अब केवल पुराने राजकुलवशी ही किसानोकी वस्ती-वाली भूमिके मालिक हो सकते थे। वह अपने अर्ध-दासोको बिना अभियोगके साइबेरियामें निर्वासित कर सकते थे, जो आम तौरसे सेनामें भर्ती होकर जाते थे। एलिजाबेत्को अपने आनंद-मौजके मिवा किसी कामसे कोई वास्ता नहीं था। उसके यहां नाच, गाना और शराबकी मजलिसें लगातार होती रहती थी। एलिजाबेत्ने अपने भतीजे कार्ल पीतर उलरिचको अपना उत्तराधिकारी बनाया। कार्ल पीतर I की पुत्री अन्ना और उसके पति ड्युक होल्स्टाइनका पुत्र था। पीतर रूसमें फ्योदोर-पुत्र कहा जाता था। वह बहुत ही निर्वलबुद्धि तरुण था। अठारह-त्रिस वर्षकी उमरमें भी अभी वह खिलौना-

मे खेला करता और उनमे ऐसे वाते करता मानो वह आदमी है। साथ ही अपने जर्मन होनेका उमे हृदसे अधिक अभिमान था, और उसी परिमाणमें वह रूस और रूमियोंके साथ घृणा करता था। साम्राज्ञी एलिजाबेत् ने उसका व्याह एक जर्मन राजकुमारी सोफिया अनहान्ट-जर्व्स्टके साथ कर दिया, जो कि रूसमें एकातेरिना अलेक्सी-पुत्रीके नामसे प्रसिद्ध हुई—विना पिताके नामसे रूसमें किमी स्त्री-गुरुप-को पुकारनेका रवाज नहीं है, इसलिये हरएकके साथ पितृनाम जोड़ना ही पड़ता है। एकातेरिना अपने पति जैसी नहीं थी। वह बड़ी योग्य और मेहनती स्त्री थी। उसने रूसी भाषा और रूसी रीति-रवाजोंका अच्छी तरह अध्ययन किया। वह रूसी सामन्तो और अमीरोंको हर तरहसे अपनी ओर खींचनेकी कोशिश करती थी।

## ११ पीतर III, पयोदोर-पुत्र, पीतर I-नाती (१७६१-६२ ई०)

पीतरका शासन बहुत थोड़े दिनोका था। वह अपने समयमें रूसी शासनको प्रुशियाके राजा फ्रेड्रिक (१७४०-८६ ई०) के नमूनेपर बनानेकी कोशिश करता रहा। फ्रेड्रिक बड़ा ही महत्वाकांक्षी शासक था, जिसके कारण उसके पड़ोसी बहुत चिन्तित रहते। फ्रांस, आस्ट्रिया और सेक्सनीके साथ रूसने भी फ्रेड्रिकके विरुद्ध अपनी एक गुट बना ली थी। इंग्लैण्ड फ्रेड्रिकका पक्षपाती था। फ्रेड्रिकने पूर्वी पड़ोसीका विना ख्याल किये ही, सेक्सनीके ऊपर आक्रमण किया इसपर उमी माल रूसी सेना प्रुशियाके भीतर घुस गई, जिस साल अग्रेजोंने पलासीकी लड़ाई (१७५७ ई०) जीतकर हिन्दुस्तानमें अपना दृढ़ शासन स्थापित किया। फ्रेड्रिकको अपनी सेनापर बड़ा अभिमान था। वह रूसी सेनाको बिल्कुल तुच्छ दृष्टिसे देखता था, लेकिन पहली ही झड़पमें उसे अपनी राय बदलनी पड़ी। उसने अपने सबसे योग्य सेनापतियोंको भारी सेना देकर रूसियोंके विरुद्ध भेजा। अगस्त १७५७ ई० में जर्मनोंने पहला आक्रमण किया, और यह आक्रमण हिटलरके विल्टजकीगका प्रथम नमूना था। यकायक आक्रमण करनेके कारण रूसी पहले कुछ तितर-बितरसे हो गये। मालूम होने लगा, जर्मन विजयी होंगे। इसी समय जंगलोमें छिपी हुई रूसी सेना मैदानमें कूद पड़ी। यह विल्टजकीगका अच्छा जवाब था। रूसियोंने जर्मन सेनापर पूर्ण विजय प्राप्त की। कोय-निग्सबर्गके महादुर्गने विना प्रतिरोधके ही आत्म-समर्पण कर दिया। यदि रूसी सेनाने इस समय अवसरसे लाभ उठाया होता, यदि रूसके मित्रोंने मुस्ती न दिखलाई होती, तो फ्रेड्रिकका सर्वनाश हुये विना नहीं रहता। अपनी मेनाको फिरसे सगठित करके १७५९ ई० में फ्रेड्रिक ओडेर-पर-फ्राकफोर्टको खतरेमें डाले हुई रूसी मेनाके मुकाविलेमें चला। सब प्रयत्न करके भी फ्रेड्रिकको बुरी तरहसे हारना पड़ा। जर्मन अपने हथियारों और झंडोंको छोड़कर भाग गये। फ्रेड्रिक रूसियोंके हाथमें बंदी होते बाल-बाल बचा। फ्रेड्रिक अत्यंत निराश हुआ, जैसा कि उसने स्वयं लिखा है “मैं अभागा हूँ, जो जीनेके लिये बचा हूँ, जिस समय मैं यह लिख रहा हूँ, हरएक आदमी भाग रहा है। इन आदमियोंके ऊपर मेरा कोई बल नहीं है।” लेकिन जिस वक्त फ्रेड्रिक इस तरहसे निराश था, उसी वक्त उसके पश्चिमी शत्रुओंने उमे बचनेका अवसर दे दिया। १७६० ई० में एक छोटीसी रूसी सेनाने जर्मन राजधानी बर्लिनपर कूच किया। यद्यपि राजधानीमें छत्तीस बटालियन पैदल, छियालीस रिसाला स्क्वाड्रेन और एक मी बीस भारी तोपे थी, लेकिन जर्मन मेनापतियोंने नगरकी प्रतिरक्षा करना बेकार समझा। रातके वक्त वह अपनी सेना लेकर बाहर चले गये, और सबेरेके वक्त बर्लिनके नगराधिकारियोंने रूसी सेनापतियोंको मखमलके गद्देपर रखकर नगरकी कुजी भेंट कर दी। फ्रेड्रिककी दुरवस्था चरम सीमा तक पहुँच गई थी। डेमी वक्त दिसम्बर १७६१ ई० में रूसी साम्राज्ञी एलिजाबेत् मर गई। उसके उत्तराधिकारी पीतर II ने प्रुशियाके साथ क्षणिक विराम-संधि करके फ्रेड्रिकको बचा लिया। इस युद्धमें अपनी विजयों द्वारा रूसने पश्चिमी यूरोपको चकित कर दिया। रूसी सेनापति प. अ. रुम्यान्सोफ (१७२५-९६ ई०) के युद्धकौशलका इसमें बहुत भारी हाथ था।

पीतरके दो सालके राज्यमें रूसकी प्रगतिको लाभ नहीं हानि पहुँची। फिर जर्मन सेनापतियों और अफमरोंकी सब जगह भरमार हो गई। पीतरकी दिलचस्पी रूसकी अपेक्षा अपने होल्स्टाइन वंशसे अधिक थी। वह होल्स्टाइनके लिये डेनमार्कसे लड़नेकी तैयारी भी कर रहा था। लेकिन अपनी

महत्वाकाक्षाओंके अनुसार उसमें योग्यता नहीं थी। उसकी पत्नी एकातेरिना अलेक्सी-पुत्री जानती थी, कि उसका नालायक पति सिंहासनको खोकर रहेगा, इसलिये रूसी दलके षड्यंत्रमें वह स्वयं शामिल हो गई। गारदके अफसर दो-भाई ओरलोफ षड्यंत्रके मुखिया थे। २८ जून १७६२ ई० के बड़े तडके ही उन्होंने एकातेरिनाको उपनगरके एक प्रासादसे पीतरबुर्गमें लाकर साम्राज्ञी घोषित कर दिया। अगले दिन पीतरने क्रोन्स्तात्में भाग जानेका व्यर्थ प्रयत्न किया, फिर सिंहासनसे वाक्यादा इस्तीफा दे दिया। ऐसे नालायक पतिको भी अधिक दिनोत्तक जीनेका अधिकार देना बुद्धिमानीकी बात नहीं थी, इसलिये थोड़े ही दिनों बाद वह मार डाला गया।

## १२ एकातेरिना II, पीतर III-पत्नी (१७६२-९६ ई०)

एकातेरिना योग्य और सुशिक्षिता स्त्री थी। जिस वक्त वह गद्दीपर बैठी, उस वक्त राज्यकी अवस्था अस्तव्यस्त हो रही थी, राजकोष खाली था, सैनिकोंको सात महीनेसे वेतन नहीं मिला था। मरम्मत न होनेसे, युद्धपोत और दुर्ग खराब हो रहे थे। जनतामें बहुत असंतोष था, विशेषकर कारखानोंमें काम करनेवाले उचास हजार मजूरों और जमींदारोंके डेढ़ लाख अर्ध-दास कैदियोंसे जेल भरे हुये थे। एकातेरिनाने यद्यपि जमींदारोंके अधिकारोंपर प्रहार नहीं किया, लेकिन तब भी अपने शासनके आरम्भमें उसने किसानों और जनसाधारणके बोझोंको हलका करनेकी कोशिश की। उसे पश्चिमके नये विचारोंवाले दार्शनिकोंके ग्रंथोंके पढ़नेका बड़ा शौक था। फ्रेंच विचारक वोल्तेरके साथ उसका पत्र-व्यवहार था। उस समय वोल्तेर, मोन्टेस्को, दीदरो और दूसरे फ्रेंच विचारक अपनी सशक्त लेखनी द्वारा सामन्तवादी व्यवस्थापर प्रहार कर रहे थे, मिथ्या विश्वासोंको हटाकर बुद्धिवादको आगे बढ़ा रहे थे। एकातेरिना उनके इन विचारोंसे अवगत थी। वह वोल्तेर, दीदरो और दूसरोंसे पत्र-व्यवहार करके यह दिखलाना चाहती थी, कि जिस आदर्श शासन या नृपतिके बारेमें तुम प्रचार कर रहे हो, वैसी बुद्धिमती और नई रोगनीवाली शासिका मैं हूँ। रूसके किसानोंमें उस वक्त भूख और अज्ञानका अखंड राज्य था, लेकिन एकातेरिना वोल्तेरको लिखती थी, कि रूसमें एक भी ऐसा किसान नहीं है, जो इच्छा होनेपर मुर्गी न खा सकता हो, वल्कि अब तो वह मुर्गीकी जगह टर्कीका खाना ज्यादा पसंद करते हैं। एकातेरिना पाखंडमें बहुत ही चतुर थी। वह राजकाजमें सीधे भाग लेती थी। वह स्वयं कानूनों और राजादेशोंका मसविदा बनाती थी। साहित्यमें उसकी दिलचस्पी थी और स्वयं एक पत्रिका "सबका थोड़ा" निकालती थी। एकातेरिनाका शासन सामंतों और अमीरोंके लिये रूसी इतिहासका सुनहला समय था।

जर्मनी (प्रुशिया) के साथ सात वर्ष (१७५६-६३ ई०) वाला युद्ध समाप्त होनेके बाद एकातेरिनाने राज्य सभाला था। यद्यपि बीचमें उसका नालायक पति आ घुसा था, लेकिन थोड़े ही समयमें एकातेरिनाने रूसकी धाकको फिरसे जमा दिया। आस्ट्रिया और फ्रांस रूसकी बढ़ती हुई शक्तको शकाकी दृष्टिसे देखते थे। फ्रेंच व्यापारी पूर्वी देशोंके व्यापारपर एकाधिपत्य रखना चाहते थे, इसलिये वह नहीं चाहते थे, कि रूसियोंकी शक्ति अधिक बढ़े। आजकलके अमेरिकाकी तरह उस समयका फ्रांस रूसके चारों तरफ शत्रु-राज्योंका घेरा डालना चाहता था। इसके लिये उसने तुर्की, पोलैण्ड, स्वीडन और आस्ट्रियाको अपने साथ मिलाकर एक जबरदस्त गुट बनाना चाहा। रूसने भी इसके विरुद्धमें प्रुशिया, इंग्लैंड और दूसरे राज्योंको मिलाकर एक गुट बनानेकी कोशिश की, लेकिन विरोधी स्वार्थोंके कारण दोनों अपने उद्देश्यमें सफल नहीं हुये। आस्ट्रिया पश्चिमी उक्रैन्की उर्वर भूमिको चाहती थी, प्रुशिया पोलैण्डकी निम्न-विस्तुला-उपत्यकापर हाथ माफ करना चाहती थी, और रूस अपने हाथसे छिने वेलोरूसी और उक्रैनी इलाकोंको लौटाना चाहता था। इन स्वार्थों के साथ तीनोंमेंसे कोई नहीं चाहता था, कि किसीकी शक्ति अधिक बढ़ जाये। शताब्दियोंतक शक्तिशाली रहनेके बाद पोलैण्ड अब निर्बल हो गया था। वहाके अमीरों और सामन्तोंने राजाके अधिकारको बहुत सीमित कर दिया था। उधर कैथलिक पोल ग्रीक-चर्चके अनुयायी उक्रैन्नी और वेलोरूसियोंके ऊपर तरह-तरहके अत्याचार कर रहे थे। एकातेरिना कैसे चुप रह सकती थी? १७६३ ई० में अगस्तस् III के मरनेपर एकातेरिनाके उम्मीदवार स्तानिस्लाउस पोनियातोव्स्कीको पोलैण्डका राजा

चुना गया। रूस और प्रुशिया दोनोंने माग की, कि पोलन्दमें ग्रीक-विश्वासियो तथा प्रोटेस्टेन्टो (सुधार चर्च) को कैथलिकोंके बराबर अधिकार दिया जाय। इन्कार करनेपर रूसी सेना पोलन्दके भीतर भेज दी गई। पोलिश समदको मजबूर होकर रूसकी मागको स्वीकार करना पडा। इसी समय एकातेरिना ने पोलन्दको करीब-करीब अपने सरक्षणमें ले लिया। रूसके बड़े हुये प्रभावको देखकर आस्ट्रिया और प्रुशियाको चिन्ता हो गई। फ्रेड्रिकने समझा, कि रूस सारे पोलन्दको हडप लेगा, इसलिये उसने आस्ट्रिया, प्रुशिया और रूसके बीच पोलन्दके बंट जानेकी एक योजना बनाई, जिसे तीनों राज्योंने स्वीकार किया—प्रुशियाको पोलन्दका वाल्टिक-तट तथा पश्चिमी भाग मिला। इस प्रकार प्रुशियाका पूर्वी भाग, जो अभी तक अलग-अलग था, पश्चिमी भाग (ब्राडेनवर्ग) में मिल गया। प्रुशियाने डन्जिग और थोर्नको लेना चाहा, लेकिन एकातेरिनाने उसे माननेसे इन्कार कर दिया। आस्ट्रियाको उक्रइनी-गालिमिया मिली, और रूसको वेलेरूमियाका कुछ भाग। १७७३ ई०में इस प्रकार पोलन्दका पहला बंटवारा हुआ, जो कि बहुत कुछ प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८ ई०) तक कायम रहा।

प्रथम तुर्की युद्ध (१७६८-७४ ई०)—फ्रांस नहीं चाहता था, कि रूसकी शक्ति और बढ़े, इसलिये उसने तुर्कीको भडकाकर लड़ाई छिटवा दी। १७६८ ई०में मुल्तानने कान्स्टान्तिनोपोल-स्थित रूसी राजदूतमें माग की, कि अपनी सेना पोलन्दमें हटा लो। तुर्कीकी इस अनधिकार चेष्टाको रूस कैसे स्वीकार कर सकता था? इसपर रूसी दूतको पकड़कर जेलमें बन्द कर दिया गया। युरोपके लोग समझते थे, कि रूस तुर्की और पोलन्द दोनोंसे एक ही समय नहीं लड़ सकता। क्रिमिया का खान अपनेको तुर्कीके खलीफाके अधीन समझता था। उसने पहल की और १७६९ ई० के वसन्त में क्रिमियाके तारतारोंने दक्षिणी रूसके सीमाती इलाकोमें लूट-मार मचाई। रूसकी सीमाके भीतर यह तारतारोकी अन्तिम लूट-मार थी। प्रसिद्ध सेनापति रूम्यान्त्सेफ—जिसने सप्तवर्षीय जर्मन-युद्धमें भारी यश कमाया था—एक बड़ी सेना लेकर दक्षिणकी ओर बढ़ा। उसने अपने कई योग्य सहायक चुने थे, जिनमें अलेक्साण्डर वामिली-पुत्र सुवारोफ भी था—सुवारोफ सभी कालके रूसी सेनापतियो का शिरोमणि माना जाता है। रूम्यान्त्सेफ सबसे पहले शत्रुकी सैनिक शक्तको अधिकमें अधिक ध्वस्त करना चाहता था। १७७० ई० में उसे पता लगा, कि लारगा नदीसे नातिदूर अस्सी हजार तुर्क-सेना छावनी ढाले पड़ी है। रूसी सेनापतिके पास उस समय केवल तीस हजार सैनिक थे, लेकिन उसने आक्रमण कर दिया और तुर्क-सेनाको पूरी तीरसे हारना पडा। इसके दो सप्ताह बाद वह एक ओरमें अस्सी हजार तारतारो और दूसरी ओरमें तुर्कीके वजीरकी अधीनतामें डेढ़ लाख तुर्क सैनिकोंके बीचमें घिर गया। लेकिन इससे रूम्यान्त्सेफको घबराहट नहीं हुई। उसने यह कहते हुये पहले स्वयं आक्रमण करनेका निश्चय किया “छोटी सेनासे बड़ी सेनाको हराना एक कला और कीर्तिकी बात है, और बड़ी सेनासे अधिक शक्तिशाली शत्रुको हरानेमें विशेष चातुरीकी अवश्यकता नहीं है।” तुर्की तोपखाने ने जबरदस्त गोलावारी की और तुर्क सुवारोने भारी सख्तामें रूसियोंका प्रतिरोध किया। निर्णयकी जब आखिरी घड़ी आई, तो रूसी सेना घबड़ाने लगी, इसी समय रूम्यान्त्सेफ आ पहुँचा और उसने चिल्लाकर कहा—“डटे रहो लड़को” और वह स्वयं युद्धके भीतर पिल पडा। तुर्कोंकी भारी हार हुई, और दनियेस्तर तथा दन्यूबके बीचकी भूमि रूसियोंके लिये खाली हो गई। रूसी सेना अब दन्यूब महानदके वाम तटपर पहुँच गई। इस विजयके लिये रूम्यान्त्सेफको “जा-दुनाइस्की” (दन्यूब-वाला) की उपाधि प्राप्त हुई। स्थलपर इस तरह सफलता प्राप्त करके रूसी नौसेनाने जलमें भी अपनी श्रेष्ठता दिखाई और उसने सारे तुर्की बड़ेको नष्ट कर दिया। १७७१ ई० में थोड़े ही समयके भीतर रूसी सेनाने सारे क्रिमिया प्रायद्वीपपर अधिकार कर लिया। रूसी सेना दन्यूबके किनारेपर नहीं रुकी और उसने कई बार इस महानदको पार करके आक्रमण किया, जिसमें अलेक्साण्डर सुवारोफने अपने सैनिक कौशलका बहुत अच्छा परिचय दिया। रूस अपनी विजययात्राको और भी जारी रखता, लेकिन एक तो युद्धके अपार व्ययका सवाल था, दूसरे इसी समय पुगाचेफके नेतृत्वमें रूसी किसानोंने जबरदस्त विद्रोह कर दिया था। एकातेरिनाने १७७४ ई०में जल्दी-जल्दी तुर्कीके साथ संधि कर ली। दनियेपर और वुगके बीचका प्रदेश रूसको मिला और साथ ही कालासागरमें घुसनेकी केचकी खाड़ी भी। अब रूसी जहाज स्वच्छदतापूर्वक कालासागरमें जा सकते थे, तुर्कीने दरदोनियाल (दरदनेल्स)

और वासपोरसकी खाडियोको भी रूसी जहाजोके लिये खोल दिया । क्रिमियाके खानको तुर्कोंकी अधीनतासे स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया, और अब उसके ऊपर रूसका प्रभाव बढ़ चला ।

**किसान-संघर्ष**—रूसी अपने पूर्वजो (शको) के समयसे ही योद्धा-जाति है । सामन्ती अत्याचारोको रूसी किसान और अर्ध-दास आख मूदकर हर वक्त वर्दाशत करनेके लिये तैयार नहीं रहते थे । १६वीं से १८वीं सदीके बीचमें केवल मध्य-एसियामे ही चालीसके करीब विद्रोह हुये । वोल्गा प्रदेशमें रूसी जमींदारो और अफसरोंका अत्याचार बहुत बढ़ा हुआ था । यह वह इलाका था, जहा-पर कि रूसियो और एसियाई जातियोके इलाके एक दूसरेके पडोसमें पडते थे । वाशकिरोकी भूमिपर रूसी व्यापारियो, कारखानेवालोकी खास तौरसे गृध्र-दृष्टि थी । कल्मक १७७० ई० के आसपास तक निम्न वोल्गाके दोनो तटोपर रहते थे, लेकिन १७७१ ई०में शासकोके अत्याचारोसे परेशान तथा चीनके प्रलोभनके कारण वोल्गाके बाधे तटवाले कल्मक अपने सारे तम्बुओ और पशुओको लेकर चीनकी ओर चले गये, जिसके वारेमें हम अभी कहनेवाले हैं—यह कल्मक चीन द्वारा पूर्वी तुर्किस्तानमें बसाये गये । वोल्गाके दाहिने तटपर अब भी कल्मक-मगोल रहते थे । किसानोका विद्रोह पहले-पहल यायिक (उराल) नदीके तटपर बसनेवाले रूसी कसाकोमें फैला । कसाक जिस वक्त भागकर जाप-रोजे और दोनकी भूमिमें बसे, उस वक्त उनमें उतनी सामाजिक विपमता नहीं थी, लेकिन अब उनके भीतर धनियो और गरीबोका भारी भेद हो गया था । सरकारी अफसर धनी कसाकोका पक्ष करते थे, और जरा भी विरोध करनेपर उन्हें बड़ी बुरी तरहसे दवा देते थे । १७७२ ई० में यायिस्क नगरमें कसाकोने विद्रोह करके जेनरल ब्राउवेन्वर्ग और कितने ही कमाक आतमनो (सरदारो) को मार डाला । लेकिन सरकारी सेनाने आकर यायिकके कसाकोके विद्रोहको दबा दिया । बहुतसे कसाक मारे गये, और बहुतसे वहासे बच निकलनेमें भी सफल हुये । तुर्किसि लडाई हो रही थी, इसी समय दोन और यायिकके कसाकोमें अफवाह उडी, कि जार पीतर II मरा नहीं है, बल्कि वह हमारे बीचमें छिपा हुआ है । १७७३ ई० के शरदमें एमेल्यान पुगाचेफ नामक एक कसाकने विद्रोहका नेतृत्व अपने हाथमें लिया । वह उसी जिमोवेइस्क गावमें पैदा हुआ था, जिसे प्रथम किसान-वीर स्तेपान राजिनको पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

पुगाचेफने सप्तवर्षीय युद्धमें भाग लिया था, तुर्किके युद्धमें भी लडा था । वीमारीके कारण छुट्टी पाकर वह घर आया था, लेकिन उसने फिर लौटकर जाना पसंद नहीं किया । वह दोन, वोल्गा और यायिककी उपत्यकाओंमें घूमता रहा । वहा उसे कितने ही दुर्दशाग्रस्त भगोडे किसान तथा उरालके कारखानोके मजदूर मिले । अपने इस पर्यटनमें उसे लोगोसे घनिष्ठता प्राप्त करनेका मौका मिला और धीरे-धीरे उसका एक दल बन गया । अपनेको सम्राट् पीतर III कहते हुये वह सितम्बर १७७३ ई० में यायिकके तटपर पहुंचा । लोग उसके झंडेके नीचे आने लगे । पहले वह अपने आदमियोको लेकर ओरेनबुर्गकी ओर गया । गेरिसनको अधिकारमें कर किलेपर अधिकार करनेमें उसे कोई कठिनाई नहीं हुई । १७७३ ई० के अक्टूबरमें पुगाचेफ ओरेनबुर्गके नगर-प्राकारके पास पहुंचा, जहा एक मजबूत किला और काफी सैनिक रहते थे । पुगाचेफ छ महीने उसे घेरे रहा । इस विद्रोहने आसपासके लोगोमें उत्तेजना पैदा की । कजाक (एसियाई) घुमन्तू भी उसकी सेनामें आकर शामिल होने लगे, निम्न वोल्गा और कालासागरके बीचके घुमन्तू कल्मक मगोल भी पुगाचेफकी सेनामें भर्ती होने लगे । तारतार, बश्किर और मारी नौजवान भी यायिकके तटपर पुगाचेफके पास पहुंचने लगे । यह विद्रोह हर जातिके केवल किसानो तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इसमें उरालके धातु-कारखानेमें काम करनेवाले मजदूर और दूसरे भी शामिल थे । धीरे-धीरे विद्रोह एक किसान-युद्धके रूपमें परिणत हो गया । पुगाचेफकी सेनामें कल्मको, बश्किरो, तारतारो, कारखानोके मजदूरों और दूसरोकी अलग-अलग पलटने संगठित थी । उनके पास हथियारोकी कमी थी । बहुत थोडोके पास पलीतावाली बन्दूके या पिस्तौले थी, बाकी पुराने तरहके हथियारोसे सज्जित थे । कुछ तोपे पकडी गई थी, जिनका एक तोपखाना बना लिया गया था । उरालके लोहेके कारखानोके कारीगरोकी सहानुभूति होनेके कारण, कुछ नई बन्दूके भी विद्रोहियोको मिल रही थी । पुगाचेफ अपनी घोषणाओको सम्राट् पीतर III के नामसे निकालता था, किसानो और गरीबोके लिये जितना कुछ उसमें हो सकता था, उतना कर

रहा था और उससे भी अधिकका वचन देता था। १७७३ ई०के अन्तमें ओरेनबुर्गको मुक्त करानेके लिये जेनरल कारके नेतृत्वमें एक सरकारी सेना आई, जिसे पुगाचेफने हरा दिया, इसके कारण उसका प्रभाव और बढ़ गया। सारे रूसके अमीरो, जमीदारो और धनियोमें आतंक छा गया। वोल्गासे सैकड़ों मील दूर रहनेवाले जमीदार भी हर वक्त भयके मारे कापने लगे। लेकिन मार्च १७७४ ई० में सरकारी सेनाने पुगाचेफको ओरेनबुर्गके पाम हरा दिया। अभी भी उसने अपने सघर्षको नहीं छोड़ा। पहले वह वश्किरोके प्रदेशमें गया। फिर रूसी किसानो, वश्किरो तथा धातु-कारखानेके मजदूरोकी सेना संगठित कर वह कामा नदीकी ओर बढ़ते कजानकी ओर चला, जो कि सारे वोल्गा प्रदेशका शासन-केन्द्र था। पुगाचेफ जुलाई १७७४ ई० में कजान पहुँचा। यहाँ भी उसे अन्तमें हारना पड़ा, और वह थोड़ेसे आदमियोंके साथ वोल्गाके दक्षिण तटकी ओर भागा। सरकारी सेनाने पुगाचेफका पीछा करना शुरू किया। वोल्गाके दाहिने किनारेपर उसके पास अब थोड़े हीसे आदमी रह गये थे, लेकिन जब वह घने वसे हुये इलाकेमें पहुँचा, तो निजनी-नवोगोरदके इलाकेने हथियार उठा लिया। बिना अधिक प्रतिरोधके एकके बाद एक नगरोंने आत्मसमर्पण किया। परन्तु पुगाचेफकी यह सफलता क्षणिक साबित हुई। वाकायदा शिक्षाप्राप्त सरकारी सेनाके सामने किसानोका दल कैसे डटा रहता? पुगाचेफ पेजा, सरातोफ और कमिशन होते अगस्तके अन्तमें जारित्सिन (आधुनिक स्तालिनग्राद) पहुँचा, जहाँपर सरकारी सेनाने नगरसे नातिदूर पुगाचेफकी शक्तिको छिन्न-भिन्न कर दिया। तो भी वह अपने कुछ आदमियोंके साथ वोल्गा पार करनेमें सफल हुआ, लेकिन इसके बाद लोगोका उसकी सफलतापर विश्वास नहीं रह गया। अन्तमें कसाक ज्येष्ठकोने उसे पकड़कर सरकारके हाथमें दे दिया। हाथ-पैर बांधकर एक लकड़ीके पिंजड़ेमें पुगाचेफको मास्को ले जा जनवरी १७७५ ई० में फासी दे दी गई। पुगाचेफने भारी जोश और बड़ी-बड़ी आशाये रूसकी गरीब जनतामें पैदा कर दी थी, लेकिन उस समय वह बिखरे और अशिक्षित किसानोको ही विद्रोहियोंकी सेनामें शामिल कर सकता था। अभी कारखानेके मजदूरोकी पलटन तैयार नहीं हुई थी, जो अपने सुदृढ़ संगठनोमें किसान-क्रान्तिको सफल बनाती।

जैसा कि पहले कहा गया, एकातेरिनाके शासनकालमें अमीरो और जमीदारोका बल और भी अधिक बढ़ गया। १७७५ ई० में किसान-विद्रोहको दवानेके बाद एकातेरिनाने राज्यके प्रबन्धमें कितने ही नये सुधार किये। सारा राज्य पचास गुबर्नियो (प्रदेशो) में बाँट दिया गया—प्रत्येक गुबर्नियामें प्रायः तीन लाखकी आवादी थी। हरेक गुबर्निया फिर कितने ही उयेज्दोमें बाँटी गई, जिनमें प्रायः तीस हजारकी आवादी थी। कभी-कभी दो-तीन गुबर्नियापर भी एक राज्यपाल नियुक्त होता, लेकिन अधिकतर प्रत्येक गुबर्नियाका एक राज्यपाल होता। इसके कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि राज्यपाल या उयेज्दके शासक राजुलो (सामन्तो) और बायरो (अमीरो) में से ही होते थे। १७८५ ई० में नगरके शासनके लिये भी नई व्यवस्था कायम की गई, और उसका कार्य-भार नगर-पालिकाके ऊपर दिया गया, जिसके सबसे बड़े अधिकारी “गरोद्निची” को सरकार नियुक्त करती थी।

**वैदेशिक नीति**—एकातेरिनाका शासनकाल रूसके भारी प्रसारका काल था। १८वीं शताब्दीकी अन्तिम चार दशव्दियाँ रूसकी सीमाको अधिक बढ़ाने और मजबूत करनेके लिये विशेष महत्त्व रखती हैं। एकातेरिनाके शासनकालमें ही तुर्की और स्वीडनके साथ दो-दो जबरदस्त युद्ध हुये। प्रथम तुर्की युद्धके समय १७३४ ई०में क्रिमियाके ऊपर रूसका संरक्षण स्थापित हो गया था। कालासागरपर निराबाध अधिकार करनेके लिये क्रिमियाका रूसके हाथमें जाना आवश्यक था। क्रिमियाके खानोंमें आपसमें उत्तराधिकारके लिये झगड़े होते ही रहते थे। रूसने उससे फायदा उठाया, सेना भेज शगिन-गिराईको पहले खान घोषित किया, फिर १७८३ ई० में शगिनको अधिकारच्युत करके तोरिदाके नाम से क्रिमियाको एक गुबर्निया बना दिया। अब कालासागरके तटकी काली मिट्टीवाली उर्वर भूमि (नवो-रोसिया) रूसियोंके हाथमें थी, जिसके अच्छे-अच्छे इलाकोको अपने हाथमें करनेके लिये रूसी सामन्त गिद्धकी तरह टूट पड़े। क्रिमिया प्रायद्वीपके भीतर भी उन्होंने वैसा ही किया, और निवासी तारतार पहाड़ोकी ओर सिमटनेके लिये मजबूर हुये। जेनरल पोतेमकिन एकातेरिनाके कृपापात्रको क्रिमियाका महाराज्यपाल नियुक्त किया गया, जिसने अपना घर भरनेमें कोई कसर उठा



एक कारण था तुरगुन मंगोलोंका १७ वीमदीमें हसके भीतर बोलगाके किनारे चला जाना। कुछ समय तक तो वह शांतिपूर्वक रहे, लेकिन उन्होंने देखा, कि हस और तुर्कोंके चक्कीके दो पाटोंके भीतर उन्हें पिस जाना है। उबर तुर्किशिनके दूतमंडलने उन्हें लौटनेका भी बहुत प्रलोभन दिया। तुरगुन मंगोल घुमन्तू थे, लेकिन अपनी पुरानी मंगोल भूमिके साथ उनका बहुत स्नेह था। १३३१ ई०में हसियों और तुर्कोंके बीचमें जो संधि हुआ, उसमें तुरगुनने हसका पक्ष लिया। इसी समय तुर्कोंके साथ लड़ते उन्हें अपनी शक्तिका भान हुआ, और वह समझने लगे, कि तुर्कों (कजाकों) के बीचसे चीरते-फाड़ते हम अपनी जन्मभूमिको लौट सकते हैं। ५ जनवरी १३३२ ई० को एक दिन यकायक सात लाख तुरगुन परिवारोंने पूर्वकी ओर प्रस्थान कर दिया। हसियोंने पहले समझानेकी कोशिश की, फिर कुछ सेनाका भी उपयोग किया, लेकिन उस समय वह दक्षिणी शत्रुओंके साथ भी फसे हुये थे, इसलिये पूरी शक्ति नहीं लगा सकते थे। कजाक-तुर्कोंने अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वियोंको आमानीसे बड़ निकलनेका मौका नहीं दिया। तो भी तुरगुन अपने लाखों ऊंटों, घोड़ों, भेड़ों, तम्बुओं और दूसरे सामानके साथ बालबच्चों को लिये, पद-पदपर कजाकोंसे लड़ते आगेकी ओर ही बढ़ते गये। आठ महीनेकी इतिहासकी डम अद्वितीय यात्राके बाद तुरगुन जब इर्ली नदीके तटपर पहुँचे, तो सात लाखकी जगह अब वह तीन लाख आदमी रह गये थे। इर्लीके तटपर चीनने उनका स्वागत किया, और उन्हें पशु, अन्न और पैसेमें मदद देकर पाममें ही अलनाई (मुवर्ण) की पहाड़ी भूमिमें बसा दिया। हमने कुछ बोडे-मे मंगोलों को शरण दी थी, अब चीनने लाखोंकी सख्यामें चीनी प्रजाको अपने यहाँ जगह देकर उसका बदला लिया। हमने भी अब चीनियोंको प्रलोभन देकर अपनी सीमाके भीतर रखना शुरू किया। उपर दोनो राज्योंके बीच शांति कैसे कायम रह सकती थी? चीन-सम्राट् काउ-बुड (चानलुड १३३५-९५ ई०) ने विरोध प्रदर्शित करते हुये लिखा था -

“परीक्षण करनेपर हमारे दोनो देशोंके समझौतेके भीतर पता लगा, कि अगर सीमातपर किसी राज्यका चोर पकड़ा जाय, तो दोनो ओरके संयुक्त अधिकारियोंके सामने उसके बारेमें जाच-पटनाल होना चाहिये और अपराधी माफित होनेपर उसे मृत्युदंड देना चाहिये। इसी विधानके अनुसार मेरे चाचाजीसबे सक्तरमें तुम्हारे यहाँके ग्यारह घोड़े चुरानेके कारण दो आदमियोंको मृत्युदंड दिया गया। हमारे महान् साम्राज्यने सविपन्न और विधानका ईमानदारीसे पालन करनेके लिये ऐसा किया, मित्रता कायम रखनेके लिये ही नहीं, बल्कि सत्यके प्रेमके लिये भी, जिसका कि हम बहुत सम्मान करते हैं। लेकिन, तुमने चोरोंको प्राणदंड नहीं देकर मित्रता और सविपन्नके विधान और शपथको भंग किया। यद्यपि हमारे दानों साम्राज्य एक दूसरेके सीमातपर हैं, तो भी हमारा (चीन) साम्राज्य अपनेको बड़ा भाई कह सकता है, क्योंकि वह साम्राज्योंमें बड़े भाईका स्थान रखता है। तुम्हारी प्रायना पर हमने दो चोरोंको दंडित किया, लेकिन तुम वही बात हमारे महामाम्राज्यको सतुष्ट करनेके लिये करनेमें इन्कार करते हो। क्या तुम नहीं चोचते, कि आनेवाली सताने तुम पर हमेंगी?”

इन झगड़ोंको मिटानेके लिये एकातेरिनाने क्रोपोतोफको दूत बनाकर चीन भेजा। बात-चीन होनेके बाद १३२७ ई० के सविपन्नमें और धारा जोड़ी गई, जिसके बाद फिर व्यापारिक सबब पहलेकी तरह स्थापित हो गया। यह उल्लेखनीय बात है, कि एकातेरिनाका मंगोलियाके मंगोलोंके साथका वर्तव्य वहाँके लामाओं और राजकुलोंके लिये अधिक अनुकूल था, इसीलिये वहाँके लोगोंमें मशहूर था, कि एकातेरिना श्वेतनारा देवी (चगान-नारा-एले) की अवतार हैं। एकातेरिनाके बाद जब हसकी गद्दीपर जार बैठने लगे, तो उन्हें भी मंगोल चगान खान (श्वेत राजा) कहने लगे।

शिक्षा और संस्कृति—केवल राजनीतिक दाव-पेचोंसे ही किसी भी राजशक्तिको एकताबद्ध और शक्तिशाली नहीं बनाया जा सकता, उसके लिये तो अधिक शक्तिशाली हथियारोंकी आवश्यकता होती है। अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके मुकाबलेमें अधिक शक्तिशाली हथियारोंको ढूँढते हुये आदमी बालूद-के हथियारों तक पहुँचा, और उनमें भी एक दूसरेमें बाजी मार ले जानेके लिये उनमें नये-नये आविष्कार किये, जिसके लिये आदमीको माइमकी ओर बढ़ना पड़ा। जिसके साथ ही अब साइंस तथा दूसरी विद्याओंकी प्रगति अनिवार्य हो गई। माइमके प्रसारके लिये पीतर I ने हसी विज्ञान अकदमी (हसकी अकदमी नाउक) कायम करनेके बारेमें सोचा था, जो १३२५ ई० में ही उसके मरनेके

बाद स्थापित हुई। यह हम बतला चुके हैं, कि पीतरने पश्चिमी युरोपसे कितने ही विद्वानोंको निमंत्रित करके अपने यहाँ रक्खा था, जिनमें वरनूली और ल्योनहार्ड यूलर जैसे गणितज्ञ भी थे। रूसका पहला विज्ञानवेत्ता मिखाइल वासिली-पुत्र लोमोनोसोफ (१७११-६५ ई०) था। उसके रूपमें रूसकी प्रतिभा विद्याके बहुत-से क्षेत्रोंमें प्रकट हुई। लोमोनोसोफ उत्तरी समुद्रतटके आरखगेल्स्क नगरसे नीतिदूर समुद्रतटके एक गाव देनिसोव्कामे एक खाते-पीते मछुयेंके घरमें पैदा हुआ था। दस वर्षकी उमरमें वह अपने बापके साथ समुद्रमें मछली मारने जाया करता था, लेकिन लोमोनोसोफको जल्दी मालूम होने लगा, कि पढ़ना अच्छी चीज है। आरखगेल्स्कमें कितने ही महीनों तक बहुत लम्बी रातें होती हैं। इन रातोंमें वह अक्सर अक्षर, व्याकरण और गणित पढ़ता था, क्योंकि इस समय मछुवाही करनेके लिये जाना नहीं पड़ता था। पास हीके कस्बे खोल्मोगोरीमें एक स्कूल था, लेकिन मछुवेका लड़का होनेके कारण उसे उसमें भर्ती करने से इन्कार कर दिया गया। लोमोनोसोफ विद्याके लिये इतना व्यग्र था, कि एक मछली ले जानेवाली नावपर उसने मास्कोकी ओर प्रयाण कर दिया। अपने किसान या मछुवेके लड़के होनेको छिपाकर ही वह मास्कोकी स्लावानिक ग्रीक-लातिन-अकदमीमें प्रविष्ट हो सका। पाच वर्ष तक बड़ी कठिनाइयोंके साथ उसने वहाँ अध्ययन किया। बीस साल के तगड़े जवान विद्यार्थीसे उसके सहपाठी बायरो और धनी व्यापारियोंके लड़के परिहास करते रहते थे। पढ़ाई समाप्त करनेके बाद लोमोनोसोफको एक अवसर हाथ आया। सरकारकी ओरसे तीन विद्यार्थी उच्च-शिक्षाके लिये युरोप भेजे जानेवाले थे। लोमोनोसोफ असाधारण मेवावी विद्यार्थी था, और बायरोके लड़कोमें से तीन मिल नहीं रहे थे, इसलिये उसे भी युरोप भेज दिया गया। उसने रसायन, धातुशास्त्र, खनिजशास्त्र और गणित अध्ययन करते हुये चार साल वहाँके वैज्ञानिकों और विद्वानों के सम्पर्कमें बिताये। १७४५ ई० में स्वदेश लौटनेपर उसे प्रोफेसर होनेके साथ रूसी विज्ञान अकदमीका पहला रूसी मेम्बर बननेका अवसर मिला। अब तकके बीस वर्षोंमें रूसी साइंस अकदमीके सदस्य विदेशी विशेषकर जर्मन विद्वान् ही होते थे, जिनमेंसे कुछका ज्ञान बहुत ही उयला था। साइंस के क्षेत्रमें लोमोनोसोफने कई नये आविष्कार किये, लेकिन अभी कोई गुणग्राहक नहीं था। लोमोनोसोफ के कितने ही आविष्कारों और वैज्ञानिक सिद्धान्तोंकी पुष्टि १९वीं सदीमें जाकर हुई। लोमोनोसोफने ही तापके यांत्रिक सिद्धान्तको पहलेपहल बतलाया था। रसायनमें भी उसने जो नया सिद्धान्त निकाला था, उसका चालीस वर्ष बाद फ्रेच रसायनवेत्ता लावाजियेने फिरसे पता लगाया, और आज वह सिद्धान्त उसीके नामसे विख्यात है। भूतत्त्वशास्त्रमें भी लोमोनोसोफने धातुओं और धुनोंकी उत्पत्ति का अध्ययन किया, जिससे भूतात्त्विक खोजोंमें बड़ी मदद मिली। वह पहला आदमी था, जिसने बतलाया, कि पत्थरका कोयला पथराये वृक्षों और वनस्पतियोंका अवशेष है। युरोपमें वह पहला आदमी था, जिसने भौतिक रसायनकी व्याख्या करते हुये कई व्याख्यान दिये। ज्योतिषशास्त्र और नाविकशास्त्रके अध्ययनमें भी उसने बहुत समय लगाया। यगसे साठ साल पहले उसने पृथ्वीतलके कम्पनकी बातका पता लगाया। हर्शलसे तीस साल पहले उसने बतलाया, कि बुधके चारों तरफ वातावरण है। नान्सेनसे एक सौ पैंतीस वर्ष पहले उसने ध्रुवीय महासागरके बहनेकी दिशाकी सूचना दी। इस प्रकार हम देख सकते हैं, कि जिन बातोंको हम पश्चिमी युरोप के वैज्ञानिकोंकी मौलिक खोज मानते हैं, वह गलत है। युरोपियनोंने भी विज्ञान की प्रगतिमें बहुत भाग लिया है, लेकिन यह केवल झूठा प्रचार है, कि युरोपीय दिमाग ही सभी बातोंमें मौलिक होनेका ठेका लिये हुये है। रूसी दिमाग बहुत सी बातोंमें उनसे आगे-आगे रहा। और तो और, परमाणु-विदरण का प्रायोगिक सिद्धान्त भी दो रूसी वैज्ञानिकोंने पहलेपहल करके उन्हे छपवा भी दिया था, जिसके सहारे जर्मन और अमेरिकन विज्ञानवेत्ता आगे बढ़े। अपने साम्राज्यविस्तारके लिये जैसे युरोप हथियारोंको चमकाने और लोगोंमें फूट डालने की नीतिको इस्तेमाल करता रहा, वैसे ही अपनी दिमागी श्रेष्ठताका ढिंढोरा पीटकर भी उसने अपनी धाक जमानी चाही।

लोमोनोसोफ प्रयोगका बड़ा भारी पक्षपाती था। उसने तीन हजार प्रयोग करके रगीन काच बनानेकी पद्धतिका आविष्कार किया। लोमोनोसोफने ध्रुवीय सागरसे होकर पूर्वी एसियाको अभियान भेजनेके लिये नक्शा तैयार किया था। वह केवल शुष्क विज्ञानवेत्ता ही न था, बल्कि कवि और

साहित्यकार भी था। हमी साहित्यको उमने धार्मिक भाषामे हटाकर जनभाषाकी ओर ले जानेकी कोशिश की। उसने वैज्ञानिक ढंगपर एक अच्छा हमी व्याकरण लिखा, जो कई पीढ़ियों तक पढ़ाया जाता था। उसकी प्रतिभाके वारेमे हमके कालिदास अलेक्सान्द्र पुश्किनने लिखा था :

“अपने असाधारण बुद्धि-बलके साथ असाधारण इच्छाबल रखते हुये लोमोनोमोफने विद्याकी सभी शाखाओंका अवगाहन किया। उसमें ज्ञानकी असाधारण पिपासा थी। वह इतिहासकार, साहित्यकार, यन्त्रशास्त्री, रसायनशास्त्री, धातुशास्त्री, चित्रकार और कवि था।”

लोमोनोमोफके अन्तिम वर्ष एकातेरिनाके शासनकालमें बीते। उसके कार्योके रूपमें रूसी साहित्य, विज्ञानकी भव्य इमारतकी दृढ़ नींव पड़ी।

१८वीं सदीमें शिक्षाकी ओर शहरोंके मध्यवर्गके लोगोका ध्यान गया था। दूसरी शिक्षण-संस्थाओंमें जगह न मिलनेके कारण अध्यापकोंने अपने घरोंमें छात्रावास-सहित स्कूल खोल रखे थे। वायर और धनी लोग अपने लड़कोंके पढ़ानेके लिये विदेशी शिक्षक रखते थे। फ्रेंचकी महिमा बढ़ती चली गई थी, और १८वीं सदीके मध्य तक अमीरोंके घरोंमें रूसी नहीं फ्रेंच भाषा बोली जाती थी। हमारे आजके कितने ही हिन्दो-आग्लियन परिवारोंकी तरह रूसी अमीर अपने भावोंको अपनी भाषामें मुश्किलसे प्रकट कर सकते थे। वह फ्रेंच बोलनेमें फ्रेंच लोगोका भी कान काटना चाहते थे। उनके यहां फ्रेंच अध्यापकोंकी बड़ी मांग थी, और फ्रांसका कोई भी ऐरा-नैरा-नृत्यखैरा आकर रूसमें अमीरोंके घरोंमें अध्यापक बन जाता था। पुश्किनने अपने लघु उपन्यास “कप्तान कन्या” में इसका बड़ा परिहास किया है। लेकिन, इसका एक अच्छा पहलू भी था। प्रौढ फ्रेंच साहित्यसे रूसी साहित्यको आरम्भमें बड़ी प्रेरणा मिली। उन्हें पढ़कर हमी लेखक मोलियेर, बोल्टेरकी नकल करना चाहते थे। पश्चिमी युरोपके साहित्यकी मांग होनेसे उनके बहुतसे ग्रंथोंके हमीमें घड़ाघड अनुवाद होने लगे। लोमोनोमोफ-समकालीन सुमारोकोफ (१७१८-७७ ई०) हमी भाषाका पहला ख्यातनामा लेखक है। उसने बहुत-से ग्रंथ फ्रेंच शैलीपर लिखे, जिनमें उसके ऐतिहासिक दुःखात नाटक, प्रेम-गीत और प्रहसन अविक जनप्रिय हुये। अपने समयके मास्कोके वारेमें उसने लिखा था “यहांकी सभी सड़कें अज्ञानकी ईंटोंमें सात फुट ऊंची चिनी गई हैं, जिनको तोड़नेके लिये एक सौ मोलियरोकी आवश्यकता है।”

रूसी लेखकोंके मैदानमें आते ही फ्रेंच साहित्यका प्रभाव घटने लगा, यह सुमारोकोफके समयमें ही देखा जाने लगा। सुमारोकोफपर फ्रेंच क्लासिक और ग्रीक साहित्यका बड़ा प्रभाव था। वह हमी साहित्यको भी उसी रगमें रगना चाहता था लेकिन उसके तरुण समसामयिक देनिस फोन-विजिन (१७४५-९२ ई०) ने साहित्यको रूसकी भूमि और रूसके जीवनमें लानेका प्रयत्न किया। १८वीं सदीका अन्त होते-होते रूसको गवरील रोमन-पुत्र देझाविन (१७४३-१८१६ ई०) के रूपमें एक उच्च कोटिका कवि पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने हमी वातावरण और रूसी जीवनको अपनाकर अपनी कविताको जनताके समीप ला दिया। इसके बाद रूसी साहित्य युरोपका मिखारी नहीं रह गया। उमने अपने लेखक और साहित्यकार इतने ‘उच्चकोटिके पैदा किये, जिनका लोहा सभी जगह माना जाने लगा। निकोलाई मिखाइल-पुत्र करमजिन (१७६५-१८२६ ई०) ने अपनी विदेश-यात्राओं द्वारा पश्चिमी युरोपके जीवन और संस्कृतिका चित्र खींचकर हमी पाठकोंके सामने रखा। करमजिनकी “बेचारी लीजा” कथा एक समय बहुत प्रचलित थी, लेकिन करमजिनने पीछे अपना सारा समय रूसी इतिहास लिखनेमें दे दिया।

एकातेरिनाके शासनकालमें नाट्यकला और संगीतकी भी प्रगति हुई। १७५६ ई० में रानी एलिजाबेत्तके शासनकालमें “दुःखान्त-सुखात अभिनयका रूसी तियात्र” के नामसे पीतरबुर्गमें पहली म्यार्या नाट्यशालाका उद्घाटन हुआ। सुमारोकोफ उसका पहला संचालक नियुक्त हुआ, और बोलकोफ तथा उसके माथी पहले अभिनेता। बोलकोफ १७६२ ई०में मर गया, जब कि हमी नाट्यकलाकी प्रगतिका द्वार खुल चुका था। राजधानीके अभिनयोंको देखकर दीहातके अमीरोंने भी अपने यहां निजी रंग-शालाये खोली। हमारे यहां आज भी सूर, तुलसीके धार्मिक गीतोंका ही संगीतमें प्राधान्य चला जा रहा है, लेकिन हममें १८वीं सदीमें ही वर्मनिरपेक्ष संगीतका खूब प्रचार होने लगा था। एकातेरिनाके शासनकाल हमें ओपेरा (पद्यनाटक) का भी प्रचार हो चला।

इसी कालमें चित्रकला और वास्तुकलाने भी रूसमें प्रगति की, जिसमें पश्चिमी कलाकारोंकी सहायता लाभदायक सिद्ध हुई। रूसी वास्तुशास्त्री बाजेनोफने कई अच्छी-अच्छी इमारतें बनाईं। उसकी प्रतिभाकी ख्याति देशकी सीमासे बाहर पहुंच गई और फ्रांसके राजाने बहुत अधिक वेतन देकर उसे बुलाना चाहा, लेकिन बाजेनोफने अपनी प्रतिभाको अपनी जन्मभूमिकी सेवामें ही लगाना चाहा। उसकी बनाई हुई इमारतोंमें स्कोफ-प्रासाद (आधुनिक लेनिन पुस्तकालय) मास्कोमें अब भी मौजूद है।

यात्रिक आविष्कारोंमें भी लोमोनोसोफके दिखलाये रास्तेको रूसियोंने आगे बढ़ाया। इवान इवान-पुत्र पोलजुनोफ (१७२६-६६ ई०) उरालकी किसी छावनीके एक सिपाहीका लड़का था, जिसने “अग्नि-चालित इजन” का पहलेपहल आविष्कार किया। उस समय तक पानीकी शक्तको इस्तेमाल करनेवाले कारखाने जहां-तहां बन चुके थे, लेकिन ऐसे कारखाने उन्हीं जगहोंपर बन सकते थे, जहां बहते पानीकी तेज धारा हो। पोलजुनोफने वाष्प-चालित यंत्रोंके कारखानोंको किसी भी स्थानपर स्थापित करनेके ख्यालसे अपने अग्नि-चालित इजनका आविष्कार किया, लेकिन उसे बर्नॉल (अल्ताई पर्वत) में अपने वाष्प-इजनको चलाकर अपना जीवन खत्म कर देना पड़ा। जेम्स वाटको आज वाष्प-इजनका आविष्कारक कहा जाता है। उससे इक्कीस वर्ष पहले पोलजुनोफने दुनियाका प्रथम वाष्प-इजन तैयार किया था। आविष्कारकी प्रतिभा रूसमें मौजूद थी, लेकिन सामन्तशाही रूस ऐसी प्रतिभाओंको प्रोत्साहन देनेके लिये तैयार नहीं था। १८वीं सदीके दूसरे रूसी आविष्कारक इवान पीतर-पुत्र कुलिबिन (१७३५-१८१८ ई०) की भी उसी तरह उपेक्षा हुई, जैसी पोलजुनोफकी। कुलिबिनने अपने वचनमें ही एक मित्रके घरमें दीवार-घड़ी देखी, और कुछ ही दिनों बाद उसने लकड़ी की उसी तरहकी घड़ी बना दी। बापके मरनेपर वह दूकानके कामके साथ-साथ समय बचाकर घड़िया बनाने लगा। उसने और उसके साथियोंने पांच वर्ष लगाकर अंडेके बराबरकी एक घड़ी बनाई, जिसका उस समय बहुत फैशन चल पड़ा था। कुलिबिनने अपनी घड़ी एकातेरिनाको भेंट की। एकातेरिनाने उसे साइस अकदमीका यात्रिक नियुक्त किया। कुलिबिनने नेवा नदीके लिये एक मेहराब-वाले लकड़ीके पुलका नक्शा तैयार किया, लेकिन उसके नमूनेको आखिरी देखनेके बाद भी किसीने काममें लानेका ख्याल नहीं किया। कुलिबिन अन्तमें बड़ी गरीबीका जीवन बिताते हुये अपने नगर निजनी-नोवगोरोद (आधुनिक गोर्की) में मरा।

**रूस प्रतिगामिताका गढ़**—एकातेरिनाके समय रूस जिस तरहका रूप ले रहा था, उसके बारे-में हम बतला चुके। रूसमें फ्रेंच साहित्य और विचारोंका बड़ा मान था, लेकिन इसी समय १७८९ ई० में फ्रेंच क्रांति हुई, जिसने बतला दिया कि सामन्तशाहीकी नींव बड़ी निर्बल है। फ्रेंच क्रांतिको देखकर यूरोपके सभी मुकुटधारी कांपने लगे थे। इसी समय रूसने एकातेरिनाके मुहसे कहल-वाया—“फ्रेंच राजाका काम सभी राजाओंका काम है।” उसने दृढ़तापूर्वक घोषित किया, कि मैं कहीं भी चमारों (मजूरों) को राज्य-शासन करने नहीं दूंगी। इसे सयोगकी ही बात कहिये, कि एकातेरिनाके स्थानपर रूसका सबसे शक्तिशाली शासक योसफ स्तालिन एक चमारका ही लड़का था। सोलहवें सदीके जब फ्रांसमें मृत्युदंड दिया गया, तो सबसे पहले एकातेरिनाने फ्रेंच गणराज्यमें सबंध विच्छेद कर लिया, फ्रांसमें रहनेवाले सभी रूसियोंको बुला लिया, और क्रांतिसे सहानुभूति रखनेवाले फ्रांसीसियोंको रूससे निर्वासित कर दिया। एकातेरिनाको “फ्रेंच महामारी” का सबसे अधिक डर था, लेकिन उसके ही शासनकालमें फ्रेंच क्रांतिकी विचारधाराके पिताओं—वोल्टेर, दिदरो, रूसोकी पुस्तकें प्रायः सभी रूसी अमीरोंके घरोंमें पाई जाती थी, वह उन्हें मूल फ्रेंचमें पढ़ते थे। इन पुस्तकोंका प्रभाव रूसियोंकी विचारधारापर भी पड़ रहा था, और वह भी समता, भ्रातृभावके पक्षपाती होते जा रहे थे। ऐसे प्रगतिशील तरुणोंमें अलेक्सान्द्र रादिश्चेव पहला आदमी था। वह एक अमीर घराने में १७४९ ई० में पैदा हुआ था। उसने जर्मनीके लाइप्जिग विश्वविद्यालयमें अध्ययन किया था। समानता और स्वतन्त्रताके विचारोंसे भरे हुये रूसोंके ग्रंथोंने उसपर बहुत प्रभाव डाला, और वह स्वेच्छाचारी शासनको बहुत घृणाकी दृष्टिसे देखने लगा। १७९० ई० में उसने अपनी प्रथम पुस्तक “पीतरबुर्गसे मास्कोकी यात्रा” प्रकाशित की। पुस्तककी छः सौ पचास ही प्रतियां निजी तौरसे

छापी गई थी। एकातेरिनाने इस पुस्तकको देखकर कहा—“यह तो पुगाचेफसे भी भारी बदमाश है। इसके लिये दस फासीकी टिकटिया भी पर्याप्त नहीं होगी”। उसने रादिश्चेफको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया। रादिश्चेफने अपनी पुस्तककी भूमिकामें लिखा था

“जब मैंने अपने चारों ओर देखा, तो मानवताकी पीड़ासे मेरा हृदय फटने लगा।” जमींदारों के अत्याचारोंके बारेमें उसने लिखा था—“यह क्रूर पशु, कभी न अधानेवाली जोके, किसानोंके लिये वही छोड़ती है, जिसे वह लेना नहीं चाहती। जमींदार किसानोंके लिये विधान-निर्माता, न्यायाधीश हैं, जिनके कारण कोई अपने बचावके लिये एक शब्द भी नहीं कह सकता।” रादिश्चेफ समझता था, कि इन पशु-जोंक-जमींदारोंका सीधा सवध जारके मिहासनमें है, इसलिये अपनी यात्रामें उसने “स्वतन्त्रता” के नामसे जिस गीतको दिया था, उसमें “लोहेके सिंहासन” को नष्ट करनेके लिये जनता के भयकर बदलेकी वान लिखी थी। सामन्तरामे पैदा हुआ रादिश्चेफ रूसका पहला क्रांतिकारी, प्रजातन्त्र-पक्षपाती तथा प्रगतिशील विचारक था। अदालतने उसे मृत्युदंड दिया, जिसे पीछे दस वर्ष साइबेरिया-निर्वासनके रूपमें परिणत कर दिया गया। एकातेरिनाने रादिश्चेफकी पुस्तककी होली जलवाई। एकातेरिनाके मरनेके बाद उसके उत्तराधिकारी पुत्र पावल I ने जब सार्वजनिक क्षमादान दिया, तो रादिश्चेफकी भी साइबेरियामें लौटनेका मौका मिला, लेकिन उसका राजधानीमें आना निषिद्ध था, और अलेक्जान्द्र I (१८०१-२५ ई०) के समयमें ही उसके ऊपरमें यह निर्वध हटाया गया। उसने स्वतन्त्रता और ममानताके आधारपर राज्यशासनमें सुधार करनेकी योजना बनाई। मत्ताधारी उसे फिर साइबेरियामें निर्वासित करनेकी सोच रहे थे, इसपर रादिश्चेफने विष खाकर १८०२ ई० में अपने जीवनका अन्त कर लिया। एकातेरिनाके समयके स्वतन्त्र विचारकोंमें निकोलाई नोविकोफ भी था, जिनमें नये विचारोंके प्रचारके लिये पुस्तककी दूकान खोली थी। उसने एक प्रहसन और व्यंग्यपूर्ण पत्रिका “त्रूतेन” तथा और भी पत्र निकाले। अपने व्यंग्यमें वह शासकोंकी अच्छी खबर लेता था, और किसानों और अर्ध-दासोंकी पीड़ाको बड़े सजीव रूपमें रखता था। उसकी पुस्तक “एक स्वामीका अपने गावके किसानोंके साथ पत्र-व्यवहार” में बड़े ही मार्मिक रूपमें किसानोंकी विपदाका चित्रण किया गया था।

### १३ पावल I, पीतर III-पुत्र (१७९६-१८०१ ई०)

पावलके शासनके रूपमें अब हम उसके उस समयमें आ जाते हैं, जब कि भारतमें रही-रही सामन्तोंकी स्वतन्त्रता भी अंग्रेज वनियोंकी ईस्ट इंडिया कंपनी छीन रही थी। एकातेरिना अपने पतिके मरवानेसे ही सतुष्ट नहीं थी, बल्कि उसकी महत्त्वाकांक्षाने अपने पुत्रके साथ भी सौहार्द स्थापित करने नहीं दिया। पावलको उसकी दादी एलिजाबेथने पाला था। वह समझता था, मेरी माने मेरे उचित अधिकारको छीन रखा है। एकातेरिना भी इसे समझती थी, इसीलिये वह पावलको राजकाजमें हाथ डालनेका मौका नहीं देती थी। पावल माकी ओरसे दी हुई अपनी जमींदारी गतचिनामें अपना सारा समय सैनिक कार्योंमें बिताता था। उसने गतचिनाको फ्रेड्रिक II के सैनिक नियमोंके अनुसार एक युद्ध-शिविर बना दिया था, जहापर सैनिकोंको प्रुशियन सेनाकी वर्दी पहनाकर डंडोंके हाथों कवायद-परेड कराई जाती थी। सिंहासनपर बैठते ही पावलने बापके कदमोंपर चलते रूसी सेनाको प्रुशियन सेनाके रूपमें परिणत करना शुरू किया। उस समय राजधानी (पीतरबुर्ग) भी बहुत कुछ एक सैनिक शिविरकी तरह मालूम होती थी। राज्यके सभी विभागोंमें उसने कठोर सैनिक अनुशासनके बरते जानेकी माग की। फ्रेंच-क्रांतिकी छाया अभी भी युरोपमें लुप्त नहीं हुई थी। उसके बारेमें वह अपनी मासे बिल्कुल सहमत था। विदेशी आकर कहीं क्रांतिकी महामारी न फैला दें, इसलिये उनके आनेमें उसने निषेध और रूकावट डाल दी। वह रूसी अमीरोंको भी युरोपके विश्वविद्यालयोंमें पढ़नेके लिये जानेकी इजाजत नहीं देता था। बाहरसे हर तरहकी पुस्तकोंका आना उसने बंद कर दिया। उसने जमींदारोंके साथ पहलेसे भी अधिक पक्षपात किया—अपने चार वर्षके शासनमें उसने तीन लाखसे अधिक किसानोंको उनके मालिकोंका अर्ध-दास बना दिया। इसका परिणाम किसानोंका विद्रोह छेड़ और बया हो सकता था? ५० गुवर्नियोंमेंसे बत्तीसमें किसानोंके विद्रोह हुये, जिन्हें दवानेके

लिये पावलने अपनी सेनाका बड़ी क्रूरतापूर्वक उपयोग किया। उस समय अर्थ-दासोंके विक्रयके विज्ञापन सरकारी समाचारपत्रमें बराबर निकला करते थे, जिसके कुछ उदाहरण हैं “विक्रीके लिये दो परिवार अर्थ-दास, जिनमेंसे एक कोड़े और जूते बनानेवाला तीस वर्षका विवाहित मर्द है, उसकी स्त्री धोबिन है, जो पशुओंको चरा सकती है। आयु पच्चीस वर्ष। दूसरा परिवार एक गायक-वादक सत्रह वर्षके मर्दका है। दाम-कामके लिये लिखो, १७-१ अरबत, आप्त १।”

जिस वक्त पावल गद्दीपर बैठा, उस वक्त १७९५ ई० वाली रूस-इंग्लैंडकी मैत्री-सन्धिके अनुसार रूस भी फ्रांसके विरुद्ध लड़ रहा था। पावलने गद्दी सभालते ही अपने देशको विश्राम देनेका निश्चय किया, और अग्रेज राजदूतको सूचित कर दिया, कि हमारी माने सेना भेजनेके लिये कहा था, लेकिन उसे भेजा नहीं जा सकता। इंग्लैंडने पावलको प्रलोभन देकर लड़ाईमें रखना चाहा, और कांसिका द्वीपपर अधिकार करनेके लिये कहा। मित्र जाते वक्त नेपोलियनने माल्टा द्वीपपर अधिकार कर लिया था, जो कि भूमध्यसागरमें बड़े सैनिक महत्वका स्थान था। पावल भी अपनी माकी तरह चाहता था, कि भूमध्यसागरमें पैर रखनेका कोई स्थान मिले। माल्टा-धार्मिक-संगठन माल्टाद्वीपका मालिक था, जिसका जारके दरबारके साथ विशेष सवध था। उसने पावलको सहायताके लिये बुलाया। उधर नेपोलियनने जब तुर्कीके अधीन देश मित्रपर आख गड़ाई, तो तुर्कीने भी अपने पुराने शत्रु रूसके साथ फ्रांसके खिलाफ सैनिक संधि कर ली। अगस्त १७९८ ई० में कालासागर के रूसी जगी वेंडेके सेनापति अदमिरल उशाकोफको हुक्म हुआ, और वह सोलह जहाजों, सात सौ वानवे तोपों और आठ हजार नौसैनिकोंके साथ तुर्की जगी वेंडेकी मददके लिये फ्रांसिसियोंके खिलाफ चल पड़ा। छ सप्ताहमें उशाकोफने यूनिया (यवन) द्वीपोंमेंसे चार छोटे-छोटे द्वीपोंपर अधिकार कर कोरफू द्वीपको लेनेके लिये प्रयाण किया। उस समय वहां छ सौ पचास तोपोंके साथ तीन हजार फ्रेंच सैनिक रहते थे। मुकाबिला बहुत सख्त हुआ, लेकिन १८ फरवरी १७९९ ई० को कोरफूकी फ्रेंच सेनाने आत्म-समर्पण कर दिया। कोरफूके जीतनेके बाद रूसी सेना दक्षिणी इटालीके तटपर उतरी। इतालियन जनता नेपोलियनके विदेशी शासनसे घृणा करती थी। रूसियोंने उसकी सहायतामें नेपल्स और रोमपर अधिकार कर लिया। रूसी सामुद्रिक युद्धविद्याका मूलाचार्य उशाकोफ माना जाता है, और स्थलीय युद्धविद्याका सुवारोफ।

१७९९ ई० के आरम्भमें प्रजातन्त्री फ्रांसके विरुद्ध रूस, इंग्लैंड, आस्ट्रिया, तुर्की तथा नेपल्स-राज्यकी एक गुट बनी। जनवरी १७९९ ई० में नेपोलियनकी सेनाको हराकर नेपल्सवालोंने अपना गणराज्य घोषित किया। पावल नहीं चाहता था, कि नेपल्समें उसके मित्र राजाका इस प्रकार अन्त होकर उसकी जगह इटालीमें पेरिसका एक नया संस्करण स्थापित हो। पावलने नेपल्सके राजाकी मदद के लिये ग्यारह हजार सेना भेजकर हुक्म दिया, कि आस्ट्रियाकी मददके लिये पहिले भेजी गई बीस हजार सेनासे मिलकर आगे बढ़े। आस्ट्रियन सरकारकी मागपर पावलने सुवारोफको सेनापति नियुक्त किया। सुवारोफ आज सोवियत रूसका भी सबसे अधिक सम्माननीय योद्धा है, जिसने उसके नामसे वीरताका एक उच्च तमगा प्रचलित किया। वह १७३० ई० में एक सैनिक अफमरके घर मारकोमें पैदा हुआ था। बचपनमें उसका स्वास्थ्य बहुत खराब और शरीर बड़ा दुर्बल था, इसलिये पिताने उसे लड़कपनमें सेनामें शामिल नहीं किया, लेकिन लड़केने बचपनमें ही सैनिक बातोंमें दिलचस्पी लेनी शुरू की और बापके पासकी सभी सैनिक पुस्तकोंको बड़े ध्यानमें पढ़ डाला। बारह वर्षकी उमरमें उसे रेजिमेंटमें नाम लिखानेका मौका मिला और सत्रह वर्षकी उमरमें कारपोरल (हवलदार) के तौरपर उसने सैनिक जीवन आरम्भ किया। आगे तुर्की और पोलन्दके युद्धोंमें उसने अपने युद्ध-कौशलका परिचय दिया, जिसके कारण उसे फील्ड-मार्शल बना दिया गया। वह गतानुगतिक नहीं, बल्कि “बेलीकपर चलने-वाला सिंह था।” उसने युद्धविद्यामें कई नई बातें निकाली, जिनको आज भी लाल सेना बड़े आदरसे स्वीकार करती है। फ्रेड्रिक II भी एक नये सैनिक विज्ञान और संगठनका आविष्कारक माना जाता है, लेकिन उसका विचार था “मिपाही सिर्फ एक यंत्र है, जिसे निदमोंके अनुसार चालित होना चाहिये।” पावल फ्रेड्रिकके ही सैनिक आदर्शको मानता था, लेकिन सुवारोफ इससे बिल्कुल उल्टा था। उसका कहना था “केशचूर्ण वारुदका चूर्ण नहीं है, झूठे ताले

तोपे नहीं है, लम्बी चोटी तलवारे नहीं है। मैं जर्मन नहीं, बल्कि जन्मजात रूसी हूँ।" भला पावल ऐसे आदमीको क्यों पसंद करता ? १७९७ ई० में उसने फील्ड मार्शल सुवारोफको उसकी जमींदारीमें निर्वा-मित कर दिया। लेकिन जब अंग्रेज और आस्ट्रियन मित्रोंने जोर दिया, तो फिर उसने सुवारोफको बुलाकर १७९९ ई० में फ्रांसके साथ लड़नेवाली मित्रोंकी सेनाओंका प्रधान सेनापति बना दिया। सुवारोफने माडे तीन महीनेके भीतर थ्रेण्ट फ्रेंच सेनापतियोंकी सेनाओंको बुरी तरह से हरा, सारे उनरी इतालमी फ्रांसीसियोंको निकाल बाहर किया। आस्ट्रिया सारे इतालीको अपने हाथमें करनेकी धानमें था, इसलिये वहाना बनाकर सुवारोफको स्विट्जरलैण्ड भेज दिया गया। वटे भीषण पहाड़ी रास्तों और नदियोंको पार करते हुये सुवारोफ स्विट्जरलैण्डकी ओर गया। एक जगह उसकी बीस हजार सेना साठ हजार फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा घेर ली गई। उस समय रूसियोंके पास पर्याप्त रसद, गोला-बारूद और तोप भी नहीं थी। इस स्थितिको देखकर उसने अपनी युद्ध-परिपद् में कहा—“हमें क्या करना होगा ? पीछे हटना अपमानकी वान है, मैं कभी नहीं पीछे हटा। आगे बढाईकी ओर बढ़ना, असम्भव, वहा ममेनाके पास साठ हजार सैनिक है, जब कि हमारे पास केवल बीस हजार है। नाथ ही हमारे पास न रसद है, न गोला-बारूद और न तोपखाना। हमें किसी तरहमें भी मदद मिलनेकी आशा नहीं है। हमारे लिये वम एक ही आशा है, अपनी सेनाकी हिम्मत और आत्म-बलिदानकी भावना। हम रूसी हैं।” इसके बाद फ्रांसीसियोंके प्रहारको रोकते हुये सुवारोफकी सेनाने ४ अक्टूबर १७९९ ई० की रातको आल्पके हिमाच्छादित गिखरोंको पार करनेके लिये पानिखेर डांडेका रास्ता लिया। पहाट बहुत ऊँचे और सीधे खड़े थे। सिपाहियोंको कितनी ही जगह हाथों और पैरोंसे चिपक करके बर्फके ऊपर या सीधी खड़ी चट्टानोंपर सरकना पड़ा। एक खड़ी उतराईमें पकड़नेके लिये न कोई पेड़ था, न चट्टान। सुवारोफके प्रोत्साहनके सामने रूसी सैनिकोंके लिये कोई भी बात असम्भव नहीं थी। वह अपनी बन्दूकें पकड़े इस भीषण उतराईमें बर्फपर फिसल पड़े। डांडा पार करनेके बाद अंत में सुवारोफकी सेनामें पंद्रह हजार आदमी बच रहे। आस्ट्रियाने हमके साथ वचनका पालन नहीं किया।

सुवारोफने इतालीमें जिस तरह चमत्कारपूर्ण विजय प्राप्त की, उससे इंग्लैंड, आस्ट्रिया और हमके बीच में ईर्ष्या और आशंका पैदा होने लगी। आस्ट्रियावाले गुप्त-चुप फ्रांससे सवि करनेके लिये वानचीत चलाने लगे। इसपर पावलने आस्ट्रियाको लिखा

“भविय्यमे तुम्हारी भलाईका ख्याल मैं छोड़ दूंगा, और केवल अपने और अपने मित्रोंके हितको देखूंगा।” उसने गुस्सामें हो सुवारोफको हम लौटनेके लिये लिखा “तुम्हें राजाओंकी रक्षा करनी थी, अब तुम्हें हमके योद्धाओं और अपने राजाके सम्मानकी रक्षा करनी है।”

सुवारोफ बड़ी कठिनाइयोंके साथ अपनी सेनाको हम लौटा ले आया, और उसे हमकी सारी सेनाका “गेनरलस्मिमें” (महामहामेनापति) की उपाधि प्रदान की गई। लेकिन थोड़े ही समय बाद फिर जारने सुवारोफको उपेक्षित कर दिया, राजधानीमें आनेपर लोग उसका राजसी स्वागत न करे इसके लिये उसका दरबारमें आना मना कर दिया। इसी तरह अपमानित और उन्मुख रहने १८ मई १८०० ई० को यह महान् सेनापति मरा। लेकिन आजका रूस उसे जितना सम्मान प्रदान कर रहा है, उतनेकी सुवारोफने आशा भी न की होगी।

इसी बीच पावल और इंग्लैंडके भी संबंध बुरे हो गये, जब कि इंग्लैंडने माल्तापर अधिकार कर लिया। नेपोलियनने इस मुजबसरमें फायदा उठाते हुये पावलके साथ समझौता करना चाहा, और माल्ताको फिरसे अधिकार करनेपर उसे रूसको देने तथा बदलेमें अपने सैनिकोंको लौटानेकी मांग किये बिना सारे हथियारोंके साथ रूसी कैदियोंको मुक्त कर देनेका वचन दिया। दिसम्बर १८०० ई० में पावलके साथ नेपोलियनने निजी लिखा-पढी शुरू की, जिसका जवाब पावलने भी इंग्लैंडके विरुद्ध जहर उगलते हुये दिया “इंग्लैंड अपनी ईर्ष्या, बोखेवाजी और धनसे ही फ्रांसका केवल प्रति-द्वंद्वी नहीं, बल्कि हीन शत्रु होगा। वमकी, पड़्यत्र और पैसोंसे इंग्लैंडने सभी राज्योंको फ्रांसके खिलाफ बड़ा कर दिया—उसके डम पापमें हम भी सम्मिलित हो गये।” अब फ्रांसकी भी स्थिति बदल गई थी। नेपोलियनने फ्रेंच-क्रांतिका गला दवाते ९ नवम्बर १७९९ ई० की प्रतिक्रांति द्वारा वहा

अपनी सैनिक तानाशाही स्थापित कर दी थी। रूस और फ्रांसने चाहा, कि दोनों मिलकर भारतसे अग्रेजोंके शासनको खतम कर दे। जनवरी १८०१ ई० में पावलने दोन-कसाक सेनाको हुक्म दिया, कि वह ओरेनबुर्गसे व्लादा और खीवा होते सीधे सिंधु नदीकी ओर कूच करे। बिना तैयारी किये हुये इतने बड़े अभियानका स्थलमार्गसे भोजना बुद्धिमत्ताकी बात नहीं थी, इसलिये पावलके मरते ही नये सम्राट् अलेक्साण्डर I ने अभियानको रोक दिया। अपने अन्तिम जीवनमें पावलको काकेशस और ईरानके रास्ते भारत पहुचनेकी धुन सवार थी। १८ जनवरी १८२१ ई० को उसने गुरजी (जार्जिया) और रूसके स्वेच्छापूर्वक एकतावद्ध होनेकी घोषणा निकाली। अभी हिन्दुस्तानमें अग्रेजोंकी जड़ अच्छी तरह नहीं जमी थी, इसलिये पावलकी गतिविधिसे अग्रेज बहुत चिंतित थे। पीतरबुर्गमें स्थित अग्रेज राजदूत भी उस पड़्यत्रमें शामिल था, जिसमें पावलको अपने प्राणोंसे हाथ धोना पडा। ११ मार्च १८२१ ई० की रातको युवराज अलेक्साण्डरकी शहसे पड़्यत्रियोंने पावलके कक्षमें घुसकर उसे मार डाला।

**साइबेरियाकी जातियाँ**—यह हम बतला चुके हैं, कि कैसे येरमकने १६वीं सदीमें सिविर राजधानीको लेते वहाके खानको खतम किया, और राजधानीके नामपर देशको सिबेरिया (साइबेरिया) नाम देते रूसकी सीमाको इतिश और तोवोल नदियोंके तट तक पहुचा दिया। १७वीं सदीमें येनीसेइ नदीके तटसे लेकर अखोत्स्क समुद्र तक सारा पूर्वी सिबेरिया भी रूसके हाथमें चला गया। इस विशाल भूभागमें भिन्न-भिन्न सामाजिक और आर्थिक विकासकी स्थितिकी कई जातियाँ रहती थी। येनीसेइसे पूर्व अखोत्स्क समुद्र तक इवेंकी (तुङ्ग-गुस) लोग रहते थे, जो कि पुराण-एसियाई जातिसे सवधित थे। उनके अपने बड़े-बड़े कबीले थे, जिनके अक्सर आपसमें खूनी झगड़े हुआ करते थे। जाडोमें ये लोग सिबेरियाके ताइगामें शिकार करते और गर्मियोंमें मछलीके मौसिममें नदियोंके किनारे चले आते। गर्मियोंमें उनके तम्बू भोजपत्रके छालसे ढके रहते, और जाडोमें वह चमड़ेके होते। वारहसिगा उनका पालतू पशु था, जिसपर वह अपने सामानको ढोया करते थे। अपने दक्षिणी पड़ोसियोंसे उनको लोहा मिल जाता था। कोई-कोई कबीले हड्डियोंके बने हुये कवचको भी इस्तेमाल करते। भड़कीले रगवाले कपड़े और चमकीले आभूषण उन्हें बहुत पसंद थे। वह अपने सारे चेहरे पर गोदना गुदवाते थे। इवेंकी बड़े लडाकू लोग थे। उनके ऊपर अपने ओझो-सयानोका बड़ा प्रभाव था। ये ओझा-सयाने देवताओंको अपने सिरपर बुलाते, विशेष पोशाक पहिनकर तम्बूरिन बजाते खास नाच नाचते थे।

आमूर नदीके मुहानेपर भी प्राचीन पुराण-एसियाई जातिसे सवध रखनेवाली नीवखी (गिलियक) लोग रहते थे, जिनकी मुख्य जीविका मछुवाही थी।

उत्तर-पूर्वी सिबेरियामें ओदूल (यूकागिर), निमिलन (कोर्याक), लूओरावेतलन (चुकची), इतेल्मेन (कम्स्चदाल) जातियाँ अब भी वर्वर अवस्थामें रहती थी। उन्हें लोहेका पता नहीं था। उसकी जगह वह चकमक-पत्थर तथा हड्डियोंके हथियारोंका इस्तेमाल करती थी। उनके छुरे पत्थरके होते थे, और वाणोंके फल चकमकके। लोहेका परिचय उन्हें पहलेपहल रूसियोंद्वारा मिला, इसीलिये अपनी जन-कथाओंमें वह रूसियोंको “लौह-पुरुष” कहने लगे।

ऊपरी येनीसेइ उपत्यकामें प्राचीन कालसे येनीसेइ-किरगिज नामक एक तुर्की जाति रहती थी, जिन्हें चीनी लोग खकास कहते थे, और आज भी खकास ही कहा जाता है। किरगिज येनीसेइके मैदानोंमें घुमन्तू-पशुपालोका जीवन बिताते थे। अल्ताईके पहाडोंमें भी कितनी ही पहाडी जातियाँ बसती थी, जिनमेंसे कुछ लोहधूनसे लोहा बनाकर कई तरहके लोहेके सामानको तैयार करती थी। अल्ताईके इन लोगोंको ओइरोत-मगोलोंने अपने भीतर हजम कर लिया, जिससे इस इलाकेका नाम ओइरोतिया पडा—आज यह ओइरोत-स्वायत्त-जिलेके नामसे सोवियत सघका एक भाग है।

एवैकियोंकी भूमिके मध्यमें लेना-उपत्यकाके पिछले हिस्सेमें तुर्की जातिके याकूत रहते थे। उनकी परंपरासे मालूम होता है, कि एवैकियोंके साथ भारी सघर्षके बाद वैकाल-पार इलाकेके दक्षिणसे आकर वह लेना नदीके तटपर रहने लगे। १७वीं सदीमें याकूत अपने पड़ोसियोंकी अपेक्षा अधिक सम्य थे। उनकी मुख्य जीविका पशुओं और घोडोंका पालन थी। वह लकडीके झोपडोंमें रहते थे, जिनको आग



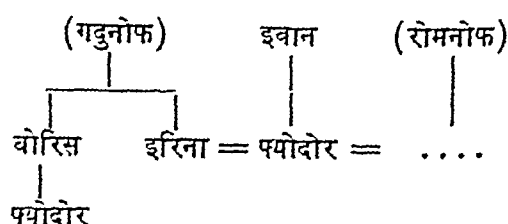
जलाकर गरम किया जाता था। बातुका काम भी वह पुराने ढंगमें जानते थे। उनके बनाये हुये लकड़ी की मुट्ठीवाले छुरे तथा कवच हस्ती भी बहुत पसंद करते थे। १७वीं शताब्दीमें जन-व्यवस्था याकूतोमेंसे उठने लगी, जब कि उनके सरदारोंके पास पशुओंके बड़े-बड़े रेवड और घन एकत्रित होने लगा। उनके पाम माधारण चाकर और दास भी रहते थे। येनिसेइकी शाखा अगारा नदी, वैकाल सरोवर, और ऊपरी लेनाकी भूमियोंमें वृष्यत मंगोल लोग रहते थे। यद्यपि इनकी मुख्य आजीविका पशु-पालन था, लेकिन वह थोड़ी-थोड़ी खेती और बदलेनेके रूपमें कुछ व्यापार भी कर लेते थे। शिकार भी करते थे, लेकिन वह जीविकाका मुख्य साधन नहीं था। याकूतोकी तरह वृष्यतोंके भी शासक उनके सरदार होते थे। आमूर नदीके किनारे दीर और दूसरी मचुरियावाली जातिया रहती थीं। १७वीं सदी में दीर उच्च सम्यताके धनी हो चुके थे। वह गावोंमें रहते, कई तरहके अनाजों और साग-भाजीकी खेती करते तथा फलदार बगीचे लगाते थे। पशुपालन तो वह करते ही थे, साथ ही उन्होंने चीनसे मुर्गी पालना भी सीख लिया था। जंगलमें समूरी जानवरोंका शिकार भी उनके लिये बहुत लाभकी चीज थी। कृषि और समूरी छालके कारण समृद्ध इस इलाकेकी ओर चीनी सामन्तोंका भी ध्यान गया था, और उन्होंने वहां अपनी धाक जमा रखी थी। प्रतिवर्ष चीनी व्यापारी अपने मालको लाकर यहा मार्गे दामोंमें बेच बदलेमें समूरी खाल और दूसरी चीजें सस्तेमें ले जाते थे। दौरोमें धनी लोग अब चीनी रेगम पहनते, चीनी वर्तनोंका इस्तेमाल करते तथा मकान बनाकर चीनियोंकी तरह अपने गवाक्षोंको कागजमें ढाकते थे। उनकी पोशाक भी चीनियों जैसी थी। दौरोके पास कितने ही दुर्गबद्ध नगर थे। किस तरह हस्ती कसाको और दूसरे साहस-यात्रियोंने पूर्वी साइबेरियामें बढकर आमूरके मुहाने तकके सारे भूभागको जीता यह हम बतला चुके हैं।

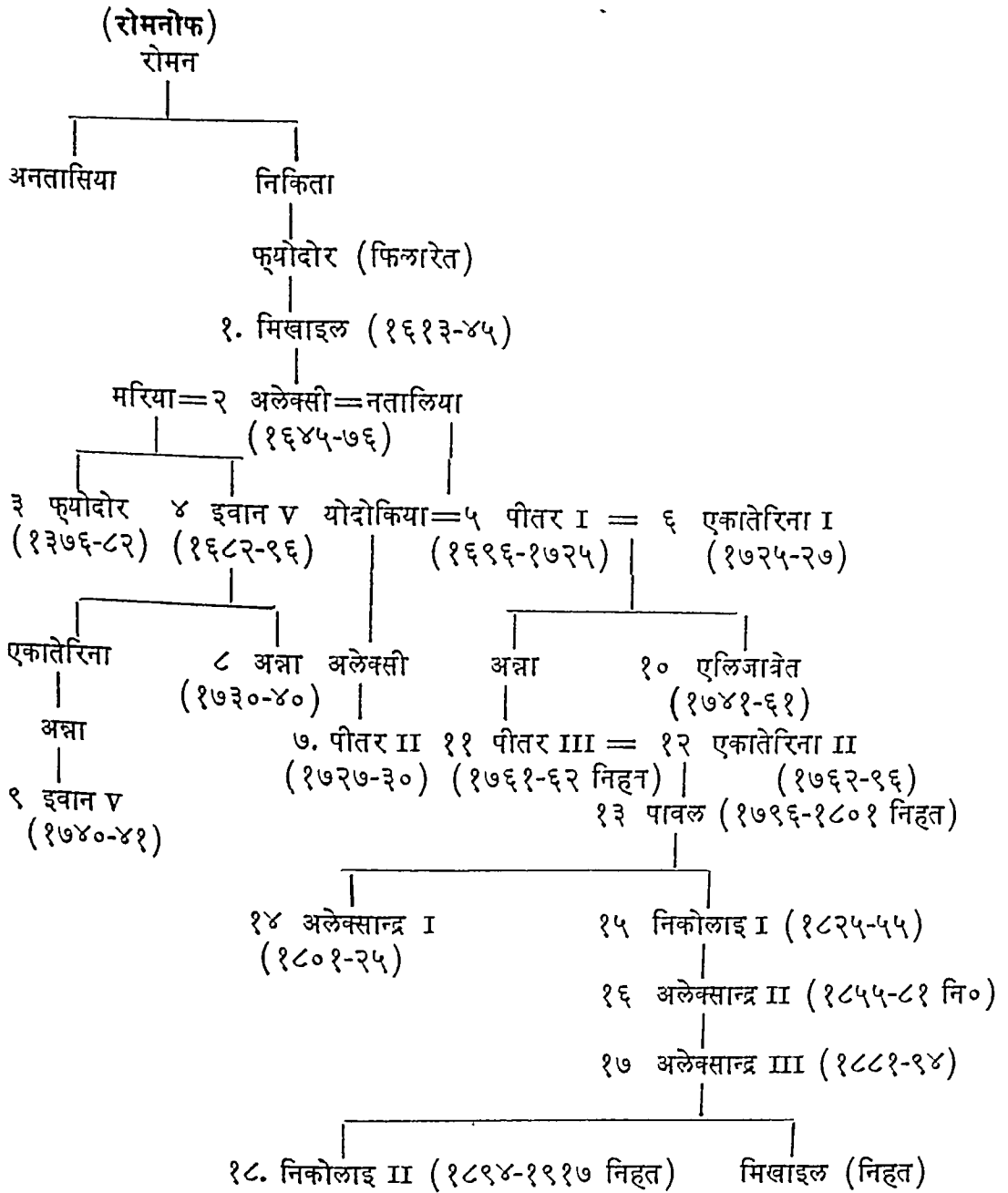
येरमक (१५८१ ई०), खवारोफ (१६४९-५४ ई०) और पीछे मुरायेफ (१८४७— ई०) साइबेरियामें रुमके प्रसारके सबसे बड़े वाहक थे। येरमक और खवारोफके कामोंके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं, और यह भी, कि किस तरह चीनके साथ होते सीमाती झगड़ोंके बारेमें दोनों राष्ट्रोंने प्रयत्न करके समझौता किया।

पावल I १९वीं सदीके पहले वर्षमें मरा। उस समयतक रुसके राज्यका विस्तार पूर्वी पोलैंडको लेते प्रशान्त महासागर और बेरिंगकी खाड़ीतक था। उत्तरमें वह ध्रुवीय महासागरसे लेकर दक्षिमें मध्य-एशियाके सीमातक ही नहीं, बल्कि कहीं-कहीं उसके भीतर भी घुसा हुआ था। काकेशस में गुरजी और उत्तरी आजुर्बैजान उसके हाथमें थे। रुमी सेनाओंने रोम, आल्प्स और बर्लिन तककी विजय-यात्रायें की थीं। पावल हिन्दुस्तानसे अंग्रेजोंको भगाकर अपना शासन कायम करना चाहता था। इस प्रकार १८वीं सदीके अन्ततक रुस दुनियाका एक बहुत ही शक्तिशाली देश बन गया था, इसमें सदेह नहीं। अभी इंग्लैंड उसके मुकाबिलेमें एक धनी धनियेमें अधिक हैसियत नहीं रखता था, लेकिन सारी १९वीं सदीमें, जहां अंग्रेजोंने नई वैज्ञानिक खोजोंसे लाभ उठाकर अपने देशको उद्योग-प्रधान बनाते हुये पूँजीवादी शासनकी दृढ़ स्थापना की, वहां हस्ती अभी सामन्तशाहीका मोह छोड़ने के लिये तैयार नहीं थे, जिनके कारण वह अंग्रेजोंके सामने पिछड़ गये—इस पिछड़ेपनको बड़ी तेजीके साथ सोवियतके समाजवादी शासनने दूर किया।

### ३. (१ जार-वशवुक्ष)

(१५९८—१८०१ ई०)





**चीन-वशावली :** मिङ और छिङ—रूसके पूर्वकी ओर प्रसारके समय उसका मुकाबिला चीनकी शक्तिसे होने लगा था । मंगोल-वश (१२०६-१३६८ ई०) के बादकी चीनी राजावली इस प्रकार है —

**मिङ-वंश १३६८-१६४४ ई०—**राजधानी नानकिङ (१३६८-१४०२ ई०), पेकिङ (१४०३-१६४४ ई०)

रूसी जार

१ ताइ-चू (चू-युवान-चाङ)	१३६८-९८ ई०
२ हुइ-त्ती	१३९८-१४०२ "
३ चेङ-चू	१४०२-२४ "
४ जे-चुङ	१४२४-२५ "
५ स्वान्-चुङ	१४२५-३५ "
६ यिङ-चुङ	१४३५-४९ "
७. ताइ-चुङ	१४४९-५७ "
यिङ-चुङ (पुन )	१४५७-६४ "
३५	

८ सियान्-चुङ	१४६४-८७ "	
९ स्याव-चुङ	१४८७-१५०५ "	
१० वू-चुङ	१५०५-२१ "	
११ मू-चुङ	१५६६-७२ "	
१२ शेन्-चुङ	१५७२-१६२० "	मिखाइल (१६१३-४५)
१३ कुवाद-चुङ	१६२० "	
१४ सी-चुङ	१६२०-२७ "	
१५ मू-चुङ	१६२७ "	
छिङ (म-चू)-वश १५८३-१९११ ई०--राजधानी ल्याव-याङ (१६२१-४३ ई०), पचिङ (१६४४-१९१२ ई०)		
१ ताई-चू नुर-हा-चू	१५८३-१६२७ "	मिखाइल (१६१३-४५)
२ ताई-चुङ (ह्वाङ-ताई-ची)	१६२७-४४ "	
३. शि-चू	१६४४-६१ "	अलेक्सान्द्र I (१६४५-७६)
४ शेङ-चू (खाङ-सी)	१६६१-१७२३ "	फ्योदोर (१६७६-८२)
५ शी-चुङ	१७२३-३५ "	पीतर I (१६९६-१७२५)
६ काउ-चुङ	१७३५-९५ "	एलिजाबेथ (१७४१-६१)
		एकातेरिना II (१७६२-९६)
७. जेन्-चुङ	१७९५-१८२० "	पावल I (१७९६-१८०१)
		अलेक्सान्द्र I (१८०१-२५)
८ स्वान्-चुङ	१८२०-५० "	निकोलाइ I (१८२५-५५)
९. वेन-चुङ	१८५०-६१ "	अलेक्सान्द्र II (१८५५-८१)
१० मू-चुङ	१८६१-७५	अलेक्सान्द्र III (१८८१-९४)
११ ते-चुङ	१८७५-१९०८ "	निकोलाइ (१८९४-१९१७)
१२ पू-यी	१९०८-११ "	

### स्रोत ग्रन्थ

1. History of U.S.S.R. (Ed. A.M. Pankratova, Moscow 1947)
- २ ओचेर्क को इस्तोरिइ कलोनिजात्सिइ सिविरि १७वी-१८वी सदी (मास्को १९४६)
- ३ यज़ीकोज़नानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (म स विलिन्स्की आदि, मास्को १९१४)
- ४ यज़ीकोज़नानिये
- ५ इस्तोरिया अंकातेरिनी वृत्तरोय (२ तोम्, विल्वस्सोफ, वर्लिन १९००)
- ६ इस्तोरिया त्सात्वॉवानिया पेया वेलिकओ (५ जिल्द, ओस्त्रियालोक्, पेत्रेस्वुर्ग, १८१५-७१)
- ७ ओ देकत्रिस्ताल् पो सेमेइनीम् वोस्पोमिनानियाम् (स वोल्खोन्स्की)
- ८ इस्तोरिया सससर (४ जिल्द, व इरव्दोनिकम्)
- ९ क् वप्रोमु ओ ह्यास्तिग्रान्स्त्वे ना रुशि दो व्लादिमिरा (न वोलोन्स्काया, १९१७)

## अध्याय २

### श्वेत-ओर्दू (२)

(१४२५-१७२८ ई०)

#### १. बुराक, बरका, कोइरियक-पुत्र (—१४२७ ई०)

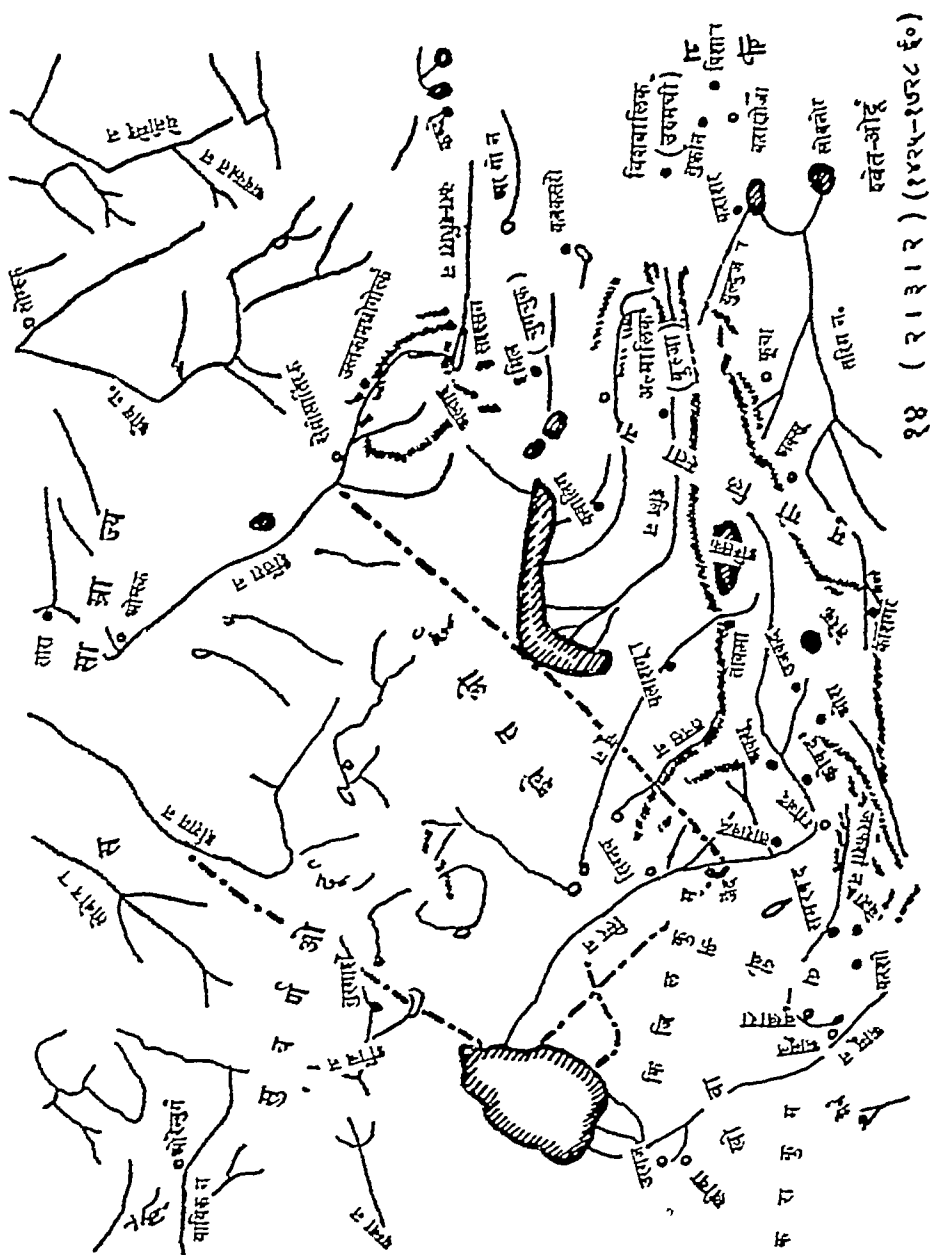
श्वेत-ओर्दू (अक-युर्त) के बारेमें हम पहले कह चुके हैं। उसी ओर्दूके प्रतापी खान बुराकने अपने दक्षिणी पड़ोसियोंकी नाकमें दम कर रक्खा था। बोरक खानकी मृत्यु ८३१ हि० (२२ X १४२७-११ IX १४२८ ई०) में हुई। यही बुराक (बोरक) या बरका श्वेत-ओर्दूकी नई शाखाका संस्थापक था, जिसकी राजधानी सिर-दरियाके तटपर सिगनक थी। बुराक खानके दो बेटे गिराई और जानीवेगमेंसे गिराई बापके मरनेपर गद्दीपर बैठा। इस वंशमें निम्न खान हुए—

१. बुराक, बरका, कोइरियक-पुत्र	—	—१४२७ ई
२. गिराई, बुराक-पुत्र		१४२७— "
३. बेरेदक, गिराई-पुत्र		—१५०९ "
४. कासिम, जानीवेग-पुत्र		१५०९-१८ "
५. मीमाश, यादिक-पुत्र		१५१८— "
६. ताहिर, यादिक-पुत्र		
७. उजियाक अहमद, उज्वेक, जानीवेग-पुत्र		
८. अकनजर, कासिम-पुत्र		—१५८० "
९. शिगाई, यादिक-पुत्र	—	१५८०— "
१०. तवक्कल, शिगाई-पुत्र		—१५९८ "
११. इशिम, शिगाई-पुत्र		१५९८-१६३५ "
१२. जहागीर, इशिम-पुत्र		१६३५-९८ "
१३. तौफीक, तिवका, जहागीर-पुत्र		१६९८-१७१८ "

#### २. गिराई, बुराक-पुत्र (१४२७-ई०)

१४९१ ई० में अबुल्खैर शैबानीका कियचक भूमिमें प्रताप छाया हुआ था, जिसके डरके मारे गिराई और जानीवेग दोनों भाई कियचक छोड़ भागकर इस्सिकुल-काशगर (मुगोलिस्तान)के खान इस्सनबुगाके पास पहुंचे। मुगोलिस्तानी खानने दोनों भाइयोंको चू-उपत्यका और वशीकुजीमें चर-भूमि दी। जब तक १४६९ ई० में अबुल्खैर मर नहीं गया, तब तक दोनों भाइयोंको पश्चिम की ओर नजर डालनेकी हिम्मत नहीं हुई। अब उनके पास दो लाख व्यक्ति हो गये थे—इनके ओर्दूका नाम उज्वेक-कजाक पड़ा था। दोनों भाइयोंने अपनी पितृभूमिके उद्धारका बीड़ा उठाया, लेकिन अबुल्खैरके पुत्र भी दबनेवाले नहीं थे, इसलिये जवर्दस्त संघर्ष शुरू हुआ। मुगोलिस्तानके खान महमूदने एक ओर बुराकके पुत्रोंकी सहायता की, तो दूसरी ओर अबुल्खैरके पुत्र मुहम्मद शैबानीको भी तुकिस्तान शहर देकर सहारा दिया। गिराई और जानीवेग इससे रुष्ट हो गये—“शैबानी हमारा शत्रु है, फिर खान क्यों उससे मेल कर रहा है ?” अन्तमें दोनों भाइयोंने मुगो-

लिस्तानी खान महमूदसे झगडा कर दो लडाइयोमें महमूदको बुरी तरह हराया, जिसका बदला महमूद के छोटे भाई अहमदने उज्बेक-कजाकोंको तीन बार हराकर लिया—इसी समय इनका नाम उज्बेक-कजाक पडा, जिसमें कजाक शब्द साधारण डाकूके लिये नहीं, बल्कि साहसियोंके लिये मध्य-एशियामें



प्रयुक्त होता था—उज्बेक-कजाक (=स्वेत-ओर्दू) का अर्थ पहले “साहसी \* उज्बेक खानके उलुस-वाले” लिया जाता होगा, पीछे कजाक विशेषण नहीं, बल्कि बुराईके पुत्रों गिराई और जानीबेगके अनुयायी स्वेत-ओर्दूका दूसरा नाम ही पड गया, जो आज भी प्रचलित है।

### ३. वेरेदक खान, गिराई-पुत्र (—१५०९ ई०)

गिराई और जानीबेग कब मरे, इसका ठीक पता नहीं है। उनके बाद गिराईका पुत्र वेरेदक उज्बेक-कजाकोंका खान हुआ। उज्बेक खानका पुराना उलुस अब शंवानी और कजाक दो प्रतिद्वंद्वी भागोंमें विभक्त था, जिनका दृढ़ वेरेदकके समयमें भी जारी रहा। आगे चलकर मुहम्मद शंवानी

\*तुर्की भाषामें “कजाक” बहादुर (वीर) को कहते हैं।

के किपचक-तुर्क उज्वेक कहे जाने लगे, और बुराकि-वशके अनुयायी कजाक । वेरेदक उस समय सिगनकमें था, जब कि उज्वेक मुहम्मद शैवानीके पास नोगाई खान मूसाका दूत आया था, और उसने दस्तकिपचकका खान बननेके लिये निमन्त्रण दिया । मुहम्मद शैवानी वहाँ गया । मूसाने स्वागत भी किया, लेकिन अब उज्वेकोका वास्तविक नेता वेरेदक खान था, जिसे पसद नहीं था, कि मुहम्मद शैवानी किपचकका भी खान बने । वेरेदक सेना लेकर आया, लेकिन शैवानीने उसे मार भगाया । पीछे मूसाने अपने वचनको भग कर दिया और अमीरोके राजी न होनेका बहाना करके मुहम्मद शैवानीको खान बनने नहीं दिया । १४९४ ई० में मुहम्मद शैवानी और उसके भाई महमूदने सारे तुर्किस्तान (सिर-उपत्यका) पर अधिकार कर लिया । शैवानीके हटते ही वेरेदक अपनी सेना लेकर सावरानपर चढ़ आया । अमीर मुहम्मद तरखनके कहनेपर नागरिकोंने महमूद शैवानीको पकड़कर वेरेदकके चचेरे भाई जानीबेग-पुत्रके हाथमें दे दिया, जिसने उसे सूजक भेज दिया, लेकिन वह भागकर अपने भाई मुहम्मद शैवानीके पास ओतरार पहुचनेमें सफल हुआ । वेरेदक सावरान शहरको नहीं ले सका था । इसी समय वेरेदकके कजाक मुगोलिस्तानके खानसे मिलकर ओतरारके विरुद्ध अपना सैनिक प्रदर्शन कर लौट आये । इसपर शाहीबेग कजाकोके ऊपर चढ़ दौड़ा । उस समय उनका डेरा अलाताग (वेनोयें) के पास अलाताउके पहाड़ोंमें था । आखिरमें दोनों पक्षोंमें समझौता हो गया । वेरेदकने अपनी लड़की मुहम्मद शैवानीके पुत्र मुहम्मद तेमूर सुल्तानको प्रदान की । लेकिन घुमन्तुओका समझौता तोड़नेके लिये ही हुआ करता था । ११२ हि० (२४ V १५०६-१४ IV १५०७ ई) में कजाकोने फिर अन्तर्वेदपर आक्रमण कर दिया । शैवानीने उनका जवाब दिया । दो साल बाद १५०९ ई० में फिर कजाकोने प्रहार किया । इस समय वेरेदक किपचकोका नाममात्रका खान था, असली शक्ति उसके चचेरे भाई जानीबेग-पुत्र कासिमके हाथमें थी । कजाकोकी दो लाख सेना उसके पास थी । जाड़ोंमें मुहम्मद शैवानी कुरुकमें ठहरा हुआ था । जाड़ोंके अन्तमें यकायक कासिमके चढ़ आनेकी बात सुनकर उसने मुकाविला करना चाहा, लेकिन बहुत हानि उठाकर उसे वहाँसे समरकन्द भागना पड़ा, जहाँसे भी खुरासानमें हटना पड़ा । इसी समय कासिमने कजाक तख्त लेकर वेरेदक खानको समरकन्द भगा दिया ।

#### ४. कासिम, जानीबेग-पुत्र (१५०९-१८ ई०)

अब खानकी गद्दी गिराईके वशसे निकलकर जानीबेगके खान्दानमें चली गई । किपचक-भूमि गिराई-जानीबेगके कजाकोके हाथमें थी । धीरे-धीरे दस्त-किपचककी जगह कजाकस्तानका प्रयोग होता जा रहा था । वेरेदकके शासनकालमें कासिमने अपनी प्रभुता बढ़ा ली थी, लेकिन वह खानके पास यह कहकर नहीं रहता था—“यदि मैं सम्मान नहीं दिखाऊंगा, तो खान नाराज होगा, और सम्मान दिखाना मेरी आत्माके विरुद्ध होगा ।” उस समय वेरेदक सिगनक और मुगोलिस्तानके सीमातपर रहता था । खान हो जानेपर कासिम किपचकोका सबसे शक्तिशाली खान था । उसके पास दस लाख सेना थी । इतनी बड़ी सेना जू-छिके बाद किसी खानके पास नहीं रही । कासिमके नौ भाइयोंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध यादिक या उज्वेक सुल्तान था, जिसने मुगोलिस्तानके खान यूनसकी चौथी लड़की सुल्तान निगार खानम् (तेमूरी सुल्तान अबूसईदके लड़के महमूद मिर्जाकी विधवा)से शादी की थी । यादिकके मरनेपर वह कासिमकी भी बीवी बनी । नोगाई शेखमिर्जासे लड़ाई करते वक्त ९३० हि० (१० XI १५२३-२८ X १५२४ ई०) बेटेने कासिमको मार डाला, और अपने बाप यादिकके स्थानको चचासे छीन लिया ।

#### ५. मीमाश, बिवाश, यादिक-पुत्र (१५१८-ई०)

मीमाशने मुगोलिस्तानके रशीद खानकी लड़की व्याही थी । वह लड़ाईमें मारा गया ।

#### ६. ताहिर, यादिक-पुत्र

भाईके मरनेपर ताहिर गद्दीपर बैठा । ९२९ हि० (२० XI १५२२-११ X १५२३ ई०)

मे उसने स्वयं अपने भाईकी विधवा सुल्तान निगार खानम्को ले जाकर उसके बापके पाम पहुँचा दिया। बाप अपनी बेटीको बहुत प्यार करता था, लेकिन बेटी घुमन्तू जीवनमें तग थी, इसलिये इजाजत लेकर वह अपने भाईके लडके सुल्तान सईदके पास चली गई। बुवाके मक्दसे खान सईदने उठकर स्वागत करना चाहा, मगर ताहिरने चगताई खानका ख्याल करते हुये उसके सामने कोर्निश की। ताहिरकी बहिन रशीद खानसे व्याही गई। ताहिरका मितारा गिर चुका था। पड़ोसी सुल्तानोंमें बराबर लड़ाई-झगडा रहता था। ताहिरने अपने भाई अबुल-कासिम सुल्तानको अपने हाथों मारा, जिसपर उसके उलुसके लोगोंने साथ छोड़ दिया। वह अकेला पुत्रके साथ किर्गिज (वृक्ष) लोगोंमें चला गया। लडका भी बापसे तग आ गया, और ९३६ हि० (५ IX १५२९-२७ VII १५३० ई०) में वह भी साथ छोड़ गया। इसी हालतमें बड़ी दुर्गतिके साथ ताहिरकी मृत्यु हुई। कहा ९२४ हि० (१३ XI-४ VII १५१८ ई०) में उसके पाम दम लाख सेना थी और कहा ९४४ हि० (१० VI १५३७-१ V १५३६ ई०) में उसके कजाकोका चिह्न नहीं रह गया। तीस हजार कजाकोने मुगोलिस्तानमें पहुँचकर ताहिरके भाई बुडदशको खान बनाया, लेकिन अब कजाकोके कई खान थे।

### ७ उजियाक अहमद, उज्वेग, जानीबेक-पुत्र

किपचक कजाकोकी इस गडबड़ीमें जगह-जगह उनके कई खान बन गये थे, जिनमें ही यादिक या सैदिक-पुत्र उजियाक भी था। इमने अधिक दिनो तक शासन नहीं किया। उस समय दस्त-किपचकमें नोगाइयोकी शक्ति बढ गई थी। नोगाइयोंके अमीर मैदकमे लडते हुये उरुक मिर्जाके हाथों उजियाक मरा। उसका पुत्र बुलात (पुलाद, फीलाद) सुल्तान भी अपने पुत्रों सहित नोगाइयोंके हाथों मारा गया। उजियाक खान लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुलखैरका पूर्वज था—यह अबुलखैर शैबानी अबुलखैरसे अलग था। नोगाइयोने ९३२ हि० (१८ X १५२५—८ IX १५२६ ई०) में बहुमत्यक कजाकोको मार भगाया। १५३३ ई० तक नोगाइयोकी शक्ति इतनी बढ गई, कि उन्होंने ताश्कन्द पर अधिकार कर लिया। नोगाई अमीर यूसुफने १५३७ ई० में अपने विजयोंके बारेमें हरिकवशो जार वासिली-पुत्रके पास लिखकर भेजा था।

### ८ अकनजर, कासिम-पुत्र (—१५८० ई०)

प्रतापी कासिम खानके बेटे अकनजरने कजाकोंके लूटे भागको लीटानेकी कोशिश की। अपने विजयोंके कारण अकनजरका यश बहुत दूर-दूर तक फैला। कजाक और किर्गिज उमे अपना खान मानने में गौरव समझते थे। अकसू और मुगोलिस्तानके शासक अब्दुर रशीद खानके पुत्र अब्दुल लतीफ सुल्तान को इसने लडाईमें मारा। ताश्कन्दके राज्यपाल बाबा सुल्तान और शैबानी खान अब्दुल्लाके माय इसकी प्रतिद्विष्टता थी। बाबा सुल्तान शैबानी अब्दुल्लासे डरकर तलस नदीपार कजाकोमें चला गया। दूतने आकर यह खबर मुगोलिस्तानके खानको दी। जाच करनेपर मालूम हुआ, कि अकनजर खान जालिम सुल्तान, यादिक-पुत्र शिगाई सुल्तान आदिके साथ तरस नदीपर डेरा डाले हुये है। शिगाई-पुत्र ओन्दन सुल्तानने अब्दुल करीम सुल्तानकी विधवा पत्नीसे व्याह किया था, और बीबी की बहिन को जालिम सुल्तानके लिये रख रखा था। बाबा सुल्तानके भागकर कजाकोमें शरण लेनेकी बात भी गलत मालूम हुई, इसलिये गलत खबर देनेवाले गुप्तचरको मार डाला गया। मुगोलिस्तानका खान अपनी मेना ले तलसकी ओर बढा। इसकी खबर पाकर कजाकोने खानके स्वागतके लिये अपना दूत भेज आज्ञा शिरोधार्य करनेकी बात कही। सुलहनामा हुआ, जिसमें यह भी शर्त थी, कि बाबाके एक लडकेको—जो अपने कुछ अनुचरोंके साथ कजाकोमें भाग गया था—पकडकर जिंदा या शिर काटकर भेजा जाय। कजाकोंके दूतको खानने खिलत और इनाम दिया, तथा प्रसन्न होकर उन्हें तुर्किस्तान के चार शहर भी प्रदान किये। मुगोलिस्तानके खानकी उदारतासे तुर्किस्तानमें कजाकोंके पैर जम गये, और पीछे वह खानके राज्यमें भी लूटमार करने लगे। मुगोलिस्तानी ताश्कन्दका राज्यपाल

कजाकोको रोकनेमें असमर्थ रहा । उसने यस्सी (तुर्किस्तान) और सावरानके शहरोको भी उनके हाथमें जाने दिया । बाबा अपने आदमियोंके साथ समरकन्द चला गया । उसने खानके विरुद्ध लड़ने के लिये कजाकोको मिलानेके वास्ते जानकुली वेगको दूत बनाकर अपने ससुर जालिम सुल्तानके पास भेजा । कजाक इसके लिये तैयार नहीं थे, बल्कि उन्होंने जानकुलीको भी मार डालना चाहा । किसी तरह हत्यारोके हाथसे बचकर उसने बाबाको खबर दी, कि जालिम सुल्तानको तुम्हें मारनेके लिये नियुक्त किया गया है । यकायक जालिम और अकनजरके दो पुत्र काफी सेना ले बाबाकी ओर दौड़े । शरावखानी नदीके तटपर बाबासे उनकी भेंट हुई । उसे अकनजरके पास चलनेके लिये कहा । बाबा जानता ही था, उसके साथ क्या होनेवाला है, इसलिये उसने अपने सैनिकोंको तलवार निकालकर उन्हें काट डालनेका हुक्म दिया । जमीनको उनके खूनसे लाल कर उसने अपने भाई वूजाखुरको अकनजरपर चढ़ाई करनेके लिये कहा—यह १५८० ई० (अकबरके समय) की बात है । शायद इसी लड़ाईमें कई सुल्तानोंके साथ अकनजर मारा गया । अकनजर नोगाइयोका दुश्मन था । नोगाइयोपर इस समय रूसियोंका प्रहार हो रहा था, इसलिये अकनजर रूसियोंसे मेल करना चाहता था ।

## ९ शिगाई, सैदिक (यादिक)-पुत्र (१५८०—ई०)

अकनजरके बाद १५०३ ई० में मारे गये सैदिकका पुत्र शिगाई गद्दीपर बैठा । यह अनुभवी और राजनीति-पटु खान था । इसने एक बार तलसमें बाबाके ऊपर अचानक असफल आक्रमण किया । १५८१ ई० में बाबा सिर-दरियाके पास कराताउमें डेरा डाले हुये था । यही उससे मिलनेके लिये तवक्कलके साथ शिगाईका पुत्र आया । दोनोंमें मित्रतापूर्ण बातचीत हुई । अब्दुल्ला शिगाईको खोजन्दका राज्यपाल बना तवक्कलको अपने साथ समरकन्द ले गया । तवक्कलने शैबानी खानके यहा निशानाबाजीमें प्रसिद्धि पाई । खानके बागकी बगलमें बन्दूक चलानेका एक भारी खेल हो रहा था, जहा लम्बे खम्भोपर लटकती सोने-चादीकी चमकती गोलियोंपर लोग निशाना लगा रहे थे । इस कठिन लक्ष्य-वेधको तवक्कलने करके दिखाया और इस प्रकार उसे अब्दुल्ला खानसे ज्यादा समीपता प्राप्त हुई । इसके बाद ही जनवरी १५८२ ई० में अब्दुल्ला खानने बाबा सुल्तानके विरुद्ध उलुगतागकी ओर अभियान किया । सिर दरियाके बाद अरिसको भी पार करनेपर सुना, कि बाबा दशतेकिपचककी ओर चला गया है । इसपर अब्दुल्ला अरिस-तटपर अवस्थित कराअसमन (करा-सामा) में कुछ सेना छोड़ बुगान-चोयान नदियोंसे असलनलिकतोईकान (तुर्किस्तान शहरके पास गाव) होते सरीसू पार हो अप्रैलमें उलुगताग पहुँचा । वहा पता लगा, कि बाबा मगीतो (नोगाइयो) में शरणापन्न हुआ है । बाबाका पीछा करनेके लिये एक सेना छोड़ अब्दुल्ला राजबानीकी ओर लौटा, लेकिन सावरानके मुहासिरमें दो मासतक रुकना पड़ा । अब्दुल्ला (शैबानी खान) सावरान नदी पारकर शिकार खेलने गया था, जहा उसका पुत्र अब्दुल मोमिन सुल्तान खो गया, जिसे पहुँचा कर शिगाईके छोटे भाई यानवहादुर सुल्तानने शैबानी खानसे बहुत इनाम पाया ।

शिगाई खान अन्तर्वेदके प्रतापी शाबानी खान अब्दुल्लाका पड़ोसी और प्रतिद्वंद्वी था । उसने एक बार फिर किपचकमें शत्रुओंके विरुद्ध अभियान किया । तवक्कलने अपने कजाकोके साथ शत्रुका पथप्रदर्शन किया, और वह केन्द्रलिक नदी पार हो गये । यही जू-छि खानकी कन्न थी, जिसके पास ही उसके कुछ दूत दुश्मनके हाथोंमें पड़कर मारे गये । खबर पा बाबा सुल्तान नोगाइयोमें भाग गया, और कुछ आदमियोंको शिगाई खानने पकड़कर लूटा । शिगाई खानकी सरगरमीको सुनकर अब्दुल्ला खान फिर उलुगतागकी ओर चला, और ईलाचिक (जिलाचिग) में शिगाईने आकर उससे मुलाकात की, इस प्रकार झगडा नहीं हुआ । सिविरके प्रसिद्ध खान कूचुमके भाई अहमद गिराईने “बुखारा” के अमीर गिराईकी लड़कीको व्याहा था । उनके बुरे वर्तविके कारण नाराज हो शिगाईने आकर उसे इर्तिशके तटपर मार डाला । जगताई शाहजादी याशिम बेकिमसे उसे तुकाई या तवक्कल पुत्र पैदा हुआ था, जो बापके बाद कजाकोका खान बना ।



## १० तवक्कल, शिगाई-पुत्र (१५९८ ई०)

बाबा सुल्तान और शैवानी अब्दुल्ला खानका झगडा इसके समयमें भी चलता रहा । तवक्कल अब्दुल्ला शैवानीके दरवारमें एक बार नाम कमा चुका था । वह शैवानी खानका समर्थक था । जब १५८२-८३ ई०में अपने उलुगतागवाले प्रसिद्ध अभियानमें शैवानी खान लौट रहा था, उसी समय तवक्कल अककुरगानमें अपने पशुओंकी देखभाल कर रहा था । उसने सुना कि बाबाका भाई सुल्तान ताहिर अभी-अभी सुगकके डांडेसे पार हुआ है । तवक्कलने पीछा करके ताहिरको पकड़कर अब्दुल्लाके हाथमें दे दिया । खानने उसे जरबफ्तकी खिलअत और इनाम दिया । कुछ ही दिनों बाद तवक्कलने बाबा सुल्तान, जानमुहम्मद अतालीक, बाबाके पुत्र लतीफ सुल्तान और दूसरोके शिर काटकर अब्दुल्लाके पास भेंट किये । खानने बहुत भारी इनाम दे उसे समरकन्दके सबसे अच्छे इलाके आफरीकदका राज्यपाल बना दिया, जहां अब्दुल्ला स्वयं बापके समय राज्यपाल था । तवक्कलके हाथमें बाबाके पड़नेके वारेमें कहा जाता है नोगाइयोमें जानेपर उसे विश्वासघातका डर लगने लगा, तब उसने भागकर तुरा (साइबेरिया)की ओर जाना चाहा । फिर आशा हुई, कि शायद अपने लोगोसे मदद मिले, इसलिये तुर्किस्तानकी ओर मुड़ पडा । रास्तेमें सिगनकमें ठहरकर उसने अपने दो कलमक सहायकोको पता लगानेके लिये भेजा । दोनों कलमक तवक्कलके हाथमें पड़ गये, और उन्होंने तवक्कलको साथ ले तम्बूमें पड़े बाबाका शिर कटवानेमें सहायता की ।

तवक्कल दो लाख कजाक-परिवारोंका खान था । इस समय कलमक भी बहुत शक्तिशाली हो चुके थे । तवक्कलने अपने कजाकोको लेकर एक बार कलमकोके देशपर हमला किया । इसपर कलमक राजाने अपने सैनिकोंको यह कहकर भेजा, कि तवक्कलका शिर लिये विना न लौटना । कलमकोकी भारी सेना देखकर तवक्कल ताश्कन्दकी ओर भागा, लेकिन कलमकोने पीछा करके उसके आगे आदमियोंको बंदी बना लिया । बाकी बचे ताश्कन्द पहुंचे, जिसका राज्यपाल नौरोज अहमद वुराक खान था । तवक्कलने उसके पास दूत भेजकर कहलवाया—“मैं तुम्हारे देशमें आया हूँ, तुम्हारी शरण लेना चाहता हूँ । हम दोनों छिड़-गिस् खानके वंशज हैं, अतएव एक दूसरेके सखी हैं । दोनों मुसलमान होनेसे धर्म-भाई भी हैं । मेरी सहायता करो और आओ हम दोनों मिलकर कलमकोसे लड़ें ।” वुराक खानने जवाब दिया—“अगर हमारे-तुम्हारे जैसे दस अमीर भी एक हो जायें, तो भी हम कलमकोका कुछ नहीं बिगाड़ सकते । वह याजूजके ओर्दूकी तरह असह्य है ।”

तवक्कलने अन्तमें भागकर अब्दुल्ला खान शैवानीकी शरण ली । १५८३ ई० में अन्दिजान और फरगाना पर अब्दुल्लाने जो अभियान किया था, उसमें तवक्कल उसके साथ था । इसी समय तवक्कलको पता लगा, कि अब्दुल्लाके भाव उसके प्रति अच्छे नहीं हैं, इसलिये वह उसके हाथसे निकलकर दशत-किपचकमें चला गया । १५८६ ई० में अब्दुल्लाको दूसरी जगह फसा देखकर तवक्कलने तुर्किस्तान, ताश्कन्द ही नहीं समरकन्दको भी खतरेमें डाल दिया । अन्तर्वेदसे छोटी-सी सेना आई, जिससे शराव-खाना (ताश्कन्द इलाकेमें) में लड़ाई हुई । कजाकोके पास अच्छे हथियार नहीं थे, कवचकी जगह उनके पास चमड़ेके कोट थे, लेकिन वह बड़े बहादुर थे, इसलिये अब्दुल्लाके उज्वेक बुरी तरहसे हारे । अब्दुल्लाके भाई उवैदुल्ला सुल्तानने समरकन्दमें पराजयकी खबर सुनी, तो वह सेना ले सिर नदी पार हो ताश्कन्द पहुंचा । तवक्कल उस समय सैरामके पास डेरा डाले पडा था । भारी सेनाकी खबर पाकर वह किपचकभूमि की ओर लौटा, जहां कुछ समय तक उवैदुल्लाने उसका पीछा करनेका असफल प्रयत्न किया ।

१५८८ ई० में अब्दुल्ला खानके बहनोंई, रस्तम-पुत्र जानीवेग-पौत्र उज्वेकन ताश्कन्दके राज्यपाल रहते समय विद्रोह कर दिया । ताश्कन्द-शाहखिया-खोजदके लोगोंने कजाक-सुल्तान जानअलीको अपना खान घोषित किया । विद्रोहमें अकनजरके पुत्रो मुगाताई और दीनमुहम्मदने भी भाग लिया ।

इन लडाइयोंसे मालूम होगा, कि शैबानियोंके प्रतापी खान अब्दुल्लाको उत्तरके घुमन्तू कितना परेशान किये रहते थे। १५९४ ई० में तवक्कलने जार फ्योदोर इवान-पुत्रके पास अपना दूत भेजकर निवेदन किया, कि मैं अपने उलुसके साथ जारकी प्रजा बनना चाहता हूँ, मेरे भतीजे उराज मोहमेतको मुक्त कर दिया जाय। मार्च १५९५ ई० में जारने तवक्कलके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया, और कुछ वारूदी हथियार भेजकर उससे कहा, कि बुखाराके खान अब्दुल्लाके साथ शांति रखो, सिविरखान कूचुमको अधीन बनाओ। भतीजेको हम मुक्त कर रहे हैं। उसकी जगह दरबारमें अपने पुत्रको भेजो।

लेकिन, तवक्कल भला अन्तर्वेदकी लूटसे अपनेको क्यों वंचित होने देता? १५९७ ई० में अब्दुल्ला और उसके पुत्र अब्दुल मोमिनके बीचके झगड़ेकी खबर उसे तुर्किस्तानमें मिली। तवक्कल खान—अब वही खान था—बहुत-से कजाक अमीरो और सैनिकोंके साथ ताश्कन्दकी ओर बढ़ा। अब्दुल्लाने तवक्कलको कोई महत्त्व नहीं दिया, और उसके मुकाविलेके लिये कुछ सुल्तानों, शाहजादों और पड़ोसी अमीरोंको थोड़ी सेना देकर भेजा। ताश्कन्द और समरकन्दके बीच सख्त लड़ाई हुई, जिसमें अब्दुल्लाकी सेना हारी, बहुतसे सेनापति मारे गये, बाकी बुखारा भाग गये। अब्दुल्ला मुकाविलेके लिये बुखारासे समरकन्दकी ओर चला, लेकिन बीच हीमें बीमार होकर मर गया। अब तवक्कलकी वन आई। उसने भारी सेना ले तुर्किस्तानसे अन्तर्वेदमें घुसकर अकसी, अन्दिजान, ताश्कन्द, समरकन्द तथा मियानकुल तकके प्रदेशपर अधिकार कर लिया। फिर अपने भाई इशिम सुल्तानको बीस हजार सेना दे समरकन्दमें छोड़ सत्तर-अस्सी हजार सेनाके साथ बुखारापर चढ़ा। पीर मुहम्मद पंद्रह हजार सैनिकोंके साथ बुखाराकी रक्षापर नियुक्त था। उसने शहरके दरवाजोंको बन्द कर लिया, और बीच-बीचमें निकल कर कजाकोंके ऊपर ग्यारह दिनोतक वह छापा मारता रहा। बारहवें दिन सारी सेना शहरसे बाहर निकल आई। शाम तक भयकर युद्ध हुआ। कजाक हारकर तितर-बितर हो गये। धोखा देनेके लिये डेरोमें आग जली छोड़ तवक्कल रातको ही चला गया था। इस हारकी खबर समरकन्दमें इशिमको मिली। उसने अपने भाईके पास सदेश भेजा—“तुम्हें बहुत लज्जा आनी चाहिये, कि मुट्ठीभर बुखारियोंने इतनी भारी सेनाको हरा दिया। अगर तुम यहाँ आये, तो हो सकता है, समरकन्दके लोग तुम्हारा स्वागत नहीं करे। खानको देश लौटना चाहिये, और मैं भी अपनी सेना लेकर उसके साथ मिलनेके लिये आ रहा हूँ।” तवक्कल अपने भाईके साथ लौटा। मियानकुल प्रदेशके उजुनसुकाल स्थानमें पीर मुहम्मद पीछा करते हुये सामने आया। एक महीने तक दोनोंकी झड़प होती रही, इसके बाद तवक्कल ने धावा बोल दिया। पीर मुहम्मदके सबधी सैयद मुहम्मद सुल्तान और दूसरा अकसर मुहम्मद बाकी अतालीक काम आये। तवक्कल भी लड़ाईमें घायल हुआ, और लौटते समय १५९८ ई० में ताश्कन्दमें मर गया। उज्वेको और कजाकोंके युद्धका कोई फैसला नहीं हुआ।

## ११ इशिम, शिगाई-पुत्र (१५९८—१६३५ई०)

भाईके मरनेपर इशिमने कजाकोंका नेतृत्व ग्रहण किया। उसने पहले बुखाराके विरुद्ध कोई भारी कदम उठाना नहीं चाहा। १६११ ई० में बुखाराके अधिकारच्युत खान वली मुहम्मद और उसके भतीजे इमामकुल्लीके झगड़ेमें इशिम पाँच हजार कजाकोंके साथ शामिल हुआ। वली मुहम्मद मारा गया। इस सघर्षमें इशिमका भाई सैयदबी भी शामिल हुआ था। उरगज (ख्वारेज्म)से भागा अबुलगाजी १६२५ ई० में इशिम खानके पास तुर्किस्तान शहरमें आकर तीन मास तक रहा। ताश्कन्द का तुरसुन खान (अकनजर-पुत्र) जब तुर्किस्तानमें आया था, तो इशिमने अबुलगाजीका यह कहकर उससे परिचय कराया—“यह यादगार-खानके वंशज अबुलगाजी हैं। इनसे पहले हमारे यहाँ ऐसे राजकुमारने शरण नहीं ली, यद्यपि दूसरे बहुत-से राजकुमारोंने शरण ली थी।” तुरसुन खान अबुलगाजीको अपने साथ ताश्कन्द ले गया। दो साल बाद १६२७ ई० में इशिमने तुरसुनको मार दिया, लेकिन अबुलगाजीको इमामकुल्ली खानके पास बुखारा जानेकी इजाजत दे दी। कजाकों और बुखाराके खान इमामकुल्लीके बीच झगडा-लड़ाई चलती रही। कजाकोंने दो बार १६२१ ई० में बुखारियोंको हराया था। अकनजर खानके पुत्र तुरसुन मुहम्मदने बीचमें पड़कर समझौता करवाया।

अब कजाकोके भारी शत्रु पूर्वमे जुगारियाके कल्मक (मंगोल) थे, जिनके आक्रमण उनके ऊपर बराबर हो रहे थे। १६३५ ई० मे इशिम खानने कल्मक राजा वातुर खुड तैशीके साथ लड़ाई मोल लेकर कजाकोके ऊपर आफतका पहाड़ ढा दिया। कजाक सेनाका सेनापति इशिम-पुत्र यमगीर (जहागीर) सुल्तान कल्मकोके हाथमे बंदी बना। इसीके आसपास इशिम मर गया।

## १२ यमगीर, जहागीर, इशिम-पुत्र (१६३५-९८ ई०)

मित्रताका वादा करके जहागीर मुक्त हो गया, लेकिन कजाकोका खान वननेके बाद उसने फिर जुगरो (कल्मको) से छेड़खानी शुरू की। अन्तमे १६४३ ई० मे पचास हजार सेना लेकर वातुर खुड-तैशी उसके ऊपर पड़ा, और अलतन किर्गिजों और तोकमक कबीलोको पकड़कर अपने साथ ले गया। इस लड़ाईमे जुगरोने कजाक सेनाका इतना मर्यानाश कर दिया, कि जहागीरके पास सिर्फ छ सौ आदमी रह गये। वह दो पहाड़ोंके बीच तामे छिपा हुआ था, जब कि कल्मकोने आक्रमण किया। जहागीरने पीछेसे कल्मकोपर आक्रमण किया। उसके वारूदी हथियारोंने कल्मकोके बीचमे गजब ढाया। दस हजार कल्मक मारे गये। फिर जल्दी ही बीस हजार सेना जमा करके जहागीर यलानतुश पहुंचा। वातुरको असफल लौटना पड़ा। अगले साल १६४४ ई० मे वातुरने फिर अपने आदमियोंको कजाकोके साथ लड़नेके लिये जमा किया, लेकिन जहागीरका मित्र खोसोत मंगोल कबीलेके सरदार कुर्देलिग तार्ईशी बीचमे पड़ा। इस प्रकार कल्मको और कजाकोका युद्ध उस समय बच गया, और जहागीर तुर्किस्तान चला गया।

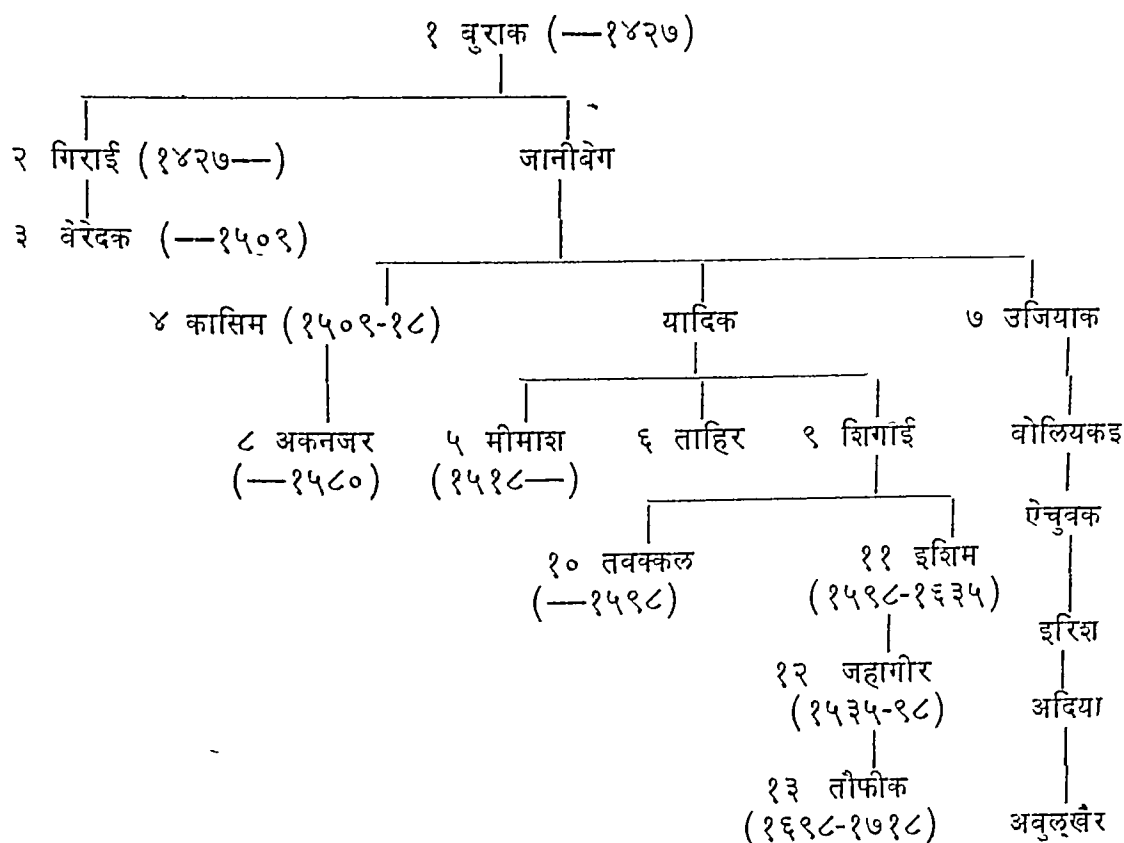
## १३ तौफीक, तवका, तिअवका, जहागीर-पुत्र (१६९८-१७१८ ई०)

कजाक खानोमे यह अत्यन्त प्रसिद्ध और जनप्रिय खान था। घुमन्तुओंके झगड़ोंको शांतिपूर्वक मिटानेमे इसने बड़ी सफलता पाई। कमजोर कबीलोको वह सहानुभूतिसे अपनी ओर मिला लेता, शक्तिशाली कबीलोको इज्जत करना सिखलाता। इसीने कजाकोको तीन ओर्दुओमे बांटा। एक तरह यह बटवारा बहुत प्राचीन समयसे चला आता था, जब कि इनके पूर्वज आगूज-नुर्क कहे जाते थे। तिअवकाने उनकी जगहपर तीन विभाग किये, और महाओर्दूके लिये तिवोल, मध्यओर्दूके लिये कज्जेक और लघुओर्दूके लिये एतियकको केन्द्र बनाया। तौफीकके जीवनभर कजाक एकताबद्ध रहे। तुर्किस्तान शहर उसकी राजधानी थी।

१६९८ ई० मे जुगर राजा छेवड-अर्चनने कजाकोके साथ हुये सघर्षोंके बारेमे चीन-सम्राट्के पास लिखा था—'दूसरे कल्मक राजा गदनने तौफीकके पुत्रको पकड़कर दलाई लामाके पास भेज दलाई लामाके बीचमे पड़नेके लिये कहा, इस पर पुत्रको पांच सौ आदमियोंके साथ छोड़ दिया गया। उस (तौफीक-पुत्र)ने विश्वासघात करके मेरे आदमियोंको मार डाला, और सरदार, उसकी बीवी, उसके बच्चोंको एक सौ किवितका (परिवारों) के साथ छीन लिया। यह घटना हुलियान हान (संभवतः कल्मकोका ग्रीष्म वासस्थान उलुगताग-पर्वतमाला)मे हुई। तवकाने इसके बाद अपनी बहिनके साथ बापके पास जाते तोरगुत राजा आयुकापर रास्तेमे हमला किया। फिर हमारे देश से अपने देश लौटकर जाते एक रूसी करवाको लूटा।' यह सब दोष कल्मकोने तवका (तौफीक) और उसके कजाको पर लगाया। कल्मकोके साथ लड़ाई लड़कर कजाकोने अपना भारी अनिष्ट किया। इसीके कारण वह अपनी पुरानी भूमिसे भागनेके लिये मजबूर हुये, और उनके कबीले भी छिन्न-भिन्न हो गये। अन्तिम दिनोमे तवका खानका भी जोर कम हो गया। उसके सरदार अपने-अपने कबीलोको ले स्वतन्त्र हो गये। कजाकोके तीनों ओर्दू अपने स्वतन्त्र अमीरोंके शासनमे रहने लगे, जिनमे मध्य-ओर्दू बहुमह्यक और अधिक शक्तिशाली था, यही अपनेको श्वेत-ओर्दूका असली उत्तराधिकारी मानता था। १७१८ ई० मे कल्मकोके आक्रमणमे परेशान होकर तौफीक खान, खायेंप खान और अब्दुल्वर खानने साइबेरियामे जार पीतर I के राज्यपाल राजुल गगारिनके सामने जाकर अपनेको रूसके अधीन कर दिया। तवका १७१८ ई० में मरा।

३ (२ श्वेत-ओर्दू-वशवृक्ष)  
(१४२५-१७२८ ई०)

जू-छि



स्रोत ग्रन्थ

- १ तारीखे-रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर)
२. History of Mongol (H H. Howorth)

## अध्याय ३

# नोगाई

(१३००-१७२४ ई०)

१ नोगाई (-१२९९ ई०)

किपचक भूमिमें प्राचीन समयसे ही वहाके तुर्क कबीलोंको अपने मामन्तोंके नामपर नया नाम लेते देखा जाता है, इसलिये नोगाई नाम होनेका यह अर्थ नहीं, कि उनका आरम्भ जू-छि-प्रपौत्र तेवल-पुत्र तारतार-पुत्र नोगाईके समयमें होता है। इसाकी आरम्भिक सदियोंमें हूणोंको हमने बल्काशमें कास्पियनके उत्तरी तट तक फैलते देखा, उनमें पहले यह भूमि शकोकी थी। एक तरह मंगोलायित जातिका इस भूभागमें निवास इसी समयसे आरम्भ होता है। तुर्कोंकी मारसे जब पूर्वके अवार भागें, तो इनमेंसे कितनोंने अवारका नाम कायम रक्खा और कितने ही अपनी बैल-गाड़ियोंपर घुमन्तू-जीवन वितानेके कारण कट या कट-ली कहे गये। अवारोंने ठप्पा प्राचीन हूणोंके इन वंशजोंपर अपने नामका नहीं लगाया, लेकिन अवारोंके प्रतिद्वंद्वी और उत्तराधिकारी तुर्कोंने जब चीनकी सीमामें कास्पियनके उत्तर तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया, तबमें इन्हें तुर्क कहा जाने लगा—आज भी इस भूमिके उनके वंशज कजाक तुर्काकी एक शाखा माने जाते हैं। मंगोलोंके समयमें इन असत्य मंगोलायित ओर्दोओंमें एकका नाम खानजादा नोगाईके नाममें नोगाई पडा। उसमें पहले नोगाई कहे जानेवाले कबीले बोलगामें पश्चिममें दनियेपरके पार तक दक्षिणी रूसमें पेचेनगाके नाममें चरवाहीका जीवन बिताते थे। पेचेनगा जू-छिके पुत्र तेवल या तारतारको जागीरमें दिये गये थे, जो पीछे उसके पुत्र नोगाईके हाथमें आये। नोगाई सुवर्ण-ओर्दूके प्रतापी खान वरकाके समय प्रधान-नेनापति था। उसने ईरानके हुलाकू-वंशी खानोंको कई बार काकेशसकी भूमिमें हराया था, यह हम बतला आये हैं। इसने कान्स्तन्तिनोपलके सम्राट् मिखाइल पलियोलोगम् (१२००-६१ ई०) की लडकी यूफियोसिनेमें व्याह किया था। मिखाइलकी दूसरी लडकी मरिया हुलाकू खानमें व्याही थी। नोगाई बहुत प्रभावशाली मंगोल राजकुमार था, यह भी हम बतला चुके हैं। दोनमें दन्यूव तककी भूमिका वह स्वामी था, और बुल-गारी (बोलगा) का राजा भी उसके अधीन था। १२९९ ई० के आसपास सुवर्ण-ओर्दूके खान तोकताईने दनियेपर पार हो ओर्जांमें जिस तरह बूढ़े नोगाईको घायल किया, और आखिरमें वह मर गया, यह बतला आये हैं। इसीके समयसे पुराने पेचेनगा नोगाई कहे जाने लगे। आगे चलकर इनके दो भाग हुये, जिनमें महानोगाई यायिक (उराल) और यम्वा नदियोंके बीचके प्रदेशके दक्षिणी भागमें रहते थे, ये पूरी नौरमें मुसलमान हो गये थे। इनका दूसरा भाग वाशिकोंके सीमातपर रहता था, जो बहुत कुछ पुराने मंगोलोंके धर्म और रीति-रवाजोंका पालन करते थे। इन्हींमें सिवेरियाके खान थे।

२ चुके, चुको, नोगाई-पुत्र (१३०० ई०)

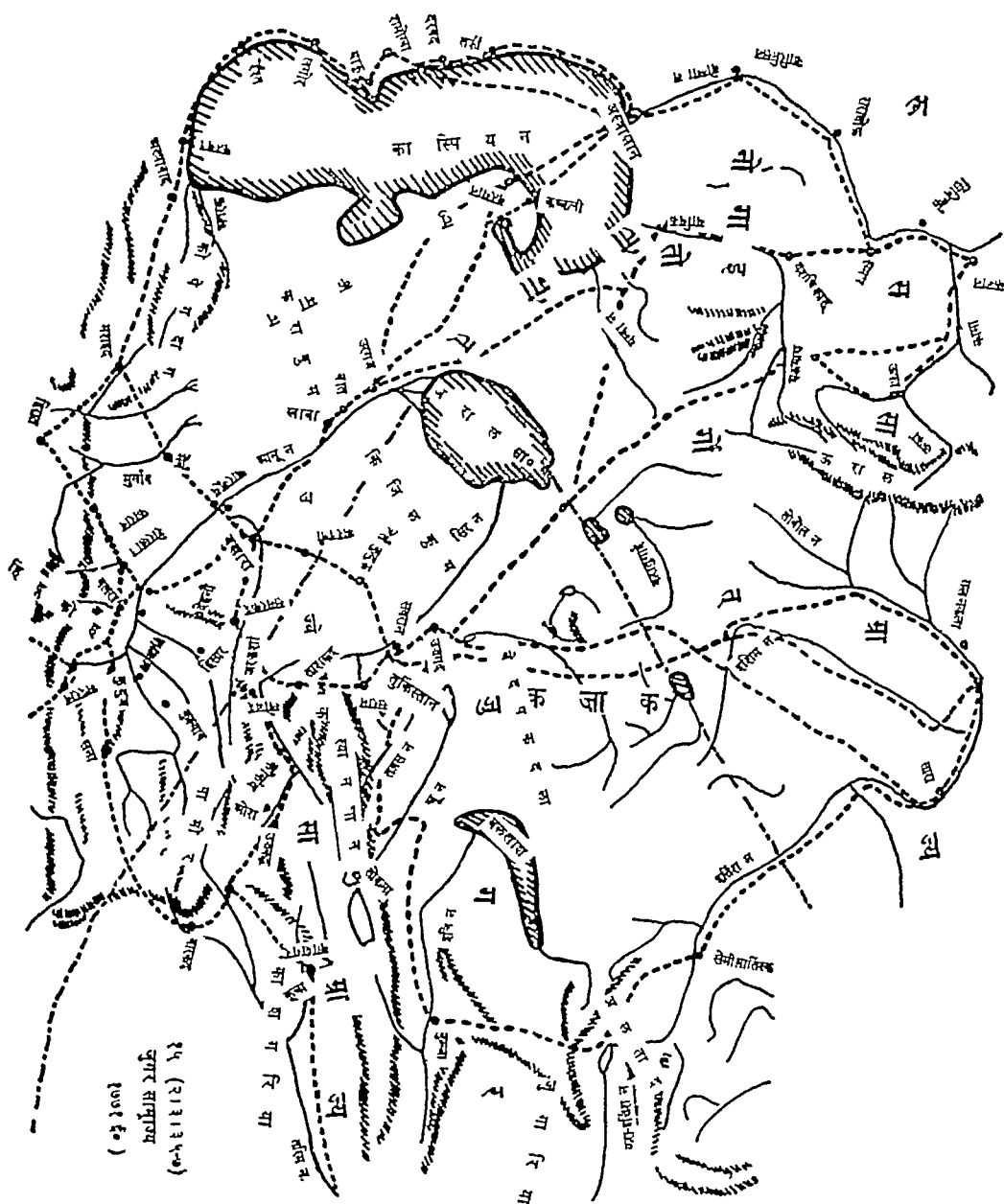
नोगाईके मरनेपर उसके लडके चुकेको पकड़नेके लिये तोकताई खानके आदमियोंने बहुत कोशिश की, मगर वह हाथ नहीं आया। पहले वह आस (उवान) में गया, फिर वहासे बुल्गारियामें अपने बहनोईके पास चला गया, किन्तु १३०० ई० के आसपास उसका शिर काटकर खानके पास भेज दिया गया।

### ३ बुरी, नोगाई-पुत्र (—१३०१ ई०)

यह इलखान (ईरानी) अवकाका दामाद था। इसने पिताकी हत्याका बदला लेना चाहा, लेकिन तोकताई खानको घड़्यत्रका पता लग गया, और यह १३०१ ई० में मारा गया।

### ४ कराकिजिक, चुके-पुत्र

नोगाईका खानदान एक-एक करके सुवर्ण-ओदूके खानोकी कोपाग्निमें भस्म हो रहा था, लेकिन राजकुमार नोगाईके प्रताप और दीर्घकालीन शासनके कारण उसके उलुसका समय-समयपर बिखराव-जमाव होता रहता था, जिसके ही कारण नोगाई कबीलेका नाम इतने समय तक बना रहा।



अपने बाप और चचाके मारे जानेके बाद कराकिजिक अपने दो मन्त्रियों तथा तीन हजार अनुयायियोंके साथ साइबेरियाके शमसमान देशके अवादुल स्थानमें गया, जहाँमें वह तोकताके राज्यमें जव-तव लूट-मार करता रहा। शमसमान लोगोंने कराकिजिक और उसके अनुयायियोंको बड़े सम्मानके साथ रक्खा, और वह गुइउक या यायिक (उराल) नदीकी उपत्यकामें बस गये।

जब वा-नू-वश निर्वंश हो गया, तो अमीरोने लाकर शैवानी-वशज खिजिर खानको सुवर्ण-ओर्दूका खान बनाया, जिसे हटाकर जेक्रियाने अपने पुत्र करा नोगाईको खान बना दिया ।

## ५ करा नोगाई, जेक्रिया-पुत्र

करा नोगाईको करा तोगाई भी कहते हैं । इसके अधीन वोल्गाके पूर्वी इलाकेमे नोगाइयोंके कई कबीले थे । करा नोगाईके बाद फिर नोगाइयोंके खानोंका मूत्र विलुप्त हो जाता है, और तेमूर-लगके समकालीन इदिकूके समयमे फिर हम उन्हें प्रभावशाली कबीलेके रूपमे देखते हैं ।

## § २ महानोगाई (१४३१ ई०)

### १ नूरुद्दीन, इदिकू-पुत्र (१४३१ ई०)

इदिकूको मगुतोका वेग कहा गया है, और मगुत नोगाई ही थे, इसमे सदेह नहीं । इदिकू तेमूर-लगके प्रभावशाली अमीरोमेंसे था । तोकतामिशके विरुद्ध तेमूरके अभियानमें यह उमका प्रवान-पथप्रदर्शक रहा । तोकतामिशकी हारके बाद इदिकू तेमूरसे छुट्टी लेकर अपने कबीलेमे चला गया । तेमूर कुतुलुक किपचक-खानोंकी गद्दी चाहता था, और इदिकू उमका चाणक्य था । १३९९ ई० में तेमूर कुतुलुकके मरनेपर किपचकके सिंहासनपर इदिकूने तेमूरके भाई सादीवेगको बैठाया । फिर १४०७ ई० मे उसे हटाकर पुलादवेगको खान बनाया । १४३१ ई० मे तोकतामिश-पुत्र कादिरवरदीसे जो सवर्ष हुआ, शायद उन्हीमे इदिकू मारा गया । इदिकूके मरनेपर उसके पुत्र गाजी नोरोज और मसूरने उसमे शरण ली, तथा उसके दूसरे पुत्र कैकुताद और नूरुद्दीन तूरान (तुर्किस्तान) की ओर भाग गये ।

इदिकूके समय तक पुराने नोगाइयोंकी परंपरा जारी रही, और आदिम राजकुमार नोगाई, और अन्तिम इदिकूके कालोमे नोगाई कबीला शक्तिशाली और बहुमह्यक रहा । पुराने कबीलेके पतनके बाद उमका अधिकांश भाग यायिक (उराल) और यम्त्रा नदियोंके बीचमें रहता था । इदिकू-पुत्र नूरुद्दीन उनका खान बना । यही महानोगाई कबीलेका मस्यापक था ।

नूरुद्दीनको अपने पिताका उलुम बहुत क्षीण रूपमे मिला था, जिसके अस्तित्वको वह कायम भर रख सका ।

### २ ओकस, नूरुद्दीन-पुत्र (१४८७ ई०)

१५ वी मदीके मध्यमे कजाक खानोंके भीतर नोगाइयोंका अब काफी असर बढ़ चुका था । उनके दोनों भाइयो मुहम्मद अमीन और अलीखानके झगडोमे नोगाई अलीके समर्थक थे । लेकिन, अलीको रुमी पसंद नहीं करते थे । १४८७ ई० मे रूसियोंने अली पर आक्रमण करके उसे पकड़ लिया । दो साल बाद १४८९ ई० मे त्यूमनके शासक तजार ईवक, मिर्जा ओकस, या तत्पुत्र हसन, मूसा, और यमागुरचीने जारके पास अलीको छोड़ देनेके लिये चिट्ठी लिखी थी ।

### ३ यमागुरची, ओकस-पुत्र (१४९९ ई०)

अब नोगाइयोंका प्रभाव यही था, कि वह कजाक खानोंके आपसी प्रतिद्वंद्वितामे किसी पक्षके सहायक होते रहे । यमागुरची और मूसाने कजाक खान अब्दुल लनीफके ऊपर उसके भाई मुहम्मद अमीनकी ओरमे हमला किया, लेकिन अब्दुल लनीफकी पीठपर रूसी थे, इसलिये उन्हें हारना पड़ा । शायद इसी समय यमागुरची मर गया । १५०५ ई० मे हम कजाक खान मुहम्मद अमीनको चालीस हजार कजाकों और बीस हजार नोगाइयोंके साथ रुमी सीमातपर आक्रमण करते देखते हैं । इसी युद्धमे मुहम्मद अमीन खानका साला मूसा मारा गया ।

१५१७ ई० से १५२६ ई० तक वोल्गापारके नोगाई यायिक (उराल) और कास्पियनके तट पर तीन भाइयोमे विभक्त थे, जिनमे (१) सिदियक खान सेरायचुक नगरका स्वामी था, यायिक-उपत्यका इसीके हाथमे थी, (२) हसन (गसन) को कामा-वोल्गा और यायिक नदीके बीचका इलाका मिला था, और (३) शेख ममाईको सिबिरवाला भाग तथा पाम-पडोमका इलाका ।

#### ४ शेख ममाई, मूसा-पुत्र (१५२६ ई०)

इसके वारेमे हमे ज्यादा मालूम नही ।

#### ५. युसुफ मिर्जा. मूसा-पुत्र

इसका पता भी इसके पुत्र अली मिर्जाके कारण लगता है ।

#### ६ अली मिर्जा, युसुफ-पुत्र (१५५१ ई०)

पासमे होनेके कारण नोगाई रूसके सीमातमे हर वक्त खतरा पैदा किये रहते थे, जिनके लिये रूसियोको अपने सीमातको किलावद करनेकी बड़ी जरूरत पडती । अली मिर्जाने १५५१ ई० मे क्रिमियाके खान साहेब गिराईके ऊपर आक्रमण किया, लेकिन खानने उमे हरा दिया । वोल्गा और दोन पार करके क्रिमियाके पास पहुचना, यही बतलाता है कि अभी सोलहवी सदीके मध्यमे वहा कोई ऐसी शक्ति नही पैदा हुई थी, जो कि अली मिर्जाके रास्तेमे रुकावट पैदा करती । अली मिर्जा कजानमे रहता था । उसके कबीलेने नाराज होकर उसे निकाल यादगारको गद्दीपर बठानेके लिये बुलाया । मास्कोके जारने इसे पसंद नही किया, और अक्टूबर १५५२ ई० मे उसने आक्रमण करके कजानको ले लिया ।

#### ७ इस्माईल मिर्जा, मूसा-पुत्र (१५६४ ई०)

इसीके समयमे १५५८ ई० मे अंग्रेज व्यापारी जेन्किन्सन अस्त्राखान पहुचा था । वह लिखता है कि वोल्गाके बाये तटकी सारी भूमि—अस्त्राखानसे कास्पियन-तट होते तुर्कमानोकी भूमि तकका प्रदेश—मगुतो (नोगाइयो)का प्रदेश कहा जाता है । यहाके लोग मुसलमान हैं । १५५८ ई०मे जो भयकर गृहयुद्ध हुआ था, जिसके साथ ही अकाल-महामारीने आक्रमण किया, उससे उनके एक लाख आदमी मर गये । जेन्किन्सन लिखता है—“इस तरहकी महामारी इस भूभागमे कभी नही देखी गई । नोगाइयोकी भूमि चरागाहोकी भूमि है । इस महामारीके बाद वह उजाड हो गई, जिससे रूसियोको सतोष हुआ, क्योंकि उनके साथ उन्हे बहुत दिनोसे भयकर लडाइया लडनी पड रही थी । जब नोगाई कबीला अच्छी अवस्थामे था, उस समय वह कई भागोमे विभक्त था, जिन्हे होर्ड (ओर्दू या उर्दू) कहते हैं । हरेक ओर्दूका अपना एक राजा होता है, जिसे मुर्जा (मिर्जा) कहा जाता है । सारा ओर्दू उसकी आज्ञा मानता है । इनके न घर हैं न नगर, बल्कि यह खुली जगहोमे रहते हैं । हर एक मिर्जा (राजा) अपने ओर्दू या लोगोको आसपास लिये हुये रहता है, जहा उनकी वीविया, बच्चे और पशु भी रहते हैं । एक चरागाहकी घासके खतम हो जानेके बाद, वह दूसरी जगह चले जाते हैं । जब वह चलते हैं, तो ऊटोसे खीची जानेवाली गाडियोपर उनके घरकी तरहके तम्बू भी चलते हैं । इन्ही गाडियोमे उनके वीवी-बच्चे तथा सारी सम्पत्ति लदी रहती है । हरेक अमीरके पास दासियोके अतिरिक्त चार-पाच वीविया होती है । नोगाई सिक्केका इस्तेमाल नही करते, बल्कि कपडा और दूसरी चीजे अपने पशुओ मे बदलते हैं । उन्हे युद्ध छोड और किसी विद्या और कलासे प्रेम नही और युद्धमे वह सिद्धहस्त हैं, अधिकतर पशुपालका जीवन बिताते हैं । उनके पास पशु-धन बहुत अधिक है—वस्तुतः पशु ही उनकी सम्पत्ति है । वह मास अधिक खाते हैं, जो विशेषकर घोडेका होता है । घोडीका दूध पीते हैं, उसका मद्य (कूमिस) भी बनाते हैं । विद्रोह, चोरी, डकैती और हत्या इनके स्वभावमे हैं । न वह



अनाज खाते हैं और न रोटी, इसके लिये ईसाइयों का वह उपहास करते हुये कहते हैं—“तुम सरकडेकी फुन्गी खाने हो और वर्षा का पानी पीते हो, फिर क्यों न कमजोर रहोगे ? हम खूब मांस खाते हैं, दूध पीते हैं, इसीलिये हम ताकतवर हैं ।” जेन्किन्सन जब पेरें-वोलोग (प्राग्-वोल्गा) में पहुँचा, तो वहाँ उसे एक नोगाई ओर्दू मिला । पेरें-वोलोग पीछे जारिस्किन और आजकल स्तालिनग्रादके नामसे पुकारा जाता है । यहींपर वोल्गा और दोनके बीचमें नावोंको स्थल-मार्गसे पार कराया जाता था । आज वोल्गा-दोन-नहरके हो जानेसे उनकी कोई आवश्यकता नहीं है । पेरेंवोलोगमें मिले नोगाई-ओर्दूके वारेमें जेन्किन्सन लिखा है—“इसमें घरके आकारवाली गाड़ियोंको करीब एक हजार ऊट खींच रहे थे । यह घर एक विचित्र तरहके तम्बू थे, और चलते समय दूरमें नगर जैसे मालूम होते थे ।” यह ओर्दू नोगाइयोंके राजा (मिर्जा) इस्माईलका था, जो कि जेन्किन्सनके अनुसार “सभी नोगाइयोंमें सबसे बड़ा राजा है । उसने बाकी सभीको मार डाला या भगा दिया, अपने भाइयों और वच्चों तकको भी नहीं छोड़ा । रूसके सम्राटके साथ सुलह करके अब वह नोगाइयोंपर शासन करता है, और रूसी भी नोगाइयोंके साथ शांति पा रहे हैं ।” अस्वाखानमें महामारी और अकालका क्या असर हुआ, इसके वारेमें जेन्किन्सन लिखता है—“वहाँ बहुत-से लोग भूखसे मर गये । सारे द्वीप (अस्वाखान) में मुर्दोंका ढेर मिलता है, जो बिना जलाये हुये जानवर जैसे मालूम होते हैं । देखकर बड़ी जुगुप्सा होती है । इन अस्वाखानी नोगाइयोंमेंसे बहुतोंको रूसियोंने बेच डाला, और दूसरोंको द्वीप (अस्वाखान) से निर्वासित कर दिया । अगर मेरे पास एक हजार मुद्रा होती, तो मैं मुदर-मुदर तारतार वच्चोंको उनके मा-वापोंमें खरीद सकता था । इंग्लैंडमें जो रोटी छ पेन्समें मिलती है, उसमें मैं एक लडके या तरुणीको खरीद सकता था । लेकिन उस समय इस तरहके मौदेसे हमें अधिक आवश्यकता थी खाद्य पदार्थकी ।”

इस्माईलके समयमें नोगाइयोंकी यह हालत थी । अस्वाखानपर रूसियोंने अपनी दृढ़ प्रभुता जमा ली थी । नोगाइयोंको उनके सामने सिर झुकानेके लिये मजबूर होना पड़ा था । इस्माईल १५६३ ई० के अन्त या १५६४ ई०के आरम्भमें मरा, अर्थात् उसी समय, जब कि अतितरुण अकबरने भारतमें अपने राज्यको मभाला था ।

### ८ दीनमुहम्मद, इस्माईल-पुत्र (१५६४ ई०)

यह निविरके कुचुम खानका समकालीन था । इसने अपने पुत्र अलीकी शादी दीनमुहम्मदकी लडकीमें की थी । वोल्गा और दोनके पास अभी रूसियोंकी वस्तिया नहीं आवाद हुई थी, और नोगाई कबीलेका ही यहाँपर निवास था । उनके पड़ोसमें क्रिमियाके तारतार थे । वह रूसी ईसाइयोंको मुसलमान तारतारोंके ऊपर इस तरह हावी होते देखना नहीं पसंद करते थे । दोनोंने मेल करके अपनी मयुक्त सेना ले ७ मई १५८० ई०में अस्वाखानको घेर लिया, किन्तु चंद दिनोंके असफल मुहाम्मदके अतिरिक्त उन्हें कुछ हाथ नहीं आया । इस समयतक उराल (यायिक) उपत्यकामें कसाक रूसी जैसे लडाकू लोग आ वसे थे, जिनका नोगाइयोंमें झगडा होता रहता था । दोनके ऊपरी भागमें भी रूसी कमाक रहते थे । उन्होंने पहुँचकर अस्वाखानपर अधिकार करके सीमाती इलाकोमें लूट-मार शुरू की । व्यापारियोंको ही नहीं, जारके दूतमंडलोंको भी उन्होंने नहीं छोड़ा । इस प्रकार हम देखते हैं, कि इस समय निम्न-वोल्गाकी भूमि नोगाइयों, रूसी कमाको तथा इवान IV के मन्त्रियोंकी भूमिबनों हुई थी । इवानने एक बड़ी सेना जेनरल इवान मुरस्किनकी अधीनतामें भेजी, जिसने शत्रुओंको हराकर अस्वाखानको मुक्त किया । इन्हीं दोन-कसाकोका एक नायक बेरमक था, जिसने सिविर विजय किया, और जिसके वारेमें हम पहले कह चुके हैं । मुरस्किन द्वारा भगाये हुये कमाकोका एक भागने कास्पियनके पश्चिमी-तटपर तेरेक नदीकी ओर जा वहाँ अपना उपनिवेश बसाया । एक और भागने कास्पियन-तटसे होते यायिक (उराल) नदीके मुहानेपर जाकर डेरा डाला । १५८० ई०में इन कमाकोने अपने वरिष्ठोंमें नोगाइयोंकी राजधानी मरायचुकके वारेमें सुना, और वह उस पर चढ़ दीडे । शहरपर अधिकार कर

उन्होंने मकानोंमें आग लगा दी। जीते नोगाइयोपर ही उन्होंने अत्याचार नहीं किया, बल्कि कन्नोमें उनके मुर्दोंको भी निकालकर बाहर फेंक दिया।

## ९ उरुस, इस्माईल-पुत्र (१५८० ई०)

उरुसके पूर्वी सीमातपर सिविरके खान कुचुमका राज्य था, और पश्चिममें क्रिमियाके खान मुहम्मद गिराई का। इसके सीमातपर रूसके अर्धान प्रदेश थे, जिनमें कहीं-कहीं रूसियोंकी भी वस्ति या बसती जा रही थी। उरुसने १५८३ ई०में मुहम्मद गिराई और कुचुम खानकी सहसे कामा-तटके इलाके-में लूट-मार मचाई, लेकिन, इन जगहोंमें बसनेवाले रूसी हिम्मतवाले कसाक थे। उन्होंने १५८४ ई० में अपने लिये उरालस्क नगर बसाया। नोगाइयोके आक्रमणका हर वक्त डर लगा रहता था, इसलिये उन्होंने नगरके चारों ओर मिट्टीके घुस खड़े कर दिये। पूर्वकी ओर रूसियोंके विस्तारमें सबसे पहली और बड़ी बाधाके रूपमें नोगाई मौजूद थे।

## १० अलता, उलिशाइन और यान अरसलन, उरुस-पुत्र (१६०१ ई०)

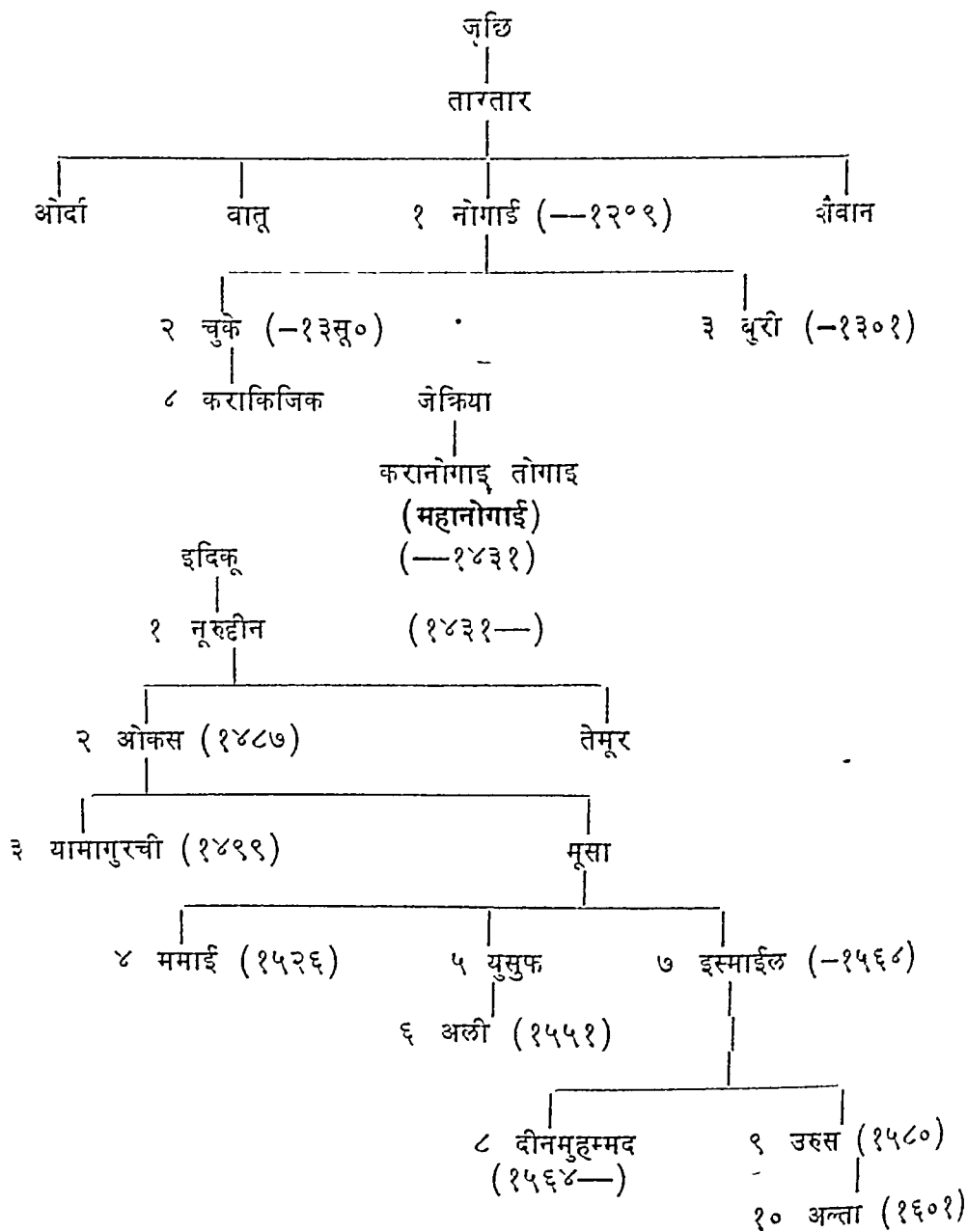
१६०१ ई०में नोगाइयोके दो भाग हो गये थे, जिनमेंसे एकका नाम उरुस था, और दूसरेका कस्साई (छोटा)। अलता और उलिशाइन दोनों भाई अपने चचा या मामा कस्साईके ऊपर आक्रमण करना चाहते थे। दोनों कबीलोंके आपसी संघर्षके मारे ओर्दूके दो भाग हो गये। १६०८ ई०में उरुस कबीलेने कस्साईके त्यूमन इलाकेमें घुसकर पिशमा-तटकी वस्तियोंको लूटा, लेकिन अन्तमें उन्हें हारकर भागना पड़ा। १६१३ ई० में अभी भी नोगाई इतने शक्तिशाली थे, कि उन्होंने इस्तेराकके नेतृत्वमें सारे उक्रेइनको ही नहीं लूटा, बल्कि ओका नदी पार हो उत्तरमें कलोम्ना, सेरपुकोफ और मास्कोके पास तकके गावोंको भी नहीं छोड़ा। ये घुमन्तू कबीले स्थायी निवासी रूसियोंके लिये उस समय भी बड़े खतरेकी चीज थे, जब कि भारतने जहागीरका राज्य था।

नोगाइयोमें एक तरहकी आनुवंशिक बीमारी थी, जोकि इसी भूमिमें प्राचीनकालमें रहनेवाले शको (सिथियनो) में भी पाई जाती थी—जिसका कारण सिरियाकी उरानिया देवीका मंदिर लूटने के लिये देवीका शाप समझा जाता था। ग्रीक लेखक हिप्पोक्रेतने सिथियनोके बारेमें लिखा है—“सिथियनोके भीतर कुछ ऐसे लोग हैं, जो कि हिजडे होते हैं, और स्त्रियोंके सभी काम करते हैं। इसी-लिये उन्हें इनारी (नारी-समान, स्त्रैण) कहा जाता है।” नोगाइयोमें इस बीमारीका पता आधुनिक कालमें वेइनेग्स नामक एक विद्वान्ने लगाया। कल्परोतने यह भी लिखा है—“यह एक तरहकी अचिकित्स्य बीमारी है, जोकि किसी साधारण रोग या अधिक उमरके कारण होती है। उस समय मर्दोंके चमड़ेमें झुर्रिया पड़ जाती हैं, और उनकी जो चद वालोकी दाढी होती है, वह भी गिर जाती है। फिर आदमी विलकुल स्त्रीका रूप ले लेता है। वह विलकुल स्त्रीका-सा मालूम होता है, और स्त्रियोंसे ही मेल-जोल रखता है।”

१८वीं सदीके पूर्वार्धमें पहुँचकर नोगाइयोकी शक्ति एक प्रभुताशाली कबीलेके तौरपर खतम हो जाती है, और पीछे इनका नाम भी लुप्त होने लगता है। बुखाराका आखिरी राजवंश मगीत नोगाइयोमें ही था, लेकिन अब उनके लिये भी नोगाई शब्द अपरिचित-सा होता जा रहा था। अजोफ सागरके पास रहनेवाले नोगाई कसाई (कसबुलाद)के ओर्दूसे संबंधित थे। कसाईको लघु ओर्दूका संस्थापक माना जाता था। कसाईके वंशज अरसलनवेग, मुजवेग, मूमावेग, तोगानवेग, कसबुला, आदि लघु नोगाईके सरदार थे।

## ३ (३ नोगाई-वशवृक्ष)

१३००-१७२४ ई०



## § ३ कराकल्पक

कराकल्पक आजकल निम्न वधु-उपत्यका और अराल सागरके तटपर रहते हैं, जहापर उनका सोवियत स्वायत्त गणराज्य स्थापित है। यह भी नोगाई ओर्दूकी ही शाखा थे, इसलिये यहापर उनके इतिहासपर भी एक सरसरी नजर डालना आवश्यक है।

कराकल्पक अराल-समुद्रके पासके मैदानोमे तथा बुखारा और खीवाके सीमातक आकर बस गये। शायद यह महानोगाईयोंके मुर्जा उरुसके पुत्र अल्ताके साथ सवधित थे। इनके पडोसी इन्हें मद्गू (चिप्टी नाकवाला) कहा करते थे। परंपरा बतलाती है, कि जब अमीर तेमूर-लगने उनकी राजधानी वोल्गार नगरको नष्ट कर दिया, तो वह सिर-दरियाके मुहानेपर भाग आये। सूर्यकी धूपमें वचने या शोक प्रकट करनेके लिये इन्होंने काली टोपी पहिननी शुरू की, जिसके कारण करा-कल्पक (काली-टोपी) इनका नाम पड गया। एक दूसरी भी परंपरा है, जिसे कराकल्पकोंके दूत मुरादसे

और दूसरों ने ओरेनबुर्ग के रूषी वीयवोदके पास कही थी। कराकल्पक लोग एक समय अस्त्राखान और कजान के बीच वोल्गा के पहाड़ी किनारे पर रहा करते थे। जब रूसियों ने कजान (१५५२ ई०) और अस्त्राखान (१५५६ ई९) के राज्यो को खतम कर दिया, तो यह कबीला वहासे भाग आया। वह अपने को कराकिपचक कहा करते थे, और अपना उद्गम नोगाइयो के अल्ता-ओर्दू से बतलाते थे, लेकिन पडोसियों ने उन्हें काली टोपी के कारण कराकल्पक कहना शुरू किया। मगुत या मगित नाम की सार्थकता अब भी उनकी चिप्टी नाक से है।

१७१५ ई० में यात्री वेल वोल्गा के किनारे पर आया था। वह समारा के वारे में लिखते हुये कराकल्पको का भी उल्लेख करता है। समारा (वर्तमान कुडविशियेफ) को एक खाई और घुस्सो से किलाबंद किया गया है, जिसमें थोड़े-थोड़े फासले पर तोपों के रखने के लिये लकड़ी के मीनार बने हुये हैं। यहा पूर्व के रेगिस्तान में रहने वाले कराकल्पको (काली टोपियो) के आक्रमण का डर रहता है, इसी लिये यह सावधानी रखी गई।

कराकल्पको के पहले दो भाग हुये—

(१) ऊपरी कराकल्पक—यह सिर के मुहाने से ताशकन्द तक पाये जाते थे। जाडो में इनके मुर्ता (डेरें) किसी निश्चित जगह पर होते, लेकिन गर्मियों में ये चरवाही करते घूमते-फिरते हैं। इनमें खानो की उतनी नहीं चलती थी, जितनी कि खोजो (सत-महतो) की। इनमें से अधिकांश १८वीं सदी के अन्त में लडाकूपन छोड़कर कुछ-कुछ खेती करने लगे। कजाक इन्हें बहुत सताया करते थे, इसलिये तुर्किस्तान शहर और ताशकन्द के पास वाले कराकल्पको ने जुगारियों के कल्मको की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

(२) निचले कराकल्पक—कराकल्पको के कुछ कबीले अराल-समुद्र के तट तथा कुवान नदी के दक्षिण के प्रदेश में रहते थे। १८वीं सदी के आरम्भ में रूसियों के साथ इनका सम्पर्क हुआ। १७३२ ई० में कजाक खान अबुल्खैर ने अपने डेरें को सिरदरिया की उपत्यकामें परिवर्तित कर दिया, और रूस की अधीनता स्वीकार कर ली। उसने अपने को इस तरह मजबूत करके निम्न-सिर-उपत्यका पर भी दावा किया। रूसी प्रतिनिधि दिमित्री ग्लादियेफ समारा से चलकर १७४१ ई० के अप्रैल में अबुल्खैर के डेरें में पहुँचा था। उसी यात्रामें उसकी सिर और अदामत के बीच की भूमि में घूमने वाले कराकल्पको के मुखिया उवैदुल्ला, मुरादशेख, उरसनाक वातिर, तोकुम्बेतबी, उविलाई सुल्तान और खोजा मरसेन से मुलाकात हुई। उन्होंने निम्न-कराकल्पक ओर्दू के तीस हजार परिवारों की ओर से सदा के लिये रूस की अधीनता स्वीकार करते हुये कसम खाकर कुरान को चूमा। १७४२ ई० में ओरेनबुर्ग में जाकर उन्होंने अपनी शपथ दुहराई। कराकल्पक अब इतने विनम्र और आज्ञाकारी साबित हुये, कि ओरेनबुर्ग से ग्लादियेफ को उन्हें ओरेनबुर्ग के पडोस में आकर बसने के लिये समझाने की भेजा गया। ग्लादियेफ को वहा काइपखान और उसके तीन पुत्र मिले, जिन्होंने जार की राजभक्ति की शपथ ली। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि अब वह अबुल्खैर के कजाको की अधीनता से बिल्कुल मुक्त हो गये थे।

१७४३ ई० में फिलात गोर्दियेफ को दुभापिया देलनोई के साथ ओरेनबुर्ग से कराकल्पको के पाम भेजा गया—गोर्दियेफ कराकल्पको की भाषा जानता था। देलनोई को रास्ते में ही नवम्बर में काइपखान और उरुजकुल के दूत मिले। उसने उन्हें पीतरबुर्ग भेजा, जहा दरवार में उनकी बड़ी खातिर हुई और रानी एलिजाबेत ने खुद दरवार में उनमें मुलाकात कर अधीनता स्वीकार की शपथ स्वीकार कर शत्रुओं से रक्षा करने का वचन दिया। लौटती यात्रामें भी ग्लादियेफ उनके साथ था। अबुल्खैर ने स्वयं रूस की अधीनता स्वीकार की थी, लेकिन वह यह नहीं पसन्द करता था, कि कराकल्पक सीधे रूस को अपना स्वामी माने। इसी बीच में उसने अचानक हमला करके कितने ही कराकल्पको को मार डाला, और उनके एक खान उरुजकुल को उसके बीबी-बच्चों के साथ पकड़ ले गया। इस तरह कजाक तब तक कराकल्पको को सताते रहे, जब तक कि १७४८ ई० में अबुल्खैर मर नहीं गया। कजाको की इन लूटपाटों के कारण निम्न-सिर-उपत्यकामें कराकल्पको की बहुत सी बस्तियां उजड़ गईं, जहा उन्होंने

नहरे बनाकर अपने खेत आबाद किये थे । कराकल्पकोंके भागनेसे यह सारी वस्तिया उजड़ गई, और नहरे भी बंद हो गई । १७४२ ई०में ग्लादियेफने उजड़े यागीकन्तकी कुछ पत्थरकी दीवारों और मीनारोंको अच्छी हालतमें देखा था ।

**वातिरखान, काइप**—वातिरखानका भी अबुल्खैरके वशसे सधर्प होता रहा । वातिरके पुत्र काइपको खीवावालोने अपना खान बनाया था, जिसके बारेमें हम आगे कहनेवाले हैं । उमोंके साथ बहुत भारी सख्यामें कराकल्पक भी खीवाके राज्यमें जा निम्न वक्षु-उपत्यकामें बसने लगे, और धीरे-धीरे वहां उन्हींकी अधिकता हो गई, जिसके कारण आज वहां कराकल्पक स्वायत्त गणराज्यकी स्थापना हो सकी ।

१७५० ई०में अबुल्खैरके पुत्र एरलीने कराकल्पकोपर आक्रमण किया, लेकिन वह अपने बहुतसे साथियोंके साथ मारा गया । अगले कितने ही वर्षोंतक वातिर और उसके पुत्र काइपका कजाकोंके लघु-ओर्दूके खान मूरलीके साथ सधर्प होता रहा, इसी कारण कराकल्पक काफी सख्यामें निम्न सिर-उपत्यका छोड़कर ताशकन्दके पास कजाकोंके महाओर्दूकी शरणमें चले गये । कजाकोंकी लूटमारके कारण १८वीं सदीके अन्ततक कराकल्पकोंने निम्न-सिरको बिल्कुल छोड़ दिया, और वह ऊपरकी ओर बढ़ते हुये यानी दरियाके पार चले गये । वहां उन्होंने अपने परिश्रममें एक बड़ी नहर खोदी, जो पीछे सिर नदीकी एक शाखा बन आजकल यानी दरिया (नवीन नदी) के नाममें मशहूर है । कराकल्पकोंके हट जानेपर निम्न-सिर-उपत्यकामें कजाक आबाद हो गये ।

हमने घुमन्तुओंके जीवनके ढंगको देखा । मधु-मक्खियोंकी तरह वह मारे कबीलेके साथ एक स्थानसे दूसरे स्थानपर थोड़े समयमें पहुँच जाते, और कितनी ही बार अपने नामोंको भी भुलाकर कोई दूसरे नाम ले लेते । कराकल्पकोंके बारेमें १९वीं सदीके मध्यमें वम्बेरीने लिखा था—

“वह वक्षुके परले तटपर गोरलानेके सामने और कुग्रादके पासतक रहते हैं । वहां पड़ोसमें बहुत जंगल हैं । जंगलोमें उनके पशुओंके गोठ होते हैं । उनके पास बहुत थोड़े से घोड़े होते हैं, और भेड़ तो मुश्किलसे होती हैं । कराकल्पक तुर्किस्तानमें अपनी अत्यन्त सुंदरी स्त्रियोंके लिये प्रसिद्ध हैं, लेकिन दूसरी ओर वह सबसे बड़े मूर्ख भी कहे जाते हैं । उनके तम्बुओं (परिवारों) की सख्या दस हजार है । चालीस साल पहले उन्होंने कुन्ग्रतोंके खिलाफ विद्रोह किया था, जिसमें मुहम्मद रहीमखाने उन्हें दवा दिया । आठ साल बाद १८५५ ई०में फिर उन्होंने जरलिंगके नेतृत्वमें बीस हजार सवारोंके साथ विद्रोह किया, लेकिन कुतुलुक मुरादने उन्हें पूरी तीरसे हरा दिया ।” कुइलवाइन १५५८-५९ ई० में खीवामें गया था । उसके समय पंद्रह हजार कराकल्पक अर्द्ध-घुमन्तु जीवन बिताते हुये रहते थे । राज्यने उनके ऊपर सबसे ज्यादा कर लगा रखा था, अतएव विचारे बहुत गरीब थे ।

रूसियोंने जब वक्षुके मुहानेको ले लिया । उस समय कराकल्पकोंके विद्रोहकी अफवाह सुनकर कर्नल इवानोफने उनके वी (सरदार) लोगोंको बुलाया, जिनमें चिमवाई भी था । जब इवानोफने अपने लोगोंकी सख्या-सूची देनेके लिये कहा, तो वह डर गये । इसपर रूसी कसाकोंने घेरकर बहुतोंको गिरफ्तार कर लिया । इस वतावसे रूसियोंने कराकल्पकोंके मनमें बुरा भाव पैदा कर दिया, क्योंकि वह अपने वी लोगोंको बहुत आदरकी दृष्टिसे देखते थे ।”

### स्रोत ग्रन्थ

1. History of Mongol I-III (H. H. Howorth)
2. Bamberg

## मुगोलिस्तानके खान

(१३२१-१५६५ ई०)

चंगताई-वंशसे किस तरह मुगोलिस्तानके खानोंका अलग वंश स्थापित हुआ, इसके बारेमें हम बतला चुके हैं। मुगोलिस्तान मुगलोंका स्थान था, यह तो इसके नामसे ही पता लग जाता है, लेकिन वस्तुतः जिस भूमिको मुगोलिस्तान कहा जाने लगा, वहा मुगल तो दालमें नमकके बराबर कुछ खान और अमीर परिवारोंके रूपमें ही रह गये थे, जो भी बड़ी तेजीसे तुर्क बनते जा रहे थे। बाकी साधारण जनता तो तुर्क थी ही। पहिले इसी प्रदेशका नाम कराखिताई भी था, जो कि कराखिताई राजवंश (११२५-१२१८ ई०)का सूचक था। यूनानखानके शासनके आरम्भ ८८९ हि० (३०I-२०XII १४८४ ई०) में जब नगरों और खेतीको प्रोत्साहन दिया जाने लगा, तो वहा पुराने समयके कितने ही नगरों और वस्तियोंके ध्वसावशेष मौजूद थे। ऊपरी मुगोलिस्तान पहाड़ी नदियों और झीलोंका प्रदेश था। इसके मैदानी इलाकोंमें बहुत अच्छी चरागाहें थीं, और पहाड़ी इलाके जंगलों और वृक्षोंमें ढकी उपत्यकायें थीं। पहाड़ बहुत ऊँचे नहीं थे, इसलिये सर्दों अपनी चरम सीमा तक नहीं पहुँचती थीं, और आबोहवा बड़ी अच्छी थी। असली रेगिस्तान यहा वस्तुतः थे ही नहीं, सिवाय उत्तर-पश्चिमी छोरके। इस भूमिमें नगर या गाँव नहीं, बल्कि खुले मैदान (दशत) थे। मुगोलिस्तान पहले किर्गिजों और बादमें कजाकोंका देश बन गया, तो भी उनके ऊपर मुगोलिस्तानके खान काश्गारमें शासन करते थे। १४ वीं सदीके पूर्वार्धके एक इतिहास-लेखकने इस प्रदेशके बारेमें लिखा है—“जबमें इस प्रदेशको तारतारों (मंगोलों)की तलवारोंने उजाड़ दिया, तबसे यहा बहुत कम वाशिदे रह गये। ध्वसावशेषों और करीब-करीब विलुप्त-सी वस्तियोंके सिवा यहा कुछ नहीं दिखाई पड़ता। दूरमें आदमीको एक अच्छा बसा हुआ नगर दिखाई पड़ना है, जिसके चारों तरफ मुदर हरियाली छाई हुई है, लेकिन जब पास जाते हैं, तो वहा वाशिदे नहीं बल्कि पूरी तरहसे खाली मकान मिलते हैं। यहाके सारे ही वाशिदे घुमनू मेपपाल और चरवाहे हैं, जिनको खेती या फसल उगानेमें कोई वास्ता नहीं।”\*

कराखिताइयोंने अपने समय इस भूमिमें बहुतसे नगर बसाये थे, जिन नगरोंमेंमें कुछ बालुका-भूमिमें अब भी हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। महारेगिस्तानके पासमें बसे हुये नगरोंको यदि मंगोलोंने उजाड़ दिया, तो कभी-कभी बालुका-वृष्टिसे भी उनका सर्वनाश हुआ। म्वेन्-चाङ्गने भी एक बालुका-वृष्टि का वर्णन किया है, जिसके कारण हो-लो-लो-कि-या नगर बालूके नीचे दब गया। डाक्टर वेल्लोने मुगोलिस्तानकी भूमिमें बालुका-वृष्टि द्वारा एक नगरके ध्वस होनेका वर्णन निम्न प्रकार किया है—“मजार हजरत वेगमके पासमें बालुका एक पूरा समुद्र है, जो कि उत्तर-पूर्वमें दक्षिण-पूर्वकी ओर बाकायदा लहरोंमें आगे बढ़ रहा है। बालूके टीले अधिकतर दसमें बीस फुट तक ऊँचे हैं, लेकिन कुछ पूरे सौ फुटकी छोटी पहाड़ीसे दिखाई पड़ते हैं, कुछ तो और भी ऊँचे हैं। वह एक ऐसे मैदानको ढाके हुये हैं, जहा नीचे जहा-तहा कठोर मिट्टी दिखाई पड़ती है। यह टीले दो या तीनके समूहमें एकके पीछे एक चले गये हैं। लहरे वैसे ही मालूम होती हैं, जैसे बालूकामय तटपर समुद्रके पानीके हट जानेपर मालूम होती हैं। दक्षिण-पूर्वकी ओर इन टीलोंकी शकल चद्राकार तथा कुछ खाली डलानकी तरह होती है।

\*“मस्ल-उल्-अवसार” (शहाबुद्दीन)।



लेकिन, कभी इस निर्जन भूमिमें हरे-भरे नगर और गाव बसे थे। उन्हींके ध्वसावशेषोंमें भारतीय सस्कृतिके चिह्न और भारतीय इतिहासपर प्रकाश डालनेवाली बहुत-सी महत्त्वपूर्ण सामग्री मिली है।

चंगताई खानका राज्य बहुत विस्तृत था। १३२१ ई० में जब तुर्क और मंगोल प्रधानताके पक्षपातियोंमें झगडा बहुत बढ़ गया, तो मंगोल-दलने चंगताई-वंशके पूर्वोत्तरीय भागको अपने हाथमें कर लिया। मुगोलिस्तानका प्रथम खान तुगलक तेमूर था, जो कि संयुक्त चंगताई राज्यके खान ईसान-बुगाका पुत्र था। मुगोलिस्तानके खानोंकी नामावली निम्न प्रकार है —

१. तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र	—१३६२ ई०
२. इलियास, तुगलक-पुत्र	१३६२-८९ "
३. खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र	१३८९-९९ "
४. शमाजहान, खिजिर-पुत्र	१३९९-१४०८ "
५. मुहम्मद, खिजिर-पुत्र	१४०८-१६ "
६. नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र	१४१६-१८ "
७. शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र	१४१८ "
८. बेइस, शेरअली-पुत्र	१४१८-२८ "
९. शातुक, शेरअली-पुत्र	१४२८-३४ "
१०. ईसानबुगा, बेइस-पुत्र	१४३४-६२ "
११. दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र	१४६२-६८ "
१२. यूनस, बेइस-पुत्र	१४६८-८७ "
१३. महमूद, यूनस-पुत्र	१४८७-१५०८ "
१४. मन्सूर, महमूद-पुत्र	१५०८ "
१५. सईद, अहमद-पुत्र	१५०८-३३ "
१६. रशीद, सईद-पुत्र	१५३३-५६ "
१७. अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र	१५९३ "
१८. महमूद	
१९. इस्माईल	

### १ तुगलक तेमूर, ईसानबुगा-पुत्र (—१३६२ ई०)

चंगताई-वंशके इतिहासमें हम पढ़ चुके हैं, कि किस तरह मंगोल सरदारोंने अपनी प्रभुता और अलग अस्तित्व कायम रखनेके लिये कोशिश करके असफल होनेपर चंगताई राज्यके एक भाग को अलग कर अपना अलग खान चुना। इस भागको मंगलई-सूवे या मंगोलिस्तान कहते थे—मंगलाका अर्थ सेनाका हरावल भी है। इस भूभागमें कुल्जा, सप्तनद, इस्सिकुल, दक्षिणी सप्तनद तथा काशगरसे कूचा तक सारा पूर्वी तुर्किस्तान शामिल था। मुगोलिस्तानी-वंशके संस्थापनमें सबसे अधिक हाथ अमीर पुलादचीका था। यद्यपि मंगोल-अमंगोलके साथ मुसलमान और अ-मुसलमानका सवाल भी उठाया गया था, लेकिन उनका पहला खान तुगलक तेमूर भी अधिक दिनों तक अपनेको रोक नहीं सका, और अपनी प्रजा और अमीरोंकी हमदर्दी प्राप्त करनेके लिये उसे मुसलमान बनना पड़ा। तुगलक तेमूरके जन्मके बारेमें कहा जाता है, कि उसकी मा अपने पतिके मरनेके बाद एमिल खोजा दुवा-पुत्रकी पत्नी बनी। वही तुगलक तेमूर पैदा हुआ। वहासे उसे लाया गया। दूसरी कहावतके अनुसार पुलादचीने उसे पहले खानके वंशसे प्राप्त किया। ईसानबुगाकी प्रिया भार्या सातिलमिश थी, और दूसरी वीवीका नाम मनलिक था। मनलिकको गर्भिणी देखकर उसकी बड़ी सौतके दिलमें ईर्ष्या पैदा हुई। इसी समय ईसानबुगा मर गया, और मनलिक एमिलखोजाकी पत्नी बन गई। अमीर पुलादची दोगलतको अग एक खानकी जरूरत पड़ी। उसने मनलिक और उसके पुत्रको ढूँढनेके लिये ताश तेमूरको कहा। ताशने कहा—“यह बड़ी लम्बी और कठिन यात्रा होगी, इसलिये यात्राकी अच्छी तरह तैयारी करनी पड़ेगी। मैं प्रार्थना करूंगा, कि हमें छ सौ वकरिया मिलें, जिसमें कि पहले हम उनका दूध



पीते रहें, पीछे एक-एकको मारकर खाते अपनी यात्रा जारी रखते ।” तब तेमूर अभियानमें सफल हुआ और वह मनलिकके वच्चेको चुरा लाया । फिर वह अक्सू गया, जहापर अमीर पुलादचीने वच्चे तुगलक तेमूरको खान घोषित किया । तुगलक तेमूर केवल मंगलाई-सूबेका ही नहीं, बल्कि चगताई राज्यके कुछ और भागोंका भी शासक था । कहते हैं, जब वह कतमक (जुगारिया) देशमें लाया गया, तो उसकी उमर सोलह सालकी थी । अठारह वर्षकी उमरमें वह खान बनाया गया । जन्म उसका ७३० हि० (२५ X १३२९-१५ IX १३३०) में हुआ था । चौबीस वर्षकी उमरमें वह मुसलमान बना ।

शेख जमालुद्दीन नामक एक सूफी-मन कतकमें रहता था । उसने जुमा (शुक्र) के दिन भविष्यद्वाणी की थी—“मैं तुममें छुट्टी लेता हूँ, दूसरी बार हम कयामतके दिन मिलेंगे ।” उसने मस्जिदके मुखज्जनको भी साथ चलनेके लिये कहा । तीन फरसक जानेपर मुखज्जन किसी कामके लिये लौटा, और अजानके लिये मीनारपर चढ़कर उतरा, तो देखा मीनार चारों ओरसे छिप गया है, बालुका-वृष्टि हो रही थी, और इतने जोरकी कि मारा नगर उससे ढक गया । थोड़ी देरमें धरतीके ऊपर उठे मीनारका थोड़ा ही सा भाग ऊपर निकला था । मुखज्जन मीनारपरसे बालूपर कूदकर भाग निकला । शेख अक्सूके पटोममें बाइबुलमें पहुँचा । खान तुगलक तेमूरकी शिकार-पार्टी थी, जिसमें उसे जाना जरूरी था । न जानेके कारण उसे पकड़कर खानके पास ले गये । अनजान होनेमें उस ताजिकको मजा नहीं दी गई । उस समय खान अपने कुत्तोंको सूअरका मांस खिला रहा था । वह शेखमें बोला—“क्या तू इस कुत्तेसे अच्छा है, या यह कुत्ता तुझसे अच्छा है ?”

शेखने जवाब दिया—“अगर मेरे भीतर ईमान है, तो मैं इस कुत्तेसे बेहतर हूँ, यदि मेरेमें ईमान (इस्लाम) नहीं है, तो यह कुत्ता मुझसे बेहतर है ।”

इस बातको सुनकर तुगलक बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने शेखको घोड़ेपर चढ़ाकर लौटाया । शेखकी यही करामत थी, जो कि उसके प्रभावमें आकर खानने इस्लामको स्वीकार किया ।

मंगोलोंके समयमें पहले ही ईतिश-एमिलमें त्यान्गान तक और बरकुलमें फरगाना और बलकाश तकके प्रदेशको कुकचा-नेङ्गिज कहा जाता था । इस भूमिमें मंगोलोंके आनेसे पहले अच्छी आबादी थी, लेकिन १४ वीं सदीके उत्तरार्धमें बन्नीवामी और घुमन्तू सस्कृतियोंका द्वंद्व चल रहा था । तुगलक तेमूरने इस्लामी मस्कृतिको स्वीकार कर मंगोलोंकी घुमन्तू सस्कृतिको छोड़ दिया । लेकिन उसमें दो शताब्दियों पहले यहाँके वासी मुसलमान नहीं, बल्कि बहुत कुछ बौद्ध और कुछ-कुछ नस्तोरी ईसाई थे । चगताईकी एक शाखाके उत्तराधिकारी तेमूरियोंका मुगोलिस्तानी खानोंके साथ बराबर जगड़ा रहता रहा । तेमूरी इन्हें चिढ़ानेके लिये जे-ते (प्रातवासी) कहा करते थे ।

१३६० ई० में तुगलक तेमूरका अपने तुर्क-अमीरोंके साथ अच्छा सवध था । तुगलक तेमूरने ७६२ हि० (११ XI १३६०—२ X १३६१ ई०) में अन्तर्वेदपर आक्रमण किया था । उसकी मृत्युके (७६८ हि० २१ X १३६२—११ IX १३६३ ई०) बाद ही उसके पुत्र इलियाम खोजाकी सेना अन्तर्वेदमें हटाई गई । तुगलक तेमूरकी कन्न अलमालिकमें अलिमतूमें आठ वेर्स्ट (५ फरमख) और तरानचिन (तरानचिन्स्की) गाव खारिनमजारमें एक वेर्स्ट पर अब भी मौजूद है ।

तुगलक तेमूर मृत्युमें पहले ही पुलादची मर गया था । उसका स्थान उसके अल्पवयस्क पुत्र खुदादादने लिया ।

## २ इलियास खोजा, तुगलक-पुत्र (१३६२-८९ ई०)

समरकन्दका उपराज रहकर बापकी मृत्युपर कैसे मुगोलिस्तान भागकर इलियासने गई मभाली, इसे हम बतला चुके हैं । अमीर पुलादचीका भाई कमरुद्दीन इसके समय सर्वेसर्वा था ।

इलियाम खोजाने मीराके युद्धमें तेमूरी-सेनापर विजय पाई । एक बार उसने समरकन्दको भी जा घेरा, लेकिन थोड़ीकी महामारीके कारण उसे वहाँसे हटना पड़ा । अमीर पुलादचीके भाई अमीर कमरुद्दीनने शक्तिको अपने हाथमें रखनेके लिये एक दिन तुगलक तेमूरके अठारह पुत्रोंको मरवा

डाला । कमरुद्दीनका भतीजा अमीर खुदादाद अपने पिताके लगाये वशके साथ सहानुभूति रखता था । उसने तुगलकके एक पुत्र खिजिर (?) खोजाको काशगर-बदख्शाके पहाडोमे भेजकर छिपा दिया ।

इलियासने चीनके विरुद्ध भी धर्मयुद्ध छेडा, और कराखोजा तथा तुरफानपर अधिकार कर वहाके लोगोको मुसलमान बननेके लिये मजबूर किया । इन युद्धोके समय इलियासको अनाजकी महिमा मालूम हुई, और उसने अपने भाई खिजिरसे पूछा—“क्या सेनाके लिये खाद्य-सामग्री जमा करनेके वास्ते मुगोलिस्तानमे खेती की जा सकती है ?”

तेमूर-लग ७७२ हि० (२६४४-१६४५ ई०) मे कोचकर तक चढ आया था, लेकिन उस समय वह मुगोलिस्तानमे और भीतर बढ़कर आक्रमण नहीं कर सका । १३७५ ई०के आरम्भमे वह सैरामसे प्रस्थानकर चारिनतक पहुँचा । उस समय कमरुद्दीनका डेरा कोकतेपे पर्वतमे था । तेमूर-लगके साथ सीधे लडना उसने पसंद नहीं किया, और बेरकेई गुरयानकी तरफ हटा, जिसके बीच मे तीन बडी-बडी नदिया पडती थी । इन्हीमेसे एकके किनारे पीछा करके तेमूरने उसे हराया और आगे बढ़ते वाइतकमे पहुँचा । अपने तीन अमीरोको उसने इलीके तटपर दड दिया । तेमूर वाइतकमे ५३ दिन रहा । इस समय उसके पुत्र जहागीरने पहाडोमे पीछा करके कमरुद्दीन और मंगोल सेनाको उगफेरमर (पूर्वी तुर्किस्तान)मे हराया । वाइतकसे तेमूर करा-कसमक (कस्तेक) डाडा होते हुये अतवाश पहुँचा । वहासे अरपाकी द्रोणीमें जा कमरुद्दीनकी लडकीसे अपना व्याह कर यासी (जासी) डाडेसे होकर उजगेन्दको लौट गया । ख्वारेज्मकी चढाईमे तेमूरको फसा जानकर कमरुद्दीनने १३७६ ई०मे उसपर चढाई की, और अतवाश पहुँचा । कमरुद्दीनने रास्तेमे उसे जा घेरा, लेकिन सेकिज-इगाचेमे बडी बुरी तरहसे हारकर घायल हुआ । इस विजयके बाद तेमूर-लग अताकुर होते सिर-दरिया लौटा, जहासे वह समरकन्द चला गया । १३७७ ई०मे तेमूरने कमरुद्दीनके विरुद्ध फिर सेना भेजी, जिसने कुरातमे उसे हराया । तेमूर बडी सेनाके साथ स्वयं सप्तनदमे पहुँचा था । उसके हरावलने कमरुद्दीनको बुम्सकमे पाया । तेमूर कोचकर तक गया, जहासे ओईनोग होते उजगन्द लौटा ।

१३८३ ई०मे तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढाई की । सप्तनदमे उसने अपनी कुछ सेना भेजी । उसकी सेना अताकुममे थी, जहा हरावल भी शत्रुको छिन्न-भिन्न करके लौट आया । अब दोनो सेनाओको लेकर तेमूर इस्सिककुल महासरोवर होते कोकतेपे पर्वतमे पहुँचा, लेकिन कमरुद्दीनका वहा कोई पता नहीं था, इसलिये समरकन्द लौट गया ।

### ३ खिजिर मुहम्मद, तुगलक-पुत्र (१३८९-९८)

बापके मरनेके समय खिजिर खोजा बारह वर्षका था । कमरुद्दीनके शासनकालमे खुदादादने उसे काशगर और बदख्शाके बीचके पहाडोमे छिपा रक्खा । फिर बारह वर्षतक वह दक्षिण-पूर्वके सीमातपर लोवनोर झीलके पास रहा । जिस तरह उसके बापको खोजकर लाया गया था, उसी तरह खिजिरको भी लोवनोरसे लाकर १३८९ ई०के आसपास खान बनाया गया । इलियास और खिजिर दोनो भाई थे । दोनोकी बाल्य-कथाये एक दूसरेसे इतनी मिला दी गई है, कि उनके बारेमे कुछ निश्चयपूर्वक कहना मुश्किल है । तो भी इतना मालूम होता है, कि इलियास शायद बहुत दिनों तक कमरुद्दीनके हाथो नहीं बच पाया । खिजिरसे मुगोलिस्तानकी चरागाहोमे खेती करनेके बारेमे सलाह लेनेसे पता लगता है, कि इलियास और खिजिर दोनो भाई उस समय साय रहते थे ।

जिस साल खिजिरने गद्दी सभाली, उसी साल तेमूरने फिर मुगोलिस्तानपर चढाई की । वह अल्कोशिदनासे बुरीवाश और त्यूपेलिक करके होते ओरनाक (ओजनाक या ओरतक) की ओर बढ़ा । अतकानसूरीमे जब पहुँचा, तो गर्मियोके दिनोमे अब भी वहा बर्फ मौजूद थी । ताउरा-अतलस और अईगिरके मैदान, उलागचारलिग होते आगे बढ़ चापरऐगिरमे उसने मुगोलिस्तानी सेनाको पूरी तौरमे हरा दिया । खिजिर खानने अगा-त्यूरीके नेतृत्वमे तेमूरके खिलाफ सेना भेजी । अगा-त्यूरी जब उरेगयारमे पहुँचा, तो तेमूरने उसके विरुद्ध अपनी हरावल सेनाको भेज अपनी सेनाको कई टुकडियों मे करके भिन्न-भिन्न दिशाओमे उसे घेरनेके लिये भेज दिया । तेमूर-लग स्वयं करागुचुर तरबगताई डाडेके पश्चिमी भागकी ओर चला । तेमूर-पुत्र उमरशेख हुमरी मेनाके साथ अगा-त्यूरीके पीछे कोबुद

डांडेकी ओर जा उसे हरानेमें सफल हुआ। अगा-न्यूरी भागकर ककमा-बुरुजीमें पहुँचा। तेमूरने करागुचुरमें डेरा डालकर अपनी एक सेनाको इर्तिश-उपत्यकाकी ओर भेजा, और वदियोंको वहाँसे समरकन्द भेज दिया। फिर वह एमिलगूचुरमें खानकी एक चरागाह सराय-ओर्दामें पहुँचा। एमिल-गूचुरमें वह सरायओर्दामें ठहरा। एमिलसे तेमूरने अपनी सेनाको दक्षिणी मुगोलिस्तानपर आक्रमण करनेका हुक्म दिया। सभी सेनाको आगे युलदुजमें इकट्ठा होना था। युलदुजसे खिजिर खोजाके पीछे उसने उमरशेखके नेतृत्वमें एक सेना चालिश (करासर)में भेजी। फिर पूर्वी तुर्किस्तान हो ८-९ अगस्त १३८९ ई०को युलदुज लौट ३० अगस्तको समरकन्द पहुँचा। इस रास्तेसे कारवा दो महीनेमें गुजरता था।

१३९० ई०में फिर तेमूरने मुगोलिस्तानपर आक्रमण किया। ताशकन्दसे वह कमरुद्दीनका पीछा करते इर्तिशतक पहुँचा। उसकी सेना ताशकन्दसे इस्सिककुल (सरोवर), कोकतेपे (पर्वत) फिर पहाड़ी-दुर्ग अराजातू होते निश्चय ही वर्तमान अल्माअता नगरकी भूमिसे गुजरी। अलमालिक फिर डली नदी और काराताल होते, इचनीबुचनी, उकुर-कितचीके मैदानमेंसे जब तेमूर-लग इर्तिशके तटपर पहुँचा, तो कमरुद्दीन वहाँसे उत्तरकी ओर भागकर त्यूलेस देशमें चला गया। इस देशमें समूरी छालवाले जानवर बहुत होते हैं। लौटते वक्त तेमूर अलतुन-न्युरगे और अरतक-कुल (वलखाश) सरोवरके रास्ते आया। कमरुद्दीन अपने अन्तिम जीवनमें लकवाकी बीमारीसे वेकार हो गया, और लोगोंने उसे कुछ रखेलियों और थोड़े दिनोका खाना देकर जगलमें छोड़ दिया।

तेमूर-लगको इन सारे अभियानोंसे बहुत फायदा नहीं हुआ। उसके प्रतिद्वंद्वी घुमन्तुओको अपने नगरी और गावोंका मोह नहीं था, इसलिये वह तेमूरी-सेनाके सामने भागकर अपनी रक्षा कर लेते, और उमके हटते ही फिर एकत्रित हो तेमूरको परेशान करनेके लिये तैयार हो जाते। इसलिये तेमूरने अब मुगोलिस्तानके साथ अपनी नीति बदलनी चाही। इसकी खबर पाकर १३९७ ई०में खिजिर खोजाने अपने ज्येष्ठ पुत्र शमाजहानको दूत बनाकर तेमूरके दरबारमें भेजा। तेमूर-लगने उसके द्वारा उसकी बहिन तवक्कल आगासे ब्याह किया। नई रानीके आनेपर तेमूरने उसका नाम किचिक खानिम (छोटी रानी) रखवा।

खिजिर खानके समय मुगोलिस्तानके अधिकांश कबीले मुसलमान थे।

खिजिरखान १३९९ ई०में मरा। उसके बाद उसके चार पुत्री शमाजहान, मुहम्मद ओगलान, शेरअली और शाहजहानके बीचमें उत्तराधिकारके लिये संघर्ष शुरू हुआ। इस समय उमरशेखका पुत्र मिर्जा अस्कन्दर मुगोलिस्तानकी सीमापर अवस्थित फरगानाका राज्यपाल था। इस झगड़ेसे फायदा उठाकर मिर्जा अस्कन्दरने अक्सू शहरको घेर लिया, जो कि चीनके व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्र था। कुछ समयके लिये व्यापारके रास्ते अस्कन्दरके हाथमें आ गये। खिजिरके मरनेपर (१३९९ ई०) मुगोलिस्तानका कुछ भाग तेमूरके राज्यमें सम्मिलित कर लिया गया, जिसमें इस्सिककुल सरोवर-वाला प्रदेश भी था। तेमूर-लगने क्षुद्र-एशिया (वर्तमान तुर्की)से लाकर काले तातारोंको इस्सिककुलके किनारे बसाया।

#### ४ शमाजहान, खिजिर-पुत्र (१३९९-१४०८ ई०)

भाइयोंके संघर्षमें शमाजहानको सफलता मिली। यह तेमूरके जीवनका अन्तिम समय था। तेमूरके मरनेके साथ ही उसके लड़कोंमें जो झगडा पैदा हुआ, उससे फायदा उठा शमाजहानने १४०७ ई०में चीनकी मदद लेकर अन्तर्वेदपर चढ़ाई की, किन्तु १४०८ ई०में उसका देहान्त हो गया।

#### ५ मुहम्मद, खिजिर-पुत्र (१४०८-१६ ई०)

मुहम्मद इस्लामका बहुत पक्षपाती था। इसीके शासनकालमें अधिकांश मुगल-कबीले मुसलमान हो गये। इसने शाहखेके पास दूत भेजा था। १४१६ ई०में यह काशगरमें था। चादिरकुलके उत्तरकी ओरकी पहाड़ियोंमें इसकी बनवाई एक रवात (पाथशाला)में बड़े-बड़े पत्थर इस्तेमाल किये गये हैं। इतिहासकार हैदरका कहना है, कि ऐसे पत्थर कश्मीरके मदिरोंमें मिलते हैं। रवातका फाटक

चालीस हाथ ऊँचा है। फाटकके भीतर घुसकर दाहिनी ओर घूमनेपर साठ हाथ लम्बा एक रास्ता मिलता है। फिर चालीस हाथका एक गुम्बद है, जो बड़ा ही सुंदर और सुडौल है। गुम्बदके चारो ओर चलनेका स्थान है, जिसके चारो तरफ और रास्तेमें भी कितने ही सुंदर कमरे बने हुये हैं। पश्चिम ओर तीस हाथ ऊँची एक मस्जिद है, जिसमें बीससे अधिक द्वार हैं। सारी इमारत पत्थरकी है। दरवाजोंके ऊपर विशाल शिलाखंड रखे हैं, जिन्हें कश्मीरके मंदिरके देखनेसे पहले हैदर अद्भुत चीज समझता था।

डाक्टर लेडसेलने शायद हैदरलिखित इतिहास 'तारीखे-रशीदी' से उद्धृत डाक्टर वेलोका उद्धरण देते हुये लिखा है—असली बात यह है, कि महमूदखानने "ताश-रवाद" नामक एक प्राचीन हिंदू-मंदिरको मस्जिद बना दिया, जो कि चादरकुलवाले डांडेके रास्तेपर काशगर राजधानीको किर्गिजोंसे बचानेके लिये बने दुर्गमें बना था। हैदर ('तारीखे-रशीदी' कार)का कहना है, कि वस्तुतः महमूदखानने बड़े-बड़े पत्थरोंकी यह रवात बनवाई।

यह रवात चादरकुलसे थोड़ी दूर अलमाती, वेरनीसे काशगरको नारिनसे होकर जानेवाले मुख्य रास्तेपर अवस्थित है, जिसे बहुतसे युरोपीय यात्रियोंने देखा है। डाक्टर सीलेडने लिखा है—“यात्रीको भारी पत्थरोंसे बनी हुई अडतालीस कदम लम्बी और छत्तीस कदम चौड़ी इमारतको देखकर आश्चर्य हुये बिना नहीं रहता। इसकी छत समतल है, जिसके बीचसे पच्चीस फुट ऊँचा आधा नटसा गुम्बद उठा हुआ है। दरवाजा काफी ऊँचा और मेहराबी है, जिसके द्वारा भीतर जाया जा सकता है। भीतर खिड़किया नहीं हैं। गुम्बदके नीचे एक कमरा या शाला है, जिसकी बगलमें नौ फुट ऊँचाईवाली कोठरिया चारो दिशाओमें लातिनी (रोमन) सलेबकी शकलमें है। . . . कोठरिया नीचे वर्गाकार और ऊपर गोल हैं। उनके भीतर पूरा अधेरा छाया रहता है, सिवाय उन कोठरियोंके जिनकी छते गिर पड़ी हैं। इनके द्वार इतने नीचे हैं, कि आदमीको बहुत झुककर भीतर जाना पड़ता है। कोठरियोंके भीतर किसी गवाक्ष या सोने-बैठनेकी जगह नहीं है। इस इमारतमें रसोईघर या चूल्हेका कहीं पता नहीं। इमारत पास-पड़ोसमें पाये जानेवाले पत्थरोंकी बनी हुई है। बीचके हॉलमें पलस्तरका थोड़ा-थोड़ा चिह्न मिलता है, लेकिन किसी तरहकी सजावट नहीं है।” यह यात्री लिखता है, कि मध्य-एशियाके कारवा-सरायो या रवातोसे इस इमारतका कोई सादृश्य नहीं है। कोई-कोई इसे ईसाई-मठ बतलाते हैं, और कोई-कोई हिंदू (बौद्ध)-विहार। दोनों ही एक समय इस भूमिपर बहुत प्रभावशाली धर्म थे, इसलिये इसका बौद्ध-विहार या नेस्तोरीमठ होना आश्चर्यकी बात नहीं है। महमूदखानने ऐसी विचित्र इमारत स्वयं बनाई हो, यह विश्वासकी बात नहीं जचती।

### ६ नक्शेजहान, शमाजहान-पुत्र (१४१६-१८ ई०)

१४१६ ई०में खान बननेपर इसके पास चीन-सम्राट और शाहरुखके दूत आये। इसका शासन-काल थोड़ा रहा, और १४१८ ई०के आरम्भमें शेरअलीके पुत्र बेइस ओगलानने इसे खतम करके गद्दी सभाल ली।

### ७ शेरमुहम्मद, मुहम्मद-पुत्र (१४१० ई०)

शेर मुहम्मद शाहरुख मिर्जाका समकालीन था। इसका भतीजा बेइस विद्रोही बनकर कजाको (लुटेरो) का जीवन बिता स्वतंत्र खान बन गया। बेइसके लूट-मारमें बहुतसे मंगोल तरुण भी शामिल थे, जिनमें इतिहासकार हैदरका दादा मीर सैयदअली भी था। हैदरने बड़े अभिमानके साथ लिखा है—“मैं बेइसखानका नाती हूँ, और बापकी तरफ अमीर खुदादाद-पुत्र सैयद अहमद मिर्जा-पुत्र अमीर सैयदअली मेरा दादा था। अमीर खुदादादने अपने पुत्र सयद अहमदको काशगरका राज्यपाल बनाकर भेजा था। उस समय वहाँ खोजा शरीफकी बहुत चलती थी। उसने अधिकार छिन जानेमें नाराज होकर काशगरको उलुगवेगके हाथमें दे दिया। इसपर सैयद अहमद मिर्जाको अपने बेटे अमीर सैयदअलीके साथ काशगर छोड़कर मुगोलिस्तानकी तरफ भागना पड़ा, जहाँ अहमद जल्दी ही मर गया।”

## ८ वेइस, शेरअली-पुत्र (१४१८-२८ ई०)

शेरमुहम्मदके समय यह अलग खान वन बँठा पर चैनसे रहनेका मौका नहीं मिला। १८२० ई० में मुहम्मदखान-पुत्र शेरमुहम्मदमें इसका सवर्ण हुआ, और अन्तमें शेरमुहम्मदको समरकन्द भाग जाना पड़ा। जहाँ कुछ समय बंदी रखकर उलुगवेगने उसे मुक्त कर दिया और १८२१ ई० में वह मुगोलिस्तान लौटा। वेइसने अपनेको पक्का मुसलमान साबित करनेके लिये मुसलमानों के ऊपर आक्रमण करनेकी मनाही कर दी थी। लेकिन धुमन्तुओंके लिये लूट-मारका कोई रास्ता तो चाहिये, इसलिए उसने बौद्ध कल्मकोको अपनी जहादका शिकार बनाया। पर, कटमक भी बहुत तगड़े थे। कई बार उन्होंने वेइसको हराया। मिंगलकके युद्धमें पकड़कर उन्होंने उसे अपने राजा ईसन यैमीके पास भेज दिया। उसने घोड़ेसे उतरकर यैसीको सलाम नहीं किया, तो भी मंगोलोंको छिद्र-गिम्के पवित्र वशका ख्याल था, इसलिये उन्होंने वेइसको छोड़ दिया। दूसरा युद्ध उसका कवाका के पास मुगोलिस्तानमें हुआ, जिसमें मुक्किलमें जान बचाकर वह भाग पाया। एक और युद्ध उसने तुफानके पास ईसन यैमीमें किया, जिसमें वेइस बंदी हुआ, और उसने अपनी बहिन मजंदूम खानिमको देकर छुट्टी पाई। वेइसने कटमकोंके साथ छोटे-बड़े एकसठ युद्ध किये, जिसमें सिर्फ एकमें सफल हुआ। वेइस शरीरमें बहुत बलवान् था। हर साल वह तुफान, तरिम-उपत्यका, लोब और कातकके प्रदेशोंमें जंगली उंटोंके शिकारके लिये जाता। “खान स्वयं गर्मियोंमें अपने दासोंकी मददसे घड़ोंमें पानी निकालकर जमीनकी सिंचाई करता।”

अमीर खुदादाद अब बानवे मालका हो गया था। वह हज करनेके लिये जाना चाहता था, लेकिन मौका नहीं पा रहा था। इसपर बूढ़ेने उलुगवेगको बुलाया, लेकिन उलुगवेगको मंगोलोंके हाथों बड़ी मुसीबत उठानी पड़ी। जब वह मुगोलिस्तानके प्रसिद्ध नगर चूमे पहुँचा, तो अमीर खुदादाद सेना छोड़कर मिर्जा उलुगवेगसे जा मिला। मुगोल हराकर तितर-बितर कर दिये गये। खुदादाद उलुगवेगके साथ समरकन्द पहुँचा। नेमूरियोंको छिद्र-गिस् खानके तूरा (यासाक)के जाननेकी बड़ी उत्सुकता थी। शायद उनको मालूम नहीं था, कि छिद्र-गिम्के आदेशों (यासाक)को चीनी और मंगोल भाषाओंमें लिखकर पहिले हीसे सुरक्षित रखा गया है। उस समय समझा जाता था, कि छिद्र-गिस्का तूरा कुछ बड़े-बूढ़ाने अपनी स्मृतियोंमें सुरक्षित रख छोड़ा है। अमीर खुदादाद छिद्र-गिस्के तूराका नहीं, बल्कि इस्लामका पक्षपाती था। उसने उलुगवेगसे कहा—“हमने कुख्यात छिद्रगिसी तूराको बिल्कुल छोड़ शरीयतको स्वीकार किया है, लेकिन, यदि मिर्जा उलुगवेग तूराको पसंद करते हैं, तो मैं उन्हें ऐसे मिखलाऊंगा, जिसमें कि वह शरीयतको छोड़कर तूराको स्वीकार करे।” मिर्जा उलुगवेगने शायद अपनी वैज्ञानिक-बुद्धिमें बूढ़ेको परख लिया हो, इसलिए उसने तूरा सीखनेका ख्याल छोड़ दिया।

उलुगवेग अपने डम आक्रमणमें चू, और चारिनके रास्ते गया था। खुदादाद जहाँ उसे आकर मिला, उसी स्थान पर मई १४२५ ई०में शेरमुहम्मदकी हार हुई। उलुगकी सेनाने शेरमुहम्मदका पीछा इरी नदीतक किया, यद्यपि स्वयं उलुगवेग युलदुजमें रहा। वहाँसे लौटते वक्त रास्तेमें कर्गशी स्थानमें उसने प्रसिद्ध कोक-ताश (नील-पापाण)को पाया। तेमूर भी इस कोक-ताश (नीलपापाण)को समरकन्द ले जानेकी बड़ी इच्छा रखता था, जिसको पूर्ण करनेका अवसर उसके पोतेको मिला।

शेरमुहम्मद वस्तुन वेइसका समकालीन खान था। मुगोलिस्तानका कुछ भाग इसके हाथमें था। उसके मरनेपर उसका राज्य भी वेइसके हाथमें चला गया। वेइस खानको १४२८ ई०में डस्सिककुलके तटपर शातुककी गहमें कत्ल कर दिया गया। उलुगवेग शातुकको खान बनाना चाहता था, इसलिये वेइसके विनाशमें उसकी भी सहमति थी। यह भी कहा जाता है कि वेइस घोड़ा कुदाते हुये स्वयं गिर गया, और गलतीसे अपने ही आदमियोंके तीरका शिकार हुआ।

वेइसके जमानेमें काफिर (बौद्ध) मंगोश—चोरोम, खोशोत, तोरगोन और खाइत—का पूर्वसे मुगोलिस्तानपर आक्रमण शुरू हुआ। १३९९ ई०में ओडरोत राजा उगेची खासागने मंगोलोंके खान

एलवेकको मार डाला । उसके बाद ओइरोतोकी प्रधानता शुरू हुई । १४०८ ई० में उन्होंने उलजई-तिमूरको विशवालिक्मे कआनकी गद्दीपर बैठाया । इसी समय मुगोलिस्तानके कुछ हिस्सेपर पूर्वी-मंगोलोंने अधिकार कर लिया । इन्हीं ओइरोतोको मुसलमान लेखक कलमख (कलमक) कहते हैं । मुहम्मदखान उनसे लड़नेके लिये तैयार हुआ, और उसका प्रतिद्वंद्वी बेइस चीनी लेखकोंके अनुसार पूर्वी तुर्किस्तानसे अपनी मुख्य सेना ले पश्चिममें सप्तनदमें इली-तटपर ईलीवालिक पहुंचा ।

१५ वीं सदीके यात्रियोंके अनुसार मुगोलिस्तान उस समय मुख्यतः घुमन्तुओका देश था, जो तम्बुओ में रहते और घोड़ोंके मांस और कूमिसपर गुजारा करते । उनमेंसे कुछ बौद्ध ओइरोतोकी तरफ थे, और कुछ मुसलमानोंकी तरफ । इलीके तटपर ही बेइस खानको कई बार ओइरोतोके सरदार ईसन यैसीसे लड़ना पड़ा ।

## ९ शातुक, शेरअली-पुत्र (१४२८—३४ ई०)

शातुक समरकन्दमें रहता था, जहासे उलुगबेगने उसे बेइससे लड़नेके लिये मुगोलिस्तान भेजा । मुगोलिस्तानमें शातुकके पक्षपाती अमीर कम थे, इसलिये वह काशगर गया, जहापर खुदादादके पौत्र कराकुल अहमद मिर्जाने उसे हराकर मार डाला । इसपर उलुगबेगने एक सेना भेजी, जो अहमद मिर्जाको पकड़कर समरकन्द ले गई, जहा उसके दो टुकड़े कर दिये गये ।

शातुकके मरनेके बाद मंगोल अमीरोंके दो दल हो गये थे, एक बेइसके बड़े लड़के यूनसको खान बनाना चाहता था, और दूसरा बेइसके दूसरे पुत्र एसेनबुकाको । दोनों ही अल्पवयस्क थे । एसेनबुकाकी पार्टी ज्यादा मजबूत थी, इसलिये वह गद्दीपर बैठा । यूनस अपने आदमियोंके साथ उलुगबेगके दरबारमें चला गया, जिसने उसे ईरान भेज दिया । वावरके अनुसार यह घटना जून १४३४ ई० की है ।

## १० एसेनबुगा, ईसनबुगा, बेइस-पुत्र (१४३४—६२ ई०)

एसेनबुगा अमीरोंके हाथका खिलौना था । उसके प्रभावशाली अमीरोंमें खुदादाद-पुत्र मीर मुहम्मदशाह (अतवाश) और मीर करिमबेदी थे । करिमबेदीने अपने लिये अलाबुगमें एक दुर्ग बनवाया, जहासे वह उलुगबेगशासित फरगानामें लूट-मार किया करता था । तीसरा अमीर मीर हकबेदी बेकिचेक था, जिसने इस्सिककुल सरोवरके एक द्वीप कोइसुइमें अपना गढ़ बनाया था । कलम-कोका भी उत्तर-पूर्वसे बराबर आक्रमण होता रहता था । एसेन एक बार स्वयं तुर्किस्तान शहर और सैरामपर आक्रमण करने गया ।

मुगोलिस्तानी उधर अन्तर्वेदपर लूट-मार करने जाते, तो कलमक उन्हें लूटते-पाटते इस्सिककुलतक पहुंचते—कुछ साल पीछे तो वह सिर नदीतक पहुंचने लगे ।

ईसनबुगाके खान बननेके बाद यूनस तीस हजार परिवारोंवाले ओर्दू और ईराजान तथा मीरक-तुर्कमानके साथ उलुगबेगके पास पहुंचा था । उलुगबेगने उसे अपने पिता शाहखके पास भेज दिया, जिसने यूनसके साथ पुत्रवत् व्यवहार किया । यूनस बारह सालका था, जब कि यज्द (ईरान) में उमने मौलाना शरफुद्दीन यज्दीसे पढ़ना शुरू किया । मौलानाके मरनेके समय वह चौबीस सालका था । फिर वह यज्द छोड़कर यात्रापर निकला, और इराक, अरब, आजुर्वाइजान होकर शीराजमें रहने लगा । एकतीस सालकी उमर तक वह मुगोलिस्तानसे बाहर रहा ।

यूनसके चले जानेपर ईसनबुगा सारे मुगोलिस्तानका खान था । शासन मजबूत हो जानेपर अमीर सैयद अलीने काशगर आनेकी आज्ञा मांगी । यह कह ही चुके हैं, कि काशगरको खोजा शरीफ काशगरीने उलुगबेगको दे दिया था, जिसकी ओरसे अमीर सुल्तान मलिक दुलादाई राज्यपाल नियुक्त हुआ, उसके बाद हाजी मुहम्मद शाइस्ता फिर पीर मुहम्मद वरलस राज्यपाल हुये । सैयद अलीने खानसे कहा—“मैं देखना चाहता हूँ, कि क्या मैं अपने परिवारके पुराने इलाकेपर फिरसे अधिकार स्थापित कर सकता हूँ, जिममें कि चालीस वर्षसे हम वंचित हैं । यदि मैं सफल नहीं हुआ, तो आप मुझे धिक्कार सकते हैं ।” एसनबुकाने अपनी सहमति दे दी ।

इस समय मंगलाई मूयाह (काशगरिया) का अविकाश भाग दोगलतोंके हाथमें था, लेकिन अन्दिजान और काशगरपर ममरकन्दके शासक उलुगवेगका अधिकार था। इस्तिक्कुलका पहाड़ी इलाका मघर्पोका अखाड़ा बन गया था। बाकी इलाके दोगलत अमीरोंके हाथमें थे। अमीर सैयद अली अक्सूमे अपने भाइयोंको भगा वहाँ अपने परिवारको रख सात हजार सेना लेकर काशगरके ऊपर चढ़ा। पहली ही भिडन्तमें हाजी मुहम्मद शाइस्ता भाग निकला। मुगोलिस्तानियोंने चगताइयो (उलुगवेगकी सेना) का पीछा किया, लेकिन अभी भी काशगरके किलेमें दुश्मन मौजूद था—शाइस्ताने वहाँ मोर्चाबंदी कर रखी थी। अमीर सैयद अलीने नगरपर अधिकार पा आमपासके इलाकोंको उजाटना शुरू किया। उलुगवेगके पास ममरकन्द गुहार गई, लेकिन वह ऐसी स्थितिमें नहीं था, कि सेनाकी मदद भेजना। अमीर सैयद अलीने जब तीसरे वर्ष काशगरपर चढ़ाई की, तो लोगोंने तंग आकर खोजा गरीफसे कहा—“हमने लगातार तीन वर्षतक फसल गवा दी। अगर इस सालकी फसल भी हाथसे चली गई, तो देशमें भारी अकाल पड़ेगा।” लोगोंने पीर मुहम्मद बरलसको पकड़कर अमीर सैयद अलीके हाथमें दे दिया, जिसने उसे मारकर काशगरके भीतर प्रवेश किया, और चौबीस सालतक वहाँ राज्य किया। हैदरके अनुसार उसने कृषि और पशु-पालनके ऊपर बहुत ध्यान दिया। वह तीन पुत्र और दो लड़कियाँ छोड़कर मरा। इन्हीं पुत्रोंमेंसे एक “नारीखे-रशीदी” का लेखक मुहम्मद हैदर मिर्जा था।

ईसानबुगाकी तरुणाईके कारण अमीर उसका बहुत मान-सम्मान नहीं करते थे। उस समय तुर्फानके उइगुरोंके अमीर तेमूरका बहुत मान था, जिससे दूसरे अमीर डाह करने लगे, और एक दिन खानके सामने ही उन्होंने पकड़कर तेमूरकी चोटी काट डाली। अमीर सैयद अलीने जब यह खबर सुनी, तो उसने ईसानबुगा खानको अकवासमें ले आकर अक्सूका राज्यपाल बना दिया। चोटी काटनेसे यह मालूम होगा, कि अभी उइगुरोंमें गैर-मुस्लिम (बौद्ध) भी थे। जान पड़ता है, मुस्लिमोंसे अलग करनेके लिये चुटियाका चिह्न समकालीन भारतमें ही नहीं, बल्कि मध्य-एशियामें भी था। चीनियोंमें जबर्दस्ती मचूओने-चोटी रखवाई थी, किन्तु मंगोल गृहस्थोंकी चोटी तो मैंने अपनी आँखों १९३५ ई० में खैलरके पास देखी। जब उकइनके लोग तुर्की सुल्तानके अधीन थे, उस समय वहाँ भी चोटी ईसाइयों का और दाढ़ी मुसलमानोंका चिह्न था।

ईसानबुगाके समय अमीरोंकी मनमानी चलती रही। दुगलत कबीलेके मीर करीमबर्दीने मुगोलिस्तानकी सीमातपर अलाबुगाकी पहाड़ीपर अपने किन्ने बनाये थे, जहाँसे वह फरगना अन्दिजानकी ओर मुसलमानोंको लूटने जाता। दूसरा अमीर मीर हकबेर्दी वेगजिकने इस्तिक्कुलके टापू कुई-सुईमें किला बनाकर कलमखोंसे वचनेके लिये वहाँ अपने परिवारको रखा था। जारा और वारितप कबीलोंके अमीर ईमान यैशीके पुत्र अमासाजी यैशीका माय देते थे। ईसान यैशी कलमक-भूमिका स्वामी था। कालूजी, बलगाजी और दूसरे कितने ही कबीले कजाक-खान अबुल्खैर (तुर्किस्तान) के साथ हो गये थे।

ईसानबुगाके अक्सूमें जम जानेपर बीरे-धीरे उसके अमीर भी उसके पास जमा होने लगे। खान भी उनके साथ अच्छा बर्ताव करता था। जब शक्ति मजबूत हो गई, तो ईसानबुगाने ८५५ हि० (१४५४ ई०) में एक साथ ही आक्रमण करके सैराम, तुर्किस्तान शहर और ताशकन्दको लूट-मारकर बर्बाद कर दिया। इस समय बाबरका दादा सुल्तान अबूसईद मिर्जा अन्तर्वेद (पश्चिमी तुर्किस्तान) का बादशाह था। अबूसईदने खानका पीछा किया, और उसे बगी—जिसे इतिहासकी पुस्तकोंमें तराज कहा जाता है—में जा पकड़ा। मुगल बिना युद्ध किये ही भाग गये। अबूसईद अन्तर्वेद लौट गया, लेकिन जब वह खुरानानकी ओर गया, तो फिर मुगोलिस्तानियोंने हमला कर दिया। ईसानबुगाके अन्दिजानमें पहुँचनेकी बात सुनकर अबूसईदके सेनापति मिर्जा अली कूचुकने भीतरी किलेको मजबूत कर दिया था, लेकिन बाहरी किले पर ईसानबुगाका अधिकार हो गया। अन्तमें मुलह हुई। खान सारे अन्दिजान इलाकेपर अधिकार करके लौट गया। सुल्तान अबूसईदको बड़ी परेशानी थी। यदि वह मुगोलिस्तान पर चढ़ाई करता, तो खान अपने देशके दूसरे छोरपर चला जाता, जहाँपर उसका पीछा करना समरकन्दकी सेनाके लिये बहुत मुश्किल था। जब अबूसईदकी सेना लौटनी, तो खान उनकी पीठपर होता।

हर समय मुकाविलेके लिये सेना भोजना सम्भव नहीं था। अबूसईदकी जैसी परेशानी घुमन्तुओके साथ उससे डेढ़ सहस्राब्दी पहलेके दूसरे राजाओके सामने भी आती रही।

मुगोलिस्तानमें फसे होनेके कारण अबूसईद इराकपर चढ़ाई नहीं कर पाता था। अन्तमें अबूसईदको एक ही रास्ता दिखलाई पड़ा, कि यूनसको ईरानसे बुलाकर उसके भाईके खिलाफ भिड़ा दिया जाय। उसने ऐसा ही किया। इस समय दशतेकिपचकपर अबुल्खैर खानका मजबूत शासन था। इस कजाक खानसे हारकर जू-छि-वशज जानीवेग खान और गिराई खान मुगोलिस्तानमें चले गये। अबुल्खैरके मरनेके बाद उसका उज्वेक-कजाक उलुस आपसी झगडोके कारण छिन्न-भिन्न हो गया, और उनमेंसे अधिकांश जाकर गिराई और जानीवेग खानके ओर्दूमें मिल गये। अब इनकी सख्या दो लाख थी। इसी समय उनके ओर्दूको उज्वेक-कजाकका नाम दिया गया, यह कह आये हैं। कजाक-सुल्तान ८७० हि० (२४ VIII १४६५-१५ VII १४६६ ई०) से शासन करने लगे, और ९४० हि० (२३ VII १५३३-१३ VI १५३४ ई०) तक उज्वेकिस्तान (किपचक-भूमि)के अधिकांश हिस्सेपर उनका पूर्ण प्रभुत्व था। गिराई खानके बाद वेरेदक-पुत्र फिर जानीवेग खानके पुत्र कासिम खान हुआ। कासिम खानने सारे दशते-किपचकको जीत लिया, यह हम पहले बतला चुके हैं। हैदरके अनुसार उसकी सेना हजार-हजार (दस लाख) से ज्यादा थी, और जू-छि खान छोड़कर इतना बड़ा खान उस भूमिमें और कोई नहीं हुआ। कासिमके बाद उसका पुत्र मिमेश खान फिर उसका पुत्र ताहिर खान हुये। ताहिरके समयसे कजाकोकी शक्ति कमजोर होने लगी। ताहिरके बाद उसका भाई विरलस था, जिसके समय उसका उलुस बीस हजार कजाकोका रह गया था। ९४० हि० (१५३३-३४ ई०) में विरलसके मरनेपर कजाक बिल्कुल लुप्त हो गये। ईसानबुगाके समयसे रशीद खानके समय (१५३३-६५ ई०) तक कजाको और मुगलोके बीच अच्छा सवध रहा।

हैदरकी तरह मध्य-एशियाके किसी कबीलेके लुप्त होनेकी बातका अर्थ यही है, कि उनमें फिर नई गुटबंदी हो गई।

अमासची थैची (थैशी) और उजतिमूर थैचीने १४५२ ई० और १४५५ ई० के बीच (दूसरी परंपराके अनुसार १४३७ ई० में) सिर-दरियाके तटपर उज्वेक-कजाकोको बुरी तरहसे हराया। इस प्रकार अल्ताईके पासवाले कल्मक अब सिर-दरियाके तटतक पहुंचने लगे। १४५९ ई०के अन्तमें सुल्तान अबूसईदने हिरातमें कल्मक-दूतसे भेंट की। मगोलोके आक्रमणका उत्तर देनेके लिये अबूसईदने मुगोलिस्तानपर चढ़ाई कर उन्हें अशपारमें हराया।

१४५६ ई० में अबूसईदने यूनसको मुगोलिस्तानमें लाकर बैठाया, किन्तु उसे हारकर फरगाना और सप्तनदकी सीमापर अवस्थित जीतीकेदमें भागना पड़ा, जिसे कि अबूसईदने यूनसको दिया था। एसेनबुगा १४६२ ई०में मरा।

## ११ दोस्तमुहम्मद, ईसानबुगा-पुत्र (१४६२-६८ ई०)

ईसानबुगाके मरनेके बाद सत्रह वर्षकी अवस्थामें उसका पुत्र दोस्तमुहम्मद अक्सूमें बापकी गद्दी पर बैठा। यह बड़ा ही सनकी-सा तरुण था। इसने यारकन्द और काशगरपर चढ़ाई की, और काशगरको लूटकर अक्सू लौट गया। मुहम्मद हैदर मिर्जा (इतिहासकार) इससे नाराज होकर यूनस खानसे जा मिला। थोड़े ही समय बाद दोस्तमुहम्मदने अपनी सौतेली मापर आशिक हो मुल्लोंसे व्याह करनेके अनुकूल फतवा मागा। इन्कार करनेपर मात मौलवियोंको उसने मरवा डाला। आठवें मौलवी मुहम्मद अत्तारकी बारी आई। शराबमें मदहोश और हाथमें तलवार लिये हुये उसने मौलवीसे पूछा—“मैं अपनी मासे व्याह करना चाहता हूँ। यह विहित है या नहीं?” अत्तार अपने समयके पूर्वी तुर्किस्तानका बहुत ही धार्मिक और अत्यन्त विद्वान् दरवेश था, उसने खानसे कहा—“तुम्हारे जैसोंके लिये यह विहित है।” खानने तुरत व्याहकी तैयारी कर दी। हैदरके अनुसार स्वप्नमें उसके पिताने उसे फटकारते हुये कहा—“ओ अभागे, एक सौ वर्ष तक मुसलमान रहनेके बाद तू काफिर बनना चाहता है।” मगोलोमें सौतेली माको मा नहीं मानते थे, और उनमें ऐसा व्याह होता रहता था। शायद यही समझकर दोस्तमुहम्मदको सौतेली माके व्याहको शरीयतसे विहित करानेकी इच्छा हुई।



चिरागकुश (दीपयुक्ताव) संप्रदाय—दोस्तमुहम्मद खान (१८६१-६८ ई०) की लम्पटताके बारेमें सुनते वक्त यह भी याद रखना चाहिये, कि हैदरके अनुसार दोस्तमुहम्मदमे सौ वर्ष पीछे भी वदहशामे एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसे 'चिरागकुश' कहते थे—“इस मतका वदहशामे स्थापक शाह गजीउद्दीन था। उसके अनुयायी जिम किसी अजनबीको या उसे मार डालनेको मुक्तिका रास्ता मानते थे। कोहिस्तान (पामीर)के विधियोंमें राजा बड़ा ही पापी था। वदहशाके अधिकांश लोग इसके ही अनुयायी हैं। उनके लिये अपने नजदीकी संबंधियोंमें व्यभिचार करना वैध है, उनके लिये विवाह करनेकी भी कोई आवश्यकता नहीं। अगर कोई किसीके साथ यौन-संबंध करना चाहता, तो बेटा या मा किसीमें भी प्रसन्न करना बिल्कुल वैध है। उनमें यह नियम है, कि एक दूसरेकी स्त्री और सम्पत्तिका उपभोग करे।” हैदरका यहां अभिप्राय गायद वदहशाके इस्माइलियोंसे है। इस्माइली शीघ्रोका एक सम्प्रदाय है। ये लोग छठे इमाम जाकर सादिकके ज्येष्ठ पुत्र इस्माइलको वास्तविक उत्तराधिकारी तथा अन्तिम इमाम मानते हैं, जब कि दूसरे शीघा इस्माइलके भाई मूसा तथा पाच और पीछेके दूसरे—कुल बारह इमामोंको मानते हैं। इन्हीं इस्माइलियोंके गुह आगा खा है। मोवियन शासनकी स्थापना (१९१८ ई०) से पहिले तक पामीरके इस डलकेमें 'चिरागकुश' इस्माइलियोंकी काफी मल्लायी—अफगानिस्तानके डलकेमें गायद वह अब भी है।

चांगीम सालकी उमरमें छ दिन बीमार रहकर ८३३ हि० (२२ VII १८६८-१२ VI १८६९ ई०) में दोस्तमुहम्मद मर गया। उसके पुत्र मुल्तान आंगलानको पकड़कर तुर्फान और चालिश (करामर) ले गये। इस समय यूनसको माका मिठा और उनमें आकर अक्सूको ले लिया।

### १२ यूनस, वेइस-पुत्र (१८६८-८७ ई०)

एमन (ईमन) वुगाके मरनेके बाद वस्तुतः मुगोलिस्तानका राज्य दो भागोंमें विभक्त हो गया था। ८३३ हि० (१८६८-६९ ई०) तक अक्सू और पूर्ववाले प्रदेशमें एमनवुगाके पुत्र दोस्तमुहम्मदका शासन था, और पश्चिमी भाग पर यूनसका। दोस्तमुहम्मदके बाद केव्रेक-मुल्तान चार साल पीछे तक राज्य करना रहा, जिसके मिरको काटकर उसके ही आदिमियोंने यूनसके पाम भेज दिया। इस प्रकार १८३२ ई०में यूनस मारे राज्यका स्वामी बन गया।

यूनसका जन्म ८१८ या ८१९ हि० (१८१५ या १८१७ ई०) में हुआ था, और जैसा कि पहले बतलाया, बचपनमें ही वह दरान चला गया, जहां उसे शरफुद्दीन यज्दी जैसे प्रसिद्ध इतिहासलेखक और विद्वान्के पाम शिक्षा प्राप्त करनेका अवसर मिला। उसे धूमन्तू-जीवन पसंद नहीं था। दोस्त मुहम्मद खानके मरनेपर यूनसको मैदान खार्गी मिला। वह अक्सूपर अधिकार करके वहीं रहना चाहता था। गायद वह केव्रेक-मुल्तान आंगलानके साथ झगडा न करता, यदि उसे डर न होता, कि उसके ओर्दके लोगोंमें वित्तने ही केव्रेककी ओर चले जायेंगे।

८ फरवरी १८६० ई०में तेमूरी मुल्तान अब्दुसईदके मरनेपर उसका राज्य अलग-अलग शाह-जादामें बंट गया—बुगमानका शासन मुल्तान हुमेन मिर्जा हुआ, ममरखन्दका अहमद मिर्जा, हिसार-कुदुज-बदश्याका मुल्तान महमूद और अन्दिजान-फरगानाका बली (राज्यपाल) बाबरका पिता उमर शेव मिर्जा। प्रथमने मुगोलिस्तान लाटनपर तीनोंको अपना दामाद बनाया। अपनी लड़की मेहरे-निगार खानम अहमद मिर्जाको दी, कुतुबुग निगार उमरशेव मिर्जाको। इसी कुतुबुग निगार खानमने बाबर पैदा हुआ। ताशकन्दका बली (राज्यपाल) शेव जमाल मुल्तान अहमद मिर्जा समर-खन्दके जर्बान रहा।

यूनसको कानकोका झगडा उत्तराधिकारमें मिला था। १८७२ ई०में कलमक-मेनापति अमा-याजी (उम्मतपुत्र) येगीने मुगोलिस्तानमें आकर डली-नटपर यूनसको हराया, जिसपर यूनसकी मेना तुर्किस्तान प्रदेश (मिर-दरिया)की ओर भागी, और वहीं उसने जाडा बिताया। मंगोल करानुकाई मिर-नटतक पहुंचे। उस समय बजाक खान गिराई (कराई) और जानीबेगकी भगाकर अबुल-खैरका पुत्र वृन्ज आंगलान तुर्किस्तान (मिर-उपत्यका)का शासक था। वह यूनसमें लड़ने गया था। उस समय उसे गिनारमें अन्तुन्विय पा उसके ओर्दके साठ हजार परिवारोंको पकड़ लिया। डेरमें कोई

नहीं था, इसलिये बिना विरोध हीके बूरज ओगलानने सबपर अधिकार कर लिया। जब यह खबर यूनसको मिली, तो वह सींग वजवाकर जल्दी-जल्दी लौटा, और जमी हुई सिर नदीके पार हो गया। बूरजने जब आवाज सुनी, तो उसने भी जल्दीसे घोड़ेपर चढ़ना चाहा, लेकिन उसकी नौकरानियोंने उसके घोड़े और साईस (अखताची) को पकड़े रक्खा। कुछ ओरते अपने घोड़ेसे उतरकर आई, और उन्होंने बूरज ओगलानको पकड़ लिया। इसी समय यूनस खानने आकर अपनी नौकरानीको बूरजका सिर काट लेनेका हुक्म दिया। उसने तुरत सिर काट लिया। बिना रानीकी मधुमक्खियोंकी तरह बिना सरदारका उज्ज्वेक-कजाक ओर्दू क्या कर सकता था? बीस हजार घुमन्तुओमे बहुत कम जान बचाकर भाग पाये।

ताशकन्दका बली जमाल सुल्तान यूनसको सिर-उपत्यकामे नहीं देख सकता था। उसने आक्रमण करके यूनस खानको पकड़कर सालभर बंदी रक्खा, जिसपर सारा मुगोलिस्तानी उलुस शेख जमालके अधीन रहनेके लिये मजबूर हुआ। शेख जमालने यूनसकी बेगम और बाबरकी नानी ईसान दौलान बेगमको अपने एक अफसर ख्वाजा कलानको दे दिया। बेगमने बाहरसे स्वीकृति दे दी थी, लेकिन रातको पास आनेपर उसने ख्वाजा कलानको मार डाला। सालभर बाद अमीर करीमबेदी दोगलातके भतीजे अमीर अब्दुल कुदुजने शेख जमालको मारकर यूनस खानको मुक्त किया। अब ताशकन्द और शाहरखिया भी बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके हाथमें थे। मुगोलिस्तानी अमीर फिर यूनसके पास लौट आये। उन्होंने खानसे शिकायत की—“खानने हमेशा हमें कृपिवाले प्रदेशके नगरोंमे बसानेकी कोशिश की, जिसे हम लोग घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं।” खानने अफसोस प्रकट करते हुये कहा—“अवसे मैं नगरो और खेतीवाले स्थानोंमे रहनेका विचार छोड़ देता हूँ।”

इस वक्त कल्मक अपने युर्त (ओर्दूवाले देश) को लौट गये थे, इसलिये यूनस खानको मुगोलिस्तानमे मुगलोके साथ रहनेकी हिम्मत हुई। इसके बाद कई सालो तक खानने घर या नगरमे रहनेका नाम नहीं लिया। काशगरके शासक मुहम्मद रेहर मिर्जाने यूनसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

अपने एक दामाद बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाके साथ यूनसका विशेष स्नेह था। भाई अहमद मिर्जा (समरकन्दके सुल्तान) के आक्रमणका भय होनेपर उमरने यूनसको बुलाया। यूनसने फरगानाके सबसे बड़े शहर अक्सीमे आकर डेरा डाला। अहमद मिर्जाने खानसे तीकासगरत्कूके पुलपर लड़ाई की, जिसमे वह खानका बंदी बना, लेकिन खानने अपने दामादको बहुतसी भेटे देकर छोड़ दिया। कुछ समय बाद फिर उसने चढ़ाई की, और उमरशेखकी सहायताके लिये खान मर्गिलान पहुँचा। इतिहासकार हैदरने मौलाना मुहम्मद काजीके मुहसे सुना था—“एक बार मैं मर्गिलान गया। मैंने ~~सुन~~ रक्खा था, कि यूनस खान मुगल है, और समझा था, कि वह दूसरे रेगिस्तानी तुर्कोंकी तरह बिना दाढी-मूँछका (मगोलायित) आदमी होगा। मैंने उसको देखा, वह बड़ा ही खुबसूरत था। उसका चेहरा ताजिकोंकी तरह दाढीसे भरा हुआ था। बातचीत और व्यवहारमे वह बड़ा ही संस्कृत था, जैसे कि ताजिकोंमे भी बहुत कम पाये जाते हैं।” मौलानाने सभी सुल्तानोंको पत्र लिखा—“मैंने यूनस खान और मुगलोको देखा। ऐसे बादशाहकी प्रजाको बंदी बनाकर नहीं ले जाना चाहिये। वह इस्लामके अनुयायी हैं।” इसके बादसे मुगलोको अन्तर्वेद और खुरासानमे ले जाकर दासके तौरपर बेचना बंद हो गया। इससे पहले मुगलोको भी दूसरे काफिरोकी तरह दास बनाकर बेच दिया जाता था। यह मालूम ही है, कि इस्लामी शरीयतके अनुसार मुसलमानको दास नहीं बनाया जा सकता।

अहमद मिर्जा और उमरशेख मिर्जा अर्थात् समरकन्द और फरगानाका झगडा बराबर ही चलता रहा, और उमरशेखकी मददके लिये यूनस को भी बराबर जाना पड़ता था। ऐसे ही एक समयमे यूनसके आनेपर उमरशेखने उसे ओश दे दिया। खानने वही जाड़ा बिताया। मुगोलिस्तानकी ओर लौटते समय उसने अपने दूसरे नाती इतिहासकार मुहम्मद-हैदर मिर्जाको ओश (ऊश) का शासक बना दिया। शेख जमालकी मृत्युके बाद ताशकन्दको उमरशेखने ले लिया। समरकन्द-शासक अहमद मिर्जा इसे वर्दाश्त नहीं कर सकता था। खान उमरशेख और अहमद मिर्जाकी सेनाये फिर लड़नेके लिये सिर-उपत्यकामे पहुँची, लेकिन हजरत नासिरुद्दीन उवैदुल्ला सूफी (नत)ने बीचमे पड़कर

विवादग्रस्त ताशकन्दको खानके हाथमें देकर झगडा शांत करा दिया। अभी यूनस ताशकन्दमें ही था, कि उसे लकवा मार गया। दो साल तक इस बीमारीमें पड़े रहकर ७४ वर्ष की उमरमें ८९२ हि० (२८ XII १८८६-१८ XI १४८७ ई०) में यूनस मर गया। चगताई खानोंमें अविकाश चालीस वर्षमें अधिक नहीं जी पाये, और उनमेंसे कितने ही स्वाभाविक मौतमें नहीं मरे, लेकिन यूनस इसका अपवाद था। यूनसकी कब्र ताशकन्दमें ही पुरानवार शेख खावन्दि-नुहरकी समाधिमें पास है।

### १३ महमूद, यूनस-पुत्र (१४८७-१५०८ ई०)

बापके मरनेपर ज्येष्ठ पुत्र महमूद \* को मंगोलोकी रीतिके अनुसार सफेद नन्देपर बैठा कबेपर उठा खान घोषित किया गया। लेकिन महमूदका अधिकार पूर्वी मुगोलिस्तानपर ही रहा। वह बापकी तरह ही संस्कृत और सुशिक्षित था। वह कविता भी करता था, जो बुरी नहीं होती थी। अन्तर्वेद लेनेकी उमकी बड़ी इच्छा थी, जिसमें कमजोर तेमूरी-मुल्तानोंके मुकाबिलेमें पहिले इसे सफलता भी मिली, लेकिन १५०० ई० में जब उज्जेक खान मुहम्मद शैबानीने अन्तर्वेदको अपने पजेमें कर लिया, तो उसके लिये फिर मौका नहीं रह गया। १४८८ ई० में कुछ सफलता मिली थी। उमरशेखने असलमें महमूदमें ताशकन्द छीननेके लिये सेना भेजी थी। खानने सफलता प्राप्त कर मिर्जाके सभी अनुयायियोंको पकड़कर मरवा डाला। इसी समयसे बाबरके पिता और मामाका मघर्ष शुरू हुआ, जिसमें मिर्जाकी शक्ति बहुत क्षीण हो गई, और अंतमें वह विल्कुल हार गया। इसपर अहमद मिर्जा डेढ़ लाख सेना लेकर आया। अहमद मिर्जाके साथ कजाक अबुल्खैरका पौत्र और शाहबुदागका पुत्र शाहीवेग (मुहम्मद शैबानी) भी अपने तीन हजार आदमियोंको लेकर गया था। हम पहले बतला चुके हैं, कि कैसे युद्धके समय शाहीवेग अपने तीन हजार आदमियों के साथ युद्धक्षेत्रसे निकल गया, और मिर्जाकी परताल (रसद) पर टूटकर उसे लूट लिया। इसके कारण अहमद मिर्जाकी सेना भागनेपर मजबूर हुई, लेकिन उसके सामने चिर नदी—जिसे ताशकन्दवाले पराक कहते हैं—थी, जिसमें बहुतसे सिपाही डूबकर मर गये और अहमद मिर्जा किसी तरह जान बचाकर ममरकन्द पहुंचा। इतिहासकार हैदरका पिता मुहम्मदहुसेन गूरगानमें महमूद खानका बड़ा प्रेम था। वह सदा एक ही डेरे या कमरेमें रहते थे। उनके घर बगल-बगलमें होते। वह अपने निजी घरेलू बातों को भी एक दूसरेमें नि सफोच कहते थे। महमूद खानने अपनी बहिन यूनस-पुत्री खूबनिगारसे महमूद हुमेनकी शादी कर दी थी। जब अहमद मिर्जा, उमरशेख मिर्जा और महमूद मिर्जा मर गये, तो उरातेपा भी महमूद खानके हाथमें चला गया, जिसे उसने अपने मित्र और बहनोई मुहम्मद हुसेनको दे दिया।

शाहीवेगने घोखा देकर ताशकन्द विजय करनेमें महमूद खानकी सहायता की थी। अब वह खानका सेवक था। उसकी सहायताके बदलेमें खानने तुर्किस्तान-शहरका इलाका उसे दे दिया, जिसे गिराई खान और जानीवेग दोनों भाई अपना समझते थे। इसके कारण खानने उनका विगाड हो गया। उन्होंने कहा—हमारे दुश्मन शाहीवेगको क्यों तुर्किस्तान दिया? इसके बाद उज्जेक-कजाको और महमूद खानमें लडाईकी नीवत आगई। दो बड़ी-बड़ी लडाइया हुई, और दोनोंमें महमूद खानकी हार हुई। महमूद खानका बर्ताव अच्छा न देख यूनस खानके समयके कितने ही सेनापति उसे छोड़ गये। खानने पांच अमीरोंको मरवाकर एक नीच कुलके आदमीको अपना सेनापति बनाया।

८९९ हि० (१२५१६९३-२IX १४९८ ई०) में बाबरके पिता उमरशेख मिर्जाकी मौत घरके नीचे दबकर हुई। अमीरोंने उसके पुत्र जहीन्दीन मुहम्मद बाबरको फरगानाके तख्तपर बैठाया। अन्दिजानपर कहीं मुगल हाथ न फेर दे, इसलिये अहमद मिर्जा अपनी सेनाके साथ आया, लेकिन मर्गिलानमें पहुंचकर बीमार हो जानेमें उसे पीछे लौटना पडा, और उमरशेखकी मृत्युके चालीस दिन बाद वह भी चल दमा। सुत्तान महमूद मिर्जाने अब हिसार (ताजिकिस्तान) से आकर ममरकन्दकी गद्दी नभाली। छ महीने बाद वह भी मर गया, फिर उसका पुत्र मिर्जा बैसुकर गद्दीपर बैठा। महमूद खानने दस स्थितिमें उत्साहित हो ममरकन्दकी ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन हैदरके अनुसार नीच-कुलीन

\* जन्म ८६८ हि० (१५ XI १४६३-—५ VIII १४६८ ई०)

मेनापतियोंके कारण कामयाबीकी लड़ाईमें खानको हार खानी पड़ी। ताशकन्द लौटनेपर अमीरोने उसे समरकन्द और बुखारा लेनेमें शाहीवेग खानकी सहायता करनेकी सलाह दी, जिसमें वह आराममें ताशकन्दमें रहे। खानको उनकी राय पसन्द आई। इतिहासकार हैदरके पिता मुहम्मद हुसैनने बहुत रोका, लेकिन शाहीवेगको सहायता दी जाती रही। शाहीवेगके पास पचास हजार सेना हो गई, जिससे उसने समरकन्द और बुखारापर पूरी तौरसे अधिकार कर लिया। उसकी सफलता और लूटके लोभमें चारों ओरसे उज्बेक उसके झंडेके नीचे आ गये थे।

पिताके ताशकन्दमें रहनेपर यूनसका दूसरा पुत्र सुल्तान अहमद [जन्म ८७० हि० (२४ VIII १४६५-१५ VII १४६६ ई०)] मुगोलिस्तानमें अपने मुगलो और पशुओंकी चरवाही करता था। पहले दस सालके सघर्षमें उसने इरलातके अमीरोको दवाया। अहमद अपने भाई महमूदकी तरह ही सस्कृत नहीं था। बाबरके अनुसार वह सचमुच ही रेगिस्तानका पुत्र था—शरीरसे हट्टा-कट्टा और बड़ी हिम्मतवाला। वह मगोलों जैसी वेप-भूपा रखता था। अहमदने दो लड़ाइयोंमें कलमक-यैची एमेनकी मेनाको हराया, जिससे कतमकोपर इसका बहुत रोव था। वह इसे अलाची (बहादुर) कहते थे। अहमदने कजाकोको भी तीन बार हराया। सिर्फ काशगर और यारकन्दमें वह अपने मनसूवेमें सफल नहीं रहा। मुहम्मद शैबानी (शाहीवेग) ने जब अपने पहिले सरक्षक महमूद खानपर हाथ साफ करना चाहा, तो खानने अपने भाई अहमदको बुला भेजा। भाईका कहना मानकर इसने अपने पुत्र मन्सूरको मुगोलिस्तानमें रक्खा, और दूसरे दो पुत्रोंसहित ताशकन्द आया। १५०३ ई० में मुहम्मद शैबानीने अकसीकी लड़ाईमें दोनों भाइयोंको हराया। अहमद अकेले मुगोलिस्तान भागा। शैबानीने महमूदमें ताशकन्द और सैराम छीन लिया। फिर दोनों भाइयोंने अक्सू (पूर्वी तुर्किस्तान) में इकट्ठा जाड़ा बिताया, जहाँ ही अहमद लकवाकी बीमारीसे मर गया। महमूदने अक्सू और पूर्वी मुगोलिस्तानको ले लिया। अक्सूमें अपने भाई खलील सुल्तानसे हारकर वह सप्तनदके किर्गिजोंके पास पहुँचा। शाहीवेगने महमूद खानपर विजय प्राप्त की, उसी समय अकसीमें दोनों खान-भाई बदी बने, और मुक्त कर देनेपर अहमद खान ९०९ हि० (२६ VI १५०३-१६ V १५०४ ई०) लकवासे मर गया।

महमूद खानकी हालत अतमें बहुत बुरी हो गई। वह शाहीवेगके दरबारमें दयाकी भिक्षा मागनेके लिये मजबूर हुआ। शाहीवेग (शैबानी) ने जवाब दिया—“एक बार मैंने तुमपर दया दिखला दी, अब दूसरी बार दया दिखलानेपर मेरी हकूमत खतरेमें पड़ जायेगी।” उसने जरा भी दया न कर महमूद खान तथा उसके छोटे-बड़े सभी बन्धोंको खोजन्द नदीके किनारे ९१४ हि० (२ V १५०८-२३ III १५०९ ई०) में मरवा डाला। अवतक अन्तर्वेद शैबानियोंका हो चुका था, यह हमें मालूम है।

### १४ मन्सूर, महमूद-पुत्र (१५०८ ई०)

इसी समय किर्गिजोंका नाम पहलेपहल मुगोलिस्तानमें सुनाई पड़ता है। गायद किर्गिज १०वीं शताब्दीमें ही यहाँ पहुँच गये थे। हैदर किर्गिजोंको मगोलोंसे विभिन्न नहीं समझता। मगोलिस्तानी मगोलों और किर्गिजोंके झगड़ेका कारण वह उनका मुसलमान और काफिर होना बतलाता है। खलीलसे जल्दी ही उसका भाई सईद (जन्म १४९० ई०) आ मिला, जो कि अवतक बापके साथ अन्तर्वेदमें उज्बेकोंका बदी था। सईदकी उमर उस समय तेरह-चौदह सालकी थी। दोनों भाई चार सालतक एक साथ रहे। इसी बीचमें चचामें झगडा हो उठा, और मन्सूर उनसे लड़ने मुगोलिस्तान गया। यही समय था, जब कि १५०८ ई०में शैबानीके हुक्मसे महमूद खान और उसके बेटोंको खोजन्द नदी (सिर-दरिया) के तटपर कत्ल किया गया। इसके पश्चात् चारनचलाक या चारिन (आधुनिक अल्माअताके पास) में मन्सूरने अपने भाइयोंको परास्त किया। खलील भागकर फरगाना चला गया, जहाँ उज्बेक शासक जानीवेगने उसे कत्ल करवा दिया। सईद कुछ महीनों नरिनके जंगलोंमें छिपा रहा, फिर उज्बेकोंके हाथमें पड़कर फरगानामें बंद रहा, जहाँमें भागकर काबुलमें जा १५०८ ई०के अन्ततक बाबरका मेहमान रहा।

पिताके मरनेपर अक्सूके खान चचा महमूद खानके साथ मन्सूरका झगडा था। मन्सूरने काशगरमें मुगोलिस्तान लेनेके लिये महमूद खानके खिलाफ जाकर अक्सूमें डेरा डाला। वहाँ मीर जव्वारबदीमि मन्सूरका झगडा हो गया। जव्वारने काशगरके हाकिम अबूबकरको बुला भेजा। मन्सूरको अक्सू छोड़कर भागना पड़ा। उसकी स्थिति बहुत बुरी हो गई। इसपर उसने अपने मामा जव्वारबदीमि गपथ-

पूर्वक क्षमा मागी। जव्धारने मन्सूरके साथ बड़ी उदारता दिखाई, जिससे उसकी स्थिति अपने बाप सुल्तान अहमद खानसे भी बेहतर हो गई। इसी समय उसे खबर मिली, कि मुगोलिस्तान (सप्तनद) में सुल्तान महमूद, सुल्तान सईद और सुल्तान खलीलमें झगडा हो गया है। मन्सूरने मुगोलिस्तान पहुच अपने चचा महमूदसे भेट की। वही उसकी अपने छोटे भाइयों—सईदखा और खलील सुल्तान—से भी मुलाकात हुई। उसके बाद ही महमूदखान अन्तर्वेदकी ओर लौटा, जहा मुहम्मद शैबानीसे हारकर उसे अपने प्राणोसे हाथ धोना पडा। अब मन्सूरने अपने भाइयोंपर आक्रमण किया, जो कि मुगोलिस्तानमें मुगलो और किर्गिजोंके साथ रहते थे। चारुनचलाकमें लडाई हुई, जिनमें हारकर मन्सूरके दोनो भाई विलायत (अन्तर्वेद) भाग गये। वहाके वलीने सुल्तान खलीलको मरवा डाला, और सुल्तान सईद भागकर काबुलमें बाबरके पास पहुचा। मन्सूर मुगोलिस्तानमें हाथमें लगे किर्गिजों और मुगलोंको अपने साथ चालिश (कराशर) और तुर्फान ले गया। पीछे उसने कल्मकोपर सफल आक्रमण किया।

इसी बीच काबुलसे लौटकर सुल्तान सईदने काशगरको जीत लिया। मन्सूरको भारी भय लगने लगा। लेकिन शायद सईदको अन्तर्वेदमें शैबानियोंकी शक्तिको देखकर कुछ अकल आई। उसने समझौता करनेके लिये ९२२ हि० (५ II-२६ XII १५१६ ई०) में अक्सू और कुसानके बीचमें मन्सूरसे भेट की, और खानकी अधीनता घोषित करते हुये उसके नामसे खुतवा पढे जानेका हुक्म दिया। इसके बाद बीच सालतक देशमें शांति रही। चीनमें कामिल (हामी) ने लेकर अन्दिजान तक बिना रोक-टोक आदमी यात्रा कर सकते थे, रास्तेमें कोई कर नहीं लिया जाता था। यात्री हरेक रातको किसी घरमें मेहमान रह सकता था। यह बतलाते हुये इतिहासकार हैदर लिखता है—“जल्लाह दोनो धर्मात्मा भाइयोंको स्वर्गाद्यान प्रदान करे।” मन्सूरके हाथमें पूर्वी तुर्किस्तानका पूर्वी भाग था, जिसकी सीमा चीनसे लगती थी। वह अपनेको इस्लामका गाजी साबित करना चाहता था। इसमें मुख्य कारण लूट-मारका प्रलोभन था, जिसके लिये मिङ्ग सम्राट् शी-चुङ्ग (१५२१-६६ ई०) को सेनाओंमें बराबर उसका धर्मयुद्ध होता रहा। मन्सूरने अरिग (मुगोलिस्तान) में उज्बेक-कजाकोंके साथ जमकर लडाई की, जिसमें उसकी हार हुई।

काशगरी अबूवरकी मेना अमीर वेलीकी अधीनतामें सप्तनद गई, जहा उसे कुछ सफलता हुई। आखिरमें मन्सूरने अपने बड़े पुत्र शाह खानको खान बनाया और स्वयं अल्लाकी भक्तिमें लग गया। हैदरके समय ९५१ हि० (१५४५ ई०) में शाहखान तुरफान और चालिशपर शासन कर रहा था। इसी समय बाबरका बेटा हुमायू हिन्दुस्तानसे भागकर मारा-मारा फिर रहा था। शाहखानका चाल-चलन हैदरको पसंद नहीं था। उसने लिखा है—“इतिहासकारका धर्म है, कि ठीक या बेंठीक जो भी उसे मालूम हो, उसका उल्लेख करे।”

यद्यपि सईदने १५०८ ई० में ही पूर्वी तुर्किस्तानके पश्चिमी हिस्सेका शासन सभाल लिया था, लेकिन उसने बहुत सालों तक मन्सूरको अपना प्रभु माना था। इतिहासकार हैदर सईदका सम-कालीन था। उसने “तारीखे-रशीदी”में इसके बारेमें बहुतसी बातें लिखी हैं। रशीद खान, जिसके नाममें हैदरने अपने इतिहासको लिखा है, सईद खानका ही पुत्र था। सईद अहमद खानके आठ पुत्रोंमेंसे एक था। अपने भाई महमूद खानकी सहायताके लिये जिस वकत अहमद खान जा रहा था, उस वकत चौदह सालका सईद भी अपने बापके साथ था। अकसीकी लडाईमें एक तीरके लगनेसे उसकी जाधकी हड्डी टूट गई, और वह घायल हो अकसीके बली शेख बायजोदके जेलमें बन्द रहा। दूसरे साल शाहीवेग (मुहम्मद शैबानी) ने शेख बायजोद, सुल्तान अहमद तम्ब्रालको उसके सारे भाइयोंके साथ मारकर फरगानाको ले लिया। शाहीवेग सईदको पुत्रवत् मान अपने साथ समर-कन्द ले गया। जिस वकत शाहीवेग (मुहम्मद शैबानी) त्वारेज्मपर आक्रमण करने गया था, उसी समय सईद निकल भागा और यतीकन्दमें अपने चचा महमूद खानके यहा जाकर कुछ दिन रहा। फिर वहामें अपने भाई खलील सुल्तानके पास गया, जो कि उस समय किर्गिजोंके ऊपर राज्यपाल था। चार सालतक वह अपने भाईके साथ वहा रहा। जब महमूद खान विलायत (अन्तर्वेद) गया, तब भी दोनो भाई किर्गिजोंमें ही रहे। मन्सूर तुर्फान और चालिशमें मेना लेकर किर्गिजोंके ऊपर चढा, तो दोनो भाई अपने अनुयायियों (मुगलों-किर्गिजों)के साथ मिलकर उसमें चारुनचलाकमें लडे,

और हार खा भागकर अकसी गये, जहा शाहीवेग (मुहम्मद शैबानी) के चचेरे भाई जानीवेगने सुल्तान खलीलको मरवा दिया । सुल्तान सईद कुछ समयतक अब लूट-मारका जीवन बिताता रहा, फिर मुगोलिस्तान छोड़नेपर मजबूर हो अन्दिजान होते बावर बादशाहके पास काबुल पहुँचा । बावरने उसे बड़े आदर और प्रेमसे रक्खा—छिड़-गिस् खानकी औलाद और मुगोलिस्तानके खानका बेटा था, इसलिये मुगलोके नामपर बाबला बावर क्यों न उसका सत्कार करता ? सईद काबुलमें तीन सालतक बावरका मेहमान रहा । जब शाह इस्माईल (ईरान) ने मेरवमें शाहीवेग (मुहम्मद शैबानी) को मार डाला, तो बावर काबुलसे कुदुज पहुँचा । सईद भी इस वक्त बावरके साथ था । इसी समय इतिहासकार हैदरके पिता मय्यद मुहम्मद मिर्जाने शैबानी जानीवेग सुल्तानको अन्दिजानसे भगाकर उसपर अधिकार कर लिया था । बावर बादशाहको इसकी खबर लगी, तो उसने सईद और कुछ मुगल अमीरोंको अन्दिजान भेजा । मय्यद मुहम्मद मिर्जाने जीते देशको उनके हाथमें दे दिया । सईदने खान मुहम्मद मिर्जाको “उलुस-वेगी” (कबीलोका मरदार) की उपाधि प्रदान की । लेकिन काशगरी मिर्जा अबूवकर भी अन्दिजानपर आख गड़ाये था । दोनोंमें लड़ाई हुई । हैदरके अनुसार सईदने अपनी पन्द्रह सौ सेनामें अबूवकरकी बीस हजार सेनाको हरा दिया ।

इस समय सप्तनदके उत्तरी भागमें कजाकोके खान कासिम [ मृत्यु ९२४ हि० (१३१-४XII १५१८ ई०) ] का राज्य था, जो जाडोमें करातालमें रहता था । कासिमने १५१० ई० के करीब मुहम्मद शैबानीको हराया, और १५१२ ई०में तलस और सैरामपर अधिकार कर ताशकन्दके किलेको नष्ट कर दिया । हैदरके अनुसार उसके कजाकोकी सख्या दस लाख थी, लेकिन बावरके अनुसार तीन लाख । १५१३ ई० के वसन्तमें चू नदीके तटपर सईदने कासिम खानमें मुलाकात की । कासिमकी उमर उस समय तिरसठ सालकी थी । उसने सईदकी बड़ी खातिर की । सईद इस वक्त बावरकी मेवामें था ।

बावरकी इन सफलताओंको शैबानी उज्जेक देख नहीं सकते थे । उन्होंने ताशकन्द और समरकन्दके सीमान्तपर भारी सेना जमा की । बावरने इसी समय (जून या जुलाई १५११ ई०) उन्हें हराकर थोड़े दिनोंके लिये समरकन्दके सिंहासनपर बैठनेमें सफलता पाई थी, लेकिन उमी सालके वसन्तके आरम्भमें उबैदुल्ला खानने बावरको हराकर उसे परिवारसहित हिसारकी ओर भगा दिया । अन्तर्वेद उज्जेकोका हो गया, तो भी अन्दिजानपर सईद खानका अधिकार बना रहा । शाह इस्माईलकी कुमकसे साठ हजार सेना लेकर जब बावरने समरकन्दपर चढ़ाई की, उस समय सईद खान भी अन्दिजानसे उसकी मददके लिये आया था । ताशकन्दके पास शैबानी सूयुनजी (ख्वाजा) खानने सईदको हराकर अन्दिजानसे भागनेके लिये मजबूर किया । इसी समय इतिहासकार हैदर बावरसे छुट्टी ले सईद खानकी मेवामें चला गया, और वसन्तमें दशतेकिपचक (किगिज-कजाक) के खान कासिममें मिला, जिसके पास बावरके अनुसार तीन लाख सेना थी ।

९२० हि० (२६ II १५१४-१७ I १५१५ ई०) में उज्जेकोकी भारी सेनाने अन्दिजानपर आक्रमण किया । खानने भागकर काशगरियापर चढ़ाई की, मिर्जा अबूवकर काशगरमें किलेबन्द हो गया । यगी-हिसारपर तीन मास घेरा डाल सईदने उसपर अधिकार कर लिया । मिर्जा अबूवकर दक्षिणकी ओर भागा । उसका पीछा करते सईद खानकी सेना तिव्वन (लदाख) के पहाड़ोंके भीतरतक गई । इस प्रकार सईद-जून १५१३ ई० (९२० हि०) में सईद खान काशगर-प्रदेशका स्वामी था, और ९२२ हि० (१५१६ ई०) में, जैसा कि पहिले कहा, उसने बड़ी दूरदर्शिता दिखलाने हुये मन्सूर खानको अपना प्रभु मान लिया ।

शैबानियोंसे अन्तर्वेद छीननेका मनमूवा सईदने बावरमें उधार लिया था, इसीलिये उनमें उसने छेड़खानी जारी रक्खी । सप्तनदसे तोर्गुत डांडेमें होकर काशगरियामें मैनालीम सी मैनाके साथ घुसकर अबूवकरको भगानेमें उसने पूरी तोरसे सफलता प्राप्त की । काशगर आर यारकन्द को लेकर वहाँ पूरी तोरसे शांति-स्थापन कर १५१६ ई० में उसने जकमू और कुचेईके बीच अरवात स्थानमें मन्सूरसे भेट की । जैसा कि पहिले कहा, दोनोंमें पूर्ण मैत्री स्थापित हुई, सईद ने मन्सूरको अधिराज माना, लेकिन शासित प्रदेशोंका बंटवारा ना करना ही था । मन्सूरको तुर्फान, कराशर और पूर्वी तुर्किस्तानका भाग उपरी भाग मिला, दूनने भाई एमिर खोजाको

तुर्फान और अक्सू, तीसरे भाई बाबा सुल्तानको बाई और कूची मिले । काशगर और दक्षिणी मप्तनद सईदके हाथमें रहे । हामी (चीन)में अन्दिजान (फरगाना) तकका वणिक्पथ मुक्त हो गया । अबूवकरमें लड़ते वक्त किर्गिज मुहम्मदने सईदकी बड़ी सहायता की थी, इसलिये उसे किर्गिजोंका सरदार बना दिया गया । १५१६ ई० के वसन्तमें फरगानामें उज्बेकों ने लड़नेकी तैयारी करनेके लिये सईद मुगोलिस्तान गया । उसने चानिर-कुलके तटपर अपने भाई बाबा अचकमें भेंट की । अरपा-उपत्यकामें मन्सूरको छोड़कर सारे भाई मिले, उन्होंने साथ ही शिकार खेला और जाड़ा बिताया । इसमें सईद अभियानकी बात भूल गया । इसी समय उसके अमीर मुहम्मदकी अधीनतामें किर्गिजोंने जाकर तुर्किस्तान-शहर, ताशकन्द और मराममें लूटमार की, और शैवानी खानके भीतेले भाई तुर्किस्तान-शामक अब्दुल्लाको बन्दी बनाया । लेकिन मुहम्मदने उसे बहुत-सी भेंट देकर छोड़ दिया, जिसके कारण उसका सईदमें मन-मुटाव हो गया । १५१७ ई० के वसन्तमें सईद अपनी मेना ले काशगरमें चला । एमिल खोजा भी अक्सूमें मारिग-अन्-आखुरी डांडेमें होते आगे बढ़ा । दोनों सेनायें काफिर-यारिगमें मिल गईं, जहासे सईद वेसकाउन-द्रोणी और एमिल खोजा चू-द्रोणीसे आगे बढ़ा । किर्गिज मुहम्मद वेसकाउनके मुहानेके पास डेरा डाले पड़ा था । दोनों भाइयोंके आनेकी खबर पाकर वह तुर्किस्तानकी ओर भागा, और उसके घोड़े, भेड़े तथा मारी चीजे शत्रुओंने ले ली । सईदने किर्गिजों को बन्दी नहीं बनाया । वहाने वह हिसार लौट गया ।

१५१७ ई०में मुहम्मद किर्गिजने तुर्किस्तान और फरगानापर आक्रमण करके मुसलमानोंको लूटा, जिसके लिये सईदने चढ़ाई करके मुहम्मद किर्गिजको पकड़कर जेलमें डाल दिया, जहा वह पन्द्रह सालतक पड़ा रहा । इसी साल सईद अपने पुत्र रशीदको लेकर मुगोलिस्तानमें गया । उसने किर्गिजोंको दवाकर सारे मुगोलिस्तानपर अधिकार कर लिया । पीछे मगितोंकी शक्तिके कारण उज्बेक-कजाक दशतेकिपचक्रमें रहनेकी हिम्मत नहीं कर सकते थे, इसलिये वह दो लाखकी सख्यामें मुगोलिस्तान में चले आये । उनके साथ लड़ना असंभव समझकर रशीद सुल्तान—जिमें वापने मुगोलिस्तानमें छोड़ रक्खा था—अपने आदमियोंको ले काशगर भाग गया । १५१९ ई० (९२५ हि०) और १५२१-३० ई० (९३६ हि०)में दो बार सईदने बदशाहपर चढ़ाई कर उसका आधा हिस्सा ले लिया ।

१५२२ ई० में मुसलमानोंपर आक्रमण करनेका कारण बनलाकर सईदने अपने बेटे रशीद के मेनापतित्वमें फिर किर्गिजोंपर आक्रमण करनेके लिये मेना भेजते समय जेलसे छोड़कर मुहम्मद किर्गिजको भी उसके साथ कर दिया था । रशीदने कोचकरकी उपत्यकामें डेरा डाला । अधिकांश किर्गिजोंने मुहम्मदकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन उनमेंमें कुछ भाग गये । उस जांडेमें रशीद खान कोचकर हीमें रहा । इसके बाद वह हर साल कुछ समय कोचकर-उपत्यकामें बिताता था । १५२४ ई०में जब खान कोचकरमें था, उसी समय उसके पास उत्तरी सप्तनदके कजाकोंके खान कामिम-पुत्र ताहिरका जादमी आया । वह मुगोलिस्तानियोंके साथ मिलकर उज्बेकों और नोगाडयों (मगिनो) ने लड़ना चाहता था । उसने अपनी बहिन भी रशीद खानको प्रदान की । इसके बाद अधिकांश किर्गिज ताहिरके अधीन हो गये । १५२५ ई० में खान इस्मिक्कुलके तटपर था, जब कि मुगोलिस्तानके सीमान्तपर कलमकोंके चढ़ आनेकी खबर मिली । इससे पहले १५२२-२४ ई० में रशीद कलमकोंके ऊपर सफल अभियान कर चुका था, जिससे उसे गाजीकी उपाधि मिली थी । अपने परिवारको इस्मिक्कुलके किनी द्वीपमें छोड़कर रशीद कलमकोंके विरुद्ध चलकर दस दिनमें कवीकलर (कविलकल्ला) पहुँचा । इसी समय ताशकन्दके शैवानी खान मू-युन-चुकके मरनेकी खबर मिली । उज्बेकोंके साथ लड़नेका यह अच्छा मौका था, इसलिये वह जल्दीसे लौटकर इस्मिक्कुल पहुँचा, और वहाने कोनुर-उलेनके रास्ते फरगाना गया, लेकिन उसे जल्दी ही असफल हो उतलुक (मुगोलिस्तान) लौटना पड़ा, जहामें जल्दी ही काशगर गया ।

जगले जांडेमें ताहिरका डेरा कोचकरके पास था । आधे किर्गिज उसकी ओर थे । रशीद अन्वानमें पड़ा था । १५२६ ई० के जारम्भमें रशीदने किर्गिजोंके साथ मेल किया, इसपर कितने ही कजाक सारे काश और कुनगेजतक मप्तनदमें हट गये । किर्गिजोंके डेरे कोचकर और जुगमलेके पास

पडे हुये थे । ताहिरसे वातचीत करनके लिये उसकी सौतेली मा (यूनस की पुत्री) को भेजा, जो कि काशगरमे सईदके पास रहती थी । सईद लौटकर अकसाई पहुँचा था, जब कि कजाको और किर्गिजो के बीच समझौतेकी बातका उसे पता लगा । दोनो धुमन्तू जातियोके मिल जानेका खतरा सईदको साफ मालूम होने लगा, इसलिये वह वहासे बाबाचककी कूचीसेनाको भी ले अककुयाश होते अरिखलारके रास्ते चला । उसने सप्तनदसे किर्गिजोको भगाकर उनकी एक लाख भेडे पकड ली, जिससे उस स्थानका नाम कोई-चरीकी (भेडोवाला) पडा ।

१५२७ ई०के वसन्तके आरम्भमे ताहिर अतवासपर चढ आया, और वहासे उसने किर्गिजोके साथ मिलकर मुगलोको मार भगाया । मुगलोके हट जानेपर अब सप्तनद कजाको ओर किर्गिजोके हाथमे चला गया, लेकिन दोनो जातियोकी मित्रता अधिक दिनोतक नही निभी । १५२६ ई० मे ताहिरने अपने भाई अब्दुल कासिमको मार डाला, जिसपर कजाकोने उसका साथ छोड दिया । १५२९ ई० मे अभी ताहिरके पास बीस या तीस हजार कजाक थे । हैदरके अनुसार ताहिर अन्तमे वडी बुरी अवस्थामे मरा । उसके बाद उसका उत्तराधिकारी उसका भाई बुरिदश हुआ ।

(तिब्बतपर जहाद)—हैदर कलमका ही नही तलवारका भी धनी था । 'गाजी' बनने की उसकी बडी इच्छा थी, जिसके लिये उसने तिब्बतके भीतरतक आक्रमण किया । अपने इतिहासमे वह लिखता है ९३४ हि० (२७ IV १५२७—१७८ VIII १५२८ ई०) मे सईद खानने मुझे अपने बेटे रशीद सुल्तानके साथ बालूर (बदख्शा और कश्मीरके बीचमे काफिरोके देश काफिरिस्तान) पर आक्रमण करनेके लिये भेजा । यहा हमने सफलतापूर्वक 'धर्मयुद्ध' किया, और विजयी हो बहुत भारी लूटके मालके साथ लौटे— . . ९३८ हि० (१५ VIII १५३१—५ VII १५३२ ई०) के अन्तमे खान सईदने तिब्बतके काफिरिस्तान (लदाख) के साथ 'धर्मयुद्ध' किया, और मुझे पहले ही सेना देकर भेजा । मैंने बहुतसे किलोको लेकर तिब्बत (लदाख) देशके अधिक भागको अपने अधिकारमे कर लिया था, जब कि खान हमारे पास पहुँचा । दोनोकी सेनामे पाच हजार आदमी थे । यह सख्या इतनी अधिक थी, जिसे सारा तिब्बत मिलकर जाडोमे खिला-पिला नही सकता था । खानने चार हजार सेना और इस्कन्दर सुल्तानके साथ मुझे कश्मीर भेजा, और खुद बल्ली-बालूर और तिब्बत (लदाख)के बीचमे जाडा बिताया । (हैदरका यह बालूर गिलगितका इलाका है, और तिब्बतसे उसका मतलब लदाखसे है) । खान बल्लीमे 'धर्मयुद्ध' मे लगा रहा, फिर वसन्तमे वह तिब्बत (लदाख) लौटा । हैदरने कश्मीरमे पहुँचकर वहाकी सेनाको हराया । कश्मीरके राजा मुहम्मदशाहने अपनी लडकी इस्कन्दर सुल्तानको ब्याह दी, और सईद खानके नामसे खुतवा और सिक्का चलाना मजूर किया । कश्मीरसे लूटकी भारी सम्पत्ति ले हैदर वसन्तमे तिब्बत (लदाख) मे खानके पास पहुँचा ।"

अबकी खानने हैदरको उर-साग (बू-चाड) की ओर भेजा, अर्थात् हैदर अब मुख्य तिब्बतकी ओर चला । खान उसे इस तरफ रवाना करके काशगर लौट गया । हैदर तिब्बतकी ओर बढ़ते हुए ऐसी जगहपर पहुँचा, जहापर साम रुकनेका रोग होता है (अर्थात् अधिक ऊँचाईके कारण हवाके क्षीण होनेसे सास अधिक फूलने लगती है) । शायद वह लदाखसे यारकन्दकी ओर जानेवाले बडे डाडोपर जा रहा था । इसी समय ९३९ हि० (३ VIII १५३२—२४ VI १५३३ ई०) मे ४५ सालकी उमरमे सईद खान मर गया और हैदरके अनुसार इस इस्लामके 'गाजी'को अल्लामियाने स्वर्गमे पहुँचाया । हैदरके अनुसार सईदने अपने अभियानोसे राज्यकी सम्पत्ति बहुत बढ़ाई । मुगल, उज्बेक और चगताई तीनो उलुसोमे उसके समान वाण चलानेवाला कोई नही था । वह एकके बाद एक सात-आठ तीर छोड सकता था और सभी लक्ष्यपर जाकर लगते थे । वह बडे ही सुन्दर नस्तालीक अक्षर लिखता था । उसकी तुर्की और फारसी लिखावटोमे कोई गलती निकाल नही सकता था । वह तुर्कीमे गद्य-पद्य दोनो लिखता था । हैदरने सिर्फ एक बार उमे फारसीमे कविता करते देखा था । वह सेहतारा और चारतारा अच्छी तरह बजा सकता था—चारतारापर उसका हाथ ज्यादा खुला हुआ था । वह वाण बनानेमे बडा चतुर था, और हड्डीकी दस्तकारीका भी अच्छा ज्ञान रखता था । वह बडा उदार था ।



## १६ रशीद, अब्दुर् रशीद, सईद पुत्र (१५३३-५६ ई०)

सईद जब अन्दिजानमें बन्दीखानेमें पठा था, उस समय रशीद माके गर्भमें मात मासका था । वह ०१५ हि० (२१ IV १५०२—१२ III १५१० ई०) में पैदा हुआ । बाबरके अनुमार उसका पूरा नाम अब्दुर्रशीद था । जिस समय खलील मुल्तानको शैबानी जानीबेगने अकसीमें मरवाया, उस समय खलील-पुत्र बाबा सुल्तान हूथपीता बच्चा था । सईद बाबाको अपने पुत्रमें भी ज्यादा मानता था, आर न्वाजा अलीबहादुरको उसने उसका अताबेग (अध्यापक-सरक्षक) बना दिया था । रवाजाका मुगोलिस्तानमें बहुत प्रेम था । उसने सईद खानमें प्रार्थना की, कि मुगोलिस्तान और किर्गिज प्रदेशको बाबा मुल्तानको दे दो, मैं स्वयं बाबाको अपने साथ ले वहाका सारा प्रबन्ध ठीक-ठाक करूंगा । खान राजी हो गया । बाबा मुल्तानके समुहमें मना किया—“अगर बाबा मुल्तानने एक बार उस देशपर अपना अधिकार स्थापित कर लिया, तो यहाँमें सभी मुगल मुगोलिस्तान चले जायेंगे, और खानको हानि पहुँचेगी, इसलिए यही अच्छा है, कि बाबाकी जगह रशीदको मुगोलिस्तान भेजा जाय ।” इतिहासकार हैदरका चचा बाबाका ससुर था, लेकिन वह रशीदका ज्यादा पक्षपाती था । सईद खानने अपने अधिकृत इलाकोका एक-तिहाई रशीद मुल्तानको देकर मुगोलिस्तान भेज दिया । ०८८ हि० (१० VI १५३७—१७ १५३८ ई०) में मुल्तानके मुगोलिस्तान पहुँचनेपर मुहम्मद किर्गिजने सभी किर्गिजोंके साथ आकर मारे मुगोलिस्तानको अधीनता न स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया । उज्बेकोने भी विरोध किया । उज्बेको और किर्गिजोंके विरोधके मारे रशीदको काशगर लौटनेके लिये मजबूर होना पड़ा । अपने सम्मिलित शत्रुओंके साथ लड़नेमें हानि देखकर रशीदको पीछे उज्बेकोंके साथ समझौता करना पड़ा ।

बाप (सईद खान)के मरनेके बाद रशीद मुगोलिस्तानका खान बना । सबसे पहले जो काम उसने किया, वह था अपने पिताके खैरखाहोका वध । २ अगस्त १५३३ (१० मुहर्रम ९४० हि०) को रशीद मुल्तानके आनेपर हैदरका चचा पिताकी मृत्युपर अफमोस प्रकट करने गया । आते ही रशीदने उसे तथा उसके मित्र अली सैयद दोनोंको मरवा दिया, आर हैदरके चचाकी जगहपर मिर्जा अली तगईको नियुक्त कर यह हुंम दे काशगर भेज दिया, कि हैदरके चचाके बच्चों और सबधियोंको बिना कोई दया-माया दिखलाये बड़ी क्रूरतामें मारनेमें कोई कसर उठा न रखना । यह खबर सुनकर पूर्वमें मन्सूर खान भी रशीदके ऊपर चढ़ दौड़ा, लेकिन उसे खाली हाथ लौटना पड़ा । मन्सूरने रशीदको दवानेके लिये और भी प्रयत्न किये, पर उसे सफलता नहीं मिली । रशीदके अत्याचारोंसे भयभीत हो उसके अमीरोंने विद्रोह किया, किन्तु रशीदने उनका दमन कर दिया । उसने अपनी रान्तिली माताओ, बुवाओ और बहिनोको भी निर्वामित कर दिया, जिनमें उसके बापकी चहेती बीबी जैनब मुल्तान खानम् भी थी । इधर जब उसने अपनीमें इतना झगडा कर रखा था, उसी समय उत्तरमें उज्बेक-कजाक भी उसके दुश्मन थे, फिर अन्तर्वदके उज्बेक-शैबानियोंमें मेल करनेके निवा रशीदके लिये और कोई चारा नहीं था ।

८७७ हि० (८ VI १५७०—२९ IV १५७३ ई०) में यूनस खानने करातुकाईमें उज्बेक-कजाकोंको हराया था । लेकिन उसके बाद मुगल उनसे बराबर हार रहे थे, केवल रशीद खानने एक बार उनको हराया । उस समय अन्तर्वेदके मंगोलवशियोंको चगताई कहा जाता था, और मुगोलिस्तानके चगेजवशियोंको मोगल, लेकिन चगताई मोगलोंके प्रति घृणा प्रदर्शित करते हुए उन्हें जाना (मीमानी) कहते थे, आर मोगल चगताइयोंको करावाना । १६वीं सदीके मध्यमें लिखते हुए हैदरने कहा है—“वर्तमान कालमें बादशाहोंको छोड़कर कोई चगताई नहीं रह गया है । और य बादशाह है बाबर बादशाहके पुत्र । चगताइयोंका स्थान (अब) कुछ दूसरे सम्प्रदायोंने लिया है ।” लेकिन रशीदका यह कहना गलत है । तेमूर-वंशज बाबर माकी तरफसे अर्ध-मंगोलोंने मध्य रखते भी बापकी ओरसे तुर्क था, मंगोल या मोगल हरगिज नहीं । लेकिन भारतमें ब्रह्मस्थापित बाबरका वंश अपनेको मंगोल (मुगल) कहनेके लिये तुला हुआ था, जिसका दुहराना

बाबर और हुमायूँ का कृपापात्र हैदर अपना फर्ज समझता था। हैदरके लिखनसे मालूम होता है, तुफान और काशगरके आसपासमें अब भी तीस हजार मुगल (मगोल) रहते थे, लेकिन मुगोलिस्तानको उज्बेको (कजाको) तथा किर्गिजोंने ले लिया था। मगोल (मुगल) शब्दका कितना अनिश्चित प्रयोग उस समय हो रहा था, यह इसीसे मालूम होगा, कि हैदर किर्गिजोंको भी मुगल-कवीलेमेंसे बतलाता है, जो कि “खाकानके साथ बराबर विद्रोह करते रहनेके कारण मुगलोसे अलग हो गये।” हैदरके समय सभी मुगल मुसलमान हो चुके थे, लेकिन किर्गिज अब भी काफिर (बौद्ध) थे। “इसीलिये उनका मुगलोसे झगडा रहता है।” साथ-साथ इस्लामके गाजीका यह भी कहना है—“जो मुगल मुसलमान नहीं हैं, उनका हमने अधिक नामोल्लेख नहीं किया है, क्योंकि काफिर चाहे जमशेद और जोहाबके प्रतापको भी पा जाये, तो भी उसका जीवन याद रखने लायक नहीं होता।”\*

१४४ हि० (१० VI १५३७-१ V १५३८ ई०)में रशीदने उज्बेक-कजाकोको करारी हार दी थी, जिसमें उनके खान ताहिरका भाई तुगुम और सैंतीस सुल्तान मारे गये। कजाकोका उसने सप्तनदमें उच्छेद-सा कर दिया। अपने बापका अनुकरण करते हुये रशीदने भी अपने बेटे अब्दुल्लतीफ को सप्तनदमें वैठाया, और शैबानी-उज्बेकोसे मित्रता जारी रखी। १५१ हि० (१५४४-१५४५ ई०) में इस्सिवकुलके तटपर ताशकन्दके खान नौरोज अहमद (बराक)से मुलाकात की। इसके कुछ समय ही बाद उज्बेक-कजाकोने फिर सप्तनदपर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। यह याद रखना चाहिये, कि अभीतक उज्बेक शब्द कजाक और शैबानी दोनोंके लिए प्रयुक्त होता था, जो कि पीछे स्वयं केवल अन्तर्वेदके शैबानी-अस्त्राखानी-मगीती खानोंकी तुर्क प्रजाके लिये रुढ़ हो गया, और कजाक आधुनिक कजाकिस्तानमें रहनेवाले तुर्कोंको कहा जाने लगा। किर्गिज भी उस समयतक किर्गिज-कजाक कहे जाते थे, जो अन्तमें किर्गिजके नामसे मशहूर हुये।

रशीदका ज्येष्ठ पुत्र अब्दुल्लतीफ बापके जीवन हीमें कासिम खानके पुत्र अकनजरके साथ लड़ाई करते मारा गया। अकनजर किर्गिजों और कजाकोका खान था। अग्रेज यात्री जेन्किन्सनके अनुसार १५५८ ई०के आसपास कजाको और किर्गिजोंने ताशकन्द और काशगरमें बड़ी लूट-मार की, और चीनसे पश्चिमी-एसियाकी ओर जानेवाले वणिक्पथको काट दिया।

रशीद मुगोलिस्तानी खानोंमें अन्तिम शक्तिशाली खान था।

### १७. अब्दुल करीम, रशीद-पुत्र (-१५९३ ई०)

यह अकबरका समकालीन था और १५९३ ई०में काशगरपर शासन करता था। अब्दुर्रशीदका तीसरा पुत्र अब्दुर्रहीम पिताकी आज्ञाके बिना ही तिब्बतमें जहाद करने गया, जहाँ वह मारा गया। कश्मीरपर कितने ही समयतक मुगोलिस्तानके खानोंका अधिकार रहा, फिर १५८७ ई० के आसपास अकबरने कश्मीरको ले लिया।

### १८ मुहम्मद खान (१६०३ ई०)

ईसाई साधु गोयेज आगरासे लाहौर, काबुल, वदख्शा होते १७०३ ई०में यारकन्द पहुँचा। उस वक्त मुहम्मद खान वहाका राजा था। गोयेज सालभर यारकन्दमें रहा। उस समय काशगर राज्यकी राजधानी यारकन्द थी। गोयेज सूचाव (चीन)में अप्रैल १६०७ ई०में मर गया।

### १९ इस्माईल खान

यारकन्दकी गद्दीपर पीछे इस्माईल बैठा।

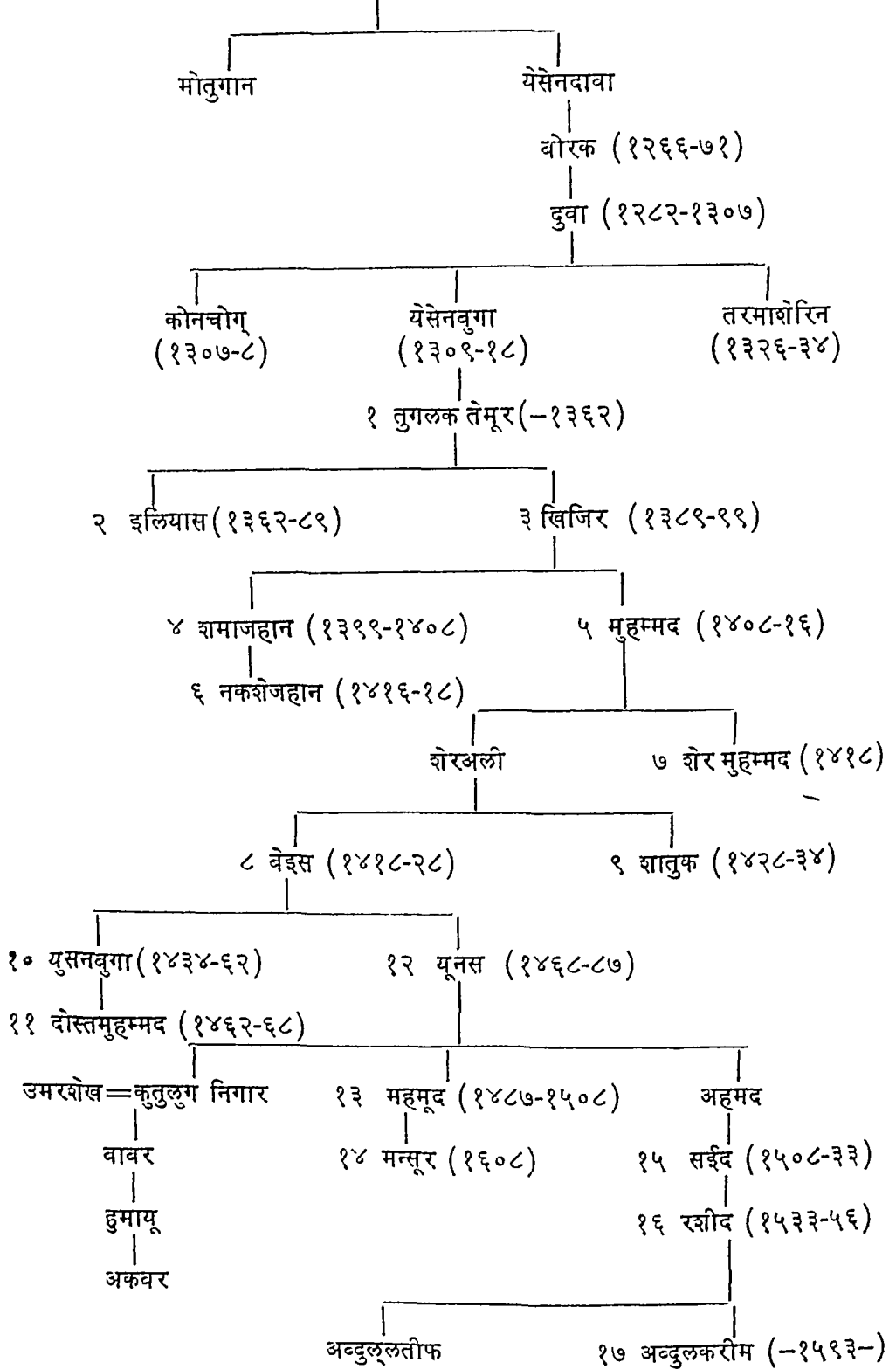
बाबर और हैदरकी पलटनमें मुगल नामसे प्रसिद्ध तुर्क भी काफी सख्यामें आये थे। दिल्लीके पास-पड़ोस और रावलपिंडीके इलाकेमें इन मुगलोंकी सख्या काफी थी। पश्चिमोत्तर प्रदेशके रास्तेपर भी वह जहाँ-तहाँ बस गये थे, इनमें चंगताई (बाबरके अपने भाई-बंधों)की सख्या २३५९३ थी, और वरलसोकी १२१७३।

\*इसी जगह हैदरने अपने ग्रन्थके बारेमें लिखा है—“यह तारीखे-रशीदी ९५३ हि० के जुल्हेजा महीनेके अन्त (फरवरी १५४७ ई०) में कश्मीरके नगरमें लिखी गई, जब कि मुझ मुहम्मद गुरगान-पुत्र हैदर मिर्जाको कश्मीरके सिंहासनपर बैठे पाँच वर्ष हो गये थे।”

३ (४ मुगोलिस्तानी खान-वृक्ष)

(१३२१-१५६५ ई०)

चंगताई (१२२७-४२)



स्रोत-ग्रन्थ

१. तारीख रशीदी (मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत, लन्दन १८८८)

२. " (Tr. E. D Ross, London 1895)

३. ओचर्क इस्तोरिइ सेमिरेच्या (व व वर्तोल्द)

## सिविरखान

(१५००-१६५९ ई०)

येरमकके सिविर नगरके ध्वस और पश्चिमी साइबेरियापर रूसके शासनके स्थापित होनेकी बात कहते हुये हमने सिविरके खान कूचुमका जिक्र किया था । १७ वी सदीमें साइबेरियामे बसनेवाली जातियोके बारेमे भी हम बतला चुके हैं ।

सिविरके खान भी अपना सवध छिझ-गिस्-पुत्र जू-छिके पुत्र शैवान खानसे जोडते हैं, जो कि बा-तू खानका भाई था । शैवानके बाद उसके पुत्र बा-तू खान, तत्पुत्र जूजीबुका, तत्पुत्र वादाकुल, तत्पुत्र मगू तेमूर, तत्पुत्र तुकाबेक, तत्पुत्र अलीओगलान, तत्पुत्र हाजी मुहम्मद खान, तत्पुत्र इलबक (या ईबक), तत्पुत्र मुर्तजा, तत्पुत्र कूचुमखानके पास पहुचकर हम येरमकके समकालमे आ जाते हैं । ७ नवम्बर १५८१ ई० मे कूचुमको ही हराकर येरमकने उसकी राजधानी सिविरको दखल किया था । कूचुमके बाद उसके पुत्रो अली और इशिमने कुछ समय तक शासन किया । इशिमका पुत्र अवले गिराई और उसके बाद इशिमके भाई चुवाकके पुत्र दौलात गिराईने शासन किया । साइ-वेरिया जैसे सभ्यताके छोरपर बसे देशके वाकायदा इतिहास लिखनेकी सम्भावना नही हो सकती थी, इसलिये इन खानोके बारेमे बहुत बाते हमे मालूम नही हैं । वस्तुतः कबीलेशाही-धर्ममे इतिहास द्वारा अमर होनेकी सभावना न देख शासकोका सामन्तशाही-धर्मकी तरफ झुकनेका एक कारण यह भी है, कि सामन्तशाही पुरोहित अपने इतिहास-ग्रन्थो या पुराणो द्वारा अपने यजमानोको अमर कर देनेकी क्षमता रखते थे । सिविरतक इस्लाम पहुचा तो था, लेकिन अभी वहाके लोगोपर उसका गहरा प्रभाव नही पडा था । बा-तूके वशके खतम होनेपर सुवर्ण-ओर्दूके सिंहासनपर शैवानी-वशज खिजिरखा बैठा, जो कि मझ-गू तेमूरका सवधी था । खिजिरखाका सिक्का ख्वारेज्ममें भी मिला है, जिससे जान पडता है, शायद ख्वारेज्मपर भी उसका अधिकार था । मझ-गू तेमूरके छ पुत्रोमे किपचकका खान पुलाद या पोलाद-तेमूर है । इसने किपचक खान अजीजको १३६७ ई० के आसपास मार डाला । पोलादके दो पुत्रोमे अरवशाहके वशजोने ख्वारेज्मपर शासन किया, और इब्राहिमके वशजोने बुखारापर, यह हम बतला आये हैं । मेझ-गू तेमूरके पौत्र हाजी मुहम्मद खानके पुत्र ईबकसे हम सिविरके खानोपर पहुचते हैं ।

### १ ईबक, हाजी मुहम्मद-पुत्र (१४९३ ई०)

ईबक या इलबक उस समय हुआ, जब कि जू-छि-उलुस विशुबलित-सा हो चुका था । माइवेरिया और वश्किरोके छोटे-छोटे राजा इमे अपना अधिराज मानते थे । पुराने पवाडोमे इसे कजानका जार उपक कहा गया है । इसने अपनी बहिनका ब्याह साइवेरियाके शासक मारसे किया था, जिसे झगडा हो जानेके कारण पीछे इमने मार डाला । उसके बाद वह त्यूमेन (प० साइवेरिया) प्रदेशका राजा हुआ । ईबक १४९३ ई० के बाद किसी समय मरा ।

### २ मुर्तजा, ईबक-पुत्र

इसके शासनकालमे उज्बेक-उलुसका अधिकांश भाग मुहम्मद शैवानी और इल्बसंके नेतृत्वमे अन्तर्वेद और ख्वारेज्ममे चला गया । जिसका कारण था पूरबमे मंगोल राजा अलतन खानके

नेतृत्वमे मंगोलो द्वारा कलमकोपर भारी प्रहार पड़नेसे उनका पश्चिमकी ओर भागने हुए उज्बेकोके ऊपर पड़ना । उन्हे कलमकोकी वाढने डुबाना चाहा, और उवर तेमूरी साम्राज्यके नष्ट-भ्रष्ट होनेके कारण दक्षिणमे न्यूता आया । उज्बेक-उलुसमेंसे जो यहा रह गये, वह मुर्तुजाको अपना खान मानते रहे । मुर्तुजाने नोगाइयोपर बडा अत्याचार किया, जिसका बदला पीछे उन्होने उसके पुत्र कूचुमको मारकर लिया ।

### ३ कूचुम, मुर्तुजा-पुत्र (१५५५-१५ ई०)

१५५६ ई० में सिवरके खान यादगारने रूसी जारके पास कर न भेजनेका यह कारण बतलाया था, कि शवानी राजकुमार हमारे देशमें लूट-मार कर रहा है । यह शवानी राजकुमार कूचुम खान था, जो उस समय सिविरसे पश्चिमके त्यूमन प्रदेशका शासक था । १५६३ ई० के आसपास कूचुमने यादगारको हटाकर सिविर राजवानी दखल कर ली । १५६९ ई० में रूसी उसे सिविरका जार (राजा) कहते थे, जिसे रूसी जारने एक संधि द्वारा अपने सरक्षणमें ले लिया था । सरक्षणकी एक शर्त यह थी, कि सिविर खान हर साल सेवककी हजार छाले और स्ववाइरलो (गिलहरी) की हजार छाले प्रतिवर्ष भेजा करेगा । इस सोनेके मुहर लगे संधि-पत्रको चाबुकोफ साइवेरिया ले गया । कूचुमकी एक बीवी कजानके किमी छोटे खानकी लडकी थी, जिसके साथ कितने ही रूसी और चुवाश गुलाम भी सिविर गये थे । उसकी दूसरी दो बीदिया मिर्जा दीलतवेगकी लडकिया थी । इस प्रकार सम्यताके सीमान्तपर बसे होनेपर भी सिविर नगरीमें सम्यताके सदेशवाहक स्त्री-पुरुष पहुंच चुके थे । लेकिन कूचुमकी प्रजामें अभी बर्बर अवस्थामें रहनेवाली कितनी ही जातिया थी । इर्तिश और तोवोलके कितने ही तारतार ओर्दू तथा बाराबिनके तारतार भी इसे अपना खान मानते थे । इसीके समय त्यूमनमें रूसियों के साथ मिला हुआ एक अर्ध-स्वतंत्र राजा रहता था । इस तरह कूचुमका राज्य तूराके मुहानेसे अधिक पश्चिम नहीं था । तरखनके तारतार इसकी अन्तिम प्रजा थे । तोवोलके सबसे नजदीकवाले बश्किर और ओस्तियाक कबीले भी कूचुमके अधीन थे । कहते हैं, कूचुम पहला खान था, जिसने साइवेरियामें इस्लामका प्रवेश कराया, लेकिन अभी वह बहुत फैला नहीं था । उसने अपने पिता मुर्तुजाको लिखा, जिसपर उसने एक आखुन (बड़े मुल्ला) और कई मुल्लाओंके साथ अपने पुत्र अहमद गिराईको कजानसे इस्लामके प्रचारके लिये कूचुमके पास भेजा । कूचुमने प्रजाको जबरदस्ती मुसलमान बनानेकी कोशिश की, तो भी वह अभी तारतारोंको पूरी तौरसे मुसलमान बनानेमें सफल नहीं हुआ था । इर्तिश-उपत्यकाके तारतार अब भी मूर्तिपूजक थे । रूसी यात्री मुलरसे यालीनिश तारतारोंके एक सरदार (बी) ने कहा था अपनी जवानीसे ही हम अपने मा-बाप, अपनी प्रजा तथा पड़ोसियोंके साथ सदा मूर्तिपूजक रहे । तोवोलस्क और देमियान्स्कोयके बीचके निवासी लेवाउज्की ओर्दूके तारतार तथा तूरिन्स्कके पड़ोसवाले तारतार भी तबतक मूर्तिपूजक रहे, जबतक ओस्तियाकोंके साथमें उन्हे ईमाई नहीं बना लिया गया । बाराबिन्स्की कबीलेके बहुतने लोग १८वीं सदीतक मूर्तिपूजक रहे, यद्यपि उनके इलाकेमें बहुत पहले कूचुमके समयमें ही मुसलमान पहुंच चुके थे । एक दूसरे रूसी लेखक फिशरके अनुसार निजार-उपत्यकाके तूरिन्स्क तारतारोंके कितने ही परिवार १६३९ ई० तक मूर्तिपूजक रहे ।

७ नवम्बर १५८१ ई० को येरमकने किम तरह कूचुमकी राजवानी सिविरपर अधिकार किया, यह हम बतला चुके हैं । १७ या १८ अगस्त १५८४ ई० को येरमक लडाईमें हारकर अपने कवचके भारी बोझके कारण नदीमें डूबकर मर गया, लेकिन उसमें रूसी अधिकारको साइवेरियामें क्षति नहीं पहुंची । येरमक और उसके साथियोंका स्थान दूसरे रूसी बराबर लेते रहे । येरमककी मृत्युके दो साल बाद १५९६ ई० के वसन्तमें वोयवोद वानिली बोरिस-पुत्र नूकिन और इवान म्यास्नोईके साथ तीन सौ रूसी सैनिक आये—उन्होंने युगुरके पहाड़ों और ओव नदीके रास्ते चढ़ाई की । १० जुलाई १५८६ ई० को नूकिन तारतारोंके एक पुराने किले चिंगीपर पहुंचा, जो कि तुरा नदीके तटपर था । वहां उसने

त्यूमनके नामसे एक नगर बसाया, जो आजकल पश्चिमी साइबेरियाका एक जिला है । त्यूमन नुरा नदीके दक्षिण तटपर बसा उरालसे पूर्व रूसियोंकी प्रथम स्थायी वस्ती थी । रूसियोंने बहुत आसानीसे नुरा, पिशिमा, इसेत, तोदा और तबोलकी उपत्यकाओंके तारतारोको अपना करद बना लिया और कुछ ही समय बाद सैदिक खानको भी अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया । सैदिक कूचुमसे पहलेके सिविर-खानोका वंशज था ।

कूचुम अब भी हाथमे नहीं आया था । वह भागकर नोगाइयोके भीतर वराविनके मैदानोमे चला गया, जहासे १५९० ई०मे उसने तोवोल्स्कके पासवाले इलाकेपर आक्रमण किया, और रूसी प्रजा बननेके कारण कौरदक और सालिन्स्कके तारतारोको लूटा । इसपर तोवोल्स्कके नये वोयवोद राजुल (कन्याज) कोल्जोफ-मोसाल्स्कीने कुछ रूसी और तारतार सैनिकोके साथ अगले साल जुलाई १५९१ ई०मे कूचुमके विरुद्ध अभियान किया, और वह चिलिक झीलके पास इशिमके तटपर कूचुमको हराकर उसकी दो वेगमो, एक पुत्र (अबुल्खैर) और बहुतसी लूट्टी हुई सम्पत्तिको लेकर वह लौटा । १५९४ ई० मे रूसियोंने तारानगरका निर्माण किया, जिसके लिये जारने राजुल अन्द्रेइ वासिली-पुत्र लेज्कोइको वोयवोद नियुक्त किया । वह मास्कोसे एक सौ पैतालीस स्त्रेलत्सी, सौ कजान-तारतार, तीन सौ वाश्किर, पचास पोल और पचास पोठकसाक भरोको साथ लेकर आया था । त्यूमनसे भी उसके साथ कितने ही लोग आये थे, जिनमे लियुवानी, चेरकासी, निर्वासित-कसाक, तथा कुछ साइबेरियाके तारतार थे । इस सेनामे अधिकांश सवार थे । उनके पास तोपखाना और काफी गोला-बारूद था । पहले नगरको तारा नदीके तटपर बसानेका ख्याल था, किन्तु पीछे विचार बदलकर उसे इतिशकी शाखा अगरकापर बसाया गया, पर नाम तारा ही रहा । रूसी अब कूचुमको दवानेके लिये उतार रहे थे । कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये कहा गया, और यह भी वचन दिया गया, कि छोटे पुत्रोमेसे एक तथा दो-तीन प्रमुख तारतारोको जामिनके तौरपर मास्को भेज देनेपर बड़े लडके अबुल्खैर तथा दूसरे सभ्रान्त वदियोंको लौटा दिया जायगा । अबुल्खैरने भी जार फ्योदोरकी उदारताकी प्रशंसा करते हुये वापको चिट्ठी लिखी । कूचुमने जवाब दिया—“मैने येरमकको सिविर नहीं दिया, यद्यपि उसने उसे जीत लिया । मै शांतिसे रहना चाहता हूँ, यदि इतिशके किनारेको सीमान्त मान लिया जाय ।”

१५९५ ई० मे फ्योदोर येलिज़्की नया वोयवोद होकर आया । उसने तुरन्त कूचुम और उसके मित्र नोगाई खान अलीके ऊपर चढाई करनी चाही । तोवोल्स्क और त्यूमनसे भी मदद आई, जिसमे पाच तोपें भी थी । पहले जाडो मे ९० कसाक-सैनिक भेजे गये, जो अयालिन्स्कके अट्ठाईस तारतारोके साथ लौटे । कूचुम इन कसाकोको अपने रहनेकी जगह ऊपरी इतिशमे ले जाना चाहता था । इस समय वह ओवके जलप्रपातमे दो दिन आगे गाडिया-नगरमे डेरा डाले पड़ा था । फिर वोयवोदने नया अभियान भेजा, जो कूचुमके रहनेकी जगहको नष्ट करके तारा लौट गया । लेकिन कूचुम अभी दबा नहीं था । १५९६ ई० के वसन्तमे दोमोशेरोफके अधीन तेतालीस सैनिकोका अभियान भेजा गया वह २९ मार्चको वरफानी जूतोपर रवाना हुये । मामूली सघर्षके बाद रास्तेके चमगुल, लुगुई, लुवा, केलेमा, नुराश, वरमा (उलुकवरमा), किरकिपी आदि गावोने अधीनता स्वीकार की । इसी समय नोगाई मिर्जा चिन, और कितनोने भी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कूचुम अब भी प्रतिरोधके लिये तैयार था । अगस्त १५९८ ई० मे ३९७ रूसी सैनिकोके साथ अन्द्रेइ वोयेकोफ कूचुमके विरुद्ध ओव नदीकी ओर चला । चारो ओर फमले सडे खेतोके बीचमे कूचुम अपने परिवार तथा पाचमी अनुयायियोंके साथ छिपा हुआ था । २ सितम्बर को सूर्यास्तसे पहले रूसियोंने आक्रमण कर दिया । सारे दिन लडाईं होती रही, जिसमे कूचुमका एक भाई, एक पुत्र, राजकुमार इलितन और पाच-छ अमीर, दस मिर्जा और एक नौ पचास सैनिक मारे गये । शामके वक्त नदीकी ओर शत्रु भगे । उनमे एक मीसे ज्यादा नदीने डूब गये, पचास वन्दी बने, और कुछ लोग नावो द्वारा भागनेमे सफल हुये । वोयकोफको बहुतने लूटके माल के अतिरिक्त आठ वेगमे, पाच कुमारिया और पाच राजकुमार हाथ लगे । वोयकोफने तारा

लौटकर जार वोरिस गदुनोफको अपनी सफलताके बारेमें लिखा—“कूचुम खान दो आदिमयोके साथ ओवके किनारे-किनारे चाता प्रदेशमें चला गया ।” वीयकोफने समझा-बुझाकर कूचुमको अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार करना चाहा । उसने इसके लिये मुल्ला तूल मेहमतको भेजा । उस वक्त ओव नदीके तटके एक जगलमें रूसियों द्वारा मारे गये अपने तारतारोकी लाशोंके बीचमें अधा-बूढ़ा कूचुम खान तीन बेटों और तीस अनुचरोके साथ एक पेड़के नीचे बैठा था । मुल्लाने कहा—“अधीनता स्वीकार कर लो, फिर तुम मास्कोमें जाकर अपने परिवारके साथ आरामसे रह सकते हो । जार तुम्हारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव करेगा ।” बूढ़ेका जवाब था—“जब मेरे दिन भले थे, मैं समृद्ध और सबल था, तब मैं नहीं गया, तो क्या इस समय मैं अपमानपूर्ण मृत्युके लिये वहाँ जाऊँ ? मैं अन्धा और बहरा हूँ, गरीब और बेचारा हूँ । मैं अपनी सम्पत्तिके विनाशके लिये अफसोस नहीं करता, लेकिन मैं अपने प्यारे पुत्र असमानकके लिये अफसोस करता हूँ, जिसे रूसी पकड़ ले गये । राज्यके विना भी मैं उसके साथ सतोपमें रह सकता था, चाहे मेरी दूसरी वीविया और बच्चे न भी होते । अब मैं अपने बच्चे-खुचे परिवारको दुखारा भेज दूँगा और स्वयं नोगा-इयोमें चला जाऊँगा ।” कूचुमके पास उस समय न गरम कपड़े थे, और न घोड़े ही । उसने अपनी पुरानी प्रजा चातोसे कुछ चीजें भीखके तौरपर मागी । इसके बाद वह युद्धक्षेत्रमें पहुँचा । फिर दो दिनतक मुर्दोंको दफनानेमें लगा रहा । इसके बाद एक घोंडेपर चढ़कर वह रूसी इतिहासकार करमजिनके अनुसार “इतिहाससे विलुप्त हो गया ।”

कूचुम इतिहासके रास्ते सइसान झील (नोर) की ओर जा कल्मकोके देशमें कुछ समय ठहरा, फिर उनके कितने ही घोड़ोंको लूट कर इशिमके जिलेमें गया । कल्मकोने पीछा करके इशिम नदीके पाम करगालचेन झीलपर उसपर आक्रमण किया । उसके कितने ही अनुचर मारे गये, और कूचुम नोगाइयो (मगुतो) में भाग गया । लेकिन, नोगाइयोको कूचुमके बाप मुर्तुजके हाथों बहुत कष्ट उठाना पड़ा था, इसलिये उन्होंने बूढ़े कूचुमको मारकर उमका बदला लिया । कूचुमके परिवारके जो लोग रूसियोंके हाथमें पड़े थे, वह जनवरी १५९९ ई० में मास्को पहुँचे । खानके पुत्रों और पुत्रियोंको अमीरों और धनी व्यापारियोंके घरोंमें रखकर जारने उनके लिये मामूली पेंशन निश्चिन कर दी । महमेतकुल रूसी सेनामें शामिल हुआ, और १५९० ई० में रूपकी तरफ में स्वीडनके विरुद्ध लड़ा । १५९८ ई० में क्रिमियाके तारतारोंके विरुद्ध भी वह जार वोरिस गदुनोफके साथ गया था । कूचुमका पुत्र अबुल्खैर १५९१ ई० में ईसाई बनकर अन्द्रेई नामसे प्रसिद्ध हुआ, और कूचुमके पुत्र अलीका लड़का अल्पअर्सलन पीछे कासिमोफका खान बना ।

#### ४ अली, कूचुम-पुत्र (—१५९८ ई०)

१५९८ ई० की लड़ाईमें बापके साथ अली भी था । इस पराजयके बाद वह जहाँतहा घुमनू जीवन बिताता धूमता रहा । अभी रूसियोंके शासनके आरम्भिक दिन थे । अली अपने अनुयायियोंको जमा करके वह इतिश, इशिम और तबोलकी उपत्यकाओंमें लूट-मार करते यायिक नदी तथा कूफा तक बाधा करने लगा । १६०३ ई० में वह लगातार रूसियोंके साथ छेड़खानी करता रहा । १६०६ ई० में पहली बार उसके आदमी ताराके जिलेमें दिखलाई पड़े, जहाँ उन्होंने रूसी वस्तियोंको लूटा । रूसियोंने पीछा करके अलीकी माको पकड़ लिया, जिसे वह त्यूमन ले गये । १६०७ ई० में कूचुमके पुत्र असिम, इशिम और कचुवार कल्मकोके झंडेके नीचे हो, त्यूमन जिलेपर आक्रमण कर वहाँसे रूसी बच्चों और ओरतोंको पकड़ ले गये । फिर एक नोगार्ड मुर्जा कनार्डके साथ दो सौ आदिमियोंको ले उन्होंने तोबोलस्कके आसपास लूट-मार की । पीछा करके शमशीके जंगलोंमें अलीकी स्त्री दो पुत्र, असिमकी दो वीवियाँ और दो लड़कियाँ, तथा अलीकी एक बहिनको पकड़कर रूसी त्यूमन ले गये । आखिरमें किविरली झीलके पास दो दिनोंके युद्धमें जो बन्दी पकड़े गये, उनमें अली भी था । उसे बन्दी बनाकर मास्को भेज दिया गया । वहाँ कुछ समय रहनेके बाद उसे यारोस्लाव्ल नगरमें नरजबन्द कर दिया गया, जहाँ १६३८ ई० के बाद वह किमी समय मरा ।

## ५ इशिम, कूचुम-पुत्र (—१६१६ ई०)

१६१६ ई० में इशिम सलवर और कोशुर दो कल्मक राजकुमारों के साथ ऊपरी इतिशिम सेमीप्लातिन्स्क में रहता था। वहासे वह साइबेरिया के नगरों में ऊफा तक लूट-मार करता था। अली के पकड़े जाने के बाद इसने अपने को खान घोषित किया था। १६१८ ई० में कल्मकों के साथ मिलकर इसने रूसियों पर आक्रमण किया, जिसमें इतिशिम के मैदानों और तोबोल के बीच में उसे बहुत बुरी तरह से हारना पड़ा। इस लड़ाई में इसके बहुत-से आदमी काम आये। १६२० ई० में इशिम कल्मक सेचक यैशी के साथ मिल कर शूचिये झील की ओर जा खबर लाया, कि पूर्वी मंगोलों ने कल्मकों को बुरी तरह हराया है, और वह पश्चिम की ओर भागे जा रहे हैं। इसके बाद इशिम तोरगुत राजा उरलुक की लड़की से ब्याह करके अपने ससुर के साथ रहता रहा। उरलुक वोल्गा-कल्मकों का प्रथम सरदार था। इस समय कल्मक पश्चिमी साइबेरिया के स्तेपी में रूसी सीमा के दक्षिण की भूमि में रह रहे थे। १६२२ ई० में इशिम त्यूमन से सात दिन के रास्ते पर तोबोल-तट पर अवस्थित खामा करागाई में रहता था। इसके बाद वह ऊफा शहर के पास चला गया।

## ६. अबलइ गिराई, इशिम-पुत्र (१६३५-१६५० ई०)

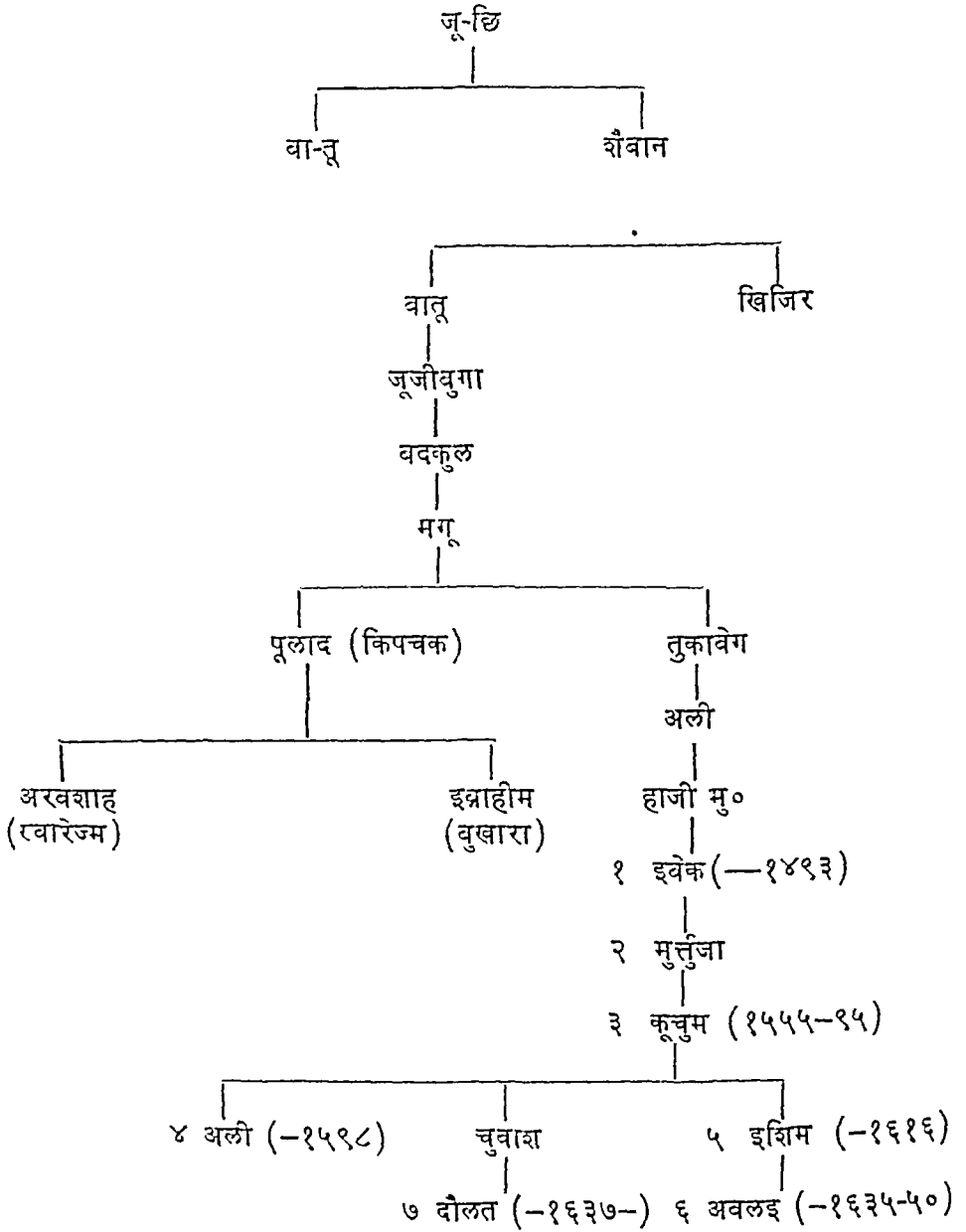
अबलइ गिराई भी कल्मकों के साथ मिलकर लूट-पाट करता था। कल्मक सरदार कोकशुल, उरलुक और वाइवेगिश इसके दोस्त थे, जिनकी सहायता से इशिम ने वराबिन के तारतारों को कल्मकों का करद बनाया। इस प्रकार सहायता करके अबलइ गिराई ने कल्मकों के यैशियों (राजाओं) तेलेगुत राजा ओबक, कुरचाकिश सैची केशेस के साथ मित्रता बढ़ाई। अबलइ अपनी लूट-मार जारी रखे रहा। १६३२ ई० में वह इसेत के तट पर अलीबयेफ यूति नामक गाव में था। १६३५ ई० में इसेत-तट, वेर्ल्न-निजिन्सक या और चूवावोफामे था। इसी साल रूसियों ने इसके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन कुछ कल्मकों के मारे जाने के सिवा उसका कोई फल नहीं हुआ। १६३६ ई० में ऊफा से अभियान भेजा गया। बहुत से कल्मक मारे गये। अबलइ ५४ कल्मकों के साथ पकड़ कर ऊफा लाया गया, जहासे उसे मास्को भेज दिया गया। पीछे वहासे उसके चचेरे भाई दौलत गिराई को उसके मरने की खबर भेज दी गई।

## ७ दौलत गिराई, चुवाक-पुत्र (१६३७ ई०)

१६३७ ई० में तारामे बुखारा के बाईस व्यापारी आये, जिनके साथ दौलत का दूत भी था। १६४० ई० में कल्मकों को साथ ले दौलत ने तरखन्स्कोये ओस्त्रोग (राजकुमार द्वीप) को लूटा। इसपर १६४१ ई० में रूसियों ने दो सौ बहतर सैनिक भेजे, जिन्होंने उनमें से बहुतों को मारा और कितनों को बंदी बनाया। बंदियों में तोरगुत-सरदार उरलुक का एक भतीजा और एक भतीजी भी थी। १६४६, १६४८, १६४९, १६५१ और १६५५ ई० में कूचुमवशी राजकुमारों की लूट-मार की खबर लगती रही। १६५९ ई० में दुर्गई, कुचुक, कचुवार और चूचेलेई ने एक हजार आदमियों के साथ कितने ही कल्मक यैशियों से मिलकर बहुत-सी रूसी वस्तियों को लूटा, और ३५८ पुरुषों और ३७५ स्त्रियों को बन्दी बनाकर ले गये। पीछे इन बंदियों में से बहुतों को जुगारिया के खुन यैशी के बीच में पड़ने पर छोड़ दिया। अब वस्तुतः सिविर के खानों की प्रभुता खतम हो चुकी थी, और यायिक (उराल) नदी के पूरव वाले प्रदेश के स्वामी कल्मक थे। उन्हीं में सिविर खान के आदमी विलीन हो गये, और आगे इतिहास में उनका नाम नहीं मिलता।



३ (५ सिविरखान-वशवृक्ष)  
(१५००-१६५९ ई०)



### स्रोत ग्रन्थ

- १ ओचेर्क पो इस्तोरिइ कलोनिजात्सि इ सिविरि (मास्को १९४६)
२. History of Mongol (H. H. Howorth)

## जुङ्गर-साम्राज्य

(१५८२-१७५७ ई०)

**कल्मक-मंगोल**—मंगोलोकी एक शाखाका नाम कल्मक था । इनका मंगोल नाम तोरगुत था, लेकिन मुसलमान और रूसी लेखक इन्हे अधिकतर कल्मकके नामसे पुकारते हैं । १६०० ई० (अर्थात् अकबरकी मृत्युसे पांच साल पूर्व) के पहले अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममें कल्मक नहीं थे । पूर्वी मंगोलोके शक्तिशाली राजा अलतन खानने जब १६२० ई० में तोरगुतोको बुरी तरहसे हराया, तो वह अपने सरदारो खराखुला, दालय और मेरेगनके नेतृत्वमें पश्चिमकी ओर भागने लगे और फिर यम्वा नदी, उराल पर्वतमालासे पूर्व और अल्ताई पर्वतमालाके पश्चिममें छा गये । १६ वी सदी तक यह भूभाग उज्वेक-कजाको (शैबानी और कजाक) से नोगाइयोंके हाथमें चला गया था । वह इस भूमिमें अपना घुमन्तू-जीवन बिताते थे । कल्मकोका उनसे सघर्ष होने लगा । कल्मक लगातार पश्चिमकी ओर बढ़ते वश्किरोके देशमें पहुँचे । कल्मक राजा उरुसलन थैशीने वश्किरोसे कर मागा—वश्किर अभी तक नोगाइयोंके अधीन थे, जिससे नोगाइयोसे झगड़की नौबत आ गई । इस्माईल-पुत्र दीनेवेइका पुत्र कनाई उस वक्त नोगाइयोका राजा था । तोरगुत (कल्मक) सरदार उरलुक और उसके पुत्र दाइशिगने नोगाई खानके विद्रोही सलतानियासे मिलकर १६३३ ई०में कनाईपर चढाई की । कनाई रूसके अधीन था, इसलिये जारकी सरकारने तोबोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी सेनापतियोंको उसकी मदद करनेके लिये हुक्म दिया ।

१६४३ ई०में रूसियोने आक्रमण करके उरलुक और उसके कुछ पुत्र-पौत्रोको भी मार डाला । इसके बाद उरलुक-पुत्र येलदेइ और लोन्जाइने यायिक पार कर वोल्गाके मैदानोमें प्रवेश किया, और नोगाइयोको किताई-किपचक, मँलवाश और येदिस्सन (एतिसन) के तीन भागोमें बांट दिया । साथ ही उन्होने उलाइतुमान (लाल ऊटवाले ओर्दू)के तुर्कमानोको भी उनकी भूमि येम्वाके दक्षिणी भागसे हटा दिया । अब वोल्गाके दोनो पारका इलाका नोगाइयोंके हाथसे निकलकर कल्मकोंके हाथमें चला गया । इस प्रकार नोगाई अपनी मूल-भूमिसे वंचित हुये । करीब डेढ़ शताब्दियो तक कल्मक इस भूमिमें छाये जरूर रहे, लेकिन अन्तमें फिर कजाक आकर आबाद हो गये, जिसके ही कारण आज यह भूमि कजाकस्तानके नामसे मशहूर है । पश्चिमी मंगोलोको तोरगुत या कल्मक कहा जाता था, जब कि पूर्वी मंगोल खलखा नामसे प्रसिद्ध थे ।

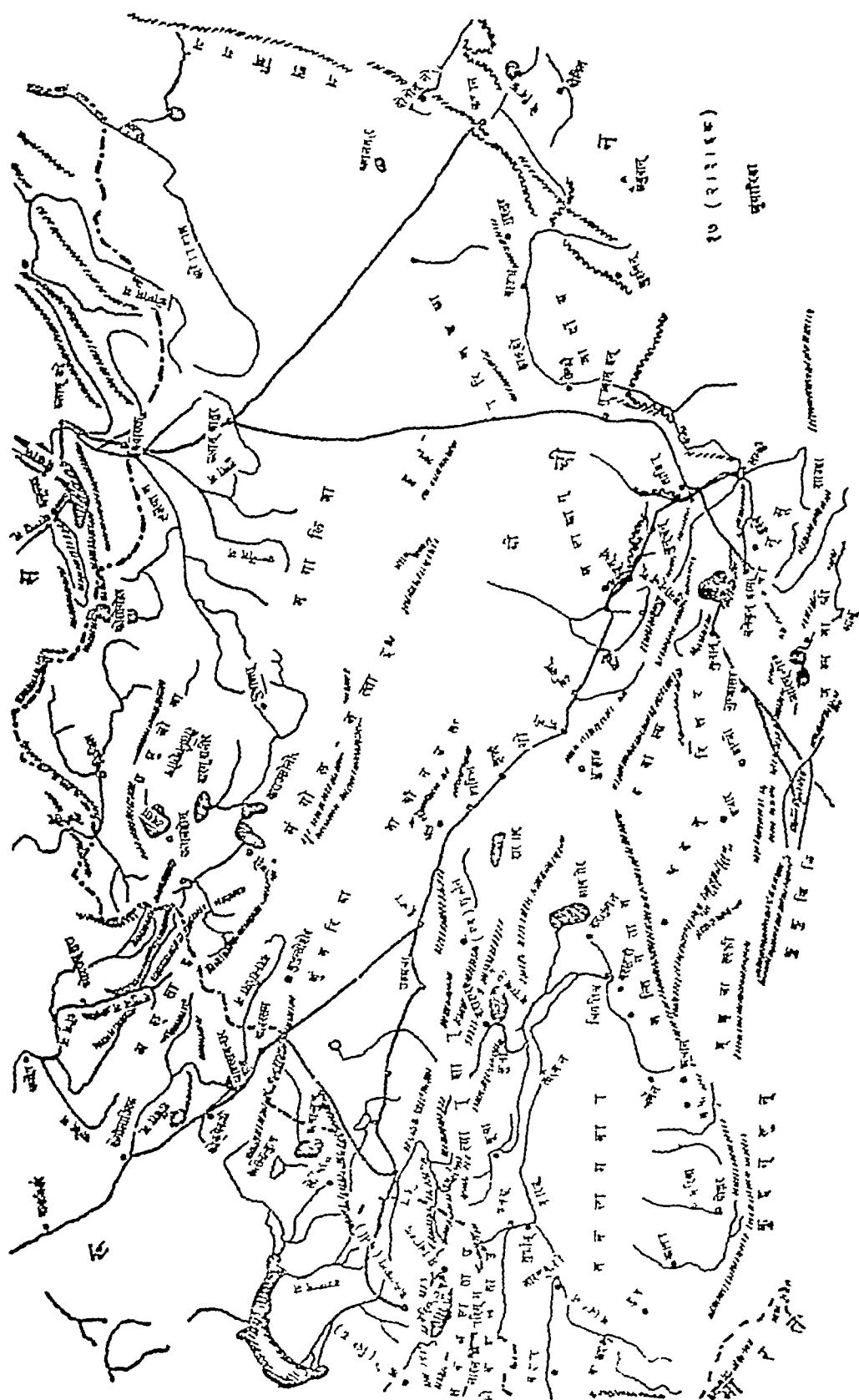
(१) कल्मकोके भीतर ओइरोद, कुरी, तुला, तुमेत, वरगुत, कुरुतुतके कवीले थे, जो अगारा नदी और बैकाल सरोवरके पश्चिममें रहते थे । हो सकता है, पश्चिमी मंगोलोका कोई मुख्य सरदार कल्मक रहा हो, जिसके नामपर कवीलेका यह नाम पडा ।

(२) उरियानकुत मंगोल कोस्सागोल (झील)के पास रहते थे ।

(३) सुवाइत (सूनिन) कवतेरुन (कैरुन) भी मंगोलोका कवीला था ।

तायनखान (१४७०-१५४४ ई०) के पुत्रोने आपसमें मंगोलोका बटवारा किया था ।

कल्मकोंके बाद ज्यादा शक्तिशाली खलखा मंगोल थे । आज भी बाह्य-मंगोलिया इन्हींकी है । खलखाके उन्चास झडे थे, अर्थात् ये उन्चास छोटे-छोटे कवीलोमें विभक्त था । इनके चार मुख्य भेद थे—(१) जस्सकतुखानके पश्चिमी खलखा, (२) तूशीयेतूखानके उत्तरी खलखा, जो कि तुला और कैरुलोन-उपत्यकाओंमें रहते थे, (३) साइननोयनके मध्य खलखा, और (४) सेतजेनखानके पूर्वी खलखा ।



मंगोलराजाबलि—चीनसे मंगोल-शासनके उठनेके बाद मंगोलोकी शक्ति तितर-बितर हो गई थी, जिसको एक बार फिर एकत्रित करके १८७० ई० में तायनखान सारे मंगोलियाका शासक बना। तायनखानका वंश-वृक्ष निम्न प्रकार है—

३. (६ क. मंगोलिया-वशवृक्ष)  
(१३३२-१६०३ ई०)

छिड-गिस् (१२०६-२७)

तूलुइ

कुविले (१२६०-९४)

छिड-गेम् (चिड-किन्)

धर्मपाल

बोयन्यू (१३११-२०)

युग-थेमूर

१ थेगेन थेमूर (१३३३-६८-७०) अन्तिम चीन-मन्नाट

२ विलिकतू (१३७०-७८)

३ उस्साखल (१३७८-८८)

उत्सुकेन

४ एङ्ग के सोरिकतू  
(१३८८-९२)

५ एल्वेक  
(१३९२-१४००)

खरगोत्सोक

६ गुनथेमूर  
(१४००-३)

७ उल्शेथेमूर  
(१४०३-११)

१० अदसै (१४३४-३९)

९ अदै (१४१५-३४)

८ देल्वेक (१४११-१५)

११ तैस्सोङ्ग (१४३९-५२)

१२ अकवर्शी (१४५२-५३)

१५ मदगोल (१४६३-७०)

खर्गोत्सोक

१३ केतकू (१४५३)

१४ मोलोन्  
(१४५३-६३)

बोलखो पजनोङ्ग

१६ तायन (१४७०-१५४६)

वरसावोल

नोरोबोलोद

गुनविलिक

अलतन (१५०७-८३)

१७ बोदी (१५४८-४७)

१८ कुतङ्ग (१५४७-५७)

१९ सस्मकतू (१५५७-९२)

२० मेत्जेन (१५९२-१६०३)

तायनखान बहुत शक्तिशाली शामक था, लेकिन उसने बड़ी गलती यह की, कि राज्यको अपने ग्यारह पुत्रोंमें बांट दिया। इसके ग्यारह पुत्र थे—(१) तोरोवोलोद, जिसका पुत्र बोदी तायनकी गद्दीपर बैठा, (२) उलुस यैशी, (३) वुसुवोल, (४) अरसू, (५) अल्तिन, (६) वत्शिर, (७) अरा, (८) गेरेवोल, (९) गेरेसजा, (१०) वुशिगुन, (११) गेरेतू। इस विभाजनके बाद मंगोल शक्ति फिर दुर्बल हो गई, और छिड़-गिस्के वंशके दावेदार बहुतसे छोटे-छोटे खान हो गये।

**अन्तर्-मंगोलिया**—यह तायनखानके बड़े पुत्रोंके हाथमें गई। अन्तर्-मंगोलिया मचूरियाके पड़ोस में थी, इसलिये दोनोंकी घनिष्ठता बढ़ी, और अन्तमें मंगोलोंकी मददसे मचू नूर-हाचू या (ताई-चू) ने १५८३ ई०में अपने मचू (छिड)-वंश (१५८३-१९१२ ई०)की स्थापना की, जिसके द्वारा मंगोल सम्राटोंके स्थानपर स्थापित मिट-वंश (१३६८-१६४४ ई०)का उच्छेद हो गया। चीनके ऊपर अधिकार करके मचुओंने कलके अपने सहायक मंगोलोंके ऊपर हाथ फेरा, और उन्हें अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। इस प्रकार अन्तर्-मंगोलिया चीनका भाग बन गई।

**बाह्य-मंगोलिया**—इसे खलखा भी कहते हैं। यह तायनखानके छोटे लड़कोंके हाथमें गई। १६८९ ई०में उनमें और उनके पश्चिमी पड़ोसी ओइरोद—कल्मक—कबीलोंके बीचमें लड़ाई छिड़ गई। अन्तमें खलखा (बाह्य-मंगोलियावाली)को ओइरोदोंसे हारकर अपने कितने ही भूभागको गवाना पड़ा। कल्मकोंके प्रहारसे मजबूर होनेपर खलखोंने रूसकी अधीनता स्वीकार करके अपना वचाव करना चाहा, लेकिन इस समय मंगोलियामें निव्यतके दलाई लामाकी तरह एक बौद्ध संवराज—हत्सुक्-तू—का बहुत प्रभाव था। उसने यह कहकर रूसकी अधीनता स्वीकार करनेसे मना कर दिया, कि वह बौद्ध देश नहीं है। इसपर खलखोंने चीनकी सहायता चाही। इस समय मचू-सम्राट् खाइ-सी (शेड-चू १६६१-१७२३ ई०) चीनकी गद्दीपर था। उसने खलखोंकी मदद की, और ओइरोदों (ओलिओतो)को असानीमें दबा दिया। १६९१ ई०में खाइ-सीने दोलोन-नोर (दक्षिणी मंगोलिया) में खलखोंकी एक बड़ी परिपद् बुलाई, जहापर एकत्रित होकर बाह्य-मंगोलियाके राजाओंने चीन की अधीनता स्वीकार करते हुये अभय वर प्राप्त किया। तबसे प्रायः मचू-वंशके अंतिम समय (१९११ ई०) तक बाह्य-मंगोलियाने चीनकी अधीनता स्वीकार कर रखी, और प्रतिवर्ष आठ सफेद घोड़े, और एक सफेद उट—नौ श्वेत—करके रूपमें चीन सम्राट्के पास भेजे जाते रहे, और चीनका 'अम्बन' (महामात्य) बाह्य-मंगोलियाकी राजधानी उरमा (ताहुरे, आधुनिक उलानवातुर) में रहता रहा। उसके अतिरिक्त कोव्दो (पश्चिमी मंगोलिया) और उलियस्सुतैमें सैनिक राज्यपाल रहते थे।

कल्मक (जुगर), ओइरोद (ओलियोत) खलखा मंगोलोंके प्रतिद्वंद्वी थे, इसे हमने अभी देखा। यद्यपि चीनकी सहायतासे खलखोंकी रक्षा हो गई, और कल्मकोंने खलखोंके हाथ बड़ी बुरी तरहसे हार खाई, लेकिन तो भी कल्मकोंकी शक्ति अपनी पश्चिमी और दक्षिणी पड़ोसियोंपर बढ़ती ही गई। पूर्वकी तरफ बढ़ावके एक जानेपर वह अपने सरदारों खराखुल, ताले और मेरेगनके नेतृत्वमें छू-मिश, ओव और तोवोलकी उपत्यकाओंमें रहने लगे। कल्मक पशुपाल थे, इसलिये चरागाहोंके लिये उनका नोगाइयोंसे झगडा हो गया। नोगाइयोंके अधीनस्थ वाश्किरोंसे कर मागनेपर नोगाइयोंसे सवर्ष हुआ, यह हम बतला चुके हैं।

कल्मकोंकी शक्तिका सस्थापक तूमेतवशी अल्तन खान (१५०७-८३ ई०) को माना जाता है। इसने १५५२ ई० में ओइरोतोंके नेताके तीरपर कजाकोंके खान तवक्कल शिगाई-पुत्र तथा ताहिर खानके वंशजोंको लडकर भगा दिया। तवक्कल ताशकन्द पहुँचा, जहाका खान नौरोज अहमद (मृत्यु १५५६ ई०) था। तवक्कलने मंगोलोंके विरुद्ध उससे मिलकर लड़नेकी बात की, तो उसने जवाब दिया हमारे जैसे दस खान भी कल्मकोंका कुछ नहीं विगाड सकते।

इस समय सप्तनद और उसके आसपासकी भूमिमें किर्गिज और कजाक दो घुमन्तू जातियाँ रहती थीं। १९० हि० (१५८२ ई०) अर्थात् अकबरके समकालीन एक अज्ञात लेखकके अनुसार किर्गिज मंगोलोंके वंशके हैं, और उनके यहा कोई राजा नहीं होता—उसकी जगह उनके नेता वंश होते हैं, जो कि काफिर हैं। वह पहाड़ोंमें रहते हैं। यदि कोई उनके ऊपर अभियान करता,

तो वह अपने परिवारको पहाड़ोमें छिपा देते, फिर शत्रुका मुकाबिला करते हैं। उनकी भूमि बहुत ठडी होनेसे सहायक होती है, जिसके कारण सफल विजेता भी उन्हें हाथमें नहीं रख सकता।

**कजाक**—काफिर किर्गिजोके पड़ोसी कजाक थे, जिनकी सख्या दो लाख परिवार थी। यह मुसलमान तथा केवल इमाम अबू-हनीफाके अनुयायी (हनफी) थे। इनके पास बहुतसे ऊट थे। यह अपने तम्बुओको गाडियोपर ले चलते थे। मुसलमान होनेकी वजहसे इनका सवध बुखारासे बहुत घनिष्ठ था। कजाकोके खान तवक्कलने १५९४ ई० में जार फ्योदोरके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये अपने दूत मास्को भेजे। उस समय रूसी तवक्कलकको 'कजाको और कल्मकोका राजा' कहते थे, जिससे यह पता लगता है, कि १६वीं सदीके अन्तमें उसने कल्मकोके विरुद्ध कोई सफलता प्राप्त की थी। अपनी मृत्युके समय तवक्कल तुर्किस्तान-शहर (निम्न सिर-उपत्यका) और काश्गरका शासक था। ये दोनों नगर कजाकोके हाथमें प्रायः १७२३ ई० तक रहे। १७ वीं सदीमें कजाकोकी शक्ति बहुत मजबूत थी। उस वक़्त वह सप्तनदपर भी अधिकार रखते थे, और उनका केन्द्र तुर्किस्तान और ताश्कन्दके नगर थे। उसी शताब्दीके अन्तमें ख्वारेज़्म और वोल्गातट तक उनका प्रभुत्व फैला था। लेकिन इसी समय कजाकोके प्रतिद्वंद्वी कल्मको (जुगरो)की शक्ति बढ़ी। कल्मकोके राजा निम्न प्रकार थे—

### जुंगर-(कल्मक) राजावलि—

१ खराखुल या कराकुल	—१६३४ ई०
२ वातुर यैची, खराखुल-पुत्र	१६३४—५३ "
३ सेङ्ग-गे, वातुर-पुत्र	१६५३—७१ "
४ गल्दन, गन्दन, वातुर-पुत्र	१६७१—९७ "
५ छेवङ्ग-रब्तन, सेङ्ग-गे-पुत्र	१६९७—१७२७ "
६ गल्दन, छेरिङ्ग-छेवङ्ग-पुत्र	१७२७—४५ "
७ छेवङ्ग-दोर्जे, गल्दन छेरिङ्ग-पुत्र	१७४५—५० "
८ दावा छेरिङ्ग, सेङ्ग-गे-वशज	—१७५५ "
९ अमुरसना, वातुर-यैची-वशज	१७५०—५७ "

### १ खराखुल, कुतुगैतू अबूदा अबलई-पुत्र, ओनगोजो-पौत्र, अरखान चिङ्ग-सेन-प्रपौत्र (—१६३४ ई०)

तायन खानके समय (१४७०—१५४४ ई०), कल्मको [१ करइत (केरगुदी), २ जुगर, ३ देरवेत, ४ खोरोत (चोरोस)] की भूमि तयानशान-पर्वतमालाके उत्तर तथा वोगदोउला-पर्वतके पड़ोसमें थी। सोलहवीं सदीमें इनका केन्द्र कुल्जाके आसपास इलि-उपत्यकामें था। खराखुल (चोरोस) मंगोलोके खान खराखुलने १६३४ ई०के आसपास (शाहजहाके समय) ओइरोतोको एकतावद्ध करके अपनी शक्तिको बढ़ानेकी कोशिश की, लेकिन उसमें सफलता उसके पुत्र वातुर यैची (तैची, तैसी, यैशी) को हुई।

### २ वातुर यैची, खराखुल-पुत्र (१६३४—५३ ई०)

१६३४ ई० में वातुर (वहादुर) ने अपने बापका राज्य पा खून-यैचीकी उपाधि धारण की। इसके समय ओइरोतो या जुगरो (वामदल) का राज्य दृढ़ हुआ। इसने १६४० ई०में कूरिल्टाई (महापरिपद्) बुलाई, जिसमें रूसके राज्यमें रहनेवाले कल्मकोके भी प्रतिनिधि आये थे। यहाँ पर वातुरको खून-यैची (सारे कल्मकोका सरदार) बनाया गया। वातुर ऊपरी ईर्तिश-उपत्यका तथा जाइसन सरोवरके पासकी भूमिमें चारण करता था। इसने तवक्कल खानके भाई और उत्तराधिकारी कजाकोके खान इशिमसे सफल लड़ाइयाँ की। १६५३ ई०में वातुरके मरनेके समय कल्मक एकतावद्ध हो चुके थे।

अल्ताईके उत्तरमें रहनेके कारण वातुरके कलमकोको उत्तरी एलिघोत (ओइरोत) भी कहा जाता था, और दाहिनेकी ओर प्रवास करनेके कारण जुगर—सेगोनगर—या वामपक्ष भी। वातुरने तोर्गुतोके राजा उर्लुककी लडकी व्याही थी, लेकिन पीछे उर्लुकसे झगडा हो गया, जिसके कारण भी तोर्गुत पश्चिमकी ओर प्रयाण करनेके लिये मजबूर हुये। करा-ईतिशकी उपत्यकामें वातुरके रूसी तथा खलखा पडोसी हुये। रूसी अवतक साइबेरियाके खानोकी शक्तिको छिप-भिन्न कर चुके थे। ताराके आसपासके वराविस्की तथा दूसरे तुर्की कबीलोपर वातुर थैचीका दावा था। उसके आदमी १६०६ ई० में कर उगाहनेके लिये इस इलाकेमें गये, तो रूसियोने विरोध किया, लेकिन वह उन्हें वहासे भगा नहीं सके। अगले साल कलमकोने क्चुमके पुत्रोको साथ ले तारासे पश्चिमकी ओर बढ़ते हुए तोवोल्स्क, त्यूमन आदि जिलोपर भी हमला किया। तारा-उपत्यकाके निवासी ईतिशके मैदानोसे नमक लाकर सारे देशमें बेचते थे। १६१० ई० में कलमकोने नमककी खानोको दखल कर लिया। इसपर तारतारो और दूसरे कबीलोने लडनेकी तैयारी की, लेकिन जब १६१३ ई० में नमककी खानें उन्हें मिल गईं, तो झगडा खतम हो गया। १६१५ ई० में वातुर थैची (खराखुल तैची ?) के दूत तारा गये। और अगले साल थैची, वातुर और कई दूसरे थैचियोने तोवोल्स्कसे आये रूसी कसाकोके सामने जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली, लेकिन यह शपथ नाममात्रकी थी। कलमकोने छेड-छाड जारी रखी, और १६१८ ई० में ईतिग और तोवोल्की वीचकी भूमिमें सिबिर खानके पुत्रोके साथ आये कलमकोको रूसियोने हराकर उनके सत्तर ऊट और एक वक्सी (भिक्षु)को पकड लिया, जिसे पचास घोडा देनेपर छोडा गया।

१६२० ई० में वातुर तैची (?) खराखुलने अल्तन खान खलखाकी राजधानीको दखल किया, जो कि उवसा सरोवरके ऊपर थी, लेकिन खलखोने जल्दी ही कलमकोके ऊपर आक्रमण करके उन्हें हरा दिया। कलमक तैचीको अपने एक पुत्रके साथ ओवकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। कलमक तैचीने चूमिश नदीके तटपर एक दुर्ग बनाया। उसके दूसरे जुगर-कलमक ईतिग, तोवोल आदिकी उपत्यकाओमें चले गये। इसी समय देरवेत-मगोल भी भागकर साइबेरियामें गये।

धीरे-धीरे वातुरका राज्य बढ़ा। किर्गिज और कजाक खास तौरसे अधीनता स्वीकार करने के लिये मजबूर हुये। कुछ कलमकोने किर्गिज और कजाक वदियोको रूसियोके पास भेजकर उनसे अपने बन्दी छुडाये। १६२३ ई० में खलखोने फिर कलमकोको हराया। अवतक पिछले चालीस सालोंमें खलखोमें लामाओका जोर बहुत बढ़ गया था। इसके बाद उनका प्रभाव जागन नोमेन खान द्वारा कलमकोपर भी पडने लगा, और जुगर खान खराखुल, दरवेतोंके थैची तालेई और तोर्गुतोके सरदार उर्लुकने अपने एक-एक बेटेको भिक्षु बनाया। इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ, कि खलखो और कलमकोके बीच चला आता झगडा शांत हो गया।

१६३४ ई० में रूसियोको नमक न ले जाने देनेके लिये कलमकोने दो हजार सेना बैठा दी। रूसी डरके मारे नहीं गये, तो उन्होंने तारापर चढाई कर दी, लेकिन वहासे मार भगाये गये। १६३८ ई० में रूसी कसाक यामिश सरोवरपर पहुँचे, जहा कलमकोके साथ उनकी पचायत बैठी, जिनमें निम्न शर्तोंपर सुलह हुई—(१) हम रूसी वस्तिओपर आक्रमण नहीं करेंगे, (२) शिकार और मछलीके लिये गये रुमिथोंके साथ छेड-छाड नहीं करेंगे, (३) नमक ले जानेमें कोई रुकावट नहीं पैदा कर, उसके ढोनेके लिये अपने पशु भी देंगे। यह एकतरफा शर्तोंकी सुलह थी, जिसमें रूसियोका ही पलडा भारी था। लेकिन कलमक घुमन्तू ऐसी शर्तोंको माननेके लिये क्यों तैयार होने लगे? सीमान्तपर उनकी लूट-मार बराबर जारी रही।

वातुर थैचीका डेरा अपनी पुरानी जगह इली नदीके तटपर पडा था, जहासे उसने सन् १६३८ ई० में त्यानशानके दक्षिणके नगरोपर आक्रमण किया। वातुरकी धर्मभक्तिसे प्रसन्न होकर १६३५ ई० में दलाई लामाने उसे खुद-थैची और एदंन-वआतुरकी उपाधि प्रदान की। उसकी रूसियोसे भी दोस्ती थी। उसने अल्ताईके उत्तर ओव-ईतिशके वीचकी भूमिके अपने उपराज कुला थैचीको हुक्म दिया, कि तारा (रूसी नगर)से पकड लाये परिवारोको लौटा दो। सी परिवार—जिसमें रूसी भगोडे भी शामिल थे—हजार घोडोंके साथ रूसियोके पास लौटा दिये गये। अब रूसियो और वातुर थैचीमें दूतोंका

दानादान होने लगा। इस समय वातुर एक बौद्ध विहार बनवा रहा था। निश्चय ही विहार अवतक तम्बुओमे रहे होंगे, लेकिन तम्बुओ वाले विहारोसे तो कीर्ति स्थायी नहीं हो सकती थी, इसलिये तिब्बतके विहारोके अनुकरणपर वह एक भव्य इमारत खड़ी कर रहा था। उसने यह भी देखा, कि घुमन्तूगिरीसे जीविकाका स्थायी प्रबन्ध नहीं हो सकता, इसलिये वह चाहता था, कि कल्मक खेती करे। कल्मकोकी एक प्रधान बस्ती थी कुबकसरी। वातुर अपना अधिक समय दे अपने देशको सुन्दर तथा खेती द्वारा समृद्ध करनेमें लगा था। १६४० ई०में नौ सौ रूबल (चादी)के रेशम और दूसरे कपड़े मास्कोसे उसके लिये भेजे गये। थैचीके कहनेके अनुसार वोयवोदको हुक्म मिला था, कि साइबेरियासे सूअर, मुर्गे और कुत्ते भी भेजे जाय। इससे मालूम होता है, कि वातुर अपने लोगोके आर्थिक ढांचेमें परिवर्तन करना चाहता था।

रूसियोके कारण वातुर थैचीका बढाव उत्तर (साइबेरिया) में नहीं हो सकता था, और पूर्वमें चीनके कारण भी आगे बढनेकी गुंजाइश नहीं थी, इसलिये उसका ध्यान अपने पश्चिमके किर्गिज-कजाकोपर ही जाना स्वाभाविक था। १६४५ ई० में उसने कजाकोके सबसे बड़े खान इशिम खानको हराया, और उसका पुत्र यगिर सुल्तान कल्मकोंके हाथमें पडा। लेकिन वह जल्दी ही उनके हाथसे निकल भागा और शक्ति सचय करके १६४३ ई० में उसने वातुरको पीछे हटनेके लिये मजबूर किया। पर इस हारका कोई स्थायी प्रभाव नहीं पडा। इसी समय वातुरका प्रधान शिविर इमिल नदीके तटपर कुबकसरीमें था। यहीपर रूसी राजदूत इलिन उससे मिला। लौटते समय वातुरने पत्र देकर इलिनके साथ अपने दो दूत कर दिये। वातुरके पत्रमें लिखा था —

“परमभट्टारक महाराज (जार्)को बगतिर खुद थैची अभिनन्दन करता है। हम अच्छी तरह हैं, और जानना चाहते हैं कि आप कैसे हैं। आप महाराज, और मैं खुद थैची अबतक शातिके साथ रहे हैं। आप मेरे पिता हैं और मैं आपका पुत्र। दूरतम देशोके लोग हम दोनोंके पारस्परिक अच्छे वर्ताव और सौहार्दको सुन चुके हैं। मेरे और आपके लोग साथमें व्यापार करते हैं, और एक दूसरेको नहीं लूटते, न एक दूसरेसे लडते हैं, बल्कि दोनोंके बीचमें शांति है। लेकिन आपके लोगोंने हमारी प्रजापर करसागलेनमें तोम नदीके तटपर आक्रमण किया, और उनमेंसे कुछको बन्दी बनाया। अगर महाराज, आपको यह बात मालूम है, या आपकी आज्ञासे ऐसा किया गया, तो बिना मुवित्त-धन लिये वदियोको लौटा दो। अगर ऐसा नहीं हो, तो अपराधीको हमारे पास जुरमाना देनेके लिये मजबूर करो। आपके आदमी हमारे हरएक बंदीके लिये चार सौ सबले (समूरी छाल) मागतें हैं, चाहे वह दस सालका बच्चा ही क्यों न हो। यदि आप कृपा करके उन्हें बिना मुवित्त-धनके छोड़नेको आज्ञा नहीं देंगे, तो हमारी मित्रता खतरेमें पड जायेगी। हम आपके पास २ पातरके छालें, ६ रूथी (धनुर्धरोके कामका मोटा चमडा), और दो घोड़े भेज रहे हैं, जिनके बदलेमें हम एक कवच, एक बन्दूक, चार लडनेवाले मुर्गे, आठ लडनेवाली मुर्गिया चाहते हैं। यदि परमभट्टारक, आपको किसी चीजकी जरूरत हो, तो पत्रमें लिखें। हमारे दूतोको मास्को जानेकी इजाजत मिले, जिसमें वह अपने घोडोको साथ ले जा सके।” इस समय जुगारियामें अकाल पडा हुआ था, जिसके कारण बहुतसे कल्मक बरेवास्तेपीमें साइस्सननोर (श्रेष्ठ सरोवर)में मछली मारकर गुजारा कर रहे थे। इसके पहले इस सरोवरका नाम कीसलपू-नोर था।

शिकायतोका कुछ भी फल न देखकर १६४९ ई० में खुद थैचीके प्रतिनिधि कुला थैची-मुत्र सकिलने तोम्स्क जिलेपर आक्रमण करके सगस्का गांवको उजाड दिया। अगले साल रूसियोने कप्तान वलपकोफको शिकायत करनेके लिये वातुरके पास कुबकसरीमें भेजा। उस समय वातुर वहां पत्थरोकी इमारतोवाले एक नगरके बनानेमें लगा हुआ था। बातचीत करनेपर मालूम हुआ, कि पहले रूसियोने आक्रमण किया था। वलपकोफके साथ फिर वातुरने अपने दूतोको भेजकर दो बढई, दो राजगीर, दो लोहार, दो बन्दूक बनानेवाले मिस्त्री, एक तोप, कुछ सोनेके आभूषण, बीस सुअरिया, पांच सूअर, पांच लडाई के मुर्गे, दस लडाईवाली मुर्गिया और एक घटा मागा था।

वातुर थैची बिखरे कल्मकोको एकतावद्ध करके कल्मक साम्राज्यका सस्थापक तथा जवर्दस्त विजेता ही नहीं था, बल्कि उसकी जैसी प्रतिभा घुमन्तुओमें मुश्किलसे पाई जाती थी। अकालोंके



भयसे त्राण पाने और दूसरे अभावोको हटानेके लिये उसने अपने लोगोको स्थायी तौरसे वस जाने की प्रेरणा दी, जिसके लिये जुगारिया (कल्मक भूमि) में जगह-जगह बौद्ध विहार बनवाये। वातुर यैचीकी भारी मददसे कोकोनोरके खोसोतोके सरदार गूशी (गूथ्री) खानने तिब्बतके छोटे-छोटे राजाओं को खतम करके सारे तिब्बतको एकतावद्ध कर १६४३ ई० में पाचवे दलाई लामाको प्रदान करके लामा-राज्यकी स्थापना की। वातुर यैची १६५३ ई० में मरा।

### ३ सेङ्ग-गे, वातुर-पुत्र (१६५३-७१ ई०)

वातुरका बड़ा लड़का सेत्सेन खान या सेट्गो इरशि ऊपरी इतिश-उपत्यकामें चारण करता था। वह सेङ्गोका सलाहकार था। सेङ्गोका वापके साथ अच्छा सवध नहीं था। उसने कई बार पिताके रास्तेमें रूकावट डालनी चाही। पिताके मरनेके बाद यह कल्मकोका यैची बना, तो भी सौतेले भाइयोंसे इसका झगडा बराबर चलता रहा, जिसमें ही वह १६७१ ई० में मारा गया।

### ४ गल्दन, वातुर-पुत्र (१६७१-९७ ई०)

सेंगेके बाद उसका भाई गल्दन बोशोक्तू (वुस्तू) खान गद्दीपर बैठा। गल्दन पहले बौद्ध भिक्षु बन तिब्बतमें अध्ययनके लिये गया हुआ था। लौटकर देश आनेपर भाई सेङ्गो (सेत्सेन खान) से अनवन हो गई। दोनोंमें लड़ाई हुई, और १६७६ ई० के अन्तमें सेत्सेनको ताल्की डांडे और सेइराम झीलके पास हारकर भागना पड़ा। गन्दनका कजाको और किर्गिजोंसे भी झगडा रहा।

तिब्बतमें लूट-मार करनेके कारण गन्दनने अपने चचा शूकेरको किजिलपू सइस्सन (झील) के तटपर हराया। भिक्षुके तौरपर तिब्बतमें रहते समय इसका दलाई लामासे घनिष्ठ सवध था, इसलिये उसका प्रभाव कल्मकोपर बहुत जल्दी बढ़ा—जुगर ही नहीं खोशोत आदि दूसरे कल्मक कबीलोने भी इसकी अधीनता स्वीकार की, और १६७६ ई० में वापकी तरह इसने भी खुड्ड-यैचीकी उपाधि धारण की। इसके समय त्यान्शानके दक्षिण (पूर्वी तुर्किस्तान) के शासक खोजा (पीर) ये, जिनमें आपसमें झगडा लगा हुआ था। काले पहाडियोंका नेता काशगरका खान डस्माईल था। उसने सफेद पहाडियोंके नेता अप्पक खोजाको देशसे भगा दिया था। अप्पक खोजा पहले कश्मीर गया। औरगजेवको अपने धर्म-बन्धुकी मदद करनेकी फुर्सत नहीं थी। फिर वह तिब्बतमें दलाई लामाके पास पहुंचा। दलाई लामाने खोजाको काशगर और यारकन्द दिलानेमें मदद करनेके लिये गन्दनके पास लिखा। १६७८ ई० में गन्दनने पूर्वी तुर्किस्तानको जीतकर अप्पकको अपना उपराज बना यारकन्दमें बैठा दिया, और काशगरके खानके परिवारको ले जाकर इली-उपत्यकाके मुसलमान नगर कुल्जामें बसा दिया। तबसे जबतक (१७५५ ई० में) कि चीनियोंका पूर्वी तुर्किस्तानपर अधिकार नहीं हो गया—अर्थात् ७७ वर्षोंके लिये—एक बार फिर पूर्वी तुर्किस्तानकी प्राचीन बौद्ध-भूमि कल्मक बौद्धोंके हाथमें जा जुगर-साम्राज्यका अंग बन गई। वहाके प्रबन्धका काम गन्दनने खोजाके हाथमें दे रक्खा था, जो प्रतिमास चार लाख तका कर भेजता था। इसी समय गन्दनने तुर्फान और खामिलको भी जीत लिया, और वुस्तू खान (बोविसत्व राजा) की उपाधि धारण की, जिसे कि अबतक छिङ्ग-गिस्की सन्तान ही धारण करती थी। गन्दनने चीन-सम्राट्के पास भेंट भेजी, जिसके लिये सम्राट्ने प्रति-भेंटके साथ-साथ राजमुद्रा प्रदान की। १६८२ ई० में सम्राट् खाङ्ग-सी गन्दन (गल्दन) के पास भारी भेंट भेजते हुये उसके प्रतिद्वंद्वी खलखा राजा तुशियेतूको भी भेंट भेजना नहीं भूला। १६८८ ई० में गन्दनने खलखोंके तुशियेतू खानपर चढ़ाई की। खलखोंमें भगदड़ मच गई, और तुशियेतूकी वीवी और वच्चे भी तीन सौ आदमियोंके साथ जान लेकर भागे। गन्दनको मालूम हुआ, कि उसके भाई सेङ्ग-गेके मरवानेमें तुशियेतूका भी हाथ था, इसीलिये उसने दलाई लामाके दूतसे कहा था—“यदि मैं तुशियेतू खानसे सुलह कर लू, तो मेरे भाईके खूनका बदला कौन लेगा? मैंने निश्चय किया है, कि अपनी सारी सेनाको ले उसके साथ चार-पाच वर्षतक लड़ाई करूँ। मैं खलखोंको नष्ट करना चाहता हूँ और तबतक सतोप नहीं लूँगा, जबतक कि तुशियेतूके भाई चुपसुन तन्पा\*को हयकडियों-वेडियोंमें अपने पैरोंमें पड़ा नहीं देखूंगा।”

लेकिन अब गन्दन दूसरे झगड़े में फसा। उसका भतीजा सेङ्ग-पुत्र छेवड अर्बतन बापके सिंहासनका दावेदार था। उसने १६८९ ई० में चचाको हराया। इस लड़ाई में गन्दनके लोगोकी हालत इतनी बुरी हो गई, कि कुछने तो जीवन-रक्षाके लिये आदमीका मासतक खाया। लेकिन यह अवस्था देरतक नहीं रही। गन्दन यदि अपने पूर्वी पड़ोसी खलखोसे लोहा ले रहा था, तो साथही उसने रूसके साथ खूब मित्रता स्थापित की थी। रूसी व्यापारी बराबर उसके राज्य (जुगारिया) में जाते रहते थे। १६८८ ई० में गन्दनने दरखन (तरखन, राजकुमार) सइस्सनको दूत बना पत्र और भेटके साथ इर्कुत्स्क भेजा।

चीन चुपचाप यह कैसे देखता रहता, कि उसके अधीन खलखोसे कलमकोकी ताकत अधिक बढ़ जाये? इसीलिये वह बीचमें कूद पड़ा। रूसी अभी दूर थे, इसलिये वह अपने मित्र कलमकोकी अधिक मदद नहीं कर सकते थे। चीन-सम्राट् खाड् सीने बड़ी सैनिक तैयारी की। पहले वह स्वयं सेनाका संचालक बनकर आना चाहता था, लेकिन कहने-सुननेपर अपने बड़े भाई ऊ-हो-चे-यू चिङ्ग-वाङ्गको प्रधान सेनापति बनाया। गन्दन भी कोई ऐसा-वैसा प्रतिद्वंद्वी नहीं था। उसने चीनकी राजधानी पेकिङ्गसे अस्सी योजन (लीग) पर जाकर लड़ाई छेड़ी। उसके पास चीनके बराबर सेना नहीं थी और न तोपें ही। पहले उसके हरावलाने बहुत हानि उठानी पड़ी, लेकिन उसकी सेना दलदलके पीछे थी, जहाँ चीनी सेनाके लिये पहुँचना बहुत कठिन था। लड़ाई रात तक होती रही, और किसी निर्णयपर पहुँचे बिना ही दोनों सेनायें लौट गईं। चीनने इस शर्तपर समझौता किया, कि यदि गन्दन इस बातकी शपथ खाये, कि मैं सम्राट् और उसके मित्रोंकी भूमि-पर आक्रमण नहीं करूँगा, तो वह अपनी सेनाके साथ लौट जा सकता है।

गन्दनकी शक्तिको कमजोर करनेके लिये चीनियोंने उसके भतीजे अर्बतनको उसकाया। गन्दनका राज्य इस समय उत्तरमें केरूलोन नदीसे दक्षिणमें कोकोनोर सरोवरतक, और पूर्वमें खलखाकी सीमासे पश्चिममें किर्गिज-कजाकोकी सीमातक फैला हुआ था। चीनी इतिहासकारों के अनुसार—“वह (गन्दन) कजाको और तुर्कोंको प्रसन्न करनेके लिये अपनेको इस्लामका भक्त बताता था, और तूशियेतू खानके भाई जेचुन तन्पाके प्रतिद्वंद्वी दलाई लामाके पक्षका समर्थन करते हुये मंगोलोंके बीचमें झगड़ा पैदा किये हुये था।” गन्दनने मचू सम्राट्के भक्त कोरचिन मंगोलोंके सरदारके पास लिखा था—“हमारे लिये इससे बढ़कर अयुक्त बात क्या हो सकती है, कि जिनके ऊपर एक बार हमने शासन किया, आज उनके ही हम दास बने? हम मंगोल हैं, (बौद्ध) धर्मके नीचे एकताबद्ध हैं, इसलिये आओ हम अपनी शक्तियोंको मिलकर उस साम्राज्यको फिर प्राप्त कर लें, जो कि हमारा है, और हमें पूर्वजोंसे उत्तराधिकारमें मिला है। मैं अपने विजयके लाभ, यश और आनन्दमेंसे आपको अपना भागीदार बनाऊँगा, जो कि विपद्में भागीदार बननेके लिये तैयार है। लेकिन अगर कोई भी मंगोल राजा—और मैं समझता हूँ, कि ऐसे कोई नहीं हैं—ऐसे है, जो हमारे सबके एकसे दुश्मन मचुओका दास रहना चाहते हैं, तो सबसे पहले मेरे क्रोधके भाजन वही होंगे, चीनको जीतनेसे पहले मैं उनका सत्यानाश करके रहूँगा।”

अप्रैल १६९६ ई० में एक बहुत जबरदस्त चीनी सेनाने गन्दनके विरुद्ध प्रस्थान किया। इस सेनाके साथ जेसुइट (ईसाई) साधु गेविलोन भी था। सम्राट् खाड्-सी भी सेनाके साथ था। दरबारियोंने सम्राट्को रास्तेसे लौटनेके लिये बहुत जोर दिया, लेकिन उसका उत्तर था—“मैं यह बात बिल्कुल नहीं करूँगा। क्या मैंने अपने पूर्वजोंके सामने शपथपूर्वक अपने अभिप्रायको प्रकट नहीं किया? क्या हर एक सिपाही यह नहीं जानता, कि प्रस्थान करनेसे मेरा क्या मतलब था? क्या मेरे पूर्वजोंने खतरे और कठिनाइयोंका मुकाबिला करके सिंहासनको नहीं प्राप्त किया? शक्तिशाली वीरोंकी सतान होकर खतरेके डरसे ओरतकी तरह मैं कैसे भाग सकता हूँ? ऐसा आचरण करके मैं कौनसा मुह लेकर अपने पितरोंसे भेट कर सकूँगा?”

\* जे-चुन् तन्-पा=भट्टारक शासन(धर) उर्गाके महल्लामाकी उपाधि थी।

आगे जानेपर पता लगा, कि गन्दन तुला नदीके तटपर था, जहासे वह कैरलोन नदीके किनारे-किनारे लौट गया। चीनी मुख्य-सेना सम्राट् के नेतृत्वमें कैरलोनके किनारे-किनारे पश्चिम की ओर बढ़ती दोनों ओर मूड़लहित नक गई। लेकिन, अब आदमियोंके लिये रसद और जानवरोंके लिये चारा मिलना मुश्किल हो गया, इसलिये चीनी सेनाको मुठ्ठर तोड़रिनके उपजाऊ इलाकेमें जाना पड़ा। गन्दनका पीछा करनेके लिये पाच-छ हजार सैनिक छोड़ दिये गये थे। चीनी सेनापति चे-ताइने गन्दनको बहुत मजबूत पाया, इसलिये कुछ गोलियां दागकर वह लौट पड़ा। गन्दनने उसका पीछा किया, और यह न्याल नहीं किया, कि दूसरा सेनापति तेयेन्कू काफी सेना लेकर उसकी ताकमें है। तो भी बड़ा जबरदस्त मुकाबला किया। यदि तोपचियों और बन्दूकचियोंने गोले-गोलियोंकी वर्षा न की होती, तो गन्दन पराजित न होता। अन्तमें कल्मक पीछेकी तरफ भागे। तीस ली (८ मील) तक चीनी सैनिकोंने उनका पीछा किया। गन्दनकी रानी गोलीकी शिकार हुई। गन्दन अपनी लड़कियों, एक लड़के तथा कुछ अनुचरोंके साथ भागकर पश्चिमकी ओर चला। उसके सैनिकोंने चीनी जेनरलके पास आत्म-समर्पण किया। उसके बाद गन्दनके दूतने चीन-सम्राट् के पास पहुंचकर कहा—“जल्दी ही मेरा स्वामी भी खलखोंकी तरह साम्राजी सिंहासनके पास आ शांतिपूर्वक अधीनता स्वीकार करेगा।” खाइ-सीने चिट्ठी लिखकर गन्दनको अस्सी दिनका अवकाश दिया। लेकिन चीनी दूतोंमेंसे केवल एक गन्दनके सामने जाने पाया। उस समय गन्दन खुली जगहमें पथरोंके ढेरपर बैठा हुआ था। उसने पोची (दूत) को अपने पास आने नहीं दिया। सम्राट् की शुभेच्छाके लिये धन्यवाद दे अपनी इच्छा प्रकट करनेके लिये दूत भेजनेकी बात कही। कुछ क्षणोंकी भेंटके बाद गन्दन घोड़ेपर चढ़कर चला गया। चीनी दूतने देरतक प्रतीक्षा की। वह कुछ सैनिक कारंवाई करना चाहता था, किन्तु असफलतासे निराश और भतीजेके विद्रोहसे हताश हो गन्दनने ५ जून १६९७ ई० को आत्महत्या कर ली। कहते हैं, छ मप्ताह पहले वह सूर्योदयके समय बीमार पड़ा, और उसी रातको मर गया। यह खबर छ सप्ताह बाद चीन-दरबार को मिली।

गन्दनकी योग्यताके कायल उसके शत्रु भी थे। सम्राट् खाइ-सीने स्वयं लिखा था—

“गन्दन एक बड़ा ही दुर्बल शत्रु था। उसने समरकन्द, बुखारा, बुरुत (किर्गिज), उरगज, काश्गर, मूडरमान (? सैराम), दुफान और खामिलको मुसलमानोंसे ले लिया, और बारह सौसे अधिक नगरोपर अधिकार किया, जो बतलाता है, कि उसकी बाह कितनी लम्बी थी। सातों झंडे खलखोंने व्यर्थ ही अपने एक लाख जवानोंको जमा करके उसका विरोध किया। उन्हें तिनर-बितर करनेके लिये गन्दनके शान्ति एक वर्ष पर्याप्त था।”

यदि अपने प्रतिद्वंद्वियोंकी तरह गन्दनके पास भी बारूदके शक्तिशाली हथियार होते, या उद्योगमान मच्चू-जवितके यह आरम्भिक दिन न होते, तो कौन जानता है, उसने फिर छिद्र-गिस्का अनुसरण करते हुये चीनके उपर मंगोलोंकी विजय-ध्वजा न गाड़ी होती?

१६८१-८३ ई०में गन्दन सैरामपर आक्रमण कर रहा था। १६८३, १६८४ और १६८५ ई० में किर्गिजों और फरगानियोंके उपर उसने प्रहार किया। गन्दन प्रथम खुइ-यैची था, जिसने इलीकी उपत्यकामें चारण किया। जाटोंमें वह कभी-कभी ईर्तिशके तटपर रहता था। तुर्क जातियोंमेंसे केवल बुरुत (किर्गिज) १८ वीं सदीमें इस्मिकुलके पास विचरण करते थे। गन्दनके भतीजे छेवड-रतनने १६७८ ई० में चचाका मंगोलियामें अभियान करनेके लिये गया देखकर आक्रमण किया था।

#### ५. छेवड-रतन, सेड-गे-पुत्र (१६९७-१७२७ ई०)

छेवड आंगजेनके नामके अन्तिम दम सांशके साथ-साथ और भी बीम वर्तक मध्य-एशियाका शासक रहा। इसने अपने चचा और दादाकी सफलताओंको अनुष्ण रखते हुये अपने राज्यमें एकता स्थापित की। चीनको अपने शान्तिमें बाधक देखकर थोड़े ही समयमें छेवड भी चचाकी तरह उसका शत्रु हो गया। तो भी पहले सत्रह सालोंतक वह चीनके साथ शांतिपूर्ण बर्ताव करता रहा। १७१४ ई०में उसने चीन-अधिकृत हार्मोपर आक्रमण किया। चीनने आलक (अलताऊ) तकके इलाकेका उससे मांगा, जिसे छेवडने देनेसे इन्कार कर दिया। चीनके जैसे बलिष्ठ शत्रुका विरोध करनेसे पहले

छेवडने जरूरी समझा, कि रूसियोंको अपना प्रभु मान ले। इसी सर्वधर्मों वात करनेके लिये कल्मकोके पास इवान चेरेंदोफ १७१९ ई० में भेजा गया इससे पहले १७१७ ई० में छोटी सी नदी खर्किरपर मूजार्तके पास रहते हुये छेवडने तोबोल्स्केके रूसी राज्यपाल वेल्यानोफके पास अपना दूत भेजा था। १७२२ ई० में रूसी कप्तान उन्कोव्स्कीने इलीके दक्षिणी तटपर खुड-थैचीके शिविरमें मुलाकात की। जिम स्थानपर मुलाकात हुई, वह चारिनसे कुछ वेर्स्टपर था। उन्कोव्स्की सितम्बर १७२३ ई० तक छेवडके दरबार में उसके ओर्दूके साथ ल्यूप और जरगलानकी उपत्यकाओंमें घूमता रहा, लेकिन इसका कोई अधिक फल नहीं हुआ, क्योंकि १७२२ ई० में मन्चू-सम्राट् खाङ्-सीके मर जानेके कारण अब छेवडको चीनियोंसे उतना डर नहीं रह गया।

१७२३ ई० में कल्मकोने कजाकोपर भारी विजय प्राप्त करके सैराम, तुर्किस्तान-शहर और ताशकन्दको ले लिया। कप्तान उन्कोव्स्कीके अनुसार छेवडके पास एक लाख सैनिक थे। वह बहुत ही जनप्रिय था। वह बिना अपने सेनापतियों और सरदारोंकी सम्मतिके कोई निर्णय नहीं करता था। खुड-थैचीका सौतेला भाई छेरिङ्ग-दोण्डुव (दीर्घायु सिद्धार्थ) उसका एक बड़ा सरदार और सलाहकार था, जो कि लेप्सा और करातलाके तटपर चारण करता था। इस समय कितने ही कल्मक भी खेती करने लगे थे। खरगोशके मुहानेके नजदीक सरतो (ताजिकों) की कई बस्तिया थी। शांतिकालमें चीनियोंके साथ कल्मक व्यापार करते थे, रूसियों, तगुतों (अम्दुओं), अन्तर्वेदिओं और भारतीयोंके साथ तो वह बराबर व्यापार करते रहते थे।

१७१५-१६ ई०के जाडोमें एक कारवाके साथ म्बीडन-निवासी रेनाड कल्मकोके हाथमें पड़ गया। वह प्रायः सत्रह साल (१७३३ ई० तक) उनके देशमें रहा। उसने उन्हें युरोपकी कितनी ही बातें सिखलाई, और उनके बारेमें भी जानकारी प्राप्त की। कल्मक-भूमिकी स्थिति और विचार के बारेमें उसने लिखा है — (१) सप्तनदका (अलाताउ), तेकुशचिख नदी तथा बलखाशकी तटभूमि, (२) उत्तरमें इलीसे कोकताल और कोकतेरेकके बीच अलतिन-एमेल और कोइबिनके बीचकी भूमि, (३) उत्तरमें केगेनेके किनारेसे और चारिनसे पूर्वमें केतनेन पहाडतक, (४) ऊपरी चिलिक-उपत्यका और उसकी पासकी भूमि, (५) ल्यूपाके तटसे इस्सिककुलके दक्षिणी तट तक पश्चिमी छोरसे उत्तरमें कोइसू और अक्सूके बीच तक, (६) महाकेबिन-उपत्यका चूके मगम कराताल तक।

चचाके साथ विरोधका कारण एक यह भी बतलाया जाता है, कि उसे पश्चिमी जुगारियामें अधिकार न देकर उसके भतीजेको नियुक्त किया गया था, तथा त्यान्शानके पासवाले नगरोंमें भी उसे कुछ अधिकार-वंचित किया गया। १६९६ ई० में अर्वतन (रब्-तन) \* के पांच सौ सैनिक तुर्फानमें थे। खामिल और आसपासका शासक उस समय अब्दुल्ला तरखनबेग था। १६९७ ई० में अब्दुल्लाने चीनसम्राट्से यह कहकर मदद मागी, कि खुड-थैची हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहता है। अर्वतनने उसके ऊपर दोषारोप किया, कि अब्दुल्ला कल्मकोंकी सीमाके भीतर घुसकर गन्दनके पुत्र छेरुतन पल्जोर † (सेप्तेन बल्जुर) तथा दूसरे जुगरोको भी पकड़ ले गया, और हमारे दूतोंको रोके रक्खा। चीनने अब्दुल्लासे माग की, कि गन्दनके पुत्रको दिखलाओ और हमारे दूत तथा वेदियोंको तुर्फान लौटा दो। अब्दुल्लाने कैदियोंको चीन भेज दिया, जिनमेंसे सत्तर आदमियोंको वहा जेलमें डाल दिया गया।

रब्-तन कैसे पसन्द करता कि चचाके समयसे उसके करद लोग चीनकी छत्रछायामें चले जाय ? बहुतसे छोटे-छोटे राजाओंने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। अर्वतनने तत्मीलाको हराया, जिसमें उसे चेरें सल्लुप (छेरिङ्ग मम्डुव) गन्दन-पुत्र, चोनसी हाई (गन्दन-पुत्री), गन्दनकी स्त्री कुलीन और गन्दनकी चिताभस्म भी मिली। चीन-सम्राट् देख रहा था, कि छेवड फिर चचाकी तरह जुगरोको एकताबद्ध करनेमें सफल हो रहा है। उसने रब्-तनको रोकना चाहा, और पहले रब्-तन को विजयमें प्राप्त वस्तुओंको अपने पास भेजनेके लिये लिखा। रब्-तनका जवाब था:—  
“लडाई अब समाप्त हो गई, इसलिये घावोंको भूल जाना चाहिये। हमें पराजितोंपर दया करना

\* रब्-तन=प्रशासन (तिब्बती)

† महाशासन श्रियोगी (तिब्बती)

चाहिये । उन्हें नष्ट करनेका ख्याल बर्बरोचित होगा, मानवताका यह प्रथम विधान है, जिसे कि एलियोतो (ओइरोतो) ने मदा पवित्र मानकर पाला है ।” खतनने गन्दनके लडके और पत्नीको भेज दिया, लेकिन लडकीके वारेमे कहा—‘ओइरोतोमे कायदा नहीं है, कि अपने शत्रुओकी लडकीमे बदला ले । और गन्दनकी चिताभस्ममे सम्राट्के विजयमे कोई वृद्धि नहीं होगी ।’ इसके बाद चीनने कई दूत आते-जाते रहे । बहुत दबाव पडनेपर उसने गन्दनकी चिताभस्म और उसकी पुत्रीको चीन भेज दिया । सम्राट्ने भी अपने पुराने शत्रुकी सतानके साथ बड़ी उदारता दिखलाई, और दोनों बहिन-भाइयोको क्षमा कर दरबारमे उन्हें ऊंचे पद दिये ।

अपने पश्चिमी पड़ोसियो किर्गिज-कजाकोके साथ खतनने भयकर युद्ध जारी रखा । १६८८ ई० के अपने एक पत्रमे खतनने सम्राट् खाइ-सीको लिखा था, कि कैसे गन्दनने तबक्कल तुर्कके पुत्रको पकडकर दलाई लामाके पास भेज दिया था । लेकिन मैने उसके वापकी प्रार्थनापर पाच सौ आदमियोके साथ उसे लौटा दिया, और केवल पाच सौ कृतघ्नोंको ही मारा । लेकिन ये कृतघ्न मेरे प्रदेश हुलीजन हानपर चढ़ाई करके सौ परिवारोको पकड ले गये । मेरे समुद्र आयुका खानने मेरी ब्रावीको मेरे साले सन्तिसत-चापूके साथ जब मेरे पास भेजा, तो तबक्कलने उन्हें पकड़नेकी कोशिश की । उसने रुससे लौटते वक्त हमारे कारवाको भी लूटना चाहा । खतनके पास कजाकोके खिलाफ कार्रवाई करनेके कई कारण हो सकते थे, लेकिन सबसे बड़ा कारण था चचाकी तरह उसकी राज्य-विस्तारकी अभिलाषा । उसने किर्गिज-कजाकोके मव्य-ओर्दूके बहुत बड़े भागको अपने अधीन कर लिया, और डस्सिक्कुल-मरोवरके पास रहनेवाले बुलतो (काले किर्गिजों) को भी जीत लिया ।

उस समय तिब्बतका गद्दीचारी (छठा दलाई लामा) उसके चचा गन्दनका आदमी था । खोगोत ल्हचन खानने उसे मार भगाया और तिब्बतमे जुगरोके प्रभावको खतम कर दिया । ल्हचनकी सफलतामे अब तिब्बतमे चीनके प्रभावके जमनेकी संभावना हो गई । इसपर खतनने कोकोनोरके पासवाले खोगोत मंगोलोंसे मिलकर दो सेनाये भेजी, जिनमेमे एक सीनिङ्ग-फू शहर पर पड़ी, जहापर कि दलाई लामा नजरबन्द था, और दूसरी सेना पोतलाके विरुद्ध गई । पहली सेना को सफलता नहीं प्राप्त हुई, लेकिन दूसरीने जाकर ल्हासाको ले लिया । ल्हचन खानने पोतला-प्रासादमे शरण ली, लेकिन उसे पकडकर मार डाला गया । तिब्बतके बहुतमे नगर और गांव उजाड़ दिये गये, मंदिर लूट लिये गये, स्वयं दलाई लामाके महल (पोतला) मे बहुत मालोंसे जमा होती सम्पत्तिको भी जुगरोने लूट लिया । कितने ही विरोधी लामा थैलोमे बन्द करके उटोपर लादकर जुगारिया भेज दिये गये । तिब्बतकी मददके लिये आती एक सेनाको एक दुर्गम डांडेपर जुगरोने मारकर भगा दिया । १७१७ ई० या १७२२ ई० मे जुगरोकी सेनाने तिब्बतमें आकर जो ध्वंसीला की थी, उसके चिह्नस्वरूप अब भी मव्य-तिब्बतमे बहुतसे उजड़े हुये गावोंकी दीवारें बड़ी मिलती हैं, जिनकी जुड़ाई और दूसरी स्थितिके देखनेमे पता लगता है, कि जुगरोके इस भयकर प्रवाहके बाद फिर तिब्बतकी वास्तुकला अपनी पूर्व-स्थितिमें नहीं पहुची । चचा गन्दनने जहा तिब्बतकी समृद्धि बढ़ानेकी कोशिश की, वहा उसके भतीजे खतनने उसके नाजमे हाथ बटाया ।

खतनकी यह कार्रवाई चीनको पसन्द नहीं थी । दो साल बाद चीनने उसे दंड देनेके लिये सेना भेजी, लेकिन वह उसके हाथमे केवल तुफानको ही छीन पाई । इससे पहिले १७१७ ई० मे करासर नदीतक चीनी सेना पहुची थी, जहापर उसे कलमकोंमे हारना पडा । १७१९ ई० मे एक दूसरी चीनी सेनाने साइसन सरोवर तक घावा मारा । सम्राट् खाइ-सीके शाननकालके अन्त (१७२३ ई०) तक चीन और जुगरोका संघर्ष जारी रहा । उसके उत्तराधिकारी युद्ध-चेन (शी-चुद्ध १७२३-३५ ई०) ने मोघे लड़ाईमे भाग लेनेकी जगह अपनी सेनाको हटाकर रेगिस्तानी कबीलोको आपसमे लड़नेके लिये छोड़ दिया ।

खतनके शासनके अधिक समयतक पूर्वी तुर्किस्तानपर उसका बैसा ही प्रभुत्व रहा । एक बार वहाके मुसलमानोंने विद्रोह किया, जिसपर बड़ी सन्ध्यामे जुगर-सेना यारबन्द पहुची, जिसका माय काठे-महाडी नेता खांजा दानियलने भी दिया । काश्गरियोंको नगरका द्वार खोलनेके लिये मजबूर होना पडा । लोगोंके मनोनीत हाकिमवेगको कलमकोंने भी अपना हाकिमवेग बनाया, और

वह काशगरके खोजा अहमद तथा अपने सहयोगी दानियल खोजाको उनके परिवारोको बन्दी बनाकर इली ले गये । १७२० ई०में रब्तनने दानियलको छ नगरोका शासक बनाकर भेजा । दानियलने अपने लिये एक लाख तका कर निश्चित किया, जब कि अप्पकके लिये हजार तका मिलना निश्चित था ।

रब्तन जुगर-वशका सबसे शक्तिशाली राजा था । उसकी प्रजा उसे बहुत पसन्द करती थी, क्योंकि उसका बर्ताव उनके साथ बहुत अच्छा था । दलाई लामाने उसे "एर्देनी सूरिकतू वआतुर खुड-यैशी" की उपाधि प्रदान की थी ।

रूसी अठारहवीं सदीके शुरूमें साइबेरियाके एक छोरसे दूसरे छोरतक पहुच गये थे । मध्य-एशियाके भी कितने ही खान उनकी अधीनता स्वीकार किये हुये थे, इसलिये इस देशके बाग्यमें उनको बहुत-सी झूठी-सच्ची खबरें मिली थी । किसीने उन्हें बतलाया था, कि पूर्वी तुर्किस्तानमें सोनकी खाने हैं । इसपर १७१४ ई०में साइबेरियाके रूसी राज्यपाल राजुल गगरिनने खुड-यैचीके पास इस प्रदेशको लेनेके लिये इतिशसे यारकन्दतक किला बनानेका प्रस्ताव किया । साथ ही तोवोल्स्कमें वहासे आई सोनेकी कुछ धूल भी भेजी । जारने इस कामके लिये इवान बुखोल्जको भेजा, जो २९३२ सेनाके साथ जुलाई १७१५ ई०में तोवोल्स्कसे ताराके रास्ते रवाना हुआ, और इतिशसे साढ़े छ वेर्स् (१ फर्सख) पर अवस्थित यामीशकी नमकवाली झीलपर पहुचा । इस झील तथा इतिशके बीचमें एक छोटी-सी मीठे जलकी झील प्रयाज्जोये ओजेरो थी, जिससे एक छोटी नदी प्रयाज्जुखा निकलकर इतिशमें गिरती थी । इसी नदीके मुहके पास कुछ ऊंची भूमिपर रूसी यामीशेफका मिट्टीका छोटा-पा किला बनाने लगे । इसकी खबर पाकर, रब्तनके भाई छेरिड दोडुवने आक्रमण किया, और रसदके कारवाको भी लूट लिया । रूसियोंके पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र थे, तो भी उन्हें बहुत हानि उठानी पड़ी । उनके पास जब सात सौ आदमी रह गये, तो वह किला तोडकर उत्तरकी ओर लौट गये । तारासे दो सौ सतहत्तर वेर्स् (१३ फर्सख) पर ओव नदीके मुहानेपर उन्होंने ओम्स्कया-क्रेपोस्त नामक किला बनाया । उसी साल १७१६ ई०में बुखोल्जको बुला मगाया गया, और पीतर I ने मरिगोरोफकी मातहत दूसरा अभियान यामीसेफको लेनेके लिये भेजा । पीतर I इस योजनामें विशेष तौरसे दिलचस्पी रखता था । १७१७ ई० में स्तूपिनकी अधीनतामें दूसरा अभियान भेजा गया । उसने यामीशेफमें पहुचकर बाकायदा एक मजबूत किला तैयार किया । १७१८ ई० के वसन्तमें विलियनोफने रब्तनके पास पहुचकर उसे पीतरका पत्र किया । रब्तनने धमकी देते हुए किला तोड देनेके लिये कहा । किलेके तोडनेकी बात तो दूर रही, स्तूपिनने १६१८ ई०में यामीशेफसे भी दो सौ अट्ठाईस वेर्स् (३४ फर्सख) आगे इतिशपर एक नया किला सेमीप्लातिन्स्क (सप्तप्रासाद) बनाया । यह किला एक बौद्ध विहारके ध्वसपर बना, जिसकी नींव खोदते समय बहुतसे तिब्बती हस्तलेख मिले थे, जो युरोपमें जानेवाले सबसे पहले तिब्बती हस्तलेख थे ।

पीतरको गति मन्द मालूम हुई, इसलिये १७१९ ई०के आरम्भमें उसने इस कामकी देख-भालके लिये जेनरल लिखारेफको नियुक्त किया, जो भारी सख्यामें अफसरोंको लेकर मई १७२० ई० में तोवोल्स्क पहुचा, फिर सेमीप्लातिन्स्क होते ४४० आदिमयोके साथ नावोपर सैसन झीलकी ओर बढ़ा । रूसियोंकी इस गतिविधिसे कल्मकोंकी सदेह होना स्वाभाविक था । रब्तनके पुत्र और उत्तराधिकारी गन्दन छेरिडके नेतृत्वमें बीस हजार कल्मक प्रतिरोधके लिये जमा हुये । दोनों पक्षोंकी मख्यामें बहुत अन्तर था, लेकिन रूसी आधुनिक हथियारोंसे सज्जित थे । उनके पास बहुतसी छोटी-छोटी तोपें थीं, जब कि कल्मकोंके पास सिर्फ तलवार और तीर-धनुष थे । तीन दिनकी लड़ाईमें एक रूसी मरा और तीन घायल हुये, जब कि कल्मकोंकी भारी क्षति हुई । अन्तमें दोनोंमें समझौता हो गया । सेमीप्लातिन्स्कसे १८१ वेर्स् (३० फर्सख) पर एक झीलके पास ऊंची जगहपर लिखारेफने उस्तका-मेन्नेगोर्स्कया नामका किला बनाया । लेकिन, यारकन्द की सोनेकी भूमिमें पहुचनेका यह प्रयत्न यही खतम हो गया । पीतर I के बाद फिर किसीको उसके लिये दिलचस्पी नहीं हुई ।

**शासन-व्यवस्था**—रूसी दूत उन्कोस्कीने १७२२ ई०में कल्मकोंकी शासन-व्यवस्थाको देखा था । उसने लिखा है, कि खुड-यैची (महाराजा) के बाद सबडे बड़ा दर्जा मडस्सनका था, जिन पदपर उस समय राजकुमार छेरिड दोण्डु था । इसके बाद एक परिपद् (सर्गा) थी, जिसके सदस्य

वे—महम्मद, समुद्र व आतुर, शरातज्जिन, सद्-जी फुनछोक, सोद्बो, वतुमसी, जिम्बिल, सनजक, वसुन, ववमीगिर तथा पारिपल्क नमिष्का तर्बन जारक्तू और खुद्दनीना मचिव सोलम्दकर्ना। इसके देखनेमें मालूम होगा, कि कल्मकोंके ऊपरी वासन-यत्रमें बहुमस्यक मुसद्मान प्रजाका कोई आदमी नहीं था।

उज्ज—पिछले नीम वर्षोंमें जुंगारियामें खनीमें बहुत प्रगति हुई थी। मदाके घुमन्तू ये मंगोल अपने एक हूण पूर्वजकी तरह अब खेतीकी महिमा अनुभव करने लगे थे। अकालोंने वतला दिया, कि ऐसे समयमें अधिक समयतक जमा रखे जा सकनेवाले अनाज ही अधिक सहायक होते हैं। उस समय भी यहाँ गेहूँ, जौ, चावल और बाजरा प्रधान फसलें थीं। फलोंमें मेव, लाल-सफेद अंगूर, खूबानी, तरबूजा-खरबूजा, बड़े कुम्हड़े आदि होते थे। अल्मा-अता (सेवका बाप) के नाममें प्रसिद्ध आजका नगर इसी भूमिमें है, जहाँके मेव अच्छे होते थे। इली और चूकी उपत्यकायें बहुत पहलें ही कृषि और वाणवाजी में प्रधानता रखती थी, इमें हम शकोंके कालमें भी देख चुके हैं।

ग्राम्य पशुओंमें घोंडा, ऊट, बैल, बड़ी भेड़ें, बकरियाँ और बच्चर मुख्य थे, जो अभी भी कल्मकोंके सबसे बड़े धन थे, क्योंकि किसानों-जीवनकी अपेक्षा अभी भी वह पशुपालोंके जीवनसे अधिक प्रेम रखते थे।

दम्नकारियोंमें उनी कपड़े और चमड़ेका काम कल्मक जानते थे, जिनमें पिछले दो शताब्दियोंके शासनमें बाहरके दस्तकारोंने आकर अधिक उन्नति करई। कल्मकोंकी भूमिमें लोहा-तावा प्रचुर परिमाणमें मिलता था,। यहाँकी ताँबे और सोनेकी खानोंमें तो नव-साम्राज्यमें भी काम होता था, यह हम वतला आए हैं। अब लडाइयामें तोरी और बालूही हथियारोंमें मालूम हो गया था, कि उनके तीर-धनुष आजकलके हथियारोंके नामने बेकार हैं, और कुछ सी रूसी-कसाक वीस हजार कल्मक बहादुरोंको बाम-मूलीकी तरह काटके रख सकते हैं, इसलिये वह लोहेकी उपजकी ओर भी विशेष ध्यान देने लगे थे। वस्तुतः कल्मक यदि मध्य-एशियामें माइवेरियामें विबनलन् पामीरके पर्वतों, तथा आमू और कास्पियनतक पहुँचकर भी वहाँपर अपना एक स्थायी साम्राज्य नहीं स्थापित कर सके, तो उसका कारण यही था, कि वह उन तरहके हथियार नहीं तैयार कर सकते थे, जैसे कि रूसियों और चीनियोंके पास थे। उन्होंने अगर लोहेके बनानेकी ओर ध्यान भी दिया, तो वह भी कुटीर-धनुषके तीरपर ही उपजको मगठिन करके। कल्मकोंका साम्राज्य घुमन्तुओं का अन्तिम साम्राज्य था, जिसे और सब योग्यता रहनेपर भी निर्बल हथियारोंके कारण सफलता नहीं प्राप्त हुई। रस्तन और गन्दन दोनोंने अपने लोगोंको पशुपालन-युगमें कृषि-युगमें ला रखनेकी कोशिश की, लेकिन वह अपने समसामयिकोंकी तरह लोह-युगमें नहीं आ सके।

वहते हैं, उनकी जुगर-मेनाने तिब्बतमें लामाओं और मठोंके साथ जो अत्याचार किये थे, उसीके कारण किनने ही लोग असंतुष्ट हो गये थे, और रस्तन उन्हें पड़्यत्रका शिकार हो १७२७ ई०में मारा गया।

## ६. गल्दन (गन्दन) II छेरिद्र, रस्तन-पुत्र (१७२७-४५ ई०)

रस्तनके बाद उसका पुत्र गल्दन (गन्दन) छेरिद्र गद्दीपर बैठा। इसके समयमें भी कई रूसी राजदूत आये, जिनमें एन्ग्रिडमोफ उसके साथ-साथ १७३२-३३ ई०में जहाँ-तहाँ घूमता रहा। अप्रैल और मईमें छेरिद्रका जाँदू निम्न इली उपत्यकामें कोजिनरमें था। मईके अन्तमें सारी गर्मियोंमें वह तेमिरशान, चेंगेन, करकर और तेकेममें घूमता रहा। सितम्बरमें मार्चके अन्ततक सारे जाडोंमें वह इली तटपर रहा। छेरिद्रकी भी खखला-भगोशमें लड़ाई जारी रही, लेकिन दलाई लामाने अपने दोनों धर्मानुयायियोंमें इस खून-खराबीको पसन्द नहीं किया, और १७३४ ई०में उनके बीचमें पड़नेमें लड़ाई बन्द हो गई। छेरिद्रने मन्चू-साम्राट् चियन-लुङ्ग (काउ-चुङ्ग १७३५-३५ ई०) की अवीनता स्वीकार की, यह जुगर-साम्राज्यके लिये अच्छा ही हुआ। १७४५ ई०में छेरिद्रके मरनेके साथ जुगर-साम्राज्यकी समृद्धिका समय खतम हो गया।

### ७. बायन बीजिगन, अदसान खान, छेरिङ-पुत्र (१७४५ ई०)

बायन १७३३ ई० में पैदा हुआ था, और अभी बारह ही सालका था, जब कि उसे बापकी गद्दी मिली। इस अवस्थामे भी वह भारी अत्याचारी, जिससे जनतामे अप्रिय हो गया, इसका कोई अर्थ नहीं है। हा, उसका चचा दोर्जे (दर्गा) लामा गद्दीका अभिलाषी था, लेकिन रखेलीका पुत्र होनेके कारण उसे वचित कर दिया गया था। दोर्जेको बुखारा और किर्गिजोके इलाकोमे बड़ी जागीर मिली थी। उसने सरदारोको मिलाकर पड़्यत्र किया और बायनको पकडकर उसकी आखे निकलवा पूर्वी तुर्किस्तान (सिङ्क्याङ) के एक नगरमे कैद कर दिया। सभी सैन्य (राजकुमार) तथा बहुतसे जुगर तथा लामा दोर्जेके साथ थे।

### ८. छेवङ दोर्जे, दरशा लामा, गन्दन छेरिङ-पुत्र (१७४५-५० ई०)

दोर्जे लामाके गद्दीपर बैठनेसे तिब्बतके दलाई लामा भी बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने इसे “एरदेनी लामा वातुर खुङ-थैची” की पदवी प्रदान की। दोर्जे लामाकी वातुरी (बहादुरी) थी अपने वशके सभी राजकुमारोको मारकर सिंहासनके सारे खतरोको खतम कर देना। वैसे जुगर राजवशमे वृद्धापके लक्षण पहले हीसे दिखलाई पडने लगे थे, लेकिन दोर्जेने राज्यके सर्वनाशकी घडीको जल्दी लानेमे बहुत काम किया।

### ९. दावा छेरिङ, सेङ-गे-वंशज (१७५०-५५ ई०)

जुगर राजाओके नाम प्राय सभी तिब्बती भाषाके बौद्ध हैं। दावा छेरिङका अर्थ है, ‘चन्द्र दीर्घायु’। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि आजकलकी तरह उस समय भी खलखा, जुगर (कल्मक) और दूसरे मंगोल बौद्ध-धर्मको अपना जातीय धर्म मानने लगे थे, और तिब्बतके महन्तराज दलाई लामा का इनके ऊपर बहुत प्रभाव था।

दावा रत्ननके भाईका पोता था। अधिकांश जुगरोने दोर्जे लामाको नहीं माना था। रत्ननके वशको दोर्जेने मारकर खतम कर दिया था, लेकिन उसके भाई छेरिङ दोण्डुकी सताने अभी मौजूद थी। दावाने तिब्बत आदिके अभियानोमें सेनाका सचालन किया था, इसलिये अपनेको गद्दीके योग्य समझता था। खोयेत कवीलेके सरदार अमुरसनाने भी दावाके पक्षका समर्थन किया, लेकिन दोर्जे लामा बहुत मजबूत था। उससे हारकर दावा और अमुरमानको कजाओके भीतर भागना पडा, लेकिन जुगरोमे उनके समर्थक कम नहीं थे। जुगरो और कजाओकी मददसे अचानक एक रातको दावाने हमला कर दिया। लडाईमे दोर्जे लामा मारा गया, और दावाने गद्दी सभाल ली। अमुरसना अपनी दूसरी ही योजनाये रखता था। वह गर्मियोमे इली-तटपर तम्बुओ और राजकीय झंडेको गाडकर दरवार करता। दावा एक म्यानमे दो तलवारोको कैसे पसन्द करता? उसके आक्रमण करनेपर अमुरसना चीन भाग गया, और कुछ समयके लिये दावा सारी जुगारिया और पूर्वी तुर्किस्तानका भी खान हो गया। दावाने छेरिङ द्वारा नियुक्त काशगरके शासकको इली प्रदेशमे रहनेके लिये मजबूर किया, लेकिन वह बहाना बनाकर काशगर पहुच वहा लडाईकी तैयारी करने लगा। उधर काशगरी नेता यूतुफने काफिरोका जूवा उतार फेकनेके लिये लोगोको उस्काया—“इलाकेके नगरद्वारोपर वाजे बजे, और अपने देशकी स्वतंत्रताको फिरसे प्राप्त करनेके निश्चयके लिये लोगोने शपथ खाई।” खोजा यूतुफ एक कट्टर मुसलमान था। उसने लोगोके सामने सुझाव रक्खा, कि नगरके पडोसमे डेरा डालकर पडे हुये तीन सौ कल्मक व्यापारियोको मुसलमान बना लेना चाहिये। अगर वह इन्कार करे, तो उन्हे मार डालना चाहिये। उन्होने उनके साथ ऐसा ही किया, और कसाकान (पुलिन अन्तार) के तौर पर काम करनेवाले जुगरोको खानके पास भेज दिया। यारकन्दमे कल्मकोकी तरफने नियुक्त शासक हाजीवेगने आखोमे आसू और सिरपर कुरान रखकर क्षमा मागी, और लोगोने उमे क्षमादान दे दिया। जब लोगोने उसे जुगरोके दूत और अनुचरोको मार डालनेकी बात कही, तो उसने जवाब दिया—“काफिरको सिर्फ युद्धमे मारा जा सकता है।” एक मजबूत पहरमे कल्मकोको शहरने बाहर



भेजकर उसने हुक्म दिया, कि तुम फिर इस देशमें न आना। खोजा यूसुफने अन्तर्वेदके नगरों—खोकन्द, बुखारा, समरकन्द आदि—से काशगरियाके स्वतंत्र होनेकी खबर देते हुए सहायता मागी, अन्दिजानके किंगिज सरदार किवत मिर्जासि भी मुसलमानोंकी सहायता करनेके लिये कहा।

दावामे हाकर भागा अमुरसना चीन-दरवारमें पहुँचा था। उसने अपनेको सिंहासनका वास्तविक अधिकारी प्रमाणित किया। सम्राट्ने उसे च्वाङ्-चिन्-वाङ् (प्रथम श्रेणीके राजकुमार)की उपाधि प्रदान कर लफ्टनेन्ट-जेनरल (उपमहासेनापति) नियुक्त किया। १७५५ ई०में चीनी सेना लेकर अमुरसना प्रस्थान किया। सेनाको मुश्किलमें कहीं धनुष खींचनेकी अवश्यता पड़ी होगी। सभी जगह लोग अधीनता स्वीकार करनेके लिये तैयार थे। दावा अपने तीन सौ अनुचरोंके साथ मुजार्त डांडेसे होकर उश-तुर्फानकी ओर भागा, लेकिन शहरके हाकिम हाजिमवेगने उसे पकड़कर चीनियोंके हाथमें दे दिया, जिसके लिये हाजिमवेगको “वाङ्” (राजकुमार) की उपाधि प्राप्त हुई।

### १०. अमुरसना, बातुर-वगज (१७५५-५७)

दावाके गद्दीपर बैठनेके समय भी अमुरसना अपनेको कल्मकोका राजा समझता था। १७३४ ई० में वह कजाकोंकी मददसे, एमिल और ऊपरी इर्तिशकी भूमिको लेनेमें सफल हुआ था।

चीनी सेनाके साथ आकर अमुरसनाने समझा, कि जुगारियाको जीतकर चीनी उसे सारा अधिकार सौंप देंगे। लेकिन उसकी यह आशा सफल नहीं हुई। दावा और छेरिडको पकड़कर पेकिंग भेज दिया गया था। अमुरसनाको पता लगा, कि उसके साथ भी मन्चू-सम्राट् मेरे ही जैसा वर्तव कर रहा है। असलमें चीनने दावाको अपने हाथमें एक बड़ा हथियार बनाकर रख छोड़ा था, जिसमें कि अमुरसनाके जरा भी विरोध प्रकट करनेपर उसे इस्तेमाल किया जाय। लेकिन दावा बहुत दिनोत्तक नहीं जिया। हाथसे निकल गये पूर्वी तुर्किस्तानको अमुरसनाने फिरसे लेना चाहा और थोड़ेमें सघपके बाद उसके कितनेही भागोंको फिर अपने हाथमें कर लिया। चीनी अमुरसनाको कठपुतली बनाकर रखना चाहते थे। इसका विरोध करते इलीमें पड़ी हुई छोटी-सी चीनी सेना और उसके जेनरलको अमुरसनाने मार डाला। इसपर चीनसे नई सेना आई। एकाध बार झड़प हुई। अमुरसनाने देख लिया, कि उसके लिये चीनी सेनाका सामना करना आमान नहीं है। १७५७ ई०में—जिस सालमें अग्नेजोने पलासीकी लड़ाई जीतकर भारतमें अपने राज्यकी दृढ़ नींव रक्खी—दो चीनी सेनाओंने आकर जुगर-माम्राज्यको खतम कर दिया। इनमेंसे एक उत्तरके रास्ते आई, और दूसरी दक्षिणके रास्ते। कल्मकोमें उस वक्त आपसमें भारी फूट थी, तो भी अमुरसना हिम्मत करके इलीकी ओर बढ़ा। लोगोंको बड़ी मर्यामें अपने झंटेके नीचे आते देखकर उसे बहुत उत्साह मिला, लेकिन जब चीनकी अपार सेनाको देखा, तो उसके होश उड़ गये, और वह कजाकोंकी ओर भागा। जेनरल चाङ्-होङ्ने कुछ सैनिकोंको पीछा करनेके लिये छोड़ जुगारियापर चीनी शासनको व्यवस्थापित करना शुरू किया। दूसरा चीनी सेनापति फूत्ते अमुरसनाका पीछा करते हुये कजाकोमें पहुँचा। कजाकोंने चीनकी अधीनता स्वीकार की। कजाक-खान अवले उसे पकड़कर चीनको देना चाहता था, इसलिये अमुरसना बहासे लोचा (सावेरिया)की ओर भागा। एक बार चीन-सम्राट्को दरबारियोंने कहा—“इली प्रान्तको त्रिल्कुल छोड़ दिया जाय। हमसे यह बहुत दूर है। वहाँ जाकर शासन करना आसान नहीं है, इसलिये जिसकी इच्छा हो वह उमें ले ले।” चीन-सम्राट्ने इस सलाहको नहीं माना, और चाङ्-होङ् तथा फूत्तेको युद्ध जारी रखते शासनको दृढ़ करनेका हुक्म दिया। अमुरसना अन्तमें साइ-वेरियामें कुछ समयतक मारा-मारा फिरा, लेकिन इस आफतसे चेचकने उसे जल्दी ही (१७५७ ई०)में छुटकारा दे दिया। हम बनला आये हैं, कि अमुरसना और उसके अनुयायियोंको साइवेरियामें शरण देनेके कारण हम और चीनके सबवमें खिचाव पैदा हो गया था। जब रुमियोंने कहा, कि अमुरसना मर गया, तो चीनने उसके शवको मांगा, शव न होनेपर चिताभस्मको भेजनेके लिये कहा। रुमियोंने चीनी अमात्यको अमुरसनाके चिताभस्मको दिखला दिया, किन्तु उमें अपमानपूर्वक बिखेरनेके लिये देनेमें इन्कार कर दिया—“हम एक जानिके अपने रीति-स्वाज होते हैं, जिन्हें वह पवित्र मानती है। जिस जगह व्यक्तिने हमारे पाम शरण ली, वह तुम्हारा दुश्मन मर चुका है। हमने उसके शरीर-”

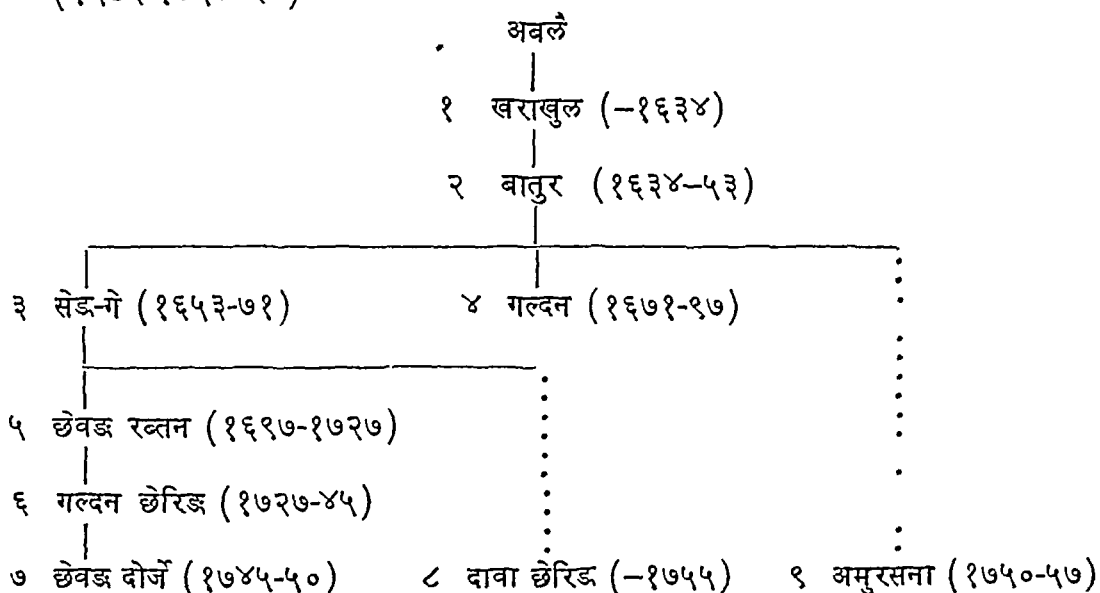
वशेषको दिखला दिया, इससे अधिक हम कुछ नहीं कर सकते।” इसकी भूमिमें पहुँचनेसे पहलेही अमुरसनाकी वीवी वीतेइ—जो गन्दन छेरिङ्की पुत्री भी थी—पतिसे आ मिली थी। पतिके मरनेके बाद उसे पीतरवुर्ग भेज दिया गया।

मचू सैनिकोंने बड़ी निष्ठुरतापूर्वक कलमकोका सहार किया। उनके अत्याचारोंके कारण इन्की सुन्दर उपत्यका उजड़ गई, जहाँ चीनियोंने अपने कैदियोंके लिये कालापानी स्थापित किया। पाँच लाखके करीब ओइरोत (कलमक) चीनियोंके हाथों मारे गये। उनका तहस-नहस करनेके बाद चीनी सेनाने आगे भी अपनी दिग्विजय जारी रखी। १७५६-५८ और १७६० ई०में चीनी सेना कजाकोके मध्य-आर्द्रकी भूमिमें घुसी। अवलै खानने चीनियोंके सामने अधीनता स्वीकार की। उसके बाद लघु-ओर्दूके सरदार नूरअलीने भी चीनियोंको अपना प्रभु माना। बूरत (किर्गिज) सरदारोंने भी उनके सामने सिर झुकाया। १७६६ ई०में चीनने अवलैको वाङ्ग (राजा)की उपाधि दी। अब मध्य-एशियामे सब जगह चीनियोंकी जय-झुझुकी वजने लगी। नूरअलीने भेटके साथ अपने दूतमडलको पेकिंग भेजा। खोकन्दके खान एदेनिया बीने भी १७५८ ई०में वही काम किया।

जुङ्गर-साम्राज्यके विच्छिन्न होने और चीनियोंद्वारा पाँच लाख कलमकोंके मारे जानेपर जनशून्य सप्तनद भूमिमें फिर कजाक और किर्गिज लौट आये, और कुछ समयतक वह चीनकी प्रजा बने रहे। पीछे सप्तनदका बहुत भाग रूसियोंने ले लिया, और सिर्फ ऊपरी इली-अपत्यका चीनके भीतर बनी रही।

३ (६ ख जुङ्गर-वंशवृक्ष)

(१५८२-१७५७ ई०)



### स्रोत ग्रन्थ

- १ ओचेर्क इस्तोरिड सेमिरेच्या (व व बर्तोल्द)
- २ History of Mongol (H. H. Howorth)

## वोल्गा-कल्मक

(१६१६-१७७१ ई०)

हम कह आये हैं कि कैसे १६२० ई०में कल्मकोंने खलखा मंगोलोके हाथों भयकर हार खाई, और उन्हे पश्चिमकी ओर भागनेके लिये मजबूर होना पडा। उन्हीका एक भाग नोगाइयोकी भूमि होते पश्चिमकी ओर बढा। इनके नेता उर्लुक (तोर्गुत राजा), और उसके पुत्र दै-शिङ्गने १६३३ ई०में नोगाई-विद्रोही सल्तानियासे मिलकर कन्हाईपर चढाई की, जिसपर मास्कोने तोवोल्स्क, त्यूमन और तुराके रूसी कमाडरोको कल्मकोंके दवानेके लिये हुक्म दिया। इस प्रकार कल्मकोंको साइबेरियासे हटना पडा। यही उर्लुक वोल्गा-कल्मको या तोर्गुत-मंगोलोंका प्रथम शासक था। वोल्गाके कल्मकोंकी राजावली निम्न प्रकार है —

- १ खुदु थैची उर्लुक, सुलसेगा-पुत्र
- २ दै-शिङ्ग, उर्लुक-पुत्र
- ३ फुन्-छोग्, दै-शिङ्ग-पुत्र
- ४ आयुका, फुन्-छोग्-पुत्र
- ५ छेरिङ्ग-दोण्डुव्, आयुका-पुत्र
- ६ दोण्डुव् अम्ब्रो, आयुका-पुत्र
- ७ दोण्डुव् थैची, छग्दोर-पुत्र
- ८ उवासा, दोण्डुव् थैची-पुत्र

१६१६-४३ ई०  
१६४३-५६ "  
—१६७२ "  
१६७२-१७२४ "  
१७२४-३५ "  
१७३५-४१ "  
१७४१-६१ "  
१७६१-७१ "

१ खुदु थैची उर्लुक (१६१६-४३) ई०

वोल्गा-कल्मक राजवशका वास्तविक सस्थापक सुलमेगा उर्लुकका ज्येष्ठपुत्र खुदु-थैशी (थैची) उर्लुक था। १५६२ ई०में अलतन खानके भतीजेके लडके खुतकताई सेसेनने एचिश (इतिश) नदीके तट पर चार ओइरोत (कल्मक) कबीलोंको करारी हार दी, जिसके कारण तोर्गुतोकी शक्ति क्षीण हो गई, और जुगरो (कल्मको) की ताकत बढने लगी। १६०६ ई०में जुगरोंका बडा सरदार वातुर वापसे अलग हो इतिशपर चला आया। यहापर उसका मुकाबिला तोर्गुतोके साथ हुआ, जिसके कारण तोर्गुतोको पश्चिमकी ओर भागना पडा। पहले उन्होंने कूचुम खानके बेटोके साथ मिलकर साइबेरियामे अपनी जड जमानी चाही, लेकिन रूसियोंने उनकी एक भी नहीं चलने दी। फिर कल्मक अरब मुहम्मदके समय ख्वारेज्मके इलाकेकी ओर बढे, और उनका जव-तब ख्वारेज्मी उज्बेकोंके साथ झगडा होता रहा—इसके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। १६३२ ई०में वह अपने थैची उर्लुककी अधीनतामें अस्त्राखानके आसपासमें रहते रूसी प्रतिनिधिका स्वागत करते रहे। १६३९ ई०में तोर्गुतोने मगिदालकके तुर्कमानोंको लूटा। १६४३ ई०में उर्लुकके अधीन पचास हजार किवित्का (तम्बू, परिवार) थे। १६४३ ई०में उर्लुकके खतरेको समझकर रूसियोंने हमला किया, और वह लडाईमें मारा गया। उर्लुकके तीन पुत्र थे—दैशिङ्ग, येल्विङ्ग और लोन्जङ्ग। बापके मरनेपर भाइयोंमें भी झगडा हो गया।

२ दै-शिङ्ग, उर्लुक-पुत्र (१६४३-५६ ई०)

उर्लुकके मरनेके बाद उसके लोग पूरवकी ओर भागे, लेकिन कुछ ही समय बाद एल्देर और लोन्जाद यायिक (उराल) नदी पार हो वोल्गाके मैदानोंमें चले आये। उन्होंने तीन

कबीलो—किताई-किपचक, मैलेवाश और एतीसनको अपने आधीन किया, साथ ही उलान-नुमान (लाल ऊट कबीला) के तुर्कमानों ने भी इनकी अधीनता स्वीकार की, जो कि उस समय येम्बाके दक्षिण में रहते थे । अब नोगाइयों का अधिक भाग कल्मकों की प्रजा था । १६५६ ई० में ही दै-शिङ्ग और उसके पुत्र फुन-छोगने जारको अपना प्रभु स्वीकार किया ।

### ३ फुन-छोग्, दै-शिङ्ग-पुत्र (—१६७२ ई०)

इसके बारे में इतना ही मालूम है, कि १६७० ई० में अधिकांश वोल्गा-कल्मक इसके अधीन थे और वह ख्वारेज्म के भीतर तक लूट-मार किया करते थे ।

### ४ आयुका थैची, फुन-छोग्-पुत्र (१६७२—१७२४ ई०)

वोल्गा-कल्मकों का यह सबसे अधिक शक्तिशाली राजा था । पीतर का समकालीन रहते हुए इतनी शक्ति सच्य करना इसकी दूरदर्शिता और राजनीतिक चातुरी का परिचायक है ।

१६७२ ई० में यह प्रतापी तोर्गुत (कल्मक) राजा आयुका गद्दी पर बैठा । उसके समय लघु-ओर्दू के नोगाई तथा पहाड़ी चिरकासी क्रिमिया के खान के अधीन थे । आयुकाने उन्हें क्रिमिया के अधिकार से छीन लिया, साथ ही नोगाइयों के दूसरे दो ओर्दू कसाई और येदिसनको भी अपने यहाँ जामिन भजने के लिये मजबूर किया । आयुका जानता था, कि अपने पड़ोसी मुसलमान कबीलों की शत्रुता मोल लेने के साथ-साथ रूस से भी बिगाड़ करना अच्छा नहीं होगा, इसी लिये उसने २६ फरवरी १६३९ ई० में अस्त्राखान में जाकर रूसियों को अधीनता स्वीकार करने का वचन दिया । लेकिन तब भी उसका वर्ताव बहुत स्वतंत्रता पूर्वक होता था । रूसी डरते थे, कि तोर्गुतों के अतिरिक्त, नोगाइयों के भिन्न-भिन्न ओर्दू भी लूट-मार में आयुका के साथ सम्मिलित हो सकते हैं, इस लिये उन्होंने अधिकतर साम और दान से ही आयुका पर अकुश रखना चाहा । आयुकाने १६९३ ई० में रूसियों की ओर से जाकर बारिंको को जीता । आयुका का डेरा अधिकतर कुवनस्तेपी के करातेपे स्थान में रहा करता था । महानोगाई के थोड़े से लोगों को छोड़कर बाकी सभी नोगाई आयुका के अधीन थे, और उनमें से अधिकांश ने यायिक और वोल्गा की स्तेपियों को छोड़ कुवान और कुमामें डेरा डाला था—महानोगाई अब भी अस्त्राखान के आसपास रहा करते थे । १७२४ ई० में आयुका के मरने के समय तक नोगाइयों की यही हालत थी । नोगाइयों के तम्बू मुर्गियों के बड़े टोकरों की तरह होते थे, जिनमें नीचे गोल ढाचा होता, जिसे बीच में घुआ निकलने के लिये छेद छोड़कर ऊट के वालों के नम्दे से छा दिया जाता । कच्चे चमड़े के टुकड़ों को भी कभी-कभी नम्दे की जगह इस्तेमाल किया जाता था ।

१६१३ ई० में आयुकाने छग़दोर को अपना युवराज घोषित किया । १७२२ ई० में जब पीतर I ईरान के विरुद्ध अभियान लेकर गया था, तो उसने अपने जहाज पर आयुका और उसकी पत्नी का सत्कार-सम्मान एक स्वतंत्र राजा के तौर पर किया । १७२४ ई० में मरने के समय आयुका ८३ वर्ष का था ।

### ५ छेरिङ्ग दोण्डुब्, आयुका-पुत्र (१७२४—३५ ई०, १७४१—६५ ई०)

आयुका के बाद घर्मपाल-पुत्र छेरिङ्ग गद्दी पर बैठा । यह बहुत ही कमजोर स्वभाव का आदमी था । रूसियों की कृपा प्राप्त करने के लिये ईसाई बनकर इसने अपने लोगों की सहानुभूति खो दी ।

१७३५ ई० में यह मर गया ।

### ६ दोण्डुब् अम्बो, आयुका-पुत्र (१७३५—४१ ई०) और

### ७ दोण्डुब् थैची छग़दोर-पुत्र (१७४१—६१ ई०)

इनके समय कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी ।

## ८ उवासा, दोण्डुव् थैची-पुत्र (१७६१-७१ ई०)

यह एक लाख कलमक-परिवारोंका राजा था। तुर्की युद्धोंमें इसके नेतृत्वमें कलमक बड़ी बहादुरीके साथ रूसियोंकी ओरसे लड़े थे, लेकिन उनके बदलेमें रूसियोंका वर्ताव इत्ना देखकर इसने पचास वर्षसे चले आते “स्वदेश चलो”के आन्दोलनका समर्थन किया और वोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार तम्बुओंकी छोड़कर वाकी कलमक इसके नेतृत्वमें डली उपत्यकाकी ओर चले गये।

कलमकोंका भागना—१७०३ ई०में आयुका खान और जुगर थैची छेवद्र-रत्नसे लड़ाई हुई। वर्तमान कजाकस्तानके पूर्वी भागके स्वामी जुगर थे, और पश्चिमी भागके तोर्गुत (वोल्गा-कलमक)। दोनोंकी सीमा मिलती थी, इसलिये इस तरहकी लड़ाई स्वाभाविक थी। वोल्गाके कलमक भी उसी तरहके कट्टर बौद्ध थे, जिस तरह उनके भाई जुगर। वह तिब्बत तथा ल्हासाको अपनी धर्म-भूमि समझकर तीर्थयात्राके लिये जाया करते थे। आयुकाका भाजा या भतीजा करा-कुचिन छेरिद्र अपनी माके साथ तीर्थयात्राके लिये तिब्बत गया हुआ था। लड़ाईके कारण देश लौटनेका रास्ता न मिलनेसे वह चीन चला गया। चीन-दरबारमें उसका बड़ा स्वागत हुआ। इस समय मचुओका सबसे अधिक प्रभावशाली सम्राट् खाद-सी (१६६१-१७२३ ई०)का शासन था। सम्राट्ने राजकुमार कराकुचिनको उसके अनुयायियोंके साथ शेन्शी प्रदेशके पश्चिमी सीमान्तपर बसा दिया। इसी बीचमें सम्राट्ने निश्चय किया, कि वोल्गाके तटपर भागे हुये मंगोलो (तोर्गुतो)को फिर देशमें बुलाया जाय। कराकुचिनसे बढकर इस कामके योग्य और कौन हो सकता था? नौ साल रहनेके बाद १७१२ ई०में सम्राट्के दूतके साथ वह वोल्गातटपर लौटा। उसने अपने लोगोंके सामने जन्मभूमिमें लौट चलनेका प्रस्ताव रक्खा। यद्यपि इसी समय वह लौटनेके लिये तैयार नहीं हुये, लेकिन यह आन्दोलन कलमकोंके भीतर चलता रहा। चीन इस काममें तिब्बतके लामाओंसे भी सहायता लेने लगा। अन्तमें वोल्गाके तोर्गुत ओर्दूका मुख्य लामा लोब्जाड जाजेर अरन्त शिम्बा जैसा योग्य व्यक्ति चीनको इस कामके लिये मिल गया। वह राजकुमार वम्बरका पुत्र था जिसका तोर्गुतोपर उसका बहुत प्रभाव था। पन्द्रह भिक्षु और साथ ही एक टुलू (अवतारी) लामा (जिसके शरीरमें किमी बड़े महापुरुषने अवतार वारण किया) के साथ उसने अपने आदमियोंमें बाह्य-वर्मियों (रूसियों) के देशसे स्वर्णियोंके देश और अपने पूर्वजोंकी जन्मभूमिमें लौट चलनेके लिये प्रचार करना शुरू किया। इस समय आयुकाका पुत्र उवासा तोर्गुतोका खान था। उसने १७६९-७० ई०के तुर्की-युद्धमें रूसकी ओरसे अपने तीस हजार आदमियोंके साथ भाग ले अपनी बहादुरीका परिचय दिया था, और तुर्कोंको कई जगहोंमें करारी हार दी थी। इन सफलताओंके कारण उवासाका आत्मविश्वास और बढ गया था, और वह हर बातमें रूसियोंकी नाजबंदारी करनेके लिये तैयार नहीं था। जब रूसियोंने दवानेकी कोशिश की, तो स्वदेश लौटनेकी बातको जोर मिलने लगा। उस समय अस्त्राखानमें रूसी राज्यपाल प्रिस्तोफ किशिन्स्की था। उसको भनक लग गई, कि तोर्गुत चले जानेकी तैयारीमें हैं, लेकिन उसने उन्हें समझाने-बुझानेकी जगह कड़े शब्दोंका इस्तेमाल किया—“तुम अपनेको समझते हो, कि हम बहुत भाग्यशाली होकर अपना काम-काज करेंगे, लेकिन तुमको समझ रखना चाहिये, कि तुम जजोरमें बचे भालूमें अधिक कुछ नहीं हो। जजोर पकडकर तुम्हें जहा ले जाया जाये, वही जा सकते हो।” तोर्गुतोको सचमुच ही एक घेरेमें डाल रक्खा गया था। उनके पूर्वमें यायिक नदीकी उपत्यकामें कितने ही रूसी किठे थे, जिनमें कसाक सैनिक थे। पीतर I के वादके रूसी जारोंके जर्मन होनेका एक फल यह हुआ था, कि बहुत काफी सख्यामें जर्मनोंको लाकर वोल्गाके दाहिने तटपर बसा दिया गया था। यह जर्मन-उपनिवेश तोर्गुतोके उत्तरमें पड़ते थे। पश्चिममें क्रिमियाके तारतारोंकी चोट भी कलमकोंको ही वर्दाश्त करनी पड़ी थी। पिछले सालोंमें कुछ अकाल भी पड गया था, इन सब कारणोंसे ‘स्वदेश चलो’ आन्दोलनको बड़ी मदद मिली। वोल्गाके दाहिने तटके देव्रैत कबीलेने इस योजनाको पसन्द नहीं किया, और प्रयाणके लिये जो दिन निश्चित हुआ था, उस दिन वोल्गाके न जमनेका बहाना करके उन्होंने साथ नहीं दिया। सारी तैयारी इधर हो रही थी, लेकिन प्रिस्तोफ जैसे अयोग्य शासकके कारण रूसियोंने उन्हें रोकनेके लिये

कोई तैयारी नहीं की। कल्मकोके पास दो रूसी तोपें भी थी, जिनको वह पूर्वकी ओर जाते समय अपने कजाक विरोधियोंके विरुद्ध इस्तेमाल कर सकते थे। यह मालूम ही है, कि १७५७ ई०के विजयके बाद त्यान्शान-सप्तनद चीनियोंके हाथमें था, इसलिये तोर्गुतोको सीमान्ततक पहुंचनेकी ही दिक्कत थी। आगेके लिये उन्हें बहुत-बहुत-से प्रलोभन दिये गये थे।

बड़े लामाने ५ जनवरी १७७१ ई०को प्रयाणका दिन निश्चित किया था। उसी दिन उबासा सत्तर हजार परिवारोंके साथ चल पड़ा। उस समय अधिकांश कल्मक बोल्गाके बायें तटके मैदानोंमें जमा थे। सब उबासाके पीछे-पीछे चलने लगे, केवल बोल्गाके दक्षिण तटके पन्द्रह हजार परिवार रूसमें रह गये। यह पन्द्रह हजार परिवार १९४१ ई० तक सख्यामें कई लाख हो गये थे, और उनका एक स्वायत्त प्रजातंत्र भी स्थापित हो गया था, लेकिन जर्मनोंके प्रहारके कारण द्वितीय युद्धके समय इन्हें बोल्गातट छोड़कर पूर्वमें अपने पूर्वजोंकी भूमिमें जानेके लिये मजबूर होना पड़ा, जहासे वह फिर लौटकर नहीं आये। द्वितीय विश्वयुद्धने इस भूभागमें जो परिवर्तन किये, उनसे बोल्गाके जर्मन-उपनिवेश सारे रूसमें बिखर गया, और क्रिमियाके तारतार साइबेरियाकी ओर चले गये।

तोर्गुत (कल्मक) हल्की चीजे ही अपने साथ ले जा रहे थे। जब आगे यात्राकी कठिनाइया मालूम हुईं, तो उन्होंने रूसी ताबेके सिक्कोंको भी फेंक दिया, जिन्हें वर्षों बाद पाया गया। तोर्गुतोको कजाकोंकी भूमिमेंसे जाना था, जो उनके पुराने दुश्मन थे और जो हर जगह लूट-मार करनेकी कोशिश करते थे। कल्मकोंने स्त्री-वच्चों और अपने पशुओंको बीचमें रक्खा था। चारों ओर हथियारबन्द पुरुष प्रतिरक्षाके लिये तैयार होकर चलते थे। उबासा स्वयं पन्द्रह हजार आदमियोंके साथ यायिकके किनारे पहुंचा, जिसमें कि रूसी कसाकोंसे अपने लोगोंकी रक्षा कर सके। आठ दिनमें तोर्गुत बोल्गासे यायिकके स्तेपीमें पहुंचे। उस समय यायिकके कसाक (रूसी) कास्पियनमें मछली मारने गये हुये थे, इसलिये तोर्गुत असानीसे यायिक पार कर गये। फिर किर्गिजोंकी भूमिमें बर्फपर चलना पड़ा। अभी नदी पार करके बहुत दूर नहीं गये थे, कि मित्रासोफकी अधीनतामें दो हजार कसाकोंने उनका पीछा किया, और वह येका-जुखोरके एक हजार तम्बुओंको लौटानेमें सफल हुये। आगे कल्मकोंकी कठिनाइया और बढ़ी। बर्फ पिघलनेके कारण कीचड़में घोंडो, ऊटो, पशुओंका चलना मुश्किल था, ऊपरसे घास-चारेकी कमीके कारण वह बहुत दुर्बल होने लगे। गरीब लोगोंको पैदल चलना पड़ता था, जब कि धनी मंगोल सवारियोंपर चल रहे थे। इस विषमताने भी लोगोंके हृदय में जलन पैदा की। लेकिन जैसे भी हो, अब तो उनके लिये आगे बढ़नेके सिवा और कोई रास्ता नहीं था। दो मासकी यात्राके बाद वह इर्गिच नदी पार हुये। अब उनकी यात्रा सबसे कठिन थी। वसन्तके कारण बर्फ पिघलनेसे सभी नदी-नाले भरे हुये थे, जिन्हें पार करनेके लिये उन्होंने नरकटके मुट्ठोंको बांधकर तैरते पुल तैयार किये थे। इर्गिच और तुरगाई नदियोंके बीचमें तोर्गुतोके सबसे अधिक आदमी मरे। तुरगाई पार होकर उन्होंने दोनों तोपोंको छोड़ दिया। इसी समय रूसी सेनाके साथ जेनरल त्राउबेन्वर्ग ओस्कसे चला, किर्गिज-कजाक लघु-ओर्दूका खान नूरअली भी कल्मकोंके पीछे पड़ा। वह तुरगाईसे आगे होकर उन्हें रोकना चाहते थे, लेकिन तोर्गुत दस दिन पहले ही आगे जा चुके थे। उन्होंने दूत भेजकर कल्मकोंको लौटनेके लिये कहा, लेकिन कल्मकोंने आगे जानेका निश्चय नहीं छोड़ा। इशिम नदीके तटपर पहुंचनेपर उनकी अवस्था कुछ बेहतर हुई, लेकिन यहापर किर्गिज-कजाकोंसे दो बार संघर्ष हुआ। अब कगरवेइन, शर्ग-उसुनकी १५० वेस्त (२५ फर्सख) चौड़ी स्तेपी जैसी भयंकर भूमि मिली, जिसमें वह तीन दिन चले। यहां पीले रंगका दुस्स्वादु पानी मिला। प्याससे मजबूर होकर उन्होंने उसे पिया, जिसके कारण बीमार होकर कई सौ आदमी मर गये। इस स्तेपीको पार करते ही नूर अली (लघु-ओर्दू) और अबलाई (मध्य-ओर्दू) के कजाकोंने आक्रमण कर दिया। दो दिनतक भयंकर लड़ाई हुई। इसके बाद तोर्गुत वलखासके किनारे पहुंचे, जहां फिर कजाकोंसे युद्ध हुये। आठ महीनेकी भयंकर यात्राके बाद १७७१ ई०के मध्यमें इली नदीसे नातिदूर चरापेन स्थानमें वह चीनी सीमाके भीतर घुसे। एक रूसी इतिहासकारने लिखा है—“इस प्रकार आधुनिक

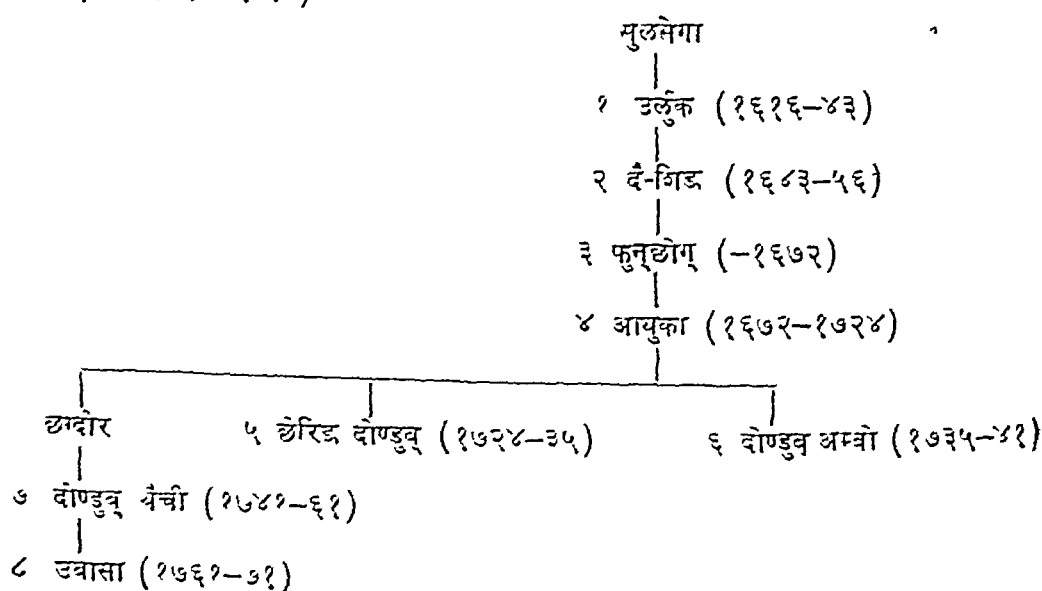
कालकी एक अन्यन्त असाधारण प्रवास-यात्रा समाप्त हुई, इसी साम्राज्य एकाएक एक ऐसी योद्धा जातिसे वंचित हो गया, जिसका जीवन कास्पियन नदीकी स्टेपीके त्रिभुज अनुकूल था, और जिसे घूमन्तू हजारों परिवारोंने अपने असंख्य पशुओंका चारण करके आनाद रखा था, लेकिन अब वह बहुत बर्षोंके लिये निर्जन हो गया।

चीनकी ओरसे उनके स्वागतकी भारी तैयारी की गई थी। एक सालके खाने-कपड़ेका इति-जाम था। चीनने उन्हें इलीपर वसानेका प्रवन्ध किया था, जहाँ खेती और पशुचारणके लिये बहुतसी जमीन पड़ी हुई थी और जिसे १४ ही साल पहले उनके जुगर भाइयोंने खाली कर दिया था। खाने-कपड़ेके अतिरिक्त बहुतसी नरुद चादी भी कन्मकोंको चीनने दी। चीन-साम्राट्ने इस यात्राके स्मारक के तीरपर तोर्गुतोंकी नई भूमिमें इली-तटपर चार भाषाओंमें अभिलेख लिखकर पत्थरपर खुदवाया, जिसके कुछ वाक्य हैं—“यदि वह अपनी इच्छाओंको सीमित रख सके, तो किसी को सुख होनेकी आवश्यकता नहीं, किसीको डरनेकी आवश्यकता नहीं, यदि वह अपनेको ठीक समयपर रोक सकता है। ये भाव हैं, जिन्होंने कि मुझे इस काममें लगाया। आकाशके नीचे सभी जगहोंमें समुद्रसे पार दूरतम कोनोंमें ऐसे आदमी हैं, जो कि दास या प्रजाके नामपर आज्ञा पालन करते हैं। क्या मैं यह मान लूँ, कि वह सब मेरे अधीन हैं, और वह मेरे करद हैं ? यह गलत बात होगी। मैं अपने मनमें यही समझता हूँ, जो कि विलकुल सच है, कि तोर्गुत लोग बिना मेरी ओरसे दबाव डाले अपने आप अपने मेरे कानूनोंके अधीन रहनेके लिये चले आये हैं। निःसंदेह दैवने उन्हें ऐसा करनेकी प्रेरणा दी। उन्होंने ऐसा करके दैवी आज्ञाका पालन किया। मेरे लिये यह ठीक नहीं होगा, यदि इस घटनाका एक प्रामाणिक रूपसे स्मारक तैयार न करूँ।”

वोल्गातटसे चले सत्तर हजार परिवारोंमेंसे केवल पच्चीस हजार परिवार (तीन लाख व्यक्ति) इलीके तटपर पहुँच पाये थे। इनमेंसे कितने ही इली-उपत्यकामें बस गये, और कितने ही जाकर गोबीके पश्चिमी भागमें रहने लगे।

### ३ (७ वोल्गा-कल्मक-बसायूक्ष)

(१६१६-१७७१ ई०)



स्रोत ग्रन्थ

१ History of Mongol (H. H. Howorth)

## कजाक-ओर्दू

( १७१८-१८१२ ई० )

१८ वी सदीमें जिस तरह किपचको (जू-छि-उलुस) का एक भाग मध्य-ओर्दू, महाओर्दू और लघु-ओर्दूके रूपमें बंट गया, इसके बारेमें हम कह चुके हैं। इन्हीं तीनों ओर्दूओसे वर्तमान कजाक जातिका विकास हुआ।

### क. मध्य-ओर्दू (१७१८-१८१८ ई०)

श्वेत-ओर्दू जू-छिके दूसरे पुत्र ओर्दाका उलुस था, इसे हम बतला आये हैं। सुवर्ण-ओर्दूके प्रभुत्व के समय श्वेत-ओर्दू उसके अधीन रहा, लेकिन बा-तू-वशके उच्छेदके बाद श्वेत-ओर्दूके खानोंने प्रधानता प्राप्त की। इसी श्वेत-ओर्दूकी एक शाखा मध्य-ओर्दू था, जिससे इसके खान भी जू-छिके पुत्र ओर्दासे अपना मवध जोड़ते हैं। श्वेत-ओर्दूको विच्छिन्न करनेमें नोगाइयोका भी खास हाथ था, यह भी हम बतला चुके हैं। मध्य-ओर्दूका प्रथम खान पुलाद (बुलात) श्वेत-ओर्दूका सीधा उत्तराधिकारी था, जिसके वशके मुख्य खान निम्न प्रकार हुये—

१ पुलाद, बुलात, शेमीअका खान	१७१८-३४ ई०
२ अबुल मोहम्मद, पुलाद-पुत्र	१७३४-४८ ,,
३ अबलइ, शिगाईवशज	१७४८-८१ ,,
४ वली, अबलइ-पुत्र	१७८१-१८१८ ,,

### १ पुलाद, बुलात, शेमीअका खान (१७१८-३४ ई०)

श्वेत-ओर्दूकी शक्तिको चूर्ण करनेमें काफी हाथ जुगर-कल्मकोका था। पुलादके समय इसका ओर्दू अपने चरम उत्कर्षपर पहुँचा हुआ था। जुगरोने मध्य-ओर्दूके कजाकोको उनकी अपनी भूमिसे भगा दिया। कजाको (उज्वेक-कजाको) को केवल सप्तनद ही छोड़कर नहीं भागना पड़ा, बल्कि १७२३ ई० में जुगरोने कजाक खानोंकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको भी दखल कर लिया, जहापर कि उनके कितने ही खानोंकी समाधिया बनी थीं। जुगरोने ताशकन्द और सैरामको भी लेकर मध्य-ओर्दूको बहुत क्षीण हालतमें छोड़ा। उनमेंसे अधिकांश कजाक समरकन्दकी ओर भागे, महा-ओर्दू तथा मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर और लघु-ओर्दू बुखारा और खीवाकी तरफ शरण लेने गया। अभागे भगोड़ोका अकाल और महामारीने पीछा किया। इस तरहकी भारी आफतने पड़नेपर उज्वेक-कजाकोने कुछ समयके लिये अपने भीतरी वरको भुला दिया, और एक बड़ी सभामें जमा होकर उन्होंने अपनी पितृभूमिको काफ़िरोसे मुक्त करनेका निश्चय करते हुये लघु-ओर्दूके सरदार अबुलखैरको अपना प्रधान सेनापति बनाया, और अपनी शपथको पक्का करनेके लिये हूणोंके समयसे चली आती प्रथाके अनुसार एक सफेद घोड़ेकी कुर्वानी की। कुछ लड़ाइयोंमें सफलता जरूर मिली, लेकिन जुगर धैची गन्दन छेरिङ्गने उन्हें हराकर भयकर बदला लिया। कजाकोने अब पितृभूमिका ख्याल छोड़कर भागनेमें ही कल्याण समझा। लघु-ओर्दूने पश्चिमकी ओर वोला-कल्मको (तोग्तो) को भगाते जाकर येम्बा तथा यायिक (उराल)की उपत्यकाओंमें विचरण करना शुरू किया। मध्य-ओर्दूने उत्तरकी ओर भागकर पहले ओरी और उई नदियोंकी उपत्यकाओंमें जा वहाँसे वाशिकरोको भारी





## २. अबुल् मुहम्मद, पुलाद-पुत्र (१७३४-४८ ई०)

शेमीअका (पुलाद)खानके मरनेके बाद मध्य-ओर्दूके अबुल् मुहम्मद और उसके बाद अवलइ खान हुये। किसी-किसीके मतमें अबुल् मुहम्मद पुलाद खानका पुत्र था। इस समय किरिलोफकी जगह तातिश्चेफ १७३० ई०में ओरेनबुर्गका राज्यपाल था। उसने अबुल् और अवलइ दोनोंको ओरेनबुर्गमें बुलाया। स्वयं न आकर उन्होंने अगस्त १७३८ ई०में सदेश भेजा, कि हम बहुत दूर इतिशके किनारे हैं, इसलिये अगले साल आकर राजभक्तिकी शपथ लेंगे।

लेकिन यह भी बात उन्होंने पूरी नहीं की। इसी बीचमें १७३९ ई०के आरम्भमें राजुल उरुसोफ ओरेनबुर्गका राज्यपाल होकर आया। मध्य-ओर्दूका अभीतक कोई पक्का खान नहीं चुना गया था, लेकिन अबुल् मुहम्मद उसका सबसे बड़ा प्रभावशाली नेता था। लघु-ओर्दूका खान अबुल्खैर दावा करता था, कि वह हमारे अधीन है। इसके कारण दोनोंमें झगडा खडा हो गया। १७४० ई०में अबुल् मुहम्मद, अवलइ सुल्तान और दूसरे कितने ही सरदारों और साधारण कजाक मुखियोंके साथ ओरेनबुर्ग पहुँचा। राजुल उरुसोफने उसका उसी तरह सम्मान किया, जैसा कि अबुल्खैरके साथ किया था। उन्होंने राजभक्तिका पत्र अर्पित किया, जिसे एक दुभाषियेने पढा। इसके बाद अबुल् मुहम्मद और अवलइने, एक जरदोजीके खडपर घुटने टेककर शपथ ली, कुरानको अपने माथेपर लगाया, और शपथपत्रकी मुहरको सिरसे छू कुरानको चूमा। पासके ही तम्बूमें मध्य-ओर्दूके १२८ अमीरोंने उसी तरह जारके प्रति शपथ ली। रस्मकी समाप्ति होनेपर तोपें दागी गईं, और अन्तमें भोज हुआ। वहाके सेनापतिने दूसरे दिन भेट करते समय मध्य-ओर्दूके नेताओंसे कहा, कि अपने देशसे गुजरते समय रूसी कारवाकी रक्षा करना, और मूलरके कारवाकी जो वस्तुएँ महा-ओर्दूने लूट ली हैं, उन्हें लौटवानेका प्रयत्न करना। उसने कजाको और वोल्गा-कल्मकोंके साथ शांति स्थापन करनेकी कोशिश की। लेकिन यदि लूटके मालको लौटाना या लूट-मार बन्द करना हो सकता, तो वह कजाक ही क्यों होते? जिस समय यह कार्रवाई हो रही थी, उसी समय ओरेनबुर्गमें अबुल्खैरके दो पुत्र नूरअली और एरअली मौजूद थे, लेकिन उनको डर लगा, कि अबुल् मुहम्मद कहीं रूसियोंसे चुगली करके हमें कैद न करा दे, इसलिये वह जल्दी-जल्दी वहासे चले गये।

१७४१ ई० में वाश्किर विद्रोहियोंके नेता कराशकाल (काली दाढी) ने भागकर कजाकोमें पनाह ली, और उसने मध्य-ओर्दूकी एक टोलीको लेकर जुगरोको लूटा। जुगर उनका पीछा करते आ रहे थे, कि रास्तेमें कजाकोके डेरोको पा उन्होंने उन्हें लूट लिया। राजुल उरुसोफने जुगर-राजा और रूसके बीचमें हुई सुलहका हवाला देकर ऐसा न करनेके लिये कहा। इसपर जुगरो ने जवाब दिया—“हम नहीं जानते, कि कजाक रूसी प्रजा हैं।” अबुल् मुहम्मदने देशमें जुगरोसे प्रतिरक्षार्थ एक मजबूत किला बनानेके लिये रूसियोंको लिखा। उधर कजाकोका आक्रमण जुगारियाकी सीमान्तपर जारी रहा। १७४१ ई०में जुगर-राजा गल्दन छेरिडने मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूको दड देनेके लिये दो सेनायें भेजी, जिन्होंने अवलइको बंदी बनाकर अपने साथ ले जानेमें सफलता पाई। अवलइ रूसी प्रजा था, इसलिये उसे छुड़ानेके लिये रूससे १७४२ ई०में मेजर मूलरको जुगरोके पास भेजा गया। मुहम्मदने भी दूतमंडलके साथ अपने पुत्रको जामिनके तौरपर भेजा। रूसियोंको यह बात पसन्द नहीं आई, कि हमारी प्रजा होते हुये कजाक कल्मकोसे सीधे बातचीत करे। कजाकोने जुगरोसे बहुत कहा, कि अब हम लूट-मार नहीं होने देंगे, लेकिन जुगर कजाकोके स्वभावसे अच्छी तरह परिचित थे, इसलिये वह जामिन रखनेपर जोर देते रहे। अबुल् मुहम्मदको अपने लोगोपर नियंत्रण रखनेके लिये सावधान किया गया, और मामला उस समयके लिये सुवर गया।

अबुल् मुहम्मद यद्यपि अधिकांश कजाकोके लिये मध्य-ओर्दूका खान था, लेकिन उनकी भारी सहायता तुरसुनखान-पुत्र वुराकको अपना खान मानती थी, जिसने भी इसी समय रूसियोंके जारके प्रति राजभक्तिकी शपथ ली थी। १७४३ ई०में उसने अपना दूतमंडल भेज साधारण सदेशवाहक द्वारा पत्र और सुनहरी समूरी खाल भेजी, जिसे लौटानेपर उसने रूखासा जवाब दिया। उधर मेजर मूलरके प्रयत्नसे १७४२ ई०में जुगरोंने अवलेई सुल्तानको छोड दिया था।

१७४४ ई०में जुगरोने साइबेरियामें रूसी सीमाके पास शक्ति प्रदर्शन किया। अबुल्-मुहम्मद और उसके लोग तुर्किस्तानकी ओर खिन्क गये, और उन्होंने गन्दन छेरिङ्के साथ घनिष्ठ मित्रता करनी चाही—अबुल् मुहम्मदका लडका अब भी गन्दनके पाम जामिनके तौरपर था। अबुल् मुहम्मदको आशा थी, कि इस तरह वह गन्दनमें मध्य-ओर्दूकी पुरानी राजधानी तुर्किस्तान-शहरको पा लेगा। लेकिन उसका प्रतिद्वंद्वी वुराक सुल्तान भी अपने पुत्रको जुगरोके पास जामिन दे मध्य-ओर्दूको अपनी ओर करनेकी चेष्टा कर रहा था। इस्लाम और बौद्ध धर्मको लेकर कजाको और जुगरोका झगडा बहुत पुराना था, जिसके कारण यदि रूसियों और जगरो (कलमको) में लडाई छिडती, तो कजाक जरूर रूसियोंकी ओर हो जाते। खैर, रूसी सीमान्तके पास प्रदर्शन करके ही जुगर लौट गये, और लडाई नहीं हा पाई। इस शांतिमें लाभ उठाकर दो सालके बाद फिर मध्य-ओर्दू रूसी सीमान्तपर पहुँचा, और अबुल् मुहम्मद तथा वुराक दोनों पुन जार-भक्तिकी शपथ ली। १७४६ ई०में जुगर आक्रमण करके कजाकोके बहुत-से घाँडे छीन ले गये। यह वही साल था, जिस साल कि जुगर-राजा गन्दन छेरिङ मरा।

१७४८ ई०में वुराकने लघु-ओर्दूके खान अबुल्खैरको हराया। पीछे रूसी प्रजा करा-कल्पकोंको लूटा। जिसके लिये रूसी दंड देते, इसलिये डरके मारे पूर्वकी ओर बढ़ वुराकने ईकान, ओतरार और सिगनकपर अधिकार कर वहा डेरा डाला। अगले साल एक खोजके साथ-रहते वुराक और उसके दो पुत्रोंको जहर खिलाकर मार डाला गया। शायद अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीने पिताकी हत्याकी शिकायत जुगरोमें की। इस समय (१८वीं सदीके मध्यमें) मध्य-ओर्दू के अधिकांश सुल्तानों और सरदारोंने जुगरोके यहा अपने जामिन दे रखे, ये, इसीलिये जुगर मध्य-ओर्दूको अपनी प्रजा मानते थे। इसी समय अबुल् मुहम्मद तुर्किस्तानकी ओर गया, जहापर वह अपनी मृत्युके समयतक रहा।

### ३ अवलङ्ग, शिगाई-वशज (१७४८-८१ ई०)

अबुल् मुहम्मदके दक्षिणकी ओर, चले जानेपर मध्य-ओर्दूके कुछ सरदारोंने मृत वुराकखान के भाई सुल्तान कूचुकको अपना खान चुना, लेकिन रूसियोंने उसे स्वीकार नहीं किया। इस पर वह जुगरोकी ओर झुके। शिगाई खानके वशज अवलङ्गी दूसरी ही नीति थी। उसका कबीला अधिकतर रूसी सीमाके पास रहता था, इसलिये वह रूसियोंका अधिक पक्षपाती था—खासकरके तबसे, जब कि मध्य-ओर्दूने १७५१ ई०में उलुक्तागमें जुगरोसे करारी हार खाई। १७५४ ई०में उनके ऊपर जुगरोका इतना अधिक दबाव था, कि बहुत-से अमीरोंने रूसियोंसे आना मागी, कि हमारे बीबी-बच्चोंको अपने यहा शरण दो, और सीमान्तपर जमीन दो, तो हम खेती करके अपने गांव वसा लेंगे। इसपर कितने ही कजाकोको उइस्कुके पास बस जानेकी इजाजत मिली, और उचित जामिन दे देनेपर कितनी हीको हटकर रूसी सीमान्त रेखाके पीछे आनेकी भी इजाजत मिल गई। लेकिन इसी समय जुगर-साम्राज्यको चीनियोंने नष्ट कर दिया, जिसमें अवलङ्का भी काफी हाथ था। साम्राज्यके पतनमें अमुरसना और दावा छेरिङ (१७५०-५५ ई०) का झगडा मुख्य कारण था, इसे हम पहले बतला आये हैं। चीनियोंकी सहायतासे अमुरसना खान बना था, लेकिन वह चीनियोंके हाथकी गुडिया नहीं बनना चाहता था, इसलिये विद्रोही बना, और भारी चीनी सेना आनेपर उसने कजाकोमें भागकर शरण ली। अवलङ्ग खानने घोंडे और सरसक दिये, और गिरफ्तार करनेके लिये वचन देकर चीनी सेनापतियोंके पता पूछनेपर बहाना कर दिया, कि अमुरसना रूसियोंके पास भाग गया। इसपर नाराज हो चीनी जेनरल तलतगा कजाकोंके देशमें घुसा। फिर कजाकोने उसे भुलावमें डाला। उधर मंगोलो और मचू सैनिकोंको अपने जेनरलका आचरण बुरा लगा, इसलिये उनमेंसे बहुतरे साथ छोडकर चले गये, और जेनरलको पीछे हटना पडा। इन लडाइयोंमें सबसे बहादुर चीनी सेनापति हो मारा गया, और वही हालत कतमक सेनानायकों—नीमा, पयार, सीला और मंगलिक आदिकी हुई, जो कि अमुरसनाके विरुद्ध हाँ चीनकी ओरसे लडे थे। इस हारकी खबर मिलनेपर चीनसे एक

नई सेना आई, जिसने कजाकोको हरा उनके बहुत-से मुखियों को पकड़कर पेंकिंग भेज दिया, जहा उन्हें प्राणदंड दिया गया ।

जुगरो जैसी अजेय शक्तिको इतनी आसानीसे खतम करते चीनियोंको कोई दिक्कत नहीं मालूम हुई, यह देखकर अवलई रूसका पक्ष छोड़ चीनकी ओर झुका, और कुछ समय बाद उसने चीनी सम्राट् चियान-लुङ्ग (काउ-चुङ्ग १७३५—९५ ई) की अधीनता स्वीकार की । सम्राट्ने इतने प्रभावशाली खानको अपना सामन्त बनते देखकर उसे राजा (वाङ्ग) की उपाधि भेजी । अगले साल १७५७ ई० में जब उसे अपने ओर्दूके साथ चीनी प्रजा घोषित करनेकी आज्ञा आई, तो अवलइने टालमटोल कर दिया ।

१७५८ ई० में मध्य-ओर्दूके एक भागके कजाक रूसी सीमापर आक्रमण कर दोनों ओरके करद २२० तारतारोको पकड़ ले गये, और इनका दूसरा भाग पूर्वकी ओर बढ़कर जुगर उच्छेद-से खाली पड़ी भूमिको आबाद किया । अवलइ जहा एक ओर चीनियोंको विश्वास दिलाता था, कि मैं सम्राट् का करद सामन्त हूँ, वहा दूसरी ओर उसने रूसको भी विश्वास दे रक्खा था, कि मैं यह सब कुछ ऊपरी मनसे कर रहा हूँ, समय आनेपर मैं रूसकी ओरसे चीनके साथ लड़ूंगा । रूसी रानीने बड़ी प्रशंसा करते हुये उसके लिये एक बहुमूल्य समूरी छाल भेजी । मध्य-ओर्दूका अधिकांश अवलइको अपना खान मानता था । रूसी नहीं चाहते थे, कि अवलइका प्रभाव और शक्ति अधिक बढ़े । उन्होंने तब भी कूटनीतिसे ही काम लेना चाहा, और कहा, कि लघु-ओर्दूके नूरअली खानकी तरह तुम भी अपने पुत्रको जारके दरबारमें जामिन भेजकर सम्मान प्राप्त करनेकी प्रार्थना भेजो । अवलइने इसे पसन्द नहीं किया ।

१७६० ई० में मध्य-ओर्दूके कजाकोने चीनकी प्रजा वरुतो (जगली किर्गिजो) पर आक्रमण किया । चीनियोंने इसपर विरोध प्रकट करते हुए अपनी सेना अवलइको दंड देनेके लिये भेजी । तीन ही वर्ष पहले जुगरोकी क्या दशा हुई, यह कजाक देख चुके थे, इसलिये उन्होंने तुरन्त चीनियोंकी अधीनता स्वीकार कर ली, लेकिन साथ ही रूसको प्रसन्न रखनेके लिये भी कितने ही वार्षिक और बराबिन तारतार बढ़ियोंको उनके पास लौटा दिया । रूसी चाहते थे कि अवलइका सबध चीनसे न हो । १७६२ ई० में उन्होंने हुक्म दिया, कि कजाक बडोमें भेट वाटनी हैं, सीमान्तके पास घोडोके लिये अस्तबल, गाडियोंके रखनेके लिये गाडीखाने, चारो ओर प्राकार और दूकानसे घिरा एक छोटा महल खासकरके खानके लिये बनाना है । वह महल पेत्रोपावलोव्स्कके सामने बना भी दिया गया है । रानी एकातेरिना II की गद्दीके समय अवलइ, ऐचुवक और लघु-ओर्दूके नूरअलीने भी राजभक्तिकी शपथ ली, यद्यपि अवलइ अब भी चीनियोंकी अधीनताको मानता था । इस प्रकार उसकी चाल दोरगी थी ।

चीनी सेना जुगरोको हरानेके बाद पश्चिमकी ओर बढ़ती गई । उसने खोकन्द और ताशकन्दपर आक्रमण किया । इसपर वहाके शासकोने अफगानिस्तानके अमीर अहमदसे इस्लामके नामपर मदद मागी । काशगर और यास्कन्द आदिके लोगोंने भी जाकर काबुलपतिके पास गुहार की । अहमदशाह अब्दाली भारतमें भारी विजय (१७५६ ई०) प्राप्त करके काफी नाम कमा चुका था, इसलिये वह उत्तरसे आई गुहारको ठुकरा कैसे सकता था ? उसने काफी सेना अन्तर्वेद की ओर भेजी । ताशकन्द और खोकन्दके बीचमें चीनी सेनासे बातचीत चलती रही, फिर सारे मध्य-एसियामें जहाद (धर्मयुद्ध) की घोषणा कर दी गई । उधर चीनियोंने अवलइको सनद देकर डलीपर बसनेकी इजाजत देते हुये, दुश्मनोसे रक्षाका भार अपने ऊपर ले लिया । अवलइने अपने ममुर सुल्तान अहमद, कुछ कजाक अमीरो और उनके लडकोको जामिन बनाकर चीनियोंके हाथमें दिया, और इस प्रकार अवलइ मुसलमानोके जहादमें शामिल नहीं हुआ ।

रूसियोंने कोल्चवली नदीपर १७६४ ई० में एक छोटासा किला सेमीप्लातिन्स्क बनाया था, जो कजाकोके साथ व्यापार करनेका केन्द्र था । अबुल्मोहम्मद-पुत्र अबुल्फैज, तथा तुर्किस्तानके पुलाद खानके भाई अबुल्फैजके कहनेपर ही रूसियोंने यह किया था । अबुल्फैज मध्यओर्दूके सत्रमें अधिक शक्तिशाली कबीले नैमनका मुखिया था । जुगारियामें रहनेके कारण अब वह चीनियोंपर अधिक

निर्भर करता था। रूसियोंने अवलइको सेमीप्लातिन्स्कमें व्यापार करनेकी आज्ञा दे दी। कजाकोंने खेती सीखनेकी इच्छा प्रकट की, तो समुचित जामिन लेकर दस खेती सिखानेवालोंको भी रूसियोंने भेज दिया। इतिहासके आदिकालसे अवतक खेतीसे अछूते कजाक जुगरोकी भाति अब खेतीके महत्त्वको समझने लगे।

अब हम उस समयमें पहुँचते हैं, जब कि १७७० ई०में वोल्गा-नटसे तोर्गुत (कल्मक) भगे थे। कल्मकोंका रास्ता अपने पुराने दुश्मन कजाकोंकी भूमिके बीचमें था। रूसियोंने भी उन्हें भडका रखा था, इसलिये अवलइ और उसके आदमियोंने सुल्तान अवुल्फैजकी तरह कल्मकोपर आक्रमण करके बहुत लूट-मार की, और उनमेंसे भारी सख्याको अपना वन्दी बनाया।

१७७५ ई०में अवुल्फैज तथा मध्य-ओर्दूके और कितने ही सरदारोंने साइबेरियाकी सीमापर जाकर रूसी प्रजा होनेकी आज्ञा माँगी—प्रजा होनेका मतलब था वार्षिक पेंशन और भेंट-इनामकी प्राप्ति। रूसियोंने कहा—“तुम तो पहले हीसे हमारी प्रजा हो।”

अवलइ अपनी चालाकी-चतुराईके बलपर बहुत शक्तिशाली बन गया, और बराबर रूस और चीनके बीचमें अपने दावपेच चलाता रहा। तो भी चीनकी ओर उसका झुकाव अधिक था, वह चीनी भाषा बोल भी सकता था। अपनी शक्तिको १७७१ ई०के बाद उसने अपनेको देश खुल्लमखुल्ला खान (राजा) कहना शुरू किया। कहासे यह पदवी मिली, पूछनेपर वह बड़े अभिमानके साथ जवाब देता—तोर्गुतोपर विजय प्राप्त करनेसे अवल्मुहम्मदके मरनेपर तुर्किस्तान और ताशकन्दके कजाकोंने मुझे अपना खान निर्वाचित किया। अपने पूर्वजोंकी भाति वह भी चाहता था, कि मैं भी कजाकोंके सबसे बड़े सत खोजा अहमदकी समाधिके पास रहूँ। रूसियोंने दवाव दिया, कि अपने पुत्रको जामिन भेजकर जारसे खानकी पदवी प्राप्त करो। इसपर १७७७ ई०में उसने अपने पुत्र तोर्गुमको खान-पदवी प्राप्त करनेकी प्रार्थनाके साथ पीतरबुर्ग भेजा। दरबारमें उसका अच्छा स्वागत हुआ, और २२ अक्टूबर १७७८ ई०को कुछ और भेंटोंके साथ खानकी उपाधिका शासनपत्र ओरेनबुर्ग के राज्यपालके पास भेज दिया गया। अवलइको सूचित किया गया, कि उपाधि प्राप्त करनेके लिये थ्रोइत्स्क या साइबेरियाके किसी दूसरे रूसी नगरमें आओ। अवलइने ऐसा करनेमें इन्कार कर दिया। इसपर उसे उसके डेरेमें एक रूसी अफसरके सामन शपथ दी गई। लेकिन अवलइ चीनियोंको नाराज नहीं करना चाहता था, इसलिये, उसने रूसी रानीकी भेजी हुई भेंटको स्वीकार नहीं किया। चूँकि रूसियोंने वुस्तो (जगली किर्गिजों)के विरुद्ध मदद देनेसे इन्कार कर दिया था, इसलिये अवलइने अपने पासके रूसी वदियोंको वही लौटा दिया, और उन तुर्कमानोंको भी, जिन्हें कि तोर्गुत अपने साथ ला महायात्रामें कजाकोंके देशमें छोड़ गये थे। इसपर रूसियोंने नाराज हो अवलइकी पेंशन बन्द कर दी, और कुछ कजाक सुल्तानोंको भी उसके विरुद्ध उकसाया, जिन्होंने उसे पकड़कर रूस ले जानेका असफल प्रयत्न किया। अवलइ वुस्तोंके विरुद्ध सफल अभियान करके तुर्किस्तान-शहर लौटा। उसने अपने लडके हादिलके लिये तलस नदीके तटपर एक प्राकारबद्ध महल बनवाया। पान हीमें महाओर्दूके कजाकों-जो कि इस समय अवलइकी प्रजा थे—के कहनेपर एक शहर भी बसाया, जहाँ कराकल्पक किसान आकर आबाद हो गये। वन्दी बनाकर लाये वुस्तोंको वह मध्य-ओर्दूके देशके उत्तरमें ले गया, जहाँ वह पीछे यानी-किर्गिज (नये किर्गिज)के नामसे प्रसिद्ध हुये। १७८१ ई०में अवलइ रूसी सीमान्तकी ओर जा रहा था, इसी समय ७० वर्षकी उमरमें उसका देहान्त हो गया। उसकी कब्र तुर्किस्तान शहरमें बनाई गई। चीनमें खबर मिली, तो वहाँसे एक विशेष अफसर भेजा गया, जिसने परिवारको जमाकर राजसी ढंगसे अवलइकी अन्त्येष्टि-क्रिया कराई।

#### ४ वली, अवलइ-पुत्र (१७८१-१८१८ ई०)

अवलइके मरनेपर मध्य-ओर्दूको महा-ओर्दूवाले वुरी तीरसे हराकर भारी सख्यामें उनके पशुओं को छीन ले गये। मध्य-ओर्दूकी शक्ति अब विखरने लगी। उसके उत्तरी भागमें अवलइ-पुत्र वलीको अपना खान चुना, और प्रार्थना करनेपर रूसने उसे स्वीकार भी कर लिया। १७८२ ई०में लेफ्टेनेन्ट-जेनरल याकोवने बड़ी धूमधूमसे पेत्रोपावलोव्स्कमें वलीको खान घोषित किया, लेकिन मध्य-ओर्दूके

सबसे प्रभावशाली कबीले नैमनने वलीको न मजूर कर अबुल्मुहम्मद-पुत्र अबुल्फज (मृत्यु १७८३ ई०) को अपना खान चुना, जिसे चीनने मजूर कर लिया। लेकिन नैमनोमें भी सब एकराय नहीं थे। अबुल्फजका पुत्र बुपू और दामाद खान खोजा बुराक-पुत्र इससे सहमत नहीं हुये। नैमनोमें काफी सख्या खान खोजाकी पक्षपाती थी, जिसे स्वीकार करते हुये चीनियोने अपना शासनपत्र भेजा। वलीको छोडकर अबलइके सारे सवधी रूस नहीं, बल्कि चीनके पक्षपाती थे। वलीके एक भाई जिगिसने १७८४ ई०में सेना ले जाकर ताशकन्दमें एक विद्रोहको दबाया। उसके दूसरे भाई सुल्तान तीजकी बुर्रतोसे भारी दुश्मनी थी। बुर्रत लडाकू चीनी सेनाको भी अनेक बार पराजित कर चुके थे। सुल्तान तीजको भी उन्होने एक बार हराकर पकड लिया, और उसने अपने कई गुलामोको देकर छुट्टी पाई। वलीका बडा भाई वेदी खोजा चीनी सीमान्तपर रहनेवाले मध्य-ओर्दूके कजाको का शासक था। इसे भी लडाकू बुर्रतोसे पाला पडा था, और इसने उन्हे कई बार हराया। १७८५ ई०में ऐयागुज नदीके तटपर इसने बुर्रतो (जगली किर्गिजो)के विरुद्ध अपनी सबसे बडी और अंतिम विजय प्राप्त की। लेकिन उस समय वह चीनी सेनाके सहायकके तौरपर लड रहा था, जिससे उत्साहित हो अपनी छोटी सेनाके साथ जब वह यिदिस्से नदीके तटपर पहुचकर कुमक आनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, इसी समय बुर्रतोने आक्रमण करके उसे पकड लिया। तीजको अब प्राणो की आशा क्या हो सकती थी? उसने एक रक्षरक्षीको मार डाला, जिसपर बाकी टूट पडे, और उन्होने उसे हाथ-पैर अलग-अलग काट, पेटको चीरकर उसीके भीतर हाथो-पैरोको डालके मारा। पीछे तीजके भाई अककियक और उसके पुत्रो लेपेस तथा चोकाने युद्धमें हराकर बुर्रत सरदारके पुत्रको पकडा, और उसे घर ले जाकर वेदी खोजाकी स्त्रियोको दे दिया, जिन्होने उसे पीट-पीटकर मार डाला।

१७८६ ई०में रूसियोने अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया।

इस समय मध्य-ओर्दूके उत्तरी भागमें शांति छाई हुई थी। इनके पडोसी थे महा-ओर्दू, लघु-ओर्दूके कजाक, रूसी, ताशकन्द-तुर्किस्तान राज्यके शांतिप्रिय निवासी। दूसरे पडोसी लडाकू बाश्किर, त्रोइत्स्कके पासमें रहते थे। दूसरी ओर बुर्रत भी चैनसे रहने देना नहीं चाहते थे। मध्य-ओर्दूकी स्थिति इस समय दूसरे दोनो ओर्दुओसे कुछ बेहतर थी। महा-ओर्दू और लघु-ओर्दूकी अपेक्षा वह अधिक सस्कृत और स्थायी जीवन बिता रहा था, तथा अपने खानो और सुल्तानोकी बात मानते थे। वलीने भी अपने पिताकी तरह शक्ति-सचय करनेमें सफलता प्राप्त की। अस्त्राखानसे तोर्गुतोद्वारा छीने गये तुर्कमानोको लौटानेसे इन्कार करके उसने रूसियोको नाराज कर लिया। रूस-पक्षपाती अमीरोका भी वह दमन करता था। १७८९ ई०में महा-ओर्दूके एक सुल्तान तुगुमके साथ वलीके ओर्दूके भी कितने ही लोग रूसमें चले गये, और रूसियोने उन्हे उस्त-कामेन्नोगोर्स्कके किलेके पास जगह देकर बसा दिया। १७९३ ई०में जेनरल स्यान्दमानने जबदंस्ती तुर्कमानोको वलीके हाथसे छुडाया, जिसकी शिकायत कजाक खानने रूसी रानीके पास की। बापकी तरह यह भी दुरगी चाल चल रहा था। १७९५ ई० में इसने एक पुत्रको चीनमें अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा था। प्रजाको इसने अपने जुल्मोंसे इतना नाराज कर दिया था, कि १७९५ ई०में मध्य-ओर्दूके दो सुल्तान, उन्नीस जेठे, ४३३०८ अनुचरो तथा ७९००० दूसरे कजाकोने रानी एकातेरिनाIIसे प्रार्थना की, कि हमे वलीके पजेसे छुडाकर रूसी प्रजा बना लो। खानने इसपर क्षमा मागी। १७९५ ई०में बाश्किरोके पडोमी मध्य-ओर्दूके एक दलने चेलियाविन्स्क और ब्रेस्ने उराल्स्कमें जाकर लूट-मार की।

१७९८ ई०में पावलके शासनकालमें कजाकोके आपसी झगडोके मिटानेके लिये पेत्रो- पालोव्स्कमें रूसियो और कजाकोकी एक सम्मिलित अदालत बैठी, लेकिन उसने अपना काम १८०६ ई०में शुरू किया। वली १८१८ ई०में मरा। अन्तिम वर्षोंमें कजाकोमें उसकी चलती नहीं थी, और कितने ही अमीर उसकी आज्ञा माननेसे इन्कार करते थे। इसपर जार अलेक्सान्द्रI (१८०१-२५ ई०)ने वोराक-पुत्र वूकेइको मध्य-ओर्दूका द्वितीय खान १८१६ ई०में नियुक्त किया। वूकेइ भी १८१८ ई०में मर गया, जिसके साथ ओर्दूके खानोकी परम्परा खतम हो गई, और उनके कजाक सीधे रूसी प्रजा हो गये, जिनके शासनके लिये रूसियोने एक विशेष प्रवन्ध कर रक्खा था।

## ख. लघु-ओर्दू (१७४४-१८१२ ई०)

तेअवका, तौफीक या तवक्कल खान (१६९८-१७१८ ई०)के बाद श्वेत-ओर्दू तीन भागोंमें विभक्त हो गया था, जिनमें लघु-ओर्दूके अमीर थे—यादिक खानके भाई उजियक सुल्तानके वंशज। तेअवकाने अदिया (आइतिक)को लघु-ओर्दूके शासनका भार सौंपा। इस प्रकार अदिया लघु-ओर्दूका प्रथम खान था। लघु-ओर्दूके खानोंके नाम निम्न प्रकार हैं —

१ अदिया, जानीवेग वंशज, ईरिश-पुत्र	—१७१७ ई०
२ अवुलखैर, अदिया-पुत्र	१७१७-४९ "
३ नूरअली, अवुलखैर-पुत्र	१७४९-९० "
४ एरअली, अवुलखैर-पुत्र	१७९०-९४ "
५ इशिम, नूरअली-पुत्र	१७९४-९७ "
६ एचुवक, अवुलखैर-पुत्र	१७९७-१८०५ "
७ जन्ती उरा, एचुवक-पुत्र	१८०५-९ "
८ शेरगाजी, एचुवक-पुत्र	-१८१२ "

### १ अदिया, एतीयक, ईरिश-पुत्र (-१७१७ ई०)

श्वेत-ओर्दूके अन्तिम खान तेअवका (तौफीक)ने इसे लघु-ओर्दूका शासक बनाया था, लेकिन अदियाके समय अभी लघु-ओर्दू अपने स्वतंत्र अस्तित्वको कायम नहीं कर पाया था। यह काम उसके पुत्र अवुलखैरने किया।

### २ अवुलखैर, अदिया-पुत्र (१७१७-४९ ई०)

१७१७ ई०में अवुलखैर भी तौफीक और काइपके साथ जुगरोके विरुद्ध सहायता मागनेके लिये रूस गया था। वापके मरनेपर काइपके साथ अवुलखैरकी प्रतिद्वंद्विता शुरू हो गई। १७१७ ई०में रूसियोंसे भी उसका झगडा हो गया, उसने कजान प्रदेशमें नवोशेस्मिन्स्कतक लूट-मारकरके बहुतसे वन्दी पकड़ लिये। जुगरोने भी लघु-ओर्दूकी लूट-मारोंसे तंग आकर १७२३ ई० में उन्हें तुर्किस्तान-ताश्कन्द-सैरामसे भगा दिया। तबतक अवुलखैरने तुर्किस्तान शहरमें रहते अपनी शक्ति भी बहुत बढ़ा ली थी। आपसी झगडोंसे जुगरोको लाभ और अपने वंशका नाश देखकर उसने एक महापरिपद् बुलाकर फैसला कराना चाहा, जिसने अवुलखैरको अपना मुखिया चुनकर सफेद घोंडेकी कुर्बानी दी। लघु-ओर्दूने उसके नेतृत्वमें कई बार जुगरोको छोटी-मोटी हार दी, लेकिन इससे उनके राजा छेवड अर्पचन (रव्तन)का कुछ विगडनेवाला नहीं था। जब जुगरोने जोरका प्रहार किया, तो लघु-ओर्दूको पश्चिमकी ओर भागना पड़ा, और उन्होंने यम्बा नदीको पार हो तोर्गुतो (वोल्गा-कल्मको)को भगाकर यायिक(उराल)तक की भूमिको ले लिया। अब तोर्गुत उनके विरोधी हो गये और बादमें उरालके कसाक भी दुश्मन बन गये। इन दोनोंके प्रहारसे इन्हें इतनी हानि उठानी पड़ी, कि १७२६ ई०में इनके प्रतिनिधियोंने जाकर रूसमें नरक्षण पानेकी प्रार्थना की, लेकिन उसमें वह सफल नहीं हुये। यद्यपि ओर्दूका बहुमत तैयार नहीं था, तो भी अवुलखैरने इसीमें खैरियत समझकर १७३० ई०में ऊफाके बोयबोद वृत्तुलिनके पास अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र भेजा। दूत जुलाई १७३० ई०को ऊफा पहुँचे, जहाँसे उन्हें पीतरवुर्ग भेज दिया गया। दूतोंने दरबारमें कल्मको (तोर्गुतो) वाश्करो और उरा-कसाकोंके साथ लड़ाई करनेका वचन दिया—हम रूसके शत्रुओंमें लड़नेके लिये सदा तैयार हैं, और यदि खीवा, कराकल्पक तथा अरवी कवीलोको दवानेके लिये हमें सैनिक दिये जाय, तो हम उनपर अभियान कर सकते हैं। उन्होंने अपने ओर्दूकी ओरसे रूसी प्रजा होनेको स्वीकार किया, पीतरवुर्गमें इसके लिये बड़ी खुशी मनाई गई, क्योंकि बिना एक गोली दागे रूसको इतने नये प्रजाजन मिल गये। वाश्किर जब-तब रूसियोंके विरुद्ध विद्रोह कर देते थे।

खीवावालोने हाल हीमें रूसी राजदूत राजुल बेकोविच-चेरकास्कीको मार डाला था, उसको भी बदला लेनेका मौका मिल रहा था। रानी अन्नाने सहायता और सरक्षण देनेका वचन-पत्र दिया। दूत जब अपने देशको लौटे, तो कजाक भूमिका नक्शा बनानेके लिये दो इजीनियर अफसर भी साथ कर दिये गये। सारा ओर्दू विरोधके लिये खड़ा हो गया। फिर एक बड़ी परिपद् बुलाई गई, और किसी तरह झगडा शांत हुआ। १७३२ ई०म लघु-ओर्दूके अबुल्खैर और मध्य-ओर्दूके शेमीअका खान दोनोने राजभक्तिकी शपथ ली। अबुल्खैरने दस्तकिपवकको छोड़ सिर-दरियाके मुहानेपर अपना डेरा डाला वहाके कराकल्पकोको भी अपने अधीन करके रूसकी प्रजा बनाया।

जनवरी १७३४ ई०में अबुल्खैरका पुत्र एरली सुल्तान और भी कितने ही कजाक-मुखियोंके साथ पीतरवुर्ग गया। रानीने उसका स्वागत करके बहुत इनाम दिया। एरलीने अबुल्खैर-परिवारमें खानकी पदवी पानेकी प्रार्थना की, और यह भी कहा, कि ओरी और उराल नदियोंके सगमपर रूसी किला बनाया जाय, अपने आसपाससे जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अबुल्खैरको मिले, तथा सैनिक सहायताके लिये कलमको और वाश्करोकी तरह समूरी छालके रूपमें भेंट दी जाय। शर्तें मानना आसान था, लेकिन कजाक-जैसे कबीलोके लिये उनका पालन करना बहुत मुश्किल था। एक और भी बात थी कजाकोमें मुखिया या खानकी उतनी चलती नहीं थी। लोग जनतन्त्रताके अत्यन्त पक्षपाती थे, इसलिये खान द्वारा स्वीकृत शर्त-को माननेके लिये मजबूर नहीं थे। प्रसिद्ध भौगोलिक किरिलोफको कुछ इजीनियरोके साथ किला बनाने तथा नक्शा तैयार करनेके लिये भूमापक बनाकर भेजा गया। तीन अफसर, कुछ मिस्त्री और नाविक नाव बनानेके लिये, एक खनिज इजीनियर, कुछ तोपची-अफसर, एक वनस्पतिशास्त्री, एक चित्रकार, एक डाक्टर, कजाकोकी भाषा सीखनेके लिये कुछ तरुण विद्यार्थी किरिलोफके नेतृत्वमें भेजे गये। कजान पहुंचनेपर एक रेजिमेंट पैदल सेना, कुछ तोपखाना भी साथ हुआ। ऊफामे कसाकोकी एक पैदल बटालियन साथ हो गई। तेवकेलेफ नामक एक वाश्करको कर्नलका दर्जा दे दुभाषिया नियुक्त किया गया। ऊफाकी आमदनी इस अभियानके खर्चके लिये निश्चित कर दी गई। किरिलोफको आज्ञा दी गई थी, कि ओरीके मुहानेपर नगर बसाकर लोगोको वहा बसनेके लिये आकृष्ट करे, तथा अबुल्खैरको खान उपाधिका शासन-पत्र प्रदान करे। शेमीअका, महा-ओर्दूके दूसरे मुखियो और कराकल्पकोके मुखियोको किरिलोफसे मिलनेके लिये हुक्म दिया गया था। यह भी हुक्म था, कि मध्य-ओर्दू और महा-ओर्दूके मुखियोको राजभक्तिकी शपथ लेनेके लिये कहे, एरलीको अच्छे रक्षियोंके साथ उसके बापके पास भेजे, कजाकोको भेंट-रिश्वत या कड़े हाथोंसे शान्त रखे, नये नगरमें उनके अमीरोको घर और मस्जिद बनाने और आसपासमें उनके पशुओके चरनेकी इजाजत दे, उराल (यायिक) नदीको सीमा मानकर कजाकोको उसके पार होनेसे मना करे, झगडोको तै करनेके लिये रूसियो और कजाक-बडोकी सम्मिलित अदालत स्थापित करके देशके रीति-रवाजके अनुसार फैसला करायें। किरिलोफ १७ जुलाई १७३४ ई०को पीतरवुर्गसे चला।

उसी साल अबुल्खैरने अपने पुत्र एरलीको फिर भेजा। किरिलोफ आगेके कामके लिये नेता था। १५ अगस्त १७३५ ई०में ओरी और उराल नदियोंके सगमपर उसने कोरेनवुर्गकी नीव डाली। रूसके इस प्रकार लगातार आगे बढ़नेको देखकर इस भूमिके घुमन्तू कबीले कैसे सन्तुष्ट रह सकते थे? उनमेंसे कुछने विद्रोह भी किया, लेकिन तोपो और वन्दूकोके सामने उनका क्या बस चलता? दीवारोके तैयार हो जानेपर १७३६ ई०के वसन्तमें अबुल्खैरको आनेके लिये निमन्त्रण दिया गया, और ताशकन्दके व्यापारियोंको भी ओरेनवुर्गकी मंडीमें व्यापार करनेकी सलाह दी गई। इस समय सबसे ज्यादा विद्रोही थे वाश्कर, जिनके विरुद्ध रूसियोको सेना भेजनी पड़ी, और नये किले भी बनाने पड़े, जिनमें उराल नदीके तटपर गुर्लिन्स्क, ओजेर्नया, स्वेदनी, वेर्दस्कोइ और किरिलोफ थे। समारा नदीके ऊपर भी कुछ किले बनाये गये, लेकिन रूसियोको अपने हितके लिये इससे भी ज्यादा आवश्यक यह था, कि वोल्गा-कलमको, वाश्करो और कजाकोके आपसी झगडे बराबर बने रहें।

किरिलोफ अप्रैल १७३७ ई०में मर गया। इसी समय रूसी व्यापारियोंका एक कारवा ताशकन्द जानेवाला था, जिसके साथ कप्तान येल्तन गया, जो पीछे भारतपर आक्रमण करने-



वाले नादिरशाहका नौकर हो गया। हमकी ओरसे येल्तनको अराल समुद्रमें नौमचालन तथा सिरके मुहानेपर कैदियोंके लिये नगर बसानेके बारेमें विवरण देनेके लिये भेजा गया था। किरिलोफके मरनेके बाद उसकी जगह तातीशेफ नियुक्त किया गया। वाशिकर विद्रोहियोंको दवानेके लिये अबुलखैरको उनपर मनमानी करनेकी छूट दे दी गई थी। उसने वाशिकरोमें विद्रोही और और अविद्रोही का फर्क किये बिना सबके ऊपर भारी अत्याचार किये। उसीके बाद वही काम कजाकोने कल्मकोपर आक्रमण करके किया, और वह कल्मकोको ही नहीं, बल्कि रूसियोंको भी बन्दी बनाकर ले गये। बन्दी बनाकर ले जानेका मतलब या अन्तर्वेदमें उन्हें दासोंके बाजारमें बेच डालना। इसके कारण रूसी नाराज हो गये, और अबुलखैरको, नूरअलीको जामिन बनाकर हटनेका हुक्म दिया। डरके मारे अबुलखैर नहीं आया। अगस्त १७३८ ई०में वह आनेको राजी हुआ। उसके आनेपर रास्तेकी दोनों तरफ पाती बांधे सेना खड़ी थी। जब वह उस तम्बूमें आया, जिसमें रूसी रानी अन्नाका चित्र रखा हुआ था, तो नौ तोपे दागकर उसके लिये सलामी दी गई। तातीशेफको सम्बोधित करते हुये उसने कहा—“परम-भट्टारिका महारानी उसी तरह दूसरे राजाओंमें श्रेष्ठ हैं, जैसे सूर्यका प्रकाश तारोंमें। यद्यपि दूर होनेसे मैं उन्हें नहीं देख सकता, लेकिन उनके हितकारी प्रतापको मैं अपने दिलमें महसूस करता हूँ। उनके प्रकाशद्वारा रोगनी पाकर मैं रानीकी अधीनता और एक राजभक्त प्रजाकी तरह अपनी आज्ञाकारिताको घोषित करता हूँ। मैं अपने परिवार और अपने ओर्दूको परमभट्टारिकाके सरक्षणमें एक शक्तिशाली बाजके पंखके नीचे जैसे रखता हूँ, और सदाके लिये अधीन रहनेकी प्रतिज्ञा करता हूँ। साथ ही महान् जेनरल मैं तुम्हारी ओर भी अपनी मित्रताका हाथ फैलाता हूँ।” फिर अबुलखैरने हाथमें कुरान लेकर वफादारीकी कसम खाई, और रूसी बंदियोंको लौटानेका वादा किया। यही नहीं, उसने अपनी स्त्री पपाइको भी दरबारमें भेंट-स्वरूप भेजनेकी इच्छा प्रकट की। इस प्रकार अबुलखैर जैसे अवितशाली घुमन्तू खानको अपने अधीन पाकर रूसियोंको भारी प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी।

१७३९ ई०में तातीशेफकी जगह राजुल उरुसोफ बोयबोद होकर आया। आते ही उसने सुना, कि लघु-ओर्दूवालोंने दो रूसी कारवानोंको लूट लिया। १७४० ई०में अबुलखैरने अपने तीन हजार कजाकोंको बोल्गा-कल्मकोको लूटनेके लिये भेजा। इसी बीचमें कुछ समयके लिये अबुलखैर खीवाका खान भी बन गया था, लेकिन नादिरशाहने उसे वहां टिकने नहीं दिया। इस समय उसकी पूर्वी सीमान्तपर जुगरोका प्रताप छाया हुआ था। अबुलखैर उन्हें भी खुश रखना चाहता था। जुगर कजाकोंके बार-बारके आक्रमणमें तंग आ गये। उन्होंने दो बड़ी-बड़ी सेनायें मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दूके विरुद्ध भेजी, और अबुलखैरसे जामिन भेजनेके लिये कहा।

रूसी राज्यपाल नेप्लुयेफने इसे उचित नहीं समझा, कि रूसी प्रजा होते हुये अबुलखैर जुगरोंके पान जामिन भेजे। १७४२ ई०में शपथ लेते वक्त अबुलखैर और दूसरोंने यह वचन दिया था, कि हम जुगरोमें छेदछाड़ नहीं करेंगे। अबुलखैरने अपने पुत्रके स्थानपर किसी दूसरेको रूसी राज्यपालके यहां जामिन रखना चाहा, लेकिन रूसियोंने इसे नहीं माना। इसपर उसने कजाकोंको भडकाया, और १७४३ ई०में दो हजार कजाक आकर नये बसे शहर ओरेनबुर्गको लूट वहाके निवासियोंको पकड़ ले गये। इन कजाकोंका नेता अबुलखैरका सबबी दरवेशअली सुल्तान था।

अमीनक अबुलखैर पदोंकी आड़में शिकार खेल रहा था, लेकिन १७४४ ई०में उसने नकाब उठा फेंका। अब उसके आदमी खुलकर रूसी कारवाओंको लूटने लगे। अन्तमें २४ अप्रैल १७४४ ई०को रूसियोंने कल्मक राजा दोण्डुव् यैचीको वारुद और शीशाके साथ पत्र लिखकर हुक्म भेजा, कि तुम अपने आदमियोंको जमा करके कजाकोपर हमला करो, जो भी लूटमें हाथ आये, वह तुम्हारा होगा। लेकिन यह पत्र भेजा नहीं जा सका, क्योंकि इसी समय जुगर-कल्मकोका साइबेरियापर आक्रमण होनेवाला था, जिसमें अबुलखैरके कजाकोंकी सहायता आवश्यक थी। अब भी अबुलखैरकी लूट-मार बन्द नहीं हुई। उसके आदमी फरवरी १७४६ ई० और जनवरी १७४७ ई०में जमे हुये कास्पियनपरसे होकर बोल्गा-कल्मकोको लूटने गये। बहुत इधर-उधर करनेके बाद १७४८ ई०की गर्मियोंमें अबुलखैरन खोजा अहमदकी जगहपर अपने पुत्र ऐचुवक तथा कुछ दूसरे कजाक अमीरोंके लड़कोंको जामिन देना स्वीकार किया, और यह भी वचन दिया, कि मैं अपने पासके रूसी बंदियोंको लौटा दूंगा, और मेरे

आदमी फिर साम्राज्यपर आक्रमण नहीं करेगा। इधर वह रूससे इस तरहकी प्रतिज्ञाये कर रहा था, और उधर चुपचाप जुगरोके खुड-थैचीको अपनी लडकी देनेकी बात चला रहा था।

अपने स्थानपर लौटनेके बाद लोगोको जमाकर अबुल्खैरने कराकल्पकोपर चढाई की, लेकिन मध्य-ओर्दूके शक्तिशाली कवीले नैमनका एक अत्यन्त प्रभावशाली खान वुराक कराकल्पकोकी अपनी प्रजा कहता था। अबुल्खैरकी रूसने जो आवभगत की थी, उससे भी वुराक जल-भुन गया था। दोनोकी लडाई हुई, जिसमे अबुल्खैरको हारकर भागना पडा। वुराक-पुत्र शिगाईने दौडकर उसे घोडेसे उतार भाला घुसेड दिया, इसी समय वुराक आ पहुचा, जिसने अपने हाथो अबुल्खैरको खतम किया। फिर वह कराकल्पकोको लूटने गया, लेकिन कराकल्पकोके रक्षक अब रूसी थे जिनके डरके मारे उसने तुकिस्तान लौट इकान, सिगनक और ओतरारपर अधिकार किया। पर जैसा कि पहले कहा, अगले ही साल १७४९ ई०मे दो पुत्रो सहित उसे जहर देकर मार डाला गया—कहते हैं, इसमे जुगर खुड-थैशी छेवड दोर्जेका भी हाथ था, जिसके पास अबुल्खैर-पुत्र नूरअलीने वापकी निर्मम हत्याकी शिकायत की थी। अबुल्खैरकी कन्न उत्किया नदीकी शाखा कादिर नदीके पास अक्षांश ५० ३० देशान्तर ८६-०१० मे मौजूद है।

### ३ नूरअली, अबुल्खैर-पुत्र (१७४९-९० ई०)

अबुल्खैरके मरनेके बाद राज्यपाल नेप्लुयेफके प्रयत्नसे अबुल्खैर-पुत्र नूर अलीको खान चुना गया। वह लघु-ओर्दू और मध्य-ओर्दू दोनोका खान बनना चाहता था, पर रूसियोने २६ फरवरी १७३९ ई० को शासनपत्र भेज उसे किर्गिज-कजाकोका खान बनाया। नूरअलीकी मा पपाईका प्रभाव कजाको और पीतरवुर्ग दोनोमे था। ओरेनबुर्गमें नूरअलीको बडे ठाट-बाटके साथ खान घोषित करनेकी रसम अदा हुई। उसे दरवारी खिलअत, टोपी और तलवार दी गई, फिर घुटने टेककर उसने राजभक्तिकी शपथ ली। ओर्दूमे लौटनेपर जुगर खुड-थैचीका दूत आ मिला, जिसने उसकी वागदत्ता बहिनको मागा। उसने यह भी कहा, कि खुड-थैची तुकिस्तान शहरको तुम्हे देनेके लिये तैयार है, जहापर तुम्हारे वाप-दादोकी हड्डिया कलिममें गडी हुई है। लेकिन नूरअलीके सुल्तान और ओर्दूके मुखिया रूसियोको नाराज नहीं करना चाहते। रूसी जुगरोकी ताकतको समझते थे, जिनके प्रभुत्वको महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दू मानता था, और दोनो मध्य-एसियाई उनके हाथोसे बाहर जानेकी शक्ति नहीं रखते थे। इसलिये उन्होने खुड-थैचीको नूरअलीका बहनोई बननेसे रोका। १७५० ई०मे बहिन मर गई, सदेह था, वह स्वाभाविक मौतसे नहीं मरी। अबुल्खैर और काइपमे प्रतिद्वंद्विता चलती रही। काइप-पुत्र वातिर (बहादुर)को लघु-ओर्दूके एक भागने अपना खान चुना। फिर वातिर-पुत्र काइप II खीवाका शासक चुना गया। वातिरने खीवासे बुखारा जानेवाले कारवाकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेनेकी माग की, जिसे कुछ अशमें रूसियोने मजूर भी कर लिया, इसपर नूरअली नाराज हो गया। नूरअलीके भाई ऐन्बुवकने १७५० ई० के वसन्तमे शातिप्रिय कवीला अरालीपर आक्रमण किया, जो कि खीवाके खानके अधीन था। इसका बदला लेनेके लिये खीवा-खान काइपने खीवामें व्यापारके लिये गये नूरअलीके लोगो तथा उसके दूतको बन्दी बना लिया, और लूटे माल तथा बन्दी अरालियोको लौटा दिया। एन्बुवकके दूसरे भाई एरलीने कराकल्पकोपर हाथ मारा, लेकिन यहा मुकाविला निर्वलोसे नहीं था, इसलिये एरलीके अधिकांश आदमी मारे गये, और स्वयं एरली भी कितने ही महीनोतक कराकल्पकोका बन्दी रहा।

नूरअली नहीं पसद करता था, कि खीवाके कारवासे वातिर छेड-छाड करे। १७५३ ई० मे उसने एक रूसी कारवाको खीवा जाते वक्त लुटवा लिया, ऐसी ही और भी कितनी ही मनमानिया की, जिसकी शिकायत करनेपर उसने जवाब दिया—“वातिर और उसके पुत्र काइपने जो अत्याचार किये, उन्हीके कारण ऐसा हुआ। वह रूसके इलाकेपर हमला करना चाहते हैं, यदि मुझे दस हजार सेना और तोपखाना मिले, तो मैं चन्द दिनोमे उन्हें दबा सकता हूँ। रूसियोने इसे स्वीकार नहीं किया। खीवावालोके साथ झगडा होनेपर रूसियोने नूरअलीको खीवापर आक्रमण

करनेके लिये उकसाया। नूरअलीने अपने ओर्दूके मुखियोंको राय लेनेके लिये बुलाया, लेकिन दुजा देनेवाले खोजा (सैयद)के बीचमें पड़ जानेपर सीवा और लघु-ओर्दूका झगडा रुक गया।

१७५५ ई०में वाश्किरोने रूसियोंके खिलाफ विद्रोह कर दिया। मुल्ला बातिर गाहने उन्हें काफ़िरो (रूसियों)के विरुद्ध भड़काया, और कजानके तारतारों तथा कजाक-ओर्दूमें भी जहाद करनेके लिये कहा। उनमेंसे कुछने रूसी वस्तियोंको लूटा-मारा। इसपर राज्यपाल तथा कमांडर नेप्लुइयेफने कजाकोंके शत्रुओं—दोन-कमाक, कल्मक, मेस्केरियक, तेंगियर आदि कबीलोंमें सहायता ली। ओरेनबुर्गके अब्बुन (जिलेके अमीर गरियत या धर्माचार्य)ने फतवा दिया, कि रूसियोंके मार भगानेके बाद कजाकोंको वाश्किर खतम कर डालेंगे, इसलिये रूसके खिलाफ नहीं लड़ना चाहिये। रूसी राज्यपालने फतवाका कजाकोमें बटवाया। रूसी दरबारकी सहमतिके साथ उसने कजाक खान और सुल्तानोंको वचन दिया, कि उनके बीचमें रहनेवाले सभी वाश्किर औरतों और बच्चोंको हम इस शर्तपर तुम्हारे हवाले कर देंगे कि तुम उनके पुरुषोंको सीमान्तसे बाहर भगा दो। इस समय विद्रोहके कारण बहुत भारी मर्यामे वाश्किर भागकर यायिक (उराल) नदीके पार चले गये थे। लोभी कजाक ऐसे मौकेसे फायदा उठाये बिना कैसे रह सकते थे, उन्होंने इन सभी अभागों लोगोंको पकड़ लिया। वाश्किर मरदोंमें प्रतिरोध करनेकी शक्ति नहीं थी, उनमेंसे कितने ही मारे गये, और कितनों हीको कजाकोंने पकड़कर रूसियोंके हाथमें दे दिया, और कुछ देश लौट बदला लेनेकी तैयारी करने लगे। रूसियोंने उन्हें भीतर-भीतर सहायता दी। फिर वाश्किर बड़ी संख्यामें यायिक पार हो कजाकोंके ऊपर पड़े। रूसी दोनों जातियोंमें दुश्मनीकी आग भड़काकर चैनकी बर्शा बजाने लगे। वाश्किरो और कजाकोंका झगडा अब रूसियोंके लिये जारी हो गया। अपनी सीमान्तकी रक्षाके लिये जारशाहीने क्या-क्या तरीके इस्तेमाल किये, इसका एक उदाहरण देखिये—अभी रूसी इतने साधन-सम्पन्न नहीं थे कि सीमान्तपर अपने बलपर शांति स्थापन कर सकते। नूरअलीने इसकी शिकायत जब रूसियोंके पास की, तो उन्होंने जवाब दिया—“वाश्किर भगोड़ोंको शरण देनेका यह फल है।”जब वाश्किरो और कजाकोंका खूनी संघर्ष काफी हो चुका, और दोनों जातियां खूब कमजोर हो गईं, तो नेप्लुइयेफने यायिक नदीको दोनोंके बीचमें सीमा निश्चित करके उसे पार करना निषिद्ध कर दिया। थोड़े दिनोंके लिये झगडा रुक गया, लेकिन कबीलोंकी बदला लेनेकी प्रवृत्ति कितने दिनोंतक रुक सकती थी? फिर वह एक दूसरेके इलाकेमें घुसकर लूट-मार करने लगे, यदि सरदार रोकना चाहता, तो उसे काफ़िर रूसियोंका आदमी कहकर बदनाम करते। इसी बीचमें प्रुशिया (जर्मनी) के साथ रूसका सप्तवर्षीय युद्ध छिड़ गया, इसलिये रूसियोंका सारा ध्यान उधर खिंच गया।

१७५७ ई०में कल्मक शासक दोण्डुव-यैचीने नूरअली और क्रिमियाके खानसे कहा, कि आओ मिलकर रूसियोंके ऊपर हमला करें। लेकिन इसी समय चीनियोंने आक्रमण करके जुगर-साम्राज्यको खतम कर दिया, और विजयी चीनी सेनाके कारण रूसी सीमान्त खतरेमें पड़ गया। नूरअली रूसियोंकी शहरपर चीनियोंसे लड़नेके लिये तैयार था, लेकिन चीनी सेना जुगरोंके प्रभावक्षेत्रसे आगे नहीं बढ़ी।

१७५९ ई०में ओरेनबुर्गमें नया रूसी राज्यपाल था, जिसने नूरअलीके साथ उचित शिष्टाचार नहीं दिखलाया, जिसपर कजाकोंने फिर लूट-मार शुरू कर दी, और रूसी भी बदला लेने लगे। एचुवकने जुगारियामें चले चलनेका प्रस्ताव किया। इसकी भनक मिलनेपर रूसियोंने वार्षिक पेशान और दूसरे माम-दानके हथियारोंसे कजाकोंको ठंडा कर दिया, और ओरेनबुर्गके हाकिमोंको हिदायत दी, कि कजाकोंके साथ बहुत अच्छी तरह बर्ताव किया जाय, उनमें उदारताके साथ भेंटें बांटी जाय, जाडोंमें उनके ठोरो और घोडोंके रहनेके लिये गौशालाये और अस्तबल बना दिये जाय। रूसी समझ रहे थे, कि ऐसा न करनेपर कजाक चीनियोंकी सीमान्तकी ओर चले जायेंगे, और लघु-ओर्दूका यह इलाका तथा मध्य-एशियाका वणिक्पथ निर्जन और उजाड़ हो जायेगा।

१७६२ ई० में एकातेरिना II जब गद्दीपर बैठी, तो उस समय नूरअली, एचुवक तथा मध्य-ओर्दू के अवलड खानने भेंटें भेजीं, लेकिन उसी समय नूरअलीने पेंकिगमें भी एक दूतमंडल भेजा, जिसका

वहा अच्छा स्वागत हुआ। इसपर फूलकर नूरअलीने रूसियोंके साथ अपने लोगोकी छेड़छाड़को नहीं रोका। इसके बाद उसने वोल्गा-कल्मकोपर भी आक्रमण किये। उस समय जाडोमे उत्तरी कास्पियन समुद्र जम गया था, इसलिये बर्फपरसे होकर आक्रमण करनेमे उसको सुभीता था। रूसियोंने यायिक नदीकी सीमा निश्चित की थी, लेकिन अब नूरअली उसके पश्चिममें जाडा बितानेकी माग करने लगा। जुगरोके ऊपर विजय प्राप्त करके चीनी सेनाको सामने खड़ी देखकर मध्य-एसियाके मुस्लिम राज्य अपने घरू झगडोको भूलकर थोडे समयके लिये एक हो गये। नूरअली भी उनके साथ था। १७६४ ई०मे नूरअलीने रानी एकतेरिनाको लिखा, कि मध्य-एसियाके मुसलमानोने मुझे निमंत्रित किया है। साथ ही उसने रूसी इलाकेमे लूट-मार भी जारी रखी। १७६५, १७६६ और १७६७ई०मे इस तरहके कई हमले किये। इसके बाद १७७० ई० का वह समय आया, जब कि तोर्गुत-मंगोल वोल्गाके तटको छोडकर पूर्वकी ओर भागने लगे। तोर्गुतोके भागनेमे जहा चीन-सम्राट् और दलाई लामाकी प्रेरणा काम कर रही थी, वहा कजाकोके बार-बारके आक्रमणसे भी वह तग आ गये थे। रूसियोंने तोर्गुतोको रोकनेके लिये नूरअली और उसके कजाकोको कहा। काफिर तोर्गुतोकी लूट-मार मुसलमान कजाकोके लिये पुण्य-अर्जनकी बात थी। नूरअली, उसका भाई एचुवक, खीवा का भूतपूर्व और अब लघु-ओर्दूका एक खान काइप अपने आदमियोंके साथ अभागे प्रवासियोपर टूट पडे। इन भयकर दुश्मनोने चीनी सीमान्ततक उनका पीछा किया। कभी-कभी कल्मकोने भी उन्हे हराया—सागिजके पास कजाकोको भारी हार खानी पडी, लेकिन मुगजर पहाड और इशिम नदी के तटपर कजाकोने अधिक सफलता पाई।

१७७३-७४ ई०मे पुगाचेफके नेतृत्वमे वोल्गाके किसानोने विद्रोह कर रक्खा था, यायिकके कसाक और वाश्किर भी उसके साथ थे। दोनो ही कजाकोके शत्रु थे, इसलिये वह विद्रोहमे शामिल नहीं हुये, हा, देशकी गडबडीसे लाभ उठाकर रूसी बस्तियोंको लूटनेमे वह पीछे नहीं रहे, जिसके लिये १७७४ ई०मे रूसियोंने भी इनकी खूब मरम्मत की। इसी समय नूरअलीके पुत्र पीरअलीको खीवा और सराइचुकके बीचके तुर्कमानोने अपना खान चुना, और उसने खीवा जानवाले कारवासे कर लेना शुरू किया। कजाकोने जो लूट-मार की थी, उसका बदला लेनेके लिये १७८४ ई०मे ३४६२ रूसी सैनिकोने यायिक पार हो असली लुटेरोको न पा दूसरे ४३ कजाकोको पकड लिया, जिसपर सिरिमके नेतृत्वमे कजाकोने भी जवाब दिया। अगले साल (१७८५ ई०) मे दो डिवीजन रूसी सेना यम्वाकी ओर बढी, जिसने २३० औरत बच्चोको पकड लिया, और कजाकोने मजबूर होकर उनके बदलेमे रूसी बंदियोंको लौटाया। कजाकोके साथके झगडोको मिटानेके लिये १६ आदमियोंकी एक विशेष अदालत बैठाई गई, जिसमे ओरेनबुर्गका सेनापति, दो सरकारी, दो व्यापारी, दो किसान इस प्रकार सात रूसी और एक सुल्तान तथा छ मुखिया—सात कजाक, एक वाश्किर और एक मेशकेरी प्रतिनिधि थे। इस अदालतने शांति स्थापित करनेका प्रयत्न किया। रूसियोंने यह भी देखा, कि लडाकू कजाकोको केवल तलवारके बलपर नहीं दबाया जा सकता, इसलिये १७८५ ई०मे ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमे कजाकोके लिये मदरसा, मस्जिद और कारवासराय बनानेका हुक्म दिया। रूसियोंके सामने वही समस्या थी, जो कि हिन्दुस्तान छोडकर जानेतक पश्चिमोत्तर सीमान्तपर अग्रजोके सामने।

१७८५ ई०मे नये राज्यपाल बैरन इगेल्स्त्रोमने कजाकोको दवानेके लिय एक नया तरीका इस्तेमाल किया। उसने लघु-ओर्दूके तीन टुकडे—सेमीरोद्स्क, वेउलिन और अलीमुल—करके उनपर अलग-अलग खान नियुक्त किये, और लघु-ओर्दूके खान पदको उठा देना चाहा। साथ ही कजाकोकी महापरिषद् बुलानेका अधिकार खानके हाथमे न रख सुल्तानो और जेठोके हाथमे दे दिया। लेकिन इस तरह महापरिषद् बुलानेपर अपमान समझकर कोई कजाक सुल्तान उसमे शामिल नहीं हुआ, तो भी परिषद् जमा हुई, और उसका सभापति डाकू नेता सिरिम बातिर बना, जो कि आनुवंशिक कुलीनताका विरोधी था। उसने जोर देकर कहा—हमे खानकी जरूरत नहीं। कुल नहीं योग्यताको देखना चाहिये। रूसियोंकी अधीनता स्वीकार करना ही हमारी भलाईका एकमात्र रास्ता है। उसने रूसियोंने माग की, कि अबुल्खैरके वंशको खान-पदसे वंचित कर दो। रूसियोंने आशिक रूपसे उसकी बात मान भी ली। १७८६ ई०मे उसका अच्छा परिणाम भी दिखाई पडा, जब कि पहलेकी अपेक्षा अधिक पशु

सीमान्तके भेलोमें विकनेके लिये आये और १७८६ और १७८७ ई०में पहलेकी अपेक्षा कम रूसी कजाकोंके बन्दी बने । कजाकोंने पहलेके रूसी बंदियोंको भी भारी सत्याम छोड़ दिया । १७८४ ई०में यायिक (उराल) नदीके पश्चिममें पैंतालीस हजार कजाक परिवारोंने आरामसे जाड़ा बिताया । वातिर (सिरिम) ओरेनबुर्गके राज्यपालका बड़ा ही विश्वासपात्र आदमी हो गया । नूरअलीने उसे विश्वास-घाती बनानेकी बहुत कोशिश की, लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ । नूरअली इसपर ठड़ा पड़ गया । उसने रूसी बंदियोंको लौटा दिया । अन्तमें रुसियोंने उसे परिवार-सहित ऊफामें और एचुवकको उराल्स्कमें भेज दिया ।

नूरअलीके ज्येष्ठ पुत्र एरलीको १७८१ ई०में कराकल्पकोंने अपना खान बनाया था । वह उनके साथ निम्न सिर-उपत्यकामें रहता था । वह थोड़ी-सी सेना लेकर अपने पिताके दुश्मन सिरिम वातिरके ऊपर चढ़ा । इसी समय लघु-ओर्दूके कुछ कबीलोंने भूतपूर्व खीवा-खान काइपको अपना खान बना लिया था, कुछने नूरअली या दूसरेके लिये राज्यपाल इगेल्स्त्रोमके पास आवेदनपत्र दिया था, लेकिन इगेल्स्त्रोम काइपके पक्षमें था, जिससे रानी एकातरिना महमत नहीं हुई । वह चाहती थी, कि खानका पद उठा दिया जाय । मध्य-ओर्दूका आग्रह था, कि नूरअलीको फिर खान बना दिया जाय । वेउलिन कबीलेका मुखिया सिरिम वातिर दो सहायकोंके साथ ओर्दूके एक भागका नेता था । रुसियोंने इन्हें सरकारी पदाधिकारी-सा बनाकर नक्द और अनाजके रूपमें वेतन मुकर्रर कर दिया । कजाक-ओर्दूमें यह सब होते देख पीढ़ियोंसे चले आते खान्दानी अमीर अधिकार-वचित होनेके कारण भीतर ही भीतर जले-भुने हुये थे । इसी समय तुर्कीके साथ रुसियोंकी लड़ाई छिड़ गई, बुखाराने अपने खलीफा और धर्मभाइयोंका साथ दिया और कजाकोंको भी रुसियोंके खिलाफ भड़कानेकी पूरी कोशिश की—“वहादुर योद्धा, वेग और मुखिया सरतइवेग, सिरिम वातिर, शुकुरअली वेग, सादिरवेग, बोर्राक वातिर, देदाने वातिर आदिको मालूम हो, कि हम नें तुर्कीका वादशाह, और अल्लाके खलीफासे सुना है, कि सात ईसाई राज्योंके साथ काफिर हमी तुर्कोंके विरुद्ध एक हो गये हैं । कजाकोंको चाहिये, कि उन्हें दंड देनेके लिये सच्चे मुसलमानोंका साथ दे ।” बुखारा सारे मध्य-एशियाकी काशो थी, जहाके मदरसोंमें पढ़नेके लिये कजाक-कबीलोंके तरुण भी आया करते थे । सिरिमने जवाब दिया, कि मैं और मेरे लोग इस बातकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि कब बुखारा और दूसरे मध्य-एशियाई लोग रुसियोंपर आक्रमण करें, तो हम उनका साथ देंगे । कजाकोंके भीतर क्या हो रहा है, इसका पता रुसियोंको भी था । कजाकोंने फिर लूट-मार शुरू की । उन्होंने अपने जेठोंकी बात नहीं मानी । जेठोंका काम था ओरेनबुर्ग जाकर अपनी तनखा ले आना । रुसियोंकी परेशानीसे फायदा उठाकर कितने कजाको और उनके सुल्तानोंने फिरसे खानके नियुक्त करनेके लिये कहा । १७९० ई० में नूरअली ऊफामें रहते हुये मर गया, तबतक रूसी रानी खानके पदको फिरसे कायम करनेके पक्षमें हो चुकी थी ।

#### ४. एरली, अवुल्खैर-पुत्र (१७९०-९४ ई०)

जनवरी १७९० ई०में रानीके हुक्मसे नूरअलीके भाई एरलीको लघु-ओर्दूका खान बनाया गया । १७९१ ई० में सिरिम वातिरने यम्बाके मुहानेपर सारे लघु-ओर्दूकी परिपद बुलाई, जिसमें यह प्रस्ताव रक्खा, कि सभी कजाक एक होकर रुसियोंपर आक्रमण करें, लेकिन अवुल्खैरके वंशजोंने अपने खान्दानके दुश्मन सिरिमकी बातको विफल करनेकी पूरी कोशिश की । ६ सितम्बरको उसी साल नूरअलीके पुत्र तुर्किस्तान-खान पीरअलीने रूसकी अवीनता स्वीकार करनेके लिये अर्जी दी । काइप-पुत्र अवुल्गाजीने उसे यह कहकर बहुत भड़काया, कि तुम्हें न चुनकर एरलीको खान बनाना अन्याय है । उसने कुरानके वाक्योंको उद्धृत करते हुए यह भी समझानेकी कोशिश की, कि किसी मुसलमानका हिजरत कर ईसाईकी प्रजा होना धर्मविरुद्ध है, इसलिए हमें रूसी प्रदेश छोड़ देना चाहिये । बुखाराका खान मेरा दोस्त है, वहा हमें रहनेको जगह मिल जायगी । इस सबका परिणाम यही हुआ, कि कजाकोंने लूट-मार बढ़ा दी । एरली खानने रूससे सेनाकी मदद चाही, लेकिन वह न मिली । जून १७९४ ई०में एरली मर गया ।

## ५. इशिम, नूरअली-पुत्र (१७९४-९७ ई०)

लघु-ओर्दूके अधिकांश जेठे सहमत नहीं थे, तो भी रूसियोंने इशिम सुल्तानको खान बनाया। सिरिम वातिरने एकाएक नवम्बर १७९७ ई०में आस्नोयास्कके दुर्गपर आक्रमण करके इशिमको मार डाला और उसकी सम्पत्ति लूट ली। सिरिमके अनुयायी कजाक बराबर ऐसा ही करने लगे, जिसका बदला यायिकके कसाकोने १७९७ ई० और १७९८ ई० में आक्रमण करके उनके बहुतेरे आदमियोंको मार हजारो घोड़ोको लूट कर लिया। कुछ ही समय बाद वाशिकरोने भी कजाकोको लूटना-मारना शुरू किया।

## ६ ऐचुवक, अबुल्खैर-पुत्र (१७९७-१८०५ ई०)

इशिमके मारे जानेके बाद लघु-ओर्दूके शासनका भार एक परिषद्के हाथमें दिया गया, जिसका प्रधान ऐचुवकको बनाया गया। इस परिषद्में ओर्दूके प्रत्येक कबीलेके दो-दो प्रतिनिधि थे। इस समय बैरन इगोल्स्त्रोम फिर राज्यपाल होकर आया था। लघु-ओर्दूकी सरकारका केंद्र खोन्दा नदीपर रखना निश्चित हुआ। ओर्दू इस प्रवृत्तिसे सन्तुष्ट नहीं था। उन्होंने फिर अपने लिये खानकी मांग की। रूसियों ने ऐचुवकका समर्थन किया, रुपये-पैसेके बलपर ऐचुवक खान निर्वाचित हो गया और जार पावलने भी स्वीकृति की मुहर लगा दी। ऐचुवक बूढ़ा था। वह कजाकोको काबूमें नहीं रख सकता था। ओर्दूमें अब बिखराव शुरू हुआ। उनमेंसे कुछ कबीले मध्य-ओर्दूमें मिल गये, कुछने सिर नदीके तटपर जाकराकल्पकोको दबाकर काइप-पुत्र अबुल्गाजीको अपना खान चुना। कुछने उस्तउर्तके अधिकांश भागपर अधिकार करके वहासे तुर्कमानोको भगा दिया। नूरअली-पुत्र वकेइ ऐचुवकके परिषद्का सभापति था। उसने गुर्जी-अस्त्राखानके महाराज्यपाल क्नोरिंगके पास प्रार्थनापत्र भेजा, कि हमें कल्मकोद्वारा परित्यक्त भूमि (यायिक-वोल्गाके बीचके इलाके रिन्पेस्की) में रहनेकी इजाजत दी जाय। उनमें व्यवस्था कायम रखनेके लिये सौ कसाक नियुक्त कर ११ मार्च १८०१ ई०के उकाज (राजादेश) द्वारा सरकारने मजूरी दे दी। ये कजाक मुख्यतः बाउलिन कबीलेके थे, जिनकी सख्या दस हजार थी। नई भूमिमें आकर वह खूब फलने-फूलने लगे, और सात-आठ सालके भीतर ही उनके पास पहलेसे दस गुना पशु हो गये, जब कि यायिक पारवाले उनके भाई फूट और भूखकी मारसे अपने वच्चोको रूसियोंके हाथ बेच रहे थे।

१८०५ ई० में बुढापेके कारण ऐचुवकने अपने पदको छोड़ दिया।

## ७ जन्ती उरा, ऐचुवक-पुत्र (१८०५-९ ई०)

नया खान थोड़े ही समयतक रहा, जिसके बाद नूरअलीके एक पुत्रने उसे कत्ल कर दिया। दो सालतक लघु-ओर्दूका कोई खान नहीं बनाया गया। इसी समय १८१० ई०में ओरेनबुर्ग प्रदेशके इलेत्स्क इलाकेमें—जहापर कि नमककी बड़ी अच्छी खाने थी—लाकर बहुत भारी सख्यामें रूसी बसा दिये गये। कजाकोके बीचमें रूसियोंकी वस्तियोंको बसा-बसाकर जारशाही अपने शासनको दृढ़ करती थी, यह हम प्रशान्त महासागरतक फैली हुई रूसी वस्तियोंसे जानते हैं। इस बातमें उनकी नीति, भारतमें अंग्रेजोंसे भिन्न थी। अंग्रेज हिन्दुस्तानमें केवल अपने शासको, सैनिकों और कुछ व्यापारियोंको रखकर शासन और शोषण जारी रखना चाहते थे, जब कि रूसी अपने अधीन पूर्वी देशोंमें भारी सख्यामें रूसी किसानों और मजदूरोंको लाकर बसाते जाते थे।

## ८ शेरगाजी, ऐचुवक-पुत्र (१८१२-४४ ई०)

भाईकी जगहपर शेरगाजी लघु-ओर्दूका खान बना। इसी समय यायिक और वोल्गाके बीचमें बसे वुकेई-कबीलेका भी एक खान वुकेई था। १८२४ ई०में उसके मर जानेपर वुकेईके ज्येष्ठ पुत्र जहागीरको खान नियुक्त किया गया। शेरगाजीके ओर्दूके भी तीन टुकड़े हो गये थे, जिनपर

तीन सुल्तान शासन करते थे। किर्गिज लोगोमें अपने राजवंशके प्रति बहुत सम्मान था, और वह काली हड्डीवाले (साधारण जनता) सफेद हड्डी (पुराने राजवंश) के जूयेको बड़ी खुशीसे उठानेके लिये तैयार थे।

अब कास्पियनके पूर्वी तटपर भी रुमने हाथ-पैर फैलाना शुरू किया था। १८३३ ई०में वहां उन्होंने नवोयलेक्सान्द्रोव्स्की, फिर मगुश्लक (मगिग्लक) किलोको बनाया। १८३५ ई०में यायिक (उराल) और उई नदियोंके बीचमें एक नई दुर्ग-पक्ति बनाई, और इसके बीचमें पड़नेवाली भूमि ओरेनबुर्गके कसाकोंके डलाकेमें मिला दी गई। कुछ ही साल बाद मध्य-ओर्दूके प्रसिद्ध खान केनीसर कासिमोफने साइबेरियाके कजाकोंमें भारी विद्रोह फैलाया, और लघु-ओर्दूके भी कुछ कजाक विद्रोहियोंमें जा मिले। इस विद्रोहने छ सालतक रूसी सरकारको परेशान रखा। १८४४ ई०में रूसी सेनाने कासिमोफका पीछा करके उसे वुरुनो (करा-किर्गिजो) में भागनेके लिये मजबूर किया, जहां उनमें लड़ते हुये कासिमोफ मारा गया। इस विद्रोहके दवानेके प्रयत्नके फलस्वरूप तुरगाई नदीपर ओरेनबुर्ग-किर्गिजपर उरालके किले १८४७ ई०में बने। अगले साल कराबुलात-तटपर उसी नामका एक रूसी किला बनाया गया। रूसी सीमाके भीतर रहनेवाले कजाकोंपर खोकांदी और खीवावाले लूट-मार किया करते थे, जिसके प्रतिरोधके लिये रूसियोंने १८४७ ई०में ही निम्न-सिरपर अराल्स्क (भूतपूर्व राइम्स्क)का किला बनाया। इस प्रकार रूस कदम-कदम आगे बढ़ता जा रहा था, फिर भला कजाकोंके भीतर शांति कैसे कायम हो सकती थी? जबतक इजत कुतेबेरोफको भगा नहीं दिया गया, और प्रसिद्ध वातिर जान खोजा मारा नहीं गया, तबतक दस्त (स्तेपी) में रुमियों और कजाकोंका संघर्ष जारी रहा, फिर कजाक पूरीतीरसे रूसियोंके सरक्षणमें आ गये।

१८६९ ई०में ओरेनबुर्गके दस्तमें नया शासन-सुधार हुआ, जिसके अनुसार सारे लघु-ओर्दूको उराल्स्क और तुरगाई दो जिलोंमें बांट दिया गया। हर एक जिलेमें एक रूसी सैनिक कमांडर रहता था, जिसके अधीन कजाकोंद्वारा निर्वाचित कुछ ओल-जेठे (डेरेके मुखिया) शासन-प्रबंधमें सहायता देते थे। कजाकोंमें इसका भारी असर तोष था, कि उनके ऊपर रूसी कसाक शासन करनेके लिये नियुक्त किये गये हैं। खीवाके खान कजाकोंके खान-वंशके ही होते थे और उनका रूसियोंसे अच्छा संबंध नहीं था। खीवाके खानने कजाकोंके असतोपसे फायदा उठाकर उन्हें भड़काया, जिसके कारण १८६९-७० ई०में मारे दस्तमें विद्रोहकी आग भड़क उठी, डाकके रास्ते नष्ट हो गये। कजाकोंने डाककी चौकियोंको नष्ट कर दिया, मुसाफिरोमेंसे पकड़कर कुछको मार दिया और कुछको दास बनाकर बेच दिया। इसके लिये रूसियोंने घोर दमन किया, और कवीलोको जबरदस्ती जहां-तहां भेज दिया। लेखक स्माइलर १८७३ ई०में तुर्किस्तानमें कजाक राजुल छिड़-गिस्के साथ रहा, जो कि ब्रुकेइयेफ ओर्दूके अन्तिम खानका पुत्र था। पिताके मरनेपर जारने उसे राजुलकी रूसी उपाधि प्रदान की थी, लेकिन वह पक्का मुसलमान था, और हाल हीमें मक्कासे लौटकर आया था। समारा जिलेमें उसे जमींदारी मिली थी। स्माइलरके अनुसार वह बड़ा ही संस्कृत, भद्र पुरुष था। उसका अधिक समय फ्रेंच उपन्यासोंके पढ़नेमें लगता था। लघु-ओर्दू १९वीं सदीके चतुर्थ पादतक पहुंचते-पहुंचते अपने स्वभावमें कितना परिवर्तन कर चुका था, इसका उदाहरण यह राजुल था। लेकिन यह परिवर्तन अभीरो और राजवंशियोंतक हीमें सीमित था, अभी साधारण कजाक-जनता बहुत-कुछ पुरानी दुनियामें रहनेकी कोशिश कर रही थी और बोल्शेविक क्रांतिके बाद ही उसमें वास्तविक सामाजिक क्रांति हुई।

### ग महा-ओर्दू (१७४०-६० ई०)

मध्य-ओर्दू और लघु-ओर्दू रूसी सीमातक पाम रहते थे, इसलिये उनका संबंध बहुत पहले ही से रूसियोंके साथ हो गया था, लेकिन महा-ओर्दू बहुत दूर रहता था, इसीलिये रूसियोंके साथ संबंध बहुत कम रहनेके कारण उनके इतिहासके बारेमें भी हमें बहुत अधिक मालूम नहीं है। महा-ओर्दूके कई कबीले थे, जो अपने अलग-अलग सुल्तान, वेग या खानके अधीन रहते थे। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि सारे कजाक-ओर्दूओंकी तरह यहांपर भी छिड़-गिस् खानके खूनसे संबंध रखनेवाले ही शासकके तौरपर पसंद किये जाते। महा-ओर्दू पहले जुगरोके अधीन था, पीछे उन्होंने चीनियोंकी

## ३. (८ कजाक लघु-ओर्दू-वंशवृक्ष)

(१७१८—१८१८ ई०) जानीवेग

उजियक

वोलियकइ

ऐचुनक

इरिश

१ अदिया (—१७१७)

२ अबुल्खैर (१७१७-४९)

३ नूरअली (१७४९-९०) ४ एरली (१७९०-९४) ६ ऐचुवक (१७९७-१८०५)

५ इशिम (१७९४-९७)

७ जन्तिउरा (१८०५-९)

८ शेर्गाजी (१८१२)

अधीनता स्वीकार की। यद्यपि नाम महा-ओर्दू था, लेकिन सभ्या और प्रभाव दोनोंमें यह श्वेत-ओर्दूके मध्य और लघु-ओर्दूसे निर्वल था। तौफीक (तियाअवका) खानने श्वेत-ओर्दूको तीन हिस्सोंमें बाटकर तिउलको महा-ओर्दूका शासक नियुक्त किया था। १७२३ ई०में जब जुगरोने कजाकोकी भूमि और तुर्किस्तान शहरको ले महा-ओर्दू और मध्य-ओर्दूके कितने ही कबीलोको अपने अधीन किया, तो बाकी वचा हुआ महाओर्दू और मध्य-ओर्दूका कुछ भाग खोजन्दकी ओर चला गया। पीछे कितने ही कजाक उत्तरकी ओर चले गये, लेकिन महा-ओर्दूवाले जुगरोकी प्रजा बनकर अपने पुराने देशमें बने रहे। महा-ओर्दूके निम्न खानोंका पता है —

१ यलवर्स, इलवर्स

१७४० ई०

२ तिउल बी

१७४०-ई०

३ कुसियन बी

१७४२-ई०

## १. एलवर्स (—१७४० ई०)

१७३८ ई०में महा-ओर्दूके खान एलवर्सने रूसियोंसे उनकी प्रजा बनकर व्यापार करने की इजाजत मागी, जब कि मालूम हुआ, कि ओरी नदीपर किलावद नगर बन गया है, और मध्य तथा लघु-ओर्दूके लोग व्यापार करके बड़े मौजमें रह रहे हैं। एलवर्स इस प्रकार ओरेनबुर्गके साथ व्यापार करनेके लाभको देखकर ही रूसी प्रजा बननेके लिये तैयार हुआ। पीछे राजादेश तैयार हो ओरेनबुर्गके अभिलेख-गृहमें आकर यो ही पड़ा रहा। इसी समय जुगर-राजा गन्दनने महा-ओर्दूके प्रत्येक कजाकपर एक छाल कर लगाया। १७३९ ई०में मूलरके नेतृत्वमें एक रूसी कारवा जा रहा था, जिसे महा-ओर्दूके कजाकोने लूटा। मूलरने ९ नवम्बर १७३९ ई०को ताशकन्द पहुँचकर एलवर्ससे इसकी शिकायत की, और लूटे मालको लौटानेके लिये कहा। खानने जवाब दिया—“मैंने दुर्घटनाकी खबर पहले ही सुनी थी, अल्लाका शुक्र करो, जो कि जिन्दा बच गये। मैंने गिरोहके नेता को गिलदेसे माल लौटानेके लिये कहा है, और माल न लौटानेपर उसे दंड देनेकी धमकी दी है। लेकिन मुझे मालके लौटनेकी बहुत कम आशा है।” उस समय ताशकन्दका शासक सईद सुल्तान था, लेकिन कजाक और उनका खान करीब-करीब स्थायी तौरसे ताशकन्दके इलाकेमें डेरा डाले ताशकन्दियोंको मनमाना लूटा करते थे। मूलरके



कारवाके प्रस्थान करनेके चौथे अप्रैल १७४० ई०में दिन सरत नागरिकोंने एलवमेंको पकड़कर मार डाला, जिसका बदला कजाकोने शहरको लूटकर लिया। एलवसके मरनेके बाद उसका साथी तिउल वी सारे ओर्दूका शासक बना।

## २. तिउल वी (१७४०-ई०)

तिउल वीको गायद तौफीक खानने नियुक्त किया था। उसे अधिक दिनोतक शासन करनेका मौका नहीं मिला, और उमे भगाकर गन्दन कुसियन वी छेरिड की ओरमे शासन करने लगा। १७३९ ई०में तिउल वीने रुसियोंकी अधीनता स्वीकार करके अपने खोये अधिकारको प्राप्त करनेका असफल प्रयत्न किया।

## ३. कुसियन वी, कुसियक वी (-१७४२-ई०)

१७४२ ई०में कुसियन वी अव जुगरोके राज्यपालके तौरपर ताशकन्दपर शासन कर रहा था। इस समय यद्यपि कजाकोकी राजनीतिक प्रधानता नहीं थी, लेकिन शहरके चारो ओर जिस तरह वह डेरा डाले पड़े थे, उससे जान पड़ता था, कि मानो नगरका मुहासिरा किये हुये हैं और किसी वक्त भी टूट पड़नेके लिये तैयार हैं। तुर्किस्तान शहरकी भी हालत कुछ समयतक ऐसी ही रही, लेकिन जुगरोकी शक्ति इतनी मजबूत थी, कि वह उनके व्यापारमे कोई बाधा नहीं डालते थे। तुर्किस्तान और ताशकन्द नगरोंके बीचके दीहाती इलाकेपर महा-ओर्दूके कजाकोका स्थायी अधिकार था। जुगरोके दवानेपर कजाक भागकर फरगानामे चले गये, जहा वह वहाके पुराने वाशिन्दोपर प्रभुत्व जमाने लगे, यद्यपि उन्हें बराबर जुगरोका भय बना रहता था। जुगरोके अंतिम सघर्षके समय कजाकोने भी हाथ साफ किया और अमुरसनाके विद्रोह करनेपर ये भी उसके पक्षमे रहे। १७५६-५७ ई०में जुगर-राज्यके पतनके बाद कजाकोकी वन आई, और वह जुगरोकी छोड़ी हुई भूमि सप्तनदमे चले गये। चीनियोंने १७५८ ई०में ताशकन्द लेकर जुगरोकी भूमिमे कजाकोंके बसनेके लिये प्रोत्साहन दिया।

इस समयतक महा-ओर्दूके कई टुकड़े हो चुके थे, इनमेंसे जो जुगारिया लौटे, उनमेंसे कुछ चीन की प्रजा बने हुये थे, और कुछ चीनके विरोधी। दोनों पक्षोमे बराबर लड़ाई होती रहती थी, फिर इनके पड़ोसी वुरुत्त (करा-किर्गिज) भी इन्हें चैनसे रहने देना नहीं चाहते थे। १७७१ ई०में जब तोर्गुत बोल्गा छोड़कर पूर्वकी ओर भाग रहे थे, उस समय अपने दूसरे कजाक भाइयोंकी तरह इन्होंने भी उन्हें खूब लूटा। एरली सुल्तानने तोर्गुत यैची उवासा (उपासक)को बहुत तग किया, और इनके कारण उसे अठारह दिनतक एक जगह डेरा डालके पड़ा रहना पड़ा। इसी बीच एरलीने कल्मकोंके धन और सुंदर स्त्रियोंका लोभ देकर भारी सख्यामे जहादी जमाकर उन्हें चढ़ाया। कजाकोकी शक्तिको देखकर उवासा डर गया। एरलीने उन्हें इली-उपत्यकामें चले जानेकी इजाजत दी। तोर्गुत जब निश्चित हो किसी जगह डेरा डाले हुये थे, उसी समय एरलीने आक्रमण करके भारी सख्यामें मंगोलोंकी निर्मम हत्या की, और कजाक बहुतसा लूटका माल और स्त्री-वच्चे पकड़ ले गये।

ताशकन्द इलाकेमे कुछ कजाक अव स्थायी तौरसे रहने लगे थे, ताशकन्द-शहर तो उनकी दयाका भिखारी था। वह पास-पड़ोसके लोगोंको भी लूटते-उजाड़ते थे, जिसके कारण उनकी प्रजा न होनेपर भी वहाके लोग कर देनेके लिये मजबूर थे। १७६० ई०में लघु-ओर्दूद्वारा सिर नदीके मुहानेसे भगाया कराकल्पकोका एक समूह इनके साथ आ मिला। सालो अत्याचार वर्दाश्त करते-करते १७९८ ई०में ताशकन्दके नागरिक अपने शासक यूनस खोजाके अधीन उठ खड़े हुये, और उन्होंने कजाकोंसे घोर बदला लिया—कजाकोंके सामने उनके भाइयोंका शिर काटकर मीनार (स्तूप) बनवाया। यूनस खानने उन्हें पूरी तौरसे दबाकर ताशकन्दकी शक्तिपूर्तिको भी भरनेके लिये मजबूर किया। हर सौ भेड़ पर एक भेड़ कर वसूलकर उन्हें सेनामें भर्ती होनेके लिये भी मजबूर किया। १८१४ ई०मे जब ताशकन्द खोकन्दके खानके हाथमें चला गया, तो ये कजाक भी खोकन्दकी प्रजा हो गये, लेकिन चिमकन्दके पास रहनेवाले कजाकोंमेंसे कितनी हीने अपने घरों और वागोंको छोड़कर चीनी सीमाके भीतर जाना पसंद किया। कुछ अपने स्थायी निवासके जीवनको न पसंदकर मध्य-ओर्दूके पास इतिश-तटपर चले

गये, और कुछ अकताग पहाड़की ओर। उनका एक भाग कितने ही समयतक सेमेरेक (सप्तनद), कुम्ह, और करातालके इलाकोमे स्वतंत्र विचरता रह १८१९ ई०मे रुमके अर्बान बना। इस समय उनका शामक मध्य-ओर्दूके खान अवलइका पुत्र मिउक था, जिसकी राजधानी अल्माअता थी, इमे रूसियोने वेर्नोय (वर्द्धा) नाम दिया था—जो वोल्गेविक क्रांतिके बाद फिर अल्माअता बन आजकल कजाकिस्तान गणराज्यकी राजधानी तथा एक समृद्ध नगरी है। मिउक मुल्तान महा-ओर्दूके सबसे बड़े कबीले दोगलत (दूलत) का शामक था। रुमी उमे ३५० रूबल पेन्शन देने थे। रुमी अफसर वेनीड-कोफने एक बार मुल्तानसे कहा—“मैं नहीं समझता, तुम्हारे लोग तुम्हे अपना शामक पाकर खुश हैं ?” इसपर बूढ़ेने जवाब दिया—“ऐसा मत कहो, मैं तो पादिशाह (जार)की आज्ञाके अनुसार अपने लोगोंपर शासन करता हूँ, अल्ला जारकी रक्षा करे।”

रुमी अफसरने फिर कहा—“तुम बड़े नम्र हो मुल्तान ? हम सभी सम्राट् (जार)की डच्छाका अनुमरण करना चाहते हैं, और वेर्नोयके हर एक आदमीको बैसा करना चाहिये, लेकिन मुल्तान तुम्हारा ओर्दू तुम्हारी बात मानता है, इसलिये उनका बादशाहका भक्त होना तुम्हारे ऊपर निर्भर करना है।”

“मेरे लोगोंको बादशाहका हुक्म मानना छोड़कर ओर कुछ नहीं करना चाहिये। जिन्हे बादशाहने हमारे ऊपर नियुक्त किया है, वह उनकी आज्ञा मानते हैं। हम यहा दो हाथोंकी तरह साथ-साथ रहते हैं—तुम रुमी लोग दाहिने हाथ हो, हम बाये, और राज्यपाल प्रिन्सोफ हमारा मिर है। यह बुरा होगा, यदि बाया हाथ दाहिनेकी आज्ञा नहीं माने, या दोनों ही मिरके कहेको न मानें।”

महा-ओर्दूके कुछ कजाक-परिवार रानी एकतेरिनाके उकाजे (राजादेश)के अनुसार अपने मुल्तान चुरिगेइके साथ चार हजार परिवारोंको ले १७८९ ई०मे उस्तकामेन्नोगोर्स्कमे बस गये, और १७९३ ई०मे महा-ओर्दूके कितने ही कजाक अपने मुल्तान तुगुमके साथ साइबेरियाके सीमातपर जा बसे। कजाकोंको अपनी ओर खींचनेके लिए चीनी नाममात्रका कर लगाते थे। भेडोंपर प्रति-हजार एक और ढोरोपर प्रतिशत एक कर लेते थे। कजाक कितनी ही बार पेकिङ जाते, और उन्हें सम्राट्-की ओरसे बहुत-बहुत इनाम मिलते। रुमी भी उनको अपनी ओर खींचना चाहते थे। कजाक अब भी अपने अक्खडपनको छोड़नेके लिये नैयार नहीं थे। सीमातपर कर मागनेपर एक चीनी अफसरको एक कजाकने कहा था—“घास और पानी अल्लाने बनाये हैं, और पशु उमीका दान है। हम उनकी चरवाही करते हैं, फिर हम क्यों किसीको कर दे ?”

लेकिन कजाक बहुत दिनोंतक अपना अक्खडपन नहीं चला सकते थे। रुमी गोले-गोलियोंके सामन उन्हें मिर नवाना ही पड़ा। अवलइ-जैसे साहित्य आर मस्कृतिके नेताओंने रूसियोंमे मौखिक अपनी कजाक जातिमे प्रकाश फैलानेकी कोशिश की, लेकिन उसमे सफलता १९१८ ई०के बाद ही हुई, जब कि वोल्गेविक क्रातिने उन्हें समानताका अधिकार दे नये भविष्यके निर्माणमे हाथ बटानेके लिये निमंत्रित किया।

### स्रोत ग्रन्थ

१. History of Mongol (H. H. Howorth)
२. Medieval Researches from Eastern Asiatic Sources (E. Bretschneider, London 1888)



# भाग ४

दक्षिणापथ



## अध्याय १

# जारशाहीका अन्तिम प्रसार

(१८०१-१९१७ ई०)

पावल I के शासनके वारेमे कहते हुये हम बतला चुके हैं, कि १८ वी सदीके अन्तमे रूस अव युरोपकी एक सबसे बड़ी शक्ति माना जाता था। पावलकी हत्याके बाद उसका लडका अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा।

## १ अलेक्सान्द्र I, पावल I-पुत्र (१८०१-२५ ई०)

अलेक्सान्द्र अपनी दादी एकातेरिना II की देख-रेखमे युरोपीय शिक्षा-दीक्षामे पला था। एकातेरिनाने एक गणतन्त्री स्विस-विद्वान् लहार्पको अलेक्सान्द्रका अध्यापक नियुक्त किया था, जो उसके साथ गणतन्त्रताकी बातें किया करता था। उधर प्रुशिया (जर्मनी) की सैनिक-कला उसके खूनमे थी। पीतर-बगके समाप्त होनेपर जर्मनीसे लाकर जो जार और उनकी सताने रूसी सिंहासन पर बैठाये गये थे, वह अपने जर्मन होनेका अभिमान करते रूसियोंको हीन दृष्टिसे देखते थे। अलेक्सान्द्रकी घनिष्ठता जेनरल अरक्चेयेफसे भी पहले ही स्थापित हो गई थी, जो कि किसानोंकी अर्ध-दासताका जवर्दस्त पक्षपाती था। नये जारके वारेमे लोगोका कहना था—“वह आधा स्विट्जर्लैंडका नागरिक और आधा प्रुशियाका जमादार है।” लेकिन अरक्चेयेफ जैसे अर्ध-दासताके पक्षपाती चाहें कितना ही चीखें-चिल्लाये, १९ वी सदीके आरम्भके साथ रूसमें पूजीवादका प्रभाव और कारखानोंका विस्तार जोरसे होने लगा, जिससे खेतीके अर्ध-दासोंकी नही, बल्कि कारखानोंके मजदूरोंकी आवश्यकता बड़ी। व्यापारने नदियों और समुद्रोंके सस्ते जलपथोंके महत्त्वको बतलाया, जिसके लिये कृत्रिम जलपथोंके बनानेकी ओर ध्यान जाना जरूरी था। १८०३ ई०मे उत्तरी-एकातेरिना-नहर बनाकर कामा और उत्तरी द्वीना नदियोंको मिला दिया गया। अब उत्तरी द्वीनासे नौकाये वोल्गामे आने-जाने लगी। १८०४ ई०मे ओगिन्स्की नहर बनाई गई, जिसने वाल्तिक और काला सागरको मिला दिया। अलेक्सान्द्रके शासनकालके प्रथम दस वर्षोंमे मारीडिन्स्क और तिखविनकी नहर-प्रणाली बनकर तैयार हो गई, जिनके द्वारा रूसके भीतरी भागोका सबध वाल्तिक समुद्रसे हो गया। नहरोंके साथ-साथ व्यापारके सुभीतेके लिये बकोंकी भी स्थापना होने लगी। १७८६ ई०मे पीतरबुर्गमे राजकीय ऋण-बक स्थापित हुआ था। इससे सरकार और जमींदारोंको फायदा था। १८०७ ई०में मास्कोमें व्यापारिक बककी स्थापना हुई। अब मास्को, आर्खान्गेल्स्क, तगनरोग और प्योदोसिया (क्रिमिया) में कितने ही बक-केन्द्र स्थापित हो गये। मालकी भाग अधिक होनेसे उद्योग-धन्वोंको बढ़नेका मौका मिला। १८०४ ई०में चुकदरकी चीनीके सात कारखाने काम कर रहे थे, जब कि १८१२ ई०में उनकी संख्या तीस हो गई। १८०८ ई०मे पहली सूती कताई मिल स्थापित हुई। १८१२ ई०में जितने कारखाने चल रहे थे, उनमेंसे बासठ प्रतिशत व्यापारियोंके थे, और केवल सोलह प्रतिशत के स्वामी जमींदार थे। इस प्रकार अब औद्योगिक पूजीवाद रूसमें पैर बढाता जा रहा था।

शासन-सुधार—१८वी सदीके अन्तमे फ्रांसीसी क्रांति हो चुकी थी, जिनके प्रभावको दवानेके लिये जार पावलने बड़ी कोशिश की थी। उसके पुत्रको मालूम हो गया था, कि शासनमें बिना सुधार किये क्रांतिको रोका नहीं जा सकता। जब अलेक्सान्द्र अभी युवराज ही था, तभी उसने

लाहार्पको एक पत्रमे लिखा था—“देशको स्वतन्त्रता दूगा, और इस प्रकार मैं उसे पागलोंके हाथका खिलौना नहीं बनने दूगा।” गद्दीपर बैठते ही अलेक्जान्द्रने घोषित किया, कि मैं अपनी दादी एकातेरिना II के विधानों और उसके भावोंके अनुसार शासन करूंगा। उसने जो सुधार किये, उनके द्वारा दो सालमें एक किसान अर्ध-दा-को फायदा हुआ। इन अर्ध-दासोंको मुक्ति पानेके लिये पांच हजार रूबल जमींदारको क्षति-पूर्ति देनी थी। भला इतना पैसा गरीब किसान कहाँ लेते ?

अलेक्जान्द्रके सुधारोंमें एक था १८०२ ई०में आठ मंत्रालयोंकी स्थापना। इसके पहले एकातेरिनाके शासकीय विभाग काम कर रहे थे। शिक्षाकी ओर भी नये जारने कुछ ध्यान दिया। १९ वीं सदीके आरम्भमें मास्को और दोरपतमें दो विश्वविद्यालय मौजूद थे, १८०५ ई०में खरकोफ और कजानमें नये विश्वविद्यालय स्थापित हुये, और १८१९ ई०में पहलेसे मौजूद केन्द्रीय-शिक्षण-प्रतिष्ठानको फिरसे संगठित करके पेत्रबुर्ग (लेनिनग्राद) विश्वविद्यालय स्थापित किया गया। इसी समय शिक्षा-मंत्रालयकी स्थापना हुई। लेकिन साथ ही अलेक्जान्द्र शिक्षाके खतरेको भी समझता था, इसीलिये मुद्रणपर अकुशल रखनेके लिये पुस्तकोंको छापनेमें पहिले उनके हस्तलेख सेसर को दिखला लेनेका नियम बनाया।

नेपोलियनसे युद्ध (१८०५-७ ई०)—अलेक्जान्द्र उस समय जार हुआ, जब कि १७९२-९३ ई०की फ्रेंच-क्रांति समाप्त हो गई थी, और उसके बाद नेपोलियनने माँकेसे फायदा उठाकर अपनी विजय-यात्रा शुरू कर दी थी। वाणिज्य और बाजारके सबधमें इंग्लैंड और फ्रांसकी उस समय बड़ी प्रतिद्वंद्विता थी, जिसका प्रभाव तत्कालीन भारतमें भी देखा जा सकता था। इसका व्यापार अधिकतर इंग्लैंडके माथ था, इसलिये अलेक्जान्द्रने गद्दी मनालते ही इंग्लैंडमें मित्रताकी संधि कर ली, और बापके समयमें जो अंग्रेजी जहाज रोक रक्खे गये थे, उन्हें मुक्त कर दिया। लेकिन नेपोलियनकी शक्ति उस वक्त बहुत जबरदस्त थी। यदि बीचमें ब्रिटिश चैनलकी खाड़ी न होती, तो नेपोलियनके चंगुलसे इंग्लैंड नहीं बच सकता था। इसपर भी १८०२ ई०में आमिनकी संधिद्वारा इंग्लैंडने नेपोलियनमें वापस पानेकी कोशिश की। लेकिन यह मित्रता या युद्धविराम अधिक समयतक नहीं टिक सकेगा, यह इंग्लैंड भी जानता था, इसलिये उसने आस्ट्रिया, रूस और स्वीडनमें शत्रुके खिलाफ सैनिक मित्रताकी संधि कर ली। इंग्लैंडको भारत-जैसी बनकी खान और दुनियाका व्यापार मिला था, इसलिये चांदीके भरोसे वह अपनी युद्ध लड़नेके लिये दूसरोंको तैयार कर रहा था, जैसे कि, आजकलका अमेरिका। इंग्लैंड और रूसकी इस संधि का एक मतलब यह भी था, कि नेपोलियनको हराकर फ्रांसके पुराने राजवंश बरब को फिर गद्दीनशीन किया जाय, और सामन्तवादियोंके शासनको फिरसे स्थापित करके पूँजीवादियोंकी सफलताको खतम किया जाय।

अगस्त १८०५ ई० में रूसी सेनापति कतुजोफकी अर्धानतार्में एक बड़ी सेना युरोपमें नेपोलियनके विरुद्ध भेजी गई। उस समय नेपोलियन अपनी डेढ़ लाख सेनाके साथ इंग्लैंडपर आक्रमण करनेके लिये तैयार था। कतुजोफ जिस वक्त जर्मनी (बेवेरिया) के नगर ब्राँनौमें पहुँचा, तो मालूम हुआ, कि आस्ट्रियाकी मुख्य सेनाने हथियार रख दिये हैं। नेपोलियनकी विशाल सेनाके पाँचव ही भागके बराबर कतुजोफकी सेना थी, इसलिये लौटनेके सिवा उसके लिये और कोई चारा नहीं था। लौटनेमें भी जो कौशल रूसी सेनापतियोंने दिखाया, वह अद्वितीय था। रूसी सेनापति बगरातियोंके पास छ हजार सेना थी, जिसे तीस हजार फ्रेंच सैनिकाने शोनग्रावेनमें घेर रक्खा था। बगरातियोंका सेना बड़ी बहादुरीने लड़ी और फ्रेंच-भक्ति तोड़कर निकलनेमें सफल हुई। इस वीरताके उपलक्षमें उन सारे सैनिकोंक “पाँचके प्रति एक”के अभिलेखके साथ बाहोपर फीता प्रदान किया गया। सबसे बड़ी लड़ाई आस्टलिज़ (वोहीमिया) में २ दिसम्बर १८०६ ई० को हुई, जिसमें एक ओर नेपोलियनकी नव्वे हजार सेना थी, और दूसरी ओर रूस और आस्ट्रियाक छियास हजार। सेनापति इस समय आरम्भ करनेके लिये जार दिया। २ दिसम्बर १८०५ ई० को मधेरे कुहरा पड़ रहा था, जब कि रूसी फौजाने फ्रेंच सेनाके दाहिने पक्षपर असफल आक्रमण किया। रूसी और आस्ट्रियन सेनाये दूर तक विपरीत हुई थी, इसलिये नेपोलियनके प्रत्याक्रमणको वह बर्दाश्त नहीं कर सकी, तो भी रूसी

सैनिकोंने लडाईंमे जो बहादुरी दिखाई थी, उसके बारेमें नेपोलियनने खुद कहा—“ऑस्ट्रिज (चेकोस्लावाकिया) में रूसियोंने जैसा भारी पराक्रम दिखलाया, वैसा मेरे विरुद्ध हमारे किसी युद्धमें नहीं दिखलाया गया।”

१८०६ ई० के शरदमें अलेक्सान्द्रने अपने मित्र प्रुशिया (जर्मनी) की सहायताके लिये सेना भेजी, लेकिन नेपोलियनने येनामें आक्रमण करके प्रुशियन सेनाको तितर-वितर कर दिया। बर्लिनने बिना लडाईंके ही अपनेको नेपोलियनके हाथमें समर्पित कर दिया, और १८०६-८ ई० में दो वर्षों तक वह नेपोलियनके सैनिकोंके हाथ में रही। जनवरी १८०७ ई० में नेपोलियन वरमावा (पोलैंड) में दाखिल हुआ। रूसी-सेनाको भी उसने दो जगह जबर्दस्त हार दी, जिसमें १८०७ ई० के ग्रीष्ममें फ्रीडलैंडकी लडाईंमें रूसी सेनाका पचमाश नष्ट हो गया। जून १८०७ ई० में जारके वास्ते इसके सिवा कोई चारा नहीं था, कि नेपोलियनकी विजय और उसके सम्राट् पदको तिलजितकी सविद्वारा स्वीकार करे।

नेपोलियन चाहता था, कि इंग्लैंड यूरोपकी दूसरी शक्तियोंसे सहायता न पा सके। इसके लिये उसने दूसरे देशोंका इंग्लैंडके साथ व्यापार करना मना कर दिया। रूस तकने नेपोलियनकी निषेध-आज्ञाको मानते हुये इंग्लैंडको अपना अनाज भेजना बंद कर दिया, लेकिन इससे इंग्लैंडको नहीं, बल्कि स्वयं रूसके बड़े जमींदारोंको अनाजके न बिकने या मस्ता हो जानेमें भारी क्षति उठानी पड़ रही थी, जिससे रूसमें आर्थिक संकट पैदा हो गया। तो भी रूस नेपोलियनको नाराज करनेकी हिम्मत कैसे कर सकता था ?

डमी बीच (१८०८-९ ई०) रूस और स्वीडनमें लडाईं छिड़ गई। नेपोलियन रूसकी शक्ति को अपने फायदेके लिये इस्तेमाल करना चाहता था। उसके कहनेपर रूसने इंग्लैंडके साथ अपना कूटनीतिक संबंध तोड़ लिया था, और उसीके शह देनेपर रूसने स्वीडनके खिलाफ यह युद्ध घोषित किया। स्वीडनका यही कसूर था, कि उसने नेपोलियनकी आज्ञा न मानकर इंग्लैंडके साथ मित्रताका संबंध कायम रखा। फरवरी १८०८ ई० में रूसी सेनाने मीमात पार किया। उस समय फिनलैंड स्वीडनके हाथमें था। १८०८ ई०के अन्त तक फिनलैंडको लेकर रूसी सेना स्वीडनकी भूमिमें दाखिल हो गई। १६ मार्च १८०६ ई० को, जब कि स्वीडनके साथ घनघोर युद्ध हो रहा था, अलेक्सान्द्रने फिन्-मसको वोगा नगर में बुलाकर बचन दिया, कि फिनलैंडके विधानको हम पूरी तौरसे मानेंगे। इसी समय फिनलैंड रूसका एक प्रदेश घोषित हुआ, और तबसे बोल्शेविक-क्रांतिके समय (१९१७ ई०) तक वैसा ही रहा। ५ सितम्बर १८०९ ई० को संधि करके स्वीडनने फिनलैंडपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया। नेपोलियनके आदेशानुसार इंग्लैंडके घिरावेमें यूरोपके दूसरे देशोंने साथ देना स्वीकार किया।

नेपोलियन जानता था, जब तक रूसको अपने हाथमें नहीं किया जाता, तब तक उसकी विजय अवूरी रहेगी। बीचके समयमें नेपोलियनने रूसके बारेमें बहुतसी जानकारी प्राप्त की, और आक्रमण करनेके लिये पोलैंडको आधार-भूमिके तौरपर तैयार करता रहा। इसपर जारने नेपोलियनमें माग की, कि पोल-राज्यको फिरसे जीवित करनेकी कोशिश न करे, और दरेदानियाल तथा कान्स्तान्तिनोपलपर रूसके अधिकार करनेके साथ सहमत हो। नेपोलियनने इसे स्वीकार नहीं किया। मुलहके लिये नेपोलियन और जारने आपसमें मुलाकात करके भी बातचीत की, लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। नेपोलियनने मोल्दाविया और बलाचियाका रूसके हाथमें जाने देना स्वीकार किया। इसी बीच १८१० ई०में उसने हालैंडको अपने राज्यमें मिला लिया, और रूसके विरोधकी कोई परवाह नहीं की। रूस समझने लगा, कि नेपोलियन माँकेकी ताकतमें है, इसलिये उसने १८०६ ई०से चली आती तुर्कीकी छेड़छाड़को आगे बढ़ाना चाहा। यूरोपके युद्धक्षेत्रमें रूसियोंके हारकी बात सुनकर तुर्कीकी भी हिम्मत बढ़ी, और उसने अपने छिने हुये कालासागर-तटवर्ती पश्चिमी काकेशस-प्रदेशको रूससे ले लेना चाहा। शांति और मुलहकी बात बेकार गई, क्योंकि तुर्की जानता था, कि इन समय रूसकी प्रधान सेना यूरोपमें फसी हुई है। तब भी रूसी सेनाने नवम्बर १८०६ ई० में दन्यूबकी ओर आक्रमण करके बेसराबिया, मोल्दाविया और बलाचियाके तुर्की प्रदेशोंको ले लिया। रूसी प्रगतिको दन्यूब तटवर्ती तुर्की किलोंने नहीं रोक पाया। ८ मई १८२२ ई०को बुखारेस्तकी संधिके अनुसार



तुर्कीने ब्रेमरावियाके ऊपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और साथ ही खातिन, बन्दर, अकर-मान और इस्माइलके किशोरों भी उनके हवाले कर दिया। रूसने पोती और अखलकलाकी तुर्कीको लौटा दिये। तुर्कीमि इस तरह छुड़ी पाकर रूस अब नेपोलियनके आक्रमणका जवाब दे सकता था।

नेपोलियन रूसको विश्राम लेने देना नहीं चाहता था। वह रूसकी ओर अपनी मेना भेजकर मई १८१२ ई० में स्वयं भी ड्रेसडनमें नीमन नदीकी ओर चल पड़ा। २४ जून (पुराना १२ जून) १८१२ ई० को नेपोलियनने हिटलरकी तरह बिना युद्ध-घोषणाके ही रूसपर आक्रमण कर दिया। नेपोलियनके पास जहाँ पाच लाख मेना थे, वहाँ रूसकी कुल सेना एक लाख अस्सी हजार थी। हिटलरकी सेनाकी तरह नेपोलियनकी मेनामें जर्मन, इतालियन, स्वीस, क्रोवात, स्पेनिश आदि युरोपकी सभी जानियोंके सैनिक थे। इतनी बड़ी सेनाके साथ सामने होकर लड़ना अवकृषी थी, इसलिये रूसी सेनाने कमसे कम सघर्ष करते हुये पीछे हटने को पसंद किया। नेपोलियनकी सेना आगे बढ़ती अगस्तमें स्मोलेन्स्क पहुँची। उसकी तोपोंने अहरपर तेरह घंटे गोलावारी की, मारा नगर जलने लगा। नेपोलियनके विरुद्ध रूसियोंने उभी नीतिका पालन किया, जिसे एक मी तीस वर्ष बाद उन्होंने हिटलरी आक्रमणके समय किया। आक्रमणकी गतिको धीमा करनेके लिये कहीं-कहीं लड़ते रूसी पीछेकी ओर हटते गये, और साथ ही नेपोलियनको परित्यक्त भूमिमें खाने-पीने-रहनेकी कोई चीज न मिल सके, इसके लिये अपने घरोंमें अपने हाथसे आग लगाते गये। स्मोलेन्स्कके निवासी भी अपने घरों और सम्पत्तिमें अपने हाथों आग लगाकर वहाँमें चल दिये। उस समयके रूसमें प्रतिभागाली पुरुषोंकी कदर बहुत कम होती थी, क्योंकि जार-वंश एक विदेशी वंश था, जो रूसियोंसे अधिक अपने जर्मन मन्त्रियोंको मानता था। सुवारोफकी उपेक्षाके वारेमें हम कह चुके हैं। कतुजोफकी प्रतिभाकी भी उतनी कदर नहीं की गई, लेकिन नेपोलियनके इस भयंकर आक्रमणके समय जार अलेक्सान्द्रको मजबूर होकर ६७ वर्षके बूढ़े कतुजोफको सारी रूसी सेनाका महासेनापति नियुक्त करना पड़ा।

राजकुमारों मिखाइल ईगारियोन-पुत्र कतुजोफ सुवारोफका योग्य शिष्य था। २९ वर्षकी उमरमें क्रिमियामें तुर्कीके साथ लड़ते हुये उसकी एक आख जाती रही। वह मुशिक्षित था, बहुत-सी विदेशी भाषाओंको जानता था, और युद्ध-विद्यापर युरोपकी भिन्न-भिन्न भाषाओंमें जितनी पुस्तकें प्राप्य थी, उनका उमने गम्भीर अध्ययन किया था। १८१२ ई० में महासेनापति नियुक्त करते हुये भी जार अलेक्सान्द्रने अपने एक दरबारीसे कहा था—“लोग उसकी नियुक्ति चाहते थे, इसलिये मैंने नियुक्त कर दिया, लेकिन व्यक्तिगत तौरसे मैंने उससे अपना हाथ धो लिया।” नेपोलियनकी सेनाये अब मास्कोको ओर बढ़ रही थी। मास्को उस समय रूसकी राजधानी नहीं था, लेकिन उसका महत्व पीतरबुर्ग राजधानीमें भी अधिक था, क्योंकि वही व्यापारका सबसे बड़ा केंद्र था। कतुजोफको वगरातिथान जैसे हमारे योग्य सेनापति मिले थे। वगरातिथानने युद्धके वारेमें कहा था—“यह साधारण युद्ध नहीं बल्कि लोक-युद्ध है।” सचमुच ही मारी रूसी जनता उस वक्त अपने देशके लिये सब कुछकी बाजी लगाकर नेपोलियनके आक्रमणोंसे लड़ रही थी। रूसी ही नहीं, बल्कि वाशिकर, कल्मक, तारतार आदि जानियोंके सैनिक भी साथ-साथ बहादुरी दिखला रहे थे। लड़नेसे भी ज्यादा नेपोलियनकी कठिनाइया इसलिये बहुत बढ़ गई थी, कि रूसी रास्तेके गांवों, नगरों या खंडी फसलोंमें कोई चीज उनके लिये नहीं छोड़ते थे। २३ सितम्बर १८१२ ई० में नेपोलियनने रूसी सेनापतिके पास इस तरहके “वर्तमानपूर्ण और अमाधारण” युद्धके तरीकेका विरोध करते हुये शांति करनेका प्रस्ताव किया। उसने जब इस बातपर जोर दिया, कि “लडाईमें युद्धके सर्वस्वीकृत नियमोंको पालन करना चाहिये,” तो कतुजोफने जवाब दिया—“लोग तुम्हारे इस युद्धको तारतार (मगोल) आक्रमण जैसा समझते हैं। इसीलिये वह प्रतिरोधके सभी तरीकोंको इस्तेमाल कर रहे हैं।” जार और दरबारी चाहते थे, कि नेपोलियनमें जमकर लडाई हो, लेकिन कतुजोफका कहना था, काल और देश (दूरी) की महायताने ही हम दुश्मनको हरा सकते हैं। यदि मास्को भी शत्रुके हाथमें चला जाय, तो उसके लिये भी हमें तैयार रहना चाहिये, क्योंकि हमें मास्को नहीं रूसकी रक्षा करनी है। नेपोलियनकी सेनाको भारी क्षति हो रही थी। वह चाहता था, कि कतुजोफ लड़नेके लिये तैयार हो, ताकि युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनाकी रौंद तोड़ दी जाय, लेकिन कतुजोफ अपनी निश्चित की हुई जगहपर ही लड़ना चाहता

था। ५ सितम्बर (२३ अगस्त) की रातको सेवर्दिनो गावमे एक छोटीसी रूसी सेनाने डटकर लड़ाई करके उस युद्धका आरम्भ किया, जो कि ८ सितम्बर (२६ अगस्त) के प्रात काल मास्कोसे ९० किलोमीटरपर अवस्थित बोरोदिनो गावके ऐतिहासिक युद्धके रूपमें हुआ। युद्धक्षेत्रमे ११२ हजार रूसी सैनिक थे, जिनके अतिरिक्त सात हजार कसाक और दस हजार नागरिक सैनिक भी शामिल हुये थे। नेपोलियनके पास अब एक लाख तीस हजार सेना और ५८७ तोपे रह गई थी। युद्धमे वगरातियों घायल होकर अन्तमे मर गया। वेहोश होनेसे पहले उसके मुहसे अन्तिम शब्द निकले थे—“हमारे आदमी कैसे हैं?” उसने “डटे हुये हैं” जवाब सुनकर प्राण छोडा। पीतर इवान-पुत्र वगरातियोंन एक गुर्जी-वशका सैनिक था, जिसे सुवारोफ़के चरणोमे बैठकर युद्धविद्या सीखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यद्यपि बोरोदिनो में रूसी नेपोलियनकी सेनाको हरा नहीं सके, लेकिन उसके सालो बाद अपने मृत्युसे जरा सा पहले नेपोलियनने स्वीकार किया था—“मैने जितनी लड़ाइया लड़ी, उनमे सबसे भयकर लड़ाई वह थी, जं मास्कोके पास हुई। फ्रासीसियोने अपनेको विजयके योग्य यदि साबित किया, तो रूसियोको भी अजेय होनेका अधिकार वही प्राप्त हुआ।” रूसी महान् कवि लेर्मन्तोफने बोरोदिनोके वारेमें लिखा था —

“उस दिन शत्रुने अच्छी तरह समझा  
कि हम रूसी सिपाही कैसे लडते हैं—  
भयकर हाथसे हाथ  
घोडे और आदमी एक साथ लडते,  
और तो भी तोपोंकी गडगडाहट।  
हमारी छातिया वैसे ही काप रही थी,  
जैसे वहा धरती कापती थी।  
फिर पहाडों और मैदानोमे अधिकार छाया,  
तो भी हमें अभी फिर लडना था।”

बोरोदिनोमें रूसी सेनामें पराजितकी तरह भगदड नहीं मची, बल्कि वह सुव्यवस्थित रीतिसे मौजाइस्क होते मास्को पहुची। १४ सितम्बर १८१२ ई० को मास्कोके पास फिली गावमे कतुजोफने युद्धपरिपद् की। सेनापति लडनेके पक्षमे थे, लेकिन कतुजोफने यह घोषित करते हटनेका हुक्म दिया—“मास्कोका हाथसे जाना रूसका हाथसे जाना नहीं है।” १४ (२) सितम्बरके सवेरे रूसी सेना मास्को छोडकर बाहर जाने लग। मास्कोके नागरिक भी जो कुछ साथ ले जा सकते थे, उसे लेकर पैदल या गाडियोपर नगरसे निकल पडे। रातको मास्कोमें आग लग गई। हवा तेज थी, जिसने लकडीके मकानोमें चिनगारी फेक-फेककर सारे नगरको जला दिया, जिससे फ्रेच सैनिकोको खुलकर लूटनेका मौका नहीं मिला। आग छ दिनोतक जलती रही। मास्को नेपोलियनके हाथमें था। लेकिन जला-भुना आश्रयहीन मास्को जल्दी ही शुरू होनेवाले जाडेसे उसकी सेनाको कैसे बचा सकता था? नेपोलियनने बहुत कोशिश की, बहुत बार जार अलेक्सान्द्रको सधि करनेके लिये लिखा, लेकिन जारने उसका जवाब भी देना पसद नहीं किया। जाडा भयकर रूप लेता जा रहा था, उसके कारण सैनिकोकी हालत खराब होती जा रही थी। नेपोलियनको अब कतुजोफके युद्ध कौशलका पता लगा, और उसने मास्को छोडनेका निश्चय कर लिया।

१८ (६) अक्तूबरके सवेरे सात बजे नेपोलियनने मास्कोसे हटना शुरू किया। उसने क्रेमलिनको बारूदसे उडा देनेका हुक्म दिया, लेकिन वर्षाके कारण कितने ही पलीते भीग गये थे, इसलिये क्रेमलिनका एक मीनार तथा दीवारका कुछ भाग ही नष्ट हो पाया। नेपोलियनको लौटते समय अब कतुजोफकी सेनाका मुकाबिला करना था, जो बीच-बीचमें फ्रेंच सेनापर भयकर प्रहार कर रही थी। रास्तेके नगर और गाव बिल्कुल उजाड थे। घोडोंको मारकर खानेके सिवा नेपोलियनकी सेनाके लिये प्राण बचानेका कोई उपाय नहीं था। भुखमरीके साथ-साथ बीमारीने भी अपना आक्रमण कर दिया था। रास्तेपर पडी आदमियो और घोडोंकी लाशो नेपोलियनके लौटनेका परिचय दे रही थी।

सैनिकोंके अतिरिक्त हसी गोरिल्लोंने नेपोलियनकी सेनाके नाकमे दम कर दिया था। सदीं अब इतनी बड़ गई थी, कि भूखे फ्रेच सिपाही गाड़ियों, घरोंके सामानों या मकानोंमें आग लगाकर उनमें बचनेकी कोशिश करते थे। लेकिन यह केवल हमी जाऊ नहीं था, जिसने कि १८१२ ई० में शत्रुकी सेनाको नष्ट किया। उस सालका जाड़ा ओझाकृत नरम था, १२ सेंटीग्रेड हिमबिन्दुमें नीचे तक ही चार-पाच दिन तापमान गया था। इससे वही अधिक सदीं १७९५ ई० और १८०३ ई० में हुई थी, जिसको कि सहते हुये नेपोलियनकी सेनाने हार्लेड आदिके युद्ध लड़े थे। दिसम्बरके अन्ततक जब वह बरेजिना नदीको पार हुई, तो नेपोलियनकी महामेना अब तीस हजार रह गई थी। नेपोलियन अपनी सेनाको वही छोड़ जल्दी-जल्दी पेरिसकी ओर दौड़ा। अभी उसे अपने अन्तिम दिन देखने थे। १८१३ ई०की शरदमें लाइपजिकमें मित्र-शक्तियोंने नेपोलियनको हराया, फिर मित्र-सेनायें जार अलेक्सांद्र I के नेतृत्वमें मार्च १८१४ ई० में पेरिसके भीतर दाखिल हुईं। क्रांति द्वारा अपसारित बूरवों राजवंशको फिरसे फ़्रान्समें प्रतिष्ठापित किया गया, नेपोलियनको एल्व द्वीपमें निर्वासित कर दिया गया। आगेकी बातोंका फैमला करनेके लिये मई १८१५ ई० में वीना की कांग्रेस हुई, जिसमें पोलन्दके बहुत बड़े भागको “सदाके लिये” इसके हाथमें दे दिया गया। अभी कांग्रेस चल ही रही थी, कि नेपोलियन एल्वमें भागकर पेरिस पहुँचा, और वह फिरसे अपनी खोई शक्तिको हाथमें करने लगा, लेकिन सौ दिन बीतते-बीतते अंग्रेज और जर्मन सेनाओंने बाटरलूके मैदानमें उसे अन्तिम तौरमें हराकर हेल्लेना द्वीपमें भेज दिया, जहाँ वह १८२१ ई० में मर गया। फ़्रांसके सिंहासनपर अठारहवा लुई बैठाया गया। फ़्रेंच-क्रांतिने मुकुट-धारियोंकी जो दुर्दशा की थी, उसमें युरोपके सभी राजाओंमें आतंक छा गया था। जार अलेक्सांद्रने फिर ऐसा मौका न देनेके लिये आस्ट्रिया और प्रुशियाके राजाओंके साथ मिलकर १८१५ ई० में पवित्र-सन्धिके नाममें एक समझौता किया। नेपोलियनके हारनेके बाद अब युरोपमें सब जगह हमी जारकी तुनी बोल रही थी। कार्ल मार्क्सने पवित्र-सन्धिके बारेमें कहा था—“यह युरोपके सभी राज्योंपर जारकी प्रधानताका ही दूसरा नाम था।”

सुधार—यह बतला आये है, कि तरुणईमें जारको लाहार्प जैसे प्रगतिशील विचारोंवाले अव्यापकके सम्पर्कमें आनेका मौका मिला था। इसके अतिरिक्त अपने शासनके आरम्भिक दिनोंमें जारपर स्पेरन्स्की जैसे एक प्रतिभाशाली व्यक्तिका भी प्रभाव पड़ा था। स्पेरन्स्की एक गावके ईसाई पुणेहितका लड़का था। उसकी शिक्षा पीतरबुर्गकी एक धार्मिक पाठशालामें हुई थी। अपनी अमावारण प्रतिभाके कारण वह एक मामूली क्लर्कमें बढ़ते-बढ़ते राज्यसचिव हो गया। निम्नजनकी सन्धिके बाद स्पेरन्स्की जारका प्रधान सलाहकार था। इसकी शक्तिको दृढ़ करनेके लिये उसने यह जरूरी समझा, कि शासनमें सुधार किया जाय। १८०९ ई०में स्पेरन्स्कीने “राज्य-विवानोंका महितीकरण” के नामसे एक सुधार मनौदा तैयार किया। इन सुधार द्वारा वह चाहता था कि नामन्तशाही राजतन्त्रकी जगह बूज्वा राजतन्त्र स्थापित हो, तथा “विज्ञान, व्यापार और उद्योग” की रक्षा की जाय। उसने कहा—“दुनियाके इतिहासमें ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलता, कि नव-शिक्षित और व्यापारप्रधान जाति अधिक दिनोंतक दासनामें रहे।” स्पेरन्स्कीने सुझाव पेश किया था, कि सभी सम्पत्ति रखनेवाले लोगोंकी एक राज्यदूमा (मसद्) बुलाई जाय, जिसके लिये हरएक वोलोस्त (पर्गना) के सम्पत्तिवाले चुनकर एक वोलोस्त-दूमा बनायें, फिर वोलोस्त-दूमाओंके सदस्य ओकुग (जिले) की दूमाके सदस्योंका चुनाव करें, फिर ओकुग-दूमाओंके सदस्य गुवर्निया (प्रदेश) की दूमाओंका निर्वाचन करें, और गुवर्नियाकी दूमायें राज्य-दूमाके सदस्योंको निर्वाचित करें। इस प्रकार चार जगहोंने होकर चुनाव किया जाय। बिना राज्यदूमा और राज्यपरिषद् की स्वीकृतिके कोई विधान पान न किया जाय। शासन-प्रबंध सचियोंके हाथमें रहे, जो दूमाके सामने जवाबदेह हों। इसमें शक नहीं, आजसे सवा सौ वर्ष पहलेके लिये स्पेरन्स्कीका कानूनी मनौदा प्रगतिशील था। लेकिन सत्ताधारी जमींदार उसे क्यों पसन्द करने लगे? वह स्पेरन्स्कीको “बदमाश”, “क्रांतिकारी” और “कामचेल” कहकर बदनाम करने। उनके विरोधके कारण मजबूर हो अलेक्सांद्रने मनौदेको अस्वीकार कर दिया, और उसकी जगह अपने नियुक्त किये सदस्योंकी एक राज्य-परिषद् १८१० ई०में स्थापित की। राज्यपरिषद् का काम जारकी केवल सलाह देना भर था। यह राज्यपरिषद् १८१० ई० से १९०६ ई० तक बनी रही।

मंत्रियोंकी सख्या अबसे आठकी जगह ग्यारह कर दी गई थी—पुलिस, संचार और राज्य-नियंत्रण के तीन और मंत्रालय स्थापित किये गये। राजुलो और जमींदारोंने प्रसिद्ध इतिहासकार तथा भारी जमींदार न० म० करमजिनके नेतृत्वमें मांग की, कि स्पेरन्स्कीसे इस्तीफा लिया जाय। करमजिनने इन सुधारोंकी जगह “पचास अच्छे राज्यपालों” को नियुक्त करनेकी सलाह दी। स्पेरन्स्कीके प्रयत्नके असफल होनेपर तुर्की और नेपोलियनके बड़े युद्धोंके भीतरसे रूसको गुजरना पड़ा।

नेपोलियनके पतनके बाद जार समझता था—यूरोपके भाग्य और व्यवस्थाकी जिम्मेवारी मेरे ऊपर है। देशके भीतर अरक्वेयेफकी सलाहको मानकर जार सारा काम करता था। लोग अरक्वेयेफको कितनी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, यह पुश्किनकी निम्न कवितासे मालूम होगा —

वह सारे रूसको अपनी एडीके नीचे पीस रहा है,  
ढाँचेपर बैठा वह चक्का चलाना जानता है।  
जारका राज्यपाल और मुद्राघर स्वामी,  
उसका मित्र और बिल्कुल जमुआ भाई,  
बदला लेनेके लिये, घृणाके लिये भरा,  
मस्तिष्कहीन, हृदयहीन और बिल्कुल सम्मानहीन,  
कौन है यह “सच्चा अनतिशयोक्तिपूर्ण, वीर” ?  
एक सिपाही, नहीं वह तो उसे छू भी नहीं गया।

उसने सैनिक बस्तिया बसाई थी। किसानोंको जबर्दस्ती इन बस्तियोंमें रहकर जन्मजात सिपाहीका काम करना पड़ता था। रूसके पश्चिमी सीमातपर १८२० ई०के आसपास ३७५ हजार सैनिक किसानोंकी बस्तिया बसी थी। किसान इस जबर्दस्तीको बर्दाश्त नहीं करते थे, जिसके कारण कितने ही विद्रोह हुये। अरक्वेयेफने इन विद्रोहोंको बड़ी निष्ठुरतापूर्वक दबाया। अलेक्सान्द्र I को जब इन बस्तियोंको अनावश्यक कहकर रोकनेके लिये कहा गया, तो उसने जवाब दिया—“हर हालतमें सैनिक बस्तिया मौजूद रहेंगी, चाहे इसके लिये हमें पीतरबुर्गसे चूदवा तकके सारे रास्ते (७० किलोमीटर ५० मीलसे ऊपर) लाशोंसे भी ढाक देना पड़े।”

काकेशस-विजय—१८०१ ई०में पूर्वी गुर्जोंको रूसने ले लिया था। इसके बाद जारको सारे काकेशस-प्रदेशपर हाथ साफ करनेका ख्याल आया। इस काममें एक गुर्जी (जार्जियन) अमीर राजुल त्सित्सियानोफ जारका भारी सहायक था। १८०२ ई०में अलेक्सान्द्रने उसे उधरकी सेनाका मुख्य-सेनापति नियुक्त किया। उसने काकेशसके छोटे-छोटे राजाओंको जीतकर रूसमें मिलाना शुरू किया। १८०४ ई०में त्सित्सियानोफने येरेवान (अरमनी)के राज्यपर चढ़ाई की। दो महीनेतक येरेवानके दुर्गको घेर रखनेके बाद उसे असफल लौटना पड़ा। १८०५ ई० के अन्तमें उसने बाकूके खानके विरुद्ध अभियान किया। बाकूका महत्त्व इसलिये भी ज्यादा था, कि उसे आधार बनाकर ईरानके विरुद्ध सैनिक कार्रवाई की जा सकती थी। खानसे उसने किलेकी चाभी मांगी, लेकिन खानने धोखेसे मारकर गुर्जी राजुलका सिर ईरानके युवराजके पास भेज दिया। पर बाकू बच नहीं सका, और १८०६ ई० की शरदमें वह रूसका अंग बन गया। इसके बाद उसी समय पड़ोसी कूवाके खानको भी रूसियोंने जीता। रूसियोंने इन जीते हुये छोटे-छोटे राज्योंका दो प्रदेश—एलजाबेतापोल और बाकू—बना दिया। जारके रास्तेमें ईरान और तुर्की बाधा दे रहे थे, रुपये-पैसे दे इंग्लैंड और फ्रांस उनकी पीठ ठोक रहे थे। ईरानने रूसके विरुद्ध १८०५ ई०में युद्ध-घोषणा की, और तुर्कीने १८०६ ई० के अन्तमें। यह युद्ध कई सालों तक चलते रहे। ईरानी और तुर्की सेनाने कई बार करारी हारे खाई। ईरानने अतमें दागिस्तान और गुर्जोंको रूसके हाथमें देना स्वीकार किया, और कास्पियन समुद्रमें सैनिक जहाज न रखनेका भी वचन दिया। तुर्कीके साथका लड़ाई मई १८१२ ई० में वुखारेस्तकी संधिके साथ समाप्त हुई, इसे हम बतला आये हैं। तुर्कीने पश्चिमी गुर्जीपरगें अपने दावेको हटा लिया, जो रूसकी कुतुंसी गुर्वनिया बन गई। ईरानके साथका युद्ध १८१३ ई०में खतम हुआ, जिसमें इंग्लैंडने भी तत्परता दिखलाई, क्योंकि वह चाहता था, कि हम उधरमें मुक्त होकर दोनोंके दुश्मन

नेपोलियनके खिलाफ अपनी सारी शक्ति लगाये। १८१३ ई० की गुलिस्तान-संधि के अनुसार आजकल-के रूसी आजुर्वाइजानको ईरानने सदाके लिये जारके हाथमें दे दिया।

**वोल्गाके लोग**—वोल्गाके वाशकिर, चुवाश, मोर्दवी, तारतार आदि जातिया लडाकू स्वभाव-की थी, इसलिये उन्होंने आसानीसे रूसी जूयेको अपने कंधेपर नहीं रक्खा। रूसियोंने उनके भीतर अपने शासनको दृढ़ करनेके लिये कई तरीके इस्तेमाल किये। इन इलाकोंकी उर्वर भूमिकी रूसी जमींदार अपने हाथमें करके उनपर अपना रोव कायम करते, कहीं-कहीं रूसी किसानोंको भी ले जाकर उनके भीतर बसाते, जो कि किसानोंके साथ-साथ सैनिकका भी काम देते। इसके अतिरिक्त ईसाई पादरियोंको जबरदस्ती ईसाई बनानेकी भी छूट थी। नये बने ईसाइयोंको काफी प्रलोभन भी दिया जाता था। कितनी ही जगहोंपर प्रत्येक नवईसाईको एक सलेव, एक खवल और एक सफेद कमीज दी जाती थी। तारतारों और दूसरोंके सरदारों और सुल्तानोंको ईसाई-धर्म न स्वीकार करनेपर कितनी ही बार अपने असामियोंसे वचित कर दिया जाता था। इनके अतिरिक्त निम्न-वोल्गाके किनारे ले जाकर जर्मन किसानोंको बसा दिया गया। रूसी जार ऊपरसे रूसी थे, नहीं तो उनकी सारी मनोवृत्ति जर्मन थी, इसीलिये जर्मन शिक्षितों, सैनिकों और दरबारियोंके प्रति ही नहीं, बल्कि साधारण जर्मनोंके प्रति भी उनका विशेष पक्षपात था। १८ वीं सदीके उत्तरार्धमें वोल्गाके दोनों किनारोंपर सरातोफमें और दक्षिण तक जगह-जगह जर्मन प्रवासियोंके गांव बसने लगे थे। १७६३ ई०में एकातेरिना II ने विशेष राजघोषणा निकालकर बाहरसे रूसमें लोगोंको आनेका निमन्त्रण दिया था, जिसके अनुसार बीस हजारसे अधिक विदेशी—अधिकांश जर्मन आकर वोल्गाके किनारे बस गये। इन प्रवासियोंको प्रति परिवार तीस देमियातिन (अस्सी एकड़) जमीन तथा कुछ नकद ऋण भी दिया जाता था। कजाकों और कल्मक घुमन्तुओंको रोकनेके लिये उन्हें इनसे लाकर बहुतसे कसाकोंको वोल्गाके पूर्वमें बसा दिया गया था। इस प्रकार हम देख रहे हैं, कि वोल्गा और उसके पूर्वकी एसियाई जातियोंपर अपने शासनको मजबूत करनेके लिये जारशाहीने रूसी ही नहीं, युरोपके दूसरे देशोंके साधारण लोगोंको भी लाकर बसाना जरूरी समझा। इसपर भी वाशकिर, तारतार, चुवाश आदि जातिया हथियार रखनेके लिये जल्दी तैयार नहीं हुईं।

साइबेरियाके लोगोंको जमींदारी या अर्ध-दासता प्रथा क्या है, इसका पता नहीं था। उनके पड़ोसी कजाक और दूसरी जातिया मौका पाकर उनके आदमियोंको पकड़कर दास बनाकर बेच देती थीं। रूसियोंने उनके भीतर भी पहुचकर अपने शोषणके नये तरीकेको जारी किया। १८१२ ई० से स्पेरन्स्की जारके मनसे उतर गया था, लेकिन १८१९ ई०में जारने उसे साइबेरियाका महाराज्यपाल बनाकर भेजा। स्पेरन्स्कीने वहां जाकर कुछ सुधार किये, लेकिन इसी समय साइबेरियाके लोगोंको जबरदस्ती ईसाई बनानेका काम भी आरम्भ हुआ, जिसमें मिशनरियोंने लोभ, धमकी हर तरहमें काम लिया।

**भौगोलिक अभियान**—नेपोलियनके युद्धोंमें सम्मिलित होकर रूस और वातोंमें भी दूसरे देशोंसे क्यों पीछे रहने लगा? अब उसने भी अपने भौगोलिक अभियान भेजने शुरू किये। १८०३-६ ई० में आदम क्रूजेन्स्तने जहाज द्वारा पृथिवी-प्रदक्षिणा की। उस समय रूस अपने समूरी छालोका व्यापार चीनके साथ स्थलमार्गसे क्याखता होकर करता था। क्रूजेन्स्तने सोचा, जलमार्गसे इसे और सस्तेमें किया जा सकता है, इसके लिये १८०३ ई०के ग्रीष्ममें उसने एक सामुद्रिक अभियानकी योजना बनाई और वह जलान्तिक समुद्र पार हो दक्षिणी अमेरिकाका चक्कर काटते प्रशान्त महासागरमें पहुचा। फिर काम्च का और जापानके तटसे वह एसिया और अफ्रीकाके बाहर-बाहर होते अतलान्तिकमें लौटा। इस अभियानने सखालिन, काम्चत्का, कूरिल और एलूतियान द्वीपोंके किनारोंकी खोज-पडताल की, और उत्तरी अमेरिकाके उत्तर-पश्चिमी किनारोंको भी देखा-भाला। अपनी पुस्तकमें क्रूजेन्स्तने इस यात्रा का वर्णन किया। १८०९-११ ई० में एक दूसरे अभियानने हेदेनस्ट्रोमके नेतृत्वमें ध्रुवीय समुद्र के बीचमें नवसिवेरीय द्वीपोंकी जाच-पडताल की। १८१० ई० में इसी अभियानके एक मदस्य मपिन्कोफने इन द्वीपोंके सबसे उत्तरवाले द्वीपका पता लगाया, और यह भी दावा किया, कि वहां नवमार्ग है, जिसे मोनियतकालीन अभियानोंने गलत बतलाया। १८१५-१८ ई० में “रूरिक”

जहाजने काम्चत्का, चुकोत्स्क और बेरिंग जलडमरूमध्यके बारेमें विशेष खोज-पड़ताल की। १८२१-२४ ई०में प्रसिद्ध रूसी नाविक लिट्केने काम्चत्का और चुकोत्स्कका पहला नक्शा बनाया। १८२०-२४ ई०में रेंगलके नेतृत्वमें एक अभियान गया, जिसने साइबेरियाके उत्तरी तटकी लेनासे बेरिंग जलडमरूमध्य तक जाच-पड़ताल की।

**दिसम्बरी-विद्रोह (१८२६ ई०)**—नेपोलियनकी पराजयके बाद जारका प्रभुत्व और प्रभाव बहुत बढ़ गया। जारने यद्यपि फ्रेंच-क्रांतिके रूपमें ऊपर आनेवाली नई शक्तियोंको दवानेकी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले रखी थी, लेकिन वह विचारोंको कैसे रोक सकता था? अब रूसमें कल-कारखाने भी खुलने लगे थे। १८०४ ई० में जहा रूस में २४२७ कारखाने और ९५००० मजदूर थे, वहां १८२५ ई० में ५२६१ कारखाने और २११ हजार मजदूर हो गये थे। पुराने हस्तशिल्प और कुटीरशिल्पकी जगह अब कारखानोंकी चीजे बाजारोंमें आ रही थी। उधर १८ वी सदीके मध्यसे ही रूसी कुलीन घरानोंमें फ्रेंच भाषा और साहित्यका जोर हो चला था, और फ्रेंच साहित्यके साथ फ्रेंच-क्रांतिके विचार देनेवाले साहित्यिकोंकी कृतियोंका भी प्रचार हो रहा था। जार साधारण रूसी जनताका ही देवता नहीं था, बल्कि उसके सामने राजुलो और अमीरोंको भी घुटने टेककर दंडवत् करनी पड़ती थी। शिक्षित अमीर तरुण जब फ्रेंच प्रगतिशील साहित्यके प्रकाशमें देखते, तो उन्हें यह असह्य मालूम होता। उनमेंसे कितने ही पश्चिमके देशोंको घूमने जाते, और वहांके जीवनके सम्पर्कमें आते, जिससे उन्हें रूसकी पुरानी जारशाही बुरी लगती। फ्रेंच-क्रातिने फ्रांसमें ही एक नये भावको पैदा नहीं किया, बल्कि उससे बल्कान, इटाली और स्पेन सब जगह जातीय स्वतंत्रताकी लहर फैली। दिसम्बरी विद्रोहियोंके नेता पेस्तेलने लिखा था—“यूरोपके एक छोरसे दूसरे छोरतक वही एक बात घटित हो रही है, पोर्तगालसे रूसतक सभी देशोंमें—जिसके अपवाद इंग्लैंड या तुर्की भी नहीं हैं। सुधारकी शक्तिया, कालकी मांगें चारों ओर आदमीके दिमागको उत्तेजित कर रही हैं।” चूंकि शिक्षाका प्रसार अभी अमीरों और कुलीनोंमें ही था, इसलिये नये विचारोंके वाहक भी वही थे। इन्हीं क्रांतिकारी कुलीनोंने रूसमें परिवर्तन लानेके लिये गुप्त राजनीतिक समितियां संगठित की। ऐसी पहली समिति १८१६ ई० में स्थापित की गई, जिसका नाम था “पितृभूमिके सच्चे और भक्त पुत्रोंकी सभा”, अथवा “मुक्ति-सघ”। कर्नल अलेक्सांद्र मुरावयोफ इस समितिका संस्थापक था। इसके बीस और सदस्य थे। इसका उद्देश्य था—किसानों को अर्ध-दासतासे मुक्त करना और रूसमें वैधानिक राजतन्त्रकी स्थापना। इसके जल्दी ही दो दल हो गये, जिनमें एक दल नरम था और दूसरा गरम। गरम दलवालोंका नेता कर्नल पावल इवान-पुत्र पेस्तेल (१७९३-१८२६ ई०) था। दो साल बाद (१८१८-२१ ई०) “समृद्धि-सघ” के नामसे एक और सभा स्थापित हुई, जिसकी कितनी ही शाखायें जगह-जगह खोली गईं। इनमें सबसे अधिक क्रांतिकारी दक्षिणी शाखा थी, जिसे कर्नल पेस्तेलने उक्रेनके तुलचिन नगरमें संगठित किया था। समृद्धि-सघने पेस्तेलके प्रभावमें आकर अपनेको गणराज्यके पक्षमें घोषित किया। मास्कोमें जनवरी १८२१ ई० में सघका सम्मेलन हुआ, जिसमें नरमदली सदस्योंने डरकर सघको वद कर देनेकी घोषणा की, लेकिन पेस्तेलने इसे नहीं स्वीकार किया और उसने “दक्षिणी सम्मिलनी” (१८२१-२५ ई०) के नामसे एक नया संगठन स्थापित किया, जिसमें पेस्तेल, दाविदोफ आदि कई प्रमुख व्यक्ति शामिल थे। पेस्तेल सुशिक्षित तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति था। समकालीन महाकवि पुष्किनने उसके बारेमें लिखा था—“पेस्तेल पूरे अर्थोंमें चतुर पुरुष हैं। जहां तक मैं जानता हूँ, वह सबसे मौलिक विचारोंका आदमी हैं।” पेस्तेल १८१२ ई०में नेपोलियनकी सेनासे लड़ते बोरोदिनोके युद्ध-क्षेत्रमें घायल हुआ था। १८१३-१५ ई०के विदेशी अभियानों में भी पेस्तेल रूसी सेनाके साथ था। वोल्तेर, दिदेरो, रूसी जैसे बहुत से यूरोपीय विचारकोंके ग्रंथोंका उसने गम्भीर अध्ययन किया था। पेस्तेलने रूसके वैधानिक सुधारका एक प्रोग्राम “रूसक्या प्रा दा” (रूसी सत्य अधिकार) के नामसे बनाया था, जिसके अनुसार सशस्त्र क्रांति द्वारा रूसका एक अखंड गणराज्य कायम करना था। उमका प्रस्ताव था राजवंशके सभी जादमियोंको मार डाला जाय, इसके बाद एक कामचालू सरकार घोषित की जाय। शासनके लिये उसने तीन उच्च संस्थाओंका निर्माण होना आवश्यक समझा था विधान-संस्था—नरोदनये वेचे (लोकसभा), प्रशासन-संस्था—देसाव्नया दुमा

(राज्यदूता) और निरीक्षक मन्थ्या—बैलों की सवोर (उच्चतम सभा) । वोटका अधिकार सम्पत्ति और शिक्षा दोनोंपर निर्भर है । सभी नागरिकों को समान अधिकार और समान स्वतन्त्रता का देते हुये समाज के भीतर के विभाजन को बंद किया जाये । “कम्बुया प्राज्ञा” ने घोषित किया था, कि जमींदारों को बिना क्षति-पूर्ति के दिये किमानों और उनकी जमीन को मुक्त कर दिया जाय । पेन्सेलने जो वार १८१० ई० में घोषित की थी, वहा तक अभी १९५५ ई० के भारतीय भूमिमुधारक भी जाने के लिये तैयार नहीं है ।

१८०२ ई० में पीतरवर्गमे भी एक क्रान्तिकारी मन्थ्या “उत्तरी मम्मिलनी” स्थापित की गई, जो कि १८०५ ई० तक मौजूद रही । इस मम्मिलनीका मुखिया निकिना मुरावयोफ (१७९८-१८२३ ई०) था, जो कि जारको गारदका एक अफसर था । १८१२ ई० में तरुण मुरावयोफ घरमे भागकर मेनामे भरती हो इसी मेनाके साथ दूसरे देशोमे लडाई लडता रहा । इसने नेपोलियनके खिलाफ लडाइयोमे भाग लिया था । पेरिसमे रहते उसने निर्वाचन होने देखा । वही उसने क्रान्तिकारी पुस्तकोंका भी एक संग्रह किया । देश लौटनेपर वह क्रान्तिके संगठनमे जुट गया । “उत्तरी मम्मिलनी” के सदस्योंमे कवि कोव्साकी फ्योदोर-पुत्र रिलेयेफ (१७९५-१८२३ ई०) भी था । १८०३ ई०में “उत्तर तारा” नाममे एक पत्रिका निकाली, जिनमे उसने जारके कृपापात्र अरक्खेयेफके अव्याचरणकी खूब खबर ली । जल्दी ही वह और उसका पत्र जनप्रिय हो गया । १८०३ ई० में वह “उत्तरी मम्मिलनी”में शामिल हो १८ दिसम्बर १८०५ ई० के विद्रोहकी तैयारीमे पूरी तौरसे जुट पडा । वह कहता था—“मे कवि नहीं, बल्कि एक नागरिक हू ।”

नवम्बर १८२५ ई० में जार अलेक्सान्द्र I एकाएक तगन्रुक्मे मर गया । इस प्रकार दिसम्बरी विद्रोहकी तैयारी हो जानेपर भी वह अलेक्सान्द्रके समय नहीं हो सका । अलेक्सान्द्रका कोई पुत्र नहीं था, इसलिये उनके भाई कन्स्तन्तिनको सिंहासन मिलना चाहिये था, लेकिन उसने अलेक्सान्द्रके जीवन-काठ ही मे अपने अधिकारको त्याग दिया था, इसलिये जारके तीसरे भाई निकोलाइ I को गद्दी मिली ।

चीनमे सफल—जरेन्सान्द्रको यूरोपका ही नहीं बल्कि पूर्वमे प्रशान्त महासागर तक फैले अपने साम्राज्यका भी व्याप था । उसने गोलोउकिनके नेतृत्वमे १८०५ ई०में एक बड़ा दूतमंडल पेरिकु भेजा । सीमानपर चीनियों ने वहाना बनाकर देर तक दूतमंडलको रोके रक्खा । आगे बढनेके पहले इसी राजदूतने मांग पेय की, कि चीन-सम्राट्के चित्रके सामने माष्टाग दंडवत् (होती) करो । राजदूतने यह कहकर उसे माननेमे इन्कार कर दिया, कि हाठ हीमे अंग्रेज राजदूतको कौता (माष्टाग दंडवत्) करनेमे मुक्त कर दिया गया है । इस वहानेमे उन्होंने इसी दूतमंडलको आगे बढने नहीं दिया और उसे वहींमे लौट जाना पडा । अगले साल १८०३ ई० में कुजेन्सनको जपानमे दो इसी जहाजोने कालिन पहुच अपने मालको वहा उतारा । इसकी खबर पाकर राजधानीमे हुक्म जाया, कि इसियोंको स्थलमार्गमे ही व्यापार करनेका अधिकार है, उन्हें सामुद्रिक मार्गसे व्यापार नहीं करने दिया जा सक्ता, इसलिये उनके जहाजोंको रोक लिया जाये । लेकिन पेरिकुकी आज्ञाके आनेमे पहले ही इसी जहाज वहाने बिदा हो चुके थे ।

रूसके एशियाके विस्तारमे पेरमन (१५७१-८४) आर खवारोफ (१६५४) दो प्रमुख व्यक्तियोंके बारेमें हम बतला चुके हैं । १० वीं सदीमे रूसके प्रभावको माइवेरियामे दृष्ट करनेका काम मुराव्योफने किया ।

## ० निकोलाइ I, पावल I-पुत्र (१८२५-५५ ई०)

एग नने “इसी तारखाहीकी वैदयिक नीति” पर लिखते हुये १८९० ई० में इस जारके बारेमें कहा था—“एक अद्वितीयानिमानो आदमी था, जिसका दृष्टिक्षेत्र एक जमादार (कम्पनीके अफसर) ने जितना दूर तक नहीं जाता था । वह ऐसा आदमी था, जो कि क्रूरताकी शक्ति, हठधर्मको मनोमत्त सज्जता था । सबसे अधिक जो चीज उसको पसंद थी, वह था शक्तिका प्रदर्शन ।”

निकोलाइ प्रुनियाके सैनिकवादका सभी जारोंने अधिक पसंद की थी । उसकी बीबी चार्लोत्का वाप

प्रुशियाका राजा फ्रेड्रिक विल्हेल्म III था, जिसका भी उमे और उसकी बीबीको बहुत अभिमान था। सिपाहियोंको निष्ठुरतापूर्वक कवायद-परेड कराके कठपुतली बना देनेको वह सैनिक विज्ञानका बहुत भारी कौशल मानता था। उस क्रूर, मदबुद्धि और अभिमानी आदमीने कभी पुस्तक नहीं पढ़ी। उसने अरक्वेयेफकी शासन-व्यवस्थाको पूरी तौरसे कायम रक्खा। लेकिन, निकोलाइके लिये सर मुडाते ही ओले पड़े। उसे बापके समयसे भीतर ही भीतर पकती क्रांतिका मुकाविला करना पडा। वह इसके बारेमे कहता था—“पड़्यत्रियो और पड़्यत्री नेताओ के विरुद्ध (मेरा) युद्ध अत्यन्त क्रूर और निर्दयता-पूर्ण होगा। मैं उसके लिये कोई बात उठा नहीं रखूंगा। मेरा कर्तव्य है, कि रूस और युरोपको इसके बारेमे शिक्षा दू।”

उसने क्रांतिकारियोंको निर्मम होकर शिक्षा दी भी, जिसमे उमे इस बातका सुभोना था, कि क्रांतिकारी अभी नौसिखिये थे, अभी वह दृढतापूर्वक अपने कामपर डटे नहीं थे। क्रांतिकारियोने २६ (१४) दिसम्बरको विद्रोह करनेका दिन निश्चित कर रक्खा था, जिस दिन कि नये जारके प्रति शपथ लेनी थी। उस दिन (२६ दिसम्बर १८२५) सबेरे दिसम्बरी अफसरो द्वारा संचालित रेजिमेंट सीनेटके मैदानमे एकत्रित हुई, तीन हजारसे ऊपर विद्रोही सैनिक और नौसैनिक पीतर I के स्मारकके चारो ओर जमा हुये, लेकिन वह निष्क्रिय रहे, क्याकि अभी विद्रोहके बारेमे क्रांतिके नेता अनिश्चित-से मालूम होते थे। अन्तिम क्षणमे क्रांतिका अविनायक सेगेंड ब्रूवेत्स्की मैदानमे नहीं आया और विद्रोही बिना नेताके रह गये, जिसके कारण उनका संगठित बल खतम हो गया। निकोलाइ I कायर तो था ही, पहले वह हिचकिचाता रहा, लेकिन जब उसको विद्रोहियोंकी अवस्थाका पता लगा, तो अपने विश्वास-पात्र सैनिको और तोपचियोंको बारह बजे मैदानमे भेजा। तमाशा देखनेके लिये कितने ही मजदूर, कारीगर और नगरके गरीब मैदानमे जमा हो गये थे। उस समय रूसका सबसे बडा गिर्जा ईसाइकी मजोर बन रहा था। मजदूरोंमे भी इतना जोश आ गया था, कि उन्होंने जारके सैनिकोंको अपने पास पड़े लकड़ीके कुदो और डडोंसे मारा। लेकिन मालूम हो गया, विद्रोही आक्रमण करनेके लिये तैयार नहीं है। किसी भी विद्रोहमे आक्रमणकी नीति सबसे लाभदायक होती है, क्योंकि उसमे थोडेसे भी आदमी बहुसंख्यक शत्रुको घबराहटमे डाल सकते हैं। जारके हुक्मपर सवारोंने आक्रमण किया। विद्रोही सैनिकोंने गोलियोंकी वर्षा करके उन्हें भगा दिया। गोलियोंके अतिरिक्त समझा-बुझाकर भी शांत करनेकी कोशिश की गई। आखिर किसी भी निरकुश शासनकी आधारशिला सैनिक अफसर हैं। जब उनमे विद्रोहकी भावना पैदा हो गई, तो भविष्यके लिये क्या विश्वास किया जा सकता है? ईसाई सघराजने समझानेकी कोशिश की, लेकिन विद्रोही सैनिक उसकी बातको माननेके लिये तैयार नहीं थे। फिर पीतरवुर्गके महाराज्यपाल मिलोरदोजिचने जाकर समझानेका प्रयत्न किया, जिसमे उसे विद्रोही अफसर कखोस्कोने मरणासन्न घायल कर दिया। जारको आता देख उसके ऊपर भी सैनिकोंने बन्दूक दागी। जार बहुत घबरा गया और उसको डर लगा, कि देर करनेमें शायद नगरके गरीब भी इस झगडेमे शामिल होकर लूट-मार करने लगे, इसलिये उसने तोप छोड़नेकी आज्ञा दी। सीनेट मैदान, नेवा नदीके बाध और सड़कोमे चारो ओर लाशें बिछ गईं। नेवा बर्फ बनी हुई थी। रातके वक्त बर्फमे छेद करके बहुतमे हत और आहत लोगोंको उसके भीतर डालकर समुद्रकी ओर बहा दिया गया। विद्रोही नेताओंको पकड़ लिया गया।

इस प्रकार पीतरवुर्गमे दिसम्बर की क्रांतिको दबा दिया गया। उक्रइनमे चेनिगोफकी रेजिमेंटने भी १० जनवरी १८२६ ई० (पुराने पचागके अनुसार २९ दिसम्बर १८२५ ई०) को विद्रोह किया, लेकिन उसे भी दबा दिया गया। पेस्तेलको किमी विश्वासघातीने पकड़ा दिया था। मेगेंड मुराव्योफ-अपोस्तोलने वहा विद्रोहका नेतृत्व किया, लेकिन चेनिगोफने भी आक्रमण न करनेकी गलती की, जिसमे वह जारशाहीको बहुत नुकसान नहीं पहुंचा सके। “सयुक्त स्लाव सम्मिलनी” के कुछ दृढ सदस्य चाहते थे, कि एक विद्रोही रेजिमेंट भेजकर कियेफ पर अधिकार कर लिया जाय। इसमे सुभोता भी था, क्योंकि कियेफमे छावनीकी पलटनमे विद्रोहमे महानुभूति रखनेवाले काफी आदमी थे, लेकिन यहा भी नेताओंने डिलमिल्यकीनीका प्रमाण दिया। निकोलाइ I ने विद्रोहको दबाकर विद्रोहियोंके प्रति क्रूरतापूर्वक बदला लेनेका काम शुरू किया।



२५ (१३) जुलाई १८२६ ई० में पांच विद्रोही नेताओं—पेस्नेल, कवि रिलियेफ, काखोवस्की, मुराव्योफ-अपोस्तोल और वेस्तुजेफ-र्यूमिनको फार्मा दे दी गई। फार्मा देते वक्त रिलियेफ, काखोवस्की और मुराव्योफ-अपोस्तोलके गलेकी रस्मी टूट गई, जिसपर उन्हें दुबारा फार्मा दी गई। बहुतसे विद्रोहियोंको कड़ी-कड़ी सजायें दी गईं, और कितनोंको साइबेरियामें आजीवन कालापानीका दंड देकर भेज दिया गया। मिपाहियोंको कितनी यातनायें दी गईं, इसका उदाहरण अनोइचेंको था, जिसे अदालतने बारह हजार वेंत लगानेकी सजा दी और वेंत खाते-खाते वह मर गया।

दिसम्बरका विद्रोह उच्चवर्ग-अमीरों-का विद्रोह था, उसमें साधारण जनताको शामिल करनेकी कोशिश नहीं की गई, और न ऐसा कोई तरीका इस्तिस्नान किया गया, जिससे जनसाधारण उस ओर खिंचता-भारतमें १८५७ ई०के विद्रोहमें भी कुछ ऐसाही हुआ था। इसीलिये विद्रोहके दबने देर नहीं हुई। लेनिनने उसके बारेमें लिखा था—“क्रांतिकारियोंका घेरा बहुत छोटा था। जनसाधारणसे उनका कोई संबंध नहीं था। लेकिन उनका काम व्यर्थ नहीं गया। दिसम्बरियोंकी असफलतासे पीछे रुमके क्रांतिकारियोंने शिक्षा ली। उनमें प्रगतिशील मस्तिष्कमें गर्मी पैदा की, जिसने हर क्षेत्रमें क्रांतिके लिये जगह तैयार की।”

निकोलाइ I को राजकाज नभालते ही जिस तरहके खतरेका मुकाबिला करना पड़ा। वह दिलोदिमागसे कमजोर आदमी था। इसके कारण उसको हर जगह प्राणोंका भय मालूम होने लगा। उसने पुलिस-राज्य कायम करते हुये “तृतीय भाग” के नामसे एक राजनीतिक गुप्त पुलिसका संगठन किया। जैसे ही किसी सैनिक या असैनिक अफसर अथवा सरकारी नौकरपर सदेह होता, उसे नौकरीमें निकाल बाहर किया जाता। उसे शिक्षण-संस्थाओंसे भी भय था, क्योंकि सभी विद्रोही नेता नवशिक्षित थे। इसीलिये शिक्षण-संस्थाओंपर भी पुलिसकी निगाह रहने लगी।

पूजीवादी विकास—चाहे इंग्लैंड और फ्रांससे पीछे ही क्यों न हो, किन्तु पूजीवादी उत्पादनके माधनों—कल-कारखानों—के विस्तारको किये बिना रूस सैनिक तौरसे कैसे सफल रह सकता था? पूजीवादी नफेको देखकर कितने ही रूसी इस तरफ झुके। इनमें काफी सख्या उनकी थी, जिन्होंने छोटे-छोटे व्यापारों या दस्तकारियों द्वारा पैसा जमा किया था। पूजी कम रहनेके कारण अपने कारखानोंको बढ़ाने और पूजी जमा करनेके लिये काम भी वह मजूरोंके भीषण शोषण द्वारा करना चाहते थे। निकोलस्क्या फैक्ट्रीका स्वामी मोरोजोफ पहिले अर्धदास किसान था, जिसने १८२० ई० में जमींदारको अति-भूति देकर मुक्ति प्राप्त की थी। फिर वह पशुपाल (चरवाहा), बादमें कोचमैन (कोचवान), फिर मिलमजदूर और दर्जीका काम करता रहा। बादमें उसने दूकान खोली और अन्तमें अपनी फैक्ट्री स्थापित की। १९ वीं शताब्दीके और भी कितने ही रूसी पूजीपतियोंका यही इतिहास था। १९ वीं शताब्दी के पूर्वार्धमें पूजीवादी ढंगके धातु-उद्योगका आरम्भ हुआ। यद्यपि उसकी प्रगति मंद रही। उक्रेनमें भी लोह-धून मिली, और वहां भी लोहा बनानेका काम शुरू हुआ था, पर मुख्य लोहक्षेत्र एसिया मीमापर उराल रहा, जहापर मजदूर बहुत मस्ते मिलते थे। १८३० ई०के बाद साइबेरियाकी मीनेकी खानोंमें—पहले पूर्वी साइबेरिया, येनिसेइ-उपत्यका और फिर प्रसिद्ध लेनाके सुवर्ण-क्षेत्रमें—काम शुरू हुआ। १८१५ ई०में रूसकी ४१८९ फैक्ट्रियों और मिलोंमें १७३ हजार मजदूर काम कर रहे थे, जब कि १८५८ ई०में क्रमशः उनकी संख्या १२२५९ और ५५९ हजार हो गई। १८८० ई०के बाद ही वाष्पचालित मशीनोंका उपयोग होने लगा, जिन्हें रूसी उद्योगपति इंग्लैंड और दूसरे देशोंमें मगाते थे। १८३५ ई० में इस कामके लिये जितनी मशीनें मगाई गई थी, पचीस साल बाद १८६० ई०में वह उनमें पच्चीस गुना अधिक मगाई जाने लगी। अभी तक किसानोंकी अर्धदासता बढ़ करनेका प्रयत्न आदर्शवादी भावुकतासे प्रेरित होकर किया जाता था, लेकिन अब अर्धदासताका सबसे बड़ा शत्रु औद्योगिक पूजीवाद आ गया था, जिसको गैरजिम्मेवार अर्धदास मजूरोंकी नहीं, बल्कि मजूरोंके लिये अपनेको बेचनेवाले कुशल कारीगरोंकी जरूरत थी। इसलिये अर्धदासताके विरुद्ध कानून पार करनेमें बहुत पहले ही अर्धदास किसान कारखानोंमें भाग-भागकर मजदूर बनते जा रहे थे।

यातायातका सुभीता पूजीवादके लिये सबसे आवश्यक चीज है, क्योंकि तभी माल एक जगहसे दूसरी जगह सस्तेमें भेजा जा सकता है। अंग्रेज नहीं, बल्कि एक रूसीने सबसे पहले रेल-इंजन बनाया

था, लेकिन सामन्तशाही रूसमें उसकी कदर नहीं हुई। इंग्लैंडने पहले उससे फायदा उठाया। उसने १८२५ ई० में अपनी पहली रेल बनाई, जिसके बीस वर्ष बाद कलकत्तासे पश्चिमकी ओर रेलकी पटरिया ही नहीं बिछी, बल्कि १८४५ ई० में भारतमें रेलोके कामके लिये ईस्ट इंडिया रेलवे कम्पनीकी स्थापना की गई, और १५ अगस्त १८५४ ई० में हवडा और हुगलीके बीच रेलका यातायात शुरू हो गया। रूसमें पीतरबुर्ग और जास्कॉयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) के बीच पहली रेलवे लाइन १८३७ ई० में बनी, जिसके लिये सारा सामान इंग्लैंड से आया था। सबसे पहली महत्वपूर्ण रेलवे लाइन पीतरबुर्ग और मास्कोकी थी, जो नौ वर्षमें बनकर १८५१ ई० में यात्राके लिये खोल दी गई। तब भी रूसमें रेलोंके प्रसारकी गति बहुत मंद ही रही। १८५५ ई० में रूसी रेले फ्रांसकी रेलवे लाइनो का पचमाश और जर्मन रेलोका पष्ठाश ही थी। अब भापके इंजन और भापसे चलनेवाले जहाजों के महत्वको उपेक्षित नहीं किया जा सकता था, इसलिये रूसमें वाष्पचालित जहाजों के बनानेके कारखाने भी स्थापित हुये। सैनिक हथियार और शक्ति तो लोहेके ऊपर निर्भर करती है, इसलिये उसके उत्पादनकी तरफ जारशाहीका ध्यान जाना जरूरी था। १८ वीं शताब्दीके अन्तमें रूस और इंग्लैंड दोनों ही अस्सी लाख पूद (१ पूद=३६ पौंड=१८ सेर) लोहा पैदा करते थे, लेकिन १९वीं सदीके पूर्वार्धमें जब कि रूसने अपनी लोहेकी उपजको दुगुना ही कर पाया था, इंग्लैंडमें १८५९ ई०में कच्चे लोहेकी उपज तीस गुना (२३४० लाख पूद) हो गई थी।

निकोलाइ I के शासनकालमें विद्रोहोंकी कमी नहीं रही। पोलोने रूसी शासनके विरुद्ध १८३०-३१ ई०में विद्रोह किया था। वहासे विद्रोहकी लहर वेलोरूसिया, उक्रेन और लिथुवानियामें फैली। उक्रेनमें इस विद्रोहने किसानोंके विद्रोहका रूप लिया। १८२६-३४ ई०में १४५ विद्रोह हुये थे, जब कि १८४५-५४ ई०में उनकी संख्या ३४८ हो गई। जारशाही अत्याचारोंके मारे कभी-कभी सारे किसान अपने गांवको छोड़कर भाग जाते थे।

ईरान (१८२६-२८ ई०) और तुर्की-युद्ध (१८२७-२९ ई०)—रूसके खिलाफ ईरान और तुर्कीको उकसाना इंग्लैंड और फ्रांसकी नीति हो गई थी, और उधर जारशाही भी अपने राज्य-विस्तारके लिये इन देशों की ओर हाथ बढ़ा रही थी, इसलिये युद्ध होना स्वाभाविक ही था। १८२६ ई० की गमियोंमें रूसके काकेशसमें बढ़ावको देखकर ईरानने लड़ाई शुरू कर दी। ईरानी सेनाने आजु-बाइजानको लेकर दागिस्तान और चेचनपर घावा किया, लेकिन १८२७ ई० के वसंतमें रूसी सेनाने ईरानियोंको हरा दिया। १८२८ ई० के जाडोंतक ईरानको नखचेवान और येरिवानके इलाकोसे भी हाथ धोकर सधि करनी पड़ी। इसी समय रूस पश्चिमी काकेशसके लिये तुर्कीसे भी लड़ रहा था। निकोलाइ I तो कान्स्तन्तिनोपल और दरेदानियलपर भी अपना झंडा गाड़ना चाहता था। यद्यपि रूसके आक्रमणोंका वह फल नहीं हुआ, जो कि निकोलाइ चाहता था, तब भी १८२९ ई०की सधिके अनुसार कालासागरके सारे काकेशस-तटको रूसने ले लिया, और केवल वातू अब तुर्कीके पास रह गया।

शामिलका विद्रोह—काकेशसमें यद्यपि ईरान और तुर्कीको रूसियोंने दवा दिया, लेकिन वहाके वीर पहाडियोंने आसानीसे जारके शासनको नहीं स्वीकार किया। इमाम काजी मुल्लाने १८३२ ई०में ईसाइयोंके खिलाफ मुरीदवादके नामसे मशहूर एक सम्प्रदाय स्थापित किया। आरम्भमें यह एक धार्मिक सम्प्रदाय था, जिसने काफिरोके शासनके स्थापित होनेपर राजनीतिक रूप ले लिया। काजी मुल्लाने स्वयं अपने अनुयायियोंको लेकर रूसी सेनापर जहा-तहा आक्रमण किया। उसके मरनेपर उसका चेला शामिल नेता हुआ, जिसने १८३४ से १८५९ ई०के पच्चीस वर्षोंमें काकेशसमें जारशाही अफसरोको नाको चने चववाये। शामिल बड़ा ही बहादुर और चतुर नेता था। उसने मुरीदोंका संगठन बहुत मजबूत किया। काकेशसकी दुर्गम पहाडियोंसे लाभ उठाकर वह रूमियोंके ऊपर आक्रमण करता रहा। पांच वर्षोंके सघर्षोंके बाद अगस्त १८३९ ई० में दागिस्तानके अपने केंद्रको छोड़कर उसने चेचनके दुर्गम पहाडियोंका आश्रय लिया। काकेशसके वेग और खान पहले ही जारशाही-के गुलाम बन चुके थे, इसलिये शामिलने उनके खिलाफ भी लड़ाई जारी रखते माघारण पहाडियोंको अपनी ओर खींचा। १८५९ ई० में दागिस्तानके गूनिव किलेमें शामिलने अन्तिम बार रूमियोंका मुका-

विला किया। २५ अगस्त १८५९ ई० को रूसी सेनापतिने खबर भेजी—“गूनिव हाथमें आ गया, शामिल वदी कर लिया गया।” शामिलको पकड़कर पीतरबुर्ग भेज दिया गया, जहासे उसे ले जाकर कलुगामें बसा दिया गया। पीछे वह हजके लिये मदीना जा वहीं मरा। काकेशसके मुस्लिम-प्रधान इलाकोमें जारशाहीको चैनसे शासन करनेका मौका नहीं मिल सकता था, इसलिये एक ओर जहा जारशाही अत्याचारके कारण वार्शिदे अपना गांव और देश छोड़कर भागते जाते थे, या उन्हें खास-खास जगहों से हटाया जाता था, तो दूसरी ओर रूसी किसानों और कसाकोंको ले जाकर उत्तरी काकेशसमें बसाया जाता था।

**मध्य-एशियाकी रियासतें**—आगे हम बतलायेंगे, कि कैसे १८ वीं शताब्दीके अन्तमें पश्चिमी मध्य-एशियामें खीवा, बुखारा और खोकन्दकी तीन रियासतें कायम हो गईं। इन्हीं तीनों रियासतोंकी भूमि-पर आगे चलकर उज्बेक, ताजिक, किर्गिज और तुर्कमान गणराज्य बने। तुर्कमानोंकी भूमिको नादिर-शाहके समयमें ही ईरानके अधीन माना जाता था। तुर्कमान घुमन्तू समय-समयपर बुखारा, अफगानिस्तान और ईरानके भीतर भी जाकर लूट-मार किया करते थे। ये तीनों रियासतें भी आपसमें लड़ती रहती थीं। १९ वीं शताब्दीके आरम्भमें खोकन्दका खान ज्यादा शक्तिशाली हो गया था, जब कि उसने ताशकन्द जैसे एक बड़े ही महत्त्वपूर्ण व्यापारिक और सैनिक केंद्रको अपने हाथमें कर लिया। ताशकन्दको ले लेनेके बाद कजाकों और किर्गिजोंकी बहुतसी भूमिको भी खोकन्दने ले लिया। खोकन्दियोंने इस भूमिमें जहा बहुतसे सैनिक महत्त्वके किले बनवाये, वहा लोगोंको पक्का मुसलमान बना अपनी ओर खीचनेके लिये भिन्न-भिन्न जगहोंपर कितने ही मदरसे भी स्थापित किये। अकमेचेत (ध्वेत-मस्जिद), ओलियाअता विशपेकर इसी समय महत्त्वपूर्ण नगर बने। १९ वीं सदीके दूसरे पादमें पहुचते-पहुचते खोकन्द मध्य-एशियाका सबसे बड़ा राज्य हो गया। वह पश्चिमी चीन और पामीरसे निम्न सिर-दरिया तक फैला हुआ था।

खीवाने भी खोकन्दकी तरह कजाकों, तुर्कमानों और कराकल्पकोंकी भूमिपर अधिकार करके १९ वीं सदीके आरम्भमें अपनी सीमाका काफी विस्तार कर लिया था। खोकन्द और खीवाके बीचमें बुखाराका खान था, जिसके हाथमें पहले तुर्किस्तान (निम्न और मध्य सिर-उपत्यका) था, लेकिन खोकन्दने उसे छीन लिया। बुखाराके नीचे रहनेवाले तुर्कमानोंमेंसे कितनोंको खीवाने ले लिया था। इस प्रकार बुखारा उतना शक्तिशाली नहीं था, तो भी शताब्दियोंसे बुखारा इस्लामिक संस्कृतिका केंद्र चला आया था, और वहाकी दस्तकारी और शिल्पकी बड़ी धाक थी, जिसके द्वारा उसे व्यापारमें काफी नफा रहता था। इन रियासतोंके खान (राजा) और बड़े अमीर अधिकतर उज्बेक थे, उनके बाद मुल्लाओं और खोजा (सत्ता) का प्रभाव ज्यादा था।

कजाकोंके बारेमें लिखते हुये हम बतला चुके हैं, कि १९वीं सदीके पूर्वार्धमें उनके लघु, मध्य और महा-ओर्दूके नामसे तीन ओर्दू थे। १८वीं सदीके पूर्वार्धमें ही लघु और मध्य-ओर्दूने रूसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, और १८२० ई० के आसपास रूसी प्रवासी भी इनकी भूमिमें जगह-जगह बसने लगे थे। १८३५-३७ ई०में ओरेनबुर्गके महाराज्यपाल व० अ० पेरोव्स्कीने ओर्स्क और त्रयत्स्कके बीचमें किलोंकी पक्ति बना करके जंगल और चरागाहकी दम हजार वर्ग किलोमीटर बड़ी अच्छी भूमि कजाकोंमें छीन ली, जिसके बाद कजाकोंने विद्रोह किया, इमे हम पहले बतला चुके हैं।

१८४५ ई० में दशककजाकके गर्भमें जारशाहीने नई किलाबदिया तैयार की। कजाक लोग सुल्ताने केनेसरी कामिमोफके नेतृत्वमें रूसी वस्तियोंपर आक्रमण करते आगे-पीछे हटते जा रहे थे। कासिमोफका पीछा करते रूसी सेना इली नदीकी ओर बढ़ी। अब रूसियोंको उनका रास्ता अल्ताई और त्यान्शानमें चीनी सीमाके पास ले जा रहा था। सबसे पहले रूसियोंका ध्यान खीवाकी ओर गया। यह मालूम ही है, कि खीवा (ख्वारेज्म) बहुत पुराने समयसे रूसके व्यापारकी एक मुख्य शृंखला थी। खीवामें भी १९ वीं सदीके पूर्वार्धमें बड़ी अव्यवस्था थी, जिससे रूसियोंको आगे बढ़नेका बहाना और सुभीता मिल गया। महाराज्यपाल पेरोव्स्कीने एक छोटीसी सेनाको लेकर १८३९ ई० की शरदमें ओरेनबुर्गमें खीवाके विरुद्ध अभियान किया। इस सेनामें कसाक, वाशकिर और कितने ही कजाक सवार भी थे। पंद्रह हजार ऊटोपर सेनाके लिये रसद चल रही थी। पहला

अभियान सफल नहीं हुआ। बर्फानी तूफान और सख्त सर्दीने बहुतसे घोड़ों और ऊटोंको मार डाला, जिसपर पेरोव्स्कीको पीछे हटना पड़ा। इस असफलताके बाद पेरोव्स्कीने अपने इरादेको छोड़ा नहीं, बल्कि दक्षेकिर्गिजकी तरफसे बढ़नेका निश्चय किया। भूमिके बारेमें पता लगाया, पानीके लिये क्ये तैयार किये, जगह-जगह किले बनाये। इस तरह रास्तेको सुरक्षित करनेकी कोशिश की। सिर-दरियाके ऊपर अराल्स्काका किला बनाकर वहां (अराल समुद्रके तटपर) रूसी किसानोंकी बस्तिया बसा दी गईं। यही नहीं, बल्कि वाष्पचालित अग्निबोट भी अराल समुद्र और सिर-दरियाके भीतर चलने लगे। इस तरह ओरेनबुर्ग और अराल समुद्रके बीचके रास्तेको यातायातके लिये सुरक्षित कर दिया गया। इतनी तैयारीके बाद १८५३ ई०के वसंतमें पेरोव्स्की एक बड़ी सेनाके साथ सिर-दरियाके द्वारा ऊपरकी ओर बढ़ा, और खोकन्दकी राज्यसीमाके भीतर जाकर उसने अकमेचित किलेको घेर लिया। रूसियोंके सामने खोकन्दी कितने दिनों तक ठहरते ? अकमेचित पेरोव्स्कीके हाथमें आई। उसने सिर-दरियाके ऊपर पांच नये किले बनवाये। रूसियोंने पिशपेक, तोकमक आदि कितने ह. नगरोंको ले लिया। ये किले किर्गिजिस्तानकी चूइस्क-उपत्यकामें थीं, जिनके शासक यद्यपि खोकन्दी थे, लेकिन निवासी किर्गिज थे। इसी समय किर्गिजोंको पश्चिमके नये स्वामियोंसे वास्ता पड़ा। तो भी वह १८७० ई०से पहले पूरी तौरसे रूसियोंके अधीन नहीं हो पाये थे। उधर साइबेरियाकी तरफ बढ़ते हुये १८५४ ई०में रूसी वेनोयोंके किलेको बनानेमें सफल हुये, जहापर पीछे वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) नगर की स्थापना हुई।

इतना कर लेनेके बाद १८५४ ई०में अब फिर पेरोव्स्की खीवाके खिलाफ चला। खानको सधि के सिवा और कोई रास्ता नहीं दिखलाई पड़ा, और उसने रूसियोंके पास अपना दूत भेजकर 'जारकी अधीनता स्वीकार कर खीवामें व्यापार करनेकी रियायतें प्रदान की। निकोलाइ I के शासनके अन्तिम वर्षोंतक कजाक और किर्गिजके दस्त (स्तेपी) पूर्णतया रूसियोंके हाथमें हो गये, और सिर-दरियासे लेकर अल्ताइके उत्तरमें सेमीप्लातिन्स्क तक जगह-जगह रूसी किले बना दिये गये। खीवाका खान अब रूसके अधीन था तथा खोकन्द और बुखाराके खान अब खीवाका अनुमरण करनेके लिये प्रतीक्षा कर रहे थे।

निकोलाइ I के शासनकाल हीमें फरवरी १८४८ ई०में पेरिसमें क्रांति हुई। यद्यपि यह प्रथम क्रांति जितनी सफल नहीं थी, लेकिन इसने जारके दिमागमें खलवली जरूर पैदा कर दी। निकोलाइ उस समय नाचमें था, जब कि उसे इसकी खबर मिली। वह गुस्सेमें पागल होकर अपने दरबारियोंसे बोल उठा—“भद्र पुरुषों, अपने-अपने घोड़ोंको कस लो, पेरिसमें क्रांति हो गई है।” पेरिसकी इस क्रांतिके समय ही वीना-आस्ट्रियामें भी क्रांति हो गई। दूसरी जगहोंपर भी उसका प्रभाव पड़ रहा था। निकोलाइने इटालीके राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आन्दोलनको दवानेके लिये साठ लाख रूबल दिये। लेकिन निकोलाइको क्या पता था, कि उसी समय एक ऐसी सफल ज्वाला तैयार की जा रही है, जिसका शिकार सबसे पहले रूस और उसका पोता निकोलाइ II होनेवाला है ? पेरिसकी इसी क्रांतिके समय मार्क्स अपने क्रांतिकारी कार्यक्षेत्रमें प्रविष्ट हो चुके थे। उन्होंने उस सिद्धान्त और उस सैनिक कौशलका भी पता लगा लिया था, जिसके द्वारा विश्वमें सहस्राब्दियोंसे चला आता मुट्ठीभर धनियोंका राज्य खतम होकर उनकी जगह सर्वहाराके नेतृत्वमें बहुजनका शासन स्थापित होनेवाला था। कार्ल मार्क्सने पेरिसकी इस द्वितीय क्रांतिके एक साल पहले १८४७ ई० में प्रथम कम्युनिस्ट पार्टीको कम्युनिस्ट लीगके नाम से संगठित किया था। उसीके लिये मार्क्स और उनके साथी एगल्सने “कम्युनिस्ट पार्टीकी घोषणा” तैयार करके १८४८ ई० में प्रकाशित की थी। निकोलाइको दुनियाके सबसे अधिक शक्तिशाली क्रांतिके हथियार इस “घोषणाके” बरतका पता नहीं था। वह नहीं समझता था, कि उसके दरबारी घोड़ोंको कितना ही कसे, वह घोषणाके पथको रोक नहीं सकेगे। पेरिसकी द्वितीय क्रांतिके बाद लायोंस कोसुतके नेतृत्वमें मग्यार (हंगरी) की जनताने आस्ट्रियाके सामन्ती शासनके विरुद्ध विद्रोह किया। निकोलाइने एक लाख चालीस हजार सेना लेकर अपने सेनापति पस्केविचको उसे दवानेके लिये भेजा, और १८४९ ई०में विद्रोही मग्यारोंकी तेईस हजार सेनाने आत्म-समर्पण किया। रूस अब सिद्ध कर रहा था, कि प्रुशिया हो या आस्ट्रिया, फ्रांस हो या इटाली, सभी जगह क्रांतिकों दवानेका सबसे जवर्दस्त

साधन निरकुश जारगाही है, इसीलिये तो नहीं क्रांतिने सबसे पहले रूसके जारको ही खतम किया ?

निकोलाइको अपने शासनके अन्तिम कालमें क्रिमियाका युद्ध (१८५३-५६ ई०) देखना पड़ा। इस युद्धके लिये भी फ्रांस और इंग्लैंडने तुर्की सुल्तानको उकसाया था, लेकिन उसके आरम्भ करनेका मौका निकोलाइने दिया। फिलस्तीन उस समय तुर्कीके हाथमें था, जिसके कारण ईसाइयोंके यीरोशिलम आदि तीर्थस्थान भी सुल्तानके अधीन थे। १८५३ ई०में एक विशेष दूतमंडल कान्स्तान्तिनोपल भेजकर निकोलाइने सुल्तानसे माग की, कि फिलस्तीनके बेतलहेमके मंदिरकी कुर्जी रखनेका अधिकार रूसी चर्चको दिया जाय, लेकिन फ्रांस और तुर्कीके बीच जो मधि हुई थी, उसके अनुसार यह अधिकार कैथलिक चर्चको मिला था। सुल्तान जानता था, कि इस बातमें फ्रांस और इंग्लैंड हमारे समर्थक होंगे, इसलिये उसने रूसकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। दोनों देशोंका दौत्य सबब तोड़ दिया गया, और जून १८५३ ई०में अस्मी हजार रूसी सेना तुर्कीकी ओर अभियान करते मोल्दाविया और वलाचियामें दाखिल हुई। समझौतेकी कोशिश की गई, लेकिन उसमें सफलता नहीं हुई। तुर्की मेनाने कालासागरके पूर्वी और पश्चिमी तटोपरसे होकर आक्रमण शुरू किया। सबसे पहला जवर्दस्त सघर्ष कालासागरके दक्षिणी किनारेपर अवस्थित सीनोपमें हुआ। नवम्बर १८५३ ई०में रूसी नौसेनापति नखिमोफने एकाएक वहां आक्रमण करके तुर्की जगी वेडेको नष्ट कर दिया। अब इंग्लैंड-फ्रांस और अधिक पदोंकी आडमें शिकार नहीं कर सकते थे, इसलिये वह नीचे मैदानमें कूद पड़े। प्रुशिया और आस्ट्रियाने भी गाटके समय रूसका पक्ष छोड़ दिया। रूसको इंग्लैंड और फ्रांसके मजबूत जगी वेडेका मुकाबिला करना था, जो उसकी अपेक्षा कहीं अधिक सवल था। १ अप्रैल १८५४ ई० को फ्रांस और इंग्लैंडके जगी वेडेने अदेस्सा नगरपर वम वर्षा की। यही नहीं, उन्होंने उससे बहुत दूर उत्तर श्वेत-सागरके किनारेके रूसी नगर सोलोवेत्स्कपर जहां गोलाबारी की, वहां प्रशान्त महासागरके कामचत्का प्रायद्वीपमें पेत्रोपावलोव्स्क नगरको भी तोंपोका निशाना बनाया। सबसे अधिक सघर्ष हुआ कालासागरमें। मितम्बर १८५४ ई०के आरम्भमें अंग्रेज और फ्रेंच नौसैनिक सेवस्तापोलको पोछेमें लेनेके लिये समुद्र-तटपर उतरे। सेवस्तापोलने बड़ा जवर्दस्त मुकाबिला किया। यद्यपि अन्तमें जीत उन्हींकी हुई, लेकिन एक अंग्रेज कमांडरने इस विजयके बारेमें कहा था—“यदि इस तरहकी एक और विजय प्राप्त हुई, तो इंग्लैंडके पास कोई सेना नहीं रह जायेगी।” सेवस्तापोलने ग्यारह महीनेतक बड़ा जवर्दस्त प्रतिरोध किया था। इसी समय फरवरी १८५५ ई०में निकोलाइ I मर गया। सेवस्तापोलके प्रतिरोधमें भाग लेनेवाले रूसी अफसरोंमें महान् साहित्यकार लेव ताल्स्त्वा (ताल्म्ताय) भी था, जिनने “सेवस्तापोलकी कथायें” को लिखकर इस समयकी रूसियोंकी वीरताका बड़ा सुंदर चित्र खींचा है। इसी समय दाशा सेवस्तापोल्स्कयाने दुनियामें पहिली बार युद्धके धायलोंमें नर्मका काम किया था। अंग्रेज इसका श्रेय फ्लोरेन्स नाइटिंगेलको देते हैं। इसी प्रतिरोधमें अदमिरल नवोमोफ मारा गया। ३८९ दिन तक भारी मुकाबिला करनेके बाद सेवस्तापोलकी सभी चीजोंको नष्ट करने तथा अपने सभी पोतोंको डुबाने रूसियोंने सिर्फ खड्गरोको शत्रुओंके हाथमें जाने दिया।

निकोलाइके मरनेके बाद १८५६ ई०में पेरिसमें सधि हुई। अंग्रेज और फ्रेंच विजयी हुये थे, लेकिन वहांके शासक भली प्रकार जानते थे, कि हमारे विरुद्ध होनेवाली जवर्दस्त क्रांतियोंमें जार ही हमारा सबसे बड़ा नष्टायक होना आया है, इसलिये वह कब पसंद करते, कि जारगाही रूसको अधिक निर्बल कर दिया जाय ? तो भी रूसको कालामागरमें अपने जगी वेडे या तट-भूमिपर किले रखनेके अधिकारमें वचित कर दिया गया। तुर्की साम्राज्यकी रक्षाकी जिम्मेवारी ले ली गई, और रूस और तुर्कीकी पुरानी नीमायें कायम रखी गईं। सर्बिया, मोल्दाविया और वलाचियाको युरोपियन शक्तियोंके नरक्षणमें दे दिया गया। दरेदानियल और कालामागरमें सभीकी व्यापार करनेका समानाधिकार मिला। क्रिमियाके युद्धमें असफल होकर रूसने युरोपकी राजनीतिमें कायम की हुई अपनी प्रधानताको खो दिया, और अब उसका स्थान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें वह नहीं रह गया, जो कि १८१५ ई०में १८५३ ई० तक था।

साइबेरिया में प्रसार —साइबेरियामें रूसी शक्तिके प्रधान प्रसारक और नस्थापक येमंक और खपारोफके वार्षिक हम पहले कह चुके हैं। मुरावैफ तीसरा और अन्तिम पुरुष था, जिसने साइबे-

रियामे जारशाहीकी शक्तिको बढ़ाने और मजबूत करनेमें काम किया। ६ सितम्बर १८४७ ई० को जार निकोलाइ तुलाकी ओर गया हुआ था, जहां उसने तरुण मुरावेफको साइबेरियाका राज्यपाल नियुक्त किया। इसके बादकें कितने ही वर्षोंका साइबेरियाका इतिहास मुरावेफके कामोका लेखा है। इस समय रूसी नौसेना-मन्त्रालय अखोत्स्क समुद्रके दक्षिणी छोरपर तुगरकी खाड़ीमें एक नया बंदरगाह बनना चाहता था। मुरावेफने उसे ठीक नहीं समझा और उसने सुझाव रक्खा, कि ऐसे बंदरकी स्थापनाके लिये नेवेल्स्कीके नेतृत्वमें आमूरकी खोज-पडताल की जानी चाहिये। १८४९ ई० में इसपर विचार करनेके लिये जारने एक समिति नियुक्त की, लेकिन इससे पहले ही छ हथियारबंद नौसैनिक, एक तोपके साथ एक नावपर आमूरकी जाच-पडतालके लिये चल पड़े थे, जिन्होंने आमूरके मुहानेसे २५ वर्स्त (४ फर्सख) पर जारके नामसे निकोलायेव्स्क नामका एक बंदरगाह स्थापित किया, और ६ अगस्त १८४९ ई०को पडोसके गिलियक लोगोके सामने रूसी झंडा गाड़कर एक पौडवाली तोपका गोला दागा। नेवेल्स्कीने जल्दी-जल्दी स्वयं पहुंचकर इस बातकी सूचना मुरावेफको दी। मुरावेफने तुरत इसकी खबर राजधानीमें भेजी। जब इस कामके लिये नियुक्त समितिके सामने यह बात आई, तो उसने बिना आज्ञाके ऐसा करनेका बहुत विरोध किया, और नेवेल्स्कीको कठोर दंड देनेपर जोर देते तुरत वहांसे हट आनेकी सिफारिश की, लेकिन मुरावेफने इसका विरोध किया। जब यह बात जारके पास निर्णयके लिये पहुंची, तो उसने समितिकी बात माननेसे इन्कार कर दिया, और कहा—“जब एक बार रूसी झंडा गाड़ दिया गया, तो फिर उसे नीचे नहीं उतारा जा सकता।” युद्ध-मन्त्रालय पसंद नहीं करता था, कि सुदूर-पूर्व साइबेरियामें बड़ी सेना रक्खी जाय। इस समस्याका हल मुरावेफने आसानीसे कर दिया। उसने नेचिन्स्केके रूसी किसानोंको कसाक सैनिकोंके रूपमें परिणत कर दिया, और इस प्रकार पूर्वी साइबेरियाके लिये एक सुसंगठित सेना मिल गई। यदि साइबेरियामें जगह-जगह रूसियोंकी बस्तिया कायम न हुई होती, तो मुरावेफको यह सुभीता न मिलता।

नेवेल्स्कीको दंड क्यों मिलने लगा? वह फिर सुदूर-पूर्वमें अपना काम करने लगा। १८५२ ई० में प्रशान्त महासागरके भीतर सखालिन द्वीपकी उसने जाच-पडताल की, और सखालिनके देकास्त्री और किजी नामके द्वीपोंको अपनी जिम्मेवारीपर दखल कर लिया। ये दोनों द्वीप तारतारी खाड़ीके लिये बड़े सैनिक महत्त्वके थे। नेवेल्स्कीने पोयारकोफ या खवारोफकी नीतिको छोड़कर देशवासियोंको अपने अच्छे बर्तावसे जीतनेकी कोशिश की, जिसमें उसे बहुत सफलता मिली।

२२ अप्रैल १८५३ ई०को एक सम्मेलन हुआ, जिसमें मुरावेफने प्रस्ताव किया, कि आमूरके वारेमें चीनसे फंसला कर डालना चाहिये। अभी यह बात विचाराधीन ही थी, और इसमें मुरावेफके विरोधी कितने ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, लेकिन इसी बीचमें रूस और तुर्कीके बीच १८५३ ई०में क्रिमियाका युद्ध छिड़ गया, जिससे सरकारका सारा ध्यान उधर हो गया, और मुरावेफको पूर्वमें खुल खेलनेका मौका मिल गया। तुर्कीके साथके युद्धमें युरोपमें रूसको बड़ी बुरी तरहसे हारना पडा, लेकिन इसी समय प्रशान्त महासागरके तटपर उसे भारी विजय प्राप्त हुई। इस सफलताकी खबर सुनकर निकोलाइ इतना प्रसन्न हुआ, कि ११ जून १८५४ ई०को उसने आदेश दिया, कि सुदूर-पूर्वके सीमातके सवालके वारेमें मुरावेफ सीधे पेकिङ सरकारसे बातचीत कर इन्हे हल करे। इस अधिकारको प्राप्त करके मुरावेफने अब फिर सुदूर-पूर्वमें अपने कामको नये जोशसे आरम्भ किया, जिसका ही परिणाम था, आमूरका प्रथम प्रसिद्ध अभियान। नावोंके वेडोंको लेकर आगे बढ़नेसे पहले मुरावेफने पेकिङको इस बातकी सूचना दे दी थी, और उसने कारण बतलाते हुये कहा था, कि युरोपके युद्धके कारण प्रशान्त महासागरकी अपनी अधिकृत-भूमिकी रक्षाके लिये हमें ऐसा करना आवश्यक पड़ रहा है। १४ मई १८५४ ई० को मुरावेफ आठ सौ सैनिकोंकी एक बटालियन, कुछ कसाक सैनिक, एक पहाड़ी तोपखाना, पचहतर नावोंके वेडोंके साथ नौसैनिक जहाज “अरगून” के साथ रवाना हुआ। अठ्ठाइसवें दिन मुरावेफ चीनियोंके उर्गबद्ध नगर ऐगुनमें पहुंचा। यहां उसने स्थानीय चीनी अधिकारियोंसे यह पता लगानेके लिये अपने आदमी भेजे कि उनके पास पेकिङमें कोई हुक्म जाया है, या नहीं। वहां कोई हुक्म नहीं आया था, और न स्थानीय चीनी अधिकारियोंके पास इतनी शक्ति थी, कि मुरावेफको रोकता। मुरावेफ बिना किसी विरोधके आमूर नदीमें आगे बढ़ता प्रशान्त महासागरमें पहुंचा, फिर काम्चेत्काके

पेत्रोपावलोव्स्कीमें पहुचकर फ्रेंच और अंग्रेजी नौसनासे सुरक्षित रखनेके लिये उसकी किलावदी शुरू की। मुरावेफको इसमें सफलता हुई, और शत्रुओंको असफल लौट जाना पड़ा।

**सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रगति**—निकोलाइ जैसे अयोग्य और अल्पपठित अल्प-संस्कृत शासकके समय रूसको बड़ी-बड़ी प्रतिभाओंके पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी समय हेर्जन (१८१२-७० ई०), वेलिन्स्की (१८११-४८ ई०) जैसे विचारक, लोवाचेव्स्की (१७९३-१८५६ ई०) जैसे विज्ञानवेत्ता और रिलेयेफ, पुश्किन, ग्रिवोयदेफ, लेर्मन्तोफ (१८१४-४१), वेनेवितिनोफ, कोल्तसोफ, वेलिन्स्की, वरातिन्स्की जैसे प्रतिभाशाली कवि और साहित्यकार पैदा हुये, जिन्होंने उस पृष्ठभूमिको तैयार किया, जिसने रूसको बौद्धिक क्षेत्रमें महान् बनाया। यदि निकोलाइ क्रांतिको फूटी आखो भी नहीं देखना चाहता था, तो उससे क्या, रूसकी इन प्रतिभाओंने क्रांतिके मार्गको साफ करनेका काम शुरू किया। जहां उसी शिक्षामंत्री उवारोफ (१८३३-४९ ई०) इस बातका दावा कर रहा था, कि रूसी लोग स्वाभाविक तौरसे धार्मिक हैं, वह सदासे जारके भक्त रहते आये हैं और किसानोंकी अर्धदासताको वह विल्कुल प्राकृतिक मानते हैं, वहां अलेक्सान्द्र इवान-पुत्र हेर्जन दूसरे ही विचारोंका प्रचार कर रहा था।

**हेर्जन (१८१२-७० ई०)**—हेर्जनने दिसम्बरी वीरोकी कुर्वानीका प्रभाव अपने ऊपर स्वीकार करते हुये लिखा था—“पेस्तेल और उसके सहयोगियोंकी हत्याने अन्तमें अपनी वचनकी नीदसे मेरी आत्माको जगा दिया।” हेर्जन १८१२ ई०में एक धनी रूसी जमींदारके घर पैदा हुआ था। उसके बापने एक जर्मन स्त्रीसे शादी की थी, लेकिन शादी वैधानिक नहीं हुई थी, इसलिये हेर्जनको बापका कुलनाम कोवलेफ नहीं प्राप्त हुआ और उसे एक साधारण-सा नाम हेर्जन (हेर्ज, जर्मनमें हृदय) मिला। हेर्जन मस्तिष्कके साथ बड़ा ही सहृदय पुरुष था। हेर्जनके पिताके पास फ्रेंच और जर्मन पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रह था। उसने अपने फ्रेंच अव्यापकसे फ्रेंच क्रांति और गणराज्यके प्रति सम्मान करना सीखा। रिलेयेफकी कविता “ध्यान” से वह उसी वक्त प्रभावित हुआ था। वही रिलेयेफ जब फासीपर लटका दिया गया, तो हेर्जनके ऊपर उसकी सदाके लिये अमिट छाप पड़ गई। हेर्जन अपने क्रांतिकारी विचारोंको लेकर ज्यादा दिनोतक निकोलाइके राज्यमें नहीं रह सकता था। १८४७ ई०में वह देशसे बाहर गया, और क्रांतिकारी फ्रांस और इटालीको अपनी आखो देखा। १८४८ ई०की क्रांतिके समय हेर्जन पेरिसमें था। पश्चिमी युरोपमें क्रांतिकी अमफलताको देखकर हेर्जन निराश हुआ, और उसे आशा बधी, कि शायद रूसी किसान क्रांतिको सफल बनायें। इस प्रकार उसने किसानोंके समाजवादका स्वप्न देखना शुरू किया। हेर्जन कार्ल मार्क्सका समकालीन था। मार्क्सकी तरह ही उसे भी अपनी जन्मभूमिमें भागकर मारा-मारा फिरना पड़ा, और अन्तमें उन्हीकी तरह उसने लंदनमें अपना डेरा डाला। १८५३ ई० में उसने वहां “स्वतंत्र रूसी प्रेस” की स्थापना की, जिससे अपनी क्रांतिकारी पत्रिका “पोल्यान्या जवेज़्दा” (ध्रुवतारा) का प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिकाके मुख्य मुखपृष्ठपर दिसम्बरी शहीदोंकी तस्वीर रहती थी। १८५७ ई०से १८६७ ई०तक हेर्जनने “कोलोकोल” (कलकल) के नामसे एक और भी प्रसिद्ध पत्रिका प्रकाशित की। हेर्जनके विचारोंने रूसी तहणोंकी समकालीन पीढ़ीपर बहुत प्रभाव डाला, और उसी प्रभावमें आकर बोल्शेविकोंसे पहलेके क्रांतिकारियोंने किसानोंमें क्रांतिका संदेश पहुंचानेके लिये भगीरथ प्रयत्न किये।

**व ग वेलिन्स्की (१८११-४८ ई०)**—वेलिन्स्की हेर्जनका समकालीन था। वह साहित्य-समालोचकके तौरपर लोगोंमें नया भाव पैदा करनेमें सफल हुआ। उसकी आलोचनाओंने रूसी साहित्यमें यथार्थवादकी स्थापना की। उस समय जारशाही सेंसरके कारण कोई भी स्वतंत्रतापूर्वक कुछ लिख नहीं सकता था। वेलिन्स्कीने अपने मित्र प्रसिद्ध लेखक गोगलको लिखा था—“रूसकी मुक्ति उपदेश या प्रार्थनामें नहीं हो सकती, बल्कि वह अर्धदासताके उच्छेद तथा लोगोंमें मानवसम्मानके प्रति जागृति और मद्भाव स्थापित करनेसे हो सकती है। वेलिन्स्की अपनी लेखनीसे क्रांतिका प्रसार कर रहा था, लेकिन उसके रास्तेमें सभी जगह रुकावटें थीं। उसने अपनी इस विवशताको दिखलाते हुये लिखा था—“प्रकृतिने मुझे कुत्तेकी तरह भूकने, सियारकी तरह हुआ-हुआ करनेके लिये मजबूर किया है। कभी-कभी परिस्थितियां विल्लीकी तरह म्याउ-म्याउ करने और लोमड़ीकी तरह पूछ हिलानेके

लिये भी मजबूर करती है।" लेकिन वह भविष्यके लिये बड़ा आशावादी था। उसने मरनेसे थोड़ा ही पहले लिखा था—“मुझे अपने उन पौत्रों और प्रपौत्रोंपर ईर्ष्या होती है, जो कि १९४० ई०में रूसको शिक्षित दुनियाका मुखिया बनते, विज्ञान और कलाके सिद्धांतोंको स्थापित करते, और ज्ञानवान् मानव-जातिसे सम्मानकी भेंट पाते देखेंगे।” वेलिन्स्कीका भविष्य-कथन सच निकला, इसमें क्या सदेह है? जारकी सरकार उसे जेलमें बंद करने ही जा रही थी, कि ३७ वर्ष की अवस्थामें १८४८ ई०में विसारि-योन ग्रेगोरी-पुत्र वेलिन्स्की ब्रपेदिकके हाथों मारा गया।

**वैज्ञानिक**—वासिली ग्लादिमिर-पुत्र पेत्रोफ (१७६२-१८३४ ई०) प्रसिद्ध रूसी भौतिक शास्त्री था, जिसने दुनियामें सबसे पहले (१८०२-३ ई०में) आधुनिक विद्युत्-रसायनके आधारभूत एलेक्ट्रोलीसिसका आविष्कार किया। उसने डेवीसे कितने ही वर्ष पहले वोल्ताइक आर्क (प्रदीप) का आविष्कार किया। १८३२ ई०में पीतरबुर्गमें दुनियाका सबसे पहला तार शीलिंगने स्थापित करके संचार-मंत्रालय और हेमन्त-प्रासादके बीचमें सदेश भेजकर दिखलाया, लेकिन सामन्तशाही रूसने इन आविष्कारोंको आगे बढ़नेका मौका नहीं दिया। १८३८ ई०में याकोवी (१८०१-७४ ई०)ने विजली बनानेका पहला इंजन तैयार किया, और उसकी विजलीकी नावने नेवाके ऊपर यात्रियोंको डोया। यह आविष्कार इंग्लैंडमें आधी शताब्दी बादमें हुआ, और दुनियाने याकोवीको भूलकर अंग्रेजको इसका आविष्कारक माना। आविष्कार और खोजके क्षेत्रमें रूसी प्रतिभायें इस प्रकार अपने चमत्कारको दिखानेके लिये तैयार थीं, लेकिन वहां अभी उनको सहारा देनेवाले नहीं थे।

**साहित्यकार**—निकोलाइके कालमें रूसी साहित्य-गगनमें बड़े-बड़े नक्षत्र उदित हुये, लेकिन उनमेंसे अधिकांश अकालमें ही कालकवलित हुये, जैसे—

रिलेयेफ (कवि)—जारने १८२६ ई०में फासी दिलवा दी।

पुश्किन (कवि)—१८३७ ई० में ३८ वर्षकी आयुमें द्वन्द्व-युद्धमें मारा गया।

ग्रिबोयेदोफ (कवि)—तेहरानमें हत्यारेके हाथों मारा गया।

लेर्मन्तोफ (कवि)—द्वन्द्व-युद्धमें २७ वर्षकी उम्रमें १८४१ ई० में मारा गया।

वेनेवितिनोफ (कवि)—२२ वर्षकी उम्रमें मारा गया।

कोल्त्सोफ (कवि)—३३ वर्षकी उम्रमें अपने परिवार द्वारा मारा गया।

वेलिन्स्की—३५ वर्षकी उम्रमें १८४८ ई०में भूख और गरीबीकी वलित चढा।

**अलेक्सान्द्र पुश्किन (१७९९-१८३७ ई०)**—पुश्किन रूसी साहित्यका कालिदास है। वह “प्रतिभाशाली रूसका सबसे बड़ा कवि और विश्व-साहित्यका प्रतिभाशाली साहित्यकार रूसी यथार्थ-वादका संस्थापक, रूसी साहित्यिक भाषाका निर्माता, रूसी जनताका गर्व और कीर्ति” कहा जाता है। यद्यपि वह उच्चकुलमें पैदा हुआ था, किन्तु गोरकीके अनुसार “उसके लिये कुलीन वर्गके हितसे ऊपर सारे राष्ट्रका हित था, और उसका व्यक्तिगत अनुभव कुलीनोंके अनुभवसे (कहीं) विस्तृत और गम्भीर था।” पुश्किन (अलेक्सान्द्र सर्गेइ-पुत्र) १७९९ ई०में मास्कोमें एक समन्तवशमें पैदा हुआ था, जिसकी आर्थिक अवस्था उतनी अच्छी नहीं थी। कुलीन वर्गके लिये स्थापित जास्कोयसेलोके विशेष स्कूलमें वह भरती हुआ और १८१५ ई०में जब कि वह अभी सोलह वर्ष ही का था, उसने परतत्रता और दासताके प्रति अपनी घृणा प्रकट की थी। १८१७ ई०में अठारह वर्षकी अवस्थामें उसने स्कूलकी पढाई समाप्त की। जिस वर्गमें पैदा हुआ था, उसके अत्याचारोंसे वह कितना क्षुब्ध था, यह उसकी निम्न पक्तियोंसे मालूम होगा—

ओ दुष्कर्मी, स्वेच्छाचारी, सुन मेरी घृणाको

जो कि तेरे, राजदंड और तेरे सिंहासनके प्रति है।

तेरे वच्चोंकी मौत, तेरे अपने काले भाग्यको देख

में पत्थर जैसे कड़े हृदयकी तरह हर्षित होता हूँ।

अपने उग्र विचारोंके लिये रूसी साहित्यके कालिदासको पहले दक्षिण (काकेगन) में निर्वासित किया गया, फिर किशिनेफ और अदेस्मामें निर्वासित करके रखा गया। अदेस्मासे उने अपने पिताकी जमींदारी मिखाइलोव्स्कयो गावमें भेज दिया गया और उसके बापको पुत्रपर निगाह रखनेके लिये हुक्म



दिया गया। यहीपर पुष्किनने अपना महान् काव्य 'यूनेनी-ओनेगिन' लिखा, और "बोरिस गदुनोफ" दु खान्त नाटकको भी यही उसने रचा। कई सालोंतक जारने "बोरिस गदुनोफ" को निपिद्ध कर दिया था। पुष्किन दिसम्बरी क्रांतिकारियोंके साथ बड़ी सहानुभूति रखता था। दि.म्बरियोंको फासीपर चढ़ानेके थोड़े ही समय बाद जार निकोलाइ I ने पुष्किनको बुलाकर पूछा—"यदि तुम १४ दिसम्बरको पीतरवुर्गमें होते, तो क्या करते?" पुष्किनने नाफ जवाब दिया—"मैं भी विद्रोहियोंमें शामिल हुआ होता।" इसके बादमे जारने पुष्किनकी रचनाओंके सेंसर करनेका भार अपने ऊपर लिया। जहातक रूसी जाति का सवध था, पुष्किन निराशावादी नहीं था, लेकिन अपने लिये उसे प्राणोंका जरा भी मोह नहीं था। उसके ऊपर अत्याचार करनेवालोंमें जार निकोलाइ I वैसे बहुत अल्प-पठित था, लेकिन तब भी शायद वह महान् कविकी अमरनाको जानता था, और इसीलिये वह उसके खूनसे अपने हाथको रगना नहीं चाहता था, लेकिन और तरहने उसने और उसके दरबारियोंने पुष्किनके जीवनको दूसर कर दिया था। पुष्किन अठतीस वर्षका था, जब कि अपमान करनेका बदला लेनेके लिये उसने एक सरकारी अफसरको द्वयुद्धके लिये ललकारा और पायल होकर १८३७ ई०में मरा। पुष्किनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। उसके काव्य और नाटक उतने ही सम्मान और दिलचस्पीके साथ पढ़े जाते हैं, जैसे कालिदासके। उसके नाटक आज भी रंगमंचपर बहुत जनप्रिय हैं। उसने कहानिया और लघुउपन्यास भी लिखे हैं, जिनमें भापा और भावोंकी प्रौढ़ता, व्यंग, रसाप्लावन अद्वितीय है। उसके समयमें अभी फ्रांसीसी भापा और साहित्यकी रूसी लोग उसी दास-मनोवृत्तिसे अपनाये हुये थे, जैसे हमारे देशके नीकरगाह लोग। "कप्तानकी कन्या" में पुष्किनने उनकी खूब खबर ली है। वह अपनी रूसी जातिका परम भक्त था, लेकिन उस जातिको अपना जौहर पूरी तीरसे दिखानेमें जो बाधाये थी, उनको साफ-साफ कहनेमें बाज नहीं आता था। साथ ही वह वर्ण और देशके भेदोंको माननेवाला नहीं था। भारतसे गये सिगानों (रोमनियों) पर उसकी मधुर कविता इसका प्रमाण है।

मिखाइल, युरी-पुत्र लेर्मन्तोफ (१८१४-४१ ई०) पुष्किनका तर्हण समकालीन और महान कवि था, जिसने भी द्वयुद्धमे सत्ताईस वर्षकी उमरमें अपने जीवनको समाप्त किया। अपनी प्रभाव-शाली कविता "एक कविकी मृत्यु" में पुष्किनकी प्रशंसा और उसके हत्या करनेवाले वर्गकी घृणाको बड़े कठोर शब्दोंमे प्रकट करनेके लिये उसे काकेससमे निर्वासित कर दिया गया। पुष्किनके बाद रूसी कवियोंमें लेर्मन्तोफका दर्जा है। निकोलाइ I ने उसकी मृत्युकी खबर सुन बहुत खुश होकर कहा—"कुत्ता, कुत्तेकी मौत मरा।"

निकोलाइके समयका दूसरा महान् अमर साहित्यकार निकोलाइ वासिली-पुत्र गोगल (१८०९-५२ ई०) है। उसके उपन्यास "इन्स्पेक्टर-जेनरल", "मृत आत्माये" आदि विश्व-साहित्यके रत्न माने जाते हैं। "मृत आत्माये" को पढ़कर हेर्जनेके अनुसार सारा रूस काप उठा। गोगल महान् कलाकार है। उसकी जैसी सशक्त लेखनी बहुत कम देखनेमें आती है। यह महान् साहित्यकार भी तेतालीस वर्षकी उमरमे मर गया।

इस समयके महान् कलाकारोंमे क० फ० ब्रूलोफ, अ० अ० इवानोफ अद्वितीय हैं। इवानोफने अपनी महान् कलाकृति "ईनाका लोगोमे प्रकट होना" को अपने जीवनके तीस वर्ष लगाकर बनाया। यथार्थवादके साथ आदर्शवाद या अध्यात्मवादका कितना सुन्दर सम्मिश्रण हो सकता है, इसका यह सुन्दर नमूना है। इस चित्रकों बनानेके लिये इवानोफने कई साल ईसाकी जन्मभूमि फिलिस्तीनमें बिताये।

अभी तक रूसका संगीत लम्बी नाकवालों और गद्दे ग्रामीणोंकी कलाके रूपमें विभक्त था। उच्च वर्गके लोग पश्चिमी संगीतको संगीत मानने थे, और समझने थे, कि हमकी भूमिने संगीतके लिये कोई देन नहीं छोड़ी है। इसी समय प्रतिभाशाली संगीतकार (उस्ताद) म० ई० गिल्न्का (१८०९-५७ ई०) पैदा हुआ, जिसने पश्चिमी संगीतका पारगत आचार्य होने भी रूसी जनसंगीतको अपनाया, और घोषित किया, कि हमारी राष्ट्रीय संगीत-कला किनीमे कम नहीं है। गिल्न्का पहिले ही से प्रसिद्ध संगीतकार हो चुका था, इसलिये उसे तुच्छ नहीं कहा जा सकता था, लेकिन उसकी कलाको तुच्छ करनेके लिये सम्प्रान्त वर्गने कोई कसर नहीं उठा रखी। उने "गाड़ीवानोंके गीत" का रचनेवाला कहते थे।

ग्लिन्काने इसकी पर्वाह नहीं की। “इवान सुसानिन” जैसे देशके लिये मरनेवाले वीरको चुनकर उसने अपने ओपेरा (पद्यनाटक) को रचा, जिसने जन्दी ही लोगोको अपनी तरफ खींच लिया। जिस तरह काव्य और साहित्यका पिता पुश्किन माना जाता है, वही स्थान संगीत और रगमचमे ग्लिन्काका है। मास्कोका बल्शोइ तियात्र (महानाट्यशाला) यद्यपि १७८० ई० में स्थापित हुआ था, जब उसे पेत्रोफका तियात्र कहते थे। १८०५ ई० में नाट्यशाला आगसे नष्ट हो गई, और बीस साल बाद (१८२५ ई०) में उसे फिरसे बनाया गया। इसके बाद फिर एक बार आगसे नष्ट होनेपर १८५३ ई० में उसका पुनर्निर्माण हुआ, जब कि “इवान सुसानिन” के निर्माता ग्लिन्काके मरनेमें चार सालकी देर थी। १८२४ ई० हीमें मास्कोमें “माली तियात्र” (लघु नाट्यशाला) की स्थापना हुई, और बड़ी जल्दी ही उसकी ख्याति चारों ओर फैल गई। पुश्किन, लेर्मन्तोफ, गोगल, इवानोफ और ग्लिन्का जैसी प्रतिभाओंको पैदा करनेवाला १९ वीं सदीका पूर्वार्ध रूसकी कला और साहित्यका सुवर्ण-युग था, इसमें सदेह नहीं।

### १६. अलेक्सान्द्र I, निकोलाइ I-पुत्र (१८५५-८१ ई०)

अलेक्सान्द्र जब अभी युवराज ही था, तभी उसने किसानोंकी अर्धदासताको कायम रखकर अमीरोके हितको अक्षुण्ण करनेकी प्रतिज्ञा की थी, लेकिन अब रूस १९वीं सदीके मध्यको पार कर चुका था। औद्योगिक पूजीवाद बड़े जोरसे अपने प्रभावको बढ़ा रहा था, इसलिये सामन्तवादका अक्षुण्ण रहना सम्भव नहीं था। उसे मजबूर होकर किसानोंकी अर्धदासताको खतम करते १८५६ ई० में कहना पड़ा—“भूमिके स्वामित्वकी वर्तमान प्रथा बिना बदले नहीं रह सकती। यह बेहतर है, कि किसानी अर्धदासताको नीचेसे अपने आप खतम होने देनेकी जगह ऊपर (सरकारी ओर) से खतम कर दिया जाय।” अलेक्सान्द्रने यद्यपि “१९ फरवरीके (१८६१ ई०) कानून” द्वारा अर्धदासता प्रथाको खतम किया, लेकिन जमींदारोंके हितोंका पूरी तीरसे ध्यान रखते। किसानोंको पीढ़ियोंसे अपने जोते खेतोंके लिये भारी रकम देनी पड़ी। किसानोंको जो जमीन मिली थी, उसका मूल्य पैंसठ करोड़ रूबल होता था, लेकिन उसके लिये उनसे नब्बे करोड़ दिलानेका निश्चय किया गया। यह रकम सरकारने देना स्वीकार किया, जिसे वह उन्चास सालकी किस्तोंमें किसानोंसे ले लेनेवाली थी। १९०५ ई० तक इस मदमें किसानोंसे दो अरब रूबल लिये गये। १९ फरवरी १८६१ ई० के भूमिसुधारके कानूनने बहुत महंगे ढंगसे एक करोड़ किसानोंकी जमींदारोंकी दासतासे मुक्त किया। किसानी अर्धदासताका खतम करना रूसमें पूजीवादी व्यवस्थाके विजयकी घोषणा थी। लेकिन यह सुधार रूसके अधीन दूसरी जातिवाले प्रदेशोंमें नहीं स्वीकार किया गया। कल्मकोके प्रदेशमें पुरानी अर्धदासता प्रथा १८९२ ई० तक रही, और मध्य-एशियामें तो वह बोल्शेविक-क्रांतिसे पहले खतम ही नहीं हुई।

इतनी बड़ी रकमकी क्षतिपूर्तिमें चुपचाप किसान कैसे दे सकते थे? इसके लिये किसानोंका सघर्ष होना ही था। किसानोंके पक्षको लेकर इसी समय एक खास आन्दोलन शुरू हो गया। चेर्नोशेव्स्कीने “सत्रेमेन्निक” (समकालीन) के नामसे एक पत्रिका निकाली, जो किसानोंके पक्षका बहुत जोरदार ढंगसे समर्थन करती थी। रूसी सिपाही किसानोंमेंसे ही आते थे, इसीलिये चेर्नोशेव्स्कीके मित्र और सहकारी न० व० शोलगुनोफने “सिपाहियोंको” नामसे एक घोषणा लिखी थी। घोषणा छप नहीं पाई थी, कि उससे पहिले ही वह तृतीय विभाग (खुफिया विभाग) के हाथमें पड़ गई। लेकिन रूसी जनताको आगे बढ़नेसे रोक नहीं जा सका। १८६२ ई० के वसंतमें “तरुण रूस” के नामसे एक घोषणा मारकोके क्रांतिकारी विद्यार्थी जाइन्नेव्स्कीने प्रकाशित कर हथियार लेकर उठ खड़े हो शासक-वर्गको नष्ट करनेका आह्वान किया। चेर्नोशेव्स्की इस कालके जन-आन्दोलनका सबसे बड़ा नेता था। उसकी कलममें अद्भुत ताकत थी। जारशाहीने उसे पकड़कर दो साल तक पीतरबुर्गके पीतर-पावल-दुर्गमें बंद रखवा, फिर चौदह वर्षोंके लिये साइबेरिया-निवासन (कालापानी) का दंड देनेसे पहले १९ मई १८६४ ई० को सार्वजनिक तीरपर उसे नागरिक मृत्युक दंड दिया। फासी देनेवालोंने उसे पीतरबुर्गके मिलिन्स्कया चौरस्ते पर ले जाकर फासीवाले आदमीकी तरह उसे घुटने टिकवाया, और उसकी गर्दनपर एक तलवार रखी। जिस समय फामीकी टिकटीपर इस रसमको अदा करनेके बाद उसे ले जाया जा रहा था, उसी समय भीड़मेंसे एक लड़कीने उस पर कुछ फूल फेंके, जिनके लिये उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

चेर्नोशेव्स्कीको नेचिन्स्कीके जेलखानेमें रक्खा गया, जहां उसके दंडकालको आधा कर दिया गया, लेकिन कैदकी अवधि पूरा होनेके साथ ही अलेक्सान्द्र II ने उसे फिर सुदूर साइबेरियाके कस्बे विल्युइन्स्कमें बन्दी कर दिया। १८८३ ई०में वहांसे लाकर उसे अस्यानानमें रखा गया, और गिरफ्तारोंके मत्ताइस वर्ष बाद १८८९ ई०में उसे अपने जन्मनगर मरातोफमें रहनेकी इजाजत मिली। अब वह माठ वर्षका हो चुका था। जेलमें उनका स्वास्थ्य बिल्कुल खराब हो गया था। अक्टूबर १८८९ ई०में मरातोफमें उसने अपने प्राण छोड़े। चेर्नोशेव्स्कीकी तपस्या व्यर्थ गई, इसे कौन कह सकता है? आज उसका सम्मान हमके घर-घरमें है, और मारे मोवियत सघके स्कूली विद्यार्थी पढ़ते हैं—“न० ग० चेर्नोशेव्स्की महान् हमी देशभक्त था, जिनने अपने सारे जीवनको अपने देश और जनताके लिये कुर्बान किया।” अभी चेर्नोशेव्स्की जब तरुण ही था, तभी उसने लिखा था—“अपने देशके अनन्त, और सनातन यशके लिये तथा मानवताकी भलाईके लिये काम करनेमें बढ़कर और कौन-सी बड़ी और सुन्दर बात हो सकती है?”

चेर्नोशेव्स्की महान् जनतन्त्रतावादी और महान् विद्वान् ही नहीं था, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञानका वह अदम्य प्रचारक था। उसके अर्थशास्त्र मन्त्री ग्रंथोंके बारेमें मार्क्स और एंगेल्सने लिखा था—“वह वस्तुतः हमके लिये सम्मानकी चीज है।”

तुर्की-युद्ध (१८७३-७८ ई०)—क्रिमियाके युद्धमें हारकर रूसने यूरोपमें अपने प्रभावको खो दिया था, इमे हम बतला चुके हैं, लेकिन रूसने अपने प्रभावको विशेषकर कालामागर और भूमध्य-मागर तटपर बढ़ानेकी कोशिश बराबर जारी रखी। अब हमके हाथमें एक और हथियार आ गया था—बल्कानके लोग पिछली चार शताब्दियोंमें तुर्की-मुल्तानके स्वेच्छाचारी शासनके नीचे कराह रहे थे। उनमें जातीय स्वतन्त्रता की लहर फैली हुई थी, और वह नहीं चाहते थे, कि एमियाई मुस्लिम सुल्तान उनकी जैसी यूरोपीय जातियोंको अपना दाम बनाकर रखे। इंग्लैंड और फ्रांस रूसके विरुद्ध तुर्कीकी पीठ टोकना अपने हितके लिये आवश्यक समझते थे, इसलिये बल्कानकी जातियोंमें नवजागरणमें वह कैसे सहायक हो सकते थे? सयोगसे बल्कानकी यह अधिकांश जातियाँ रूसियोंकी भाति स्लाव थी, इसलिए वह अपने स्लाव-भाइयोंकी ओर आभासरी दृष्टिमें देखती थीं। हम भी उनका समर्थन कर रहा था। १८७५ ई० में बोसनिया और हेर्जेगोविना (आधुनिक युगोस्लाविया) में लोगोंने मुल्तानके तिलिपिआन्दोलन शुरू कर दिया। अगले साल बुल्गारियोंने विद्रोह कर दिया। तुर्कीने बड़ी कठोरतापूर्वक विद्रोहोंमें दमन किया, कहीं-कहीं तो उसने गांवके गांव निर्जंत बना दिये। तुर्की अपनी पुरानी सविके कारण समझता था, कि हम लडाईके मैदानमें नहीं कूदेगा, लेकिन रूसने सविद्या (बोसनिया), हेर्जेगोविनाके निवासियों और मोन्तेनिग्रोको तुर्कीके विरुद्ध युद्ध घोषित करनेके समय १८७७ ई०के ग्रीष्ममें सहायता देना शुरू किया। हममें सब जगह तुर्कीके खिलाफ आन्दोलन ही नहीं किया जाने लगा, बल्कि एक हमी जेनरल चैम्पियेफ सवियन मेनाका संचालन करने लगा। हमकी सहायता होनेपर भी अक्टूबर १८७६ ई०में सवियन मेनाकी हार हुई। मोन्तेनिग्रोके लोगोंने तब भी अपने सघर्षको अकेले जारी रक्खा। अग्रेजोंकी शहके कारण तुर्की सुल्तानने स्लाव विद्रोहियोंके साथ किसी तरहका नमस्जोता करनेमें इन्कार कर दिया। आम्स्ट्रियाने तटस्थताकी नीतिको स्वीकार किया था। अन्तमें १८७७ ई०के वसंतमें रूसने तुर्कीके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की। हम अब भी क्रिमियाके युद्धके समयके हथियारों और सैनिक विज्ञानसे लड़ रहा था, जब कि जर्मन कल-कारखानोंमें नये तरहके हथियार तुर्कीको मिल रहे थे। तो भी अपनी बहादुरीके कारण १८७७ ई० के ग्रीष्ममें हमी मेना दन्यूव पार करनेमें नफल हुई। मुकाविला कठिन था, लेकिन जब हमी मेनाका कान्स्तन्तिनोपलमें पहुंचना निश्चितसा मालूम होने लगा, तो अग्रेज अपने नौसैनिक बड़ेको मारमोरा समुद्रमें लाकर युद्ध घोषित करनेकी धमकी देने लगे। आम्स्ट्रिया और जर्मनीने भी हमके खिलाफ खल लिया। बल्कानमें युद्ध जारी रखने हुये रूसी सेनाने काफेगनमें भी तुर्कीके खिलाफ लडाई जागी की थी, जहापर तुर्कीको बुरी तरहमें हराकर हमियोंने अंदरूनी और कर्पोंके किलोंको ले लिया। अन्तमें फरवरी १८७८ ई०में सानस्तेपानो (कान्स्तन्तिनोपलके नजदीक) की सविके अनुसार लडाई बंद हुई, और दन्यूवका मुहाना हमको मिला, बल्कानमें बुल्गारियाकी एक रियासत कायम की गई, तुर्कीको सविद्या, मोन्तेनिग्रो और रमानिया:

की स्वतंत्रता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पड़ा। काकेशसमें अर्दहान, कर्स, वायजिद और वातूम के नगर रूसको मिले, साथ ही तुर्कीने एकतीस करोड़ रूबल रूसको क्षतिपूर्ति देना स्वीकार किया। इस प्रकार रूसने अपने खोये हुये प्रभावको फिर सान्स्तेफानो-सधिके अनुसार प्राप्त किया। आस्ट्रिया और इंग्लैंड इस सधिको पसंद नहीं करते थे, इसलिये १८७१ ई०में बर्लिन-कांग्रेसमें उन्होंने रूसकी जीती हुई जगहोंमेंसे कितनोंकी छोड़नेके लिये मजबूर किया। बुल्गारियाके दक्षिणी भागको तुर्कीके हाथमें लौटा देना पड़ा, और उत्तरी भागको भी सुल्तानके अधीन एक रियासतका रूप दिया गया।

**राजनीतिक आन्दोलन**—चेर्नोशेव्स्कीके किसान-आंदोलनके बारेमें पहले बतलाया जा चुका है। रूसमें मार्क्सवादके आनेसे पहले जिस राजनीतिक आन्दोलनने गरीब जनताके भीतर काम किया था, वह नरोद्निक (जनवादी) आन्दोलन था, जो कि इसी समय शुरू हुआ था। यह दल किसान और मजदूर दोनोंमें काम करता था, लेकिन वह मजदूरोंको उतना महत्त्व नहीं देता था। उसकी सबसे कमजोर बात यह थी, कि वह मार्क्सवादका विरोधी था। हमारे यहांके कितने ही वामपक्षियोंकी तरह नरोद्निक जोर देकर कहते थे, कि (१) रूसके लिये पूंजीवाद एक आकस्मिक घटना है, इसका यहां विकास नहीं होगा, इसलिये सर्वहारा यहां न बढ़ सकते न विकसित हो सकते हैं। (२) नरोद्निक मजूर-वर्गकी क्रांतिका सबसे अग्रणी वर्ग नहीं मानते थे। वह विश्वास करते थे, कि बिना सर्वहाराकी सहायतासे ही समाजवाद स्थापित हो सकता है। वह मानते थे, कि बुद्धिजीवियोंके नेतृत्वमें किसान ही क्रांतिकारी शक्ति हैं, और किसानोंका पचायती जीवन ही समाजवादका अकुर तथा नींव होगा। नरोद्निक नहीं मानते थे कि किसानोंकी विखरी शक्ति सेना और पुलिस द्वारा सुरक्षित और मजबूत शासन-यंत्रको नहीं उखाड़ फेंक सकती। नरोद्निक तरुण-तरुणी बड़ी कुर्बानीके साथ गांवमें किसान बनकर रहते अपने विचारोंका प्रचार करते थे। उन्होंने बहुत कोशिश की, कि किसानोंको भडकाकर जमींदारोंके खिलाफ खड़ा किया जाय, लेकिन वह उसमें सफल नहीं हुये। १८७४ ई० में बहुतसे नरोद्निक किसानोंमें पहुंचे थे, लेकिन १८७६ ई० तक वह भारी संख्यामें पकड़ लिये गये, और बचे हुएने “जेम्ला-इ-वोल्या” (भूमि और स्वतंत्रता) के नामसे एक गुप्त सगठन किया। इसके संस्थापक ग० व० प्लेखानोफ और उसके साथी थे। मार्क्सवादके विरुद्ध “जेम्ला-इ-वोल्या” सगठनने आगे चलकर वकुनिन (१८१४-७६ ई०) के अराजकतावादको अपनाया, जिसकी मांग थी—सब तरहकी सरकारको तुरंत बदल कर दो। नरोद्निकोंने वैयक्तिक हत्यापर भी बहुत जोर दिया, और रूसी जनतापर जुल्मके पहाड़ ढानेवाले जारको उन्होंने अपना लक्ष्य बनाया। लेकिन यह काम नरोद्निकोंके असफल होनेपर “नरोद्नया वोल्या” (जनता सकल्प) पार्टीने किया। वस्तुतः जारके खूनी अत्याचारोंने अब क्रांतिकारियोंके दिलमें भय नहीं रहने दिया था। “नरोद्नया वोल्या” ने जार अलेक्सान्द्र II की हत्याके लिये कई बार प्रयत्न किये। फरवरी १८८० ई०में हेमन्त प्रासादमें स्तेपान खलतुरिन नामक एक मजदूर-क्रांतिकारीने बम रक्खा, लेकिन उससे जारको कोई चोट नहीं पहुंची, और अब वह ज्यादा सावधान रहने लगा। हेमन्त प्रासादको भी खतरेका स्थान समझकर वह वहां अधिक नहीं रहता था। अन्तमें १ मार्च १८८१ ई०को “नरोद्नया वोल्या”के सदस्योंने अलेक्सान्द्र II की हत्या करनेमें सफलता पाई, और इसी हत्यामें शामिल होनेके सदेहपर लेनिनके भाईको भी फांसीपर चढ़ना पड़ा।

**मध्य-एसियामें प्रसार**—निकोलाइ I के समयमें किस तरह अराल समुद्रसे अल्ताई तकके प्रदेशको रूस साम्राज्यमें मिला लिया गया, इसे हम बतला चुके हैं। खीवाके खानने जारको अपना प्रभु मान लिया था, लेकिन खोकन्द और बुखारा अभी जारशाही ज्यूके नीचे नहीं आये थे। १८६५ ई०में जेनरल चेन्यायेफने खोकन्दके खानको हराया, और १८६५ ई०में ताशकन्द जैसे मध्य-एसियाके आर्थिक केंद्रको अपने हाथमें ले लिया। इसके बाद महाराज्यपाल काफमानने १८६८ ई०में बुखाराके विरुद्ध अभियान किया, और जारकी सेनाने अमीरको हराकर समरकन्दको ले लिया। इस पराजयके बाद अमीर बुखारा अब जारका एक सामन्त भर रह गया। १८७३ ई०के वसन्तमें रूसी सेनाको फिर खीवा के खानके विरुद्ध जाना पड़ा, लेकिन खानने बिना लड़ाईके ही जारके अधीन होना स्वीकार कर लिया। अमीरों और खानोंके ऐशोआराममें जारशाही उसी तरह कोई दखल नहीं देना चाहती थी, जैसे भारतके राजा और नवाबोंके मीज-मेलेमें अंग्रेज बाधा नहीं डालते थे। लेकिन वहांकी जनता चुपचाप रूसियोंके

शासन और शोषणको वर्दाश्त करनेके लिये तैयार नहीं थी—रूसी मध्य-एशियाको कच्चे मालकी खान मानते थे। १८७५-७६ ई०में खोकन्दके मुल्लोने रूसके विरुद्ध जहाद घोषित की, जिसे क्रूरतापूर्वक दबा देनेमें रूसियोंको देर नहीं लगी, और साथ ही उन्होंने खोकन्दके खानको खतम करके फार्गानाके नामसे उसे रूसका एक प्रदेश बना दिया। अलेक्सांद्र II के शासनके अन्तिम कालमें तुर्कमानोपर भी रूसने अपना हाथ फैलाना शुरू किया। १८८० ई०में जेनरल स्कोदेलेफने तेक्के तुर्कमानोको अपने अधीन किया, और अगले साल उसने ग्योक्तेपेपर अधिकार करके अब्कावादको ले लिया। १८८४ ई० में अलेक्सांद्र III के शासनकालमें मेर्वको भी लेकर सारे तुर्कमानोमें रूसियोंका शासन स्थापित हो गया, और १८८५ ई०में अफगानिस्तानके किले कुश्कको लेकर रूसने मध्य-एशियाके अपने सीमांतको पूरा कर दिया। इस विजयके बाद अब मध्य-एशियामें रूसी डाक्टर, शिक्षक, विज्ञानवेत्ता और बड़ी सख्यामें मजदूर भी जाने लगे, जिनका प्रभाव मध्य-एशियाके लोगोपर पड़ने लगा।

**साइबेरिया और चीन—**आमूर-उपत्यकामें किस तरह मुरावेफने रूसी सीमाका विस्तार अपने प्रथम अभियान द्वारा किया, उसे हम बतला चुके हैं। निकोलाइ I मर चुका था, लेकिन मुरावेफने अगले जारके शासनकालमें भी अपने कामको जारी रक्खा। पहले अभियानसे भी बड़े पैमानेपर अगस्त १८५६ ई०में एक दूसरा अभियान आमूर नदीके साथ-साथ नीचेकी ओर भेजा गया, जिसमें स्त्री-पुरुष सब मिलाकर आठ हजार आदमी थे। अभियानको तीन भागों में विभक्त करके अलग-अलग स्थानोंमें प्रयाण करने का प्रवध किया गया था। चीनी समझने लगे कि अब रूसी निम्न आमूरको सदाके लिये अपने हाथमें कर लेना चाहते हैं, इसलिये उन्होंने ऐंगुनमें आनेपर विरोध प्रकट किया। ९ सितम्बर को मरुस्कमें एक सम्मेलन किया गया। मुरावेफ बीमार होनेसे शामिल नहीं हो सका, और उसने अदमिरल ज्वाइकोको अपने स्थानपर भेजा। रूसियोंका इसी बातपर बराबर ज़ोर था, कि युरोपीय शत्रुओंमें प्रतिरक्षा करनेके लिये हमें आमूरके मुहानेकी अव्ययकता है, जिन स्थानोंको हमने लिया है, अब वह रूसकी सम्पत्ति है, और आमूरके बायें तटपर हमें रूसी वस्तिया बसाना है, जिसमें नदीका रास्ता सुरक्षित रहे। रूसी विदेश-विभागने चीनसे बातचीत करनेमें कुछ नरमीसे काम लेना चाहा था, यह बात मुरावेफको पसंद नहीं आई, और उसने स्वयं पीतरवुर्ग जाकर चीनके साथ नये संधिके बारेमें बातचीत करनेके लिये अपनेको राजप्रतिनिधि नियुक्त करवाया। मई १८६५ ई० के मध्यमें कोसाकोफके नेतृत्वमें तीसरा अभियान रवाना हुआ। रूसी जहाजोंके आमूरमें आने-जानेपर चीनी कोई रुकावट डालना नहीं चाहते थे, लेकिन आमूरके बायें तटपर रूसी वस्तियोंका बसाना वह पसंद नहीं करते थे। उन्हें यह देखकर भी बहुत बुरा लगा, कि चीन-अधिकृत नगर ऐंगुनके सामने दूसरे तटपर जेया नदीके मगमपर पांच सौ रूसी डेरा टाले पड़े हैं। तीसरे अभियानने भी बिना किसी रुकावटके अपनी यात्रा समाप्त की।

१८५७ ई० में नये अधिकार प्राप्त कर मुरावेफ फिर साइबेरिया लौट एक और बड़े अभियानकी तैयारी करने लगा। अबकी बार वह चाहता था, कि जगह-जगहपर रूसी वस्तिया बसा दी जाय, इसलिये वह अपने साथ अधिकसे अधिक प्रवासियोंको ले आया था। आदिमियोंकी कमीको पूरा करनेके लिये उसने जेलोंमें एक हजार कैदियोंको मुक्त कर दिया, और वह नई वस्तियोंमें जाकर खेती करनेके लिये तैयार कर दिये गये। उनमेंसे जिनके पास वीविया थी, उन्हें उन्होंने अपने साथ ले लिया। जिनके पास वीविया नहीं थी, उन्हें मुरावेफने शादी कर लेनेके लिये कहा। एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी प्रत्यक्षदर्शी राजुल क्रोपत्किन ने इसके बारेमें अपने सस्मरणोंमें लिखा है—“मुरावेफने कठोर कैदमें पड़ी सभी कैदी स्त्रियोंको—जिनकी सख्या करीब एक सौ थी—मुक्त करके पुरुष चुननेके लिये कहा। समय बीता जा रहा था, और नदीका पानी कम होता जा रहा था, वेडेंको जल्दी प्रस्थान करना था, इसलिये मुरावेफने उन्हें जोड़े-जोड़े तटपर खड़ा होनेके लिये कहा, और फिर यह कहते हुये आशीर्वाद दिया—‘वच्चो, मैं तुम्हारा व्याह कराता हूँ, एक दूसरेके साथ मेहरबानीमें बर्ताव करना। पुरुषो, तुम अपनी वीवियोंसे बुरा बर्ताव नहीं करना। जाओ आनन्दमें रहो।’”

फ्रांस और इंग्लैंड इस समय रूसके मुख्य प्रतिद्वंद्वी थे। वह पेचिङ (पेकिङ) में रूसके खिलाफ अपनी कार्रवाई निराशा रूपसे करते जा रहे थे, इसलिये रूसको वहाँ अपने राजदूतके रखनेकी

अवश्यकता थी। जारने अद्मिरल पुतियातिनको चीन दरबारमें अपना दूत बनाकर भेजा। अग्रेजोंकी तरह रूसियोंकी भी धारणा थी, कि पूर्वी लोग तडक-भडक से अधिक प्रभावित किये जा सकते हैं। मुरावेफने चीनियों पर प्रभाव डालनेके लिये रूसी राजदूतके आनेपर क्याखतामें भारी स्वागतकी तैयारी की, नगरमें दीपमाला जलाई गई, रूसी सेनाने कवायद-परेड की। लेकिन चीनियोंपर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। पेकिङसे हुक्म आनेका बहाना करके चीनियोंने राजदूतको आगे बढ़नेसे रोके रक्खा। पुतियातिनने इसपर आमूर द्वारा ऐगुन पहुँच और वहाँसे पेकिङ जानेकी इजाजत मागी, लेकिन वहाँ भी चीनियोंने रास्ता नहीं दिया। पुतियातिन जबर्दस्ती जाना चाहता था, लेकिन मास्कोकी आज्ञा बिना ऐसा करना मुरावेफको पसंद नहीं था। इसपर पुतियातिनने समुद्रके रास्ते पेकिङ जानेका निश्चय किया। आमूरके द्वारा २४ जलाई १८५७ ई० को वह उसके मुहानेपर पहुँचो। वहाँ भी पेकिङ जानेके लिये चीनी अधिकारियोंसे बहुत माथापच्ची की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वहाँसे फिर वह शाघाई पहुँचा, और ब्रिटिश और फ्रेंच नौसेनासे मिलकर उन्हें पेङ-होके मुहानेपर घेरा डालनेका परामर्श दिया। चीन अभी फ्रांस और इंग्लैंडको अपने विरुद्ध करके उनकी तोपोंकी मार खा चुका था, इसलिये वह रूसको भी अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहता था।

११ मई १८५७ को मुरावेफ अपने मामूली अभियानोंके दौरानमें ऐगुनमें ठहरा। वहाँ उसने चीनी सेनापति राजकुमार शानसे भेंट करके अपनी मांग रक्खी। चीनियोंने कुछ आनाकानी करनेके बाद उसे मजूर किया। छ दिनके भीतर ही बातचीत खत्म हो गई, और १६ मई १८५८ ई०को ऐगुन-संधिपर हस्ताक्षर भी हो गया। इस संधि द्वारा चीनने आमूरके वाम तटपर रूसके अधिकारको स्वीकार किया, और उसुरीके सगम तक दक्षिण तट चीनका माना गया। उसुरीके सगमसे आगे समुद्र तककी भूमिकी सीमाका निर्णय आगेके लिये छोड़ रक्खा गया। दोनोंने नदी द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक व्यापार और यात्रा करनेके अधिकारको भी मजूर किया। मुरावेफने कृपा दिखलाते हुये यह मजूर किया, कि रूसी तटके ऊपर जेथाके पासमें रहनेवाले मचू चीनकी प्रजा रहेंगे। इस बड़ी सेवाके लिये जार अलेक्सान्द्र II ने मुरावेफको “काउन्ट (ग्राफ) आमूर्स्की” की उपाधि प्रदान की। मुरावेफने रास्ता साफ कर दिया, इसलिये पुतियातिनको जून १८५८ ई०में तियान्त्सिनकी शांति-मित्रता-व्यापार नौचालन-संधि करनेमें कोई रुकावट नहीं हुई। लेकिन पुतियातिनको ऐगुन-संधिका पता नहीं था। तियान्त्सिनकी संधिने चीनके खुले बन्दरगाहोंमें रूसको व्यापार करनेकी इजाजत दी, और दूसरे राज्योंने जहाँ अपने वाणिज्य-दूत स्थापित किये हैं, वहाँ रूसियोंको भी वैसा करनेकी स्वीकृति दे दी। यदि कोई रूसी आदमी चीनमें रहते कोई अपराध करे, तो उसे सबसे समीपवाले रूसी वाणिज्य-दूतके पास या सीमातके बाहर भेजनेकी बात मानी गई। इस संधिने रूसी ईसाई-मिशनरियों और उनके चीनी अनुयायियोंके लिये भी रक्षाका विशेष अधिकार प्रदान किया। संधिपत्र रूसी, मचूरी और चीनी तीन भाषाओंमें लिखा गया था और माना गया था, कि यदि किसी वाक्यके बारेमें विवाद हो, तो मचूरी भाषाका अभिलेख सर्वोपरि प्रमाण माना जायगा।

चीनको नौचर्नके लिये इस समय पश्चिमी युरोपके राज्य गिद्धकी तरह चिमटे हुये थे, वह हर तरहसे उसे दबाना चाहते थे। २६ जून १८६० ई०में एक बहाना करके उन्होंने अपनी सेनायें भेज दी, जो लड़ती हुई पेकिङतक पहुँच गई और वहाँके कला और सौन्दर्यके सुन्दर संग्रहालय युवान-मिङ-युवानके प्रासादको लूट लिया। मालूम हो रहा था, पश्चिमी शक्तियाँ चीनसे मचू-वशको खतम करके छोड़ेंगी, लेकिन निरकुश राजतन्त्रको कायम रखना जारशाहीने अपना कर्तव्य मान लिया था। इसी समय रूसी दूत इग्नतियेफ मचू-वशका सरक्षक बनकर पेकिङ पहुँचा, जिसने पश्चिमी राज्यों और मचू-वशके बीचमें संधि करा दी। इग्नतियेफने पश्चिमी सेनाओंके पेकिङ जानेमें पहले ही फ्रेंच दूतसे तियान्त्सिनमें सुन लिया था, कि पश्चिमी शक्तियाँ पेकिङमें बराबरके लिये अपनी सेना नहीं रखना चाहती। उसने चीनके महामंत्री कुङकोसे यह बात छिपाकर बतलाया, कि मैं कोशिश करूँगा, कि अग्रेज और फ्रेंच सेनायें पेकिङ छोड़कर चली जायें, लेकिन शर्त यह है, कि चीन ऐगुन-संधिको स्वीकार करे, और उसुरी-सगमसे समुद्र तकके भागको रूसको दे दे। पेकिङको शत्रु-सेनाओंसे मुक्त करानेके लिये चीन सब कुछ करनेको तैयार था। २४ अक्तूबरको इंग्लैंडके साथ और २५ को फ्रांसके

साथ सधि करानेमें इन्तितयेफने तत्परता दिखलाई । ५ नवम्बरको पश्चिमी सेनायें पेकिङ छोड़कर चली गईं । अब अपने इनामके रूपमें इन्तितयेफने १४ नवम्बरको हस्ताक्षरित होनेवाली चीन-रूस-संधिको करवाया, जिसके द्वारा प्रशान्त महासागरके तट तकका एक बहुत भारी भूभाग चीनके हाथसे निकल आया ।

येर्मक और खवारोफके साइबेरियामें उठाये हुये कामको इस प्रकार मुरावेफने पूरा किया । यही तीनों साइबेरियाके लिये जारशाही क्लाइव, हेग्टिंग्स और वेल्जली थे ।

### १७ अलेक्सान्द्र III, अलेक्सान्द्र II-पुत्र (१८८१-९४ ई०)

बापकी हत्याके बाद अलेक्सान्द्र गद्दीपर बैठा । उसके समयमें घोर अत्याचारके मारे लोग कराहने लगे । अलेक्सान्द्रको हर वक्त मौतका डर लगा रहता था, इसलिये वह पीतरवुर्ग छोड़कर गश्चिनामें रहता, जिससे उसके समसामयिक उसे "गश्चिनाका वदी" कहा करते थे । शिक्षित लोग सबसे अधिक जारके निरकुश शासनके प्रति घृणा रखते थे, इसलिये सार्वजनिक शिक्षाका वह सबसे बड़ा विरोधी था । तोवोलके राज्यपालने जब उसे सूचित किया, कि साइबेरियामें बहुत कम शिक्षित लोग हैं, तो उसने जवाबमें कहा—"इसके लिये हमें भगवान्को वन्यवाद देना चाहिये ।" उसका कहना था—"गाडीवानों, कोचवानों, नौकरो, बोंबियों, छोटे दूकानदारों आदिके बच्चोंको सिवाय विशेष प्रतिभाकी अवस्थाके उस स्थितिसे ऊंचे उठनेके लिये प्रोत्साहित नहीं करना चाहिये, जिस स्थितिमें कि वह पैदा हुये ।" अभी तक रूसी विन्वविद्यालयोंको अपने कुलपति (रेक्टर) और प्रोफेसर निर्वाचित करनेका अधिकार था, लेकिन १८८४ ई०में नया कानून बनाकर जारने उनसे यह अधिकार छीन लिया । अच्छे-अच्छे प्रोफेसर निकाल दिये गये, और स्त्रियोंके लिये उच्च-शिक्षा एक तरहसे वर्जित कर दी गई ।

रूम-भिन्न जातियोंका शोषण और कठोर शासन और बढ़ता गया । अलेक्सान्द्र III ने यहूदियोंको भूमि खरीदने और गांवमें बसनेका निषेध कर दिया । १८८७ ई०में माध्यमिक और उच्च-शिक्षण संस्थाओंमें यहूदी विद्यार्थियोंके लिये उसने सख्ती निश्चित कर दी । उदमूर्त जैसी कितनी ही जातियोंको ईसाई बनानेके लिये मिशनरियोंको प्रोत्साहन दिया गया । जो उदमूर्त अपने बाप-दादोंके धर्मको छोड़ना नहीं चाहते थे, उन्हें देवताओंके सामने नर-बलि करनेका अपराध लगाकर कठोर दंड दिया जाता था ।

जारशाहीका ध्यान अब मध्य-एसियाकी ओर विशेष तौरसे गया था । वहांसे कपासकी गांठें रूसके कारखानोंमें भेजी जाती थीं । पहले वह ऊटोपर लदकर आती थी, अब उसके लिये रेलके बनानेकी अवश्यकता पड़ी । १८८० ई०के बाद समरकन्दको रेलद्वारा कास्पियन-तटसे मिला दिया गया । कास्पियनके दूसरे तटपर रूससे मिलानेवाली रेल इससे पहले ही तैयार हो गई थी । लेकिन रूस जिस तरह मध्य-एसियामें बढ़ रहा था, उसे अंग्रेज नहीं पसंद करते थे । रूस अब अफगानिस्तानका पड़ोसी था । हमें मालूम है, कि अंग्रेज सरकार रूसका ही डर बतलाकर भारतके वार्षिक बजटका बहुत भारी भाग पश्चिमोत्तर सीमातकी सैनिक तैयारीपर खर्च करती थी । १८८५-८६ ई० में निश्चित मालूम हो रहा था, कि रूस और इंग्लैंडमें लड़ाई छिड़ जायेगी, लेकिन १८८७ ई०में रूस और ईरानकी सीमा, और १८९५ ई० में रूस और अफगानिस्तानकी सीमाको ठीक कर देनेसे युद्धकी सम्भावना कम हो गई ।

जिस वक्त इंग्लैंडके साथ रूसके संबंध विगड़ रहे थे, उसी समय फ्रांसके साथ उसके संबंध अच्छे हो रहे थे, जिनके कारण फ्रांसीसी पूंजी बहुत भारी परिमाणमें रूसमें लग रही थी, और फ्रांसीसी सरकारने जारशाहीकी बात मानकर रूसी क्रांतिकारियोंके ऊपर अपने यहां देख-रेख रखनेका वचन दिया । जर्मनी त्रिस्मार्कके नेतृत्वमें बहुत एकताबद्ध और शक्तिशाली हो चुकी थी । १८७० ई०में एक बार विजयिनी जर्मन सेना पेरिसमें पहुंच चुकी थी, इसलिये फ्रांस रूसके साथ घनिष्टता स्थापित करना चाहता था । १८९१-९३ ई० में फ्रांस और रूसके बीच कई संधियां हुईं, और जर्मनीके आक्रमण करनेपर आठ लाख सेना भेजनेका रूसने वचन दिया था ।

प्रथम मजदूर आन्दोलन—यद्यपि वकुनिन-जैसे बुद्धिजीवी क्रांतिकारी मार्क्सकी अपेक्षा स्वाप्लिक (उटोपियन) समाजवादकी तरफ अधिक आकृष्ट हुये थे, लेकिन रूसके मजदूरोंमें मार्क्सके विचार पहले ही पहुँच चुके थे, जैसा कि मार्च १८७० ई०में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय (इन्टरनेशनल) महापरिषद्में प्रवासी रूसी क्रांतिकारियोंके कार्ल मार्क्सको रूसका प्रतिनिधि बनानेसे मालूम होता है। मार्क्सने उनकी बातको स्वीकार करते हुये जवाबमें लिखा था—“रूसमें जारशाहीका विनाश सिर्फ रूसी जनताके लिये ही आवश्यक नहीं है, बल्कि यूरोपीय सर्वहाराकी मुक्ति भी उसीपर निर्भर करती है।” हम देख चुके हैं, कि यूरोपकी जन-क्रांतियोंको दवानेके लिये रूसी जार हमेशा खुलकर अपनी सेना और पैसा देनेके लिये तैयार थे। १८७१ ई०में फ्रांसपर जर्मनीके विजय होनेके बाद पेरिसके कमकरोने “पेरिस कमून” के नामसे विश्वमें प्रथम कम्युनिस्ट सरकार कायम की, रूसी कमकरोने उसके साथ अपनी सहमति और सहानुभूति दिखलाई। १८७८ ई०में पेरिस कमूनके वार्षिकोत्सवके समय अदेस्साके मजदूरोंने अपनी सद्भावनाके सदेश भेजे। १८७० ई०के बाद नरोद्निकोके कार्यक्रमके असफल होनेपर क्रांतिका स्रोत वही सूख नहीं गया, बल्कि अब मजदूरोंने क्रांतिके झंडेको अपने हाथमें लिया। मई १८७० ई० में पीतरवुर्गकी नेवा कण्डा मिलमें मजदूरोंकी पहिली सबसे बड़ी हड़ताल हुई, जिसको तोड़ने और मजदूरोंको दवानेमें जारशाहीको काफी दिक्कत उठानी पड़ी। यह पेरिस-कमूनकी स्थापनाके एक साल पहिलेकी घटना है। १८७५ ई० में उक्रेनमें कारखानेके डेढ़ हजार मजदूरोंने हड़ताल की। १८७७ ई०में अदेस्साके रेलवे मजदूरोंने साढ़े तीन सप्ताह तक अपनी हड़तालको चलाया। मजदूरोंकी माँग थी—जुरमानोका कम करना, वच्चोंसे कम घंटे काम लेना। इस तरह हम देखते हैं, कि १८७० ई० के बाद रूसके मजदूरोंमें सामूहिक वर्गचेतना प्रारम्भ हुई थी। सबसे पहला मजदूर वासिली गेरासिमोफ था, जिसे सिपाहियों और मजदूरोंमें क्रांतिकारी प्रचारके अपराधमें नौ वर्षकी सजा हुई, और वह साइबेरिया (याकुत्स्क) में १८९२ ई०में मरा। उस समयका दूसरा मजदूर क्रांतिकारी प्योत्र अलेक्सियेफ था। वह स्मोलेन्स्कके एक किसान घरमें पैदा हुआ था, पीछे नरोद्निक दलका सदस्य बना। प्योत्र अपनी शिक्षा और अनुभवसे समझ गया, कि नरोद्निक कार्यक्रमसे सफल क्रांति नहीं हो सकती, इसलिये वह समाजवादी वन कारखानोंके मजदूरोंमें प्रचार करता रहा। मार्क्सके मजदूर उसे बहुत प्यार करते थे, और अपने असाधारण स्नेहको दिखलानेके लिये उसे पित्रुस्का कहकर पुकारते थे। प्योत्रको साइबेरिया (याकुत्सिया) में दस सालकी कालेपानीकी सजा हुई। १० मार्च १८७७ ई०में अदालतमें भाषण देते हुये उसने कहा था—“मजदूर नसोंवाले लाखों मजदूरोंके हाथ उठेंगे, और सैनिकोंकी सगिनीसे सरक्षित स्वेच्छाचारिताका जूआ चूर्ण-विचूर्ण हो जायेगा।” लेनिनने इसे “रूसी मजदूर क्रांतिकारीकी महान् भविष्यद्वाणी” कहा था। प्योत्र १९८१ ई०में साइबेरियामें डाकुओंके हाथों मारा गया।

प्रथम क्रांतिकारी मजदूर सगठन १८७५ ई०में अदेस्सामें “दक्षिणी रूसी मजदूर सघ” के नामसे युगेनी जास्लाव्स्की द्वारा स्थापित हुआ। इस सघने मार्क्सके प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय नियमोंको अपनाया था। इस सघके डेढ़-दो-सौ धातु-कमकर सदस्य बने थे। इसकी कई शाखाएँ खुली, और करीब साल भर तक जीवित रहकर जारशाही अत्याचारोंने इसे छिन्न-भिन्न कर दिया। जास्लाव्स्की-को दस सालकी सजा दी गई, और वह थोड़े दिनों बाद जेल हीमें मर गया।

दक्षिणके मजदूरोंके सगठनको देखकर पुलिसके हाथों वहासे भागकर एक मिस्त्री (फिटर) विक्टर अवनोस्की उत्तरकी ओर आया, और उसने उस समयके एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्तेपान खल-तुरिनके साथ मिलकर १८७८ ई०में पीतरवुर्गमें “रूसी मजदूरोंका उत्तरी सघ” स्थापित किया। इस सघने हड़तालके संचालनका काम भी अपने हाथमें लिया। वह अपना गुप्त प्रेस खोलकर मजदूर क्रांतिकारी पत्रिका “खोचया जार्या” (कमकरोकी उपा) का प्रथम अंक निकालने जा रहा था, इसी समय पुलिसने आकर प्रेसको छीन लिया, और पत्रिका निकल नहीं सकी। १८८० ई०में पुलिसने उत्तरी सघको छिन्न-भिन्न कर दिया। विक्टर अवनोस्कीको दस सालकी सजा हुई, स्तेपान खलतुरिन इधरसे निराश होकर नरोद्निकोंके आतंकवादमें भाग लेने लगा, और १८८२ ई०में अलेक्सान्द्र II को मारनेके प्रयत्न करनेमें उसे फाँसीपर चढ़ा दिया गया।



**शिक्षा और संस्कृति**—जार शिक्षा और विज्ञानके प्रचारसे कितने डरते थे, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। लेकिन सरकारके सैनिक और अर्धसैनिक विशाल क्षेत्र को चलानेके लिये शिक्षितोंकी अवश्यकता थी, पर वह उसका कमसे कम प्रचार चाहते थे। लेकिन कालबली के सामने जारोंकी क्या चलती? अव्वजीवादी युग आरम्भ हो चुका था, जिसके लिये शिक्षाके अधिक व्यापक रूपमें फैलानेकी अवश्यकता थी। किमानोंकी अर्धदामनाके उच्छेदके बाद गावोंमें भी शिक्षाकी मांग हुई, और ऐसे ही ग्राम-स्कूलोंके संगठनमें विशेष भाग लेनेवाला लेनिनका पिता इलिया निकोलाइ-पुत्र उलियानोफ (१८३१-८६ ई०) था, जिसने सिबिरिककी गुबर्निया (प्रदेश) में बहुत काम किया। अव १८६० ई०के बाद लड़कियोंके भी स्कूल कायम होने लगे, और पीतरबुर्गमें एक महिला विद्यालय और मेडिकल स्कूल (१८७० ई० के बाद ही) खोला गया।

रूसी सामन्तशाहीकी तरफमें यद्यपि विज्ञान-प्रचारके लिये वैसा कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता था, जैसा कि पश्चिमी युरोपमें देखा जाता था, लेकिन रूसी जातिके पाम प्रतिभा मौजूद थी, इसलिये वह ऊपर आनेके लिये प्रयत्न किये बिना नहीं रह सकती थी। विश्वविख्यात रसायनशास्त्रवेत्ता दिमित्रि इवान-पुत्र मेन्देलेयेफ (१८३४-१९०७ ई०) इसी समय अपनी खोजों द्वारा दुनियाकी विद्वन्मंडलीको चकित कर रहा था। उनकी बनाई “रामायनिक तत्वोंकी युगक्रमिक पद्धति” को सारे ससारने स्वीकार किया। लेकिन अलेक्सान्द्र III ने इस विश्वविख्यात विज्ञानवेत्ताको उसके स्वतंत्र विचारोंके लिये पीतरबुर्ग विश्वविद्यालयमें निकाल दिया। इस कालके दूसरे विज्ञानवेत्ता शरीरशास्त्री इवान मिखाइल-पुत्र सेचेनोफ और वनस्पतिशास्त्रवेत्ता क० अ० तिमिरियाजोफ (१८४३-१९२० ई०) थे। तिमिरियाजोफकी खोजोंका सम्मान सारी दुनियाने उसके जीवनमें ही किया। लेकिन यह दोनों विज्ञानवेत्ता जारके कोपभाजन हुये। तिमिरियाजोफका यह सौभाग्य था, कि उसने बोल्शेविक-क्रान्तिको अपनी आखोंके सामने सफल होते देखा, और कम्युनिस्ट सरकार और रूसी जनताके महान् सम्मानको प्राप्त किया।

**साहित्य**—इन कालके प्रगतिशील पत्रकारों और समालोचकोंमें दिमित्रि इवान-पुत्र पिसारोफ (१८४०-६८ ई०)का विशेष स्थान है। यह २८ ही वर्षकी उमरमें मर गया, लेकिन इतने ही कालमें उसने स्वेच्छाचारी शासकोंके दिलको दहला दिया। उन्होंने उसे पीतर-पावल-दुर्ग (लेनिन-ग्राद) में १८६२-६६ ई० में बंद रक्खा। जेलमें रहते हुये भी पिसारोफकी कलम बंद नहीं हुई।

कवि नैकानोफ और समालोचक सल्टिकोफ-श्चेद्रिनके सम्पादकत्वमें “अतेचेस्तत्वेनीये जापिस्की” (मातृभूमिकी टिप्पणियाँ) एक प्रभावशाली जनतन्त्रवादी पत्रिका निकलती थी, जिसका बहुत प्रचार था, विशेषकर नरोद्निक क्रान्तिकारियोंमें। उसके बाद इन पत्रिकाका सम्पादक न० क० मिखाइलोव्स्की हुआ, जो क्रान्तिका पक्षपाती होते हुये भी अपने अवैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रतिगामी दार्शनिक विचारोंके कारण लेनिनकी कड़ी समालोचनाका पात्र हुआ।

अब रूसके साहित्यकारोंने गोगल और पुश्किनकी कलमको इतना आगे बढ़ाया, कि प्रसिद्ध विचारक एगल्सको लिखना पड़ा—“रूसी भाषा कितनी सुंदर है, इसमें भयंकर भद्देपन को छोड़कर जर्मन भाषाके सभी गुण मौजूद हैं।” इसी कालमें इवान सेर्गेइ-पुत्र तुर्गेनेफ (१८१८-८३ ई०) जैसा रूसवा महान् लेखक पैदा हुआ। “एक शिकारीके पत्र” में उसने जमींदारोंके नीचे कराहते अर्बदास किमानोंके जीवनका चित्र खींचा था। “अमीरोका घांसला”, “रुदिन”, “सव्याको”, “पिता और पुत्र” उपन्यासोंमें उसने १८८० और १८९० ई०के आसपासके रूसके सामाजिक जीवनका सटीक चित्र उपस्थित किया है। अपने “घुआ”, “बजर भूमि” में भी उसने उसी तरहमें अपनी लेखनीका चमत्कार दिखलाया है। तुर्गेनेफ किसानोंकी मुक्ति चाहता था, और अर्बदासताके उच्छेदको अवश्यम्भावी बनानेमें उसकी लेखनीने भी काम किया था। इसी समयका महान् साहित्यिक मूर्धन्य फ० म० दोस्तोयेव्स्की (१८२१-८१ ई०) था, जिसका उपन्यास “गरीब लोग” १८४० ई०के बाद निकला और ज० सी ही प्रसिद्ध हो गया। उसके दूसरे कथाग्रंथ “मृतक ग्रह के सस्मरण”, “अनर व और दड”, “मूर्ख”, “कग्माजोफ भाई” जैसी रूसी साहित्यकी अमर कृतियाँ इसी समय लिखी गईं। लेव लेव ताल्स्वा (ताल्स्ताय १८२८-१९१० ई०) जैसी प्रतिभा इसी समय प्रकट हुई। उसके ग्रंथ १८५० ई०

के बाद ही प्रकाशित होने लगे। अपने “युद्ध और शांति”, “अन्ना करेनिना” जैसे ग्रंथोंमें रूसी जीवनका उसने अनुपम चित्र खींचा है। “युद्ध और शांति” में १८१२ ई०में रूसियोंके वीरतापूर्ण संघर्षका बड़ा सजीव वर्णन है।

चित्रकला, नाट्यकला और संगीतकलामें भी इस कालमें चित्रकार ई० न० कराम्स्की (१८३७-८७ ई०), व० ग० पेरोफ (१८३३-८२ ई०), अद्भुत चित्रकार इलिया एफिम-पुत्र रेपिन (१८४४-१९३० ई०) हुये। संगीतकारोंमें म० अ० बलाकिरेफ (१८३६-१९१० ई०), व० व० स्तासोफ (१८२४-१९०६ ई०), अ० प० बोरोदिन (१८३३-८७ ई०) जैसे संगीतकार, और म० न० येर्मोलोवा, और ग० न० फेदोतोवा जैसी अभिनेत्रियाँ, और प० म० सदोव्स्की जैसे प्रतिभाशाली अभिनेता पैदा हुये।

**मार्क्सवादका प्रचारारंभ**—मार्क्सके महान् ग्रंथ “पूजी” के प्रथम जिल्दका रूसी अनुवाद १८७२ ई० में प्रकाशित हुआ। उस समय अभी मजदूरोंमें वर्गचेतनाका आरम्भ ही हुआ था। पहला मार्क्सवादी संगठन “मजदूरोंकी मुक्ति” (श्रमिकमुक्ति) की स्थापना जनेवा (स्वीजर्लैंड) में १८८३ ई० में प्लेखानोफने की, जिसमें कितने ही रूसी क्रांतिकारी शामिल हुये थे। जार्ज वलेन्तिन-पुत्र प्लेखानोफ (१८५६-१९१८ ई०) पहले नरोद्निक क्रांतिकारी था, पीछे प्रथम मार्क्सवादी महालेखक हुआ। जारशाही अत्याचारोंने उसे देशसे बाहर जानेके लिये मजबूर किया, जहाँ उसने मार्क्सके ग्रंथोंको पढ़कर उसके सिद्धांतोंको स्वीकार किया। १८८३ ई०में उसने “समाजवाद और राजनीतिक संघर्ष” पुस्तक प्रकाशित की। दो साल बाद “हमारे मतभेद” को प्रकाशित किया। प्लेखानोफने अपनी लेखनी द्वारा अच्छी तरह साफ कर दिया, कि नरोद्निकवादसे कुछ होने-जानेवाला नहीं है। रूसमें पूजीवाद आकस्मिक घटना नहीं है। रूसके विकासके लिये पूजीवादी मार्ग छोड़ दूसरा रास्ता नहीं है, और पूजीवादके विकासके साथ-साथ क्रांतिकारी सर्वहारा वर्गको भी विकसित होनेसे रोका नहीं जा सकता। “मजदूर मुक्ति” संगठनने रूसमें समाजवादी विचारोंको फैलानेका काम किया। इसीने मार्क्स और एंगेल्सके “कम्युनिस्ट घोषणा”, “श्रम-वेतन” और “पूजी” आदि ग्रंथोंको प्रकाशित किया, जिनसे एक पीढ़ीके रूसी क्रांतिकारियोंको शिक्षा मिली। मजदूरोंमें भी अब इन विचारोंका प्रचार होने लगा। पूजीवादके लिये समय-समयपर मालकी खपत कम हो जाने, मालकी उपज बढ़ जानेके कारण चीजोंका दाम घट जानेसे समय-समयपर आर्थिक संकटका आना स्वाभाविक है। आर्थिक संकटके समय पूजीपति अपने कारखानोंको बंद करके लाखों मजदूरोंको बाटका भिखारी बना देते हैं। नफा उठानेके समय वह दोनों हाथोंसे लूटते हैं, लेकिन अब वह उनके लिये पैसा कमानेवाले मजदूरोंको भूखा मारनेसे बाज नहीं आते। पर मजदूर चुपचाप कैसे भूखे मरना बर्दाश्त कर सकते हैं? १८८० ई० के बाद जो आर्थिक संकट आया, उसमें और मिलोंकी तरह मोरोजोफ मिलने भी १८८२ ई० में अपने आठ हजार मजदूरोंका वेतन घटाना शुरू किया, और १८८४ ई० तक मिलमालिकोंने एकके बाद एक पांच बार मजूरी घटाई। इसके साथ-साथ मजदूरोंको जरा-जरा-सी बातपर जुरमाना करना अथवा उन्हें कामसे निकाल देना मामूली बात थी। इस समय मजदूरोंमें “उत्तरी संघ” द्वारा क्रांतिकारी विचारोंका प्रचार हो चला था। ७ जनवरी १८८५ ई०को सात बजे सबेरे ही पहले निश्चित संकेतके अनुसार चिल्लाकर कहा गया—“आज छुट्टी है, काम बंद करो, गैस रोक दो, स्त्रियों, बाहर चली जाओ।” उसी समय सारी मिल बंद हो गई। मजदूरोंने उत्तेजित किये जानेपर मिलकी कितनी ही चीजोंको तोड़-फोड़ दिया, मनेजरके मकानको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इसपर जारशाही पुलिस और सेनाने घावा बोल दिया। बट् वोलकोफ आदि बहुतसे हड़ताली मजदूरोंको पकड़कर मीधे जारके सामने ले गये। अलेक्सान्द्र III ने पूछा—“क्या मैं सबके लिये हूँ, या तुम सब मेरे लिये हो?” मजदूरोंने जवाब दिया—“हर एक आदमी तुम्हारे लिये है।” लोगोंने कसाकोसे वोलकोफको छुड़ानेकी कोशिश की, बहुत भारी प्रदर्शन किया। इसके बाद मजदूरोंके संगठनको दबाने और उनकी हिम्मत तोड़नेके लिये जारने पूरी कोशिश की। इस समयके हड़ताली नेताओंमें एक मजदूर प० अ० मोइसेयको भी था, जिने जारशाही अदालतने छोड़ दिया था, लेकिन जार अलेक्सान्द्र III ने अपनी विशेष आज्ञासे उसे कालापानीका दंड दिया। मोइसेयकोने १९१७ ई०को बोल्शेविक क्रांतिमें भाग लिया, गृहयुद्ध-कालमें लाल सैनिक

वनकर लडा, और १९२३ ई० में मरा। १८९१ ई० में पीतरवुर्गमें मार्क्सवादियोंने मई-दिवसके बहानेसे प्रथम गुप्त क्रांतिकारी बैठक बुलाई। इसमें एक वुनकर मजदूर अफनासेयेफने उपस्थित मजदूरोंसे पुकारकर कहा—“साथियो, हम जरूर सीखेंगे, जरूर सगठित होंगे, और अपनेको एक मजबूत पार्टीके रूपमें मघबद्ध करेंगे।” लेनिनने पीतरवुर्गके मजदूरोंके इस पहले प्रयासके बारेमें लिखा था—“१८९१ ई०का साल शेलगुनोफकी श्मशानयात्राके प्रदर्शनमें पीतरवुर्गके मजदूरोंके भाग लेनेके लिये विशेष तौरसे उल्लेखनीय है, और वह पीतरवुर्गमें मई-दिवस मनानेके समय दिये गये राजनीतिक व्याख्यानोके लिये भी विशेष तौरसे उल्लेखनीय है।” न० व० शेलगुनोफ सारे जीवनभर मजदूरों और गरीबोंकी स्वतंत्रताके लिये काम करता रहा। मरनेके समय मजदूरोंने उसे अभिनन्दन-पत्र भेंट किया था।

अलेक्सान्द्र III के शासनकालमें पूजीवादी उद्योगका विस्तार बहुत हुआ, रेलोंका भी प्रसार बढ़ा। लेकिन जारशाही कालमें रूसमें विदेशी पूजी सबसे अधिक लगी हुई थी, जिसमें भी फ्रेंच और बेल्जियन पूजीपतियोंका भाग अधिक था। किसानोंकी अर्बदासता खतम हो गई थी, लेकिन अब भी उनका शोषण कम नहीं हो रहा था।

## १८. निकोलाइ II, अलेक्सान्द्र III-पुत्र (१८९४-१९१७ ई०)

रूसका यह अन्तिम जार बहुत कमजोर दिमागका, किंतु बड़ा ही घमडी और क्रूर था। प्रगतिशील विचारोंके प्रति घृणा उसने अपने बाप-दादोंके खूनसे पाई थी। १८९६ ई०में सिंहासनारोहणके समय मास्कोमें एक महामेलेका प्रबंध किया गया था, जिसमें लाखों आदमी आये, किंतु सरकारकी ओरसे व्यवस्थाका कोई प्रबंध नहीं किया गया, जिससे हजारों नर नारी और बच्चे पैरोंके नीचे दबकर मर गये। उस घटनाके दूसरे दिन मरे निकोलाइ II अपनी स्त्री और विदेशी अतिथियोंके साथ घटनास्थलपर आया। लाशोंको हटा लिया गया था और खूनके दागोंपर बालू डाला जा रहा था। इतनी बड़ी दुर्घटना हो जानेके बाद भी उस शामको निकोलाइ अपनी बीवी अलेक्सान्द्राके साथ मस्त होकर नाचता रहा, मानो कुछ हुआ ही नहीं। इसपर यदि रूसी जनता निकोलाइको “खूनी” की उपाधि दे, तो क्या आश्चर्य ?

मध्य-एशियापर रूसके पूजीवादी विस्तारका खास तौरसे बड़ा प्रभाव पड़ रहा था, क्योंकि रूसी कपडामिलोंके लिये कपास वहीसे आती थी। खोवन्दके राज्यको अब फरगाना-उपत्यकाके नामसे कपासकी उपजका केंद्र बना दिया गया था। बनी खेत-मालिक अपने असामियोंसे खेती करवाकर नफा उड़ाते थे, और साधारण जनता भूखों मरती थी। ऊपरसे १८९० ई०के करीब सरकारी कर तिगुना बढ़ गया था। इन अत्याचारोंको वर्दाशित करते-करते लोग तग आ गये, और मई १८९० ई० में अन्दिजान नगरमें बलवा हो गया। इसके लिये ईशान (सत, मुत्ला) मुहम्मद अली जैसा एक प्रभावशाली धार्मिक नेता अगुवा बना था। फरगानासे बाहर भी भीतर ही भीतर आन्दोलन और सगठन किया गया था। हयियारोंका भी संग्रह हुआ था, जिसमें अग्रेजी बन्दूकोंको अफगान व्यापारियोंने विद्रोहियोंके पास पहुंचाया था। १८ मई १८९८ ई० की रातको दो हजार हयियारबंद उज्बेक और किर्गिज अन्दिजानकी छावनीपर चढ़ आये, और उन्होंने नगरपर अधिकार करना चाहा। “ग़जवा” (जहाद) की घोषणा पहिले हीमें हो गई थी, इसलिये मध्य-एशियाकी मुस्लिम जनता जारशाहीकी विरोधी तथा विद्रोहियोंकी पक्षपाती थी। लेकिन रूसकी सैनिक शक्तके सामने ये थोड़े-से लोग क्या कर सकते थे ? मुहम्मद अली और उसके उत्तरी साथी फामीपर चढ़ा दिये गये, ३४८ उज्बेकोंको लम्बी-लम्बी सजाये हुई। जारशाही पुलिसने लोगोंपर गजब ढाया, तीन उज्बेक गांवोंको उजाड़कर वहाँ रूसियोंको लाकर बसा दिया, दूसरे गांवोंपर भारी सामूहिक कर लगाये।

लेनिन—रूसकी इस राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमिमें ब्लादिमिर इलिया-पुत्र उलियानोफका जन्म २२(१०) अप्रैल १८७० ई०को मिम्विस्क (उलियानोव्स्क) नगरमें एक स्कूल-शिक्षकके घरमें हुआ। ब्लादिमिर उलियानोफ लेनिनके नाममें सब समयके विषयका महान् पुस्तक स्विकृत किया गया है। इलिया उलियानोफ प्रगतिशील विचारोंका बुद्धिजीवी पुरुष था।

उसके सभी वक्त्रोने क्रांतिमे भाग लिया। लेनिनके सबसे बड़े भाई अलेक्सांद्रको जार अलेक्सांद्र III को १८८७ ई०मे मारनेके प्रयत्नका सगठन करनेके लिये फासीपर चढ़ा दिया गया। अपने प्रिय भाईकी हत्याका प्रभाव लेनिनके ऊपर सदाके लिये पड़ना ही चाहिये था, किन्तु उसकी पैनी बुद्धिने वतला दिया, कि नरोद्निकोंका आतंकवाद सफल क्रांतिका रास्ता नहीं है। बिना साधारण जनताके सहयोग और सहानुभूतिके मुट्ठी भर “वीर” दुनियाको नहीं बदल सकते। “नहीं, हम उस पथको नहीं लेगे, वह जानेका रास्ता नहीं है—” लेनिनने अपने १७ वर्षके भाई वोलोद्या उलियानोफके फासीपर चढ़नेकी खबर सुनकर कहा था। १७ वर्षकी उमरमे लेनिन कजानके विश्वविद्यालयमे दाखिल हुआ, लेकिन विद्यार्थियोंके राजनीतिक प्रदर्शनमे भाग लेनेके कारण उसे पकड़कर एक गावमे निर्वासित कर दिया गया। पकड़ते वक्त पुलिस अफसरने लेनिनसे कहा था—“जवान, तुम क्यों विद्रोह कर रहे हो? देख नहीं रहे हो, तुम्हारे सामने एक दीवार खड़ी है?” व्लादिमिरने जवाब दिया—“दीवार, हा वह खड़ी है, लेकिन सड़ी हुई दीवार है, जरा-सा धक्का दो और यह गिर पड़ेगी।” अभी वह व्लादिमिर उलियानोफ ही था, पीछे अपने अन्तर्धान जीवनमें उसे लेनिनका छद्म नाम स्वीकार करना पड़ा। विश्वविद्यालयकी शिक्षासे यद्यपि लेनिन उस समय वंचित हो गया, लेकिन उसने अपने अध्ययनको जारी रक्खा, और जब उसे फिर गाव लौट आनेका मौका मिला, तो उसने मार्क्स और एंगेल्सके ग्रंथोंका बहुत गम्भीर अध्ययन किया। समारा जानेपर वहा उसने मार्क्सवादियोंका प्रथम अध्ययन-चक्र सगठित किया। १८९३ ई०की शरदमें वह पीतरवुर्ग गया, जहाके मार्क्सवादियोंने जल्दी ही उसे अपना नेता मान लिया। १८९४ ई०मे लेनिनने कई व्याख्यान तैयार करके पढ़े, जो पीछे “जनताके मित्र कौन हैं और वह कैसे समाजवादी जनतात्रिकोंसे लड़ते हैं?” के नामसे प्रकाशित हुये। इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि इसमें लेनिनने नरोद्निकोंकी खबर ली थी। इस आरम्भिक पुस्तकमे ही लेनिनने भविष्यद्वाणी की थी—“जनतात्रिक तत्त्वोंका मुखिया बनकर विद्रोह करके रूसी मजदूर स्वेच्छाचारिताका अन्त करेगे और विजयी कम्युनिस्ट रूसी सर्वहाराको क्रांतिके लिये खुले क्रांतिकारी सघर्ष के सरल पथपर ले जायेगे।”

नरोद्निकोंसे सघर्ष करते हुये पीतरवुर्गके मार्क्सवादियोंने “मजदूर वर्गकी मुक्तिके लिये सघर्ष का सघ” के नामसे एक सगठन स्थापित किया था। लेनिन इस सघका जल्दी ही नेता हो गया, जिसने उस समय मार्क्सवादी क्रांतिकारी विचारोंके प्रचारके लिये बहुत काम किया और प्रचारक्षेत्रको बढ़ाया। उसके कार्यमे वावुशिकन, शेलुनोफ और दूसरे कर्मि साथ दे रहे थे। १८९५ ई०की शरदसे पीतरवुर्गके “सघर्ष सघ”ने मजदूरोंको सगठित कर हड़तालका नेतृत्व करना शुरू किया। १८९६ ई० मे राजधानीके तीस हजार जुलाहोंने जारके सिंहासनारोहणके महोत्सवके समय लेनिनद्वारा तैयार की हुई मांगोंके लिये हड़ताल कर दी। मजदूरोंके दवावके कारण जारशाही सरकारको कामके घंटोंको कम करनेका वचन देना पड़ा। रूसके मजदूरोंको अब क्रांतिका क्रियात्मक पाठ मिलने लगा, वह अपनी शक्ति अनुभव करने लगे। इससे पहले ही दिसम्बर १८९५ ई०मे लेनिनको गिरफ्तार करके जेलमे बंद कर दिया गया था। लेकिन जेलकी दीवारे लेनिनके प्रभाव और नेतृत्वको रोक नहीं सकती थी। १८९७ ई०में सरकारने लेनिनको तीन वर्षका कालापानी देकर पूर्वी साइबेरियामे (१८९७ ई०से १९०० ई०तक) येनिसैई गुर्वनिया (प्रदेश) के मिनुसिन्स्की उयेज्द (जिले) के शुशेन्स्कोये गाव मे बंद कर दिया। इसी समय १८९९ ई०मे उसने अपने महान् ग्रंथ “रूसमे पूँजीवादका विकास” को लिखकर समाप्त किया। जब लेनिन साइबेरियामे बंद था, उसी समय मार्च १८९८ ई० में “रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर पार्टी”की प्रथम कांग्रेस मिन्स्क नगरमे हुई, जिसमे “रूसी समाजवादी जनतात्रिक मजदूर पार्टी”की स्थापना घोषित की गई। सरकारने जल्दी ही पार्टीकी केंद्रीय समितिके लोगो और कार्यमें भाग लेनेवालोंको पकड़ लिया, तो भी वह क्रांतिकारी आन्दोलनको बंद नहीं कर सकी। मार्क्सवादी विचारोंकी मजदूरों पर गहरी छाप पड़ती जा रही थी, और वह तभी साम्राज्यके भिन्न-भिन्न प्रदेशोंमे भी फैलने लगे। २० वीं सदीके अन्ततक काकेशसको भी इसकी हवा लगी, जहा किसानोंके विद्रोह अक्सर हुआ करते थे। इसी समय योसेफ विसारियोनोविच जुग-श्विली मार्क्सवादी क्रांतिके प्रभावमे आया, जो कि २१ (९) दिसम्बर १८७९ ई०मे गुर्जीकि एक

छोटे-मे कस्ये गोरीके एक जूते बनानेवालेके घरमें पैदा हुआ था। तरुण योसेफ “होनहार विरवानके होत चीकने पात” के अनुसार सवर्षमें भाग लेनेके लिये छटपटाने लगा। स्वयं अशिक्षित होते हुये भी योसेफके माता-पिताने उसे शिक्षा देनेकी कोशिश की, और चाहा कि वह ईसाई-धर्मका पुरोहित बनकर सम्मानका जीवन बिताये। लेकिन ईसाई-धर्मकी पाठशालाके वातावरणमें भी मार्क्सवादने घुसकर उसे अनीश्वरवादी बना दिया। १८९८ ई०में ही योसेफ तिफलिसके समाजवादी जनतांत्रिक सगठनमें सम्मिलित हो गया था, और इसी समय उसे लेनिनकी प्रथम पुस्तक पढ़नेका अवसर मिला। योसेफ जुगेश्विलीने अपने क्रांतिकारी जीवनमें स्तालिनका छद्म नाम स्वीकार किया था, जो कि उसके गुरुकी तरह ही उसका भी नाम बन गया।

संस्कृति, साहित्य और विज्ञान—१९ वीं सदीके अन्त और २० वीं सदीके आरम्भतक रूसी प्रतिभाका लोहा दुनियामें सर्वत्र माना जाने लगा, यद्यपि अंग्रेजोंके गुलाम भारतको रूस देशका तब तक पता नहीं लगा, जब तक कि १९१७ ई०की बोल्शेविक क्रांतिकी खबर विजलीकी तरह दुनियामें दौड़ने नहीं लगी। इसी कालमें इलिया मेचनिकोफ (१८४५-१९१६ ई०) जैसा महान् प्राणिशास्त्री, इवान पीतर-पुत्र पावलोफ (१८४९-१९३६ ई०) जैसा अद्वितीय शरीरमनोविज्ञानशास्त्री हुये। विजलीके प्रथम आर्क-लैम्पका आविष्कारक प० य० वाव्लोचकोफ (१८४७-९४ ई०) भी इसी समय हुआ, जिसके विजलीके लैम्पकी कदर देशमें नहीं हुई, तो वह पेरिस चला गया, जहां १८७६ ई०में उसने अपने आविष्कारको पेटेंट कराया, और पेरिसमें पहलेपहल उसकी विजली-बत्ती जलाई गई। बाहरके लोग अभी भी नहीं जानते, कि विजली-बत्तीका आविष्कारक अमेरिकन नहीं, एक रूसी था। एडिसनने विजली-बत्तीके आविष्कारक होनेका दावा किया, लेकिन उसमें पहले एक दूसरे रूसी आविष्कारक लादिगिनने उस तरह की विजली बत्ती तैयार कर दी थी, इसलिये अमेरिकन अदालतने एडिसनके दावेको मजूर नहीं किया। हा, लादिगिनके आविष्कारकी कदर उसकी मातृभूमिमें नहीं हुई और उसका विकास अमेरिकनोंने किया। अलेक्सान्द्र स्तेपान-पुत्र पापोफ (१८५९-१९०५ ई०) ने १८९५ ई०में वेतारके तारका आविष्कार किया। वेतारके तारको इतालियन मार्कोनिका आविष्कारक बतलाया जाता है, लेकिन उससे पहले रूसी पापोफ और भारतीय जगदीशचन्द्र बोस उसका आविष्कार कर चुके थे। इन दोनों देशोंकी सरकारोंकी जडता और पक्षपातके कारण उन्हें आगे बढ़नेका मौका नहीं मिला। पापोफने १८९५ ई०में युद्धमन्त्रीके पास अपने प्रयोगोंके लिये एक हजार रूबल अनुदान करनेके लिये प्रार्थना की थी, जिम्का जवाब मिला था—“मे इस तरहके ख्याली पुलावके लिये पैसा देनेकी इजाजत नहीं दे सकता।”

साहित्य और कला—इस कालके साहित्य-गगनके महान् नक्षत्र हैं—अन्तोन पावल-पुत्र चेखोफ (१८६०-१९०४ ई०), और अ० म० गोर्की (१८६८-१९३६ ई०)। इन दोनों महान् लेखकोंकी किननी ही कृतियोंसे भारतीय पाठक भी परिचित हैं। इन दोनों ही को जारशाहीका कोपभाजन बनना पड़ा था। चेखोफ ४४ वर्षकी उमरमें तपेदिकसे मर गया, गोर्कीने नवीन रूसको अपने सामने फलते-फूलते देखा, और उसके निर्माणमें भाग लिया।

इस कालके चित्रकारोंमें रूसी ऐतिहासिक चित्रकलाका सर्वश्रेष्ठ आचार्य व० ई० सुरकोफ (१८४८-१९१६ ई०), छवि-चित्रकलाका महान् निर्माता व० अ० सेरोफ (१८६५-१९११ ई०), प्रकृतिचित्रणका जादूगर ई० ई० लेवितन (१८६१-१९०० ई०) हुये। संगीतके अद्भुत कलाकार प्योन इलिया-पुत्र चेकोव्स्की (१८४०-९३ ई०) का समय भी यही है।

२० वीं सदीके आरम्भ होने-होने सामन्तवादी जमींदारों और उनके स्वार्थोंकी रक्षाकी कोशिश करते हुये भी रूस पूँजीवादी युगमें पूरी तौरमें प्रविष्ट हो गया। लेकिन उद्योगीकरणमें पश्चिमी युरोप के पूँजीपतियोंका सबने बड़ा हाथ था, फ्रांसीसी और जर्मन वक इसमें खास तौरमें भाग ले रहे थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें पश्चिमी युरोपीय पूँजीपतियोंका एक अरब सुवर्ण रूबल रूसके उद्योग-धंधोंमें लगा हुआ था। यह सब किमी पुण्यके लिये नहीं किया जा रहा था, इसे कहनेकी जरूरत नहीं। १८९५ ई०से १९०४ ई० तक अपने इस व्यवसायसे विदेशी पूँजीपतियोंने तिरासी करोड़ सुवर्ण

रुबल नफा कमाया, जो कि उतने समयमें लगाई गई पूजीसे कहीं अधिक था। जारकी सरकारपर १९०३ ई०में तीन अरब सुवर्ण रुबलका विदेशी कर्ज था, जिसपर तेरह करोड़ रुबल प्रतिवर्ष सूद देना पड़ता था। रूसी सामन्त और जमींदार अपने पुराने स्वर्थोंको अक्षुण्ण रखनेमें इतने मस्त थे कि उन्हें अपनी पूजीको इकट्ठा करके उद्योग-वधोमें लगानेकी उतनी फिक्र नहीं थी, जितनी कि पेरिस और दूसरी युरोपकी विलासपुरियोंमें गरीबों के गाढकी कमाईको उड़ानेमें।

लेकिन अब इस पुराने रूसको बदलनेके लिये एक ठोस क्रांतिकारी शक्ति पैदा हो गई थी। १९०० ई०के दिसम्बरमें “इस्का” (चिनगारी) के नामसे लेनिनने अपना पत्र निकाला, जिसके सम्पादनमें प्लोखानोफ और दूसरे समाजवादी जनत्रात्रिक भी सहायता करते थे। बाहर छपकर वह रूसमें गुप्त रीतिसे भेजा जाता था। अपने मुखपृष्ठपर छपे सूत्र “चिनगारी ज्वाला जलायेगी” के अनुसार सचमुच ही रूसमें ज्वाला उलानेमें उसने बहुत काम किया। पीतरबुर्गके एक जुलाहे पाठक ने इसके बारेमें लिखा था—“जब तुम इस पत्रको पढ़ते हो, तो तुम्हें मालूम होता है कि जारशाही सेना और पुलिस हम कमकरों और हमारे बुद्धिजीवी नेताओंसे क्यों इतना डरते हैं? पुराने समयमें प्रत्येक हड़ताल एक बड़ी घटना थी, किन्तु अब हरएक आदमी जानता है कि केवल हड़तालें कुछ नहीं हैं, हमें इनके लिये लड़ते हुये मुक्ति भी प्राप्त करनी है।” १९०० ई० और १९०१ ई०में भी प्रथम राजनीतिक प्रदर्शन होने लगे, जिनके द्वारा समाजवादी क्रांतिकारियोंके बढ़ते हुए प्रभावका पता लगने लगा। १९०० ई०के मई-दिवसमें खरकोफके मजदूरों और विद्यार्थियोंने लाल झंडेके साथ सड़कोपर जलूस निकाला था, जिसमें वह नारा लगा रहे थे—“स्वेच्छाचारकी क्षय”। १९०१ ई० का मई-दिवस सारे देशमें हड़तालें और प्रदर्शनोंके साथ मनाया गया। १९०२ और १९०३ ई०में और भी राजनीतिक हड़तालें और प्रदर्शन हुये। १९०२ ई०में किसानोंके भी कई आन्दोलन हुये और उनके पथप्रदर्शनके लिये लेनिनने “गावके गरीबोंसे” नामकी एक छोटी किन्तु बहुत ही प्रभावशाली पुस्तक लिखी। इस तरह क्रांतिकी शक्तियां बढ़ रही थी, लेकिन दूसरी तरफ इन शक्तियोंमें कमजोरी पैदा करने के लिये नरमदली क्रांतिकारी फूट भी पैदा करने लगे थे। गरमदल के क्रांतिकारी प्रोग्रामको लेनिन और उनके समर्थक मानते थे, जिनका समाजवादी जनतांत्रिक पार्टीमें बहुमत था। इसीलिये लेनिन और उसके अनुयायी बोल्शेविक (बहुमतीय) कहे जाने लगे। नरमदली अल्पमतमें होनेके कारण मेन्शेविक (अल्पमतीय) कहे जाने लगे। १९०३ ई०की जुलाई और अगस्तमें ब्रुसेल्स और पीछे लन्दनमें पार्टीकी जो द्वितीय कांग्रेस हुई थी, उसी समय उसके यह दो टुकड़े हो गये। अपनी सूझ, तत्परता और त्यागसे बोल्शेविक मजदूरों और दूसरी शोषित जनतामें अपने प्रभावको बढ़ाते गये, जब कि मेन्शेविक बुद्धिजीवियोंमें अपनी कलावाजी दिखानेतक ही अपने कामकी इतिश्री समझते थे।

**रूस-जापान-युद्ध (१९०४ ई०)**—रूसका प्रसार जिस तरह प्रशान्त महासागर तक हुआ, इसे हम वतला आये हैं। अभी तक उसका प्रतिद्वंद्वी चीन था, जिसकी निर्बल और भ्रष्टाचारपूर्ण सरकार रूसके सामने बराबर दबती रही, अब पूर्वी एसियामें जापान-जैसी एक बड़ी शक्ति पैदा हो गई थी। १८९४-९५ ई० में जापानने चीनको हराकर अपनी शक्तिका परिचय दिया था, और क्षतिपूर्तिकी बहुत भारी रकम तथा कोरिया, पोर्ट आर्थर, ल्याउतुङ्ग-प्रायद्वीपके साथ मचूरियाके सारे दक्षिणी समुद्रतटपर अपने अधिकारको चीनसे मनवाया था। “कटकेनैव कटकम्” की नीतिको अपनाते हुये चीन चाहता था, कि जापानको रूससे भिड़ा दिया जाय। १८९६ ई०में जारके वित्तमन्त्रीने चीनी पूर्वी रेल बनवानेके लिये चीनके साथ एक संधि की। उससे पहले साइबेरियाकी रेलवे बन चुकी थी। इस रेलको बनाकर जारशाही रूस मचूरिया और कोरियापर हाथ साफ करना चाहता था। १८९८ ई० में ल्याउतुङ्ग प्रायद्वीप और उसके पोर्ट आर्थर बन्दरगाहको भी रूसने ठीकेपर ले लिया, और उसने जल्दी-जल्दी हार्बिनसे पोर्टआर्थर तक रेल बनानेका काम शुरू कर दिया। इस समय गिद्धकी तरह पश्चिमी युरोपकी शक्तियां चीनमें बन्दरगाहें कर रही थीं। जर्मन कैसरने क्याउ चाउके बन्दरगाहको दखल कर लिया। इंग्लैंडने हांगकांगको तो आधी शताब्दी पहले ही ले लिया था, अब उसने वेई-हाइ वेई बन्दरगाहपर भी अधिकार कर लिया। फ्रांस क्या पीछे रहने लगा? उसने भी अपने हिन्दचीन अधिकृत प्रदेशकी सीमाको चीनके भीतर बढ़ाया। संयुक्त राष्ट्र अमरीकाने संके लिये “खुला दरवाजा”

भाग करके पूजीपति घडियालोको चीनमे खुल खेलनेकी माग रखी। पश्चिमी शक्तियोंकी इस लूटके कारण चीनी जनतामे बहुत असंतोष हुआ, और १९०० ई० में बक्सरका भयंकर विद्रोह हो गया, जिसके दबानेमें पश्चिमी शक्तियोंके साथ रूसने भी भाग लिया। निकोलाइ II की सरकारने कोरियाकी सीमात नदी यालू-उपत्यकाके जंगलोकी लकड़ीका ठेका एक रूसी कम्पनीको दिलवाया, जिसका अर्थ केवल यही था, कि उसके द्वारा रूसी सेनाको आसानीसे कोरियामें पहुँचाया जा सके। पोर्टआर्थरको भी रूसी नौसैनिक अड्डेके रूपमें परिणत कर दिया गया। जापान यह सब देखते हुये चुप नहीं रह सकता था और न रूसके प्रतिद्वंद्वी अंग्रेज ही मौकेसे चूकनेवाले थे। दूसरोंको लडाकर अपना उल्लू सीधा करना अंग्रेजोंकी पुरानी नीति थी। उन्होंने १९०२ ई० में रूसके विरुद्ध जापानसे सैनिक-संधि की, जिससे जापानको बहुत बल मिला।

रूसमें अब भी सामन्ती मनोवृत्ति काम कर रही थी, उद्योग-धन्धोंको पश्चिमके पूजीपतियोंके सहारे खड़ा किया गया था, जो इस बातका पूरा ध्यान रखते थे, कि औद्योगिक वस्तुओंके लिये रूस हमसे स्वतंत्र न होने पाये। और तो और, सैनिक हथियारोंमें भी रूस परमुत्तापेक्षी था। शासक वर्गकी अदूर-दक्षिता और अयोग्यताके कारण किसी क्षेत्रमें भी प्रतिभाये आगे नहीं बढ़ने पाती थी। रूसी सेनापतियों और युद्ध-संचालकोंको चुस्ती किसे कहते हैं, यह मालूम ही नहीं था। सुवारोफ, कतुजोफके समयसे सैनिक प्रतिभाओंकी उपेक्षा करके खुशामदी एंरे-गैरे नृत्यखूँरे सामन्त-पुत्रों और जारके कृपापात्रोंको आगे बढ़ाया जाता था। रूस अभी युद्धके लिये तैयार नहीं है, यह जापानियोंको पता था। सारे मचूरियामें उसके गुप्तचर फैले हुये थे, जिनसे जापानियोंको सारे भेद मालूम थे। इसी समय २६ जनवरी १९०४ ई०की रातको बिना युद्ध घोषित किये जापानी ध्वसक पोतोंने अघेरेमें छिपकर पोर्ट-आर्थरपर आक्रमण कर दिया। इस समय मुख्य सेनापति अदमिरल स्टार्ककी जयन्ती मनाते हुये रूसी नौसैनिक अफसर नाचमे मस्त थे। जापानियोंने रूसके सर्वश्रेष्ठ तीन युद्धपोतोंको डुबा दिया, और २७ के सवेरे बम-वर्षा करके उन्होंने चार और युद्धपोतोंको नुकसान पहुँचाया। आरम्भ रूसियोंके लिये बहुत बुरी तरह हुआ, और उसके बाद जारशाही सेना हारपर हार खाती गई। अपने हाथियारों और वीरताकी अपेक्षा ईसाकी मूर्तियोंपर मुख्य सेनापति जनरल कुरोपात्किनका अधिक विश्वास था। उसने गाडियोमें भर-भरकर युद्ध-क्षेत्रमें ले जा इन मूर्तियोंको बटवाया। रूसी नौसैनिकों और सैनिकोंने लड़नेमें अपनी आनुवशिक बहादुरीको दिखलाया, लेकिन हथियारोंके अभाव और सेनापतियोंकी अयोग्यताके कारण वह जापानियोंके खिलाफ पासा नहीं पलट सकें। फरवरी १९०४ ई० में रूसी ध्वसक "स्तेरेगुनीने" चार जापानी ध्वसकों और क्रूजरोका मुकाबिला किया, जिसमेंसे एकको उसने डुबा दिया। आत्मसमर्पण करनेके लिये कहनेपर रूसी नौसैनिकोंने साफ इन्कार कर दिया। और जब उन्होंने देखा, कि हमारा जहाज जापानियोंके हाथमें जाना चाहता है, तो गोलोंकी वर्षाके भीतर दो अज्ञात नौसैनिकोंने नीचे जाकर पानी आनेके रास्तेको खोल दिया, और इस प्रकार अपने जहाजके साथ समुद्रतलमें बैठकर उन्होंने अपनी वीरताका परिचय दिया। पोर्टआर्थरने कुछ समय तक जापानी घिरावेमें रहते हुये प्रतिरोध किया, लेकिन उसे अन्तमें आत्मसमर्पण करना पड़ा।

१९०५ ई०में जारशाही रूसने जापानके हाथों बुरी तौरसे हार खाई, लेकिन रूसकी सैनिक पराजयने क्रांतिके आरम्भ करानेका काम दिया।

१९०५ ई० की क्रांति—रूस जापान युद्धके कारण रूसकी आर्थिक अवस्था बहुत ही बिगड़ गई। खर्चकी सीमा नहीं थी। बड़े-बड़े सुदूर विदेशसे कर्ज लेना पड़ा, जिसके लिये कर बढ़ाना जरूरी था, इस प्रकार जीवनोपयोगी सभी चीजोंका दाम बढ़ गया। उधर भारी सख्यामें किसानोंकी सेनामें भरती करनेके कारण खेतीको भी बहुत नुकसान पहुँचा। कारखानोंमें पूजीपतियोंने मजूरी कम करनी चाही, जिसका परिणाम हुआ हड़तालें। नवम्बर और दिसम्बर १९०४ ई०में ही पीतरबुर्ग, मास्को और दूसरे नगरोंमें बोल्शेविकोंने सड़कोंमें जलूस सगठित किये, जिनका नारा था "स्वेच्छाचारिताकी क्षय, युद्ध बंद करो।" लोगोंके असंतोषको शांत करनेके लिये १२ दिसम्बर १९०४ ई०को घोषणा निकालकर जारने कुछ हलके-से अधिकारोंको देनेका वचन दिया।

३ जनवरी १९०५ ई० को पुतिलोफ (आधुनिक किरोफ) कारखानेमें चार मजदूरोंको निकाल दिया गया, जिसका परिणाम हुआ अगले ही दिन बारह हजार मजदूरोंकी हड़ताल। पीतरबुर्गके दूसरे कारखानोंके मजदूरोंने भी उनकी सहानुभूतिमें हड़ताल की और ८ जनवरीको डेढ़ लाख मजदूरोंने काम छोड़कर उसे सार्वजनिक हड़तालका रूप दे दिया। इतनी बड़ी सख्यामें उत्तेजित और बेकार मजदूर कोई और बड़ा कदम न उठा लें, इसके लिये ईसाई पादरी गपोनने सलाह दी, कि मजदूरोंकी ओरसे जारके पास आवेदन-पत्र भेजा जाय। अभी भी जारके प्रति लोगोंकी सद्भावना बनी हुई थी, और वह इसके लिये तैयार हो गये। उधर गपोनने इसकी सूचना खुफिया पुलिसको दे दी थी, और जारशाहीने खुलकर गोली चलानेकी तैयारी कर रखी थी। आवेदन-पत्रके कुछ वाक्य थे—  
“हम पीतरबुर्गके मजदूर, हमारी बीबिया, हमारे बच्चे और हमारे असहाय बूढ़े मा-बाप, हे प्रभु, तेरे पास सहायता और रक्षा पानेके लिये आये हैं। हम गरीबीसे पीड़ित, अत्याचारके मारे असह्य मेहनत के बोझसे दबे जा रहे हैं। हमें अपमान सहना पड़ता है। हमारे साथ मानवोचित वर्तन नहीं होता। हमारा धैर्य टूट रहा है, हम गरीबीके दलदलमें और नीचे डूबते जा रहे हैं। हम अधिकार और ज्ञानसे वंचित हैं। स्वेच्छाचारिता और क्रूरताने हमारा गला घोट रक्खा है। हमारा धैर्य खतम हो रहा है। वह भयकर घड़ी आ गई है, जब कि इस असह्य पीड़ाको और अधिक सहनेकी जगह मरना हमारे लिये अच्छा है।” इसमें कुछ आर्थिक और राजनीतिक मागोंके साथ सविधान सभाके बुलानेके लिये माग की गई थी। बोल्शेविकोंने बहुत समझाया, कि जारके पास प्रार्थनापत्र देनेसे स्वतंत्रता नहीं मिल सकती, लेकिन अब भी बहुत-से मजदूर कह रहे थे—“हम तजर्वा करके देखेंगे। जार हमारी उचित मागोंको अस्वीकार नहीं करेगा।”

२२ (९) जनवरी १९०५ ई० रविवारका दिन था, जब कि एक लाख चालीस हजार मजदूर जारके चित्र, झंडे और ईसाई मूर्तियां लिये प्रार्थनाके गीत गाते हेमन्त प्रासादकी ओर चले। जारकी सरकारको मजदूरोंका स्वागत गोलियों और सगीनोंसे करना था। हेमन्त प्रासादकी सड़कोपर जगह-जगह पलटन तैनात थी, लेकिन तो भी बहुत-से मजदूर प्रासादके मैदानमें पहुँचनेमें सफल हुये। निहत्थी जनता पर गोलियोंकी वर्षा होने लगी, एक हजार मजदूर मारे गये, दो हजार से अधिक घायल हुये। बोल्शेविकोंने यद्यपि पहले मना करनेकी कोशिश की, लेकिन न माननेपर उन्होंने मजदूरोंका साथ नहीं छोड़ा, और वह भी साथमें जाकर गोलीके शिकार हुये। मजदूरोंने ९ जनवरीके दिनको “खूनी-रविवार” का नाम दिया, उनके हृदयसे आवाज निकलने लगी—“हमारा कोई जार नहीं है।” उन्होंने अपने घरोंमें टांगे हुये जारके चित्रोंको फाड़कर फेंक दिया, और उसके बाद जबतक बोल्शेविक क्रांति नहीं हुई, “खूनी रविवार” मजदूरोंके लिये शहीदोंका स्मारक पर्व-दिन बन गया। बोल्शेविकोंने पुस्तिकायें निकालकर कहा—“हथियार, साथियो।” इसपर मजदूर बन्दूककी दूकानों और मिस्त्री-खानोंपर टूट पड़े, वहाँसे उन्होंने हथियार लेकर अपनेको हथियारबंद किया। उसी ९ जनवरीके अपराह्न में पीतरबुर्गके एक मुहल्ले वासिलियेव्स्की द्वीपमें लोगोंने लड़नेके लिये सड़कपर बाड़े खड़ी की। चारों ओर “स्वेच्छाचारिताकी क्षय” की आवाज गूँजने लगी। सड़कोपर कई जगह पुलिसके साथ जनताकी मुठभेड़ हुई। इस दिन जो पाठ रूसके मजदूरवर्गको पढ़ाया गया, उसके बारेमें लेनिनने लिखा था—“अपने महीनों और वर्षोंके दरिद्र, दुखी और उदास जीवनमें जिसे नहीं सीख सकते थे, वैसी क्रांतिकी शिक्षा सर्वहारेने एक दिनमें पाई।” “खूनी रविवार” जारशाहीके लिये जट्टियानवाला वाग सिद्ध हुआ। हड़तालका जोर और बढ़ा। जनवरी ११ (२४) १९०५ ई०को मास्कोमें भी हड़ताल हुई, और इसके बाद पोलन्द, फिनलन्द, उक्रेन, काकेशस और साइबेरिया सभी जगह हड़तालोंका तूफान आ गया।

१९०५ ई०के ग्रीष्ममें सर्वहारेका क्रांतिकारी सघर्ष चारों ओर फैल गया। प्रथम मर्डके महोत्सव में दो लाख बीस हजार मजदूरोंने पीतरबुर्गमें काम छोड़ दिया। मजदूरोंके सघर्षने किसानोंपर भी प्रभाव डाला और गावोंमें आन्दोलन बढ़ चला। रूसके केन्द्रीय इलाकों, गुर्जी और बाल्तिक प्रदेशोंमें एक ही साथ किसानोंने जवर्दस्त आन्दोलन शुरू किया। फरवरी १९०५ ई०में कितनी ही जगहोंपर किसानोंने जमींदारोंके खुदकास्त खेतोंको छीनना शुरू किया, और उस सालके वसंततक रूसकी



देहातमें सर्वत्र किसान-सघर्ष शुरू हो गया। किसानोंने जमींदारोंके महलों और मकानोंको नष्ट कर दिया, उनके खेतों और चरागाहोंपर अधिकार करके मनमाना जोतना शुरू किया। इतने व्यापक पैमानेपर हो रहे विद्रोहको दबाना जारगाहीके लिये आसान काम नहीं था, पर अभी सेनामें उतना असतोप नहीं था।

अब उसमें भी लक्षण दिखलाई देने लगे। १९०५ ई०में ही, जब कि अभी जापानसे लड़ाई चल रही थी, कालासागरके नीमैनिक वेडेमें असतोप फैल गया, और १४ (२७) जून १९०५ ई०को युद्धपोत "पोतोस्किन" के नीमैनिकोंने विद्रोह कर दिया, जिसका तुरन्तका कारण था, सड़े-नाले कीड़े पड़े हुये अवपके मानको सिपाहियोंमें परोसना। नीमैनिकोंने उसे खानेसे इन्कार कर दिया। कमांडरने मुखियोंको गोली मारनेका हुक्म दिया, जिसके विरोधमें सारे जहाजके सिपाहियोंने विद्रोह कर दिया। यद्यपि बड़े नौसैनिक अफसरोंने विद्रोही नेता वकुलिन्चुकको मार दिया, लेकिन तुरन्त मृत्युशेको नामक दूसरे नाविकने नेतृत्वको सभाला। नाविकोंने बहुतसे अफसरोंको मारकर युद्धपोतको अपने हाथमें कर लिया। लाल झंडा उड़ाते हुये जब वह अदेस्सा शहरके सामने पहुँचे, तो वहाँके मजदूरोंमें विजली दौड़ गई, लेकिन नरमदली समाजवादी मेन्गेविकोंने उल्टा समझा-बुझाकर लोगों को रोका। "पोतोस्किन" कितने ही दिनोतक लाल झंडा उड़ाते हुये कालासागरमें इधरसे उधर घूमता रहा, लेकिन जब तटके किसी नगरसे सहायता नहीं मिली, और उधर गोला-बारूद भी कम होने लगा, तो रूमानियाके तटपर जाकर नाविकोंने आत्मसमर्पण कर दिया। रूमानियन सरकारने पीछे १९०६ ई० में क्रांतिकारियोंको जारकी सरकारके हाथमें दे दिया, जिसने उनमेंसे बहुतोंको फांसीपर चढ़ाया और बहुतोंको कालापानीकी सजा दी। यह पहली बार था, जब कि एक विशाल युद्धपोतके सारे सैनिकोंने जारके खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोह किया। इतिहासमें हम दूसरे तरहके विद्रोह देख चुके हैं। प्रभुवर्गमें ही किमी एक व्यक्ति या दलके विरुद्धने दूसरे दलका हथियार उठाना पहले भी देखा गया था, लेकिन यह विद्रोह बिल्कुल नये तरहका था, जिसमें दरिद्र और निरीह वर्ग सहस्राब्दियोंसे शासक दलके खिलाफ खुल्लमखुल्ला उठ खड़ा हुआ, मानो जिन इंटोसे प्रासाद बना था, वही अब प्रासाद को ढानेके लिये हिलने-डुलने लगी।

जापानसे सधि—जारगाही सेनापतियोंकी अयोग्यता और रूसके पिछड़ेपनके कारण जापान हारपर हार दे रहा था। इसी बीच "खूनी रविवार" और मजदूरों, किसानों तथा नौसैनिकोंके विद्रोहों ने ऐसी हालत पैदा कर दी, कि जारगाहीके लिये और अधिक दिनतक जापानके साथ लड़नेका मतलब था घरमें ही तख्ता उल्टा जाना। चूशिमाकी खाड़ीमें रूसी जमी वेडेका जब जापानियोंने सहार कर दिया, तो विदेशी भूजीवादियोंको भी भय लगने लगा, कि काही पेरिसकी आवृत्ति बड़े पैमानेपर रूसमें न होने लगे, इसीलिये उन्होंने जारकी सरकारपर युद्ध बंद करके जापानके साथ सुलह कर लेनेके लिये जोर देना शुरू किया, और यह भी कि जारको भीतरी शांति बनानेके लिये कुछ वैधानिक सुधार देकर लोगोंको अपनी तरफ खींचना चाहिये। उधर जापानकी भी भीतरी हालत अच्छी नहीं थी, क्योंकि युद्धमें अपार धन और जनका सहार हो रहा था, जिससे वहाँके लोगोंमें भी असतोप फैलनेका डर था। जापानके कहनेपर संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके राष्ट्रपति थ्योडोर रूजवेल्टने बीचमें पड़ना स्वीकार किया। जारगाही युद्धपरिपदने ६ जून (२४ मई) १९०५ ई०को जारकी अव्यक्षतामें बहुमतसे शांतिके पक्षमें फैसला किया, क्योंकि "हमारे लिये विजयसे भी अधिक महत्वकी चीज है घरेलू शांति हम असाधारण स्थितिमें आज पड़े हुये हैं। हमें रूसके भीतर शांतिको पुन स्थापित करना है।" जारगाही ने सुलह करना स्वीकार किया। जापानकी शर्तें बहुत कड़ी थी, लेकिन रूजवेल्टने भी दबाव डाला, और अन्तमें ५ सितम्बर (२३ अगस्त) १९०५ ई०को पोर्टस्मथकी सधिपर हस्ताक्षर हुये। रूसने कोरियामें जापानके सैनिक, राजनीतिक तथा आर्थिक हितों और अधिकारोंको स्वीकार किया। पोर्ट-जार्यर और दलनीके अपने ठेकेवाले प्रदेशको उतने जापानके हाथमें सौंप दिया, सखालिन द्वीपका दक्षिणार्ध और पासके द्वीपोंको भी जापानके हाथमें दे दिया, एवं पूर्वी चीनी रेलको केवल व्यापारिक दृष्टिमें चलायाना स्वीकार किया।

जापानने जारगाही गर्वको चूर-चूर कर दिया। इस युद्धमें रूसके चार लाख आदमी हत, अहत

या बदी हुये और तीन अरब रूबल धनका नाश हुआ। रूसी जनतापर इसका बुरा प्रभाव पडना ही चाहिये था, लेकिन जारशाही अब पूरवके झगडेसे छुट्टी पाकर क्रांतिको कुचलनेमे समर्थ थी, तो भी सधिपर हस्ताक्षर होनेके सत्ताईस दिन बाद २ अक्टूबर (१९ सितम्बर) १९०५ ई०में मास्कोके प्रेसकर्मियोने आम हडताल कर दी, जिनका साथ वहाके रोटी बनानेवालो, तम्बाकू-मजदूरो तथा दूसरे कमकरोने दिया। पुलिस और कसाक सैनिकोने उनके प्रदर्शनको बलपूर्वक छिन्न-भिन्न करना चाहा, इसपर मजदूरोने भी पुलिसके ऊपर तमचे चलाये। छ दिन बाद २५ सितम्बर (पुराना पचाग) को मास्को की एक सडकपर मजदूरो और जारके कसाकोमे वाकायदा लडाई हुई। दो मजदूर मारे गये, आठ घायल हुये और १९२ गिरफ्तार हुये। ७ अक्टूबरको मास्को-कजान्स्कया रेलवेके मजदूरोने हडताल कर दी, जिनका साथ ८ अक्टूबरको दूसरी रेलोके मजदूरोने भी दिया। ११ अक्टूबरको रेलवे हडतालने सारे राष्ट्रमे आम हडतालका रूप लिया, जिसमे स्कूलके अध्यापक, आफिसोके कर्मचारी, कानूनपेशा लोग, इंजीनियर और विद्यार्थी भी सम्मिलित हुये। उन्होने सविधान-सभाके बुलनेकी माग की। जारने बहुत चाहा, कि गोलियोकी वपसि विद्रोहको दबा दिया जाय, लेकिन वह उसमें आसानीसे सफल कैसे हो सकता था? अक्टूबर महीनेकी इन हडतालोने सरकारी शासन-यंत्रको अकर्मण्य बना दिया था।

इसी समय विद्रोहियोने अपने सगठन, सघर्ष और शासनको चलानेके लिये एक नये यंत्रका आविष्कार किया, जिसने १९०५-६ ई०की क्रातिमे ही बहुत काम नहीं किया, बल्कि १९१७ ई०की वोल्शे-विक-क्रांतिकी सफलतामें भी उसका बहुत बड़ा हाथ था। यह सगठन था मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियत। सोवियत शब्दका वही अर्थ है, जो हमारे यहां पचायतका, लेकिन शासन और सैनिक अधिकारोके भी हाथमें लेनेसे सोवियतको मामूली पचायत नहीं कहा जा सकता। १३ (२६) अक्टूबरको, जब कि हडताल चल रही थी, पीतरबुर्गके कमकरोने अपने कारखानोमे सभाये की, और हडतालका नेतृत्व करनेके लिये मजदूर-प्रतिनिधियोकी सोवियतके लिये अपने आदमी चुने। यद्यपि इसका आरम्भ हडतालकी संयुक्त समितिके रूपमे हुआ था, लेकिन क्रातिने जल्दी ही उसे शक्तिको सभालनेके लिये मजबूर किया। पीतरबुर्गके मजदूरोकी देखादेखी रूसके सभी बड़े-बड़े नगरोंमे मजदूर प्रतिनिधि सोवियतें १९०५ ई० के अक्टूबरसे दिसम्बर तक कायम होती रही। मास्को सोवियत वोल्शेविको के प्रभावमे थी, इसलिये वह हथियारबंद विद्रोहकी तैयारीका सगठन बन गई। काकेशस, लतविया और त्वेर एव मास्को गुबर्निया जैसे कितने ही केन्द्रीय रूसके इलाकोंमें सैनिक प्रतिनिधि भी सोवियतके सदस्य बने।

रूसके भिन्न-भिन्न जगहोंमें क्राति और विद्रोहकी जो लहर फैली हुई थी, उसका प्रभाव वोल्गा-प्रदेश तथा दूसरे इलाकोकी एसियाई जातियोपर भी पडे बिना नहीं रहा। वोल्गासे अर्त्ताइ और अफगानिस्तानतक जारकी हुकूमत मुसलमानोके ऊपर थी। वहा अभी राजनीतिक जागृति इतनी नहीं हुई थी, कि वहाके लोग धर्म और साम्प्रदायिकतासे ऊपर उठते। वोल्गा-प्रदेश और वाशकिरियामे राष्ट्रीयतावादी मध्यमवर्गने मुस्लिम लीग कायम की। लीगने धीरे-धीरे मध्य-एसिया और काकेशस के मुसलमानोको भी प्रभावित करना शुरू किया। साम्प्रदायिकतापर निर्भर आन्दोलन और सगठनका नेतृत्व मुल्लोके हाथमे जाना जरूरी था, और मुल्ला रूसियोके खिलाफ जहाद करनेका ही तरीका पसंद कर सकते थे, लेकिन बहुतसे एसियाई इलाकोमे रूसी उनके पडोसी किसान और मजदूर बनकर बस गये थे, जो विशाल दृष्टिपूर्वक संचलित राष्ट्रीय आन्दोलनमे एसियाई जातियोके स्वतंत्रताके युद्धमे सहायक बन सकते थे। लेकिन अभी यह काम बारह साल बाद होनेवाला था। १९०५ ई०के अन्तमें तारतार मध्यमवर्गीय राजनीतिक नेताओंने कजानमे प्रथम मुस्लिम कांग्रेस बुलाई, जिसने हमारे यहां के पुराने कांग्रेसियो की तरह जारसे भक्तिपूर्वक प्रार्थना की, कि मुसलमानोकी भी वही अधिकार मिलने चाहिये, जो कि बादशाहकी रूसी प्रजाको प्राप्य है। १९०५ ई०में चुवाशोमे भी राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू हुआ, लेकिन वह शुद्ध किसान आन्दोलन था, जो चाहता था, कि किसानोको धरती और मुक्ति मिले। चुवाश और मारी लोगोके भीतर हो रहे किसान आन्दोलनको अखिल रूसी किसान सघके सदस्योंने संचालित किया था। किसानोंने जमींदारोंमे जमीन छीनने और अपनी भापामे स्कूलोके खोलनेकी माग की। साइबेरियाके बुरियत मंगोल भी जारशाही अफमरोके अत्याचारसे तंग आ गये थे, उन्होने

साइबेरीय जातिथोकी लीग स्थापित की। १९०५ ई० ही में याकूतोमें भी जागृति हुई, और उन्होंने याकूत लीग कायम की, जिसे जारशाहीने जल्दी ही दबा दिया।

**दिसम्बरका विद्रोह**—रूसी कमकर ममझने लगे थे, कि केवल राजनीतिक हड़तालसे काम नहीं चल सकता। अक्तूबरकी हड़तालके बाद सबसे पहले हथियारबंद विद्रोह करनेवाले थे क्रोन्स्तात् नौमैनिक अड्डेके नाविक और तोपची। २६ और २७ अक्तूबर (पुगना पचाग) के दो दिन और दो रातोंतक रूसका यह मशहूर नौमैनिक अड्डा विद्रोहियोंके हाथोंमें रहा, लेकिन अभी उनका भीतर-बाहरका मगठन इतना मजबूत नहीं था, इसलिये २८ अक्तूबरको जारशाही सेनाने उसे दबा दिया। दो मी विद्रोहियों तथा उनके नेताओंको फौजी अदालतद्वारा कड़े दंड दिये गये।

इस समय रूस-अधिकृत पोलन्दमें फौजी कानून घोषित किया गया था। उसके उठा लेने तथा क्रोन्स्तात्के नाविकोंको मुक्त करानेके लिये १४ (१) नवम्बर १९०५ ई०को पीतरवुगकी मजदूर-प्रति निधि—नोवियतने एक आम हड़ताल घोषित की। जारकी सरकारको मजबूर होकर उनकी मांगोंको स्वीकार करना पड़ा, पोलन्दमें मार्शल-ला (फौजी कानून) उठा दिया गया, और क्रोन्स्तात्के नाविकों पर फौजी अदालतमें कोर्ट मार्शल द्वारा फासीका दंड दिलानेकी जगह साधारण सैनिक अदालतमें मुकदमा चलाया गया, जिसने ८३ विद्रोहियोंको छोड़ दिया, १२३ को जेलकी और केवल नौ को कालापानीकी मजा दी। इसमें शक नहीं, पीतरवुगके कमकरोंकी हड़तालने क्रोन्स्तात्के बहुतसे विद्रोहियोंके प्राणोंकी रक्षा की। क्रांतिकी इस दूसरी लहरने कालासागरके नौमैनिकोंको प्रभावित किया। २७ (१८) नवम्बरको क्रूजर “ओचाकोफ” के नाविकोंने विद्रोह किया। “पोतेम्किन” के नाविकोंकी जो गति हुई थी, उसमें ये नाविक हताश नहीं हुये थे। २८ (१५) नवम्बरको दूसरे सैनिक पोतो और सेवस्तापोलके दुर्गमें काम करनेवाले सैनिकों और कमकरोंने ओचाकोफके विद्रोहियोंका साथ दिया। “पोतोम्किन” का नाम “पतेलेडमोन” रखकर जारशाहीने उसे सुरक्षित समझा था, लेकिन पोतेम्किनके ऊपर फिर लाल झंडा फहराने लगा। अभी भी दूसरे युद्धपोत और सैनिक जारशाहीके भक्त थे। २८ (१५) नवम्बर को ही तट और जहाजकी तोपोंने “ओचाकोफ” पर गोलाबारी शुरू की, जिससे उसमें आग लग गई। नाविकोंने समुद्रमें कूदकर बचनेकी कोशिश की, लेकिन उन्हें मशीनगनोंकी गोलियोंसे भून दिया गया। विद्रोहियोंका नेता लफटेनेंट स्मिथ और दूसरे नेताओंको कोर्टमार्शल करके गोलीसे उड़ा दिया गया। इस प्रकार कालासागरका विद्रोह दबा दिया गया।

नवम्बर और दिसम्बरके महीनोंमें अक्की किसानोंके विद्रोहने और भी जोर पकड़ा। युरोपीय रूसके एक तिहाईसे अधिक इलाकोंमें किसान जमींदारोंको भगाकर उनसे खेतोंको छीन रहे थे, उनके मकानों और महलोंको लूटते बरबाद कर रहे थे।

क्रांतिकी प्रगतिको लेनिन अपने निर्वासित स्थान (जेनेवा)से गम्भीरतापूर्वक बराबर देख रहे थे। नवम्बर (१९०५ ई०) में क्रांतिकारी सवर्षका नेतृत्व करनेके लिये उन्होंने रूसमें आना जरूरी समझा। दिसम्बर १९०५ ई०में फिनलैंडमें तम्मेरफोर्म् नगरमें बोल्शेविकोंका एक सम्मेलन हुआ। यहीपर स्तालिनको लेनिनको देखनेका सर्वप्रथम मौभाग्य प्राप्त हुआ। लेनिनके सुझावपर सम्मेलनने मदस्योको अपने-अपने इलाकेमें विद्रोह-संचालन करनेका आदेश दिया। लेकिन दिसम्बरके आरम्भ तक जारशाहीने अपनी शक्तिको पहलेमें ठीक दृढ़ कर लिया था। मचूरियाके युद्धक्षेत्रसे कितनी ही मैनार्थें लौटकर युरोपीय रूसमें पहुंच गई थी। अक्की मास्कोका नम्बर पहाट था। वहाकी सोवियतके नेता बोल्शेविक थे। उन्होंने हथियारबंद विद्रोहकी तैयारी बड़े जोर-शोरमें शुरू की। उनके प्रयत्नमें मास्कोकी छावनीमें भी विद्रोहकी लहर फैल गई, जिसमें रस्तोफ रेजिमेंट पहिले रही। १५ (२) दिसम्बरको सिपाहियोंने अपने अफसरोंको गिरफ्तार कर लिया, और रेजिमेंटके कामके संचालनके लिये सिपाहियोंकी एक समिति निर्वाचित की। लेकिन मास्कोकी दूसरी रेजिमेंटोंने उनका अनुसरण नहीं किया, इसलिये १७ (४) दिसम्बरको इन सैनिकोंको दबा दिया गया। अगले दिन मास्कोके बोल्शेविकोंने एक सम्मेलनमें मास्को सोवियतपर जोर दिया, कि वह हथियारबंद विद्रोहको बढ़ानेके लिये आम हड़ताल घोषित करे। २० (७) दिसम्बरके सबेरे आम हड़ताल शुरू हुई। बन्दूकें-पिस्तौलें पर्याप्त नहीं थे, इसलिए मजदूरोंने अपने मिन्नीखानोंमें कामचलाऊ हथियार बनाये। दो हजार मजदूर-सैनिकोंमें करीब आठ

बोल्शेविक थे—लडनेवाले दलमें शामिल हुये। सडकोमें प्रदर्शन हुये, और मजदूर मुहल्लोमें पुलिसके साथ मुठभेड हुई। सारी अस्त्राखानी रेजिमेंट अपने पूरे सामानके साथ विद्रोहियोंकी मददके लिये तैयार हो गई, लेकिन जारभक्त कसाकोने उन्हें घेरकर अपनी बारकोमें लौटनेके लिये मजबूर किया। दूसरी कितनी ही सदिग्ध रेजिमेंटोको भी अपनी बारकोमें ही रखा गया। सचमुच मास्को-स्थित उस समयके पन्द्रह हजार सिपाहियोंमें तेरह सौ नब्बे ही ऐसे थे, जिनपर जारशाही विश्वास कर सकती थी। मास्कोके महाराज्यपालने राजधानीमें सेना भेजनेके लिये सदेशपर सदेश भेजे थे। लेकिन क्रांतिकारी इस स्थितिसे पूरा फायदा नहीं उठा सके। २२ (९) दिसम्बरको सरकारी सेनाका पल्ला भारी हो गया, और उन्होंने जगह-जगह आक्रमण करके विद्रोहियोंको दवाना शुरू किया। स्थितिको प्रतिकूल देखकर मास्कोकी पार्टी कमीटी और मजदूर-प्रतिनिधि सोवियतने ३१ (१८) दिसम्बरकी रातको विद्रोहको बंद करनेका निश्चय किया। सब जगह विद्रोहियोंने लडाई बंद कर दी। क्रांतिकारियोंको मौतसे कैसे बचाया जाय, इसका भार उस्तोम्स्की नामक इजन-ड्राइवरने अपने ऊपर लिया, और ट्रेनमें क्रांतिकारियोंको बैठाकर वह मशीनगनों और राइफलोकी गोलियोंकी वर्षाके बीचसे ट्रेनको बड़े वेगसे भगा ले गया। इस प्रकार उसने कितने ही क्रांतिकारियोंको फासी पानेसे बचा लिया। जारकी सेनाने मजदूरों और उनके परिवारके ऊपर भयकर अत्याचार किये, सैकड़ोंको बिना मुकदमा चलाये ही गोलियोंसे ठडा कर दिया।

मास्कोके बाहर दूसरे कितने ही शहरोमें भी हथियारबंद विद्रोह हुये। दक्षिणमें गोरलोकामें विद्रोहियोंने जारके राज्यको खतम करके मजदूर-प्रतिनिधियों का शासन आरम्भ कर दिया। मजदूरोंके पास अपने हाथकी बनाई तलवारों, छुरों तथा थोड़ेसे तमचोंके सिवा और हथियार नहीं थे, तो भी चार हजार क्रांतिकारियोंने जारके कसाकोके साथ पाच घंटे तक बड़ी बहादुरीसे लडाई की, जिसमें उनके तीन सौ आदमी काम आये। दोनेत्स-उपत्यकामें सभी जगह पुलिस और सेनाके साथ विद्रोहियोंकी लडाई हुई। लुगान्स्कमें सशस्त्र विद्रोह और हडतालका नेतृत्व क० ई० बोरोशिलोफने किया। १९०५ ई० के ग्रीष्ममें बोरोशिलोफको गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन दिसम्बरमें हजारों मजदूरोंने जाकर “अपने लाल जेनरल” को जेलसे छुड़ा लिया। बोरोशिलोफकी सगठन शक्ति और सैनिक सूझ-बूझको देखकर एक सभामें एक मजदूरने कहा—“हम तुम्हें अपना लाल जेनरल नियुक्त करते हैं।” जिसका जवाब बोरोशिलोफने हसते हुये दिया—“तुम बहुत दूरकी बातकर रहे हो, मुझे सैनिक विद्याका कुछ भी पता नहीं है।” उस समय सचमुच ही किसको पता था, कि बोल्शेविक-क्रांतिके समय वह अपनी सैनिक प्रतिभाका सुन्दर परिचय देगा, और अन्तमें रूस-जैसी दुनिया की एक शक्तिशाली सेनाका फील्ड-मार्शल और आज सोवियत सघ का राष्ट्रपति बनेगा।”

इसी प्रकार नवोरोसिस्कमें भी मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियतने शासन अपने हाथमें सभाल लिया। कालासागर-तटवर्ती नगर सोचीमें भी यही बात हुई। साइबेरियाके कास्नोयास्क और चीता नगरोंकी सेना विद्रोही मजदूरोंसे मिल गई और यहा सिपाहियोंके भी प्रतिनिधियोंने मजदूर-प्रतिनिधियोंकी सोवियतोंमें शामिल होकर विद्रोहका संचालन किया।

१९०५ ई०का विद्रोह खूनी हाथोंसे दबा दिया गया। प्लेखानोफ अब नरमदली समाजवादी हो गया था। उसका कहना था—“उन्हे हथियार उठाना नहीं चाहिये था।” जिसका जवाब लेनिनने दिया—“इसके विरुद्ध हमें सारी शक्तिके साथ और दृढतापूर्वक आक्रमणात्मक रूपमें हथियार उठाना चाहिये था।” दिसम्बरकी क्रांतिके असफल होनेके कारण थे—किसानोंसे मदद नहीं मिलना, सेनाके भी अधिक भागका जारशाहीके साथ होना, विद्रोहियोंका अच्छी तरह सगठित न होना और एक साथ उठनेकी जगह विद्रोह का भिन्न-भिन्न जगहोंमें भिन्न-भिन्न समयोंमें आरम्भ होना। विद्रोहियोंके पास काफी हथियार नहीं थे, उन्होंने आक्रमण करनेकी जगह प्रतिरोध करना पसंद किया, तो भी इस क्रांतिको असफल नहीं कहा जा सकता, क्योंकि क्रांतिकारियोंने जो भूलें इस समय की थी, अपनेमें जो कमिया पाई थी, उन्हें हटानेमें सफल होकर ही वह १९१७ ई०की क्रांतिमें विजयी हुये। इसीलिये इस क्रांतिको १९१७ ई० की क्रांतिका रिहर्सल कहा जाना बिलकुल ठीक है।

शासन-मुधार—जारशाहीने क्रांतिको दबा दिया, लेकिन वह जानती थी, कि लोगोंको सतुष्ट

करने या धोखेमें रखनेके लिये कुछ सुधार देना भी जरूरी है। ११ सितम्बर १९०५ ई०को इसीलिये राज्यदूमा (संसद)के चुनावकी घोषणा की गई। लेकिन यह पहिले ही निश्चय कर लिया गया, कि निर्वाचनमें राजभक्तोंका ही पलड़ा भारी रहे, इसीलिये जहा जमींदारोंको दो हजार मतदाताओं पर एक प्रतिनिधि और नगरोंके सम्पत्तिवालोंको सात हजार वोटरोपर एक प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार दिया गया था, वहा तीस हजार किसान और नव्वे हजार मजदूर वोटरोपर एक प्रतिनिधि भेजनेका नियम बनाया गया था। निर्वाचन भी सीधा नहीं था। प्रत्येक गावके वोटर वोलोस्त (जिले) के लिये निर्वाचक चुनते। ये निर्वाचक हरएक जिलेसे दो प्रतिनिधियोंको कमिश्नरीके लिये चुनते। कमिश्नरियोंके चुने हुये निर्वाचक गुवर्नियों (प्रदेशों)के लिये निर्वाचक चुनते, और गुवर्नियोंके यह निर्वाचक दूमा (संसद) के लिये प्रतिनिधि चुनते। वोट भी गुप्त नहीं देने थे। जारकी सरकारने इस प्रकार समझ लिया था, कि हम ऐसे आदमियोंको ही संसदमें आने देंगे, जो कि हमारी हमें हा मिलये। मार्च और अप्रैल १९०६ ई०में राज्यदूमाके लिये निर्वाचन हुये। उस समय पुलिसके अत्याचारोंसे सब जगह त्राहि-त्राहि मची हुई थी। वोल्शेविकोंने निर्वाचनके वायकाट करनेका निश्चय किया था। इसी समय १९०६ अप्रैलमें स्टाकहोममें समाजवादी जनतांत्रिकोंकी कांग्रेस हुई। जारशाही अत्याचारोंसे सबका सीखकर वोल्शेविक और मॅन्शेविक दोनों इस कांग्रेसमें सम्मिलित हुये, और समाजवादी जनतांत्रिक पार्टीके भीतर अलग अलग दो गुटोंको रखते हुये भी वह एक हो गये।

नवनिर्वाचित दूमाके उद्घाटनसे तीन दिन पहले अप्रैल १९०६ ई०के अन्तमें जारशाहीने “आधारिक राज्यविधान” प्रकाशित किये, जिसके द्वारा “सभी रूसोंके सम्राट्में सर्वोच्च परमस्वतंत्र राज्यशक्ति निहित है” को घोषित किया गया। साथ ही दूमापर अकुश रखनेके लिये एक राज्य परिपद् बनाई गई, जिसकी स्वीकृतिके बिना कोई भी कानून दूमा द्वारा पास होकर जारके पास भेजा नहीं जा सकता था। परिपद्में आधे सरकारी उच्च अविकारी थे, जिनकी नियुक्ति जार करता, बाकी आधेमें स्थानीय बोर्डों (जेम्स्वो), अमीरों, पादरियों और विश्वविद्यालयोंके प्रतिनिधि लिये जानेवाले थे।

इतने छद-बदके बाद निर्वाचित दूमा भी पूरी तौरसे जारशाहीके अनुकूल सिद्ध नहीं हुई। उसके ५२४ सदस्योंमें २०४ किसान थे, जोकि वैसे किसान नहीं थे, जिन्हें जारका सलाहकार प्रधान-मंत्री काउंट वित्ते चाहता था। समाजवादी जनतांत्रिक समूहके अठारह प्रतिनिधि दूमामें पहुँचे थे। वैधानिक जनतांत्रिक या नरमदलियोंकी मख्या १७९ थी।

यद्यपि विद्रोहका वेग दब गया था, लेकिन वह बिल्कुल खतम नहीं हुआ था। १९०६ ई०में मईमें अगस्ततक देशके आधे भागमें किसानोंके आन्दोलन और बलवे चलते रहे। दूमा जनताके हितके लिये नहीं बनाई गई थी, इसलिये वह लोगोंको शांत करनेमें कैसे समर्थ होती? जब भूमि-मगधी समस्याके बारेमें किसान-प्रतिनिधियोंने अपने अनुकूल प्रस्ताव पास करना चाहा, तो घबड़ाकर सरकारने ८ जुलाई १९०६ ई०को दूमाको खतम कर दिया।

उसी साल दूसरी दूमाका निर्वाचन हुआ। प्रथम दूमाका वोल्शेविकोंने वायकाट किया था, लेकिन प्रथम दूमाके तजर्जसे उन्हें पता लग गया, कि दूमाको अपने विचारोंके प्रचारके लिये एक अच्छा प्रभावशाली मापणमंच बनाया जा सकता है, इसीलिये लेनिनके परामर्शके अनुसार वोल्शेविकोंने अबके निर्वाचनमें भाग लेनेका निश्चय किया। वामपक्षी दलने भी भाग लिया, जिनके कारण द्वितीय दूमा जारशाहीके लिये प्रथमसे भी अधिक कड़वी साबित हुई। नरमदली सर्वधानिक जनतांत्रिक पहलकी अपेक्षा आधे ही (१७९ ९८) आ पाये। किसान गुट तथा नरम समाजवादी क्रांतिकारी जहा पहली दूमामें ९४ थे, वहा अब उनकी सख्या बढ़कर १५७ हो गई। समाजवादी जनतांत्रिक अब अठारहकी जगह पैन्ठ थे। यद्यपि द्वितीय दूमामें प्रगतिशील विचारोंका प्रतिनिधित्व ज्यादा था, लेकिन अब क्रांतिका वेग उतारपर था, इसलिये वह जनताके किसी भी हितको करनेमें अनमर्थ थी, ३ जून १९०७ ई०को प्रतिगामी जारके पिट्टुओंने कानूनके दिखावेको भी छोड़कर चारों ओर अत्याचार करना शुरू किया। उसी साल १५९ मजदूर ममाओंको भग कर दिया गया, १९०८ ई०में नौ और १९०९ ई०में छानवे मजदूर-संगठन निषिद्ध कर दिये गये। द्वितीय दूमाको

खतम कर देनेके बाद भी निकोलाइ II अपनेमे इतनी शक्ति नहीं पाता था, कि दूमाके बिना ही शासनको जारी रखे, इसीलिये वह तृतीय दूमाके निर्वाचन करनेकी घोषणा करनेके लिये मजबूर हुआ। अबकी बार जारशाहीने चुनावके नियम और भी अनुकूल बनाये जमींदार २३० वोटरोपर एक, बूज्वा (पूजीवादी) हजारपर एक, किसान साठ हजारपर एक और मजदूर सवा लाखपर एक प्रतिनिधि भेज सकते थे। रूसी प्रजाकी जहा दूमामें अपना प्रतिनिधि भेजनेका इस प्रकार अधिकार प्राप्त था, वहा मध्य-एसियाके लोगोको एक भी प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार नहीं दिया गया था—यूरोपीय रूसके जहा ४०३ थे, वहा सीमाती इलाकोके ३९ ही लिये जानेवाले थे, जिनमे बारह रूसी-पोलन्डके प्रतिनिधि थे। इस नियमके अनुसार जो निर्वाचन हुआ, उसमें २०२ अथवा ४६ प्रतिशत सदस्य जमींदारोके थे। वामपक्षी दलोंको केवल ७ प्रतिशत जगह मिली थी, लेकिन जारशाही तो दूमाको केवल दिखावेकी चीज रखना चाहती थी। वह दूसरी तरहसे भी विरोधी शक्तियोंको कुचलनेके लिये तैयार थी। विद्रोही किसानोंकी शक्तिको सर्वथा नष्ट कर देनेके लिये उसने यह तरीका निकाला था—गावकी पचायती सत्ताका नष्ट कर देना, देहातमे भूमिपर सामूहिक अधिकार रखनेकी जगह किसानोंको वैयक्तिक तौरसे खेतोंपर अधिकार देना, एव किसानोंको विद्रोही गावों और इलाकोंसे ले जाकर दूसरी जगह बसाना। इसकी वजहसे वह कुछ समयके लिये किसानोंकी शक्तिको तोड़नेमे सफल हुई। गावकी जमीनपर सामूहिक अधिकार होनेपर धनी और गरीब किसानोंके बीच भारी भेद नहीं कायम किया जा सकता था, लेकिन अब गावोंमे कुलक (धनी किसान) पैदा होने लगे।

जारशाही समझने लगी थी, कि लेनिनके रूपमें उसे एक बड़े शत्रुसे मुकाबला पडा है। १९०७ ई०के जाडोमे सरकारने लेनिनकी गिरफ्तारीका हुक्म निकाला। लेनिन फिनलन्डमें गुप्त रीतिसे रहते थे। पार्टीकी सलाहपर लेनिनको देश छोड़ जाना पडा। गुप्त रीतिसे जिस जहाज द्वारा उन्हें बाहर जाना था, उसे पकड़नेके लिये पुलिसकी आख बचाकर फिनलन्डकी बर्फ जमी खाडीके ऊपरसे चलना पडा। एक जगह कमजोर बर्फके कारण लेनिन मौतसे बाल-बाल बचे। आखिर वह जहाज द्वारा देश छोड़कर प्रायः दस सालके लिये विदेशमें जीवन बिताने चले गये। क्रातिके असफल होनेका एक प्रभाव यह हुआ, कि क्रातिके साथ सहानुभूति रखनेवाले बुद्धिजीवियोंमें निराशा और उसीके कारण विचारोंमे गड़बड़ी पैदा हो गई। लेकिन तब भी बोल्शेविकोंने अपनी पार्टीको नष्ट होनेसे बचानेके लिये पूरी कोशिश की। जनवरी १९१२ ई०मे बोल्शेविकोंने स्वतंत्र बोल्शेविक पार्टी स्थापित करनेके लिये प्राहा (चेकोस्लोवाकिया) में अपना सम्मेलन किया, जिसका बहुत भारी ऐतिहासिक महत्त्व है, क्योंकि इसीके निर्णय द्वारा स्थापित बोल्शेविक पार्टीने पांच वर्ष बाद रूसमे सफल क्रांति की। इस वक्त जो केन्द्रीय समिति नियुक्ति की गई थी, उसमे लेनिन, स्तालिन और य० म० स्वेर्द्लोफ मुख्य थे। इसी समयसे पार्टीके पुराने नाम “रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टी” के साथ-साथ ब्रेकेटमे “बोल्शेविक” भी लिखा जाने लगा। इसी सम्मेलनके समय में बोल्शेविक नेताओंने दृढतापूर्वक कार्य आरम्भ किया। इन नेताओंमे लेनिन सर्वोपरि थे। उनके सहायकोंमे याकोव मिखाइल-पुत्र स्वेर्द्लोफ भी एक प्रसिद्ध कार्यकर्ता था, जिसने कजान और उरालमें बहुत काम किया और पीछे साइबेरियामे निर्वासित कर दिया गया था। सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद यही रूसका प्रथम राष्ट्रपति हुआ। मिखाइल वासिली-पुत्र फ्रुजे दूसरा जवर्दस्त बोल्शेविक क्रांतिकारी था, जिनमे बोल्शेविक क्रातिके समय अपनी सैनिक सूझ और संगठनका बहुत अच्छा परिचय दिया। आज मध्य एसियाके किर्गिजस्तान गणराज्यकी राजधानी फ्रुजेके नामपर मगहूर है। नेर्गेई मीरन-पुत्र किरोफ १८ वर्षकी उमरमे बोल्शेविक पार्टीमें शामिल हुआ, और १९०५ ई०की क्रातिमें उसने जवर्दस्त भाग लिया। क्रातिके सफल होनेके बाद उसने बहुत-से जवाबदेह पदोंको मभाला, और द्वितीय पंचवर्षिक योजनाके समय दुश्मनकी गोलीका शिकार हुआ। स्तालिनकी जन्मभूमि गुर्जिया ग्रिगोरी कान्स्तन्तिनो पुत्र ओर्जोनीकिद्जे १९०३ ई०में बोल्शेविक पार्टीमें शामिल हुआ। १९०५ ई० की क्रातिमें उसने बड़ी तत्परतासे भाग लिया। जब क्रातिके असफल होनेपर गिरफ्तारिया होने लग, तो वह विदेशमें भाग जानेमे सफल हुआ। १९०९ ई०मे वह ईरानमें था, और वहाकी क्रातिमें भी

सुवार किये गये, जिन्हें विफल करनेके लिये पहला प्रहार था, आस्ट्रियाका बोसनिया और हेर्जेगोविनाको अपन राज्यमें मिलानेकी घोषणा। तत्पश्चात् तुर्कीके प्रयत्नोंसे तुर्की शक्तिशाली बन जाय, इसे रूस भी पसन्द नहीं करता था, क्योंकि तब तो बरेदानियालके लिये उसकी आशाओपर सदाके लिये पानी फिर जाता। रूसकी सहायता १९०९ ई०में अफ्रीकाके तुर्कीके दो प्रदेशों—सेरेनेइका और त्रिपोलितानियाको इतालवीने अपने अधिकारमें कर लिया। रूसने फ्रांस और इंग्लैण्डके अरबीभाषी अफ्रीकी प्रदेशोंपर हाथ साफ करनेका भी समर्थन किया। इतनेसे भी तत्पश्चात् तुर्कीकी शक्तिको कमजोर न होते देख तुर्कीसे लड़नेके लिये रूसके नेतृत्वमें बल्कान-लीगकी स्थापना हुई। इन परिस्थितियोंमें तत्पश्चात् तुर्कीके लिये जर्मन साम्राज्यवादकी ओर मुड़ करनेके सिवा और कोई रास्ता नहीं रह गया। यह भी याद रखनेकी बात है, कि जिस वक्त पूर्वी युरोपमें यह घटनाएँ घट रही थी, उसी समय १९११ ई० में चीनकी महाक्रांति हुई—चीनी सामन्तवादी शासकोंने पश्चिमी युरोपके साम्राज्यवादियोंकी नोच-खसोटसे देशको वचानोंमें असफल होकर अपनेको अयोग्य साबित कर दिया था, इसलिये वहाँके मध्यमवर्गने राष्ट्रीय मुक्तिके लिये पुराने शासकोंको हटाना जरूरी समझा। भला इतनी बड़ी बातको पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियाँ कैसे सह सकती थी? उन्होंने चीनका वित्तीय बाधकाट कर क्रांतिको निर्वल बना प्रति-क्रांतिकारी राष्ट्रपति युवान-शि-काईको क्रांतिका गला घोटनेमें सहायता दी—इस काममें इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, जर्मनी और युक्त राष्ट्र अमेरिकाके साथ जापान भी शामिल था।

आपसमें कहीं मेल और कहीं विगाडके साथ ऐसी घटनाएँ हो ही रही थी। दुनियाके सबसे बड़े साम्राज्यवादी देश इंग्लैण्ड और फ्रांस देख रहे थे, कि अन्तमें हमें जर्मनीसे निबटना है, जिसके लिये रूसका हमारे साथ रहना आवश्यक है। १९११ ई०में इन तीनों शक्तियोंके मुख्य सेना-सचालकोंका सम्मेलन हुआ, जिसमें फ्रांसके प्रतिनिधिने कहा—“रूसी सेनाओंका लक्ष्य यही होना चाहिये, कि जर्मनी अपनी सेनाके सबसे बड़े भागको पूर्वी मोर्चेमें फसा रखनेके लिये मजबूर हो।” इसके लिये रूसी सेनाको उसी समय जर्मनीपर आक्रमण कर देना चाहिये, जिस वक्त कि इंग्लैण्ड और फ्रांसकी सेनाएँ पश्चिममें आक्रमण शुरू करें। इतनेसे भी संतुष्ट न होकर १९१२ ई०में तीनों शक्तियोंके सेना-सचालकोंका जो सम्मेलन हुआ, उसमें फ्रांसने भाग की, कि आठ लाखसे कम रूसी सैनिक आस्ट्रिया और जर्मनीके सीमातपर नहीं होने चाहिये, और पश्चिममें स्थिति चाहे जैसी भी हो, सेना-चालनके सोलहवें दिन, रूसको आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण कर देना चाहिये। इसके लिये सैनिक रेलोंको बहुत भारी परिमाणमें बढ़ानेकी आवश्यकता थी, जिसके लिये जारशाहीको कर्जा और सामग्री देनेके वास्ते पश्चिमी राष्ट्र तैयार थे। स्टालिनके शब्दोंमें—“जारशाही रूस पश्चिमी साम्राज्यवादके लिये अपरिमित सरक्षित शक्ति थी, यही नहीं, कि वहाँ विदेशी पूँजी लगानेका स्वतंत्र अवसर मिला था, जिसके कारण रूसके आधुनिक उद्योग-धंधों तथा राष्ट्रीय अर्थनीतिपर साम्राज्यवादियोंका नियंत्रण हो गया था—उदाहरणार्थ कोयला, तेल और धातुके उद्योग—बल्कि यह भी कि रूस अपने लाखों सैनिकों द्वारा पश्चिमी साम्राज्यवादियों को मदद कर सकता था।”

**औद्योगिक प्रगति**—यद्यपि रूसी सामन्त अपने पुराने ढाँचेको बनाये रखना चाहते थे, लेकिन बिल्कुल उल्टी गंगा तो बहाई नहीं जा सकती। उद्योग-धंधोंको बढ़ाये बिना सैनिक तीरमें जारशाही मजबूत कैसे हो सकती थी? जापानसे हारकर उसने देख लिया था, कि कमसे कम सैनिक उद्योग-धंधोंको आगे बढ़ाना अनिवार्य है। इससे पूँजीपतियोंको सबसे अधिक लाभ था—सेनाके ठेके बढ़ती गगामें हाथ बँटाना था, नफा नहीं लूट थी, जिसे हर एक उच्च अधिकारी अपनोंमें बाँटना चाहता था। १९०५-१३ ई० के बीच ढाई अरब रूबलका सैनिक ठेका दिया गया, और दो सालके भीतर साठे तीन हजार किलोमीटर रेलवे लाइनों तथा इजनों और डबबोंके बनानेका ठेका भी पूँजीपतियोंको मिला। इस तरह बड़े-बड़े नष्टोंके साथ बड़े-बड़े ठेके मिले, जिन्हें कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये इजारादारीवाले बड़े पूँजीपति सगठनोंकी आवश्यकता हुई, जिसके फलस्वरूप १९००-१० ई० के बीच पूँजीपतियोंकी कुछ सेंडीकेटोने खान और धातु-उद्योग अपने हाथमें कर लिये। बारहवें पंद्रह बड़े-बड़े धातु-कारखानोंने मिलकर प्रोदमेनके नामसे अपनी सेंडीकेट कायम की, जिसने देशके सम्पूर्ण धातु-उद्योगका दो-तिहाई अपने हाथमें कर लिया। १९०६ ई०में प्रोदुगोल नामसे संगठित

सेडीकेटने दोनेत्स-उपत्यकाकी साठ सैकड़ा कोयलेकी खानोको अपने हाथमे कर लिया । १९०८ई० में स्थापित प्रोद्रूद सेडीकेटके हाथमे दक्षिणी रूसकी खनिज धूनोका अस्सी सैकड़ा था । इसी तरह कपडेके कारखानोवालोकी एक सेडीकेट १९०८ ई०मे मास्कोमे कायम हुई, जिसके हाथमे सैतालीस कपड़ा मिलें थी । इन सेडीकेटोने उद्योग-वधोके अधिक भागको अपने हाथमें ले आपसी प्रतियोगिताको इतना कम कर दिया, कि वह चीजोके दामको मनमाना रख सकती थी । जिस समय सेंडीकेटे प्रबल रूप धारण कर रही थी, और नफेके कारण उनके द्वारा उद्योग-वधोको बढ़ावा मिल रहा था, उसी समय बकोकी शक्तिका बढ़ना स्वाभाविक था, जिन्होंने बहुतसे औद्योगिक कारखानोको अपने हाथमे कर लिया । सेडीकेटोने अपने मत्स्य-न्यायसे जिस तरह छोटी कपनियोंके अस्तित्वको खतरेमे डाल दिया, उसी तरह अब छोटे बकोको निगलकर बड़े बकोने अपनी प्रधानता स्थापित की और दिवालिया बननेके डरसे छोटे-छोटे बक बड़े-बड़े बकोके पेटमें चले गये । १९०८ ई०मे पीतरबुर्ग-अजोफ-ओरेल और दक्षिणी बकोने मिलकर संयुक्त बकका रूप लिया । १९१० ई०में उत्तरी बक रूसी-चीनी और रूसी-एसियाई बकोसे मिलकर एक हो गया । अब सात बड़े बकोके पास रूसकी बकमें लगी अधिकांश पूजी चली आई । लेकिन सेंडीकेटो और महाबकोका शक्तिशाली होना केवल रूसी पूजीपतियोके लाभकी ही बात नहीं थी, इनकी पूजीका बहुत अधिक भाग विदेशियोका था । १९१४ ई०मे रूसके अठारह प्रधान बकोमें ३३५५ लाख रूबलकी पूजी लगी हुई थी, जिसमें ४२ प्रतिशत (१८५५ लाख रूबल) विदेशी पूजी थी । विदेशी पूजीमे भी फ्रांसकी २१९ प्रतिशत, जर्मनीकी १७ प्रतिशत, और अंग्रेजोकी ३ प्रतिशत थी । इंग्लैण्ड और फ्रांस दोनोंकी सम्मिलित पूजी विदेशी पूजीमे सबसे अधिक थी । पूजीके अनुसार ही रूसमे उनका प्रभाव भी-होना आवश्यक था ।

१९०५-७ ई०की क्रांतिके देशमे असफल हो जानेपर घरके भीतर जारशाहीके लिये कोई भयकर खतरा नहीं था । पूजीके विस्तार और उद्योग-वधोके प्रसारद्वारा पूजीपतियोकी पाचो घीमें थी, चाहे उसके कारण प्रथम विश्वयुद्धके पहले रूसका राष्ट्रीय ऋण ८८ अरब रूबल हो गया था, जिसमे सबसे अधिक वह फ्रांसका कर्जदार था । अभी भी बिजली, इजीनियरी, तर्वाइन-निर्माण, मशीन-टूल-निर्माण, भारी इजीनियरी, मोटर-उद्योग और भारी रसायन-उद्योग जैसे आधारभूत उद्योगोका रूसमे अभाव था, और इन चीजोके लिये उसे पश्चिमका मुंह देखना पड़ता था । तेल-उद्योग अवश्य आगे बढ़ा था, लेकिन उसपर भी विदेशी पूजीका नियंत्रण था । रूस बड़ी तेजीसे प्रथम विश्वयुद्धकी ओर बढ़ता चला जा रहा था । रूसके राजनीतिक आकाशमें इस समय कोई राजनीतिक परिवर्तनके लिये बड़ी घटना घटनेकी संभावना नहीं थी, चारो ओर राजनीतिक अकर्मण्यता और उदासी छाई हुई थी । इसी समय चार ४ अप्रैल १९१२ ई० में लेनाकी सोनेकी खानोके मजदूरोपर गोलिया चलाई गईं, जिसके वारेमे स्तालिनने “ज़ेज़्दा” (तारा) नामक बोल्शेविक पत्रमें १९१२ ई० में लिखा था—“लेना-गोलीकाडने मौन रूपी बर्फको तोड़ दिया, और जनताके आन्दोलनकी नदी फिरसे बहने लगी ।”

लेनाकी सोनेकी खाने एक कपनीके हाथमे थी, जिसकी स्थापना १९०८ ई०मे हुई थी, और जिसमे तीन-चौथाई पूजी अंग्रेजोकी थी । कपनीको इस खानसे प्रतिवर्ष सत्तर लाख रूबलका फायदा होता था, और साइबेरियाके ध्रुवीय कक्षाके भीतर दूरके इस भूभागके मजदूरोका बहुत क्रूरतापूर्वक शोषण होता था । यह सोनेकी खाने रेलसे डेढ़ हजार मील (१७०० किलोमीटर) दूर अवस्थित थी । ध्रुवीय कक्षाके भीतर होनेके कारण यहाकी नदिया सालके अधिक भागमे बर्फ बनी रहती, जिससे याता-यात थोड़े-से महीनोके लिये खुलता, जब कि लेना नदी मुक्त-प्रवाह होती । मजदूर एक मर्तवे बहा जा अत्याचारोके मारे यदि भागना चाहते, तो आसानीसे भाग नहीं सकते थे । उनसे दससे साढ़े ग्यारह घंटा रोज काम लिया जाता । लेना सुवर्ण-क्षेत्र कपनीकी तानाशाहीके मारे उनका नाको दम था । कपनीका मैनेजर वेलोखेरोफ लेनाका बिना मुकुटका राजा माना जाता था । अत्याचारोंसे तंग आकर फरवरी १९१२ ई०के अन्तमें खानके एक भागमे हड़ताल हो गई । इसकी खबरमे प्रोत्साहित हो १ मार्च तक और कितने ही भागोमे हड़ताल फैल गई, और सारे सुवर्ण-क्षेत्रमे आम हड़ताल सगठित कर ली गई । केंद्रीय हड़ताल कमेटीने कपनीके प्रवध-विभागमे बातचीत शुरू



की। कपनीके स्थानीय इंजीनियर तुलचिन्स्कीने बड़ी अच्छी तरह वातचीत करके मेन्गेविक प्रतिनिधियोंको हडताल उठा लेनेपर राजी किया, लेकिन हडताल कमेटीके बोल्शेविक विचार रखने-वाले सदस्योंने हडतालके पक्षमें प्रचार जारी रखना चाहा। इसपर तै हुआ, कि हडतालके बारेमें गुप्त मतदान द्वारा कमकरोसे राय ली जाय। २५ मार्चके सवेरे दो बड़े-बड़े पीपे हरएक क्षेत्रमें रख दिये गये, जिनमेंमें एकपर लिखा था—“कामपर लौट जायेंगे”, और दूसरेपर “कामपर नहीं लौटेंगे।” मजदूरोंको एक-एक ककड़ अपने मतको प्रकट करनेके लिये पीपोंमें डालना था। जल्दी ही “काम पर नहीं लौटेंगे” वाला पीपा पत्थरोंसे भर गया, जब कि दूसरे पीपेमें केवल सत्रह पत्थर मिले। इसपर २७ मार्चको छ हजार कमकरोने आम हडताल कर दी।

१७ (४) अप्रैलको हडताली प्रदर्शन करते हुये जब नदेज्दिन्स्क सुवर्ण-क्षेत्रके पास पहुंचे, तो मेनाने रास्ता रोक दिया। इंजीनियर तुलचिन्स्कीने कमकरोको बिखर जानेके लिये कहा, जिमपर कुछ लोग रुक गये, लेकिन दूसरे एक छोटे रास्तेमें आगे बढ़े। इसी समय घडाघड गोлия चलने लगी। दो सौ पचास कमकर निहृत हुये और दो सौ सत्तर आहत। यहां भी “खूनी रविवार” की तरह जारगाही अत्याचारने मजदूरोंमें भारी विद्रोहकी भावना पैदा कर दी, और सचमुच ही लेनाके गोलीकाडने अमरम्यताके बर्फको तोड़ दिया।

लेनाके गोलीकाडकी खबर मारे देशमें फैल गई। बोल्शेविकोंने फिर अपनी तत्परता दिखलानी शुरू की। इसी समय बोल्शेविकोंने अपने दैनिक “प्राव्दा” (अधिकार, सत्य) के निकालनेकी तैयारी की। “प्राव्दा” रूसी मजदूरोंका पत्र था। उसमें उन्हींकी भाषामें सरल लेख होते थे। यह कुछ मध्यमवर्गके शिक्षितोंके लिये पराई भाषामें कठिन शब्दोंके साथ अपनी मार्क्सवादकी पडिताई दिखलानेके लिये नहीं निकाला गया था। १९१२ ई०के जनवरीमें “प्राव्दा” के लिये चन्दा होने लगा, जिसमें रूसके सभी भागोंके मजदूरोंने पैसा भेजे। चंदेमें इतनी सफलता हुई, कि लेनिनने उसके बारेमें लिखा—“प्राव्दाका निर्माण रूसी कमकरोकी एकता, वर्गचेतना और शक्तिका सबसे बड़ा प्रमाण है।” “प्राव्दा”का प्रथम अंक स्तालिनके सम्पादकत्वमें ५ मई (२२ अप्रैल) १९१२ ई० को निकला, इसीलिये आज भी रूसमें ५ मईको कमकर-प्रेस-दिवस मनाया जाता है।

चतुर्थ दूमाका चुनाव—१९१२ ई० में तृतीय राज्यदूमाका कार्यकाल समाप्त होनेपर उसे तोड़ दिया गया, और चतुर्थ दूमाके निर्वाचनका निश्चय हुआ। कई सालोंसे स्तोल्पिनके हाथमें रूसी राज्यकी वागडोर थी। वह अपने अत्याचारोंके कारण लोगोंकी भारी घृणाका पात्र था। १९११ ई०में उसकी हत्या हो जानेपर फिर सभी जगह पुलिस अत्याचार होने लगा। दूमाका निर्वाचन ऐसे ही वातावरणमें हो रहा था। बोल्शेविकोंने दूमाके भाषणमंचके फायदोंकी अच्छी तरह समझ लिया था, इसलिये उन्होंने निर्वाचनका वायकाट नहीं किया। लेनिन उस समय पेरिसमें रहते रूसके भीतर राजनीतिक कार्यका संचालन कर रहे थे। उनको और नजदीक आनेकी जरूरत महसूस हुई, इसलिये १९१२ ई०के ग्रीष्ममें पेरिस छोड़कर वह पोलन्दके नगर क्राकोमें चले आये। निर्वाचनके बाद १९१२ ई०के अन्तमें चतुर्थ राज्यदूमाकी पहली बैठक हुई। इसमें प्रतिगामियोंकी सख्या और बल अधिक था—४१० सदस्योंमें १७० दक्षिणपथी थे, अकतूवरियोंकी मत्स्या सौ थी, जो दक्षिणपथके अनुयायी थे। कादेतोंकी सख्या पचास थी, इनमें और अकतूवरियोंमें इतना ही अन्तर था, कि कादेत वामपक्षकी बातोंको इस्तेमाल करते थे, यद्यपि दूमाके भीतर उनका गठजोडा अकतूवरियोंमें था। निम्न मध्यमवर्गके सदस्योंमें दस बुदोविकी और सात मेन्शेविक थे। मेन्शेविकोंने बोल्शेविकोंके साथ दूमाके भीतर एकता रखनेका प्रयत्न किया, लेकिन बोल्शेविक छ थे, इसलिये अपने एकके बहुमतका फायदा उठाकर मेन्शेविक बोल्शेविकोंको दूमामें बोलनेसे रोककर गये, इसपर बोल्शेविक अलग हो गये। ४१० सदस्योंमें ६ की मत्स्या नगण्य है, लेकिन बोल्शेविक जनताके हितोंके पक्षपाती तथा जारशाही क्रूरताको नग्न करनेके लिये वहां पहुंचे थे, इसलिये उनके भाषणाका अमर लोगोंपर बहुत पडता था। अपने प्रचारका यहा बहुत अच्छा अवसर था, और क्रांतिन पहलके वर्षोंमें लेनिनके दलने इसका खूब फायदा उठाते जनताके भीतर जारशाहीके विरुद्ध भारी घृणा पैदा करनेमें सफलता पाई। बोल्शेविक अपनी

क्रांतिको केवल रूसियोंके ही लाभके लिये नहीं चाहते थे, बल्कि उनका लक्ष्य था रूसके भीतर रहनेवाले सभी लोगोंको शोषण और उत्पीड़नसे मुक्त करना। ऐसी हालतमें अ-रूसी जातियोंके बारेमें अपने स्वको स्पष्ट कर देना बहुत जरूरी था, इसीलिये १९१३ ई० में दो महत्वपूर्ण कृतियां प्रकाशित हुई—लेनिनका “राष्ट्रीय प्रश्नपर समालोचनात्मक टिप्पणियां” और स्तालिनका “मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न”। इन दो ग्रंथोंने सारी जनताके सामने साफ कर दिया, कि साम्यवादी रूसमें “सभी जातियोंको आत्मनिर्णयका पूरा अधिकार होगा, और वह अपनी इच्छानुसार चाहे तो रूसी सघसे बाहर भी जा सकेगी।”

**विश्व-युद्धकी तैयारी**—आनेवाले विश्व-युद्धमें रूसको अपनी ओर शामिल करनेके लिये पश्चिमी यूरोपके दोनो गुटोंने किस तरह कोशिश की, इसके बारेमें हम बतला चुके हैं। युद्ध कैसर विलियम (विल्हेल्म)की सनकके कारण नहीं हुआ, बल्कि उसका ठोस कारण परस्पर-विरोधी साम्राज्यवादी आर्थिक स्वार्थ थे। जर्मन साम्राज्यवादने तुर्कीकी ओर बढ़ना चाहा। जर्मन बकने रेलों द्वारा जर्मनीको तुर्कसि मिलाना चाहा। जर्मन सैनिक अफसर तुर्की सेनाको संगठित और शिक्षित करके उसे रूस और इंग्लैण्डके विरुद्ध तैयार कर रहे थे। जर्मनीके पास नाममात्रके थोड़ेसे उपनिवेश (अफ्रीकामें) थे। जर्मनीकी सामरिक शक्तिसे भयभीत इंग्लैण्ड नहीं चाहता था, कि उसके उपनिवेशोंके बीचमें जर्मनीको कहीं भी पैर रखनेको मिले। वह चाहता था, कि जर्मनीकी नौसेना और व्यापारिक बेड़ेको नष्ट कर जर्मन उपनिवेशोंको अपने हाथमें कर ले। तुर्कीको मसोपोतामिया (इराक) और फिलस्तीनसे वंचित करके मिस्रपर अधिकार करनेके लिये भी वह उत्तारू था। फ्रांस जर्मनीकी सैनिक शक्तको दबाकर अलसस्-लोरेन प्रदेशको जर्मनीसे छीनकर राइन नदीके बायें तटपर अधिकार करना चाहता था, और तुर्की-साम्राज्यकी बदरवाटमें इंग्लैण्डका सहभागी भी होना चाहता था। जारशाही रूसकी योजना थी बासफोरस और दर्रेदानियालपर अधिकार, तुर्कीके भीतरकी अर्मेनियापर हाथ साफ करना, तथा आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्यको छिन्न-भिन्न करते हुये बल्कान प्रायद्वीपपर अपने प्रभावको स्थापित करना। जापान भी चीनमें अपनी मनमानी करनेके लिये एक ऐसे बड़े मौकेंकी खोजमें था। लेकिन विश्वयुद्धका पहले एक छोटे-से युद्धमें रिहर्मल हुआ, यह था बल्कान-युद्ध।

**बल्कान-युद्ध (१९१२-१३ ई०)**—बोस्निया और हेर्जोगोविनामें आगे बढ़कर आस्ट्रियाने रूसको बहुत क्रुद्ध कर दिया था। जारशाही सर्बिया, बुल्गारिया, मोन्टेनिग्रो और ग्रीसको बल्कान-सघके रूपमें एकताबद्ध करके उन्हें तुर्कीके विरुद्ध तैयार करना चाहती थी। फ्रांस भी इसमें उसका पृष्ठपोषक था, क्योंकि पश्चिमी देशोंके सामने सबसे बड़ी समस्या थी जनबल या सिपाहियोंकी सख्या। वह समझता था, कि इस प्रकार बल्कानकी दस लाख सगौने हमें आसानीसे मिल जायेंगी। जर्मनी और आस्ट्रिया तुर्कीकी पीठपर थे। प्रथम बल्कान-युद्ध १९१२ ई०के शरदमें बारम्भ हुआ। १९११ ई०से ही इटालीके साथ तुर्कीकी लड़ाई छिड़ी हुई थी, इसलिये बल्कान-सघ उसीको आगे बढ़ाते हुये युद्धमें कूदा। तुर्क नये हथियारोंसे सुसज्जित नवसंगठित पूर्वी यूरोपके सिपाहियोंके सामने जल्दी ही परास्त हो गये, लेकिन फिर विजेताओंमें आपसमें झगडा खडा हो गया, जिसके कारण अगले साल १९१३ ई०के ग्रीष्ममें दूसरा बल्कान-युद्ध विजेताओंके भीतर हो गया। बुल्गारियाने सर्बियापर आक्रमण कर दिया, जिससे नाराज होकर दूसरे बल्कान राज्य बुल्गारियाके विरुद्ध हो गये। फलतः बुल्गारियाकी हार हुई, और उसे अगस्त १९१३ ई० में बुखारेस्त-संधिपर हस्ताक्षर करनेके लिये मजबूर होना पडा। इस संधिके अनुसार बुल्गारियाके अपने कितने इलाके पड़ोसियोंको देने पडे, और अद्रियानोपोल बुल्गारियाके हाथमें निकलकर फिरसे तुर्कीके हाथमें चला गया। इसी युद्धमें सर्बियाने अल्बानियापर अधिकार कर लिया, लेकिन जब आस्ट्रियाने मैदानमें आनेकी धमकी दी, तो उसे छोटना पडा।

इन युद्धोंने बल्कानके स्लावोंको तुर्कीकी अधीनतासे मुक्ति प्रदान की, लेकिन अब यूरोपकी बड़ी शक्तियां उनपर प्रभाव डालनेके लिये कशमकश कर रही थी। बर्लिन-बगदाद रेलवेके लिये जर्मन और फ्रेंच दोनों पूजी लगा रहे थे, और इन विरोधी स्वार्थोंके सघर्षने बल्कानको सचमुच ही

वारुदका ढेर बना दिया था, जिसमें एक चिनगारी पड जानेसे भीषण विस्फोटक हो जानेका भय था। सभी यूरोपीय शक्तियां हथियार बढ़ानेपर आख मूदकर खर्च कर रही थी। जारशाहीने १९१४ ई० में साढ़े सत्तानवे करोड़ स्वर्ण रुबल सेनाके लिये रक्खा था। १९०७ ई० से १९१३ ई० तक उसने इस मदमें चार अरब रुबल खर्च किये। इंग्लैण्ड भी अपनी शक्तिको इसी तरह बढ़ानेमें लगा हुआ था। अपने नौसैनिक बलको बढ़ानेके लिये १९०६ ई० में उसने प्रकांड ड्रेडनाट युद्धपोत बनाया, जिसका अनुकरण करते जर्मनी और फ्रांसने भी अपने-अपने ड्रेडनाट बनाने शुरू किये। फ्रांसीसी पूजीकी मददसे जारशाहीने भी नौसैनिक निर्माणके लिये बहुत बड़ा प्रोग्राम रक्खा, लेकिन उसकी मद गतिके कारण अभी एक भी युद्धपोत तैयार नहीं हुआ था, जब कि १९१४ ई० का विश्वयुद्ध छिड़ गया। प्रोफेसर न० ई० जूकोव्स्की पहला आदमी था, जिसने विमान-विद्याका आविष्कार किया, लेकिन जारशाहीने उससे लाभ नहीं उठाया। प० न० नेस्तोरोफने पहिली बार कलैया मारकर अपने हवाई जहाजको उड़ाया, लेकिन जारशाही इसके महत्त्वको नहीं समझ पाई। यही नहीं, वैसा करनेमें एक छोटे-से पुर्जेके खो जानेके लिये नेस्तोरोफको “अनुशासनहीनता” के लिये जुरमानेका दंड दिया गया।

जैसे-जैसे युद्ध-घोषणाके दिन नजदीक आ रहे थे, वैसे ही वैसे रूसके भीतर जनतामें असंतोष भी फैलता जा रहा था। १९१४ ई० के आरम्भमें सर्वहारेके क्रांतिकारी सघर्ष जगह-जगह होने लगे। ९ जनवरीको “खूनी रविवार” के वार्षिकोत्सवको ढाई लाख मजदूरोंने हड़ताल करके मनाया। १९१४ ई० के पूर्वार्धमें पंद्रह लाख मजदूरोंने हड़ताल की। १९१४ ई० के ग्रीष्ममें वाकूके तैल क्षेत्रमें भी एक बड़ी राजनीतिक हड़ताल हुई, जिसे तोड़नेकी जारशाहीने बहुत कोशिश की। बोलशेविकोंके अशील करनेपर वाकूके हड़तालियोंकी सहानुभूतिमें पीतरवुर्गके नब्बे हजार कमकरोने काम छोड़ दिया, और ११ जुलाई को तो राजधानीके दो लाख मजदूरोंने हड़ताल करके अपनी सभाओंमें नारा लगाया—“वाकूके साथियो, हम तुम्हारे साथ हैं।” “वाकूके कमकरोकी विजय हमारी विजय है।”

प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१८ ई०)—वल्कानका वारुदका ढेर तैयार ही था। एक ओर जर्मनी और आस्ट्रिया, दूसरी ओर इंग्लैण्ड, फ्रांस और रूस नखमें शिखतक हथियारोंमें लैस होकर खड़े थे। सेराजिवामे आस्ट्रियाके युवराजकी हत्याने वारुदमें चिनगारी डालनेका काम किया, और जुलाई १९१४ ई० में जर्मनीके भडकनेपर महायुद्ध छिड़ गया। इस युद्धके दो दलोंमें एक था चतुर्दलीय पक्ष, जिसमें जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी, बुल्गारिया और तुर्की शामिल थे, दूसरा त्रिदलीय पक्ष, जिसमें इंग्लैण्ड, फ्रांस और रूसके साथ सर्बिया और बेल्जियम भी सम्मिलित थे। १९१४ ई० में ही जापान भी त्रिदलीय गुटमें शामिल हो गया, इताली १९१५ ई० में युद्धमें कूदा, और अन्तमें १९१७ ई० में युक्त राष्ट्र अमेरिकाने भी शामिल हो इसे विश्वयुद्ध बना दिया। प्रथम विश्वयुद्धमें छोटे-बड़े तैंतीस देश शामिल हुये, ७४० लाख सैनिक युद्धके लिये चालित किये गये, जिनमें तीन करोड़ प्राणोंकी हानि हुई—उनमें लाखों भारतीय भी थे। पैसेके रूपमें इसमें तीन अरब रुबल धन स्वाहा हुआ।

त्रिदलीय गुटमें पहले ही निश्चय हो गया था, कि युद्ध छिड़ते ही रूसको पूर्वमें आस्ट्रिया और जर्मनीपर आक्रमण करना होगा। युद्धके आरम्भ होते ही यूरोपमें तीन मोर्चे बन गये। पश्चिमी मोर्चा उत्तर समुद्रमें स्वीजलैण्ड तक फैला हुआ था, जिसपर इंग्लैण्ड और फ्रांसकी सेनायें जर्मन सेनाओंका मुकाबिला कर रही थीं। पूर्वी मोर्चा वस्तुतः रूसी मोर्चा था, जो बाल्टिक समुद्रसे रूमनिया तक फैला हुआ था। इनके अतिरिक्त एक बल्कान-मोर्चा था, जो दन्यूब नदीके किनारे-किनारे चला गया था। रूसी मोर्चा उत्तर-पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी दो भागोंमें विभक्त था। उत्तर-पश्चिमी मोर्चा बाल्टिक समुद्रसे वुग नदीके निम्न भाग तक चला गया था, और दक्षिणी-पश्चिमी मोर्चा रूस-आस्ट्रियाके सीमातक लेते रूमनिया तक फैला हुआ था। इन्हीं दोनों मोर्चोंमें रूसको आक्रमण करना था। बल्कान-मोर्चेपर आस्ट्रियाकी सेनाका मुकाबिला सर्बियाकी सेनाको करना था। जर्मनीने अपने मुर्भीतेको देखकर फ्रांसकी राजधानी पेरिसकी ओर जल्दी बढ़नेके लिये बेल्जियमकी तटस्थता भंग कर दी, और इसके कारण फ्रांस और इंग्लैण्डकी सेनाके लिये मुकाबिला बहुत जवर्दस्त हो गया।

रूसी सेनाने जर्मन सेनाओंको पश्चिमकी ओर बढ़नेसे रोकनेके लिये उसके पूर्वी सीमातपर आक्रमण किया। पश्चिममें प्रगति जारी रखते हुये जर्मनोंने इसी समय जेनेरल समसानोफकी रूसी सेनाको मसूरी झीलो—दलदली भूमिमें घेर लिया। लाखों रूसी मारे गये। समसानोफने लज्जाके मारे आत्म-हत्या कर ली। जारशाहीके लिये यह कोई अच्छा सगुन नहीं था। समसानोफकी सेनाको हरानेके बाद जर्मनोंने रेतनकाम्फकी अधीनतामें लड़ती रूसी सेनापर आक्रमण किया, और वह भी एक लाख दस हजार आदमियोंको खोकर पीछे हटी। रूसियोंने इतनी भारी क्षति उठाई, लेकिन इसके लिये जर्मनीको अपनी सेनाका काफी भाग पूर्वकी ओर भेजना पड़ा, जिसके कारण पेरिस बच गई। पश्चिमी साम्राज्यवादियोंकी मनोकामना पूरी हुई, रूसने सारी चोटे अपने ऊपर लेकर फ्रांसको पराजित होनेसे बचा दिया।

उत्तर-पश्चिमी मोर्चेपर रूसी सेनाके असफल आक्रमण करते समय ही अगस्त १९१४ ई० में चार रूसी अक्षोहिणियोंने दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर आस्ट्रियाके विरुद्ध आक्रमण किया। यहाँ सफलता मिली, और शत्रुओंको हराकर उन्होंने ल्वोफ और गोर्लिचपर अधिकार कर लिया, करीब-करीब सारी गलिसिया रूसी सेनाके हाथमें आ गई, लेकिन सितम्बरके अन्तमें जर्मन सेनायें आ धमकी, जिससे दिसम्बर १९१४ ई० के मध्य तक रूसी सेनाओंकी प्रगति रुक गई। अब दोनों ही पक्ष एक दूसरेको ढकेलनेमें असमर्थ थे। लेकिन १९१४ ई०के शरद्वर्षमें काकेशसका एक नया मोर्चा तैयार हो गया था। दो जर्मन युद्धपोत “गोयेवेन” और “ब्रेस्ला” भूमध्यसागरसे कालासागरमें घुस आये। तुर्क जर्मनीके पक्षमें थे, इसलिये उन्हें दरेदानियाल पार होनेमें कोई अड़चन नहीं हुई। तुर्कोंने रूसके विरुद्ध जर्मनीसे संधि की थी, इसलिये उसने रूसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। “गोयेवेन” और “ब्रेस्ला”ने अदेस्सा और फ्योदोसियापर बमबर्षा की, तुर्क सेनाने भी अपना प्रभुत्व दिखलाना चाहा, लेकिन दिसम्बर १९१४ ई०में सरिकामिशके युद्धक्षेत्रमें उसे रूसियोंने बुरी तरह हराया। दक्षिण-पश्चिमी मोर्चेपर कितने ही समय तक दोनों पक्षोंकी प्रगति रुके रहनेके बाद १९१५ ई०के अप्रैलके अन्त और मईके आरम्भमें एक जर्मन सेना गोर्लिच और तरनोफके बीच रूसी मोर्चेका भेदन करनेमें सफल हुई, जिसके कारण रूसी सेना जल्दीसे पीछे हटनेके लिये मजबूर हुई। अब सारे रूसी मोर्चेपर जर्मन छा गये। आस्ट्रियन सेनाने पर्जेमिसल और ल्वोफको ले लिया, जुलाईमें एक जर्मन सेनाने इवानगोरदके किलेपर अधिकार किया, जुलाईके अन्तमें वारसा (वरसावा) और ब्रेस्त-लितोव्स्क जर्मनोंके हाथमें चले गये, फिर आगे बढ़ते हुए उन्होंने ग्रीदोनो और विलनोस्पर अधिकार किया। १९१५ ई०के शरद्वर्षमें इस प्रकार पोलन्द, लिथु-वानिया और बाल्तिक प्रदेशोंके कितने ही भाग जर्मन और आस्ट्रियन सेनाके हाथमें चले गये। १९१५ ई० के मईसे अक्टूबरके छ महीनेमें डेढ़ लाख रूसी सैनिक मारे गये, और दस लाख आहत या बंदी हुये। इस प्रकार १९१४-१५ ई०में पूर्वी मोर्चेपर रूसी सेनाकी भारी हार हुई। रूसके लिये अब कोई आशा नहीं थी। लोगोंने युद्धके भीषण सहार, पराजय तथा जारशाही शासनके अत्याचारोंके विरुद्ध भारी असंतोषकी आग भड़क उठी। बोल्शेविक पहलेसे ही युद्धके विरोधी थे। जिस वक्त युद्ध छिड़ा, उस वक्त लेनिन आस्ट्रियामें थे। आस्ट्रियनोंने लेनिनको पकड़कर अपने देश से निकाल दिया, और वह स्वीजलैण्ड चले गये। बोल्शेविक इस युद्धको अनुचित युद्ध कहते थे, क्योंकि वह परतंत्र देशोंकी मुक्ति या स्वतंत्र देशोंकी प्रतिरक्षाके लिये नहीं लड़ा जा रहा था, बल्कि उसका उद्देश्य था विदेशी राज्यों और जातियोंको जीतकर गुलाम बनाना।

रूसमें चारों ओर आर्थिक अव्यवस्था फैली हुई थी। उसकी पिछड़ी हुई आर्थिक-व्यवस्था तथा उद्योग-धंधोंकी निर्वलताके कारण जर्मनोंसे हारनेके सिवा रूसकी सेनाओंके लिये और कोई रास्ता नहीं था। युद्धके कारण कोयलेका अभाव-सा हो गया, जिससे फैक्ट्रियों और मिलोंके कामकाज रुक कर दिया। १९१६ ई०में धौंकू भट्टाने लोहा तैयार करना बन्द कर दिया—फोलादके कारखाने देशके लिये आवश्यक धातुका आधा ही पैदा करते थे। रेलें युद्ध कालीन यातायातको ठीकसे कायम नहीं रख सकी। सेनायें ऐसी अस्त-व्यस्त अवस्थामें पीछे हटी, जिसके कारण बहुतसे इन्जन और गाड़ियां दुश्मनोंके हाथोंमें जानेसे नहीं बचाई जा सकी। सैनिकोंके सेनामें भर्ती होनेके कारण

कृषिकी उपज भी पहलेसे बहेत कम हो गई, वयस्क पुरुषोंमेंसे ४७ प्रतिशत (१४० लाख) सेनामें भर्ती किये गये थे। खेतीके लिये उपयोगी घोंडोंमें पचास लाखकी कमी हो गई थी, फिर कृषिकी उपज क्यों न कम होती? १९१६ ई०में १९०९ ई०की अपेक्षा पचासी प्रतिशत ही खेत बोये गये। लड़ाईके लिये सामान खरीदनेके वास्ते इंग्लैण्ड, फ्रांस और युक्त राष्ट्र अमेरिकाको ७७६९० लाख रूबल देना था, यह चोट सबसे भयकर थी। युद्धक्षेत्रमें घोर पराजय और देशके भीतर आर्थिक प्रलय दोनोंने मिलकर रूसी शासको और पूँजीपतियोंका हौस विगाड़ दिया। रूसी सैनिकोंके खूनकी गिनती न करके जारशाहीके मित्र अपने कर्जोंको जल्दी उगाहना चाहते थे। इंग्लैण्डका तीन अरब रूबल कर्जा हो गया था, जिसके बदलेमें उसने जारशाही सरकारसे उसकी सरक्षित सुवर्ण-निधिको लड़न भेजनेके लिये माग की, और साथ ही वह इसपर जोर दे रहा था, कि रूस और भी ताजी सेनायें युद्धक्षेत्रमें भेजे। १९१६ ई०में फ्रांसने अपने प्रतिनिधि भेज चार लाख रूसी सेना फ्रांसके भीतर लड़नेके लिये मागी। यदि क्रांति न हो गई होती, तो जारशाही रूस फ्रांसकी मागको ठुकरा नहीं सकता था।

इस तरहकी आर्थिक अराजकता और सकटको वर्दाक्षित करना जनताकी शक्तके बाहर था। जनताके सबसे जागरूक भाग मजदूरोंने अपने मनोभावको १९१५ ई०के वसंतसे ही जगह-जगह हड़ताल करके प्रकट करना शुरू कर दिया था। ९ जनवरी १९१६ ई०का “खूनी रविवार” उन्होंने एक बड़ी राजनीतिक हड़तालके रूपमें मनाया। अक्टूबर १९१६ ई०में ऐसी हड़ताल और प्रदर्शन बड़े जोरदार होने लगे, और कमकरोने नारा लगाना शुरू किया—“युद्ध बन्द करो”, “स्वेच्छाचारिता की क्षय।”

सेनाका मनोभाव कैसा था, इसका पता सिपाहियोंके अपने घरोंमें भेजे पत्रों द्वारा मिलता था। एक सिपाहीने लिखा था—“आजके सिपाही वह सिपाही नहीं है, जो कि जापानी-युद्धके समय थे। दासताभरी आज्ञाकारिताके बाहरी परदेके भीतर उनके दिलोंमें भारी गुस्सेकी आग धधक रही है, एक छोटी-सी दियासलाई जलाने भरकी देर है, और वह भड़क उठेगी।” और दियासलाई जलानेका काम बोल्शेविक बड़ी तत्परतासे कर रहे थे। उनमेंसे कितने ही सेनामें काम कर रहे थे। म० व० फ्रुजे जैसा युद्धकौशल पटु क्रांतिकारी १९१५ ई०में जेलसे भाग निकला था। उसने मिनस्क नगरमें एक बोल्शेविक संगठन कायम करके पश्चिमी मोर्चेके सिपाहियोंके साथ घनिष्ठ सवध स्थापित किया। अ० अ० ज्दानोफ सेनाके लिये चालित किया गया था। वहाँ जाकर उसने सेनामें बोल्शेविक प्रचार शुरू किया। व० व० विवविशियेफ और स० म० किरोफ काकेशस और समारामें विद्रोह फैला रहे थे। ल० म० कगानोविच पहले क्रियेफ और वादमें एकातेरिनोस्लावमें मजदूरों और सैनिकोंके बीचमें प्रचार कर रहा था। इस प्रकार मालूम होगा, कि बोल्शेविक इस स्थितिमें फायदा उठानेके लिये तैयार थे।

**मध्य-एसियामें युद्धका प्रभाव**—युद्धके कारण जो आर्थिक कठिनाइयाँ यूरोपीय रूसमें पैदा हुई थी मध्य-एसिया उसके प्रभावमें मुक्त कैसे रह सकता था? चीजोंके दाम महंगे हो गये थे, करके भारसे लोग बँसे ही दबे हुए थे, और अब युद्धके कारण उसे और बढ़ा दिया गया था। रूसी पूँजीपतियोंको कपासकी जरूरत थी, इसलिये मध्य-एसियाकी कृषि-भूमिमें कहीं-कहीं आवेसे ज्यादाको कपासके खेतोंमें परिणत कर दिया गया था, जिसके कारण पर्याप्त अनाज पैदा नहीं हो सकता था, और देशमें अन्नका अकाल फैला हुआ था। रूसी सरकार और उसके गोरे अफसर किर्गिज और कजाक घुमन्तुओंको उनकी चरागाहोंमें वचित करके वहाँ रूसी किसानोंको बसा रहे थे। १९१५ ई०में पैंतालीस लाख एकड़ बढ़िया जमीन कजाको और किर्गिजोंसे छीनकर रूसी जमींदारों, सरकारी अफसरों और कुलकों (बनी किसानों) को दे दी गई। युद्धके लिये रिसालोंके वास्ते घोड़ों और खानेके लिये पशुओंको छीन-छीनकर मध्य-एसिया और कजाकस्तानके चरवाहोंकी अवस्थाको और भी बुरा बना दिया गया। लोग पहले हीमें “वाहि मा, वाहि मा” कर रहे थे। इसपर जून १९१६ ई० में राजाज्ञा निकली, कि १९ से ४३ वर्षके उमरवाले पुरुषोंको फौजमें भर्ती होना पड़ेगा, और उन्हें युद्धक्षेत्रमें खाइयाँ खोदने तथा दूसरे कामोंमें लगाया जायेगा। रूसके कानूनके अनुसार रूस-भित्र जातियोंसे सैनिक सेवा नहीं ली जा सकती थी। भला जारशाही द्वारा शोषित और

जल्पीडित उज्बेक, कजाक, किर्गिज, तुर्कमान क्यो सैनिक सेवा करनेके लिये तैयार होते ? सो भी ऐसे समयमें, जब कि खेतमें फसल काटनेके लिये तैयार थी । उज्बेक और कजाक विद्रोह करनेमें पहले थे । ताशकन्द और समरकन्द जिलेके गावों और कस्बोंमें उज्बेकोंने सरकारी कचहरियों और दफ्तरोंपर आक्रमण किया, और सैनिक भरतीकी सूचीको जला दिया । जुलाई १९१६ ई० के मध्यमें विद्रोह सारे फरगानामें फैल गया । समरकन्द जिलेमें जीजकके पास जारशाही सेनाके साथ बाकायदा लड़ाई हुई, जिसमें रूसी सेनाने तोपोंका इस्तेमाल किया । विद्रोहियोंने वेर्नी (आधुनिक अल्माअता) और ताशकन्दके बीचके यातायातको काट दिया, और अपने विरुद्ध भेजी गई हथियारोंकी ट्रेन लूट ली । इन हथियारोंसे हथियारबन्द होकर किसान रूसी सेनासे लड़नेके लिये तैयार हो गये, और अक्टूबरसे पहले जारशाही उनके विद्रोहको दबा नहीं सकी । तुरगाई (आधुनिक अकत्यूबिन्स्क) जिलेके कजाकोंका विद्रोह सितम्बर १९१६ ई० में शुरू हुआ । उसके दबानेमें जारशाहीको काफी कठिनाई उठानी पड़ी । इस विद्रोहका नेता अमनगेलदी ईमानोफ था । जब जिलेके कजाकोंने सेनामें भरती होनेसे इन्कार कर दिया, तो रूसी राज्यपालने स्वयं जाकर उन्हें समझाना चाहा, इसपर अमनगेलदीने उससे पूछ दिया—“इजाजत दीजिये सरकार, एक प्रश्न पूछनेकी । अपने अज्ञानके कारण हमें समझमें नहीं आता, कि इस युद्धमें शामिल हो हम किसकी प्रतिरक्षा करेंगे ?” राज्यपालने अमनगेलदीको गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया, लेकिन वह वहासे अन्तर्धान हो गया, और थोड़े ही समयमें उसने काफी सख्यामें विद्रोहियोंको संगठित कर जारशाही सेनाका मुकाबला पहलेपहल किजिलकुल (लाल सरोवर) में किया । लड़ाई सारे दिन होती रही, सेनाको पीछे हटना पड़ा । अक्टूबर १९१६ ई०के अन्तमें अमनगेलदी और उसके साथियोंने तुरगाई नगरको घेर लिया, लेकिन वह उसके ऊपर अधिकार नहीं कर सके । वहासे हटकर अमनगेलदीने बतवकरा गावमें किलेबन्दी करके उसे अपना केंद्र बनाया । वहा उसने हथियारोंके बनानेके लिये एक मिस्त्रीखाना स्थापित किया, जिसमें कारीगर रात-दिन लगकर तलवार और दूसरे हथियार बनाने लगे । उसने कजाकोंको बन्दूक चलाना और फौजी कवायद सिखाना भी शुरू किया । फरवरी १९१७ ई०के मध्यमें एक काफी बड़ी सेना अमनगेलदीके विरुद्ध भेजी गई, जिसने बतवकरापर अधिकार कर लिया, लेकिन विद्रोहियोंको उनके बाप-दादोंका दस्त (निर्जन भूमि) शरण देनेके लिये तैयार था । बोल्शेविक-क्रांतिके अब आठ ही महीने रह गये थे । उतने दिनों तक किसी तरह लड़ते और आत्मरक्षा करते अमनगेलदी और उसके आदमियोंने बिताया । बोल्शेविक-क्रांतिके समय अमनगेलदी बोल्शेविकोंमें शामिल हो गया, और बोल्शेविक पार्टीका सदस्य बन क्रांतिके लिये लड़ते हुये उसने वीरगति प्राप्त की ।

तुर्कमानोंमें भी सघर्ष देरतक रहा । तुर्कमान प्रायः सारे घुमन्तू थे, इसलिये अपने विरुद्ध भेजी सेनासे आसानीसे बचते हुये वह तुर्कमानिस्तानकी विस्तृत तथा बहुत कुछ निर्जन और रेगिस्तानी भूमिमें घूमते रहे, और कहीं-कहीं विद्रोही ईरानकी सीमाके भीतर भी चले गये । जारशाही सैनिकोंने जहा भी मौका मिला, तुर्कमानोंके डेरोको जला दिया, उनकी सम्पत्ति और पशुओंको छीन लिया । इस अत्याचारके कारण कितने ही इलाकोंमें जनसख्या आधी रह गई । महाराज्यपाल कुरोपत्किनने ३४७ विद्रोहियोंपर मुकदमा चला ५१ को फासी दिलवा दी । जारशाहीने इस तरह अपने अन्तिम दिनोंमें मध्य-एशियाके लोगोंपर भीषण अत्याचार किये । जहा दक्षिणवाले अपने परिवारों और पशुओंको लेकर ईरान और अफगानिस्तानमें भागनेके लिये मजबूर हुये, वहा कितने ही हजार किर्गिज और कजाक चीनी तुकिस्तानके भीतर भाग गये । सोवियत शासनके स्थापित होनेके बाद उनमेंमें अधिकांश फिर अपनी जन्मभूमिमें लौट आये ।

**फरवरी-क्रान्ति**—अन्तिम दिनोंमें जारशाही शासन सचमुच ही जिन्दा सड़ी लाश था । ऊपरमें नीचेतक सारे शासक आकठ भ्रष्टाचार और अत्याचारमें मग्न थे । मिथ्या विश्वासकी यह हारत थी, कि एक ढोंगी वदमाश ग्रेगोरी रस्पुतिन जारका गुरु बन गया । रस्पुतिन साइबेरियाका एक किसान तथा भूतपूर्व घोडाचोर था । ईसाई साधु बनकर मठोंमें इधर-उधर घूमने उगते देख दिया, कि लोगोंकी अधश्रद्धासे बहुत फायदा उठाया जा सकता है, इसीलिये वह निकालना महात्मा बन गया ।

देहातसे उमकी प्रसिद्धि जल्दी ही राजधानीमें पहुची। जारिना सतो और सिद्धोकी बडी भक्तिन थी। उसके इकलौते पुत्रको डाक्टरने असाव्य रोगी बतला दिया था, इसलिये वह किसी सतकी करामातसे अपने पुत्रकी रक्षा कराना चाहती थी। रस्पुतिनके किसी गणने जारिनाके पास उसकी लम्बी-चौडी तारीफ की। जारिनाने उसे राजमहलमें बुला लिया, और घोडाचोरने ऐसा जादू चलाया, कि जारिना इस ढोंगीको दूसरा ईसा मसीह समझने लगी। घरके काममें ही नहीं, बल्कि राजके कारबारमें भी रस्पुतिनकी राय ली जाती। उसकी कृपाके बलपर कितने ही लोग बड़े-बड़े दर्जोंपर पहुचे। इस निरक्षरप्राय ढोंगीके कहनेपर जार मंत्रियों तकको नियुक्त और बर्खास्त करता था, जैसा अभी हाल ही में पजावके एक मुख्यमंत्रीके यहा देखा गया। जिस वक्त युद्धक्षेत्रमें रूसी सेनायें हारपर हार खा रही थी, उस समय जार-परिवार रस्पुतिनकी भविष्यद्-वाणियोंका तिनकेका सहारा ले रहा था। उसके हृदसे ज्यादा बड़े हुये प्रभावको देखकर जारवशी महाराजुल तथा उच्चकुलीन लोग भी रस्पुतिनको खतरेकी चीज समझने लगे। उनके ख्यालमें सारी बुराइयो और विपदाओका कारण वही बदमाश था। उसके विरुद्ध पड़्यत्र करके जारके अपने सबवियो तथा दूसरोने १७ दिसम्बर १९१६ ई०को रस्पुतिनको मार डाला, और उसे बर्फ जमी हुई नेवा नदीमें छेद करके बहती धारामे डाल दिया। लेकिन जारशाहीके राजनीतिक और सैनिक ढाँचोको निर्वल करनेका कारण रस्पुतिन नहीं था, और न उसकी वजहसे मजदूरो और किसानोंमें देशव्यापी असंतोष फैला था। पिछडा हुआ रूस एक आधुनिक महायुद्धके भारको उठाने योग्य नहीं था। बहुसंख्यक सैनिक बिना बन्दूकोंके थे। वह कैसे लड़ते? रेलोका यातायात बन्द-सा हो गया था, कारखानोंको कच्चा माल और ईंधन नहीं मिलता था। आहार मिलना मुश्किल हो गया था, फिर लोग क्यों न विद्रोह करनेके लिये तैयार होते, और उस अवस्थामे, जब कि सुसंगठित क्रांतिकारी व्यापक रूपसे उनमे प्रचार करते मुक्तिका रास्ता दिखला रहे थे? ९ जनवरी १९१७ ई० को “खूनी रविवार”का पर्व-दिन पड़ा। उस दिन राजधानी पेत्रोग्रादमें युद्धके विरुद्ध भारी प्रदर्शन हुआ। मास्को, वाकू, निजनी-नवोगोरोद तथा दूसरे नगरोंमें भी लोगोंने अपने विरोधी भावोंको “खूनी रविवार”के विशाल जलूसोंद्वारा प्रकट किया। मास्कोमें लाल झंडा लेकर “युद्ध बन्द करो” का नारा लगाते हजारों कमकर सड़कोंपर निकल पड़े, जिन्हें सवार-पुलिसने जबरदस्ती तितर-बितर कर दिया। कितने ही नगरोंमें हड़ताल हुई। मेन्शेविक और समाजवादी क्रांतिकारी शासनमे परिवर्तन करना चाहते थे, लेकिन इस समय युद्धके पक्षमे होना वह अपना राष्ट्रीय कर्तव्य मानते थे। १४ फरवरी १९१७ ई० को दूमाके उद्घाटनके दिन बोल्शेविकोंकी प्रेरणासे भारी संख्यामे मजदूर सड़कोमे “स्वेच्छाचारिताकी क्षय”, “युद्ध बन्द करो” के नारे लगाते निकल आये। फरवरीके उत्तरार्धमे पेत्रोग्रादमे क्रांतिकारी आन्दोलन बडी तेजीसे बढ़ा। १८ फरवरीको पुतिलोफके कारखानेमें तीस हजार मजदूरोंने हड़ताल कर दी, और २३ फरवरीके सबेरे जब उन्होंने अपना जलूम निकाला, तो दूसरे कारखानोंके भी बहुतसे मजदूर शामिल हो गये।

पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक पार्टीकी कमीटीने लोगोंसे कहा, कि ८ मार्च (२३ फरवरी)को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरिनोका दिवस राजनीतिक हड़ताल और प्रदर्शनोंके साथ मनाना चाहिये। उस दिन १०००० स्त्री-पुरुषोंने काम छोड़ दिया। अगले दिन ९ मार्च (२४ फरवरी) को दो लाख मजदूरोंने हड़ताल कर दी, और नगरके सभी भागोमे क्रांतिकारी सभाये होने लगी। पुलिसने सावधानी करते हुये नेवा नदीके सभी पुलोंपर अधिकार कर रक्खा, लेकिन नेवा उस वक्त बर्फ बनी हुई थी, इसलिये मजदूरोंको शहरमे आनेके लिये पुलोंकी अवश्यकता नहीं थी। १० मार्च (२५ फरवरी) को राजनीतिक हड़तालने मार्क्सजिनिक हड़तालका रूप ले लिया। पेत्रोग्रादके सेनापतिको जारने हुक्म भेजा—“मैं तुम्हे हुक्म देता हूँ, कि कलसे पहले ही राजधानीकी दुर्व्यवस्थाका अन्त कर दो।” इसपर पुलिसने प्रदर्शनकारियोंको छतोंपर रखी मशीनगनोंकी गोलियोंमें मूनना शुरू किया। सड़को और चौरस्तोंमे नगरके केन्द्रीय भागके सभी जगहोंमे सैनिक बँठे हुये थे। मजदूरों और बोल्शेविकोंको पकड़-पकड़कर अवाधुन्य जेलोमे बन्द किया जा रहा था। पेत्रोग्रादकी बोल्शेविक कमीटीके सदस्य जेलोमे बन्द कर दिये गये थे। इस समय मोलोटोफके

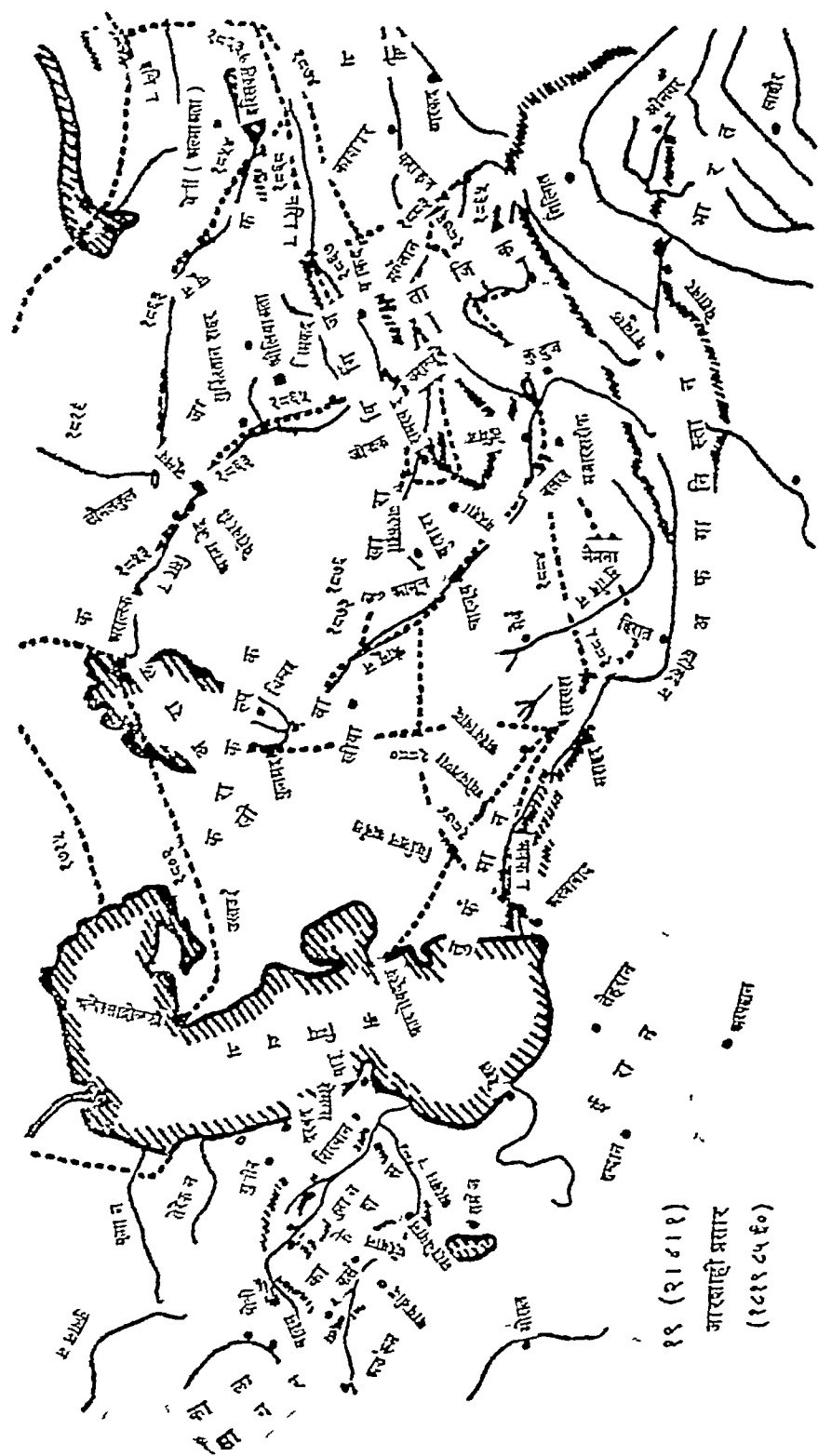
नेतृत्वमे केन्द्रीय कमीटीका व्यूरो विद्रोहका संचालन कर रहा था। यहाँ यह याद रखना चाहिये, कि अभी तक रूसमें पुराना पचाग चल रहा था, जिसकी तारीख तेरह दिन बाद पड़ती थी—२३ फरवरी वस्तुतः ८ मार्च थी। प्रथम क्रांति मार्चमें हुई थी, लेकिन पुराने पचागके अनुसार उसे फरवरी-क्रांति कहा जाता है। इसी तरह आठ मास बाद होनेवाली बोल्शेविक-क्रांति वस्तुतः नवम्बरमें हुई थी, लेकिन पुराने पचागके अनुसार अक्तूबरमें होनेसे उसे तबसे आज तक अक्तूबर-क्रांति कहा जाता है।

२७ फरवरी (१२ मार्च) को पेत्रोग्रादमें सेनापर क्रांतिका प्रभाव पड़ने लगा, सैनिक समझने लगे, कि उनका हित जारशाहीके साथ रहनेमें नहीं, बल्कि विद्रोहियोंका साथ देनेमें है। इसी दिन दो रेजीमेटोने वीवोर्ग मुहल्लेमें कमकरोका साथ दिया। मजदूरोंने एक हथियारखानेपर अधिकार करके वहाँसे चालीस हजार बन्दूके और दूसरे हथियार लेकर अपनेको हथियारबन्द किया। उन्होंने जेलोंसे राजनीतिक वदियोंको छुड़ा लिया। इसी दिन जेनरल खवारोफने राजधानीमें मार्शल-ला घोषित कर दिया। लेकिन जब सेनामें ही विद्रोह फैल रहा हो, तो मार्शल-ला क्या कर सकता था? उस समय जारनगरसे बाहर डेरा डाले हुये थे, और जारिना राजधानीमें बैठी अपने पतिके पास बराबर आशापूर्ण सदेश भेज रही थी। उसने अपने एक पत्रमें लिखा—“यह गुण्डाका आन्दोलन है। तरुण लड़के-लड़कियाँ चारों ओर चिल्लाते फिर रहे हैं, कि रोटी नहीं है—यह केवल लोगोंको भडकानेके लिये।” जारने युद्धक्षेत्रपर हुद्म भेजकर सेनाको पेत्रोग्राद भेजनेके लिए कहा। एक सेना भरी हुई ट्रेन जेनरल इवानोफके नेतृत्वमें मुश्किलसे जास्कॉयेसेलो (पेत्रोग्रादके पास जारग्राम) में पहुँची भी, किंतु सैनिकोंने क्रांतिकारी सिपाहियोंसे मेल-मिलाप बढ़ाकर अपने जेनरलको पकड़वाना चाहा। जारने अब जास्कॉयेसेलोको भी अरक्षित देखकर पेत्रोग्रादके लिये ट्रेनपर प्रस्थान किया, लेकिन वहाँ भी उसे खतरा मालूम हुआ, और ट्रेनको प्सकोफकी ओर मोड़ दिया गया। सभी जगह सेना क्रांतिकी ओर हो रही थी।

१९०५ ई०की क्रांतिमें हम देख चुके हैं, कि किस तरह अपने आप मजदूरोंने सगठित रूपसे जारशाहीका मुकाबिला करनेके लिये कमकर-प्रतिनिधि-सोवियतें सगठित कीं। अब इस क्रांतिमें भी उस तजव्वेसे फायदा उठाकर मजदूर सिपाही प्रतिनिधियोंकी सोवियतें कायम हुईं, जिनमें सबसे पहले कायम हुई थी पेत्रोग्राद सोवियत। २७ फरवरी (१२ मार्च) को क्रांतिकी विजय हुई। हथियारबन्द मजदूरों और सैनिकोंने राजनीतिक वदियोंको जेलोंसे छुड़ा लिया। इस प्रकार हम देखते हैं, कि जारशाही शासनयंत्रका स्थान लेनेके लिये सोवियतका पहला तजर्वा तुरन्त काममें आया। अभी सड़कोमें गोलियाँ चल रही थी, इस वक्त भी करखानोंके मजदूर सोवियतके लिये अपने सदस्य निर्वाचित कर रहे थे। फरवरी १९१७ ई० की सोवियतें केवल मजदूरों ही नहीं, बल्कि सैनिकोंके प्रतिनिधियों द्वारा भी सगठित की गई थी। २७ फरवरी (१२ मार्च) तक निर्वाचन हो गया था, उसी शामको पेत्रोग्राद सोवियतकी प्रथम बैठक हुई। पेत्रोग्रादमें क्रांतिके सफल होनेकी खबर मिलते ही सारे देशमें क्रांति फैल गई। २७ फरवरी (१२ मार्च) को ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीके सगठनोंने वहाँके मजदूरों और सैनिकोंसे पेत्रोग्रादकी क्रांतिका समर्थन करनेकी अपील की। अगले दिन बड़े-बड़े कारखानोंके मजदूर हड़ताल करके सड़कोपर निकल आये, और वहींपर मास्को छावनीके सैनिक उनमें आ मिले। १ मार्च (१४ मार्च) को मजदूरोंने बोल्शेविक वदियोंको मुक्त किया, जिनमें प्रसिद्ध क्रांतिकारी तथा पीछे गृहमंत्री फ० ई० जेजिन्स्की भी था। निजनी-नवोग्राद (आधुनिक गोंकी) में भी क्रांतिकी विजय हुई। २ (१५) मार्च को तुलाके हथियारके कारखानोंके मजदूरोंने विद्रोह कर दिया, और वहाँके जारशाही अफसरोंको पकड़कर अपनी सोवियत (पचायत) स्थापित की। यद्यपि क्रांति सफल हुई थी मजदूरों और सिपाहियोंकी कुर्बानी और बलिपर, लेकिन उससे प्रथम लाभ उठानेवाले थे अवसरवादी समाजवादी-क्रांतिकारी और मेन्शेविक। १ मार्चको रातको उन्होंने बोल्शेविकोंमें बिना पूछे ही दूमाके प्रतिगामी सदस्योंके साथ सगझौता करके सरकार बनानेके लिये समझौता कर लिया। २ मार्चके मधेरे राजुत ल्वोफके नेतृत्वमें अस्थायी सरकार घोषित कर दी गई। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि अस्थायी सरकारके सभी सदस्य



पुरानी व्यवस्थाके समर्थक थे। अन्ध्र बहुत बड़ा जमींदार था। मिल्यूकोफको विदेश-मंत्री बनाया गया। गुचनोफ अक्तूबरी दलका नेता तथा मिलमालिक और बैकर था, जिसे युद्ध-उद्योग-समितिका युद्ध-मंत्री बनाया गया था। प्रगतिशील पार्टीका सदस्य तथा कपडामिलका मालिक कोनोक्लोफ व्यापार उद्योग-मंत्री बनाया गया, और चीनी कारखानोंका मालिक करोड़पति तेरेस्चेवको वित्त-मंत्री नियुक्त किया गया। ग्यारह मंत्रियोंमें केवल एक जनमजाजवादी दल (पीछे समाज-वादी क्रान्तिकारी दल) का सदस्य वकील केरेन्स्की था, जिसे न्याय-मंत्री बनाकर ठरका दिया



१९ (२।६।१)

जार्जवाही प्रसार

(१८९९ ८५ ६०)

गया । इस मन्त्रिमण्डलके बारेमें लेनिनने अपने एक पत्रमें लिखा था—“हितकारी व्यक्तियोंका समूह नहीं है यह सरकार । यह रूसमें राजनीतिक शक्ति हथियानेमें सफलता पानेवाले एक नये वर्गके प्रतिनिधि हैं । यह पूजीपति जमींदारों और पूजीवादियों (बूज्वा वर्ग) के प्रतिनिधि हैं, जो कि लम्बे अर्सेसे हमारे देशका आर्थिक तौरसे शासन कर रहे थे ।”

अस्थायी सरकारका पहला प्रयत्न यह हुआ, कि राजमुकुटकी रक्षा कैसे की जाय ? जार पहले ही अधिकार वंचित होकर प्सकोफमें बैठा हुआ था । गुचकोफ और शुलगिनने अस्थायी सरकार के नामसे वहा पहुंचकर जारपर जोर दिया, कि वह अपने पुत्र अलेक्सीके पक्षमें सिंहासन त्याग दे । लेकिन जारने अपने भाई मिखाइलके पक्षमें सिंहासन-त्याग करना स्वीकार किया । पेत्रोग्राद लौटनेपर द्वां सदस्य गुचकोफने मजदूरोंके सामने भाषण देते हुये निकोलाइ II के सिंहासन-त्यागको घोषित करते हुये अन्तमें “सम्राट् मिखाइल जिंदाबाद” के साथ अपने व्याख्यानको समाप्त किया । इसपर मजदूरोंने तुरन्त गुचकोफके गिरफ्तार करनेकी मांग पेश की । अस्थायी सरकारने बहुत जल्दी देख लिया, कि राजवंशकी रक्षा नहीं की जा सकती, और उसने एक प्रतिनिधिमण्डल भेजकर मिखाइल रोमानोफसे सिंहासन त्यागकर सारी शक्ति अस्थायी सरकारके हाथमें दे देनेकी प्रार्थना की । ३ मार्च को मिखाइल रोमानोफने भी सिंहासनसे इस्तीफा देनेके पत्रपर हस्ताक्षर किया, और लोगोंको अस्थायी सरकारकी आज्ञा माननेके लिये कहा ।

इस प्रकार रूसका अंतिम राजवंश खतम हो गया, लेकिन क्रांतिसे फायदा उठाकर प्रजाके नामसे जिस गुटने शासन अपने हाथमें लिया, वह साधारण जनताके हितोंकी पक्षपाती नहीं, बल्कि उसने पश्चिमी यूरोपकी तरह सम्पत्तिशाली पूजीवादी वर्गके लिये शासनयन्त्रको अपने हाथमें सभाला था । लेकिन हिन्दीकी पुरानी कहावत क्या झूठी हो सकती है—“जो शालिग्रामको भूनकर खा गया, उसे बैंगन भूनकर खाते कितनी देर लगेगी ?” जिन कारणोंने जारशाही जैसे शक्तिशाली शासन-यन्त्रको उखाड़कर फेंक दिया, वह अब भी मौजूद थे ।

### स्रोत ग्रन्थ

- १ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्रुवेर आदि मास्को १९१०)
२. पो गरामि पुस्तिन्याम् स्नेदनेइ आजिइ (न. म. फेदोरोव्स्की, मास्को १९३७ ई०)
- ३ पुतेशेस्त्विये व् जापदनीइ किताइ (ग. ये और म ये ग्रज़िमाइलो, पेत्रेवुर्ग १९०१)
४. इस्तोरिया दिप्लोमातिइ (३ जिल्द, व प पोतेम्किन्, लेनिनग्राद १९४५)
- ५ यजीकोज्जानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरी (स ग विलिन्स्की आदि मास्को १९१४)
- ६ इस्तोरिया रोस्सिइ (२९ स सोलोवियेफ्, पेत्रेवुर्ग, १८७९-८५)
- ७ तुर्कैस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओकुग् (३ जिल्द १८८०)
८. History of U S S R. (A. M. Pankratova)
- ९ Heart of Asia (E D Ross)
- १० Manuel historique de politique etrangere (E Boureois, Paris 1927)
- ११ La rivalite anglo-russe on XIX siecle on Asie (A M F Roure, Paris 1908)
- १२ Europe and China (G F Hundson London 1931)
- १३ Russo-Chinese Diplomacy (Ken Shen-Feigh, Shanghai 1928)
- १४ Histoire de Russie (N Brian-Chaninov Paris 1929)

## खोकन्दके खान

(१७४७-१८७६ ई०)

अस्त्राखानियोंके शासनके निर्वल होनेपर उत्तरके कजाकोने नोच-खसोट शुरू कर दी। इससे पहले जुगर-कत्मक अपने प्रभुत्वको बढ़ाते चले आये थे। १७४० ई० तक ताशकन्द और तुर्किस्तान शहरके इलाकोपर कजाकोका पूरा अधिकार हो गया था, और पलासीके युद्धके समय (१७५७ ई०) चीनने जब जुगरोकी शक्तिको खत्म कर दिया, उसी समय अन्तर्वेदमें शक्तियोंका फिर वटवारा हुआ—मंगितोने बुखारा और अन्तर्वेदकी भूमिको अपने हाथमें किया, फरगाना और ताशकन्दपर एक नये वंशकी स्थापना हुई। इस इलाकेके नगरोंमें प्रभावशाली खोजा (सैयद) शासन कर रहे थे, जिन्होंने केंद्रके निर्वल होनेपर अपनेको स्वतंत्र शासक बना लिया। फरगानाका शासक यादगार खोजा भी ऐसा ही था, जिसकी लड़कासे शाहख बेकने शादी की, जिसके वंशमें निम्न खान हुये थे—

१. शाहख बेक, यादगार खोजा-दामाद	१७४७ ई०
२. रहीम बेक, शाहख-पुत्र	
३. अब्दुलकरीम बेक, शाहख-पुत्र	
४. एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र	—१७७० „
५. नरबुले, नरबुते, अब्दुलकरीम-दौहित्र	१७७०-१८०० „
६. आलम खान, नरबुले-पुत्र	१८००-९ „
७. उमर, नरबुले-पुत्र	१८०९-२२ „
८. मुहम्मद अली, उमर-पुत्र	१८२२-४२ „
९. शेरअली, हाजिवी-पुत्र	१८४२ „
१०. मुराद, आलिम-पुत्र	१८४२ „
११. खुदायार, शेरअली-पुत्र	१८४२-५७ „
१२. मुल्ला, शेरअली-पुत्र	१८५७-५९ „
१३. शाहमुराद, सरिसक-पुत्र	१८५९ „
खुदायार (पुन)	१८५९ „
१४. सैयद मुल्तान, मुल्ला-पुत्र	१८५९-६५ „
खुदायार (पुन)	१८६५-७५ „

### १. शाहख बेक, यादगार खोजा-दामाद (१७४७ ई०)

जैसा कि कहा, अस्त्राखानियोंकी निर्वलतासे फायदा उठाकर इमने अपना वंश स्थापित किया। बोलगाके पास रहनेवाले तुर्कोंके किन्नी कबीलेका यह एक अमीर किन्तु राजवंशी नहीं था। १८ वीं सदीके आरम्भमें यह बोलगा-नटमें फरगाना पहुँचा, और खुर्रममरायके शासक यादगार खोजाने इसे अपनी लड़की दे दी। वह अपने अनुयायियोंके साथ खोकन्दमें बारह मील पश्चिम, गूरगान (कूरकान) स्थानमें बस गया। शायद शाहख मंगीती था और खोकन्दमें प्रधानता रखनेवाली आखासे सबब रखता था। शाहखने समुरको मारकर उसके राज्यको हाथमें कर उसे आगे बढ़ाया। चाहे वह छिड़-गिन् वंशका न भी रहा हो, लेकिन अपनी धाक जमानेके

लिये छिड़-गिस्के खूनका दावा करना फायदेकी बात थी, जैसा कि उससे एक सौ वर्ष पहले बाबर और उसके वंशजोंने भारतमें किया था।

## २. रहीम बेक, शाहरुख-पुत्र

बापके मरनेपर बेटा उत्तराधिकारी हुआ, लेकिन अभी राज्य छोटा होनेसे वह खान न होकर बेक (अमीर) ही रहा।

## ३. अब्दुलकरीम बेक, शाहरुख-पुत्र

रहीम बेकके मरनेपर उसका भाई अब्दुलकरीम गद्दीपर बैठा, जिसके समयसे खोकन्दका प्रताप बढ़ने लगा। इसीने वर्तमान खोकन्द नगरको आबाद करके उसे अपनी राजधानी बनाई।

## ४. एर्दनी बेक, अब्दुलकरीम-पुत्र (—१७७० ई०)

नहीं कहा जा सकता, एर्दनी बेक अब्दुल-करीमका पुत्र था या भाई। इसने फरगानाके सभी बेकोको अपने अधीन किया। १७५८ ई०में ताशकन्द चीनके हाथमें चला गया था। चीनी जेनरल चाउ-हो-येइ ने खोजी जानका पीछा करते अपनी एक सैनिक टुकड़ीको वुस्तो (करा किर्गिजों) को दवानेकेलिये भी भेजा। एर्दनी बेकने मास और शराबसे उनका सत्कार किया, और लौटते वक्त उनके साथ गया। उसने अपने एक अफसरको सम्राट् च्यान्-लुङ्ग (काउ-चुङ्ग १७३७-१७९५ ई०) के दरबारमें अधीनता स्वीकार करनेके लिये भेजा। अन्दिजानके शासक तुकतू मुहम्मद, मरगिलानके इलास पिङ्ग लीने भी बाज और दूसरी भेटोंके साथ चीन-दरबारमें अपने दूत भेजे। १७६० ई०में तोकतू मुहम्मद स्वयं पेकिङ्गमें उपस्थित हुआ। एर्दनीने ओश (अजीबी) के इलाकेपर आक्रमण किया, लेकिन चीनी जेनरलके हुक्मपर उसे लौट जाना पडा। १७६३ ई० में वुस्तोकी भूमिपर चीनियोंने दूसरी बार आक्रमण किया। इस तरह १७७० ई० में जब एर्दनी मरा, उस समय चीनका प्रभाव मध्य-एसियामें जोरोंपर था और उसकी इच्छाके विरुद्ध स्थानीय शासकोंको मनमानी करनेकी हिम्मत नहीं थी।

## ५. नरबुते, नरबुले, अब्दुलकरीम-दौहित्र (१७७०-१८०० ई०)

अब्दुलकरीम बेककी लड़की अर्थात् एर्दनी बेककी बहिनको बाबर-वंशज अब्दुरहीम बेकने शादी की थी, जिससे नरबुते बी पैदा हुआ। इस प्रकार वह बाबरके प्रतापी वंशका उत्तराधिकारी होनेका भी दावा कर सकता था, यद्यपि इस समय भारतमें इस वंशकी भी दशा बहुत बुरी थी। नरबुतेके गद्दीपर बैठनेसे पहले सुलेमान बेक और शाहरुख बेक वारी-वारीसे कुछ महीनों तक खोकन्दकी गद्दीपर बैठ चुके थे। नरबुलेका बाप अब्दुरहीम वातिर (वहादुर) उज्बेकोके मिग-कवीलेका और इसफाराके इलाकेका शासक था। दूसरी परम्परा यह भी है, कि यह यामच बी (बाबर)का वंशज था। इसफारा लेनेके लिये एर्दनीने अब्दुरहमान (अब्दुरहीम) को धोखा देकर मार डाला, लेकिन उसके पुत्र नरबुतेको बच्चा समझकर छोड़ दिया। एर्दनीके उत्तराधिकारियोंके भी विच्छिन्न या भाग जानेपर खोकन्दियोंने नरबुतेको लाकर गद्दीपर बैठाया। यह बुखाराके अमीर शाह-मुरादका समकालीन था, और शायद उसकी अधीनता भी स्वीकार करता था। नरबुतेके पास पचास हजार सेना थी। चीन-सम्राट्ने उसे “उत्र” की उपाधि प्रदान की थी। हर दूसरे साल घोड़ों, समूरी खालों आदिकी भेट लेकर खोकन्दका दूत चीन जाता था, और बदलेमें लाखों रुपयाँकी बहुमूल्य चीजें इनाम मिलती थी। उस समय चीनी सीमातसे आगे सवारीके लिये सड़कनुमा घोड़ागाड़ी चढ़नेको मिलती, जिसमें दो घोड़े जुतते। खाना-पीना सारा सामान इसी गाड़ीमें रक्खा जाता। जगह-जगह मुसाफिरोके लिये पड़ाव बने हुये थे, जहा पाच सौ चीनी सैनिक रहते थे, यात्री इन्हीं पड़ावोंमें रातको ठहरते। रास्ता ऐसे इलाकोंसे जाता था, जहा आबादी बहुत कम थी। चीनकी सीमासे एक मासके करीब पेकिङ्ग था। चीनी दरबारके अपने कायदे थे। दूतको काउ-ताउ

(दडवत्) करनी पड़ती, फिर प्रतिहार चीनी-तुर्कीमें कुछ बोलता, जिसका अर्थ था “सम्राट् श्रीमुख से पूछ रहे हैं”, कि मेरा पुत्र नरवुते स्वस्थ और प्रसन्न तो है ?” दूत फिर दडवत् करता, और पहलेसे सिखलाये हुये वाक्योंमें उत्तर देता—“नरवुतेको इसके सिवा और कोई इच्छा नहीं है, कि परमभट्टारककी आज्ञाका पालन करें।” भेंट-मुजरेके बाद सम्राट्ने दस लाख मूल्यका इनाम उसे दिया, जिसे घोडागाडियों में रख दिया गया। अफगान राजदूतने नरवुतेके बारेमें लिखा था—“नरवुतेने अपने लिये एक बड़ा ही सुन्दर महल बनाया है, जिसकी दीवारें चमकीली प्रोसलीन (चीनी मिट्टी)से ढकी हैं। वह दस हजार सिपाहियोंके साथ शुक्रवारकी नमाज पढ़ता है।” उसके भोजनमें चावल भी सम्मिलित था। अफगान दूत मासूम खोजाके अनुसार नरवुतेने खोजन्द छोड़ सारे फरगानाको जीत लिया था, अन्दिजान, नमगान, ओश आदिके नगर उसके हाथमें थे। खोजन्दके शासक फाजिल वी और तत्पुत्र तथा उरातिप्पाके राज्यपाल खुदायारसे उसका झगडा रहता था। उसने अमीर बुखारासे मिलकर उरातिप्पापर अधिकार करना चाहा, लेकिन खुदायारने बुरी तरहसे हराकर भगा दिया। १७९९ ई०में नरवुतेने ताशकन्दके शासक मूनस खोजापर आक्रमण किया। कजाकोंके खान एलवसके मारे जानेके बाद १७४० ई०में ताशकन्द जुगर कल्मकोंके हाथमें चला गया था, जिनकी ओरसे कुसियक वी १७४९ ई० तक शासन करता रहा। जुगर साम्राज्यको नष्ट करके १७५० ई० में चीनियोंने ताशकन्दपर अधिकार कर लिया। कुछ दिनों छोटे छोटे अमीर जहाँ तहाँ राज्य करते रहे, फिर खलीफा अव्वकरके वशज यूनस खोजाने ताशकन्दको अपने हाथमें कर लिया, और इसने आसपासके इलाकेको दबाकर १७९८ ई०में महाओर्दूके कजाकोंको भारी दड दिया। इसी यूनससे १७९७ ई०में नरवुतेकी पहली भिड़त हुई। १८०० ई० में नरवुतेको यूनसने पकड़कर मार डाला।

## ६ आलम खान, नरवुते-पुत्र (१८००-९ ई०)

नरवुतेके मारे जानेके बाद उसके बड़े बेटे आलमने अपने भाई हस्तम बेक और दूसरे सबधियोंको मारकर गद्दी मभाली। खोकन्दके खानोंमें पहलेपहल इसीने खानकी पदवी धारण की, और अपने नामका खुतवा तथा सिक्का चलाया। यूनस खोजा कजाकोंके साथ खोकन्दपर चढ़ा, खुदायार-पुत्र बेक मुराद भी उसका सहायक था। सिर-दरियाके आर-पारसे दोनों सेनाओंने गोलावारी की, किन्तु अन्तमें यूनसको खाली हाथ लौट जाना पड़ा। १८०३ या १८०५ ई०में आलम खानने ताशकन्दको एक बार सर किया, लेकिन अन्तिम विजय उसके भाई उमर खानके हाथों हुई, जिसने यूनसके पुत्रको वहाँसे भगा दिया। आलमने कजाकोंको हराकर बुखारासे उरातिप्पाको छीननेकी पहली बार अमफल कोशिश की, दूसरी बार उसे सफलता मिली। तो भी खुदायारके भतीजे खानने उरातिप्पाको फिर लौटा लिया।

चीनियोंके पूर्वी तुर्किस्तानके अल्ती शहरपर विजय प्राप्त करनेपर वहाँका शासक खोजा सेरिसक बुखारा भाग गया। उसे काश्गार न लौटने देनेके लिये चीनने खोकन्दको हिदायत दे रखी थी, जिसके लिये खोकन्दको कुछ वार्षिक रुपये भी मिलते थे, जिसे लानेके लिये हर दूसरे-तीसरे साल चीनमें खोकन्दसे दूत जाता था। एक बार चीनने कारणवश रुपया नहीं दिया, जिसपर आलमने खोकन्दसे काश्गारकी ओर जानेवाले बुखाराके कारवाको रोक दिया। इसकी खबर मिलने-पर चीनने पेंशनकी वाकी रकमको भी देकर फिर खोकन्दको राजी कर लिया। आलम खान बड़ा ही स्वेच्छाचारी और दुराचारी था। अपनी प्रजाकी लडकिया उसने मार डाली थीं। निरपराध लोगोंको भी मरवा डालनेका उसे व्यसन हो गया था। एक बार उसने अपने भाई उमरबेक और मामा तुगाईके संचालनमें भारी सेना देकर हुक्म दिया—कजाकोंके देशको जाकर बरबाद कर दो। हुक्मको न पूरा करना खानके क्रोधका भाजन होना था। मौसिम प्रतिकूल था, लेकिन तो भी खानके हुक्मको पूरा किया गया। कजाकोंने अधीनता स्वीकार की, और उमरने भाईको सूचना दी, कि मैंने कुछ कजाकोंको मार डाला और बाकियोंने अधीनता स्वीकार कर ली। ऐसी दया दिखलानेके लिये आलम खानने उसे गाली देकर फिर बड़ी क्रूरतासे नरसंहार करनेके लिये लौटा दिया। उमरने

जाकर देखा, कि उसके पास दस हजार सेना है, जो इतने बड़े कामके लिये पर्याप्त होगी, इसमें सदेह था। उसने तुगाई तथा दूसरे अफसरोंसे सलाह ली। सबने कहा, कि हमारे घोड़े लौटकर ताशकन्द जानेकी शक्ति नहीं रखते, ऊपरसे मौसिम भी बहुत खराब है, साथ ही कजाक मुसलमान और निरपराध हैं, उनका कत्ल-आम करना ठीक नहीं है, रेगिस्तानमें बिखरे हुये कजाकोंको पकड़ पाना भी सम्भव नहीं है। उमरने पूछा—“फिर क्या करना चाहिये?” इसपर मामाने जवाब दिया—“उमरवेकको खान बनना होगा। हम आलम खान-जैसे अत्याचारीकी आज्ञा नहीं मान सकते।” वही उसने उमरके लिये राजभक्तिकी शपथ ली। सेनाने खोकन्दके भीतर पहुचकर उमरको खान घोषित किया। आलमके साथ तीन सौ आदमी रह गये थे। उसने अपने अनुयायियोंमें खूब इनाम बाटे, और अपने खजाने, हरम, अन्तःपुर, पुत्र शाहखक के साथ ताशकन्दसे खोकन्दके लिये प्रस्थान किया। रास्तेमें एक किलेमें घिर गया, और आत्मसमर्पण करनेसे भी इन्कार कर दिया। रातको वही मुकाम रहा। सबरे उठकर देखा, तो उसके तीन सौ अनुयायी भी साथ छोड़कर खोकन्द चले गये थे। आखोमे आसू भरकर आलमने अपने पुत्रको हजार तिला (पांच सौ गिन्नी) दे अमीर हैदरके पास बुखारा भेज दिया। अपनी बेगमो तथा खजानोंको गावके एक मुखियाके हाथमें सौंप बीस सवारो तथा अपने दीवानवेगी (वजीर) के साथ दर्राकोह चला गया। इस दर्रा (पहाड़ी डांडे) से खोकन्द नगर दिखलाई पड़ता था। दीवानवेगीने खानको खोजन्द चलनेकी सलाह दी, जहापर चार हजार खोकन्दी सैनिक रहते थे। लेकिन आलम खान अब भी अपनी राजधानीमें जानेका हठ कर रहा था। इसपर उसके और भी साथी हट गये और सिर्फ तीन आदमियोंके साथ वह चला। शत्रु सैनिकोंने उसका पीछा किया, और खानका घोड़ा दलदलमें फस गया। उसने दीवानवेगीसे घोड़ा मागा, किन्तु उसने उसे न दे स्वयं दौड़ाते शहरका रास्ता लिया। उमरके सिपाहियोंमेंसे किसीने खानकी पीठमें गोली मारकर रातमें दफना दिया। यह १२२४ हि० (१६ II १८०९-७ I १८१० ई०) की बात है। पहले उमरने दीवानवेगी मुहम्मद जहूरका स्वागत किया, पीछे उससे सारा वन छीन लिया। जहूरका अन्तिम समय भक्ति-पूजामें बीता।

मध्य-एशियाके शासकोंमें एक बड़ी कमजोरी यह थी, कि वह शेखों-खोजोंके बड़े भक्त होते थे, उनकी दिव्य शक्तिपर बहुत विश्वास करते थे, लेकिन आलम इसे नहीं मानता था। खोकन्दमें एक बहुत बड़ा शेख रहता था, जिसके बहुत से मुरीद (चेले) थे, और जिसकी दिव्य शक्तिकी बड़ी प्रसिद्धि थी। आलमने एक बार उस शेखको बुलाया, और तालाबके किनारे रस्सी तानकर कहा—“ओ शेख, क्यामतके दिन निश्चय ही तुम अपने चेलोंको पुलेसिरात (स्वर्ग और नर्कके बीचकी पतली दीवार) को पार कराओगे, मैं चाहता हूँ, कि इस रस्सीसे जरा तुम इस तालाबको पार हो जाओ।” शेखने बहुत कहा, कि कुरानमें दिव्य शक्ति दिखलाना मना है। आखिर शेखको जबरदस्ती रस्सीपर चढ़ाया गया। गिरना तो था ही, इसपर लोगोंने डंडे मार-मारकर उस ढोंगीके प्राण ले लिये। उसने बहुत-से दरवेशो और साधुओंको पकड़कर ऊटवानी करनेके लिये मजबूर किया था। आलम खानके जारी किये हुये सिकके चादी मिले हुये कासेके थे।

### ७ उमर खान, नरबुते-पुत्र (१८०९-२२ ई०)

आलम खानने अपने बेटे शाहखको बुखारा भेजा था, लेकिन वह वहां न जाकर ताशकन्द चला गया। पहले वहांके कुशवेगी (सेनापति) ने खानजादेका स्वागत किया, लेकिन आलम खानके मरनेकी खबर पाकर उसने उसे खोकन्द रवाना कर दिया, और चचाके पास पहुंचनेसे पहले ही वह रास्तेमें मार डाला गया। उमर कमजोर दिलो-दिमागका आदमी था। शासन वस्तुतः मामा मुहम्मद रजावेक तुगाईके हाथमें था। उमरके शासनकालमें खोकन्द एक बहुत बड़ा व्यापार-केंद्र बन गया। इसीके समय उरातिप्पा भी खोकन्दके हाथमें चला आया। यही नहीं, तुर्किस्तान-शहरको भी उसने छीन लिया और वहांके अन्तिम कजाक खान तोगाईने बुखाराम भागकर शरण ली, और वही मारा गया। मुहम्मद रजव करारा बुखारामें भागकर ठहरा हुआ था। आलम खानके बाद वह खोकन्द लौटा। उस समय मामा मुहम्मद रजावेक और उसके मित्र सेनापति कितकी कराकल्पक

में वैमनस्य हो उठा। एक दिन महलमें भोजनके लिये निमन्त्रित मुहम्मद रजाको पकड़कर जेल में डालकर मार डाला गया। इसपर कितकीको भी वोटी-वोटी करके मरवाकर उसकी सपत्ति जब्त कर ली। मुहम्मद रजव कराराज अब खोकन्दका राज्यपाल तथा दरबारमें बहुत प्रभावशाली अमीर बन गया।

उमरने अपने दूत भेजकर रुसियोंको खोकन्दमें अपने कारवा भेजनेके लिये कहा, और यह भी वचन दिया, कि यदि हमारी ओरके आवे रास्तेमें कारवाको लूटा गया, तो मैं व्यापारियोंकी क्षतिपूर्ति दूंगा। इसपर कारवा आने-जाने लगा। किजिलजारमें एक खोकन्दी दूतका रुसी सैनिकसे झगडा हो गया, जिसे रुसी सिपाहीने मार डाला। रुसियोंने एक हजार तिला (पांच हजार गिन्नी) जुमानाके रूपमें दूतके मारे जानेके लिये दिया। १८१३-१४ ई० में कर्नल नजारोफने खोकन्दकी यात्रा की, और रुसी सीमातपर खोकन्दी दूतके मारे जानेके लिये अपसोस करते हुये बहुत समझाया। नजारोफ रक्षक सैनिकों और बीस हजार ख्वलके मालके साथ गया था। उसे महलके वगीचेमें ठहराया गया, आदमियों के लिये सफेद रोटी, चावल, चाय, खरबूजा आदि खानकी ओरमें मुक्त दिया जाता था, और जान-वरोको घास-चारा भी। बारह दिनकी प्रतीक्षाके बाद नजारोफसे खानने मुलाकात की। नजारोफ घोड़ेपर सवार था, लेकिन उसके कसाक पैदल थे। महलके पास जाकर नजारोफ घोड़ेसे उतर गया। रुसियोंको देखनेके लिये सड़को और मकानोंकी छतोंपर तमाशवीनोंकी भीड़ थी। खान दर्शन देनेके लिये झरोखेपर बैठा था। नजारोफसे कहा गया, कि जैसे अपने बादशाहको सलाम करते हो, वैसे ही यहा भी करो। इसपर नजारोफने अपने सिरको नगा कर दिया, और सिरपर जारके पत्रको रखकर खानको प्रदान किया। खानकी ओरसे रुसी दूतको एक भोज दिया गया, जिसमें गुलाबी रंगका चावल और घोड़ेका मांस भी सम्मिलित था। नजारोफने घोड़ेके मांसको धर्म-विरुद्ध कहकर नहीं खाया। उसके साथी कसाकोंको खलअत और इनाम देकर लौटा दिया गया, लेकिन नजारोफको रोककर उससे मांग की गई—या तो हमारे दूतकी मीतका हरजाना दो, या मुसलमान बनो, नहीं तो तुम्हें फासीपर चढ़ाया जायगा। यह धमकी वस्तुतः दिखावटी थी। नजारोफके साथ खानका वस्ताव बहुत अच्छा था, कितने ही भोजनोंमें निमन्त्रित कर उसकी नाच-गानेसे खातिर की जाती थी। सिर्फ यही खयाल रक्खा जाता था, कि वह भागने न पाये। खान उसे अपने साथ शिकारमें मरगितान ले गया, जहापर काफिर होनेके कारण नजारोफको मुसलमानोंने पत्थर भी मारा। कुछ समय बाद खानने नजारोफको छोड़ दिया, क्योंकि रुसका व्यापार बड़े नफे की चीज थी। उमर १८२२ ई० में अपनी मीत मरा, या शायद भाई मुहम्मद अलीने उसे मार डाला। उसके सिक्कोपर, “सैयद मुहम्मद उमर सुल्तान” और “मुहम्मद खान सैयद उमर” अंकित रहता है।

## ८ मुहम्मदअली, मदली खान, उमर-पुत्र (१८२२-४२ ई०)

उमरके उत्तराधिकारी मदलीके बारेमें नहीं कहा जा सकता, कि वह उसका भाई था या बेटा। इसने अपने कई सवधियोंको देशसे निकाल दिया, जिसमें उसके एक भाई महमूद सुल्तानने शहरसब्ज (किश) जाकर वहाकी राजकुमारीसे शादी की, पीछे बुखाराके अमीर नसखलाका कृपापात्र बन खोजन्द और कुरमीतानका राज्यपाल भी रहा। शायद महमूदको शरण देनेके लिये बुखारासे मदलीका १८२५ ई० में झगडा हो गया, और उसी समय जीजकको बुखारियोंने ले लिया। १८२६ ई० में काझगर-राजवंशके जहागीर खोजाने चीनियोंके विरुद्ध असफल विद्रोह कर दिया, फिर किर्गिजोंमें भी झगडा कर लिया और अन्तमें भागकर मदलीके हाथमें पडा। मदलीने उसे कुछ दिनोंतक नजरबन्द-सा रक्खा, फिर वह भागकर किर्गिजोंमें चला गया। जहागीरने उन्हें चीनपर आक्रमण करनेके लिये राजी किया। चीनी काफिरोका जूआ मुसलमानों के ऊपर रहे, इमे पूर्वो-तुर्किस्तानके अमीर, जहागीर खोजा और खुद मदली कैसे पसंद करते? मदलीने मुसलमानोंके साथ बुरे वस्ताव करनेका वहाना लेकर एकाएक आक्रमण करके बहुतसे चीनियोंको मार डाला। जहागीर खोजा काझगरपर चढ़ा और मदली खानने सारे चीनी-तुर्किस्तानको

दवा लिया। मदली गाजीका झडा अब यारकन्द, अक्सू और खोतनपर फहराने लगा। जहागीर खोजा इसे क्यों पसंद करने लगा? लेकिन इसी बीच चीनी सेना आ गई, मदली भाग गया, और जहागीर खोजा पकड़कर पेकिङ्ग भेजा गया, जहां उसे फासी मिली। चीनियोंने मदलीसे सुलह करके उसे यह अधिकार दिया, कि उसका प्रतिनिधि काश्गरके मुसलमानोंके धर्मकी देख-भाल और चीनको वहांके शासनमें सहायता करेगा।

१८२८-२९ ई० में इतिहासकार मिर्जा शम्स खोकन्दमें था, जब कि जहागीर खोजाका भाई यूसुफ खोजा भी वहीपर रहता था। यूसुफ खोजाके भागनेपर मदलीने शाही खलअत और पच्चीस हजार आदमी देकर उसे काश्गरके लिये रवाना किया। वह खुद भी ओश तक साथ-साथ गया। ओशसे बीस दिनके रास्तेपर चीनी सीमातकी फौजी चौकी थी, जिसमें एक सौ पचास सैनिक रहते थे। लेकिन खोजाको भी विकट आदमियोंसे मुकाबिला पडा था। चीनियोंको निष्ठुर शत्रुओंसे दयाकी आशा कहा हो सकती थी? उन्होंने बढ़ियासे बढ़िया कपड़े पहन, खूब शराब पी और इसके बाद बरूदकी मेगजीनमें आग लगा दी। खोजन्दियोंने पीछे वहां पचास साठ जली हुई लाशें पाईं। केवल पद्रह जीते बची मिले, जिन्हें खोजाने मदलीके पास भेज दिया। पद्रह वर्स्त (२३ फर्सख) और आगे बढ़नेपर पाच सौ चीनी सैनिकोंकी छावनी मिली, जिसके पास ही ७८०० सेना पड़ी थी। उनके साथ लडाई हुई, जिसमें खोकन्दी जीते। चीनी सैनिकोंमेंसे एक-एक या तो मारे गये, या उन्होंने आत्महत्या कर ली। अब यूसुफ खोजा मूसी और लियागरके रास्ते काश्गरसे दस वर्स्त (१३ फर्सख) पर पहुंचा। वहापर उस समय काले और सफेद खोजोका झगडा चल रहा था। सफेद खोजे यूसुफके पक्षपाती थे और काले चीनियोंके। सफेद खोजोने शहरसे निकलकर गाजियोका विजयीके तौरपर स्वागत करके बाजे-गाजेंसे शहरके भीतर प्रवेश कराया। इस समय काले खोजोका नेता इसहाक बेक अपने तेरह सौ साथियोंके साथ गुलबागके किलेमें था। यूसुफ स्वयं एक सौ पचास वर्स्त (८३ फर्सख) आगे बढ़कर यगीहिसार पहुंचा, फिर वहांसे यारकन्द जा अपने पुत्र मिर्जा शम्सको शासक बना काश्गर भी छोड़कर लौट गया। राजधानी काश्गर छोड़नेके चार महीने बाद खबर आई, कि लाखों चीनी सेना फैजावाद पहुंच गई हैं। इसपर मिर्जा शम्स अपने बहुमूल्य खजानेको साठ सड़कोंमें बन्द करके भागना चाहा, लेकिन काले खोजोने उसे लूट लिया, खोकन्दी चीनी-बादके सामने बड़ी तेजीसे भागने लगे। उनके साथ उनके पक्षपाती सफेद खोजा भी भगे, जिनकी सख्या पचाससे साठ हजार तक बतलाई जाती है—स्त्री-पुरुष-बच्चे सभी पैदल, घोड़े और गदहोपर सवार होकर खोकन्दकी ओर भाग रहे थे। उस समय मौसिम बहुत ठंडा था, त्यान्शानके पहाड़ोंमें बर्फ और सर्दिके मारे उनमेंसे बहुत तो रास्तेमें मर गये। पाच महीने बाद यूसुफ भी खोकन्दमें मर गया। पूर्वी-तुर्किस्तानसे भागे मुसलमान शरणार्थियोंके लिये मदली खानने शत्रीखाना नगर बसाया, तथा खोकन्दके नीचे सिर-दरियापर भी उनके बसनेका प्रबन्ध किर दिया।

खोकन्द बहुत दिनों तक चीनको नाराज नहीं रख सकता था। रूस अभी उसकी सीमासे बहुत दूर था, इसलिये उसकी अधीनता स्वीकार करके चीनको टरकाया नहीं जा सकता था। १८३१ ई० में खोकन्द और चीनके बीच संधि हुई, जिसके अनुसार “खोकन्दको अक्सू, ओश, तुफान, काश्गर, यगी हिसार, यारकन्द और खोतनमें आयात किये जानेवाले सभी विदेशी मालपर कर पानेका अधिकार मिला, और कर उगाहनेके लिये इन सभी नगरोंमें अकसकाल (शब्दार्थ श्वेत दाढ़ी, अफसर) रखने तथा मुसलमानोंकी रक्षा करनेका दायित्व मिला। इसके बदलेमें खोकन्दको चीनकी ओरसे यह सेवा करनी थी, कि खोजा राज्यको छोड़ने न पाये, और यदि कोई छोड़ना चाहे, तो उसे दंड दे।” इससे मालूम होगा, कि १९ वीं शताब्दीके पूर्वार्धके समाप्त होने समय काश्गरपर खोकन्दियोंका काफी प्रभाव था।

उत्तरके कजाक विशेषकर महा-ओर्दूवाले अधिक सख्यामें इसी समय खोकन्दके भीतर भागे। इसपर सीमाके लिये रूसियोंके साथ खोकन्दका झगडा हो गया।

रूसियोंसे झगडा—आपसी झगडेको बातचीतसे तै करनेके लिये १८२७ या १८२८ ई०में ओरेनबुर्गसे रूसी दूत भेजे गये, जो अपने साथ खानके लिये भेंटके तौरपर कितने ही बड़े-बड़े



दर्पण, एक भारी वडी, कुछ वट्टकें और पिस्तौल ले आये थे। वातचीतके बाद निश्चय हुआ, कि कोक्सू नदी नीमा रहे, जिसके उत्तरकी भूमि रुसियोंकी और दक्षिणकी खोकन्दकी। सीमाकी पहि-  
चानके लिये वहा चिह्न खड़े किये गये, लेकिन रुसियोंने इस समझौतेको देरतक नहीं माना, और अपनी नीमामे दक्षिणमें भी किले बनाये। इसके विरोधमें खानने एक हाथी तथा कुछ चीनी गुलामोंकी भेंटके साथ अपना दूत नीचे राजधानी पीनरवुर्गमें भेजा।

यह ऐसा समय था, जिस वक्त अंग्रेजों और रुसियोंके सबब अच्छे नहीं थे, और मध्य-एशियामें अपने प्रभाव को बढ़ानेके लिये अंग्रेज हर तरहकी कोशिश कर रहे थे। इसके लिये उन्होंने कर्नल स्टुअर्टको बुखारा भेजा और कप्तान कोनोली खीवाके खानके पास पहुंचा। कोनोलीको हुक्म दिया गया था, कि खीवामे वह खोकन्द जाये और दोनों राज्योंके रास्तेकी जाच-पड़ताल करे। कोनोली अन्तून-कला, अकमन्जिद, अचकियान हों छ सप्ताहके बाद खोकन्द पहुंचा। इसकी जवर्दस्तीसे मदली जला-भुना बैठा था, इसलिये उसे अपनी तरफ करना कोनोलीके लिये मुश्किल नहीं हुआ। कोनोली बहुत मूल्यवान् वन्दूके और दूसरे हथियार कच्चीरी दुशाले तथा कीमती भेंटे, खान और प्रभावशाली दरबारियोंमें बांटे। अपने दबदबेको दिखलानेके लिये वह अस्सी नौकरोके साथ यात्रा कर रहा था, और उसके पास बहुत भारी परिमाणमें अमबाव था। जिस-जिस डलकेसे वह गुजरा, वहाके मुखियों और नरकारी अफसरोको उसने दिल खोलकर इनाम और भेंटे दी। यह कहनेकी अवश्यकता नहीं, कि यह नारा "परमुडे फ्लाहार" भारतके मत्ये हो रहा था। कोनोलीकी इस मुक्तहस्ताके कारण खोकन्दमें उसके बहुतने समर्थक हो गये थे। लौटते वक्त अमीरने उसे मार्ग-पत्र दिया। लेकिन जीजक में बुखाराका अमीर कोनोलीने बड़े हल्ले तीरसे पेश आया, जिसमे उसे पता लग गया होगा, कि खीवा और खोकन्दकी सफलताके बाद आगे उसे कैसे दिन देखने पड़ेंगे।

१८३९ ई०में रुसियों और चीनियोंके दबावके कारण मदलीने बुखाराके प्रभुत्वको स्वीकार कर लिया था, लेकिन कोनोलीकी चाटुकारितामे उसका दिमाग आसमानपर पहुंच गया और उसने बुखारासे झगडा कर लिया। कोनोलीने दोनों खानोंमें थोड़े दिनोंके लिये समझौता करानेमें सफलता पाई। अंग्रेज रुमके प्रभावको आगे बढ़नेमे रोकनेके लिये यही चाहने थे, कि खीवा-बुखारा-खोकन्द मेलते रहे। कोनोलीको खोकन्दके मित्रोंने बुखारा जानेसे मना किया, लेकिन हिंदुस्तानके मालिकोका हुक्म था, इसलिये वह बुखारा गया, और वहा कर्नल स्टुअर्टके साथ कैसे उसे अपने प्राणोंको खोना पडा, यह आगे बतलायेंगे।

अपनी तहणाईके जमानेमें मदली नैतिक-जीवनको अधिक पसंद करता था। उसने कोहिस्तानकी ओर अपनी नीमाको बढ़ाया—करातगिन जीता, कूल्याव, दरवाज और गुगनानने उसकी अधीनता स्वीकार की। लेकिन १८४० ई०के करीब उसके स्वभावमें भारी परिवर्तन हुआ। अब वह मदिरा और मदिरैक्षणके मेवनमें दिन-रात डूबा रहने लगा, जिसके कारण शासन-केन्द्र कमजोर हो चला। ताशकन्दके कुशवेगी-लङ्कर काजी कलिया, महासेनापति ईमा खोजा आदिने खानके खिलाफ पड़्यत्र शुरू किया और चाहा, कि उसको हटाकर आलम-गुय शेरअली, या नरबुतेके भाई हाजी वी पुत्र, मुराद वीको गद्दीपर बैठाये। शेरअली बहुत समयमे भागकर किपचक-कजाकोमें रहता था, और मुरादवी खीवामें, जहा अल्ला कुलगीखाने उसे अपनी लडकी व्याह दी थी। पड़्यत्रकारियोंने मदलीके विरुद्ध बुखाराके अमीर नमल्लाको बुलाया। दूसरी बारके निमंत्रणपर अग्रेल १८४२ ई० में वह अठारह हजार मेना ले खोकन्दमे पदह-मौलह मौलपर पहुंचा। डरके मारे मदलीने अपने पुत्र मोहम्मद अमीन और कुशवेगी लङ्कर (सेनापति) काजी कलियनको भेजकर अधीनता स्वीकार करते हुये नमल्लाके नाममे खुतबा और निक्का चलाता मजूर किया। नमल्लाने मदलीके पुत्र और काजी कलियानको लांटाकर कुशवेगीमे एकान्तमें पूछा, तो मालूम हुआ, कि खोकन्दके लोग आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार हैं। इसपर नमल्लाके पास जानेका क्या परिणाम होता, यह मदलीको मालूम था, इसलिये उसने बहुमूल्य वस्तुओं और खजानेको मो गाडियोंपर लदवाकर हजार आदमियोंके साथ नमगानका रास्ता लिया। राजधानीके बडों द्वारा निमंत्रित हो नमल्ला बड़े सज-वजके साथ खोकन्द नगरमें प्रविष्ट हुआ और नागरिकोंमें भय संचार तथा अपने नैनिकोंको मनुष्य करनेके लिये नगरको चार घंटे लूटनेकी

आज्ञा दी । मुल्लोकी किताब तक भी लुटे बिना नही रही, वच्चो और स्त्रियोपर अमानुषिक अत्याचार हुये । सोना-चादी छोडकर बाकी लुटे मालको दूसरे दिन खोकन्दके नागरिकोमे बेच दिया गया ।

उधर मदलीकी गाडियोको लेकर उसके अनुयायी चम्पत हो गये, और उसके पास सिर्फ तीन सेवक रह गये । मा, बीवियो, बेटो और भाईके साथ आत्म-समर्पण करनेके लिये वह आ रहा था, इसी समय रास्तेमें पकड लिया गया । चालीस गाडियोपर उसके हरम (अन्त पुर) को सवार कर बुखारा रवाना कर नसल्ला अब मदलीके मरवानेकी सोच रहा था । इतना सब हो जानेके बाद कुशवेगी, काजीकला और एरन्दिचकी आखे खुली और उन्होने खोकन्द-वशके किसी राजकुमारको अपने हाथकी कठपुतली बना अमीर नियुक्त करनेके लिये नसल्लासे कहा । इसपर बुखाराके काजीकलाने विरोध कर्त हुये कहा—“मदलीने अपनी सास या नानी (उमर खानकी विधवा) को शरीयतके विरुद्ध व्याहा, इसलिये इस काफिरको उसके परिवारके साथ मृत्युदंड मिलना चाहिये ।” नसल्लाने मदली, उसकी मा, भाई तथा ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद अमीनको परिपक्के सामने उपस्थित करके कत्ल करवाया । खोकन्दी अमीर और प्रभावशाली मुखिया पङ्कज करनेके लिये न रह जाये, इसलिये परिवार सहित उनमेसे ढाई सौ आदमियोको पकडकर बुखारा भेज दिया गया । खोकन्दके सारे राज्यमें नसल्लाके विजयकी घोषणा की गई । अमीर-बुखाराने छ सौ सैनिकोके साथ समरकन्दके राज्यपाल इब्राहीम दादखाको अपनी ओरसे खोकन्दका उपराज नियुक्त किया ।

## ९ शेरअली, हाजी बी-पुत्र (१८४२ ई०)

बुखारियोकी विजय देरतक नही रही । तीन ही महीने बाद खोकन्दियोने विद्रोह कर दिया, और शेरअलीको तख्तपर बैठानेके लिये किपचक-कजाकोको बुलाया, जिन्होने बुखारी-सैनिकोको मार डाला । इब्राहीम जान लेकर भागा, जिसपर नाराज होकर नसल्लाने उसे मरवा दिया । अब शेरअली खोकन्दकी गद्दीपर बैठा । नसल्ला फिर बीस हजार सेनाके साथ खोकन्दपर चढा । नसल्लाके हाथमें पडे खोकन्दियोमें मुसलमानकुल चूलाक (लुज) नामक एक व्यक्ति नसल्लाका विश्वासपात्र बन गया था । उसे खोकन्दके सैनिकोको समझानेके लिये भेजा गया, लेकिन वहा उसने उन्हें भडकाना शुरू किया और बुखारी अमीरोके नामसे जाली चिट्ठी भेजी, जिसे पढकर नसल्ला अपने अमीरोसे नाराज हो गया । इसी समय खीवावालीने बुखारापर चढाई की । नसल्लाको खबर मिली, कि वह हमारे बहुत-से आदमियोको पकड ले गये । इसपर नसल्ला दूसरे जामिनोको भी छोडकर बुखारा लौट गया ।

शेरअलीने मदलीकी लाशको निकलवाकर उसे बडे सम्मानके साथ दफनाया, मुल्लोने शवक्रिया कराई । शेरअलीको किपचक-कजाकोकी सहायतासे तख्त मिला था । इससे पहले खोकन्दमें सर्त (फारसी-भापी, ताजिक) बडा प्रभाव रखते थे । अब वहा किपचकोकी तूती बोलने लगी । उनका नेता यूसुफ भिंगवाशी खोकन्दका हाकिम (राज्यपाल) बना और मुसलमानकुल चूलाक अन्दिजानका । किपचको और सर्तोका झगडा उठ खडा हुआ । सर्तोका मुखिया शादी था, जिसपर खानका विश्वास था । उसने यूसुफ भिंगवाशीको मरवाकर उसके अनुयायियोको खत्म करनेका हुक्म दिलवाया । फिर मुसलमानकुलको खोकन्द आनेके लिये सदेश भेजा । मुसलमानकुलने यूसुफ भिंगवाशीके आदमियोको अपने पास जमा किया । शादीने कुछ हत्यारे भेजकर अन्दिजानमे चूलाकका काम खत्म कराना चाहा, लेकिन चूलाक बहुत चालाक निकला । उसने शादीके आदमियोको पकडकर मरवा दिया । इसके बाद किपचको (तुर्कों) और सर्तोका खुला युद्ध हुआ । सर्तोको हार खानी पडी । शादी मारा गया और उसका पृष्ठपोषक शेरअली खान किपचकोके हाथमे बन्दी बना । लेकिन किपचकोको तख्तके लिये दूसरा आदमी न मिला, इसलिये उन्होने शेरअलीको ही खान रहने दिया । यूसुफ भिंगवाशी और शादीके पदको भी मुसलमानकुलने अपने हाथमे रक्खा । चारो ओर किपचकोकी तूती बोलने लगी । सर्तोके दो नेता रहमतुल्ला और मुहम्मद करीमने शहरसब्ज जा आलम खाके पुत्र मुरादको तख्तके लिये तैयार किया । बुखाराने भी सेनाकी सहायता दी । १८४५ ई० मे जब मुसलमानकुल सेना-सहित किर्गिजोमे कर उगाहने गया हुआ था, उसी समय सर्तोने चढाई कर दी और उन्हें खोकन्द

शहरपर अधिकार करनेमें बहुत दिक्कत नहीं हुई। मुरादने अपनेको बुखाराके उपराज घोषित किया।

### १० मुराद, आलम-पुत्र (१८४२ ई०)

मुरादका शासन भी दृढ़ नहीं हो पाया, क्योंकि अमीर नसहल्लाके अत्याचारोंके कारण खोकन्दी उससे बहुत घृणा करते थे। इसीलिये मुसलमानकुलने फिर बड़ी आसानीसे खोकन्दपर अधिकार कर लिया। मुराद शायद मारा गया या भाग गया।

शेरअलीके पांच पुत्र थे, जिनमें सिरम्सक किपचक-खान तोस्तानजरकी पुत्री जारकिनका बेटा वाईस सालका था। उसका दूसरा पुत्र खुदायार मर्गिलानका बेटा तथा मुसलमानकुलका दामाद था। मुसलमानकुल सिरम्सकको पसंद नहीं करता था और उसे खुदायारकी मुहरसे पत्र भेज बुलाकर मरवा डाला। फिर अपने सोलह सालके दामादको खोकन्दकी गद्दीपर बैठाया। इसे कहनेकी अवश्यवता नहीं, कि राज्यकी सारी शक्ति चूलाकके हाथमें थी। इसी समय किपचक-दलके भीतर भी झगडा उठ खडा हुआ। खासकर ताशकन्दका राज्यपाल नूर मुहम्मद मुसलमान कुलसे ईर्ष्या करने लगा था। चूलाकके विरुद्ध १८५१ ई०में किया गया पहला पड़्यत्र विफल रहा। इसी समय खजानेसे भारी रकम गायब हो गई। खजाचीने उसे अपने मित्रों और नूर मुहम्मदमें भी बाटा था। जब मिगवाशी (वजीर) मुसलमानकुलने जवाब तलब किया, तो अपराधी अफसरोंने तलवार निकाल ली, फिर वह ताशकन्द भाग गये। मिगवाशीने ताशकन्दके राज्यपाल नूर मुहम्मदको-उन्हें समर्पण करने तथा खुद आनेके लिये लिखा। उसके इन्कार करनेपर मुसलमानकुल चालीस हजार सेना ले ताशकन्दके ऊपर चढा, लेकिन मर्गिलानके बेटेके विश्वासघात करनेसे उसे सफलता नहीं मिली। जून १८५२ ई० में उसने तीस हजार सेनाके साथ फिर चढाई की। उधर नूर मुहम्मदने भी पूरी तैयारी कर रक्खी थी, और आसपास के नगरोंमें अपने हाकिम नियुक्त कर दिये थे। इसलिये मिगवाशी मुसलमानकुलको नूर मुहम्मद नहीं, बल्कि अरोंसे भी लोहा लेना था। ताशकन्दपर जल्दी अधिकार न होते देख कुछ सेना वहा छोड मिगवाशी, ने तुर्किस्तानपर सेना भेजी, और स्वयं कुछ सेनाके साथ चिरची नदीके उद्गमके पास बने नियाजवेग किलेको सर करने गया। उसकी मनशा थी, कि नियाजवेगको लेकर ताशकन्दकी ओर पानी लाने-वाली नहरको तोड दिया जाय। नहर तोडनेमें सफल हो उमने ताशकन्दके उत्तर चिमकन्तके किलेको जाकर भी दखल कर लिया। इसी बीच ताशकन्दिनोंने छपा मारकर नियाजवेगमें छोडी सेनाको हरा नहरको फिर जारी कर दिया। वह ताशकन्दिनोंसे भिडनेके लिये लौट पडा, लेकिन युद्धके आरम्भमें ही खुदायारखा उसका साथ छोड दुश्मनोंमें जा मिला। खानके इस तरह हट जानेपर सेनामें भगदड मच गई। उनमेंसे कितने ही मारे गये, कितने ही चिरचिक नदीमें डूब मरे। मुसलमानकुल बड़ी मुश्किलने भागकर कराकिर्गिजोंमें पहुचा—उसकी मा कराकिर्गिजोंकी लडकी थी।

इस समय खोकन्दमें तीन राजनीतिक दल थे, जो शक्ति हथियानेके लिये दूसरेसे मिलकर या अलग हो बराबर प्रयत्न करते रहते थे। किपचकोंमें मुसलमानकुल और नूर मुहम्मदकी दो पार्टियां थी, तीसरी पार्टी थी सतोंकी। उक्त घटनाके दो महीने बाद सतोंने किपचकोंके विरुद्ध एक सफल पड़्यत्र किया। उतेनवी और दूसरे कितने ही किपचक नेता मारे गये, और उनका स्थान सतोंने लिया। खानने अपने भाई मुल्लावेकको नूर मुहम्मदकी जगह ताशकन्दका हाकिम (राज्यपाल) नियुक्त किया। खुदायारने किपचकोंको बहुत नाराज कर लिया था, इसलिये उसे हमेशा उनसे डर लगा रहता था। उसने अपने राज्यमें अकमस्जिद (पैरोव्स्की बन्दर)से खोकन्द और काज्गरको अलग करने-वाले पहाड़ोंतक सभी जगह किपचकोंको बल्लआम करनेका हुक्म दे दिया। किपचिक जहा भी, बाजारों, मडकों, गांवों या मैदानोंमें मिले, मारे गये। १८५३ ई०में बीस हजार किपचिकोंको इस तरह तलवारके घाट उतारा गया। खुदायारकी मा स्वयं किपचकानी थी, लेकिन उससे क्या? अपने किपचक मुख्य-मैनापनि सफर बीकी और भी सामत देकर मरवाया—पहले उसके हाथ-पैर तोड डाले गये, फिर उसके सरपर सीमेका इतना भारी भार रक्खा गया, कि आखें अपने गोलकसे बाहर निकल आईं। फिर उसके शरीरपर लेई लपेटा गई, और ऊपरसे कडकड़ाता हुआ तेल डाला गया। अन्तमें उसकी बाँटी-बाँटी

काट गई। इसके बाद मुसलमानकुल भी गिरफ्तार करके खोकन्द लाया गया। एक खुली जगहमें सिरपर लबी टोपी पहिना उसे जजीरोमें जकड़-बन्द करके लकड़ीके ऊँचे चबूतरेपर रक्खा गया। तीन दिन तक उसी जगह रखकर उसके सामने छ सौ कपचक जबह किये गये, फिर उसे फासी दे दी गई। खोकन्दको दो बार बुखारियोसे बचानेवाले इस नीतिकुशल प्रसिद्ध उज्बेकके जीवनका इस प्रकार अन्त हुआ।

कपचको (उज्बेको) को इस तरह दबा देनेके बाद अब सतों और उसके नेता कासिम तथा मिर्जा अहमदका बोलाबाला हुआ। उनका मल्लाबेकसे झगडा हो गया। इसपर उससे ताशकन्दकी राज्यपालता छीन ली गई, और उसका पद मिर्जा अहमदको मिला। मल्ला भागकर बुखारा चला गया।

१८५७ ई० में नये राज्यपाल मिर्जा अहमदने चिमकन्द और औलियाआताके कजाकोको अपना दुश्मन बना लिया, लेकिन पीछे अपनी कमजोरी देखकर उसने उनकी मागोको पूरा करके सुलह कर ली। उधर मल्लाने भी खोकन्दमे लौटकर कपचको (कजाकों) और कराकिर्गिजोको मिलाकर अपनी पार्टी बनाई। उज्बेक-नेता आलमकुल उसका सहायक था।

## १२. मल्ला खान, शेरअली-पुत्र (१८५७-५९ ई०)

विद्रोहियोने आक्रमण किया। समचीके युद्धमें हारकर खुदायार बुखारा भाग गया और उसकी जगह मल्ला खान घोषित किया गया।

रूसी अभियान—१८१४ ई०में खोकन्दियोने जब तुर्किस्तान शहरको जीता, तबसे वह इस इलाकेके कजाकोसे कर मागने लगे। लेकिन निम्न सिर-दरियाके कजाक अपनेको रूसकी प्रजा कहते थे, इसलिये रूसने खोकन्दियोका विरोध किया। खोकन्दियोने अपनेको मजबूत करनेके लिये तुर्किस्तान-शहरसे नीचे यानी कुर्गान, जूलेक, कूनिशकुर्गान, ताशकुर्गान, चिमकुर्गान आदि कई स्थानोमे अपने गढ़ बनाये, जिनमेंसे सबसे महत्वका था अकमस्जिदका गढ़, जिसे खोकन्दियोने १८१७ ई०में पहलेपहल सिरनदीके बायें तटपर बनाया था, लेकिन अगले ही साल उसे दाहिने तटपर परिवर्तित कर दिया। अकमस्जिदमे खोकन्दियोका बेक (बड़ा हाकिम) रहता था, जिसके अधीन निम्न-सिरके दूसरे किले भी थे। बेक स्वयं ताशकन्दके उपराजके अधीन माना जाता था। गढ़ोको बना मजबूत हो खोकन्दियोने कजाकोपर भारी कर लगाये। प्रति किवित्का (तम्बू या परिवार) सालाना चार भेडे, जिसका तिहाई कर उगाहनेवाले (जकातची) को देना पड़ता। इसके अतिरिक्त लकड़ी-कोयले-भुसपर भी प्रति किवित्का चौबीस घोड़ा कोयला, चार बैल सखसौल (फरास ईधन), हजार डूला नरकट देना पड़ता था। प्रत्येक किवित्काका एक आदमी अपने खर्चपर वेगार करनेके लिये जाता था। ये वेगारू खोकन्दियोके बगीचोमे काम करते, किलेकी मरम्मत या भीतरके अस्तवलोकी सफाई आदि करनेके लिये सालमे एक बार जाते। लड़नेके समय हरएक हट्टे-कट्टे कजाकको अपने घोडे और हथियारके साथ सिपाही बनना पड़ता था। खोकन्दी कजाकोपर संचमुच ही बहुत पाशविक अत्याचार करते थे—बिना कलीम (भेंट) दिये वह कजाक औलो (गावो) से औरते ले जाते, और शरीयतके विरुद्ध उनकी बेइज्जती करते।

निम्न सिर-दरियापर खोकन्दियोके बहुत सैनिक नहीं थे, लेकिन तब भी उनकी घाक जमी हुई थी। अकमस्जिदमे सबसे बड़ा किला था, जहापर पचास सिपाही रहते थे। उनके अतिरिक्त वहा सौ बुखारी और खोकन्दी व्यापारी बसे हुये थे। कूनिशकुर्गानके गढ़में पचीस सिपाही, खोशकुर्गानमें चार, जूलेक (१८५३ ई०) में चालीस, और यानीकुर्गानकी आयताकार चार-पाच फुट ऊँची दीवारोके भीतर दो या तीन खोकन्दी सैनिक रहते थे।

अपनी प्रजा कजाकोके साथ ऐसा बरताव होते रूसी देख नहीं सकते थे। इसलिये १८४६ ई० मे कप्तान शूलजको सिरके मुहानेकी पडतालकर वहा किला बनानेके लिये भेजा गया। अराल्स्क के नामसे भशहूर राइम्स्क किलेकी नींव अगले साल पड़ी। १८५० ई० में कजाकोका मन विगडते देख खोकन्दियोने उन पर आक्रमण कर दिया, और पहली बार वह उनके छब्बीस हजार तथा दूसरी बार तीस हजार पशु और १८५१ ई० में पचहत्तर हजार पशु छीन ले गये। इसपर अराल्स्कके

रूसी कमांडरने कौशकुर्गानपर अधिकार कर लिया। रूसी आगे बढ़नेके लिये निश्चय कर चुके थे। अराल समुद्रमें गिरनेवाली सिर नदी हमारे यहाँ की गंगा जैसी बड़ी नदी है। उसकी धाराको सैनिक यातायातके लिये इस्तेमाल किया जा सकता था। इसके लिये स्वीडनमें बने दो स्टीमरोंको पुर्ज-पुर्ज अलग करके अराल समुद्रमें पहुँचा जोड़कर मई १८५२ ई०में तैयार कर लिया गया। उसी सालकी गर्मियोंमें कर्नल व्लारम्वेर्गने अकमस्जिद तक सिर दरियाकी सर्वे की, और वहाँसे फौजी चौकी हटानेके लिये खोकन्दियोंको कहा। कर्नलके साथ चार सौ सैनिक और दो नौपाँड़ी तापें अकमस्जिद आईं। टोकनेपर कर्नलने जवाब दिया, कि हम रूसी तटपर चल रहे हैं, और तुम सिर नदीके दाहिने किनारेपर अपने किलेको नहीं रख सकते। किलेके पास पहुँचनेपर खोकन्दियोंने कर्नलसे चार दिनकी मोहलत माँगी। उन्हें आशा थी, कि इसी बीच कुमक आ जायेगी, लेकिन वह नहीं आई। दिन पूरा होनेपर रूसियोंने ग्रेनेड (हथ-बम) फेंके। खोकन्दियोंने बन्दूकों और दीवारोंपर लगी तोपोंसे जवाब दिया। रूसियोंने उनकी तोपें जल्दी ही चुप कर दी, लकड़ी-का फाटक तोड़ दिया, लेकिन किलेकी दीवार मजबूत साबित हुई। रूसियोंने भीतर पहुँचकर आग लगा दी। इस लड़ाईमें पंद्रह रूसी मारे गये और पचहत्तर घायल हुये। लौटते समय उन्होंने कूनिशकुर्गान, चिमकुर्गान और कौशकुर्गानकी चौकियोंको भी नष्ट कर दिया।

१८५३ ई०में रूसियोंका अभियान और भी बड़ी सेनाके साथ हुआ, जिसमें २१३८ सैनिक, २४४२ घोड़े, २०३८ उट, और २२८० बैल, बारह तोपें और एक चलता-फिरता लकड़ीका पुल था। अरालस्कके किलेकी छोटनेसे पहले ही रास्तेके चारेकी रक्षाके लिये अबकी गर्मियोंमें कजाकोंको वहाँ डेरान डालनेका हुक्म दे दिया गया था। यात्रा बहुत रक्षित तौरसे होने लगी, मदद करनेके लिये स्टीमर "पेरोव्स्की" नदीमें साथ-साथ चल रहा था। कराउजियक होते २ जुलाईको रूसी सैनिक अकमस्जिद पहुँचे। इस बीचमें खोकन्दियोंने किलेको काफी मजबूत कर लिया था। उसके चारों तरफ गहरी खाई खोद दी थी, महीने भरकी रसदके साथ तीन सौ खोकन्दी सैनिक वहाँ तैनात थे। दीवारोंपर उन्होंने तीन तोपें भी लगा रखी थी। लेकिन रूसी सेना आँर तोपोंके सामने वह कितने दिन तक ठहरते? खोकन्दियोंने आत्मसमर्पण करनेके लिये पंद्रह दिनकी मुहलत चाही। इसी बीच तीन दिनोंके बाद एक सैनिक टुकड़ी और आगे ताशकन्दकी ओर भेजी गई। जूलेके सैनिक भाग गये और रूसी वहाँके किलेको ध्वस्त कर बीस तोपों और बहुत-से गोला-बारूदके साथ अकमस्जिद लौट गये। अकमस्जिदवालोंको आनाकानी करते देख बारूदकी सुरगसे दीवारके एक भागको उड़ा दिया गया, किलेदार मुहम्मदअली अपने ढाई सौ आदमियोंके साथ मारा गया। रूसियोंके हाथमें थोड़ेकी पूछोवाले दो झड़े, दो भालेवाले झड़े, दो कासेकी तीपें, ६६ छोटी और अधिकतर टूटी-फूटी तोपें, १५० तलवारें और दो कवच हाथ आये। रूसियोंने कजालाका ऊपरी धारपर पहला किला, कर्मकचीपर दूसरा, कूनिशकुर्गानमें तीसरा किला बनाया, और अकमस्जिदका नाम बदलकर पेरोव्स्की कर दिया।

रूसके इस खतरनाक अभियानके समय खोकन्दियोंमें घोर गृहयुद्ध चल रहा था। १८५३ ई० के शरदमें मवदान खोजाके नेतृत्वमें ७००० सेना ताशकन्दसे अकमस्जिदकी ओर भेजी गई, जिनके मुकाबिलेके लिये दो तोपें ले २७५ रूसी सैनिक गये, जो बड़ी बुरी तौरसे पिटे और बानवे ऊँटोंपर घायलोंको लिये रातको १९३ लाशें पीछे छोड़ भाग आये। जाड़ा आनेपर फिर अभियान शुरू हुआ। १८ दिसबरको १२-१३ हजार सैनिकों और सत्रह पीतलकी तोपोंके साथ खोकन्दियोंने आकर पेरोव्स्कीके सामने मुकाबिला किया। नवीन और प्राचीन हथियारोंका मुकाबिला क्या? दो हजार खोकन्दी मारे गये, जब कि रूसी अठारह हत और उन्चास आहत हुये।

अब तैयारी करना और आगे बढ़ना जरूरी था रूसी हथियारोंका काम हो गया। बड़े परिश्रमके साथ १८५४ ई०में फिर रूसियोंके विरुद्ध खोकन्दियोंने भी तैयारी की। तुर्किस्तानमें तोप डालनेवाले कारीगर आये गये। ताशकन्दके वेकने लोगोंके घरोंसे सारे पीतलके वर्तन ले लिये। उधर रूसी जनरल पेरोव्स्कीने अकमस्जिदके किलेको और मजबूत किया, और कमजोर अतएव वेकार समझकर किला नम्बर दोको छोड़ दिया। इसी समय उनपर बुखारावालोंने आक्रमण

कर दिया था, इसलिये खोकन्दी नहीं आये। उन्होंने खीवाको भी अपनी ओर मिलानेकी कोशिश की, लेकिन काफ़ीरोंकी चपतपर चपत खाकर भी मध्य-एशियाके खानोंको होश नहीं आया था, कि वह एक हो जायें।

यह मालूम ही है, कि मल्ला खानके गद्दी सभालते समय खुदायार खान भागकर बुखारा चला गया था। अमीर नसरुल्लाने पहले उसे समरकन्दमें फिर जीजकमें रक्खा। खुदायारको अपना खर्च चलानेके लिये माके भेजे पैसेसे व्यापार करना पड़ता था। दो सालके शासनके बाद उज्वेक (किपचक) अमीरोंने मल्ला खानको मार डाला। बड़ा प्रभावशाली अमीर आलमकुल अन्दिजानका वेग नियुक्त हुआ था। उसकी अनुपस्थितिका फायदा उठाकर पड़्यत्रियोने महलमें घुसकर मल्ला खानको सोतेमें मार डाला—पड़्यत्रियोका नेता शादमान खोजा था।

### १३ शाह मुराद, सरिन्सक-पुत्र (१८५९ ई०)

खुदायारको भगा पड़्यत्रियोने पंद्रह सालके लड़के शाह मुरादको गद्दीपर <sup>ठि</sup>ठाया। निहत्त मल्ला खानका यह भतीजा था। मल्लाखान का पुत्र सैयद सुल्तान भागकर अन्दिजानके स्वामी आलमकुलकी शरणमें गया, और ऊपरसे शाहमुरादकी भक्तिका दिखावा किया। खोकन्दके भीतर पाटियोंका सघप चल रहा ही था। तुर्किस्तानके वेग खनायत शाहने खुदायार खाको जीजकसे बुलाया। ताशकन्द उसके हाथमें चला गया। शाहमुराद सेनाके साथ आया, लेकिन एकतीस दिनके मुहासिरेके बाद खाली हाथ लौट रहा था, इसी बीच आलमकुलने अन्दिजानसे आकर चार पड़्यत्रियोको मरवा डाला। खुदायार फिर गद्दीपर बिठाया गया, और आलमकुल उसका अभिभावक बना। खुदायारने भागती हुई सेनाका पीछा करके पहले खोजन्द (आधुनिक लेनिनाबाद) और फिर खोकन्द ले लिया। आलमकुल मर्गिलानके पीछेके पहाड़ोमें भाग गया। खुदायारने शाहमुरादको मार डाला।

### खुदायार पुन (१८५९ ई०)

इस समय खोकन्दमें दो दलोंमें खूनी सघर्ष चल रहा था। सत और नगरनिवासी खुदायार के समर्थक थे और किपचक (उज्वेक और कराकल्पक) आलमकुलके दोनों दलोंमें सेना ही नहीं, बल्कि नागरिक भी मौका पाते एक दूसरेके ऊपर टूट पड़ते। उज्वेक दल अपने तीन उम्मीदवारों—शाहख्व, सादिक वेग और हाजीवेगमें बंटा हुआ था। आलमकुलने तीनोंको पकड़कर ओश नगरमें कत्ल करवा डाला, जहाँ ही तख्त-सुलेमान पहाड़की वगलमें तीनों की कब्रें हैं। इसके बाद आलमकुलने सुल्तान सईदको खान घोषित किया। मर्गिलान और अन्दिजानपर नये खानका अधिकार रहा। खुदायारकी सेना वहाँ दो बार हारी, इसपर खुदायारने बुखाराके अमीर मुजफ्फर खासे मदद मागी। मुजफ्फरके आनेपर आलमकुल कराकुल्जाकी पहाड़ियोंमें हट गया। इसी बीच खुदायारसे मुजफ्फरका झगडा हो गया। आलमकुलको खुश करनेके लिये सोना मढी छड़ी, एक टोपी, एक सुनहला कमरबन्द और एक बहुत ही सुन्दर हस्तलिखित कुरान भेजकर वह बुखारा लौट गया। बुखाराके पीठपर न रहनेपर खुदायार कमजोर हो गया। आलमकुलने आकर खोकन्दपर आसानीसे अधिकार कर लिया और खुदायार फिर अन्तर्वेदकी ओर भागा।

### १४. सैयद सुल्तान, मल्ला-पुत्र (१८५९-६५ ई०)

यह नाम का ही खान था, सारी ताकत आलमकुलके हाथमें थी। अपने विरोधियोंपर आलमकुलने खूब हाथ साफ किया, और चार हजार आदमियोंको मरवा डाला। लोगोंमें असतोष पैदा होना ही था, अब उनकी नजर जीजकमें बैठे खुदायारपर थी।

रूसियोंसे छेड़छाड़—१८५९ ई० में ओरेनबुर्गके राज्यपालकी रायमें पेरोंव्स्कीका किला सुरक्षित नहीं था, इसलिये रूसियोंने जूलेक किलेपर अधिकार करके दो साल बाद १८५१ ई० में वहाँ एक मजबूत किला बनाया। उन्होंने यानीकुर्गानके किलेको भी ध्वस्त कर दिया। निम्न सिर-दरियाके कजाक रूसी प्रजा थे, किन्तु मव्य सिरके कजाक खोकन्दियोंके हाथमें थे। रूसियोंने आगे

बढते खोकन्दियोंके तोकमक, पिशपेक आदि किलोपर अधिकार कर लिया। अब उन्होंने खोकन्दकी भूमिपर दो तरफसे प्रहारकी योजना बनाई। एक सेना औलियाआता या तलसपर उत्तरकी ओरसे चढ़ी और दूसरी पश्चिमसे तुर्किस्तान शहर (यस्सी) पर। इसी समय पो न्दमें विद्रोह हो गया और पश्चिमी युरोपमें युद्धकी आशका बढ गई थी, इसलिये खोकन्दपर चढ़ाईकी योजना १८६४ ई० में स्थगित कर दी गई। तो भी कराताउ और बोरोलदाईताउकी पहाडियोंके खोकन्दी किले एकके बाद एक रूसी लेते गये। तुर्किस्तान शहर-और औलियाआताके रास्तेपर अवस्थित चिमकन्दके किलेको खोकन्दी मजबूत करने लगे, जिसकी खबर पाकर निम्न-सिरका रूसी कमांडर जेनरल चेर्नयेफ सितम्बर १८६४ ई०में खाना हुआ। चन्द दिनोंके मुहासिरके बाद चिमकन्दपर उसने अधिकार कर लिया। दस हजार युद्धबदी और बहुत सा लूटका माल हाथ आया। चिमकन्दके हाथमें आ जानेपर अकमस्जिदसे वेर्नेये (अल्माआता) का रास्ता साफ हो गया, और खोकन्दका एक बहुत महत्वपूर्ण इलाका—चू-उपत्यका—खानके हाथसे निकल गया।

खोकन्दी चुप कैसे रह सकते थे? ९ मई १८६५ ई० को ताशकन्दके पास जेनरल चेर्नयेफकी सेनासे लड़ते हुए आलमकुल घायल हुआ। डाक्टर असदुल्ला उसकी चिकित्सा कर रहा था। डाक्टर आलमकुलकी पोशाकको एकके बाद एक उतरवा रहा था, जिसमें कि मरणासन्न आहत पुरुषको कुछ स्वच्छ हवा मिले। उधर उत्तारे कपडोको उज्वेक लेकर चम्पत हो रहे थे। अलीकुलको विल्कुल नगा देख दूसरा कपडा न होनेसे डाक्टरने अपनी खलअतसे उसे ढाक दिया।

ताशकन्द प्राचीनकालसे ही भारी व्यापारिक महन्वका नगर था। यहीपर बुखारा, खीवा, खोकन्द और रूसके कारवा-पय मिलते थे। अब वह अधिक देर तक रूसियोंके हाथसे बाहर नहीं रह सकता था। रोज-रोजके खूनी सघर्ष और अशांतिसे परेशान हो वहाके वनी व्यापारियोंने रूसके दृढ शासनको ही पसंद किया। अगस्त १८६५ ई० में शहरके रईसों और मुल्लाओंने चादीकी तश्तरीमें नमक-रोटीकी भेंट जेनरल चेर्नयेफके सामने रखकर अभिनन्दनपत्र देते हुये अपनेको जारकी प्रजा घोषित किया—“तुम एक समुद्रको दो समुद्रमें नहीं विभक्त कर सकते, और न एक राज्यके भीतर दूसरा राज्य ही बना सकते।” रूसियोंने तुर्किस्तानका एक नया प्रदेश (गुबर्निया) बना दिया, जिसका शासन-केंद्र ताशकन्द बना।

### खुदायार खान पुन (१८६५-७५ ई०)

अमी भी खोकन्दका कितना ही भाग रूसियोंके हाथमें नहीं था। खुदायारताकमे था। ताशकन्दमें रूसियोंके जम जानेपर उमने बुखारी सेना ले खोजन्दको जीतते खोकन्द पहुचकर अपनी गद्दी सभाल ली। बुखारियोंने अपनी सेवाओंके बदलेमें १८६५ ई० में खोजन्दको अपने अधिकारमें कर लिया। यही नहीं, बुखारी अमीर मुजप्फरने रूसियोंकी हुक्म दिया, कि खोकन्दी इलाकेसे हट जाओ, नहीं तो हम जहाद घोषित करेगे। और भी आगे बढते हुये मुजप्फरने बुखारामें रूसी व्यापारियोंकी सम्पत्ति जब्त कर ली, जिसके बदले रूसियोंने ओरेनबुर्गमें बुखारी व्यापारियोंके साथ भी वैसा ही किया, और मुजप्फरके दूतको ओरेनबुर्गमें रोककर उसे पीतरबुर्ग नहीं जाने दिया। सीमाके झगडोंके निर्णयके लिये मुजप्फर खानके बुलानेपर जो रूसी अफसर स्त्रूवे तथा कितने ही इजीनियर आये थे, उन्हें अमीर-बुखाराने गिरफ्तार कर लिया। इस अपमानको रूसी कैसे बर्दाश्त करते? मुजप्फरकी गोगमालीके लिये ११ फरवरी १८६६ ई०को दो हजार सेना ले जेनरल चेर्नयेफ सिर पार हो सीवे समरकन्दकी ओर बढा। रेगिस्तानके रास्ते सात मजिलें पारकर वह जीजक पहुच गया, लेकिन बुखारियोंके सैनिक सख्यावलको देखकर उमने लौट जाना ही पसंद किया। बुखारी इसे अपनी विजय समझकर रूसियोंका पीछा करते हुए सिर दरिया पार कर गये। इसपर मेजर जेनरल रोमानोव्स्कीने आक्रमण कर ८ अप्रैलको बुखारियोंको हरा खोजन्दकी ओर भगा दिया। अब सिरपर रूसी स्टीमर सेना और रमद डो रहे थे। मुजप्फरने सारे अन्तर्वेदमें रूसियोंके विरुद्ध जहाद घोषित करके धार्मिक जोश पैदा कर दिया था, इसलिये गाजियोंकी कमी नहीं थी। वह चालीस हजार मेना ले ताशकन्दपर आक्रमण करने गया, जब कि वहा रूसियोंकी सख्या

३६०० थी। खोजन्दसे उत्तर-पश्चिम कुछ ही मीलपर सिर-तटपर इरजारमे २२ मईको भयकर युद्ध हुआ। आधुनिक हथियारोंसे लैस रूसियोंने बुखारियोंको घास-मूलीकी तरह काट डाला, और अमीर मुजफ्फर एक हजार सरबाजो (सैनिकों) के साथ प्राण लेकर भागा। उसके डेरमें “चूल्हेपर रक्खे खानेसे भाप निकल रही थी, और हुक्का पीनेके लिये तैयार था।” अमीरका डेरा, उसकी कितनी ही तीपे, बहुत भारी परिमाणमें गोलाबारूद और रसद रूसियोंके हाथ आई। खुदायारने मनमें घृणा रखते हुये भी विजयके लिये रूसियोंको बधाई दी।

बुखाराकी यह जबर्दस्त हार थी, और मध्य-एशियाकी उस समय बुखारा ही सबसे बड़ी शक्ति थी। रूस जैसे जबर्दस्त साम्राज्य के सिरपर पहुच जानेपर भी खुदायारकी अकल ठिकाने नहीं हुई। वह अपनी प्रजापर अत्याचार करता, मनमाना कर लगाता, या ऐसे ही उनकी सम्पत्तिको जब्त कर लेता। घुमन्तू कजाको और किपचकोके ऊपर उसने पहलेपहल खास कर लगाये। इस समयकी अवस्थाका वर्णन एक मध्य-एशियाई लेखकने निम्न शब्दोंमें किया था—

‘सडकोकी मरम्मत, राजमहलोंके निर्माण, खानके बागोंके जोतने-खोदने और नहरोंकी सफाईके लिये सारे देशसे आदमियोंको पकड़कर जबर्दस्ती काममें लगाया जा रहा है। मजदूरी क्या उन्हें खाना भी नहीं दिया जाता। साथ ही यदि गावके आधे लोगोंको कामपर लगाया गया है, तो दूसरे आधे से दो तका (बारह आना) जबर्दस्ती कर उगाहा जा रहा है। कामसे भागने या इन्कार करनेपर कोड़ोंसे खबर ली जाती है। कभी-कभी कोड़ोंसे मार-मारकर लोगोंके प्राण ले लिये जाते हैं, और कितनोंको प्राण रहते ही कामकी जगहमें ही दबा दिया जाता है। ऐसी बेगार पहले खानोंके समय में भी ली जाती थी, लेकिन उन्हें खाना तो मिल जाता था। पहले खानको बिना कर दिये लोग घास, नरकट और ईंधनकी लकड़ी जमा कर सकते थे, लेकिन अब उसमेंसे आधी खानको देनी पड़ती है, जिसे सरकार निश्चित दामपर बेच देती है। इसके साथ ही ईंधन या सरकडेकी गाड़ी जब शहरके फाटकपर पहुचती है, तो आधा तका वहां और फिर एक तका बाजारमें महसूल देना पड़ता है। पहले झाड़ियोंकी लकड़ी (लीच) कर-मुक्त थी, लेकिन अब खानने प्रत्येक पर चार चेका (दो पैसा) चुगी देनेके लिये मजबूर किया है। चुगीवाले जोकोंके तालाबके पास रहते हैं। पशुओंके बेचनेपर साधारण जकात (शुल्क) के अतिरिक्त खानके लिये प्रति ठोर एक तका, प्रति भेड आधा तका, प्रति ऊट दो तका और प्रति घोड़ा-गदहा एक तका महसूल देना पड़ता है—उस समय खोकन्दी सिक्का सोनेका तिला, जिसमें-साठ चादीका तका होता और तर्कमें चौवालीस चेका या ताबेके पैसे होते। आयात मालपर मूल्यका चालीसवा भाग जकात और ऊपरसे बीसवा भाग और खानके लिये अमीनियाना देना पड़ता था। निर्यातके मालोंमें रेशम और रूईपर प्रति ऊट दस तका देना पड़ता। बाजारमें बिकनेवाली स्त्री-पुरुषोंकी पोशाक, तोशक, रेशमी कपड़ो तथा दूसरी मूल्यवान् चीजोंपर एक तका एक थान, और कम कीमती मालपर आठवेंसे चौथाई तका कर देना पड़ता। दूकानोंकी हिफाजतके लिये पहरा देनेके लिये रातको सिपाही आते। उनके खर्चके लिये भी हर दूकानको हर चौथे महीने दोसे दस तका देना पड़ता। बाजारोंमें बिकनेवाले अनाजपर प्रति चारयक (दो मन दस सेर) पर चार चेका देना पड़ता। सब्जी, खरबूजा और अनाजपर प्रति बोझ एकसे तीन तका तक कर है, जिसे तेकजाई (बाजारमें बेचनेका हक) कहा जाता है। इनके अतिरिक्त खराज और तनाव (भूकर) अलग है। दूध, खट्टी मलाई आदिपर प्रति प्याला दो चेका कर है। वत्तक या तालकी चिड़ियोंमें हर जोड़ेमें एक खानका होता, और पालतू मुर्गे-मुर्गियोंमें प्रत्येकपर दो चेका, दस अडेपर एक चेका देना पड़ता।

भारतीय सिरकीवालोंने शताब्दियों पहले भारतकी पश्चिमी सीमासे बाहर अपना घुमन्तू-जीवन बिताना शुरू किया, और धीरे-धीरे पश्चिमकी ओर मध्य-एशिया ही नहीं, यूरोप तक फैल गये। इन्हें अग्रेजीमें जिप्सी, रूसीमें सिगान और उनकी अपनी भाषामें रोमनी या रोम कहा जाता है। विद्वानोंने निश्चित किया है, कि रोम वस्तुतः हमारे डोम शब्दका ही अपभ्रंश है। रोमनी लोगोंकी भाषाको देखनेसे इसमें सदेह नहीं रह जाता, कि वह भारतीय है। ईरान और मध्य-एशियामें



रोमनी लोगोको लोली या ल्यूली कहते हैं। बहुत पुराने समयसे यह भारतके मदारियोंकी तरह बन्दर, भालू और वकरे लिये नगरो और गावोंमें तमाशा दिखलाते अपनी जीविका करते थे। “खुदायारने इन गरीबोंको भी चैनसे नहीं रहने दिया। उसने उनके ऊपर भी अपने कारिन्दे नियुक्त किये, जिन्होंने उनके जानवरोकी सख्या बढ़ाकर बतलाई। हर बाजारके दिन और बड़े शहरोंमें सप्ताहमें तीन बार लोली अपने पालतू भालुओं, भेड़ियों, बन्दरों, वकरियों, लोमड़ियों और सूअरोंके साथ बाजार होकर निकलते, और प्रत्येक दूकानको चार चेका उन्हें देना पड़ता। खानके विद्वपक भी बाजारमें फिरते, और उन्हें भी दूकानदारोंको पैसा देना पड़ता। यह पैसा खानके रसोईखानेके खर्चके लिये जाता। मजिस्दक इमाम नियुक्त करते वक्त उसे खानको दस तका देना पड़ता, सूफी (मुअज्जिन) को पाच तका। यदि खानको मालूम हो जाय, कि किसी परिवारमें दावत, शादी या खतना है, तो वह अपने गायकोंको भेज देता। गृहपतिको उनमेंसे हरएकको एक चोगा, और दोम पाच तिला (अशर्फी) तक खानके लिये देना पड़ता। प्रति बसत खोकन्द शहरसे बाहर दरवेश-खानाका भारी मेला लगा करता। उस समय हर एक पेशेवालेको खानके सामने अपनी क्षमता के अनुसार नजर भेंट करनी पड़ती, जो सौसे हजार तिला तक होती। अगर इसमें जरा भी गफलत होती, तो पच लोग पीटे जाते। अगर कोई आदमी किसी दूसरे आदमीसे जमीन या वगीचा लेना चाहता, तो खान उसे उसको मूल कीमतपर ही बेचनेके लिये मजबूर करता, और इसका जरा भी ध्यान नहीं रखता, कि नये मालिकने उसमें मेहनत और खाद-पानीसे कितनी तरक्की की है। खान अपने लिये सभी चीजें सस्तेमें लेना चाहता है। राज्यसे बाहर अगर कोई जाना चाहता, तो दो तकाके साथ आवेदनपत्र देना पड़ता। यह पत्र फिर महरम (एक अफसर) के सामने रक्खा जाता, जो उसके लिये एक तका लेता। जानेवालेकी जान इतनेसे ही नहीं बचती, उसे सड़ककी हर मजिलपर अलग कर देना पड़ता। घास, ईधनके कर, प्रतिपशु प्रतिमास बारह चेका है। चराईका ठेका खानने सिदीक कुइचीको बीस हजार तिला सलानापर दे रक्खा है। खराज या फसलके महसूलके रूपमें दो लाख चारयक (एक चारयक=दो मन दस सेर) अनाज मिलता, जिसे वेंच दिया जाता। इसके प्रवधके लिये हर किलेमें विशेष अफसर नियुक्त हैं। गरिकाना जिलेसे नौ हजार चारयक अनाज मिलता है, वालीकिचीसे एक लाख, सोखसे चौदह हजार, मेरकेन्दसे बारह हजार चारयक। वगीचा और मेवाके बागोंके करको तनाव कहते हैं, जिससे साठ हजार तिला आता। वालीकिची और चिल महरमके बीचमें सिर नदीपर चुगी कर लगता। विवाहकी लिखाई-पढाईपर भी कर था, जो कि आधा तिला तक होना है। बरासत (उत्तराधिकार) पर सम्पत्तिका चालीसवा हिस्सा मृत्यु-करके रूपमें खान लेता है। नमक बनानेके लिये करसे खानको बीस हजार तिला प्राप्त होता। देहाती लोगों और घुमन्तू कवीलोपर अलग जकातका कर लगा, जिसका ठेका ग्यारह हजार तिलापर चेचीवाशीको दिया गया। व्यापारियोंसे जकात उगाहनेवाला मेहतर पैंतीस हजार तिला, खानकी कारवासरायों और हजार दूकानोंका ठेकेदार ईसाइया तीस हजार तिला देता है। कपास-कर और दलाली-करसे दस हजार तिला राजकोषमें जाता। तेलके कोलू, अनाजमंडी, रेशम बाजार, घासहट्टा, दूधहाटसे प्रति वर्ष पाच हजार तिला, व्याह और मुल्ला आदिकी नियुक्तिसे भी पाच हजार तिला प्रति वर्ष मिलता है।”

लेकिन डडेके सामने खानकी अकल ठीक रहती, इसलिये रूसियोंको व्यापार करनेमें कोई बाधा नहीं दी जाती थी। इतने भारी करके बोझसे कराहते लोग कब तक चुपचाप रहते ? १८७१ ई० में लोगोंने विद्रोह कर दिया, लेकिन उसे जल्द ही दबा दिया गया। काले किर्गिजोंपर प्रति परिवार एककी जगह तीन में डें तथा पहाड़पर जोते उनके खेतोंपर खानने नया कर लगाना चाहा। किर्गिजोंने कर देनेसे इन्कार कर दिया और खानके तहसीलदारोंको पीट भी दिया। सेनाके आनेपर वह पहाड़ोंपर भाग गये। इसी समय मुसलमानकुलका बेटा तथा खानका साला आफतावचा अब्दुर्रहमान हाजी मक्काकी हज करके खलीफाके नगर कान्स्तान्तिनोपल (कसतुन्तुनिया) होते लौटा था। वह स्वयं भी किर्गिज था, लेकिन खानका मववी होनेके कारण दूसरे वर्गसे सबध रखता था। खानने उसे सेना देकर किर्गिजोंको दवानेके लिये भेजा। उसने किर्गिजोंसे कहा—अपनी

तकलीफको कहनेके लिये खानके पास अपने पचास प्रतिनिधि भेजो, हम उन्हें बिना नुकसान पहुंचाये जामिनके तौरपर रखेंगे। लेकिन वहां आनेपर खुदायारने बड़ी क्रूरताके साथ किर्गिज प्रतिनिधियोंको मरवा डाला। आफतावचाको इसके लिये बड़ी शर्म आई और वह किर्गिजोंकी भूमि छोड़कर खोकन्द लौट गया। किर्गिजोंने बदला लेनेके लिये हथियार उठाया और उजकन्द तथा सुकको ले लिया—सुकमें एक छोटा-सा किला था, जिसमें खानका खजाना रहता था। पहाड़ी इलाकोंमें सफल होते ही मैदानी इलाकोंमें जानेपर किर्गिज आक्रमणमें असफल रहे, उनके बहुत-से आदमी खानके हाथमें बंदी बने, जिनमेंसे पांच सौको खोकन्दकी बाजारोंमें फासीपर चढ़ा दिया गया। किर्गिजोंने मदलीखानके पुत्र मुजप्फरको अपना खान बनाया था। खुदायारने उसकी जिंदा खाल खिंचवा ली। लेकिन विद्रोहियोंकी शक्ति बढ़ती गई, और उसकी क्षीण। इसपर खानने रूसियोंसे मदद चाही, लेकिन वह इस नररक्षसको क्यों मदद देने लगे? लोगोंकी भी सहानुभूति विद्रोहियोंके साथ थी। खुदायारको अपने बेटे तथा अन्दिजानके बंक (राज्यपाल) नासिरुद्दीनपर भी सदेह हुआ। चारों तरफसे आशाकी एक भी झलक न देखकर खुदायारने खजाने और परिवारको लेकर अपने पदको छोड़ दिया। विद्रोहियोंने बहुत जल्दी ही ओश, अन्दिजान, सूजक, उचकुर्गान और बालिकचीको अपने हाथमें कर लिया। बालिकचीके वेगने विरोध करना चाहा, इसपर मुहके रास्ते डडा घुसेडकर उसे जमीनमें गाड़ दिया गया। खानके बहुतसे सिपाही विद्रोहियोंकी ओर मिल गये और उनके कमांडर तथा खानके साले आफतावचाने नमगानके पास तुराकुर्गानके किलेमें अपनेको बंद कर आगे कोई भी कार्रवाई करनेसे इन्कार कर दिया। १८७३ ई० के जाडोमें विद्रोहियोंकी शक्ति कुछ निर्वल हुई, और कुछ शहर फिर खुदायारको मिल गये, लेकिन १८७४ ई० के वसंतमें खुदायार पुत्र अमीनको आगे करके विद्रोहियोंने फिर बगावतका झंडा उठाया। अमीनकी बहुत अधिक बात करनेके स्वभावने परदा फाश कर दिया। उसके चचा वातिरखान तुरा सोलह और पड़्यत्रियोंके साथ राजमहलमें बुलाये गये, जहासे वह फिर नहीं लौटे। तर्षण खानजादेको निगरानीमें रक्खा गया। मेहतर मुल्ला कामिलने सूचना देकर सावधान नहीं किया था, इसलिये खुदायारने उसे जहर देकर मरवाया। इसके बाद फिर दूसरा षड्यंत्र खुदायारके चचा फाजिलवेगके पौत्र अब्दुल करीम बंकको खान बनानेके लिये किया गया। रूसियोंने अब्दुल करीमको पकड़कर ताशकन्दमें और उसके मुख्य सलाहकार अब्दुल करीमको चिमकन्दमें रख दिया। खानको अब हर एक आदमीपर सदेह होने लगा। उसे आखोंके सामने मौत नाचती दिखाई पड़ती थी, इसलिये वह काफी समय तक महलसे बाहर नहीं निकला। हवशी गुलाम नसीम तोगा खानका बड़ा ही विश्वासपात्र सेवक था, जो हर वक्त महलके द्वारकी रक्षा करता। उसे भी अपने वीवी-बच्चोंको भीतर न आने देनेका हुक्म था। जब शका और सदेहका इतना बाजार गर्म हो, तो हर जगह गुप्तचरोका जाल बिछना स्वाभाविक था।

रूसी खोकन्दकी सारी हालत बड़े गौरसे देख रहे थे। १८७५ ई०में तुर्किस्तान-प्रदेशका शासक जेनरल काफमान था। उसने खोकन्द होते रूसी सैनिक टुकड़ीको काश्गर भेजनेके लिये सहमति लेनेके वास्ते अब्दुल करीमको खोकन्द भेज दिया। इधर आफतावचा भी अपने पिता मुसलमान-कुलकी हत्याका बदला लेना चाहता था, इसलिये खुदायारके खिलाफ नये विद्रोहका अगुवा बना। सारी सेना उसकी तरफ हो गई। खुदायारके भाई और पुत्र भी उससे आ मिले। खान अपनी वेगमों और दस लाख गिन्नी खजाना लेकर ताशकन्द भागा। रूसियोंने उसे बड़ी खुशीसे आश्रय दे नजरबन्द कर दिया। फिर थोड़े समय बाद उसे ओरेनबुर्गमें रहनेके लिये भेज दिया।

#### १५ नासिरुद्दीन, खुदायार-पुत्र (१८७५ ई०)

खुदायारके भाग जानेपर विद्रोहियोंने उसके पुत्र नासिरुद्दीनको खान घोषित किया। अब्दुर्रहमान आफतावचा मुखिया था—आफतावचाका अर्थ है हाथ धोनेके आफतावा या गडवेका उठानेवाला। मुल्ला ईसा औलिया और हाकिम नजर परमाचीने जेनरल काफमानके पाम अनुनय-विनयके पत्र भेजे, और खुदायारकी गलतियोंको दुरुस्त करनेका वचन देते हुये काफमानकी ओर मित्रताका हाथ

बढ़ाया। काफमानने इस शर्तपर बात स्वीकार की, कि नासिरुद्दीन वापकी की हुई सधियोंको स्वीकार करे, रूसी प्रजाके नुकसानोंकी क्षतिपूर्ति दे। नये खानसे रूसी बहुत आशा करतेथे, क्योंकि वह रूसियोंकी चाल-ढालको पसंद करता और रूसी जातीय पेय बोद्का (शराब) का बहुत प्रेमी था।

लेकिन खान अकेला क्या करता ? खोकन्दी मुसलमान काफिर रूसियोंके विरुद्ध जहाद करनेकी तैयारी कर चुके थे। उन्होंने राजधानीमें घोषणा की, कि सभी रूसी मुसलमान हो जाय, नहीं तो इसका नतीजा उनके लिये बुरा होगा। लेकिन यह कब होनेवाला था ? अन्तमें विद्रोह उठ खड़ा हुआ। ताशकन्द और खोजन्दके बीचके तीन और खोजन्द तथा समरकन्दके बीचके कई रूसियोंके डाक-स्टेशन लूटकर जला दिये गये। डाकमास्टर और मेल ढोनेवाले मारे या बन्दी बनाये गये। यात्रियोंकी भी वही दशा हुई। कुछ समय तक खोजन्दके लिये भी भारी खतरा पैदा हो गया।

रूसियोंके लिये इससे सुनहला मौका और कब मिल सकता था ? काफमानने भारी तैयारी की, और जेनरल गलवाचेफके नेतृत्वमें एक सेना भेजी, जिसने विद्रोहियोंको हराकर कुरामा जिलेको उनसे मुक्त कर लिया। ३१ अगस्तको वह खोजन्द पहुँचा। विद्रोही वहाँसे हट चुके थे। रूसी सीमात और खोकन्दके बीचमें महरमका बड़ा किला था, जहाँ विद्रोहियोंसे मुकाबला हुआ। एक घंटासे कम हीमें किला सर हो गया। ग्यारह सौ गाजियोंकी लाशें वही गाड़ी गईं। इस इलाके को भी रूसके तुर्किस्तान-प्रदेशमें मिला लिया गया। ७ सितम्बरको रूसी सेनाने खोकन्दकी ओर कूच किया। नासिरुद्दीनने मुल्ला ईसा औलियाको भेजकर क्षमा मागनी चाही। रूसियोंने उसे पकड़कर अपनी विजययात्रा जारी रखी। सर्वत्र रूसी सेनापतियोंके सामने लोग रोटी-नमक पेश करते अधीनता स्वीकार करते जा रहे थे। खानने अब एक दूसरा दूतमंडल भेजा, जिसके साथ भेटके अतिरिक्त डाक-स्टेशनोंमें पकड़े बंदी भी थे। उन्होंने बतलाया कि हमारे सिरको मुड़ा दिया गया, लेकिन और तरहसे कोई बुरा बर्ताव नहीं किया गया। रूसी स्त्रियों और बच्चोंको खानके अन्त पुरमें रखा गया था। बिना प्रतिरोध किये ही अन्तमें खोकन्दने रूसियोंके हाथमें आत्मसमर्पण किया। खान स्वयं जेनरल काफमानसे मिलने के लिये आया। जेनरल काफमान अपने स्टाफके साथ कुछ दूर तक जाकर खानके साथ अपने डेरेमें लौट आया। रूसियोंने कुछ समयके लिये वहाँ डेरा डाल दिया। लोगोपर धाक जमानेके लिये नगरमें बराबर रूसी सेनाका प्रदर्शन होता रहा। जेनरलने दूसरे स्थानोंको भी आत्म-समर्पण करनेके लिये घोषणा निकाली। आफतावचाने मर्गिलानमें काफी सेना जमा कर रखी थी। यह सुनकर १७ सितम्बरको काफमान मर्गिलान पहुँचा। आफतावचा किपचको (उज्बेको) के साथ वहाँसे खिसक गया और मर्गिलानने अधीनता स्वीकार की। आफतावचा पीछा करते स्कोवेलेफ ओश तक गया—अन्दिजान, बलिकची, सरीखाना और ओशने उसके हाथमें आत्म-समर्पण किया, विद्रोहियोंके तीन नेताओंमेंसे एक खालिक नजरने भी प्रतिरोधको वेकार समझकर आत्मसमर्पण कर दिया। नासिरुद्दीनको सधि करनेके लिये काफमानने मर्गिलान बुलाया। समझौतेके अनुसार सिर नदीसे उत्तरका इलाका नमगान रूसियोंके हाथमें चला गया, साथ ही नासिरुद्दीनने छ सालमें तीस लाख रूबल (चार लाख दस हजार पौंड) हरजाना देना स्वीकार किया। और लोगोको क्षमादान कर दिया गया, लेकिन विद्रोहियोंके जवर्दस्त नेताओं—ईसा औलिया, जुल्फेकार वी और मुहम्मदखान तुरा—को साइबेरियामें निर्वासित कर दिया गया।

लौटते समय नमगानकी नई बनी रूसी प्रजाने जेनरल काफमानके स्वागतार्थ एक बड़ा तम्बू गाड़कर एक सौ बीस गाड़ी रसद और चालीस हजार रोटियोंकी भेंट पेश की। नदीसे तम्बू तक जेनरलके चलनेके लिये रेशमी पावड़े बिछाये गये, और उसके ऊपर चादीके सिक्के बरसाये गये।

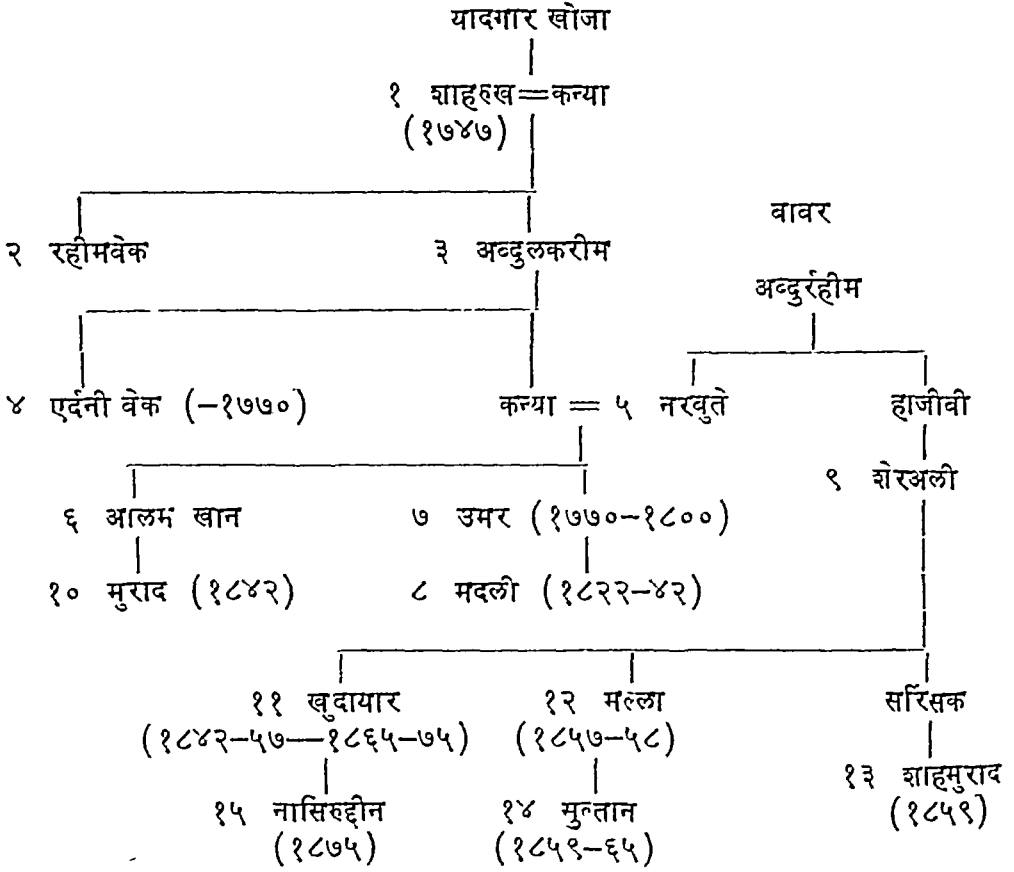
लेकिन यह अधीनता स्थायी नहीं रही। थोड़े दिनों बाद फिर विद्रोह हो गया और आठ तोपोंके साथ चौदह हजार आदमी विद्रोह दवानेके लिये अन्दिजान भेजे गये, जहाँ साठ-सत्तर हजार आदमियोंको आफतावचाने जमा कर रखा था। किर्गिजोंने भी पूलादवेकको खान घोषित कर अपने पंद्रह हजार योद्धा जमा किये थे। रूसियोंको जवर्दस्ती नगरपर अधिकार करना पड़ा, और उनकी गोलाबारीमें बाजार और बहुत से मकानोंमें आग लग गई। शत्रुओंकी मर्या अधिक होनेके कारण रूसी रातोंके

गावोंको जलाते नमगान लौटे । शत्रु उनका पीछा कर रहे थे । यद्यपि असफल होकर ही जनरल त्रोत्स्कीको लौटना पड़ा था, लेकिन फिर भी जारशाहीने उसे सम्मानित किया ।

खान नासिरुद्दीनने रूसियोंकी कड़ी शर्तोंको मानकर अपनी प्रजाको जल्दी ही असतुष्ट कर दिया और उसे उनके क्रोधके मारे भागना पड़ा । पूलादके समर्थक तथा उरातिप्पाके भूतपूर्व बेकने राजधानी (खोकन्द) पर अधिकार कर लिया । खोकन्दियोंका पलड़ा भारी होते देख नमगानवालोंने भी रूसियोंके खिलाफ विद्रोहका झंडा उठाया, और उसपर भी किपचको (उज्वेको) का अधिकार हो गया । इस विद्रोहको दबानेके लिये जनरल स्कोवेलेफने बड़ी निष्ठुरताका परिचय देते अघाधुध तोपोंसे गोलाबारी की । खोकन्द राज्यमें इस वक्त चारों ओर अराजकता फैली हुई थी, लेकिन रूसके विरुद्ध सभी एक थे । इस्लामके नामपर वह सर्वस्व-त्यागके लिये बेकरार थे । रूसी सेनाके खूनी अत्याचारोंसे उनकी हिम्मत नहीं टूटी थी । सिर और नरिन नदियोंके बीचमें उस समय लड़ाकू किपचक रहा करते थे । स्कोवेलेफको हुक्म हुआ, कि इस इलाकेको उजाड़ दे । जनवरी १८७६ ई०में उसने प्रस्थान किया । जाड़ेके कारण किपचक घुमन्तू इस समय अपने हेमन्त निवासोंमें जमा थे । सिरके उत्तरी तटसे बढ़ते हुये रूसियोंने किपचकोंकी मुख्य बस्ती पैताको नष्ट किया, और हराकर उन्हें भागनेके लिये मजबूर किया । आगे सरखावा तक हर चीजको जलाते बरबाद करते रूसी बढ़े । शत्रुको भयकर हत्या और हानि पहुँचाकर अन्दिजान सर किया गया । दूसरी विजय थी अस्साकीकी, जहाँ शहरेखान और मर्गिलानके लोगोंने अधीनता स्वीकार की । अन्तमें पहली फरवरीको आफतावचाने भी बिना शर्तके आत्म-समर्पण कर दिया । उसके साथ वातिर द्यूरा, इसफन्दियार और दूसरे सरदार भी थे ।

रूसमें विलयन—खोकन्दवाले पूलादबेकसे उकता गये थे । उन्होंने खोजन्दसे नासिरुद्दीनको बुला भेजा था । लेकिन पूलादके समर्थकोंने उसपर आक्रमण कर दिया, और बड़ी मुश्किलसे नासिरुद्दीन जान बचाकर महरम भाग सका । फिर प्रहार करनेपर पूलादबेकने भागकर उच-कुर्गानके पास अलई पहाड़में जाकर शरण ली, उसके बहुत-से आदमी पकड़े गये और नासिरुद्दीन अभियानमें सफल हो खोकन्द लौटा । लेकिन रूसी देख चुके थे, कि कैसे खान और मुल्ला आसानीसे लोगोंमें जहादका प्रचारकर विद्रोह खड़ा कर सकते हैं, इसलिये अब और खानको कायम रखना वह अच्छा नहीं समझते थे । जनरल स्कोवेलेफको हुक्म हुआ और उसने २० फरवरी १८७६ ई०को खोकन्दपर अधिकार कर लिया । नासिरुद्दीन, आफतावचा और दूसरे नेता बन्दी बनाकर ताशकन्द भेज दिये गये । जारने अपने सिंहासनारोहणके वार्षिकोत्सवके समय २ मार्च १८७६ ई० को एक उकाजे (राजादेश) निकाला, जिसके अनुसार खोकन्दके राज्यको फरगानाके प्रदेशके नामसे रूसी साम्राज्यमें मिला लिया गया । पूलादबेक भागा-भागा फिरता रहा । उसे भी किर्गिजोंने पकड़कर दे दिया और बारह रूसी सिपाहियोंकी हत्याके अपराधमें उसे मर्गिलानमें फासीपर चढ़ा दिया गया । इस प्रकार बाबरकी प्रिय जन्मभूमि फरगाना जारके राज्यकी अंग बन गई, और वहाँकी प्रजा प्रायः आधी शताब्दीके लिये निरीह बना दी गई ।

४ (२ खोकन्द खान-वंशवृक्ष)  
(१७४७-१८७६ ई०)



स्रोत ग्रन्थ

- १ इस्तोरिया समसर (अ म ४ जिल्द, व इ रब्दोनिकस्)
- २ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)
- ३ Heart of Asia (E D Ross)
- ४ History of Mongol (H H Howorth)
- ५ ओचेर्क पो इस्तोरिड कलोनिजात्सिड सिविर (मास्को १९४६)
- ६ दस्तोरिया रोस्सिड (चित्रमय)
- ७ इस्तोरिया रोस्मिड (स सोलोवियेफ्, पेत्रेव्ग १८७९-८५)
- ८ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ कवेर आदि, मास्को १९१०, पृ० २४९-५८)

## बुखाराके अमीर

(१७४७-१९२० ई०)

अस्त्राखानी-वंशका स्थान किस तरह अतालीकवशी मगीतोने लिया, इसका वर्णन हम पहले\* कर चुके हैं। खुदायार अतालीकके पुत्र मुहम्मद रहीम और दानियाल बी थे। रहीम बी अस्त्राखानी अमीर सैयद अब्दुलफैजका दामाद था। सैयद अब्दुलफैजकी लडकी शम्सवान् आइम दानियाल बीके लडके शाहमुराद (अमीर मासूम वेगीखान) की बीबी थी, जिससे सैयद अमीर हैदर पैदा हुआ था। यद्यपि अब्दुरहीम बीके समयसे ही राज्यशासन नये खानदान (मगीत-वंश) के हाथमें चला गया था, लेकिन अमीर हैदरके समय तक अस्त्राखानी-वंशके खानको खतम नहीं किया गया। मगीती-वंश बुखाराका अन्तिम राजवंश था, जिसका उच्छेद बोल्शेविक-क्रांतिकी सफलताके बाद १९२० ई० में हुआ।

राजावली—इस वंशमें निम्न अमीर हुये—

१ मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालीक खुदायार-पौत्र	१७४७ ई०
२ दानियाल बी, खुदायार-पुत्र	—१७७० "
३ शाहमुराद, अमीर मासूम, दानियाल-पुत्र	१७७०-९९ "
४ हैदर, शाहमुराद-पुत्र	१७९९-१८२६ "
५ हुसैन, हैदर-पुत्र	१८२६ "
६ उमर, हैदर-पुत्र	१८२६ "
७ नसल्ला, हैदर-पुत्र	१८२६-६० "
८ मुजफ्फरद्दीन, नसल्ला-पुत्र	१८६०-६७ "
९ अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र	—१८९४ "
१० मीर आलम, अहद-पुत्र	—१९२० "

### १ मुहम्मद रहीम बहादुर, अतालीक खुदायार-पौत्र (१७४७ ई०)

मगीत-कबीलोको छिड़-गि [ खानने मगोलियाके उत्तर-पूर्वसे लाकर वक्षुके मुहाने और बुखारासे एक सौ चालीस मील दक्षिण-पूर्व करशीमें बसा दिया था। मूलत यह चाहे मगोलोंके वधु-बाधव रहे हो, लेकिन आगे तुर्कोंमें मिलकर ये उज्बेकोके मुखिया बन गये। अस्त्राखानियोंकी प्रभुताके समय ये उनके बड़े भक्त थे। अब्दुरहीम उज्बेकोके मगीत-कबीलेका मुखिया था। इसके दादा खुदायारने अतालीक (मुख्य परामर्शक) होकर अपनी शक्तको बहुत बढ़ा लिया था, लेकिन प्रभुताको पूरी तौरसे अपने हाथमें करनेमें उसके पोते मुहम्मद रहीमबीने ही सफलता पाई। इसने अपने चचा दानियालको समरकन्दका शासक बनाया। अस्त्राखानियोंकी कमजोरीके कारण शहरसब्ज, हिसार (ताजिकिस्तान) और ताशकंद बुखारियोंके हाथसे निकल गये थे। अपने पक्षको मजबूत करनेके लिये रहीमको अफगान अहमदशाह अब्दालीसे मदद लेनेकी जरूरत पड़ी, जो दिल्ली तककी लूट-मार करके काफी प्रसिद्ध हो चुका था। इस मददके बदले उसे वक्षुके दक्षिणके

भूभागको गिल्जइयो (अफगानो) के हाथमें देना पडा। अब्दुरहीमने अस्त्राखानी खानको मारकर ही सतोप नहीं किया, बल्कि उसके तरण पुत्र तथा अपने दामाद अब्दुल मोमिनको एक महफिलमें दावत करके मनोरजनके लिये कुएके गहरे जलको देखते वक्त ढकेलकर मार दिया। अब्दुरहीम बुढापेमें ईरानी गुलाम तथा अपने वजीर दौलत वीके हाथमें खेलता रहा, जो अपने दुशासनके लिये बदनाम था। रहीम इस वक्त बहुत विचित्र स्वभावका हो गया था। एक दिन वह दर्वेश बन ससारकी असारतापर व्याख्यान देता, और दूसरे दिन मौज-मेलेमें अपनेको भुलाना चाहता। इसी तरहके जीवनमें वह बीमार होकर मर गया। उसके कोई पुत्र नहीं, बल्कि दो लडकिया थी। मरते समय उसने अपने चचा दानियाल वीको अपना उत्तराधिकारी बनाया।

## २ दानियाल वी खुदायार-पुत्र (—१७७० ई०)

रहीमके मरनेपर उसकी इच्छानुसार वजीर दौलतवीने दानियालको सिंहासन सभालने के लिये बुलाया। दानियालने स्वयं खान न बन अतालीक ही रहना चाहा, और गद्दीपर उसने अस्त्राखानी अबुल्गाजीको खान बनाकर बैठाया। दौलत वी अब भी राजकाज चलानेमें सर्वेसर्वा था। यही समय है, जब कि बुखाराके बाजारोंमें कलियान (हुक्के) और तम्बाकूका प्रचार बढ़ा, साथ ही काफिर-रवातमें रडीखाने खुले। दानियालका ज्येष्ठ पुत्र शाहमुराद इनके लिये बहुत अफसोस करता था, क्योंकि वह कट्टर इस्लामका प्रचार करना चाहता था। उसने शाह सफर नामक एक सूफीके यहां जाकर शिक्षा लेनी चाही। शेखने उसे फटकारते हुये कहा—“अत्याचारीका पुत्र कैसे भले काम कर सकता है?” फिर परीक्षा लेनेके लिये उसने कहा—“जाकर पल्लेदारी करते बोलो।” मुराद गदे कपडे पहिनकर तुरन्त बाजारमें चला गया, और अपने गुरुकी आज्ञाके अनुसार कितने ही महीनों तक पल्लेदारी करता रहा। बापके टोकनेपर मुरादने जवाब दिया—“इल्म और धर्मकी खान बुखारा आज अन्याय और दुराचारमें कितना डूबा हुआ है? जहां तुम्हारे पुत्र व्यसनमें पड़े हुये हैं, जब कि दौलत कुशवेगी जैसा एक दास देशका स्वामी बन बैठा है।” यह कहते हुये मुरादने कहा, कि मैं तो दर्वेश (साधु) बनूंगा। एक साल तक हम्माली (पल्लेदारी) करनेके बाद शेख सफरने मुरादको अपना मुरीद (चेला) बनाया। अब वह अपना सारा समय आलिमों और दर्वेशोंकी सेवामें बिताने लगा। लेकिन साथ ही खोकन्दके दूतकी स्वागतकी तैयारीके लिये उसने कुशवेगीको बुला चुपचाप जल्लादोको भेजकर उसका काम तमाम किया, और उसकी धन-सम्पत्तिको जब्त कर लिया। अब मुरादकी चलने लगी। उसने एक काजीको हुक्का पीनेके अपराधमें चाल सुधारनेके लिये साल भरका समय देकर उसे मरवा डाला। उसके डरके मारे भाइयोंने भी अपनी चाल बदली। बुरे साथियोंको मारनेमें उसने जरा भी आनाकानी नहीं की, और रडीखानेको भी जल्दी ही बन्द करवा दिया। बुखारा फिर “स्वर्ग” बन गया। दानियाल वीने शाह मुरादके आगे बढ़नेमें कोई रुकावट नहीं पैदा की, और वेढा भी अपने बापकी बड़ी इज्जत करता था। मृत्युके समय दानियालने शाह मुरादसे प्रतिज्ञा करवाई—“भाइयोंको न मारना न निर्वासित करना, मेरी विधवाओंको व्याह करनेके लिये मजबूर न करना, स्वाजासरा खोजा सादिकके साथ अच्छा बर्ताव करना, भाइयों-बहनोको काफी धन देना और मुझे शाह नकशबदकी कब्रके पास दफन करना।”

दानियालका शासन इस प्रकार बहुत कुछ उसके बेटे शाह मुरादका शासन था। उसने उरगज (खीवा), खोकन्द और मेर्वके शासकोंके साथ मित्रता रक्खी। सिक्का और खुतवा उसने अपना नहीं चलाया। दानियालके मरनेके बाद भी अभी तत्तपर अबुल्गाजी अस्त्राखानी ही रहा, यद्यपि शाह मुरादको यह पद नहीं था।

## ३ शाह मुराद, अमीर मासूम बेगीखान, दानियाल-पुत्र (१७७०-९९ ई०)

शाह मुराद बड़ा ही डोंगी था। वह अपनेको सत सूफी प्रकट करना चाहता था। बापके मरनेपर वह बुखाराके लोगोंसे पिताके दुष्कर्मों तथा कसूरोंके लिये क्षमा मागता फिरता रहा। बापकी

वरासतमे मिली सम्पत्तिको उसने स्वयं न लेकर खैरातके कामोमे दे दिया। पहलेसे ही वह अपने पल्लेदारीके जीवन तथा दूसरे विचित्र कामोके कारण कट्टर मुसलमानोमें सर्वप्रिय हो चुका था, लेकिन उसका अपना भाई तख्तामिश उससे सख्त घृणा करता था, और चाहता था कि किसी तरह गद्दी अपने हाथमे ले ले। उसने शाह मुरादकी हत्याके लिये फरीदून नामक एक आदमी को नियुक्त किया। फरीदूनने शयनकक्षमे जाकर तलवार चलाई, जिससे मुहसे कानतक घाव लग गई, लेकिन इसी समय जागकर शाह मुरादने हत्यारेकी दाढी पकड़ ली, पर वह किसी तरह जान छुड़ाकर भागनेमें सफल हुआ। सवेरे उसी तरह घावपर पट्टी बांधे शाह मुराद दरबारमें आया। फरीदूनको मृत्युदंड हुआ, भाईको उसके कसूरके लिये देशनिकाला मिला। बापको दिये हुये वचनपर ख्याल करके मुरादने उसको और कोई कठोर दंड नहीं दिया। जब उसके दूसरे भाई सुल्तान मुराद—जो कि कर्मिनियाका हाकिम था—ने विद्रोह किया, तो उसे भी बन्दी बनाकर बुखारामें रख दिया।

मेवं इस समय ईरानी काजार-वंशके संस्थापक बहराम अली खाके हाथमें था, जिसने १७८१ ई०में इस महत्त्वपूर्ण प्राचीन नगरको लेकर उसे अपनी राजधानी बना पुराने मेवंके ध्वसावशेषपर एक किला बनाया। बहराम स्वयं भी तुर्कमान था, इसलिये तुर्कमानोपर सत्ता जमानेमें उसे बहुत कठिनाई नहीं हुई। शीया होनेसे धर्मांध शाह मुराद मेवंपर काजार-शासनको फूटी आखो नहीं देख सकता था। उसके लिये यह धर्मयुद्धका अच्छा मौका था। दानियाल बीके मरनेपर बहराम अलीने अपनी भक्ति दिखाते हुये यद्यपि कुरान-पाठ करके दान-खैरात दी थी, लेकिन इसका सुन्नी दर्वेश शाह मुरादपर कोई असर नहीं हुआ। १७८५ ई०में शाह मुराद छ हजार सवारो के साथ मेवंकी ओर चला। छापा मारकर पहले ही हल्लेमें उसने बहराम अलीको मार डाला। लेकिन उसकी राजधानी आत्म-समर्पण करनेके लिये तैयार नहीं थी। बहराम अलीने सुल्तान सजर सलजूकी द्वारा बनवाये मुर्गाब नदीके बाध—जोकि मेवंसे तीस मील ऊपर था—की सुरक्षाके लिये उसपर बने किलेको तोड़ दिया। बाधका हाकिम अपनी स्त्रीके लिये बहराम अलीके पुत्र मुहम्मद खानसे नाराज था। इसी कारण उसने किलाबन्द महलको शाह मुरादको अर्पित कर दिया। शाह मुरादने बन्दको तोड़कर दुनियामे अत्यन्त उर्वर मेवंकी हरितावली और नहरोको खराब करके बरबाद कर दिया। इससे भयकर अकाल पड़ा, जिसके कारण मेवंवाले आत्मसमर्पणके लिये मजबूर हुये। अधिकांश निवासियो—तेरह हजार परिवार—को गुलाम बनाकर शाह मुराद बुखारा ले गया। इसके बाद उसने खुरासानपर घावा करके लूटमार मचाई। शीया ईरानियोंको मारना या गुलाम बनाना सुन्नी धर्मांध शाह मुरादके लिये पुण्यार्जनका सबसे अच्छा उपाय था। तारीफ यह कि इसपर भी इस समय क्रूरकर्मा शासकको अमीर मासूम (निष्पाप शासक) कहा जाता था। अपने सुन्नी धर्म-भाइयोकी दृष्टिमें वह ऐसी खून-खराबी और लाखो आदमियोंको गुलाम बनाकर कोई पाप नहीं कर रहा था। उसके सालाना हमलोके कारण खुरासानके गांव और नगर उजड़ गये। ईरानी गुलामोकी अधिकताके कारण बुखाराकी बाजारोंमें गुलामोका दाम गिर गया।

मेवं शहरको बहरामअलीके पुत्र मुहम्मद करीम खाने बड़ी बहादुरीसे बचाया था। उसके बाद उसके भाई मुहम्मद कुल्ली खाने भी शाह मुरादसे मेवंकी रक्षा की थी। बाधके सरक्षकने एक वेश्याके प्रेममें अंधे घोखा दिया। हुसेन खा मेवंका राज्यपाल था, उसने जवर्दस्ती उसकी वेश्याको पकड़ मगवाया था।

अफगानिस्तानके अहमद शाह अब्दालीसे शाह मुरादके बापका अच्छा संबंध था। सुन्नी होनेसे वह शाह मुरादकी सहायता करनेके लिये कुछ करना पुण्यकी बात समझता था। इस समय अहमदशाह अब्दालीका पुत्र तेमूरशाह काबुलकी गद्दीपर था। उसने लश्करीशाहके साथ एक सेना शाह मुरादकी सहायताके लिये भेजी। लश्करीशाहका पुत्र खजर खा मेवंके राज्यपालकी बहिनके प्रेममें फंस गया। हुसेन खाने उसे पकड़कर घायल किया, और वह उसी घावसे मर गया। फिर उसने अपनी बहिनको भी मरवा दिया। लश्करीशाह दो हजार परिवारोंके साथ अपनी सेना ले हिरात लौट गया। हुसेनने दूत भेजकर बुखारासे शांति-भिक्षा मांगी, और बादमें स्वयं बुखारा गया। उसे चहारवागमें बड़ी अच्छी तरह ठहराया गया। उसके बाद उसका भाई मुहम्मद करीम खा भी मशहदसे शाह मुरादके



दरवारमें गया। करीम खाके परिवार तथा मेर्वसे लाये सत्रह हजार परिवारोंमेंसे बहुतोंको हुसेन खा, लौटा ले जानेमें सफल हुआ। अन्तमें मेर्वके तीन हजार सुन्नी और दो हजार शीया-परिवार बुखारामें रह गये। शाह मुरादकी उस चोटके बाद मेर्व तब तक नहीं सभल सका, जब तक कि बोलशेविक-क्रांतिने उसे एक आवुनिक ढगके उद्योगप्रधान नगरमें परिणत नहीं कर दिया।

१७५१-५२ ई०से ही बक्ष (आमू-दरिया) के दक्षिणवाले इलाकेके स्वामी अफगान बन गये—यह वही इलाका है, जहां बलख, कुदुज जैसे महत्त्वपूर्ण नगर हैं, और जिसे पहले बाल्खीक, फिर दक्षिण तुखारदेश कहा जाता था और १८ वीं सदीसे आजतक जहां के रहनेवाले अधिकतर उज्बेक हैं। शाह मुरादके वापने अपनी निर्वलताके कारण इस इलाकेको अफगानोंके हाथमें दिया, लेकिन शाह मुरादको यह पसंद नहीं था। अहमदशाह अब्दालीका पुत्र शाह तेमूर १७८६ ई०में सिक्के अभियानमें फसा हुआ था। इसी समय उज्बेक सरदारोंने लोगोंको भडकाकर बलख और अक्सी में विद्रोह कर दिया। शाह मुरादने भी सहायताके लिये सेना भेजी और इस इलाकेसे अफगान हाकिमोंको मार भगाया गया। तेमूर अब्दालीने शाह मुरादको सख्त पत्र लिखकर कहा—“बाहरसे नम्रता दिखलाते हुये तुम इस तरह आक्रमण करते हो? मेर्वमें हमसे यह कहकर सहायता ली, कि हम शीयोको सच्चे धर्ममें लायेंगे, और कहा था, कि मेर्वके शीयोको असली मुसलमान बनानेकी जिम्मेवारी हम ले लेंगे और इस प्रकार हिन्दुस्तानको हिन्दुओं, यहूदियों, ईसाइयों और दूसरे काफिरोंसे मुक्त करनेके लिये अफगान स्वतंत्र रहेंगे। लेकिन, तुमने शहरमज्ज, खोजन्दके सुन्नियोंको तग किया। अब हम तुर्किस्तानके लिये कूच करनेका निश्चय कर चुके हैं। हिम्मत हो, तो तुम मैदानमें आओ।

तेमूरशाह अब्दाली १७८९ ई०में एक लाख सेनाके साथ काबुलसे रवाना हुआ। हिन्दुकुश पार हो पहले उसने कुदुजपर अधिकार किया। फिर अक्सी गया। शाह मुराद भी तीस हजार सेनाके साथ किलिफम बक्ष पार हुआ। लेकिन तेमूरशाहकी सेनाके सामने अपनी शक्तिको निर्वल देखकर उसने नम्रताकी नीतिसे काम लेना चाहा। मुल्ला बीचमें पड़े और उन्होंने कहा, कि दो सुन्नी बादशाहोंको आपसमें लड़कर अपनी शक्तिको बुरावाद नहीं करना चाहिये। शाह मुरादने अपने पुत्रको तेमूरके डेरेमें भेजा और किसी तरह तेमूरशाहकी मृत्यु तकके लिये शांति स्थापित हो गई।

१७९६ ई०में तुर्कमान सरदार आगा मुहम्मदने मशहदको नादिरशाहके पौत्र अब्दुल्लाख से छीन लिया। काजार-वंशका—जिसने ईरानपर २० वीं सदीके प्रथमपाद तक शासन किया—वास्तविक संस्थापक आगा मुहम्मद था। यह हिजडा था। मशहदसे वचित हो जानेपर शाहखका बड़ा बेटा नादिर काबुल-दरवारमें गया और उसने अपने भाइयों तथा सरदारोंको मदद मागनेके लिये बुखारा भेजा। अबुलफैजने अस्त्राखानीकी लड़कीके सवध और रहीमपर दिखलाई अपनी दया, तथा सुन्नी धर्मके नामपर सेना मांगी। उसने शाह मुरादसे यह भी कहा, कि सफलता प्राप्त करनेपर हम बुखाराके अमीरके नामका खुतवा पढवायेंगे। १२ मार्च तक प्रतीक्षा करके कोई सफलता न देखकर वह हिरातकी ओर लौटे। नदीमें घोड़ेसे डुबानेके लिये पुरानी नावपर चढाया गया था, लेकिन राजकुमार किसी तरह नदी तैरकर चारजूइ पहुच गये। असफल होनेपर ख्वारेज्मके एल्वर्स खानके पौत्र तुरा कजाकको नादिरके दामादके मारनेका बदला लेनेके लिये भेजा गया। तुरा कजाक चारजूइके हाकिमके घर ठहरा। बात खुल गई, तो उसने बहुत गिडगिडाकर कहा, कि हम सुन्नी हैं, और तुम्हारे मेहमान हैं। लेकिन उनको क्षमा न करके तुरा कजाकने नादिरशाही राजकुमारोंको मार डाला।

अबुलगाजीके जीवन भर उसीके नामका खुतवा और सिक्का बुखारामें जारी रहा। शाह मुरादने खानकी गद्दीपर बैठ अपनेको केवल “नवाब” या “बली-निअम” ही बनाकर रक्खा। शाह मुराद बड़े ही नाटकीय ढंगसे अपने त्याग और तपस्याको दिखलाता था। दरवारमें कितने ही बकरीके छाले रक्खे रहते थे, वह उन्हींमेंसे किसीपर बैठ जाता और अपनेको दूसरोंसे बड़ा नहीं समझता था। छोटे-से-छोटे कामोंको भी वह अपने हाथसे करनेमें नहीं हिचकिचाता था। उसके रसोईघरमें एक लकड़ीका कटोरा, एक लोहे की कड़ाही और कुछ मिट्टीके बर्तन थे। वह स्वयं बाजारसे चीजें खरीद लाता और अपने हाथसे खाना पकाता। मेहमानोंका हाथ धुलानेके लिये स्वयं पानी डालता

और उनके जूठे कटोरोमे खाता। एक बहुत सस्ते गदहेपर बिना चारजामाके ही बैठकर बुखाराके बाजारोंमें चलता। वह अपनेकी फकीर कहता था। अपने खर्चके लिये राजकोषसे प्रतिदिन एक तका लेता। अपने बावर्ची, चाकर और मुल्लाके लिये भी एक-एक तका देता। बीबी शाही खानदान की थी, इसलिये उसे प्रतिदिन तीन तका दे, ऊपरसे शिक्षा देता—“खातून थोड़ेसे सतोप करो, जिसमे कि अल्ला तुमपर सतुष्ट हो।” लेकिन जब खातूनको पुत्र पैदा हुआ, तो खुश होकर मा-बेटेके लिये पांच तिला (अशर्फी) प्रतिदिन देने लगा। दूसरे दो पुत्रोंके पैदा होनेपर उतना ही और देता रहा। इस प्रकार अपने परिवारको यद्यपि उसने सुखपूर्वक रक्खा, लेकिन स्वयं एक बिल्कुल बिना सजाई छोटी-सी कोठरीमें रहता, जहापर हर वर्गके आदमी उसके पास हर हमय जा सकते थे। फकीरोंकी तरह उसकी पोशाक बड़ी मोटी-झोटी होती। न्यायालयमें उसने चालीस मुल्ला रक्खे थे, जिनका अध्यक्ष स्वयं था। डाका डालनेके अपराधके लिये मृत्युदंड, चोरीके लिये हाथ काटना, शराबीको खुलेआम कोड़े लगाना, तमाकू पीनेके लिये भी कड़ी सजा होती थी। लोगोंको नमाजमे भेजनेके लिये पुलिस डंडा लिये तैयार रहती। विद्यार्थियोंको राजकोषसे खर्च मिलता, जिससे बुखाराके मदरसोंमें एक समय तीस हजार विद्यार्थी रहते थे। विदेशी मालपर छोडकर और किसी तरहका शुल्क नहीं था। गैर-मुस्लिमोंसे इस्लामी शरीयतके अनुसार जजिया ली जाती थी, और सिपाही शीयोंको लूटकर जो माल लाते, उसका पचमाश शाही खजानेमें देते।

उज्जैक उसे सचमुच ही अल्लाका वली मानते। जब वह जहादियोंकी सेना लेकर खुरासानपर लूटके लिये जाते, तो भारी रसदके सामानको कई मँजिल पीछे छोड देते, हरावलमें केवल सवार-सैनिक होते। गाजियोंकी सेना इलाकेमे छा जाती, और लूटमार तथा लोगोंको बंदी बनानेका काम शुरू कर देती। हर एक जहादी (धर्मयोद्धा) को अपने और अपने घोडेके लिये सात दिनका आहार साथ ले जाना पडता। अभ्यासके साथ शाह मुरादके मुजाहिद (धर्मयोद्धा) इतने अभ्यस्त हो गये थे, कि बे-रोक-टोक एकाएक किसी किले, प्राकारबद्ध गाव, नगर या काफिलेपर टूट पडते। बंदी बनाये हुये आदमियोंके लिये मुक्ति-धन मागते, जिसके न मिलनेपर उन्हें दास बनाकर बेच देते। शाह मुराद ईरानियोंके विरुद्ध धर्म-युद्धोंमें स्वयं अपने आदमियोंके आगे-आगे रहता। फकीरोंकी पोशाक पहने एक छोटे-से टट्टूपर बैठा वह गाजियोंका सचालन करता। उसके अनुशासन बडे कडे थे। नमाज, रोजा आदि धार्मिक कर्तव्योंकी बड़ी कडाईसे पालन कराता। सभी इस्लामी देशोंमें “रईस शरीयत” (धर्माधिकारी) पदको उठे बहुत दिन हो गये थे, लेकिन शाह मुरादने बुखारामे फिरसे इस पदकी स्थापना की। चोरो और बेइश्याओंको वह सीधे जल्लादके हाथमे दे देता, लेकिन इन सारी धार्मिक कडाइयोंका परिणाम बुखारावालोंके लिये उलटा ही पडा।

चिन्नरनके सरदार मएश खानने शाह मुरादके बहनीई तथा जीजकके हाकिम ईशान मखदूम-पुत्र ईशान नकीबके नाम चिट्ठी देकर दूत भेजा। दूतने अपने कामका इस प्रकार वर्णन लिखा है—“मुझे, ईशान नकीबके सामने पेश किया गया। वह एक बडे ही सुंदर तम्बूके दूसरे छोरपर बैठा था। अभी हमे बैठे देर नहीं हुई थी, कि एक अफसर तम्बूमें आया और उसने ईशान नकीबको कहा, कि बेगीजान (शाह मुराद)की इच्छा है, कि आप अपने मेहमानके साथ आवे। हम खडे हो गये और अपने-अपने घोड़ोंपर चढकर ईशान नकीबके साथ चले। कुछ दूर जानेके बाद हमें एक बासका तम्बू मिला, जिसकी शकल-सूरत और फटी हालतको देखकर मैंने समझा, कि किसी बावर्ची या भिस्तीका तम्बू होगा। एक बूढ़ा आदमी धूपसे बचनेके लिये उसीकी छायामें घासपर बैठा हुआ था। सब घोडेसे उतर पडे और हरे तथा अत्यन्त गदे कपडे पहने हुये बूडे आदमीकी तरफ बडे। उसके पास जाकर खडे हो सबने अपने दोनों हाथोंको छातीपर रखकर आदरके साथ सलाम किया। उसने हर एक आदमीको सलामका जवाब दिया, और अपने सामने बैठनेके लिये कहा। वह ईशान नकीबके लिये बहुत मेहरबानी दिखलाता मालूम होता था, और उसे अपनी बातचीतमें उत्तुर सूफीके नामसे संबोधित करता था। मैंने अपना पत्र ईशान नकीबके हाथमें दिया। उसने उसे हरे कपडेवाले बूडेके हाथमे थमा दिया, जिसके बारेमे अब मुझे पता लगा, कि वह बेगीजान (शाह मुराद) है। उसने चिट्ठीको खोलकर पढा और फिर अपनी जेबमे डाल लिया।

. हमारी बातचीत होने लगी। इसी बीच बहुत-से दरबारी अमीर आये और मैं उनके असाधारण भडकीले, तथा मूल्यवान् हथियारों तथा पोशाकको देखता रहा। उनके आनेके थोड़ी देर बाद उनका सरदार (शाह मुराद) एक गहरे ध्यानमें डूब गया और जब तक कि शामके नमाजकी घोषणा नहीं हुई, तब तक वह उसी ध्यानमें लीन रहा। दूसरे दिन बिदाईकी बात होते समय उसका रसोइया कमजोर आखोवाला एक नाटा आदमी तम्बूके भीतर आया। वेगीजानने कहा—“क्यों नहीं तुम खानेका प्रवध करते हो? जल्दी ही नमाजका समय होनेवाला है।” नाटा रसोइया तुरन्त एक बड़ा काला वर्तन लाया और पत्थरोंको रखकर चूल्हा बना उसने चार-पाच तरहके अनाज और थोड़ासा सूखा मास डालकर उसे चूल्हेपर चढ़ा वर्तनको पानीसे गले तक भरकर, आग जला उसे पकनेके लिये रख दिया। फिर वह तश्तरिया ठीक करने लगा। यह लकड़ीकी तश्तरिया वैसी ही थी, जैसी कि अत्यन्त गरीब लोग इस्तेमाल करते हैं। उसने तीन तश्तरी रखकर पकी हुई चीजको उसमें उड़ेल दिया। वेगीजान रसोइयेकी ओर नजर लगाये हुये था। उसकी नजर के सकेतसे रसोइया जानता था, कि कितना कमवैसी तश्तरीमें डालना चाहिये। जब सब ठीक हो गया। उसने एक गदे कपडेको लेकर फैला दिया, फिर उसके ऊपर एक पुरानी जौकी रोटीका टुकड़ा रख दिया, अल्ला ही जानता होगा, कि हिजरीके कौनसे सनमें उसे पकाया गया था। वेगीजान ने रोटीको पानीके प्यालेमें भिगोया। पहली तश्तरी उज्वेकोंके शासक (शाह मुराद) को दी गई, दूसरी तश्तरी मेरे और ईशान नकीवके बीचमें रखी गई, और तीसरीको रसोइया ले अपने स्वामीके सामने खानेके लिये बैठ गया। मैं पहले ही खा चुका था, इसलिये अपने सामने रखी चीजको सिर्फ चख भर लिया। बड़ी ही दुस्स्वादु थी, गोस्त तो करीब-करीब सड़ा हुआ था, लेकिन तो भी भीतर आये बहुत-से अमीरोंने हमारे छोड़े हुये खानेको खाकर खतम कर दिया, उनके देखनेसे मालूम होता था, कि वह भोजन उन्हें बहुत पसंद आया, लेकिन शायद वह अपने पवित्र नेताको प्रसन्न करनेके लिये ही ऐसा कर रहे थे।

#### ४ हैदर, शाह मुराद-पुत्र (१७९९-१८२६ ई०)

अब हम उस समयमें आ गये, जब कि अंग्रेज कपनीका शासन भारतमें दृढ़ता पूर्वक स्थापित हो चुका था और १९ वी सदीका आरम्भ होनेवाला था। शाह मुरादने रहीम खानकी विधवा तथा अस्त्राखानी अबुलफैजकी लड़की शैम्सवानू आयमसे व्याह किया था। इसीसे शाह मुरादका सबसे बड़ा बेटा हैदर तुरा (कुमार हैदर) पैदा हुआ। मुरादके मरनेपर तख्तके लिये उमर वी, फाजिल वी, महमूद वीके बीच झगडा हुआ, लेकिन नागरिक अपने औलिया फकीर वादशाहके अधभक्त थे, वह क्यों चाहने लगे, कि तख्तसे औलियाके बेटेको वचित करके चचा शासन करे। बुखारावाले उमरके लोगोपर दूट पड़े। उमर किसी तरह जान लेकर भागा, लेकिन लोगोंने उसके घरको लूट लिया, वीवी-बच्चोको कपडा छीन नगा करके छोड़ दिया। शाह मुरादकी ल.श तीन दिनसे महलमें पड़ी हुई थी। हैदर बड़ी तडक-भडकवाले अनुचरोके साथ गद्दीपर बैठा। पीछे बच्चों सहित उमर वी और फाजिल वी भी पकडकर मार डाले गये। महमूद वी भागकर खोकन्द चला गया। अभी सिंहासनपर बैठे देर नहीं हुई थी, कि भाई मुहम्मद हुसेनपर भी पड्यत्रमें शामिल होनेका सदेह हुआ। इसपर समरकन्द छीनकर ईरानी दौलतकुश वेगीको वहाका हाकिम बना, भाईको पेंशन दे नजरबन्द कर दिया। इसके बाद हैदरकी निगाह मेर्वके हाकिम हाजी मुहम्मद खा तथा उसके सवयी करीम खा और वहरामअली खापर पड़ी, और इन वारह राजकुमारोंको पकडकर भेड-वकरिया की तरह मरवा डाला। उनकी वीवियों और बच्चोको भेंटके रूपमें लोगोमें बांट दिया। किस कसूरपर उन्हें यह दंड मिला, इसे कोई नहीं जानता। हैदरकी हत्याओंसे डरकर उसका भाई नासिख्दीन परिवार-सहित मेर्वसे मशहद भाग गया।

अब हैदरने अपनी दिग्विजयोको शुरू किया। १८०४ ई०तक उरातिप्पा, खोजन्द और ताशकन्दको उसने ले लिया। इसी साल हैदरने अपना दूत हसी जारके पास पीतरवुर्ग भेजा, जो मास्को, अस्त्राखान, खीवा और उरगजके रास्ते लौटा। खीवाके खान इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें आकर

लूट-मार की, जिसपर नियाज बीके नेतृत्वमें तीस हजार बुखारी-सेनाने जाकर इल्तजारको हराया, और वक्षु पार हो जान बचानेके प्रयत्नमें डूबकर इल्तजारने अपने प्राण खोये। लूटके मालमें खीवावालीका बहुत-सा खजाना बुखारियोंके हाथमें आया, जिसके साथ एक तुर्क (घोडेकी पूछ वाला) झडा भी था। सेना बंदियोंके साथ लूटका माल लिये बुखारा लौटी। हैदरने हथियार छीनकर बंदियोंको छोड़ दिया और अफसरीको खलअत भी दी। इल्बर्सकी जगहपर उसके भाई कुतलीमुराद बेकको ईनककी पदवी देकर हैदरने खीवाका हाकिम नियुक्त किया, लेकिन वहा पहुंचनेसे पहले ही उसके छोटे भाईको लोग खान बना चुके थे।

हैदरने यद्यपि आरम्भमें अपने सबधियो, और जिससे भी खतरेका डर मालूम हुआ, उसे बुरी तरहसे मारा और बरबाद किया, किन्तु पीछेके जीवनमें वह नरम स्वभावका, उदार, न्यायप्रिय आदमी बन गया। उसकी भी इस्लाम-भक्ति बापकी तरह धर्मान्विता तक पहुंच गई थी। यद्यपि बापके इतना नहीं, तो भी वह सादगीसे रहता था। उसके कपडे सीधे-सादे तथा प्रायः सफेद रंगके होते थे। रोटी और सब्जी यही उसका भोजन था। अपने खर्चके लिये वह यहूदियोंपर लगाये करको इस्तेमाल करता था। उसका दरबार किसी दर्वेश या मुल्लाका दरबार था। वह मेम्बरपर खडा हो व्याख्यान देना बहुत पसंद करता था। वह लम्बा और सुन्दर था, उसका रंग कुछ पीला लिये हुये अधिक गोरा था। मूहपर भरी हुई दाढी थी। अपनेको सदाचारी दिखलानेका बहुत शौक था और इस्लामी शरीयतके अनुसार चारसे अधिक बीविया नहीं रखता था। हा, यदि दूसरी कोई सुन्दरीको बीवी बनाना चाहता, तो एकको घर और पेशन दे तलाक दे देता था। दासियोंकी सख्यापर शरीयतने कोई प्रतिबंध नहीं रखा है, इसलिये हर महीने कोई न कोई सुन्दरी दासी उसके हरममें दाखिल होती रहती। अपनी दासियोंकी कन्याओंको वह मुल्लाओं या सैनिकोंको प्रदान करता।

**शासन-प्रबंध**—बुखाराका राज्य उस समय सात तुमानोंमें बटा हुआ था। हरएक तुमानका हाकिम नकीम और उसका सहायक वजीर होता, जिन्हे अमीर नियुक्त करता। हर तुमानमें बहुत-से गांव होते, जिनके लिये ग्रामकी जनता अपना अवसकाल (श्वेत दाढी) नामक ग्रामपति निर्वाचित करती। अक्सकाल एक मर्तबे निर्वाचित होकर, यदि किसी अपराधके कारण हटाया न जाय, तो जिन्दगीभर अपने पदपर रहता, बल्कि अक्सर उसका पद पंतुक हो जाता। अक्सकालका काम था—आपसी झगडे तै करना, कर उगाहना और राज्यके लिये सिपाही देना। गावमें हर व्याहमें कुछ भेट और भोजमें उसे निमंत्रण मिलता, साथ ही फसलके अनाजमें भी उसका हिस्सा बढा था। जमीनपर कर दहयक (दशाश), गल्लेपर चालीसवा हिस्सा, और सौदेपर भी चालीसवा हिस्सा देना पडता। नायब नकीमके सहायक होते, जो अधिकतर मुल्ला थे। गावोंके शासनमें उनका भी अधिकार था। धनी और प्रभावशाली उज्वेकोंको वेग या वाय कहा जाता। बुखाराके पास चालीस हजार सेना थी, जिसे आवश्यकता पडनेपर नये रगस्टोका भर्ती करके बढाया जा सकता था। सैनिकोंके पास भाला, ढाल-तरवारके अतिरिक्त थोड़ी सख्यामें पलीतेवाली बन्दूकें भी थी।

**वैदेशिक संबंध**—१८२० ई०में रूसका एक दूतमडल बुखारा आया। इसका नेता नैंगरी था, जिसके साथ वीरोन मेयेदोर्फ भी था। १८१६ ई० और १८२० ई०में बुखाराके दूत दो बार जारके दरबारमें जा चुके थे, उसीके जवाबमें यह रूसी दूतमडल आया था। दूतमडलके साथ कुछ कसाक सैनिक भी थे। कई सौ ऊटोपर रसद और सामान ले दूतमडलने १०० अक्तूबर १८२० ई० को ओरेनबुर्ग छोडा। दस्त-कजाक (दस्ते किप्चक) पार हो अगतमामें पहुंचा। बुखाराकी सीमापर उसका बडा स्वागत हुआ। वस्तियोंमें उन्होंने बुखारियोंके बीचमें सफेद पगडीवाले रूसी गुलामोंको भी अपनी आखों देखा। दूतमडल २० दिसम्बरको बुखारा नगरमें दाखिल हुआ। वह अमीरकी भेंटके लिये अपने साथ समूरी छाल, चीनी वर्तन, बडिया काचके वर्तन, घडिया और बन्दूकें लाये थे। शहरके एक दरवाजेसे सैनिक ढगसे दाखिल हो महलके पास पहुंच हसी घोड़ोंसे उतर पडे। वहा करीब चार सौ सैनिक बन्दूक लिये दो पातियोंमें खडे थे, जिनके बीचसे

दूतमंडल आगे बढ़ा। एक महलके आगनमें तीन-चार सौ सफेद पगड़ीवाले बुखारी स्वागतके लिये खड़े थे। अन्तमें वह दरवार-हाल में पहुँचे। खान वहाँ एक सुनहली किनारेवाली लाल गद्दीपर बैठे था। उसकी बाईं ओर उसके दो पुत्र थे, जिनमें बड़ा पंद्रह सालका था, दाहिनी ओर कुशवेगी (प्रवानसेनापति) था। रुसियोंने अपना प्रमाणपत्र पेश किया। इसके बाद अमीरने कसाक सैनिकोंको देखना चाहा। जब कसाक हालमें लाये गये, तो अमीर हैदर बच्चोंकी तरह खिलखिलाकर हँसा।

बुखारामें यहूदी काफी सख्यामें रहते थे, लेकिन वह सिर्फ तीन महल्लोंमें ही बस सकते थे। अधिकतर उनमें दस्तकार, रंगरेज और कुछ रेशमके व्यापारी थे। उनसे जजियाके रूपमें प्रतिवर्ष अस्सी हजार ख्वल वसूल किया जाता। नगरके भीतर कोई यहूदी न घोड़ेपर चढ़कर निकल सकता था, न रेशमी पोशाक पहन सकता था। अपना परिचय देनेके लिये एक खास तरहकी चौड़ी टोपी काले मेमनेके चमड़ेकी पट्टी लगाकर उन्हें पहिननी पड़ती। वह अपने लिये नया मंदिर नहीं बनवा सकते थे। बुखारा और हसका व्यापार पुराने जमानेसे चला आता था। पहले इसके लिये एक बहुत भारी मेला मकरियेफमें लगता था, जिसे १८१८ ई०में निज्जीनवोगोरद (आबुनिक गोर्की) में बदल दिया गया। ओरेनबुर्ग और त्रोइत्स्कमें बुखारी व्यापारके लिये जाते, जिन्हें रास्तेमें कजाक अक्सर लूट लिया करते थे। रुसियोंने अपनी यात्राका जो वर्णन लिख छोड़ा है, उससे मालूम होता है, कि वहाँ चारों तरफ लूट-खमूटका बाजार गर्म था, और कोई अपनी सम्पत्तिका दिखावा करनेसे डरता था। शौकीनी, और विलासिताके जीवनका भी आकर्षण काफी था, यद्यपि बाहरसे अपनेको बड़ा सदाचारी दिखलाया जाता। खान अपने निजी जीवनमें किसी तरहकी पाबन्दी नहीं रखता था। उसको डर था, कि कहीं कोई त्रिप न दे दे, इसलिये उसके खानेको पहले बावर्ची चखता, फिर कुशवेगी भी चखकर उसे ढाककर अपनी मुहर लगा देता। शहर छोड़ते समय वह पुत्रको भी छोड़ जाता। रुसियोंके कयनानुसार हैदरके हरममें दो प्रकारकी स्त्रिया थी, जिनमें चार व्याही थी—हिंसारी, समरकन्दखोजाकी पुत्री, अफगानके शाहजमाकी पुत्री।

हैदरका पुत्र नसरुल्ला करशीमें रहता था। १८२६ ई० में वह बेटेके पास गया, जहाँसे लौटते समय बीमार हो बुखारामें पहुँच ६ अक्तूबर १८२६ ई० को मर गया।

इन दो पीढ़ियोंमें लाठीके जोरसे लोगोंको जो सदाचारी बनानेका प्रयत्न किया गया था, उसका परिणाम अब अप्राकृतिक व्यभिचारके रूपमें बहुत बुरी तौरसे फैला। शराब और तम्बाकू वर्जित कर दिये गये थे, लेकिन उनका स्थान अब अफीम और भगने ले लिया था।

### ५ हुसेन, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

पिताके मरनेपर हुसेन बुखारामें था, इसलिये वह झट गद्दीपर बैठ गया, लेकिन तीन मास बाद ही वह मर गया। फिर उसके भाई मीर उमरने गद्दी सभाली।

### ६ उमर, हैदर-पुत्र (१८२६ ई०)

मीर उमरने गद्दी सभाली, लेकिन नसरुल्ला ताकमें था। उसने २४ अप्रैल १८२७ ई० को आकर बुखारा ले लिया।

### ७ नसरुल्ला, हैदर-पुत्र (१८२६-६० ई०)

अपने शासनके आरम्भिक कालमें नसरुल्ला नेक और न्यायप्रिय था। उसे “अमीरुल् मोमिनीन” (मुसलमानों का अमीर), “हजरत” और “इस्लामके खलीफा (तुर्कीके सुल्तान) का वनुर्वर” कहा जाता। लेकिन पाच-छ वर्षमें अधिक वह इस जीवनको नहीं बिता सका। इसी समय १८३२ ई०के आस पास तत्रेजमें पैदा हुआ अब्दुसमद खा नामक ईरानी बुखारा दरवारमें पहुँचा। उसने जेनरल कोर्ट (एक अग्रेज अफसर) के नीचे रहकर कुछ पश्चिमी सैनिक-विद्या सीखी थी। मुहम्मदजली

मिर्जाने उसे कुछ समय किरमानशाहका हाकिम बनाया था, जहा किसी कसूरमे उसके कान काटे गये। फिर भारत और पेशावरमे कितने ही समय रहकर वह काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मद खाकी सेवामे रहा। तब अंग्रेजोके प्रति भारी घृणा लेकर वह बुखारा पहुँचा। कुशवेगी हाकिमवेग अब्दुस्समदसे बहुत प्रसन्न हुआ, और उसे अपना नायब बना सेनाको फिरसे सगठित करनेके काममें लगा दिया। अब्दुस्समद बुखारामें अंग्रेजोकी कोई बात चलने नहीं देता था।

उबेज्क कहावतके अनुसार “राजा उस युगका दर्पण होता है” मान लिया जाय, तो नसरुल्लाके रूपमें बुखारा दुराचार और अत्याचारमे अपनी पराकाष्ठामे पहुँचा था। नसरुल्ला हैदरका पुत्र था, लेकिन अपनी कुटिल नीतिमें अपने दूसरे भाइयोसे कही आगे बढ़ा हुआ था। कुशवेगी (सेनापति) हाकिम वी और ससुर आयाज तोपची वाशी (तोपखानाका जेनरल अयाज) उसके पक्षमें थे। जब हैदरके मरनेपर बड़ा भाई हुसेनखा गद्दीपर बैठा, तो नसरुल्लाने अपनी बड़ी गर्म-गर्म वफादारी दिखलाई, लेकिन साथ ही करशीसे वह आगेके लिये तैयारी भी करता रहा, जिसमें उसका प्रधान-सहायक मीर अमीन वेग दादखा था। तीन ही महीनेके शासनके बाद भाई मर गया—कहा जाता है कुशवेगीन उसे जहर दे दिया। करशीके प्रधान काजीने नसरुल्लाके पक्षमें अपना फैसला दे समरकन्दके काजीको भी वैसा ही करनेके लिये कहा, लेकिन इसी बीच दूसरे भाई उमरखाने बुखारापर अधिकारकर समरकन्द को किसी हालतमे भी न देनेके लिये हुक्म दिया। लेकिन नसरुल्लाके आनेपर दरवाजा खोल दिया गया, क्योंकि समरकन्दके मुल्ला उसके पक्षमे थे। कोकताश (नील-पापाण) के ऊपर तेमूरके जमानेसे ही गद्दी देनेकी रसम पूरी की जाती थी। वही नसरुल्लाके सिरपर ताज रक्खा गया। कत्ताकुर्गान, करमीना आदि नगरोंने उसका शासन स्वीकार किया, फिर बुखाराको उसने घेर लिया। घेरावेके कारण लोगोकी हालत बुरी हो गई। आध सेर मास चादीके सात तकमे बिकने लगा। बाहरसे कोई खानेकी चीज आने नहीं पाती थी। उन्हें लोग लाशोके साथ जनाजेमें छिपाकर लाते। नहरके पानीमे भी ‘असह्य’ सड़ाद आने लगी थी। भीतरसे कुशवेगी और ससुर अयाज नसरुल्लाके पक्षमें थे ही। उनको बहाना मिल गया। बड़ी तोपको दागकर फोड़ दिया गया था। नसरुल्लाने २२ मार्च १८२६ ई० को दो तरफसे शहरपर आक्रमण कर दिया। चारो ओर विश्वासघात देखकर उमर जान लेकर भाग गया, लेकिन उसके तीन भाइयो और बहुत-से अनुयायियोको पकड़कर नसरुल्लाने मरवा डाला। अपनेको काफी मजबूत कर लेनेपर अपने सहायक कुशवेगीको पहले करशी और फिर समरकन्दमे निर्वासित कर दिया। अपने ससुर तोपची वाशीको बुलाकर सुन्दर घोंडेपर सवार कर समरकन्दका हाकिम बनाकर भेजा, लेकिन तुरन्त ही बुखारा लौटनेका हुक्म देकर उसे जेलमें कुशवेगीके साथ बन्द कर दिया। फिर जिनके विश्वासघातके बलपर उसे गद्दी मिली थी, उन दोनोको उसने १८४० ई०मे कत्ल करवा दिया। सैनिक अफसरोंमेंसे भी उसने चुन-चुनकर बिना मुकदमा किये कितनोको मरवाया और कितनोको निर्वासित कर दिया। अन्तमे मुल्लोके ऊपर पड़ा और उन्हें हर तरहसे दबाकर शरीयतकी जगह अपने हुक्मको सर्वोपरि बनाया।

कुशवेगी तोपची वाशीको १८४० ई०के वसतमे मरवानेके बाद अब नसरुल्लाके सामने कोई बाधा देनेवाला नहीं रह गया। तुर्कमान रहीमवर्दी माजूमको हथियार बनाकर वह अपना काम लेता था। किसी समकालीन लेखकने उसके शासनके वारेमे लिखा है—“नमाज पढ़नेके लिये लोगोको डडोसे पीटा जाता, सिपाही जबह किये जाते या जान बचाकर भागनेके लिये मजबूर होते।”

लेकिन कुशवेगी और तोपची वाशीके मरनेसे पहले ही १८३९ ई०में माजूम तुर्कमानका समय बीत चुका था। अब सभी पदोको अमीरने अपने हाथमे रखना चाहा। वजीरके लिये कोई चाहिये, तो वह अपने प्रिय छोरोंमेंसे किसीको तीन-चार सालके लिये बैठा देता, उसके बाद फिर किसी दूसरेको लाता—हटाते वक्त उनके सारे धनको छीन लेता।

ऐसे अत्याचारी, क्रूर और पतित आदमीको सब जगहसे भय होना जरूरी था। इसके लिये उसने नगर, बाजारो, मदरसो, मस्जिदो, हम्मामोंको अपने गुप्तचरोंसे भर रक्खा था।

पिशागरमें किलेको न ढानेसे नाराज होकर वह खोजन्दके खान बेगलर बेकके विरुद्ध

चढ़ा। तीन सौ सरवाजो और नायब समदकी ढाली कुछ तोपोंके साथ जा अगस्त १८४० ई० में खोकन्दियोंको हराया। १८४१ ई०की शरदमें खोकन्दियोंकी लूट-मारका बदला लेनेके लिये वह फिर हजार सरवाजो (सिपाहियो), ग्यारह तोपों और दो मारतोलोंके साथ गया। २१ सितम्बर को याम, और २७ को जमीनपर अधिकारकर वह उरातिप्पाको लूटते ८ अक्तूबरको खोजन्द नगरमें दाखिल हुआ। खोकन्दके खानने मजबूर होकर सुलह की और भारी हर्जानेके साथ खोजन्द तकका प्रदेश नसरुल्लाको देकर नसरुल्लासे सुलह की, साथ ही अधीनता स्वीकार करते उसके नामका खुतवा और सिक्का चलाया। नसरुल्ला खोकन्दके खानके भाई तथा प्रतिद्वंद्वी सुल्तान महमूदको खोजन्दका हाकिम बनाकर बुखारा लौट गया। लेकिन उसके लौटते ही सुल्तान महमूदने अपने भाईसे मेल कर लिया। जब इसकी खबर नसरुल्लाको लगी, तो वह फिर दड देनेके लिये आया, और २ अप्रैल १८४२ ई०को खोजन्दको हाथमें करके राजधानी खोकन्दको भी आसानीसे सर कर लिया। खोकन्दी खान मदली दस दिन बाद मर्गिलानमें पकड़ा गया, और अपनी खास भाके साथ व्यभिचार करनेका अपराध लगाकर उसे, उसके भाई, स्त्री तथा दो पुत्रोंके साथ मरवा डाला गया—मदलीकी गर्भिणी स्त्रीके भी प्राणोंको नहीं छोड़ा गया।

अग्रेजोंकी चालें—१७ वी सदीमें पीतर I के समयसे ही रूसने बुखाराके साथ अपना सबंध स्थापित किया था, और तबसे जब-तब दूतमंडल आते-जाते रहे। १८३४ ई०में डाक्टर देमेटोन मुल्ला बनकर बुखारा गया। १८३५ ई०में विल्कोविच कजाकका भेष बनाकर पहुंचा। १८ वी सदीमें ही पहला अग्रेज कप्तान बार्निस बुखारा गया। ओरेनबुर्ग बुखारी व्यापारियोंके लिये एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक नगर था, जिसके जरिये १९ वी सदीके पूर्वार्धसे रूस और बुखारामें व्यापार होने लगा था। उस समय खीवावालोंसे रूसका सबंध जितना विगड़ा हुआ था, उतना बुखारियोंसे नहीं। १८३४ ई०में ओरेनबुर्गके राज्यपालने अमीर नसरुल्लाके पास पत्र लिखकर शिकायत की, कि खीवावाले रूसियोंके साथ बुरा बर्ताव करते हैं, और उन्होंने कितने ही रूसियोंको दास बना रखा है, खीवावाले रूसी प्रजा कजाकोपर लूटमार करते हैं, इसीलिये जारने हुक्म दिया है, कि जबतक खीवावाले रूसी प्रजाको नहीं छोड़ते, तबतक खीवाके व्यापारियोंको रोक रखा जाय। १८३६ ई०में ही कुर्बान बेक अशुरबेक अमीर-बुखाराका वकील बनकर ओर्स्क होते पीतरबुर्ग पहुंचा।

बुखारामें अपनी कार्रवाई शुरू करनेसे पहले कितने ही सालोंसे ईरानी दरबारमें अग्रेज और रूसी अपने दाव-पेंच चला रहे थे। अग्रेजी राजदूतने बुखारासे सबंध पैदा करनेके लिये १८३८ ई०में कर्नल स्टोडर्टको भेजा। इसी समय बुखाराके दूतमंडलने बीस आदमियोंके साथ एक हाथी, कश्मीरी शाल और कुछ रूसी वन्दियोंको छुड़ाकर साथ लिये ओर्स्क होते हुये पीतरबुर्ग पहुंच जारके दरबारमें कहा—“मेरे स्वामी रूसियोंके साथ मित्रतापूर्ण सबंध स्थापित करना चाहते हैं। अग्रेजोंने बुखारामें अपने एजेंट भेजकर व्यापार करनेकी कोशिश की है। रनजीतसिंहके खतरेसे परेशान हो काबुलके अमीरने भी हमारे मालिकसे संधि करनेका प्रस्ताव किया है।”

इस प्रकार उसने जारकी मित्रता और सदिच्छा प्राप्त करनेकी कोशिश करते हुये सोना तथा दूसरे मूल्यवान् धातुओंका पता लगानेके लिये अपने यहा एक इजीनियर अफसरको भेजनेके लिये प्रार्थना की। बुखाराके राजदूतको लौटते वक्त जारकी ओरसे बहुत-सी भेंट मिली। अप्रैल १८३९ ई०में अमीरके बुलबेके अनुसार धातु-इजीनियर कप्तान कोवालेव्स्की और कप्तान हेर्नगियोस, एक दुभाषिया, एक मुख्य खनक, चार कसाक सैनिकों तथा कुछ और आदमियोंके साथ बुखाराकी ओर रवाना हुये। उनको यह भी भार दिया गया था, कि अमीरसे बुखारामें एक रूसी कोसल रखनेके लिये वातचीत करे। यद्यपि अभी पजावपर रणजीतसिंहका अधिकार था, लेकिन सिंध अग्रेजोंके हाथमें था, जहासे वह काबुलमें अपने प्रभावको बढ़ानेकी कोशिश कर रहे थे। रूस भी वहा अपने प्रभावको बढ़ाना चाहता था। इस प्रकार अफगानिस्तानमें दोनों साम्राज्योंकी जोरकी प्रतिद्वंद्विता चल रही थी। दिसम्बर १८३७ ई० में विल्कोविच काबुल पहुंचा। अग्रेजोंके मनमें सदेह बैठ गया, कि अमीर दोस्त मुहम्मदको रूसियोंने अपनी ओर मिला लिया है। अग्रेजोंने दोस्त मुहम्मदके विरुद्ध उसके प्रतिद्वंद्वी शाह शुजाकी पीठ ठोकी, और रणजीतसिंहको भी

काबुल तक चढ दौड़नेके लिये उभाडा । इतनेसे भी सतुष्ट न हो काबुलसे रूसियोंके प्रभावको बिल्कुल खतम करनेके लिये १८३९ ई०के वसतमें अंग्रेजी सेना अफगानिस्तानकी सीमामें दाखिल हुई, और ७ अगस्तको काबुलमें पहुचकर शाह शुजाको गद्दीपर बैठानेमें सफल हुई । दोस्त मुहम्मद अपने परिवार तथा तीन सौ पचास परिचारकोंके साथ भागकर बुखारामें नसरुल्लाके पास चला गया । नसरुल्लाने पहले उसका बडा स्वागत किया, लेकिन जब उस पतितने दोस्त मुहम्मदके सुन्दर पुत्र सुल्तान जानको अपनी कामुकताका शिकार बनाया, तो मनमुटाव हो गया । अब नसरुल्ला अंग्रेजोंसे मेल करना चाहता था, और शाह शुजासे भी मिलकर उसके भाई तथा अपने मेहमान दोस्त मुहम्मदको खतम करना चाहता था । इसपर दोस्त मुहम्मदकी ओरसे ईरानके शाहने धमकी दी, जिसके डरके मारे नसरुल्लाने दोस्त मुहम्मदको मक्का जानेकी इजाजत दे दी, साथ ही चुपके-चुपके मल्लाहोको भी हुक्म दे दिया, कि वक्षुमें नावको डुबा देना । इसकी खबर पहले ही लग गई, इसलिये स्त्री-भेसमें दोस्त मुहम्मद पहले शहरसब्ज फिर खुल्म और अन्तमें काबुल लौट गया ।

कर्नल स्टोर्ट हिरातके हाकिमके परिचय-पत्रके साथ रमजानके आरम्भ होनेसे दो दिन पहले बुखारा पहुचा । अफगानोंसे अच्छा सवध न होनेके कारण पत्रने सदेहको और बढ़ानेका काम किया । कर्नलको पैदल जाकर रेगिस्तान नामक मैदानमें अमीरसे भेट करनेके लिये कहा गया, लेकिन उसने घोड़ेपर चढकर जानेकी जिद्द की । बुखारामें मुसलमान छोडकर कोई घोड़ेपर चढकर निकल नहीं सकता था, फिर इस ईसाईको कैसे वैसे करने दिया जाता ? और रेगिस्तानके मैदानमें तो सिर्फ अमीर ही घोड़ेकी सवारी कर सकता था । कर्नल घोड़ेपर चढकर वहा पहुचा और अमीरके आनेपर भी उसने घोड़ेपर चढे ही सैनिक सलाम दिया । अमीरने इसे अपना अपमान समझा । उसे महलमें बुलाया गया । प्रतिहारने “अर्ज वदेगान” (सेवकोंका निवेदन) जब कहा, तो कर्नलने इसका भी विरोध करते कहा “परमभट्टारक” सिर्फ भगवान्के लिये कहा जाता है । “आपका अत्यन्त नम्र सेवक” कहनेपर भी उसने आपत्ति की । दरबारी प्रथाके अनुसार दो आदमियोंको बगलमें सहारा देकर चलनेसे भी इन्कार कर दिया । जब हथियारकी पडताल करनेकी रसम अदा करने के लिये दरबारी अफसर आये, तो उन्हें भी कर्नलने मुक्का मारकर गिरा दिया । चुपचाप अर्ज करनेकी जगह स्टोर्टने बडे ऊचे स्वरसे फारसी भाषामें भगवान्के लिये प्रार्थना करनी शुरू की । अमीर उस समय अपने तख्तपर बैठा इस ढीठ विदेशीके प्रति अपार घृणासे जलता-भुनता दाढीपर हाथ फेर रहा था । अमीरने प्रमाणपत्र मागा, तो उसने अंग्रेज राजदूत जान मेकनेलका पत्र दिया, जिसमें रूसियोंके भीतर न आने देनेपर ईस्ट इंडिया कंपनीकी ओरसे सहायतार्थ धन देनेका वचन दिया गया था । अमीरने उत्तरमें कहा—“बहुत खूब, मैं जानता हूँ, तुम लोग मुझे अपना गुलाम बनागा चाहते हो । बहुत अच्छा, मैं तुम्हारी खिदमत करूँगा,” और उठकर चला गया

इसके दो दिन बाद कर्नलको वजीरके घरमें बुलवा कुछ आदमियोंने पकडकर उसके हाथ-पैर बाध दिये, फिर वजीरने उसकी गर्दनपर तलवार रखकर कहा—“अभाग भेदिया, काफिर कुत्ते, तू अपने अंग्रेज-स्वामियोंकी ओरसे आकर बुखाराको भी उसी तरह खरीदना चाहता है, जैसे कि काबुलको खरीदा ? लेकिन यहा तुम सफल नहीं हो सकते । मैं तुझे मार डालूँगा ।” इसके बाद वजीरके आदमी अमीरके समूरी चोगेके साथ लाशकी तरह स्टोर्टको लिये शहरकी सुनसान सडकोमेंसे गुजरे, और उन्होंने एक अघेरे घरमें उसे ले जाकर वन्द कर दिया । नौकर साथमें रोशनी लिये थे । उनकी आखें भर खुली थी । “यदि ऐसा ही करना था, तो मुझे बुखारा न आने देना चाहिये था, अब मुझे जाने दो” —कर्नलने मीरशव (कोतवाल)से जब यह कहा, तो उसने इतना ही जवाब दिया, कि मैं अमीरसे कहूँगा । कर्नलके सारे कागजोंको लेकर उसके सामने जला दिया गया । उसके घोड़ेको भी वेंच दिया गया । इसके बाद उसे स्याहचाह (अधकूप) नामक एक उन्नीस फुट गहरे गढ़े गड्ढेमें रस्सीके सहारे डाल दिया गया । इसी कुएँमें दो चोर और एक हत्यारा भी वन्द थे । कुएँमें लिपकलिया, खटमल, पिस्सू भरे हुये थे । उसमें स्टोर्ट दो महीने रहा । खानेके लिये रस्सीसे रोटिया लटका दी जाती थी । इसके बाद उसे निकालकर कहा गया, कि अगर जान



वचाना चाहता है, तो मुसलमान हो जा। अक्खड कर्नलने अपने सारे गर्व और अभिमानको ताकपर रखकर भारी भीड़के सामने कलमा पढा और एक चौरस्तेपर ले जाकर उसका खतना किया गया।

रूसियोंने कर्नलको मुक्त करानेकी बड़ी कोशिश की। अफगानिस्तानमें जब अंग्रेजोंकी सफलता हुई, तो कर्नलने हिम्मत करके इस्लामको छोड़ दिया, और अमीरसे भी कहा, कि तुम्हे अपनी भलाईके लिये मुझे अपने पास रखना चाहिये, जैसा कि रणजीतसिंहने कितने ही अंग्रेजोंको अपने पास रक्खा है। अमीरकी ओरसे कर्नलको कहा गया, कि रूसी दूतमंडलके साथ तुम पीतरवुर्ग चले जाओ, लेकिन उस बेवकूफने जानेसे इन्कार करते हुए कहा कि हमारी सरकारका हुक्म है, कि मैं बुखारासे न जाऊ। इससे सदेह और बढ़ गया। इसी समय कर्नलने कुछ पत्र लिखकर खुरासानियों, कुर्दों, ईरानियों और यहूदियोंके हाथ भेजे। इसके बाद फिर उसे बन्दीखानेमें बन्द कर दिया गया। तुर्कीके सुल्तान, खीवाके खान और जारने भी उसे छोड़नेके लिये अमीरको बहुत लिखा। एक अंग्रेज लेखकने कर्नल स्टोडर्टके बारेमें लिखा है—“वह अपनी शिक्षा और स्वभावसे किसी भी दौत्यकार्यके लिये विल्कुल अयोग्य था। उसके रूखे और ढिठाई भरे हुये व्यवहारने अमीरको बहुत ही अपमानित और कुपित कर दिया।” स्टोडर्टको दुबारा जेलमें बन्द करके उसे बहुत-बहुत यातनाये दी जाने लगी। १८४० ई०में कप्तान आर्थर कोनोली खीवा और खोकन्द होते बुखारा पहुँचा। उसने बुखाराके अमीरको रूसके विरुद्ध हो अंग्रेजोंके साथ मैत्री करनेके लिये उभाड़ा। नसरुल्लाने कोनोलीको भी पकड़कर उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली, और बन्दी बना स्टोडर्टके पास भेज दिया। इसी बीचमें नसरुल्लाको अपनी ओर करनेके लिये १८५० ई०में रूसने मेजर वतानियेफको व्यापार-मैत्री संधिके लिये भेजा। इससे पहले १८२० ई० में प्रथम रूसी दूत रोगनी गया था, और अंग्रेज वार्नेसके जवाबमें १८३४ ई०में विल्कोविच पहुँचा था। मेजर वतानियेफ का अमीरकी ओरसे बड़ा गर्मागर्म स्वागत हुआ। जारने बहुमूल्य मेंट भेजी थी, उसने भी प्रभाव डाला, लेकिन संधिकी बात करनेपर अमीरने टाल-मटोल कर दिया। इस प्रकार १८४१ ई०में वतानियेफको खाली हाथ लौटना पड़ा।

प्रथम अफगान-युद्धके समय जनवरी १८४२ ई०में १६५०० अंग्रेजी सेना काबुल पहुँची थी, जिनमें अधिकांश हिन्दुस्तानी थे। लेकिन काबुलमें अफगानोंने उन्हें घेरकर खतम कर दिया और सिर्फ उनका एक आदमी किसी तरह जान बचाकर खबर देनेके लिये जलालाबाद पहुँच सका। अंग्रेजोंकी इस जवरदस्त हारसे नसरुल्लाकी हिम्मत बड़ी। उसके हुक्मसे १७ जून १८४२ ई०को स्टोडर्ट और कोनोलीको कैदखानेसे निकालकर बाहर लाया गया। स्टोडर्ट प्राण बचानेके लिये मुसलमान बन चुका था, लेकिन उसकी गर्दन पहले काटी गई, फिर कोनोलीको मुसलमान बन प्राण बचानेके लिये कहा गया, लेकिन उसने इन्कार कर दिया और उसे भी मार डाला गया। इसके बाद सात और अंग्रेज कत्ल किये गये, लेकिन इनका बदला अंग्रेज कभी न ले सके।

१८४४ ई० में दोनों अंग्रेज बन्दीयोंका हाल जाननेके लिये डाक्टर वौल्फ बड़ी कोशिशके बाद बुखारा गया। तब तक दोनों अंग्रेज मारे जा चुके थे। वौल्फको भी लौटनेमें बड़ी मुश्किलका सामना करना पड़ा। उसने एक चिट्ठीमें लिखा था—“बदनाम नायब अब्दुस्समद खाके बगीचेमें उसके लुटेरे डाकुओंसे घिरा तथा मजबूर होकर छ हजार तिला देनेके लिये आपको यह नोट लिख रहा हूँ।”

पामीरसे लगे हुये पहाड़ोंमें केश (शहरसब्ज) का एक छोटा-सा राज्य बहुत दिनोंसे अपनी स्वतंत्रताकी कायम रखे हुये था—यह वही शहरसब्ज था, जहाँ तेमूर लग पैदा हुआ। जब कभी भी बुखारावाले शहरसब्जपर आक्रमण करते, तो वहावाले वहादुरीसे लड़ते साथ-साथ वधोंको तोड़कर आसपासकी भूमिको जलमग्न कर देते। बुखाराके पड़ोसी राज्य खोकन्दका शासक बाबरकी बेटीकी सतानांमेंसे था। खोकन्दी खान मदलीको नसरुल्लाने किस तरह मरवाया, इसके बारेमें हम अभी कह चुके हैं। नसरुल्लाका सबसे बड़ा सलाहकार अब्दुस्समद था।

नसरुल्लाका सबब खीवासे भी बहुत दूरा था। जब रूसी जनरल पेट्रोव्स्कीने खीवापर अभियान किया, तो नसरुल्लाने भी उसपर हमला बोल दिया। अपने राज्यकी सीमाको बढ़ानेके लिये

नसरुल्लाने बहुत हाथ-पैर मारे, लेकिन बलख, अन्दखूय और मेमनाकी छोटी-छोटी रियासतों पर कितनी ही बार आक्रमण करनेके बाद वह सफल हुआ और मरते वक्त ही १८२६ ई०में उसे खबर मिली, कि शहरसब्ज पर बुखारियोंका अधिकार हो गया। उसने उसी समय वहाके अमीर तथा अपने सालेको स्त्री-बच्चों सहित अपने सामने कत्ल कर देनेको हुक्म दिया।

नसरुल्ला इन्सानियतसे गिरा हुआ निरा पशु था, तो भी उसकी धाक बुखारामें इतनी थी, कि जब वह अपने महलसे निकलता, तो पासमें कोई शरीर-रक्षक नहीं होता। बाजारोमें हफ्तेमें दो-तीन बार दर्वेशका कपडा पहने, केवल एक नौकरके साथ उसे घूमते देखा जा सकता था। उसने बनियोको कह रक्खा था, कि ऐसे समय कोई उसके लिये सम्मान प्रदर्शित न करे, और उसे एक साधारण आदमी-सा जाने। इसीलिये कोई उसके लिये रास्तेसे हटता भी नहीं था। वह एक दुकानसे दूसरी दुकानमें जा अनाज या दूसरे सौदेके भावके बारेमें पूछता और जहा-तहा कोई चीज भी खरीदता।

### ८ सैयद मुजफ्फरुद्दीन, नसरुल्ला-पुत्र (१८६० ई०)

मुजफ्फरुद्दीनकी जवानी करशीमें बीती थी। अपने बापसे वह अधिकतर अलग ही रहा। वह एक ईरानी दासीका पुत्र था। उसे चौदह सालकी उमरमें ही नसरुल्लाने करशीका हाकिम और अपना युवराज बना दिया। अठतीस सालकी उमरमें मुजफ्फर अमीर हुआ। बापके सारे दुर्गुण इसमें भी मौजूद थे। उसने पहले मुल्लोंको हाथमें करनेका प्रयत्न किया।

नसरुल्लाके मरते समय यद्यपि शहरसब्ज सर हो गया था, लेकिन इस दुर्गम पहाड़ी इलाकेके लोग अब भी बगावत किये हुये थे, इसलिये मुजफ्फरका ध्यान उधर जाना जरूरी था। उसके बाद उसने खोकन्दपर चढ़ाई की, जहाका खान इस समय मदलीका पौत्र खुदायार था, और जिसकी सारी शिक्षा-दीक्षा नसरुल्लाके दरबारमें हुई थी। रूसने १८५३ ई०में अकमस्जिद (सफेद मस्जिद) पर, तथा ग्यारह साल बाद तुर्किस्तान और चिमकन्दपर भी अधिकार कर लिया। १८६४ ई०में ताशकन्दमें असफल होनेपर उसका बढाव रुका। खुदायारने चाहा, कि तुर्किस्तान शहरको भी लौटा ले, लेकिन उसमें विफल होकर उसे राजधानी लौटना पडा। किपचकोने वहा उसके छोटे भाई मुल्लाखाको गद्दीपर बैठा दिया था, इसपर अमीर खुदायार मदद लेने मुजफ्फरके पास आया। मुल्लाको कत्ल करवा मुजफ्फरने खोकन्दमें जा खुदायारको स्वयं तख्तपर बिठाया। किपचक (उज्बेक) अब भी फरगानामें विरोध करते रहे, और उन्होने खुदायारके आधे राज्यको छीन भी लिया, लेकिन, रूसियोंने इसी समय उनके नेताको ताशकन्दमें मार डाला, जिसके कारण मुजफ्फरको १८६५ ई०में अपने आक्रमणके वक्त बहुत सुभीता हुआ। चैर्नियेफ ताशकन्दको ले चुका था, खोकन्द भी उसकी दयापर था। मुजफ्फर जहादके नामपर सारे मध्य-एसियाको शत्रु बनाकर एक करना चाहता था। खोकन्द, बुखारा और खीवाको राजनीतिक तौरसे एकताबद्ध करनेका यह अच्छा मौका था, क्योंकि तीनों ही राज्य अपनेको रूसी राहुके मुखमें देख रहे थे। मुजफ्फर समझता था, कि धर्मान्ध मुल्ला मध्य-एसियाकी सबसे बड़ी शक्ति है। वह रूसके सबसे जवर्दस्त शत्रु भी थे, इसलिये मुजफ्फरने उनके ही हाथोंमें खेलना पसंद किया। तीनों राज्योंके शहरो और बाजारोमें जहादका धुआधार प्रचार हो रहा था। इससे मुजफ्फरको एक भारी सेना तैयार करने में देर न हुई। उसके बलपर मुजफ्फरने अभियान करके समरकन्दसे उत्तर-पूर्व तथा रूसी तुर्किस्तानकी राजधानी ताशकन्दसे सिर्फ सौ मीलपर अवस्थित खोजन्द (आधुनिक लेनिनावाद) को दखल कर जेनरल चैर्नियेफको ताशकन्द खाली करनेके लिये अल्टीमेटम दे दिया।

रूससे युद्ध—चैर्नियेफ चौदह पैदल कर्पनी, छ कसाक स्वाड्डेन और सोलह तोपोंके साथ समरकन्द से साठ मीलपर अवस्थित जीजकके किलेपर चढ़ आया। प्रतिरोध जवर्दस्त हुआ और रसदकी भी कमी थी, इसलिये उसे लौटनेके लिये मजबूर होना पडा। इस सफलतासे प्रोत्साहित हो चालीस हजार सेना ले मुजफ्फर ताशकन्दपर चढा। चैर्नियेफने रूसी सरकारके हुक्मके बिना ही ताशकन्दको

ले लिया था, इसलिये उसे हटा युद्ध बन्द करनेका हुक्म देकर जेनरल रोमानोव्स्कीको भेजा गया, लेकिन सैनिक परिस्थितिने उसे भी सरकारी हुक्मके विरुद्ध जानेके लिये मजबूर किया। ताशकन्दसे सिर्फ़ तीनी मजिलपर बुखारी सेना रह गई थी, और सत्तर हजार आवादीका नगर रुसियोंको फूठी आखों भी नहीं देखना चाहता था। रोमानोव्स्की चौदह पैदल कपनी, पाच कसाक स्ववाड़ेन और बीस तोपोंके साथ सिर नदीके वाये तटसे होते आगे बढ़ा। जैसा कि पहले बतला चुके हैं, जीजक और खोजन्दके बीच इर्ज्दमें २० मई १८६६ ई०को मध्य-एशियाकी पलासीकी लड़ाई हुई, और ३६०० रुसियोंने बुखारियोंकी पाच हजार पैदल, ३५०० सवार और दो तोपोवाली सेनाको बुरी तरहसे हराया। हारी हुई सेना अस्त-व्यस्त होकर भगी। आठ दिनके मुहासिरेके बाद ६ जूनको खोजन्द भी रुसियोंके हाथमें चला गया। रुसी अल्टीमेटमकी पर्वाह न करके मुजप्फरने युद्धकी तैयारी जारी रखी, जिससे रुसियोंको फिर आगे बढ़नेके लिये मजबूर होना पड़ा। अक्तूबर तक वह उरातिप्पा और जीजक ले जरफ़शा-उपत्यकाके ऊपरी भागके स्वामी बन गये। १८६७ ई०के वसतमें यानीकुर्गानपर भी रुसियोंका अधिकार हो गया, जिसे लौटानेके लिये ४५ हजार बुखारी सेनाने दो बार कोशिश की। इस प्रकार १८६७ ई० के मध्य तक सिर और जरफ़शाकी उपत्यकायें जारके साम्राज्यमें चली गईं। ओरेनबुर्ग शासन-केंद्र बहुत दूर पड़ता था, इसलिये २३(११) जुलाई १८६७ ई०के उकाजे (राजादेश) के अनुसार तुर्किस्तानका एक अलग प्रदेश बना दिया गया, और ताशकन्दको तुर्किस्तानके महाराज्यपालकी राजधानी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। तुर्किस्तान-सूबा (गुबर्निया)में सिर-दरिया, सप्तनद (सेमीरेचिन्स्क अर्थात् इस्सिकुल और बत्काशकी द्रोणिया) तथा जरफ़शाके इलाके थे। जेनरल काफमान प्रथम महाराज्यपाल नियुक्त हुआ। बुखारा अब भी जब-तब रूसी सीमात-चाँकियोंसे छेड़छाड़ करता था। काफमानने मुजप्फरके सामने सुलहके लिये निम्न शर्तें पेश की—मौजूदा सीमातको स्वीकार किया जाय, व्यापारमें रूसी और बुखारी प्रजाके समान अधिकार हों, युद्धके हरजानास्वरूप सवा लाख तिला (पाच लाख ख़वल या तिरपन हजार गिन्नी) रूसको मिले। मुजप्फरने इसके जवाबमें खीवाकी ओरसे अपनी सेनाको बुलाकर जीजकपर आक्रमण करनेके लिये तैयारी की। रूसी अब समरकन्द लेनेके लिये तैयार हो गये। ३६०० मेनाके साथ १७ मई १८६८ ई०को उन्होंने खीवा और बुखाराकी चालीस हजार सम्मिलित सेनापर घावा बोल दिया, और उयली नदी पार हो समरकन्दसे पन्द्रह मीलपर जरफ़शाके वायें किनारेकी ऊँचाईपर एकत्रित शत्रु-सेनापर आक्रमण कर दिया। बुखारियोंकी भीषण पराजय हुई। अगले ही दिन समरकन्दने आत्मसमर्पण कर दिया, और नगरके सरतो (ताजिको) ने विजेताओंका खूब स्वागत किया—आखिर उज्बेकोके जूयेंको वह प्रसन्नतापूर्वक नहीं ढो रहे थे। यहूदियोंने रुसियोंका और भी अधिक विश्वास प्राप्त किया, और उन्होंने सरतोंसे सजग रहनेकी सलाह दी। जेनरल काफमानने अपने घायलोंको नगरके बीचमें अवस्थित किलेमें साठ-बासठ गारदके साथ छोड़ शत्रुका पीछा किया। रुसियोंके कुछ ही दूर जानेपर शहरसब्जवाले बीस हजार सैनिक चुपकेसे भीतर घुस गये, उन्होंने किलेको घेर लिया। एक सौ नवामी रूसी प्रतिरक्षक हताहत हुये और किला भारी विपद्में पड़ गया। काफमान शत्रुको फिर फरारी हार दे चुका था, जब कि उसे समरकन्दकी खबर मिली, और उसने लौटकर बड़ी बुरी तरहसे नागरिकोंके साथ बदला लिया। एक अंग्रेज लेखकके अनुसार—“जैसे गिलेस्पीने वेल्लोरके विद्रोहियोंके साथ बदला लिया था। उनके चूतड़ों और जाघोपर कोड़े लगवाये, हजारोंको बड़ी निष्ठुरताके साथ मरवाया। सरतोंके विश्वासघातका बदला आत्मसमर्पणके बाद सेना द्वारा नगरको लगातार तीन दिन तक लुटवाकर लिया।”

मुजप्फरका सारा अभिमान अब चूर-चूर हो चुका था। उसने रूसी जेनरलसे तख्त छोड़कर मक्का जानेकी इजाजत मागी, लेकिन रूसी उसे अपनी गुडिया बनाकर बुखाराकी गद्दीपर रखना चाहते थे। आखिर वह रूसी लोहेको देख चुका था, और अपने जीवन भर फिर सिर उठानेकी हिम्मत नहीं रखता था। दूसरा अमीर उसकी जगहपर शायद फिर नया तजर्वा करना चाहता। रुसियोंने उसीको अमीर स्वीकृत किया, समरकन्दको तुर्किस्तानमें मिला बहापर

उपराज्यपाल बनाकर अब्रामोफको भेजा । मुजफ्फरके बाद १७ सालके युवराज अब्दुल् अहदने बापसे बगावत करके करकीके किलेपर अधिकार कर लिया, लेकिन जनरल अब्रामोफने विद्रोह-को आसानीसे दबा दिया । यही नहीं, उसने मगीत-राजवंशके मूल-स्थान करशीको भी ले लिया और करकीपर गोलाबारी की । युवराज बुखारा राज्यकी मध्य पहाड़ियोंमें भागा, जहासे भी उसे समरकन्दके पश्चिमी छोरपर भागनेके लिये मजबूर होना पडा । विद्रोहोमें सफलताकी तो आशा नहीं थी, ऊपरसे प्रजाको सारी आफत सहनी पड रही थी, इसलिये कोई आश्चर्य नहीं, यदि एक किसानने अहदको पकडवा दिया । मुजफ्फरके पास लाये जानेपर उसने उसके सिरको काटकर महलके दरवाजेपर लटकानेका हुक्म दिया । इस विद्रोहके समय अब्रामोफने पीढियोंसे स्वतंत्रताकी लड़ाई लड़नेके अभ्यस्त शहरसब्जवालोंको भी अपने अधीन कर लिया । मुजफ्फर अब परम जारभक्त था । हिन्दुस्तानमें रहते अंग्रेज इसके लिये अफसोस कर रहे थे, कि मुजफ्फरने अपने पूर्वजोके भव्य दायभागको इतना जल्दी खो दिया । लेकिन मुजफ्फरने दस-दस पद्रह-पद्रह गुनी अधिक सेनाके साथ भी लडकर देख लिया था, कि आधुनिक हथियारोके सामने उसके जहा-दियोकी भीड टिक नहीं सकती । जरफ्शाकी ऊपरी उपत्यका और ऐतिहासिक नगर समरकन्द रूसियोके हाथमें होनेसे बुखारा उनकी दयापर निर्भर करता था । रूसी जरफ्शाके पानीसे किसी समय भी वंचित कर बिना एक गोली खर्च किये ही बुखारियोको मरनेके लिये मजबूर कर सकते थे । अपने जीवनभर मुजफ्फरको मौज करनेमें कोई बाधा नहीं थी, और हमारे रियासती राजाओकी तरह वह अपनी प्रजाके साथ चाहे जो भी कर सकता था ।

### ९ अब्दुल अहद, मुजफ्फर-पुत्र (—१८९४ ई०)

मुजफ्फरके उत्तराधिकारी अहदने भी अपने बापका पदानुसरण किया । शरीरमें वह लंबा हड्डा-कट्टा और बहुत सुन्दर था । हर साल वह काकेशसके गर्म चरमोमें बिहारके लिये जाता और अक्सर जाडे भी उसके किमियामें वीतते थे, अर्थात् उसके जीवनका ढग और विलास-प्रेम वैसा ही था, जैसा कि हमारे यहा पिछली पीढीके राजा-नवाबोका ।

### १० मीर आलम, अहद-पुत्र (—१९२० ई०)

युवराजकी अवस्थामे इसे शिक्षाके लिये पीतरबुर्ग भेजा गया, जहा रहते अपनी शिक्षा-दीक्षासे वह बिल्कुल युरोपीय बन चुका था, लेकिन दुराचारमें वह अपने परदादा नसरुल्लाका भी कान काटता था । जबतक जारशाही मजबूत रही, तबतक वह उसका अनन्य भक्त बना रहा, और अपना काम केवल विलासमय जीवन विताना समझता था, लेकिन बोल्शेविक-क्रांतिके समय सब जगह अशांति मची देख एक बार फिर उसने बुखारामें अपनी तानाशाही शुरू की । शासन-सुधार चाहनेवाले अपने यहा के सुधारवादी जदीदी (नवीनतावादियों) के खूनसे इसने अपने हाथोको खूब रंगा, लेकिन जैसा कि हम आगे देखेंगे, क्रांतिके सामने इसे देश छोडकर अफगानिस्तान भागना पडा । मुजफ्फरुद्दीनके समयसे बुखारा एक देशी रियासतके रूपमें चला आया था । क्रांतिने उसे मिटाकर मध्य-एशियाकी जातियोको उनकी सीमाओके अनुसार उज्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, कजाकस्तान, किर्गिजस्तान और ताजिकिस्तानके गणराज्योमें परिणत कर दिया ।

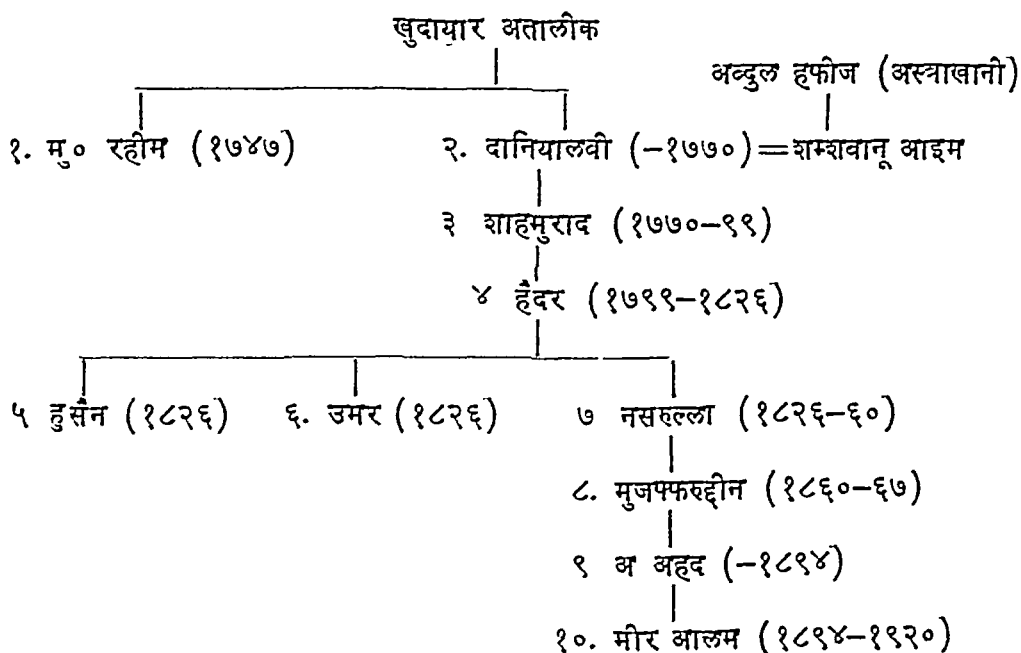
**शासन-प्रबन्ध**—बुखारा समुद्रतलसे १२०० फुट ऊपर मेर्वसे १४० मीलपर अवस्थित है । १९ वी सदीके चतुर्थ पाद हीमें रेल द्वारा इसका सवध हो गया था, यह हम आगे बतलायेंगे । बुखारा मुसलमानोके आनेसे पहले ही एक प्रसिद्ध सांस्कृतिक नगर बन चुका था । सामानी वादशाहोके जमानेमें इसकी बहुत तरक्की हुई । इसकी जामा मस्जिदका २१० फुट ऊंचा मीनार (मीनारकला) बहुत प्रसिद्ध है, जिसकी गोलाई नीचे छत्तीस फुट है ।

बुखाराके शासकोमें सूबा (प्रदेश) के अधिकारीको बेक कहा जाता था, जिसके नीचे जिलेके अफसर होते थे, जिन्हे अमलाकदार कहते थे । किसानोसे दशाग (दह्यक) कर लिया जाता था, जिसे मिल्की-खराज कहते थे । कितने ही गांव मस्जिदो और मदरसोकी देवोत्तर-सम्पत्ति (वक्फ)

ये १ फसल तैयार होनेपर अमीरके अफसर खेतोंमें जाकर भूकरके लिये हरएक खेतका अलग-अलग कूत करते थे । बुखाराका काजी (न्यायाधीश) काजीकला था, जिसके दो नायब होते थे । अदालतकी मुहर मुफ्तीके हाथमें होती थी । धार्मिक बातोंका अधिकारी रईस था ।

४. (३. बुखारा अमीर-वंशवृक्ष)

(१७४७-१९२० ई०)



### स्रोत ग्रन्थ

- १ पो स्नेदनेइ आजिइ (ल ये द्मित्रियेफ-कव्काज्स्की, पेत्रेवुर्ग १८९४)
- २ ना ग्रानित्साख् स्नेदनेइ आजिइ (द न लोगोफेत्, पेत्रेवुर्ग १९०९)
- ३ इस्कुस्त्वो स्नेदनेइ आजिइ (व व वेइमार्न, मास्को, १९४०)
- ४ रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (म य मस्सोन्, ताशकन्द १९२६)
- ५ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ कूवेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७७-२२६, २९३-९९)
- ६ History of U S S R (Moscow 1947)
- ७ Heart of Asia (E D Ross, London 1899)
- ८ History of Mongol (3 Vols H H Howorth, London 1876-88)
- ९ History of Bokhara (A Vambery, London 1873)

## छोटे-छोटे राज्य

### १ उरातिप्पा और जीजक

**उरातिप्पा**—अस्वाखानी-वशकी समाप्तिपर बुखारामें बहुत-सी छोटी-बड़ी रियासतें अस्तित्वमें आईं, जिनमें उरातिप्पा भी था, जो समरकन्द, खोजन्द और खोकन्दके रास्तोंके सगम तथा जीजक, समरकन्द और ताशकन्दके रास्तेपर था। उज्बेकोके उज कबीलेके लोग जीजकमें अपने डेरे डाला करते थे। फजल बी नामक उज-सरदारने १८ वीं सदीमें उसपर अधिकार कर लिया। खोकन्दके नरवुते और बुखाराके रहीम बीने बहुत कोशिश की, लेकिन फजल बीने उन्हें सफल नहीं होने दिया, और शत्रुओंके सिरोको काटकर उनका मीनार चुनवाया।

फजल बीके बाद उसका लडका खुदायार बी स्वामी हुआ, वह १७९४ ई०में एक लाख परिवारोंका शासक था। बुखाराके अमीर शाह मुरादने जब उसकी ओर कदम बढ़ाया, तो खुदायार बीने उसे बुखाराके फाटकों तक खदेड़ा। वह दिन भर सोता और रातको जाग कर काम करता। शरीरसे पूरा देव था, और एक पूरी भेड़ अकेले ही खा जाता था, तब भी कहता कि भूख अभी पूरी तरह नहीं गई। उसका भाला इतना भारी था, कि किसी दूसरेके लिये उठाना भी मुश्किल था। लडाईमें बड़ा बहादुर होनेसे घुमन्तू-कबीलोंका वह आदर्श नेता था।

**बाबा बेक, बेकमुराद**—खुदायार बीके मरनेपर उसका भाई बाबा उरातिप्पापर और बेटा बेकमुराद खोजन्दपर शासन करने लगे। उमरखान खोकन्दीकी मददसे बाबाने अपने भतीजेको खोजन्दसे भगा पीछे उसे मरवा डाला। बापका बदला लेते हुये बाबाबेकके लडकेने समरकन्दमें मुरादको मार डाला और कुछ समयके लिये उरातिप्पा बुखारामें रहा। फिर खोकन्दके अमीर आलम खाने कुछ समय तक उसपर अधिकार रक्खा, लेकिन जल्दी ही खुदायार बेकके भान्जे तथा प्रसिद्ध खोजा हिरातके वंशज खोजा महमूद खाने खोकन्दी हाकिमको भगा उरातिप्पाको बुखाराके नामसे अपने हाथमें कर लिया। १८१२ ई०में खोजा महमूद उरातिप्पाका शासक था। उमर खाने आक्रमण करके महमूदको पकड़ लिया, लेकिन तीन महीने बाद उसने फिर भागकर अपने सघर्षको जारी रक्खा। इसी समय जीजक बुखारामें और उरातिप्पा खोकन्दमें शामिल कर लिये गये, और इस प्रकार उरातिप्पाकी स्वतंत्र सत्ता खतम हो गई। महमूदका पुत्र तुराबेक यिस्वाकी खोकन्द-दरबारके अमीरोमेंसे था। जिस समय उरातिप्पाने अपनी स्वतंत्रता खोई, उस समय यहाके उज कबीलेके बहुत-से लोग दक्षिणकी पहाड़ी काफिरनिहा-उपत्यकामें जाकर बस गये।

### २. शहरसब्ज

किश या शहरसब्ज तेमूर लगकी जन्मभूमि थी। बुखारासे जानेपर रास्तेमें दुर्लभ रेगिस्तान पड़ता था, और समरकन्दसे दुर्गम पहाड़ी, इस प्रकार उसे प्रकृतिने प्रतिरक्षाके सुन्दर साधन दे रक्खे थे। १८ वीं सदीमें मगीत रहीम बी (१७४७ ई०) ने शहरसब्जपर अधिकार किया, लेकिन पाच ही साल तकके लिये। भारी लडाकू कैंरोसली उज्बेक-कबीलेके डेरे इस इलाकेमें रहा करते थे। उनके सरदारने रहीम बीसे शहरसब्जको मुक्त करा लिया।

(१) बानियाल अतालीक (१८११-३६ ई०)—शहरसब्जके शासकोमें यह बड़ा शक्तिशाली था। इसने अमीर हैदर और उसके पुत्र नसरुल्लाके सारे प्रयत्नोंको निष्फल कर दिया।

दानियालने “वलीनिअम” की पदवी धारण की थी। उसके दो पुत्रोंमें खोजाकुल शहरसब्जमें और बाबा दादावाह कितावमें शासन करते थे।

(२) खोजाकुल (१८३६-४६ ई०)—बापके मरनेपर दोनों भाई आपसमें झगड पडे, जिससे अमीर नसरुल्लाने फायदा उठाकर आक्रमण कर दिया। लेकिन नसरुल्लाके पहुचनेसे पहले ही खोजाकुलने अपने भाईको मार भगाया, इसलिये बुखारी सेनासे लडनेके लिये वह स्वतन्त्र था। उसने नसरुल्लाकी सेनाको बुरी तरहसे हराया। नसरुल्लाने अजेय शहरसब्जकी भूमिपर हथियारसे विजय पानेकी आशा नहीं देखी। इसके बाद वह सालमें दो बार वहाकी भूमिको तबाह करने लगा। सुलह क्षणिक ही हो पाती थी। अपनी मृत्युके समय (१८४६ ई०) तक खोजाकुल बुखारियोंसे लडता रहा। उसने अपने भाई इस्कन्दरको किताब देकर सतुष्ट करना चाहा था।

(३) अशुर बेक (१८४६ ई०)—खोजाकुलके पुत्र अशुरबेकको बापकी गद्दीपर अधिक दिनोंतक बैठनेका अवसर नहीं मिला, और चचाने भतीजेको खदेडकर गद्दी सभाल ली।

(४) इस्कन्दर (१८४६-५६ ई०)—इस्कन्दर “वली-निअम” की उपाधि धारण कर, दस साल तक धरावर नसरुल्लासे लडता रहा, लेकिन अन्तमें धिरावा डाल तथा खेतों और गावोंको बरबाद करके भूखा मारकर नसरुल्लाने शहरसब्जको सर किया। इस्कन्दरने कितावमें जाकर अपना प्रतिरोध जारी रक्खा, और अन्तमें अनुकूल शर्तोंके साथ बुखाराकी अधीनता स्वीकार कर वह बुखारा चला गया, जहा कराकुलकी सारी आमदनी उसे जागीरमें मिली। इस्कन्दरकी वहिन केर्निगेज आइम अपने सौंदर्यके लिये बहुत मशहूर थी। वह व्याही हुई थी। उसपर नसरुल्लाकी नजर पड़ गई। उसने पतिको चारजूइ भेज आइमको अपने हरममें डाल लिया और शहरसब्जके मुख्य-मुख्य खानदानोंको ले जाकर चारजूइ, करशी आदिमें बसा दिया। नसरुल्लाने मरनेसे पहले इस्कन्दर और उसकी वहिनके खूनसे अपने हाथको रगा। एक प्रत्यक्षदर्शीने इस घटनाके बारेमें लिखा है—

“इस्कन्दर और उसका भाई चुमचू खान रोज एक बार अमीरको सलाम करने जाते थे। उनके जानेके बाद अमीरने मुझे उन्हे बुला लानेके लिये कहा। लाकर उन्हे अलग कमरोंमें बैठाया गया। उन्होंने कहा—‘बुखारामे किसीको पता नहीं, कल क्या होनेवाला है। अज तुम जिन्दा हो और कल तुम्हारा सिर कटा दिखाई पडे।’ कुछ प्रतीक्षाके बाद एक वादाचा आया, जिसमें इस्कन्दर और वहा आनेवाली स्त्रीका गर्दन काट लेनेका हुकुमनामा लिखा हुआ था। वादाचा वादामके आकारकी एक मुहर हुआ करती थी। मृत्युदंडका हुक्म देते समय अमीर इसी मुहरका इस्तेमाल करता था। दूसरे कामोंके लिये इस्तेमाल होनेवाली मुहर बड़ी होती थी। जैसे ही हमने हुकुमनामा पाया, तुरन्त इस्कन्दरको व्यवस्थानपर लानेको कहा। अमीरके किलेमें एक कूयें जैसी गहरी तथा तख्तोंसे ढकी जगह है। काटनेके बाद लाश इसी कुएँमें फेंक दी जाती है। वहा बहुत-सी लाशें पडी थी। वधिक हमारी प्रतीक्षामें था। हमारे आते ही उसने तुरन्त इस्कन्दरको जमीनपर पटक दिया। इस्कन्दरके दाढी नहीं थी। वधिकने अपनी अगुलियोंको उसके नयुनोंमें डाल सिरको पकडे गलेको काट दिया। इसके बाद लोग एक औरतको लाये। जैसे ही उसने इस्कन्दरके मृत शरीरको देखा, वह अमीरको बुरा-भला कहते रोने लगी। तब हमें मालूम हुआ, कि वह इस्कन्दरकी वहिन तथा अमीरकी बीवी आइम केर्निगेज है। वह केर्निगेज-परिवारकी लडकी थी, इसीलिये सभी उसे “मेरी केर्निगेज चाद” कहते थे। जल्लादने उसके हाथोंको बांध दिया, फिर पिस्तौलसे सिरके पीछेसे गोली चलाई—हमारे लोगोंमें स्त्रियोंका गला नहीं काटने, बल्कि उन्हे गोली मार देते हैं। एक ही गोलीमें वह उसे नहीं मार सका। वह गिरकर कुछ देर तक छटपटाती रही। वधिकने उसके स्तनों और पीठपर बारह बार ठोकर लगाई, तब वह मरी।”

(५) बाबा बेक—केर्निगेज-परिवारका यह सरदार अमीरकी अरदलीमें था। नसरुल्ला के मरते समय वह शहरसब्ज लौटा। छ महीने बाद अमीर मुजफ्फर शहरसब्ज आया।

उसी समय उसने बाबा बेक से उसकी बहिन मागी, जो कि पहले ही उसके बापकी कामुकताको तृप्त कर चुकी थी। मुजफ्फरके ऐसी माग करनेपर बड़ा हल्ला मचा, और उसने बुखारा लौटकर बहुत बड़े-बड़े आदमियोंको जेलमें डाल दिया। लेकिन लोगोंने उन्हें बन्दीखानेसे मुक्त करके बाबा बेकको शहरसब्जका और जरा बेकको किताबका शासक नियुक्त किया। बुखाराके अफसर वहासे मार भगाये गये। मुजफ्फरने चढाई की, किंतु खोकन्दके झगडेके कारण मुहासिरा उठा लेना पडा। पीछे बाबा बेकने वार्षिक भेंट और सैनिक सहायता देकर मुजफ्फरकी अधीनता स्वीकार की, पर राज्यके भीतरी मामलोमें वह स्वतंत्र था।

१८६६ ई०में रूसियों द्वारा मुजफ्फरके हराये जानेपर बुखारामें दो दल हो गये। मुजफ्फरका पुत्र केतात्पुरा विरोधी और मुजफ्फरका भतीजा सईद खान समर्थक था। समर्थकोका मुखिया जुरा बेक था, जो अमीरके रूसियोंपर चढाई करके हारनेके बाद शहरसब्ज भाग गया। रूसियोंने समरकन्दको लेकर अमीरसे बदला लिया। जब अमीर दुबारा रूसियोंका विरोधी बना, तो उसकी सहायतार्थ शहरसब्जके बेकोने तीस हजार सेना लेकर समरकन्दपर चढाई की। इससे पहले वह जेनरल काँफमानसे अलग समझौता करनेकी बातचीत कर रहे थे, लेकिन जब जेनरलने उन्हें मुलाकातके लिये बुलाया, तो उनके मनमें सदेह होने लगा, और मुजफ्फरकी और होकर लडनेके लिये तैयार हो गये। अमीरने विवादास्पद नगर चिरागचीको देनेका वचन दिया था, इसलिये भी शहरसब्जवाले उसके पक्षमें हुए। रूसी सैनिकोंको समरकन्दके किलेके भीतर घेरकर शहरसब्जवालोंने बड़ी विपदमें डाल दिया था, लेकिन इसी समय जुरा बेकको काँफमानके आनेकी झूठी खबर लगी, और उसके एक अफसरने अपने आदमियोंको हटा लिया। इसी सहायता देनेके लिये अमीर मुजफ्फरने जुरा बेकको "दादखाह"की उपाधि तथा दस हजार तका इनाम दिया था।

१८७० ई०में जेनरल अब्रामोफ इस्कन्दरकुलके खिलाफ चढा था। उस वक्त कर उगाहनेके लिये गये राजुल उरुसोफको कुछ विद्रोहियोंने मार भगाया। ये आदमी जुरा बेकके पक्षपाती हैदरखोजाके अनुयायी बतलाये जाते थे। जुरा बेकको हैदरको समर्पण करनेका हुक्म हुआ, लेकिन उसने कहा कि हैदर कहीं दूसरी जगह है। इसपर जेनरल काँफमानने शहरसब्जको खतम करनेका निश्चय कर लिया। जेनरल अब्रामोफने किताबको आक्रमण करके ले लिया, फिर शहरसब्जको आत्मसमर्पण करनेके लिये मजबूर किया। बेक भागकर खोकन्द चला गया। रूसियोंने शहरसब्जके इलाकेको अमीर-बुखाराके हाथमें दे दिया। विश्वासघाती कहकर खोकन्दके खानने शहरसब्जवाले बेकोको रूसियोंके हाथमें दे दिया। कुछ समयतक वह ताशकन्दमें नजरबंद रहे, फिर बुखारासे दो हजार रूबल पेंशन मिलने लगी। जुरा बेक इसके बाद रूसियोंका बहुत जवर्दस्त पक्षपाती हो गया और वह उसे बहादुर, ईमानदार और निष्कपट कह कर तारीफ करते थे।

### ३ कोहिस्तान

समरकन्दसे पूर्वका पहाड़ी इलाका अर्थात् जरफशाकी ऊपरी उपत्यका कोहिस्तानके नामसे प्रसिद्ध थी। १८७० ई०में वहा फाराव, मागियान, कश्तुत, फान, यग्नान, माचा और फलगर-के छोटे-छोटे सात शासक (बेक) थे। ये पहाड़ी बेक (ठाकुर) कुछ गावोंके शासक थे, और बुखाराको थोड़ा-सा कर दे अपने लोगोंके ऊपर मनमाना शासन करते थे।

उरगुत—उरगुतका बेक खानदानी राजा था। मागियान, कश्तुत और फारावके बेक अपनेको इसके अधीन मानते थे। १९वीं शताब्दीके आरम्भमें अमीर हैदर उरगुतको जीतकर उसके बेक युल्दाश परमाचीको बंदी बना बुखारा ले आया। बाकी तीनों बेकोने बुखाराकी अधीनता स्वीकार की, लेकिन कुछ समय बाद युल्दाशके पुत्र कता बेकने उरगुतको फिर अपने हाथमें कर लिया, और दूसरे बेकोसे नाराज होकर उसने अपने भाई सुल्तान बेकको मागियान और कश्तुतका शासक बनाया। अब बुखारासे झगडा छिड गया। पहाड़ियोंने समरकन्दको खतरा पैदा कर दिया। लेकिन अमीर-बुखाराके सामने तलवार उठाकर खड़े रहनेमें बहुत दिनों



तक लाभ नहीं था, इसलिये उरगुतका बेक नसरल्लाखानको अपनी बेटी दे बुखाराके सरदारके तौरपर उरगुतका शासक बना रहा। कत्ता बेकके मरनेके बाद उसके पुत्र आदिल परमाची उरगुतपर और उसका भाई अलायार दादखाह मागियानपर शासन करने लगे। मरनेसे थोड़े ही समय पहले अमीर नसरल्लाने उन्हें बुखारा बुलाकर सपरिवार चारजूयमें निर्वासित कर दिया। रूसियोंके समरकन्द ले लेनेपर अमीर द्वारा नियुक्त अफसर उरगुत छोड़कर भाग गया। इसपर चारजूयमें निर्वासित कुमारोसे एक हुसेन बेकने खोकन्द होते वहा पहुँचकर उरगुतको ले लिया। रूसियोंने जब वहासे भगाया, तो वह स्वयं मागियानमें और अपने छोटे भाई शादीको कस्तुत और चचेरे भाई सईदको फारावपर नियुक्त करके शासन करने लगा। इन छोटी-छोटी पहाड़ी रियासतोंका बुखारी कर उगाहनेवालोंसे बराबर लड़ाई-झगडा होता रहता था। १९वीं सदीके आरम्भमें ही फलगरके बेक अब्दुलशकूर दादखाहने सारे पहाड़ी इलाकेको अपने अधीन कर कितने ही दुर्गम पहाड़ी स्थानोंको सुगम बनानेके लिये रास्ते और पुल बनवाये। अमीर हैदर (१७९९-१८२६ ई०) के समय इन इलाकोंमें बुखाराने अपने बेक नियुक्त किये और किले बनवाये। यही हालत नसरल्लाके शासनके अन्ततक रही।

समरकन्दके रूसियोंके हाथमें जानेपर वहासे बुखारी बेक (हाकिम) भाग गया। उसी समय बेक अब्दुल गफ्फारने उरातिप्पाके पूर्व उर्मितानको ले अपनेको फलगरका बेक घोषित किया, लेकिन माचाके लोगोंने शासक मुजफ्फरशाहकी अधीनता स्वीकार की, जिसने अपने भतीजे रहीमखानको अपनी ओरसे शासक नियुक्त किया। रहीमखानने फलगरसे अब्दुल गफ्फारको मार भगाया और उसकी सहायताके लिये आये कस्तुतके शादीबेकको भी हराया। इसने यग्नान और फानको भी जीत हिसारपर चढ़ाई की। रास्तेमें सेना विगड गई, और उसने रहीमको भगाकर पाचा खोजाको अपना नेता बनाया। ये पहाड़ी लोग बहुत पिछड़े हुये थे, लेकिन फलगरवाले अपनेको माचावालोंसे अधिक संस्कृत समझते थे। उन्होंने फिर अब्दुल गफ्फारको अपने यहा बुलाया, किन्तु उसने हार खाकर समरकन्दमें जा रूसियोंकी अधीनता स्वीकार की। इस अशांतिसे लाभ उठा मई १८७० ई०में जेनरल अब्रामोफ एक छोटी-सी सेना ले पहाड़ोंके भीतर घुसा। १२ मईको उसने उर्मितान ले लिया, २१ को वरसामिनार भी उसके हाथमें चला गया। यह दोनों जगह फलगरके बेकके अधीन थी। माचाका बेक पाचा खोजा बहुत जनप्रिय था। वह धमकीके पत्र लिखता रहा। अब्रामोफने माचाकी ओर बढ़कर २८ मईको आवर्दनको ले लिया। पाचा खोजा भाग निकला। रूसियोंने फलगरके किलेको तोड़ दिया, जिसे कि बुखारियोंने पहाड़ी लोगोंको दवा रखनेके लिये बनाया था। अब्रामोफ आगे बढ़ते-बढ़ते अलई पर्वतमालाकी उस हिमानीके पास पहुँचा, जो कि जरफशा (प्राचीन सोगद) नदीका उद्गम है। लौटकर उमने फान नदीपर अवस्थित मर्वदा, फिर यग्नान-उपत्यकाको जीतते इस्कन्दरकुल (महासरोवर) तक गया। वहासे पश्चिमी कोहिस्तानकी ओर घूमकर उसने दस हजार फुट ऊँचे कस्तुतके डांडेको पार किया, जिसके पश्चिमी पहाड़ियोंमें एक जवर्दस्त सघर्ष हुआ। कस्तुतको अपने हाथमें करके अब्रामोफ पजकन्द होते समरकन्द लौट गया।

शहरसब्जकी विजयके बाद रूसियोंकी एक टुकड़ी कश्क-उपत्यकासे हो फाराव और मागियानपर पड़ी। इन दोनों इलाकोंके बेक रूसके विद्रोहियोंके साथ हो गये थे। रूसियोंने वहाके दोनों किलोंको तोड़ दिया और वहाके बेकों—सईद और शादीबेक—ने आत्मसमर्पण किया। मागियानका बेक हुसेन कुछ महीनेतक हाथ नहीं आया। रूसियोंने फाराव और मागियानको उरगुत जिलेमें मिला लिया। कितने ही समयतक बाकी पहाड़ी लोग रूसियोंके साथ विद्रोही बने रहे, लेकिन कब तक इतनी बड़ी शक्तिका मुकाबला करते ?

#### ४ हिसारके इलाके

आजकल यह पहाड़ी इलाका ताजिकिस्तान गणराज्यका एक बड़ा भाग है। ऊपरी जरफशा-उपत्यकाकी तरह यहापर भी उम समय कितने ही छोटे-छोटे राजा थे, जैसे —

(१) करातगिन—वक्षु नदीकी मुख्य पहाड़ी शाखा सुरखाव करातगिनके इलाकेसे बहती है। यहांके शासक अपनेको ऐतिहासिक ग्रीक सम्राट् अलिकसुन्दरका वंशज बतलाते थे। कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, यदि ग्रीक या शक-शासनके पतनके बाद वहांके कुछ राजकुमारोंने इन दुर्गम पहाड़ियोंमें शरण लेकर अपने लिये स्थान बनाया हो। लेकिन यह साबित करना मुश्किल है, कि सचमुच ही ये छोटे-छोटे शाह और बेक यूनानी सम्राटोंके वंशज थे। दरवाजवालोंने कुछ समयतक करातगिनको जीतकर उसे अपने हाथमें रक्खा, लेकिन जल्दी ही वह फिर स्वतंत्र हो गया। १८३९ ई०में खोकन्दने करातगिनको जीतकर अपने अधीन कर लिया।

(२) दरवाज—करातगिनसे दक्षिणमें यह छोटा पहाड़ी राज्य था, जिसके शासक भी अपनेको सिकन्दरवंशी कहते थे—यह उज्बेक नहीं ताजिक थे। खोकन्दके मदली खानने १८३९ ई०में करातगिनके साथ इसे भी अपने अधीन बना लिया था।

(३) कुल्याव, (४) शगनान—यह भी दो छोटी-छोटी पहाड़ी रियासतें थी, जो कि पीछे तबतक खोकन्दका अंग बनकर रही, जबतक खोकन्दको रूसियोंने हजम नहीं कर लिया।

(५) हिसार—करातगिन, दरवाज और शगनानकी पहाड़ी रियासतोंके पश्चिममें हिसार और कुल्यावके इलाके हैं, जिनमें उज्बेकोंके कबीले ककुरत और कतगन रहते थे। उन्होंने इन इलाकोंको अपने हाथमें करके बहुत-से पुराने वांशियों—ताजिकों—को भगा दिया था। बुखारावाले उस समय हिसारके इलाकेको उज्बेकिस्तान कहते थे। जान पड़ता है, १८वीं सदीके मध्यमें हिसारका इलाका बुखाराके हाथसे निकल गया था।

हिसार और कुल्यावके पड़ोसमें कई और छोटे-छोटे उज्बेक राजा थे, जिनमें कुरगानका अल्लाबर्दी जौज १८वीं सदीके अन्तमें पड़ोसियोंके लिये काल बन गया था। उसने हिसारको घेरा था, जब कि बेक अल्लायार और करशीके राजुलने उसे मारकर हिसार और कुरगानपर अधिकार कर लिया। तब भी प्राचीन वंशका शासक सईद हिसारका बेक, यदि कामके लिये नहीं तो नामके लिये, माना जाता था। बुखाराके अमीरने सईद बेककी लड़कीसे व्याह किया था, और इस प्रकार वह अमीरका कृपापात्र था। कुरगानको हिसारमें मिला लिया गया था। इज्ज-तुल्लाके समय हिसारमें सईद बेक और कुरगानमें अल्लायार बेकका शासन था। पड़ोसी कवादियान इलाकेके बेक थे दोस्त मुहम्मद और मुराद अली। इन छोटी-छोटी रियासतोंको हिसारने हजम कर लिया। १९वीं सदीके उत्तरार्धमें कुल्याव हिसारका शासक कतगन अमीर सरीखान था, जिसके डरके मारे करातगिनके शासकको १८६९ ई०में खोकन्दकी शरण लेनी पड़ी थी, लेकिन इसी समय बुखाराने उसे अपने अधीन कर लिया। १८७२ ई०में हिसारमें सात जिले थे, जिनके अपने-अपने बेक थे, कुल्यावमें भी दो जिले थे। ये सभी बेक बुखारा द्वारा नियुक्त होते थे। इन जिलोंके नाम थे—शेरावाद, बाइसून, देहनौ, युर्ची, हिसार (कुरगानत्यूवे, कवादियान), बलजुवान और कूल्याव। इनके अतिरिक्त दरबन्द, सरेजूय और फैजावादपर अमीरका शासन स्थानीय बेकों द्वारा नहीं बल्कि सीधे बुखारासे होता था।

## ५ तुखारिस्तान

प्राग्-मुस्लिम तुर्कोंके शासनकाल तथा स्वेन्-चाट्की यात्राके समय पहाड़ोंसे उतरकर पश्चिमी-भिमुख बहनेवाली पहाड़ोंतक फैली वक्षुके दोनों तटकी समतल-सी मैदानी भूमिको तुपार या तुखार कहा जाता था। पीछे यह उज्बेकोंकी भूमि हो आजतक है। यहांके निवासी अधिकतर उज्बेक हैं। वक्षुके उत्तरवाला तुखारिस्तान अब सोवियत उज्बेकिस्तानका अंग है, पर दक्षिणी तुखारिस्तान उज्बेक होते हुये भी काबुलके शासनमें है। १८वीं सदीके मध्यमें ही, जब कि अफगानोंका सितारा ऊंचा होने लगा था, दक्षिण तुखारिस्तानमें कितनी ही छोटी-छोटी रियासतें थी —

(१) खुल्म—१७५१-५२ ई०में अफगानोंने दक्षिणी वक्षु-उपत्यकाको बुखारासे छीन लिया।

१७८६ ई०में अमीर शाहमुरादने उसे लौटानेकी बहुत कोशिश की, किन्तु सफल नहीं हो सका। पीछे यहापर खिलिच अलीने अपनी प्रभुता जमाई।

खिलिच अली (—१८१७ ई०)—खुलम वलखसे उत्तर-पूर्वमें है। यहाके उज-कबीलेका सरदार खिलिच अली धीरे-धीरे बहुत शक्तिशाली हो गया, और उसने अपने पड़ोसी इलाको ऐवक, गोरी, माजूर, दर्रागूजको अपने अधीन कर लिया, तथा कुरगानतेप्पाके उज्वेक सरदार अल्लावर्दी तौजको हजरत इमामसे मार भगाया। कुन्दुजका उज्वेक सरदार खिलिच अलीका ससुर था, जिससे उसने मित्रता स्थापित की। काबुलमें भी उसका प्रभाव बड़ा और वहासे उसे “अता-लीक”की उपाधि मिली। वलखके अफगान राज्यपाल हुकूमतखान-पुत्र सरदार नजीबुल्ला खानपर भी उसका काफी रोव था। तालिकान छोड़कर बाकी सभी जगहोंपर अफगान राज्यपाल नहीं, बल्कि खिलिच अलीकी तूती बोल रही थी। यहाके तीस हजार रुपयाके करमेंसे एक तिहाई काबुल जाता, बाकी पुराने नौकरो, मुल्लो और शासकोंके खर्चमें आता। खिलिच अपने प्रभावको बढ़ा लेनेके बाद अफगानोका भक्त रहा। उसके पास बारह हजार सवार सैनिक थे, जिनमेंसे दो हजारका वेतन वह खुद देता, बाकीको उनकी सेवाओंके लिये भूमि और जागीर मिली हुई थी। कुन्दुजवाले भी उसे पाच सौ सैनिक दिया करते थे। सेनाका खर्च करनेके बाद उसकी आमदनी उन्नीस हजार गिन्नीके बराबर थी। खिलिच अलीके ज्येष्ठ पुत्रको नौ हजार गिन्नी वार्षिक वृत्ति मिलती। उसे काबुलसे “वलखका बली” (वलख-राज्यपाल)की उपाधि मिली हुई थी। खिलिच अलीका रहन-सहन बहुत सीधा-सादा था। वह १८१७ ई० के करीब मरा। इसके बाद उसके पुत्रोंमें झगडा हो गया, जिसमें कुन्दुजके मुराद बीने आगमें धी डालने-का काम किया। खिलिचके दो पुत्रोंमें एकको खुलम और दूसरेको ऐवक मिला। वलख भी ऐवकवालेके हाथमें था, लेकिन अब दोनों भाई कुन्दुजके अधीन अमीरमात्र रह गये थे।

(२) कुन्दुज (क) मुराद बी (१८१२-४० ई०)—उज्वेकोंके कतगन कबीलेका कुन्दुज प्रधान नगर था। चिट-गिम खानके समयमें भी नगरका यही नाम था। १८वीं सदीके अन्तमें कतगन-अमीर खोकन्द बेक शक्तिशाली होकर बहुत कुछ स्वतन्त्र हो गया और उसने अपने पूर्वी इलाके बदख्शाको लूटमारकर उजाड़ दिया। उसके बाद उसका पुत्र मुराद बी उत्तराधिकारी बना। अपने समयमें यह मध्य-एशियाके बहुत शक्तिशाली शासकोंमें था। इतिहासकार इब्जतुल्लाके समय यह कुन्दुजपर शासन करता था। खिलिचके जिन्दा रहनेतक यह अपनी शक्तिको बहुत आगे नहीं बढ़ा सका, लेकिन इसके बाद बड़ी तेजीसे अपने राज्यको बढ़ाया। अंग्रेज यात्री मूरक्राफ्टने अपनी यात्राके प्रबन्धके लिये कुछ आदमी भेजे थे, जिनपर बहावालोने गुप्तचर होनेका सदेह किया—“अंग्रेज एशियाके किसी भागमें इसके सिवा और किसी मतलबसे प्रवेश नहीं करते, कि अन्तमें वह वहाके स्वामी बन जाय।” पीछे मूरक्राफ्ट स्वयं वहा गया। उस समय मुराद बी खुलम, कुन्दुज, तालिकान, अन्दराव, बदख्शा और हजरत-इमामका स्वामी था। मूरक्राफ्टने ऐवकसे आगे पहाड़ोंके भीतर बहुत-से कस्बे उजटे देखे थे, जिसका कारण मुराद बी था। वहाके निवासियोंको वह गुलाम बनाकर ले गया था। मुराद बीका वजीर आत्माराम दीवानवेगी मूलतः पेशावरका निवासी था। आमतौरसे हिन्दुओंको वहा बहुत नीची निगाहसे देखा जाता था, लेकिन आत्मारामने अपनी योग्यतासे मुराद बीका कृपापाय बनकर ऐसे ऊँचे पदको प्राप्त किया। उसके पास बहुत सम्पत्ति और चार सौके करीब दास-दासी थे।

मुराद बी बड़ा ही कर्मठ आदमी था। वह स्वयं अपनी सेनाका संचालन करता और वलख तथा हजागके शीर्षोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हे दास बनाकर बेच देता था। चित्रालका मेहतर भी डरके मारे मुराद बीको करके रूपमें गुलाम देता। हिन्दूकुशकी पहाड़ियोंमें सियापोश काफिर आज भी कुछ मुसलमान न बन अपने बाप-दादोंके धर्मको मानते चले आ रहे हैं। मुराद बीने १८३० ई०में दास-दासी बनाकर बेचनेके ब्यालसे उनपर आक्रमण किया, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली, काफिरोंने उसे आगे बढ़नेसे रोक दिया। इसी समय बर्फीनी आधी आई, जिससे फायदा उठाकर मियापोशोंने आक्रमण कर दिया, और बीके चार हजार सवार काम

आये । मुराद बीके कोपका भारी शिकार बदल्शाकी सुन्दर भूमि हुई, जहाके अधिकांश लोगोको पकडकर वह कुन्दुज ले गया, और वहाके सिकन्दर-वशी शासनको राज्यसे वचित कर दिया । १८२३ ई०में किला-अफगानमें मीरयार बेग खानने मुराद बीके दस हजार सवारोंसे नौ हजार सेनाके साथ मुकाबिला किया, लेकिन उसे हार खानी पडी । १८२९ ई०में यहाके बाशिन्दोको भी उसने कुन्दुज भेज दिया । वूड अपने यात्रा-ग्रन्थ (१८३८ ई०)में लिखता है—“इस प्रकार इस अस्वास्थ्यकर दलदली भूमिमे १८३० ई०से लेकर आज (१८३८ ई०) तक उज्बेकोने करीब-करीब पन्चीस हजार परिवार या प्राय एक लाख विदेशियोको लाकर बसा दिया है, इसमें सन्देह है, कि १८३८ ई०में उनमेंसे छ हजार परिवार भी जिन्दा है । इन पिछले आठ वर्षोंमें उनमेंसे बहुतेरे मर गये । कहावत है—‘अगर तुम मरना चाहते हो, तो कुन्दुज जाओ ।’ हमारे वहा पहुचनेसे बारह महीने पहले कुल्याबके निवासी बहुत भारी सख्यामे अपने पहाडी इलाकेसे लाकर हजरत इमाममें बसाये गये । डाक्टर लार्ड और मैं उस भूमिसे गुजरे, जहापर कि उनके घर थे, जिनमेंसे कुछ अब भी खडे थे, लेकिन चारो ओर नीरवता छाई हुई थी, और चारो ओर फैली बहुसंख्यक कब्रें उनके बहुसंख्यक निवासियोकी आपबीती बतला रही थी ।” वक्षुके उत्तर कुल्याबसे लेकर दक्षिणमें सिगान (हिन्दूकुशके दो डांडोके परे तथा बामियानसे तीस मील भीतर) तक और बखान भी मुराद बीका था । मुराद बी १८४० ई०के आसपास मरा ।

(ख) मुहम्मद अमीन, खिलिच-पुत्र, खल्म (१८४०-४५ ई०)—मुराद बीके बाद उसका स्थान खिलिच अलीके पुत्र मुहम्मद अमीनने लिया, जिसको “मीरवली”की उपाधि मिली थी । वह १८४५ ई०में शासन कर रहा था । उसका पुत्र गजअलीबेग बदल्शाका शासक था । कुन्दुजमें मुराद बीका पुत्र मीर रस्तम खान शासन करता था, किन्तु वह मुहम्मद मीरवलीके अधीन था । मीरवली बुखारा और काबुल दोनोंको खुश रखता था । उसने अन्दखुदको भी अपने अधीन कर लिया था । १८४५ ई०में ऐबकमें उज्बेकोका कगली कबीला रहता था । मीरवलीका शासन सरीपुल, अन्दखुद, कुल्याब और बखानसे हिन्दूकुश और बलखतक फैला हुआ था । खिलिच अलीके समय ही तुखारिस्तानमें काबुलका नाममात्रका प्रभाव था, लेकिन अफगानोकी आखे इस ओर लगी हुई थी, जिसमे उन्हें १८५० ई०में जाकर सफलता प्राप्त हुई । काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने बुखाराके अमीर नसरुल्लाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी । मीरवलीको दोस्त मुहम्मदने राह देनेके लिये कहा, लेकिन मीरवलीके इजाजत देने या न देनेकी कोई बात नहीं थी । दोस्त मुहम्मदका पुत्र अकबर खान निर्वासित होकर खुल्ममें रहता था, जहासे वह मीरवलीकी एक दासीपर मुग्ध होकर उसे काबुल भगा ले गया । दासी किसी तरह भागकर खुल्म पहुच गई । काबुलसे भागकर आनेपर मीरवलीने उसे देनेसे इनकार कर दिया । इस प्रकार दोस्त मुहम्मदके लिये आक्रमण करनेका अच्छा वहाना मिल गया । १८४५ ई०में अफगानोने चढ़ाई की, लेकिन लडाईमें तुरन्त सफलता नहीं मिली, जिसमे सबसे बडी बाधा हिन्दुकोह (हिन्दूकुश)की दुर्गम पहाडिया थी । १८५० ई०में अफगानोने हिन्दूकुश पार करके बलखको जीत लिया । १८५९ ई०में कुन्दुजको भी लेकर वह दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके अपनी आजकी सीमाको स्थापित करनेमें सफल हुये—अफगान अपने इस इलाकेको तुखारिस्तान नहीं तुर्किस्तान कहते हैं ।

दोस्त मुहम्मदके बाद उसके पुत्र अफजलखाने—जो बलखका राज्यपाल था—१८५४ ई०में अपने भाई शेरअलीके विरुद्ध असफल विद्रोह किया । १८६४ ई०में फिर उसे अपने पदपर बहाल कर दिया गया । अफजलके पुत्रने बुखारा भागकर अमीरकी लडकीसे व्याह किया । फिर वह अपने ससुरकी सहायता तथा दूसरोकी मददसे विद्रोह करके १८६६ ई०में शेरअलीको हटा खुद काबुलकी गद्दीपर बैठा । शेरअलीका तब भी कन्दहार और हिरातपर अधिकार रहा । शेरअलीने फिर १८६८ ई०में तैयारी करके मुकाबिला किया, और अन्तमें सिंहासन पानेमें सफल हुआ । अफजल-पुत्र अमीर अब्दुर्रहमान मशहद भागा, जहासे मार्च १८७० ई०में ताशकन्दमें रूसियोके पास गया । उन्होंने उसे पचीस हजार रूबल वार्षिक पेशन दे नमरकन्दमें रख दिया ।

अफगानिस्तान ब्रिटिश और जारशाही साम्राज्यके बीचमें था। उसपर दोनो महाशक्तिया अपना प्रभाव डालनेकी कोशिश करती थी, इसलिये रूसियोंका अब्दुर्रहमानको समरकन्दमें या अग्रेजोंका अमीर याकूबको लाकर मसूरी (१८८३ ई०)में रखना कोई व्यर्थका सिर-दर्द नहीं था। अफगानोंने दक्षिणी तुखारिस्तानपर अधिकार करके वदख्शामें फिर एक स्थानीय शासकको नियुक्त किया।

(३) वदख्शा—१३वीं सदीमें प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो वदख्शाके रास्ते चीन गया था। उस समय वहाका शासक अपनेको ग्रीक-सम्राट् अलिकसुन्दरका वंशज बतलाता था। वावरके समय भी उनके वारेमें यही ख्याति थी। कोई आश्चर्य नहीं, यदि ग्रीक-वास्तवी साम्राज्यके नष्ट होनेपर कोई राजकुमार वहा जाकर शासक बना हो, या कोई कुपाणवशी राजकुमार जाकर रहने लगा हो, जिसके उत्तराधिकारी ग्रीको और शकोमें भेद करना भूल गये हो। उज्बेकोने वदख्शाको जीतकर बुखाराके अधीन कर लिया था। बुखाराके शासनके निर्वल होनेपर १८वीं सदीमें वदख्शा स्वतंत्र हो गया। अग्रेज यात्री मूरकाफ्ट १८३२ ई०में इधरसे गुजरा था, उस समय तत्कालीन राजवंशको स्थापित हुये सौ साल हो चुके थे।

सुल्तानशाह वदख्शाके राजवंशका संस्थापक था, जिसकी राजधानी फैजावादको भी उसीने बसाया था।

(क) सुल्तानशाह (१७६५ ई०)—जिस साल चीनन वहाके शासक खान खोजासे काश्गरको जीता, उस समय वदख्शाका शासक सुल्तानशाह था। खान खोजाने भागकर चालीस हजार आदमियों के साथ वदख्शामें शरण ली थी। उसके धन और वेगमोंके लोभसे सुल्तान शाहने उसपर आक्रमण कर दिया। खान खोजाने हार खाते समय शाप दिया, कि वदख्शा तीन बार निर्जन बनेगा, और वहा एक कुत्ता भी जिन्दा नहीं रह जायगा। कुछ साल बाद १७६५ ई०में अफगान अमीर अहमदने वदख्शा जीत लिया, जिसमें सुल्तानशाह मारा गया। उस समय वदख्शामें पैगम्बर मुहम्मदका कुर्ता बड़ी पवित्रताकी चीज समझा जाता था, जिसे अफगान फैजावादसे काबुल ले गये।

(ख) मीर मुहम्मद शाह (१७६५-१८१२ ई०)—सुल्तानकी जगहपर उसके पुत्र मीर मुहम्मदको बैठाया गया। १८१२ ई०में जब इज्जतुल्ला इधरसे गुजरा, तो यही वदख्शाका शासक था।

(ग) मीर यारवेक खान (१८२३ ई०)—मुराद बीने इसे १८२३ ई०में किला-अफगानमें हराया, और १८२९ ई०में वदख्शा बिलकुल मुराद बीके हाथमें चला गया। वह यहाके वाशिन्दोंको कुन्दुज ले गया। मीरयार वेकका भाई मीर मुहम्मद रजावेक तालिकानमें भाग गया।

(घ) जहादारशाह (१८५९-६१ ई०)—अफगानोंने वदख्शापर अधिकार करके १८५९ ई० में पुराने वंशके जहादारशाहको फिर अपनी ओरसे गद्दीपर बैठाया। चित्रालके मेहतरने इक्कीस दास-दासियोंको भेजकर अपनी लडकीका व्याह जहादारके लडकेके साथ किया। १८६१ ई०में इसे गद्दीसे हटा दिया गया।

(ङ) महमूदशाह (१८६१ ई०)—जहादार अमीर शेरअलीके प्रतिद्वंद्वीका पक्षपाती था, इसीलिये उसे हटाकर उसके भतीजे महमूदशाहको गद्दीपर बैठाया गया। इस समय वदख्शा कई इलाकोमें बटा हुआ था, जिनमें फैजावाद और गर्म सीवे महमूदशाहके शासनमें थे, और दराइम, शहरसब्ज (दक्षिणी), गुम्बज, फराखर, किश्म, रुस्तक, इश्कासिन, वखान, जेवक, मिन्जान, राग, दौग और आसियावीमें खानदानी अमीर महमूदशाहकी अधीनतामें शासन करते थे।

तुखारिस्तानके पश्चिमी भागमें कई और छोटे-छोटे राज्य थे, जो अन्तमें अफगानिस्तानके हाथमें चले गये थे।

(४) मेमना—नादिरशाहकी मृत्युके बाद वहाके राज्यपाल हाजीखानने अपनेको स्वतंत्र घोषित कर दिया। उसके बाद उसका छोटा लडका अहमद १७९८ से १८०९ ई० तक शासन करता रहा। फिर उसका चचेरा भाई अलायार खा १८१० से १८२६ ई० तक मेमनाका स्वामी रहा। इसके बाद मिजराब खान गद्दीपर बैठा, जिसे उसकी एक बीबीने जहर दे दिया। उसके पुत्रोंमें उत्तराधिकारके लिये झगडे शुरू हो गये, जिनका फैमला हिरातके अफगान-राज्यपाल यारमुहम्मदने किया—बनियों और किमानोंका शासक उकमेत और किलेकी सेनाका कमांडर शेरसको

बनाया गया। शेरखा १८५३ ई० तक शासक रहा। उकमेत खानको उसके भाई मिर्जा याकूबने किलेकी दीवारसे गिराकर मार दिया, जिसके बाद उकमेतका पुत्र हुसेन खा गद्दीपर बैठा, किन्तु सारी शक्ति उसके चचा याकूबके हाथमें थी। याकूब जुरमानाकी जगह आदमियोंको बुखारामे गुलाम बना बेचनेके लिये भेज देता था। हुसेन खा काबुलका नहीं, बल्कि बुखाराका पक्षपाती था। उसने लम्बे केशोवाली अफगानोंकी तीन सौ खोपडियोंसे अपने किलेके दरवाजेको सजाया था, और १८६३ ई०में काबुलपर चढ़ाई करनेकी सोच रहा था, लेकिन इसके बाद ही उसके सरक्षक अमीर-बुखाराको भी रूसियोंकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।

(५) अन्दखुद (अन्दखोइ)—यह बुखारा और हिरातके बीचमे खुरासानका एक भाग है जो देरतक अफगानिस्तानके हाथमें रहा। यहाँ अहमदशाह अब्दालीके पुत्र तेमूरशाहके नामका खुतवा और सिक्का चलता रहा। तेमूरशाहकी ओरसे अफशार कबीलेका सरदार रहमतुल्ला यहाँका शासन करता था। बुखाराके अमीर शाह मुरादसे लड़ते वक्त वह मारा गया। इसके बाद इल्दुज खान शासक था। १८४० ई०में अन्दखुदको बुखाराने ले लिया। यहाँके बाशिन्दे मुख्यतः तुर्कमान हैं। अन्दखुदको वास्तविक नर्क कहा जाता था—यहाँका पानी खारा और कड़ुवा है, रेगिस्तानमे बालू तपती है, और जहरीली मक्खियाँ और बिच्छू यहाँ बहुत मिलते थे। लेकिन अब तो वह कलका नर्क सोवियत तुर्कमानिस्तानका भाग बनकर वास्तविक स्वर्ग बननेके रास्तेमें है।

(६) साविरगान—१८१२ ई०में यहाँ इरज खान फिर रस्तम खान शासक रहा। १८५३ ई० में इसे अफगानोंने ले लिया, और तबसे अफगानिस्तानमें है।

(७) सरीपुल—महमूद खान यहाँका शासक था, लेकिन काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदने १८५३ ई०में जब साविरगानको लिया, उसी समयसे सरीपुल भी काबुलके हाथमें चला गया।

१९वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें एक अंग्रेज लेखकने अफगानी तुर्किस्तानके बारेमें लिखा था—“इन उज्बेक रियासतोंका अधिकांश, चाहे नामके लिये ही हो, अब अफगानोंकी प्रजा है, लेकिन अभी हाल हीमें अफगानोंने इन्हें जीता है, और वह अफगानी जूयोंको खुशीसे उठानेके लिये तैयार नहीं है। यह अंग्रेजोंके लिये कहातक बुद्धिमानोंकी बात है, जो कि वह आजतक इन रियासतोंको अफगानिस्तानका अभिन्न अंग माननेपर जोर दे रहे हैं। अंग्रेजोंका ऐसा करना राजनीतिक बात हो सकती है, लेकिन नृवश और इतिहासकी वह बात नहीं है। इसे असदिग्ध रूपसे कहा जा सकता है, कि नसल और इतिहास दोनोंकी दृष्टिसे यहाँके सबसे अधिक निवासी काबुल नहीं बुखारासे सबध रखते हैं।”

अंग्रेजोंके बलपर अफगानोंने इस शुद्ध उज्बेक इलाकेको अपने हाथमें बनाये रक्खा। पहले तो अमीरों-अमीरोंका सवाल था, लेकिन अब वक्षु नदीके उत्तरमें मध्य-एशियाके बहुत शक्तिशाली, तथा विद्या और उद्योग-धधेमें आगे बढ़ी उज्बेक जातिका अपना गणराज्य है। वक्षुके दक्षिण तटके उज्बेक परले पार तैमिज नगरीकी रातको हजारों बिजलीके चिरागोंसे जगमगाते और दिनको कारखानोंकी चिमनियोंसे धुआँ उगलते देखकर ठंडी आह लेकर कहते हैं—“कबतक हम अपने उत्तरी भाइयोंसे अलग रखे जायेंगे?”

### स्रोत-ग्रन्थ

- १ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ कूवेर आदि, १९१० ई० पृष्ठ २३६-४८)
- २ इस्तोरिया सससर (अ म र दोनिकन् ४ जिल्द)
- ३ तुर्कैस्तान्स्को वोयेन्नो ओकुग (३ जिल्द, १८८०)
- ४ ओत्चेत् ओ कोमेन्द्रोव्के व् तुर्कैस्ताने (व व वेर्तोल्द, “इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्नोइ कुलतुरी, जिल्द १ पृष्ठ १-२२)
- ५ La rivalité anglo-russie on XIX siècle en Asie (A M F Roure, Paris 1908)
- ६ History of Mongol (H. H. Howorth, London (1876-88)

## खीवाके खान (१७००--१८८१ ई०)

खीवा अर्थात् प्राचीन ख्वारेज्ममें किस तरह उज्जेकोके खान शासन करन लगे, इसके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं। १८वीं सदीके आरम्भमें पहला उज्जेक-वंश खतम हो गया, लेकिन मध्य-एशियामें अब भी चिङ्ग-गिम् खानवाले राजकुमारोंकी बड़ी माग थी, इसलिये उन्हें ढूढ़-ढूढ़कर लाकर खान बनाया जाता था। ऐसे ही बाहरसे लाये हुये खानोंने प्रायः सौ सालोंके लिये खीवाको अपने हाथमें रखा, जिसके बाद अन्तिम ककुरत-वंशने शासन किया।

### §१ बाहरी वंश (१७००--१८०४ ई०)

अधिकारच्युत वंशके राजकुमार अब भी ढूढ़नेसे मिल जाते, लेकिन अन्तिम खानोंके अत्याचारोंसे तंग आकर खीवाके प्रभावशाली आदमियोंने उन्हें लेना पसंद नहीं किया, और बुखाराके राजवंश एव कजाको और कल्मकोमें दूत भेजकर किसी राजकुमारको ढूढ़ना चाहा। इस समय पुराने राजवंशके कितने ही लोग अरालके एक द्वीपमें रहते थे। पहला खान अरक बनाया गया, जो कराकल्पकके खानोंसे सवध रखता था।

### १ अरक, एवरक, अवरग खान

बादशाह औरगजेवका ही नाम इस खानका भी था, और शायद यह औरगजेवका अन्तिम समकालीन था। लेकिन यह या इसके वंशने बहुत दिनोत्तक शासन नहीं किया और लोगोंने इसके बाद शेरगाजीको खान बनाया।

### २ शेरगाजी ( — १७१३ ई० )

खीवाका खान बननेसे पहले शेरगाजी बुखारामें रहता था, वहीसे इसे लाया गया। १७१३ ई०में तुर्कमान सरदार खोजा नफस अस्त्राखान गया था। वहां वह राजुल समानोफसे मिला। समानोफ गेलानका निवासी था, लेकिन पीछे रूसमें ईसाई बनकर बस गया था। खोजाने उसे समझाया, कि तुर्कमानोंको मिलाकर निम्न-वक्षुके जिलोंको रूसियोंको ले लेना चाहिये, वहां बहुत सोना है। उसने यह भी बतलाया, कि उज्जेक-शासकोंने रूसियोंके भयसे ही बाव बावकर वक्षुको कास्पियनमें हटा अराल समुद्रमें डाल दिया, उमें फिर कास्पियनमें डाला जा सकता है, उसके बाद आसानीसे वोल्गाके जहाज कास्पियन होकर वक्षुके भीतर जा सकेंगे। खोजाकी यह बात यद्यपि अब २०वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें मची होने जा रही है, लेकिन उस समय उसने इसे रूसियोंको लोभमें डालनेके लिये कहा था। इसी समय राजुल गागरिनसे पीतर I को पता लगा, कि यारकन्दके पास सोनेकी खानें हैं। पीतरको अपने युद्धोंके लिये सोनेकी बड़ी आवश्यकता थी। ऐसे समय कितने ही शासक कीमियागोंके जालमें पड़ते देखे गये हैं, इसलिये यदि सोनेकी खानोंकी ओर पीतर असाधारण रूपसे आकृष्ट हुआ हो, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। खोजाको अपने साथ ले राजुल समानोफ राजधानी पीतरवुर्ग गया। उस समय गारद-फ्तान तथा मुमलमानसे ईसाई बना राजुल वेकोविच चेर्कास्की सम्राट्का बहुत प्रिय दरबारी था। उसने दोनोंको जारसे मिलाया। पीतरवुर्गमें रहते खीवाके दूत अशुरवेक (१७१३-१५ ई०)

ने उनकी बातका समर्थन करते हुये कहा, कि रूसियोंको वक्षुके कास्पियनमे गिरनेके पुराने स्थान (शायद क्रास्नोवोद्स्क)को दस हजार सैनिकोंके रखने लायक बनाना चाहिये। यदि रूसी वक्षुको उसकी पुरानी धारमें डालना चाहेंगे, तो हमारा खान (शेरगाजी) विरोध नहीं करेगा। अशुरबेक बहुत-सा भेंट-उपहार पाकर १७१५ ई०में अपने खानके पास लौटा, लेकिन अरग और शेरगाजीके सिंहासनारोहणके समय हुई गडबडीके कारण वह अस्त्राखानमें रुक गया। इसी समय पीतरने अशुरबेकको भारत जा वहासे तोता और चीता लानेके लिये कहा। राजुल बेकोविच चेकस्की (चेरकास-राजकुमार) ने ईरानके शाह हुसेनके शासनकी गडबडियोंके समय रूसमें शरण ली थी। उसक मरनेपर उसके पुत्र अरुक्सान्द्रने ईसाई वन राजुल बोरिस अलक्सान्द्र-पुत्र गालितजिनकी लडकीसे व्याह किया, और पीतरका गारद-अफसर बना। इसी अलक्सान्द्रके नतत्वम पीतरने खीवाके लिये एक अभियान भेजा। उसके जिम्मे काम दिया गया था—वक्षुकी पुरानी धाराकी सर्वे करना, खारेज्मके खानसे रूसकी अवीनता स्वीकार कराना, और उपयुक्त स्थानोंपर किले बनवाना। यह सब काम कर लेने पर बुखारा के अमीरसे बातचीत करना, फिर लेफ्टिनेंट कोजिनको भेजकर स्थलमार्गसे भारत जानेके रास्तेका पता लगाना, और एक दूसरे आदमीको यारकन्दक सोनेकी खानोंके वारेमें जाननेके लिये भेजना।

पीतरने उज्वेक-खानों और दिल्लीके बादशाहके लिये चिट्ठिया दी थी। १७१६ ई०की गर्मियोंमें राजुल बेकोविच चार हजार आदमियोंके साथ रवाना हुआ। उसने कास्पियन तटपर करागन, अलक्सान्द्रोवयेस्क और क्रास्नोवोद्स्कके किले बनाये, जिनमें अन्तिम उसी जगह बनाया गया, जहापर पहले वक्षु कास्पियनमे गिरती थी। इन किलोंमें सैनिकोंको रखकर बेकोविचने खीवाके खानको अपने आनेकी खबर देनेके लिये किरियक (ग्रीक) बोरानिनको भेजा। बोरानिन अस्त्राखानम वसे ग्रीकोंमेंसे था। राजुल स्वयं वोल्गाके तटपर लौट आया। कजानसे पाच सौ स्वीड युद्धवदियोंको भर्ती करके मेजर फ्राकेनवर्गको उनका अफसर बना बेकोविचने फिर वोल्गातटसे १ जुलाई १७१७ ई०को प्रस्थान किया। अबकी उसने ग्रेबेन्स्कके रूसी कसाको और नोगाइयोके इलाकेमें होते स्थलमार्गसे यात्रा की। बेकोविचके साथ अस्त्राखानके रहनेवाले तीन सौ तारतार, कितने ही और बुखारी कारीगर आदि भी थे। गुरियेफमें पहुंचनेपर उरालके पदरह सौ कसाक आ मिले। दो दिन बाद यम्वा नदीके तटपर पहुंच वेडोका पुल बना उसे पार किया। बेकोविचने भारतका रास्ता ढूढनेके लिये मिर्जा तौकेलेफको भेजा, लेकिन उसे ईरानियोंने अस्त्रावादमे रोक लिया, जहासे पीछे उसे अस्त्राखान भेज दिया गया। यद्यपि उस समय अस्त्राखान, वाकू, बुखारा, समरकन्द आदिमें काफी सख्यामे भारतीय व्यापारी रहते थे, जिनसे भारतका रास्ता आसानीसे मालूम हो सकता था, लेकिन पीतर सैनिक दृष्टिसे भी सुभीतेका कोई रास्ता ढूढना चाहता था।

यहा बेकोविचको कलमक थैची आयुका और पहले भेजे दूत बोरानिनने बतलाया, कि खीवावाले अभियानका विरोध करेंगे। यम्वा तटसे दो दिन चरनेके बाद वह बगवतोफ और पाच दिन और चलकर इरक्तिस्-गिरि (उस्तुर्त या चिक) पहुंचा। उस्तुर्तकी ऊंची अघित्यकाको पार करके वह अराल समुद्रके तटपर गया। अब वह ऐसी भूमिमे थे, जहा इतने आदमियोंके लिये पानी मिलना आसान नहीं था। इसके लिये उन्हें जगह-जगह नये कुर खोदने पडे, और कितने ही पुराने कुओंकी मरम्मत करनी पडी। इस प्रकार पानीका प्रव्रण करके वह सात सप्ताह तक चलते गये। जब खीवा चार दिन रह गया, तो खानके दूत घोडों, चोगों आदिकी भेंट ले बेकोविचके पास आये। यद्यपि उन्होंने एक ओर बाहर से डम नरह शिट्टा-चार दिखलाया, दूसरी ओर खीवाके घुडसवार बेकोविचके ऊपर आक्रमण करते रहे। बेकोविचके आदमियोंने भी अपने बारूदी हथियारोंसे मुकाबिला किया, जिसपर लोग अपने कस्बों और गांवोंको छोडकर खीवाकी ओर भागने लगे। खानने शत्रुकी शक्तिका अदाजा लगा चाल चलते हुये कहा—“गलतीके लिये हम क्षमा मागते हुये आपका स्वागत करते



हैं, लेकिन आपकी सेनासे लोग भयभीत हैं। सेनाको वही रखकर आप मामूली आदमियोंके साथ पधारिये।" इसपर पाच सौ आदमियोंको साथ ले वेकोविच खीवा शहरमें पहुँचा। खानने पीछे छोड़े सैनिकोंके नाम वेकोविचसे जवर्दस्ती या जाली चिट्ठी लिखवाई, जिसमें कहा गया था कि अपने हथियारोंको खानके अफसरको दे दो और एक नगरमें जाकर डेरा डालो। रुमियोंको क्या पता था? उन्होंने चिट्ठीको सच्ची मानकर हथियार दे दिये, और भिन्न-भिन्न जगहोंमें जाकर डेरा डाला। इसी समय खीवावालोंने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया। जो मारे जानेसे बचे उन्हें उन्होंने दास बना लिया। कुछ रूसी सैनिक और तोपखानेके आदमी डरके मारे खानकी सेनामें भी भर्ती हो गये। वेकोविचको लाल कपड़ा पहनाकर खानके तम्बूके सामने ला उसे सिज्दा करनेके लिये हुक्म दिया गया। इन्कार करनेपर पहले उसके पैर काट डाले गये, फिर बड़ी क्रूरतासे उसके प्राण लिये गये। उसकी खालमें भूसा भरकर बुखाराके खानके पास भेज दिया गया, लेकिन उसने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, और खीवाके दूतको यह कहकर भगा दिया, कि तुम मनुष्यका खून पीनेवाले नरभक्षक हो। राजुल समानोफ और दूसरे प्रमुख व्यक्तियोंके सिरोंको काटकर खीवाके दरवाजापर भालेसे लटका दिया गया, जो बहुत सालों तक वैसे ही लटकते रहे। तुर्कमानोंने उस समय उज्बेकोंसे खरीदे दो रूसी गुलामोंको हेन्वे नामक एक यूरोपीय सरदारको बेचना चाहा। कहते हैं, वेकोविचके बच्चे और बीबी बोलगामें डूब मरे थे, जिसके कारण भी उमका दिमाग ठीकसे काम नहीं कर रहा था, और वह इतनी बड़ी गलती कर बैठा।

पीतरने फिर भी मध्य-एशियाको छोड़ा नहीं। उसने तुर्की-फारसी जाननेवाले अपने एक इतालियन नौकर फ्लोरियो वेनेवेनीको भेजा, जो ईरानके रास्ते नवम्बर १७२१ ई०में बुखारा पहुँचकर वहाँ चार साल रहा। अवुल्फैज मुहम्मद खाने वेनेवेनीकी बहुत खातिर की थी।

शेरगाजीको पहिले कितने ही उज्बेक बुखाराके तख्तपर बैठाना चाहते थे, लेकिन उसमें सफल न हो वह जब खीवाकी गद्दीपर बैठा, तो उसके आदमी बुखारामें लूटमार करने लगे। इसपर बुखारियोंने खीवाके पुराने वंश अरालियोंका पक्ष लेना चाहा। उन्होंने १७०७ ई०में अवुल्गाजीके वंशज तेमूर सुल्तानको शेरगाजीका प्रतिद्वंद्वी खड़ा किया—वह मूसाखानका पुत्र था, जो बापके मरनेपर बुखारामें रहता था। तेमूरका बड़ा भाई बलखका राज्यपाल था। बड़े भाईको अरालियोंने अपना खान चुना था। बुखारियोंकी मददसे तेमूर सुल्तानने दो बार खीवापर आक्रमण किया। शेरगाजीको बुखारा और तेमूरसे ही मुकाबिला नहीं करना था, बल्कि उसे रूसियोंसे भी बहुत भय था। उसने पीतरको प्रसन्न करनेके लिए रूसी बंदियोंको छोड़ दिया और वेनेवेनीको खीवा आनेके लिये बहुत आग्रह किया। इस समय बुखारामें बड़ी अराजकता फैली हुई थी। वहाँके खान अवुल्फैजके खिलाफ यह भी इल्जाम लगाया जाता था, कि उसने एक काफिर (वेनेवेनी) को अपने पास रख रक्खा है। पीतरने ईरानपर जो सफल अभियान किया था, उसकी खबर पा उज्बेकोंका दिमाग कुछ ठंडा हुआ, लेकिन शेरगाजीकी परेशानी कम नहीं हुई। १६ मार्च १७२५ ई० को वेनेवेनीने अपनी सरकारके पास पत्र लिखा था, कि बुखाराकी हालत बहुत डावाडोल है, सारे रास्ते लुटेरोंके हाथमें है। बलखके पुराने शासकने तेमूरके भाईसे उस इलाकेको छीनकर उसे मार डाला। शेरगाजीके लिये दो साल बहुत मुसीबतके थे। तेमूर सुल्तान और उसके सहायक अरालियों और कराकल्पकियोंने दो बार खीवापर चढ़ाई की। रजीम खानके समरकन्दसे आकर बुखारापर चढ़ाई करनेकी खबर आई, जिससे लोगोंमें बड़ी घबराहट मच गई। जिस समय बुखाराकी यह हालत थी, उसी समय वेनेवेनीने मशहदका रास्ता लेना चाहा। तब खीवाका पल्ला भारी हो गया था। १० फरवरी १७२५ ई०को वेनेवेनी चुपकेसे निकल पड़ा और किसी तरह तुर्कमानोंके खतरोंसे बचते खीवा पहुँचा। लोग कहीं गुप्तचर न समझ लें, इसलिये उसने यूरोपीय छोड़ एनियार्ड पोशाक पहिन दाढ़ी रख ली थी। खीवा-खानने उसके साथ अच्छा बर्ताव किया, और गुलाम रुमियोंके छोड़ देनेका वचन दिया। वेनेवेनीके खीवा पहुँचनेसे पहले ही तेमूर सुल्तान खीवापर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहा था, इसलिये भी शेरगाजी बहुत परेशान था। पीतरका दूत खीवाके राजदूत सुभानकुल्लीको ले वहाँसे अगस्तमें खाना हुआ,

और रूसकी सीमामें सुरक्षित पहुच गया । इम समय ख्वारेज्म मध्य-एसियामें गुलामोका सबसे बडा बाजार था । वहा दस हजार रूसी और ईरानी गुलाम खेतो और नहरोपर काम करते थे । रूसी तो ईसाई होनेके कारण काफिर थे ही, ईरानियोंको शीया होनेकी वजहसे मुल्लोने काफिर होनेका फतवा दे दिया था, इसलिये उनके बेचने-खरीदनेमें कोई रुकावट नही थी । खीवाकी बाजारोसे इन अभागो गुलामोको कजाक, तुर्कमान और कल्मक खरीद ले जाते थे । १७२८ ई०में रूसी और ईरानी गुलामोने शेरगाजीको मारकर तेमूर सुल्तानको खान बनानेकी योजना बनाई थी, लेकिन पहिले ही भडाफोड हो गया । बहुतसे षड्यन्त्रकारी मार डाले गये, और अरालके खानको दो दिन बाद आकर खाली हाथ लौटना पडा ।

१७३१ ई०में रूसकी शासिका रानी अन्ना (१७३०-४० ई०) थी । उसने कर्नल एर्दवेर्गको दूत बनाकर खीवा भेजा, लेकिन रास्तेमें ही डाकू उसपर टूट पडे, और सब माल गवाकर उसे पीछे लौटनेके लिये मजबूर होना पडा ।

### ३ इलबर्स (—१७४० ई०)

शेरगाजीके तुरन्त ही या कुछ साल बाद इलबर्स खीवाका खान बना । यह कजाकोके खानवंशका था । १७३९ ई०में दिल्लीकी सडकोपर खूनकी नदिया वहा नादिरशाह जब लौटा, तो बुखाराके अमीर अबुल्फैजने उसे स्वागतका न्यौता दिया । उसने इलबर्सको भी इसकी खबर दी, जिसपर उसने जवाब दिया—“एक पापी आत्माको जवर्दस्ती तुम स्वर्गमें नही प्रविष्ट करा सकते ।” नादिर जिस वक्त भारतमें लूटमार करनेके लिये गया था, उसी समय मैदान खाली पाकर इलबर्सने खुरासानको लूटा । भारतसे लौटनेपर चारबेकरसे नादिरने इलबर्सको अपने पास आनेके लिये सदेश भेजा, लेकिन जाकर नादिरके सामने कोर्निश करनेकी जगह इलबर्सके तीन हजार यामूद चारजूयपर चढ़ आये, जिन्हे नादिरके हाथो पिटना पडा । अबुल्फैजने बीचमें पडकर क्षमादान दिलानेका प्रयत्न किया, और इसके लिये अपने तीन दूत इलबर्सके पास भेजे । इलबर्सने दो दूतोंको मुरवा दिया और तीसरेको नाक-कान काटकर लौटाया । नादिर भला खीवाके खानकी इस गुस्ताखीको कैसे सह सकता था ? उसने अपनी सेनाको दो भागोंमें बाटकर खीवापर चढ़ाई की । एक सेना वक्षुके बायें तटसे बढी, और दूसरी दाहिनेसे । साथमें बहुतन्सी नावोका बंडा भी चल रहा था । नादिरकी सेना जल्दी ही हजारास्प पहुच गई । इलबर्स भी तैयार था । नादिरने हजारास्पसे आगे बढकर एक सेनाको खानकाह जानेका हुक्म दिया—इलबर्स उस समय खानकाहमें था । नादिरने आत्म-समर्पण करनेके लिये तीन दिनकी मुहलत दी । इसपर इलबर्स गर्दनमें तलवार और रस्सी बाधे नादिरके सामने आया, जिसने उसे माफ कर दिया । लेकिन इलबर्सने किसी खोजा (सैयद)का सिर कटवा लिया था । खोजाके पुत्रोने खूनका बदला लेनेकी माग की, जिसपर नादिरके हुक्मसे इलबर्स और उसके बीस अफसर मारे गये । खीवा छोड ख्वारेज्मके वाकी शहरोने नादिरके सामने आत्म-समर्पण किया । इस सघर्षके समय इलबर्सने लघु-ओर्दूके प्रसिद्ध खान अबुल्खैरसे सहायता मागी थी, और उसने आकर खीवापर अधिकार कर लिया था । इसी समय अबुल्खैरके बुलानेपर एसी सैनिक इजीनियर ग्लादिशेफ, मुराविन और नजिमोर सिर-दरियाके मुहानेपर रूसी किला बनाने आये थे । वह दस्ते-कजाककी सर्वे कर चुके थे । खानको उसके डेरेमें न पा वह भी खीवा गये । अबुल्खैरने कुछ सुल्तानोंके साथ मुराविनको नादिरके पास भेजा, जिसने उनका अच्छा स्वागत किया । उसने अबुल्खैरको बुला भेजा, लेकिन वह नादिरपर क्या विश्वास करने लगा ? नादिरकी कृपासे खीवाको हाथमें रखनेकी जगह अबुल्खैरने देश लौट जाना ही अच्छा समझा । खीवाके नागरिकोने चार दिनतक नादिरके आक्रमणको विफल करनेकी कोशिश की, लेकिन अन्तमें आत्म-समर्पण करना पडा । नादिरने चार हजार तरुण उज्बेकोको अपनी सेनामें भर्ती करके खुरासान, और बारह हजार रूसी तथा ईरानी गुलामोको मुक्त करके अपने घर भेज दिया । उन्हीके बसनेके लिये नादिरने अबीवर्दके पास एक नया शहर बसाया ।

## ४ ताहिरखान (१७४०-४१ ई०)

इलवर्सके मारे जानेके बाद बुखारा-खानके सबबी ताहिरको खीवाका खान बना नादिर चारजूयकी ओर लौट पड़ा। ताहिर बहुत समयतक राज्य नहीं कर पाया। अगस्त १७४१ ई०में नादिर कास्पियनके पश्चिमी तटवर्ती दागिस्तानमें लड़ाईमें फसा था। इसी समय उज्बेक अरालियोने अबुलखैरके पुत्र नूरअलीको बुलाया, जिसने खीवा पहुँचकर ताहिरको मार डाला। थोड़ी देरके लिये नूरअलीने शासन सभाला, लेकिन जब नादिरशाहके फिर आनेकी खबर मिली, तो वह कजाकोमें भाग गया। नादिरकी सेना नसरल्ला मिजकि नेतृत्वमें मेवं पहुँची। विद्रोही नेता एर्तुक ईनकने वहाँ जाकर क्षमा मागी, नादिरने उसे माफ कर दिया।

## ५ अबुल् मुहम्मद, इलवर्स-पुत्र (१७४१ ई०)

इलवर्सका पुत्र अबुल् मुहम्मद नादिरकी शरणमें था। नादिरने उसीको खीवाका खान और एर्तुकको उसका वजीर बनाया। एर्तुकको बहुत जल्दी उज्बेक और यामूद विद्रोहियोंने मार डाला और खान अबुल् मुहम्मद भी खीवासे लुप्त हो गया।

## ६ अबुलगाजी II (१७४५ ई०)

विद्रोहियोंने अब अबुलगाजीको अपना खान बनाया। इस समय उज्बेकोंके साथ-साथ तुर्कमान यामूद कबीलेका भी खीवा-राज्यमें बहुत जोर था। उधर ईरान नहीं चाहता था, कि खीवावाले उसके हाथसे निकल जाय। विद्रोह होते ही रहते थे। ईरानी जेनरल अलीकुल्लीने १७४५ ई०में ख्वारेज्मपर आक्रमणकर उरगजके पास यामूदोको हराकर बलखानकी पहाड़ियोंकी ओर भगा दिया, और नये खानको नियुक्त करके ईरानका रास्ता लिया।

## ७ काइप, वातिर-पुत्र (१७५० ई०)

वातिर शायद कराकल्पकोका खान था। १७५० ई०में इरवेक नामक एक दूतने रूसमें जाकर कहा था, कि खीवा जानेवाले कारवाको वातिरके राज्यके भीतरसे आना चाहिये, नूरअलीके राज्यके भीतरसे आना सुरक्षित नहीं है। इसी समय कजाक अरालियोपर आक्रमण करके उनके बहुतेसे आदमी और पशु पकड़ ले गये। ये नूरअलीके आदमी थे, इसलिये खीवामें नूरअलीके प्रजाजनोको पकड़कर उन्हें लूटका माल लौटानेके लिये मजबूर किया गया। वातिरका पुत्र काइप खीवामें आनेसे पहले लघु-ओर्दके एक कबीलेका खान रह चुका था। काइपने नूरअलीके राज्यसे ओरेनबुर्ग जानेके रास्तेको बदल कर दिया—रूसियोंके व्यापारका केंद्र होनेके कारण ओरेनबुर्गसे व्यापारियोंको बहुत फायदा था। काइपके हुक्मका बदला लेनेके लिये १७५३ ई०में नूरअलीने खीवाके कारवाको लूटा और रूससे कहा, कि यदि तोपखानेके साथ दस हजार सेना मिले, तो रूसके लिये हम खीवाको जीत सकते हैं। लेकिन रूसियोंने उसे माननेसे इन्कार ही नहीं कर दिया, बल्कि हुक्म दिया, कि लूटे मालको उसके मालिकोको लौटा दो। रूस इस तरह खीवासे निरवाय व्यापार होने देना चाहता था, लेकिन मध्य-एशियाके शासको और अमीरोंके लिये लूट तो एक वैध आय थी। १७५४ ई०में काइपने खीवामें आये एक रूसी कारवाको रोक लिया, और साल भर बाद उसे छोड़ा। काइपके दूतने रूसमें जाकर कहा, कि उज्बेक हमारे खानको पसंद नहीं करते, इसलिये उसकी मददके लिये रूसको हाथ बढाना चाहिये। रूसने इन्कार कर दिया, नूरअली और उसके पुत्र एरलीके पकड़े जानेपर मुक्ति-धन देकर छुड़ानेका वचन देते हुये सेना एकत्रित की। सेनाको आशीर्वाद देनेके वक्त खोजाने ऐसा करनेसे मना कर दिया।

काइप विद्वान् और साथ ही अत्यन्त क्रूर आदमी था। उसकी क्रूरताके कारण लोगोंने विद्रोह करके उसे लघु-ओर्दके कजाकोमें भागनेके लिए मजबूर किया, जिनके ही भीतर रहते

१७७० ई०में वोल्गा तटके तोरगूत मगोलोके प्रस्थानके समय उसने उनपर आक्रमण करके "गाजी" (धर्मयोद्धा) का नाम पाया। पीछे १७८६ ई०में लघु-ओर्दूके एक कबीलेने उसे अपना खान भी चुना। काइपने अमीर-बुखारा अबुल्फैज खाकी लडकी व्याही थी। उसकी मृत्यु १७९१ ई० के आसपास हुई।

### ८ अबुलगाजी III (—१७५५ ई०)

खीवामे अब वास्तविक शक्ति ईनको (प्रधान-मन्त्रियों) के हाथमें थी। उज्बेकोमे ककुरत (कुनगरद) कबीलेका प्रभाव छिड़-गिस् (चिंगिस) खानके समयसे ही बहुत था, यह हम पहले बतला आये हैं। मूलतः यह मगोल कबीला था, जो पीछे तुर्क बन गया। ककुरतोके वी (वेग या अमीर) वशानुवश क्रमसे ईनक (वजीर) तथा हजारास्पके राज्यपाल होते आये थे। १८वीं सदीमें बुखारा और खीवा दोनोंमे हालके नेपाल और पिछली सदी तकके जापानकी तरह दो राजा हुआ करते थे। खानको बस अच्छा-अच्छा खाना और सुनहला जामा पहनकर मौज करनेकी छुट्टी थी। उसके दरबारमें सलाम करनेके लिये प्रति दिन ईनक और बड़े-बड़े दरबारी जाते थे। राज्यका सारा काम ईनकके हाथमें था। प्रत्येक शुक्रवारको दरबारी महलमे जाते, जहां खानके पास ईनक बैठता। जब नमाजका वक्त आता, तो ईनक खानको उठनेमे सहारा देता, उसे मस्जिद ले जाता, और नमाजके बाद लौटा लाता। खीवाके खान इसी तरहके गुडिया खान थे, जिनका काम था ईनकोके हाथमे नाचना। इसी गुडिया-खानकी जगह लेनेके लिये कजाको या कराकल्पकोमेंसे किसी छिड़-गिस्-वशीको लाया जाता, और जबतक पसंद आता, रखकर उसे निर्वासितकर किसी दूसरेको खान बनाया जाता। इशमद वी सबसे पुराने ईनकोमेंसे था। पता लगता है, कि उसके बाद उसका पुत्र मुहम्मद अमीन १७५५ ई०में ईनक बन सत्रह साल-तक शासन करता रहा। इसके शासनकालमें खीवाकी समृद्धि बढ़ी। उस समय खीवाका अपना कोई सिक्का नहीं था, ईरान और बुखाराके सिक्के ही वहां भी चलते थे। शुक्रवारकी नमाजके ख़ुतवेमें गुडिया-खानका नाम लिया जाता था। मुहम्मद अमीनकी मुहरपर खुदा हुआ था—“अल्लाह और पैगम्बरकी मेहरबानी, खानका एक दास, जिसपर वह विश्वास कर सकता है।” जिस तरह खीवामे ईनकोकी चलती थी, उसी तरह बुखारामे इसी समय अतालीकोकी चल रही थी। बुखाराका अतालीक दानियाल वी ईनक मुहम्मद अमीनका गहरा दोस्त था, जिसने हाथसे निकल गये अधिकारको पानेमें अमीनकी मदद की थी। मुहम्मद अमीनके बाद उसका पुत्र एवज ईनक बना। यह बड़ा ही समझदार और सादगीसे रहनेवाला आदमी था। इसके समय यामूदो (तुर्कमानो), मगिशलको (तुर्कमानो) और कजाकोने विद्रोह किया, जिसमे उसके अपने सब वी तथा अरालके ककुरतोके नेता तुरासूफीने भी विद्रोहियोंका साथ दिया।

अक्तूबर १७९३ ई०में रूसी डाक्टर मेजर ब्लैकेन्नागेल् खीवा पहुँचा। गुप्तचर समझकर उसे शहरके नजदीक एक घरमे नजरबन्द करके मारना चाहते थे, किन्तु ईनकके भाई, बुढापेके कारण अघे फाजिल वीको डाक्टरकी दवासे फायदा हुआ, जिससे उसका मान बढ़ गया। डाक्टरने बहुत समझाया, कि खीवावालोको मगिशलकमें जा रूसियोंके साथ व्यापार करनेसे बहुत फायदा होगा, लेकिन आम एसियाइयोंकी तरह खीवावाले भी यूरोपियोपर विश्वास नहीं करते थे। डाक्टरके लिखे-अनुसार उस समय खीवाके राज्यमे एक लाखसे अधिक आदमी नहीं थे, जिनमें उज्बेक ४१ प्रतिशत, सर्त (फारसीभाषी) १५ प्रतिशत, कराकल्पक १० प्रतिशत, यामूद ५ या ६ प्रतिशत थे। बाकी १८ या १९ प्रतिशत दास थे। खीवाकी सेनामें बारह या पंद्रह हजार निपाही थे, जिनमेंमे दो हजारके पास ही बन्दूकें थी, बाकी तलवार, भाला, तीर, कमानवाले थे। यामूद और कराकल्पक सबसे अच्छे सिपाही माने जाते थे, जिनके बाद उज्बेकोका नम्वर आता था। उन समय काइपका पुत्र अबुलगाजी खान था, जो एकातमें रक्खा जाता, और माल भरमें तीन बार ही प्रजाके सामने आने पाता था।

१८०४ ई०में ईनक एवज मर गया। भाइयो और दूसरे अमीरोंने कुयमुगद वेंकको ईनक

बनाया, लेकिन उसने अपने भाई इल्तजारके लिये पदको लेनेसे इन्कार कर दिया। इल्तजारने छ महीनेतक ईनकोके तौरपर काम किया। वह रोज खान (कजाक)के पास मुजरा करने जाता। एक रात उसने अपने भाई कुतुलुक मुरादको बुलाकर कहा—“तेमूर लग, नादिरशाह और बुखारा-अमीर मुहम्मद रहीम कौनसे छिड़-गिस्-वशके खानोके पुत्र थे, उन्होने अपन भाग्यको अपने आप बनाया। अल्लाहकी मेहरबानी है, कि मेरे पास निर्णय करनेकी शक्ति, साहस और सिपाही हैं। कबतक मैं इस गुडियाको सम्हाले बैठा रहूंगा? मैं स्वयं खान बनना चाहता हू। इसके वारेमे तुम्हारी क्या सलाह है? मैं कजाक खानको कुछ पैसा देकर उसे उसके घर भेज दूंगा, और फिर यामूदोसे पिंड छुड़ाऊंगा।” भाईने उसकी बातका समर्थन करते हुये फातेहा पढा। दूसरे दिन इल्तिजारने गुडिया-खानको किलेसे निकालकर कजाकोमे भेज दिया और फिर अपने गद्दीपर बैठने हुये ककुरत राजवगकी स्थापना की।

### §२ ककुरत-वश (१८०४-८१ ई०)

इस वशमें निम्न खान हुये —

१. इल्तजार, ईरज-पुत्र, एवज-पुत्र	१८०४-६ ई०
२ मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र	१८०६-२५ ”
३ अल्लाकुल, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८२५-४२ ”
४ रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र	१८४२-४५ ”
५ मुहम्मद अमीन, अल्लाकुल-पुत्र	१८४५-५५ ”
६. अब्दुल्ला, इबादुल्ला-पुत्र	१८५५ ”
७ कुतुलुक मुराद, इबादुल्ला-पुत्र	१८५५ ”
८ सैयद मुहम्मद, मुहम्मद रहीम-पुत्र	१८५५-६५ ”
(मुहम्मद फना, तुरासूफी-भतीजा)	१८६५ ”
९ सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र	१८६५ ”

### १ इल्तजार, इराज-पुत्र, एवज-पुत्र (१८०४-६ ई०)

जानेवाले खानसे इल्तजारने कहा था—मैं दूसरे खानको बुला रहा हू। उसने अपनी सेना बड़ा दम हजार उज्वेकोको कवचवद्ध किया, फिर मौलवियो, दूसरे धार्मिक नेताओ, अतालीको, ईनकोको बुलाकर कहा, कि दूसरे कजाक-खानके बुलानेकी जरूरत नहीं। उइगुर अतालीक बेक फुलाद सहमत नहीं हुआ, बाकी सबने फातेहा पढकर दुआ मागी। इल्तजार उस समय चुप रहा। बड़े दरबारियो, आलिमो और कबीलोंके अकसक्कालो (ज्येष्ठो)में उसने खलअत और इनाम वादे, उसके नामसे खुतबा पढा गया। यामूदोको छोड़ उज्वेको, कराकल्पको और तुर्कमानोने नये खानको बधाई दी। इल्तजार जानता था, कि अन्तमें मेरे भाग्यका फैसला तलवार द्वारा होगा, इसलिये उसने अपना सारा ध्यान सेनाको बढ़ाने और मजबूत करनेमें लगाया। तैयारी हो जानेपर वह सरकश यामूदोके ऊपर पड़ा, जो कि उस समय अस्त्रावाद (ईरान) और गूरगानके इलाकोमें रहते थे। उसने उनसे माग की—लूटपाटके जीवनको छोड़ दो, ऊट-भेड़-फसलपर कर दो, नहीं तो हमारे राज्यमे निकल जाओ। उज्वकोको लूटनेवाली यामूदोकी एक टोलीके मुखियाको नाकमें रस्ती डालकर बाजारमें धुमाया गया, लेकिन यामूद घुमन्तुओका लूटना तो पीढियोंसे व्यवसाय था, उसे वह भला कैसे छोडते? इल्तजार भी निश्चय कर चुका था। उसने एक बार आक्रमण करके पाच सौ यामूदोको मारा, पाच सौको कैदी बनाया, बाकी प्राण लेकर रेगिस्तानमे भाग गये। अराल द्वीपवाले भी लूट-मारमे तग कर रहे थे, इसलिये इल्तजार उनके नेता तुरासूफीके ऊपर पड़ा, पर उसे असफल होकर ही खीवा लौटना पड़ा। उसने बुखारामे लूट-मार करके धन जमा करना चाहा, लेकिन बेक पुलादने इसे बुद्धिमानोकी बात नहीं कही। इसपर वह पुलादसे नाराज हो गया, और दरवार छोडते समय उसे मरवा दिया। पुलादके

परिवार तथा कबीले (उद्गुर) ने विद्रोह किया, इसपर इल्तजारन उद्गुर-उज्जेकोका भीषण हत्याकांड किया। जो कल्ल होनेसे बचे, वे भाग गये, बाकियोंने 'भेड़िये द्वारा जवर्दस्ती लादी शाति' के सामने सिर नवाया। इल्तजारने अपने राज्यकी सीमाको बढ़ानेकी कोशिश की। उस समय उरगजमे एक बड़ा पुराना खानदानी सैयद अस्तेखोजा रहता था। इल्तजारने बिना बापकी मर्जीके उसकी लडकी ब्याह ली। इसपर खोजाने बुखारा भाग गये यामूदको लूटका प्रलोभन देकर बुलाया, और उरगजमें उन्हे रहनेके लिये जमीन दी। अब खान लोगोपर पहलेसे भी ज्यादा खुलकर अत्याचार करने लगा। बाहर अब भी इल्तजारके अभियान चलते रहे। १८०५ ई०में वह बुखाराके ऊपर चढ़ा। उस समय अमीर-बुखाराका दूत अब्दुल करीम जारके दरबारमे जात हुये उरगज आया था। उसे जल्दी ही करशी पहुंचकर राज्यपाल बननेका प्रलोभन दे तैयारी करनेके लिये कहा। महीने बाद इल्तजारने बुखाराके इलाकेमें घुसकर लूट-मार की, और वहासे पचास हजार भेडे तथा हजारो ऊट लूट लाया। अमीर-बुखाराने तैयारी करके मुहम्मद नियाज बीकी तीस हजार सेना देकर रवाना किया। इवर इल्तजार भी तेक्के, यामूद, सलार, चन्दोर, अमीरअली, बूजेजी, ककुरत, ककली, मगित आदि तुर्कमान और उज्जेक कबीलोके बारह हजार जवानोको लिये वक्षुके किनारे-किनारे चला। उसने बुखाराकी पहली टुकडीपर अकस्मात आक्रमण कर बुखारी दादखाहके पुत्रको खतमकर पाच सौ आदमियोंको मारा या पकड लिया। बदी रस्सीमे बंधे इल्तजारके तम्बूपर लाये गये। खीवाकी सेनाने बुखारियोंके लौटनेके रास्तेको भी काट दिया था, अतः बुखारियोंके लिये लड़ने-मरनेके सिवा कोई रास्ता नहीं था। वह खूब लड़े। खीवावाले हार गये। उनके बहुतसे आदमी भागते वक्त नदीमे डूब गये। इल्तजारने नावमे बैठकर भागना चाहा। उसके बहुतसे साथी भी प्राण बचानेके लिये उसी नावपर सवार हो गये, और बोझके मारे नाव डूब गई—बहुतसे आदमियोंके साथ इल्तजार भी वक्षुमे डूब मरा। उसके भाई हसनमुराद और जानमुराद भी डूब मरे। मुहम्मद रहीम बुखारियोंके हाथमे बन्दी बना और सिर्फ कुतुलुक मुराद बच बचकर खीवा पहुंचा। यह घटना १८०६ ई०की है।

## २. मुहम्मद रहीम, इल्तजार-पुत्र (१८०६—२५ ई०)

बुखारामे उस समय अमीर हैदरका शासन था। खीवावालोंसे निर्दयतापूर्वक व्यवहार करके खूनी झगडेको और बढ़ाना उसने पसंद नहीं किया, और बदियोंको क्षमा करके उन्हे खलअत और इनाम दे मुक्त कर दिया। इस दयाके लिये कुतुलुक मुरादने अपने भावोको प्रकट करते हुये कहा—“मैं अमीर हैदरका कुत्ता, दास हूँ, उसका हुक्म माननेके लिये तैयार हूँ।” कुतुलुक मुरादको ईनककी पदवी देकर अमीर हैदरने खीवाका राज्यपाल नियुक्त किया था, लेकिन उसके आनेसे पहले ही ख्वारेज्मियोंने उसके छोटे भाई मुहम्मद रहीमको खान बना दिया था। कुतुलुकने भी उसे स्वीकार किया, और बुखाराके अमीरके पास लिखकर अपनी मजबूरी प्रकट की। अरालियोंने इसी समय उज्जेकोको लूटा-मारा। नये खानके चचा मुहम्मद रजावेकने उद्गुरोके विद्रोहके समय उनका साथ दिया था। उसने अब भी विद्रोह करना चाहा, लेकिन उसे हारना पडा। कजाकोके कई साल लूट-मार करनेका जवाब खानकी ओरसे था, जाडोमें रजावेकका चेकली, तुर्तकारा (शेरगाजी), चूमेके, जलैर (बुल्की-मुल्तान)के कजाकोको लूटने जाना। कजाकोने मजबूर होकर सी भेडोपर एक भेड खानको देना मजूर किया। शेरगाजी स्वयं १८१९ ई०मे खीवा-दरवारमे आया, और वही मरा। उसके बाद रहीम खानने अपने बेटेको उसके स्थानपर नियुक्त किया, जिसे कजाकोने भी मान लिया। अगले साल तुर्तकारा और ओई कजाकोके ऊपर भी वैसी ही बीती। जाडोमे सरकश ककुरतोके अरालद्वीपपर बर्फके ऊपरसे चढ़ाई की, लेकिन आक्रमण उतना सफल नहीं रहा, तो भी खीवाके एक शरणार्थी और उसके पुत्रने तुरासूकी मुरादके सिरको काटकर बोरेमे ला खानके सामने पेश किया। मुहम्मद रहीमने खुश होकर बाप-बेटको नौकर रख लिया। जब अराली ककुरतोको अपने नेताके मारे जानेकी खबर लगी, तो

उन्होंने खीवाके सुन्तानकी अधीनता स्वीकार की। तुरामुरादके परिवार और खजानेको ले खानने खीवा लौटकर मुरादकी लडकीसे व्याह किया। पुराने खानके वशसे व्याह करनेके कारण अब वशका सम्मान बढ गया। रहीमने इल्तजारकी सैयद-पुत्री विधवाको भी व्याहा। अब्दुल्करीमने अब्दुरहीमको क्रूरतामें शैतान लिखा है। उसने गर्भिणी अराली स्त्रियोंका पेट चीर गर्भके बच्चोको टुकड़े-टुकड़े करके अपनी पशुताका परिचय दिया था। रहीमने अपने विरोधियोंको एक-एक करके मार डाला, या उन्हें देशसे बाहर निर्वासित कर दिया। उसके कठोर शासनके कारण यह फायदा जरूर हुआ, कि अब लूट-मार बन्द हो गई, और व्यापारी कारवासे कबीलोंने मनमाना कर लेना छोड दिया। उसने कर की दर निश्चित कर दी, और कर उगाहनेके कस्टम (आयातकर) घर बनवाये। अपनी टकसाल स्थापित करके उसने खीवामें चादी-सोनेके सिक्के ढलवाये।

ईरान शीया था। मध्य-एशियाके सुन्नी मुसलमान शीयोको काफिरसे भी बढतर समझ उनके ऊपर लूट-मार करना पुण्य कार्य समझते थे। १८१३ ई०में खीवावालोंने खुरासानपर आक्रमण किया, लेकिन ईरानी सेनाने भी मुकाबिला किया, और चार दिनकी झड़पके बाद दोनों सेनायें पीछे हटी। लौटते समय रहीम खान गोकलान तुर्कमानोके ऊपर पडा, और उनमेंसे बहुतेरे बंदी बनाये। फिर तेक्के तुर्कमानोके ऊपर धावा बोल उनके जीते हुये खेतोको छीनकर दक्षिणके नगे पहाडोंमें खदेड दिया। इनमेंसे कुछ पीछे जाकर नहरके किनारेवाले इलाकेमें बस गये। रहीमने मगिशलकके इलाकेमें डेरा रखनेवाले चन्दोर तुर्कमानोको भी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया। रहीमने तलवारके बलपर शांति स्थापित की। इससे खीवा और रूसके बीच कारवाका आना-जाना सुगम हो गया, और पूर्व तथा पश्चिम व्यापार खूब बढा। रहीमको बिना लडे चैन नहीं आता था। १८२० ई०में उसने बुखारापर चढाई की, और जाकर चारजूयको एक महीनेतक घेरे रक्खा। इसी बीच उसके सैनिक पड़ोसमें घुमक्कड़ी करनेवाले तेक्के तुर्कमानोको भी लूटते रहे। खीवावालोंके पास रूसके साथ सवब होनेके कारण तोप भी थी, जिसने मदद अवश्य की, किन्तु बिना फैसलेके ही दोनों सेनाओंको लौट जाना पडा। रहीमका समकालीन अमीर हैदर भी बहुत मजबूत शासक था। अगले साल वह खुद सेनाके साथ आया। खीवाके नावोंके वेडेको उसकी तोपोंने रोक लिया। नदीमें पानी कम था, इसलिये दूर हटकर निकल भागनेका मौका नहीं मिला। रहीम खानके भाई कुतुलुक मुरादको हैदरने हराया। उसकी बहुतसी नावें नष्ट हो गयी, और खीवा-मेना पराजित हो पीछे लौटी। लेकिन १८२२ ई०में फिर कुतुलुक मुरादने बुखाराके राज्यमें कराकुल-तक लूट-मार की। मरते वक्त कुतुलुकने मुसलमान भाइयोंपर वार करनेके लिये अमीर-बुखारासे क्षमा मागी—“सचमुच गाजीके लिये यह शोभा नहीं देता था।”

१९वीं मर्दीके आरम्भमें काकेशसमें जारका शासन स्थापित हो चुका था, और अब पश्चिमी तटसे ही सतुष्ट न हो वह कास्पियनके पूर्वी तटपर भी अधिकार करनेके लिये व्यग्र था। उवर रहीम खानने पूर्वी तटपर रहनेवाले तुर्कमानोको बुरी तरहसे दबा रक्खा था, इसलिये रूस उमसे फायदा उठाना चाहता था। १८१९ ई०में गुर्जी (जार्जिया)के राज्यपालने पूर्वी कास्पियनके तटपर रहनेवाले तुर्कमानो तथा खीवासे भी सवब स्थापित करनेके लिये मुरावेफको दूत बनाकर भेजा। मुरावेफ १९ सितम्बरको क्रास्नोवोदस्कमें जहाजसे उतरा, और ६ अक्टूबरको खीवाके पास पहुचा। उस समय खान शिकारमें गया हुआ था। उसके आदमियोंने मुरावेफको गुप्तचर समझ नजरबन्द कर खानने मुरावेफको बेहतर (वित्त-मंत्री) आगा यूसुफके घरमें ठहरा दिया। फिर किमी तरह मुरावेफ खानके दरबारमें उपस्थित होनेमें सफल हुआ। मुरावेफने खानके वारेमें लिखा था—“वह अपने सफेद रंगमें उज्वेकोसे अधिक रूसी-सा मालूम होता था।” मुरावेफने राज्यपालका सदेश देते हुए कहा—“मगिशलककी जगह क्रास्नोवोदस्क द्वारा व्यापार-सवब स्थापित करनेपर तीसकी जगह सत्रह दिनमें ही कारवा समुद्रतक पहुचने लगेंगे। लेकिन क्रास्नोवोदस्कका इलाका उम वक्त ईरानी काजार-वशके हाथमें था, जब कि मगिशलक

खीवाका था, इसलिये खान कारवा-पथको कैसे बदल सकता था ? मुरावेफके लिखनेसे पता लगता है, कि उस समय खीवामें एक शासन-परिषद् थी, जिसका अध्यक्ष मेहतर यूसुफ आगा था। यूसुफ सर्त अर्थात् फारसी-भाषी ताजिफ व्यापारीवर्गका प्रतिनिधि था। द्वितीय वजीर कुशवेगी उज्वेक, तीसरा खोजेश मेहरम खानके गुलामका पुत्र था, जो कस्टमका उच्चाधिकारी भी था। परिषद्के सबसे अधिक प्रभावशाली सदस्य थे—खानका भाई कुतुलुक मुराद और काजी (धर्माधिकारी)। परिषद्में चार प्रधान उज्वेक कबीलोके सरदार भी सम्मिलित थे।

यह बतला आये हैं, कि खीवा उस वक्त गुलामोका बहुत भारी बाजार था, जिसमें रूसी गुलामोकी कीमत ज्यादा थी, लेकिन रूसी औरतोकी अपेक्षा ईरानी औरतें ज्यादा महंगी बिकती थी।

मुहम्मद रहीम १२४१ हि०\* में मरा।

### ३. अल्लाकुल, रहीम-पुत्र (१८२५-४२ ई०)

रहीमके मरनेपर उसका बड़ा बेटा गद्दीपर बैठा। इसने बापके जमा किये हुये खजानेको बरबाद करना शुरू किया। १८३२ ई०में मेर्वपर चढ़ाई करके तेक्का तुर्कमानोपर कर लगाया, जिसके लिये खीवासे रेगिस्तान (कराकुम)के बीचसे मेर्व जाते रास्तेपर हर पड़ावपर कुआ खोदना पड़ा। सरखशके सलोरोपर भी जबरदस्ती कर लगाया। कर उगाहनेके लिये दोनो जगह कस्टम-गृह बनवाये। सरखशसे लौटते समय अलमान्सके साथ वारनेस वहा आया था। उसने लिखा है—“नगरसे चढ़ मीलपर लूटके मालको गिना गया—एक सौ पद्रह आदमी, दो सौ ऊट और उतन ही ढोर थे। उन्होंने पहले ही लूटके मालको बांट लिया था, लेकिन पाचवा हिस्सा उरगजके खानको भी दिया।” उस समय किजिलवासो (ईरानी शीयो)के ऊपर लूटकरना धर्मयुद्ध माना जाता था, जसा कि स्पेनवाले मेक्सिको और पेरूमें अपने हाथोको खूनसे रगनको समझते थे, वह भी अपने लूटके मालका पाचवा हिस्सा स्पेनके राजाके पास भजते थे। इस प्रकार उससे कुछ ही शताब्दियो पहले स्पेनके युरोपीय भी उसी सिद्धांतको मानते थे, जिसे १९वीं सदीके आरम्भमें खीवाके सुन्नी मुसलमान।

बापके समयसे ही लूटपाटके बन्द होनेके कारण ख्वारेज्ममें व्यापार चमक उठा था, और बुखारा उरगज-मगिशलकके बीच स्थलसे, फिर अस्त्राखानतक समुद्र-मार्गसे बराबर व्यापारिक कारवा आते-जाते रहते थे। अराल समुद्रके पूर्वी तटसे एक नया व्यापारमार्ग खोलनेके लिये रहीम खानके समय १८२० ई०में रूसियोने इस इलाकेकी सर्वे की। फिर पाच सौ सिपाहियो और दो तोपोंके साथ एक रूसी कारवा चला। खीवावाले क्यों पसंद करते, कि उत्तरका मार्ग खुल जाय, जिससे उरगज और मगिशलकका समृद्ध वणिक्पथ उजड़ जाय। उनकी शहपर तुर्कमानोने रूसी काफिलेपर प्रहार किया, लेकिन उन्हें हारकर भागना पड़ा। तो भी काफिलेको अपने सौदेको जलाकर खाली हाथ पीछे लौटना पड़ा।

पहली बार असफल होनेके बाद अब अल्लाकुलके शासनकालमें १८३५ ई०में रूसियोने मगिशलकके बन्दरगाहके पास अपना किला बना खीवावालोको डराना चाहा, लेकिन खानने उसको परवाह नहीं की। इसी समय १२० रूसी इलाकेकी जाच-पडताल कर रहे थे, जिन्हें पकड़कर खीवावालोने बुखाराके बाजारमें बेच दिया। इसपर १८३६ ई०में जार निकोलाइ I के हुक्मसे ओरेनबुर्ग और अस्त्राखानमें खीवावाले व्यापारियोको पकड़ लिया गया। उसी साल अगस्तमें निज्नीनवोगोर्दके मेलेसे लौटते खीवाके छियालीस व्यापारियोको भी जेलमें डाल दिया गया। यह स्मरण रहना चाहिये, कि बोल्शेविक-क्रांतिसे पहलेतक निज्नीनवोगोर्दका मेला दुनियाका सबसे बड़ा व्यापारिक मेला था। हमारे सोनपुर मेलेको नम्बर उसके बाद आता था। ओरेनबुर्गके रूसी राज्यपाल जेनरल पेरोव्स्कीने खानको कड़े शब्दोंमें लिखा—“तुम्हारी कार्रवाई बुरी है। बुरे बीजका बुरा फल पैदा होता है। तुम्हें चाहिये, कि रूसी बंदियोंको लौटा दो, और कजाकोंके भीतर दखल देने और लूट-मारको बन्द करो। ऐसा करनेसे रूसियोंके साथ



तुम्हारा-जैसा व्यवहार होगा, वैसी ही सुविधायें खीवावालोको रूसमें मिलेगी।" लिखा-पढी चलती रही, और दो सालमें सौ रूसी वदी लौटाये गये, लेकिन दूसरी ओर १८३९ ई०में ही खीवावाले दो सौ रूसी मछुओको कास्पियनसे पकड़ ले गये।

असफल रूसी अभियान (१८३९ ई०)—खीवाके खानकी गुस्ताखियोंको शक्तिशाली रूस भला कवतक बर्दाश्त करता ? और यह तो वह समय था, जब कि युरोपमें भी रूसकी घाक जमी हुई थी। जेनरल पेरोव्स्कीने २६ नवम्बर १८३९ ई०के जाडोमें छ हजार पैदल सेनाके साथ दस हजार ऊटोके ऊपर रसद ले ओरेनबुर्गसे प्रस्थान किया, लेकिन रास्तेमें उसे हिमबिन्दुसे ४० डिग्री नीचेकी सर्दीका सामना करना पड़ा—नीचे बर्फकी ऊंची ढेर थी, ऊपरसे भयकर हवा चलने लगी। हजारों सिपाहियोंने हिम-आहत हो अपनी अगुलियों, पैरो और हाथोंको गवाया, बहुतसे सर्दीमें मर गये। इस स्थितिका मुकाविला करते हुये जैसे-तैसे रूसी खीवाकी सीमा पर अकबुलाकमें पहुँचे। खीवाका कुशवेगी (प्रधान-सेनापति) भी रूसियोंके मुकाविलेके लिये तैयार था। बर्फ आठ फुट मोटी थी। कजाकोने घोडोके झुंडको दौड़ाकर बर्फमें रास्ता बनाया, जिसके दोनों तरफ बर्फकी दीवार खड़ी थी। सब कोशिश करनेपर भी आगे बढ़ना सर्वनाशके मुहमें पडना समझ पेरोव्स्की लौट गया।

रूसियोंको मध्य-एशियाकी ओर—अर्थात् भारतके सीमातके पास—पहुँचनेकी कोशिश करते देख अंग्रेज कैसे चुप रह सकते थे ? मेजर टाड अंग्रेजोंके लिये अफगानिस्तान और बुखारामें अपना जाल बिछा रहा था। उसने हेरातसे काजी मुहम्मद हसनको दूत बनाकर बुखाराके अमीरके पास भेजा। अमीरने मिलकर काजीको बहुत फटकारा, कि वह इस्लामकी भूमिमें काफिरोको घुसाना चाहता है। इसपर काजीने कहा—"अपने हथियारों, अनाज, सोना, खून और अपनी बुद्धिके साथ मुहम्मद शाहके हथियारोंसे ध्वस्त होते प्राचीरकी रक्षा करने अंग्रेज आये। उन्होंने काफिरोंसे सच्चे मुसलमानोंकी रक्षा की।" और फिर अमीर बुखारासे पूछा—"काफिर कौन हैं ? ईरानी किजिलवास हैं, जिनकी कि आपने रक्षा की, या अंग्रेज जिन्होंने कि सच्चे मोमिनोकी रक्षा की ? बहुत समय नहीं बीतेगा, कि रूसके आक्रमणको रोकनेके लिये भी उनकी सहायताकी अवश्यता होगी।" काजीने रूसका भय दिखलाकर बुखाराके अमीरको प्रभावित किया, और सफलताकी सूचना देत जरीके रेशमी थैलेके भीतर मेजर टाडके पास अपना पत्र भेजा।

बुखारामें सफलताकी आशा देखकर टाडने कप्तान एवटको खीवाके सुल्तानके पास भेजा। उसके हुक्मके मुताबिक एवटने खानको रूसी कैदियोंके छोड़ देने तथा स्वयं अस्त्राखानमें जा वहाँ पकड़े गये खीवाके व्यापारियोंको छुड़ानेकी कोशिश की। एवट १८४० ई०के बसंतमें चला था, जब कि अभी-अभी जेनरल पेरोव्स्कीका अभियान भयकर आफतमें पडनेके बाद नष्टप्राय होकर लौटा था। उस समय खान एक काले तम्बूमें बैठा था, जब कि एवट उससे मिलने गया। एवटने जूता निकाल परदा उठाकर भीतर प्रवेश किया, फिर अपने हाथोंको अदबसे छातीपर रखकर "सलाम् अलेकुम्" कहकर बातचीत की। खानने उसके साथ बड़ा अच्छा बर्ताव किया। उसके आनेकी खबर सुनकर स्वागत करनेके लिये पहले ही सैनिक भेजे थे। नगरके बाहर वजीरके एक महलमें एवटको ठिकाया गया था। एवटने पहलेसे खीवामें बन्दी अंग्रेज गुप्तचर कर्नल स्टोडर्टको छोड़ देनेपर जोर दिया। एवटने यह भी कहा, कि खीवा यदि अंग्रेजोंसे मदद पाना चाहता है, तो रूसी बंदियोंको छोड़ना जरूरी है। स्टोडर्ट बुखाराके अमीरके बंदीखानेमें था। खीवा-खानने उसे छोड़नेके लिये अपना दूत बुखारा भेजा। कास्पियन और ओरेनबुर्गकी ओरसे जिस तरह रूसका फौलादी पंजा मध्य-एशियाकी ओर बढ़ता आ रहा था, और जिस तरह हिन्दुस्तानमें मुस्लिम बादशाहतको खतम करके अंग्रेजोंने अपना राज्य कायम किया था, उसे देखते हुये मध्य-एशियाके शासकोंकी नींद हराम हो गई थी। अंग्रेजों और रूसियोंको वह एक तरफ आगे और दूसरी तरफ खड्ड-सा देखते थे, इसलिये किमी निश्चय पर पहुँचना उनके लिये आसान नहीं था। तो भी रूसका खतरा बिलकुल सामने था—पेरोव्स्की यद्यपि इस साल सफल नहीं हुआ था, लेकिन एक बारकी असफलतासे खीवावाले कैसे अपनेको सुरक्षित समझ लेते ? इसीलिये अल्लाकुल

समझा-बुझाकर कर्नल स्टोडर्टको छोड़ देनेके लिये बुखाराके अमीरको तैयार करना चाहता था। एवटने अपनी एक मुलाकातमें फारसी अक्षरोंमें लिखे एक नक्शेको अल्लाकुलके सामने रखकर बतलाया, कि इंग्लैंडका स्वार्थ इसीमें है कि मध्य-एशिया रूसके हाथमें न जाय। हम मध्य-एशियाके राज्यको स्वतंत्र और तटस्थ देखना चाहते हैं, और रूसके मनसूबेको असफल करनेमें सहायता देनेके लिये तैयार हैं। लेकिन खान रूसकी शक्तको ज्यादा अच्छी तरह जानता था, इसलिये उससे बहुत भयभीत था। उसने चांदीकी तरह सफेद चमकत तीन पौंडके एक तोपके गोलेको दिखलाकर एवटको बतलाना चाहा, कि रूसी बहुत जबरदस्त शक्ति रखने हैं। एवटने साफ देखा कि जबतक रूसी तोपका यह सफेद गोला खानके तम्बमें रहेगा, तबतक उसे कुछ भी साहस नहीं होगा, और मुझे अपने काममें सफलता नहीं मिलेगी।

एवटके काममें सबसे बाधक मेहतर था, जो रूसी वदियोंके छोड़ देनेपर जोर देनेके कारण एवटको रूसियोंका गुप्तचर समझता था। एवटके बहुत कहनेपर मेहतरने कहा—अगर हमारे भाग्यमें यही लिखा होगा, तो फिर क्या चारा? इसपर एवटने कहा—तो इसका अर्थ है खीवाको रूसियोंके हाथमें दे देना। मेहतरने गुस्सेमें आकर कहा—“आह! अगर हम काफ़िरोसे लड़ते मारे गये, तो सीधे स्वर्गमें जायगे।” इसपर एवटने जवाब दिया—“और तुम्हारी औरतें? तुम्हारी बीविया और लड़किया रूसी सिपाहियोंकी गोदमें जाकर किस तरहके स्वर्गको प्राप्त करेंगी?” ईरानसे आये हुये दूतने जब ईरानी गुलामोको छोड़नेके लिए कहा, तो अल्लाकुलने जवाब दिया—“मुहम्मदशाहको कहो, कि अभी वह वच्चा है, अभी उसे दाढ़ी भी नहीं आई है। वह क्यों नहीं पहले रूसियोंको ईरानसे निकालता?” दरअसल खीवा ऐसी परिस्थितिमें था, कि उसके लिये इस समय कुछ भी निश्चय करना बहुत मुश्किल मालूम होता था। प्रस्थान करते वक्त एवटने खानसे कहा था—बड़ी सावधानीसे काम करनेकी जरूरत है। खानने जवाब दिया—“यह बहुत मुश्किल है। दुनिया भरमें मेरे राज्यको छोड़कर रूसियोंको कोई दूसरा युद्धक्षेत्र नहीं मिलता।”

एवट सुरक्षित तौरसे कास्पियनके तटपर गुयेदिकके बन्दरगाहमें पहुँचा, लेकिन जले-भुने वजीरने ऐसी चाल चली, कि बन्दरगाहपर एवटको जहाज नहीं मिला। फिर वह वहासे चार दिनके रास्तेपर दक्षिणमें अवस्थित रूसियोंकी फौजी चौकी दाशकलाकी ओर खाना हुआ। चौकीपर पहुँचनेमें दस घंटेका रास्ता रह गया था, जब कि उज्बेकोने उसे लूट लिया। एवटको दो अगुलिया टूटी, और सिर भी फूटा। फिर उन्होंने उसे ले जाकर घुमन्तुओंके डेरेमें रखकर बहुत बुरा बर्ताव किया। टांडने अखुन्द-जादा नामक अफगानको भेजा, जिसने एवटको छुड़ाकर रूसकी ओर खाना किया। हेरातमें टांडके पास एवटके मरनेकी खबर पहुँची। जिसपर उसने लेफ्टिनेंट शेक्सपियरको खीवाके साथ फिर वातचीत करनेके लिये भेजा। लेकिन खानने उसकी बातोंपर अविश्वास प्रकट करते हुये कहा—“यह क्या बात है, जो हमारेसे इतनी दूर रहनेवाला तुम्हारा देश हमारे देशके साथ मित्रता करनेके लिये इतना उतावला है?” शेक्सपियरने जवाब दिया—“हमारे पास भारत-जैमा एक विशाल उद्यान है, कहीं कोई उसपर टूट न पड़े, इसलिये हम अपने बगीचेके चारों ओर दीवारें खड़ी करना चाहते हैं, और वे दीवारें हैं—खीवा, बुखारा, हिरात और काबुल।” याकूब मेहतरने काफ़िर कहकर जब ताना मारा, तो उसका जवाब शेक्सपियरने दिया—“हममेंसे कौन काफ़िर है? तुम, जो कि कभी न बुझनेवाली ईर्ष्याके कारण रोज गुलामोको सासत देते हो, वापसे लड़कियोंको, पतिसे पत्नीको जबरदस्ती छीनकर अपनी बाजारोंमें सबसे अधिक दाम देनेवालोंके हाथ वेंच देते हो। या हम जो कहते हैं—ये अभाग लोग मुक्त कर दिये जाय। इन्हें इनके देश और परिवारमें भेजनेकी कोशिश करते हैं।”

शेक्सपियर कुछ सफलताके साथ विदा हुआ। ४२० रूसी वदियोंको मुक्त करा पुराने उरगजसे खाना हो वहा समुद्र तटपर पहुँचा, फिर वहामें नाव पकड़कर अस्त्राखान, आगे राजधानी पीतरबुर्गमें गया। जारने उसकी सेवाओंके लिये बहुत सम्मान करते, उसे रूसी ‘मर’की उपाधि प्रदान की।

जुलाई १८४० ई०में अल्लाकुल्लीने समझ लिया, कि रूसियोंके साथ झगडा मोल लेना अच्छा नहीं है। उसने घोषणा करके रूसी दासोंके व्यापारको बंद कर दिया, और हमके राज्यमें लूटपाट मचानेकी मनाही कर दी। लेकिन इसी समय ईरानी गुलामोको छोड़नेके लिये जोर देनेसे झगडा

वढनेकी सम्भावना देख ईरानी शाहने अग्रेज कप्तान कोनोलीको खीवा भेजा । खानने ईरानी गुलामोको छोडनेसे इन्कार कर दिया । कोनोली खीवामें चार महीना रहा । इसी समय हिरातके राज्यपाल यार मुहम्मदने मेजर टाडके पड्यथोसे परेशान होकर उसे हिरातसे निकाल दिया, और खीवाको भी लिखा, कि अग्रेज गुप्तचरको अपने पास न रखें । किन्तु खानने यार मुहम्मदकी बात न मान कोनोलीको खलअत दी, और उससे कहा—“खीवाको अपना देश समझिये और इस महलको अपना घर । लेकिन याकूब मेहतरने कोनोलीको पसद नहीं किया । धीरे-धीरे उसने खानपर प्रभाव डाला, और अन्तमें कोनोलीको उसने कहा—“तुम हमारे रास्तेमें बाधक हो । अगर तुम यहांसे विदा हो जाओ, तो मुझे इसके लिये दुःख नहीं होगा ।” खीवामें असफल हो कोनोली खोकन्दपर अग्रेजोका डोरा डालने गया, जहासे बुखारा जानेपर उसने अपने प्राण गवाये, यह हम वतला चुके हैं ।

रूस भी मध्य-एशियाके खानको हर तरहसे अपनी ओर करनेकी कोशिश करता रहा । १८४० ई०में लेफ्टिनेंट आइतोफ मध्य-एशियाकी यात्रासे पीतरबुर्ग लौटा, फिर कप्तान निकिफोरोफ १८४२ ई०में खीवा भजा गया, जिसने रूस और खीवाके बीच पहली संधि करवानेमें सफलता पाई । अभी वह खीवा हीमें था, जब कि अल्लाकुल मर गया ।

#### ४ रहीमकुल, अल्लाकुल-पुत्र (१८४२-४५ ई०)

रहीमकुलके गद्दीपर बैठते ही जमशेदियोने विद्रोह कर दिया । जमशेदी ईरानी कबीला था, जो मुरगावनदीके बायें तटपर रहते थे । उनमेंसे दस हजारको जवर्दस्ती ले जाकर ख्वारेज्मके इलाकेमें वक्षुतटपर किलिजवेके पास बसा दिया गया था । जमशेदियोके विद्रोहसे प्रोत्साहित होकर मेर्वके पास डेरा रखनेवाले सारिक तुर्कमान भी विगड उठे । रहीम खानने अपने छोटे भाई मुहम्मद अमीनको पद्रह हजार सेनाके साथ तुर्कमानोको दवानेके लिए भेजा, लेकिन रेगिस्तानमें उसको बहुत क्षति उठानी पड़ी । उवर अमीर-बुखाराने हजारास्पका मुहासिरा कर रक्खा था । खानके भाईने अमीरकी सेनापर टूटकर उसे हराके संधि की । तीन साल शासन करनेके बाद रहीमकुल मर गया ।

#### ५ अमीन, अल्लाकुल-पुत्र (१८४५-५५ ई०)

रहीमके मरनेके बाद उसका भाई गद्दीपर बैठा, जो कि वाम्बेरीके अनुसार आधुनिक कालके ख्वारेज्मके खानोंमें सबसे बड़ा था । अमीनने तख्तपर बैठते ही सारिकोको सर करनेके लिये अभियान किया, लेकिन वह छ चढाइयोंके बाद कावूम आये । मेर्वके किले तथा पामके योलोतेन किलेको भी उसने ले लिया । उसके लौटनेपर सारिकोने खान द्वारा नियुक्त राज्यपाल और छावनीकी सेनाको मार डाला । लडाईं फिर शुरू हो गई । अवकी बार सारिकोंके पुराने दुश्मन जमशेदी और उनका नेता पीर मुहम्मद भी अमीनके माथ थे । विजय करनेके बाद अमीनने बड़ी तडक-भडकके माथ खीवामें प्रवेश किया । उसने तेक्कोंके विद्रोहको भी दवानेमें सफलता पाई । निम्न सिर-उपत्यकामें कजाक डेरा डाले रहते थे, वह खोकन्दकी प्रजा थे । उनके लिये खोकन्दमें खीवाका झगडा हो गया । १८४६ ई०में खीवाने सीमातपर खोजा नियाज दी किला बनवाया । लेकिन कजाकोको खोकन्दका खान ही नहीं बल्कि रूमी भी अपनी प्रजा मानते थे, इसलिये दशते-कजाक पूरी तौरसे अपने हाथमें करनेके लिये १८४७ ई०में रुसियोंन दशतमें कितने ही किले बनाये । इसी साल अराल समुद्रपर राइम्स्क या अरालस्क नामक रूसी किला बना । खीवावाले कजाकोको दवाना चाहते थे । उनके दो हजार सैनिकोने आक्रमण करके हजारसे अधिक कजाक-परिवारोको पकड लिया, जिसके लिये रुसियोंने आक्रमणकर कजाकोको छुड़ा खीवा-वालोको दंड दिया । १८४८ ई०में इस इलाकेमें कई बार लूट-मार होती रही । निम्न-सिरमें अब खोकन्द, खीवा और रूम तीनोंका झगडा चल रहा था । १८५३ ई०में जेनरल पेरोव्स्कीने आक्रमण करके निम्न-सिरपर बनाये गये खोकन्दियोंके किलोको तोड दिया ।

दक्षिणमें तुर्कमान-भूमि अभी भी खीवाके लिये काटा बनी हुई थी । १८५५ ई०में अमीनने सरदगके विरुद्ध अभियान भेजा, लेकिन उवर ईरानी शाह भी निर्वल नहीं था । मशहदके राज्यपाल फरीदून मिर्जाने हमला किया । हारकर अमीन लौट रहा था, इसी समय घोबेसे पकड लिया गया । उसके साथके दो सौ ख्वारेज्मियोंसे कितने ही मारे गये और कितने ही भग गये । खानको वही काट

दिया गया, और उसके तथा २६९ दूसरे मुंडोको शाहके पास तेहरान भेज दिया गया। इन सिरोंके ऊपर पहले एक रौजा बनाया गया, लेकिन इमामजादाकी सतान होनेसे वहा पूजा चल निकली, जिसके डरके मारे ईरानियोंने उसे तोड़ दिया। हम देख चुके हैं, कि अमीन और उसका वश सैयद-जादियोंकी सतान था।

### ६ अबदुल्ला, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

ईरानियोंके सामने भागकर लौटी सेनाने खाली गद्दीपर कुतुलुक मुरादके पाँत्र तथा इबादुल्लाके पुत्र अबदुल्लाको बैठाया। गद्दीके लिये आपसमें झगडा हो गया। इस गडबडीसे फायदा उठा पद्रह हजार यामूद तुर्कमानोंने आक्रमण कर दिया। खान मुकाविलेके लिये सेना लेकर गया। किजिलतेकेरमे लड़ाई हुई। खीवावाले बुरी तरहसे पिटे और उनका खान अबदुल्ला मारा गया।

### ७ कुतुलुक मुराद, इबादुल्ला-पुत्र (१८५५ई०)

मृत खानकी जगहपर उसका १८ वर्षका भाई २० जिल्हिजा १२७१ हि० (३ सितम्बर १८५५ ई०) को गद्दीपर बैठाया गया, जो हालके युद्धमें घायल हुआ था। यामूदोका विद्रोह चल रहा था। सारे राज्यमें अशांति फैली हुई थी। इसी समय उत्तरके कराकल्पकोने यारलिक तुराको अपना खान बनाकर विद्रोह कर दिया। कुतुलुकने सारे तुर्कमानोको मार डालनेका हुक्म दिया, लेकिन यामूदोका समर्थक नियाज बी मौजूद था, जिसने मुजरा करनेका बहाना करके महलमें जा खान और उसके सात वजीरोको मार डाला। मेहतरने किलेकी दीवारसे खबर दी, जिसपर तुर्कमानोका भी कलेआम शुरू हुआ, और बहुत कम तुर्कमान उज्वेकोकी तलवारसे बच पाये। खीवाकी सडकोपर इतनी लाशें पड़ी थी, कि उन्हें हटानेमें छ दिन लगे।

अमीन खानके बाद बहुत जल्दी-जल्दी दो खान हो गये। इस सारे समयमें खीवा राज्यमें विद्रोह और अशांति फैली हुई थी। यामूद, तुर्कमानोका सबसे शक्तिशाली कबीला था, जो खीवाके खान-वंशके साथ सर्वस्वकी बाजी लगाकर लड़ रहा था। १८५५-५६ ई०में उत्तरके कराकल्पकोने भी विद्रोह कर दिया था। यामूदोंने दक्षिणमें और कराकल्पकोने उत्तरमें खानके विरुद्ध वगावत करके उसकी स्थितिको बहुत खतरनाक बना दिया था। लेकिन, १२ दिसम्बर १८५५ ई० (८ रवि १२७२ हि०) को खीवावाले कराकल्पकोको हराकर बहुतसे लूटके मालके साथ राजधानी लौटे, जिसमें बहुतसे स्त्री-बच्चे भी थे।

### ८ सैयद मुहम्मद, रहीम-पुत्र (१८५५-६५ई०)

कुतुलुकके मरनेपर रहीमखानके बड़े पुत्र सैयद महमूदको गद्दी दी गई, लेकिन अशांत खीवाके इस तीसरे खानको भी अफीमची होनेके कारण गद्दीसे हटना पडा, और उसके छोटे भाई सैयद मुहम्मदने तीस वर्षकी अवस्थामें गद्दी सम्हाली। यामूद तुर्कमानो और कराकल्पकोके विद्रोह अब भी चल रहे थे। कराकल्पक यारलिकके साथ कुहना-उरगज (प्राचीन उरगज) पर चढ़ा। मुहम्मद खानने उन्हें हराकर उनके उम्मीदवार यारलिकको मार डाला। अब कराकल्पकोका एक कबीला बुखाराकी प्रजा बन गया। गृहयुद्धन भयंकर रूप लिया था—गाव उजाड़ दिये गये, कस्बों और नगरोंका सत्यानाश हो गया। एक ओर यामूद और उज्वेक आपसमें कट-मर रहे थे, दूसरी ओर मुरगावसे बढते जमशेदियोंने किस्सूसे फितनियेक तकके इलाकेको लूटा। लूटके मालके साथ वह दो हजार ईरानी गुलामोंको भी छुड़ाकर ले गये। सीमाती किलेके राज्यपाल खोजा नियाजकी जगह उसका पुत्र इरजान बनाया गया था। वह १८५६ ई०में अपनी छावनीके ४० सिपाहियोंके साथ खीवा गया। कजाकोने अफमरोको मार भगाया, और भयंकर अत्याचार करते हुये खीवाकी बहुत-सी सम्पत्ति लूट ली। कजाकोने खीवाके भीतर ही लूटसे सतोष नहीं किया, बल्कि उन्होंने रूसी सीमातके भीतर भी गडबडी मचाई। निम्न-मिर-उपत्यका-में खोकन्दी अपने किलेके लिये दावा कर रहे थे, और पिछले दस सालोंमें उन्होंने आक्रमण करके उनपर दो बार अधिकार भी कर लिया था। पिछली बार अकमस्जिदके राज्यपालने भारी मन्थामें

पशु देकर खीवियोंको विदा किया। तीनों शक्तियोंका सवर्ष निम्न-सिर भूमिके लिये चल रहा था। अब निम्न-सिरके खोकन्दी इलाकेपर रुसियोंका दृढ़ अधिकार हो गया। खोकन्दीयोंने अपने किलोको लौटानेके लिये कहा। इन्कार करनेपर उन्होंने मैनिक टुकड़ी भेजी, लेकिन वहाँ ईधन-पानी आदिकी बड़ी कठिनाई थी, इसलिये किलोको तोड़-फोड़कर खोकदी सेना लौट गई।

खीवा राज्यमें भारी गडबड़ी मची हुई थी, जिसके कारण वहाँ अकाल पड़ गया फिर १८५७ ई०में हैजा भी फैल गया। इसी माल खानने अपने राज्यारोहणकी खबर देते, जार निकोलाइ I की मृत्युके लिये शोक-प्रकाशन करने तथा जार अलेक्सान्द्रके गद्दीपर बैठनेके समय बधाई देने के लिये शेखुल-इस्लाम फाजिल खोजाको दूत बना पीतरबुर्ग भेजा।

मई १८५८ ई०में जेनरल इग्नातियेफने भी एक दूतमंडल खीवा भेजा, जो ईलक येम्वा और अराल तटसे एवुगिरकी खाड़ी, उर्गा अन्तरीप तथा कराखियोंकी पुरानी राजधानी कुग्रद होते फिर नावसे दस मील प्रति दिनकी चालसे चलते खीवाकी राजधानीकी ओर बढ़ा। गावों और शहरके लोग रुसियोंके आनेकी खबर सुनकर बड़े भयभीत थे। रुसियोंने देखा, कि वक्षु नदीके दोनों तरफके गाव और शहर उजड़े पड़े हैं। कराकल्पकोके औलो (डेरो)में सिर्फ बूढ़े-बच्चे रह गये हैं, बाकियोंको पकड़कर खीवा या ईरानी सीमापर ले जाकर बेंच डाला गया था। कराकल्पकोसे किपचको और खोजे-इली कबीलोंकी हालत बेहतर नहीं थी। रुसी दूतमंडल जब नवीन उरगजमें पहुँचा, जो कि खीवाका दूसरा सबसे बड़ा शहर था, तो एक वजीरने आकर स्वागत किया। दूतमंडलको शहरसे बाहर एक वागमें ठहराया गया। पहले मेहतरने स्वागत किया, राजमहलमें मेहतरके लिये अपना एक खास निवास स्थान था। रुसी खानके पास पहुँचाये गये। खान एक ऊँची गद्दी पर बैठा था। उसके सामने छुरा और पिस्तौल रखी थी और पीछेकी ओर राजकीय झंडा फहरा रहा था। प्रधान-सेनापति (कुश-वेगी), वित्तमंत्री (मेहतर) और दीवानवेगी (प्रधान वजीर) खानके सामने बैठे हुये थे, और महा-प्रतिहार द्वारपर खड़ा था।

रुसी दूतमंडलने खीवाकी हालतका अच्छी तरह अव्ययन किया, और समझा-बुझाकर खानको अपनी ओर करनेकी कोशिश की।

उस समय खीवाके अपने सिक्के चल रहे थे। दो तरहके सोनेके सिक्के (तिला) थे, जिनमें से एकका मूल्य अग्रेजी गिनीसे थोड़ा कम और दूसरा उससे आधा था। चादीके सिक्केको 'तगा' कहा जाता था, जो अठन्नीके बराबर था। उसमें आवेसे कमका चादीका सिक्का 'शाही' था। तांबेके सिक्केको पूल या करापुल कहते थे, जो एक तकेमें अड़तालीस होता था।

रुसी मिशनके खीवासे विदा होते ही कराकल्पको और कुग्रदोने तुर्कमान-सरदार अतामुरादके साथ मेल कर कुतुलुक मुरादको उसके कितने ही आदमियोंके साथ मार डाला।

मुहम्मद खानके समयमें ही १८६३ ई०में पर्यटक वाम्बेरी कितने ही हाजियोंके साथ खीवा पहुँचा था। उस समय चन्दोर तुर्कमान तुला विद्रोह किये हुये थे। उसने खीवाको बहुत सुदूर नगर पाया। शहरके दरवाजेपर जय घोष करने तथा हाजियोंके दामनको चूमते, सूखे मेवे और रोटीकी भेंटके साथ लोगोंने स्वागत किया। लेकिन कारवामरायमें टिकानेके बाद बड़े खेपनसे उनकी तलाशी ली गई। समझते थे, कि ये फिरगियो (अग्रेजों) या उरुसो (रुसियों)के जनसीज (गुप्तचर) हैं। वाम्बेरी यद्यपि एसियाई पोशाकमें हाजी बना हुआ था, लेकिन उसकी युरोपीय शकल-सूरत छिप नहीं सकती थी। तत्कालीन खानका दूत शुकरल्ला बी कान्स्तन्तिनोपलमें इस्लामके खलीफाके दरबारमें हो आया था। वाम्बेरी उसमें मिला। तुर्की भाषापर अधिकार होनेके कारण वाम्बेरीको इस्ताम्बूलके आफन्दी (मुल्ला) बन जानेमें सफलता मिली। उसने बतलाया, कि अपने पीर (गुरु)के हुक्मसे मैं बुखारा-शरीफकी तीर्थयात्राके लिये जा रहा हूँ। शुकरल्ला बीने विश्वास करके उसका स्वागत किया। उसने कान्स्तन्तिनोपलके अपने परिचितोंके बारेमें पूछा, जिसका जवाब वाम्बेरीने सतोपजनक दिया। दूसरे दिन खानके बुलानेपर शुकरल्ला बी वाम्बेरीको साथ लिये दरबारमें गया। वाम्बेरीने वहाँ सब उमर और सब तरहके बहुतसे आदमियोंकी भीड़ देखी, जो कि खानके सामने अपना आवेदनपत्र

देनेके लिये आये थे। भी ने जब सुना, कि एक बड़ा दर्वेश (साधु) हमारे खानको दुआ देने आया है, तो उसने 'वाम्बेरीके लिये रास्ता दे दिया। मेहतरसे बातचीत करनेसे पहले उसने फातेहा पढा। वहाके दरबारी श्रोताओने 'आमीन' कहकर अपनी दाढियोपर हाथ फेरा। फिर वाम्बेरीने सुल्तानकी मुहर लगे अपने छपे हुये पासपोर्टको पेश किया। मेहतरने इस्लामके खलीफाके प्रति सम्मान दिखलाते हुये मुहरको चूमकर अपने सिरसे लगाया, और उठकर उसे खानके हाथमे दिया। लौटकर फिर वह दर्वेशको दरबार हालमे ले गया। खान ऊँची मखमलकी गद्दीपर रेशमी मसनदके सहारे बैठा था। उसके हाथमे एक छोटा-सा सोनेका राजचिन्ह था। वाम्बेरीने उसकी शकलको विलकुल निस्तेज और सब तरहसे एक बर्बर अत्याचारी खूसट-जैसी बतलाया है। दर्वेशने सलाम करनेके लिये अपना हाथ उठाया, जिसका जवाब वैसा ही करके खान और उसके दरबारियोने भी दिया। इसके बाद दर्वेशने कुरानके एक छोटे सूरा (अध्याय)का पाठ किया, और 'अल्लाहुम्मा रब्बेना' कहते अन्तमे जोर-की आवाजमें आमीन कहने हुये पाठको समाप्त किया। इसपर चारो ओर 'आमीन' कहकर लोग अपनी-अपनी दाढियोपर हाथ फेरने लगे। अमीन खान अपनी दाढीपर हाथ फेर ही रहा था, कि प्रत्येक दरबारीने 'कबूल बोलगुय' (तुम्हारी दुआ स्वीकृत हो)की आवाज लगाई। खानने वाम्बेरीसे यात्राके कुशल-मगलके बारेमें पूछा। दर्वेशने अपना नाम जमाल बतलाया। हजरत जमालको देखकर सब लोग अपनेको कृतकृत्य समझ रहे थे। खानने उसके साथ मुसाफा (हाथ मिलाने)के द्वारा अपनेको धन्य-धन्य समझा। दर्वेशके लिये लोगोने एक सौ सत्तर साल जीनेकी कामना प्रकट की। वाम्बेरीने खानसे खीवाके सुन्नी सतोकी दरगाहोकी जियारत करके जल्दी बुखारा शरीफ जानेकी इजाजत मागी। खानने पैसा देना चाहा, तो दर्वेशने उसे लेनेसे इन्कार कर दिया, किन्तु तीर्थयात्राके लिये सफेद गदहा लेना स्वीकार किया। रास्तेमें भीडके स्वागत-घोषके साथ वाम्बेरी अपने डेरेपर लौटा। उसने अपनी यात्रामें साथी दर्वेशके बारेमें लिखा है—“उनमेंसे हरएकने सेर-सेर भर चावल, दुम्बेकी पूछकी आध सेर चर्बिके अतिरिक्त रोटिया, मूली, गाजर चट किये और पद्रहसे बीस बड़े-बड़े शोरवाके प्यालोको गलेके नीचे उतारा। प्यालोमें हरी चाय डाली जा रही थी।” वाम्बेरीके पास जिज्ञासुओकी भीड लगी रहती थी। लोग इस्लामकी राजधानी इस्ताम्बुल (कान्स्तान्तिनोपल)के सतोके बारेमें जानना चाहते थे। कभी-कभी लोग बीमारीसे छूटनेके लिये झाडफूक करानेके लिये भी आते थे। वाम्बेरीने अपनी आखो देखा—खानसे इनाम पानेके लिये वहादुर लोग कटे हुये सिरोंको बोरोमें भरे ले आते थे, जो कभी-कभी आलुओकी तरह रास्तेमे गिर पडते थे। हरएक आदमीको मुडोकी सख्याके अनुसार इनाम मिलता था। खीवा छोडनेसे पहले एक बार फिर वाम्बेरीने जाकर खानको आशीर्वाद दिया।

### (मुहम्मद फना, तूरासूफी-भतीजा, १८६५ ई०)

मुहम्मद खानको मारकर विद्रोहियोने मृत तूरासूफीके भतीजे मुहम्मद फनाको गद्दीपर बैठाया। लेकिन अरालियोकी यह सफलता देरतक नहीं चली। फनाको रूसियोका समर्थन प्राप्त होनेपर भी साल भर हीमे मार डाला गया, और अरालियोको खीवाकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर होना पडा। फनाने ख्वारेज्मका खान बनकर अपना सिक्का चलाया था।

### ९ सैयद मुहम्मद रहीम, मुहम्मद-पुत्र (१८६५ ई०)

गद्दीपर बैठते समय सैयद मुहम्मद बीस सालका तरुण था। उसे शासनसे भी ज्यादा बाघके शिकारका शौक था। पैतृक सिंहासनके साथ-साथ उसे लूटमारसे बाजार गर्मवाला राज्य मिला था, और ऊपरसे रूस-जैसी शक्ति सिरपर पहुंच गई थी। १८६७ ई०मे काँफमान तुर्किस्तानका राज्यपाल बनकर आया। उसने आते ही अपनी नियुक्तिकी सूचना देते हुये खानको लिखा—सिर-दरियाके पार लुटेरे हमारी भूमिमें बड़ी गडबड़ी मचा रहे हैं, इनलिये उनके विरुद्ध हम

अपनी सेना भेजनेका अधिकार रखते हैं। खानने जवाब दिया—सिर-दरियाके दोनो तट हमारे हैं। लेकिन जवानो दावेको कौन मानता है? उबर रूसी-प्रजा घुमन्तू कजाक जाडोमें बहुत भारी मत्थामें सिरके दक्षिणमें तथा कुवान और यानी-दरियामें अपने डेर डालते थे। खानकी पर्वाह न करके रूसी सैनिक सिर पार हो डाकुओको दड देने लगे। एक ओर इवर सिरसे दक्षिणकी ओर उन्होंने पैर बढ़ाना शुरू किया, और दूसरी ओर कास्पियनके पूर्व तटपर भी रूसी अपने प्रभावको बढ़ाते जा रहे थे। नवम्बर १८६९ ई०में एक रूसी सैनिक टुकड़ी क्रास्नोवोद्स्कमें उतरकर वहा किला बनाने लगी। उसके बाद उन्होंने दूसरा किला चिकिस्लरमें बनाया। इसी समय वोल्गाकी उपत्यका और उरालभूमिमें दोनकसाको, कल्मको तथा कजाकोंके विद्रोह और उनका घोर दमन हो रहा था। भयके मारे लोग अपने गावोंको छोड़कर भाग रहे थे, जिसके कारण १८७० ई०की गर्मियोंतक कोई व्यापारी कारवा नहीं गया। रूसी सेना जब दड देने आई, तो पता लगा कि इस विद्रोहमें खीवाके खानका हाथ था। क्रास्नोवोद्स्क किला बनानेके विरुद्ध खानने कुओमें मुर्दे कुत्तोंको फेंककर पानीको विपैला बनाना चाहा था। खीवावाले जानते थे, कि उनकी इस कार्रवाईका जवाब रूसी किस तरह देंगे, इसलिये राजधानी खीवाकी किलाबन्दी कर प्राकारपर बीस तोपें लगा दी गई। खीवाने तलदिक धाराको रोककर वक्षुके प्रवाहको कई धाराओमें बदल दिया, जिसमें कि उथली हो जानेके कारण रूसी जहाज अराल समुद्रसे वक्षु दरियाके भीतर होकर आगे न बढ़ सकें।

१८७० ई०में जेनरल काँफमानने कडा पत्र लिखकर घमकी दी, कि अगर बात ठीक-ठाक नहीं की गई, तो हम कडी कार्रवाई करनेके लिये मजबूर हैं। खीवाके कुशवेगी (प्रवान-सेनापति) और दीवानवेगी (वजीर)ने उत्तरमें लिखा—“जहा भी उसकी प्रजा ह, वहा रूसी सम्राट्का शासन, इसलिये यानी-दरिया अकचाक् झीलतक—जहापर कि रूसी कजाक घूमत हैं—सम्राट्का है, साथ ही बुकान पहाड, और किजिलकुमसे इकिवई तकके यानी-दरियाके ऊपरका सारा रास्ता बुखाराके साथ की गई सविके अनुसार सदासे रूसका माना गया है।” लेकिन इस जवाबसे रूसी क्यों सतुष्ट होनेवाले थे? उन्हें तो आगे बढ़ना था, जिसके लिये खीवावाले अपने लूटपाटकी आदतसे मौका देनेको तैयार थे। दस्त (स्तेपी)के विद्रोहको दवानेके लिये रूसियोंने उस्तउर्तमें अपनी सेना भेजी, और तुर्किस्तानके बडे अभियानके लिये सैनिक तैयारी होने लगी। खीवाने रूसियोंको कडा देखकर बुखाराको माथ मिलानेके लिये दूत भेजा, जिसे अमीर-बुखाराने रूसियोंके इशारेपर जेलमें डाल दिया। खीवाके आदमियोंको भी अमीर-बुखाराने बहुत समझाया, कि रूसी वदियोंको छोड दो, लूट-मार बंद करो और जेनरल काँफमानके साथ बातचीत करनेके लिये अपने प्रतिनिधि ताशकन्द भेजो। लेकिन, तरुण खान और दरवारी अपनी अकडमे थे। उन्होंने अमीर-बुखाराकी सीख नहीं मानी।

रूसी अभियान (१८७२ ई०)—१८७२ ई०के वसतमें कर्नल मर्कोजोफके नेतृत्वमें एक मजबूत सैनिक टुकड़ी कास्पियनमें गिरनेवाली वक्षुकी पुरानी धार—उज्वोइ—की जाच-पडताल करनेके लिये क्रास्नोवोद्स्क बदरगाहमे रवाना हुई। वह आगे बढ़ते हुए बलखान पर्वतके तीन सौ वेस्त पूर्वमें अवस्थित ओर्तकू चश्मेपर पहुंची। फिर वहासे दक्षिणकी ओर मुह करके उशामला इलाकेके सर्कस-नुर्कमानोको दड देते किजिल-अर्वत किलेपर पहुंची। तुर्कमान घुमन्तूओने आक्रमण किया, लेकिन इसमें रूसी सेनाको कोई भारी नुकसान नहीं हुआ। इतनी जाच-पडतालके बाद रूसी पीछे लौट गये। जिस वक्त रूसी सेना कास्पियन तटमे जाकर कराकुम रेगिस्तानके एक भागपर खोज-पडताल कर रही थी, इसी समय वक्षु और सिर-दरियाके बीचवाले महान् रेगिस्तान—किजिलकुम—की भी जाच-पडताल करनेके लिये एक रूसी सेना तुर्किस्तान-शहरमे भेजी गई थी, जिसने मिगबुलाक और बुकान पर्वतोंकी सर्वे की। दोनों तरफमे रूसियोंकी इस कार्रवाईको देखकर सैयद मुहम्मद घबड़ा उठा। उसने महाराज्यपाल काफमानकी उपेक्षा करते अपना एक दूत ओरेनबुर्गके महाराज्यपाल और दूसरा तिफलिसके महाराज्यपालके पास भेजा, साथ ही महाराजुल मिखाइलको भी लिखा—“कई रूसी अभियान मेरे देशपर चढ़ाई कर रहे हैं। मेरे पास ग्यारह रूसी बंदी हैं, जिन्हें मैं

भेजनेके लिये तैयार ह। यदि यह काररवाई रोकी न गई, तो मैं न वदियोंको भेजूंगा, न लूट-ममर वद होगी। अगर ये वदी तुम्हारे लिये मेरे विरुद्ध युद्ध करनेका वहानामात्र हैं, और तुम अपने राज्यको बढानेपर तुले हुए हो, तो अल्लाहकी जो मर्जी होगी, वही होगा।” खीवाके दूतोंको वद करके रूसी राज्यपालोने कहा, कि हम कोई चिट्ठी नहीं लेगे, जबतक कि रूसी वदी नहीं छोड़े जाते, और दूतको ताशकन्दके महाराज्यपालके पास नहीं भेजा जाता। रूसियोंसे इस प्रकार निराश होनेके बाद खीवाके खानने अग्रेजोंकी ओर हाथ बढाया और अपने एक प्रतिनिधिको भारतके उप-राज नार्थवुक्के पास भेजकर रूसके विरुद्ध सैनिक सहायता मागी। लेकिन अग्रेज क्या भाग खाये हुए थे, कि खीवाकी रक्षाके लिये एक महायुद्ध सिरपर लाते। उपराज (वाइसराय) का जवाब था—  
“रूसके साथ शांति करो, उनकी मागोंको पूरा करो, और उन्हें नाराज होनेका मौका मत दो।”

यद्यपि इस प्रकार खीवाका कोई धनी-धोरी नहीं था, और केवल अपने बलपर वह रूसियोंका मुकाविला नहीं कर सकता था, लेकिन खीवा (ख्वारेज्म) इतिहासके आरम्भिक कालसे ही अपने पड़ोसके दो महान् रेगिस्तानों किजिलकुम और कराकुम, तथा निर्जन अद्वितीयका उस्तुर्त एव उत्तर-के जनशून्य दस्त-किपचकके कारण बड़े-बड़े विजेताओंके मनोरथको अनेक बार भग करता आया था। अभी भी रूसके लिये अभियान भेजनेमें सबसे कठिनाई इन्हीं रेगिस्तानों और निर्जन भूमियोंके कारण थी। वस्तुतः ख्वारेज्म एक विशाल रेगिस्तानसे घिरी हुई हरितावली है। ताशकन्द-से ६०० मील, ओरेनबुर्गसे ९३० मील और क्रास्नोवोद्स्कमे ५०० मीलकी यात्रा तै करके खीवा कैसे पहुँचा जाय, रूसियोंके लिये यह सबसे बड़ी कठिनाई थी। यद्यपि अरालमें रूसियोंने अपने जहाज तैरा दिये थे, लेकिन उनका बेड़ा काफी शक्तिशाली नहीं था, और वक्षकी बार भी उयली थी, जिसमें जहाज नहीं चलाया जा सकता था। लेकिन खीवाको दब देना आवश्यक था। रूसियोंने तीन सेना-स्तम्भ भेजनेका निश्चय किया—(१) प्रधान स्तम्भ तुर्किस्तान शहरसे जेनरल कॉफमानके सचालनमें अपने साथ ३४२० पैदल, ११५० सवार, ६७७ तोपची, बीस तोपें, दो हल्की तोपें, आठ राकेट लिये भेजा गया। इसके दो विभाग थे, जिनमेंसे एक विभागका सचालक जनरल गोलोवात्सोफ जीजकसे चला, और दूसरा विभाग कर्नल गोलोफके नेतृत्वमें कजालिन्स्कसे रवाना हुआ। रसद डोनेके लिये आठ हजार ऊट—ऊटके मालिको कजाकोको एक ऊटके मरनेपर पचास रूबल देना तै हुआ था, चार स्टीमर भी और इसी सेनाकी सहायता करनेके लिये लकड़ीके बेंडोके साथ वक्षुके ऊपरकी ओर बढ रहे थे।

(२) दूसरा सेना-स्तम्भ कसाक जेनरल आतमन वेरेफकिनके अधीन ओरेनबुर्ग रवाना हुआ, जो यम्बा पहुँचकर अराल समुद्रके पश्चिमी तटपर गया। इस स्तम्भमें ३४६१ सैनिक, १७९९ घोड़े, और सात तोपें थी।

(३) तृतीय सेना-स्तम्भके तीन विभाग थे, जिसमेंसे एक विभागको कर्नल लोमाकिनके नेतृत्व में मगिशलकमें बीशअक्ति, इल्तेइजे, तविनमू होते अड्डागिरकी खाड़ीमें पहुँच ओरेनबुर्गवाले स्तम्भसे मिलना था। बाकी दो विभागोंके दो हजार सैनिक कर्नल मार्कोजोफके सचालनमें क्रास्नो-वोद्स्क और चिकिस्लरसे रवाना हुए थे।

कजालिन्स्कवाला स्तम्भ पहले रवाना हुआ, जो बारह दिनमें यानी-दरियापर अवस्थित इर्किवडमें पहुँचा। रास्तेमें इसके कुछ ऊटोंको नुकसान हुआ। वहापर यह सेना ब्लागोवेश्चेन्स्क किलेको बना फिर तीन दिन चलकर किजिलकाकमें पहुँची। मौसम खराब हो गया, दोपहरको नूपेंने बरफ-को गला दिया, जिससे ऊटोंके लिये चलना मुश्किल हो गया। इस वनस्पतिहीन निर्जन भूमिमें ईधन-का कहीं पता नहीं था। इस मुसीबतमें दो दिन और दक्षिणकी ओर बढ़नेपर सेना बुकन्दकी पहाड़ियों-में जा, आगे युसकुदुक कोकपताश, कोपकन्ताश और मिगबुलाक होने तम्दी जा पहुँची।

जीजकसे चला प्रधान सेनाग उचमा, फरिश, सिन्ताब, तिमुरकबुक, बल्लास गदिर चदमा हो बुखारा सीमापर कराताउ पर्वतश्रेणीकी ओरसे नूरताउ पहाड़ीके उत्तरमें प्रदक्षिणा करते आगे बढ़ा। सर्दी बहुत तेज थी, जिससे इस सेनाके भी कितने ही ऊट रास्तेमें मर गये। पानीकी कमीके कारण तेमूरबेकसे जीजकवाली सेनाको दो भागोंमें बाँटकर आगे बढ़नेके लिये हुक्म हुआ, इनमेंसे एक भाग विशचगन, यानीकसगन और किदेरीके चश्मोने होते आगे बढ़ा, और दूसरे भागने कांशबर्गी,



वैमनतती, मस्ची और अरिस्तनवेल कुदुकका रास्ता लिया। १२ अप्रैलको कुदुकमें दोनों सेनायें मिल गयीं। खानने घबड़ाकर इक्कीस रूसी गुलामोंके साथ पत्र लिखकर कजाला भेजा, लेकिन अब तो 'चिडिया चुग गई खेत' वाली बात थी। इतने खर्च और परिश्रमके साथ भेजा गया महामियान बातों-बातोंसे कैसे लौट सकता था? रूसी गुलामोंसे पता लगा, कि उनसे वगीचेमें काम लिया जाता और ईरानी गुलामों-जैसा वर्तव किया जाता था। खानके लिये उन्हें फल-चावल और कभी-कभी गोश्त और चर्वी भी मिल जाती थी। मिगबुलाक और गूरखानासे अच्छा और छोटा समझ मेनाने खलता और उच्चचकका रास्ता पकड़ा। लेकिन आगे अरिस्तान-वेलकुदुकमें एक पखवारा रुकना पड़ा। यहीं रूसियोंने ईस्टरके त्योहारको मनाया। किजिलकुमके कजाकोने ८०० नये ऊट दिये, फिर रवाना होकर ६ मईको सेना खलता पहुंची। यही कजालासे आनेवाली सेना भी मिल गई। रास्तेमें टूटे-फूटे बुखारी किलोकी मरम्मत करके उसका नाम सत-जार्ज किला रक्खा गया।

खलता और आमूके बीच ८० मीलका फासला था, लेकिन रास्ता अच्छा नहीं था। १२० मील-तक फैरी हुई हवाके झोकेपर इधरसे उधर चलनेवाली बालू मवसे कड़ी समस्या थी, और पानी भी केवल आदमक्रिलगन (मनुष्यमार) कूओका था, जो खलतासे २४ मीलपर थे। चारों ओर रेगिस्तान-ही-रेगिस्तान था, जिसमें कहीं वनस्पतिका नाम नहीं था—लाल रंग-जैसी बालू थी, जिसके कारण इस रेगिस्तानका नाम किजिलकुम (लाल बालू) पड़ा। रास्तेमें एकाध ही सो भी बुरे हुए थे, जिनसे सेना और उसके पशुओंका काम नहीं चल सकता था। पौने सात घंटेके कूचके बाद प्रत्येकको आमू-दरियाके ऊपर उच्चचकमें भेजनेका निश्चय किया गया। लेकिन बालूमें चलना भारी परिश्रमका काम था। ऊपरसे अमह धूप पड़ रही थी, इसलिये हरावल सेना १३ मीलसे आगे नहीं बढ़ सकी, और उसके लिये आदमक्रिलगनसे मीठा पानी भेजना पड़ा। एक रूसी लेखकके अनुसार "अवस्था बहुत भयंकर हो गई। आगे बढ़ना असम्भव मालूम होता था, और पीछे लौटना भारी शर्मकी बात होती। आदमक्रिलगनमें पानी थोड़ा था, और मशकोमें भरकर साथ लाया पानी खतम हो चुका था।" अन्तमें सुरक्षाकी एकमात्र आशा वह चियडाधारी किर्गिज दिखलाई पड़ा जो कि डीक्वइसे कजालाकी वाहिनीके साथ हो लिया था, और जिसके महत्त्व और गुणका पता जनरल निकोलस और कर्नल ब्रेश्चेर्नने पहले-पहल लगाया। किर्गिजने बतलाया, कि रास्तेसे कुछ ही मील दाहिने अल्तीकुदुकके हुए हैं। जनरल कॉफमानने अपनी जेबी पानीकी कुप्पी देकर कहा, कि यदि इसमें पानी भर लाओ, तो तुम्हें सी रुबल इनाम दिया जायगा। किर्गिजने वैसा कर दिखलाया, और सेनाकी एक टुकड़ी अल्तीकुदुक भेजी गई। कुओकी सख्या कम थी, वह बहुत गहरे नहीं थे, लेकिन उनमें काफी पानी था। पानी निकालकर घोंडों और ऊंटोंको पिलाया गया, सेनाने भी प्यास बुझाई, फिर कई दिनोंतक यहा डेरा डाल दिया गया, और छोटी-छोटी टुकड़ियोंमें दो की जगह ग्यारह दिनमें कॉफमानकी वाहिनी २३ मईको वक्षु (आमू-दरिया)के तटपर पहुंची। यात्राकी भीषणताका पता इसीसे लगेगा, कि दस हजार ऊंटोंमें सिर्फ बारह सौ बच रहे। खलतासे आगे सारे रास्तेमें रसदकी चीजें, अफसरोंके असबाब, और गोलाबारूदका सामान बिखरा हुआ था। कई जगहोंपर युद्ध-सामग्रीको इस आशासे बालूके नीचे दबा दिया गया था, कि अवश्यकता पड़नेपर सैनिकोंको लानेके लिये भेज दिया जायगा। कुछ सप्ताह बाद एक रूसी अफसर इस रास्ते गुजरा, जिसने इसके बारेमें लिखा था—"सारे रास्ते भर ऊंटों और घोड़ोंकी कंकाल तथा सड़ते हुए शरीर फैले थे। दुर्गन्धसे नाक फटी जाती थी। पड़े हुये सामानोंके देखनेसे मालूम होता था कि कोई बाजार लगी हुई है।"

खीवावालोंने भी लड़नेकी तैयारी की थी, और जवर्दस्ती लोगोंकी भर्ती करके सैनिकोंकी सख्या बढ़ाई थी। इन सेनाका एक भाग कुग्रादकी ओर उर्गा खाड़ीके पास यानीकलामें गया, जिसका काम था, उस्तउर्तसे आनेवाली रूसी सेनाका प्रतिरोध करना। छ-सात हजार सैनिक अरालके पूर्वी तटसे आनेवाली मेनाके मुकाबिलेके लिये दीकरामे थे। खीवावालोंने इन्हीं दो जगहोंसे खतरेकी सम्भावना नमस्ती की। जनरल कॉफमानके आ जानेकी खबर पा ३५०० तुर्कमानों और कजाकोंको उच्चचकमें भेजा गया, जिनमेंसे पंद्रह सौका कमांडर दीवानवेगी मुहम्मद नियाज था, और दो हजारका

दीवानबेगी मुहम्मद बुराद । यह सेनाये उच्चकसे पूर्वमें सरदावाकुल(शील)के परे जाकर जम गयी, लेकिन पहली ही झड़पमें थोड़ेसे गोले-गोलियोंकी वीछारसे इनके पैर उखड़ गये । शूरखानसे वक्षुके दाहिने तटसे रूसी सेना चली, और चौथे दिन अककामिश पहुंची । वक्षुपार शेखआरिक किलापर थोड़ेसे गोलेके छोड़नेकी जरूरत पड़ी, और शत्रु वहांसे भी भाग गया । नदी उथली थी, केवल छाती भर पानी था । कितने लोग पैदल ही नदीमें घुसकर पार हो गये, और कुछने दुश्मनसे पकड़ी नावोंसे या साय लाये बड़ेको वावकर परले पार जा खीवावालोंके डेरेपर अधिकार कर लिया । वहां उन्हें चावल और नमक भर मिल पाया । रूसियोंके केवल दो घोड़े मारे गये, जिन्हें भूखे सिपाहियोंने तुरन्त पकाकर खा लिया ।

२८ मईको शूरखानाके आदमियोंके एक प्रतिनिवि-मंडलने रूसी सेनापतिसे मिलकर तुर्कमानों और खीवावालोंके अत्याचारकी शिकायत की । व्यवस्था कायम करनेके लिये कसाक सैनिकोंकी एक टुकड़ी भेजी गई, जो वहां चार दिनतक रही । रूसियोंने अभयदानकी घोषणा करके निवासियोंमें ऐसा विश्वास पैदा कर दिया, कि लोग सेनाके खानेके लिए ढोर, अगूर आदि फल, तथा जानवरोंके लिये चारा लाने लगे ।

आगे शेखआरिकमें थोड़ीसी झड़प हुई । यहीपर खानका पत्र मिला, जिसमें कहा गया था, कि मैं जेनरलकी आज्ञा-पालन करनेके लिए तैयार हू । लेकिन जेनरल काफमानने कहा, कि अब बात खीवामें ही होगी । ५ जूनको फिर सेना आगे खाना हुई, और शेखआरिकसे चन्द घंटा चलनेपर हजारास्प पहुंच गई । यहां भी कुछ गोले छोड़ने पड़े, और खीवावाले सैनिक भाग खड़े हुये । खीवाका यह सबसे मजबूत किला था । इतिहास बतलाता है, कि हजारास्प (सहत्रास्व) ने कितने ही विश्वविजयी शत्रुओंके दात खट्टे कर कितनी ही बार स्वारेज्मको बचाया था । लेकिन अब हम बारूदके युगमें आ गये थे, जब कि हजारास्प अपनी करामातको तीर-धनुषके युग हीमें दिखला सकता था । खीवाके छोटेसे राज्यके हाथमें शक्तिशाली आधुनिक हथियार नहीं थे, इसलिये वह रूसियोंका कैसे मुकाबिला करता ? हजारास्पके किलेके तीन तरफ पानीसे भरी गहरी खाई थी, और एक तरफ तीन फैदम ( $3 \times 6 = 18$  फुट) मोटी दीवार । यहां अवश्य कड़ा प्रतिरोध किया जा सकता था, लेकिन नागरिकोंने सर्वनाशके डरसे किलेको समर्पण कर दिया । रूसियोंने वहां कासे-मीतलकी चार अच्छी तोपें, कुछ गाड़िया, गोला-बारूदके एक बड़े ढेरके साथ हजार पौद (४०० मन) गेहू, ६०० पौद (२७२ मन) चावल और घोड़ोंके लिये ८०० पौद (३२० मन) बाजरा पाया ।\*

६ जूनको जेनरल काफमानको खबर मिली, कि ओरेनबुर्गकी वाहिनी भी आ गई । अगले दिन अमीर-बुखाराने काफमानके पास बर्वाई भेजी । ९ जूनको फिर मेना कूचकर अगले दिन यगीआरिक झीलके तटपर पहुंच गई ।

कर्नल मार्कोजोफको बुगदैली और ऐदिनके रास्ते उज्जोइ (कास्पियनकी ओर जानेवाली वक्षुकी सूखी धार)में होते तोपियातान, इगदी, ओर्ताकुया, ददुरसे आनेपर जामुकशिरका ब्वस्तन किला मिला, जो कि खीवासे चालीस मील पश्चिम है । यहां पहुंचकर मार्कोजोफको तुर्किस्तानमें आनेवाले सेना-स्तम्भकी प्रतीक्षा करनी थी । कर्नल मार्कोजोफकी मेना करीब जाये रास्तेपर इगदी-तक सुरक्षित पहुंची, और तत्के-तुर्कमानोंको हराकर उसे बहुतसा लूटका सामान मिश । लेकिन इगदी और ओर्ताकुयाके बीचमें भयकर बालुकाराशिसे मुकाबिला पड़ा । इस दुर्गम रास्तेसे गुजरकर सबसे पहले पहुंच खीवा जीतनेकी जल्दी थी, जिसका श्रेय काकेशनकी सेनाको मिश, जो कि कास्पियनके पूर्वी किनारेकी बन्दरगाहोंसे खाना हुई थी । लेकिन बीचकी रेगिस्तानी भूमिकी भयकर धूप और जलके अभावने मेनाके बड़ावको रोक दिया । ओर्ताकुयामें आगेके रेगिस्तानकी भीषणताको जानकर सेनाको क्रास्नोवोदस्क लौटनेके लिये मजबूर होना पड़ा । उन समय नैतिक भारी सव्यामें बीमार होकर ऊटोपर ढोये जा रहे थे, और उधर तत्के-तुर्कमानों ने हमला शुरू कर दिया । सारे सैनिक किनी-न-किमी बीमारीमें फंसे थे, जिनमें बाढ़ तो लूने मर गये । उन

\* २॥ पौद = १ मन

विना हथियारके समुद्र तटपर लौटी । ऊटोको तुर्कमान लूट ले गये, और रसदका वोझा हलका करनेके लिये रेगिस्तानमें फेंक दिया गया था । ककेशसकी सेनाकी क्या दशा हुई थी, यह इसीसे मालूम होगा, कि एक स्टाफ-अफसरने अपने सारे चादीके प्लेटोंके सेटको फेंक दिया था । कुछ तोपोको वालूके नीचे गाड़ दिया गया । वन्दूकोमेंसे कितनी ही पीछे कजाको और तुर्कमानोंने लौटाई । यद्यपि यह अभियान असफल रहा, लेकिन बुखाराकी सेनापर अपनी धाक जमाकर इसने उसे खीवाकी मददके लिये जानेसे रोक दिया ।

कास्पियन तटसे कर्नल लोमाकिनने उस्तउर्तके रास्ते कूच किया । यह सेना कास्पियन तटपर अवस्थित किद्रेली किलेसे तीन भागमें बटकर आगे-पीछे २७, २८ और २९ अप्रैलको रवाना हुई । धूप और पानीकी इसे और भी तकलीफ हुई । इसका रास्ता कौनदी, सेनेकसे, विश्अक्ति, कमिस्ती, करस्तूचिक, सइकुयु, वुस्साग, कराकिन, किनिर, अल्पइमास, अकमेचेत, इल्तेइजी, वाइलियर, किजिलअगिर, वैचगिर, मेन्दली, अलान, इलिवइ (ऐवुगिर खाडीके दक्षिण-पश्चिम)से था । विश्अक्तिमें कजाकोको आक्रमण करके पिटना पड़ा । अलानके पास सेना रोजुल बेकोविचके वनवाये किलेके ध्वसावशेषके पाससे गुजरी । जेनरल वेरेत्किन ओरेनबुर्गसे अपनी सेना लेकर आ रहा था । उससे बातचीत करके ऐवुगिरसे आगे बढ़ कुग्राद पहुँची, और चन्द घंटों बाद ओरेनबुर्गकी सेना आ मिली । इस सेनाको उस्तउर्तकी चार सौ मील लम्बी रेगिस्तानी अवित्यकाको रसद-पानीकी कमीके साथ पार करना पड़ा, लेकिन उन्तीस दिनोंमें उसने यह यात्रा पूरी कर ली ।

ओरेनबुर्गकी वाहिनी ११ अप्रैलको वहाँसे रवाना हुई थी । ओरेनबुर्गसे अराल-समुद्र तकका रास्ता अब रुसियोंकी भूमिमें होनेके कारण सुपरिचित था, इसलिए इस सेनाको अपनी यात्रा पूरी करनेमें कम तकलीफ हुई । पहले यह पूर्वकी ओर बढ़ती वरसुककी वालुकाराशितक गई, फिर वहाँसे मुड़कर अरालके पश्चिम उर्गाकी खाडीपर पहुँची । जेनरल वेरेत्किनने घोषणा निकाल दी थी, कि कराकल्पक और तुर्कमान घुमन्तू अपन-अपने डेरो और घरोंमें रहे, तथा सेनाके साथ केवल रूसी कसाक शरणार्थी ही चलें । कबीलोके कितने ही सरदार रूसी सेनाके साथ आ मिले थे, जिन्होंने यात्रामें बड़ी सहायता की । जेनरल वेरेत्किनकी सेना ऐवुगिर पार हो यानीकलाको सर और ध्वस्तकर कुग्रादमें पहुँची । यहाँ खीवावालोकी काफी सेना थी, लेकिन रूसियोंके आते ही वह भाग खड़ी हुई, और शहरपर निर्विरोध अधिकार हो गया । शहरके प्राकार और घर पहले हीके सघर्षमें ध्वस्त हो चुके थे । रूसी जेनरलने खानके प्रासाद और जेसाउल मामितके घरको तुड़वा दिया । शहरमें सिर्फ एक हजार पूद (४०० मन) चावल और ज्वारकी रोटिया मिली । लोग पहले ही भाग गये थे, लेकिन रूसियोंके अच्छे बर्तावकी खबर पाकर वह जल्दी ही लौट आये ।

यहीपर जेनरलको रूसी बंडेके वारेमें बुरी खबर मिली । २९ अप्रैलको बंडेने सिरके मुहानेको छोड़ दो दिन बाद तकमकअता द्वीपके आगे ऐवुगी खाडीमें पहुँच लगर डाला । कुछ दिन ठहरनेके बाद ९ मईको वह उलकुम-दरियाकी पश्चिमी शाखा किचकिन-दरियामें घुसा, और जककला नामक एक छोटेसे किलेके सामने आया । जहाजी तोपोने बमवर्षा करके किलेके भीतर रहनेवाली सेनाको भगा दिया । फिर बंडा उलकुम-दरियामें होकर ऊपरकी ओर चला । कुग्राद नगर ५० वेर्स्ट (८७ फर्माख) के करीब था, किन्तु नदीमें पर्याप्त पानी नहीं था, इसलिए वही लगर डालना पड़ा । कुछ आदमी जहाजोंसे उतरकर आसपासकी भूमिके वारेमें पता लगानेके लिये भेजे गये, जिन्हें दुश्मनोंने धोखेसे पकड़कर मार दिया । इनकी लाशें पीछे कुग्रादमें दफनाई गयी । अब फिर बंडा आगे चला । कुग्रादसे ३० वेर्स्ट पहले ही बोजेइलीमें गीवाके चार-पाच हजार सैनिकोंके साथ मामूली झड़प हुई । आगे मगितसे पहले यामूद तुर्कमानोंमें लड़ाई हुई । रूसी शहरपर अधिकार करके शत्रुओंको पीछा करते ही रहे । एक टुकड़ा कितार्ड (करागोसकी नहर)की ओर बढ़ी, और दूसरीने कर्नल स्कोवेलफके नेतृत्वमें फिजिज-नियाजवीकी ओर पीछा किया । आगे बढ़नेपर गुरलान आया । यही खानकी मुख्य

सेना थी, जिसपर खीवावालोकी सारी आशाये केन्द्रित थी। लेकिन इस सेनाने भी रूसियोंका नाममात्र ही प्रतिरोध किया। खानने जेनरल बेरेव्किनके पास चिट्ठी भेजकर तीन-चार दिनकी विराम-सधिकी बात करते हुये कहा, कि हमने जेनरल कॉफमानके पास भी इसके बारेमें निवेदन किया है। लेकिन जेनरलने अपने बड़ावको जारी रक्खा। कात और काशकुपिरके रास्ते वह आगे बढ़ा। वहा कितनी ही बार दुश्मनसे झड़प करते बहुत-सी नहरोंको पार करना पड़ा। रूसियोंने चौबीस घंटेके भीतर किलिज नियाजबी नहरपर १८९ फुटका बड़ेवाला पुल तैयार किया। ७ जूनको खीवा तीन मीलसे भी कम रह गया था। वहा खानके बागमें जेनरल बेरेव्किनने डेरा डाला। किलेसे तोपें दगने लगीं। एक फटे गोलेसे जेनरलके सिरमें भारी चोट आई। रूसी तोपखानेने भी जवाब दिया। नागरिकोंका प्रतिनिधिमंडल रूसी सेनापतिसे मिलने आया। उसने बतलाया, कि खान भाग गया है, नगरमें बड़ी बदअमनी फैली हुई है। बेरेव्किनने तुरन्त गोलाबारी बन्द कर दी, तथा दूतमंडलको कहा, कि जेनरल कॉफमान ही शांति दे सकते हैं, उन्हींके पास जाओ। साथ ही यह भी धमकी दी, कि किलेकी तोपोंको बन्द करो, नहीं तो दो घंटेके भीतर हम नगरपर गोलाबारी करने लगेंगे। दूसरे नागरिक-मंडलने आकर कहा, कि तुर्कमान सैनिक हमारी बात माननेके लिये तैयार नहीं हैं। दस वजे राततक गोलाबारी होती रही। उधर कॉफमानका पत्र आया, कि हम खीवासे सिर्फ १६ वेर्स्ट (२७ फर्सख) पर यगीआरिकपर हैं, पूर्वद्वारासे तीन मीलपर अवस्थित पुलपर आकर मिलो।

जेनरल कॉफमानने ६ जूनको ही ओरेनबुर्गकी सेनाके आनेकी खबर सुन ली थी। यगीआरिकमें उसके पास खानका चचेरा भाई ईनक इरताश अली खानका पत्र लेकर आया, जिसमें कहा गया था, कि मैं जारकी प्रजा हूँ, यामूद मेरे हाथमें नहीं है, कल मैं स्वयं सेवामें आ रहा हूँ।

शहरमें सचमुच ही अराजकता फैली हुई थी। प्रतिरोध और समर्पणके लिये तैयार लोगोंके दो दल हो गये थे, जिनके बीच भीषण संघर्ष हो रहा था। ईनकके लौटकर आनेसे पहले ही खान राजधानी छोड़कर भाग गया था। दीवानबेगी मतमुराद प्रतिरोध-पार्टीका अगुवा था। खानका भाई अताजान तिमूर, जो सात महीनेसे बंदीखानेमें पड़ा था, अब खान बनाया गया था। उसका चचा सैयद अमीरुलउमरा सयुक्त शासकके तौरपर काम कर रहा था। दोनों चचा-भतीजे समर्पण-पक्षपातियोंके मुखिया थे। अगले दिन सबेरे ईनक इर्तसली और दूसरे अमीरोंने जेनरल कॉफमानके पास जाकर अधीनता स्वीकार की।

जेनरल बेरेव्किनने अपनी सेनाके एक बड़े भागको तुर्किस्तानी सेनासे मिल जानेके लिये भेजा, बाकियोंके ऊपर किलेसे गोलाबारी होने लगी। रूसियोंने भी तोपोंको छोड़कर उसका जवाब दिया। वह खीवाके उत्तरी दरवाजे शाहवादको तोड़कर नगरके भीतर घुस गये। कर्नल स्कोबेलेफ सड़कसे महलकी ओर चला। उधर जेनरल कॉफमानने हजारास्प दरवाजेपर पहुँचकर विजयीके तौरपर नगरमें प्रवेश किया। उस समय नगरमें झड़े-पताके फहरा रहे थे, बाजे बज रहे थे। खानके अन्त पुर (हरम) और सम्पत्तिकी रक्षाके लिये रूसियोंने गारद नियुक्त कर दिया और सैनिकोंने नगर-प्राकारपर अधिकार कर लिया। जेनरलके हुक्मपर लोगोंके हथियार छीने जाने लग। नगरके बड़े मैदानमें रूसी सेनाने जमा होकर सम्राट्के लिये दुआ और धन्यवादकी रसम अदा की। कॉफमान खानके दरबार-हालमें पहुँचा, जहा नागरिकोंके कितने ही प्रतिनिधि बधाई देनेके लिये आये। सैयद मुहम्मद खान भागकर यामूदोमें चला गया था, इसलिये रूसी जेनरलने अताजान त्युराको अस्थायी खान बनाया। उसने सैयद मुहम्मदके पास सदेश भेजा, कि मैं तुम्हें खान पदपर पुन स्थापित करनेके लिये तैयार हूँ, इसपर चन्द घंटों बाद खान आ मौजूद हुआ।

खान जडाऊ जीन लगे घोड़ेपर चढ़कर अपने महलके बगीचेतक आ जेनरल कॉफमानके तम्बूकी ओर जानेवाले रास्तेके छोरपर उतर पड़ा। फिर अपनी टोपी उतार पाममें पहुँचकर उसने कॉफमानके सामन घुटने टेक दिये। कॉफमान उस वक्त एक कुर्सीपर बैठा रहा। उसने अपने पराजित शत्रुके साथ वीरोचित बर्ताव नहीं किया। खान घुटना टेके कालीनपर बैठ गया। वह तीन वर्षका

तरुण था। उसका चेहरा असुन्दर नहीं था। चौड़े चेहरेपर मगोलायित आखें कुछ तिछीं थी, लेकिन नाक तोते-जैसी थी। बड़ मुखपर छोटी पतलीसी काली दाढ़ी-मूछ थी। कदमें वह छ फुटका लम्बा-तगड़ा जवान था। उसके सीवे-सादे-जीवनका बुखाराके अमीरसे मुकाबिला करनेपर आश्चर्य होता था। उसका सबसे बड़ा शौक था—सुन्दर तुर्कमान घोड़ोंसे अपने अस्तबलको भरे रखना, और कभी-कभी नई बीबी लाना। एक सौ रखेलियोंके अतिरिक्त इस्लामी शरीयतके अनुसार उसकी चार बीविया राज्यकी चारों जातियोंकी थी। खानके राज्यकी आमदनी उस समय नब्बे हजार रुबल (पैंतालीस लाख पाँड) थी। किजिलकुमके घुमन्तुओंको छोड़कर उसके राज्यमें पाच लाख आदमी बसते थे। उसे पढ़ने-लिखनेका भी शौक था, और उसके पुस्तकालयमें तीन सौ जिल्द हस्तलिखित ग्रंथोंके थे, जिनमेंसे अधिक इतिहासपर, सो भी फारसीसे तुर्कीमें अनुवादित थे।

जेनरल कॉफमानने खानकी सहायताके लिये एक शासन-परिषद् कायम कर दी, जिसमें तीन रूसी (लेफ्टिनेंट-कर्नल इवानोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल पोशारोफ, लेफ्टिनेंट-कर्नल खोरोशिन) और तीन खीवावाले सदस्य (दीवानबेगी मतनियाज, ईनक इत्तंसअली और मेहतर अब्दुल्ला बी) थे। मतनियाज इनमें सबसे योग्य था। इस परिषद्का अध्यक्ष नामके लिये खान था, नहीं तो असली अध्यक्ष कर्नल इवानोफ था। इस्लामी शरीयत और स्थानीय राज्यपालोंकी नियुक्तिका अधिकार खानको दिया गया था। रूस-विरोधी मतमुराद और रहमतुल्लाको बंदी बनाकर पहले कजाला, फिर रूस भेज दिया गया। अताजान रूसी सेनामें शामिल हो गया।

रूसियोंने खीवापर विजय प्राप्त करके वहाँके तीस हजार गुलामोंको मुक्त कर दिया। उन्हें पाच-छ सौके दलमें त्रास्नोवोदस्क भेजकर वहाँसे जहाजोपर ईरान भेज दिया जाता। पहले जो दो दल भेजे गये थे, उनमेंसे एकपर तुर्कमानोंने प्रहार करके कितनी हीको मारा और कितनोंको पकड़कर फिर गुलाम बना लिया। रूसियोंके खीवा छोड़नेपर मुक्त होकर वहाँ रहते सैकड़ों गुलाम मारुडाले गये।

अन्तमें खीवाने सविषत्रपर हस्ताक्षर किया, जिसमें खानने अपनेको जारका वफादार सेवक रहनेका वचन दिया और यह भी स्वीकार किया, कि मैं किसी भी दूसरी विदेशी-शक्तिसे व्यापार आदिकी सवि नहीं करूँगा, न रूसियोंकी स्वीकृति या जानकारीके बिना कोई सैनिक अभियान मगठित करूँगा।

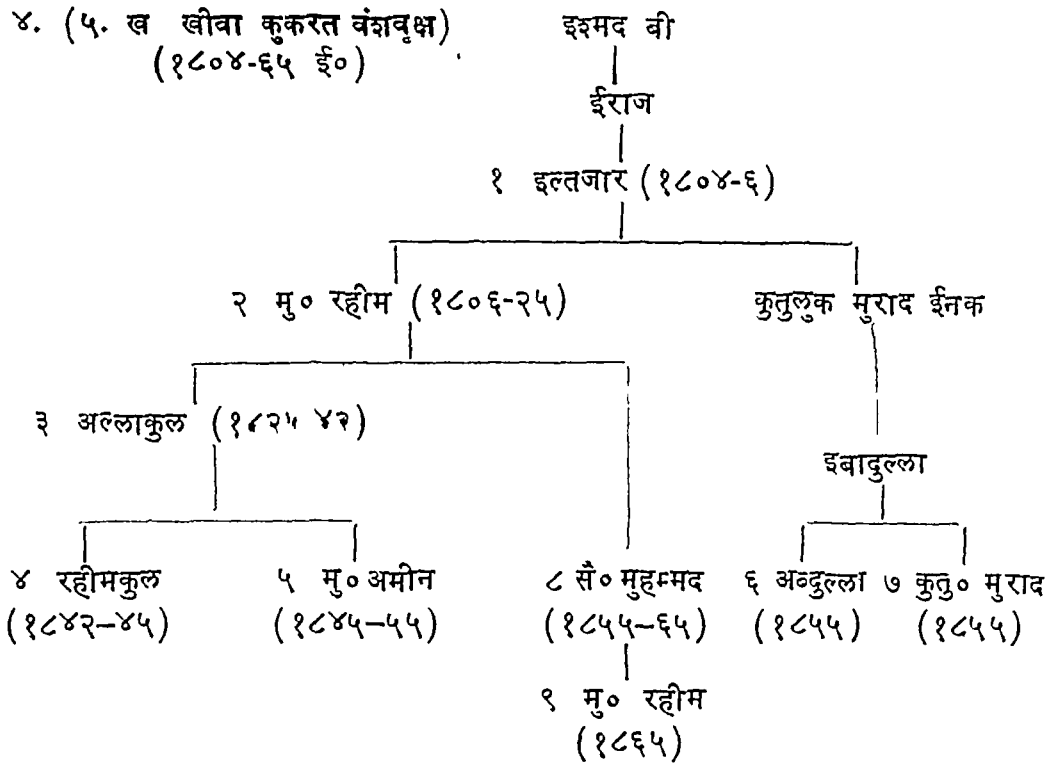
राज्यकी सीमा निर्धारित हुई थी—अराल समुद्रतक वक्षुकी सबसे पश्चिमी धारा। अरालके तटसे होने उर्गा अन्तरीप तथा उस्तुर्तके उत्तरी छोरतक—वक्षुकी पुरानी धारासे दाहिने तटकी सारी भूमि रूसको मिली, जिसके कुछ भागको इच्छा होनेपर रूस बुखाराको दे सकता था। वक्षुमें नौमचालनका अधिकार सिर्फ रूसको था, व्यापार और कारखाना बनानेकी भी उसे पूरी स्वतंत्रता थी। रूससे भागे हुये अपराधीको लौटा देना खीवाने स्वीकार किया। दासता-प्रथा बन्द कर दी गई। हरजानेमें वाईस लाख रुबल (दो लाख चौहत्तर हजार पाँड) देना तै हुआ, जिसमें पहले दस सालोतक लाख-आध रुबल, फिर १८८१ ई०तक क्रमश बढते हुये दो लाख सालाना अदा करना था।

खीवाके साथ जो संधि हुई थी, उसे पीतरबुर्गमें प्रकाशित होनेमे पहले ही जेनरल कॉफमानने “तुर्किस्तान गनेत” मे प्रकाशित कर दिया था। इससे मालूम होगा, कि रूसके दूर-दूरके महाराज्यपालोंको कितने विशेष अधिकार प्राप्त थे।

इस प्रकार १८७२ ई०में खीवाकी स्वतंत्रता समाप्त हुई। खीवाके राज्यमें सर्त, उज्वेक, कराकल्पक और तुर्कमान चार जातिया रहती थी, जिनमेंसे सर्त (फारसीभाषी) अधिकतर व्यापारजीवी थे, और सैनिक तौरसे उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं था। बाकी तीन जातिया लडाकू और बहुते कुछ घुमन्तू थी। वही उज्वेक यहा भी थे, जो कि बुखारा और खोन्दके राज्योंमें रहते थे। कराकल्पक निम्न-वक्षु-उपत्यकामें अराल समुद्रतक फैले हुये थे। बोल्शेविक-क्रांतिके बाद जब जातियोंके अनुसार राजनीतिक इकाइया बनने लगी, तो सभी उज्वेकोंकी भूमिको मिलाकर उज्वेकिस्तान गणराज्य बना दिया गया, जिसकी राजधानी ताशकन्द हुई। कराकल्पकोंकी सख्या

थोड़ी थी, लेकिन उन्हें भी उज्बेकिस्तान गणराज्यमें कराकल्पकियाके नामसे अपना स्वायत्त गणराज्य बनानेका मौका मिला। ईरानकी सीमातक तुर्कमान—यामूद, तेक्के आदि—कबीले रहते थे, जिन्होंने पीछे अपना तुर्कमानिस्तान गणराज्य स्थापित किया, लेकिन खीवाके सर होनेके बाद ही तुर्कमानोने रूसकी अधीनता स्वीकार नहीं की।

४. (५. ख खीवा कुकरत वंशवृक्ष)  
(१८०४-६५ ई०)



### स्रोत-ग्रंथ

- १ ओत्चेत ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्कस्ताने (व. व. व. वर्तोल्ले, "ज० रोस्० अकद० इस्त० मतेरि० कुल्लुरी" जिल्द २, पृष्ठ २०)
- २ History of Mongol (3 vols, H H Howorth, London 1876-88)
- ३ Heart of Asia (E D Ross, London 1899)
- ४ La rivalite anglo-russie an XIX siecle en Asie (A M F Roure, Paris 1908)

## तुर्कमान

### १ तुर्कमान-भूमि

१८७३ ई०में खीवाने जारकी अधीनता स्वीकार कर ली, इससे चार साल पहले १८६९ ई०में कास्पियनके पूर्वी तटपर क्रास्नोवोदस्कका प्रसिद्ध बन्दर स्थापित हुआ था। जारशाहीने क्रास्नोवोदस्कसे मगिशलक प्रायद्वीपतक बीच-बीचमें रूसियोंकी वस्तिया और किलेबंदिया कायम कर दी थी। खीवाके पतनके बाद मध्य-एसियामें रूसी साम्राज्यकी सीमा वक्षुकी धाराके साथ-साथ थी। लेकिन कास्पियन और वक्षुके बीचकी भूमिपर अभी भी रूसियोंका अधिकार नहीं हुआ था। वहां अधिकतर घूमन्तू-जीवन वितानेवाले तुर्कमान रहते थे। यह भूमि एक त्रिकोणकी शकलमें है, जिसके सिरेपर खीवा है, और दो भुजाओंमें एक कास्पियन तट और दूसरी वक्षुकी धारा। इस त्रिकोणका आधार बलखसे दक्षिण-पश्चिमसे लेकर कास्पियनके कोनेतक चला गया है। यह सारी भूमि दो लाख चालीस हजार वर्गमील होनेके कारण बहुत विशाल है, लेकिन इसके उत्तरी भागकी सबसे अधिक घरती कराकुमका रेगिस्तान है। यद्यपि इस भूमिको विलकुल बालूकी भूमि नहीं कह सकते, क्योंकि कहीं-कहींपर इसकी वज्र-जैसी भूमिपर घोंडोंकी टाप पड़नेपर जोरकी आवाज सुनाई देती है, हा दूसरी जगहोंपर केवल बालू-ही-बालू है, जिसका कराकुम या कालाबालू नाम रगकी समानताकी वजहसे पड़ा। बसतमे वर्षा होनेपर इस भूमिमें जगह-जगह हरियाली, लम्बी घास तथा तरह-तरहके फूल दिखाई पड़ते हैं। इस भूमिको इस अवस्थामें केवल पानीके अभावने पटुचाया है। यदि पानी होता, तो यहा की चरागाहोंमें असह्य भेड़ें और दूसरे जानवर पल सकते थे। यह रेगिस्तान किसी समय मध्य-एसियाके विशाल समुद्रके भीतर था। उस समय आसपासके पहाड़ोंसे निकलनेवाली नदिया इस महासागरमें गिरती थी, लेकिन अब वह हमारी पुरानी सरस्वतीकी तरह सूखे बालूमें विलीन हो जाती हैं। मुर्गाव और ताजन्दकी नदिया अफगानिस्तानके पहाड़ोंसे निकलकर उत्तरकी ओर बहते कराकुमके रेगिस्तानमें गायब हो जाती हैं। कितनी ही और भी छोटी-छोटी नदिया इसी तरह अपने अस्तित्वको खोती हैं। पुराने समयमें इस मरुभूमिके पश्चिमी भागको वक्षुकी धारा सिंचित करती थी, जब कि वह कास्पियनकी मिखाइलोव्स्की खाड़ीमें गिरती थी। हम जानते हैं, चिङ्गिस् के हमलेके समय १३वीं सदीमें वक्षुकी एक शाखा कास्पियनमें गिरने लगी। बसतके थोड़ेसे समयको छोड़कर यह सारी भूमि प्रायः वनस्पतिहीन हो जाती है, और केवल थोड़ेसे कटीले वृक्ष, ऊंटोंके खाने लायक कुछ छोटी-छोटी झाड़िया और फरास (झाऊ) के कितने ही वृक्ष जहां-तहां दिखलाई पड़ते हैं। जगली जानवरोंमें यहा क्याग (जगली गदहे), कई तरहके हरिन, जिनमें कुछ भेड़ोंके बराबर छोटे-छोटे मिलते हैं।

रेगिस्तानमें कारवाके रास्तोंपर जहां-तहां कुयें हैं, या यों कहिये कि कुओंके जलके सुभीतेके कारण उधरसे कारवा पथ जाता है। ऐसे ही पानीके स्थानोंपर कितने ही पक्षी उड़ते और चहचहाते मिलते हैं, नहीं तो चारों ओर असह्य नीरवता छाई रहती है। बालूके न उड़ते समय आकाश शुद्ध रहता है, और दूरका क्षितिज नजदीक दिखलाई पड़ता है। गर्मिमें मृगतृष्णाकी हिलती हुई लहरें पथिकको मृत्युकी ओर आह्वान करती हैं। कराकुममें दिसम्बर और जनवरीमें मस्त सर्दियाँ पड़ती हैं, जब कि तापमान हिमविन्दुसे ५०° से ०° नीचे चला जाता है। गर्मी भी वहां हद

दर्जकी होती है—लू आदमियोकी जान ले लेती है, और बालूके अवधमें पडनेपर सास लेना मुश्किल हो जाता है। इस मरुभूमिमें मनुष्यके लिये बहुत प्राचीन कालसे जीवनका रास्ता रूका हुआ है। यदि इससे कोई फायदा था, तो यही, कि ख्वारेज्म बहुत दिनोतक बाहरी शत्रुओंके आक्रमणसे बचा रहा। लेकिन जान पडता है, अब कराकुममें विराजती मृत्युकी नीरवता अधिक दिनोतक नहीं रह सकेगी। खीवाके पास वक्षुसे उज्बोई होते कास्पियनमें मिलनेवाली नहरके बनानेमें आधुनिकतम यंत्रोंका उपयोग किया जा रहा है, और कुछ ही वर्षोंमें वक्षुका बहुतसा पानी कराकुमके एक बहुत बड़े भागको सरसब्ज बनानेमें सफल होगा। लेकिन सोवियत रूस इतने हीसे सन्तुष्ट नहीं है, बल्कि जैसा कि पहले हम बतला चुके हैं, वह चार सौ फुट ऊंचे बाधको बना कर ओव और येनिसैइके अधिकांश पानीको ध्रुवीयमहासागरमें जानेसे रोककर कजाकस्तान और कास्पियन तटतक फैले एक समुद्रके रूपमें बदलना चाहता है। बलकाश, और अराल समुद्रको अपने गर्भमें लेते यह महासमुद्र कास्पियनतक जब फैल जायगा, तो मध्य-एसियाके विशाल रेगिस्तानोंका पता भी नहीं रहेगा। इस योजना से पहले ही सोवियत कालमें कराकुमके कुछ भागोंको अच्छी चरागाहोंमें बदल दिया गया। जाड़ेके महीनोंमें तापमानका हिमविन्दुसे दर्जनो डिग्री नीचे जाना इसमें सहायक हुआ। कराकुमके रेगिस्तानमें जहा-तहा उगनेवाले वनस्पति और घासों बतलाती हैं, कि घरतीके नीचे वहा पानी भी है। लेकिन पानी अधिकतर बहुत खारा है, जिसे पशु और प्राणी पी नहीं सकते। रूसी वैज्ञानिकोंने इस खारे पानीको मीठे पानीमें बदलनेके लिये जगह-जगह कूओपर सीमेंट किये हुये बड़े-बड़े तालाब बनाये, और जाड़ोंमें बर्फ जमा कर मीठे पानीको नमकसे अलग करके पशुओं और प्राणियोंके लिये जमीनदोज तालाब स्थापित किये, इस प्रकार वहा लाखों पशु पलने लगे।

लेकिन, तुर्कमानोंकी भूमिका कुछ दक्षिणी भाग ऐसा भी है, जहा रेगिस्तान नहीं है। कास्पियनके दक्षिण-पूर्वमें गुरगान और अतरक नदियों द्वारा सिंचित भूमि है, जो यद्यपि समुद्रके पास दलदली है, लेकिन ऊपरकी ओर बड़ी सुन्दर उपत्यकाये है। एक पश्चिमी यात्रीने इस भूमिमें चलते हुये लिखा था—“हमारा मार्ग हरे-भरे खेतों और सुन्दर स्वाभाविक चरागाहोंके भीतरसे था, जिनकी पहाडियोंमें बड़े कोमल रंगके बाज (ओक)के किसलय शोभा दे रहे थे। जहा-तहा हरा मूखमली फर्शसा बिछा मालूम होता था।” कराकुमकी नीरव और निर्जीव भूमिके अतिरिक्त ऐसी भूमि भी थी, जिसमें तुर्कमान घूमा करते थे। ईरान और तुर्कमानिस्तानकी सीमापर कोपेकदाग पर्वतमाला है, जिससे निकलनेवाली नदियोंने किजिल अरवतसे लेकर गियाउर-तककी एक सौ सत्तासी मील लम्बी और पंद्रहसे पच्चीस मील चौड़ी भूमिको बहुत ही उर्वर बना दिया है। इस प्रदेशको अब्कलकी हरितावल (ओसी) कहा जाता है। जहासे मुर्गाव पहाड़ोंको छोड़कर रेगिस्तान ओर बढ़ती है, वहीपर मेर्वकी प्रसिद्ध हरितावल है, जिसे दुनियाकी अत्यन्त उर्वर भूमियोंमें माना जाता है। ऐतिहासिक कालमें मेर्वके महत्त्वको हम देख चुके हैं। बुखाराके अमीर मुरादकी सेनाने १७८४ ई०में जब आक्रमण करके मेर्वके इलाकेको बरबाद कर दिया, तबसे इस उजड़ी भूमिके स्वामी तुर्कमान हो गये। मेर्व-हरितावल ईरानकी उत्तरी सीमासे बहुत थोड़ी ही दूरपर है, दोनोंके बीचमें एक छोटी-सी पर्वतशृंखला है, जिसको पार करनेमें कभी किसी आक्रमणकारीको रुकावट नहीं हुई। इस पहाड़की चढ़ाई इतनी धीरे-धीरे है, कि आदमीको ऊपर पहुँचनेमें वह नहीं-सी मालूम होती।

## २ तुर्कमान कबीले

पीछे हम बतला चुके हैं, कि तुर्कमानोंके मूल पुरुष गूज या आगूज बहुत पुराने समयमें अल्ताईकी तरफसे अराल और कास्पियन समुद्रकी ओर आये थे। सल्जूकियोंके नेतृत्वमें इनका प्रभाव बहुत बड़ा और ये उत्तरी ईरान तथा मेर्वसे कास्पियनतक फैल गये। १९वीं सदीके आरम्भमें भी इनमेंसे अधिकांश अभी घुमन्तू ही थे। करा और येली इन्हीं तुर्कमानोंके पूर्वज थे, जिन्होंने मुल्तान सजरको ११५३ ई०में अन्दखूय और मेमनामें हराकर बन्दी बनाया



था। पिछली शताब्दियोंमें इनके कुछ कबीले मगिशलक प्रायद्वीपमें घूमा करते थे। अपने घुमन्तू और लडाकू जीवनके कारण ये बाहरी प्रभावसे बहुत कम प्रभावित हुये। कभी इन्होंने ईरानी शाहोंकी अधीनता स्वीकार की, और कभी खीवाके खानोंकी। शाह अब्बास (१५८५-१६२६ ई०) ने इन्हें कोपेटदागकी उर्वर उपत्यकासे भगाकर वहाँ पंद्रह हजार लडाकू कुर्दोंको ला बसाया, जिसमें कि वह तुर्कमानोंको घुसने न दें। लेकिन तुर्कमान अपने स्वभावसे लाचार थे। नादिरशाह खूनसे स्वयं तुर्कमान था। २०वीं सदीके आरम्भतक चले आये ईरानके काजार राजवंशका सस्थापक आगा मुहम्मद (१७९६ ई०) स्वयं तुर्कमान था। उसने सम्यताके महत्त्वको समझकर तुर्कमानोंको भी उस रास्ते ले जाना चाहा, लेकिन उसमें सफल नहीं हुआ। उसके उत्तराधिकारी फतेहअली-ने १८१३ ई०में जब उन्हें दवाना चाहा, तो तुर्कमानोंने हसकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन नेपोलियनके आक्रमणसे हसको कहा होश था, कि इस अधीनता-स्वीकृतिसे लाभ उठाता। १८३१ ई०में अंग्रेज यात्री वार्नेस मध्य-एशियामें गया था। उसने अपनी पुस्तक "बुखाराकी यात्राएँ"में तुर्कमानोंका जिक्र किया है। वार्नेसके समय सबसे अधिक सख्या उनमें तेक्के कबीले की थी, यद्यपि अभी तुर्कमानोंमें उसको प्रधानता नहीं मिली थी। अपने इतिहासके आरम्भमें तेक्के लोग कास्पियनके पूर्वी तटपर मगिशलक प्रायद्वीपमें रहते थे। १७१८ ई०में जब कल्मक-मंगोलोंका इनपर बार-बार आक्रमण हुआ, तो तेक्कोने किजिल अरबतसे यामूदो और कोपेटदाग-की उर्वर उपत्यकावाली अक्कल हरितावलीसे कुर्दों और येलियोंको भगाकर वहाँ अपना अधिकार जमाया। तेक्केका अर्थ तुर्कमानी भाषामें है पहाड़ी बकरी, जो कि सिद्धहस्त पहाड़ी घुडसवार होनेके कारण इनके लिये उपयुक्त नाम था। खीवाके खानको यह मानते थे और प्रत्येक ग्राम (तम्बूजोंका झुंड) सालमें एक उट कर देता था। नादिरशाहने भी इन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करनेके लिये मजबूर किया था। जबतक इनकी सख्या बहुत बड़ी नहीं थी, तबतक ये किजिल अरबत और अक्कलमें रहते रहे। सख्या बढ़नेपर १८३० ई०में इनके दस हजार परिवार पूर्वकी ओर जा ताजन्द-उपत्यकामें बस गये, और वहाँपर अपने सरदारके नामसे उन्होंने अराज खानकला बनाया। वार्नेसके समय (१८३१ ई०में) तेक्कोंके चालीस हजार परिवार (तम्बू) थे। इस समय ऊपरी मध्य-वक्षुपर सारिकोंके बीस हजार तम्बू थे, जो कि भेर्वपर हाल हीमें अधिकार करनेवाले खीवियोंसे लड़ रहे थे। सख्यामें उन्हींके बराबर यामूद कबीला खीवा और अस्त्रावादके बीच चरवाही जीवन बिताता था। गोखलान तुर्कमानोंकी एक शाखा थी, जो कि अतरक और गुरगानके बीच ईरानी प्रजा होकर रहती थी। सलोर कबीला भी लड़नेमें बहुत बहादुर था, किन्तु उसकी सख्या अपेक्षाकृत अधिक नहीं थी। सलोर सरहसके नजदीक ऊपरी ताजन्द-उपत्यकामें रहते थे। इनकी बार-बारके लूट-मारमें तंग आकर ईरानी शाह फतेहअलीके पुत्र अब्बास मिर्जाने भारी सेनाके साथ १८३२ ई०में इनपर आक्रमण किया। बहुत खून-खराबीके बाद सरहसपर ईरानियोंने अधिकार कर लिया, और नारे जानेसे बचे हुये मलोर भागकर भेर्वके दक्षिण योलतानकी हरितावली में बस गये।

ताजन्दके ऊपरी भागमें बसे हुये तेक्के उत्तरी-ईरानमें बराबर लूट-मार किया करते थे ईरान बराबर प्रतिरोध करता था, लेकिन कान्पियनसे हिरातके पामतक फैली अपनी सारी उत्तरी सीमाको तुर्कमानोंसे सुरक्षित रखना सम्भव नहीं हुआ। १८४८ ई०में खुरासानके ईरानी राज्यपाल आस-फुद्दौलाने तेक्कोंके ऊपर आक्रमण करके उन्हें बरवाद कर दिया, किन्तु घुमन्तुओंका इतनी जल्दी सर्वनाश नहीं किया जा सकता। बचे-खुचे तेक्कोंने अपने भाई-बन्धोंके पास अक्कलकी हरितावली-में शरण लेनी चाही, लेकिन वहाँ पहले हीसे जनसख्या अधिक थी, इसलिए जगह न मिली और फिर वह आसफुद्दौलाकी शरणमें गये, जिनने उन्हें सरहसके उजड़े हुये इलाकेमें रहनेकी इजाजत दी। यह दृश्याकार तेरह सत्रह सत्रहोंके हाथमें निकलकर बीरान हो गया था। अब तेक्के खीवाके इलाकेमें लूट-मार करने लगे, इसलिए खीवाके खान मुहम्मद अमीनने सरहसको जीत वहाँ राज्यपाल नियुक्त कर छावनी बैठा दी। लेकिन खानके हटते ही तेक्कोंने उन्हें तलवारके घाट उतार दिया। खानने फिर लौटकर चढ़ाई की, लेकिन एक ठेकरीपर तुर्कमानोंने घेरकर उसका काम तमाम करके

उसके मुडको काटकर ईरानी शाहके पास भेज दिया, केवल धड ले जाकर खीवामें दफनाया गया। तेक्कोने अब ईरानके भीतर भी लूट-मार शुरू की। जिस खुरासान-राज्यपालने इन्हें इस भूमिमें बसाया था, उसीने सरखशको जलाकर तेक्कोको उत्तरमें मेर्वकी ओर भगा दिया। १७८४ ई०के पहलेसे मेर्वमें सारिक कबीला रहता आया था। अब सारिको और तेक्कोका खूनी सघर्ष चला। सारिकोने अपने पक्षको कमजोर देखकर खुरासानके ईरानी राज्यपालको बुलाया, जो अठारह बटालियन पैदल और सात हजार सवार सेनाके साथ आया। तेक्कोने अन्तमें ईरानकी अधीनता स्वीकार करके राज्यपालको बहुत मूल्यवान् भेंटें दीं। फिर वह अपने शत्रु सारिकोके ऊपर टूट पड़े, और उन्हें मेर्वकी हरितावलीसे निकालकर ऊपरी मुर्गब-उपत्यकामें योलेतान और पजदेहकी ओर खदेड़ दिया, जहासे जाकर उन्होंने ईरानके हुकमसे हरीरुद नदीके बायें तटपर जरावादसे सलोरोको वेदखल किया।

कई शताब्दियों बाद मुर्गबकी उर्वर उपत्यकाके स्वामी अब सारिक थे। उनकी शक्ति इतनी अधिक थी, कि इन्होंने खीवाकी सेनाको हरा दिया। तेक्कोने खेतीके फायदेको भी समझकर उसके प्रचारकी कोशिश की, लेकिन सिंचाई यहांकी सबसे बड़ी समस्या थी। इसके लिये पुराने समयमें बड़े-बड़े बाध बना जल-निधिया स्थापित की गई थी, जो कि लडाइयोंमें बनती-विगडती रही। मेर्वके स्वामी बनकर तेक्कोने मेर्व नगरसे पचीस मील ऊपर एक ऊबड़-खाबड़-सा बाध बना पचीस मील लम्बी नहर खोदी, जिसके सहारे अडतालीस हजार परिवार खेती करने लगे। बाध और नहरकी मरम्मतके लिये हर पचीस परिवार एक आदमी देता। १८८० ई०में अग्रेज यात्री ओडोनोवेन इधरसे गुजरा था। उसने इस बाधके बारेमें लिखा था—“नदी-तटके दोनों तरफ बीस गजतक बड़े-बड़े नरकटोकी घनी पक्ति है। पानीकी धाराके लिये मुश्किलसे दस फुट चौड़ी जगह छोड़ी गई है। इस सकारे मार्गसे पानी जोरसे आवाज करता बहता है। पचास गजतक यह पानीका रास्ता चला जाता है। इस दूरीमें भी नरकटोके बाधको और समेटकर पानीको रोकनेकी कोशिश की गई है।”\* लेकिन कृषि-जीवनके लिये जैसी शातिकी अवश्यकता थी, अभी वह तेक्कोमें नहीं आ पाई थी। दक्षिणमें सारा खुरासान उनके शिकारकी जगह बना हुआ था, फिर वह क्यों लूट-मारसे हाथ खींचते? वह मशहदसे साढ़े चार सौ मील दक्षिणतक वावा मारते। उनसे प्रतिरोध करनेके लिये १८६० ई०में ईरानने नवीन सरखशमें एक किला बनाया, फिर अगले साल ईरानी मुख्य-सेनापतिने बारह हजार पैदल, दस हजार घुडसवार सेना तथा तेतीस तोपोंके साथ चढ़ाई की। तेक्कोने मुलह करनी चाही, लेकिन इन लडाकुओंकी मुलहकी बातपर कौन विश्वास करता? तेक्को भी जानपर खेलकर लड़े, और सारी ईरानी पैदल-सेना मारी या उनके हाथमें वदी बनी, केवल सवार अपने कायर सेनापतिके साथ भागनेमें सफल हुये। इस लडाईमें इतने अधिक ईरानी गुलाम तेक्कोके हाथ आये, कि मव्य-एसियाके बाजारोंमें गुलामोंकी कीमत एक गिन्नी कम हो गई। तेक्कोको अपने अधीन बनानेका ईरानका यह अन्तिम प्रयास था। अपनी इस सफलताके बाद तेक्को अक्कल और मेर्वमें जम गये, जहासे वह बराबर ईरानमें लूट-मार किया करते। मेर्व हरितावलके पूर्वी भागमें तेक्कोकी तोकतामिश-शाखा रहती और पश्चिममें ओतामिश पूर्वी छोरपर बेक रहते। इन शाखाओंके अतिरिक्त उनके कुछ और भी छोटे-छोटे विभाग थे।

### ३ तेक्कोका शासन

तेक्को घुमन्नु कबीलेशाही अवस्थामें थे, इसलिये उनका शासन जन-सत्ताको छोड़ और हो ही क्या सकता था? अग्रेज यात्री वोल्फने × इनके बारेमें लिखा है—“इन लुटेरे कबीलोंमें रहनेके बाद मैं इस निश्चयपर पहुंचा हूँ, कि भौडकी इतनी दूरी स्वेच्छा-चारिता कही नहीं हो सकती। इसमें बढकर दूरी बान क्या हो सकती है, कि अपने पागलानके ही कारण यह अशिक्षित और असभ्य भौड अपनी शान दिखलाती है।” लेकिन वोल्फने यह

\* मेर्वकी कहानी। × बुखारा

एकतरफा फैसला था। राजकाजकी बातोंपर निर्णय करनेके लिये सारी जनताकी सभामें वह बहस करते। इन्हीं सभाओंमें वह अपना खान चुनते, जो कि शासनका उच्च पदाधिकारी होता। लेकिन जबतक जनता उसे स्वीकार करती, तभीतक वह खान रहता। इस पदके लिये कोई आकर्षण नहीं था, क्योंकि खानको शिष्टाचार और सम्मान पानेके अतिरिक्त कोई लाभ या अधिकार नहीं था। उसके पास चालीस जिंगित (बहादुर) रहते, जो सरकारी आज्ञाको पालन करवाते, लेकिन खजाना खानके हाथमें नहीं था। कोई विशेष काम आनेपर कबीला इस्तियार नामक एक विशेष प्रतिनिधि चुनता। सम्मतिदाता कबीलेके सारे लोग होते। १८८१ ई०में ओडोनोवेनके मेर्वमे जानेपर उसे वहा एक 'इस्तियार' मिला था, जिसे तेहरानमें शाहके पास सुलहकी बातचीतके लिये भेजा गया था। ओडोनोवेनके अनुसार पिछले कुछ समयसे तेक्के अब एक साधारण राज्यपद्धतिकी ओर बढ़ रहे थे, जिसमें जनतन्त्रताका स्थान खानदानी राजतन्त्र लेने जा रहा था। यह परिवर्तन नूरवर्दी खानके समयसे होने लगा, जो कि खीवा, ईरान और सारिकोके युद्धोंकी विजयोंमें नेता रहा—सफल नेता राजा बन जाता है। उसने अपने पुत्र मखदूम कुलीको अवकलके तेक्कोका मुखिया बनाया, और वह स्वयं मेर्वका खान रहा। उसे इतना आगे बढ़नेमें रूसकी ओरसे पैदा हुये खतरेने भी सहायता की। अगर इतना भय न होता, तो शायद घुमन्तू इतनी एकतन्त्रताके लिये भी तैयार न होते। तेक्के खीवामें रूसकी प्रभुता स्थापित होते देख चुके थे, उन्हें अपने भविष्यके लिये डर मालूम होने लगा था।

सभी तुर्कमानोंकी तरह तेक्के सुन्नी मुसलमान थे, लेकिन वह धर्ममें कट्टर नहीं थे, और न मुल्लोंकी पर्वाह करते थे। वोलफके समय (१८४३ ई०में) खलीफा अब्दुर्रहमान नामक मुल्लाकी बड़ी इज्जत थी। अपनी बहादुरी और बुद्धिके लिये प्रसिद्ध आदमियोंके हाथमें सैनिक जिम्मेवारी दी जाती थी। वह ऐसे आदमीको अपना सरदार (सेनापति) बनाते, जिसे कि आक्रमण की जानेवाली धरतीका सूक्ष्म ज्ञान होता। इस लूटमें उन्हें जहां माल हाथ आता, वहां बहुतसे नर-नारी भी मिलते। यदि मुक्ति-धन चुकानेके लिये कोई तैयार होता, तो तुर्कमान अपने बंदियोंको छोड़ देते, नहीं तो खीवा या बुखाराके बाजारोंमें उन्हें गुलाम बनाकर बेच देते। तुर्कमान बहादुर होनेके लिये तीन बातोंकी आवश्यकता थी—अच्छा घोड़ा, हथियार और मृत्युसे निर्भयता। कहावत मशहूर थी—“जिसने अपनी तलवारकी मुट्ठीपर हाथ रख दिया, उसे और किसी तर्ककी आवश्यकता नहीं।” और “घोड़ेकी पीठपर सवार तेक्का न वापको समझता, न माको।” युद्धका निश्चय हो जानेपर स्वाभाविक नेता अपने किवित्का (तम्बू)के सामने झंडा गाड़ता, और अल्ला और रसूलके नामपर भले मुसलमानोंकी शीया काफिरोंके ऊपर हमला करनेके लिये बुलाता। थोड़े ही समयमें उनके तम्बूके चारों ओर सैकड़ों योद्धा जमा हो जाते, जो अपने सरदारके हुक्मपर आगमें कूदनेके लिये तैयार रहते। निश्चित दिनपर अनुचर सुशिक्षित घोड़ेपर सवार हो रसद लिये सरदारके पास पहुंचते। यदि अभियान सुरासानकी ओर करना होता, तो कोपेतदाग पर्वत श्रेणीके तीन डांडोंमें से किसी एकसे पार होने। पहाड़ पार करके दूसरी ओरके पर्वतसानुपर चन्द सवारोंकी रक्षामें रसदको छोड़, गाजी (धर्मयोद्धा) सारे दिन आगेकी तैयारीमें लगे रहते। दूर उपत्यकामें ईरानके शात गाव बसे हुये हैं शाम नजदीक आ रही है। दरख्तोंके बीच सफेद घरोंसे चूल्हेका धुआ निकलकर आकाशमें मडग रहा है। बूढ़े गप कर रहे हैं, तरुणिया चरागाहोंसे अपने पशुओंको ला रही हैं। यह समय है, तेक्कोके शिकारका। चन्द मिनटोंमें ही गावकी गलियोंमें तुर्कमान छा जाते। वे अपने धनुष-बाणों और तलवारोंको आख मूंदकर दाहिने-बायें चलाते, कितनोंको मारते और सारे गावको भयभीत कर देते। फिर बच्चे-बच्चे लोगो, उनके ढोरो और कीमती चीजोंको इकट्ठा करके जितनी जल्दी आये थे, उतनी ही जल्दी अन्तर्धान हो जाते। यदि पीछा किये जानेका डर होता, तो बिना लगामको रोकें सौ-सवा-न्नी मीलतक भागते चला जाना उनके लिये साधारणसी बात थी। लडके और बच्चे ज्यादा कीमती समझे जाते, जिन्हें सवार चारजामोंसे बांधकर दूसरे घोड़ेपर लाद लेते। ये घोड़े तुर्कमान नवारके घोड़ोंसे बड़े होते, इसलिये पीछे-पीछे भागते जाते। दौड़ सकनेवाले आदमियोंको कभी-कभी जजीरोंमें बांधकर घोड़ोंके साथ नगाया जाता। यदि वह थककर

न चल पाते, तो तुर्कमानकी तलवार उनके दु खोका अन्त करनेके लिये तैयार थी । कारवापर जब आक्रमण करना होता, तो वह किसी रेगिस्तानी कुयेके आसपास छिपे रहते, और जब कारवा विश्राम करने लगता, तो चारो ओरसे उसके ऊपर टूट पड़ते । यदि तुर्कमान अपनी सख्या पर्याप्त नहीं देखते, तो यात्रामे पीछे रह गये ऊटोपर हमला करते । तुर्कमानोकी सफलताकी कुजी थी, उनके तेज और मजबूत घोड़े, तथा यकायक फुर्तीसे आक्रमण ।

कितनी ही बार अपने दासो और दासियोको बेचनेके लिये तेक्के स्वयं खीवा और बुखारा जाते । लेकिन इसकी उन्हे इतनी जरूरत नहीं थी, क्योंकि गुलामोके सौदागर उनकी वस्तियोमें आकर गुलामोको थोक दरपर खरीद ले जाते । रूसियोने जबतक मध्य-एसियामे अपना प्रभुत्व नहीं जमाया, तबतक वहा गुलामोकी यह लूट और बेच ऐन इस्लामी शरीयतके अनुसार मानी जाती थी । पीतर I को इतालियन यात्री फ्लोरियो वेनेवेनीने सूचित किया था, कि बुखारामे तीन हजार रूसी गुलाम है, और उतने ही खीवामे भी । अग्रेज-यात्री वोल्फके अनुसार बुखारामे दो लाख ईरानी गुलाम थे, और उसी समय गये मेजर एवटके अनुसार खीवामे सात लाख थे, जिनमे वच्चो और तरुण लडकियोका मूल्य स्थानोसे दुगुना था ।

तेक्के अपने घोडेका महत्त्व सरदारसे भी बढकर मानते थे । उनके घोड़े बहुत समयसे अच्छी जातिके माने जाते थे । कहा जाता है, तेमूर लगने पांच हजार अरब घोडोको लाकर तेक्के घोडोकी नसलको बढिया बनाया था । शाह नासिरुद्दीनने पिछली शताब्दीमे पांच सौ अरब घोडे तेक्कोके पास भेजे । लेकिन जान पड़ता है, तुर्कमान घोडोके लिए अरबी प्रभावकी अवश्यकता नहीं थी, और न वह अपने रूप और ढाचेमें अरब घोडो-जैसे होते हैं । वह कदमें बड़े, लंबे पैर, सकरी छाती, और लम्बे सिरवाले होते हैं । प्रशिक्षित तथा खास चारेपर रखे तुर्कमान घोडे एक दिनमें साठ मीलका रास्ता तै करते, इस तरहकी यात्रा वह बहुत दिनोतक जारी रख सकते थे । तेक्कोके सवारोको भी इतना अभ्यास था, कि वह चौबीस घंटा घोडेकी पीठपर बिता सकते थे । तेक्कोके घोडोका चारजामा वही था, जो कि चीनी दीवारके उत्तरके मंगोल घुमन्तुओमे पाया जाता है । तुर्कमान अपने घोडोसे इतना प्यार करते, कि वह अपने पीनेके पानी, या जीकी आखिरी रोटीको भी घोडेको दिये बिना नहीं खाते । उनके हाथोमे चाबुक केवल शोभाके लिए रहता, नहीं तो घोडोके लिये लगामका इशारा काफी था । सोवियत शासनने तुर्कमान घोडोको इस बढिया नसलको सुरक्षित रखते हुये उसको बहुत बढाया, और अश्काबादसे मास्कोतककी दौड करके देख लिया, कि उनकी प्रसिद्धि झूठ नहीं है । तेक्कोके ईरानमें जा लोगोको लूटकर गुलाम बनानेका बडा ही सजीव चित्रण मध्य-एसियाके महान् उपन्यासकार सदरुद्दीन एलीने अपने ग्रंथ 'गुलामानमे' किया है ।\*

१९वीं सदीके उत्तरार्धमें तुर्कमानोमें वस्तीवासी भी काफी हो गये । वस्तीवासियोको 'चरवा' और घुमन्तुओको 'चोमरी' कहा जाता था । चोमरी तीन दिनसे अधिक शायद ही कभी एक जगह रहते । उनका धन केवल पशु थे । चोमरी-तुर्कमान सालके कुछ भागमे 'कला' (दुर्ग)मे एक स्थान पर रहते, लेकिन इस किलेका साधारण किलेसे कोई सवध नहीं । एक खुली जगहमें तुर्कमानोके तम्बू खड़े होते, जिसके चारो तरफ कच्ची मिट्टीकी दीवार होती, जिसमे खतरेके देखनेके लिए सतरीके वास्ते मीनार बने होते । 'चरवा'के अपने औल (ग्राम) होते, जिनकी चारो ओर गाव-वालोके खेत और वाग रहते । वहा जी, ज्वार और चावलकी खेती ही ज्यादा थी । फलोंमे अगूर, सेब और मवसे अधिक तरबूज होते । तुर्कमानोके 'कला'मे सिर्फ एक दरवाजा होता । पश्चिमके किजिल अरबतसे पूर्वमे अश्काबादतकके औलोमे प्रसिद्ध 'कला' ग्योक-तेप्पेकी उपत्यकाके सबसे चौड़े भागमे अश्काबाद था, जिसमे आठ औल सम्मिलित थे ।

#### ४ पोशाक और रूपरेखा

तुर्कमान शरीरमें मझोले कदके होते । उनका रंग गेहुआ तथा गालकी हड्डी मंगोलायितोकी तरह उभड़ी हुई होती । आंखे भी उमी तरह बादामी, नाक चौड़ी—जो मिरे-

\*"जो दास थे" (राहुल)

पर उठी, होठ मोटा, मूछ-दाढी नाममात्र, कान बहुत बड़े—इस प्रकार पता लगेगा कि तुर्कमानोंने शताब्दियोंसे मध्य-एसियामें रहके भी अपने मगोलायित-खूनको बहुत कुछ शुद्ध रक्खा । ईरानकी लूटी हुई गुलाम स्त्रियोंको अपने पास रखनेकी जगह वह वेंच देना ही ज्यादा पसंद करते थे । लेकिन तो भी पिछली शताब्दियोंके यात्रियोंका कहना था, कि तुर्कमान स्त्रियोंकी रूपरेखा मगोलायित कम होती है । उनके बाल छोटे, मोटे और रूखे होते हैं । तरणाईमें वह लम्बी और सुगठित दीख पड़ती है । मोजेरने लिखा था—“मध्य-एसियामें तेक्के ही ऐसी स्त्री है, जो कि जानती है कि कैसे चलना चाहिये । जब कोई तेक्के-लडकी पानी भरनेके लिये अपने कवेपर पानीका कूजा लिये कुयेंपर जा रही हो, तो उससे सुन्दर दृश्य देखनेको नहीं मिलेगा ।” तरणाईमें इनके गाल गुलाबी होते हैं, लेकिन मध्यवयके शुरू होते ही मुहपर झुरिया पड़ जाती है ।

तुर्कमान पुस्पोके सिरपर एक बहुत ऊंची और देखनेमें भारी काली भेड़के खालकी टोपी (कल्पक) होती है । टोपीके नीचे आवा सिर ढका होता है । देखनेसे तो मालूम होता है, कि कल्पक पांच सेरसे कमकी न होगी, लेकिन वह बहुत हलकी होती है । लाल रंगका पायजामा और ऊपरसे एड़ी-तक लटका हुआ काले रंगका जव्वा (चोगा) तुर्कमानोंकी पोशाक है । गर्मियोंमें वह सूती कपड़ेका व्यवहार करते और जाडोमें ऊटके ऊनके बने हुये कपड़ोंका । पैर जूते और मोजेमें ढका रहता । औरतोंकी पोशाक लम्बे-चौड़े घाघरेकी होती, जिसका रंग लाल या नीला और कपड़ा कभी-कभी रेशमका भी होता । उनकी छातीपर चादीके सिक्को या दूसरी चीजोंका हमेल पड़ा रहता । व्याहता स्त्रियां जूड़ा बाधती, कुमारियोंके बाल कवेपर लटकते रहते । मुह ढाकनेके लिये वरजक वह बहुत कम इस्तेमाल करती । तुर्कमानिया अपरिचित आदमीसे भी बातचीत करती । उनके हाथका बनाया कालीन बहुत प्रसिद्ध था । बहु-विवाह यद्यपि विहितथा, लेकिन व्यवहारमें बहुत थोड़े ही आदमी अनेक बीविया रखते । तुर्कमान वैसे लुटेरे थे, लेकिन अपने पूर्वजोंके वक्तसे चले जाने अतिथि-सेवाधर्मको वह बहुत मानते थे । कोई भी परदेशी तेक्केके घुयें भरे किवित्कामे पहुंचने-पर तन्दूरी रोटी, मट्ठा, चाय, हुक्का, पनीर, मट्ठेमें पके चावलमें भागीदार बन जाता । स्वागतके बाद फिर वह शतरज और वासुरीसे मनोरंजन कर सकता । तेक्के डाकू थे, लेकिन चोर नहीं । वह गाली देना नहीं जानते थे, उनके यहां सबसे बड़ी गाली थी ‘कायर’ कहना ।

## ५ रुससे युद्ध

खीवाको रुस दबा चुका था, लेकिन तुर्कमान घुमन्तू अपनी शानमें मस्त थे । १८७३ ई०में जब रुसी सेनायें खीवामें आईं, तो यामूद-तुर्कमानोंने रुसियोंका जवर्दस्त मुकाबिला किया था, इसे हम देख आये हैं । काँफमानने यामूदोंको पाठ पढ़ाना चाहा, और इसके लिये सारी दक्षिणी मरुभूमिमें सर्वनाशका युद्ध छेड़ दिया, क्रूरतामें जारशाही घुमन्तुओंको भी मान करने लगी । ईरानी राज्यपालने १८६९ ई०में अतरक नदीकी उपत्यकामें रहनेवाले गोखलान-तुर्कमानोंको दवाना चाहा । कास्पियन समुद्रमें नावों और जहाजोंको लूटनेवाले गोखलानोंको रुसी नौसेनाने दबा दिया । खीवा-विजयके बाद १८७६ ई०में कास्पियनका पूर्वी तट काकेशसके महाराज्यपालके अधीन रहा, जिसकी सेना यहां रक्षाका काम करती थी । तेक्कोने अपनी उत्तर-पूर्वी सीमातमें इस प्रकार रुसियोंकी जवर्दस्त दीवार देखी । यही हालत पूर्व दिशामें भी थी । खीवा और बुखाराने मर्पि करके रुसकी वानको मान अपने यहां दासताको निषिद्ध कर दिया था, इसलिये तेक्कोंके लिये गुलामोंके बेचनेके लिये अब मध्य-एसियाके बाजार बन्द हो गये थे । उन्होंने रुसियोंसे भी छेड़न्वानी जारी रखी । १८७५ ई०में एक रुसी-कारवा कास्नोवोद्स्कसे खीवाकी ओर जा रहा था, जिसे उन्होंने बीचमें लूट लिया । इसी तरह १८७७ ई०में अतरकके उत्तरमें भी एक कारवाको लूटा । रुसी इसका बड़ी कठोरतासे जवाब देने लगे । तेक्कोको मालूम होने लगा, कि अब हमारी भी वही हालत होनेवाली है, जो कि खीवाकी चार साल पहले हुई । १८७७ ई०में उन्होंने ईरानकी अधीनता स्वीकार करनी चाही, लेकिन अब रुस उसकी इजाजत नहीं दे सकता था । तुर्कमानोंकी लूटमारके कारण इधर तुर्कमान-मरुभूमिसे खीवा-बुखाराका

व्यापार बन्द हो गया, और सुरक्षित समझकर ओरेनबुर्गके बहुत फेरवाले रास्तेसे कारवा जाने लगे। पीतरके समयसे ही रूसियोंके दिमागमें समाया था, कि वक्षुको कास्पियनमें मिलाकर वोल्गा-उपत्यकासे जलमार्ग द्वारा व्यापार करे, लेकिन यह काम जारशाही नहीं कर सकी।

खीवाके विजयके बादके तीन-चार वर्षोंमें तेक्कोने अपनी लूट-मारसे रूसियोंको वहानेका रास्ता दे दिया, और १८७७ ई०में जेनरल लोमाकिनको हुक्म हुआ, कि तेक्कोके किले किजिल अरबतपर अधिकार कर लो। किजिलअरबत कास्पियन तटपर अवस्थित क्रास्नोवोद्स्क बन्दरगाहसे दो सौ मील पूर्व था। जेनरल लोमाकिन १२ अप्रैलको नौ कपनी पैदल, दो स्क्वाड्रेन कमाक और आठ तोपे लेकर रवाना हुआ। भला आधुनिक हथियारोंके सामने तेक्के कैसे डटते? वह पहली ही मुठभेड़में भाग गये। इसके बाद अक्कर-उपत्यकाके प्रत्येक औल (गाव)के प्रतिनिधि रूसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये आये, लेकिन लोमाकिन इससे पहले ही डरकर पीछे हट गया था। इसी बीच तुर्कीसे सका युद्ध (१८७७—७८ ई०) छिड़ गया, जिसके कारण तुर्कमानोंके साथ युद्धको स्थगित करना पड़ा। १८७८ ई०में तुर्कीके युद्धके खतम होते ही फिर जारशाहीने तेक्कोकी ओर ध्यान दिया। १८७८ ई०में एक रूसी सेना अतरक नदीके मुहानेके पास अवस्थित चिकिस्त्यरसे चली। वेन्डेसेन डांडेसे कोपेतदाग पर्वतश्रेणीको पारकर ९ सितम्बरको उसने दगिल-तेप्पेपर आक्रमण किया। वहां पंद्रह हजार तेक्के योद्धा अपने पांच हजार स्त्री-बच्चोंके साथ मिट्टीकी दीवारसे घिरे स्थानमें लड़नेके लिये तैयार थे। तोपके सामने यह मिट्टीकी दीवारें क्या बचाव करती? वह प्राण बचाकर भाग निकले। रूसी सवार उन्हें पीछे पड़कर घेरने लगे। चारों ओरसे उन्हें मौत-ही-मौत दिखलाई पड़ रही थी। अपने स्त्री-बच्चोंको दुश्मनके हाथमें पड़ते देख “मरता क्या न करता” पर उतर आये, और उन्होंने शैतानकी तरह लड़ाई लड़ी। लोमाकिनका मनोरथ भग हुआ, साढ़े चार सौ रूसी हताहत हुये, और बाकी सेनाको लेकर उसे चिकिस्त्यर लौट जाना पड़ा। इस विजयकी खबरसे सारे मध्य-एसियामें आशाकी किरण दौड़ पड़ी। अब और भी लूट-मार होने लगी। १८८० ई०में तीन हजार तुर्कमानोंने वक्षु-तटपर बुखाराकी भूमिमें अवस्थित चारजूय-किलेके पासतकके कितने ही गावोंको लूटा। मध्य-एसियासे जारका रोब उठते देखकर जेनरल स्कोवेलेफने पीतरबुर्ग लिखा था—“यदि हम अपनी पिछले पांच सालकी स्थितिपर विचार करते हैं, तो सामने भयकर खतरा दिखलाई दिये बिना नहीं रहता, क्योंकि वह साम्राज्यकी आर्थिक और राजनीतिक स्थितिको अस्त-व्यस्त कर सकता है। अंग्रेजोंने एसिया-इयोको विश्वास दिलाना चाहा है, कि उन्होंने कान्स्तान्तिनोपलके सामने रूसियोंको रोक दिया, और उन्हें बल्कान प्रायद्वीप छोड़नेके लिये मजबूर किया। बर्लिनकी संधि जो हमारे अनुकूल नहीं हुई, उसकी भी खबर उन्होंने सारे एसियामें फैलाई है।”

जनवरी १८८० ई०में जार अलेक्सान्द्र II ने पीतरबुर्गमें युद्ध-परिपदकी। सबसे कठिन समस्या थी यातायातकी। और देरतक रुका नहीं जा सकता था, इसलिए उसी साल तेक्को (तुर्कमानो)के विरुद्ध अभियान भेजा गया। बारह हजार ऊट रसद ढोनेके लिये रक्खे गये, जिनमें हजारों रास्तेमें मर गये। रेगिस्तानमें रसद पहुंचाना बहुत मुश्किल था, इसीलिये ग्योक-तेप्पेका मुहासिरा हटाना पड़ा था, लेकिन अब रेलोंके प्रचारसे यातायातकी समस्या उतनी मुश्किल नहीं थी, यद्यपि उसपर खर्च बहुत पड़ता था। रूसियोंने रेलवे लाइन बनानेके लिये एक खास बटालियन संगठित की, और १८८० ई०के अन्ततक कास्पियनके पूर्व उजुनअदासे मुल्लाकारीतक तेरह मीलकी रेलकी सड़क बना दी। काकेशसके सेनानायकके अधीन जेनरल स्कोवेलेफ अभियानका मुख्य-संचालक था। दगिल-तेप्पेके तजव्वेसे मालूम हो चुका था, कि तुर्कमानोंके नमदेके तम्बुओपर आग जल्दी असर नहीं करती। इसके लिये स्कोवेलेफने पेट्रोल भरे गोले तैयार किये। क्रास्नोवोद्स्कमें यद्यपि पासमें समुद्र लहरें मार रहा था, लेकिन उसके खारे समुद्रपर पशु-प्राणी गुजारा नहीं कर सकते थे। इसके लिये वहापर एक बहुत बड़ा कारखाना बनाया गया, जिसका काम था पानीको भाप बना फिर जलके रूपमें परिणत करके प्रतिदिन साढ़े सात लाख गैलनके मीठा पानी देना। स्कोवेलेफ

मई १८८० ई०में ही कास्नोवोदस्क पहुंचकर तैयारी करने लगा। काकेशससे बारह हजार सेना और सौ तोपे आयी। सितम्बर १८८० ई०के आरम्भतक तैयारी प्रायः पूरी हो गई।

रूसियोंने १८ दिसम्बरको वामिर, एगमनवातिर (समुर्स्क) पर अधिकार किया। पता लगा, कि शत्रुका मुख्य जमाव दगिल-तेप्पेमें है। दगिल-तेप्पा प्रायः एक वर्गमीलमें फैली आधताकार भूमि थी, जिसके चारो ओर अठारह फुट मोटी और दस फुट ऊंची दीवार थी, जो बाहरसे दस फुट होते हुये भी भीतरसे पंद्रह फुट ऊंची थी। दीवारके बाहर चार फुट गहरी खाई थी। तेप्पेके पश्चिमोत्तरमें गोल टीला था, जिसे तुर्की भाषामें “दगिल-तेप्पा” कहते हैं, उसीके कारण इस स्थानका यह नाम पडा। इसी गोल टीलेपर ईरानियोंसे पकड़ी पुराने ढगकी एक तोप रखी हुई थी। तीस हजार तेक्के योद्धा अपनी स्वतंत्रताके लिये प्राण देनेको तैयार थे। पानीका यहां कोई दुख नहीं था, क्योंकि पाससे एक नदी बहती थी। रूसी पानीकी धारको चाहत, तो बदल सकते थे, लेकिन तब उन्हें इतनी भारी सध्यामें शिकार एक जगह नहीं मिलता। एक सप्ताहतक आगे बढ़ना रोककर २४ दिसम्बरको रूसियोंने जाच-पडताल भर की। १८८१ ई०के नववर्षके दिन यगीकलापर भीषण आक्रमण शुरू हुआ। कला एक पहाड़ीकी जड़में था। आठ हजार रूसी सैनिक तीन स्तम्भोंमें विभक्त हो बावन तोपों और ग्यारह मशीनगनोंको लिये आगे बढ़े। दक्षिणवाले स्तम्भने पीछे और सामने दो ओरसे भयकर गोलावारी की, जिससे तेक्के यगीकला छोड़ दगिल-तेप्पेकी सेनामें जाकर मिलनेके लिये मजबूर हुये। उन्होंने रातको फिर यगीकलाको लेनेका प्रयत्न किया, लेकिन रूसी तोपोंने उन्हें मार भगाया। ३ जनवरीको रूसियोंने अपने कैम्पको यगमनवातिरसे यगीकलामें परिवर्तित कर दिया। अगले दिन शत्रुओंके सामने आठ सौ गजपर रूसियोंकी पक्ति खड़ी थी। रूसियोंके घिरावेको तोड़नेके लिये भेवसे पांच हजार और तुर्कमान आये, जिन्होंने रूसियोंकी पक्तिपर छापा मारा। पागलकी तरह वह रूसी सैनिकोंपर पड़े और गोलियोंसे जलते-भुनते भी कितनोंने एक हाथसे रूसी सैनिकोंकी बन्दूकोंको पकड़ा और दूसरे हाथसे अपनी तेज तलवारों द्वारा शत्रुओंकी गर्दनें काटी। सारी भूमि लोगोंके मुंडों और कटे हुये अंगोंसे ढक गई। चारों तरफ “अल्लाह”की आवाज या रूसियोंका “उरा” सुनाई पड़ता था। रूसियोंके दाहिने पक्षपर तीन सौ तेक्के बहादुरोंकी लाशें पड़ी थी। लेकिन, आधुनिक हथियारोंके सामने अल्ला या यह वीरता क्या कर सकती थी?

४ जनवरी १८८१ ई०को दूसरी पक्ति तैयार की गई, जिसमें छब्बीस सौ सैनिक थे। सध्याके समय तेक्कोंने छापा मारा तथा बाहरी खाइयोंपर अधिकार कर लिया, और तोपचियोंको काटकर चार पहाड़ी तोपे, और रेजिमेन्टके तीन झंडे भी अपने साथ ले गये। लेकिन, तुरन्त ही यगीकलासे कुमक आ गई, और तोप छोड़ बाकी चीजोंपर फिर रूसियोंने अधिकार कर लिया। झडप इसी तरह चलती रही। १० जनवरीको रूसी सेना तेक्कोंकी बाहरी चौकियोंपर अधिकार करनेमें मफल हुई। लेकिन आध घंटे बाद ही तेक्कोंने जवर्दस्त प्रत्याक्रमण किया। तोपचियोंकी एक कंपनीके टुकड़े-टुकड़े करके वह दो तोपोंको खाइयोंकी ओर खींच ले गये। रूसियोंने भी नई कुमक पाकर उनके आक्रमणको निष्फल कर दिया। रातके अवेरेमें तेक्के रूसियोंपर आक्रमण करते। १६ जनवरीकी रातको उन्होंने अपना अन्तिम जवर्दस्त आक्रमण किया, जिमें रूसियोंने वेकार कर दिया। १६ जनवरीको अपनी किलाबन्दीके पूर्वी छोरपर चौबीस गजके पासतक तेक्के ढकेल दिये गये। २० जनवरीसे उनका किला तोड़ा जाने लगा। किलेके भीतर नमदेके किवितकोपर पेट्रोलके गोले फेंके जा रहे थे। इन्हीं तम्बुओंमें सात हजार बच्चे और स्त्रियां थीं। तब भी बहादुर तेक्के तीन सप्ताहतक डटकर लड़ते रहे। अन्तिम आक्रमणके दिन जेनरल स्कोवेलेफने अपने सैनिकोंको आदेश देते हुये कहा था—“हमें एक बड़े ही बहादुर और भारी आत्मनम्मानवाले लोगोंसे मुकाबिला करना पड़ रहा है।” अन्तिम प्रहारके समय रूसियोंने औरतों और बच्चोंको हटानेके लिये कहा। तेक्कोंने समझा, ये हमारी स्त्रियों और बच्चोंको अपने लिये लेना चाहते हैं, इसलिये उनका जवाब था—“अगर तुम हमारी स्त्रियों और बच्चोंको लेना चाहते हो, तो हमारी आशोंपरसे होकर ही उन्हें पा सकते हो।” २४ जनवरीके ७ बजे

सबेरे किलेपर चारो तरफसे टूट पड़नेके लिये रूसियोंके चार सेना-स्तम्भ बनाये गये। सकेत पाते ही एक भारी धडाका हुआ, और तीन सौ फुटकी दीवार गिर गई। अब तेक्कोको पता लग गया, कि प्रतिरोध करना असम्भव है। दूसरे ही क्षण सेना-स्तम्भ भी उनपर टूट पड़े और जरा ही देरमें भागते हुए घोड़ोंके टापोंकी धूल दिखलाई पड़ने लगी, जिनके पीछे-पीछे कुछ दूसरे भी शरणार्थी जा रहे थे। रूसियोंकी आठ हजार सेनामेंसे बारह सौ मारे गये, लेकिन दगिल-तेप्पेपर जार-शाही झडा गड गया। रूसी सवारोंने दस मीलतक तेक्कोका पीछा किया। तीस हजार तेक्कोमेंसे दस हजार काम आये। बच्चो और स्त्रियोंपर रूसियोंने हाथ नहीं छोडा। रूसी जेनरल जिन तेक्कोको बहादुर और भारी आत्मसम्माननी जाति मानता था, उन्हीके बारेमें एक पेशन प्राप्त आई० सी० एस० अग्रेज एफ० एच० स्क्रीन लिखता है—“अलावके पास बैठके राजनीति बधारनेवाले लोग ग्योक-तेप्पेकी खून-खरावी और ओम्दुर्मानके घायल शत्रुओंके कत्लको मम्यताके खिलाफ कहेगें, लेकिन एसियाइयोंके स्वभावका यदि थोडा भी परिचय हो, तो उन्हें मानना पड़ेगा, कि एसियाई बर्बरता और धर्मान्धताकी शक्तियोंके ऊपर प्रहारका सबसे अच्छा उपाय क्रूरताकी नीति है।”

ग्योक-तेप्पामें मध्य-एसियाकी स्वतंत्रताकी अन्तिम लड़ाई लड़ी गई। उसकी विजयके माथ मध्य-एसियापर जारशाहीका अखड शासन और शोषण स्थापित हुआ, जिसका अन्त बोल्शेविक-क्रांतिके साथ हुआ, और उसके बाद तेक्के और दूसरे तुर्कमान अपने स्वतंत्र तुर्कमानिस्तान गणराज्यके स्वामी बनकर एक आधुनिक सुसंस्कृत जातिके रूपमें अपने समाज और देशका नव-निर्माण करते हुये आगे बढ़ने लगे।

तुर्कमानोंके सघर्षके बाद ईरानके शाहकी आखे खली, और उसने रूसियोंको हटानेकी कोशिश की, जिसका परिणाम हुआ अतरक नदीके बाये तट और मेर्वसे हाथ धोना।

## ६ अग्रेजोंसे तनातनी

ग्योक-तेप्पेकी लड़ाईके बाद रूसियोंको फिर हथियार इस्तेमाल करनेकी जरूरत नहीं पड़ी। दिसम्बर १८८६ ई०में उन्होंने एक सैनिक प्रदर्शन किया। ३१ जनवरी १८८८ ई०को मेर्वकी भिन्न-भिन्न वस्तियोंके एक सौ चौबीस प्रतिनिधियोंने अपने चार कवीलोंके चार सरदारोंकी प्रधानतामें एकत्रित हो महाराज्यपाल कमारोफके सामने जारके प्रति भक्तिकी शपथ ली। एक अफगान साहसीने तुर्कमानोंमें विद्रोह फैलाना चाहा, जिसे ३ मार्चको रूसियोंने दवा दिया। अगली मईमें काकेशसके महाराज्यपालने जीते हुये इलाकेका निरीक्षण किया। फिर थोड़े ही दिनों बाद मेर्वसे ३६ मील दक्षिण योलतन-उपत्यकाके पचास हजार सारिकोंने अधीनता स्वीकार की और उसके बाद गयाउर और सरख्सके बीचके कवीले भी रूसी-प्रजा बन गये। रूसकी दक्षिणी सीमा इस तरह आगे बढ़ अफगानिस्तानसे मिल गई। हिरातमें अग्रेजोंने अफगानोंको एक मजबूत किला बनानेमें मदद दी थी। वह कैसे रूसके इस बढावको पमद करते? एक अग्रेजी लेखकने रूस और इंग्लैण्डके इस समयके सघर्षके बारेमें लिखा है\*—

“भारतीय प्रायद्वीपकी ऐसी भौगोलिक स्थिति है, कि कोई भी यूरोपीय शक्ति तबतक इसपर अधिकार नहीं कर सकती, जबतक वह समुद्रपर प्रभुत्वन रखे। हमारी प्रतिष्ठाके लिये यह जरूरी है, कि हम ऐसे साम्राज्यपर अधिकार रखें, जो दुनियाके लिये आश्चर्य और ईर्ष्याकी चीज है। उसपर अधिकार करके हम नफा भी खूब उठा रहे हैं, हमारे कारखानोंके लिये वहां बाजार है, और हमारे मध्यवर्गकी बेकार शक्तिके लिये वहां काम रक्खा है।

“इंग्लैण्डने रूसके कान्स्तान्तिनोपलके रास्तेको रोका। १८८४ ई०में दुनियाकी कुजी दरे-दानियालको तुर्कोंके हाथोंमें रखनेके लिये इंग्लैण्डने रूसके खिलाफ तलवार उठाई और उसके एक-चौथाई शताब्दी बाद, जब कि रूसियोंके हाथमें यह भव्य शिकार जाने ही वाला था, जारकी विजयिनी सेनाको इंग्लैण्डने पीछे हटा दिया। मानवता (?) का हरएक मित्र इंग्लैण्ड और रूसकी दो शक्तियोंके बीचमें विरोधकी भारी खाईको देखकर अफनोम किये बिना नहीं रहेगा।

\*“जार और इंग्लैण्ड मित्र या शत्रु”



यदि दोनों एक हो जाय, तो वह एशियाकी सभ्यता और दुनियाकी शांति प्रदान कर सकते हैं।

“एशियाके लोग काम्पियनमे चीनतक, और माइवेरियामे ईरान तथा अफगानिस्तानकी सीमा-तक उसमे कहीं अधिक सुख और स्वतंत्रताको भोग रहे हैं, जितना कि भारतीय राज्यके किसी भागके लोग। लेकिन वहा (हमी एशियामें) अब भी २०वीं सदीके आरम्भमें, भारी रक्षात्मक आयकर, अंग्रेजी व्यापारकी रक्षाके लिये वाणिज्य-दूतोंकी नियुक्ति, तथा युरोपियनोंके आने-जानेके ऊपर भारी रकावट मौजूद है। सिवाय मगीनोंके बलपर हम मदा भारतके स्वामी नहीं रह सकते हैं, उसीपर हमारा सहामन खड़ा है। हमारा राज्य यहा (भारतमें) कभी गहरी जड़ नहीं जमा सकता। मगीनोंके बिना हमारे पूर्वगमियोंकी तरह हमारा भी शासन खतम हुये बिना नहीं रहेगा। लेकिन मध्य-एशिया उतना घना नहीं बसा है, और वहाके लोगोंका जीवनतल ‘भारत’की अपेक्षा अधिक ऊँचा है।

“हमें विश्वास है, कि यदि ‘हमारे इंग्लैण्ड और रूस’—एशियाकी दोनों महाशक्तियों—के बीच खुले दिलमे कोई समझौता हो जाय, तो इसमें सभ्यताकी आगे बढ़नेमें सहायता मिलेगी।”

इन उद्घरणोंमे मालूम होगा, कि अंग्रेज रूसियोंके दक्षिणी बढ़ावको पसंद नहीं करते थे, लेकिन नाथ ही वह जानत थे, कि दोनोंके मधुपर्क के कारण एशियामे कहीं युरोपियनोंका शासन खतम न हो जाय, इसीलिये सीमाके निश्चित करनेके लिये दोनोंकी ओरसे जुलाई १८८४ ई०में एक संयुक्त कमीशन नियुक्त हुआ। रूसियोंने पचदेहके मारिकोके हमी-अधीनता स्वीकार करनेका हवाला दे माग पेश की, कि तुर्क जातिकी सीमा हमारी सीमा है, और अफगान-बस्तियोंसे अंग्रेजोंका प्रभावक्षेत्र माना जाय। लेकिन अंग्रेज इसे माननेके लिये तैयार नहीं थे। अपने दावेको मजबूत करनेके लिए अंग्रेजोंके शहर इमी बीच अफगानोंने आक्रमण करके वालामुर्गाव और पचदेह दोनों वादियों (उप-न्यकाओं) को दखल कर लिया। इसके जवाबमें जनरल कमारोफने पुले-खातून, जुल्फिकार डाडा और अक-रवातपर हसी अडा गाट दिया, और फरवरी १८८५ ई०में पचदेह-वादीके छोरपर पुले-कदतीको भी ले लिया। इंग्लैंडमे इसपर बड़ा गुस्सा प्रकट किया जाने लगा, और हिरातके किले-को मजबूत करनेके लिये अंग्रेज इंजीनियर भेजे गये, अफगानिस्तानमें हथियार और गोला-बारूद बड़े परिमाणमें भेजा जाने लगा, और भारतके पश्चिमोत्तर सीमातपर जनरल रावर्टकी अधीनता-मे भारी सेना जमा की गई। पार्लियामेंटने एक करोड़ दस लाख पाँड मैनिक तैयारीके लिए मजूर किये। उधर रूसने भी एक भारी नौ-सेना जमा की, और चाहा कि भूमध्यसागरके अंग्रेजी-व्यापार-मार्गको नाट कर दे। लेकिन दोनों साम्राज्योंको यह समझनेमें देर नहीं लगी, कि आपसकी लड़ाई-से जतने भारी क्षति उठानी पड़ेगी। अंग्रेजोंन अफगानिस्तानको रोका, और अप्रैल १८८६ ई०में दोनों देशोंके प्रतिनिधि पीतरवुर्गमें जमा हुए। रूसियोंको हरीरूदका दाहिना किनारा जुल्फिकार टाटैनक और पचदेहमे दक्षिण बागी-उपत्यका, जिसमें पचदेह हरितावली भी शामिल थी, मिली। इस प्रकार दोनों सीमा हिरातने ५३ मीलपर पहुंच गई, जिसके और हिरातके बीचमे कोई प्राकृतिक बाधा नहीं थी। लेकिन दूसरी तरफ रूसको अमीर-बुखाराके हाथमे वक्षुके बायें तटपर अवस्थित रवाजामालेके दक्षिणके मुन्दर चरागाहोंको अफगानिस्तानको दिलवाना पड़ा। संयुक्त कमीशनने जितनी सफलतापूर्वक अपना काम किया था, उसमे उत्साहित होकर १८९५ ई०में दूसरा सीमात-कमीशन नियुक्त किया गया, जिसने पामीरमें अंग्रेजी और रूसी प्रभावक्षेत्रोंकी सीमा निर्धारित की। यह सीमा विक्टोरिया (जोर कुल) झीलके दक्षिणी किनारेमे शुरू होकर सरिकौल पर्वत-मालाके मेरूदण्डपर होने चीनी सीमाततक पहुंच मारिकौल पर्वतमालाकी एक ऊँध-खाँध और दुर्गम बाहिमे ६ मीलपर सनातन हिमवाले प्रदेशमे जाती है, जहापर कि कई पर्वतश्रेणिया आकर मिलती हैं। “इसी निर्जन एकांत स्थानमें समुद्र तटमे बीस हजार फुटके ऊपर मनुष्योंकी पहुंचसे बिल्कुल बाहर तीन साम्राज्य—भारत (अंग्रेजी), चीन और रूस मिलते हैं।”

२५ नवम्बर १८९५ ई०में जर्मन कोपत्किनने अस्कावादमें अंग्रेज यात्रियोंके सामने भाषण करने हुए कहा था—“चीनरी उदाट-झगड़ेकी समाधानको खतम करनेके लिए हमने देशियोंको बिना हथियारकर उन्हें शांतिपूर्ण जीवन स्वीकार करनेके लिए मजबूर करनेमें कोई

कसर नहीं उठा रखी है। ... अब एक अकेला यात्री भी कास्पियन तट से साइबेरिया के सीमातक, बिना जरा भी भय के यात्रा कर सकता है। (यहाका) व्यापारीवर्ग सरकार का सबसे बड़ा समर्थक है, जिसके बाद कृपक है। ... विरोध अब मुल्लाओं के पङ्क्ति हीका रह गया है।”

### ७ रेल-निर्माण

तेक्को के साथ युद्ध करने के लिए तेरह मील की रेलवे लाइन बनकर कास्पियन तट से रेलोका जाल शुरू हुआ। रेल-निर्माण के लिए खास तौर से मगठित बटालियन ने १८८३ ई० के अंत तक उसे कास्पियन से १३५ मील पर किजिल अरबतनक बना दिया। मेर्व के ऊपर अधिकार हो जाने पर रेल बनाने में और भी उत्साह हुआ, और अप्रैल १८८५ ई० के उकाजे (राजादेश) द्वारा रेल को आगे बढ़ाने की स्वीकृति दी गई। ३० जून को काम शुरू हुआ। इस रेलवे लाइन के बनाने में बाईस हजार तेक्के मजदूर काम करते रहे, और चौदह महीने के भीतर रेल किजिल अरबत से ३५२ मील मेर्व तक पहुँच गई। मेर्व से चारजूय की लाइन पर काम अगस्त १८८६ ई० में आरंभ हुआ। इस लाइन को साठ मील रेगिस्तान में से जाना था। चार मास में यह एक सौ एकतालीस मील लंबी रेल भी तैयार हो गई। कास्पियन तट से वक्षु के बाएँ किनारे पर अवस्थित चारजूय तक अब ६६४ मील लंबी रेल बनकर तैयार हो गई। वक्षु हमारी गंगा की तरह एक बड़ी नदी है, जिसका पाट चारजूय में सवा मील का है। नदी में थोड़ा ही हटकर दोनों किनारों पर रेगिस्तान है, जो कि कराकुम और किजिलकुम के महान् रेगिस्तान के भाग हैं। आम् (वक्षु) पर पुल बनाने के लिए लकड़ियों के ३३३० वेडे रूस से लाये गये। पहला पाया जून १८८७ ई० में बैठाया गया और काम इतनी तत्परता से हुआ, कि छ महीने के बाद जनवरी १८८८ ई० में वक्षु का पुल यातायात के लिये खोल दिया गया। यह पुल ४६०० गज लंबा था, जिससे २२७० गज चौड़ी जल-धारा बहती थी। सितंबर १८८७ ई० में वक्षु तट से २१६ मील पर अवस्थित समरकंद तक की लाइन पर काम शुरू हो गया, जिसे २८ मील का रेगिस्तान पार करके कराकुल में जरफशा-मिचित उपत्यका में पहुँचना था। अंत में मई १८८८ ई० में कास्पियन में समरकंद तक ८७९ मील की रेल तैयार हो गई। इस रेलवे लाइन पर प्रति मील औसत खर्च ६१४४ पौंड (अस्सी हजार रुपया) आया था, जब कि हिंदुस्तान में अग्रेजी कंपनियों ने रेलों पर प्रति मील अठारह में बीस हजार पौंड खर्च किये। १८९५ ई० में समरकंद और ताशकंद के बीच रेल बननी शुरू हुई। उनके बाद अदिजान (फरगाना) की लाइन भी तैयार की गई। मेर्व में अफगानिस्तान की सीमा के पास कुश्क तक १९२ मील की रेल बनी। कुश्क से हिरात, गोरिष्क, कवार और चमन होते मध्य-एसिया की रेलों को क्रेटा में पाकिस्तानी रेलों से आसानी से मिलाया जा सकता था, इस रास्ते कुश्क और चमन के बीच मिर्क ४५० मील की लाइन बनानी थी। इस सारे रास्ते में कोई दुर्लभ बाधा नहीं है सिर्फ सुम्बान (चश्मेसब्ज) डांडे को पार करते लाइन को समुद्र तल से ३४०० फुट ऊपर उठना पड़ता। चश्मेसब्ज के डांडे से तीस मील पर ही सम्बवार है।

### ८ अश्काबाद

कास्पियन तट पर अवस्थित क्रानोवोदस्क से ३२२२५ मील पर अवस्थित अश्काबाद को रूसियों ने अपना शासन-केंद्र बनाया, जिसकी स्थापना १८८३ ई० में अन्कठ हरितानली के सबसे चौड़े तथा कोपेतदाग पर्वतमाला के सानु पर है। १८९९ ई० में इसकी जनसंख्या नौलह हजार थी, जिसमें दस हजार सैनिक थे। अश्काबाद में नातिद्र कोपेतदाग के पहाड़ों में २४०० फुट की ऊँचाई पर फीरोजा और ३००० फुट की ऊँचाई पर खैराबाद मसूरी-शिमला-जैने ठंडे पहाड़ी नगर हैं, जहाँ पर रूसी अफसर अपनी गर्मियाँ बिताया करते थे। अश्काबाद का अर्थ जानु-जो की नगरी या श्नाबाद ने प्रेमनगरी भी हो सकता है।

## ९ मेर्व

यद्यपि यह ऐतिहासिक नगरी, वसावशेषके रूपमें ही मही, मौजूद थी, लेकिन इसके पहले ही इस्कावादको शासन-केन्द्र बनाया जा चुका था, इसलिये मेर्व एक छोटा-सा कम्बा ही रह गया, और उसे बोल्शेविक-क्रांतिके बाद ही आगे बढ़नेका मौका मिला ।

## स्रोत-ग्रन्थ

- १ ओर्चिक इस्तोरिड तुर्कमान्स्कजो नरोदा (व. व. वर्तोल्ल, १९२८)
- २ आजियात्स्कया रोस्सिया (अ क्वेर आदि, मास्को १९१०, पृष्ठ १७२-७७)
३. तुर्कमानिया इ येये कुरोत्नया वगात्स्वा (व अ अलेक्सन्द्रोफ, मास्को, १९१०)
४. Heart of Asia (E. D Ross, London 1899)
- ५ History of Mongol (H. H. Howorth, London, 1876-88)
६. La rivalite anglo-russie en xx<sup>e</sup> siecle en Asie (A. M. F Roune, Paris, 1908)

**भाग ५**  
**बोलशेविक-क्रांति**



## रूसमें क्रांति

### १. लेनिन रूसमें (१९१७ई०)

यद्यपि जार अब तख्तसे उतार दिया गया था, और लोग बड़ी-बड़ी आशा कर रहे थे, लेकिन फरवरी-क्रांतिके परिणामस्वरूप जिन लोगोंके हाथमें शासन गया, वह अब पुराने स्वार्थोंको उसी तरह सुरक्षित रखना चाहते थे, जिस तरह जारशाही करती आ रही थी। औद्योगिक पूजीवादकी स्थापनाके बाद भी रूसमें अभीतक सामन्तशाही स्वार्थोंके हाथमें ही मैनिक और असैनिक शक्ति थी। फरवरी-क्रातिने पूजीपतियों और मध्यवर्गको ऊपर आनेका मौका दिया, जो पश्चिमी युरोपकी तरह शुद्ध पूजीका शासन मजबूत करना चाहते थे। लडाईने लोगोंकी जैसी आर्थिक अवस्था कर डाली थी, और किसानों और मजदूरोंके सवर्षोंने जो भावनाये पैदा कर दी थी, उनके लिये अस्थायी सरकारने कुछ नहीं किया। लेनिनके अनुसार अस्थायी सरकार “रूसके लोगोंको न शांति दे सकी, न रोटी, न पूर्ण स्वतन्त्रता”, बल्कि जारशाहीके हट जानेसे पश्चिमी दोस्त कहीं कोई दूसरा अर्थ न लगाने लगे, इसलिये अस्थायी सरकारने युद्धको पहले हीकी तरह सरगर्मीके साथ चालू रखनेका विश्वास दिलाया। यही नहीं, बल्कि उसीके लिये छ अरब रूबलके ‘स्वतन्त्रता-ऋण’के उठानेका प्रयत्न किया। भूमि अब भी जमींदारोंके हाथमें अच्छी रही, पूजीपतियोंके हाथसे कारखानोंको जरा भी इधर-उधर करनेकी कोशिश नहीं की गई। कुर्स मोगिलेफ और पेर्मकी गुबर्नियों (प्रदेशों)में किसानोंने कुछ करना चाहा, तो मार्चमें उनके ऊपर सेना भेजी गई। जारशाही अफसर और पुराना शासन-यंत्र वैसा ही अक्षुण्ण रक्खा गया, जिस तरह भारतसे अंग्रेजोंके जानेके बाद हिन्दुस्तानमें। बड़े-बड़े जमींदार और पक्के राजभवत अब भी सर्वेसर्वा थे, समाजवादी क्रांतिकारी दलका वकील करेन्स्की न्यायमन्त्री बना था। उसने जारशाही समयके सरकारी वकीलोंको अपनी जगहपर कायम रक्खा। और तो और, पुरानी उपाधियों—राजा, कौण्ट, बारोन आदि—को भी जैसे-कानैसा ही बनाये रक्खा। नई सरकारने जारके परिवारको सुरक्षित रखनेके लिये उमे इंग्लैंड भेजनेकी कोशिश की, लेकिन जवर्दस्त विरोध देख वैसा नहीं कर पायी। फरवरी-क्रांतिके बाद जो मूर्तियां मामले आईं और उन्होंने जो खैया अख्तियार किया, उसने बतला दिया, कि इनसे साधारण जनता-का कोई हित नहीं हो सकता।

लेनिनको जैसे ही फरवरी-क्रांतिकी खबर मिली, वैसे ही वह रूस पहुँचनेके लिये बेकरार हो गये। लेकिन उनका नाम मित्रशक्तियोंके खुफिया-विभागकी काली-मूचीमें दर्ज था। अंग्रेज अपने प्रदेशमें होकर जानेकी आज्ञा देनेके लिये तैयार नहीं थे। नोवियतोकी मागसे मजबूर होकर अस्थायी सरकारके वैदेशिक विभागने सभी निर्वाचित रूसियोंको देश लौटनेके लिये मित्रशक्तियोंको लिखा, लेकिन साथ ही यह भी कह दिया, कि अन्तर्राष्ट्रीयता-वादियोंको न आने दिया जाय। इस प्रकार लेनिनका लौटनेका रास्ता बन्द था। वह लौटनेका कोई उपाय सोच रहे थे। उनको यह भी ख्याल आया, कि स्वीडनका पासपोर्ट लेकर जर्मनी-के रास्ते जाय, लेकिन उन्हें स्वीडिश भाषाका एक शब्द भी मालूम नहीं था। तब उन्होंने गूगा बननेकी भी सोची। सब देखकर अन्तमें उन्हें यह साफ मालूम होने लगा, कि जर्मनीके रास्तेसे ही लौटा जा सकता है। रूसी निर्वासितों—विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी समाजवादियों

—के रूसमें लीटनेमें जर्मन अपना नुकसान नहीं समझते थे। इसीलिये स्वीजरलैंडके समाजवादी प्लेटनेके बहुत लिखा-पढ़ी करनेपर जर्मनीने इस शर्तपर अपने देशके भीतरसे लेनिनको जानेकी आज्ञा दी, कि वह उसी खाम ट्रेनमें जाय, जिससे दूसरे निर्वासित रूसी जायगे। वह न रास्तेमें उतरें, और न किमीमें बातचीत करें। लेनिनको तो रूसमें पहुंचनेसे मतलब था, उन्होंने इस शर्तको स्वीकार कर लिया और मुहरबन्द ट्रेनपर बैठ गये। जब फिनलैंड और रूसकी सीमापर उनकी ट्रेन पहुंची, तो बोल्शेविक नेताओंने उन्हें देशकी परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्रादके पास वेलोअस्त्रोफ स्टेशनपर १६ (३) अप्रैल १९१७ ई०को उन्हें उनके साथियोंने देशकी परिस्थिति समझाई। जब वह पेत्रोग्रादके फिनलैंड रेलवे स्टेशनपर पहुंचे, तो हजारों फौजी सिपाही अपने प्रिय नेताके स्वागतके लिये पातीसे खड़े सलामी दे रहे थे, मैकडो लाल झंडे फहरा रहे थे। पताकोपर बड़े-बड़े अक्षरोंमें “स्वागत लेनिन” लिखा था। एक हथियारबन्द गाडीपर खड़े होकर लेनिनने एक छोटा-सा भाषण दिया, जिसको समाप्त करते हुये “समाजवादी क्रांति जिन्दावाद” का नारा लगाया। १७ (४) अप्रैलको बोल्शेविकोंकी एक बैठकमें लेनिनने अपने प्रसिद्ध निबन्ध “वर्तमान क्रांतिमें सर्वहाराके सामने काम” को रक्खा, जिसमें लेनिनने बतलाया, कि यह सत्तातिकी अवस्था है, जिसके द्वारा शक्ति पूजीवादियोंके हाथमें चली गई है। अब शक्तिको सर्वहारा और गरीब किसानोंके हाथमें करते क्रांतिकी दूसरी सीढ़ीको पार करना है। लेनिनने यह भी कहा, कि लड़ाईसे हमें अपना हाथ एकदम हटा लेना चाहिये। इसे उनके सहयोगियोंमेंसे भी कितनोंने पसन्द नहीं किया। उनका कहना था—तब तो जर्मन वेधडक सारे रूसको दखल कर लेंगे और हम जारशाहीके फंदेसे निकलकर जर्मनशाहीके हाथमें चले जायगे। लेकिन लेनिन अपने निश्चयपर दृढ़ थे—“अब जब कि रूसमें भाषण और लेखनकी पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है, तो हमारा सबसे पहला काम है, शासनको कमकरो और गरीब किसानोंके हाथमें लानेकी कोशिश करना। अस्थायी सरकारको हमें कोई मदद नहीं करनी चाहिये। यह पूजीवादियोंकी सरकार साम्राज्यवादी छोड़ और हो ही क्या सकती है? मोवियतोको भी कमकरो और किसानोंके हाथमें होना चाहिये। जमींदारोंकी जमींदारीको छीनकर किसानोंको दे देना चाहिये। अलग-अलग बैंकोंका मिलाकर एक राष्ट्रीय बैंक बना देना चाहिये। यद्यपि समाजवादकी स्थापना तुरन्त नहीं हो सकती, लेकिन राष्ट्रकी उपज और उसके वितरणके साधनोंको सोवियतों (पचायतों)के हाथमें होना चाहिये। जनतांत्रिक समाजवादी (बोल्शेविक) पार्टीका नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) कर देना चाहिये, जिससे मालूम हो कि हम पैरिसकम्यून (साम्यवादी समाज)के नमूनेपर साम्यवादी राष्ट्रकी स्थापना करना चाहते हैं।” लेनिनके यह विचार हमके तत्कालीन राजनीतिज्ञोंके ऊपर बमकी तरह पड़े। बोल्शेविक नेता भी घबड़ा उठे—“यह शेवचिल्लीका महल है। वास्तविकतासे इसका कोई भवध नहीं है। लेनिन दस माल-तक हमको नहीं देख पाये, इसीलिये वह इस तरहकी ऊल-जलूल बातें करते हैं।”

लेकिन लेनिनकी बातें ऊल-जलूल नहीं थी, और न वह रूसी जनताकी नब्ज पहचाननेमें गलती कर सकते थे। उन्हें जितना ही अधिक जनतासे मिलनेका मौका मिल रहा था, उतना ही वह उन्हें अच्छी तरह समझानेमें सफल हो रहे थे। उस समय बोल्शेविक पार्टीका केन्द्र क्रोन्स्टाड्ट में था, जिसकी सामनेकी सड़कपर लेनिन गोज व्याख्यान देते थे। तीन महीनेतक लगातार उनकी कलम और जवान चलती रही। कुछ ही समयमें लेनिन अपनी बातोंको मनवानेमें समर्थ हुये। पेत्रोग्रादके कमकर तो पहले हीसे उनपर अद्भुत विश्वास रखते थे, अब बोल्शेविक पार्टीके नेता भी उनसे सहमत हुये। वह देख रहे थे, कि अस्थायी सरकारके जोर देनेपर भी मैनिक मैदान छोड़कर भागते जा रहे हैं, जर्मन फौजे आगे बढ़नी आ रही हैं। ऐसी अवस्थामें अच्छी शर्तोंपर जर्मनीसे मुलह कर लेना ही अच्छा है। अप्रैलमें बोल्शेविक पार्टीकी मातवी अखिल रूसी कांग्रेस हुई, जिसमें भी एक प्रस्ताव पास करके मांग की गई, कि जमींदारोंसे जमीन छीनकर किसान-कमेटीयोंके हाथमें दे दी

जानी चाहिये। इसी काफ़ेसमें स्तालिनने जातियोकी समस्यापर प्रकाश डालते हुए कहा था, कि सभी जातियोको आत्म-निर्णयका अधिकार मिलना चाहिये, यदि वह रूससे अलग होना चाहे, तो उसके लिये भी उन्हे स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। ३ और ४ मई (२० और २१ अप्रैल) को अस्थायी सरकारकी साम्राज्यवादी नीतिके विरुद्ध पेत्रोग्रादमें एक लाख आदमियोने प्रदर्शन किया। इसके विरुद्ध पूजीवादियोने सैनिक अफ़सरो, विद्यार्थियो, दूकानदारोका जलूस निकाला, जिसका नारा था “अस्थायी सरकारमें विश्वास”। पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्रके कमांडर जेनरल कोर्निलोफ़ने हुक्म दिया था, कि मजदूरोके प्रदर्शन पर सेना गोली चलाये, लेकिन सिपाहियोने वैसा करनेसे साफ़ इन्कार कर दिया।

## २ करेन्स्की सरकार

१५ (२) मईको अस्थायी सरकारमें कुछ परिवर्तन हुआ, और अब मन्त्रिमंडलमें मेन्शेविको और समाजवादी क्रांतिकारियोकी प्रधानता थी। समाजवादी क्रांतिकारी नेता करेन्स्की अब युद्धमन्त्री था। उसने जर्मनीके खिलाफ़ युद्धको और भी जोरसे चलानेका प्रयत्न किया, लेकिन इसी जनता इसके लिये तैयार नहीं थी, प्राचीनपथी अत्याचारी जारशाही गुलामोकी बातोंमें पडकर वह और लड़नेके लिये सन्नद्ध नहीं थे। बोल्शेविक इस वक्त वही कर रहे थे, जिसे रूसी जनता चाहती थी। अबतक बोल्शेविकोका प्रभाव पेत्रोग्रादके मजदूर-संगठनोंमें बहुत बढ़ गया था। इसका परिणाम यह हुआ, कि मजदूरोंने सोवियतोंके नये चुनावमें मेन्शेविको और समाजवादी क्रांतिकारी प्रतिनिधियोको हटाकर बोल्शेविकोको निर्वाचित किया। सोवियतोंमें ही नहीं, मजदूर सभाओंमें भी, विशेषकर फैक्ट्री कमेटियोमें, बोल्शेविकोकी प्रधानता हो गई। १२ जून (३० मई) को पेत्रोग्रादमें फैक्ट्री कमेटियोकी पहली कांग्रेस हुई, जिसके तीन चौथाई प्रतिनिधियोने बोल्शेविकोके पक्षमें अपनी राय दी। गावों और शहरोंसे लेनिन और बोल्शेविक पत्रिका ‘प्रवदा’के पास हजारों पत्र आते रहते थे। सिपाहियोने अपने एक पत्रमें लिखा था—“साथी, मित्र लेनिन, याद रखो, कि हममेंसे एक-एक आदमी जहा है, वहा तुम्हारा अनुगमन करनेके लिये तैयार है। तुम्हारे विचार ठीक किसानों और मजदूरोंके मकल्पको प्रकट करते हैं। सोवियतोंकी प्रथम अखिल रूसी कांग्रेस जून १७ में हुई, जिसके हजार प्रतिनिधियोंमें एक सौ पांच ही बोल्शेविक थे, लेकिन अब वह इतने प्रभावित हो गये थे, कि उन्होंने बोल्शेविकोकी नीतिका समर्थन किया। जिस समय कांग्रेस हो रही थी, इसी समय बोल्शेविक पेत्रोग्रादके मजदूरों और सैनिकोंके एक भारी प्रदर्शनकी तैयारी कर रहे थे। इसके नारे थे—“सभी शक्ति सोवियतोंको”, “पूजीवादी दसों मन्त्री मुर्दावाद”, “रोटी, शांति और स्वतन्त्रता”। मेन्शेविको और समाजवादी क्रांतिकारियोंको भय लगा, कि इससे बोल्शेविकोका प्रभाव और भी बढ़ जायगा, इसलिये उन्होंने तीन दिनतक सभी तरहके प्रदर्शनोंको बंद रखनेका प्रस्ताव पास कराया, साथ ही पेत्रोग्राद सोवियतकी कार्यकारिणी समितिने १ जुलाई (१८ जून) को एक साधारण प्रदर्शन करनेका प्रस्ताव पास किया, जिसके द्वारा वह “अस्थायी सरकारमें विश्वास”का नारा लगवाना चाहते थे। बोल्शेविकोंने प्रदर्शन करना मजूर किया, लेकिन उसमें उन्होंने अपने नारे लगवाये। उस दिनके प्रदर्शनमें चार लाखसे अधिक कमकरोने भाग लिया। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी जो चाहते थे, वह नहीं हुआ और प्रदर्शनने अस्थायी सरकारमें अविश्वासके जलूसका रूप ले लिया।

अप्रैल १९१७ ई०में युक्त राष्ट्र अमेरिका भी युद्धमें शामिल हो गया था, लेकिन तबतक इंग्लैंड और अमेरिकाकी हालत बुरी हो गई थी। यदि पूर्वी मोर्चेपर हमी भी प्रतिरोध बन्द कर देते, तो वह कुछ नहीं कर सकते थे। इसीलिये वह करेन्स्कीपर जोर दे रहे थे। जुलाईमें मन्त्रिमंडलमें परिवर्तन होकर करेन्स्की प्रधान-मन्त्री बन गया। करेन्स्कीने जोर देकर आक्रमण करवाया, लेकिन रूसी सेनाको तानोंपोलमें बुरी तरहमें हारकर जल्दी ही हटनेके लिये मजबूर होना पडा। दस दिनके आक्रमणमें माठ हजार रूसी हताहत हुये। लेकिन इसमें क्या? रूसी पूजीवादी अपने पश्चिमी भाई-बन्धोंके दामनको पकड़े रहना चाहते थे। अभीतक अस्थायी



मन्त्रिमण्डलका काम बहुत कुछ मेल-जोलके साथ चल रहा था, लेकिन अब प्रधान-सेनापति कोर्निलोफ और प्रधान-मंत्री करेन्स्कीमें झगडा हो गया। सितम्बरके आरम्भमें कोर्निलोफ कई दूसरे सेनापतियोंकी सहायतासे करेन्स्कीको अल्टीमेटम दे सेना ले पेत्रोग्रादपर कब्जा करनेके लिये चल भी पडा। करेन्स्की जनतामें डरता था, लेकिन अब उसकी मदद लिये बिना कोई चारा नहीं था। कोर्निलोफसे मुकाविला करनेके लिये सबसे आगे ये बोल्शेविक। करेन्स्कीने अपना नया मन्त्रिमण्डल बनाया, इसमें भी नरमदली ही अधिक थे, जिनमें जनरल वेर्खोव्स्की और एडमिरल वेदेन्स्की भी थे। यह दोनों समाजवादी नहीं थे, तो भी उन्होंने अपने साथी मन्त्रियोंसे कहा, कि सेना और नहीं लड़ सकती, इसलिए लडाई बन्द कर देनी चाहिये और सैनिकोंको युद्धक्षेत्रसे हटा लेना चाहिये। लेकिन मित्रशक्तियोंके पिटू करेन्स्की और उसके साथियोंने उनकी बात नहीं मानी।

युद्धसे प्रति दिन चार करोड रूबलका खर्च देशके मल्ले पड रहा था। यह पैसा कहासे आये? सरकारने अन्धाधुन्ध कागजके नोट छापकर उसे पूरा करना चाहा, जिसका परिणाम हुआ सभी चीजोंके दामका अप्रत्याशित रूपसे बढ़ना—मुद्रास्फीति। लोग अपने वेतनसे जीविका नहीं चला सकते थे। साथ ही कारखानोंके लिये कच्चा माल और ईंधन तथा मजदूरोंके लिये रोटी मिलनी मुश्किल हो गई। रेल और यातायातके दूसरे साधन भी ठप हो गये। मिले और कारखाने बंद हो गये। मईमें १०८ कारखाने जिनमें ८७०० मजदूर काम कर रहे थे, जूनमें १२५ कारखाने (३८४५५ आदमी), जुलाईमें २०६ कारखाने जिनमें ४७७५४ मजदूर काम करते थे, बन्द हो गये। इस प्रकार मईमें जहाँ कारखानोंके बंद होनेसे ८७०० मजदूर बेकार थे, वहाँ जूनमें ३८४५५ और जुलाईमें ४७७५४ मजदूर बेकार हो गये। इस बेकारीने अस्थायी सरकारके विरुद्ध लोगोंके भावोंको और भडका दिया। इसीलिये कोई आश्चर्य नहीं, यदि १७ (४) जुलाईको पांच लाख मजदूरोंने अस्थायी सरकारके विरुद्ध जवर्दस्त प्रदर्शन किया। मेन्शेविक और समाजवादी क्रांतिकारी देख रहे थे, कि वह लोगोंपर अपने प्रभावको खोते जा रहे हैं, और अधिक समयतक वह शासनको अपने हाथमें नहीं रख सकेंगे। इसलिये उन्होंने गोलीसे लोगोंकी हिम्मत तोड़नेकी कोशिश की। १७ (४) जुलाईको युद्धक्षेत्रसे लौटाकर मगाये गये सैनिक अफसरो और कसाकोंने प्रदर्शनकारियोंपर गोलिया चलाई, अगले दिन भी वह गोलिया चलते रहे। उन्होंने बोल्शेविक पत्रिका 'प्रवदा'के कार्यालयपर आक्रमण करके उसे तोड़-फोड़ दिया। वह लेनिनको पकड़नेके लिये उनकी जगहपर भी पहुँचे, लेकिन तबतक लेनिनको वहाँसे हटा दिया गया था। वह पेत्रोग्रादसे दूर एक जगलमें ओपडीके भीतर रहते थे। बोल्शेविक पार्टी अब आधी गैरकानूनी हो चुकी थी। करेन्स्कीकी सरकार लेनिनपर 'दिशद्रोह'का अपराध लगा रही थी। रूइकोफ, कामेनेफ और त्रोत्स्की—जैसे द्विधर्मिलयकीन क्रांतिकारियोंने जोर दिया, कि लेनिनको आकर अदालतमें अपनी पैरवी करनी चाहिये, लेकिन बोल्शेविकोंने इसका विरोध करते हुये कहा—“वह लेनिनको पकड़कर जेल नहीं ले जायगे, बल्कि रास्तेमें ही मार डालेंगे।” इस दूरदर्शिताका समर्थन इतिहासने किया। बोल्शेविक-क्रांति लेनिनके बिना बहुत निर्बल हो जाती, उन महान् प्रतिभाके प्राणोंकी रक्षा उस समय इसी दूरदर्शितासे हो सकी। ८ अगस्त (२६ जुलाई)को बोल्शेविक पार्टीकी छठी कांग्रेस पेत्रोग्रादमें शुरू हुई। पुलिसके डरके मारे कांग्रेस गुप्त रीतिसे हो रही थी, तब भी लेनिनका उसमें आना खतरेसे खाली नहीं था, इसलिए वह नहीं जा सके। डमी कांग्रेसने स्तालिनके प्रस्तावको स्वीकार करते हुये बोल्शेविकोंके आर्थिक प्रोग्रामका समर्थन किया—जमींदारोंकी जमींदारियोंको जब्त किया जाय, सभी भूमिको राष्ट्रीय, सभी वैको और बड़े-बड़े उद्योग-वधोंको राष्ट्रीय बना दिया जाय, और उत्पादन और वितरणपर कमकरोका अकुश हो। इसी कांग्रेसने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारीका काम किया।

२५ (१३) अगस्त १९१७ ई०को राज्यपरिषद्की बैठक मास्कोमें बुलाते हुये करेन्स्कीने चाहा कि उनके द्वारा सैनिक अधिनायकत्व कायम करके अपने शासनको मजबूत कर दिया

जाय। बोल्शेविक भी कच्चे गुड़ये नहीं थे। मास्को बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिने उसी दिन चार लाख मजदूरोंका प्रदर्शन सगठित किया, सभी जगह मजदूरोंने हड़ताल कर दी। राज्यपरिषद्को बिजलीकी रोशनी बिना अपनी बैठक करनी पड़ी। अगले दिन जेनरल कोर्निलोफ मास्कोमें आया। वहाके पूँजीपतियोंने उसका सरकारी तौरसे स्वागत करनेका प्रबन्ध किया, लेकिन राज्यपरिषद्वालोंने खतरेको समझ लिया, इसलिये सैनिक अविनायकत्वकी घोषणा करनेकी उन्हें हिम्मत नहीं हुई, और कोर्निलोफको खाली ही हाथ लौट जाना पड़ा।

रूसकी इस स्थितिको देखकर मित्रशक्तियाँ बचरा रही थीं। वह कभी करेन्स्कीकी पीठ ठोकती, और कभी प्रधान-सेनापति कोर्निलोफकी। उन्होंने कोर्निलोफको पाँच अरब ख़वल कर्ज देनेका वचन इस शर्त पर दिया, कि रूसमें एक मजबूत सरकार कायम हो जाय। लेकिन मजबूत सरकार कायम करना कोर्निलोफके बसकी बात नहीं थी। कोर्निलोफने जब पेत्रोग्रादको हाथसे बाहर जाते देखा, तो १ सितम्बर (१९ अगस्त)को उसने रीगाको जर्मनोके हाथमें समर्पण कर दिया, जिसमें कि उनकी सेनाये सीधे पेत्रोग्राद पहुँच जाय। करेन्स्कीसे कोर्निलोफने यह भी माग की, कि सारी सैनिक और असैनिक शक्ति हमारे हाथमें दे दो, फिर हम पेत्रोग्रादके कमकरोको ठीक कर लेंगे। करेन्स्कीको अब जनताके गुस्सेका भी ख्याल करके और अपने लिये उपस्थित डरकी वजहसे भी कोर्निलोफको प्रधान-सेनापतिके पदसे हटाना पड़ा, लेकिन कोर्निलोफने आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया और ७ सितम्बर (२५ अगस्त)को उसने पेत्रोग्रादके विरुद्ध एक सेना जेनरल क्रीमोफकी अधीनतामें भेजी। अब धवराये हुये करेन्स्की और उसके सहयोगियोंको बोल्शेविकोंके सामने सहायताके लिये हाथ पसारनेके सिवा कोई रास्ता नहीं रह गया। बोल्शेविकोंने इस वक्त अपनी सृष्टि और सगठनका परिचय दिया, जिसके कारण कोर्निलोफकी बुरी हार हुई। जेनरल क्रीमोफने आत्म-हत्या कर ली। कोर्निलोफ, दिनिकिन और कितने ही दूसरे जेनरल गिरफ्तार कर लिये गये, लेकिन करेन्स्की बोल्शेविकोंसे और भी ज्यादा डरता था, इसलिये इन देशद्रोही जेनरलोंके भाग जानेमें कोई दिक्कत नहीं हुई। कोर्निलोफके पराजयके बाद बोल्शेविकोंका लोहा शत्रु, मित्र और उदासीन सभी मानने लगे। मजदूरों और गरीबोंमें उनका प्रभाव बहुत बढ़ गया। सोवियतोंके सगठन उनके हाथमें आने लगे। १३ सितम्बर (३१ अगस्त)को पेत्रोग्रादके कमकरो और सैनिकोंके प्रतिनिधियोंकी सोवियतने बहुमतके साथ बोल्शेविक प्रस्तावको पास किया। १८ (५) सितम्बरको मास्कोकी सोवियतने भी वैसा ही किया। इस प्रकार राजनीतिक राजधानी पेत्रोग्राद और औद्योगिक राजधानी मास्को दोनोंकी सोवियतें बोल्शेविकोंके हाथमें आ गईं। सितम्बर-अक्तूबरके बीचमें सदस्योंकी सख्या और प्रभाव दोनोंमें लेनिनकी पार्टी दिन-दूनी रात-चौगुनी जनताके विश्वासको पाती गई। अप्रैल १९१७ ई०में जहाँ उसके सदस्योंकी सख्या अस्सी हजार थी, वहाँ अगस्तके अन्तमें वह ढाई लाख और अक्तूबरके मध्यमें चार लाख हो गई। कहीं भी हड़ताल करा देना या बड़े-बड़े प्रदर्शन निकाल देना उनके बाये हाथका खेल था। देशमें जो क्रांति मची हुई थी, उसमें सैनिक भी शामिल थे। वह अपने गावोंमें सबधियोंको उसके बारेमें चिट्ठी लिखते, जिसमें किमानोंने जमींदारीके खेतोंको छीनना शुरू कर दिया। करेन्स्कीकी सरकारने जमींदारोंकी रक्षाके लिए अपने कमजोर हाथोंको बढ़ाते हुये किमान-समितियोंके सदस्योंको गिरफ्तार करनेकी कोशिश की, लेकिन उसके पास इतनी शक्ति कहाँ थी?

**विद्रोहकी तैयारियाँ**—सितम्बरमें लेनिन हेलमिकी (फिनलैंड)में छिपकर रहे थे, जहाँमें वह बराबर बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिके पास अपने मुद्दाव भेजा करते थे। २५ (१२) और २७ (१४) सितम्बरको लेनिनने केन्द्रीय समितिको दो बड़े ही महत्वपूर्ण पत्र भेजे थे—“बोल्शेविकोंको अवश्य अधिकार हाथमें लेना चाहिये” और “मानववाद और विद्रोह”। पहले पत्रमें लेनिनने बतलाया था, कि पेत्रोग्राद और मास्कोकी सोवियतोंमें अपना प्रभुत्व

स्थापित हो जानेपर बोल्शेविकोंके लिये अधिकार हाथमें लेना मुश्किल नहीं है। “पार्टीके कर्तव्यको अच्छी तरह साफ कर देना चाहिये। पेत्रोग्राद और मास्कोमें सशस्त्र विद्रोह, अधिकारको हाथमें लेना, और सरकारको निकाल बाहर करना—यह काम आजका हमारा प्रोग्राम होना चाहिये।” लेकिन अभी भी बोल्शेविक नेताओंमें कुछ ऐसे लोग थे, जो इतने बड़े कदमको उठानेमें भारी खतरा समझते थे। लेकिन खतरा लिये बिना क्या कभी कोई बड़ा काम किया जा सकता है? केन्द्रीय समितिने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारियां बड़ी तेजीसे शुरू कर दीं। पेत्रोग्राद-सोवियतकी एक क्रांतिकारी सैनिक समिति स्थापित की गई, जो विद्रोहका संचालन-केन्द्र थी। पेत्रोग्रादमें उस समय बारह हजार हथियारबन्द लाल गारद मौजूद थे। निश्चय हुआ, कि उनकी सहायताके लिये हेल्सिंकीसे वास्तिक नौमैनिक ब्रेडेके नाविकोंको भी बुलाया जाय। सिर्फ पेत्रोग्राद हीमें नहीं, दूसरी जगहोंपर भी विद्रोहकी तैयारियां करना जरूरी समझा गया। दोनेत्स-उपत्यकामें वोरोशिलोफ, खार्कोफमें अत्योम सेर्गेयफ, वोल्गा-प्रदेशमें कुइविशियेफ, उरालमें ज्दानोफ, पोलिसिये इलाकेमें कगानोविच, इवानोवो-वोजनेसेत्स्कमें म० व० फ्रुन्जे, उत्तरी काकेशसमें स० म० किरोफ सशस्त्र विद्रोहके संचालक-नियुक्त हुये।

जिस समय इस तरह जवर्दस्त तैयारी की जा रही थी, उसी समय त्रोत्स्की और कुछ दूसरे डिलमिलयकीन बोल्शेविक-नेताओंने अस्थायी सरकारको यह जाननेका मौका दे दिया, कि ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) १९१७ ई०को—जिस दिन कि सोवियतोंकी दूसरी कांग्रेस शुरू होनेवाली थी—विद्रोह शुरू होनेवाला है। करेत्स्की सरकारने उसे दबा देनेका निश्चय किया। बोल्शेविक पार्टीकी केन्द्रीय समितिका केन्द्र स्मोल्नी प्रतिष्ठान था। प्रतिक्रांतिके संचालकोंने योजना बनाई, कि स्मोल्नीपर अधिकार करके बोल्शेविक नेताओंको पकड़ लिया जाय।

### ३. राजधानीपर अधिकार

६ नवम्बर (२४ अक्तूबर)को एक खुली मोटर लारीपर सरकारपक्षी कादेतोंकी टुकड़ी ‘रवोची-पुत’ (कमकरपथ)की नई कापीको जल करनेके लिये उसके आफिसमें पहुंची—‘ग्रावदा’ उस समय डमी नामसे निकल रही थी। खबर लगते ही क्रांतिकारी सैनिक एक सशस्त्र कारमें वहां पहुंच गये, और उन्होंने कादेतोंको भागनेके लिये मजबूर किया। ‘रवोची-पुतमें’ उस दिन “हमें क्या चाहिये”के हेडिंगसे स्तालिनका एक लेख उपा था, जिसमें कहा गया था—“अब वह समय आ गया है, जब कि और देरी करना क्रांतिके लिये खतरनाक होगा। जमींदारों और पूँजीपतियोंकी वर्तमान सरकारकी जगह हमें मजदूरों और किसानोंकी सरकारको अवश्य कायम करना है।” अगले दिन सोवियतोंकी कांग्रेसके उद्घाटनके शुरू होते ही कार्रवाई करनेका निश्चय करके क्रांतिकारी सैनिकोंको तुरन्त विद्रोह करनेकी हिदायत दी गई। ६ नवम्बर (२४ अक्तूबर)के सवेरे क्रांतिकारी सैनिक समितिने अपनी सैनिक टुकड़ियोंको कार्रवाईकी तैयारीके लिये आज्ञा दे दी, और यह भी, कि राजधानीकी ओर आनेवाली हर एक सैनिक टुकड़ीपर निगाह रखी जाय। उसने वास्तिक नौमैनिक ब्रेडेके युद्धपोतों और नौमैनिकोंको मददके लिये बुलानेका भी निश्चय कर लिया, और हेल्सिंकीमें वास्तिक नौमैनिक ब्रेडेकी सोवियतोंकी केन्द्रीय समितियोंको पुराने मकेनके अनुसार तार दे दिया—“नियमांको भेजो”, जिसका अर्थ था विद्रोह आरम्भ हो गया, पोतों और आदमियोंको भेजो। ६ नवम्बरको ही एक और भी जवर्दस्त सैनिक शक्ति क्रांतिकी सहायताके लिये राजधानीके भीतर प्रविष्ट हुई, जब कि लेनिन मजदूरके भेसमें चेहरा बांधे, एक साथीके साथ स्मोल्नीमें पहुंचे। स्मोल्नीकी रक्षाके लिये पूरा इन्तिजाम कर लिया गया था, क्योंकि वही वास्तिक प्रधान संचालकमण्डल, क्रांतिके दिमागका केन्द्र था।

उसी दिन पीतर-ग्रो-ग्राउके मिलके हथियारग्वानेने हथियार लेकर कितने ही सैनिक बोल्शे-

विकोकी तरफ चले आये थे। आधी रातसे थोड़ी देर बाद केन्द्रीय टेलीफोन-आफिस, राज्यबैंक, बड़ा डाकखाना, सभी रेलवे-स्टेशन और मुख्य सरकारी कार्यालय बोल्शेविक क्रांतिकारियोंके हाथमें थे। क्रांतिकारी सैनिक समितिने आज्ञा दी, कि सैनिकपोत (कूजर) आरौरा नेवामे ऊपरकी ओर बढ़कर हेमन्त-प्रासादके पास जाये। आरौराके कमांडरने यह कहकर हुक्म माननेसे इन्कार किया, कि नेवा नदीमें पानी पर्याप्त नहीं है। इसपर नौसैनिकोंने थाह लिया, तो पानी काफी गहरा देखा। उन्होंने कमांडरको गिरफ्तार कर लिया और वह युद्धपोतको अस्थायी सरकारके अंतिम शरण-स्थान जारके भव्य महल हेमन्त-प्रासादके पास ले गये। आरौराकी तोपें अब उस प्रासादकी ओर मुह किये तैयार थीं। विद्रोह पहलेसे बनाई हुई सूक्ष्म योजनाके अनुसार चल रहा था। ७ नवम्बर (२५ अक्टूबर)के ९ बजे सबेरे विद्रोही पलटनोंने हेमन्त प्रासादकी ओर जानेवाले सभी रास्तोपर अधिकार कर लिया। अस्थायी सरकारका मन्त्रिमंडल उस वक्त प्रासादमें अपनी बैठक कर रहा था। अब साफ मालूम हो गया, कि अस्थायी सरकारकी मददके लिये एक भी सैनिक टुकड़ी नहीं है। करेन्स्कीको कसाकोने सहायता देनेका वचन दिया, किन्तु वह रेडक्रासकी नर्सका भेस बना उसी दिन सबेरे युक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी झंडेवाली एक मोटरपर बैठकर राजधानीसे भाग गया।

७ नवम्बर (२५ अक्टूबर)के १० बजे क्रांतिकारी सैनिक समितिने अस्थायी सरकारके उलट देनेकी घोषणा की। यह घोषणा लेनिनने तैयार की थी, जिसमें लिखा था—

“अस्थायी सरकार उलट दी गई। राज्यशक्ति पेत्रोग्रादके कमकर-सैनिक-प्रतिनिधियोंकी सोवियत और क्रांतिकारी सैनिक समितिके हाथमें चली गई। वही पेत्रोग्रादके सर्वहारा और सैनिकोंकी मुखिया है।

“जनताके इस सघर्षके उद्देश्य निम्न हैं—तुरन्त ही जनतात्रिक-सधिका प्रस्ताव रखना, जमींदारीको खतम करना, उत्पादनपर कमकरोका अकुश स्थापित करना और सोवियत सरकारका निर्माण करना।

“मजदूरो, सिपाहियों और किसानोंकी क्रांति जिन्दाबाद।”

उसी दिन पेत्रोग्राद सोवियतकी एक खास बैठक हुई, जिसमें लेनिन भी उपस्थित थे। लोगोंने बड़ी गर्मागर्म तालिया बजाकर अपने नेताका स्वागत किया। लेनिनने इस बैठकमें भाषण देते हुए कहा—“साथियों! बोल्शेविक जिसकी अवश्यकताके बारेमें बराबर कहते थे, वह मजदूरो और किसानोंकी क्रांति हो गई। अबसे रूसके इतिहासमें एक नया अध्याय शुरू हो रहा है। यह क्रांति, तीसरी रूसी क्रांति, अन्तमें समाजवादके विजयकी ओर ले जायगी।”

पेत्रोग्राद सोवियतने प्रस्ताव पासकर क्रांतिका स्वागत किया। इस समयतक हेमन्त प्रासाद छोड़कर सारा पेत्रोग्राद-नगर बोल्शेविकोंके हाथमें था। आज ही सोवियतोंकी कांग्रेस शुरू होनेवाली थी, लेकिन उसके शुरू होनेसे पहले ही हेमन्त-प्रासाद पर अधिकार करनेके लिए लेनिनने हुक्म दिया था। अस्थायी सरकारको तुरंत आत्मसमर्पण करनेके लिए अल्टीमेटम दिया गया, लेकिन उसने ऐसा करनेसे इन्कार कर दिया। इसपर ९ बजे शामको हेमन्त-प्रासादपर आक्रमण शुरू कर दिया गया। पूर्व सकेतके अनुसार पीतर-और-पाल किलेसे एक तोप दागी गई। आरौराने कुछ गोले चलाये। इसके बाद बोल्शेविकोंके नेतृत्वमें नौसैनिकों और सैनिकोंने जारोंके हेमन्त-प्रासादपर हल्लाबोल दिया। अस्थायी सरकारको बाहरसे मदद मिलनेकी आशा थी, लेकिन वह कहा आनेवाली थी?

सोवियतोंकी द्वितीय कांग्रेस स्मोलनीमें उस दिन (७ नवम्बर) पौने ११ बजे रातको शुरू हुई। हेमन्त-प्रासादके ऊपर इस वक्त भी हमला हो रहा था। कांग्रेसमें भाग लेनेवाले कितने ही प्रतिनिधि सघर्षमें भाग लेकर यहां आये थे। कांग्रेस शुरू होते समय मेन्शेविकों, दक्षिणपक्षी समजवादी क्रांतिकारियों और कुछ दूसरे प्रतिनिधियोंने कहा, कि सैनिक और बिना पार्टीवाले प्रतिनिधि कांग्रेस छोड़कर चले चले, लेकिन उनका साथ देनेवाले मुट्ठीभर आदमी थे। उनके हाल छोड़नेके समय रोप पकट करते हुए प्रतिनिधियोंने चिल्लाकर कहा—‘कोर्निलोफी’, ‘भगोडे’। बारहवीं मेनाके एक प्रतिनिधिने उठकर

कहा—“हमें अधिकार अपने हाथमें लेना है। जाने दो इन्हें। सेना उनके साथ नहीं है।”

रातके २ बजकर १० मिनटपर हेमन्त प्रासादको बोल्शेविकोंने दखल कर लिया और अस्थायी सरकारके मंत्रियोंको गिरफ्तार करके पीतर-और-पालके किलेमें बंद कर दिया।

आधी रातके बाद (अब ८ नवम्बरकी तारीख हो गई थी) ५ बजे सोवियतोंकी कांग्रेसने घोषित किया, कि सारी शक्ति सोवियतोंके हाथमें आ गई। तेरह दिन पीछे होनेके कारण पुराने रूसी पचासके अनुसार उस दिन २५ अक्तूबरका महीना था, इसलिए इसे अक्तूबर-क्रांति कहते हैं। ८ नवम्बरकी शामको ८ बजकर ४० मिनटपर कांग्रेसकी दूसरी बैठक हुई, जिसमें लेनिनने शांति-घोषणा, भूमि-घोषणा पढ़ी। शांतिकी घोषणामें कहा गया था—युद्धमें पड़ी सभी जनता और उनकी सरकारें न्यायोचित जनतांत्रिक सुलहनामा करें, न किसीकी जमीन छीनी जाय, न किसीसे हरजाना मागा जाय, और सभी उत्पीडित जातियोंको आत्म-निर्णयका अधिकार मिले। भूमिकी घोषणा द्वारा किसानोंको पंद्रह करोड़ हेक्टर (प्रायः चालीस करोड़ एकड़) जमीन दी गई और पचास करोड़ सुवर्ण-रुबल वार्षिक मालगुजारीसे मुक्त कर दिया गया। इस घोषणाने किसानोंको बतलाया, “गावोंमें अब कोई जमींदार नहीं रह गया”। उसी दिन ढाई बजे सबेरे कांग्रेसने प्रथम सोवियत सरकार जन-कमीसरोकी परिपदके कायम होनेकी सूचना दी, जिसके अध्यक्ष व्लादिमिर इलिच (उलियानोफ) लेनिन बनाये गये और जातियोंके जनकमीसर (मंत्री) का पद योसेफ विसारियोन-पुत्र स्तालिन हुए। सोवियतमें दूसरे विश्वयुद्धके कुछ समय बादतक भी मंत्रियोंको जनकमीसर कहा जाता था। पहली सोवियत सरकारके सभी सदस्य बोल्शेविक थे, दूसरोंको अभी उतना साहस भी नहीं था, कि उसमें शामिल हो, लेकिन पीछे वामपक्षी समाजवादी क्रांतिकारी भी मंत्रिमंडलमें सम्मिलित हुए। ९ नवम्बर (२७ अक्तूबर) को ५ बजे सबेरे कांग्रेसकी बैठक समाप्त हुई, और लोगोंने “क्रांति चिरजीव”, “समाजवाद चिरजीव” के गगनभेदी नारे लगाये।

करेन्स्कीने हेमन्त-प्रासादमें भागकर कसाक-जेनरल क्रास्नोफसे मिलकर फिर अधिकार प्राप्त करनेकी कोशिश की। क्रास्नोफने १० नवम्बर (२८ अक्तूबर) को पेत्रोग्रादके नजदीक जास्कोयेसेलो (आधुनिक पुश्किन) पर अधिकार कर लिया, लेकिन राजधानीके कमकर भला यह क्यों होने देने लगे। वह बड़ी तादादमें क्रांतिकारी सैनिकोंके साथ लड़नेके लिए गये। जिस समय क्रांतिकारी उधर फरे हुए थे, उसी समय १० नवम्बरकी रातको क्रांति-विरोधियोंने तह्ता उलटनेके लिए पड़्यत्र किया। लेकिन उन्हें सफलता नहीं हुई। १३ नवम्बरको क्रास्नोफके कसाको-को पुलकोवोके पास क्रांतिकारियोंने बुरी तरहसे हराया, और उससे भी ज्यादा वह कसाक सैनिकोंको समझानेमें सफल हुए, कि क्रांतिका विरोध करना अपने हितोंका विरोध करना है। कसाको-ने अपने जेनरलकी आज्ञा माननेसे इन्कार कर दिया। गतिचिनामें सोवियत नौसैनिकोंके प्रतिनिधियोंने कसाकोसे मिलकर उन्हें कहा, कि अगर तुम सोवियतोंमें लड़ना बंद कर दो, तो तुम्हें घर जाने की छुट्टी मिल जायगी।

पेत्रोग्रादके विद्रोहकी खबर सुनकर ७ नवम्बरको ही मास्कोकी बोल्शेविक पार्टीकी कमिटीने भी विद्रोह आरम्भ कर दिया। उसी रातको क्रैमलिनके विद्रोही सैनिकोंको विद्रोह करनेकी आज्ञा देनेकी जगह वहाकी क्रांतिकारी सैनिक समितिके नेताओंने क्रांति-विरोधी सैनिक हेउक्वाटर्ससे समझौता करनेकी बातचीत शुरू की। ८ नवम्बरकी शामको मास्को की बोल्शेविक पार्टीकी कमिटीने समझौतेकी बातचीत बंद करनेकी माग की। इस सुस्तीके कारण क्रांति-विरोधियोंको मौका मिल गया और उन्होंने ९ नवम्बरको मास्को नदीके ऊपरके सभी पुलोंको अपने अधिकारमें कर लिया। इसके बाद क्रैमलिनको भी उन्होंने घेर लिया। देरी करना गड़ती थी। क्रांतिकारी शक्तियां मास्कोमें भी संगठित और सशक्त थीं। १३ नवम्बरको मास्कोके बड़े डाकघाने, केन्द्रीय तारघर और रेलवे स्टेशनोपर क्रांतिकारियोंका अधिकार हो गया। दो दिन बाद उन्होंने क्रैमलिनपर गोलाबारी शुरू की। १५ नवम्बरको ९ बजे शामको ६ दिनकी लड़ाईके बाद क्रांति-विरोधियोंने हार खाकर आत्मसमर्पण किया और उनी दिन सारी शक्ति मास्को नवोपगत क्रांतिकारी सैनिक समितिके हाथमें चली आई।

मास्को और पेत्रोग्रादमे बोलशेविक सरकारके स्थापित हो जानेपर अब और जगहोमे भी क्रांतिका वेग जोरसे फैला। क्रांति-विरोधी हजार कोशिश करते रह गये, लेकिन वह बोलशेविकोकी बाढ़ रोक न सके। फर्वरी-क्रांतिकी तरह पुराने शासनयंत्रके बलपर बोलशेविक शासन नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने सबसे पहले उस यंत्रमें परिवर्तन किया। पुराने शासन-सबधी बड़े-बड़े अफमरोका स्थान मोवियतो और उनके द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियोने लिया, और शासनयंत्रके भीतर रहकर पड़्यत्र करनेका मौका पुराने स्वार्थके लिए नहीं रह गया। १२ नवम्बरको सोवियत सरकारने घोषित करके मजदूरोके लिए आठ घटेका कामका दिन निश्चित कर दिया। २७ दिसम्बरको सभी निजी बैंकोको राष्ट्रीय बनाकर उन्हें राज्यबैंकमे मिला देनेकी सरकारी घोषणा निकली।

सशस्त्र विद्रोहके समय स्मोल्नी पार्टीका तथा सैनिक-असैनिक शासनका केन्द्र रही। अब मंत्रालयोको अपने-अपने कामको और सुव्यवस्थित रीतिसे करनेके लिए पुराने कार्यालयोमे परिवर्तित कर दिया गया। २८ नवम्बरको जनकमीसर परिपद् (मन्त्रिमंडल)ने आज्ञा दी, कि सभी मंत्रालय अपनी-अपनी इमारतोमे चले जाय और मंत्री केवल शामके वक्त स्मोल्नीमे एकत्रित हो।

१५ नवम्बर १९१७ ई०को वह महत्वपूर्ण घोषणा की गई, जिसके द्वारा जारके राज्यमे रहनेवाली सभी जातियोको बिना किसी भेदभावके समानाधिकार दिया गया --

(१) रूसमे रहनेवाली सभी जातिया समानता और पूर्ण प्रभुत्व रखती हैं, (२) रूसकी जातियोको स्वतंत्रतापूर्वक आत्मनिर्णय तथा अलग होकर अपना स्वतंत्र राज्य कायम करनेका अधिकार है, (३) किसी जाति या जातीय धर्मके विशेषाधिकार या हस्तक्षेपको उठा दिया जाता है, (४) रूसकी भूमिमें रहनेवाली अल्पसंख्यक जातियो और वंशिक समूहोको स्वतंत्र विकासका अधिकार है।

इस घोषणाने जारशाही साम्राज्यकी सभी जातियोको एक सूत्रमे बांध दिया, उनके भीतर फूट पैदा करनेके सारे प्रयत्न सदाके लिये निकम्मे हो गये।

## ४ दास जातियोकी मुक्ति

मध्य-एसियामे क्रांतिके बारेमे आगे हम कहनेवाले हैं। यहा इतना जान लेना चाहिये, कि जिस समय पेत्रोग्रादमें सशस्त्र विद्रोहकी सफलता और उसके बादके विरोधोको हटानेके लिये सघर्ष हो रहा था, उस समय ताशकन्दके बोलशेविक भी चुप नहीं थे। हमें मालूम ही है, कि जारशाही मध्य-एसियाका शासनकेन्द्र ताशकन्द था। १० नवम्बर १९१७ ई०को बोलशेविकोको दबानेके लिये कसाक और कादेतोने ताशकन्द सोवियतको घेरकर वहाकी क्रांतिकारी समितिके सदस्योको पकड़ लिया। इसकी सूचना कारखानेके भोपूको बजाकर दी गई, इसपर तीन हजार हथियारबन्द रूसी और उज्बेक मजदूरोने बोलशेविक वदियोको छुड़ानेके लिये युद्ध छेड़ दिया। कसाक और कादेत ताशकन्दके किलेमें जमा थे, जहासे नगरपर प्रहार करनेके लिये वह हथियारबन्द मोटरें भेजते थे। क्रांतिकारी कमकरोने रास्तेको रोकनेके लिये जगह-जगह बाड़ें खड़ी कर दी थी। चार दिनतक लड़ाई होती रही। खबर मिलनेपर आसपासके गावोके उज्बेक और किर्गिज मजदूर भी मदद करनेके लिये आ गये। जवर्दस्त सघर्षके बाद १३ नवम्बरको राजशक्ति सोवियतोके हाथमे चली गई, क्रांतिकारी समितिके सदस्य जेलसे निकाल लिये गये, और उसी दिन तुर्किस्तानकी सोवियत सरकार ताशकन्दमें स्थापित हुई। सोवियत शक्तिको मध्य-एसियासे खतम करनेके लिये पूजीवादके पक्षपाती, राष्ट्रीयतावादी मध्य-एसियाई तथा रूसी क्रांति-विरोधी एक हो गये। अग्रेजोने भी उन्हें मदद पहुंचाई। राष्ट्रीयतावादियोने नवम्बर १९१७ ई०में खोकन्दमे अपनी सरकार कायम की। उनका नाम रक्खा "खोकन्द स्वशासन"। इसीने मध्य-एसियामें गृहयुद्ध आरम्भ किया। फर्वरी १९१८ ई०मे खोकन्दकी सरकारको तुर्किस्तानके लाल गारदने खतम कर दिया। लाल गारदमे जहा नगरके रेलवे और कारखानोके रूसी मजदूर थे, वहा बहुत-से उज्बेक, किर्गिज, कजाक और तुर्कमान कारीगर और किसान भी थे।

बोल्शेविक-क्रातिने जारशाही रूसके भीतर ही अपने प्रभावको नहीं दिखलाया, बल्कि सुदूर बाह्य मंगोलियाके लोगोको भी समाजवादके पथपर आरुढ किया। जारशाही सेनाके भगोडे जेनरलोंने वहापर अड्डा जमाकर क्रांतिका विरोध करनेका मनसूबा बाधा था, लेकिन उन्हें उसमें विफल होना पडा।

दूसरे पूजीवादी और सामन्तशाही सरकारोकी तरह जारशाहीके भी शासनका स्रोत नीचे नहीं ऊपर था। जार सर्वेसर्वा था। वह अपनी ओरसे महाराज्यपाल और राज्यपाल नियुक्त करता, जो अपने प्रदेशके छोटे जार होते। इसकी जगह बोल्शेविक-क्रातिने शासनयन्त्रके ढाँचेको सोवियतोपर आधारित किया। सोवियतका अर्थ वही है, जो हमारे यहा पचायतका, यदि अन्तर है, तो यही कि सोवियत प्रभुत्व-सम्पन्न पचायत है। ग्रामोके शासनका काम ग्राम-सोवियतोने लिया, और जिलोके शासनका काम वयस्क मताधिकार द्वारा निर्वाचित जिलाकी सोवियतोने, इसी तरह प्रदेशोके शासनका काम वहाकी सोवियतोने। अपने कामोको सफलतापूर्वक करनेके लिये, तथा जनताको क्रियात्मकरूपसे यह दिखलानेके लिये, कि सरकार उनकी है, अब जारशाही गुर्वनियोका अनुकरण नहीं किया जा सकता था। उसकी जगह क्रातिके दो साल ही बाद १९२० ई०के आरम्भमें रूसका विभाजन जातियोके अनुसार हुआ, और १९२०-२२ ई०के बीचमें इस तरहके कितने ही स्वायत्त सोवियत समाजवादी गणराज्य कायम किये गये, जिनके सघको रूसी सोवियत सयुक्त समाजवादी गणराज्य कहा जाने लगा। इन स्वायत्त गणराज्योमें वाश्किर भी था, जिसकी स्थापना मार्च १९१९ ई०में हुई थी। रूसी जमींदारो और कुलकोने जारशाहीके जमानेमें वाश्किर-किसानोसे जो जमीन छीन ली थी, अब उसके मालिक वाश्किर किसान हो गये। अभीतक वाश्किर अधिकतर घुमन्तू थे, लेकिन अपना खेत मिल जानेपर अब वह अपने गाव बसाने लगे। उनमें शिक्षाका प्रचार भी बढ़ने लगा। बोल्शेविकोने अच्छी तरह समझ लिया, कि सोवियत शासनकी मजबूतीके लिये यह जरूरी है, कि लोग लिखना-पढना जानें। तभी वह बोल्शेविकोके उद्देश्यको समझ पायेगे, और मुल्लो तथा क्रातिविरोधी सत्ताधारियोके हाथमें नहीं खेलेगे। इसीलिये उन्होंने मातृभाषाको शिक्षाका माध्यम स्वीकार करके उसीमें लोगोको जल्दी-से-जल्दी शिक्षित बनानेका प्रयत्न किया। अपनी भाषाको सीखनेकी अवश्यकता नहीं थी, उसके लिये जरूरत थी लिपिकी। सोवियत रूसके भीतरकी अविकाश भाषायें अभी न अपनी लिपि रखती थी, न लिखित साहित्य। ऐसी भाषाओको रोमन लिपिमें पहले लिखा जाने लगा, पीछे (१९४१ ई० में) लोगोने रूसी लिपि अपना ली। शिक्षाकी वृद्धि कितनी जल्दी हुई, इसके लिये इतना ही कहना काफी है, कि प्रायः पच्चीस लाखकी आबादीवाले वाश्किर गणराज्यमें १९२४ ई०में ही दो हजार स्कूल खुल चुके थे।

१९२० ई०के वसन्तमें वाश्किरोके पडोसमें तारतारोका स्वायत्त सोवियत गणराज्य कायम हुआ। अबतुवर १९२० ई०में कजाकस्तानकी सोवियतोकी प्रथम कांग्रेसमें किर्गिज स्वायत्त गणराज्यकी स्थापनाकी घोषणा हुई। इस प्रकार सोवियत रूस सोवियत गणराज्यो-के सघका रूप धारण करने लगा। पहले रूसके अतिरिक्त उक्रेन-जैसे गणराज्य कायम हुये थे। दिसम्बर १९२० ई०में उक्रेन सोवियत समाजवादी गणराज्य और रूसी सोवियत सयुक्त समाजवादी गणराज्यने आपसमें एक सैनिक और आर्थिक मित्रताकी संधि की। इसी तरहकी संधि बेलोरूमिया, आजुर्बाइजान, अर्मेनिया और गुर्जोके गणराज्योमें भी हुई। तबतक निम्न की मान स्वतंत्र सोवियत गणराज्य बन चुके थे —

(१) रूसी सोवियत सयुक्त समाजवादी गणराज्य, (२) उक्रेनी सोवियत समाजवादी गणराज्य, (३) बेलोरूमि सोवियत समाजवादी गणराज्य, (४) आजुर्बाइजान सोवियत समाजवादी गणराज्य, (५) अर्मेनियन सोवियत समाजवादी गणराज्य, (६) गुर्जी सोवियत समाजवादी गणराज्य, और (७) तुर्किस्तान सो० स० ग०। इस प्रकार सात गणराज्य और कितने ही स्वायत्त गणराज्य, पांच वर्ष बादतक चलते आये। ३० दिसम्बर १९२२ ई०को सोवियतोकी प्रथम

काग्रेस हुई, जिसने निश्चय किया, कि अबसे सारे बहुजातिक राज्यका नाम सोवियत समाजवादी गणराज्य सघ रखकर उसे एक केन्द्रीय राष्ट्रका रूप दिया जाय। सभी जातियोकी समानताको अक्षुण्ण रखनेके लिये यह विधान स्वीकार किया गया, कि सोवियत ससद्के “प्रतिनिधि-सदन”में जहा सख्याके अनुसार प्रतिनिधि भेजे जाय, वहा “जातिक सदन”मे सभी स्वतंत्र गणराज्योको उनकी सख्याका कोई भी ख्याल किये बिना बराबर मख्यामे प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार है।

इस प्रकार सफल क्रांति और सफल सोवियत शासनकी स्थापनाके बाद २१ जनवरी १९२४ ई०को लेनिनका देहान्त हुआ।

### स्रोत-ग्रन्थ

- १ History of Civil War in U S S R. (2 vols, G F Alexandrov and others, Moscow 1946)
२. History of U S S R. (Ed A M. Pankratova, Moscow 1947)
- ३ La Revolution russe (4 vols, Cloude Anet, Paris 1918-20)
- ४ La reign de Raspoutine (Rodzianko, Paris 1928)
- ५ La revolution russe (Al Ular, Paris 1905)
- ६ इस्तोरिया सससर (अ म र्व्दोनिकस्, ४ जिल्द)



## उज्वेकिस्तानमें क्रांति

### १ उज्वेक जाति

उज्वेक गणराज्यका क्षेत्रफल १८८००० वर्गमील, तथा आबादी बासठ लाखमें ऊपर है। उज्वेक जाति तुर्कोंकी ही एक शाखा है। मुवर्ण-ओर्दू के मंगोल यान उज्वेकके नामपर तुर्कोंके बहुत से कबीलोंने यह नाम धारण किया। उज्वेक कबीलोंमें कितने ही कजाकोंमें भी मिलते हैं, इसलिए उज्वेको और कजाकोका पहले एक होना मिथ्य है। उज्वेकोके सबसे बड़े चार विभाग हैं—(१) उडगुर-नैमन, (२) कगली-किपचक, (३) कियात-कुग्राद, (४) नोकुस-मगित। और छोटे-छोटे विभाग मिलकर उज्वेक कबीलोंकी संख्या ९७ होती है, जिनके नाम निम्न प्रकार हैं —

उज्वेक कबीले—

- |  |                              |
|--|------------------------------|
| १. मगुत (मगित)(करशी-बुखारा, जुक मगुत, जुकअकरा) | २७. खिताई                    |
| २. मिग   | (बुखारा और करमीनाम)          |
| ३. युज   | २८. कगली                     |
| ४. किर्क                                       | २९. उज                       |
| ५. उग  | ३०. चपलेनी                   |
| ६. उगाचित                                      | ३१. चपची                     |
| ७. जठैर  | ३२. उताची                    |
| ८. मगाय (ममरकन्द और करशीके रास्तेपर)           | ३३. उपुलेची                  |
| ९. कुग्राद (करशी और शहरसब्जमें)                | ३४. जूलून                    |
| १०. येलचिन                                     | ३५. जिद (आमू-दरियापर)        |
| ११. अरगन                                       | ३६. जुयुत                    |
| १२. नैमन                                       | ३७. चिलजूयन                  |
| १३. किपचक (कताकुर्गान और समरकन्दके बीच)        | ३८. बुडमौत                   |
| १४. चीचक                                       | ३९. उएमौत                    |
| १५. यअवरत                                      | ४०. अरलत                     |
| १६. कल्पक                                      | ४१. किरैइत                   |
| १७. कर्तू                                      | ४२. उगुत                     |
| १८. वगलम                                       | ४३. कगित                     |
| १९. वमठक                                       | ४४. खलेउअत                   |
| २०. मेमारचिम                                   | ४५. मसद                      |
| २१. कतगन                                       | ४६. मेरकत                    |
| २२. कलेची                                      | ४७. वेकूत                    |
| २३. कुनेगज                                     | ४८. कुरालस                   |
| २४. बतरेक                                      | ४९. उगलान                    |
| २५. उजोय                                       | ५०. करी                      |
| २६. कवात                                       | ५१. अरबत (करशी और बुखारामें) |

५२. उलेची	७५. किरदार
५३. जूलेगन	७६. किरकिन
५४. किशलिक	७७. उलगान
५५. मेदोई	७८. गुरलेत
५६. तुर्कमान (आमू-दरिया)	७९. इगलान
५७. दुर्मेन	८०. चिलकेस
५८. ताविन	८१. उइगुर
५९. तामा	८२. अगिर
६०. रिन्दान	८३. यावू
६१. मूमिन	(बुखारा और मियानकुलमे)
६२. उइशुन	८४. नरगिल
६३. वेरोई	८५. यूजक
६४. हाफिज	८६. कहेत
६५. किनगिज	८७. नचर
६६. उइरुची	८८. कूजालिक
६७. जुइरेत	८९. बूजन
६८. बजाची	९०. शीरिन
६९. सिंहतियान	९१. बखरिन
७०. बेताश (बुखारा)	९२. तूमे
७१. यागरिनी	९३. नीकुज
७२. शुल्दुर	९४. मुगुल
७३. तुमाई	९५. कयान
७४. तलेउ	९६. तारतार

किमी-किसीके अनुसार उज्जेकोके पाच विभागोमे निम्न कबीले हैं --

#### I उइगुर चौदह--

१. उरुस	८. गाले
२. कराकुरसक	९. तुपकारा
३. चुल्लिक	१०. कारा
४. उयान	११. कराबुरा
५. कुल्दौली	१२. नोगाई
६. मिल्लेक	१३. बिलकेलिक
७. कुरतुगी	१४. दुमतनिक

#### II ओमली नौ --

१. अखताना	६. विसवाला
२. कारा	७. कराकल्पक
३. चुरान	८. कचाई
४. तुर्कमान	९. हजबेचा
५. कुउक	

#### III. कुश्तमगली नौ --

१. कुलअवी	५. चुबुरगान
२. बरमक	६. कराकल्पक-कुश्तमगली
३. कुजहुर	७. मफरबीज
४. कुल	८. दिलवेरी

## ९. चचकली

## IV. यकतमगली सात —

१. तर्तगू

५. उयुगली

२. अगामइली

६. वूकजली

३. इशिकली

७. कैगली

४. किजिनजिली

## V. किर पाच --

१. जुजिली

४. बलिकली

२. कूमउली

५. कूवा

३. तिम

इतिहासकार वाम्बेरीने उज्वेकोके वर्त्तास कबीलोको मुख्य माना है, जो कि निम्न प्रकार है —

१. अकवेत

१७. जगताई

२. अचमइली

१८. जेलेर

३. अलचिन

१९. ताज

४. अज

२०. इशिकिली

५. इशिकिली

२१. तिकिश

६. उडगुर

२२. दुमे'न

७. उगुन

२३. नैमन

८. कनली

२४. नोक्म

९. कराकुरमक

२५. नोगाई

१०. कजिगली

२६. बागुर्ल

११. कपचक

२७. बलगली

१२. कुग्राद कीयेत

२८. विरकुलक

१३. कूलन

२९. मगित (ओगुत)

१४. केतेकेमेर

३०. मिग

१५. केनेगुज

३१. मितन

१६. ग्विताई

३२. सायत

इन कबीलोके नामोको देखनेसे मालूम होगा, कि इनमें उमुन-जैसे शक कबीले, कुग्राद-जैसे मगोल, कपचक-जैसे पुराने तुर्क, ग्विताई-जैसे चीनी, बर्मक-जैसे खुरासानी कबीलो और जातियोका भी नाम है। इसीलिये तुर्की अशकी प्रधानता रहते भी उज्वेक जातिमे बहुवसी दूसरी जातियोका सम्मिश्रण है। उनकी भाषामे व्याकरणका ठाचा तुर्की होने भी शब्दकोष और मुहावरे अधिकतर ईरानी (फारसी) है।

उज्वेक जातिका निर्माण—उज्वेको, तुर्कमानो तथा किर्गिजो का ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ —

काल	सिर-उपस्थका	सोन्द	तुखार	ख्वारेज्म
ई० पू० १०००००		मुस्तेर	मुस्तेर	
" ५००००		मदडेन		
" ४०००	फिनो-द्रविड	फिनो	फिनो-द्रविड	फिनो-द्रविड
" ३५००	"	"	"	"
" ३००० नवपाषाण	शक-आर्य-द्रविड	शकाय-द्र०	शकाय-द्र०	शकाय-द्र०
" २५००	शक	आर्य	आर्य	आर्य
ई० पू० १५०० पिन्गल	शक	मोग्दी	ईरानी	ईरानी
" ७००	शक	मोग्दी	ईरा०	शक

ई०पू०	५५०	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
"	३२६	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
"	२०६	शक	सोग्दी	ईरा०	शक
"	१३०	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
"	१००	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०	शक
ईसवी	१०० कुपाण	हूण-शक	सो०-शक	ईरा०-शक	शक
"	४२५ हेयता	हूण-कगली	सो०-शक	ईरा०-शक	हेपताल-कग
"	५५७ तुर्क	तुर्क-कगली	सो०-तुर्क	ईरा०-गक	सो०-तुर्क
"	६७३ अरब	तुर्क	सो०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	सो०-तुर्क
"	८९२ सामानी	तुर्क	ईरानी-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
"	१२२० मंगोल	तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०-तुर्क
"	१५००	तुर्क (उज्बेक)	उज्बेक-ईरा०	ईरा०-उज्बेक	उज्बेक-ईरा०
"	१७४७	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
"	१८६५	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०
"	१९१७	उज्०-कजाक	उज्०	उज्०	उज्०

## २ उज्बेकभूमि

वर्तमान उज्बेकिस्तान खोकन्द, खीवा (ख्वारेज्म), और बुखारा रियसतोकी भाग सम्मिलित है, जिनमें बुखाराका तो करीब-करीब सारा ही भाग उज्बेकिस्तानमें है। उज्बेकोकी वर्तमान राजधानी ताशकन्द विलकुल एक छोरपर कजाकोकी भूमिके पास पडती है, लेकिन रुसियोंके आनेसे पहले ही वह प्रसिद्ध नगर उज्बेकोकी भूमिके साथ सबद्ध था। तुर्किस्तानकी राजधानी बननेपर जहा वहा रुसी काफी सख्यामें आये, वहा एसियाइयोमें सबसे अधिक उज्बेकोकी आवादी थी, इसलिये वह पहले तुर्किस्तान गणराज्य, फिर उज्बेकिस्तान और ताजकिस्तानके सम्मिलित उज्बेक गणराज्य और अन्तमें उज्बेकिस्तानकी राजधानी रह गया। मध्य-एसियाके समरकन्द और बुखारा-जैसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर भी उज्बेकिस्तानमें ही पडते हैं।

## ३ क्रांतिकी लपट

रुसमें फरवरी-क्रांति होनेपर भी उस समय बूज्वा रुसी शासकोने मध्य-एसियाकी जातियों—उज्बेको, कजाको, किर्गिजो, ताजिको, तुर्कमानो—के ऊपर होते आये जारशाही शासनमें कोई परिवर्तन करनेकी अवश्यकता नहीं समझी। अप्रैल १९१७ ई०में शचेप्किनकी अध्यक्षतामें एक तुर्किस्तान समिति बनाकर भेजी गई, जिसको तुर्किस्तानके मूबेके शासनका पूरा अधिकार दे दिया गया था। जब पेत्रोग्रादमें अस्थायी सरकारमें थोडा और परिवर्तन हुआ, और वैधानिक जनतात्रिकोकी जगहपर मेन्शेविकोकी प्रधानता हुई, तब तुर्किस्तान कमेटीमें नाममात्रका ही परिवर्तन किया गया। यह कमेटी पुराने जारशाही अफसरो और सफेद क्रांति-विरोधियोंके प्रभावको कम करना नहीं चाहती थी। क्रांतिका एक फल यह हुआ, कि मार्च १९१७ ई०से मध्य-एसियाइयोमें शूरा-इस्लामिया और शूरा-उलेमा जैसे धार्मिक या अर्धधार्मिक राजनीतिक संगठन अस्तित्वमें आये। उज्बेक राष्ट्रीयतावादी मध्यवर्गने शूरा-इस्लामिया नामकी पार्टी स्थापित की थी, और मुल्लाओने हमारे यहाकी जमायतुल-उलमाकी तरह उलमाओ (धर्माचार्या) की एक पार्टी खडी की थी, जिसके पोपक बडे-बडे जमींदार और दूसरे सामन्त थे। दोनों सस्थाओने अस्थायी सरकारके प्रति अपनी भक्ति कई बार प्रकट की थी।

तुर्किस्तान-कमेटी क्रांतिके और युद्धके कारण उठ खडी हुई समस्याओमेंने किसीको भी हल करनेमें समर्थ नहीं हुई। एसियाई जातियोंके ऊपर पहलेकी तरह ही शासन और जत्याचार होता रहा। किसानोकी अवस्था वैसी ही रही। कारखानेके मजदूरोकी ओर भी ध्यान नहीं दिया

गया। १९१७ ई०के मितम्बरमे तुर्किस्तानके मजदूरोको अब भी बारह घंटे काम करना पड़ता था, जब कि उसमें वह आठ घंटेका कर दिया गया था। तुर्किस्तान-कमेटीको आगे बढ़नेकी कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि इस इलाकेमे १९१७ ई०के अन्ततक बोल्शेविकोंके अपने स्वतंत्र संगठन नहीं थे। ताशकन्द, ममरकन्द, पेरोव्स्की (किजिल ओर्दा), नवीन-बुखारा आदिमें जो बोल्शेविकोंके भिन्न-भिन्न गिरोह थे, वह रूसी समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टीसि सम्बद्ध थे। इस पार्टीकी द्वितीय स्थानीय कांग्रेस २१-२७ जूनको ताशकन्दमे हुई थी, जिसमे मेन्शेविकोंकी प्रधानता थी, जिसके कारण कांग्रेसने अस्थायी सरकारमे अपना विश्वास प्रकट किया। ताशकन्दमें बोल्शेविकोंका अपना कोई पत्र नहीं था, इसलिये समाजवादी जनतांत्रिक मजदूर पार्टीके अखबार “रबोचेये देलो” (मजदूरोंका कार्य) पत्रमें ही उन्हें भी अपने विचारोंको प्रकट करना पड़ता था, जिन्हें मेन्शेविक किन्हीं ही बार छापनेसे इन्कार कर देते थे। बोल्शेविक-नेता स्वेर्दलोफने ओरेनबुर्गके बोल्शेविकों द्वारा तुर्किस्तानके बोल्शेविकोंके पास कभी-कभी सवय स्थापित करनेकी कोशिश की, लेकिन उसमें बहुत सफलता नहीं हुई। लेकिन जब मध्य-एशियाके लोगोंको मालूम हुआ, कि रूसमे बोल्शेविक क्या कर रहे हैं, तो वहाँके लोगोंमें भी बोल्शेविकोंका प्रभाव जल्दीसे बढ़ने लगा। ई० ५० वायुष्किनके नेतृत्वमे खोकन्दमें बोल्शेविकोंकी एक मजबूत जमात कायम हो गई—वायुष्किन १००३ ई०में ही बोल्शेविक था, और खोकन्दके मजदूर-मैनिंग प्रतिनिधियोंकी मोवियतका उस समय अध्यक्ष था। ममरकन्दमे समाजवादी जनतांत्रिकोंके भीतर रहते हुये बोल्शेविक बड़ी तत्परतासे काम करने लगे। अक्तूबर (बोल्शेविक) क्रांतिके समय नवीन बुखारामे पोल्तरोत्स्कीके नेतृत्वमे एक बोल्शेविक गिरोह काम करने लगा था। पोल्तरोत्स्की १९१८ ई०में समाजवादी क्रांतिकारियोंके हाथ मारा गया, जिनका मुखिया करेन्स्की था।

ताशकन्दके बोल्शेविकोंका नेता अ० पेरिगिन रेलवे मजदूर, और न० शूमिलोफ कारखानेमें मिस्त्री था। शूमिलोफ १९१८ ई०में ताशकन्द मोवियतका अध्यक्ष बनाया गया।

इन प्रकार हम देख रहे हैं, कि तुर्किस्तानके बोल्शेविक अधिकतर रूसी थे, लेकिन उनको वहाँके मुसलमान मजदूरोंके “इत्तिफाक” (लीग)का सहयोग प्राप्त था। स्कोवेलेफमे मार्च १९१७ ई०में फरगानाके मुसलमानोंका प्रथम मजदूर संगठन स्थापित हुआ था—मध्य-एशियाई लोगोंकी र्क्या। मुसलमान कहा करते थे। फरगानाके बाद इस तरहके संगठन ताशकन्द, ममरकन्द, खोकन्द, नर्गिलान, कत्ताकुर्गान, खोजन्द (आधुनिक लेनिनावाद) तथा दूसरे नगरोंमे भी स्थापित हुये। १०१६ ई०में जारशाहीने बहुतसे एसियाइयोंको मजदूर-सेनामे भर्ती करके युद्धपक्षिके पीछे काम करनेके लिये भेजा था। यही मजदूर जब लौटकर तुर्किस्तान आये, तो रूसमे बोल्शेविकोंका काम देखे होनेके कारण उन्होंने यहाँ भी “मजदूर-इत्तिफाक” (मजदूर लीग)को संगठित करनेकी घोषणा करने हुये अपने उद्देश्यके बारेमे कहा—“तातार (मगोलायित) और सर्त (ताजिक) गरीब किसानों और मजदूरोंका एक परिवार बनाना है, जो कि पूँजीवादके खिलाफके संघर्षमें मजदूरवर्गका समर्थन करेगा और मजदूर जनतांत्रिक मिद्वान्तोंके आधारपर नये समाजके निर्माणमे सहायता करेगा।” इस उद्देश्यमे ही मालूम हो जायगा, कि मध्य-एशियाके देहकान (किमान) और मजदूर रूसमे रहते वस्तु बोल्शेविक पार्टी और वहाँके मजदूरोंके सम्पर्कमें आकर कितने प्रभावित हुये थे। आरम्भमें इत्तिफाकी दलवाले मेन्शेविकोंके जवर्दस्त प्रभावमे रहे, लेकिन जल्दी ही उन्हें मालूम हो गया, कि मेन्शेविका और जारशाही साम्राज्यवादियोंमे बहुत अन्तर नहीं है, इसलिये वह बोल्शेविकोंके नजदीक जाने लगे। स्थानीय सरकारी मस्थाओं और मविधान-महाके चुनावोंके समय उन्होंने बोल्शेविकोंसि मिश्रकर अपने उम्मीदवार चूँटे किये। शर-इस्लामिया और उलमाके साथ इत्तिफाकियोंका तय्य दिन-पर-दिन बढ़ता गया। मुस्लिम और मुस्लिम साम्प्रदायिक नेताओंने हर तरहसे लोगोंको यह समझानेकी कोशिश की, कि मुसलमान-मुसलमानमे कोई अन्तर नहीं, सभी मुसलमानोंको एक हो जाना चाहिये। लेकिन मध्य-एशियाके मजदूर-किसानोंको यह समझनेमें देर नहीं लगी, कि उत्तरी मस्लट इस्लाममे नाग लगानेवालोंके साथ रहनेमें नहीं, बल्कि बोल्शेविकोंका साथ देनेमें है। मितम्बर १०१७ ई०में मजदूरों बढाने और आठ घंटा काम करनेकी मागके लिये

ताशकन्द, समरकन्द, नमगान, अन्दिजान, कन्ताकुर्गान और नवीन-बुखाराके मजदूरोंने हड़तालें कीं। देहातमें किसानोंने भी जमींदारोंके विरुद्ध सघर्ष छेड़ दिया।

रूसमें फरवरी-क्रांतिके होनेके बाद तुर्किस्तान-प्रदेशमें उतना भी परिवर्तन नहीं किया गया, जितना कि रूसके पासवाले इलाक़ोंमें। सेना और शासनमें अब भी यहां जारशाही जमानेके ही अफसर थे। जब करेन्स्की प्रधान-मंत्री हो गया, तो एस्-एस् (समाजवादी क्रांतिकारी) दल अपनेको सरकारी दल समझने लगा, और उसकी यहां प्रधानता हो गई। लेकिन इससे पहिले १९१६ ई०में जो विद्रोह मध्य-एसियाके लोगोंने किया था, यद्यपि उसे दबा दिया गया था, तो भी उसके प्रभावमें लोगोंके हृदयोंमें शासनके प्रति विद्वेषका भाव अब भी कम नहीं हुआ था। बल्कि अब उसने एक नया रूप लिया था, जिसमें उज्बेक मध्यवर्गने अपने पुराने खोये हुये राज्य खोकन्दके नाम-पर “खोकन्द स्वायत्तता”की मांग पेश की। अभीतक बुखाराका अमीर अपनी जगहपर बना हुआ था। जारशाही अफसरों और पूजीपतियोंने भी स्वायत्ततावादियोंके पक्षका समर्थन करना आरम्भ कर दिया, और जब रूसमें बोलशेविक-क्रांति हो गई, तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला उनका साथ देना शुरू किया। यद्यपि स्वायत्ततावादियोंने अपना काम ताशकन्दमें शुरू किया था, लेकिन वहां उनको उतनी सफलता नहीं हुई, इसलिये उन्होंने खोकन्दको अपना केन्द्र बनाया।

०

#### ४ बोलशेविक-प्रभाव-वृद्धि

ताशकन्दमें पहले मेन्शेविकों और एस्-एस्-दलका ही जोर रहा। ताशकन्द एसियाका सबसे बड़ा औद्योगिक केन्द्र था। वहांके कारखानोंमें रूसी मजदूर बड़ी संख्यामें काम करते थे। इनके ऊपर पहले नरमदली समाजवादियोंका प्रभाव होना स्वाभाविक था, क्योंकि रूसी मजदूरोंको एसियाई मजदूरोंकी अपेक्षा ज्यादा रियायतें मिली हुई थी, लेकिन धीरे-धीरे मजदूरोंकी आखें खुलने लगी, जब कि उन्होंने देखा कि यह दक्षिणपक्षी दल उनका हित-साधन नहीं कर सकता। वामपक्षकी ओर झुकाव देखकर एस्-एस् (समाजवादी क्रांतिकारी) दलमें फूट पड़ गई। वामपक्षी उनसे अलग हो गये, जो कितने ही समयतक बोलशेविकोंके साथ मिलकर काम करते रहे। जून (१९१८ ई०)के अन्तमें बोलशेविकोंकी पहली कांग्रेस हुई, जिसमें चालीम-पचास प्रतिनिधि शामिल हुये थे, लेकिन जब १९-२९ दिसम्बर (१-१० जनवरी) १९१९ ई०को द्वितीय कांग्रेस हुई, तो उसमें एक सौ अस्सी प्रतिनिधि थे। इस समयतक अग्रेजोंकी मददसे वर्तमान तुर्क-मानिस्तानपर क्रांति-विरोधी रूसियोंकी प्रभुता कायम हो गई थी, इसलिये वहांके प्रतिनिधि इस कांग्रेसमें शामिल नहीं हो सके, लेकिन सप्तनदके प्रतिनिधि आये थे। इस कांग्रेसके प्रधानमंडलमें जूराबयेफ, वेदीलोफ जैसे स्थानीय (एसियाई) बोलशेविक भी निर्वाचित हुये थे, जिससे मालूम होगा, कि मध्य-एसियामें रूसी बोलशेविक कहातक अपनेको एसियाइयोंके साथ एकतावद्ध करनेमें सफल हो चुके थे। नरम समाजवादियों और बोलशेविकोंके बीच किसका साथ देना चाहिये, इसका निर्णय करनेमें एसियाई कमकरोको दिक्कत नहीं हुई, जिसका पता कांग्रेसमें एसियाई बोलशेविकोंकी संख्याकी वृद्धिसे मालूम है।

ताशकन्द—पहली कांग्रेसतक बोलशेविक पार्टीके २६१ सदस्य थे, जिनमें २८ स्थानीय (प्रायः उज्बेक) थे। इनके अतिरिक्त पुराने ताशकन्दमें भी १२५ व्यक्ति पार्टीके साथ थे। दूसरी पार्टीके समयतक बोलशेविक पार्टीमें २००० सदस्य हो गये थे, जिनमें ९०० स्थानीय, ७०० रूसी और ४०० विदेशी कमकर थे। विदेशियोंमें लत्वियन, उक्रेनी, ईरानी, तारतार और किर्गिज जातियोंके भी लोग थे। १२ अक्तूबर १९१८ ई०में सारे ताशकन्द नगरकी पार्टी-काफ़ेस हुई।

समरकन्द—१९१७ ई०के सितंबरके अंतमें यहां बोलशेविकोंकी पहली जिला-काफ़ेस हुई थी। अक्तूबरके मध्यतक समरकन्द जिलेमें अठ्ठाइस शाखाएं और पैंतीस सौ सदस्य थे।

खोकन्द—१९१७ ई०के अक्तूबरमें यहां बोलशेविकोंकी तीस-पैंतीस जमानें थीं। पहली कांग्रेसतक सदस्योंकी संख्या दो सौ हो गई और रूसियोंसे बाहरके कमकरोमें भी काम होने लगा था। १९१८ ई०के अंततक पार्टीके सदस्योंकी संख्या ७५० थी। आगे हम देखेंगे, कि मध्य-एशियाके

पूजीवादियोंकी संगठित शक्तिका मुकाबला मन्त्रमे ज्यादा खोकन्दके वोल्गेविकोको करना पडा था।  
यहाके ७५० सदस्योमे २५० स्थानीय लोगोमे से थे।

**खोजन्द (लेनिनावाद)**—मिर नदीके तटपर अवस्थित इस ऐतिहासिक नगरमे भी वोल्गेविको और नरम-दलियोका मन्त्रप रहा। १९१८ ई०के अप्रैलतक यहा वोल्गेविकोका संगठन हो गया था, और उनकी प्रथम कांग्रेसमे यहामे बीस प्रतिनिधि शामिल हुए थे। खोजन्दमे पार्टी-मेम्बरोंकी मख्या २४६ थी, और इलाकेके दूसरी जगहोमे भी वोल्गेविक थे, जिनमेसे २१६ खोजन्द नगरमे, पचीस खोजन्द रेल स्टेशनमे, छत्तीस द्रागोमिरोफ स्टेशनमे, तीस कोपीमे, अस्सी पलाविकामे, ८०० सरी-दुगानमे, ३१२ उरालके जिले (वोलास्त)मे, पैंतीस चपकुल जिलेमे, पन्चीस वोकल वेदगर्नमे, साठ इनफान इलाकेमे थे। १९१८ ई०के जून और दिसवरके छ महीनोमे वडी तेजीमे वोल्गेविकोकी शक्ति और मख्या वढी। उन्होने तबतक अपनी लाल सेना भी संगठित कर ली। पीछे प्रतिगामी हो गया शेख एरगम, एक सनय वोल्गेविकोके साथ था।

**अन्दिजान**—फरगानाका मशहूर औद्योगिक केन्द्र होनेके कारण यह वोल्गेविकोका भी गढ था। दूसरी कांग्रेसके समय (१९१८ ई०के अंत)तक यहा दो सौ पार्टी-मेम्बर थे। लेकिन यहापर जनतांत्रिक संगठन औरोंकी अपेक्षा बहुत पीछे हुआ था और १९१८ ई०के अंतमे ही नगर-दुमाकी स्थापना हुई।

**फरगाना**—फरगाना-उपत्यका रूसी कारखानोके लिये कपास पैदा करती थी। इसके कारण वहा अन्दिजान, फरगाना तथा दूसरे शहरोमे छोटे-छोटे कारखाने खुल गये थे, जिनमे रूसी मजदूर भी काम करते थे। १९२८ ई०की जुलाईमे अर्थात् रूसमे वोल्गेविकोके राज्य सभालनेके नौ महीने बाद वहा पार्टीका संगठन हुआ और इस सालके अंततक २३७ पार्टी-सदस्य हो गये।

**नमगान**—यहा १९१७ ई०के दिसवरमे सात पार्टी-सदस्य थे। अप्रैल १९१८ ई०मे १८० और द्वितीय कांग्रेसके समय सदस्योंकी मख्या छ सौ थी, जिनमे दो तिहाई स्थानीय और केवल दो सौ रूसी थे।

**किजिलकिया**—१०१८ ई०की फरवरीमे सात सदस्योंको लेकर वोल्गेविकोका यहा काम शुरू हुआ, लेकिन दिसवरतक उनकी मख्या ४५१ हो गई।

**मर्गेलान**—यहा १९१८ ई०के अगस्तमे पार्टीकी टुकडी स्थापित हो गई, और द्वितीय कांग्रेस के समयतक वोल्गेविकोकी मख्या १७० पहुच चुकी थी।

**कत्ताकुर्गन**—१९१८ ई०के अंतमे द्वितीय कांग्रेसके समय यहा सदस्योंकी मख्या करीब तीन सौतक पहुच गई थी, और यहाके तीन प्रतिनिधि द्वितीय कांग्रेसमे शामिल हुए थे।

**जोअक**—यहा १२६ सदस्य १९१८ ई०के अंततक हो गए थे।

**चारजय**—जामू-दरियाके बायें तटपर अवस्थित इस महत्त्वपूर्ण स्थानमे १९१८ ई०के दिसवरमे वोल्गेविकोका संगठन हो चुका था और द्वितीय तुर्किस्तान पार्टी कांग्रेस जब ताशकन्दमे हुई, तो यहाके वोल्गेविक सदस्योंकी मख्या सौतक पहुच चुकी थी। लेकिन इस इलाकेमे अग्रेजोंकी मददमे क्रांति-विरोधियोंका बल बढ गया, इसलिए यहाके वोल्गेविकोको उनका सख्त सामना करना पडा।

इन आकडोमे मालूम होगा, कि मध्य-एशियामे वोल्गेविकोका प्रभाव कितनी जल्दी बडा। इस समय तुर्किस्तान-प्रदेशको आर्थिक स्थिति बडी खतरनाक हो गई, तेल और कोयला मिलना मुश्किल हो गया, रेलका यातायात विगड गया था। कपासका उद्योग मध्य-एशियाकी आयका नवने बडा माधन था और उसको कोई पूछनेवाला नहीं था। ऊपरमे अन्नका अकाल पडा हुआ था। साथ ही क्रांतिके कारण मन्त्र बहुत उग्र हो रहा था। मेन्शेविको और दक्षिणपंथी एम्-एफ् इन कठिनाइयोंके लिये कोई रास्ता निकालनेमे असमर्थ थे। ऊपरमे काशगर, ईरान, अफगानिस्तान आदिके गस्ते क्रांति-विरोधी शक्तियोंको अग्रेज पूरी तौरमे मदद दे रहे थे।

## ५ खोकन्द स्वायत्ततावादियोंका अन्त

प्रथम विश्व-युद्धके समय एशियाकी बहुतसी पिछडी जातियोंमे राजनीतिक स्वतंत्रताके भाव

जगे। मध्य-एसियामे तो १९१६ ई०में उसने खूनी विद्रोहका रूप लिया था। इसी समय भारतमें प्रथम विश्वयुद्धके बाद देशकी परतत्रताको और भी कड़ा करनेके लिये अग्रेज रोलेट-कानून बनाने जा रहे थे। अग्रेज मध्य-एसियामे 'खोकन्द स्वायत्तता'को सहायता देनेके लिये पूरी कोशिश कर रहे थे। जारशाहीके उच्छेद, क्रांतिकारियोंकी निर्बलता और अग्रेजोंकी सहसे मध्य-एसियाके मध्यवर्ग-ने इस आंदोलनको खड़ा करके नवंबर १९१७ ई०में खोकन्दमें अपनी सरकार भी कायम कर ली, जो तीन महीने बाद (फरवरी १९१८ ई०) तक शासन करती रही। जिस समय ताशकन्दमें ग्यारह दिन (११ जनवरी १९१९ ई०) तक बोल्शेविकोंकी पार्टी काग्रेस होती रही, उसी समय खोकन्दके क्रांति-विरोधी अपने शासनको कायम करके आगेके लिये बड़े-बड़े स्वप्न देख रहे थे। लेकिन खोकन्दके इस आंदोलनमें खोकन्दसे बाहर सारे तुर्किस्तानके मध्यमवर्गकी सहानुभूति रहने भी उनसे सहायता उतनी नहीं मिल सकी। नवंबर १९१७ ई०में बोल्शेविक-क्रांति रूसमें सफल हो चुकी थी, इसलिए मध्य-एसियामे कारबार करनेवाले रूसी पूजीपति बदहवास हो गये थे। अन्दिजानका सबसे बड़ा रूसी पूजीपति खोकन्द-स्वायत्तताका सबसे जबरदस्त समर्थक था, और वहाका एक बड़ा रूसी वकील नेन्सबेर्ग उसमें खास तौरसे भाग ले रहा था। लेकिन सभी जगहके क्रांति-विरोधी बूर्जुजीके भीतर एकता नहीं थी, नमगानवाले खोकन्दियोंके साथ नहीं हुये। खोकन्दके इस आन्दोलनमें सबसे बड़ा हाथ फरगानाकी बूर्जुजीका था, जिन्हें ताशकन्दके देशी और रूसी बूर्जुजीसे भी पूरी सहायता मिली। ताशकन्द तो वस्तुतः इस आन्दोलनका उद्गम स्थान ही था, और पहले वही उसका केन्द्र भी रहा। लेकिन सबसे पिछले खानकी राजधानी खोकन्द थी, इसलिये वहा सामन्तशाही तत्त्वोंकी अब भी कमी नहीं थी। खोकन्दके नामपर राष्ट्रीय भावनाके जगानेमें आसानी थी, इससे भी लाभ उठानेके लिये इसी नगरको प्रतिगामियोंने अपना अड्डा बनाया।

खोकन्द स्वायत्तताका आन्दोलन समरकन्दके मध्यवर्गमें भी बढ़ा, और वहा उन्होंने 'इत्तिफाक' के नामसे अपना सगठन मजबूत किया। किर्गिज-मध्यवर्गने भी इस आन्दोलनमें अपने लाभकी आशा देखी, और वह भी इसमें क्रियात्मक रूपसे भाग लेनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। यही नहीं, वर्तमान तुर्क-मानिस्तानमें कास्पियन तटतक खोकन्दकी 'स्वायत्तता'की गूज सुनाई देने लगी। सब होते हुए भी इस आन्दोलनका केन्द्र ताशकन्द या समरकन्द न होकर खोकन्द रहा। खोकन्द फरगानाका सबसे बड़ा नगर होनेके कारण आर्थिक केन्द्र भी था, लेकिन वह औद्योगिक केन्द्र नहीं था। कमकरोकी कमजोरीके कारण खोकन्द क्रांति-विरोधी स्वायत्ततावादी इसे अपना केन्द्र बना सके। यहापर जहा मिले और फैक्ट्रिया बहुत ही कम थी, वहा सैनिक महत्त्वका स्थान न होनेसे रूसी सैनिकोंकी सख्या कुछ दर्जनोसे अधिक नहीं थी, जो भी घर लौटनेमें सफल न होनेके कारण खोकन्दके किलेमें रह गये थे। प्रतिगामियोंने इस्लाम धर्मकी भी आड़ लेकर जहादका प्रचार शुरू कर दिया था। यद्यपि इससे उनके पृष्ठपोषक रूसियोंको खतरा था, लेकिन तब भी वह इस समय बोल्शेविकोंके खिलाफ उनकी सहायता करनेके लिये तैयार थे। स्वायत्ततावादियोंका नेता मुस्तफा चोकायेफ था। लेकिन जैसा कि ऊपरकी बातोंसे मालूम होगा, असली सूत्रधार रूसी पूजीपति और अफसर थे, जिनमें पीछे मेन्शेविक और दक्षिणपन्थी समाजवादी क्रांतिकारी भी शामिल हो गये। खोकन्द स्वायत्तता-विधानके निर्माणमें नेसबेर्ग-जैसे कितने ही रूसी वकीलोंका मुख्य हाथ था। कजखोफ स्वायत्ततावादियोंकी सेनाका मुख्य शिक्षक था। करेन्स्कीकी पार्टी (समाजवादी क्रांतिकारी)का खोकन्दके आन्दोलनमें खास हाथ था। ताशकन्दके शिक्षकोंके सघने भी प्रस्ताव द्वारा १० (२३) दिसम्बर १९१७ ई०के अपने सम्मेलनमें स्वायत्तताका समर्थन किया था। खोकन्दकी स्वायत्ततावादी सरकारने गाववालोंको अपने हाथमें करनेके लिये शिक्षितों और मुल्लोंको तैनात किया था। मदरमो, मस्जिदों, चायजानों, बाजारोंमें जहा देखो तहा 'स्वायत्तता'का घनघोर प्रचार हो रहा था, उसी तरह जैसे कि इसके मान्ड-डेड साल बाद भारतमें असहयोग आन्दोलन देशके कोने-कोनेमें। लेकिन जहा हमारी राष्ट्रीयताको अग्रेजोंकी सड़ी-गली व्यवस्थासे भिड़ना था, वहा मध्य-एसियामे वहाके नव्वे प्रतिशत लोगोंके



हितोके जवदस्त समर्थक बोल्शेविकोंके साथ मधर्प जारी हुआ था। इसलिये मध्य-एसियाके मुल्ला और मिथित बहुत दिनोतक लोगोको धोखेमे नहीं रख सकते थे। वह प्रचारके साधनके तौरपर लोगोकी भुखमरीका उदाहरण दे रहे थे, लेकिन उसके कारण बोल्शेविक नहीं थे। वह बोल्शेविकोंके अत्याचारोंकी मनगढन्त बातें सुनाते थे, लेकिन मध्य-एसियामें जो थोड़े-से बोल्शेविक देखे जाते थे, वह गरीबोंके सबसे गहरे मित्र छोड़ और कुछ नहीं थे। यह भी कहा जाता था, कि बोल्शेविक काफिर इस्लाम और अल्लाहको यहांसे उखाड़ फेंकना चाहते हैं, लेकिन इस झूठको वह तभीतक लोगोमें फैला सकते थे, जबतक कि रक्त-बीजकी तरह बढ़कर बोल्शेविक अपने उद्देश्योंके प्रचारके लिये सब जगह फैल नहीं गये। बोल्शेविक भी दूसरे रूसियोंकी तरह साम्राज्यवादी हैं, इस प्रचारको वहाके लोग अपनी आंखों देखकर झूठा समझ सकते थे, जब कि स्वायत्ततावादी नेताओंको जारगद्दीके बड़े-बड़े अफसरों और पूजीपतियोंके साथ घुलते-मिलते देख रहे थे।

ओरेनबुर्गमें आतमन दूतोफके विद्रोहके कारण उधरमें रूसका मध्य-एसियाके साथ सबध कट गया था, और इधर कास्पियनके पूर्वी तटमें अंग्रेजी पड़्यन्त्रने कुछ समयके लिये सफलता प्राप्त की थी। ताशकन्दपर बोल्शेविकोंका अधिकार हो जानेसे उनका विरोधी दूतोफ ओरेनबुर्गसे अनाज आने देनेके लिये कैसे तैयार हो सकता ? सारे झूठे प्रचारके होनेपर भी मध्य-एसियाके कमकर-किसान बोल्शेविकोंके कामको देख रहे थे। उन्होंने किसानोंको अपनी जोती जमीन देकर अपनी तरफ कर लिया था। मजदूरोंमें काले-गोरे दोनोंको मिलाकर कल-कारखानोंके प्रबन्धमें भागीदार बना दिया था। धीरे-धीरे स्वायत्ततावादियों और बोल्शेविकोंके कामोंकी तुलना करनेसे इस्लाम और जातीय स्वतंत्रताके नाम पर होते हुये प्रचारका प्रभाव घटने लगा, और समझदारोंको यह समझनमें दिक्कत नहीं हुई, कि खोकन्दके स्वायत्ततावादकी आडमें बड़े-बड़े रूसी स्वामी, पूजीपति और पुराने शासक शिकार खेल रहे हैं।

फर्वरीतक फरगानामें भी वर्ग-समर्प उग्र रूप ले चुका था और खोकन्दमें अब क्रांति-विरोधियोंका प्रभाव बहुत घट चुका था। उनका शासन केवल पुराने नगरमें रह गया था। नये शहरमें बोल्शेविकोंने सोवियत-शासन स्थापित कर दिया था। किलेमें जो १६ रूसी सैनिक रह गये थे, वह भी बोल्शेविकोंके साथ हो गये थे। खोकन्द सोवियतका अध्यक्ष वावुशकिन था। क्रांति-विरोधियों (जिनमें सफेद रूसी भी थे)ने पहरेदारोंको मारकर वावुशकिनके घरपर आक्रमण किया। उनके वीवी-वच्चे भी साथ थे, लेकिन वावुशकिन पिस्तौलसे लड़ता रहा। क्रांतिविरोधियोंने योजना बनाई कि पहले किलेको हाथमें किया जाय, फिर टेलीफोनके स्टेशनको, और अन्तमें सोवियत-अध्यक्ष वावुशकिनको। लेकिन इसी समय फरगानाके पूर्वी भागमें बोल्शेविकोंने सफलता पाई। उन्होंने अन्दिजानको लेकर सारे फरगानापर बोल्शेविक-शासन स्थापित कर लिया।

खोकन्दके पुराने नगरमें सजोनोफ और निकोलायेको खोकन्द स्वायत्त-सरकारके साथ बातचीत करने गये। १२ फर्वरीके सबेरे दिन बहुत अच्छा था। बोल्शेविकोंका सगठन मजबूत था। १३ फर्वरीको सबेरे स्कोवेलेफ और अन्दिजानसे १२० आदमियोंकी सहायता आ गई। स्वायत्ततावादियोंने बोल्शेविकोंकी बड़ी हुई शक्तको देखकर अपनी योजनाको आगे बढ़ानेकी हिम्मत नहीं की, बल्कि लड़नेकी जगह मुलहकी बातचीत करनेको ही ठीक समझा। १७ फर्वरी (२ मार्च)को दोनों ओरके प्रतिनिधि बात करनेके लिये जमा हुये, जिनमें सोवियतके नत्ताइस और स्वायत्तियोंके चौबीस प्रतिनिधि थे। लेकिन स्वायत्ती अपनी इच्छासे कैसे अपना वातमा कर देंगे ? उसपर बोल्शेविकोंने उन्हें अल्टीमेटम दे दिया। समझौतेमें सबसे बाधक एर्गस और नार्नीगेफ थे। समझौता होने न देखकर उस दिन १० बजकर ३० मिनटको बंदूकें चाररवाई गोक दी गई, और तानीगेफके पाससे उत्तरके आनेकी प्रतीक्षा की जाने लगी। अगले दिन नार्नीगेफने अपनी महमति दे दी, लेकिन एर्गस मुल्लाओंके बलपर कूद रहा था। जिस समय समझौतेके लिए बातचीत हो रही थी, उसी समय खोकन्दकी सनी

मस्जिदोंमें मुल्ला जहादपर व्याख्यान दे रहे थे। समझौता न होनेपर अब शक्ति मुल्लोंके हाथ-में चली गई थी, जो कि किसी तरहके सुधारको माननेके लिये तैयार नहीं थे। उनके लिये सुधारवादी उज्बेक भी काफिर थे, इसलिये उनके एक भागको मुल्लोंने गिरफ्तार कर लिया, और दूसरा भाग भागनेके लिये मजबूर हुआ। खोकन्दके सेठोंमेंसे कुछ तटस्थ हो गये और कुछने एर्गस तथा मुल्लोका पक्ष लिया। जहातक देहकानों (किसानों)का सबब था, वह समूहस्वरूप सोवियत-सरकारके पक्षपाती हो गये थे। इस प्रकार एर्गसको भारी जनसंख्याका बल प्राप्त नहीं हो सका। खोकन्दमें मजदूरोंकी भी स्थिति डावाडोल रही, उनकी सभा (इत्तिफाक) एक बार मुल्लोंके प्रचारके प्रभावमें इतनी आ गई थी, कि उसने सोवियतके विरुद्ध प्रस्ताव पास करके अपनेको स्वायत्तियोंके पक्षमें घोषित किया, लेकिन जब एर्गस और मुल्लोकी सरकारका मजा चखा, तो उनकी आंखें खुली। उन्होंने “मुसलमान कम-कर सघ” नामक बोल्शेविक-पक्षपाती सघ बनाया, फिर ‘इत्तिफाक’ भी सोवियत शासनका समर्थक बन गया। व्यापारियोंमें जरूर काफी भाग ऐसा था, जो मुल्लोकी तरफ था।

खोकन्दकी ऐसी स्थिति थी, जब कि बोल्शेविकोंने स्वायत्ततावादियोंको खतम करनेका निश्चय किया। अबतक ताशकन्दसे भी उन्हें सहायता मिलने लगी थी। सोवियत कमांडरने १९ फरवरी (४ मार्च) १९१८ ई०के १० बजेकर १५ मिनटपर एर्गसको अल्टीमेटम दिया। दिनके १ बजे अल्टीमेटमका समय बीतनेवाला था। पौन बजे एर्गसका जवाब मिला। उसने सोवियत-कमांडरकी मांग पूरा करनेसे इन्कार कर दिया। १ बजेसे बीचमें कभी-कभी रुककर शामके अंधेरेंतक तोपें पुराने नगरपर गोला-वर्षा करती रहीं। २० फरवरीको सवेरे लाल सैनिकोंने पुराने नगरपर धावा बोल दिया। एर्गस अपने आदमियोंको लेकर पहली ही झड़पमें भाग खड़ा हुआ, इसलिये नगरपर अधिकार करनेमें अधिक प्रतिरोधका सामना नहीं करना पड़ा। एर्गसके भाग जानेपर अब पुराने खोकन्दके प्रतिनिधि मुल्ह करनेके लिये आये। सुल्ह-सम्मेलन २१-२२ फरवरी (८-९ मार्च) १९१८ ई०को रूसी-एसियाई बैंकके मकानमें हुआ। सुल्हकी शर्तोंके अनुसार हथियारोंको सोवियत कमांडरके हाथमें दे देना पड़ा, खोकन्दमें स्वायत्ती सरकार तोड़कर प्रादेशिक सोवियत जनकमीसर मंडलके शासनको स्वीकार किया गया। इस प्रकार खोकन्दपर किसानों-मजदूरोंका राज्य स्थापित हुआ। एर्गसने यद्यपि यहा असफलता पाई, लेकिन आगे वासमची (डाकुओ) वन अपनी निष्ठुर खून-खराबियों द्वारा उसने तथा मध्य-एसियाके और भी कितने ही अधिकारच्युत धनियो और अमीरोंने बोल्शेविकोंको हटाकर अपनी तानाशाही स्थापित करनेका असफल प्रयत्न किया।

खोकन्द स्वायत्तीय आन्दोलन और सरकारके जीवनका चिट्ठा पुराने हमी पचागकी तारीखों (जो कि तेरह दिन पहले पड़ती थी)के अनुसार निम्न प्रकार है —

दिसम्बर ६-७, १८१८ ई०

” ९-११, ”

” ११, ”

” २१-२४, ”

फरगाना जिलेकी सोवियतोंकी कांग्रेस

मुसलमानोंकी कांग्रेस

खोकन्द स्वायत्तताका आरम्भ

खोकन्दमें अखिल तुर्किस्तान समाजवादी क्रांति-कारी कांग्रेस

दिसम्बर २७, १९१८ ई०

फरवरी १२, १९१९ ई०

” १३, ”

” १४, ”

” १४-१६, ”

” १५, ”

ताशकन्दमें बोल्शेविकोंका प्रदर्शन

खोकन्द दुर्ग बोल्शेविकोंके हाथमें और खोकन्दमें सैनिक क्रांति-समितिकी गठन

स्कोवेलेफ और जन्दिजानमें गोकन्दमें कुमक आई, खोकन्द स्वायत्ती सरकारमें प्रथम वातचीत

स्वायत्ती सरकारमें द्वितीय वातचीत

एर्गसका किलेपर आक्रमण करनेका प्रयत्न

स्कोवेलेफ नगरकी दुमाका खोकन्दके शांति-

फरवरी १३,	"	सम्मेलनमें एक प्रतिनिधि भेजनेका निश्चय
" १८,	"	याति-सम्मेलनका उद्घाटन
" १९,	"	मुल्लोका स्वायत्ती सरकारको अपने हाथमें ले लेना
" २०,	"	तामकन्दमें खोकन्दमें सेना आनेपर मोवियत
" २१,	"	कमांडरने अल्टीमेटम भेजा, पुराने नगरपर गोला-बारी शुरू
" २२,	"	एगम खोकन्द छोडकर भागा
" २३,	"	मुलहनामेपर हस्ताक्षर

## ६ समरकन्द-विजय

खोकन्द न्यायतियोंपर विजय प्राप्त करना मध्य-एशियामें साम्यवादकी जबरदस्त विजय थी। उनके बाद यह निश्चय-ना हो गया, कि नगरोंमें बोल्शेविकोंको हटाना बहुत मुश्किल है। १९१८ ई०में बोल्शेविकोंका शासन सिर्फ नगरोंपर था। नगरोंके आमपामके कुछ किसान भी उनके प्रभावमें आये थे। खानकर सिर-दरियाके आसपासवाले डलाके, फरगाना जिला और समरकन्दके जिलोंके ज़मानोंपर बोल्शेविकोंका प्रभाव बढ़ता जा रहा था, लेकिन उधर मुल्लाओका मगठन शुरू-इस्लामिया" (इस्लामी लीग) भी काफ़िरोके विरुद्ध बुआधार प्रचार करके मुस्लिम-जनमाधारण-को रमियॉकि, वामकर बोल्शेविकोंके, विरुद्ध खूब भड़का रहा था। दिसम्बर १९१७ ई०के अन्त और जनवरी १९१८ ई०के शुरूमें समरकन्दमें क्रांतिकारियोंने विरोधियोंको दबा दिया। वहाँ बोल्शेविकोंका मगठन भी हो गया और रेव-कम (रेव्यूयूशनरी कमेटी, क्रांति-समिति)ने बोल्शेविक सेनाके मगठनका भी सूत्रपात कर दिया। लेकिन इसी समय कज़ाकोंने समरकन्दको नतरेमें डाल दिया। मध्य-एशियाकी जातियोंमें कज़ाक सबसे ज्यादा लडाकू और अभी भी बहुत कुछ घुमन्तू जीवन बिताते थे। साइबेरियामें क्रांति-विरोधियोंने अपने पक्षको मजबूत किया था, और इन कज़ाकोंका उनसे सीधा संबंध था। समरकन्दके आसपासको घेरनेवाले कज़ाकोंके साथ बात करनेके लिये बोल्शेविकोंने अपना प्रतिनिधि-मंडल भेजा। किजिल-तेपमें दोनों ओरके प्रतिनिधियोंने बातचीत की। फिर क्रांति-सरकारके नामसे अल्टीमेटम दिया गया, अगर कुछ अफसरों और प्रतिगानी कज़ाकोंको छोड सबके हथियार ले लिये गये।

अक्रम-क्रांतिमें तुर्गन् ही बाद समरकन्द-जैमे मध्य-एशियाके महत्वपूर्ण नगरमें क्रांतिकी ग्यन्ध सेना तैयार करनेमें कैसे टिलाई की जा सकती थी? इस सेनामें रूसी और एशियाई दोनों ही क्रांतियॉकि आदमी थे। ज़ाक़ी सेनामें काम किये हुये मिपाहियोंके अनिरिक्त कार्की नख्खामे नये आदमी भर्ती हुये। उन प्रकार जनवरी १९१८ ई०में लाल सेनाका प्रथम मगठन पहा हो चुका था। समरकन्दको इसी गैरिसनके मिपाही पहलेमे सैनिक शिक्षा पाये हुये थे, नये क्रांति मिपाहियोंने भी सैनिक-शिक्षा तेज़ीमे ली। साथ ही पुराने मिपाहियोंने राज-नीतिक चेतना खानेके लिये पूर्ण कोशिश की गई। कज़ाक क़त्ताकुर्गान शहरपर अधिकार पिये हुये थे। अभी भी उनमे नतरे दूर नहीं हुआ था। प्रदेश (क्राइ)की सरकारने पोल्तरा-न्कीको उनमे बात करनेके लिये नियुक्त किया। कज़ाकोंके भी प्रतिनिधि आये। समरकन्दमें दोनोंकी बातचीत होने समय क्रांतिकारी कमेटीने उनमे हथियार रखनेकी माग की, लेकिन कोई निश्चय नहीं हो सका। फिर बोल्शेविक-प्रतिनिधि सीधे कज़ाक सैनिकोंमे बात करनेके लिये समरकन्दमें दम बन्द (१६ फरवरी)पर अवस्थित जूमा रेलवे स्टेशनपर गये, लेकिन कज़ाक किसी बातको सुननेके लिये तैयार नहीं थे। वह समरकन्दपर आक्रमण करनेके लिये उताव्र थे। समरकन्दमें भी कमकरोने बड़ी तेज़ीमे सैनिक तैयारी की। मजदूरोंने अपने परिवारको छोड-कर बन्दूक उठाई और कज़ाकोंको जीवक स्टेशनमें ही रोकनेका प्रयत्न किया। बोल्शेविक पार्टीका एक भाग सेनाके लिये राहगी तैयारीपर नियुक्त हुआ। बहुतमे पार्टी-मेम्बर किलेरी

रक्षामे लगे और कितने ही युद्धक्षेत्रमें गये। एसियाई और युरोपीय दोनों ही मजदूर और बोल्शेविक-कर्मी एक-दूसरेसे मिलकर कजाकोसे समरकन्दको बचानेके लिये बड़ी तत्परतासे काम कर रहे थे। कजाक अपनेको करेन्स्की की अस्थायी सरकारका सैनिक बतलाते थे, जब कि वह सरकार रूसमें खतम हो चुकी थी। सारा प्रयत्न करनेपर भी कजाक सफल हुये। वह मुक्ति-दाताके तौरपर समरकन्द शहरमें दाखिल हुये। रूसी और एसियाई बूज्वाजीने उनका भारी स्वागत किया, बढ़िया शराब पिलाई, भोज और उत्सव मनाया। क्रांतिकारियोंमेंसे जो भी हाथ आये, उन्हें कजाकोने बड़ी निष्ठुरतासे मारा। लेकिन अधिकांश बोल्शेविक अन्तर्वान हो चुके थे। उनका सगठन भी नष्ट न हो, अन्तर्हित हो गया था। इस समय कमजोर दिलवाले अपने आप पार्टीमें अलग हो गये, लेकिन पक्के बोल्शेविक और मजबूतीके साथ अपने सगठनको चलाते रहे। बोल्शे-विफोकी कार्य-तत्परता, कुर्बानी और बर्ताने एसियाई गरीबों और मजदूरोंके दिलमें और भी उनके प्रति विश्वास पैदा कर दिया।

लेकिन, समरकन्द थोड़े ही दिनोंके लिये बोल्शेविकोंके हाथसे गया। ताशकन्दमें बोल्शे-विक शासन मजबूत हो गया था। खोकन्दमें भी शत्रुओंको दबा दिया गया था। अब समरकन्दको फिरसे लेनेके लिये उन्होंने तैयारी शुरू की। ताशकन्दने भी सेना भेजी, समरकन्दके मजदूरों-ने भी बहुतसे सैनिक दिये। समरकन्दके पुराने सैनिकोंमेंसे बहुतमें उनके साथ थे, और कुछ ओरेनबुर्गमें क्रातिविरोधियोंसे लड़कर अभी लौटे थे। बोल्शेविकोंके सब मिलाकर तीन हजार पैदल और सवार दोनों ही तरहके सैनिक कजाकोके मुकाबिलेके लिये तैयार थे, लेकिन इनके पास एक ही मैदानी तोप थी। उधर क्राति-विरोधियोंके पास २७०० सैनिक थे, जिनमें ईरान और खीवाके युद्धक्षेत्रसे आये हुए भी कितने ही थे। उनके पास दो मैदानी तोपें और दो दूसरी तोपें थी। यह बतला चुके हैं, कि ओरेनबुर्गमें आतमन दूतोफ साइबेरियाके क्राति-विरोधी जेनरलोंके साथ था, और उसका प्रभाव खीवा होते कास्पियनके पूर्वी तट तथा ईरानकी सीमातक पहुंच रहा था। बुखाराका अमीर यद्यपि अभी सीधे तौरसे बोल्शेविकोंके विरुद्ध होनेकी हिम्मत नहीं रखता था, लेकिन उसके अफसर वहाके पूज्यपति क्राति-विरोधियोंकी हर तरहसे सहायता कर रहे थे। युद्धके दो दिन पहलेतक कजाकोके साथ उनकी बराबर बैठके होती रही। अन्तिम आक्रमणके पहले जीजक स्टेशनके पास एक बहुत बड़ी सभा हुई, जिसमें एसियाई मजदूर बड़ी संख्यामें शामिल हुये थे। तुर्किस्तान गणराज्य सोवियत जनकमीसर-परिषद्के अध्यक्ष कोलेसोफने अपने भाषणमें गणराज्यकी सारी स्थितिपर प्रकाश डाला। इसी सभाके बाद योजना बनाई गई। फिर क्रातिकी सेना दक्षिणवाले रास्तेसे रेलवेके साथ-साथ लाइनसे दाहिने और बाये होते आगे बढ़ी। रोस्तोव्स्को स्टेशनमें पहुंचनेपर गोलाबारी शुरू हुई। कजाक समर-कन्दकी ओर पीछे हटे। बोल्शेविक आगे बढ़ते गये। अन्तमें सोवियतकी क्राति-विरोधियोंपर विजय हुई, और लाल सेनाके हाथमें बहुतसा गोला-बारूद और दूसरे हथियार आये। पेरफिल्येफ लाल सेनाका कमांडर था। दूसरे अफसर ये—फेदोर कोलेसोफ, पोल्तरात्स्की, फ़ोलोफ, पोनोमारेफ, पेन्दो, दूनायेफ, मिखाइलोफ, पेस्पेलोफ, एसाउलेको, वेर्ग, शुस्तोफ, वारकुस, ओर्लोफ, इसायेफ आदि। क्राति-विरोधियोंकी तरफ थे—कजाची, कर्नल जायित्सेफ, स्लिको, सिवको, स्तेपानोफ, गिंजबुर्ग, सियानोफ, तोकारेफ, गोरेलोफ, गपेयेफ आदि जारशाहीके पुराने सैनिक अफसर तथा दूनरे।

जनवरी १९१८ ई०के आरम्भमें हुई समरकन्दकी इस विजयने फरगाना, समरकन्द और ताश-कन्दके बीचकी भूमिको बोल्शेविकोंका एक दृढ़ केन्द्र बना दिया।

लेकिन, अभी भी बोल्शेविक निश्चित नहीं बैठ सकते थे, क्योंकि अफगानिस्तान और ईरानके रूसी सीमान्तपर अग्रेजोंका पड़्यत्र बड़े जोरसे चल रहा था, और चर्चिल नारी शक्ति लगाकर रूससे बोल्शेविकोंको उखाड़ फेंकनेके लिये तैयार था।

### ७ बुखारा-अमीर भगा (१९२० ई०)

मध्य-एसियामें रूसका शासन स्थापित हो जानेके बाद भी बुखाराके अमीरका शासन हमारे यहांकी बड़ी रियासतोंके ढगपग हो रहा था। मध्य-एशियाके लोग भी तुर्क हैं, और

तुर्कीके लोग भी। मध्य-एसियाके तुर्क सुन्नी होनेसे तुर्कीके सलीफाको अपना सबसे बड़ा धर्माचार्य मानते हैं। इस प्रकार भाषा और धर्मके घनिष्ठ सवधके कारण मध्य-एसियाके शिक्षितोका तुर्कीके साथ घनिष्ठता होनी स्वाभाविक थी। इसीलिये जिम तरहके आन्दोलन तुर्कीमें होते, उसका कोई-न-कोई रूप मध्य-एसियामे उठ खड़ा होता। तुर्कीमें नवीन-तुर्क दलने मुबारके लिये बहुत जद्दोजहद की, और वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें उसने इतनी सफलता पाई, कि तुर्कीके सुल्तानको अनवर पाया और दूसरे नवीन तुर्क-नेताओको शासनमें साक्षीदार बनानेके लिये मजबूर होना पड़ा। नवीन-तुर्क पुराने जमानेकी कितनी ही बातोंको हटाकर तुर्कीको सामन्तशाहीसे पूजा-वादी समाजमें लाना चाहते थे। इन्हीं नवीन-तुर्कोंकी नकलपर मध्य-एसियामे 'जदीद' (नवीन) आन्दोलन शुरू हुआ, जिसका केन्द्र बुखारा था। इसी इलाकेमे अक्तूबर-क्रांतिके बाद खोकन्दी स्वायत्तियोंने शक्तिको अपने हाथमें लेना चाहा, लेकिन जदीदोंने इतना जोर नहीं दिखलाया। जदीद मुत्लागाहीके भी खिलाफ थे, इसलिये मुल्ला उन्हें फूटी आखों देखना नहीं चाहते थे। वर्तमान शताब्दीके आरम्भसे ही जदीदवादका प्रचार बुखारामें होने लगा था। १९१७ ई०के मार्च-अप्रैलमें जदीदोंका नारा 'हुरियत' (स्वतन्त्रता) बड़े जोरोपर था। फर्वरी-क्रांति द्वारा जारके मिहामनसे हटा दिये जानेके बाद बुखाराका अमीर आलमखान भी डर गया, और उसने एक बार तुर्कीके सुल्तानका अनुगमन करते हुये जदीदोंकी बहुतसी मांगें मान लीं। लोगोंको मालूम होने लगा, कि यहापर भी अब जदीदोंका शासन स्थापित होगा। लेकिन सालभर बीतते-बीतते अमीरको फिर इतनी हिम्मत हो गई, कि मार्च १९१८ ई०से उसने जदीदोंका कलेआम शुरू कर दिया। चारों ओर मुल्लोंका जोर था। बड़े-बड़े पगडवाले मुल्ला जदीदोंके खूनकी नदी बहते देखकर दाढ़ी फटफटाते कह रहे थे—“देखा न शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)की ताकत।” बुखारामे सैकड़ों आदमी बुरी तरहसे पकड़-पकड़कर तलवारके घाट उतारे जा रहे थे, खूनसे भरी खाइयोंके पाम चीमो मुर्दे दम तोड़ रहे थे।

जदीदोंके प्रभावके जमानेमें नसरुल्ला कुशवेगीने जदीदोंके साथ सहानुभूति दिखलाई थी, जिसके लिये उसे अपने बीबी-बच्चों और सवधियोंके साथ बुखारासे निर्वासित करके करमीनामें नजरबन्द कर दिया गया, और उसकी जगहपर मिर्जा उरगज महामन्त्री बनाया गया। जदीदोंने पुराने ढाँके मकतबोंकी जगहपर लडकोंके पढ़नेके लिये नये ढाँके स्कूल स्थापित करना चाहा। मुफ्ती हाजी अकरामने उनके कामका समर्थन किया था, इसलिये उसे भी गुजारमें निर्वासित कर दिया गया। बुखारा-शरीफका रईस अब्दुस्समद खा जदीद होनेके कारण पदच्युत कर दिया गया। इसी तरह मिर्जा शहवाई और हाजी दादखाह-जैसे प्रभावशाली दर-बारी जदीद होनेके इत्जाममें निर्वासित करके कवादियान भेज दिये गये। जिस तरह खोकन्दमें मुल्लोंने अन्तमें मारी शक्ति अपने हाथमें ले ली थी, वही बात अब १९२० ई०में बुखारामे दुहराई जा रही थी। चारों तरफ जहाद (धर्मयुद्ध)का नारा घोषित हो रहा था। मुल्लोंने फतवा दे रखा था, कि जदीदोंका खून हलाल और उनकी ज़ोर हलाल।

लेकिन अमीर और मुल्लोंकी यह धीमा-धीमी छ महीने भी नहीं चल पाई। २० अगस्त १९२० ई०को बुखाराकी हालत परेशान देखी जाने लगी। बुखाराके आर्क (किले)से अमीरका सामान पोडा-गाडियोंपर ढोया जा रहा था, और उधर बोलशेविक तोपें समय-समयपर भूमिको वगडते हुये गुम्-गुमकी आवाज कर रही थी। अमीर आर्क छोड़कर मितारामुखासा नामक बागमें डूंगा हुआ था, जहापर उसकी बेगम और उसकी कामुकताके शिकार छोकरे गाडियोंपर चटा-चटा करके भेजे जा रहे थे। बोलशेविक केवल तोपके गोले ही नहीं छोड़ रहे थे, बल्कि उनके कागजी गोले जो भी शक्तिशाली रूपमें लोगोंके बीचमें फेंके जा रहे थे, जिनकी आखिरी पक्तियों—“बुखाराके मेहनतमश जिन्दावाद, बोलशेविक पार्टी जिन्दावाद, सोवियत-सरकार जिन्दावाद, अमीर और उसकी सरकार नेस्तवाद” को पढ़-सुनकर बुखाराके गरीब बड़े उत्साहके साथ नये दिनकी प्रतीक्षा कर रहे थे, और उधर जनाब आली अमीर-बुखारा मीर आलम खान भागनेकी फिकरमें परेशान थे।

३०-३१ अगस्त और १ सितम्बर (१९२० ई०) के सोमवार, मंगल और बुध के तीन दिनों में सारा बुखारा उलट-पलट गया। नगर में आग लगी हुई थी। आर्क (किले) के अन्दर हर जगह, खासकर अमीर के गद्दीघर और रनिवास में, आग की ज्वालाये लपलपा रही थी।

अमीर के लिये अब सुरक्षित जगह अपने देश के भीतर नहीं रह गई थी। जब उसकी प्रजा में सबसे अधिक सख्या रखने वाले गरीब किसान और मजदूर बोल्शेविकों के फेर में पड़ गये थे, तो उसे कैसे त्राण मिल सकता था? उसे अब अफगानिस्तान के भीतर ही जान बचाने की जगह दिखलाई पड़ने लगी। लेकिन, वह उज्बेकों के मैदानी इलाकों में गुजरना खतरे की बात समझता था, इसलिये उसने पहाड़ी रास्ता लिया। वाइसून में जाकर उसने डेरा डाला। मुल्लों के बुआवार जहादी व्याख्यानों से, और उससे भी अधिक लूट के लोभ से पूर्वी बुखारा वाले हिसार, कुल्याव, वलजुवान, दरवाज और करातगिन के इलाकों से बहुत से गाजी आये थे, लेकिन आधुनिक हथियारों से सुसज्जित और सुशिक्षित बोल्शेविकों के सामने भला यह शिवजी की पलटन क्या कर सकती थी? अमीर को वाइसून से भी भागकर दुशाम्बा जाना पड़ा। वहाँ पर एक ही यूरोपीय ढंग की इमारत 'दोस्तरखाना' थी, जिसे अमीर ने अपना महल बनाया। जब लुटेरों की पलटन उसके आसपास आकर जमा होने लगी, तो अमीर को विश्वास हो गया, कि अब बुखारा तो गया, दुशाम्बा (आधुनिक स्तालिनाबाद) राजधानी में ही शायद मैं मगीतों के शासन को मजबूत करने में सफल होऊँ। लेकिन फरवरी १९२१ ई० में फिर अमीर का पैर कापने लगा। पाम के खजाने को कहीं गाजी के नाम से इकट्ठा हुये यह डाकू न छीन लें, यह भी उसका डर था। इसलिये निराश हो कुल्याव होता वह कुछ समय बाद पज (बक्षु की ऊपरी शाखा) के किनारे पहुँच दरकदके घाट से बक्षु पार हो अफगानिस्तान चला गया। जाते-जाते वह डाकुओं (बासमचियों) के सरदारों को अपना प्रतिनिधि बनाकर छोड़ गया, जिन्होंने १९२१ से १९२६ ई० तक के पाँच वर्षों तक पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान) में बहुत लूट-पाट मचाई, गरीबों के खून से हाथ रंगा, लेकिन अन्त में उन्हें सोवियत-शासन ने खतम कर दिया। बोल्शेविक क्रांतिके बाद सारा रूसी मध्य-एशिया तुर्किस्तान गणराज्य के नाम से संगठित हुआ था। इसके बाद उज्बेकिस्तान का गणराज्य स्थापित हुआ, जिससे १९२४ ई० में ताजिकिस्तान पहले स्वायत्त गणराज्य फिर पाँच साल बाद १९२९ ई० में स्वतंत्र गणराज्य होकर अलग हो गया।

### स्रोत-ग्रन्थ

- १ स्पिसोक् नरोद्नोस्तेइ तुर्कैस्तान्स्कओ क्राया (इ इ जारविन्, लेनिनग्राद १९२५)
२. रेवोल्युत्सिया व् स्वेद्नेइ आजिइ (ताशकन्द १९२९)
- ३ "बोस्तोको वेदेनिया" (१९४५/३, पृष्ठ ५९-७९, लेनिनग्राद)
४. नसेलेनिये समरस्कन्द्स्कोड ओव्लास्ति (इ इ जारविन्, लेनिनग्राद, १९२६)
- ५ दाखुन्दा (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल साकृत्यायन, प्रयाग, १९४८)
६. जो दास ये (उपन्यास, सदरुद्दीन ऐनी, अनु० राहुल साकृत्यायन, प्रयाग, १९४९)
- ७ बुखारा (संस्मरण, सदरुद्दीन ऐनी, अनुवादक स बोरोदिन्, मास्को, १९५२)

## कजाकस्तानमें क्रांति

### १ कजाक-जाति

इतिहासके आरम्भसे वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमें किस तरह मानव जातियोंका आगमन, निस्सरण और सम्मिश्रण होता रहा, इसे हम जगह-जगह कह चुके हैं। आज जो विशाल भूमि कजाकस्तान गणराज्यके नामसे प्रसिद्ध है, वह भौगोलिक तौरसे इतिहासकी दृष्टिसे साइबेरिया, किपचकभूमि, अल्ताई और सप्तनदके भिन्न-भिन्न भागोंमें विभक्त रही। मध्य-पाषाण-युग (ई० पू० ४०००)से पहलेकी पुरापाषाणयुगीन मुस्तेर आदि जातियोंमें से कौन इस भूमिमें रही, इसके बारेमें हमारे पास पुरातात्विक प्रमाण नहीं है। तुलनात्मक नृवश-तत्त्व और भाषा-तत्त्वके अध्ययनसे हम यह कह सकते हैं, कि मध्य-पाषाणयुगमें दक्षिणकिपचकमें फिनो-द्रविड थे और वही जाति सप्तनदमें भी थी, अर्थात् तुर्किस्तान शहर और जम्बुल जिलेके इलाकोंमें किसी समय वही फिनो-द्रविड जाति रहती थी, जिसके अवशेष भारतमें द्रविड तथा मोविघतमें कौमी स्वायत्त गणराज्य, और एस्तोनिया तथा फिनलैंडके लोगोंके रूपमें अब भी मौजूद हैं। लेकिन उससे हजार वर्ष बाद नव-पाषाण-युगमें हम यहाँ विशेषकर अराल और निम्न-सिर-दरियाकी उपत्यकाओंमें आर्य घुमन्तुओंके आनेका पता पाते हैं। २५०० ई० पू०में फिर किपचक-भूमि और अल्ताईमें उनका स्थान उन्हींके भाई-बन्द शक लेते हैं। सारे पित्तल-युग और लौह-युगमें घुमन्तु पशुपाल और कुछ थोड़ेमें खानोंमें काम करनेवाले शक, किपचक, सप्तनद और अल्ताईके निवासी थे। हम देख चुके हैं, कि ई० पू० ५वीं शताब्दीमें भी, जब कि दुनियाके बहुतसे भागोंमें लोहेका प्रचार हो चुका था, अभी ये शक पीतलके हथियारोंका ही इस्तेमाल करने थे। ई० पू० ४वीं सदीमें कजाकस्तान (उस समय शक-भूमि)के पूर्वी भाग अर्थात् अल्ताई-प्रदेशके पड़ोसी हूण थे, जो ई० पू० २री शताब्दीमें शक-भूमिके ऊपर टूट पड़े, और उन्होंने शकोंकी प्रभुता वहाँसे खत्म कर दी। उस समयमें शक-आर्य गरीराकृतिका स्थान मंगोलायित आकृतिने लेना शुरू किया। जो शक इस भूमिमें रह गये, वह मंगोलायितोंमें मिल गये। ईसाकी ५वीं सदीके पूर्वार्धमें किपचक-सप्तनद-अल्ताईकी भूमिमें रहनेवाले हूण-वशज मंगोलायित अपनी सामान ढोने-वाली गाड़ियोंके कारण कगली बहने लगे—यह मान ५वीं शताब्दीके आरम्भमें पश्चिममें आनेवाले घुमन्तु सिर्गी वालोंको पूर्वी उत्तरप्रदेशमें कगडा कहा जाता था। ६वीं सदीके उत्तरार्धमें फिर तुर्कोंका प्रभुत्व स्थापित होनेके बाद इस भूमिके निवासी तुर्क नामसे प्रसिद्ध होने लगे। तबसे मध्य-एशियाके और भागोंकी तरह आज भी तुर्क जाति यहाँ रहती है, जो भाषाके छोड़े भेदके कारण कहीं कजाक, कहीं किर्गिज, कहीं उज्बेक और कहीं तुर्कमानके नामसे पुकारी जाती है। यदि हम आजकी कजाक जातिके ऐतिहासिक विकासको देखते हैं, तो हमें उनके भीतर निम्न क्रमसे जातियोंके स्तर मिलते हैं —

कजाक जातिका निर्माण —

काल	किपचकभूमि	सप्तनद	अल्ताई
ई० पू० ४००० (मध्य-पाषाण)	फिनो-द्रविड	फिनो-द्रविड (जम्बुल)	
	(अराल-सिर)		
" ३५००	"	"	"
" ३००० (नवपाषाण)	शकार्य	"	...

" २५००	शक	शक	शक
" १५०० (ताम्र-युग)	श०	श०	श०
" ७००	श०	श०	श०
" ५५०	श०	श०	श०
" ३२६	श०	श०	श०-हूण
" २०६	श०	श०	श०-हूण
" १३०	हूण	हूण-श०	हूण
" १००	हूण	हूण-श०	हूण
ईसवी १००	हूण	हूण-श०	हूण
" ४२५	कगली	कगली	कगली
" ५५७	तुर्क	तुर्क	तुर्क
" ६७३	तुर्क	तुर्क	तु०-किर्गिज
" ८९२	तुर्क	तुर्क	किर्गिज
" १२२०	तुर्क	तुर्क	किर्०-मगोल
" १५००	तु० (कजाक)	तु० (कजाक-किर्०)	किर्०-मगोल
" १७५७	कजाक	कज-किर्०-मगोल	किर्०-मगोल
" १८६५	कजाक	कज०-रूस	कज०-रूस
" १९१७	कज०-रूस	कज०	कज०-रूस

## कजाक

अक्टूबर-क्रांतिक कजाक लोग अब भी बहुत कुछ घुमन्तू पशुपाल थे। हम यह देख चुके हैं, कि इन घुमन्तू जातियोका पशुपाल-अवस्थामे रहना उनके सामन्ती समाजके विकसित होनेमे बाधक नहीं था। इस प्रकार वर्गके तौरपर कजाकोके मुखिया और शासक सामन्ती जीवन व्यतीत करते सामन्ती सस्कृतिसे भी परिचित थे। घुमन्तू जातियोमे दूसरी घुमन्तू जातियोका हजम होना बहुत आसान है, और अपने सरदारो या वीरोके नाम स्वीकार करनेके कारण उनके प्राचीन नामोका पता लगाना भी मुश्किल है। कजाकोके बारेमें हम देख चुके हैं, कि पहले इन्हे उज्वेक या उज्वेक-कजाक कहा जाता था। सुवर्ण-ओर्दूका नाम एक शक्तिशाली उज्वेक खान (१३१३-४० ई०) के अधीन होनेके कारण पडा। कजाकका शब्दार्थ चाहे अरबी भाषामें डाकू हो, लेकिन यहापर तुर्कोंने इसका इस्तेमाल साहसी लोगोके लिये किया। किर्गिज-कजाक और उज्वेक-कजाक नामके अन्तके कजाक और किर्गिज नाम अब रह गये, जो अपनी-अपनी जातिके परिचायक हैं। कजाक कबीलोके नामोके देखनेसे हमें पता लगता है, कि पुराने कौन-कौन-से कबीले या जातिया आकर इस भूमिमें मिश्रित हो एक जातिके रूपमें परिवर्तित हुई। कबीलोके ये नाम कजाको और उज्वेको मे बहुत-कुछ एक-से मिलते हैं, जिससे इस बातकी पुष्टि होती है, कि मूलतः कजाक और उज्वेक एक ही कबीलेके अंग थे। दोनो जातियोके कुछ कबीले हैं —

कजाक	उज्वेक	आनका काल
कुग्राद (सुवर्ण-ओर्दू)	कुग्राद	मगोल-काल
किपचक (मध्य-ओर्दू)	किपचक	तुर्क-काल
किताई (लघु-ओर्दू)	खिताई	
नैमान (मध्य-ओर्दू)	नैमान	मगोल-काल
उजुन (मध्य-ओर्दू)	ओशुन	शक-काल
उसिउन (सुवर्ण-ओर्दू)	"	
तजलर (लघु-ओर्दू)	ताज	
तरी-उइगुर (मध्य-ओर्दू)	उइगुर	मगोल-काल



कजीगली (मध्य-ओर्दू)	कजीगली	
जलैर (सुवर्ण-ओर्दू)	जलैर	मगोल-काल
कगली (सुवर्ण-ओर्दू)	इचकिली	
अलचिन (लघु-ओर्दू)	अलचिन	

इतिहासमें इन कबीलोमेंसे कितनोका हमें पता लगता है। कगली (ककली, कग) बहुत पुराना नाम है, जो यहा आये हणोके पुराने वंशजोको दिया गया। नैमन किसी समय इतिशसे मगोलियाकी पुरानी राजधानी कराकोरमतक—अर्थात् पीछेकी उत्तरी जुगारियामें बसते थे, जहासे मगोल-विजेताओके ओर्दूका भाग बनकर यह मध्य-एसियामें आये।

जलैर बैकाल-प्रदेश तथा दौरियाके बीचमें किसी समय रहते थे, जहासे ये मगोलोके साथी बने।

उइगुर लोगोका केन्द्र भी किमी समय विश्वालिग था। एक बार तुर्कोके स्थानमें इन्होंने अपनी प्रभुता स्थापित की थी, फिर मगोलोके अनुयायी हो उनकी विजयोमें शामिल हो गये।

कुकुर्द या कुग्राद मगोलोका एक बहुत प्रतिष्ठित कबीला था, जो किसी समय दोलेनोर सरोवर, निम्न कैरलोन तथा अर्गुनकी उपत्यकाओमें रहता था।

अलचिन पहले खिगन पर्वतमालाके वासी थे।

कजाक कबीलोको आजके कजाकस्तानके भिन्न-भिन्न भागोमें हम निम्न प्रकार वितरित देखते हैं—

(१) महा-ओर्दू—इसके उइसुन और सीखिम कबीले ताशकन्दके जिलेमें मिलते हैं। औलि-याअता (जम्बुल)में इसके जानी, तेमिर, चीमिर और वोतपाई (खित्तन) कबीले रहते हैं। तुर्किस्तान-शहरके पास और चू-उपत्यकामें सिरगिली, उस्ती, ओतकची, जलैर, चपराच कबीले बसते हैं। कगली ताशकन्दके पासमें रहते हैं।

(२) मध्य-ओर्दू—इस ओर्दूका किपचक कबीला ताशकन्दके पास रहता है। कुग्राद भी वही बसते हैं। इनके अतिरिक्त ताशकन्दके आसपास मध्य-ओर्दूके अल्तीअता, कोकतुनगुलू अल्तीअता, कोकतुनचुई, अर्गुन, नैमन भी बसते हैं।

## २ १९१६ ई० का विद्रोह (जारशाहीसे)

जारशाहीके प्रभारके बारेमें लिखते वक्त हम यह बतला चुके हैं, कि किस तरह अपने शाननको दृढ़ करनेके लिये साइबेरिया और दूसरी जगहोंपर रूसी किसानो और व्यापारियोकी औपनिवेशिक वस्तिया बसानेकी कोशिश की गई। कजाकस्तानकी भूमिमें ये वस्तिया अधिकतर उनके उत्तर तथा उत्तर-पूर्वमें हैं। लेकिन, जागे चलकर वह ओरेनबुर्गसे सिर-दरियाके किनारे ताश-कन्द, और फिर सप्पनद तथा जलताई होते साइबेरियाके ओम्स्क आदि नगरोतक चली गई। पीछे ओरेनबुर्गमें अराल समुद्रके तटतक और फिर ताशकन्द होते वेनीतक रेल बन गई। तुर्किस्तानको साइबेरियासे मिलानेवाली रेलवे लाइन बोल्शेविक-क्रांतिके बाद बनी, लेकिन इससे पहले भी ओरेनबुर्ग, जगल्स्क, जरिम, चिमकन्द, वेनी (अल्माअता), वुर्लुन्युवे, आयागुज, सेमीप्लातिन्स्क, वर्नोअल, नवोमिबिस्कके आधुनिक रेल-मार्गपर जहा-तहा रूसियोकी वस्तिया बस चुकी थी। जार शाहीने पूरी कोशिश की, कि गोरोंके साथ विशेष रियायत करके उन्हें किर्गिजोंसे अलग रक्खा जाय। भारतमें अंग्रेजोंके लिये ऐसा करनेमें सुभीता था, क्योंकि यहापर अंग्रेज किसान और मजदूर आकर बसने नहीं पाते थे, और भारतीयोंके लिये सभी अंग्रेज साहेब (स्वामी) थे, लेकिन कजाकभूमिमें लोग साहेब-रूसियोंको ही अपने पास नहीं, बल्कि लाखोंकी संख्यामें रूसी मजदूरों (गर्गिय किमानों)को भी देखते थे। उपनिवेशोंमें आकर बसे रूसियोंकी हालत कुछ बेहतर जरूर थी, और मजदूर या मजदूरकी शकलमें आये रूसी भी कुलक (धनी किसान) बननेमें

सफल हो जाते थे, इसलिये भी वह स्थानीय कजाकोके साथ भाईचारा स्थापित नहीं कर सके। घुमन्तू पशुपाल कजाकोको कृषि-भूमिकी उतनी आवश्यकता नहीं थी जितनी कि गोचर-भूमिकी, इसलिए वह अपनी भूमिके साथ उतनी घनिष्ठताका भाव नहीं रख सकते थे, जितना कि किसान। जारशाही सरकारकी बराबर कोशिश रहती थी, कि खेतीके लिये उपयुक्त भूमि कजाकोसे छीनकर रूसियोंको दे दी जाय। ९ नवम्बर १९०६ ई०को इसके बारेमें वल्कि भूमि-सबधी एक नया कानून बनाकर कजाकोको उनकी भूमिसे वंचित करनेका भारी उपक्रम किया गया। कजाकोकी जमीनपर रूसी कुलकोके पन्नैकी यही कथा है।

कजाकोकी सांस्कृतिक अवस्था बड़ी हीन थी। उनमें निरक्षरताका अवड राज्य था, और केवल उनके बाय (सामन्त) और मुल्ला पढ़-लिख सकते थे। स्त्रियोंकी अवस्था तो इस्लामकी स्कावटोके कारण और बुरी थी। कजाक अपने पूर्वजोंके स्वतन्त्रता-सघर्षको बहुत-कुछ भूल चुके थे। अगर उनमें कोई सघर्ष होता था, तो आपसी कबीलोंका, जिसको जाग्रत रखनेके लिये जारशाही शासक पूरी कोशिश करते थे। एक प्रकारसे कजाक गहरी नीदमें सोये थे, या किस्मतकी बदनसीबी समझकर निष्क्रिय-से हो गये थे। इसी समय १९०६ ई०का अन्यायपूर्ण भूमि-सबधी कानून जारी हुआ, और उधर १९०५-६ ई०की रूसी-क्रांतिकी प्रतिध्वनि कजाकस्तानके रूसी मूजिको द्वारा कजाकोमें भी पहुँची। यहाँ आकर वैसे रूसी सरकारी अफसरों, व्यापारियों या कुलकोको उस क्रातिसे कोई सहानुभूति नहीं थी, लेकिन तो भी उसकी चर्चा तो होनी ही थी, इसलिये रूसकी सुनी-सुनाई खबरोंने कजाकोने फिर कुछ चेतना पैदा की। ऊपरसे जारशाहीकी न तृप्त होनेवाली लालचने थप्पड़ लगाकर उन्हें जगानेकी कोशिश की। १९१३ ई०में सन्तनदके राज्यपाल फोलबोमने लिखा था—रूसी सरकारके प्रति कजाक गरीबोंमें शत्रुताके भाव देवे जाते हैं।

प्रथम विश्वयुद्धमें कजाकोके ऊपर और भी सकट पैदा हुआ। उनसे बड़ी भारी सख्यामें घोड़े, ऊट ले लिये गये, फौजोंके खानेके लिये बकरी, भेंड और दूसरे जानवरोंका मांस लाखों टन भेजा जानें लगा। अनाज भी ढो-ढो कर सेनाके खानेके लिये भेजा गया। जीवनोपयोगी सभी चीजोंका अभाव तो होना ही था, ऊपरसे जारशाही अफसरों, देशी-विदेशी व्यापारियों और जमींदारोंने चीजोंके दाम को मनमानी और सट्टेबाजीसे बहुत चढ़ा दिया, जिसके कारण कजाक जन-साधारणकी अवस्था दुस्सह हो गई। फिर २५ जून १९१६ ई०को जार निकोलाइ II का उकाषे (राजादेश) निकला, जिसके अनुसार १९ से ४३ वर्षके पुरुषोंको जबर्दस्ती भर्ती करके युद्ध-पक्षियोंके पीछे काम करनेके लिये भेजा जाने लगा। कितने ही वर्षोंसे भीतर-ही-भीतर सुलगती हुई अमनोपकी आग १९१६ ई०के विद्रोहके रूपमें भड़क उठी, और सन्तनद तथा तुरगाईके जिलोंमें सब जगह दगावत फैल गई। ३ अगस्तको पहलेपहल वेर्ती (आधुनिक अल्माअता) के उयेज्द (जिले)के किजिल वुरकोव्स्की मडलमें विद्रोह शुरू हुआ, और १० अगस्ततक वह सारे इलाकेमें फैल गया। १९१६ ई०के सितम्बरके उत्तरार्धमें तुरगाई ओब्लास्त (तहमील)में विद्रोह शुरू हुआ। इस विद्रोहका नेता एक गरीब मा-बापका लडका अमनगेल्दी इमानोफ था, जिसने अपनी वीरता और सूझ-बूझसे विद्रोहियोंका इतना अच्छा नेतृत्व किया, कि जारशाही सरकार वर्षोंतक उससे परेशान रही और केवल अपने खातमेके साथ ही उसे उसमें छुट्टी मिली, यह पहिले बतला चुके हैं। १९१६ ई०के अक्टूबरमें हजारों विद्रोही जन्मे जारशाहीमें लोहा ले रहे थे, जिनमें कभी-कभी पन्द्रह हजारतक आदमी शामिल थे। उनको दवानेके लिये जेनरल लावरेन्तेफके अधीन सैनिक अभियान भेजा गया लेकिन विद्रोह दवानेकी जगह, उस मालके नवम्बर महीनेतक सभी कजाकोमें फैल गया, तुरगाई ओब्लास्तके पचास हजार आदमी उनमें शामिल थे। यह विद्रोह गरीबोंके विद्रोहका रूप ले चुका था, जिसके कारण कजाक धनियों और मामन्ताको, उससे डर लगा और वह जारशाहीको विद्रोह दवानेमें पूरी तौरमें मदद करने लगे। वाइतुरगनोफ, दुलातोफ आदि ऊपरी वर्गके कजाक-नेताओंने उस समय रूसी सरकारके प्रति अपनी क्रियान्मक राजभक्ति दिखलानेमें कोई कसर उठा नहीं रखी। नवम्बरके उत्तरार्धमें रूसी नेताओंके प्रहारके कारण अमनगेल्दी इमानोफको तुरगाईसे भागकर बतपक-कगके इलाकेमें घरा। नेनी

पडी, और खूली लडाईकी जगह उसने छापामारी स्वीकार की। १९१७ ई०की जनवरीमें इमानोफने फिर तुरगाईमें आकर विद्रोहको भडकाया। जनरल लावरेन्त्सेफने फरवरी १९१७ ई०में वतपक-करापर चटाई करके इमानोफकी शक्तिको खतम करनेका निश्चय किया, और २४ फरवरीको उसने इमानोफके प्रतिरोध-केन्द्र वतपक-करापर अधिकार कर लिया। इमानोफ अपने बहुतसे सहकारियोंके साथ दस्त (स्तेपी)की ओर भाग गया। विद्रोहको दमन करनेमें जारशाहीने बड़ी क्रूरताका परिचय दिया। सप्तनदके निवासियोंमेंसे एक-चौथाई—तीन लाख स्त्री-पुरुष—नागरक चीनके इलाकेमें चले गये, कितने ही गाव-के-गाव उजड़ गये। १९१६ ई०के विद्रोहको यद्यपि जारशाहीने दबा दिया, किन्तु उसमें कजाकोको जो शिक्षा मिली थी, उनके मनमें जारशाहीके विरुद्ध जो घृणा पैदा हुई थी, उसने बोल्शेविक-क्रांतिको मदद पहुँचाई। अपने मघपमें उन्होंने निम्न श्रेणियोंके रूसियोंको उतना कर नहीं पाया था। उनका नेता इमानोफ जल्दी ही समझ गया, कि अब सभी गरीबों और कमकरोकी भलाई बोल्शेविक-क्रातिमें ही है। वह अन्तमें बोल्शेविक पार्टीमें शामिल हो क्रातिके लिये लड़ा। आज अमनगेल्दी इमानोफ कजाकस्तानका सबसे बड़ा यगस्वी वीर है।

फरवरी-क्रातिके हो जानेके बाद १९१७ ई०की मईके अन्तमें भी तुरगाईमें अभी पूरी तरहसे शांति स्थापित नहीं हुई थी। अस्थायी सरकारने तुरगाई ओब्लास्तके लिये अलीखान कुकेडखानोफकी सहायतामें बहुत-से कजाक-विद्रोहियोंको गिरफ्तार किया, जिनमें इमानोफ भी था। अक्टूबर-क्राति मिरपर आई, जिनमें सप्तनदमें भी रूसियोंको क्रांतिकारी और क्राति-विरोधी दो दलोंमें विभक्त कर दिया। उधर बोल्शेविक सरकारने जातियोंके आत्म-निर्णयका अधिकार देकर कजाकोके हृदयमें अपने प्रति विश्वास और भक्ति भर दी, जिसके लिये १९१६ ई०के विद्रोही अब क्रातिके निपाही बन गये। इसी समय दूतोंके नेतृत्वमें ऊपरी वर्गके कजाकोने ओरेनबुर्गमें अपनी सरकार कायम करके लोगोंकी आँखोंमें बूल झाँककर अपनी ओर करना चाहा, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं हुई। नवम्बर १९१७ ई०से मार्च १९१८ ई०तक क्राति और प्रतिक्रातिका मघप होकर अन्तमें सारा कजाकस्तान जारशाहीके अवशेषोंसे मुक्त हो गया।

कजाकस्तान उस समय जारशाही नीतिके कारण एशियाई और यूरोपीय दो प्रकारकी जमातोंमें बँटा हुआ था, इसलिये क्रातिके लिये संघर्ष भी दोनों जमातोंमें अपने-अपने तौरसे हुआ। सप्तनदके क्रातिके रूसी नेताओंमें से एक ग० फेदेरोफ भी था। उसने वहाके बारेमें लिखते हुये बतलाया है, कि फरवरी-क्रातिके होनेतक त्रेन्ना (आधुनिक अल्माअता) में सिर्फ एक तरुण सगठन था, जिसके सदस्य रूसी सरकारी अफसरो और व्यापारियों-पूजीपतियोंके लड़के-लड़कियाँ होते थे, और जिनका नेतृत्व जगन्मत्त जव्यापकोंके हाथमें था। फरवरीके बाद अल्माअताके स्कूलके विद्यार्थियोंने "नीज़दान विद्यार्थी मघ"के नामसे एक सगठन कायम किया। लेकिन, फरवरी-क्रातिसे पक्षपाती जारका हटा कर भी जारशाहीकी हरएक बातको कायम रखना चाहते थे, इसलिये इन विद्यार्थी मघका काम था बनभोज, नाच-गान और पान-मोष्ठियोंद्वारा मनोरंजन करना—आखिर, उसके सदस्योंमेंसे १० फीसदी अफसरो, सेठों और कुलकोंकी मताने ही तो थी।

### ३ क्राति-संघर्ष

अक्टूबर-क्रातिके होने समय यहापर क्राति-विरोधियोंका बोलबाला था। वह हर तरहसे कोशिश करने, कि यहा मोवियतका प्रभाव स्थापित न होने पावे। लेकिन अब समाजवादकी बातें अल्माअतामें भी पहुँचने लगी थी। मार्च-अप्रैल (१९१८ ई०) तक तरुणोंने अपने कितने ही अध्ययनचक्र तथा दूसरे सगठन कायम कर लिये। अब गृहयुद्ध साफ दिखलाई पड़ रहा था, इसलिये कमकरो और तरुणोंके जवर्दस्त सगठनकी जरूरत पड़ी। फेदेरोफने लिखा है—एक दिन मैं अपने एक नाबाले मिली। उसने डकुत्स्कके छपे एक समाचारपत्रको दिया। मैंने उसे पढ़कर देखा, कि माइनेरियाके तरुण क्रातिके लिये कितना काम कर रहे हैं। इसके बाद हमने डकुत्स्कके नमूनेपर तरुणोंका सगठन करना शुरू किया। इस प्रकार तरुण-विद्यार्थी समाजवादी-

सघ अस्तित्वमें आया। फेदेरोफ और उसके साथियोंने जब अपने सगठनको मजबूत करते प्रचार करना शुरू किया, तो उनके एक सहकारी अध्यापकने कहा—“हम बोल्शेविकोंके साथ काम नहीं करना चाहते। लेकिन अब प्रवाहको रोक नहीं जा सकता था।” लाल सेनाकी सफलताओंकी खबरे भी क्रांति-पक्षियोंमें उत्साह और क्रांति-विरोधियोंमें निराशा पैदा कर रही थी। फेदेरोफने एक दिन अपने क्लासमें कहा—क्रांति-विरोधी पथ सेठोंके हितका पथ है, हमको क्रांतिका पथ लेना चाहिये। इसपर अल्माअताके एक रूसी सेठके पुत्रने उसे मार डालनेकी धमकी दी। सघर्ष और ज्यादा बढ़ता गया। फेदेरोफ-जैसोको गुप्त गुटोका सगठन करना पड़ा। जनवरी १९१९ ई०तक अभी सप्तनदमें क्रांति-विरोधियोंका ही पल्ला भारी था, लेकिन जब ताशकन्दपर कम-करोकी विजय हो गई, तो अल्माअतामें भी उसका प्रभाव बढ़ा, और वहां बोल्शेविक विद्यार्थी सघ स्थापित हुआ, जिसका निर्वाचन करनेके लिये २५ जनवरी १९१९ ई०को सौ सदस्य एकत्रित हुये।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि अक्टूबर १९१७ ई०तक अल्माअतामें कोई राजनीतिक पार्टी नहीं थी। मार्क्सवादी साहित्यका वहां मिलना भी मुश्किल था, और कुछ तरुण गुपचुप केवल क्रांतिके बारेमें विचार-विनिमय भर कर लिया करते थे। कजाको और रूसियोंको इस तरह अलग-अलग रक्खा गया था कि वह एक-दूसरेके साथ अभी विचारों द्वारा भी सहयोग नहीं कर पाते थे। लेकिन, ताशकन्दमें लालझंडा गड जानेपर सप्तनदमें भी क्रांतिके लिये रास्ता साफ था। जून १९१९ ई०में पार्टीके सघमें लोगोंको शिक्षा देनेके स्तेल्माशेस्की लिये आया। इससे पहले वह लाल सेनामें राजनीतिक प्रचारका काम कर चुका था। फेदेरोफ १९१९ ई०में साइबेरियाके क्रांति-विरोधियोंके साथ लड़नेके लिये युद्धक्षेत्रमें चला गया था, लेकिन जब वह नवम्बर १९१९ ई०में वहांसे लौटा, तो उस समयतक सप्तनदके क्रांतिकारियोंने बहुत बड़ा सगठन खड़ा कर दिया था, और किमानो और मजदूरोंमें से तीन सौसे अधिक तरुण क्रांतिके प्रचारमें पूरा भाग ले रहे थे। इस सगठनका नाम “लाल समाजवादी तरुण-सघ” था। इसके प्रचारक अब रूसी गावों और कजाक औलोमें भी पहुंच चुके थे। इस समयतक कराकोल, पिशपेक (आधुनिक फ्रुजे) और जारकेन्द आदि नगरोंमें भी सगठन हो चुका था। “यूनी कम्युनिस्त” (युवक कम्युनिस्ट) पत्र भी निकलने लगा था, जिससे और जगहों में क्रांतिके लिये क्या हो रहा है, इसकी खबरे मिलने लगी, और अल्माअता तथा सप्तनदके तरुण समझने लगे थे, हम अकेले नहीं हैं, क्रांति सब जगह सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है। इसके कारण लोगों में उत्साह बढ़ना जरूरी था। दिसम्बर १९१९ ई०में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें रूसी और कजाक दोनों जातियोंके तरुण रायन (जिले)के भिन्न-भिन्न भागोंसे आकर शामिल हुये। इसीमें ताशकन्दमें होनेवाली तुर्किस्तान-प्रदेश-तरुण-कम्युनिस्ट कांग्रेसके लिये प्रतिनिधि चुने गये। प्रदेश कमेटीके अब्दुर्रहमानोफ, जीय-कुलोफ जैसे कजाक तरुण भी मेम्बर चुने गये। कजाको और रूसियोंके बीचमें खड़ी की गई दीवार ढह गई थी, इसलिये दोनों एक होकर काम करने लगे। यममोफ, खुदायेफ, बेन्चुकोफ, यार मुहम्मदोफ, इसायेफ-जैसे तरुण कजाक आगे बढ़े। उस समय लेनिनग्राद और मास्कोमें गृहयुद्धके कारण खाद्यका अकाल पड़ा हुआ था, जिसमें सहायता देनेके लिये तरुणोंने अन्न जमा करना शुरू किया। पिशपेककी तरुण कम्युनिस्ट कमेटीने अपने कार्यालयकी छतको अन्नमें भर दिया था।

अप्रैल १९२० ई०के अन्तमें प्रथम सप्तनद तरुण कम्युनिस्ट कांग्रेस हुई, जिसमें अल्माअता, पिशपेक, फ्रुजे, जारकेन्द और कराकुलके प्रतिनिधि शामिल हुये। इन प्रतिनिधियोंमें दस कजाक थे। एक सालके भीतर ही दूसरी कांग्रेस हुई, जिसमें सभी तहमीलों तथा बहुतमें औलोंके भी एक सौ पचास तरुण शामिल हुये।

अल्माअताके अनिरिक्त कजाक भूमिमें किजिलार्द (भूतपूर्व पेगेरस्की), कजालिन, तुर्किस्तान शहर, औलियाअता आदिमें क्रांतिके पक्षपातियोंने सबसे पहले अपने सगठन मजबूत किये। १९१८ ई०में ताशकन्दमें जो कांग्रेस हुई थी, उनमें किजिलार्दके तीन प्रतिनिधि शामिल हुये थे। १९१८ ई०में यद्वाके अधिकांश पार्टी-मेम्बर वन्दूकें लेकर युद्धक्षेत्रमें क्रांति-विरोधियोंसे लड़ने चले

गये थे। १९१८ ई०के अन्ततक किजिलओर्दाकी पार्टीमें चार सौ मेम्बर थे, जिनमें दो सौ रूसी और दो सौ कजाक थे। राजनीतिक जागृतिके साथ-साथ कजाकोमें पढ़नेके लिये ज्यादा उत्साह होना स्वाभाविक था, जिसके लिये कजाक भाषामें पुस्तकें और पत्र छापे जाने लगे।

कजालिनमें वोटशेविकोंका पहला सगठन जून १९१८ ई०में हुआ। यहूके लोगोको भी क्राति-विरोधियोंके साथ लड़कर अपनी निष्ठाका परिचय देना पड़ा।

तुर्किस्तान शहरमें नगरकी कम्युनिस्ट पार्टीका सगठन पहलेपहल अप्रैल १९१८ ई०में हुआ, और औलियाअतामें वह उसी सालके अगस्तमें। औलियाअताकी पार्टीमें सालके अन्ततक एक हजार कजाक मेम्बर थे। वामपक्षी क्रांतिकारी समाजवादी पहले पार्टीके साथ सहयोग देते रहे, लेकिन पीछे उन्होंने विरोध शुरू कर दिया, और इस प्रकार वह क्रातिसे भी दूर हो गये।

अल्माअताके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। तर्णोंके सगठनके बाद जनवरी १९१८ ई०में वहां पार्टीका सगठन हुआ। अगस्तमें कराकुल, जुलाईमें जारकेन्दमें भी सगठन हुये।

### ४ सोवियत-शासनकी स्थापना

१९१८ ई०में मध्य-एसियामें सोवियतका शासन स्थापित हो चुका था, और उसी सालके अप्रैल-मे मासकन्दमें प्रदेश-मोवियतोंका सम्मेलन हुआ। इसीमें तुर्किस्तान स्वायत्त सोवियत गणराज्यका निर्माण हुआ, जिसमें अल्माअता, औलियाअता (जम्बुल), दक्षिण-कजाकस्तान, और किजिल-ओर्दाके जिलोंको मिलाकर कजाक-सोवियत-समाजवादी-गणराज्यकी स्थापना हुई, और कजाक भाषाको गणराज्यकी मुख्य भाषाके तौरपर स्वीकार किया गया। वसन्त १९१८ ई०से १९१९ ई०की समाप्ति तक कजाकस्तानमें भीषण गृहयुद्ध होता रहा। क्राति-विरोधी रूसी और कजाक दोनों ही तर्ण मोवियत सरकारको उखाड़ फेंकनेके लिये हर तरहकी कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनका संघर्ष जितना ही सख्त होता गया, उतना ही रूसी सर्वहाराका कजाक सर्वहारोंसे भानुभाव दृढ़ होता गया, और रूसी क्रांतिकारियोंने अपने आचरणसे दिखला दिया, कि सर्वहाराके राज्यमें कालि-गोरेंका कोई भेद नहीं है। गृहयुद्धके मध्य १९१८ ई०की जुलाईके आरम्भमें कई भागोंको क्राति-विरोधियोंने छीन लिया था, तो भी अल्माअता, जम्बुल, दक्षिण-कजाकस्तान, किजिलओर्दा, अकत्यिन्स्कके जिले सोवियत शासनमें रहे। १९१९ ई०में क्राति-विरोधी जनरल कोलचेक्में आखिरी लड़ाई हुई, जिसमें कजाकस्तानके क्रांतिकारियोंने पूरी तौरसे भाग लिया। कोलचेक्के हारनेके बाद ४ अप्रैल १९१९ ई०को कजाकस्तानकी सोवियतोंकी कांग्रेस हुई, जिसमें किर्गिजोंके बारेमें भी विचार करके किर्गिज क्रांतिकारी कमेटी संगठित की गई। अभी तक किर्गिज और कजाक दोनों एक ही गणराज्यमें थे, वल्कि यह कहना चाहिये, कि मध्य-एसियाकी सभी जातियां अभी एक तुर्किस्तान स्वायत्त गणराज्यमें मानी जाती थीं। लेकिन आगे जातियोंके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार किर्गिजोंको भी अपने स्वतंत्र गणराज्यके कायम करनेका अवसर मिला। बोल्शेविक-क्रातिने मोवियत संघके क्षेत्रफलमें दूसरे नंबरके सबसे बड़े गणराज्य कजाकस्तानको स्थापित किया। अनेक पंचवर्षीय योजनाओंने कजाकोके आर्थिक और साम्प्रतिक तलको बहुत ऊंचा कर दिया। इतिश नदीके जलको ध्रुवीय समुद्रसे हटाकर दक्षिणकी चार मोड़नेकी जो विशाल योजना बनाई जा रही है, उसके कारण तो मनन्य अपनी महान शक्ति का उपयोग करके इस भूमिको एक-दूसरा ही रूप देने जा रहा है।

### स्रोत-ग्रन्थ

- १ History of Civil War in U S S R (2 vols, G F Alexandrov and others, Moscow 1946)
- २ History of U S S R (Ed A M Pankratova, Moscow 1947)
- ३ न्योन्युनिया रू न्नेदनेड ज़ाज़िइ (ताशकन्द, १९२९)
- ४ द्वादन्मन् लेत् कजाकस्ताना (लेनिनग्राद १९४०, पृष्ठ ७-१५)

## किर्गिजस्तानमें क्रांति

### १. किर्गिज

किर्गिजस्तान मध्य-एशियाके सबसे ऊँचे पहाड़ों त्यानशान्का देश है। यहीपर सात हजार मीटरसे भी अधिक ऊँचे लेनिन्स्क और खानतिगरीके सनातन हिमाच्छादित पर्वतशिखर हैं। इसकी कितनी ही हिमानिया ८० किलोमीटर (६० मीलसे ऊपर) लम्बी हैं, और मध्य-एशियाकी सबसे बड़ी नदिया सिर-दरिया, आमू-दरिया (वक्षु), चू, तलस और जरफशा यहीसे निकलती हैं। हमारे यहाँके हिमालयके सबसे अधिक सुन्दर दृश्य यहाँ देखे जा सकते हैं। प्राकृतिक सौंदर्यके अतिरिक्त किर्गिजस्तान (किर्गिजिया)में कोयला, पेट्रोल, रागा, सुरमा, सोना, चादी आदि धातुओंकी बड़ी-बड़ी खानें हैं। चू-उपत्यका, फरगाना, तलस-उपत्यका और इस्सिककुलकी द्रोणी-जैसी खेती और बागबानीके लिये बहुत ही उर्वर भूमि यहाँपर मौजूद है। प्रकृतिने इतना समृद्ध इस भूमिको बनाया था, लेकिन यहाँके निवासी किर्गिज बोल्शेविक-क्रांतिसे पहले मध्य-एशियाकी सबसे पिछड़ी हुई जातियोंमेंसे थे, और घुमन्तू तथा अर्ध-घुमन्तू रहते अपने भेड़-बकरियों तथा घोड़ों-ऊँटोंको लिये जगह-जगह चराते फिरना ही उनकी जीविकाका साधन रखते थे। जारशाही शासन यद्यपि १९वीं शताब्दीके उत्तरार्धके शुरू हीमें स्थापित हो गया था, लेकिन उसने यहाँके लोगोंको चूसना छोड़ और कोई काम नहीं किया।

किर्गिज साइबेरियासे मध्य-एशियामें सबसे पीछे आनेवाली जातियोंमेंसे हैं। घुमन्तू होनेकी वजहसे उनके लिये पूर्वमें इतिश और पश्चिममें वोल्गाको भी अपनी विचरणभूमि बनाना कोई मुश्किल नहीं था। लेकिन मूलतः यह अल्ताईके उत्तर-पूर्वके रहनेवाले थे, जहाँपर उनके भाई-बन्द खकाश अब भी रहते हैं। अलाताउ १७१६-१९ ई०में ओब और इतिशके बीचकी भूमिके रूसके हाथमें चले जानेके समय इनको अपनी मूलभूमिसे हटना पड़ा, नहीं तो पन्द्रह सौ मीलतक साइबेरियाकी दक्षिणी सीमा किर्गिजोंकी भूमिसे मिलती थी। घुमन्तू किर्गिज लूट-मार किया करते थे, जिसके कारण रूसी वस्तियोंको खतरा रहता था, इसलिये रूसियोंने इन्हें तितर-बितर करना आवश्यक समझा। किर्गिजोंकी परम्पराके अनुसार इनके किसी पौराणिक खान अलशने इन्हें तीन ओर्दुओमें बाँटा था, जिनमें महा-ओर्दू वल्काश महामहोवरके आसपास सप्तनद और चीनी तुर्किस्तानमें घुमा करता था, मध्यओर्दू अरालके उत्तर-पूर्वी तटपर और लघु-ओर्दू तांग्रोल नदी और अरालके बीचमें पशुचारण करता था। रानी अन्ना (१७३०-४० ई०)के शासनकालमें मध्य, लघु-ओर्दूका महा-ओर्दूके साथ-झगडा हुआ। बाकी दोनों ओर्दुओंने महा-ओर्दूसे अपनी रक्षाके लिये १७३२ ई०में रूससे अधीनताके लिये प्रार्थना की। इससे बढ़कर जारशाहीके लिये और अवसर क्या मिलता? ओरेनबुर्गका व्यापारिक नगर इस वक्ततक स्थापित हो चुका था। मध्य और लघु-ओर्दूके हाथमें आ जानेपर साम्राज्यके बढ़ानेमें बड़ी सहायता मिली, और इसके बाद मध्य-एशिया और ईरानकी सीमातक पहुँचना रूसके लिये आसान हो गया। १८२२ ई०के राजादेशके अनुसार किर्गिज लघु-ओर्दूको ओरेनबुर्गकी सरकारमें डाल दिया गया, और मध्य-ओर्दू या पश्चिमी किर्गिजोंकी भूमिको पश्चिमी साइबेरियाके प्रदेशमें। किर्गिजोंको हमका बल मिलनेसे, अब वह बुखारा, खीवा या खोकन्दकी पवाँह नहीं करते थे, और उनके कारवाँको लूट करके थे। यही नहीं, वह रूसी कारवाँको भी लूटनेसे बाँध नहीं आते-थे। इसके लिये रूसको कई

सैनिक गढ़िया बनानी पड़ी। किर्गिज रुमियोंको लूटते तो दक्षिणवाले खान उनकी सहायता करते और खानोंमें झगडा होनेपर वह रूसकी शरण लेते। वह रूसी नर-नारियोंको भी गुलाम बना कर मध्य-एशियाके बाजारोंमें बेच दिया करते थे।

**किर्गिज जातिका निर्माण**—किर्गिजोंका ऐतिहासिक विकास—निम्न प्रकार हुआ

काल	त्वानशान	पामीर
ई०पू० २५००	शक	आर्य
" १५००	शक	सोग्दी
" ७००	शक	सोग्दी
" ५५०	शक	सोग्दी
" २०६	शक	सोग्दी
" १३०	शक-हूण	सोग्दी
ईसवी १००	हूण-शक	सोग्दी
" ५५७ तुर्क	तुर्क	सोग्दी
" ६७३ अरब	तुर्क	ताजिक
" ८९२	तुर्क	"
" १२२०	तुर्क	"
" १५००	किर्गिज	"
" १७४७	किर्गिज	किर्गिज-ताजिक
" १८६५	किर्गिज-रूसी	किर्गिज-ताजिक
" १९१७	किर्गिज	किर्गिज-ईरा०
" १९४७	किर्गिज	

## २ १९१६ ई०का विद्रोह

वर्तमान कजाकस्तानकी भूमिमें कई जगह बिखरे हुये किर्गिज कजाकोंमें मिल गये, बाकी भी बोलशेविक-क्रांतिके बाद कितने ही दिनोंतक कजाकोंमें सम्मिलित थे। जब पता लगा, कि किर्गिजोंकी मस्कृतिमें कुछ अपनी विशेषताएँ हैं, इस पर जातियोंके आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके अनुसार उनका गणराज्य बना। १९१६ ई०में कजाकोंमें भी जबर्दस्त विद्रोह हुआ था, लेकिन किर्गिजोंका विद्रोह उनमें भी बढ़ा हुआ था, जिसके कारण पहले जहा जारशाहीको बहुत क्षति उठानी पड़ी, वहा बादमें किर्गिजोंको भी जारशाहीके भयकर अत्याचारोंका सामना करना पडा।

**विद्रोहके कारण**—एशियामें अपने राज्यका विस्तार अंग्रेजों और रूसियों दोनोंने किया, लेकिन दोनोंके ठगामें अन्तर था। अंग्रेज हिन्दुस्तानसे बहुत दूरके वासी थे, वह अपनी जन्मभूमिसे समुद्रके रास्ते ही नवव स्थापित रख सकते थे। पर, एशियामें रूसी भूमि मिली हुई है। रूसी शब्दे जागे बढ़नेके साथ-साथ जहा रूसी सैनिक-असैनिक अफसर, व्यापारी और जमींदार आगे बढ़कर अच्छे-अच्छे पदों और भूमिपर अधिकार करते थे, वहा रूसी किसान और मजदूर भी अपने-अपने गांव बनानेमें लग जाते थे। यह रूसी गांव आत्मरक्षाके लिये रूसकी सेनाका एक अंग बने हुये थे। रूसी अफसर अपने किसानों-मजदूरोंका सब तरहमें विशेष ख्याल रखते थे, और स्थानीय लोगोंकी उपयुक्त जमीनको किसी-न-किसी बहाने छीनकर रूसियोंको दे देते थे। १८७४ ई०में पहिले पहिल सप्तनद और पामकी भूमि (पिशपेक, जालियाअता, चिमकेन्द आदि जिलों)में रूसियोंके गांव बनने शुरू हुये, जो तेजीके साथ आगे बढ़ते स्थानीय लोगोंकी पैतृक-भूमियोंपर हाथ मारने लगे। वर्तमान शताब्दीमें १९१५ ई०तक १८ लाख एकड़ (७१२०८९ हेक्टर) भूमि केवल पिशपेकके जिलेमें किर्गिजोंके हाथसे छिन गई। उसी साल किर्गिजोंवाले फरगानाके इलाकेमें ८०००० हेक्टर जमीन छीनकर रूसी किसानोंको दे दी गई। पर इतनेमें भी सतोष नहीं हुआ, और

९ जुलाई (२५ जून) १९१६ ई०को (प्रथम विश्वयुद्धके समय) जारने जलेपर नमक छिड़कते हुए एक राजादेश निकाला, जिसके अनुसार किर्गिजों और दूसरी एसियाई जातियोंको जबरदस्ती सैनिक सेनाके पीछे काम करनेके लिये भर्ती किया जाने लगा। किर्गिजोंने कौन-सा सुख जारशाही शासनमें पाया था, कि वह सेनाके पीछे कुलीका काम करनेके लिये अपनी जन्मभूमि छोड़ दूर देशमें जाते? उन्हें यह भी क्या विश्वास था, कि वहाँ जाकर कुलीका काम करना पड़ेगा या सिपाही बनकर मरना पड़ेगा। इस राजादेशके निकलनेपर मध्य-एसियाकी सभी जातियोंमें तहलका मच गया। किर्गिज सबसे ज्यादा शोषित, थे क्योंकि ये सबसे पिछड़े हुये घुमन्तू पशुपाल थे, लेकिन जारने इनके मनापो (सरदारों)को अपने हाथमें कर रक्खा था। धनी मनाप जारशाही-का विरोध करके पहले देख चुके थे, कि इससे वह रूसके जूयोंको हटा नहीं सकते। इस समय सारा तुर्किस्तान एक रूसी प्रदेश था, जिसमें त्यानशान्के पहाड़ों—सप्तनदसे ताशकन्द लेते अराल समुद्र तकके इलाके भी सम्मिलित थे। तुर्किस्तानका महाराज्यपाल करोपत्किन था और सेना अध्यक्ष फोलबौम बेर्नी (अल्माअता) का सैनिक सेनापति था।

राजादेश निकलते ही लोगोंने उसके प्रतिरोधके बारेमें सोचना शुरू किया। ११ (२४) जुलाईको जारकेन्तके किर्गिजों और कजाकोंने इसके प्रतिरोधके लिये अपनी सभाये की। किर्गिजों-कजाकोंके भीतर दुगान (चीनी मुसलमान) भी रहते थे, जो अधिकतर धनी बनिये और महाजन थे। किर्गिजों-कजाकोंमें अशांतिके लक्षणको देखकर सबसे पहले २६ (१३) जुलाईको उन्होंने चीनी इलाकेकी ओर भागना शुरू किया। ५ अगस्त (३० जुलाई)को पिशपेक जिलेके किर्गिजों-ने विरोध-प्रदर्शन किया।

६ (१९) अगस्तको पिशपेक जिलेके अतेकिन इलाकेमें किर्गिजोंने पहले पहल सशस्त्र विद्रोह आरम्भ किया। उसी दिन बतवयेफ इलाकेके किर्गिजोंने भी विद्रोह कर दिया।

७ (२०) अगस्तको तोकमकके किर्गिजोंने हथियार उठाया, उसी दिन सरीवागिसेफ इलाके-वालोंने भी विद्रोहका झंडा फहरा दिया।

९ (२२) अगस्तको कराकेचिन, जम्बल्, उरमान जोजिन, पोचकर, आबेलदिनके इलाकोंमें विद्रोह फैल गया।

१० (२३) अगस्तको पिशपेक जिलेके बेलोवद्स्क इलाकेके किर्गिज विद्रोही हुये। उसी दिन जमानसरतोफ, तलेउबेदिन, बाकिन, तलदीबुलाकके इलाकोंमें बगावत हो गई, और औलिया-अताके करालतिन इलाकेके किर्गिज भी विद्रोहमें शामिल हो गये।

११ (२४) अगस्तको प्रभेवाल्स्क जिलेके मारिन्स्क गावके दुगान (चीनी, मुसलमान) भी विद्रोहमें शामिल हुये।

१२ (२५) अगस्तको प्रभेवाल्स्कके जेलखानेमें वदियोपर रूसियोंने गोली चलाई, जिसमें उनसठ किर्गिज मारे गये और बहुतसे घायल हुये।

१३ (२६) अगस्तको तोकमकमें किर्गिजोंपर रूसी सेनाने प्रहार किया, उसी दिन बेलोवद्स्कमें भी विद्रोहियोंको सैनिकोंने दबानेका प्रयत्न किया, और १३८ किर्गिज मारे गये।

१४ (२७) अगस्तको किर्गिजोंने तोकमकको घेर लिया।

२२ अगस्त (४ सितम्बर) को रूसियोंने तोकमकमें किर्गिजोंपर प्रहार करके उन्हें तितर-बितर कर दिया।

१६ (२९) अक्टूबरतक रूसी विद्रोहपर काबू पा सके।

इस विद्रोहमें किर्गिजोंके मनाप (धनी) अधिकतर जारशाहीके साथ रहे और सबसे ज्यादा आगे किर्गिज जनसाधारण थे। कितना भीषण जनसंहार हुआ, यह इसीसे मालूम होगा, कि विद्रोहसे पहले जहाँ ६२३४० किर्गिज रहते थे, उसी जगह जनवरी १९१७ ई०में उनकी संख्या २०३६५ रह गई, अर्थात् ४१९७५ आदमी मारे गये, कितने ही जगहोंपर ६६% किर्गिज मारे गये। इस अत्याचारके बारे यदि बहुत भारी संख्यामें किर्गिज भागकर चीनी इलाकेमें चले गये, तो इसमें आश्चर्य क्या? कुरोपत्किनने इस मौकेसे फायदा उठाते हुये चाहा था, कि किर्गिजोंकी छोटी भूमिमें



रूसियोंको बसा दिया जाय। लेकिन, किर्गिजोंके विद्रोहको दबाते देर नहीं हुई, कि जारशाही ही खतम हो गई। यद्यपि उसका स्थान लेनेवाली पूँजीपतियोंकी करेन्स्की-सरकारने पुरानी नीतिको जारी रखना चाहा, लेकिन उसे भी सात महीनेके भीतर ही खतम हो जाना पड़ा।

जैसा कि अभी बतलाया, उस समय किर्गिज कजाकोसे अलग नहीं समझे जाते थे, और सप्तनद तथा सिर-उपत्यकाके कजाकोकी तरह किर्गिज भी तुर्किस्तान-प्रदेशके माने जाते थे। इसलिये विद्रोहके बाद जो घटनाये घटीं और स्थितियोंमें जिस तरह परिवर्तन हुआ, वह वही था, जो कजाकस्तान-उज्बेकिस्तानमें हुआ। जब बोल्शेविक-क्रांतिने किर्गिज भूमिमें कदम रखा, उस समय वहाँके किर्गिज धनी पहले हीसे धनी रूसियोंके समर्थक हो चुके थे।

किर्गिज शिक्षा और संस्कृतिमें बहुत पिछड़े हुये थे, जिसके कारण राजनीतिक तौरसे भी उनका पिछड़ा होना स्वाभाविक था। इनकी भूमिमें ओश, उज्गेद, पिशपेक, प्रभेवाल्स्क जैसे कुछ नगर थे, लेकिन वहाँपर भी किर्गिजोंकी अपेक्षा दूसरोंकी सख्या या प्रभाव अधिक था। ताशकन्दमें बोल्शेविकोंके आ जानेके बाद किर्गिज भूमिके कस्बोंमें भी क्रांति फैलने लगी। यहाँके रूसियोंमें अधिकतर मेन्शेविक और एस्.एस्. (समाजवादी क्रांतिकारी) ही जारशाहीके विरोधी थे, और वह पुराने आर्थिक ढाँचेमें नाममात्रका परिवर्तन करना चाहते थे, तथा एसियाइयोंको समानताका अधिकार देनेके पक्षपाती नहीं थे। ओशमें दिसम्बर १९१७ ई०में दो सौसे अधिक एस् एस् के सदस्य थे, जब कि बोल्शेविकोंको अगुलियोंपर गिना जा सकता था। पिशपेक (आधुनिक किर्गिज-राजधानी फुजे)में मार्च १९१८ ई०में अब भी एस् एस्.का प्रभाव था। लेकिन जब बोल्शेविकोंके उद्देश्यका पता लगा, तो गरीब किर्गिजोंने बड़ी तेजीके साथ आगे बढ़कर उनका साथ देना शुरू किया। वह देखते थे, कि बोल्शेविक दिलसे और व्यवहारसे भी समानताके पक्षपाती हैं, सचमुच वह गरीबोंके राज्यको कायम करना चाहते हैं। क्रांति सफल हुई। आगे १९२६ ई०में किर्गिजोंकी भूमिका अलग स्वायत्त गणराज्य कायम हुआ, जिसे १९३६ ई०में स्वतंत्र गणराज्यके तौरपर सोवियत संघका अंग बननेका मौका मिला।

किर्गिजिस्तानका क्षेत्रफल ७८००० वर्गमील तथा जनसंख्या इस वक़्त पन्द्रह लाखसे ऊपर है। आज वह मध्य-एसियाकी सबसे पिछड़ी जाति नहीं है, बल्कि रूसियोंकी तरह आगे बढ़ी हुई जाति है।

### स्रोत-ग्रंथ

- १ रेवोल्युत्सिया ब्लादेन्नेइ आज़िइ (ताशकन्द १९२९)
- २ किर्गिजिया (व. बिल्कोविच, १९३८)
- ३ वोस्तानिये १९१६ गदा व किर्गिजिस्ताने (ल. व. लेस्नोइ, मास्को १९३७)
- ४ किर्गिजिया (शुदी पेर्वोइ कान्फेन्त्सिइ, लेनिनग्राद १९३४)
५. तुर्किस्तान्स्कओ वोयेन्नओ ओक़्गू (जिल्द १, पृष्ठ ३३८-५१)
६. तैमिर (उपन्यास, तो तुगेल्वाइ सिदिकवेकोफ़ अनु० व. रोझ्देस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)
- ७ History of civil war in U S S. R. (2 vol. G. F. Alexandrov and others, Moscow 1946)

## ताजिकिस्तानमें क्रांति

### १. सोन्दियोके वंशज

हम देख चुके हैं, कि किसी समय सिर-दरियासे वक्षु-दरियातक, पामीरसे कास्पियन तटतक सोगद और ख्वारेज्मकी ईरानी जातियाँ बसती थी, जिनके समयमें यहाका सामाजिक और सांस्कृतिक विकास बहुत हुआ। ईसाकी पांचवी सदीतक यद्यपि शक और हेप्ताल-जैसी जातियाँ बाहरसे आकर इस भूमिमें बसती गईं, किन्तु वह हिन्दी-यूरोपीय जातिकी होनेकी वजहसे इनके भीतर आसानीसे घुल-मिल गईं और पुरानी सांस्कृतिक परम्पराके आगे चलते रहनेमें बाधक नहीं हुई। छठी शताब्दीमें तुर्क मंगोलायित भाषा और मुखमुद्रा लिये यहा आये, जिन्होंने भी यद्यपि मुखमुद्रामें कुछ परिवर्तन किया, लेकिन सांस्कृतिक तौरसे बहुत भेद नहीं पैदा किया। ७वी सदीका अन्त होते-होते अरब इस भूमिमें छा गये, और कुछ ही समयमें यहाके सभी लोग मुसलमान हो गये। लेकिन पुराने सोन्दियोने अपने सघर्षको जारी रक्खा, इसका परिणाम यह हुआ, कि अरब-शासको और उनके अनुचर खुरासानी मुसलमानो ने सोगदी वीरो और उनकी भाषाको दुर्गम पहाडोंमें शरण लेनेके लिये मजबूर किया। १९वी सदीसे बहुत पहले ही पुराने अन्तर्वेदकी भाषा तुर्की हो गई, केवल शहरो और कुछ गावोंके रहनेवाले सर्त या ताजिक ईरानी भाषा बोलते थे, लेकिन यह ईरानी भाषा सोगदी नहीं, बल्कि खुरासानी मुसलमानोके साथ आई उनकी फारसी थी। पहाडोंमें भाग गये सोन्दियोंके पीछे एकके बाद एक दूसरे भी फारसीभाषी शरणार्थी आते रहे, जिनके कारण धीरे-धीरे सोगदी भाषाका स्थान वहा भी फारसीकी स्थानीय बोली ताजिकी लेती गई। आज तो पुरानी सोगदी भाषाकी बोली गलचा या यग्नावी केवल जरफशाकी एक शाखा यग्नाव नदीके किनारेके कुछ थोड़ेसे गावोंमें रह गई है। वहापर भी ताजिकी भाषा कितनी घुस गई है, यह १९३४ई०के वहाके गावोंके आकड़ोंसे मालूम होगा —

ग्राम	यग्नावी	ताजिक
नवावाद	१५१८	६३४
यग्नाव	६४०	१७७०
दोनो गावोंमें	२१५८	२४०४

इस प्रकार पुराने सोन्दियोंकी भाषा और उनके प्राचीन समाजके कुछ अवशेष वर्तमान ताजिकिस्तान गणराज्यमें जरफशा नदीकी शाखा यग्नाव और वरज़ावके किनारेके कुछ गावोंमें अब मौजूद है। सोवियत शासनके स्थापित होनेके बाद इन प्राचीन सांस्कृतिक अवशेषोंके जाच-पड़-तालकी काफी कोशिश की गई। रूसी वैज्ञानिकोंने वहापर प्राचीन सघवादी पारिवारिक जीवनके चिह्न पाये। कितने ही गावोंमें कई परिवारोंके रहने लायक एक-एक घर उन्हे मिले, जिनको बड़ी-बड़ी शालायें केवल यग्नावियोंमें ही मिलती। कोकतेपा, जूमान, गराव, आवेसफेद-जैसे कितने ही गावोंको उन्होंने देखा। देहबुलन्द ऊपरी यग्नावमें सामूहिक परिवारोंका आलाखाना और मेहमानखाना इस बातका प्रमाण था।

**यग्नावी भाषा—**यग्नावी भाषाको कोई-कोई ईरानी और भारतीय आर्यभाषा-वंशोंसे बलग बतलाते हैं, लेकिन यह बात सही नहीं मालूम होती। वस्तुतः सोगदीकी पुत्री यग्नावी ताजिकी और फारसीसे कितनी ही बातोंमें अन्तर रखते भी ईरानी-भाषावशकी ही है। सोवियतके भाषा-शास्त्रियोंने यग्नावी भाषाके बहुतसे नमूने कहानियों आदिके रूपमें जमा किये हैं। वाइस वर्पीय इब्राहिम मफर

द्वारा कही गई एक जनकयाका कुछ अश हम यहापर देते हैं। गावके 'मेहमानखाने' (सामूहिक घर) में जमा हो ऐसी कहानियोंके कहनेका यगनावियोंमें बहुत रवाज है\* —

इकम्पिरओइ । ईकल् जूतश् ओइ । के ई मेत् कलि व अवोफ—“अने दाँदो-त् विसियार पैदागर खोइ । यक् तग अवारिस्त् सत् तगा अकुन अउर् ।” के कल् यक् तगा अनोस् अनीज अतेर अशौ इयो-कइ इ मूसफेदे तीरक् अस्त् खरे वोरा ई वुज चि खरे दुम् वस्तगी । कल् आँस्ताक् अशौ वीत पक्क अकुन् वूजे अनोस् अवोउ वूजे अउर कोये अखश् । तिक् अमोन अतेर अशौ मूसफेदे अबियोर अवोव ये वाँवो वीत जाम् कुन् । अख् अगोर अवोव अने वीत-म् ई वुज ओइ वुज् नख । खरे अवोव इगुम् चक् दार मन सोउम वूजे कोवाम् । कल् अवोव वाँवो दर वाँउ खरे लाँइ खस्त्रे । मूसफेद अतेर । कल् खरे गूश दुम्-श पक्क अकुन् अवार ई कोये अखश् गूश दुम्-श अउर लोड नुत् अनीदोन् के अवोव ए वाँवो वाँऊ खरे लोइ अखश् ।

(एक वुडिया थी । उसका एक दुष्ट लडका था । एक दिन उसने अपने दुष्ट लडकेको कहा—“तेरा बाप बहुत पैदा करनेवाला था । एक तगा ले जाता और अभी सौ तगा ले आता ।” फिर दुष्ट लडका एक तगा लेकर बाहर गया । एक जगह एक गदहेके ऊपर सवार एक श्वेतकेश (बूढे) को आते देखा, गदहेकी दुममें एक बकरी बधी हुई थी । दुष्ट लडका आहिस्तेसे गया, और रस्सीको काटकर बकरीको ले गया । पीछे बूढेको आकर कहा—“हे बावा, रस्सी समेट लो ।” उसने देखकर कहा—“मेरी रस्सीमें बकरी थी, किन्तु बकरी नहीं है ।” दुष्ट लडकेने कहा—“जल्दी जाओ बावा . . .” बूढा चला गया । दुष्ट लडकेने गदहेके दुम और कानको काट लिये । फिर आकर उसने बूढेसे कहा—“हे बावा, चलो, गदहा कीचडमें फस रहा है ।” बूढा चला गया ।)

इस भाषाको देखनेसे मालूम होगा, कि फारसी समझनेवालेके लिये भी इसका समझना मुश्किल है । एकके लिये यहा ई और यीके लिये आई शब्दका प्रयोग हुआ है । दिनके लिये मेत्का शब्द पुरानी सोगदीमें 'मुद' था, जिसका फारसीमें कही पता नहीं । इसी प्रकार गदहेकी पूछके लिये दुमे-खरकी जगह खरे-दुम (खर-पुच्छ) आया है । हिन्दीकी समीपता देखनेके लिये यगनावी भाषाके गरीब ताजिक “करके” (करके) रोद्-के (रोकर) शब्दोंको भी देखें । †

बुखारा और खोकन्दके पिछले इतिहासके बारेमें लिखते हुये हम बतला चुके हैं, कि ताजिकिस्तानका पहाडी प्रदेश कभी अलग-अलग छोटे-छोटे सामन्तोंके स्वतन्त्र राज्योमें बटा रहता और कभी उसे खोकन्दके मदली खान-जैसे बाहरी शासकोंके अधीन बनना पडता । यह पहाडी इलाका अपनी खनिज और दूसरी सम्पत्तियोंको रखते हुये भी उस समय बहुत गरीब था । यहांके लोग सुन्नी मुसलमान थे, इसलिये उनके लडके-लडकियोंको गुलाम बनाकर बेचा नहीं जा सकता था । तो भी अपने सौंदर्यके लिये प्रसिद्ध यहाकी लडकियोंकी अमीर और उसके सामन्तों के हरमोंमें बडी मांग थी । यहांके पुरुष मजदूरी करनेके लिये बुखारा, समरकन्द, खोकन्द आदि शहरोंमें चले जाते । पुरुष जब वर्षोंके वास्ते रोटीके लिये धक्का खाने चले जाते, तो उनकी स्त्रिया बेचारी घर और खेतीको सभाले बाट जोहा करती । इस समयकी अवस्थाका वर्णन बहुतसे लोकगीतोंमें पाया जाता है । एक लोकगीतमें कहा गया है —

बुलबुल वागमें रोती हुई आई,  
गुलाबकी सूखी डालीपर जाकर बैठी ।  
बुलबुल अपने मुहसे बोली—  
“यह वियोगका धाव कितनोके दिलपर है ।”

× × ×

\*“शुदि ताजिकिस्तान्कोड वाज”, इस्तोगिया-यञ्जीक लितेरातुरा (अकदमी नाउक सससर १९४० मम्बवा)

† चिननी ही बातोंमें फारसी या ताजिकीमें विलक्षण है, यह उसके गाउ (गाय) कुतर (कुत्ता) और ओर्ता (आटा) शब्द भी बतलाते हैं ।

जगत्के कर्ता ते १ विचित्र महिमा,  
तेरे बन्दे सोये और तू खुद जागा ।  
अमृत-भोजन दुनियाके सामने फेंककर,  
चुगने और जानेका तू तमाशा देखता,

× × ×

अपने सफेदेके लिये अपनी हरनीको खोया,  
लोगोंके द्वारपर अपनेको फेंका ।  
लोग कहते कि तू दीवाना हुआ,  
दीवाना हू, क्योंकि मैंने अपनी प्रियाको खोया ।

× × ×

हे पथिक, किसीके साथ मैं नहीं हूँ,  
न केश धोया न कुर्ता पहना ।  
बहुतेरे कारवा आये, पूछनेपर

उन्होंने कहा— “मैंने न देखा न जाना ।”

इसी अवस्थामे ताजिकिस्तानके पहाड़ी लोग अमीर-बुखाराके पूर्वी इलाके (पूर्वी बुखारा)मे रह रहे थे, जब कि बोलशेविक-क्रांति हुई ।

ताजिकिस्तान भाषाके तौरपर पुराने सोवियतोंकी विस्तृत भूमिका अवशेषमात्र है, जिसके दक्षिणी सीमात वक्षु नदी और उत्तरी टेढा-मेढा होता सिर-दरियाके उत्तरतक पहुँच गया है । आजकल इसका क्षेत्रफल पचपन हजार वर्गमील और जन-संख्या पन्द्रह लाख है । ताजिक भाषा-भाषियोंकी वस्तिवा वैसे वक्षुसे बहुत दक्षिण काबुल नगरके पासतक चली आई है, लेकिन अभी अफगानिस्तानमे रहनेवाले ताजिक उतने सौभाग्यशाली नहीं हैं, जितने कि क्रांतिकी अग्निमे तपकर निकले उत्तरी ताजिक । मध्य-एसियाकी और किसी जातिको क्रांतिके समय नरपिशाच बासमचियों की निष्ठुरताका उतना शिकार नहीं होना पडा, जितना कि कश्मीरके उत्तरी-पूर्वी सीमान्तके पासके इन पहाड़ियोंको ।

ताजिक जातिका निर्माण—ताजिकोका ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ.—

काल	पामीर	सिर-उपत्यका
ई० पू० ४००० (मध्य-पापाण)		फिनो-द्रविड
" ३५००		शकार्य-द्रविड
" ३००० (नव-पापाण)		"
" २५००	आर्य	शक
" १५०० (पित्तल-युग)	ईरानी	श०
" ७००	ईरा०	श०
" ५५०	ईरा०	श०
" ३२६	ईरा०	श०
" २०६	ईरा०	श०
" १३०	ईरा०	हूण-श०
" १००	ईरा०	ह०-श०
ईसवी १०० (कुपाण)	ईरा०	ह०-श०
" ४२५ (हेपताल)	ईरा०	हूण-कगली
" ५५७ (तुर्क)	ईरा०	कगली-तुर्क
" ६७३ (अरब)	ईरा०	तुर्क
" ८९२ (सामानी)	ईरा०	तुर्क
" १२२० (मंगोल)	ईरा०	तुर्क

ईमवी	१५००	ईरा०	तुर्क (उज्बेक)
"	१७४७	तुर्क-ईरा०	तुर्क-उज्ब०
"	१८६५	ईरा०-तुर्क	उज्ब०-ईरा०
"	१९१७	ईरा०-तुर्क	उज्ब०-ईरा०
<hr/>			
"	१९४७	ताजिक	

## २ वासमची-उत्पीडन

लोकन्दके स्वायत्तियोंके हार खानेके बाद वासमचियो (जहादी डाकुओ)ने जोर पकड़ा। १९१९ ई०के वसन्तमें ओश नगर और पामीरके बीचका रास्ता सफेद रूसियो और वासमचियोंके हाथमें था, जिनका मुखिया मुखानोफ और एरगेशताम थे। पीछे कर्नल तिमोफियेफ नामक एक शाही अफसरने यहां नेतृत्व करना शुरू किया। बुखारा की कमजोरियों को देखकर अब यहांके पहाड़ी सामन्त स्वयं बादशाह बननेका स्वप्न देखने लगे। जब १९२१ ई०के फरवरीमें आलम खान (बुखारा-अमीर) दुशाम्बे होकर अफगानिस्तानकी ओर भाग गया, तो यहांके कुछ लोगोंने अफगानिस्तानके अमीरको भी राज्य सभालनेके लिये लिखा, लेकिन ताजिकिस्तानके पहाड़ोंके लिये काबुलको न उतना प्रलोभन हो सकता था, न उसमें उतनी शक्ति ही थी। हा, मीर आलम खान ताजिकिस्तानमें लूट-मार मचानेवाले वासमचियोंसे पैसा पाता और उसके बदलेमें कुछ हथियार जरूर भेज देता था। जब-तब अंग्रेजोंने भी हथियारसे मदद की, लेकिन उस वक्त असहयोग का आन्दोलन सारे भारतमें चल रहा था, जिससे अंग्रेजोंका दिमाग बहुत परेशान था, और वह वासमचियोंको खलकर मदद देनेके लिये तैयार नहीं हो सकते थे।

(१) अनवर पाशा-अमीरके जानेके बाद एक तरफ वासमची भिन्न-भिन्न गिरोहोंमें बटे लूट-मार मचा रहे थे, दूसरी तरफ क्रांतिकारियोंने भी गरीबोंको संगठित करनेका काम शुरू किया। लेकिन, बुखारा अभी पूरी तौरसे बोल्शेविकोंके हाथमें नहीं आया था। उनकी ओरसे जो आदमी शासनका भार देकर भेजे गये थे, वह उच्चवर्गके होनेसे अपने पुराने स्वार्थोंको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे, इसीलिये उन्होंने क्रांतिके साथ विश्वासघात किया। वासमचियोंमें जिस तरहके पत्र-व्यवहार हो रहे थे, उनसे उस समयकी स्थितिका कुछ पता लगेगा। एक पत्रमें मुल्लोंने लिखा था—

अमोदल्-मोभिनीन् इलमल्लाह तआला

वह महाविजयी

रक्षक प्रभु सम्माननीय मीर-बी-बादशाह, लश्करबाशीको बुआ और सलामके उपायनके बाद मालूम हो, कि हम आपके बुआ-वाचक परमभक्त आलिम (पंडित) लोगोंने सुल्तानाबादमें पुण्य ईद पर्वके समय इकट्ठा हो आपसमें मन्त्रणा की। कुछ लोगोंके बारेमें हमने सुना, कि वह जनाउअन्नी (अमीर-बुखारा) और श्रीमान्के विरोधी और वागी हैं। श्रीमान उनके बारेमें हमें सूचित करें। जो कोई अनवरका अनुयायी है, उसे कुरान और हदीस (स्मृति)के अनुसार काफिर सिद्ध कर सभी यहां एकत्र हुये हम आलिम-फाजिल शरीअतके अनुसार कत्ल करा देंगे। जो लंके (किर्गिज) ताजिक या कर्लुक अनवरका अनुसरण करते हैं, उनके बारेमें सूचित कीजिये। उनकी भी शरीअतके अनुसार हम आलिम-फाजिल लोग एकत्र हो कत्ल करायेंगे। हम लोग शरीअतके अनुसार काम करेंगे। यह सब (काम) हम लोगोंके सिरपर है, यदि वह श्रीमानको उचित जान पड़े। आगे आप स्वयं भली भांति जानते हैं। अस्सलाम् व अलेकुम्।

पत्र भेजनेवालों की मुहर और हस्ताक्षर

मुल्ला अहमद सजीमी मुदरिस

मुल्ला अली महमूदी मुदरिस

खलीफा मुल्ला अल अजर मखदूम  
मुल्ला तुगाय मुरादो मुदरिस

मुल्ला अस्मतुल्ला मखदूम  
मुल्ला अन्वुरहमान मखदूम  
मखदूम महमदो तुकसाना

इस पत्रसे मालूम है, कि उस समय अनवरपाशा इन पहाडोंमें अपनी भाग्य-परीक्षाके लिये आया हुआ था। प्रथम विश्व-युद्धके बाद जर्मनोंके पक्षपाती अनवरका प्रभाव तुर्कीमें उड़ गया, जब कि मुस्तफा कमाल नवीन तुर्कीका नेता हुआ। इसके कारण अनवरको तुर्की छोड़कर भागना पड़ा। कुछ समयतक वह बुखारामे रहा, फिर वहासे भी भागकर इन पहाडोंमें आ गया। अनवर नवीन तुर्कीका नेता था, जिससे बुखाराके जदीदोंको भी प्रेरणा मिली थी। लेकिन बुखाराके मुल्ले जदीदोंके खूनके प्यासे थे, इसीलिये वहा अनवर और उसके अनुयायी कुछ नहीं कर सकते थे।

इन पहाडोंके सभी लोग क्रांति-विरोधी मुल्लोकी तरह अन्ये नहीं थे, वह अनवरकी योग्यता और प्रभावसे पूरा फायदा उठाना चाहते थे। इसीलिये अनवरको यहापर काफी समर्थन प्राप्त हुआ। लेकिन तो भी महत्वाकांक्षी बासमची तथा दूसरे सरदार अनवरकी सैनिक योग्यताको अपने मतलबके लिये इस्तेमाल करना चाहते थे, इसलिये स्वनिर्वाचित 'अमीर-लश्कर-इस्लाम, नायब-अमीर-बुखारा व दामाद खलीफा-मुसलमीन अनवर' को सफलता प्राप्त करनेका मौका नहीं मिला और अगस्त १९२२ ई०में बल्जुवान इलाकेके एक गावमें ४२ वर्षकी उम्रमें वह मरा। और चगन गावमें दफनाया गया।

(२) ईशान सुल्तान\*—ताजिकिस्तानमें क्रांतिका एक और जवर्दस्त विरोधी ईशान सुल्तान था। ईशान मध्य एसियामें पीर या गुरुको कहते हैं, जिनका कई शताब्दियोंसे वहापर जवर्दस्त प्रभाव रहा है। १९वीं सदीमें दरवाज कला-खुम्बके शाहोका बहुत प्रभाव था। यह अपने खानदानको सिकन्दर और दूसरे पुराने राजाओंसे मिलाते थे। सीधे-सादे पहाडी लोगोमें राजवंशके होनेसे इनका बहुत मान था। इन्हीके इलाकेमें १८वीं सदीके अन्तमें सागिद दस्तसे डेढ़ मीलपर अवस्थित सैदान गावमें सैयद-वंशमें एक आदमी पैदा हुआ, जो कि आगे ईशान औलिया (मृत्यु १८६७ ई०) के नामसे प्रसिद्ध हुआ। ईशान औलिया या मिर्जा रहीम पहले कन्दहारमें जाकर किसी पीर ईशान आखुनसाहेबकी सेवामें रहा, जहा उसने ईशानोंके सभी हथकण्डे सीखे। फिर लौटकर कुछ दिनो वह अपने गाव सैदानमें रहा, फिर सफेदारान और बादमें दराजमें रहने लगा। उसकी ख्याति दिन-पर-दिन बढ़ती गई और बहुतसे लोग उसके मुरीद हो गये। ईशानके लिये अमीरो और सामन्तोकी तरह बीबी-बच्चोंके रखनेमें कोई दिक्कत नहीं थी। ईशान औलियाकी कई बीविया थी, जिनसे उसके सात पुत्र हुये। उनमें शेख मिर्जाकी दरवाजके शाह याकूब खाने अपनी लड़की दी थी। ईशान औलियाको कई गाव विर्त-वधानमें मिले थे। औलियाके मरने (१८६७ ई०) के बाद उसके सातों पुत्र भी ईशानगिरीसे धन और सम्पत्ति जमा करने लगे। उनमें ईशान शेख अपने समयमें इन पहाडोंमें बड़ा ही सम्पत्तिमान तथा प्रभावशाली आदमी था। उसके मुरीदो (चेलो)की सख्या बहुत थी, और बहुतसे गाव भी उसे मिले थे। चिह्काका, सैदानके अतिरिक्त ईशान शेखकी हवेलिया सफेदारान, याइकपस्ते, याजगद और दरा-जूमें भी थी। इसीका लड़का ईशान सुल्तान था, जो पूर्वी बुखाराका सबसे बड़ा धनी नामन्त था। इसका जन्म याहकपस्तेमें हुआ था, जहा दस सालकी उमरतक रहा। इसके बाद याजगन्द चला गया। जिस वक्त १९१७-१८ ई०में क्रांतिकी लहर पहाडोंमें पहुची, उस समय ईशान ४५ वर्षका बहुत तजुर्वेकार और शक्तिशाली आदमी था। वापके बाकी भाइयोंमें सबसे बड़ा होनेसे उसका प्रभाव सबसे ज्यादा था। उसकी जागीरमें याजगन्द, याहकपस्त, यानकुर्गान आदि बहुतसे गाव थे। अमीर-बुखाराकी तरफसे वह अपने इलाकेका 'हाकिम' (सरकारी जफनगर) था। ईशान सुल्तानकी धनसे भी ज्यादा धार्मिक प्रभुता थी। आसपासके इलाकोंके लोग उसकी

\*"युदि ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजि (९), इस्तोरिया-यजीक-लितेरा नुरा" (अकदमी, ताउक १९४०, पृष्ठ ३-२७)

आज्ञाको खुदाकी आज्ञा मानते थे। भूमिका मालिक और बहुत बड़ा जमींदार होनेकी वजहसे प्रजाको भी कष्ट हुये बिना नहीं रहता था। याहकपस्तेके एक किसान परिवारको इसने बुरी तीरसे सताया था। जब वह लोग दुशाम्वेसे फरियाद करने लगे, तो काजी मुल्ला कामिलको इतनी हिम्मत कहा थी, कि प्रभावशाली ईशान सुल्तानके विरुद्ध फैसला देता। वहासे बुखारा दाद-फरियाद करने गया, तो वहापर भी वही हालत हुई। फिर रुसियोंके पास ताशकन्द-तक पहुँचा, लेकिन कहीं सुनवाई नहीं हुई। ईशान सुल्तानकी जागीरदारीमें लोगोसे वेगारमें काम लिया जाता था। उसके लगरखानेमें भक्तों और मुरीदोंके खानेके लिये दरवाजा खुला था, बराबर सत्संग और ज्ञान-ध्यान चलता रहता था। ईशानको कई स्त्रियाँ थी, जिनमेंसे एक याजगन्दमे, दूसरी याहकपस्तेमें, तीसरी हिमारने, बाकी और जगहोंपर रहती थी, लेकिन सत्तानोंमें उसे सिर्फ एक लडकी थी।

जब बोल्शेविकोंने फरगाना और ताशकन्दमे सफलता पाई, और क्रांतिकी लपट पूर्वी बुखाराके पहाड़ोंमें भी पहुँचने लगी, तो ईशान सुल्तानको अपनी जागीर और धनके लिये डर पैदा हो गया। १९२१ ई०के जाडोंमें बुखारा-अमीर सैयद आलम खा जब भागकर दुशाम्वे आया, तो उसने यहाँके पहाड़ी सामन्तोंको संगठित करनेका प्रयत्न किया, और ईशान सुल्तानको 'सुदूर' (अध्यक्ष) की पदवी प्रदान की। २१ फरवरी १९२१ ई०को जब अमीर दुशाम्वेसे अफगानिस्तान भागा, तो ईशान सुल्तान बोल्शेविकोंसे लड़नेकी तैयारी करनेके लिये याजगन्द चला आया। दुशाम्वे (आधुनिक स्तालिनावाद) में ईशानको कुछ हथियार मिले। तबिलदरा और चिहलदराके इलाकों में काजी कुर्गान, नियाज तुकसावा, अकबर तुकसावा, सैयद अली उराक आदि स्थानीय अफसरोंको इकट्ठा करके उसने 'गाजी' (धर्मबुद्ध) करनेका निश्चय किया। अपने मुरीदोंमेंसे उसने पचामको हथियारबन्द 'गाजी' बनाया। दुशाम्बा और गरमपर अधिकार हो जानेके बाद मेर्कुलोफकी अधीनतामें ओरेनबुर्गसे सवार-सेना आ गई, जिसके कारण बोल्शेविकोंका पलड़ा इन पहाड़ोंमें भारी हो गया। लेकिन सुखावकी उपत्यका और गरम उस समय वासमची-नरदार फुजैल मखदूम और लायकपसदके हाथमें थे, और पीतर दरे'से बखियातक को ईशान सुल्तानने अपने हाथमें किया था। लाल सेनाने ईशान सुल्तानको तबील दर्रासे भागनेके लिये मजबूर किया, तो वह सागिरदस्त चला गया। जब फुजैल मखदूम हारकर अफगानिस्तान भाग गया, तो ईशान सुल्तानने बोल्शेविकोंके साथ सुलह करने हीमें अपनी भलाई समझी। इसपर वह इस्लामके गाजियोंमें वदनाम हो गया, जैसा कि अपनेकी अनवरका उत्तराधिकारी बतलानेवाले एक तुर्की अफसर सामी पाशाके १९ नवम्बर १९२२ ई०के निम्न पत्रसे मालूम होगा—

“ईशान सुल्तान खोजा सूवा दरवाजके हाकिम और अस्कर वागी सेनानायक का विश्वासघात

“अफगानिस्तानकी भूमिमें विराजमान जनाबअली अमीर बुखाराशरीफ संधव अमीर आलमकी सेनामें अभिवादनके बाद मालूम हो, कि ईशान सुल्तानने दरवाजपर अपना अधिकार जमानेके लिये सेना जमा की और इलाक़ेकी जुवान, आक्सु अधिकृतकर यन्त्रांतोनि'ला और कुलाबदर्राकी बचाकर तरह-तरहके सगडे फमाद और अध्याचार किये। जनाबअलीकी ओरसे निपुण नायक और राजप्रतिनिधि दिवंगत शहीद अनवरशाहके सैनिक और नागरिक शासनके खतम करनेके लिये ईशान सुल्तानने इस्लामके मुजाहिदोंके मोतार उग्र सेनापतिके सामने फूट डाल दी, जिसके परिणामस्वरूप मुजाहिदों को छ टुज़र सेना बाधूसून इलाक़ेसे घनडाकर भागी और दुश्मनसे लड़नेकी जगह परस्पर हत्याकांड मचाया, जिसमें सैकड़ों मुसलमान कुर्बान हुये। ईशानकी मददसे फरगानावालोंने उग्र प्रतियुद्धियाकी कल किया, जिसने देशवासियोंको भारी क्षोभ हुआ। बुखारावालों और दूसरे ज़ोनोंके आपसी सगडेसे फायदा उठा (ईशानने) उग्रोंकी और ताजिकोंकी

एक दूसरेसे लडा अपने विश्वासघातका परिचय दिया, साथ ही इस्लामके मुजाहिदोंसे तीन सौ बन्दूको और दो सौ मशीनगनों बेकर रुसियोंके साथ सुलह की, जिसके कि कागज-पत्र हमारे हाथ लगे।

“फरगानियों और किर्गिजोंमें झगड़ा डालकर इस्लामी मुजाहिदोंकी शक्तको निर्बल करनेकी मशासे उसने रुसियोंके साथ मेल किया। इस तरह इस्लामी उद्देश्यको हानि पहुंचाने और लोगोंके युद्ध करनेके उत्साहको दबानेके लिये वहाके प्रबन्धालयोंको खतम कर दिया, और इस तरह निराशा फैल गई। अल्लाके रास्तेमें लड़नेवाले मुहम्मद अकबर तुक्ताबाको (ईशानन) अपने घरमें ले जा दस्तरखानपर बैठाकर उसे कत्ल करवा दिया, उसके मालको ले बाल-बच्चोंको नंगा कर बाटका भिखारी बना दिया। इसके अतिरिक्त (उसने) कितने ही मातबर सेनानायकोंको कत्ल कराया। फिर फरगानावाले शेरमहम्मद (शेरमत) बेकीको खबर दे तुर्की और करातगिनके स्वामी फुजैलुद्दीन मखदुमको पराजित करनेका निश्चय किया। हमारे ऊपर भी उसने आक्रमण किया, लेकिन हमने सैनिक तरीकेके अनुसार उसके हमलेका मुकाबिला किया और ईशान सुन्तानकी फौजको भागना पडा। पहले हमने शेरमहम्मदको रोकनेके लिये चहलदरकि रास्तेको खराब किया था। ईशानने खराब रास्तेको फिरसे तैयारकर शेरमहम्मदकी फौजको रास्ता दिया और हमारी फौजको न जाने देनेके लिये रास्तेको खराब कर दिया। फिर अपने भाई ईशान सुलेमानको हमारे मुकाबिलेके लिये भेजा, इस प्रकार शेरमहम्मदको दरवाजके रास्ते निकल जाने दिया। इसके अतिरिक्त दरवाजवाले गैरतशाह बी दादखाह, दिलावरशाह बी लश्करबाशी और कितने ही दूसरोंको कत्ल करवाया। हमारी फौजोंका पीछा करते हुये ईशान सुलेमान तबीलदर् और सगीरदश्तमें बन्दूकवाले सैनिकोंको जमाकर शेरमहम्मदकी सेनासे मिलकर हमारे ऊपर हमला किया। जब हम दरवाजमें थे, उसी समय दरसे होकर उसने कूलाबवाले महम्मद अशुरबेक बी दादखाह लश्करबाशीको कत्ल कराया। अब हमारी फौजको आगेसे घेरकर दरवाजे-में भूखे मार आत्म-समर्पण करने या अफगानिस्तान भागनेके लिये मजबूर करना चाहता है। उसकी इस तरहकी योजनायें और पत्र हमारे हाथमें आये हैं, ... इसलिये उसके इन कामों, अपराधों और विश्वासघातोंके लिये शरीयत और सैनिक कानूनके अनुसार उसे मृत्युवन्द देनेका निश्चय किया गया है ...”

२८ माह रबीउल अठवल सन् १३४१ (२१ नवंबर १९२२ ई०)

मुहर सेनापति मुसलमान जन-सेना सामीपाशा”

लेकिन ईशान सुल्तान अनवरपाशाका बहुत कदरदान दोस्त था। अगस्तकी अनवरपाशा जब मारा गया, तो इसका ईशानको बहुत भारी दुख हुआ। अनवरके सहायक सामीपाशा (खाजा सलीम बी)का भी वह बहुत सहायक रहा। सामीपाशा १९२२ ई०के शरदमें सीमान्तपर गया, तो कलाखुमके पास उसे दरवाजके बासमची नेताओ दिलावरशाह और हैरतशाहने पकड़ लिया। पता लगते ही ईशान सुल्तान स्वयं वहा गया और सामीपाशाको छुड़ाकर अपने साथ याजगन्द ले आया। ईशानने और भी घनिष्ठता स्थापित करनेके लिये याजगन्दकी एक ७-८ वर्षकी लड़कीसे सामीपाशाका ब्याह करवाया—लड़की पहले ही किसी दूसरेको दी जा चुकी थी। लड़कीके वापने इसका विरोध किया, तो उसे गिरफ्तार करवा लिया।

बोल्शेविकोंके साथ प्रतिरोधको बेकार तथा बासमची सरदारोंके आपसके विश्वासघातोंके कारण जब ईशान सुल्तानका विचार बदलने लगा, तो फुजैल और सामीपाशाने अफगानिस्तान भागनेसे थोड़ा पहले ईशानको मारनेका निश्चय किया, जैसा कि उपर्युक्त पत्रसे मालूम होगा। फिर सामीपाशाने ईशान सुल्तानको गिरफ्तार कर लिया और फुजैलके आदमियोंने उनके भाई ईशान सुलेमानको भी पकड़ लिया। यही नहीं सामीके आदमियोंने याजगन्दमें ईशानोंके घरोंको ध्वस्त कर दिया, वहाकी सभी कीमती चीजें तथा स्त्रियोंको लूट लिया और ईशानके तीमरे भाई ६९



शाह रहमतुल्लाको भी पकड़ लिया। इसके बाद वासमची सरदारो मामीपाशा, फुजैल और दानियाल ने तबील दरके सभी अफसरो, मुल्लो, काजियो, मुफ्तियोको जमा करके शरीयतके अनुसार अभियोग लगाया कि ये ईशान लाल वोल्शेविकोंसे मिले हैं, इन्होंने एक वासमची सरदार अकवरको मारा। इसपर उन्हें मृत्युकी सजा हुई, और दोनों भाइयोको १९२२ ई०की शरदमें मौतके घाट उतारा गया।

(३) फर्जल मकसूम—वासमचियोंके सरदार फुजैल मकसूमने १९२३ ई०में उत्तरी ताजिकिस्तानके पहाड़ोंमें लूट-पाट करते अपना दंड शासन स्थापित कर लिया था। गरमका इलाका अच्छे समयमें भी जीविकाके लिये स्वावलम्बी नहीं था। वहाके बहुतसे लोग नेपालियोंकी तरह फरगानामें जाकर मजदूरी किया करते थे। वासमचियोंके उपद्रवके कारण अब वह रोजी कमाने बाहर नहीं जा सकते थे, इसलिए सारे इलाकेमें भुखमरी फैली हुई थी, जिससे गरीबोंमें वोल्शेविकोंका प्रभाव बढ़ रहा था। इसी साल लाल सेनाने वहा पहुंचकर फुजैलको बुरी तरहसे हराया, जिसके बाद फुजैल फिर नहीं सभल सका। मजार गावमें एक बार फिर उसने मुकाबिला करनेकी कोशिश की, लेकिन उसका घोड़ा मारा गया, फिर दूसरा घोड़ा लेकर वह सीधे अपने गाव मोतीनान गया, और सब तरफसे निराश होकर नकद और मालको ले उसने अपने हाथसे घरमें आग लगा दी, फिर चोपचाकके रास्ते वखेया इलाकेमें होते पज(वक्षु) नदीके किनारे पहुंचा। रक्षियोंने पकटना चाहा, लेकिन वह अपने दो-तीन आदमियोंके साथ नदी पार हो अफगानिस्तान निकल जानेमें सफल हुआ।

वोल्शेविकोंने कुछ ही महीनोंमें करातेगिन, दरवाज और वखेयासे वासमचियोंका उच्छेद कर दिया। १८ जुलाई १९२३ ई०को गरम वोल्शेविकोंके हाथमें आ गया, ११ अगस्तको कला-खुम्ब (दरवाज) पर भी अधिकार हो गया, इस प्रकार ताजिकिस्तानपर क्रांतिकी विजय हुई। लेकिन अभी भी ताजिक जन निश्चित नहीं हो पाये।

(४) इब्राहीम गल्लू—वासमचियोंके सरदार पुराने डाकू इब्राहीम गल्लूने बहुत सालोंतक ताजिकिस्तानके पहाड़ोंमें लूट-पाट मचाकर लोगोंको तग किया, लेकिन अन्तमें जून १९२६ ई० में उसे भागकर अमीरकी तरह अफगानिस्तानमें शरण लेनेके लिये मजबूर होना पड़ा। उस समय-तक वह "मुल्ला मुहम्मद इब्राहीमवेक, दीवानवेगी, तोपचीवाशी, लश्करवाशी, चक्कवे, तुकभावा-पुत्र"की बड़ी-बड़ी उपाधियोंसे विभूषित तथा अमीर-बुखाराका नायब था।

### ३ ताजिकिस्तान गणराज्य

पूर्वी बुखारा या ताजिकिस्तान पहले तुर्किस्तान गणराज्यका अंग था। १९२४ ई०में वह स्वायत्त गणराज्य बना और १९२९ ई०में सब गणराज्य बनकर सोवियत संघके स्वतंत्र गणराज्योंमें से एक हो गया।

### स्रोत-ग्रन्थ

1. History of civil war in U.S.S.R. (2 vols, G.F. Alexandrov and others, Moscow 1946)
2. रेडोल्फ्निमिया व् स्तेनेइ आज़िड (ताशकन्द १९२९)
3. शुदी तानिकिस्तान्कोइ वाज़ी इस्तोरिया यज़ीक-लितेरानुरा (लेनिनग्राद १९४९)
4. सोवियत्स्कया एतनोग्रफिया (लेनिनग्राद १९३६/६, पृ० १११)
5. दाम्बुन्दा (उपन्यास, म० ऐनी, अनु० राहुल, प्रयाग १९४८)
6. गुलामान (उपन्यास, म० ऐनी, अनुवाद "जो दास थे" राहुल, प्रयाग १९४९)

## तुर्कमानिस्तानमें क्रांति

### १. तुर्कमान कबीले

तुर्कमान कबीलेने किस तरह अपनी स्वतंत्रता कायम रखनेके लिये रूसियोंसे अंतिम लड़ाई लड़ी, इसके बारेमें हम पहले बतला आये हैं। तुर्कमानोके मुख्य-मुख्य कबीले थे —

१ चौदार	उस्त-उर्तमें
२ यामूद	चौदारोके दक्षिण कास्पियन और निम्न वक्षुके बीचमें
३. गोकलान	ईरानकी सीमापर
४. तेक्के	सबसे अधिक शक्तिशाली मुर्गावि-उपत्यका और पासके रेगिस्तानोंमें
५. सरिक	मेर्वमें
६ सलार	भशहदके पूर्व बुखाराके रास्तेमें
७ एरसारी	
८ करदाखली	बुखारा-राज्यकी सीमापर वक्षुके किनारे

आठ सौ वर्ष पहले महमूद काश्गरीने और इतिहासकार रशीदुद्दीनने भी तुर्कमान कबीलोंके बारेमें लिखा है। उनके कथनानुसार पौराणिक आगूज खानके छ लडके थे, जिनमेंसे प्रत्येकके चार-चार लडकोके अनुसार तुर्कमानोके चौबीस कबीले बने। इन दोनों लेखकोंके अनुसार वह कबीले निम्न प्रकार हैं —

#### महमूद काश्गरी

- १ कीनिक
- २ काईईग
- ३ बायोन्दुर
- ४ ईवे
- ५ सल्गुर
- ६ अफशर
- ७ वेकतिली
- ८ व्युकद्युज
- ९ वयात
१०. याजगिर
११. येएम्पुर
- १२ कराएवली
- १३ इगदेर
१४. यूरेकी, यूरेकिर
१५. तूतिरगा

#### रशीदुद्दीन

- कीनिन
- काईई
- बायोन्दुर
- ईईवे
- सल्गुर
- अवशा
- केवदिली
- व्युकद्युज
- वयात
- याजिर
- येइम्पुर
- कराएवली
- ईइगदेर
- यूरेकिर
- तूदुरगा

१६ उला-इओन्दलुग  
१७ त्युकेर  
१८ पेचेनेत  
१९ जूवाल्दर  
२० जेवनी  
२१ जारुकलुग

उला-इओन्तली  
द्युकेर  
बीजने  
जावुल्दुर  
चेवनी  
.  
याचिर ली  
कारिक  
कार्किन  
तमगी

दोनों सूचियोंका एक-दूसरेसे न मिलना, यही बतलाता है, कि कितने ही पुराने तुर्कमान कबीलोंने नये नाम धारण किये और कुछ दूसरे तुर्कोंमें विलीन हो गये ।

तुर्की भाषाएँ उराल-अल्ताई भाषा-जातिसे सबध रखती हैं, जिसके भेद हैं --

१ तुंगुस्त--जिसमें मच् भाषा भी सम्मिलित है ।

२ समोयद--उत्तरी साइबेरियावालोकी भाषा ।

३ फिन्नी--फिन (सूओमी) तथा मगयार (हंगरी) भाषा ।

४ मगोल--इसमें खल्खा, कल्मक और बुरयत मगोलोकी भाषाएँ सम्मिलित हैं ।

५. तुर्की--इसकी एक शाखा (क) चगताई, जिसकी शाखायें उइगुर, तुर्कमान, उज्बेक, कजानकी तारतारी भाषाएँ हैं, (ख) शुद्ध तारतार-भाषा, जिसमें किर्गिज, वाश्किर और कराकल्पक भाषाएँ हैं, (ग) शुद्ध तुर्क-भाषा, जिसमें ईरानी और उस्मानी तुर्कोंकी भाषायें सम्मिलित हैं । भाषाकी दृष्टिसे तुर्कमानी भाषा पश्चिमी तुर्की अर्थात् तुर्की और आजुर्वाइजानकी भाषाके समीप है ।

तुर्कमान जाति-निर्माण--तुर्कमानोका ऐतिहासिक विकास निम्न प्रकार हुआ --

काल	ख़ासत	मेघ	कास्पियन-तट
ई०पू० ५००००			मदलेन
" ४००० (मध्य-यापाण)	फिनो-द्रविड		फिनो-द्रविड
" ३५००	द्र०		द्रविड
" ३००० (नव-यापाण)	आर्य-द्र०	आर्य-द्र०	आर्य-द्र०
" २५००	आर्य	आर्य	आर्य
" १५००	ईरानी	ईरानी	ईरानी
" ७००	शक	ईरानी	ईरानी
" ५५०	शक	ईरानी	शक
" ३२६	शक	ईरानी	शक
" २०६	शक	ईरानी	शक
" १३०	शक	ईरानी-शक	शक
ईसवी १०० कुषाण	शक	ईरा०-श०	शक
" ४२५ हूण	ईरानी-हूण	ईरा०-श०	श०-कग
" ५५७ तुर्क	ईरा०-तुर्क	ईरा०	ईरा० तुर्क
" ६७३ अरब	ईरा०-तु०	ईरा०	तुर्क
" ८९२	तु०-ईरा०	ईरा०-तुर्क	तुर्क
" १२२० मंगोल	तु०-ईरा०	ईरा०-तु०	तुर्क
" १५००	तुर्क	तुर्क	तुर्क

ईसवी १७००  
" १७४७

तु०-उज्बेक  
उज्बे०-तुर्क

तुर्कमान  
तुर्कमान

तुर्कमान  
तुर्कमान

तुर्कमान

## २ लालसेना-निर्माण

करेन्स्कीकी अस्थायी सरकारको रूसी गरीबों और मजदूर-किसानोंके बलपर निकाल फेंकना आसान था, क्योंकि रूसमें क्रांति-विरोधियोंके साथ लोहा लेनेवालोंकी सख्या और शक्ति कम नहीं थी, लेकिन मध्य-एसिया और उसमें भी तुर्कमानिया बहुत पिछड़ा देश था, जहाके लोगोंने शिक्षा एक प्रकारसे नहीं-सी थी। जो साक्षर और शिक्षित भी थे, वह मुल्लोंके मक्तबोंमें पढ़े और उन्हींके प्रभावमें थे, इसलिए अपने द्वेष और असंतोषको वह गैर-मुस्लिमोंको काफिर कहकर ही निकालना जानते थे। तुर्कमानोंमें साम्यवादका सदेश और आन्दोलन पहलेसे बिल्कुल ही नहीं था। क्रांतिके बाद वह पहिले मध्य-एसियामें रहनेवाले रूसी मजदूरोंमें फैला, जिसके बाद एसियाई लोगोंमें भी घर बनाने लगा। करेन्स्कीकी सरकारको हराकर जब बोल्शेविकोंने शासन-सूत्र अपने हाथमें लिया, तो मध्य-एसियामें भी उन्हें पुराने शासकोंका स्थान ग्रहण करनेमें पहले अधिक कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ा, तो भी बोल्शेविक आनेवाले खतरेको समझते थे। ताशकन्दमें अक्टूबर-क्रांतिसे महीना भर पहले (सितम्बर १९१७ ई०में) ही रेलवे मजदूरोंने अपनेको हथियारबन्द कर लाल-गारदका सगठन कर लिया। लेकिन सैनिक के तौरपर उनका सगठन अक्टूबर-क्रांतिके सघर्षके समय ही हुआ, जब कि ताशकन्दके बहुतसे मजदूर लाल-गारदमें भर्ती हो गये। लालगारदके सैनिक ओरेनबुर्गके मोर्चेपर सफेद-जेनरल दूतोफकी सेनासे भी लड़ने गये थे, जिसने लडाकू कजाकोंको भी अपने साथ मिला लिया था।

ताशकन्दका अनुकरण करते हुये मध्य-एसियाके दूसरे शहरोंमें भी लाल-गारदका सगठन हुआ। उस समय तुर्कमानियाको पारे-कास्पियान (पाराकास्पिड) कहा करते थे। पारेकास्पियाके नगरोंमें लाल-गारदका पूरी तौरसे सगठन फरवरी १९१८ ई०में शुरू हुआ, जब कि सोवियत शासनको उखाड़ फेंकनेके लिये उत्तरसे कजाक और दक्षिणमें ईरानसे अंग्रेजोंके भाड़ेके सैनिक सफेद-रूसियोंके मददके लिये आ पहुँचे। चारजूय, तथा दूसरे पारे-कास्पियाके नगरों और स्टेशनोंके मजदूर लाल-गारदमें धड़ाधड़ भर्ती होने लगे, और वह फरवरीके अन्त (मार्चके मध्य) तक काफी शक्तिशाली हो गये। गारदने क्रांति-विरोधी कजाकोंको दवानेमें बड़ा काम किया। जब विदेशी शक्तियोंका जोर भी इस प्रदेशमें देखा जाने लगा, तो ताशकन्द और दूसरे नगरों से भी लाल-गारदके सगठनकर्ता भेज गये। त० कज़लोफके अनुसार पारेकास्पियामें २० (७) दिसम्बर १९१७ ई०को बोल्शेविक पार्टीके सदस्योंको सम्मिलित करके लाल-गारदकी स्थापना हुई। गारदमें यूरोपीय मजदूरोंके अतिरिक्त उज्बेक, तुर्कमान, कजाक आदि स्थानीय (एसियाई) जातियोंके भी मजदूर सम्मिलित थे। जनवरी १९१८ ई०में जब मुल्लोंने शासन हाथमें लेनेका प्रयत्न किया, तो उस समय ताशकन्दके एक लाल-गारदमें केवल उज्बेक स्वयसेवक सैनिक दो सौ थे। तुर्कमानियाम अवेज वेर्दी कुलियेफ-जैसे बोल्शेविकोंने लाल-गारदके सगठनको आग बढ़ाया, और दिसम्बर १९१७ ई०तक उसमें १७५ सवार तैयार हो गये। ६ दिसम्बर (२३ नवम्बर) १९१८ ई०तक तुर्कमानियाके हर नगर, हर बड़े स्टेशनपर लाल-गारदके सगठन थे। इनका काम था तुर्कमान मजदूरवर्गको हथियारबन्द कर क्रांति-विरोधियोंसे लोहा लेना और पर्जा-वादियोंसे मजदूरोंके हितोंकी रक्षा करना। पहलेपहल उन्हें ईरानसे आये क्रांति-विरोधी सैनिकों और खीवाकी ओरसे आये कजाकोंसे मुकाबिला करना पड़ा। लाल-गारद दूतोफके कजाकोंके मनोरथको भी विफल करनेमें सफल हुआ।

१९१८ ई०के अन्तमें मध्य-एशियामें बोल्शेविकोंकी अवस्था बहुत खतरनाक हो गई थी। रुससे यातायातका सबव टूट गया था। उस समय पारे-कास्पियामें (समाजवादी क्रांतिकारी) दलका जोर था और बोल्शेविक निर्वल थे। क्राति-विरोधियोंके नेता जारशाहीके पुराने सैनिक और असैनिक अफसर थे। लोकन्दके स्वायत्तियोंके खतम कर देनेपर वहां वासमन्वियों (जहादी डाकुओं)का जोर बढ़ा, जिसके कारण बोल्शेविक उनको दवानेमें लग पड़े, और महीनो कहींसे कोई सहायता नहीं मिली। यहांके कम्युनिस्तोंमें अभी न उतना तजर्बा था, न अनुशासन और उनमें निम्न-मध्यमवर्गके अराजकतावादी भाव ज्यादा दिखाई पड़ते थे। लेकिन तो भी उच्च आदर्शके प्रति प्रेम और सर्वस्व-त्यागका भाव उनमें काम कर रहा था, जिसके बलपर शत्रुके कितने ही शक्तिशाली होनेपर भी वह लड़नेके लिये तैयार थे। १९१८ ई०के अन्तमें मास्कोसे रेडियोग्राम आया, कि सारी पूजीवादी दुनिया—फ्रांस, इंग्लैंड, अमेरिका आदि—ने सफेद (क्राति-विरोधी)—रुसियोंकी सेनाको सक्रियरूपसे मदद देनेका निश्चय कर लिया है। वह और हथियार ही नहीं देगे, बल्कि अपनी सेना भी भेजेंगे। इस वेतारके तारने जहां अवस्थाकी भीषणताकी स्पष्ट करके सामने रख दिया, वहां यह भी बतला दिया, कि पूरी तौरसे अनुशासनकी पावदी करते हुये हथियारबन्द होकर लड़ना ही एकमात्र रास्ता रह गया है। उस समय बोल्शेविकोंकी कांग्रेस हो रही थी, जिसने निश्चय किया, कि सफेद-गारदोंसे हमें ऊपरका अनुशासन मानते हुये लड़ना है। अन्नका अभाव था, कारखाने बन्द थे। रैल इसका एक फायदा यह भी था, कि मजदूरोंको काम नहीं करना था। रेलवे लाइनें भी बेकार पड़ी थी।

### ३. केर्की-काड (१९१९ ई०)

मध्य-एशिया पहुंचनेके यातायातके बड़े रास्तोंमें एक स्थल-मार्ग ओरेनबुर्गसे होकर था, और दूसरा वाकूसे जहाज द्वारा कास्पियन पारकर वर्तमान तुर्कमानिस्तान होकर। ओरेनबुर्गको दूतोंफ ने छेकर उधरका रास्ता बन्द कर दिया था, और कास्पियनके पूर्वी और पश्चिमी दोनों तटोंपर अग्नेज आ गये थे। इस प्रकार मध्य-एशियाके बोल्शेविक केन्द्रसे विलकुल अलग-अलग अपनी लड़ाई लड़ रहे थे। उनका मुकाबिला भी केवल सफेद (क्राति-विरोधी) रुसियों और स्थानीय उच्च और मध्यवर्गसे ही नहीं था, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय पूजीपतियोंकी दुनिया भी उनकी शक्तिकी परीक्षा कर रही थी। बोल्शेविकोंका सबसे ज्यादा बल था—स्थानीय गरीब और मजदूर जनता, जिसके हितोंके लिये वह सब तरहकी कुर्बानियां दे रहे थे। १९१९ ई०के वसन्तके आनेतक अब अमीर-बुखारा भी ज्यादा हिम्मतके साथ क्राति-विरोधियोंकी सहायता करने लगा था। कास्पियनके पूर्वी तटसे जागे बढ़ने हुये सफेद-रुसियोंने आमु-दरियाके किनारे तथा बुखारासे नातिदूर चारजूयके महत्त्वपूर्ण स्टेशनको अपने हाथमें कर लिया था। लेकिन उनकी हिम्मत नहीं हुई, कि आमु (बसु) दरिया पारकर सीधे बोल्शेविकोंपर प्रहार करें। बुखारा राज्यके भीतर बुखारा नगरसे कुछ ही मीलपर कगानका रेलवे-जंक्शन जारशाहीने अपने हाथमें कर रखा था, जो अब बोल्शेविकोंके हाथमें था। सफेद रुसियोंने सीधे बुखाराकी ओर बढ़नेकी जगह पहले केर्कीको लेनेका निश्चय किया था, जिनके बाद वह बुखाराके अमीरसे मिलकर तुर्किस्तान-प्रदेशसे बोल्शेविकोंको नतम करना चाहते थे। मेर्व (वैराम अली)में कुछ उच्च अमरीकी अधिकारियोंने सफेद रुसियोंनि मिलकर योजना बनाई। १९१९ ई०की मईके मध्यतक उन्होंने अलग-अलग टोलियोंको बनाकर उनके लिये काम निश्चित किया। ऐरापेतोफ एक टोलीका कमांडर नियुक्त किया गया, जिनमें केर्कीपर अधिकार करनेका काम दिया गया। वह खर्कोंफसे आकर वाकूमें सेनाके माय शिलक-का काम करता रहा। इसमें पहले वह जारकी सेनामें अफसर रह चुका था, लेकिन इससे पहले कभी उसने सैनिक अभियानमें नेतृत्व नहीं किया था।

२४-२५ अप्रैलको कप्तान ऐरापेतोफने अपनी सैनिक टुकड़ी संगठित की। पैसेकी कमी थी। पैसे हाँके लिये तो क्राति-विरोधियोंको सिपाही मिल रहे थे। यदि केर्कीपर अधिकार

कर ले, तो अमीर-बुखारा तीस हजार रूबल देनेके लिये तैयार है, कहकर उसने लोभ-लालच दिखला पैसठ आदमियोंको इकट्ठा किया, जिनमें चार रूसी, तीन ईरानी और कुछ आर्मेनियन भी थे। अंग्रेजोंके दिये हुये हथियारोंकी कमी नहीं थी। उनके साथ दो सौ बन्दूकें, काफी गोली-बारूद भी थी, इनके अतिरिक्त कुछ मशीनगनों भी थी, लेकिन तोप नहीं थी।

सैनिक टुकड़ीने सगठित हो जानेके बाद बैराम अलीसे कूच किया। पहले वह ताशके-परी फिर तख्तबाजार पहुँचे। मेर्दसे अफगानिस्तानकी सीमाके पास कुश्कतक आई रूसी रेलवे लाइन पकड़कर वह पहले दक्षिणकी ओर चले। तख्तबाजारसे ८ (२१) मईको, वह उत्तर-पूर्वकी तरफ केर्कीकी ओर बढ़ने लगे। रास्ता रेगिस्तानका था। यदि ऐरापेतोफके सैनिकोंको रास्तेके बारेमें अच्छी तरह मालूम होता, तो शायद उनमेंसे कितनोंकी हिम्मत टूट जाती, लेकिन एक बार जब रेगिस्तानमें पड़ गये, तो पीछे हटनेका सवाल कहा था? ऐरापेतोफने उन्हें बतलाया था, कि तख्तबाजारसे केर्की दूर नहीं, सिर्फ तीन दिनका रास्ता है। वह नौ दिन बाद १४ (२७) मईको रेगिस्तानी रास्ता खतमकर केर्कीसे चार फर्सखपर एक वागमें ठहरे। कुछ ही समय बाद अमीर-बुखाराका अफसर नूरुद्दीन निराखुर और नासिरुद्दीन कराउलबेगी मिलने आये। केर्कीके बेग (राज्यपाल)ने सौ हथियारबन्द स्थानीय तुर्कमान ऐरापेतोफकी सेनाके लिये भेजे, और जल्दी ही सैनिक कारंवाई करनेके लिये जोर दिया। रेगिस्तानके रास्तेसे आकर थके-मादे पड़े ऐरापेतोफके आदमी अभी उसके लिये तैयार नहीं थे। इसपर बुखारी अफसरोंकी सलाहसे ऐरापेतोफ अपने सैनिकोंको लिये केर्कीसे चालीस फर्सख दूर किजिलअयाकमें चला गया। यहाँ डेढ़ सौ तुर्कमान सवार और आ मिले, इस प्रकार ऐरापेतोफकी सारी सेना अब तीन सौ पैतालीस थी। केर्कीका बेग बराबर ऐरापेतोफसे लिखा-पढ़ी कर रहा था। कपासका बहुत बड़ा व्यापारी मलिक-कपामेंस समसोन क्रांति-विरोधियोंकी सहायता कर रहा था। फरवरी (१९१७) ई० क्रांतिके समय वह नगरके आर्थिक कमीशनका अध्यक्ष था, लेकिन अक्टूबरकी क्रांतिके बाद वह बोल्शेविकोंके साथ सहानुभूति पैदा करके अपनेको सोवियत सगठनका सदस्य बनानेमें सफल हुआ। उसने एक पत्र केर्कीके बेगके पत्रके साथ ऐरापेतोफके पास भेजा। पत्र पकड़ा गया, फिर समसोन भी गिरफ्तार कर लिया गया।

केर्की अफगान-सीमाके नातिदूर बक्षु नदीके तटपर व्यापारिक और राजनीतिक महत्त्वका स्थान था, जहाँ १८८९ ई०में जारशाहीने एक किला बनाया था। इसके व्यापारिक महत्त्वका पता इसीसे लग जायगा, कि १९१० ई०में यहाँ बाइस लाख रूबलका व्यापार हुआ था। बुखाराके पासके कगान जक्शनसे करशीको एक रेलवे लाइन लाई गई थी। यह कपासकी बहुत बड़ी मंडी तो थी ही, साथ ही अफगानिस्तानके साथके आयात और निर्यात का भी यह बहुत बड़ा द्वार था। यहाँपर दो कपास ओटनेकी मिलें भी थी। अक्टूबर-क्रांति द्वारा जब ताशकन्दपर सोवियत-शासन कायम हो गया, तो यहाँके गैरिसनके सिपाहियोंने भी लाल झंडा फहराया। मजूर और निम्नमध्यम-वर्गके लोग सोवियत-शासनके पक्षमें थे। ऐरापेतोफके आक्रमणसे पहले यहाँ बोल्शेविक पार्टीके सौ मेम्बर बन चुके थे।

१२ (२५) मईको केर्कीकी सोवियतकी खबर मिली, कि सफेद-गारदके तीन हजार सैनिक आठ तोपों और सोलह मशीनगनोंके साथ आ गये हैं। अगले दिन यह भी पता लगा, कि सफेद-गारदका कुछ भाग किजिलअयाकमें पहुँच गया है। इसी दिन शामको सोवियतकी एक चास बैठक हुई, जिसमें प्रतिरक्षाके लिये तैयारी करनेका निश्चय किया गया। इसके लिये एक परिपद् (कलेगियो) बनाई गई, जिसका अध्यक्ष नेस्तेरोफ और सदस्योंमें शीरियानेत्स (सोवियत-अध्यक्ष), ववायेफ, वासिलेव्स्की और वर्जिनोफ थे। वर्जिनोफ युद्धके विशेषज्ञके तौरपर लिया गया। १३ (२६) मईके १० बजे अमीरके पास रहनेवाले सोवियतके रेजीडेंटके पास केर्कीसे शीरियानेत्स, नेस्तेरोफ, और लादोगोने खबर भेजी, कि अश्काबादियोंकी पलटन यहाँसे अट्ठाईस वेस्तंपर आ पहुँची है। हो सकता है, हम आपके साथ यह अन्तिम वार्तालाप कर रहे हैं। जो हो सके, मदद हमारे पास भेजें। आज ही शामको युद्ध शुरू होनेकी सम्भावना है। बेग और

उसके अफसर उनके साथ हैं। उनकी सेनामें ७५० सैनिक, आठ तोपों और सोलह मशीनगनों के साथ शामिल हैं। एक अंग्रेज कर्नल सेनाका कमांडर है। इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि हम विशेष सहायताकी अवश्यकता हैं। यदि महायत्ना न पहुँची, तो हम बच नहीं सकते, तो भी हम अंतिम समयतक लड़ेंगे।

उस समय केर्की गैरिसन (छावनी) में किलेके एक सौ पचास सैनिक—सौ सवार थे। इनके अतिरिक्त नगरमें भी करीब अस्सी लाल स्वयंसेवक थे। समासोनोफ स्टेशनमें भी रेलरक्षक पचहत्तर हथियारबन्द सैनिक थे। इस प्रकार सब मिलाकर तीन सौसे कुछ ऊपर आदमी उनके पास थे।

१५ (२८) मईको सफेद-गारदकी ओरसे सोवियतको अल्टिमेटम मिला, जो जेनरल देनिकिनकी सेनाकी ओरसे भेजा गया था भाईका। खून वहानसे परहेज करनेके लिये हम चाहते हैं, कि तुम केर्कीको समर्पण कर दो। अल्टिमेटमके बाद दो घण्टेतक हम प्रतीक्षा करेंगे। जिसके बाद किलेपर गोलावारी शुरू हो जायगी। अल्टिमेटमपर निम्न अफसरोंके हस्ताक्षर थे।—

अंग्रेजी सेनाका कमांडर कर्नल लोमकार्ट,  
फ्रेंच सैनिक मिशनका अध्यक्ष कर्नल वाल्नेर,  
रूसी सेनाका संचालक मेजर-जेनरल युदेनिच,  
तुर्कमानी सेनाका संचालक कर्नल गर-सरदार।

अल्टिमेटमके हस्ताक्षरों और सफेद गारदकी सेनाकी बड़ा-चढ़ाकर बतलाई सख्याको देखकर केर्कीकी सोवियतको भारी डर लगता ही था, लेकिन चाहे कुछ भी हो, बोल्शेविक किलेको क्रांति-विरोधियोंके हाथमें देनेके लिये तैयार नहीं थे। परिपक्व होने पर हर तरहसे नगरकी रक्षा करनेका निश्चय किया, और अल्टिमेटमका जवाब देते हुये कहा—“आत्मसमर्पणकी जगह निष्कलुप रूपसे मृत्यु प्राप्त करना बेहतर है।” परिपक्व होने पर शीर्निकोफ और श्वास्कीके द्वारा पत्र भेजा। सवेरे दूकानें अभी बन्द ही थीं, तभी सोवियतके प्रतिनिधि नगरसे बाहर हो गये। उन्होंने ऐरापेतोफसे कारवासरायमें मिलने जाते ढाई सौ हथियारबन्द तुर्कमानोंको देखा। किसीने बात करते हुये बतलाया, कि सेना-संचालक लोमकार्ट है। आदमीने प्रतिनिधियोंसे बात करते ऐरापेतोफको बतलाया, कि केर्की घिर गई है, बुखारासे तारका सबब कट गया है, केर्की और करशाके बीचकी रेलवे लाइन भी काट दी गई है। तैरमिजके ऊपर पांच सौ सैनिक भेजे जा चुके हैं। हमारी भारी सेनामें अंग्रेज, तुर्कमानी, रूसी आदि बहुत-सी जातियोंके लोग हैं। जब बातें हो रही थीं, उसी समय किसी आदमीने आकर ऐरापेतोफसे कहा, कि अंग्रेज तोपखाना-अफसर सिगरेट माग रहा है। ऐरापेतोफने प्रतिनिधियोंसे बतलाया, कि सिगरेटका मतलब है सिपाही। इस प्रकार उसने प्रतिनिधियोंपर बहुत रोव डालना चाहा। उसने और बात करनेके लिये अपनी ओरसे स्तेपानोफ, उराल्स्की और मूजातिचको शीर्निकोफके साथ भेजा, लेकिन श्वास्कीको जामिनके तौरपर अपन पास रख लिया। शीर्निकोफन आकर बतलाया, कि सब झगपड़ी है, कहीं तोप-ताप नहीं है। हा, अमीर-बुखाराके आदमी उनके साथ हैं। युद्ध-समितिने श्वास्कीको लौटाने तकके लिए ऐरापेतोफके दो प्रतिनिधियोंको रख लिया, फिर अल्टिमेटमका उत्तर दिया—“हम अमर प्रोलेतारियोंके पुत्र, तुम्हें नूचित करते हैं, कि सोवियत रूस और तुर्किस्तानके राज्यके सिवा हम किसी राज्यको स्वीकार नहीं करते। हम सिर्फ सोवियतकी शक्तको स्वीकार करते, उसीकी आज्ञा मानते, और उम्मेद लिये हम अपने खूनकी अंतिम बूंदतक देनेके लिये तैयार हैं।

केर्कीके वेगकी बहुत-सी कारवाइया पकड़ी गई थी, इसलिये १६ (२९) मईकी शामको नवा छ बजे युद्ध-परिपक्व होने पर अल्टिमेटम दे दिये, कि अश्वकावादके विद्रोहियोंको तुमने मदद दी है, और शहरके दनी भाग तथा किलेको उनके हाथमें देनेकी कोशिश करते १५ (२८) मईकी शामको मीर जानुर बादिरकुलोफको पत्र देकर भेजा। दो घण्टेका समय देकर वर्जानोफने तोप चलावनेका हुक्म दिया। किलेकी तोपें आग बरसाने लगीं। पुराने नगरपर सत्रह गोले छोड़े गये। इनपर बुखारा राज्यपालने अपने प्रतिनिधि भेजे। तुरन्त दो तोपों, दो मशीनगनों

और तीन सौ रूसी बन्दूकोंको देना स्वीकार किया। फिर भी वेगके किलेपर चार और गोले छोड़े गये, जिसपर उसने अपनी दो तोपों, दो सौ बन्दूकोंको भी वोल्शेविकोंके हाथमें दिया। बाकी हथियारोंके बारेमें उसने कहा, कि लोगोंने डरके मारे आमू-दरियामें फेंक दिया है।

अब स्वयंसेवकोंकी बड़ी तेजीसे भर्ती होने लगी। वेगको स्वतंत्र रखना खतरेकी बात समझ उसे और उसके आदमियोंको गिरफ्तार करनेका निश्चय किया गया। अमीरके बहुतसे अफसर, तथा बड़े-बड़े व्यापारी अपने धन और परिवारको नगरमें ही छोड़ गावोंकी ओर भागे, जिससे आसपासके तुर्कमानोंको लूटका प्रलोभन हुआ। उन्होंने लूटके लिये अपने दल सगठित करने शुरू किये, जिसमें सबसे पहले चाकिर, तराजा और खोजा हैरान गावोंके लोग शामिल हुये। उन्होंने १९ मई (१ जून)को लूट-मार शुरू कर दी। रूसी इसे क्यों बर्दाश्त करने लगे, इसपर तुर्कमानों और रूसियोंमें जग छिड़ गई, जो दो महीनेतक चलती रही। आसपासके गावोंसे चीजोंका आना-जाना बन्द हो गया, नगरके लोग दिन-पर-दिन भूखे मरने लगे, न बच्चोंके लिये दूध था, न लोगोंके लिये खानेका सामान। तुर्कमानोंने काफी रूसियोंको मारा, और खुद भी उनकी काफी क्षति हुई। ३१ मई (१३ जून)को ३ बजे सबेरे तुर्कमानोंपर आगे बढ़ कर आक्रमण करनेके लिये वोल्शेविकोंकी टुकड़ी भेजी गई, जिसने उनको काफी नुकसान पहुंचाया। अन्तमें १ (१४) जुलाईको सुलह करानेके लिये बुखाराके अमीरने ईशान सदुर तथा दूसरों के साथ अपने आदमी काजीबेकको बातचीत करनेके वास्ते भेजा, लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला। इसके बाद ४, ५, ६ (१७, १८, १९) जुलाईको तुर्कमानोंने आक्रमण करके नगर-पर अधिकार करना चाहा, लेकिन सोवियतकी तोपों और मशीनगनोंने उन्हें मार भगाया। जुलाई-के मध्य (अन्त)में स्टीमरसे एक दूत-मंडल ताशकन्द भेजा गया, जिसे बुर्दालिक गावमें तुर्कमानोंने रोक लिया। फिर केर्कीमें बातचीत हुई, अन्तमें तुर्कमानोंने स्टीमरको जाने दिया। अमीर-बुखारा उस समय करमीनामें था। केर्कीमें वोल्शेविकोंके इतने जवर्दस्त प्रतिरोध और तुर्कमानोंकी हानि देखकर अमीर बुखाराके आदमी सुलह करानेके लिये १० जुलाईके १२ बजे दोपहरको केर्की पहुंचे। १२ (२५) जुलाईके ७ बजे सबेरे तुर्कमानोंके साथ संधिकी बातचीत शुरू हुई। इस बातचीतमें बुखाराके प्रतिनिधि थे—तोकसावा मिर्जा खोजा, मीर अखुर कारी उसमानबेक और कराउलबेगी जाहिरोफ, और तुर्कमानोंके प्रतिनिधि—ईशान सदुर, ईशान उराक, मुल्ला बलीनियाज, मुल्ला बावा और मुल्ला जूराकुल तोकसावा। १९ जुलाई (अगस्त) संधिके ऊपर हस्ताक्षर भी हो गया। तुर्कमानोंने केर्कीके घेरेको हटा लिया। ३० जुलाई (१२ अगस्त)को केर्कीका बाजार खुल गया, गावोंसे सब तरहकी खानेकी चीजें आने लगी।

इस प्रकार ऐरापेतोफकी बदर-घुड़कीको खतमकर तुर्कमानोंके खतरेसे भी अपनेको मुक्त करके केर्कीमें वोल्शेविकोंने अपनी शक्ति मजबूत कर ली। २२ सितम्बर (५ अक्टूबर) को स्टीमर द्वारा चारजूसे नई कम्युनिस्त सेना केर्की आ रही थी, लेकिन केर्कीसे पच्चीस वेस्तंपर तुर्कमानोंन फिर स्टीमरको रोक लिया। लेकिन चार घंटेके बाद उन्होंने उसे छोड़ देनेमें ही खैरियत समझी। इसी साल ताशकन्दसे कुछ लाल सैनिकोंके साथ तीस लाख रूबल खजाना लेकर लगोदा और शीर्निकोफ आ रहे थे, जिन्हें २५ अक्टूबर (८ नवम्बर)को उसी गाव खोज-म्बाजमें तुर्कमानोंने फिर रोक लिया। उन्होंने हथियार और खजाना छीन वोल्शेविकोंको मौतका दंड दिया। चार दिन इसी स्थितिमें रहे। केर्कीके वेगपर दबाव पड़ा, तो तुर्कमानोंने उन्हें छोड़ दिया। केर्कीकी क्रांतिकारी समितिने इस बातका बहुत विरोध किया, कि ईरानी, जर्मन, अफगान या दूसरे आदमियोंको न रोक तुर्कमान केवल रूसियोंको रोकते हैं।

केर्की-काड (१९१९ ई०) की तारीखवार घटनायें निम्न प्रकार थी —

२४ अप्रैल (७ मई) केर्कीपर चढाईके लिये ऐरापेतोफने सिपाही जमा करने शुरू किये।

५ (१८ " ) तख्तबाजारसे ऐरापेतोफकी सेना खाना हुई।

१२ (२५ " ) केर्की-सोवियतको शत्रुके आनेकी सूचना मिली।



- १३ (२६ " ) युद्ध-परिपक्का सगठन, और नगरकी प्रतिरक्षाकी तैयारी ।  
 १४ (२७ " ) ऐरापेतोफकी सेना केर्कीके नजदीक पहुंची ।  
 १५ (२८ " ) ऐरापेतोफने अल्टीमेटम दिया, श्वास्की और गिर्निकोफ वात करने गये ।  
 परिपक्वने अल्टीमेटम स्वीकार नहीं किया ।  
 १६ (२९ " ) युद्ध-परिपक्वने केर्कीवगको हथियार रख देनेके लिये अल्टीमेटम दे पुराने  
 नगरपर गोलाबारी की ।  
 १७ (३० " ) पुराने नगरके प्रतिनिधि वात करने आये । वेग और उसके अफसरोको  
 गिरफ्तार करके पुराने केर्की नगरको बोल्शेविकोने ले लिया ।  
 १९ मई (१ जून) कगानकी मोवियत सेना समसोनोफ स्टेशनपर आई । तुर्कमानाने  
 केर्कीका मुहासिरा शुरू कर दिया ।  
 २-३ (१५-१६") तुर्कमान नेताओंके साथ प्रथम वातचीत ।  
 ३ (१६ " ) केर्की-सोवियतने अपनेको खतम करके सारी शक्ति युद्ध-परिपक्वके हाथमें  
 दे दी ।  
 ४-६ (१७-१८") तुर्कमानोंने आक्रमण करके केर्की नगरको लेना चाहा ।  
 १० (२३ " ) बुखारासे बोइत्केविच तथा अमीरके आदमी सुलह करानके लिये केर्की पहुंचे ।  
 १२ (२५ " ) तुर्कमानोंके साथ सुलहकी वात शुरू हुई ।  
 १९ जन (२ जुलाई ) सुलहनामे पर हस्ताक्षर ।  
 २८ सितम्बर (११ अक्टूबर) अपने अपराधोंके लिये वजानोफ शिरियानेत्स् और नेतेरोफको  
 गिरफ्तार किया गया ।

#### ४. ईरानका दावा

१९०३ ई०में इंग्लैंड और जारशाही रुसका जो समझौता हुआ था, उसमें दोनों राज्योंने बीचके  
 थोड़ेसे स्थानको छोड़कर ईरानको अपने प्रभावक्षेत्रमें बांट लिया था, और बहुतसे राजनीतिक  
 और आर्थिक सुभीते अपने लिये प्राप्त किये थे । क्रांतिके बाद सोवियत सरकारने इस तरहके  
 साम्राज्यवादी संधिपत्रोंको फाड़कर फेंक दिया । २६ फरवरी १९२१ ई०को मास्कोमें ईरानके साथ  
 नये संधिपत्रपर हस्ताक्षर करते हुए सोवियतने ईरानके साथ हुई अन्यायपूर्ण शर्तोंको खतम कर दिया  
 धातु-बुना, पेट्रोल आदिके सबधमें जो रियायतें ईरानमें जारशाहीने ली थी, उन्हें छोड़ दिया ।  
 जुल्फा तम्रज और दूसरी जगहोंमें जारशाहीने जो रेलवे लाइनें बनाई थी, उन्हें ईरानको दे दिया ।  
 उर्मिया ( रजाइया ) महामरौवरमें चलनेवाले रूसी स्टीमरोंको ईरानके हवाले कर दिया । तेली  
 ग्राफ, बिजली-स्टेशन, बैंकोंकी इमारतों आदिपर से भी अपना अधिकार छोड़ दिया । कुल मिलाकर  
 प्रायः सान करोड़ मुद्रण रूबलकी अपनी संपत्तिको देते रूसियोंके बाह्य-राज्यमें विशेष अधिकार-  
 को भी छोड़ दिया । एक ओर हमके नये शासक इन तरहकी उदारता दिखला रहे थे, दूसरी तरफ  
 वस्तुवारी नामन्त सममामुस्सल्लनतके नेतृत्वमें ईरान सरकार मार्च १९१९ ई०में पेरिसके अन्-  
 राष्ट्रीय कांग्रेसमें कौरोश और दारयोशके समयकी ईरानी सीमाको फिरसे कायम करना चाहती  
 थी । सममामुस्सल्लनत उसी वस्तुवारी कर्वालेका सरदार था, जिसने १९१६ ई०में इंग्लैंडके साथ  
 सन्धौता करके ईरानके प्रसिद्ध तेल-क्षेत्रको अंग्रेजोंके हवाले किया था । इन्हींके शासनके समय  
 इंग्लैंडने ईरानपर पूरी तौरसे अपना अधिकार जमाया, इसलिये अंग्रेजोंकी सम्मतिके बिना  
 वह ऐसी मांगोंको रखनेकी हिम्मत नहीं कर सकता था । उस समय एक ओर अंग्रेज जेनरल डेन्स-  
 टर्गविल्ली नेना बगदादसे बाकू पहुंची थी, वहा दूसरी नेनाका कर्नल रोल्लिसनके अर्धान अदका-  
 वाद आई थी । अंग्रेजी नेनाओंके बल्पर ईरानकी मांगे यदि लवी हो जायें, तो आश्चर्य क्या ?  
 वस्तुतः यह नई नेना ईरानकी नहीं, बल्कि अंग्रेजी साम्राज्यकी होती । ईरान सरकारने अपने स्मारक  
 पत्रमें मांग की—बाकू नगरके साथ सारा अजुर्गान, एरेवान, नखचेवान, कराबख आदि नगरों-  
 को साथ इसी आर्मेनिया, दखेंदके साथ दागिस्तान ( अर्थात् प्रायः सारा काकेशस ) ईरानको मिलना

चाहिए। पारे-कास्पियाको लेते हुये ईरानकी सीमा आमू-दरिया, अराल समुद्र और पूर्वी कास्पियन-तट माना जाय, अर्थात् अश्काबाद, मेर्व, खीवा आदिपर ईरानका अधिकार होना चाहिये। कुल मिला पाच लाख सत्तर हजार वर्ग किलोमीटर सोवियतकी भूमिपर ईरानका दावा था। ईरानने बोलशेविकोको इतना कमजोर समझा था, और अपने सहायक पश्चिमी साम्राज्यवादियों-को इतना मजबूत, कि उसने सोवियत-शासकोके सात करोड स्वर्ण रूबलके स्वार्थ-त्यागको उनकी कमजोरी समझा।

लेकिन ईरान और उसकी पीठ ठोकनेवाले ब्रिटिश साम्राज्यवादियोंके सारे मनसूवोको मध्य-एशियाके बोलशेविको, उनके लाल-गारद और लाल-सेनाने विफल कर दिया। रूसियोंके दात खट्टे करनेवाले तुर्कमानोको यह समझनेमें दिक्कत नहीं हुई, कि उनके भाग्यका सितारा बोलशेविको के साथ फिर उगनेवाला है। दूसरी जगहोकी तरह तुर्कमानोमें भी उच्चवर्ग और मुल्ला क्रांति-विरोधी सफेद-गारदोके साथ हुये, और अधिकांश गरीब जनता बोलशेविकोके साथ। इसी जनशक्ति-के बलपर तुर्कमानियामें १९२४ ई०में किसान-मजदूर-राज्य जातियोंके आत्मनिर्णयके अनुसार एक लाख सत्तासी हजार वर्गमील भूमिपर कायम हुआ। यद्यपि इस भूमिका अस्सी सैकड़ा कराकुम (कालाबालू)का महारेगिस्तान है, लेकिन तेरह लाखके आबादी के लिये बाकी बीस सैकड़ा भूमि भी कम नहीं है। अब तो दक्षु (आमू दरिया)को कास्पियनसे मिलानेके लिये ग्यारह सौ किलोमीटरकी जो नहर खोदी जा रही है, उसके कारण इस रेगिस्तान-का बहुत बड़ा भाग उर्वर भूमिमें परिणत हो जायगा। तुर्कमान घुमंतू कबीले, और उनके लूट-पाट और लडते-भिडते रहनेके जीवनका अंत हो चुका है, उनमें शत-प्रतिशत आधुनिक शिक्षा से शिक्षित नर-नारी हैं। वह जीवनके हर क्षेत्रमें बड़ी तेजीसे आगे बढ़े हैं।

### स्रोत-ग्रंथ

- १ रेवोल्युत्सिया स्नेदनेइ आज़िइ (ताशकन्द १९२९)
- २ History of civil war in U S S R (2 vols, G F Alexandrov and others, Moscow 1947)
- ३ La revolution russe (4 vols, C Anet, Paris 1918-20)
- ४ La revolution russe (Al Ular, Paris 1905)

नहीं है। फारसी भाषा अंग्रेजीसे तुलना करनेपर संस्कृतकी सगी बहन-भतीजी मालूम होती है, उसी तरह युरोपकी दूसरी भाषाओंसे तुलना करनेपर रूसी और उसकी स्लाव बहनें संस्कृतकी विलकुल भागिनैयी और प्रभागिनैयी सिद्ध होती हैं। वस्तुतः रूसी भाषा युरोपीय भाषाओंके वर्गकी नहीं है, बल्कि वह संस्कृत-ईरानी भाषा-वर्गसे सबंध रखती है। १८ वीं सदीके आरंभतक रूसी भी अपने का युरोपसे अलग समझते थे। आज भी उनके मुखसे जब-तब अपनेसे पश्चिमके देशोंको 'युरोपा' कहकर पृथक् करनेकी प्रवृत्ति देखी जाती है।

ईरानियों और हिन्दी-आर्योंका घनिष्ठ संपर्क भाषाके अतिरिक्त उनकी देवावली और पूजा-प्रकारसे भी सिद्ध होता है। रूसी भाषाका संस्कृतसे कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसके बारेमें हजारों उदाहरण हम यहां देने जा रहे हैं, इसलिये बहुत लिखनेकी आवश्यकता नहीं है। लेकिन मूल-भाषा और उसके बोलनेवालोंसे इतिहास-शृंखला कैसे जुड़ती है, इसे यहां संक्षेपमें दिखलानेकी जरूरत है।

हम आसानीके लिये उस भाषाकी "प्राक्-हिन्दी-युरोपीय भाषा" मान लेते हैं, जिसे भारत और ईरानके आर्यों और रूसी तथा युरोपीय जातियोंके पूर्वज एक कबीला होनेके वक्त बोला करते थे। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है, कि भाषा बोलनेसे यह मतलब नहीं, कि वह अपने पूर्वजोंके विशुद्ध वंशज है। मानव-जातियां स्थावर नहीं, जगमग हैं। कभी वह स्वयं दूसरी जातियोंके देशोंमें गईं और कभी दूसरी जातियां उनके देशोंमें आईं। यदि भिन्न-भिन्न भागोंमें भारतीय आर्योंके रक्तमें द्राविड, किरात और मंगोल जातियोंका प्रचुर रुधिर है, तो युरोपकी जातियां भी प्राचीन भूमध्यीय जातियों, और रूसी जाति हूणों, तुर्कों और मंगोलोंके रक्तसे बची नहीं है। हा, यह कहा जा सकता है, कि हिन्दी-युरोपीय-भाषा-भाषी जातियोंमें उनके प्राक्-हिन्दी-युरोपीय पूर्वजोंका रक्त अधिक है, परन्तु पश्चिममें यह बात केवल युरोपमें रहनेवालोंपर ही लागू है।

प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जातिके निवास और कालको ढूँढते-ढूँढते हम नवपाषाण-युगतक पहुंचते हैं। उनके आधुनिक वंशवरोकी शब्दावलीसे तुलना करनेपर इतना पता लगता है, कि अभी वह कृषिको नहीं जानते थे। इसका अर्थ यह भी हुआ, कि वह नवपाषाण-युगके आरंभिक कालमें थे। यह समय ईसा-पूर्व तीसरी-चौथी सहस्राब्दी या कुछ आगे-पीछे हो सकता है। मानव-तत्त्ववेत्ताओंमें इस सम्बन्धमें मतभेद है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति एसियाकी रहनेवाली थी या युरोपकी। बहुतसे विद्वान् कहते हैं, कि अंतिम हिम-युगकी समाप्तिके बहुत देर बाद एसियाकी एक जातिने युरोपपर घावा बोला और वही प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी। दूसरी तरफ ऐसे भी विद्वान् हैं, जिनका कहना है कि हिम-युगके बाद जिन जातियोंका युरोपमें पता लगा है, उन्हींकी वंशज यह प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति थी।\* हमें अभी इस विवादमें नहीं पडना है। यदि प्राक्-हिन्दी युरोपीय जाति एसिया-मध्य-एसिया—से युरोपमें गई, तो उसकी पूर्वी शाखा गोबीकी मरुभूमिसे कार्पाथीय पर्वतमालातक फैली हुई थी। पीछे इसके विभाग हुये—आर्य और शक। आसानीके लिये हम पूर्वी शाखाको 'शत वंश' या 'शकाऽऽर्य' कह लेते हैं। पश्चिमी शाखा 'केन्ट' या पश्चिमी युरोपीय जातियोंके पूर्वज थे। लेकिन यहां हम यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि हालकी ख्वारेज्म (निम्नवोलुनदी)की खोजोंने बतलाया है, कि वहाकी संस्कृति सिन्धु-उपत्यकाकी संस्कृतिसे सम्बद्ध थी, अर्थात् सिन्धु-उपत्यकाकी जाति और प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जातिकी सीमा अरान-ममुद्र और मिर-दरिया थी।

यदि हम यह मान लें, और जिसकी सभावना भी अधिक है, कि प्राक्-हिन्दी-युरोपीय जाति हिम-युगके बादकी युरोपीय जातियोंसे निकली थी, तो उसके विचरण-स्थानकी सीमा बोल्गा या एम्बा नदी रही होगी, अर्थात् विशाल 'भूमे वयावान' (कजाकस्तान)से पश्चिम ही। इसी विशाल

\* 'स्कैलेटेन रिमेन्स आफ अर्ली मैन' (हर्गुल्लिच्का), स्मिथसोनियन् मिसलेनियम् पब्लिकेशन जिल्द ८३ (१९३०) पृष्ठ ३४७-४९

भू-भागके पूर्वीय अशमें पूर्वी शाखावाले शकार्य रहते थे। शकार्य-काल में भी सस्कृतिके तलमें बहुत अन्तर नहीं पड़ा था। कृपिकी सभावना कम है। शिकारके साथ पशुपालन भी वह करते थे। समाज जन-सत्ताक था, यानी व्यक्तिकी जगह जनकी प्रधानता थी।

शकार्य जातिका सम्मिलित वासस्थान कार्पाथीय पर्वतमालासे पूरब रहा होगा, जिसके पूर्व-में आर्य रहा करते थे और पश्चिममें शक। जनसंख्याकी वृद्धि या प्राकृतिक विपत्तिके कारण शको और आर्योंमें संघर्ष हुआ। परिणामत आर्योंको अपना मूल स्थान छोड़ना पड़ा। उनका एक भाग कास्पियनके पश्चिम काकेशस पर्वत-मालासे होते क्षुद्र-एसिया (तुर्की) और उत्तरी ईरानके तरफ बढ़ते असीरियाके सभ्य देशकी सीमापर पहुँचा, और दूसरा भाग कास्पियनसे पूरबकी तरफ अराल समुद्रके किनारे होते ख्वारेज्मकी भूमिमें पहुँच वहाकी सभ्यताके सम्पर्कमें आया। काकेशससे होकर जानेवाले आर्योंका पता हमें ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमें वोगजकुई (अकराके पास)में मितन्नी आर्योंके अभिलेखसे मिलता है। यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि इसी सहस्राब्दी में हिन्दी-यूरोपीय ग्रीक ग्रीस देशमें दाखिल हुए।

अराल-समुद्र और ख्वारेज्ममें पहुँचे आर्योंका वहाकी सस्कृत जातिसे संघर्ष हुआ होगा, इसमें संदेह नहीं। ख्वारेज्मकी सभ्य जाति उसी तरह घुमन्तू आर्योंके समक्ष नतमस्तक हुई, जिस तरह हजार वर्ष बाद ईसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दीमें हिन्दी आर्योंके सामने सिन्धु-उपत्यकाकी सस्कृत जाति परास्त हुई, और वहा आर्योंका अधिकार जमा। शकोसे आर्योंके प्रथम अलग होनेका काल ईसा-पूर्व ३००० वर्षके आसपास था। आगे मध्य-एसियामें आर्य कस्पियनसे पामीर तक फैल गये। वक्षु (ख्वारेज्म) सभ्यताने उन्हें कृषि और सस्कृतिकी दूसरी बातें सिखलाईं। आगेके लिये यह भूमि आर्योंका बीजस्थान (आर्याना बेइजा) बन गई। ईसा-पूर्व २५०० के आसपास आर्योंके भाई-शक सभ्यता-वृद्धि, दैवी उत्पात या अच्छी चरागाहकी भनक पा पूरबकी ओर बढ़े। संभव है, अराल-समुद्र और सिर-दरियाके उत्तरके पशुपाल आर्य-जनोसे उन्हें लड़ना पड़ा हो। कुछ भी हो, वह धीरे-धीरे पूरब-में बढ़ते त्यानशान् और अल्ताईकी उपत्यकाओको लेते गोबी और क्विनलुन् पर्वतमालातक पहुँच गये।

ईसा-पूर्व १५०० में तरिम, इली और चूकी समृद्ध उपत्यकायें शकोके निवासस्थान थे। संभव है, वहा वे कुछ खेती भी करते हो, अल्ताईकी खानोसे सोना तो वह जरूर निकालते थे। लेकिन शक अपनी जीविकाके लिये मुख्यतया निर्भर थे पशुओपर—घोड़ा, गाय और भेड़े उनके मुख्य धन थे, ऊटो-से उनका प्रेम न था। इस प्रकार ईसा-पूर्व १५ वी सदीमें गोबीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक शक-जातिका वासस्थान था। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमें ग्रीक इतिहासकार दुनाइ (डैन्यूब)के उत्तर तथा अराल-तटपर शको (स्कुथ, सिथ)के होनेकी बात करते हैं। ईसा-पूर्व ६ठी सदीमें ईरानी शाहशाह कोरोस-को शकोसे बचनेके लिये दरबन्द (बाकूसे उत्तर)की किलावदी करनी पड़ी थी। सिर-दरियाके किनारे भी उसे शकोसे लड़ना पड़ा था और एक शक योद्धाके हाथ ही घायल होकर उसे मरना पड़ा। ईसा-पूर्व ४थी सदीमें अलिकसुन्दरको दुनाइ और सिरदरियाके तटपर फिर शकोसे मुकाबला करना पड़ा। इस तरह स्पष्ट है, कि ईसा-पूर्व २००० से अलिकसुन्दर (सिकन्दर)के समयतक कारपाथीय पर्वतमालासे गोबीतककी भूमि शक घुमंतुओकी विचरण-भूमि रही, और यही महाशक-द्वीप था। यह भी स्मरण रखना चाहिए, कि अराल समुद्रके पास मगेसगेत् (महाशक) नामकी एक शक जाति का वर्णन हेरोदोतने किया है। ई० पू० २०६ में जब कि ग्रीक-बाल्हिक राजा युथिदेमोने सिर-दरियापर चढ़ाई की थी, उस वक्त भी वहा शक लोगो हीका निवास था। कितने ही पश्चिमी विद्वानोंका विचार है, कि वहा (महाशकद्वीपमें) रहनेवाली शक जाति वस्तुतः एक जाति नहीं थी, अर्थात् वह भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते थे, और उनके रक्तमें भी भिन्नता थी। भिन्न-भिन्न भाषाका मतलब यदि यह है, कि उनमें कई बोलियाँ थी, शब्दोंके उच्चारणमें कुछ अंतर था, तो इसमें किसीको आपत्ति नहीं। किन्तु यदि इसका यह अर्थ है, कि वहा 'शतम्' वंशकी भाषासे बिलकुल ही अलग, अथवा हिन्दी-यूरोपीय भाषासे भी बिलकुल अलग भाषा बोलनेवाले कबीले रहते थे, और रक्तसे भी वे शकार्य या हिन्दी-यूरोपीय जातिसे भिन्नता रखते थे, तो इसके लिये कोई आधार नहीं है। वस्तुतः भाषाके

मामूली स्थानीय भेदके साथ भी इस सारे महाशक-द्वीपमें शक जातिका अक्षुण्ण आविपत्य १७२ ई० पू० तक रहा ।

गोवीसे उत्तर, और पूरवमें मंगोल-वशीय जातिया निवास करती थी, जिनमें सिन् (चीनी) और हूणका इतिहासमें सबसे पहले नाम आता है । २५० ई० पू०में तूमन् शन्-यूके नेतृत्वमें हूण बहुत प्रवल हुये और चीनको उनके सामने झुकना पडा । ये हूण-जिनके ही वंशज पीछे चिंगिज खाके मंगोल थे-आधुनिक मंगोलियामें रहा करते थे । इनके आतक और आक्रमणोंके मारे चीनी परेशान थे और इसीलिये उनमें वचनेके लिये विश्वविख्यात चीनकी दीवार बनी । हूणोंके पश्चिमी पड़ोसी शक थे । तूमन् शन्-यूके बाद उसका पुत्र माउ-दुन् हूणोंका राजा हुआ, और वह १८३ ई० पू०में मौजूद था । इसने चीनको कई बार बुरी तरह परास्त किया, और उससे अपनी शर्तें मनवाई । इसके समय हूण राज्य पश्चिममें अल्ताईतक पहुंच गया, और पूर्वमें कोरियातक । अल्ताई और बलखाशसे पूर्वके शको-ने माउ-दुन्की अधीनता स्वीकार की, और शायद इससे पहले ही वापके समयमें ही अल्ताईके उत्तरकी सोनकी खानें हूणोंके हाथमें चली गई थी । संभव है, अब भी वहां काम करनेवाले शक ही रहे हों । जो भी हो, माउ-दुन्ने शकद्वीपके कुछ भागपर अधिकार करके भी उसने अपनी तरहके घुमतू शकोंके उच्छेद करनेकी अवश्यकता नहीं समझी । उसके पुत्र ची-युइ (मृत्यु १६२ ई० पू०)ने शकोंके साथ पिता जैसा वर्ताव नहीं करना चाहा और उसने १७२ ई० पू०में शकोंके उच्छेदका काम शुरू किया । उसने तरिम्-उपत्यकामें बस गये शको (यू-ची)के राजाको मारकर उसकी खोपड़ीका मध्य-चपक बनाया । इस समयसे शको और हूणोंका संघर्ष शुरू हुआ, और शकद्वीपके पूर्वी भागमें खलवली मच गई । शक अपने पुराने स्थानको छोड़कर दक्खिनकी तरफ भागने लगे । दक्खिनकी तरफ भागनेवालोंमें सबसे पहले ये यू-ची, जिन्होंने ई० पू० १३० में वास्तर (बलख)में ग्रीक-वाल्हीक राज्यको समाप्त कर अपने राज्यकी स्थापना की, और इस तरह हिंदुकुशतकका भूभाग शकोंके हाथमें चला गया ।

हूणोंके दक्षिणी पड़ोसी चीनी उनसे तंग आये हुये थे । हूण उन्हें दुधार गाय समझते थे, और चीनी किसान एव शिल्पी जो कुछ धन जमा करते, हूण सवार आक्रमण कर लूट ले जाते । जब हूणोंका शकोसे भी संघर्ष हो गया, तो उनसे मिलकर एक साथ हूणोंपर आक्रमण करनेके लिये चीनने अपने एक सेनापति और महापर्यटक चाङ्-क्यान्को १३८ ई० पू०में शकोंके पास दूत बनाकर भेजा । चाङ् रास्तेमें हूणोंके हाथमें पड़ गया और दस सालतक उनका बंदी रहा । इस वक्त त्यान्-शाङ् और अल्ताई पर्वत-मालाओंके बीच इली-उपत्यकामें बू-सुन् शक रहा करते थे । किन्ही-किन्ही विद्वानोंका कहना है, कि बू-सुन् कुपाण शब्द हीका चीनी रूपान्तर है । जब बू-सुनोने १२८ ई० पू० में हूणोंसे अपनेको स्वतंत्र कर लिया, तो चाङ्-क्यान्को मुक्ति मिली और वह फर्गानाके रास्ते सिर-तटपर खोकद नगरमें पहुंचा । वह पहला चीनी यात्री था, जिसने इन देशों और निवासियोंका सुंदर वर्णन किया, जिसका पीछेके दूसरे चीनी यात्रियोंने अनुकरण किया । चीनने यू-ची सरदारोंसे मिलकर उन्हें चीनके महयोगसे पश्चिमकी तरफमें हूणोंपर हमला करनेके लिये प्रेरित किया । लेकिन यू-ची इसके लिये तैयार नहीं हुये । उन्हें अपना देश छोड़े ३० सालसे अधिक हो गया था । यद्यपि वह अब भी मोन्द, तुपार और वास्तरमें घुमतू जीवन ही बिता रहे थे, लेकिन उनके लिये नगरो और गावोंके रहने-वाले सोन्दी (ताजिक) सारी भोग-सामग्री जुटाते थे । यद्यपि चाङ् शकोंको हूणोंके विरुद्ध नहीं कर सका, तो भी चीनने अपने ही बलपर एक विशाल सेना हूणोंके विरुद्ध १२१ ई० पू०में उनकी भूमि (आधुनिक मंगोलिया)पर भेजी । चीनियोंकी भारी विजय हुई, लेकिन घुमतू जातियोंपर विजय टिकाऊ नहीं हुआ करनी । पीछे फिर हूण लूट मार करने लगे । लौटते वक्त चाङ्-क्यान् फिर एक साल हूणोंका बंदी रहा । उसने चीन-सम्राट्में सारी बात सुनाते हुये जे-चुआनके रास्ते भारतसे मध्य-स्या-पित करनेके लिये कहा । चीन-सम्राट्ने फिर उसे इली-उपत्यकाके बू-सुन् शकोंके पाम साथ मिलकर हूणोंपर आक्रमण करनेकी बात करनेके लिये १२१ ई० पू०में भेजा ।\*

\*देवो जिल्द १, हूण भी ।

साथ-साथ यू-चियोने भी अतमे (चाङ-क्यान्) की मृत्युके दो वर्ष बाद) चीनकी अधीनता स्वीकार की। यही समय है, जब कि शक-राजाओने चीनी उपाधि 'देवपुत्र' धारण की।

माउ-दुन्से परास्त यू-चियोने लोबनोरके तटको छोड़ भागकर बाख्तरके ग्रीक-राज्यको हाथ-मे ले लिया था, लेकिन वह उतने हीसे सतुष्ट नहीं हुये। सीस्तान (उन्हीके नामसे शकस्तान) और बिलोचिस्तान होते ११० ई० पू० में सिंध पहुँचे, फिर धीरे-धीरे समुद्र-तटके भागपर अधिकार करते ई० पू० ८० में तक्षशिला और गाधारके स्वामी बन गये, और उन्होंने एक शताब्दीसे जड़ जमाये यवन-राज्यका उच्छेद कर दिया। इससे पहले ८७ ई० पू० में यू-ची काबुलको भी ले चुके थे। यु-ची सरदार मोग भारतका प्रथम शक राजा था। ११०-८० ई० तक गुजरातभी शकोके हाथमें चला गया था। ६० ई० पू० तक मयुरामे भी शक-छत्रपी कायम हो गई। मोग (Maus) की मृत्यु ५८ ई० पू० में हुई, जिसके बाद शकोके भिन्न-भिन्न कबीलोमें झगड़ा हो गया और राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। तब शकोके कुपाण कबीलेके यवगू (सरदार) कजुल कदफिस् I की शक्ति बढ़ी। उसने हिंदुकुश पार हो बाख्तर और तुपारपर भी अधिकार कर लिया। कजुलके पुत्र वीम कदफिस् द्वितीय (७५-७८ ई०), ने सारे उत्तर भारतको जीता। इसीका पुत्र 'वसीलेउस् वसीलेउन्कनेर् कोस्' (राजाधिराज कनिष्क) हुआ जिसने शक-संवत् चलाया और ७८-१०३ ईसवीतक राज किया। इसके सिक्के अराल-समुद्रसे विहार तक मिलते हैं। शकोमें यह सबसे बड़ा राजा था। इसे बौद्ध धर्ममें नये तौरसे दीक्षित होनेकी अवश्यकता नहीं थी, क्योंकि यू-ची शकोकी मूल-भूमि तरिम्-उपत्यकामें ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमें ही बौद्ध धर्म पहुँच चुका था और शक ही नहीं, हूण सामन्तोमें भी बौद्ध धर्मके माननेवाले थे।

शकोके भिन्न-भिन्न कबीले ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीमें इस प्रकार थे—(१) लोबनोरके आसपास यू-ची, (२) इली-उपत्यकामें वू-सुन्, (३) इस्सिकुल् झीलके तटपर सङ्-वाङ्ग, (४) ऊपरी तरिम्-उपत्यकामें—जहाँ आजकल काशगर-यारकन्द नगर हैं,—में कस या खश, (५) मध्य सिर-दरिया तटपर शक, (६) सिर-दरियाके मुहाने तथा अरालके पश्चिमी किनारेपर भी मसगेत (महाशक) रहते थे। जान पड़ता है, काशगरवाले कश नामी शकोका ही एक उपनिवेश काश्मीरमें था, जिससे उसका यह नाम पड़ा। उधर हूण और चीनका द्वन्द्व जारी रहा। अतमें ईसवी प्रथम शताब्दीके मध्यमें हूण चीनके प्रहारसे जर्जर होकर उसकी अधीनता स्वीकार करनेको मजबूर हुए। इसपर सारा हूण-जन उत्तरी और दक्षिणी दो भागोंमें विभक्त हो गया। यद्यपि विभाजन अधीनता स्वीकार करनेके विरुद्ध ही हुआ था, किन्तु स्वतंत्रतावादियोंके लिए वह बहुत महंगा पड़ा। चीन और अपने भाइयोंकी सम्मिलित शक्तिके सामने अब निर्बल हो गये और ७३ ई० में उत्तरी हूणोंका पश्चिमाभिमुख महा-अभियान आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे शकद्वीपसे शकोको हटाकर वह उनकी जगह लेने लगे, लेकिन सिर-दरियाके दक्खिन उन्होंने हाथ नहीं बढ़ाया। ३७० ई० में अराल और काम्पियन-तटपर रहनेवाले आलानोंका उन्होंने ध्वंस किया—यह भी शकोका ही एक कबीला था। ३७५ ई० में अपने सरदार बालामेरके नेतृत्वमें दोन-तटपर पहुँच उन्होंने माओस्त-गत (जाट)को छिन्न-भिन्न किया। फिर दनियेपर पहुँच गायोंका ध्वंस किया। आगे भी उनका प्रभुत्व बढ़ता ही गया और हूण-सरदार अत्तिला (मृत्यु ४५३ ई०) के समय मध्य-दुनाइ (डैन्यूब) तक हूणों के हाथमें आ गया।

मंगोलियासे आरम्भ हो मध्य-दुनाइतक पहुँच गये पौने पाँच सौ सालके इस भयंकर हूण-तूफानने सबसे अधिक क्षति शकोको पहुँचाई, और वोल्गासे गोबीतकके शकद्वीपको शकोसे खाली करवा लिया। सबसे आखिरमें शकद्वीप छोड़कर भागनेवाले शक हेप्ताल थे, जिन्हें गलतीसे भारतमें हूण और पश्चिममें श्वेत-हूण कहा जाता है। ३६० ई० में हूणोंके एक कबीले अवार (ज्वेन्-ज्वेन्) ने शक्ति सम्पन्न हो पश्चिमकी ओर बढ़ना शुरू किया। इन्हीके प्रहार से उत्पीडित हो हेप्ताल भगे और धीरे-धीरे ४२५ ई० में उन्होंने सारे मध्य-एशियाको सिर-दरिया-से हिंदुकुशतक लेकर अपने पूर्ववर्ती कुपाण-राज्यका उच्छेद किया। इनका संगठन कबीलाशाही था, किन्तु सरदारोंका बहुत प्रभाव था। किवार इनका प्रथम महान् नेता था। इसीके नामसे

हेप्तालोका दूसरा नाम किदारीय हूण पडा। यहा यह स्पष्ट हो जाता है कि हेप्तालो (किदारियो) का नाम हूण इसीलिये पडा, कि वह हूणोके शासनमें चिरनिवासके बाद वहासे भागकर आये थे। किदारका पुत्र ४५५ ई०में श्वेत हूणोका राजा था। संभवत इसीका पुत्र तोरमान था, जिसने ग्वालियर और सागर-दमोहतकको जीत लिया था। ५०२ ई०में इसकी मृत्युके बाद इसका पुत्र मिहिरकुल राजा बना। मिहिर मित्र (सूर्य) का ही प्राचीन फारसी रूप है मित्र—मित्र > मिथ्र > मिहिर। पीछे शकद्वीपियोंके प्रयाससे मिहिर भी उसी प्रकार शुद्ध मस्कृत बन गया, जिस प्रकार शक-द्वीपीय ब्राह्मण शुद्ध भारतीय ब्राह्मण बन गये। कुल—यह हूणी शब्द गुल या ग्युलका अपभ्रंश है, जिसका अर्थ राजकुमार या दास होता है। तोरमान ने ग्वालियरमें सूर्य—मन्दिर बनवाया था, यह उसके शिलालेखसे पता चलता है। मिहिरकुलने मावपर आक्रमण किया था, किन्तु मगधराज वालादित्यने उसे बुरी तरह हराया। ५३२-३३ ई०के आसपास मालवाके विजयी राजा यशोधर्मा विक्रमादित्यने मिहिरकुलको हराकर उसे कश्मीरकी ओर खदेड़ दिया। हूण नामसे प्रसिद्ध, किन्तु वस्तुतः शक मिहिरकुल अंतिम शक राजा था, जिसे भारतीय इतिहास जानना है। हेप्तालोकी राजधानी बुखाराके पास बरख्शा में थी, जहा हालकी खुदाईमें कितने ही भारतीय शैलीपर बने भित्तिचित्र मिले हैं।

हमने शकोको ईसा-पूर्व द्वितीय शताब्दीके आरम्भमें गोवीसे कारपाथीय-पर्वतमालातक अपने महाशकद्वीपमें बसे देखा। फिर उनकी एक शाखा यू-चीको मध्य-एशिया, तुपार, सीस्तान, सिन्ध, काबुल, तक्षशिला होते मयुरा और उज्जैनतक फैलते देखा। फिर यू-चीकी एक शाखा कुपाणोको कनिष्कके रूपमें अराल-समुद्रसे विहारतक राज करते पाया और अन्तमें फिर तोरमान और मिहिरकुलके रूपमें शकद्वीपसे सबसे पश्चात् निकले 'श्वेतहूण' नामधारी शकोको मगधतक घावा मारते देखा। शकोके सबसे प्रबल जातीय देवता सूर्य थे। मिहिरकुल (सूर्यदासी) का नाम भी इसी बातका परिचायक है।

शकद्वीपीय ब्राह्मणोंके उद्गमके बारेमें यह सर्वमान्य कथा है, कि वह शकद्वीपसे आये और सूर्यपूजा उनका मुख्य कार्य था। शकद्वीप कहा था, इसे ऊपरके वर्णनसे अच्छी तरह समझा जा सकता है—अर्थात् वह गोवीसे बोल्गा और, पश्चिम कारपाथियातक फैला शकोका-मुख्य निवास था। दक्षिणकी ओर भारततक भागकर आनेवाले शक पूर्वीय-शकद्वीपके थे।

शकद्वीपी ब्राह्मण और सूर्य-पूजाका घनिष्ठ सम्बन्ध है, इससे शक-द्वीपियोंकी सारी परम्परा सहमत है। शकद्वीपी-प्रधानतावाले इलाकोंमें अधिकांश सूर्य-मूर्तियां द्विभुज मिलती हैं। इनके कंधेके ऊपर सिरकी दोनों तरफ सूर्यमुखीके फूल कुछ असाधारणसे ज़रूर मालूम होते हैं, क्योंकि भारतीय परम्परामें सूर्यमुखी फूलका कोई स्थान नहीं। लेकिन आश्चर्यकी बात तो यह है, कि सूर्यके पैरोंमें दो बूट होते हैं—बूटधारी हिन्दू देवता दूसरा कोई नहीं, और, यह बूट भी बूटनोतक पहुँचते हैं। इसकी व्याख्या करते पंडित लोग कहते हैं, सूर्यके चरणके दर्शनसे आदमीका अमंगल होता है, इसीलिये सूर्यके पैरोंको ढाक दिया गया है। परन्तु उसे बूटसे ही ढाकनेकी क्या आवश्यकता? और, फिर वही बूट हमें मयुरासे मिली कनिष्क-प्रतिमाके पैरोंमें दिखाई पड़ता है। यहा कनिष्क, शक, सूर्यमूर्ति और सूर्यपूजक शकद्वीपी ब्राह्मणोंका पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। साथ ही यह भी जानना कुतूहलजनक होगा, कि आज भी रूसी लोग जाडोमें उसी तरहके घुटनेतकके बूटों को पहनते हैं, जिन्हें कि हम कनिष्क और सूर्यकी प्रतिमाओंके पैरोंमें देखते हैं।

इस समानताका क्या कारण है? इसके लिये आइये, हम शकद्वीपमें रह गये शकोकी सुघ ले। हूणोंने बोल्गासे पूरवके शकद्वीपको शकोसे खाली करा लिया और बोल्गासे मध्य-दुनाइ (डैन्यूब) तक भी वह अपनी एक चौड़ी पट्टी खींचते चले गये। इन्हीं हूणोंके वंशज तुर्क, उइगुर और पीछे मंगोल हुए। फिर ५५७ ई०के लगभग तुर्कोंने मध्य-एशियासे अवार् (हेप्तालो) का राज्य स्वतन्त्र कर वहा अपना अधिकार जमाया और पीछे तो मध्य-एशियामें न शकोका नाम रहा, न आर्यवंशी मोंगो (योंडेसे ताजिकोंको छोड़कर) का।

लेकिन, वोल्गासे पश्चिमकी कहानी दूसरी है। दोन और दनियेपर तटपर जिन जातियोंका हूणोंने ध्वस किया, वह शक-वशकी थी। ईसाकी ४थी-५वी सदीमें-मध्य दनियेपर और क्रिमिया-में शकोके बहुत-से पुराने नगर-ध्वस मिले हैं। यद्यपि उत्तरके घने जंगलोंमें अब भी घुमन्तू शक पशुपाल रहा करते थे, लेकिन दनियेपर और क्रिमियाके तटपर वह गावों और शहरोंमें रहने लगे थे, और ग्रीक सभ्यतासे बहुत प्रभावित हुए थे। हूणोंने अपनी ध्वस-लीला मचाकर सभ्यताकी इस प्रगतिमें बाधा डाली। ६ठी सदीमें हम पश्चिमी शकोके कबीलोमें वेन्द (वेनेत्), अन्त, स्लाव, और सरमात् नामके कबीले पाते हैं। अकदमिक् देर्भाविनके अनुसार इनमें पहले तीन एक ही जातिके नाम थे, और सरमात् भी शकोकी ही जाति थी। आगे चलकर पश्चिमी शकद्वीपके ये सारे शक स्लावके नामसे मशहूर हुए।

शकोकी पुरानी नगरियोंकी खुदाईमें निकली चीजें भी बतलाती हैं, कि आधुनिक स्लाव उन्हींके वंशज हैं। शकोके रेखाचित्र, दीवार और पात्रोंके अलंकरण अभीतक उक्रइन्के गावोंमें प्रचलित हैं। उनके आभूषण रूसी किसानोंमें तबतक प्रचलित थे, जबतक कि उनमें पश्चिमी सभ्यता भीतरतक नहीं घुस गई। उनके गोखरूवाले सोनेके कुडल और हसलिया तो आजके भारतमें भी देखी जाती हैं। लेकिन जैसा कि ऊपर कहा, हूणोंके तूफानने काकेशस और कालासागर तटसे शकोका मवय तोड़ दिया। अब वहा हूण कबीले पशु-चारण करने लगे। यही हूण कबीले पीछे पेचेनगा अथवा वोल्गा-तटपर वोल्गार, काकेशसके पास खाजार (काजार) आदि नामसे मशहूर हुए। हूण-उग्रद्वके कारण शक अपनी दक्षिणी भूमिसे ही वंचित नहीं हुए, बल्कि उनका उन्मुक्त सभ्यता-प्रवाह भी रुद्ध हो गया, और एक बार फिर वे केवल घुमन्तू-जीवन वितानेपर मजबूर हुए। इतना ही नहीं, इसी परिवर्तनके साथ शक या स्किफ नाम भी इतिहाससे लुप्त हो गया। और आगे हम अन्त, वेन्द नामवाले कबीलोको पाते हैं। अरबोंके प्रभावसे जिस तरह ८वी शताब्दीमें पहुँचते-पहुँचते सारा ईरान और मध्य-एशिया मुसलमान हो गया, इसी तरह खजार, बुल्गार आदि हूण-जातियोंने भी इस्लाम स्वीकार किया (बुल्गार आजकल चुवाश के नामसे पुकारे जाते हैं, उनका आजकलके बुल्गारिया देशसे कोई संबंध नहीं। बुल्गारियावाले स्लाव हैं, जब कि वोल्गावाले बुल्गार हूण-वंशज)।

अभी भी रूमी ईसाई नहीं हुए थे, और बहुतसे पुराने देवी-देवताओंको मानते थे, जिनमें सूर्य सबसे बड़ा देवता था। सूर्यके एक खास पर्वपर वे लोग घीमें पके लाल चीले उसी तरह खाते थे, जैसे विहारमें आज भी कार्तिककी सूर्य-पण्ठीके दिन लाल ठकुआ खाया जाता है। आज भी यद्यपि उस दिन रूसी लोग मीठे चीले खाते हैं, पर अब उनमें पुराने धर्मका माननेवाला कोई नहीं है। ९वी शताब्दीके एक अरब पर्यटकने वोल्गाके किनारे खरीद-बेचके लिये आये रूसियोंको देखा था। वहा एक रूसी मर गया। लोगोंने लकड़ीकी चिता बनाई और पतिके साथ पत्नी भी सती हो गई।

आगे चलकर इन सभी शक कबीलोंका स्लाव (स्क्लाव <शकल) या श्रव नाम पड़ गया। जिस तरह हमारे यहा उपनिषद्-कालमें सोमश्रवा आदि श्रवान्त नाम बहुत होते थे, उसी तरह स्लावोंमें स्लावात (स्वेत-स्लाव, व्याचिस्लाव) नाम अब भी होते हैं—मोलोतोफका नाम व्याचिस्लाव है। स्लाव जाति आज दो भागोंमें विभक्त है—(१) पश्चिमी स्लाव जिनमें पोल, चेक और स्लावक हैं, और (२) पूर्वी स्लाव, जो दक्षिणी और उत्तरी दो भागोंमें विभक्त हैं। दक्षिणी स्लावोंमें बुल्गर, सर्व और क्रोवात (क्रोत) सम्मिलित हैं और उत्तरी स्लावोंमें रूसी, उक्रइनी तथा वेल्होरूसी हैं। पोल-चेक् भाषाओंका रूमीसे उतना ही अंतर है, जितना अवधीका बगलसे। दोनों एक-दूसरेकी भाषाको कुछ कठिनाईसे समझ सकते हैं। रूसी-उक्रइनी भाषाएँ भोजपुरी और मैथिलीकी तरहकी हैं, और रूसी-बुल्गारीमें उतना ही अंतर है, जितना मैथिली और अवधीमें। सारे पूर्वी स्लाव एक-दूसरेकी भाषा समझ सकते हैं। पश्चिमी स्लावोंके उच्चारणमें अंतर कुछ अधिक हो गया है, जिससे वे एक-दूसरेकी भाषाको सुगमतासे नहीं समझ सकते।

स्लावोंमें सबसे पहले बुल्गारोंने सभ्यतामें सवध स्थापित किया और ग्रीसके ईसाइयोंके सपर्क में आ ईसाई-धर्मको स्वीकार किया। छठी-सातवीं सदीमें हुंगर या मजार (अत्तिलाके हूणोंके वंशज)



के बलको तोड़नेमें बुलगारोंने बहुत काम किया, और वे बढ़ते-बढ़ते ग्रीसके पड़ोसी बन गये । यद्यपि उन्होंने ग्रीसको सास लेनेकी फुर्सत दी, किन्तु स्वयं काटेकी तरह चुभने लगे । लडाकू धुमतुओको पालतु बनानेके लिये सस्कृतिमें उन्नत धर्म बहुत अच्छे साधन होते हैं । बुलगारोपर भी ग्रीमने वही शस्त्र चलाया । स्लाव जातिग्रोका सबसे प्राचीन लिखित साहित्य बुलगारियाकी भाषामें ही मिलता है । उस वक्त पश्चिममें ईसाई-धर्म रोम और ग्रीक दो सम्प्रदायोंमें विभक्त हो चुका था । दोनों सम्प्रदायोंमें जहां क्रिया-कलाप और मतमतांतरका कितना ही अंतर था, वहां दोनोंकी लिपिया भी अलग थी । लिपिहीन असभ्य जातियां जिस चर्च (सम्प्रदाय)से धर्मकी दीक्षा लेती, उसीकी लिपिको स्वीकार करती हैं । स्लाव-जातियोंमें पोल, चेक, स्लावक यानी सारे पश्चिमी स्लाव तथा पूर्वी स्लावोमे क्रोवात रोमन-चर्च द्वारा ईसाई बनाये गये, इसलिये उन्होंने रोमन-लिपि स्वीकार की । वाकीने ग्रीक चर्चका अनुयायी बन ग्रीक-लिपि स्वीकार की ।

बुलगारियाके ईसाई होनेका यह मतलब नहीं था, कि सारे पूर्वी स्लाव भी जल्दी ही ईसाई बन गये । स्लावो की मूल भूमिमें अब भी पुराने देवी-देवताओका जोर था । ये उस समय बहुत लडाके भी थे । हूणी कबीलोका जब-जब प्रहार ग्रीसपर होता, तो वह स्लावोसे मदद मागता । क्रिमियामें ग्रीक लोगों की बहुत-सी व्यापारिक वस्तियां थी और यहां हर वक्त उनका हूण-वशज पेचेनगोसे झगडा रहता था । अभी इन स्लावोमें राजा नहीं थे, कबीलाशाहीका जोर था । सारा काम जन-सभा (वेचे) कबीले का जिर्गा करना था । लेकिन जैसे-जैसे बाहरके राज्योंसे लड़ने-भिड़ने और लूट-पाटकी प्रवृत्ति बढ़ती गई, वैसे-ही-वैसे सरदारोका अधिकार बढ़ा ।

९वीं सदीके अन्तमें एक स्वीडिश राजकुमार रुरिक आकर उनका शासक बन गया । रुरिकके पुत्र ओलेग (९११ ई०) और ईगर (९११-५७ ई०) ने अपनी लडाकू प्रजाको खूब संगठित किया और दूर-दूरतक विजय-यात्राएं की । ईगरने काकेशसके खजारोके खान और ग्रीम (विजन्तीन)के सम्राट दोनोंको नतमस्तक किया । ग्रीकोने उसे एक किला और बहुत सा धन क्षतिपूर्तिके तौरपर दिया, साथ ही नवद्वारा ईगरको वचनबद्ध किया, कि तुर्की धुमतुओके आक्रमणके वक्त वह ग्रीक-साम्राज्यकी रक्षा करेगा । ईगरने अपनी शक्ति बहुत बढ़ाई । उसका पड़ोसियोंपर बहुत आतंक रहा । ईगर के पुत्र स्व्यातोस्लाव (९५७-७३ ई०) ने पिताकी शक्तिको और आगे बढ़ाया । उसने हूणी बुलगारोके बोल्गा-तटवर्ती तथा उनके मध्मी चेर्कासोके कूवन-तटीय नगरोंको लूटा, और अपने पूर्वज शकोके छोटे कालासागर-तटपर फिर प्रभुत्व जमाते हुए किप्रेकको एक शक्तिशाली राज्यकी राजधानीमें परिणत कर दिया । स्व्यातोस्लाव जब विजय-यात्रा करते (९६९-७१ ई०) दुनाइ (डैयुव)के तटपर पहुंचा, तो ग्रीस-सम्राट घबडा उठा और उसने कालासागरके उत्तरी तटके ब्यावानके निवासी पेचेनेगा धुमतुओ और दुनाइ-तटवर्ती बुलगारोको मिलाकर स्व्यातोस्लावका मुकाबला करना चाहा । लेकिन ग्रीसको स्व्यातोस्लावके साथ मधि करनेको मजबूर होना पडा । स्व्यातोस्लाव अपने समयका महान विजेता था । ग्रीक ऐतिहासिक उसके आकार-प्रकारके बारेमें कहते हैं—“ उसका आकार मझोला, नाक उभड़ी हुई, दाढ़ी भरी आर लची, शिर विलकुल नगा, सिर्फ एक ओर कुछ छुटा वाला (शिखा) था, जो कि कुलीनताका परिचायक था । उसकी गर्दन मोटी, कंधे चौड़े, सर्वांग सत्तुलित शरीर । उसके एक कानमें दो मोतियों जोर पथराग-जड़ित मोनेका कुडल था ।” स्व्यातोस्लावने विजयीके तौरपर गर्वके साथ विजन्तिन (ग्रीम)की राजधानी कन्स्तन्तिनोपोलमें प्रवेश किया । लौटनेपर पेचेनेगा धुमतुओने दनिपेरके जल-प्रपातोंके पास धोकेमें उसे मार डाला ।

स्व्यातोस्लावका पुत्र व्लादिमिर (९७८-१०१५ ई०) पिताकी ही तरह बहादुर निकला और नतमस्तक शत्रुओंको उसने शिर उठानेका मौका नहीं दिया । उसने अपने राज्यका विस्तार पश्चिममें वान्तिक मनुद्रुतक किया और पोलो तथा लियुवानियोंके कितने ही नगरोंको छीन लिया । विजतिन्का तो वह मरक्षक ही था । जब ग्रीक सेनाने विद्रोह किया, तो सम्राटकी गहारपर व्लादिमिर ने जाकर उसे दबाया । सम्राटने पारिनायिकमें अपनी बहनमे व्लादिमिरका ब्याह कर दिया । विजतिन् दरबारकी तटक-भंडक, उसके नामती विलाम, कला, संगीतने व्लादिमिरको मुग्ध कर दिया, जो

९८८ ई०में उसने ईसाई-धर्म स्वीकार करनेका निश्चय किया। उसने अपनी प्रजाको हुंम दिया, कि कल दनियेपर जो धर्माभि-प्रेक (बपतिस्मा)के लिये नहीं पहुँचेगा, वह मेरी कृपाका पात्र नहीं होगा। किसकी मजाल थी, राजाकी कृपाका अभाजन हो। इस तरह प्रायः सारी राजधानी एक दिनमें ईसाई बन गई। ईसाई-पुरोहिनोंने परामर्श दिया और ब्लादिमिरकी आज्ञासे कियेफके मारे देवालय स्लावोंके पुराने देवताओंसे खाली हो गये। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं, कि लोगोंने अपने हजारों वर्षोंसे चले आये धर्म और देवताओंको असानीसे छोड़ दिया। उसके लिये कितनी ही जगह विद्रोह हुए।

कियेफके रूसोंने इस तरह अपनी प्राचीन सस्कृतिकी बहुतसी निधियोंको खोया। पुराने देवताओंकी मूर्तियाँ और पूजा-प्रकारोंके साथ उनके हजारों शब्द भी लुप्त हो गये। लेकिन अब उसकी जगह उन्हें एक उन्नत सस्कृतिसे संपर्क स्थापित करनेका मौका मिला, अपनी भाषाके लिए लिपि मिली, ग्रीक-साहित्य, ग्रीक-कलाके सीखनेका रास्ता खल गया।

१०१५ ई०में ब्लादिमिरके मरनेपर उसके लड़कोंमें झगडा हो गया और तीन पुत्रोंके परिश्रमसे एकतावद्ध कियेफ-रूस-राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। इसमें सन्देह नहीं, कि प्राचीन परम्परासे अत्यन्त विच्छेद होना भी इसका एक कारण हुआ। ग्यारहवीं सदीसे रूस बहुतसे राज्योंमें विभक्त हो गया। तेरहवीं सदीके मध्यमें पहुँचनेतक छिङ्गिस् खानके मंगोल उसके पौत्र बातुखानके नेतृत्वमें पहुँचे और फिर प्रायः डेढ़ सौ वर्षोंतक रूसियोंको शिर उठानेका मौका नहीं मिला। हाँ, मंगोलोंके शक्तिशाली शासनसे लाभ उठाकर मास्कोके राजकुलने अपने प्रभावको बढ़ाया—मंगोलखानके कृपापात्रके तौरपर ही। तेमूग्ने दिल्ली लूटने (१३९८ ई०)से तीन साल पहले जब (१३९५ ई०) मास्कोके पास तकका धावा करके मंगोल-खान तोक्तामिङ्गी की शक्तको क्षीण कर दिया, तो मास्कोके महाराजकुलोंको रूसको एकतावद्ध करनेका मौका मिला। यह काम वासिली प्रथम (१३८९-१४२५ ई०)के कालमें आरम्भ हुआ, और उसे पाचवें उत्तराधिकारी तथा प्रपौत्र महाराजकुल (पीछे जार) क्रूर ईवान चतुर्थ (१५३३-ई०) ने पूर्णताको पहुँचाया। उसके पुत्र फेदोर (१५८४-९८ ई०) के साथ रूरिक-वंशकी समाप्ति हो जाती है। लेकिन, वह अपने कर्तव्यका पूरा कर चुका था। अब रूसी रियासतें मिलकर एक ही नहीं हो गई थी, बल्कि रूसी राज्य कास्पियनके तटपर पहुँचकर वोल्गा और उरालसे भी पूरवकी तरफ पैर बढ़ा चुका था। यह अकबरका समय था, जबकि भारतने भी देशकी एकतामें कम सफलता नहीं प्राप्त की थी।

हमने देखा, हूणोंके प्रहारके बावजूद भी पश्चिमी शक-द्वीपके रहनेवाले शक एक बार जगलों की तरफ भागे। फिर स्लावोंके रूपमें प्रगट हो अतमें आधुनिक रूसियों और दूसरी स्लाव जातियोंकी शक्लमें अस्तित्वमें आये, और आज भी मौजूद हैं। शकद्वीपसे भागकर पूर्वी शक दूसरे कितने ही देशोंमें बिखरने भारतके शकद्वीपी ब्राह्मणों, कितने ही राजपूतों, गजरो, जाटों आदिके रूपमें हिन्दुओंमें मिल गये। इस सारे इतिहासपर गौर करनेसे स्पष्ट हो जायेगा, कि क्यों रूसी भाषासे सस्कृतका इतना घनिष्ठ सवध है। यह इसीलिए कि रूसी उन्हीं शकोंके वंशज हैं, जिनके भाई-बूढ़ आर्य पुराने कालमें आकर हिन्दुस्तान और ईरानमें बस गये, और उनका पारस्परिक सवध वही नहीं टूट गया, बल्कि सहस्राब्दियाँ बीतनेपर फिर बहुतसे शक हिन्दुस्तानमें आये। सस्कृत और रूसी भाषाओंमें जो घनिष्ठ सवध मालूम होता है, वह उसी पुराने सवध ही के कारण।

**स्लाव भाषा**—रूसी भाषाकी सस्कृतसे कितनी समीपता है, इसके लिये शब्दकोष और शब्द-विश्लेषणको देनेसे पहिले यहाँ दो शब्द कहनेकी अवश्यता है। यह एक मान्यता बन गई है, कि लिथुवानी भाषा सस्कृतके बहुत समीप है। रामानन्द और कवीरके समयतक लिथुवानी लोग ईसाई धर्ममें दीक्षित न हो अपने प्राचीन धर्मपर आरुढ़ थे, उनके कितने ही देवता वैदिक देवताओंमेंसे थे। उनकी भाषाका विकास भी बहुत मद गतिसे हुआ था। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं, कि लिथुवानी भाषा रूसीकी अपेक्षा सस्कृतके बहुत समीप है। हिन्दी-यूरोपीय भाषाओंके 'शतम्' और 'केन्तम्' दोनों भाषा-समुदायोंमें स्लाव-भाषायें सस्कृत और ईरानीके साथ 'शतम्' वंशकी हैं, जब कि लिथुवानीकी समीपता 'केन्तम्'

से ह। उच्चारण भी उसके रूसीकी अपेक्षा सस्कृतसे कितन दूर हैं, इसे निम्न तालिका में देखिये —

लियुवानो	प्राचीन स्लाव	रूसी	सस्कृत
केतुरि	चेतुरे	चेतीरे	चतुर्
केत्विर्तम्	चेत्वरेते	चेत्वेर्त	चतुर्थ
ब्रोतिरेलिम्	ब्राते	ब्रात्	मातृ
मोते	माति	मात्	मातृ
गुवम्	झिवे	झिव्	जीव

रूसी भाषा स्लाव-भाषा-वर्गकी पूर्वी शाखाकी एक भाषा है। पूर्वी स्लाव-भाषायें हैं—रूसी, बोलगारी और सेर्वी। उक्रइनी और बेलोरूसी भाषायें यद्यपि अब स्वतंत्र साहित्यिक भाषायें हैं, किन्तु वह रूसीके अत्यन्त समीप हैं। इसलिये तालिकामें उनके शब्द पृथक् नहीं दिये जा रहे हैं। पूर्वी और पश्चिमी स्लाव-भाषाओंका आपसका सम्बन्ध निम्न तालिकासे मालूम होगा —

पूर्वी स्लाव				पश्चिमी स्लाव		
प्राचीन स्लाव	रूसी	बोलगारी	सेर्वी	स्लोवानी	चेकी	पोली
वेल् (या)	विल्	विल्	वियेर्	वेल्	वेलु	इयलु
दिम् (घूम)	दिम्	दिम्	दिम्	दिम्	दूम्	दूम्
दन् (दिन)	देन्	देन्	दन	दन	देन्	जिएन्
मन् (सूनु)	सोन्, सिन्	सन्	सन	सन्ज	सेन्	सेन्
म्लेको (द्वय)	मोलोका	म्लाकु	म्येको	म्लेको	म्लेको	म्लेको
ग्लवा (गल)	गोलोवा	ग्लवा	ग्लवा	ग्लव	ग्लव	ग्लोवा
स्म्रन् (मृत्यु)	स्मेर्त्	स्म्रत्	स्म्रत्	स्म्रत्	स्म्रत्	श्मिएरे
मृत्व (मृत्यु)	मेर्त्विइ	म्रत्	म्रत्	म्रतेव	म्रत्	मर्त्
प्लन् (पूर्ण)	पोल	प्लन्	पुन्	पोलन्	प्लन्	पेलन्
पन् (पच)	प्यत्	पेत्	पेत्	पेत्	पेत्	पिएत्स
रउका (कर)	रुका	(रका)	रुका	रोका	रुका	रेका
मेभ्दा (मध्य)	मेभा	मेभ्दा	मेह	मेया	मेजे	भिएउजा
जेम्ल्य (जमा)	जेम्ल्या	जेम्या	जेम्ला	जेम्ल्या	जेमे	जिएमिए

हम रूसी शब्दों\* को नागरी अक्षरमें दे रहे हैं, जिसमें कुछ नये नकेतोंकी आवश्यकता है। ओं का उच्चारण रूसीमें कभी ओ और कभी अ होता है, किन्तु सन्देह उत्पन्न हो जानेके डर से हमने यहा उच्चारणका विचार न कर लिखे जानेवाले अक्षर (ओ)का ध्यान रखा है। रूसी स्वरोन्मा ह्रस्व-दीर्घ उच्चारण ऐच्छिक है, इसलिए नागरी स्वरोमें ह्रस्व-दीर्घोंको ध्रुव नहीं ममझना चाहिये। रूसीमें उदात्त नकेत लगानेकी प्रथा है, जिससे उच्चारणमें ही अन्तर नहीं हो जाना, बल्कि अर्थमें भी भेद हो जाता है। हम यहा उदात्त नकेतको विस्तार और दुरुहताके कारण नहीं दे सके।

\*रूसी शब्दोंके मग्नहमें हमने व क म्युलर, स क बोयानुस्के कोश (रुस्को-आगिल्ड-न्किइ स्लोवार, मास्को १९३५) के ६०,००० शब्द, तथा व फ ग्रेतश्ताइनके कोश (मास्को १९३८)का उपयोग किया है।

## परिशिष्ट (१)

### रूसी शब्द-कोश

#### (१) शब्द

अ-अ (निवार्य)

अजर्त-आज्वाल, ताप

आ-आह !

वेग्-वेग (दौड)

वेग्-वेजति (दौडना)

वेग्लेत्स-वेगक (भगेलू)

वेगस्त्व-वेगकत्व (भगेलुत्व)

वेगून्-वेगकत्व (भागून, भग्)

वेजात्-वेजति (भागना)

वेज्-विना (विना)

वेज्-वोज्निक्-वि-भगक

(आनीश्वरवादी)

वेज्-वेत्रेन्निइ-वि-वातीय (विना)

(वायुका)

वेज्-वोलोसिइ-वि-वाल,

(केशरहित)

वेज्-गलविइ-वि-गल

(शिर विना)

वेज्-गोलोविइ-वि-ग्रीव

(शिर विना)

वेज्-दोज्दिए-विदुह (वर्षा)

विना)

वेज्-दिम्निइ-वि-धूम (धूम-

रहित)

वेज्-जिज्नेविइ-वि-जीवन

(जीव विना)

वेज्-नोसिइ-वि-नास,

(नासिका विना)

वेजो-वि (विना)

वेज्-रोगिइ-वि-भृग (श्र ग

विना)

वेर्योजा-भुजं (वृक्ष)

वेस्-वि (विना)

वेस्-प्रि-मेस्ति-वि-प्र-मिश्रण

(मिश्रण-रहित)

वेस्-सेर्देच्नोस्त् -वि-हृदयत्व

(हृदयहीनता, श्रद्-हीनत्व)

वेस्-स्लाविये-वि-श्रवी

(कीर्त्तिहीन)

वेस्-स्लावेस्तिइ-वि-श्रवणक

(वाणी-हीन)

वेस्-स्मेर्तिये-वि-म र्यता

(अमरत्व)

वेस्-स्नेज्निइ-वि-स्नेही (हिम-

हीन), स्नेह-स्नेज (वर्फ)

वेस्-सो-ज्नातेल्-निइ-वि-स-

ज्ञातर् (चेतना-हीन)

वेस्-सोन्निता-वि-स्वप्नता

(निद्राहीनता)

वेस्-स्वास्तिइ-वि-त्रास्नु

(त्रास-हीनता)

विर्युक-वृक (भेडिया)

विस्-द्विस् (फिरसे)

वित् -भिद् (तोडना, ताडना)

वित् स्या-भिद् (ताडना,

भिडना)

वत् यो-भिद् (तोडना,

भिडना)

व्लागो-भर्ग (अच्छा, आशी)

व्लागो-दात् -भर्गदाति (आशी-

र्दान)

व्लागो-देतेल्.-भर्गदात्,

(उपकारक)

व्लागो-देयानिये-भर्गदान

(आशीदान)

व्लागोइ-भर्ग (अच्छा, सुखी,

उपयोगी)

व्लागो-प्रियात्तिइ-भर्गप्रियत्नु,

(प्रिय)

व्लागो-रोद्निइ-भर्गरोच्नु

(सुजात)

व्लागो-स्लोवेनिये-भर्गभ-श्रवण !

(मगल सुनना, आशीर्वचन)

व्लागो-त्वोरीतेल्-भर्गत्वष्टर्

(उपकारक)

वोग्-भग (भगवान्)

वोगातेइ-भगत (धनी पुरुष)

वोगात्स्वो-भगत्व (धनाद्-

यता)

वोगाच्-भगक (धनाद्य)

वोगी-निया-भगिनी (भगवती)

वोगो-मातेर्.-भगमातर्

(भगवान्की मा, मरियम)

वोगो-पोची-नियेभग-पूजा

वोगो-रोदित्सा-भग-रोहिणी

(मरियम)

वोगो-स्लावि रे-भगश्रवणा

(भगवान्की भक्ति, धर्म-

शास्त्र)

वोगो-स्लुजेनिये-भगश्रूपणा

(भगवान्की सेवा)

वोजे मोइ-भग मे ! (मेरे भग

वान्)

वोजेस्वो-भगत्व (भगवत्-

तत्त्व)

वोक्-पक्ष, वक्षशरीर-पार्श्व)

वोकोवाइ-पक्षत (शरीर-

पार्श्वसे)

वोकोम्-पक्षेण (शरीरपार्श्वसे)

वोले-भूरि (बहु, अधिक)

वोलेये-भूरि (बहु अधिक)

वोल्लात् -वोल्लति (वोलना)

वोल्तोव्या-वोल्लति (वोलना)

वोल्तिइ-वोल्लन्त (वोलक्कड)

वोल्तून्-वोल्तू (वोलक्कड)

वोल्शे-भरिशा (बहुत-सा)

कुस्क्या

वोल्शेविक-भरिक (बहुमतिक)

वोल्शिङ्—भूरिश (अधिकतर)  
 वोल् शे—भूरिश (अधिकतर)  
 वोल् शिन्स्वो—भूरित्व (बहुमत)  
 वोल् शोइ—भूरिश (बहुतर)  
 वोयाज्ज—भयान (भय, आतक)  
 व्रात्—भातृ  
 व्रतानिये—भ्रातृना (भाई  
 वनना)  
 व्रात्वा—भ्रातक (भैयवा)  
 व्रात्स्किइ—भ्रातृकीय (भाई-  
 चारा)  
 व्रात्—भरति, हरति (लेजाना)  
 व्रात् स्या—भ(ह)रति (ले  
 जाया जाना)  
 व्रेम्या—भर (भार)  
 ब्रोवि—भू (भौं)  
 ब्रोव्—भ्र (भौं)  
 ब्रोदित—वर्धति (उठना,  
 हटाना)  
 ब्रोम(सि)त् (स्या)—भ्रशति  
 (फेंकना, फिकाना)  
 बुदुचि—भूति (होना)  
 बुदुश्चिइ—भविष्यति (होने  
 वाला)  
 बुद्—भूति (हो सकना)  
 विवात्—भवति (हो जाना)  
 विक्—वृष (वैल)  
 विलो—भूत (भइल, भोजपुरी)  
 विन्—भूति (होना)  
 वाम्—वा (तुमको)  
 वामि—वा (तुम्हारे द्वारा)  
 वम्—व (तुम, तुम्हारा)  
 वग्—व  
 व्-वेगात्—वि-वेजति (भीतर  
 भागना)  
 व्-वेदेनिये—वि-वेदना (निवे  
 दना, भमिका)  
 व्-वेस्ति—विविधति (भीतर  
 लाना)  
 व्-व्यज्जगान्—वि-वधति (भीतर  
 बाधना)  
 व-ग्लवद्—विनाभं (हृदयमें)  
 व-द्वेदे—विदीर्घ (दूर)

व्-द्वोये—द्वि (दो बार)  
 व्दोवो—विधवा  
 व्दोव्स्त्वो—विधवात्व  
 वेदत्—वेत्ति (जनाना)  
 वेदेनिये—वेदना (जाना, विद्या)  
 वेलीकान्—वरक (वडका)  
 वेलीकिइ—वरक (वडा)  
 वेलिचाइशिइ—वरेण्य (सबसे  
 बडा)  
 वेर्नुत्—वर्तयति (लौटाना)  
 वेर्तेत्—वर्तयति (घुमाना)  
 वेर्तूश्का—वर्तुक, (लट्टू, परेता)  
 वेसेन्निह—वासतिक  
 वेस्ना—वमत  
 वेस्—स्वे (सारे)  
 वेतेर—वात (हवा)  
 वेतेरोक्—वातक (हवा)  
 व्ज्-वेगात्—विवेजति (दौड  
 जाना)  
 वेशात्—विशति (लटकना)  
 वयात्—वयति (फूक लगाना,  
 फटकना, वनना)  
 विवात्—भवति (वो, दीर्घ  
 जीयो)  
 विद्—विदि (देखना, प्रकट  
 होना)  
 विदेनिये—वेदना (दर्शन)  
 वीदेन्—वेत्ति (देखना)  
 विद्नेत स्या—वेह ते (दिखाई  
 देना)  
 व्-लेतात्—वि-डयति (उडना)  
 व्-ल्युवित्—वि-लोभति (प्रेम में  
 पडना)  
 व्-ल्युवन्योन्नोम्—विलोभित्व  
 (प्रेम-परायणता)  
 व्-ल्युवत्यत्—विलोभति (प्रेम  
 करना)  
 व्-ल्यपत् स्या—वि-लिपति  
 (चिपकाना)  
 व्-माजुत्—विमपति  
 (चिपकाना)  
 व्-मेशातेल—विमिश्रयित्  
 (वीचमें पडनेवाला)

व्-मोशेवात्—विमिश्रति  
 (मिलाना)  
 व्-नीज्—वि-नीचै (नीचे)  
 व्-नीजु—नीचैस् (नीचेकी  
 जगह)  
 व्-निकात्—(निगाह करना)  
 व्-नोवे—वि-नव (नया)  
 व्-नोसित्—वि-नेपति (भीतर  
 लाना)  
 व्-नुवि—अन्तरीय (भीतरमें)  
 वोदा—उद (पानी)  
 वोदापाद्—उदपात  
 वोद्विक—उदविक (जलकल)  
 वोज्—वाह (गाडीका वोझ)  
 वोज्—वुदित् } वि-वोविति  
 वोज्—वुउदात् } (जगाना, तेज)  
 करना, बढाना)  
 वोज्-वेदेनिये—विवोधना  
 (यशोगान करना)  
 वोज्-व्रात्—वर्तति (लौटाना)  
 वोज्-विसित्—वि-विशति  
 (उठाना)  
 वोजित्—वहति, वोहित  
 (लेजाना)  
 वोज्का—वाहक (गाडी ढोना)  
 वोज्कोक्—वाहक (ढोनेवाले)  
 वोज्कोपित्—वि-हवति (पुकारना)  
 वोज्-रा रोवान स्या—वि-  
 राधति (आनन्द मनाना)  
 वोल्—वैल (वैल)  
 वोल्क—वृक (भेडिया)  
 वोलोस्—वाल (केश)  
 वोल्चोनोक—वृक शाव  
 (भेडियेका बच्चा)  
 वोप्रोस्—वि-प्रश्न (प्रश्न)  
 वो-प्रोसित् } वि-मृच्छति  
 वो-प्रोसान् } (पूछना)  
 वोर—हार (चोर)  
 वोसेम्—अष्ट (आठ)  
 वोमेम-न-देस्यन्—अष्टादश  
 (अठारह)  
 वोमेम-देस्यत—अशीति  
 (अस्सी)

वोम्-पोल्लित्-विपूर्णयति (अदर भरना)  
 वोस्-सेदात्.—वि-सीदति (बैठना)  
 वोस्-स्तवात्-वि-स्थाति (विद्रोह में उठ खड़ा होना)  
 वोस्-ख्वलेनिये-वि-स्वरति (प्रशंसा करना)  
 वोत्-वत् (यहा, हा)  
 व्-पदात्-वि-पतति (गिरना)  
 व्-पिवत्.—वि-पिवति (पीना)  
 व्-प्लाव्.—वि-प्लाव (तैरना)  
 व्-प्लिवात्.—वि-प्लवति,  
 -(भीतर तैरना, नौयात्रा करना)  
 व्-पोल्ने-वि-पूर्ण (पूर्णतया, सारा)  
 व्रात्.—भ(ह)रति (लेटना)  
 व्-रेजात्.—वि-रेजति (रेज़ीदन्-फारसी)  
 व्-रेजक-वि-रेजक (काटना, भीतरी काट)  
 व्-सदीत्-वि-शातयति (भीतर कुतरना)  
 व्-सादनिक-वि-सादनिक (घोड़े पर बैठने वाला, सवार)  
 व्स्यो-स्वे (सारे)  
 व्स-क्रिवात्.—वि-क्रोशति (चिल्लाना)  
 व्-स्तुख्-वि-शू (जोरसे बोलना)  
 व्-स्तूश् (डब)त्-स्या-वि-नूपति (सुनना)  
 व्स-पाचेइवात्-वि-पाययति  
 व्स-पोइत् (पिलाना)  
 व्स-प्लि (वा) त्.—वि-प्लवति (उतराना, तिरना)  
 व्स-पो-मिनत्.—वि-प्र-मनुति (सोचना, रमरण करना)  
 व्-स्तवानिये-स्थापना (उठना)  
 व्-स्ताव्का-वि-स्थापका (अदर रखना)

व-स्तव्यात्-वि-स्थापयति (भीतर डालना)  
 व्स-व्याखिवात्.—वि-त्रासयति (हिलाना)  
 व्-तिकात्-वि-टीकति (टिकाना भीतर डालना)  
 व्-शि(वा) त्-वि-सीव्यति (सीना)  
 वि-व (तुम)  
 वि-वेगात्-वि-वेजति (दौडना)  
 वि-वेजात्  
 वि-विवात्.—वि-भवति (मार गिराना)  
 वि-विरात्.—वि-वरति (चुनना)  
 वि-वोर-वि-वर (चुनाव)  
 वि-वोरका-विवरका (चुनना)  
 वि-त्रासिवात्-वि-भ्र शयति (फेंक देना)  
 वि-त्रोसित्-वि-भ्र शति (फेंक देना)  
 वि-वारिवात्.—वि-वालति (उवालना)  
 वि-वेदिवात्.—वि-विदति (पाजाना)  
 वि-वेजित् } —वि-वहति (बाहर ले जाना)  
 वि-वोजित् }  
 वि-व्यजात्.—वि-वधति (बाधना, गूथना)  
 वि-इयात्.—वि-क्रीडति (जोतना, खेलना)  
 वि-गोवारिवात्.—वि-गवति (बौलना)  
 वि-दवित्.—वि-दावति (दावना)  
 वि-दिरात्.—वि-दारयति (विदारना, फाड़ना)  
 वि-जितात्.—वि-छिनति (काटना)  
 वि-जौव्.—वि-हवि (पुकारना)  
 वि-कजात्.—वि-काशवति (खिलाना)  
 वि-कपिवात्.—वि-कल्पि (खौदना)  
 वि-किलकात्.—वि-किलकति (चिल्लाना)

वि-मिरानिये.—वि-मरण (मरना)  
 वि-नुदित्.—वि-नोदयति (जोर-डालना)  
 वि-पाद्-वि-पात (भीतर डालना घुसेडना)  
 वि-पदेनिये-वि-पतना (गिरना)  
 वि-पिलिवानिये-वि-पीडना (चीरना)  
 वि-पिसात्-वि-पिंशति  
 वि-पिसिवात्.—, (लिखना)  
 वि-पोल्नेनिये-वि-पूर्णना (पूरना)  
 वि-रेजेनिये-वि-राजना (प्रकाशन)  
 वि-रगात्.—(रिगाना, गाली-देना, चिढ़ाना)  
 वि-स्तुशात्.—वि-श्रूषति (खूब सुनना)  
 वि-स्तवका-वि-स्थापका (प्रदर्शन)  
 वि-स्तुपात्.—वि-स्तोति (बोलना)  
 वि-सुशिवात्-वि-शुष्यति (सुखाना)  
 वि-सिपात् स्या-वि-स्वपिति (खूब सोना)  
 वि-सिखात्.—वि-शुष्यति (सूखना)  
 वि-तिरात्.—वि-तिरति (झाड़ना पोछना)  
 वि-त्योचिपात्-वि-तक्षति (आकार काटना)  
 वि-तोपित्-वितपति (गर्मकरना)  
 वि-त्यसात्-वि-त्रासयति (हिला देना)  
 वि-त्रिखात्.—नृप  
 वित्.—भिद् (काट गिराना)  
 वि-यनुत्स्या-वि-तनोति (फैलाना)  
 वि-व्वेनिक्-त्रि-त्रावनिक'  
 वि-उचात् (शिक्षित)

वि-चितात् -वि-चितयति  
(पठना)  
वि-श्चुपात् -वि-क्षुवति (छूना)  
व्यज न्का-वयका (बोझवाचना)  
व्यजात् -वयति (वाचना)  
गदाल्का-गदका (भाग्य भाखना)  
गदानिये-गदना (भाग्यभाखना)  
गलेरा } -(गली, गलियारा)  
गलेरका }  
गर्-ज्वर (जलन)  
गल्-स्तुक्-गल-वयनी (टाई)  
गदे-कुय (कहा)  
गेइ-हे (सबोधनार्थ)  
गिर्या-गुरु (भार)  
गलवा-गल (शिर)  
गलवाग्-गलक (सरदार)  
गलोतात् -गिलति (निगलना)  
गलोत्का-गल (कठ)  
ग्लुवीना-गर्भीणा (गहराई)  
ग्लुवोकिइ-गर्भिक, गभीरक  
(गहरा)  
गोवोर् (गवार्)-गवति  
(बोलना)  
गोवोरित् (गवरित्)-गवति  
(बोलना)  
गोव्यादिना (गव्यादिना)-  
गव्यादनीय (गोमाम)  
गोलोवा (गलवा)-गल (शिर)  
गोलोम्-गलक-(स्वर)  
गोलिइ-नग्न (नगल)  
गोरा (गरा)-गिरि (पहाड)  
गोरेल्का ज्वरक (ज्वालक, वनर)  
गोरेनिये (गरेनिये)-ज्वरणा  
(जलना)  
गोर्लो (गर्लो)-गल (कठ)  
गोर्किइ (गर्की)-ज्वर (जलन-  
वाला, कडआ)  
गोर्गुचिये (गर्गुचिये)  
ज्वरक (जारन, ईधन)  
गोर्ग्याचिड (गर्ग्याची)-  
ज्वलक (गर्म)  
ग्रयोज्-ग्रान (ह)क  
(लूटनेवाला)

ग्रवीतेल्-गृभी (ही) तर्  
(लुठक)  
ग्रेन्-ज्वलन (गर्माना, तपाना)  
ग्रीवा-ग्रीवा (गर्दन)  
ग्रोजित्-कुयति (धमकाना)  
गुवा-जिह्वा (ओठ)  
गुवित्-कुभति (नष्ट करना)  
दवात्-दाति (देता)  
दविलो. (दावल, भार,  
दवाव)  
दवित् - (दावत, दवाना)  
दव्का-दावक (दवाव)  
दालेये-दूर  
दाल्योकिइ-दीर्घक (दूरका)  
दालेको-दीर्घक (दूरका)  
दाल्-दीर्घ (दूर)  
दाल् नि-दीर्घ (दूर)  
दाल्नो-विदेनिये-दीर्घवेदना  
(दूरदर्शक)  
दाम्का-दामा (राजा, ह्द-  
दामा)  
दन्निइ-दान (भेंट, दिया)  
दात्.-दान (भेंट)  
दार्-दान  
दरेनिये-दान (दान देना)  
दरोवानिये-दान (दान देना)  
दरोवोइ-दान (भेंट)  
दात्.-दाति (देन)  
दावा-दान  
दयानिये-देय  
द्वा-द्वो (दो)  
द्व-द्वत्-द्वविंशति (बीस)  
द्वज्जिद-द्वि (दोवार)  
द्वेन्ना-द्वत्सत्.-द्वदश (बारह)  
द्वेर्नोइ-द्वारीय (द्वार)  
द्वेर्-द्वार  
द्वे-स्ति-द्विशत (दो सौ)  
द्विगात्-वैगति (चलना)  
द्वोये-द्वो (दो)  
द्वोइत्.-द्वितयति (दूना करना)  
द्वोइका-द्विक (जोडा)  
द्वोर्-द्वार (जागन)  
द्वोरेल्-द्वारक (महल, दरार)

द्वोयानि-द्वारीय (राजावावू)  
द्वोयु-रोद्विइ-द्विरोवनीय (चचेरा  
भाई)  
देवेर्-देवर  
देवा-देवी (कुमारी)  
देवित्सा-देविका (कन्या, चेरी)  
देव्का-देविका (कन्या, षोडशी,  
श्यामा)  
देवोमातेर्.-देवमातेर्  
(कुमारी मरियम्)  
देवोच्का-देविका (वच्ची)  
देवस्त्वेन्निक्-देवत्विक (ब्रम्ह  
चारी)  
देव्चका-देविका (कन्या)  
देदुस्का-देविका (कन्या, कुमारी)  
देव्चाता-देविका (कन्या, कुमारी)  
देव्-पितामह (दादा)  
देव्-प्रे-प्रपितामह (परदादा)  
देदुस्का-पितामह (दादा)  
देदुस्का-प्रे-प्रपितामह (परदादा)  
देका-द्विनिक-दश-दिनक  
देलत्.-दारयति (करना)  
देलित्.-दरति (विभाजित करना)  
देलो-दर, धर, वर (काम)  
देन्.-दिन  
देरेवा-दाह (वृक्ष)  
देरेवत्सो-दाहक (छोटा वृक्ष)  
देर्झाव्-दृ हति (शक्ति)  
देर्झानिये-दृ हना (रोकना,  
थामना)  
देर्झावल्-दृ हितर् (थामने-  
वाला)  
देर्झात्.-दृ हति (थामना)  
देस्पत् -दश (दस)  
देस्यातिइ-दशम (दसवा)  
देस्पत्का-दशक (दस)  
दे(वा)त्-प्राति (रचना)  
देयातेर्-धातर् (कर्मी, चाकर)  
द्लिन्ना-दीर्घ (लगाई)  
द्लिन्निइ-दीर्घ (लगा)

द्वेनिक-दैनिक (डायरी)  
 दो-तावत् (तक)  
 दो-वावित्.-तावद् भवति (जोडना)  
 दो-वूदित्.-तावद्-बुध्यति (जागना)  
 दो-नोवोर् (दगवार्)-(सम-झोता)  
 दोदात्.-ददाति (जोडना, बढाना)  
 दो-एदात्.-तावद् अत्ति (खा डालना)  
 दो-एनिये-दुहति (दूहना)  
 दो-इ-दुहति (बरसना)  
 दो-झि (वा) त्.-तावद् जीवति (तवतक जीना)  
 दो-ज्वोनित्.स्या-तावद् ध्वनति (द्वार पर ध्वनि करना)  
 दो-ज्ज (वा) त्स्या.-तावद् जानाति (जानना, चाहना)  
 दोइत्.-डु हति (दूहना)  
 दोइनिक-दुहनिक (दूहनीवर्तन)  
 दो-कञात्.-तावत् काशति (प्रकाशना)  
 दो-कुदा-कुत्र यावत् (कहातक)  
 दोल्गि-दीर्घ (दूर)  
 दोलेये-द्राघीय (दीर्घतर)  
 दोलिना (दलिना)-द्रोणी, (उपत्यका, दून)  
 दोल्-शे-द्रावीयस् (दूरतर)  
 दोम्-दम (घर)  
 दोम्ना-धूमक (भट्ठा)  
 दोच्.(का)-दुहितर् (पुत्री)  
 द्राज्जित्-द्रासयति (चिढाना)  
 दात्.-दरति (चीरना)  
 द्रात्.स्या-दरति (लडना)  
 द्रोवा-दारु (ईंधन, लकडी)  
 दुनुत्-दुनोति (फूकना, हवा देना)  
 दुर्नेत.-दुर् नीति (कुरूप होना)  
 दुर्-नोइ-दुर् (बुरा)

दिम्-धूम (धुआ)  
 दिरा-दरी (छिद्र, चीर)  
 द्याद्या-दादा (चाचा, मामा)  
 द्यादेन् का-(चाचा, मामा)  
 एदा-अद (भोजन)  
 एशेक् (एदक्)-आदक (भक्षक)  
 एझे-गोदुनिक-एकवार्षिक (वर्षण)  
 एझे-देकादनो-एकैकदशदिन (प्रतिदशाह)  
 एझे-नेदेल् निक्-एकैकसप्ताह (साप्ताहिक)  
 एस्त्-अस्ति (है)  
 एस्त्-अश्नोति (खाना)  
 एस्म्.-अस्मि (मैं हूँ)  
 एस्तेस्त्वो-अस्तित्व, (स्वभाव, द्रव्य)  
 एस्त्.-अत्ति (खाना)  
 एखात्.-एयति (हटाना, चढना, जाना)  
 झार-ज्वल (जलन, तपन)  
 झारा-ज्वाला (तपन, गर्म)  
 झरेनिये-ज्वलन (जारना, भूजना, तलना)  
 झरेन्निड-ज्वलित (जारी, भुनी, तली)  
 झार्किड-ज्वालक (गरम, मुस्तैद)  
 झे-हि (किंतु, और)  
 झे वानिये-चर्वणा (चवाना, जेंवना)  
 झ्योलतेन्किड-हरितक (पीला-सा)  
 झे लतेत्-हरितामति (पीला करना)  
 झे लतोक्-हरितक (अडे का पीला)  
 झे ल्तिड-हरित (पीला, जर्द)  
 झे ना-जनि (स्त्री)  
 झे नित्.(स्या)-जनीयति (व्याहना)  
 झे नित्वा.-जनितव्य (व्याह)  
 झे निङ्-जनिक (वर)  
 झे योन्का-जनिका (वध)

झे नोल्युविविड-जनिलोभी (स्त्रीप्रेमी)  
 झे न्स्किड-जनिका (स्त्री)  
 झे न्शका-जनिका (मेहरिया)  
 झे न्श्चिना-जनि (स्त्री)  
 झे र्त्वा-ज्वलत्व (यज्ञ)  
 झे च्.-दह, धक्ष, दाग (जलाना)  
 झि व्-जीव (जीता, जिंदा),  
 झिवितेल् निड-जीवयितर् (जीता)  
 झिवोइ-जीव (सजीव)  
 झि नो-नये-जीवन्त (प्राणी, पशु),  
 झिनुश्चिड-जीवक (जीता)  
 झिन्चिक्-जीवन (जीवटवाला)  
 झिन्-योम-जीवक (जीता)  
 झिज्जन-जीवन (जिंदगी)  
 झिलित्स-जीवस्थ (निवास-स्थान)  
 झिलोइ-जीवल (वसल, वसा)  
 झितेल्-जीवितर् (रहनेवाला)  
 झितिये-जीवन (जीवन-चरित्र, जीवन)  
 झिनु.-जीवति-(जीना, रहना)  
 झा-पश्चात्, आ, ता (बाद, आगे)  
 झा-विरात्.-आ-भ(ह) रति (ले जाना)  
 झा-वोल्तात्-आ-वोल्लति (बहुत बोलना)  
 झा-त्रसिवात्-आ-भ शति (फेंकना)  
 झा-त्रात् (स्या)-आभ(ह) रति (ले जाना)  
 झा-त्रोसत्.-आ-भशति (फेंकना)  
 झा-विवात् आ-भवति (भूलना)  
 झा-वर्नोइ-आ-वारित (उवाला)  
 झा-वेदेनये-आ-वेदना (उच्च-शिक्षणालय)  
 झा-वेर्तेत्.(स्या)-आवर्तति (घूमना, फिरकना)  
 झा-विदेत्.-आ-विदति (देखना)  
 झा-वाजित्-आ-वहति (ले जाना, खींच ले जाना)



जा-व्यञ्जा-आ-वयक (वधन)  
 जा-व्यञ्जिवात्-आ-वयति  
 (वधना)  
 जा-गार्-आ-ज्वल (धूपमें जला)  
 जा-ज्जाविये-अ-गल (उपाधि,  
 पदवी)  
 जा-गोरानिये-आ-ज्वालन  
 (आतपतप्त, भूरा)  
 जा-गोरेन्निइ-आ-ज्वल (धूपमें  
 जला)  
 जा-दाचा-आ-दन (समस्या)  
 जा-दोतोक्-आदत्त, आवत  
 (रखना, निधि)  
 जा-द्रात्-आ-दरति (भेड़ियेका  
 भेड़ खा जाना)  
 जा-एदात्-पश्चाद् अत्ति  
 (पीछे खाना)  
 जा-झिवानिये-पश्चाद् जीवन  
 (बाव पूरना)  
 जा-झिवो-यावद्जीव (जीवन-  
 भर)  
 जा-झिगाल्का-आज्वलक  
 (निगरेट जलावक)  
 जा-काज्-आ-काग (आज्ञा)  
 जा-कोनो-दातेल्-०-दातर्-  
 दातर्(विवाता, दाता, कर्ता)  
 जाल्-शाल, हाल  
 जाग-शाला  
 जा-लिज्जान्-जालिहति  
 (चाटना)  
 जानिमात्-आ-जानाति  
 (पठना)  
 जा-मेर्न-मृत (मरा)  
 जा-मोरिन्-मरति (नूना  
 मरना)  
 जा-ओद्व्याचुनिइ-आ-अग्रक  
 (वादलोने परे)  
 जा-गद्-पश्चान्-गद् (पश्चिम)  
 जापिम्-जापिग (अभिलेख)  
 जा-गो-नेद्-आ-ग्र-वेद (आज्ञा,  
 विधि)

जा-प्रोस्-आपृच्छ (पूछना)  
 जा-रेज् (इव)ात्-आ-रिहति,  
 आ-रेतति (हनन करना)  
 जा-रेकात् स्या-आ-रेचति  
 (त्यागना)  
 जा-स्वात्-आ-रुभति (कुठार,  
 से गठना)  
 जा-सद्का-आ-सीदना(बैठना,  
 बीज बोना)  
 जा-स्वेतित्-आ-स्वेतति  
 (प्रकाश करना)  
 जा-सुख-सूखा (जल-अकाल,  
 सूखापन)  
 जा-मुगेन्नेइ-सुखान (सूख गया)  
 जा-सिखात्-आ-शोषयति  
 (सूख जाना)  
 जा-न्तप्लिवात्-आतपति  
 (आग जलाना)  
 जा-तेम्नेनिये-आ-तमना  
 (अवकार करना)  
 जा-तिखात्-आनुष्यति  
 (शात होना)  
 जा-तोपित्-तोपना (जहाज  
 डुबाना)  
 जा-नुमानित् स्या-आ-धूमनि  
 (अधेरा होना)  
 जा तुखानिये-आ-तोमयति  
 (बुझाना)  
 जा-शिपेत्-आ-शपति  
 (सिसकारना)  
 ज्वानिड-ध्वनीय(पुकारा गया)  
 ज्वेनेत् } -ध्वनति  
 ज्वोनित् } (घटी बजाना)  
 ज्वोनोक्-ध्वनक (घटी)  
 जेवात्-जमति(जम्हाई लेना)  
 जेलेनेत्-हरितायति (हरित  
 होना)  
 जेलेन्नेइ-हिरण्य (हरा)  
 जेलेन्निइ-हरित (हरा)  
 जेलेन्-हरित (जर्द, हरा)  
 जेम्मेवेदनिये-ज्मावेदना  
 (भूविद्या, भू-गोल)  
 जेम्भ्या-ज्मा (भूमि)

जेम्भ्याक-ज्माक (देश-भाई)  
 जेम्भ्यानिका } -ज्मालिका  
 जेम्भ्यान्का } (स्ट्रावरी)  
 जेम्नोवोदनिइ-ज्मोदकीय  
 (जल-थलका जीव)  
 जेम्नोइ-ज्मानीय (भूमीय)  
 जिमा-हिम (जाडाकृतु)  
 जिमोवानिये } -हिमानना  
 जिमोव्का } (जाडा बिताना)  
 जिमोइ-हिमीय(जाडा,हमन्त)  
 ज्जातो-हरित (सोना)  
 जिल्न्-डेति (सिहराना,  
 चिढना)  
 ज्जाकवात्-जानाति(जानना)  
 ज्जाक-ज्ञानक (चिह्न)  
 ज्जाकोमित्-जानापे ते  
 (परिचय करना)  
 ज्जाकोम्स्तो-जानकत्व  
 (परिचय, ज्ञान)  
 ज्जाकोमया-जानक (परिचय)  
 ज्जामेनिये-जानना (चिह्न)  
 ज्जामेनितोस्त्-ज्ञानित्व(प्रसिद्धि)  
 ज्जामेनोवात्-जानापेति  
 (दिखलाना, सिद्ध करना)  
 ज्जात् निइ-ज्ञान (प्रसिद्ध)  
 ज्जात्नोस्त्-जातीयन्व (कुली-  
 नता, सामन्तता)  
 ज्जातोक्-ज्ञाता(जज, विजोपज्ञ)  
 ज्जात्-जानाति (जानना)  
 ज्जावेनिय-जानना (महत्त्व,  
 अर्थ)  
 ज्जाचिनेल्-ज्ञातर् (जानने-  
 वाला)  
 ज्जाचितेल् नोस्त्-ज्ञातृत्व  
 (महत्त्व)  
 ज्जाचिन्-जानाति (जानना,  
 अर्थ लेना)  
 जोज्-ह्व (पुकार, निमन्त्रण)  
 जोओता-हरित, जर्द (सोना)  
 जोओतोड-हरितीय(स्वर्ण-मुद्रा)  
 जुव्-जिह्वा, जवान (दात)  
 जुवोक्-जिजक (छोटा दात)  
 ज्यान्-जामाता, दामाद

इ-च, अ (और, अपि)	(रक्षा)	लिप् किइ-लेपकी (चिपकना, उलझना)
इवो-इव (जैसे, लिये)	कोरोचे-क्षुद्र, खुर्द (जटा)	लिपनुत्-लिपति (लगाना, चिपकाना)
इगो-युग (जुआ)	कोचान्-गुच्छ (गोभी फूल)	लोव्जानिये-लोभना (चूमना)
इद्ति-एति (जाना, आना)	कसिन्-कृपति (अलकार करना, रगना, चित्रित करना)	लोविजात्-लोभति (चूमना)
इञ्च-अत्, अञ् (से)	कस्नेत्.-कृ-णोति (लाल करना)	लोवित् (लवित्) -लोभति (लुब्धक, फसाना, शिकार करना)
इञ्-न्नानिये-आ-वरणा (चुनाव)	कस्न्-प्रसति (चुराना)	लोवल्या-लोभाना (शिकार करना)
इञ्-न्नात्.-आवरति (चुनना)	किचान्-कोशति (चिल्लाना)	लोवुशका-लोभका (जाल, फसाव)
इञ्-दवात् - (प्रकाशन)	कोव्.-कुभा (गुहा, छत, घर)	लोवचिइ-लोभिक, लुब्धक (शिकारी)
इञ् दानिये-(संस्करण)	कोव्-कव्य (रुधिर)	लोइका-रोधका (नाव)
इकात्-हिवकति (हिचकियाना)	कोइका-कृन्तन (काट डालना)	लोदि-रुद्र (लदभेसर, आलसी)
इस्-पोल्नेनिये-आनूर्णना (पूरा करना)	कोइत्-कृत् (कटाना)	लोझित्. स्या-लोडत (लोटना, गिरना)
इस्-पोल्नितेल्-आ-पूर्णयितर् (पूरा करनेवाला)	कुग्-चक्र (चर्खे-फारसी), गोल	लोपन्स्या (लोपनुत्)-लोपत (तोड़ना, फोड़ना)
इस्-प्राङ्-निये-अपराजयना (दोप, खाली करना)	कुक्षित्. स्या-वक्रियने (चक्कर काटना)	लुच्-रोचि (किरण)
इस्-प्राशिवात्.-आनृच्छति (मागना, पूछना)	कुञ्जोक्-चक्रक (वृत्त)	लुचो-रोचीय (बेहतर)
इस्-स्यकात्.-... (सैकना, सुखा देना)	किन्-कृनी (ढाकना)	ल्युवितेल्-लोभितर् (कुत्ता शिकारी)
इस्-तोपित्.-... (तोपना)	क्तो-कतर (कोन)	ल्युवित्-लोभति (प्यार करना)
इतक्-इतिक (ऐसे, तैसे, और)	कुत्रोक्-कुभक, कुप्पक (प्याला, गिलास)	ल्युरोव्-लोभ, लभ (प्यार)
इत्ति-एति (जाना, चलना)	कुव्शिइ-कृपिका (लोटा)	ल्युबोव्निक्-लोभिक (प्रिय, प्रेमी)
इख्- (इसका)	कुदा-कदा (कहा)	ल्युव्याश्चिइ-लोभीय (प्रेमी)
क-को, से, लिये, प्रति)	कुर्त्तका-कुर्त्ता	ल्युद्-रोव (लोग, जनता)
कञ्चान् स्या-काश्यते (प्रकाशित होना, दिखाई पड़ना)	कुसार्-कुस (काटना)	माजन् (माजनुत्)-मापत (माखना, माजना)
काक्-कय (कैसे, जैसे, यथा)	कुचा-गुच्छा (समूह, ढेर)	मज्-माप (माखना, माजना)
ककोर्-कय (किस भातिका)	कुचका-गुच्छक (छोटी ढेरी)	मसलो-ममका (मक्खन)
कनोव-खनुवा, कदन् (ख.ई)	कुशाज्.-प्रसति, घसति (खना)	मात्का-मान्का (माता)
करात्.-कारयति (दंड देना, सासत देना)	लजिन्-लघति (लाघना)	मातुशका-मान्का (माता)
केमु-केन (किसके द्वारा)	त्योग्किइ-लघुक (हल्का, आसान)	
कोथे-कहा (कढ़ीपर)	लेग्को-लघुक (हल्का, आसान)	
कोशा-कोश (चमड़ा)	लेग्चे-लघीयस् (आसानतर)	
कोइ-कः (कौन)	लेझात्-लेटना	
कोमु (कमु)-कम् (किसको)	लेत्यइका-लेक (आलसी)	
कोलेसो-चक्र, चर्ख (पहिया)	ल्योन्-डयन (उड़न)	
कपानिये-कापना (खोदना)	लेतात्-डयति (उड़ना)	
कोपित् (कपित्)-गोपायति	लेतो-ऋनु (ग्रीष्म)	
	लिज्जानिये-(चाटना)	
	लिज्जान्.-लिहना (चाटना)	

म.त्.—मातृ (माता)  
 मखात्—महति, मिहति  
 (मावन, हिलाना)  
 म्योद्—मधु (शहद)  
 म्योद्वेद्—मध्वद (भालू)  
 मेद्निइ—(तावेका)  
 मेदोव्निक्—माध्वीक (अमृतीय,  
 मधुर)  
 मदोक्—ममूक (अमृत, मदिरा)  
 मेद्—मधु (तावा)  
 मेञ्ज् } —मध्य (बीचमे)  
 मेञ्ज्दु }  
 मेन्या—मे (मुञ्जे)  
 मेरेन्—मरति (मरन)  
 म्योर्—तिवइ—मृत (मरा)  
 मेस्यत्स—मास (महीना चद्र)  
 मेतित्—मति (चिहुन करना,  
 लक्ष्य करना)  
 मेशात्—मिश्रयति (मिश्रित  
 करना)  
 मिगानिये—मलकाना  
 मीलोस्न्—मेल (कृपा, अनुकृपा)  
 मीलोच्का—मिलक (मेली,  
 प्रिय)  
 मीलिइ—मेली (मधुर, दयालु)  
 म्ने—मे (मुञ्जे)  
 म्नेनिये—मनन (त्रिचार, मनन)  
 म्निन्—मातृ (सोवना)  
 म्नोगो—महा (बहुत, बडा)  
 म्मोइ, म्मोयु—मया (मेरे द्वारा)  
 मोगूवेस्त्—महत्त्व, महिष्ट  
 (शक्ति)  
 मोगूचिइ—महा (शक्तिशाली)  
 मोयो, मोड—मे (मेरा)  
 मोइका—मोइत (भोजपुरी)  
 (धोना)  
 मोरुनिया (मलुनिया)—विशुर्  
 (मेघकी)  
 मोल्लेन्—मर्दति (पीसना)  
 मोलोत्वा—मर्दन (दावना)

मोरित्—मरत (भूखे मरना,  
 मारना)  
 मोचा—मुच (पेशाव)  
 मोचित्—मेहति (भिगोना, नम  
 करना)  
 मूञ्ज्—(मनुष्य, पति)  
 मुराद् येद—मूर (फारसी), चीटी  
 भक्षक  
 मुवा—मक्षी, मगस् (फा०)  
 (मक्खी)  
 मुश्का—मगस् (मक्खी)  
 मी—हम  
 मिन्—मोइत् (धोना)  
 मिश्का—मूपक (चूहा)  
 मिश्—मूपक (चूहा)  
 म्यासो (म्यास)—मास  
 म्यत्—मयति (मथना)  
 न—नि, परि (ऊपर, द्वार)  
 न-वेग्—निवेग (दौड, आक्रमण)  
 न-वेलो—न-अविल (परिशुद्ध  
 साधु)  
 न-वोर—नि-हार (एकत्रित  
 करना)  
 न-वेश् (इवाद्)—नि-वेशयति  
 (टागना)  
 न-विसात्—निवेशयति  
 (टागना)  
 न-वोजित्—नि वहति (ले आना  
 ले जाना)  
 न-व्यज् (इवाद्) तू—निवधति  
 (वाधना)  
 नगिशोम् } —नगन (नगा)  
 नगोइ }  
 नगोली—नगनल (नगा)  
 न गोवर् (रेत) —  
 नि ज्वलति (जलना)  
 न-रेगो—नि गिरि (गिरि पर)  
 न-ग्रवित्—नि-गृभीति (लूट  
 लेना)  
 नाद्—परि, उपरि (ऊपर)  
 ना-दोल्लो—नि-दीर्घ (चिर-

कालसे)  
 ना-एखात्—नि-एषति (आना)  
 न-भिनात्—नि-छिनत्ति (फसल  
 काटना)  
 न-काज्—नि-काश (शासन-  
 पत्र, आज्ञा)  
 न-लगात्—नि-लगत (ऊपर  
 रखना, लागू करना)  
 न-लेगात्—निलगत (आश्रित  
 होना)  
 न-लेपित्—निलपति (चिप  
 काना, लेपना)  
 नामि—न (हमारे द्वारा)  
 न-पदेनिये—निपातना (आक्रमण  
 करना)  
 न-पेकात्—नि-पचति (पकाना,  
 भूनना)  
 न-पिवात्—स्या—नि-पिबति  
 (पीना)  
 न-पिरात्—नि-पीडयति  
 (दवाना)  
 ना-पितोक—निपीतक (पान)  
 न-पोकाज्—नि-प्र काश (दिखाने  
 के लिये)  
 न-पोल्नेनिये—नि-पूर्णना  
 (पूरा करना)  
 न-पोस्लेदोक् (न-पस्लेदक्) —  
 नि-पश्चात्तन (पीछे, अतमें)  
 न-रोद्—नि-रोध (जन्ता)  
 नोस् (नस्)—नासिका, नासा  
 न-सादित्—नि-सादयति (रोपना)  
 न-भूदात्—नि-सादयति (रोपना)  
 न-सेदानिये—निपीदका (बहु-  
 सख्यकोका बैठना)  
 न-सेद्का—निपीदका (बैठकी)  
 न-स्लिश्का—नि-श्रूपका  
 (सुनना)  
 न-स्मेखान्—स्या—निस्मयति  
 (हमना)  
 न-स्तावित्—नि-स्थापयति  
 (रखना)  
 ना-मुख—नि-शुष्क (सूखा)  
 नश्—न (हमारा)

ने-न (नही)  
 ने-ब्लागो-प्रियत्तिन्-न-भर्ग-  
 प्रियत्तन् (अशुभ, अननुकूल)  
 ने-वेदेनिये-न-वेदना (अविद्या,  
 अज्ञान)  
 ने-वीदल्-न-वित्त (अनदेखा,  
 अद्भुत)  
 ने-ग्दा-नकुत्र (कही नहीं)  
 ने-मोच्तेनिये-न-पूजना  
 -(असम्मान)  
 ने-प्रियातेल्-न-प्रियतर् (शत्रु,  
 अमित्र)  
 ने-प्रियत्तन्-न-प्रिय (अप्रिय)  
 ने-प्रोबद्निक्-न-प्रबोधक  
 (विजली-रोधक)  
 ने-प्रोश्चेन्नि-न-प्रश्नीय (विना  
 पूछा)  
 ने-स-वेदुश्चि-न-सवेदीय  
 (अज्ञ)  
 ने-सो-ज्नातेल्-न-स-ज्ञातर्  
 (अचेतन, अनभिज्ञ)  
 ने-स्ति-ने-पति (लेजाना, ढोना)  
 नेत् } -नेति (नही)  
 नेत्तो }  
 ने-उच्-अन्-अनूचान (अपठित)  
 ने-चेगो-न-किं (कुछ नहीं)  
 ने-याव्का-न-आयान (अप्रका-  
 शन)  
 नि-न (नही)  
 नि-ग्दे-नकुत्र (कही नहीं)  
 नि-शिशि-नीचीयस् (बहुत  
 छोटा, बहुत नीच)  
 नि-फे-नीचैस् (नीचे)  
 नि-भ्-नीच (सबसे नीचे)  
 नि-श्कि-नीच (नीचे)  
 नि-नि-नीचीय (नीचेका)  
 नि-ज्-नीच (सबसे नीचे)  
 नि-ज्जात्-नहति (बाधना)  
 नि-ज्जीना-नीचीय (निस्तस्थान,  
 नीचा)  
 नि-ज्कि-नीचक (नीचा,

छोटा, तुच्छ)  
 नि-ज्जोस्त्-नीचत्व (नीचता)  
 नि-ज्शि-नीचीयस् (बहुत  
 नीचा)  
 नि-काक्-न कथ (किसी तरह  
 नहीं)  
 नि-ककोइ-न क (कोई नहीं)  
 नि-कोग्दा-न कदा (कभी नहीं)  
 नि-क्तो-न क (कोई नहीं)  
 नि-कुदा-न कुत्र (कही नहीं)  
 नि-स्-निस् (नही)  
 नि-स्-पदात्-नि-मतति (गिरना)  
 नो-न् (किंतु)  
 नो-वेइशि-नवीयस् (नवीन-  
 तम)  
 नो-वो (नवो)-नव (आधुनिक)  
 नो-वोस्त्-नवत्व (समाचार)  
 नो-गोत्-नख (नर)  
 नो-स् (नस्)-नासा (नाक)  
 नो-सिक-नासिका (नाक)  
 नो-सितेल्-नेष्टर् (ले जानेवाला)  
 नो-सित्-ने-पति (लेजाना, ढोना)  
 नो-सो-रोग-नासा-शृग (गैडा)  
 नो-चेव्का-निशीयिका (रात  
 को रहना)  
 नो-च्-निशा (रात)  
 नु-नु (सचमुच, हा, क्यो ?)  
 नु-त्रो-अन्तर, अदर (फारसी)  
 (भीतर)  
 ओ-अ (निषेध)  
 ओ-वा-उभौ (दोनों), अभि  
 (उपसर्ग)  
 ओ-व्-वि-नितेल्-अभि-वि-नेतर्  
 (अपराध लगानेवाला)  
 ओ-व्-वि-नित्-अभि-वि-नेति  
 (दोपारोपण करने  
 वाला)  
 ओ-व-वि-सात्-अभि-वि-शति  
 (लटकाना)  
 ओ-वे-उभे (दोनों)  
 ओ-व्-एद्-अभि-अद (भोजन)  
 ओ-व्-झिगानिये-अभि-जागरण

(जगाना, बालना)  
 ओ-व्-लक-अभ्रक, अब्र (फारसी)  
 (वादल)  
 ओ-वो-रोना-अभि-रग (रक्षार्थ  
 युद्ध)  
 ओ-वो-रोन्थत्-अभि-रजति  
 (फटकारना, रिगाना,  
 गाली देना)  
 ओ-व्-रगात्-अभि-रजति  
 (रिगाना)  
 ओ-व्-ससिवात्-अभि-चूषति  
 (स्तन पीना)  
 ओ-व्-स्लुझिवात्-अभि-शूषति  
 (सेवा करना)  
 ओ-वेन्-अवि (मेष, भेष)  
 ओ-व्-चि-अविक (भेडक)  
 ओ-व्का-अविका (भेडी)  
 ओ-ग्ने-अग्नि (आग)  
 ओ-ग्ने-वि-दि-अग्नि-विध  
 (आग-जैसा)  
 ओ-ग्ने-स्लुज्जे-निये-अग्नि-श्रूषण  
 (अग्नि-पूजा)  
 ओ-ग्ने-नुशीतेल्-अग्नि-तोष्टर्  
 (आग-बुसावक)  
 ओ-गो-अहो!  
 ओ-गो-म्योक्-अग्नि-प्रकाश)  
 ओ-दिन् (अदिन्)-(एक)  
 ओ-दो-आदि (एक बार)  
 ओ-झिवात्-आ-जीवति (फिर  
 जिलाना)  
 ओ-झ-गो-आ-ज्योति (जलन)  
 ओ-झ-र-आज्वर, अजोर  
 (जलाना)  
 ओ-को-अक्षि (आख)  
 ओ-लेन्-हरिण  
 ओ-न्-एपत् } यह  
 ओ-ना-एपा }  
 ओ-नो-एनत् }  
 ओ-पिवात्-स्या-आ-पीयते  
 (पी-पीकर अपनेको  
 मारना)  
 ओ-प्यत् (अपेत्)-अपि

ओ-पू.यामेनिये-आ-पीवना  
(शराब पीना)  
ओमदा-आ-साद (दुर्गवद्ध  
करना)  
ओ-स्वेतित्-आ-श्वेतति  
(प्रकाश करना)  
ओ-स्लुशानिये-अवश्रूषणा  
(आज्ञा न मानना)  
ओ-स्लिशात् स्या-अवश्रूयति  
(ठीक न सुनना)  
ओ-स्मेनिवात्-आ-स्मयत  
(परिहास करना)  
ओम्-अक्ष (बुरा)  
ओस्मि-नोग्-अष्टनख (अठपैरा)  
ओत्-आत् (से)  
अत्-वेचान्-उद्-वचति (उत्तर  
देना)  
ओत्-व्यजात्-उद्-ववति (वधन  
खोलना)  
ओत्-दानिये-उद्-दान (प्रति-  
दान)  
ओ-त्योसिवात्-आ-तनति  
(गठना, पत्थर छाटना)  
ओन्-झिवात्-अ-जीवति  
(मरजाना)  
ओन्-कजात्-प्रति-कययति  
(इन्कार करना)  
ओन्-कुदा (अन्-कुदा)-कुत  
(कहामे)  
ओत्-मिरानिये-उत्-मरण (मर  
जाना)  
ओतो-आत् (से)  
ओत्-मदात्-आ-मतति (गिर  
जाना)  
ओत्-रझान्-आ-राजते  
(प्रतिबिम्बन करना)  
ओन् नोचिन्-उत्-तीव्रगति  
(तेज करना)  
ओन्-नुदा-तत (वहामे)  
ओय्-आह  
ओखोता-आ-वेष्ट (शिकार)  
ओचरोवानिये-आश्चर्य करना,  
आश्चर्य होना

ओचि-अक्षि (आख)  
पा-पाद (पग)  
पदात्-पतति (गिरना)  
पदेनिये-पतना (गिरावट)  
पाइ-पाद (भाग)  
पल्का-फरक (डडा)  
पार-त्राप्पर (भाप)  
परेनिये-परायणा (पलाना)  
पास्तुव-पातुक (मेमाल,  
चरवाहा)  
पतेर्-पितर् (पिता)  
पखात्-जुती भूमि)  
पेना-फेन  
पेर्विइ-पूर्व (पहिला)  
पेरे-प्र, परि, प्राग्  
पेरे-विरा (त्रा)त्-परि-भ (ह)  
रति (हटाना)  
पेरे-वोञ्चित्-परिवहति  
पेरे-व्यस्का-परिवध  
पेरे-ग्रिजात्-परि-प्रसति  
(काट डालना)  
पेरे-वेल्-परिदार (पुनर्विभाजन)  
पेरे-एदात्-प्र-अत्ति (बहुत  
खाना)  
पेरे-झिवानिये-परि-जीवना  
(अनुभव)  
पेरे-झोग्-प्रजाग (बहुत  
गरमाना, दीप सजाना)  
पेरे-लेजात्-प्र-अधते (ऊपर  
चढना)  
पेरे-पइवात्-प्र-पिवति (पान-  
मत होना)  
पेरे-पिवात्-प्र-पिवति (पान-  
मत्ता होना)  
पेरे-प्लिवात्-परि-प्लवति  
(तैर जाना)  
पेरे-पोइत्-प्र-पिवति (पान-  
मत होना)  
पेरे-पुन् ये-प्रपय (चोरस्ता)  
पेरे-रोइत्-प्र-रोहति (पुन-  
रुज्जीवन करना)  
पेरे-हवात्-प्र-रभति (मारना,  
काटना)

पेरे-सीदेत्-प्रमीदति (बैठ  
जाना)  
पेरो-अक्ष, पर (फारसी), पख  
(लेखनी)  
पेचेनि (न्) ये-पचना (पकाना)  
पेच्का-पचक (चूल्हा)  
पेचुर्का-पचक (छोटा चूल्हा)  
पेव्-पच (भुनना, तलना,  
झुलसना)  
पिवनया-पिवनिया (मद्यशाला)  
पीवा-पान (हल्की शराब)  
पीला-पीडा (आरा)  
पीलित्-पीडयति (चीरना)  
पिसानिये-पिशना (लिखना)  
पिसातेल्-पिशयिनर् (लेखक)  
पिसात्-पिशति (लिखना)  
पित्-पीति (पीना)  
प्लवानिये-प्लवना (तैराकी)  
प्लाव (वि)त्-प्लवति  
(तैरना)  
प्लावेत्स्-प्लावक (तैराक)  
प्लोद-फरक (सतान)  
पो-प्र, परि (द्वारा, ऊपर,  
भीतर, को)  
पो-वेग-प्र-वेग (भागना)  
पो-वेझात्-प्रवेजति (भागना)  
पो-व् (वि) रात्-प्रभ (ह) रति  
(ले जाना)  
पो-बुदीतेल्-प्र-बोधितर  
(भडकानेवाला)  
पो-बुदीत्-प्र-बोधति (भड-  
काना, उठाना, उत्तेजित  
करना)  
पो-वेदेनिये-प्र-वेदना (प्रवृत्ति,  
चाल-चलन)  
पो-वेसित्-प्रविशति  
पो-व्योर्त्तिवानिये-प्र-वर्तना  
(बुमाना)  
पो-वोञ्का-प्रवहका (प्रवहण,  
यान)  
पो-व्यस्का-प्र-वधक (सिर  
बंद)

पो-गोलोव्निइ-प्र-गल (सरदार  
जेनरल)  
पोद्-पद (अन्तर, नीचे)  
पो-दवात्-प्रदाति (देना, भेंट  
देना)  
पो-दारित्-प्रदाति (देना, भेंट  
देना)  
पो-दारोक-प्रदारक (भेंट)  
पो-दात्-प्रदाति (कर देना)  
पो-दाचा-प्रदाक (देना, सेवा)  
पोद्-वोद्वन्या-पद्-उदीय  
पोद्-व्यवका-पद्-व्यवक  
पोद्-भारित्-पजारत (तलना)  
पो-दिरात्-प्र-दरति (चीरना,  
फाड़ना)  
पोद्-तचिवात्-प्र-तीक्षति  
(तेज करना, धार लगाना)  
पो-दुर्नेत्-प्रदुर्नेति (कुरूप  
होना)  
पो-एज्द्-प्र-एत् (ट्रेन)  
पो-एजिद्वत्-प्र-एति (चलना,  
फिरना)  
पो-भार-प्रज्वार (आग लगाना)  
पो-झार्निइ-प्रज्वारनिक  
(आग-बुझावक)  
पो-झिरात्-प्र-जीर्यति (खा  
डालना)  
पो-ज्योविवात्-प्र-जम्भति  
(जम्हाई लेते रहना)  
पोजझे-प्रहि  
पो-जन (वा) नित्ये-प्रजानना  
(ज्ञान, प्रज्ञान)  
पोइत्-पिबति (पीना)  
पो-इती-प्र-एति (जाना)  
पो-काज्-प्रकाश (दिखलाना)  
पो-कजानित्ये-प्रकाशना  
(गवाही)  
पो-कुशात्-कोशीदन् (फारसी-  
कोशिश करना, यत्न करना)  
पोल्नेत्-पूर्णति (भरना, पूरा  
करना)  
पोल्नो-पूर्ण (पूर्णतया, भरा)

पोल्नो-वोद्वनिइ-पूर्णोदिनी  
(गहरी नदी)  
पोल्नोस्त् यु-पूर्णत्व (पूर्णता)  
पोल्नोता-पूर्णता  
पो-मजात्-प्र-माखत (तेल  
लगाना)  
पो-माजोक्-प्र-मार्जक (झाड़,  
बुश)  
पो-मेस्यव्नो-प्रतिमास  
पो-नीझे-प्र-नौचै (कुछ नीचे)  
पो-पदानित्ये-प्र-पतना (गिरना)  
पो-म्लवोक्-प्र-प्लावक (तिरने-  
वाला, काग)  
पो-पोइत्-प्र-पाययति (घोड़ो  
को पिलाना)  
पो-पोइका-प्र-पायिका (प्रपा,  
नौका)  
पो-प्रोसित्-प्र-पृच्छति (पूछना)  
पो-राझे नित्ये-पराजयना  
(पराजय)  
पो-रझात्-पराजयत  
पो-रेज्-प्र-रिह, रेज (फारसी-  
काटना, घायल करना)  
पो-रोदा-प्ररोह (सतान, जाति,  
रुधिर)  
पो-रोझ् दात्-प्र-रोहति  
(जन्म देना)  
पो-सादित्-प्र-सादयति  
(बैठाना)  
पो-सीदेत्-प्र-सीदति  
(थोड़ा बैठना)  
पोस्ले-पश्चात्, पस् (फारसी)  
पोस्लेद्वनिइ-पश्चात्तन  
(पिछला)  
पोस्ले-दोवातेल्-पश्चाद्-  
धावितर् (अनुगामी)  
पो-स्तुशानित्ये-प्रश्रूयणा  
(आज्ञाकारिता, तपस्या)  
पोस्-मेत् निइ-पश्चात्-मृत्यु  
(पोस्टमार्टम्)  
पो-स्मेशि त्-प्र-स्मयत (हसाना)  
पो स्थात्-प्र-स्वपिति (थोड़ा

सोना)  
पो-स्तावित्-प्र-स्तावयति  
(रखना, उपस्थित करना)  
पो सुखु-प्र-शुष्क, खुश्क  
(फारसी, सूखे मार्गसे)  
पो-तुखानित्ये-प्र-तोपण  
(बुझाना)  
पो-तुशित्-प्र-तुषति (बुझाना)  
पोचितात्-पूजति (सम्मान  
करना)  
पो-चिनित्-प्र-चिनोति  
(भरममत करना)  
पोचतेन्निइ-पूजनीय (मान-  
नीय)  
पो-शिक्का-प्र-सीव्यक  
(सिलाई)  
प्-प्र  
प्र-प्र (महा)  
प्राविलो-प्रभत्  
प्रावितेल्-प्र-भवितर (शासक)  
प्रावितेल् स्त्वो-प्र-भवितृत्व  
(सरकार, राज्य)  
प्रावो-प्रभु (कानून, अधिकार)  
प्रावो-वेद-प्रभु-वेद (कानूनदा)  
प्र-वेद् } -परदादा  
प्र-वेदुक्का }  
प्र-मातेर्-प्र-मातर् (जग-  
न्माता)  
प्र-रोदितेल्-प्र-रोवितर्  
(पुरुखा), वश-पिता,  
प्रेदो-प्रति (सामने, सम्मुखे)  
प्रेद् (पेरेद्)-प्रति, प्राग्  
(सम्मुख, सामने)  
प्रे-दातेल्-प्रति-धातर् (विश्वास-  
घाती, देशद्रोही)  
प्रेद्-वे (वि) दनित्ये-प्रावेदना  
(पहिले जानना, भविष्य-  
दक्षिता)  
प्रेद्-गोर् ये-प्रति-गिरि  
(पहाड़को जड़, सानु)  
प्रेद्-सेदातेल्-प्र-सीदितर्  
(प्रेसीडेंट, प्रसीदन्त)

प्रेद्-स्कजानिये-प्राक्-कथना  
(भविष्यद्-वाणी)  
प्रेद्-गदात्-प्राग्-गदति (भाषना,  
दूर-दर्शिता)  
प्रेम्दे-प्राग्दा (पूर्वत)  
प्रि-प्र  
प्रि-वेगात्-प्र-वेजति (लेजाना,  
करने जाना)  
प्रि वेमात्-प्र-वेजति (दौडना)  
प्रि-वोज्-प्र-वह (लाना)  
प्रि-ज्नाक-प्र-जक (चिह्न,  
भूचन)  
प्र-ज्जानिये-प्र-जानना (स्वी-  
कारना)  
प्रि-काज्-प्र-कय (आज्ञा)  
प्रि-नदित्-प्र-नुदति  
प्रि-न्यातिये-प्र-नीति (स्वीकार,  
स्वागत)  
प्रि-पादोक्-प्र-यातक (आक्रमण)  
प्रि-रोद्-प्र-रोह (प्रकृति)  
प्रि-रोस्त्-प्र-रोह (उगना,  
बढना)  
प्रि-रचात्-प्र-रोचति (पालतु  
वनाना)  
प्रि सोस्का-प्र-चू (शो) पक  
(चूसनेवाला)  
प्रिसिलात्-प्र-पयति  
प्रि-न्यनुत्-प्र-तनोति (तानना)  
प्रि-चिंतानिये-प्र-चित्तना (शोक  
करना)  
प्रियातेल्-प्रियतर (मित्र)  
प्रियत्तिन्-प्रियत्नु (प्रिय)  
प्रो-प्र (लिये, के)  
प्रोवेग्-प्रवेग (दौडना)  
प्रो-व्लेस्क-प्र-भाज (प्रकाश)  
प्रो-बुदित्-प्र-बुध्यति (जागना,  
उठाना)  
प्रो-वोज्-प्र-वह (शकट, दोने  
का साधन)  
प्रो-दवात्-प्र-दापयति (वेंच-  
ना)

प्रो-दाश-प्र-दाक (वेंचो,  
विक्रय)  
प्रो-दान्निइ-प्रदत्त (विका)  
प्रो-दिरान्-प्र-दरति (चीरना)  
प्रो-प्रो-वेदिनक-प्र-प्र-वेदनिक  
(उपदेशक)  
प्रोमित्-पृच्छति (पृछना,  
मागना)  
प्रो-सिपात् स्या-प्र-स्वपिति  
(जगाना)  
प्रो-स्पात्-प्र-स्वपिति (सो  
जाना)  
प्रोस् वा-प्र-रन (मागना)  
प्रोतिव्-प्रतीप (विरुद्ध)  
प्रो-चितात्-प्र-चितयति (पढना)  
प्रोच्-प्राच् (दूर, दूर जाना)  
प्रो-शि (वा)त्-प्र-सीव्यति  
(सीना, टाकना)  
प्रोश्लोये-पश्चा (पिछला)  
पुत्तिक-पथिक (यात्री)  
पुत्योव्का-पथीयिका (यात्रा)  
पुतेशेस्त्विये-पथिकत्व (यात्रा)  
पुन्-पथ (मार्ग, सड़क)  
पुन् यानित्सा-पानका (मदिरा-  
मत्ता)  
पु यानिस्त्वो-पानकत्व (मत्तता)  
पिशात्-पिशति (प्रकाशना)  
प्यातोक्-पुचक (पाच)  
प्यत्-ना-दत्सत्-पच-दश (पाच  
ऊपर दस)  
प्यातो-पच (पाच)  
प्यातया-पचतय (पाचवा)  
प्यन्-पच (पाच)  
प्यन्-देस्यन्-पचाशद् (पाच-  
दस, पचास)  
राव्-लाभ (दास)  
रवोता-लाभता (काम, श्रम)  
राद्-राव, ह्लाद (प्रसन्न, खुश)  
रादोवात्-ह्लादति (हर्षित  
होना)

रादोस्त्-ह्लादिच्च (खुशी)  
राझ्-राग (क्रोध)  
राज् } -प्रति, —वि (विना,  
रास् } दुर)  
रज्-वेग्-वेग (दौडना)  
रज्-वोर-वर (चुनना, वाटना)  
रज्-बुदित्-बुध्यति (जागना)  
रज्-वेद्का-वेदका (खोजना)  
रज्-वेद्-चिक्-वेदक (ढूढने  
वाला, स्काउट)  
रइ-रै (स्वर्ग)  
रन्-रण (घाव)  
रस्ति-रोहति (उगना, बढना)  
रत्-निक-राति (योद्धा)  
रत्-न्नात (सेना)  
रुदेनिये-रोहणता (लालपन)  
रेव्योनक्-ऋभुक (लडका)  
र्योव्-रव (शोर, गर्जन)  
रेवेन्-रवति. (शोर करना)  
रेज्-रिहति, रेतति (काटना)  
रेज्-निक-रेतक, रिहक (कसाई)  
रेका-रेखा, लेखा (नदी)  
रेच्-ऋक् (भाषण)  
रिसोव्का-लेख, रेख (रेखा-  
कन)  
रोग्-शृग (सींग)  
रोद्-रोध (परिवार, वश)  
रोदिना-रोविनी, रोहिणी  
(जन्मभूमि)  
रोदितेलि-रोदितर (माता-  
पिता)  
रोदित्-रोहति (पैदा करना,  
जन्म देना, फारसी, रोईदत्)  
रोझात् } —रोधति  
रोझ दात्. } (प्रसन्न  
रोदित् स्या- } करना)  
रोझ देनिये-रोहणा (जन्म)  
रोझोक्-शृगक (छोटी सींग)  
रोस्त्-रोह (वृद्धि)  
रय्का-रनका (काटना)

हगात्.—(रिगाना, गालीदेना,  
शाप देना, चिढ़ना)

हगान्.—(गाली] देना, शाप  
देना, चिढ़ना)

हसिइ—ऋषि (पिंगल, श्वेत)

रिदात्.—रोदति (रोना-सिस-  
कना)

रिझिइ—रोह, लोह (लाल)

रिचान्.—ऋचति (शोर करना,  
चिल्लाना)

स्-स, सम् (सह, लिये, से,  
ऊपर)

सद्-सद् (उद्यान)

सदिन् स्या } —सीदति  
सज्ञात्. } (बैठना)

साम्-स्वय

सामो—वार्-स्व वाल (समावार  
चूल्हा)

सामो-लेन्-स्वयडयन (विमान)

यामिइ-स्वय

साखर-शर्करा

स्-वेगात्—स-वेगति (दौड़जाना)

स्-बोर-स-वर, स-भर (सभा)

स्-वेदेनिये-स-वेदेना (ज्ञात,  
सूचना)

स्-वेदुश्चिइ-स-विइसु (विद्वान्,  
निपुण)

स्व्योकोर-श्वशुर (ससुर)

स्वेक्रोवि-श्वश्रू (सास)

स्-वेखे-स्वगं (ऊपर)

स्वेत्-श्वेत (सफेद, ससार,  
प्रकाश)

स्वेतत् } —श्वेतति (प्रकाशना)  
स्वेतित् }

स्वेत्लो-श्वेतल (प्रकाशमान)

स्वेतोच्-श्वेतक (मशाल, दीपक)

स्-विदानिये—स-विदना  
(मिलना)

स्-विदेतेल्—स-वेत्तर् (गवाह)

स्वोयो } —स्वीय (अपना)

स्वोइ }

स्वोइस्त्रो—स्वीयत्व (गुण)

स्वोयाक्-स्वीयक (बहनोई)

स्-व्यञ्का-स-वधक (मुट्ठा)

स-व्यञ्.—स-वध (वधन)

स्-देरुज्ञात्—स-दृहति

(पकड़ना)

सेवे } —स्वीये (अपने लिये)  
सेवे }  
सेव्या }

सेगो-दनया-स्वक-दिन (आज)

सेदेन्—श्वेतति (वाल सफेद  
होना)

सेदोइ-श्वेत (सफेद वालवाला)

सेइ } —स (यह)  
सिया }  
सिओ }

सेमि-सोतिइ—सप्त-शती (सात  
सौ)

सेम्-ना-इत्सत्.—सप्त-दश (सात  
ऊपर दस, सत्रह)

सेम्-सप्त (सात)

सेम्-देस्यत्—सप्त-दशन्  
(सत्तासी)

सेम्-सोत्-मप्त-शत (सात सौ)

सेरुत्से-श्रद, हत् (हृदय)

सेस्त्रा-स्वसर् (वहिन)

सेस्त-सीदति (बैठना)

मिदेन्—सीदना (घर बैठना)

सिदेत्—सीदति (बैठना)

सीला-शील (बल)

स्-कञ्-स-कथा (कहानी)

म्-कजात्—स-कथयति  
(कहना)

स्-कञ्का-स-कथका (कहानी)

स्-कुचात्.—स-कृचति  
(उदास होना)

स्लवा-श्रव (यश)

स्लाविन्.—श्रवति (यश  
बखानना, श्लोक करना)

स्लाव्निड-श्रवणीय

(यशस्वी)

स्ले.ग्का-स-लघुक (हल्का)

स्लुगा-श्रूपक (सेवक)

स्लुज्ञान्का-श्रूषणिका  
(सेविका)

स्लुञ्वा-श्रूपा (सेवा)

स्लुञ्जेनिये-श्रूषणा (सेवा  
करना, काम करना)

स्लुञ्जित्—श्रूषति (सेवना,  
काम करना)

स्लुख्-श्रूपा (सुनना, कान)

स्लुशानिये-श्रूषणा (सुनना)

स्लु (स्लि) शात्—श्रूषति  
(सुनना)

स्-मेज्ञा (झि)त्—स-मेचति  
(आख मीचना)

स्-मेर्त्—स-मर्त (मृत्यु)

स्-मेस्-स-मिश् (मिश्रण करना)

स्मेख्-स्मय (हसना)

स्मेयात् स्या-स्मयति (हसना,  
मुसकराना)

स्नेग्-स्नेह (हिम, बर्फ)

स्नोवा-स-न्व (नया, ताजा)

स्नोखा-स्नुपा (नौह, पुत्रवधू)

सो-सम्, स

सोवाका-श्वक (कुत्ता)

सो-विरानिये-स-हरणा

(सभा एकत्रित होना)

सो-विरात्—स-हरति (एक-  
त्रित करना)

सो-वेत्-सवेत (सभा, मन्त्रणा)

सोवेत्तिक्-सवेतक (कौंसलर,  
परामर्शदाता)

सोव्-मदत्—स-पतति (सपात,  
एक साथ पड़ना)

सो-ज्जानिये-मजानना

(चेतना, ज्ञान, स्वीकार)

सो-ज्जातेल्—स-ज्ञातर् (जानने  
वाला)

नो-इति-स-एति (जाना)

सोल्न्त्से-सूर्य



मो-मनेनिये-स-मनना (सदेह)	स्तोइ-स्थाहि (ठहर)	ताक्-तादक् (ऐसा)
सोन्-स्वप्न	स्तोइकिइ-स्थायुकीय (दृढ)	ताक्-भे-तादक् हि (भी, ही)
सोन्निक-स्वप्नक (स्वप्न, जोतिसी)	स्तोल्-(टेबुल)	त्वोड } -त्वदीय (तेरा)
सो-रात्निक-स-अरातिक (सह- योद्धा)	स्तोल्-स्थाल (स्थाणु, खम्भा)	त्वोया }
सोसानिये-चूपणा (चूसना)	स्तोयानियो-स्थानि (खडा होना)	त्वोयो }
सो-सेइ-स-सद् (पडोसी, फारमी-इम्सद)	स्तोयात्-स्थायति (खडा होना)	तेम्नेत्-तमस्यति (अधेरा करना)
सोमोक्-चूपक (स्तनमुख)	स्-त्राख्-स-त्रास (भय, लडाई)	तेम्नो-तमस् (अधेरा, अस्पष्ट)
सो-स्ताव्-म-स्ताव (जोडना, गु फना)	म्-त्राशित्-स-त्रस्यति (भय- खाना, आतंकित होना)	तेप्लेत्-तप (ल) ति (गर्म होना)
सो-स्तोयानिये-स-स्थाना (स्थिति, अवस्था)	स्-त्रगानिये-स-त्रासना (डराना)	तेप्लो-तपल (गर्म)
सोमून् (रोक्)-चपण (चूसना, स्तन पीना)	सु-दार्-न्या-सु-दाना (महिला)	तेप्लोता-तपलता (फैलती आच)
सोत्-शत (माँ)	सु-दर्-सु-दान (भद्र पुरुष)	तेर्ज्ञानिये-तर्जना (सताना, चीरना)
सोतिया-शती (साँ)	मुत्-सत् (सत्त, सार)	तेर्ज्ञान्-तर्जति (चीरना, छिन्न करना)
सोतिड-शनीय (साँवा)	सुखो-शुष्क (सूखा)	तेसानिये-तक्षणा (काटना, फाडना)
सोखनुन्-शुष्णति (सूखना)	सुखोवेइ-शुष्कीय (सूखा, सूखी हवा)	तेसात्-तक्षति (काटना)
स्-पदानिये-म-पतना (गिरावट, पतन)	सुखो-पुत्निइ-शुष्क-पथ (खुश्की का मार्ग, स्थल-पथ)	तेस्निन्-तीक्ष्णोति (दवाना, गारना)
स्-पोइवात्-स-पाययति (मदिरामत्त बनाना)	सुखोस्त्-शुष्कत्व (सूखाई, सूखा-मा)	तेतिवा-ततुव (धनुषकी ज्या)
स्पाल्-न्या-स्वापालय (शयन- गृह, शयन-यान)	सुशा-शुष्क (सूखी भूमि)	त्योत्का-ताती (चाची, वुआ)
स्पानियो-स्वपना (नुलाई)	सुशे-शुष्कीयम् (अधिकतर सूखा)	त्योत्या-ताती (चाची, वुआ)
स्पात्-स्वपिति (सोना)	सुगेनिये-शोपणा (सूखाई)	तिखिइ-तुपी (शात, नीरव)
स्पात्-स्वपिका (नीद)	सुशित्-शुष्पति (सूखना)	तो-तद् (वह, नपुंसक)
स्म- (शर्म फारमी, लज्जा)	सुशका-शुष्का (सूखना)	तोग्दा-तदा (तव)
स्वे-त्रद्, हद् (मध्य)	सूप-सूप (मास-रस)	तो-एस्त्-स अस्ति (वह है, अर्थात्)
स्वे-स्त्रो-ह्रस्व (मध्यता)	म्-चित्तात्-म-चितति (गिनना)	तोनिन्का } -तनुका, तन्वी
स्वविन्-स्थापयति (रखना)	सिन्-सूनु (पुत्र)	तोन्किइ } (पतली)
स्तान्-स्थान (क्रेप, आकार)	स्-युदा-इह (पाली- इव, यहा)	तोपित्-तपति (तपाना, पिबलाना)
स्तानोमिन्-स्थानयति (रखना)	न्-यक-एनादक् (ऐसा)	तोक्का-नपका (लालटेन की बत्ती, गर्माणा)
स्तानोक्-स्थानक (बैच)	म्-यम्-तत्र (यहा)	तोन्-म (वह, पुल्लिंग)
स्तानित्स्या-स्थानका (स्टे- शन)	ता-सा (वह)	तोचेनिये-तक्षणा, तीक्ष्णना (धिसना, तेज करना)
स्-राजिवात्-म-नशन (राटना)	तोन्-म (वह)	तोच्योनिइ-तीक्ष्ण (छेनी किया)
न्तो-नन (नाँ)	तो-नद् (वह)	तोचिल्का-तन्निल्का (धिसने का पत्थर)
न्तोदन्-न्विति (ठहरना)	तडन्-नायति (उपाना, घरणा देना)	
	तइना-नायना (रहस्य, भेद)	

तोचिल्नया-तक्षलका (घिसने की चक्की)  
तोचित्-तक्षति (घिसना, तेज करना)  
त्रवा-दूर्वा, तृण (घास, झुटी)  
त्राक्का-दूर्वका (पत्ती, घास)  
त्रेतिइ }-तृतीय (तीसरा)  
त्रेत् }  
त्रयोख्-त्रिक (तिन-)  
त्रिअदा-त्रिधा (त्रिप्रकार)  
त्रि-दत्सत्-त्रि-शत् (तीस)  
त्रिझ्दि-त्रिधा (तीन बार)  
त्रि-ना-दत्सत्-त्रयोदश (तीन ऊपर दस, तेरह)  
त्रि-स्ता-त्रि-शत (तीन सौ)  
त्रोइका-त्रिका (तीनवाली)  
त्रुसित्-त्रस्यति (भय खाना)  
त्र्यसेनिये-त्रसना (कापना, हिलना)  
त्र्यस्ति-त्रस्यति (कापना, डोलना)  
तुदा-तत्र (वहा)  
तुमान्-धूमन् (भाप, कुहरा, धुआ; फारसी-दूदमान्)  
तुशित्-तुषति (बुझाना)  
ति-ते (तू)  
त् मा-तम (अधिकार)  
त् फु-यू (गूकना)  
त्यानुत्-तनोति (तानना, खींचना)  
उ-उद्, अव, वि  
उ-वेगात्-उद्-वेजति (भाग जाना)  
उ-वेदित्-उद्-वेदयति (सम-झाना)  
उ-वित्-उद्-भिदति (मार डालना)  
उ-वितोक्-उद्-भित्क (क्षति, हानि)  
उ-वज्ञात्-उद्-भजति (सम्मान करना)  
उगोल्-इगाल, अगार (कोयला)

उ-दाल्-उद्-दार (साहस)  
उ-दार-उद्-दार, विदार (चोट, आघात, फारसी-दरीदन्)  
उ-दारित्-उद्-दारयति (मारना, चोट करना)  
उ-ज्ञे-उद्-हि (पहिले ही)  
उ-इति-एति (जाता है)  
उ-काज्-उत्-कय (आज्ञा)  
उ-लेतात्-उद्-डयति (उड़ता है)  
उ-निज्ञे-निया-अव-नीचना (नीचा दिखाना)  
उस्त-उत्स (मुह, ओंठ)  
उस्त्,यें-ओष्ठ (मुह, ओंठ)  
उख्-(उह, ओह, आह)  
उचेनिये-ऊचना (पढाना, सिखाना)  
उचीतल-ऊचितर् (शिक्षक)  
उचित्-ऊचति, वक्ति (सीखना, सिखाना)  
फु (इ)-यू (धिकारना)  
ख्वाला-स्वर (प्रशंसा,)  
ख्वालित्-स्वरति (प्रशंसा करना)  
खोलोद्-शरद (सर्दी)  
खुदेनिये-शुद्रणा (पतला होना)  
खुदोइ-शुद्र (बुरा)  
खुदिशका-शुद्रिका (पतली तरणी)  
ल्त्रेत्-त्रेत (रग, फूल)  
त्सेलो-सकल (सारा, सियल)  
त्सेन्त्र-केन्द्र  
चशा-चष (प्याला)  
चशेच्का-चपक (प्याली)  
चश्का-चपक (प्याली)  
चेइ-कस्य (किसका, जिसका)  
चेरेप्-कर्प (र) (खोपड़ी)  
चेत्वेरो-चत्वारि (चार)  
चेत्वेर्-चतुर्थ (चौथाई)  
चेतिर्-चत्वारि (चार)  
चेतिरेझ्द्-चतुर्धा (चार बार)  
चेतिरेस्त-चतु शत (चार सौ)

चेतिर्-ना-दत्सत्-चतुर्दश (चौदह)  
चिनित्-चिनोति (मरम्मत करना, पेवद लगाना)  
चितातेल्-चितयितर् (पाठक)  
चितात्-चितयति (पढना)  
चिखानिये-छिक्कणा (छीकना)  
चिखात्-छिक्कति (छीकना)  
चमोकात्-चुवति (चूमना)  
क्तो-कति (किं) (क्या, फारसी, चि)  
शकाल्-शृगाल (गीदड़, फारसी, शगाल)  
शेप्तात्-शपति (पुकारना)  
शेस्ति-इनेक्का-पट्-दिनक (पड़ह)  
शेस्तोइ-पण्ट (छठा)  
शेस्त्-पट् (छ)  
एइ-अधि  
एता-एता (यह, वह)  
एतत्-एप (यह, फिल्लग)  
युनोस्त्-युवत्व (जवानी)  
युनिइ-यून (जवान)  
यावित् }-आयाति (दिख-  
याव्यात् } लाना)  
याक्का-(आवक, वर्तमान)  
याव्लेनिये-(आवना, प्रकट होना)

## (२) शब्दानुकरण

मर्गात्-आख मलकाना  
आख्-आह  
खाखा-हाहा  
चप्कात्-चप्चप् (खाना)  
इकात्-हिक्कति (हिक्की लेना)  
चिखात्-छिक्कति (छीकना)  
त् फु-यू  
फु-फू  
कश् ल्यात्-खानना  
गेइ-हे (सवोधन)

## (३) उपसर्ग

रूसी भाषामें उपसर्गोंका महत्त्व बहुत अधिक है। समाजके विकासके साथ नये शब्दोंकी आवश्यकता होती है। नये शब्दोंके निर्माणमें उपसर्गोंको जोड़नेका जितना अधिक प्रयोग रूसी भाषामें हुआ है, उतना किमी दूसरी हिन्दी-यूरोपीय भाषामें नहीं देखा जाता। वैसे संस्कृतमें भी माना गया है—“उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहार-सहार-विहार-परिहार-वत।” किन्तु इस वारेमें रूसी भाषा बहुत दूरतक गई है।

## रूसी उपसर्ग (अव्यय भी)

अ-अ (निपेधार्थ)	जय)	(हटाना)
वेज् } -वि (विना)	पोस्ले-पश्चात् (फारसी-पस्)	वित् -भिद् (मारना)
वेजो }	प्रा-प्र (वडा)	वित्, उ-, -प्रभिद्, उद् (मार डालना)
वेस् }	प्रे-प्र	वीवात्, प्रो-, -प्रभवति-(परीक्षण करना, जाचना)
व्-(अन्तर्)	प्रेद् } -प्रति, प्राक् (सामने)	वोल्तात् -वोल्लति (वोलना)
वो }	प्रेदो }	वोयात् स्या-भय (डरना)
वोञ् }	त्रि }	व्रसि (वा) त् -व्रश (फेंकना)
वोस् }	प्रो }	व्रसि, वि -वि + प्रव्रश (फेंकना)
वि }	राज् }	व्रात् स्या-भर्, प्रहर (लेजाना)
दो-तावत् (फारसी-ता, तक)	रास् }	व्रदिद् - प्रवर्ध (उठना, उभड़ना)
दुर्(नोइ)-दुर् (बुरा)	स }	व्रोस (सिवा) त् (स्या)-
जा-आ, पश्चा (पीछे, परे)	सो }	प्रव्रश (फेंकना)
इज् }	उ-उत्, अव	वुदिद् }
इस् }	(४) रूसी धातु	वुदिद्, वोज्-, }
क्-(के, लिये, प्रति)	पसावेत्, पो-, -प्रभवति (जोड़ना)	वुदिद्, पो-, }
ना-नि (ऊपर, द्वारा)	वेदिद्, उ-, }	वज्-दात् विज्-, -वि + प्रवुध
ने }	वेक्ष्दात् उ-, }	(भडकाना)
नि }	वेगत् - }	विवात्, दो-भवति, तावद्
निस्-निस् (निपेधार्थ)	वेगत्, उ- }	(मारना)
ओ-आ, अ (निपेधार्थ), अव	विवात्, दो-भवति, तावद्	विरात् -चुनना,
ओव्-अभि (चारो ओर)		विरात्, वि-, -चुनना,
ओवेज् }		विरात् इज्-, -चुनना,
ओवेस् }		विरत्, ज्ञा-, -म(ह)रति,
ओत्-आ, आत्, उत् (से, के, परे, लिये)		फ्यीमक् (लेजाना)
ओतो-अत्		विरात्, ना-, -हरति, नी-(सचय करना)
पेरे-प्र, परि, प्राग्, पुनर्		विरात्, मो-, -हरति, म-
पो-परि, प्र (ऊपर, द्वारा, अतर्, को)		(सचय करना)
पोद्-पद (नीचे)		विरात्, उ-, -हरति, अव-
पोरा-परा (पोराअनिपेध-परा-		

णिज् (सूचित करना)	काना, खतरेमें डालना)	लडना)
वेस्नेनिये, ओत्-, -अव + ववर्ज (अस्वीकार करना, फेंक देना)	ग्रिजात्, वि-, -वि + वग्रस् (छिकोड़ खाना, चबाना)	द्रात्., जा-, -आ + वदर (फाड़ना)
वेर्तत् - ववृत् (मोड़ना, लौटाना)	ग्रिजात्, पेरे, -परि + वग्रस् (फाड़खाना)	दुवात्., वि-, -; -वि + व धूम (धौकना, फूकना)
वेशिवात्, प्रे-, -प्र + वविश् (जोड़ना, लटकाना)	गुवित् - वक्षुभ, व खुभ (खोभना, नष्ट करना)	दुनूत्., -वि + व धुन् (धौकना)
विवात्-वभव् (होना, दीर्घ-जीवी होना)	दवात्., - व दा (देना)	येदत्., -वि-, वि + व अर् (खा डालना)
विदत्, प-, -प्र + वविद् (देखना)	दवात्., जा-, -आ + व धा (रखना, सवाल पूछना).	येत्., - व अष (खाना)
विदेत् - वविद् (देखना)	दवात्., प्रो-, -प्र + वदा (बेचना)	येत्., - व अस् (होना, है)
विदनेत् स्या-वविद् + य (दिखाई देना)	दावित्., - व दाव (दाबना)	येखात्., -वएष (हाकना, चढाना, जाना)
विनित्, ओव्-, -अव + वनी (अपराध लगाना)	दावित्, जा-, -आ + व दाव (चढ दौड़ना, चूणं करना, आ दाबना)	झरित्., - व ज्वर (जारना, तलना)
विसत्., पो-, - प + व विश् (लटकाना)	दावित्., प्रो., -प्र + व दाव (दबाना)	झेवत्., - व चवं (चीभना, कूचना जीमना)
वोजित् - ववह (ढोना, लेजाना)	दारित्., पो., -प्र + व दार (देना)	झेल्तेत्., - व हरित (पीला करना, फारसी-जर्दीदन्)
वोजित्, ना-, - ति + व वह (लेजाना)	दारित्. स्या, उ-, -उद् + वदार (मारना, प्रहार करना)	झनिये., परा-, -परा + वजिन (हराना, पराजय करना)
वोचत्, ओत्-, -उत् + ववच् (उत्तर देना)	दात्., - व दा (देना)	झेनित्. (स्या) - व जनो (व्याह करना)
व्रतित्, प्रो-, -प्र + व वर्त (लौटाना)	दात्., पो., -प्र + व दा (भेंट देना)	झच्., - व धक्ष (जलाना)
व्रात्., -वहर, भर (रखना)	दात्. (स्या), जा-, -पा + वघा (रखना)	झीवित्, ओत्- -अव व जीव (मर जाना)
व्रात्., वोज., वि + ववर्त (काटना)	दे (वा) त् - व धा (रखना)	झीवित्., - व जीव (जिलाना)
विसित्, प्रो-, -प्र + वविश् (उठाना)	देल्त्. (स्या) - व दर् (करना)	झिगात्, ओव्- - व अभि
व्यजात् - ववध (बाधना)	देलित्., - व दार् (बाटना)	झिगात्., पेरे-, -प्र व जग (जलाना)
गोवोरित् - वगो (बोलना, फारसी-गोईदन्)	देलयत्., ओत्-, -उद् + वदार (बाटना, अलग करना)	झिनेत्., वि-, -वि व छिद (फसल काटना)
गोरत्., वि-, -वि + वगर् (जलाना)	देस्जात् - व दृह (थाम्हना, रोकना)	झितत्. न, - नि व छिद (फसल काटना)
गोरत्., ना-, - नि + व गर } जलना, नि + वज्वल } गर्म करना	दिरत्., वि-, -वि + व दर् (चीरना, फाड़ना)	झित्., - व जीव (बसना, रहना)
गोरेत् - वगर, वज्वल (जलाना)	दिरत्, प्रो-, -प्र + व दर (चीरना, जीर्ण करना)	झित्., - ओत्-, - -अव व जीव (मर जाना)
ग्रेत् - वगर, वज्वर (गर्म करना)	दोअद्त्. स्या - व दुह् (पाना)	ज्वइवात्, वि., - -वि व ध्वन (घटी बजाना)
ग्रोवित् - वगृभ	दोअद्दित्., - व दुह (बरसना)	ज्वत्., - व ह (पुकारना, - बुलाना)
ग्रोवित्, उ-, -उद् + वगृभ (गार डालना, नष्ट करना)	दोइत् - व दुह (दूध दूहना)	ज्वेनेत् - व ध्वन (घटी
ग्रोजात्., उ-, -उद् + वगर्ह (धम-	द्रात्. (स्या) - व दर् (चीरना,	

वजाना)	कहना, दिखलाना,	लेखात्— व लेट (लेटना,
ज्योमित्—व घटी वजाना)	इगित करना)	विश्राम करना)
ज्वेत् — व जृभ (जभाई	कजन्, ना—नि व कथ (काश)	लेजात्—व लघ (१) चढना,
लेना)	(इगित करना) -	लेजात्-, पेरे.—परि लघ व (चढ
ज्वेन्. पो, ओ —प्र व जह	कजात्, प्रि,—प्र व कथ (काश)	जाना)
(त्यागना, छोड देना)	इगित करना	लेपित् वि.,—वि व लिप
ज्योविवात्., पो,— प्र व	विलकात्., वि,—दि व किलक	(लेपना, चिपकाना)
जृभ (जभाई लेते रहना)	(कुग) (पु कारना)	„ - , जा,—आ व लिप
जेलेनेत् — व हरित (हरा	विलकुनुत्—वि व विलक कुश	(चिपकाना)
होना)	(पुकारना)	लेतात्.— व डय (उडना)
ज्नात् } व ज्ञा (जानना	करत्.— व कार (दड देना)	लिजात्.— व लिह् (चाटना)
ज्नवात्. }	कसी (शी) वत्, प्रिज	लिपात्.— व लिप् (चिपकाना)
ज्नवात् सो,—स व ज्ञा	कृप (पुन रगना, मोमियाना)	लोविजात्.— व लुभ (चूमना)
(पहिचानाना, स्वीकार	कसित्., पेरे-;—परि व	लोवित्.—व लुभ् (लुब्धकी
करना)	कर्प (पुन रगना)	करना, फसाना, आहत
ज्नाकोमित्.— व ज्ञाप् (परिचय	कशात्., उ-;—उत् व कर्प	करना)
कराना)	(सजाना, अलकृत करना)	लोगत्., पो,—प्र व लग्
ज्नामेनोवात् — व ज्ञाप्	क्रिकिवात्., व्स्,—वि व	(रखना, लगाना)
(दिखलाना, सिद्ध करना)	कुश् (चिल्लाना, हल्ला	लोक्षित्. (स्या)— व लोट
ज्नाचित् —व ज्ञा (समझना,	करना)	(लेटना, गिरना)
नेमिक, जताना)	क्रिसात्, व्स्,—वि व कुश	लोपन्. स्या—व लोप (फटना,
ज्नालोतित्. वि,—वि,—व हरित	(चिल्ला उठना)	टूटना)
(सीना लगाना, मुलम्मा	कोपात्.— व कल्प (कापना,	लुपित्., ओत्,— उत् व लोप्
करना)	खोदना)	(मारना)
ज्यध्नुत्—डज्—आ,, व हिम	क्रोडत्.—व कृत् (काटना)	लुचत्., इज्,—आ व
(वर्फ बनना, ठिठुरना)	कुशात्., स्,— स व कृप	रोच् (प्रकाशित होना)
इत्ति—व एत् (जाना,	(तोडना, विचूर्ण करना)	लुचत्, ओत्—अव व रोच्
जाना)	क्रित्—व कृत (ढाकना)	(वहिष्कृत करना)
इकात् — व हिक्क (हिचकी	कुचात्, म्,—म व कुच (यूकना)	लुच्शात्, उस,—उद् रोच्
लेना)	कुचित्, प्रिम्,— प्र व	(धारना, वेहतर बनाना)
इत्ति—व एत् (जाना, जाना,	कुच् (यूकना)	ल्युवित्— व लोभ (प्यार
टहलना)	कुशात्. पो,—प्र व कुश	करना)
वजान् (स्या)—व काश (प्रकट	(कोशिश करना)	ल्युवित्, रज्,—वि व लोभ
होना, जान पडना)	लगात्, ना,—नि व लग	(प्यार करना)
वजान्. विम्,—वि व कथ }	(लगाना)	मजात्., मज्नुत्.— व माप्
वि व काश }	लदत्, ग्,—म व हल्द (ह्ला	(माखना, चुपडना लगाना)
(प्रकट करा)	दित होना)	मजात्, व्,—वि व माप
वजान्. न्—म व कथ (कहना)	ल्गात्—व लग (लेजाना)	(चाटना)
वजिवात्—कथ,	लेगात्—ना,—नि व लग (लेजाना)	मजात्., पो,—प्र व माप
		(तेल लगाना)

मज्जोक., पौ-, -प्रवमार्ज (झाड़ना)	निजि (झि) त्., उ-, -अव नीच (अपमानित करना)	पिलित्.-व पीड (चीरना)
मरत्., वि-; -विमर (घात करना)	निमात्., वि-, -विमनय (ले जाना)	पिलिवात्.-व पीड (चीरना)
मचिवात्., जा-, -वमिह (भिगोना)	निम्., ओव-, वि-; -अभि- विमनय (अपराध लगाना)	पिसात्.-व पिश (लिखना)
मेक्ष (झि)त्., स्., -सव मिप (आख मीचना)	निचतोक्षित्., उ-, -उद्वृद्धिद् (नष्ट करना, बद करना)	पिसिवोत्.-पिश (लिखना)
मेरेत्.-वमर (मरना)	नोस्ति.-व नेष (ले जाना, ढोना) (तेल्.)	पित्.-व पिव (पीना)
मेरेत्. वि-, -विमर् (मर जाना)	नोस्ति., जा-, -आवनेष (लिख छोड़ना)	प्लवात्.-व प्लव (तैरना)
मेरित्.-वमा (नापना)	नोचिवात्.-वनिश् (रात बिताना)	प्लवित्., वि-, -विप्लव (पिघलना)
मेतत्.-वमथ (ढकेलना)	नुदित्., वि-, -विप नुद (वाध्य करना)	प्लिवात्., व्-, -विप्लव (तैरना, नावपर चलना)
मेशिवत्. व्-, -विमिश्र (मिश्रण करना)	नुझदात्., वि-, -विपनुद (वाध्य करना)	पोइत्.-वपिव (मद्यप बनना)
मीलोस्त्.-वमिल (मेल करना, कृपा करना)	पदत्.-वपत (गिरना)	पोल्नोत्.-वपूर्ण (भरा पूरा होना)
मितात्.-वमिष (आख मलकाना)	पदत्., नस्-, -निस्वपत् (गिरना)	पोल्नोत्., निस्-, -विप पूर्ण (भरना)
मिगनुत्.-वमिष (आख मलकाना)	पदत्. व्स-, -सवपत (एक समय एक स्थान में होना)	पोल्नित्., वि-, -विपपूर्ण (पूरा करना)
मिरत्., वि-, -विमर (मर जाना)	पइवात्. व्स-, -विपपा य (पिलाना, पोषण करना)	पोतेत्., व्-, -विपपोन (पसीने में नहाना विपस्विद्)
मनुत्.-वमनु (सोचना, मनन करना)	पेइवान् पेरे-, -परिपपाय (मद्यपान में अति करना)	पोचितात्.-वपूज (समान करना)
मोकात्. वि-, -विपमुच् (निकल जाना)	पेरेनिये—पलायना (भागना)	प्रशिवात्., वि-, -विप पृच्छ (पूछना)
मोलोत्.-वमदं (घिसना, मलना)	पास्त्.-वपा (पास्तुख मेषपाल)	प्रियुतित्. (स्या)-व प्रिय (?) (शरण देना व पाना)
मोरित्.-वमर (हत्या करना, भूखा मरना)	पास्त्.-वपत (गिरना)	प्रोसित-व पृच्छ (पूछना, मागना)
मोचित्.-वमेह (भिगोना)	पेकात्., दो-, -आवपच् (पकाना)	प्रोप्तत्., वो-, -विपपृच्छ (पूछना)
मि(वा) त्.-वमोना (घोना)	पेच्.-वपच् (पकाना, तलना, भूजना)	पुखात्., ना-, -निपपुष् (फूल जाना)
नामेकात्.-वनाम (इंगित करना)	पिवात्. जा-, -आवपिव् (पीना)	पुखात्., प्रि-, -प्रवपुष् (फूल जाना)
नशिवात् जा-, -आवनश् (जीर्ण करना)	पिवात् वि-, -विपपिव (पीना)	पिशात्.-व पिश (दहकना)
निजात्.-वनह (बाधना, सूत पिरोना)		रादोवात्.-वलाद (आदादित होना)
		रादोवात्. स्या, वेच्-, -विप हलाद
		रजात्., ओत्-, -आ व राज

दपणमे प्रतिविवित होना)  
 रनत्.—४ रण (घायल करना)  
 रस्ति—४ रोह (रोहण करना,  
 बढना, फारसी-रोईदन)  
 रेवेत्.—४ रव (गोर करना)  
 रेजत्, रेजिवात्.—४ रिह  
 (काटना, फारसी रेजीदन्)  
 रेजिवात्, प्रि—प्र४रिह  
 (मारना, जोडना)  
 रेझात् स्या, जा—, आ४रेच  
 (तोडना)  
 रोदित्. स्या—४रोव, रोह  
 (जन्माना)  
 रोझात्.—४रोव, रोह  
 (जन्माना)  
 रोझदात् —४गेव, रोह  
 (जन्माना)  
 रोझित् —४रोह (जन्माना)  
 रगात्., वि—, वि४रिगि—  
 (रिगाना, फटकारना)  
 रगात्. ओव्—, अभि४रिगि  
 (रिगाना, फटकारना)  
 रवात् जा—, —आ४रुम, ४  
 लभ (कृल्हाडेसे गडना  
 काटना)  
 रवान्, पे रे—, परि४लभ  
 (काटना, मारना)  
 रवान् पो—, प्र४सभ (चीर  
 डलना)  
 रिवात्.—नञ्—४रुद (मिसकी  
 भरना)  
 मदिन् —४मीद् (बैठना,  
 मादी=अमवार)  
 मदिन्.व्,—वि४मीद  
 (भीतर घाव करना)  
 स्वेतन्.—४श्वेत (प्रका-  
 शित होना)  
 „, जो—, —आ४श्वेत  
 (प्रकाशित करना)  
 स्वेनिन् —४द्वेत (प्रकाशित  
 करना)

सेदेत्. — ४श्वेत (वाल  
 सफेद होना)  
 सिदेत्.— ४सीद (बैठना)  
 स्लवित्.— ४श्रव (यश  
 गाना)  
 स्लुझित्.—४श्रुप (सेवा करना,  
 काम करना)  
 स्लुशत् —४श्रुप (काम करना)  
 स्मेनिवात्. ओ—, —आ ४  
 स्मय (परिहास करना)  
 स्मेखात् स्या, ना, — न ४  
 स्मय (परिहास  
 करना)  
 स्मेशित्., पो—, —प्र४  
 स्मय (हसाना)  
 स्मेयात्. स्या— ४स्मय (हसना)  
 सोसात् — ४चूप (चूसना)  
 सोखनुत् — ४शुप (सूखना)  
 स्मात् पो—, —प्र४स्वप  
 (थोडा सोना)  
 स्तावित्, पो—, —प्र४स्थाप  
 (रखना, स्थापित  
 करना)  
 स्तानोवित् —४स्थान  
 (रखना, स्थापित करना)  
 स्तोइत् —४स्था (आना)  
 स्तोयात्, पो—, —प्र४स्था  
 (खडा होना)  
 सुखनुत्., पो—, —प्र४  
 शुप (सूखना, पो—मुखी  
 —स्थल से)  
 सुगात्., डम्—, —आ४शुप  
 (सूखना)  
 मुशि (वा) त्.— ४शुप  
 (सूखना)  
 मुशि, पे रे—, —प्र४शुप (बहुत  
 सूखना)  
 निपान्., पो—, —प्र४स्वप  
 (पूरा सोना)  
 निघात्., वि—, —वि४ शुप  
 (अति सूखना)

स्यकात्.— ४सैंक (सूख  
 जाना)  
 सइ (वा) त्.—४ताय  
 (छिपाना, त्राण देना)  
 तल्किवात्. — ४तर्क  
 (हिलाना)  
 तल्किवात्., प्रो—, —प्र ४तर्क  
 (ढकेलना)  
 तेम्नेत् ४तम्—  
 (अवकार करना). —४  
 तेप्लेत्. ४तप (गर्म होना)  
 तेजत्.—४तर्ज (चीरना, खडन  
 करना)  
 तेरेत्. स्या, वि—, —वि—४तिर  
 (खतम करना, सुखाना)  
 तेस्त्.— ४तक्ष (काटना)  
 तेस्नित्.—४तीक्ष्ण  
 (दवाना, गालना)  
 त्योसिवात्., वि—, — वि४  
 तक्ष (आकार गडना)  
 तिरात्., वि—, —वि ४तीर  
 (पोछना, सुखाना)  
 तिरत्, स्या, स, —स  
 तीर (भाग जाना)  
 तिखात्. स्—, —स४तुप्  
 (शात होना)  
 तोपित्.—४तप (गर्म करना,  
 पिघलाना)  
 नोपिन्., जा—, —आ ४तोप  
 (जहाज डुबाना)  
 तोप् (तिव) त्. वि—, —वि४  
 दव (दावना, रौंदना)  
 तोपित्.— ४तक्ष (घिसना  
 तेज करना)  
 त्रशित्., स्—, —स४त्रस  
 (डराना, खतरा मानना)  
 त्रिगत, सोस्—, स ४  
 तृह (काटना)  
 त्रुमित्.— ४त्रस (भय खाना)  
 त्र्यसत्., — वि—, —वि ४त्रस  
 (हिलाना)

श्रुत्, पो-,-वप्रस  
(हिलाना)  
श्रुस्ति— वप्रस (हिलाना,  
डुलाना)  
श्रुख (खिवा), त्.,-,-वि  
व त्रास् (हिला डालना)  
श्रुख, पो-,-प्रवत्रास्  
(हिला डालना)  
तुमेन्त्.स्या, जा-आवतम  
(मध्यम पडना,  
भोथा होना, मद पडना)  
तुपित्., पो-,-प्रवतुप्  
(गिरना)  
तुपित्, प्रि-,-प्रवतुप्  
(गिरना)  
तुशित्., -जा-आवतुप्  
(बुझना, शनै चला जाना)  
तुसित्.पो-,-प्रवतुप्  
(बुझाना, शनै चला जाना)  
तिकात्.— टिक,वटिकना,  
घुसेडना)  
त्वनुत्.-वतनु (खीचना,  
तानना)  
उचित्.-व वच (सीखना,  
सिखाना)  
खलित्.-व स्वर् (प्रशसा  
करना, )  
खोदित्.-,-विवसिद्  
(चला जाना)  
चोत्., नेपेरे-,-नि प्रव  
चित (गिनना, बतलाना)  
चिनिन्त्.-व चिन् (मरम्मत  
करना, पेबद लगाना)  
चितात्.-वचित (पडना)  
चितात्.,पो-,-प्र व चित  
(पडना)  
चिनिवात्. वस-,-विसव  
चित (गिनना)  
चिखात्.-व छिक्क (छीकना)  
चमकान्.-व चुम्ब (चूमना)

शेतात्.-व शप (फुसफुसाना)  
शिवात्, वून-,-वि व सीव  
(सीना)  
शित्., व्-,-वि व सीव  
(सीना)  
श्चुपात्., वि-,-वि व छुप  
(छूना) स्पर्श करना,  
श्चुपात्., ना-,- नि व छुप्  
(छूकर पता लगाना,  
चिकोटी काटना)  
युचित्, वि-,- वि व युज  
(लादना)

#### (५) प्रत्यय-सूची

अत्— ति (वेगत्.)  
अवत् — ति (दवात् )  
इइ—इन् (वेज्जरोगिइ)  
इक् —इक (स्तोलिक्)  
इकिइ—इक (वेलिइकिइ)  
इको—इक (लिचिको)  
इज्जन्—(क्रिविज्जन्)  
इक्क—इक (पित्चका)  
इत्—थ (स्कजीते)  
इत्—ति (वित्)  
इत्सा—ता (वेस्-सोन्नि-  
त्सा=नि स्वप्नता)  
इत्सा—इका (वर्नित्सा-  
मदिर निर्माणागार)  
इत्सा—इक (देवित्सा=देविका)  
इत्मा—इक (बोदित्सा)  
इना—इनी (ग्लुवीना=गभी-  
रिणी, ज्वेरिना)  
इन्या—इनी (वोगिन्या=  
भगिनी, भगवती)  
इम्—म (वीदिम्, विद्म)  
इये—इय (वेस्स्लाविये)  
इवत्—ति (पिलिवत्=पीड-  
यति)  
इवोस्त्.—त्व (इयिवोस्त्=  
क्रीडित्व)

इशिइ—इयस् (निझाइ  
शिइ=नीचीयस्)  
इश्—सि, से (वीदिश्=  
वीक्षसे)  
इश्चा—इका (रचिश्चा,अगु-  
लिका)  
इश्चे—इक (दोमिश्चेदमिक)  
इश्चे—(झिलिश्चे=जीव,  
वास-गृह)  
ईइ—इन् (वेज्-ग्लाविइ=  
वि-ग्रीवी)  
ईइ—इय (ज्वनिइ=ध्वनीय)  
ईत्—त (वित्.)  
ईन्का—इनिका (प्रोस्तिन्का)  
ईलो—(विलो=भइल)  
ईवत्.— ति (विवत्.)  
ईश्को—इक (पेरिश्को)  
उ—मि-(बुदु=भवामि)  
उत्—न्ति (इदुत्=यन्ति)  
उत् —(नावेर्नुत्.)  
उन्—आन (वेगन्)  
उश्का—उका (वेतुश्का=  
वर्तुंका, चकरी)  
देवुश्का=देविका, वच्ची)  
(देरेवुश्का)  
उश्चिइ—इय (वुदुश्चिइ=  
भविष्य)  
उश्चिइ—न्त् (झिवश्चिइ,जीवन्  
उश्चिइ—वान् (वेतुश्चिइ,=  
विद्वान्)  
ओइ—इय (जेम्नोइ, मीय)  
ओक्—क (वेतेरोक्=वातक)  
(वोजोक्=वाहक, गाडी)  
ओक्.—क (गोलोत्तोक् )  
ओचेक्—(ओगोन्योचेक् =  
अगिया)  
ओच्का—का (त्सेपोच्का=  
टोपिया, देवोच्का, देविका=  
कुमारी)  
ओता—इमा, ता (चेर्नाता=  
कालिमा)



ओत्न्या—त्नु, (वेगोत्न्या)  
ओनोक्—क (वोव्चोनोक्=  
वृकक)

ओवानिये ना (जिमोवानिये,  
हिमना)

ओव्—ईय (इवानोव,  
इवानीय)

ओन्नया—नीय (वोल्तोन्न्या)

ओस्त्.—त्व (स्वेज्ञोस्त्,  
ज्नामेनिमोस्त्.=ज्ञातत्व)

किइ—कीय (त्रात्स्किइ=  
भ्रातीय)

(गोर.किइ=कटुकीय)

का—का (वोस्का=वाहक,  
डोना) (गोदात्का=गदका,  
जोतिस) (ओव्शिक्का—भूल)  
(ब्ल्यश्का)

को—क (उश्को=कनवा)

गा—या (विस्लुगा=विश्रूपा,  
सेवा)

ग्दा—दा (ब्लेग्दा=सदा)

चा—य (दाचा=देय)

चिइ—(गोर्याचिइ=गरम)

च्—क (वोगाच्=भगक, घनी)

चिक्—क (श्चेक्चिक=जीवक,  
जीव)

चिक्—क (म्लादेन्चिक्.)

चाता—ता (देव्चाता=देवता,  
तरणी)

चन्—आलु (वोदाचन्=  
गयालु)

ज्दि—धा (द्वाज्दि=द्विधा)

ता—ना (पोल्नोता=पूर्णता)

ति—नि (इद्ति=एति)

तिये—ना (वेन्-मैतिये=

विमृन्युना)

निइ—नीय (पोल्तिइ=  
वोल्लनीय, वो रुक्कड)

तून्— (वोल्तून्— वोल-  
क्कड)

तेई—तीय (वोगातेई=भगीतीय  
घनी)

तेल्—तर् (वेस्सोज्नोतेल् वि=  
विसज्ञातर्, अज्ञानी)

त्—ति (इकात्=हिक्कति,  
हिचकी मारता है)

त्लिइ—त्नु (प्रियत्लिइ=प्रिय-  
त्नु प्रिय)

तोये—त्नु (शिवोल्नोय=  
जीवत्नु जीव)

त्से—इक (ब्ल्युद्-त्से)

त्सो—व (पिस् मेत्सो)

(ओजोर्त्सो)

(देरेव्त्सो)

निक्—इक् (वोद्निक=उद-  
किक)

(व्साद्निक=सादिन्)

(द्वोर्निक=दीवारिक)

(जेम्ल्यानिका=ज्मालिका)

नो—(स्व्याज्नो)

नोइ—(द्वेर्नोइ)

नोस्—(चेस्त नोस्.)

न्—न (दान्.=दान, भेंट,  
(पोलन=पूर्ण)

न्का—क (जेम्ल्यान्का)

न्या.—(रेज्न्या)

वा—(प्ल्वा)

(खुदोवा)

मोस्त्.— (द्विजिमोस्त्, =  
वेजनीय)

(ज्नामेनिमोस्त् =ज्ञातत्व)

यान्—ति (देल्यात्, =दारयति)

यानि—इन् (द्वोर्यानि,=  
द्वारिन्, वावू)

यानिये—ईय (दयानिये

दानीय)

युत्—न्ति

येचुक्—इका (दोश्का=  
छोटी मेज)

येचको—इका (कोल्येचको=  
कुइया, कूपिका)

ते—य (स्कजीते=कथयय)

येत्.—(वेग्लेत्)

येत्स्.—(उरोदेत्स्)

येत्सो—(पिम्-मेत्सो)

येद्—(मेद्वेद्=मध्वद)

येनिक्—इक (उचेनिक्=वाचक)

येनिये—(स्लुश्चे निये=श्रूषणा)

यम्—आम

येल्—इल (नावेलो=नाविल)

येश्—सि (देलयेश्)

येत्स्.—त्व (स्वेज्ञयेत्स्.)

योक्—क (ओगोन्योक् अग्निक)

योश्—क (ग्रब्योश्=ग्राभक,  
लुटेरा)

र्—र (ग्लवार्=ग्रीवार, नेता)

र्—न (दार=दान)

लो—न (नगेलो=नग्न)

ल्या—ना (लोब्ल्या=लोभना),  
आखेट)

वा—का (क्रनावा खनुवा=खाड)

वानिये—ना (जिमोवानिये=  
हिमना)

विइ—वीक (मेदोविइ=माध्वीक,  
अमृत-जैसा)

वोस्त्.—(लुकावोस्त्.)

शिइ—श (वोल्. शिइ=भूरिश)

शे—श (वोल्शे=भूरिश,  
बेहतर)

शोइ—श (वोल्शोइ=भूरिश)

शोन—ईय (नगिशोन=नगनीय,  
अतिनग्न)

स्त्विये—त्व (देइस्त्विये)

स्त्वो—त्व (वेगस्त्वो=भगेलुत्व)

स्या—य (आत्मनेपदी, भावार्थ)

(६) उच्चारण-परिवर्तन

संस्कृत-रुसी उदाहरण	च	पोचितात्-पूजति	द	व्दोवा-विधैवा
अ अ, (निषेधार्थ)	ज	निजु-नीचे येठझ		देयातेल्.- धातर
अ ओ, ओस्. (अक्ष)ओगोन्	झ	निझो-नीचै		(नेता)
आ जा, जाशिवात्=आसी-व्यति		निझात्.-नीचयति	न न, तोन्किइ--तनुका	
या याववित्. स्या	स	प्रिपासी-प्रपाच		प्रेस बा--प्रश्न
उ वो,वोदा-उद		(भोजन-सामग्री)	प प, पतात्.--पतरा	
ओ ओवे-उभे		सोरोक-चत्वारिंश		पास्तुख्-पातुक
(ॐ आल्) शकाल-श्रगाल,	छ च	कुचा-गुच्छ		पिसात्.--पिशति
ओल् वोल्क-वूक थर् क	झ	झेवात्-छीवति	फ प पल्का--फलक	
येर् देरझात-दृ हति		(चवाना)		(लकडी)
येल् क्षितेल्-जीवित्	श	प्रशिवात्.-पृच्छति	व व	
योर् म्योर्त्विइ-मृत्यु	स	प्रोसित्.-पृच्छति	भ व वोल्-शोइ--भूरिश	
र् ग्रबित्-गृभीति	ज	गद वेग-वेज	अव्त्का--अभ्रक	
रि क्ति-कृत्ति		गोरात्.-ज्वलति	ब्रात्--भ्रात	
रु रुसिइ-रुषि, ऋचि	ज	वेर्योजा-भूर्ज	ब्रोवि--भ्र	
स्नुन-तृण		प्रिज्नाक-प्रिज्ञानक	म म, म्यासी--मास	
रे रेव्योनोक्-रभुक छझ		जेम्ल्या-ज्मला	य य युनोस्त्--युवन	
रो प्रोसित्.-पृच्छति	झ	झार-ज्वर	र र, ब्रात्--भ्रात	
क को कोग्दा-कदा		पोझार-प्रज्वाल	ल लुच्--रोविप्	
कओरिह-कतर		झेना-जनि	पोल्नो--पूर्ण	
ग क, शकाल-श्रगाल	द	पोवेदा-प्रविजय	व व, इवा--इव	
इग्रोषित्.-कुष्यति	ट	झ लेझात्.-छेटति	ओओरोत्--अववर्त	
क चेरेप्-कर्प		पोलझित्.-प्र-लेट	वेज्--वि (विना)	
क्ष स, ओस्.-अक्ष	ड ल,	लेतात्-डयति	व वोज्--वह	
च, झेच्-घक्ष		पीला-पीडा (आरा)	श च, नोच्.-निश्	
क्षु खु, खुदेत्.-क्षुदति	ढ ल	पोलोत्.- (लोढना)	श ख, खोलोदे--शरद	
खुदोइ-क्षुद्र	ण न	पोल्नो-पूर्ण	श शकाल--श्रगाल	
ख क, कुसात्.-खु सति	त त	स्त्राख-त्रास	च मेशात्--मिश्रयति	
स, रिसोवात्.-लिखति		द पदात्.-पतति	स देस्यत्--दश न् (दस)	
ग क, ऋस्त्.-ग्रसति		न जेलेन्-हरति	मुखात्--शुष्यति	
ग ग्रिवा--ग्रीवा	ज	इज्-अत्	सोवाक--श्वक	
ग्लोतात्.-गिलति	द झ,	झेच्-दह	स्वेकोर--श्वसुर	
नगोइ-नग्न		सझात्-सादयति	ख सिखात्.-शुष्यति	
झ वेझात्-वेग		द द्रोवा-दाह शिझ	सुखोइ--शुष्क (सूखा)	
दोझ्द.-दोग्ध		दोल्शे-द्राघीय	ज,	
द् प्रेद्-प्राग्		दोलिना-द्रोणी	झ कोझो-कोप (चर्म)	
घ ग दोल्गिइ-दीर्घ	घ ज,	ज्वान्-ध्वन	श स्नुशत्.-श्रूपति	
ज लजित्.-लघति		झ मेझदु-मध्य	स स सझ्दात्--सदयति	
च क प्रेदकी-प्राच् (पूर्वज)		रोझात्.-रोधति	सेव्या-स्वीय	

ह शिवात्-सीव्यति  
नश्-नम्

ह ओ, ओलेन्-हरिण फा

ख स्मेखात्-मेहनि

ह ग, स्नेग्-स्नेह

ज जिमा-हिम

वोच्-वह

झ देरजात्-दहति

झ-हि

द पोरोदो-प्ररोह (घ)

### (७) सामाजिक विश्लेषण

संस्कृत रूपी उभयभाषाओं में एक से मिलनेवाले शब्दों के तुलनात्मक विश्लेषण से तत्कालीन सामाजिक विकास पर भी बहुत प्रकाश पड़ता है। “वील्तात्” (वीलना), “दव्ल्यात्” (दावना)-जैसे शब्द बतलाते हैं, कि कितने ही संस्कृतमें अप्रसिद्ध किंतु प्राकृत, अप्रभ्र श तथा आधुनिक भाषाओंमें प्रचलित शब्द अपनी जड़ बहुत दूर आर्य-शक कालमें रखते हैं। इसी तरह छीकना-खासना जैसे अनु-करणात्मक शब्द उसी समयमें पहुंचते हैं। यहाँ हम इन शब्दोंके आधारपर यह बतलाना चाहते हैं, कि उस कालमें जबकि आर्य और ‘शक’ अपने मूल-निवासमें अलग-अलग हुए, उनका सामाजिक विकास कहा तक हुआ था। इसके लिए हम शब्दोंका यहाँ वर्गीकरण करते हैं।

भूमि वर्ग	नभ-वर्ग	ओलेन्-हरिण
जेम्ल्या-उमा (भूमि)	स्वेख्-स्वर्ग (ऊपर)	शकाल-शृगाल
पुत्-पय (मार्ग)	नेवो-नभस् (आकाश)	मेद्वेद्-मध्वद (भालू)
गोरा (गरा)-गिरि	ओव्लका-अभ्र (बादल)	मिश्-मूप
दोलिना (दलिना)-	मोल्न्त्मे-सूर्य	ओखोता-आखेट
द्रोणी (डून)	मोल्निया-मालिनी	ओवेन्-ओव्का, अवि (भेड़)
कामेन्-अश्मन् (पत्थर)	(विजली)	गोव्य-(द्व्या)-गो (अदनीय)
उदक वर्ग	काल-वर्ग	वोल्-वैल
वोदा (वदा)-उद (पानी)	देन्-दिन	वोल्क-वृक (भेड़िया)
वोद्का-उदक (गराव)	नोच्-निशा	शस्त्र-वर्ग
पेना-फेन	मेस्यत्-माम	पाल्का-फलक (डंडा)
स्नेग्-स्नेह (हिम)	लेन्-झतु (वर्ष)	ओप्.-अक्ष (धुरा)
ल्योद्-रोधम् (वर्ष, फारसी- रुद नदी)	वेस्ना-वसत	इगो-युग (जुआ)
अग्नि वर्ग	वृक्ष वर्ग	पात्र-वर्ग
ओगोन्-अग्नि	देरेवो-दार (वृक्ष)	कुवोक्-कूपक (प्याला)
उगार्-अगार	द्रोवा-दाह (ई बन)	कुव्शिइ-कृपिका (लोटा)
उगोल्-अगार	वेर्योजा-भुज (भोजपत्र वृक्ष)	चश-चपक (प्याला)
शार-ज्वाल (ताप)	शवा-नृण	चश्का-चपक (प्याला)
शाग-ज्वाह	पशु-वर्ग	आहार-वर्ग
तेन्नो-तम (अपेरा)	सिवोन्नोये-जीवन्, जतु	एदा-अद (भोजन)
तुमान्-यम (धुआ, कुहग)	(प्राणी)	एदोक्-अत्ता (भक्षक)
दिम्-धूम	पेम्.-पशु	सूप-सूप (मांसरस)
वायु-वर्ग	रोग्-शृ ग	म्यामो-माम
वेनेर्-वात (फारसी, वाद)	मोवाका-श्वक (कुत्ता)	क्रोव्-नव्य (सधिर)
		भ्योद्-मधु (शहद)

पीवो-(पीवा)-पेय  
(हल्की शराब)

### वस्त्रवर्ग

कोझा-कोष (चमड़ा)  
नगीइ-नग्न (नंगा)  
नगोला-नग्नल (नंगा)  
शिवात्.-सीवन  
शित्.-सीवन  
ओदेवात्.स्या-अधिवास  
(पहनना)

### शरीराग-वर्ग

ग्रिवा-ग्रीवा (गर्दन)  
गल-गाल  
गोलोवा-गाल (शिर)  
गोलो-गल (कठ)  
गलवा-गल (शिर)  
गलोत्का-गल (शिर)  
चरेप्-कर्पर (कपाल)  
वोलोस्-वाल (केश)  
ब्रोवि-भ्रू (भौ)  
नोस्-नासा (नाक)  
जुब्-जिह्वा (दात)  
ओचे-अक्षि (आख)  
पा-पाद (चरण)  
पाइ-पाद (भाग)  
पोद् (व्यङ्का)-पाद-  
(बधक)

बोक्-वक्ष (पाश्वर्)  
सेर्दत्स-हृद् (हृदय)  
क्रोव्.-क्रव्य (सधिर)  
पेरो-पक्ष (फारसी, पर)  
रेच्-ऋक् (भाषा)

### सवधि वर्ग

मात्-मातृ (मा)  
ब्रात्-भ्रातृ (भाई)  
सेस्त्रा-स्वसृ (बहिन)  
सिन्-सूनु (पुत्र)  
दोच्-दुहितृ (बेटी)  
देवा-देवी (कुमारी)  
देव्का-देवी (कुमारी)  
देवोच्का-देविका (बालिका)  
देवुस्का-देविका (कुमारी)

ज्यात्-जामातृ  
स्नोखा-स्नुषा (पुत्र-वधू)  
स्वेकोर-स्वशुर (ससुर)  
स्वेक्रोवि-स्वश्रु (सास)  
झेना-जनि (स्त्री)  
व्दोवा-विधवा  
देवेर्-देवर  
द्याद्या-दादा (चचा)  
देद्-दादा (पितामह)  
प्रेदेद्-परदादा  
प्रियातेल्-प्रिय (मित्र)

### व्यवसाय-वर्ग

ओखोता-आखेट  
लोवुश्चा-लुब्धका (जालक)  
लोव्चिइ-लुब्धक (शिकारी)  
राना-रण (घाव)  
पस्तुख-पातुक (मेपपाल)

### वर्ण और धातु

जलातो-हरित (सोना)  
जोलोता-हरित (सोना)  
जेल्योनिइ-हिरण्य (हरा)  
जेलेन.-हरित (=हार)

ज्योल्तिइ-हरित (पीला,  
फारसी-जर्द)  
स्वेत-श्वेत (प्रकाश)  
सेद्रोइ-श्वेत (सफेद बाल)  
त्स्वेत्-श्वेत (रंग)

### धर्म-वर्ग

वोग्-भग (भगवान)  
वोगिनिया-भगिनी (भगवती)  
पोचितिये-पूजा (पूजना)

### संख्या-वर्ग

एझे-एक = एझे (गोद् नि,  
एकवापिकी)  
द्वा-दो  
त्रि-त्रीणि (तीन)  
चेतिरे-चत्वारि (चार)  
प्येत्.-पच  
शेस्-षप् (छ)  
सम्-सप्त (सात)  
वोसेम्-अष्ट (आठ)  
देस्यत्-दश (दस)  
सोत्-शत (सौ)  
स्तो-शत (भौ)

### गृह-वर्ग

दिरा-दरि (छेद, गड्ढा)  
दोम् (दम)-दम (गृह)  
द्वेर्.-द्वार  
द्वोर्-द्वार (आगन)  
जाल-शाल  
जाला-शाला  
शलश्-शाला

उस समय के शब्दकोशमें किसी अनाजका नाम नहीं आया है, न कृषि-सवधि ही कोई शब्द है-इगो (युग) है, किंतु वह आरम्भमें जोडे (युगल)के अर्थमें रहा। इससे सूचित होता है, कि अभी लोग कृषिकी अवस्थामें नहीं पहुँचे थे। हिंदी और ईरानी आर्य एक जनके रूपमें रहते समय कृषि से परचित्ति थे, क्योंकि जौ, गोधूम, माप (उडद)-जैसे धान्यवाची शब्द दोनोंके शब्दकोशोंमें मौजूद हैं। गाय, भेड (अवि)-जैसे शब्द आर्य-शक शब्दावली के हैं, किंतु दूधके लिए समान शब्दका अभाव है, हालांकि आर्य-शब्दावलीमें क्षीर (संस्कृत), शीर (फारसी) मौजूद है। इससे जान पड़ता है, कि यदि वे पशुपालक थे तो भी कम-से-कम क्षीरके उपयोगके लिये पशुओंका पालन आरम्भ नहीं हुआ था।

धातुओं और वर्णोंके वाचक शब्दोंकी जिस प्रकारकी अनिश्चितता और व्यवस्था है, उससे जान पड़ता है, कि अभी धातुओंसे उनका परिचय न था।

हथियारोंपर विचारनेसे जान पड़ता है, उनके पास काष्ठ और पीषाणके हथियार थे, और ऐसे हथियारोंके गढ़नेके लिये “तक्ष” धातुका प्रयोग होता था। पीछे हम “तक्ष” को संस्कृतमें जहाँ काठ गढ़नेके लिये रूढ़ पाते हैं, वहाँ रूसी “तेसात्” और “त्योसिवात्” पत्थरके गढ़नेमें रूढ़ पाया जाता है।

सब देखनेसे पता लगता है, कि जिस समय आर्य और शक पृथक् जन (कबीले)के रूपमें परिणत हुए, उस समय वह अभी कृषि और धातु से अपरिचित थे। शिकार (आखेट)के अतिरिक्त वह पशु पालन शायद ही जानते थे, जिसमें श्वक(कुत्ता)उनका अवश्य सहायक था। यह युग मध्य पीषाण या आरम्भिक नवपाषाण- युग रहा होगा। वह अपने निवासस्थानों को दम (दोम) कहते थे, जो प्रायः पर्वत की दरि (गुह) हुआ करते थे। द्वार गुहाके द्वार और आगन दोनोंके लिये प्रयुक्त होता था। दारु, अश्म और अस्थि के हथियारों वाले इन दरी-निवासियों को अग्निकी सहायता मिल चुकी थी, और इसकी मददसे अपना त्राण और भक्षण प्राप्त करते थे। सरदीसे बचनेके लिये अभी वह सलोम चमड़े (कोझा)का व्यवहार करते थे, जिसे हड्डीकी सूइयोंसे सी भी लेते थे—ऊनी कपड़ा अभी उन्हें मालूम न था। मांस उनका प्रधान भोजन था, जिसका वह पचन करके सूप भी बनाते थे, जिसका अर्थ है, किसी प्रकारका मिट्टी का बर्तन वह बना सकते थे। जगली मधु उनका प्रिय भोजन था।

रुधिर-संवधियोंमें नाता दूरतक चला गया था। मा, भाई-बहिन, बेटा-बेटी, देवर और विधवा ही नहीं स्नुषा (पुत्रवधू), ससुर और सास से भी परिचित थे, इससे यह भी स्पष्ट है, कि समाज मातृ-सत्ताक नहीं पितृसत्ताक था। दम केवल घरके लिए ही नहीं परिवार और जनके लिए भी प्रयुक्त होता था, जिसका अविपत्ति दमक (दाइका) भी कहा जाता था। यही राजवाची शब्द दामाके नामसे पीछे के शकों में राजाके लिये व्यवहृत होने लगा था।

आर्य-शक जनमें देवता (भग)का विचार आ चुका था। यह देवता अधिकतर सूर्य, अग्नि, जैसे प्रत्यक्ष देवता थे।

## परिशिष्ट २

### स्रोत ग्रंथ (१)

(भाग १ से भाग २ तककी छूट)

#### भाग १ अध्याय ५

१. जामेउत्तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७-१३१७ ई०)
२. स्वीनिक मतेरिअलोक अत्नोस्यरिचस्स्या क् इस्तोरिइ जोल्तोइ ओर्दी (लेनिनग्राद १९४१)
३. History of Mangols, 3 Vols : H. H. Howarth (London 1876-88)
४. जुब्दतुत्-तवारीख हाफिज अवरू (१२२६-८३ ई०, अनुवादक के० एम० मैत्रा, लाहौर)
५. तारीख जहागुशा अलाउद्दीन अता मेलिक जुवैनी
६. तवकाते-नासिरी अबू-उमर मिनहाजुद्दीन उस्मान जुजजानी (११९३-१२०० ई०)
७. युआन् चाउ बि शि (१२४० ई०, संपादक ग० अ० कोजिन, लेनिनग्राद १९४१)
८. सलजूकनामा, नासिरुद्दीन यहिया इब्न वीवी (१२८२-८५ ई०)
९. जफरनामा निजामुद्दीन शामी (१३९२-१४०० ई०)
१०. शज्रतुल-अत्राक
११. ज़ोलोतया ओर्दा : अ० यु० याकुबोव्स्की
१२. Geschichte des goldeners Horde in Kiptchak · Hammer-Purgstall (Budapest 1840)

#### भाग १ अध्याय ३

१. जामेउत्त-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७-१३१७ ई०)
२. History of Mangols . H. H. Howarth
३. असहू-हूत्-तवारीख अनोनेम इस्कदर
४. तवारीख जहागुशा जुवैनी

#### भाग १ अध्याय ४

##### क सिय और स्लाव

१. एल्लिन्स्त्वो इ इरान्स्त्वो ना युगे रोस्सिइ . म० इ० रोस्तोव्स्सेफ (पेत्रोग्राद १९१८)
२. Les Sycthes F. Bergmann (Halles 1860)
३. ओव्स्जोवानिये द्रेन्ने रुस्स्कओ गसुदास्त्वा : व० ग० माव्रोदिन (लेनिनग्राद १९४५)
४. स्लाव्याने द्रव्गोस्ती न० स० दे. रज़ाविन (मास्को १९४५)
५. On the Origin of the Antae : George Bernadsky (Journal of American Oriental Society Vol 59, PP. 56- 64)

##### ख. सिय सरमात

६. प्लेमैना येवरोपेइस्कोइ सरमातिइ . अ० द० उदाल्त्सोफे, सोवियेत्स्कया एत्नाग्राफिया १९४६।२५० ४१-५०

७. मतेरिअली क् व्से सो युज्जोमु अखँआलोगिचेस्केम सोवैश्चन्यो (मास्को १९४५)
८. स्लाव्यान्स्कोये यजीकोज्जानिये अ० म० सेलिश्चेफ (लेनिन० १९४१)
९. इस्तोरिया वोल्गाइरिड न० स० देर्झाविन् (लेनिन० १९४६)
१०. इस्तोरिचेस्कया ग्योग्राफिया . स० म० सेरेदोन (पीतरवुर्ग १९२६)
११. एन्सिक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया दू० व० यागिचा (पीतरवुर्ग १९०९)

### ग. कियेफ रूस

१२. कियेव्स्कया रूस व० अ० ग्रेकोफ (मास्को १९४४)
१३. प्रोइस्खोज्जेनिये रूस्कओ नरोदा : न० स० देर्झाविन् (मास्को १९४४)
१४. वोर्वा रूसि जा सोज्दानिये वयेवो गमुदास्त्वा व० अ० ग्रेकोफ (मास्को १९४५)
१५. इस्तोरिया रोस्सिड (चित्रमय)
१६. इस्तोरिया रूस्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद १९४१)
१७. Histoire de Russie N Brian Chamnor (Paris 1929)
१८. स्लवो ओ पोलकु इगोरयेवे (व्याख्या) : अ० स० ओर्लोफ (मास्को १९४६)
१९. „ „ (मूल) लेनिनग्राद १९४५)
२०. La Lithuanie Michel Pietiewicz (Bruxelles 1832)
२१. History of U S S R. 3 Vols (Moscow)
२२. Histoire de l' Empire Byzantin . Ch Dihl (Paris 1919)
२३. कियेव्स्कया रूस एम्० सी० गुशेव्स्की
२४. द्रेव्नेइशये अरव्स्कीये इज्वेस्तिये ओ कियेवे . अ० य० गर्कावी
२५. इज्वेस्तिया ओ खजाराख वुर्तासाख' बोलगराख, मद्याराख, स्लाव्यानाख इ रस्साख :  
अव्अली अहमद विन्-उमर इव्न-दस्त

### भाग २ अध्याय १

१. जामेज्जु-तवारीख रशीदुद्दीन (१२४७-१३१७ ई०)
२. तवारीख वस्साफ शिहाबुद्दीन, अब्दुल्ला वस्साफ हजरत (१३००-२४ ई०)
३. History of Bokhara Arminius Vambery (London 1873)
४. Heart of Asia : E D Ross (London 1899)
५. History Mongol H H Howarth
६. ओचेर्क स्तोरिड सेमिरेच्या व वतौल्द (वेर्नी १८९८)
७. तागीख रशीदी मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत, अनुवाद (London 1888)
७. History of U S S R 3 Vols (Mascow)
९. इस्कुस्वो स्नेद्निड आजिड . व० व० वेइमाना
१०. " " " व० व० दनिके, १९२७
११. समरकद प्रि० तिमूरे इ तिमूरिदाख अ० यु० याकूबोव्स्की (लेनिनग्राद, १९३३)
१२. Exploration in Turkistan, 2 Vols . R Pumpelly (Washington 1808)
१३. इस्तोरिया कुलतुर्नीइ क्षिज्जि तुर्कस्ताना . व० व० वतौल्द (लेनिनग्राद, १९२७)
१४. इस्कुस्वो सोवैत्स्कओ उज्वेकिस्ताना व० व० चेपेलेफ (लेनिनग्राद १९३५)
१५. Voyages d' ibna. Batoutah

### भाग २ अध्याय २

१. जामेज्जु-तवारीख रशीदुद्दीन

२. „ इस्तोरिड जोलोतोइ ओर्दी (लेनिनग्राद, १९४१)
३. तवारीख वस्साफ वस्साफ (-३००-२८-)
४. तारीख-गुजीदा : हम्दुल्ला कजवीनी (१२८१-१३२९-)
५. तारीख जहागुशा : अलाउद्दीन जुवैनी (१२२६-८३)
६. History of Mangol H. H Howarth
७. History of U S S. R 3 Vols
८. वोस्तोचनो-इरात्स्किइ वोप्रोस : व० व० वर्तोल्ल (इज्वेस्तिया रोस्सिस्कोइ अकदमिड इस्तोरिड मतेरिअल्नोइ कुल्लुरी तोम II (पेत्रोग्राद, १९२२)

## भाग २ अध्याय ३

१. जफरनामा निजामुद्दीन शामी (-१३९२-१४००-)
२. मत्ला सादैन व मज्मा बहैरन अब्दुर्रज्जाक समरकदी (१४१३-८२)
३. History of Bokhara A Vamberry
४. Heart of Asia E D Ross
५. History of Mangol . H H Howarth
६. अलीशेर नवाई अ० क० बरोव्कोफ आदि, मास्को, १९४६,
७. Memoire de Baber (बाबरनामा). बाबर (संपादक A Beveridge)
८. खुलास्तुल्. अखबार खोदमीर
९. The Miniature Painting and Painters of Persia, India and Turkey (London, 1912)
१०. The Persian Miniature Paintings (London 1933)
११. गिरात्स्केओ इस्कुस्त्वो व् एपोखु अलीशेरा नवाई . अ० अ० सेमेनोफ
१२. सफरनामा नासिर खुसरो
१३. मशाग्गुल्-उश्शाक
१४. नवाई इ निजामी ये० ए० वेर्तेल्स, अलीशेर नवाई पृ ६८-९१
१५. खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकद, १९०५)
१६. बाबरनामा—संपादक न० इलिम्स्की, कज़ान, १८५७
१७. Histoire des Mongols et des Tatars (Peterburg, 1871)
१८. The Mobael-lughat Mirza Mehdi Khan (Calcutta, 1910)
१९. Literary History of Persia E Browne (London, 1919)
२०. Le Meteriel du miniaturiste de l'enlumineur Iranien (Behzaad Taberzadeh)
२१. Musalmanic Painting XIIth-XVIIIth centbry . E Blochet Tran M Binjon (London, 1929)
२२. Painting in Islam Th Arnold (Oxford, 1924)
२३. Manuel de' Art Musalman G Migeons (Paris, 1907)
२४. मोनेती उलुगवेका, व० व० वर्तोल्ल, इज्वे० रो० अकद० इस्त० म० कुल्लुरी तोम II
२५. तारीख रशीदी मिर्जा मुहम्मद हैदर दुगलत (लंदन १८८८)
२६. रोजतुस्सफा खोदमीर (बवई)
२७. इस्कुस्त्वो वेदनेइ आजिइ व० प० वेइमार्न (मास्को १९४०)
२८. तैमूर अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया १९४०-४५)
२९. इरात्स्कोये इस्कुस्त्वो इ ओखेआलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)
२९. उलुगवेक इ येओ ब्रेम्या . व० व० वर्तोल्ल ( १९१८)



३०. र्युन गोर्जदेस् दे क्लावियो

३१ सीवोर्नया मेचेत् तिमूरा . वीवी खानम, म० ये० मस्सोन् (ताशकद, १९२६)

## भाग २ अध्याय ४

१ शैवानीनामा . मुहम्मद सालेह

२ Heart of Asia : E D Ross

३ History of Mangol : H H Howarfh

४ तारीख रशीदी मिर्जा हैदर

५ History of Bokhara . A Vambery

## भाग २ अध्याय ५

१ History of Bokhara A Vambery

२ Heart of Asia . E D Ross

३ History of Mongol : H H Howarth

४ ओचेत् ओ कोमन्दिरोव्के व तुर्कस्ताने . व० व० वेर्तोल्द (इज्वेस्तिया रोस्स्कोइ अकदमिइ इस्तोरिइ मतेरिअल्लोड कुल्लुरी, तोम II)

## भाग २ अध्याय ६

१ किताबुल् हिंद अवूरुहा अल्वेरुनी, अनुवादक सैयद असगरअली (अजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली, १९४१)

## स्रोत ग्रंथ (२)

अवरू, हाफिज जुब्दुतुत्-तवारीख (अनुवादक के० एम० मैत्र, लाहौर)

अलबसन्दरोफ, व० अ० तुर्कमेनिया इ येये कुरोत् नियो वगास्त्वो (मास्को, १९३०)

अल्वेरुनी, अवूरुहा किताबुल् हिंद (अनुवादक सैयद असगर अली, अजुमन तरक्की उर्दू, दिल्ली १९४१)

इब्नदस्ता, अवअली अहमद विन्-उमर इज्वेस्तिया ओ खजाराख, वुर्तासाख, वोल्गाराख, मद्याराख, स्लान्यानाख इ रुस्साख

इब्नवीवी, नासिरुद्दीन यहिया सलजूकनामा (१२८२-८५ ई०)

इस्कन्दर, अनोनेम् अमहूह-तवारीख

उदाल्तोफ, ज० द० प्लेमेना येव्रोपइस्किइ सरमातिइ (सोवियेत्स्कया एनाग्रॉफिया, १९४६/२)

गेनी, मदरुद्दीन गुलामान (जो दाम थे, अनुवादक राहुल माकृत्यायन, पटना, १९४९)

" " दामुन्दा " " प्रयाग, १९४९

" " युखारा (अनुवादक—न. वॉरोदिन, (मास्को, १९५२)

ओलॉफ, अ० म० स्लवा ओ पोल्कु इगोरयेवे-व्याख्या (मास्को, १९४६)

ओन्ग्रियालोफ इस्तोग्रिया त्मात्वर्वोवनिया पेया वेलीकओ, (तोम् ५ पीतग्वुंग, १९१५-३१ ई०)

कजवीनी, हम्दुल्ला तारीख गुजीदा (१२८१-१३२९)

कुवेर, अ आजियात्स्वया रोस्सिया (मास्को, १९१०)

क्लाविवो, र्मुन् गोन्ज्देम्

खान, मिर्जा मेहदी मव्निउल्-लुगात (कलकत्ता, १९१०)

खुसरो, नासिर सफरनामा

खोदमीर रोजतुस्सफा (बवई)

गर्कावी, अ० य० द्रेन्नेइशये अरव्स्कोये डज्वेस्तिये ओ कियेवे ।

भुम. गश्मिमाइलो, ग. ये म. ये पुतेशेस्त्विये व् जापद्निइ किताइ (पीतरबुर्ग, १९०१)

ग्रुशेव्स्की, म० स० कियेव्स्कया रूस

ग्रेकोफ, व०, अ० कियेव्स्कया रूस (मास्को १९४४)

" " बोर्वा रूति जा सोज्दानिये स्वेयवो गसुदास्वर्वा (मास्को, १९४५)

जार्खिन्, इ० इ० नमेलेनिये समरस्कन्ड्स्कोड ओव्लास्ति (लेनिनग्राद, १९२६)

जुजजानी, मिन्हाजुद्दीन उस्मान (११९३-१२०० ई०) तबकातेनासिरी

जुवैनी, अलाउद्दीन अता-मैलिक तारीख जहागुशा

टेलर, अर्थर अन्ध्रपोलोजी

त्रेवर, क व कोव्रा इज नोइन्उला (लेनिनग्राद, १९४७)

देनिके, व प. इस्कुस्त्वो रेन्नेइ आजिड (१९२७)

दुमित्रियेफ -कव्काज्स्की पो रेन्नेइ आजिड (पीतरबुर्ग, १८९४)

देर्झाविन, न स इस्तोरिया वोल्गारिड (लेनिनग्राद, १९४६)

" " पोइस्खोइन्नेनिये रुस्कओ नरोदा (मास्को, १९४४)

" " स्लाव्याने व् द्रेव्न्ोस्ती (मास्को, १९४५)

नवई, अलीशेर खम्सा अलीशेर नवाई (ताशकद १९०५)

पोतेम्किन् व प इस्तोरिया दिप्लोमातिइ तोम (लेनिनग्राद, १९४५)

पोलोस्स्कया, न क वप्रोसु ओ खिस्तियान्स्त्वे ना हसि दो व्लादिमीरा (१९१७)

फेदोरोव्स्की, न म पो गरामि पुस्तिन्याम् रेन्नेइ आजिड (मास्को, १९३७)

बरोव्कोफ, अ क अलीशेर नवाई (मास्को, १९४६)

बर्तोल्द, व प इस्तोरिया कुलतुर्नोइ झिजिन् तुर्किस्तान (लेनिनग्राद, १९२७)

" " उलुगवेक इ येओ ब्रेम्या (१९१८)

" " ओचेर्क इस्तोरिड नरोदा (१९२८)

" " ओचेर्क इस्तोरिड मेमिरे च्या (वेर्नी १८९८)

" " ओत्चेत् ओ कोमन्दिरोव्के व् तुर्किस्तान (इज्वेस्तिया रोस्सिइस्कोइ अकदर्मिड इस्तोरिड मतेरिअल्नोइ कुत्तुरि, तोम् २, द० १-२२)

वर्तोल्द, व. व. मोनेती उलुगवेका (इज्वे रो अ इ ह म कु. तोम् २, पृ० १९०-२)

" " वोस्तोचनो-इरान्स्किइ वोप्रोस (, १९२२ तोम् २, पृ० ३६१-८८)

बाबर बाबरनामा, Memoue de Babar, (edit A Beveridge)

" संपादक न इलिमन्स्की (कजान १८५७ ई०)

विल्वस्सोफ इस्तोरिया एकातेरीनि त्तराय (बर्लिन १९९०० ई०)

Bourgeois, E Manuel historique de politique etrangere (Paris, 1927)

Beigmann, F G Les Scythes (Halles 1860)

वेर्तल्स, ये. ए नवाई इ निजामी अली शेर नवाई, पृ० ६८-९१ (लेनिनग्राद)

Browne, E. Literary History of Persia (London, 1919)

Bloch, E. Musalmanic Painting XII—XVIII century  
(Tran M Binjon, London, 1929)

मस्तोन, म. ये. रेगिस्तान इ येओ मेद्रेसे (ताशकद, १९२६)

" " सोवोर्नया मेवेत् तिमूरा वीवी खानिम् (ताशकद, १९२६)

मात्रोदिन, व. व ओवरओवनिये देव्ने रुस्तुओ गमुदास्वर्वा, (लेनिनग्राद, १९४५)

यागिवा, इ. व. एन्तिसक्लोपेदिवा स्लाव्यान्स्कोइ फिलोलोगिया (पीतरबुर्ग, १९०९)

याकुवोव्स्की, अ. यु जोलोतया ओर्दा

समरकद प्रि-तिमूरे इ तिमरिदाख (लेनिनग्राद, १९३३)

रशीदुद्दीन (१२४७-१३१७ ई०) जामेउन् तवारीख

Rouire, A M F La rivalite anglo-russe en XIX Siecle en Asie  
(Paris 1908)

Robzianko, Le regne de Rasputine (Paris, 1928)

Ross, E.D Heart of Asia (London, 1899)

रोस्तोव्स्केफ, म. इ एन्लिन्स्वो इ इरान्स्वो ना युगे रोस्सिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)

रुवदोनिकस, व. इ इस्तोरिया सससर ४ तोम्

लेस्नेइ, ल. व. वोस्तानिये १९१६, गदा व् किर्गिजस्ताने (मास्को, १९३७)

लोमोफेन्, द. न. ना ग्रानित्साख वेदनेइ आजिइ (पीतरबुर्ग, १९०९)

वस्साफ, शहाबुद्दीन अब्दुल्ला तवारीख वस्साफ (१३००-२८ ई०)

वित्कोविच्, व. किर्गिजिया (१९३८)

विल्स्की, स. ग. यजोकोज्जानिये इ इस्तोरिया लितेरातुरि (मास्को, १९१४)

वेइमार्न, व. व. इस्कुस्वो वेदनेइ आजिइ

Vernadsky, G. on the Origines of the Antae (Am. G. D. S.,  
Vol II L, pp 56-64)

वोल्खोन्स्की, स. आ देकानिस्ताख पो सेमेइनिम् वोस्पोमिनानियाम्

शामी, निजामुद्दीन जफरनामा (१३९२-१४०० ई०)

समरकन्दी, अब्दुर्रज्जाक (१४१३-८२ ई०) मत्ला-सादेन व मज्मा-बहरैन

सालेह महम्मद शैवानीनामा

मिदिक्रेकोफ, तुगेलवाइ नेमिर (उगन्वास, अनुवादक व रोझदेस्त्वेन्स्की, लेनिनग्राद, १९४७)

मेमेनाफ, अ. अ. िरात्स्कोओ इस्कुस्वो व् एपोस, अलीशेर नवाई

मेरेदोन, म. म. इस्तोरिवेम्कया ग्याग्राफिया (पीतरबुर्ग, १९२६)

मेन्शिचेफ, अ. म. स्लाव्यान्स्कोये रजोकोज्जानिये (लेनिनग्राद १९४१)

मोलोवियेफ, म. इस्तोरिया रोस्सिइ २९ तोम् (१८७९-८५)

Hanson, G F Europe and China (London 1931)

Hammer Purgstall Geschichte des goldenen Horde in Kiptchaka (Budapest, 1840)

Hardhcka Scaleten remains of Early mecn (Smithsonian M S :  
Pub Vol Lxxiii, pp 34-49)

Howarth H H History of Mongol, 3 Vols (London, 1876-88)

० इरान्स्कोये इस्कुस्वो इ अन्वेलोगिया (लेनिनग्राद, १९३९)

- ० . इस्तोरिया रुस्कोइ लितेरातुरी (लेनिनग्राद, १९४१)
- ० . इस्तोरिया रोस्सिइ (चित्रमय)
- ० ओचेर्क पो इस्तोरिड कलोनिजात्सिइ सिविरि १७ वी-१८ वी शती (मास्को, १९४६)
- ० किर्गिजिया, त्रुदी पेर्वोइ कन्फेन्सिइ (लेनिनग्राद, १९३४)
- ० तुर्कस्तान्स्कओ वोयेन्नाओ ओक्रुग ३ तोम् (१८८०)
- ० . तेमूरी अभिलेख (वोस्तोकोवेदेनिया, १९४०, १९४५)
- ० त्रुदी ताजिकिस्तान्स्कोइ बाजी इस्तोरिया यजीक-लितेरातुरा (लेनिनग्राद, १९४०)
- ० द्वाद्सत् लेत् कजाकस्ताना (लेनिनग्राद, १९४०)
- ० Persian miniature Paintings (London, 1933)
- ० मतेरिअली क् व्सेसोयुज नोमु अर्खेआलोगिचेस्केमु सोव्शेचन्यो (मास्को, १९४५)
- ० मशारेउल्उश्शाक
- ० युआन्, चाउ. वि. शि (सपादक ग. अ. कोजिन् लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
- ० रेवोल्युत्सिया व् स्नेद्नेइ आजिइ (ताशकद, १९२९)
- ० वोस्तोकोवेदेनिया (लेनिनग्राद, १९४५)
- ० “शजरतुल् अतराक”
- ० सोवियत्स्कया एत्नोग्राफिया (१८३६/६-पृ० ११)
- ० स्बोर्निक मतेरिअलोफ अत्नोस्यश्चिरखस्या क् इस्तोरिड जोल्तोइ ओर्दा (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)

Histoire des Mongols et des Tatares . (Petersburg 1871)

History of Civil War in U S S R

History of U S S R 3 Vols (Moscow)

## स्रोत ग्रंथ (३)

१. पम्पेली, रा एक्सप्लोरेशन इन तुर्किस्तान, २ जिल्द
- २ स्वेन्-चाड यात्रा २ जिल्द
- ३ स्किन, एफ० एच०, और रास, ई० डी० हार्टुआफ एसिया (१८९९ ई०)
४. बरर्त्तिल्द, वी तुर्किस्तान डोन टु द मंगोल इन्वेजन (१९०० ई०)
५. होवर्थ एच० एस० हिस्ट्री आफ मंगोल, ३ जिल्द (लंदन, १८८० ई०)
- ६ पारकर, ई० एच० ए थौजड यर्स आफ दी टारटर्स (शाघाई, १८९५ ई०)
- ७ लेम्ब, हेराल्ड जिगिज खान (लंदन, १९२८ ई०)
८. कार्पिनी, जौन आफ प्लानो ट्रेवल, (हक लइट सोसाइटी लंदन १९००)
- ९ इब्न-बतूता, ट्रेवल, अनुवादक-दफे मेरी और साकी नेती, (पेरिस, १९५३ ई०)
- १० मार्को पोलो ट्रेवल, अनुवादक हेनरी यूल (लंदन, १९२१ ई०)
११. रुबरिक, विलियम ट्रेवल ट् दी ईस्टर्न पाटर्स आफ दी वर्ल्ड (हकलूइट सोसाइटी लंदन, १९००)

- १२ ईनोस्त्रान्तोफ, क खुन्नी ई गुन्नी (लेनिनग्राद, १९२६ ई०)
- १३ वाम्बेरी अर्मिनस, हिस्ट्री आफ बुखारा (लदन, १८६३ ई०)
- १४ वारतील्द, व. ओचेर्क इस्तोरिड सेमीरेच्या (लेनिनग्रा, १९२८ ई०)
- १५ रियाल गिरार्द दे मेम्वार सुर ला आज्जी सात्राल (पेरिस, १८७५ ई०)
- १६ हैदर, मिर्जा तारीख रशीदी-ए हिस्ट्री आफ द मोगल आफ सेंट्रल एसिया, अनुवादक एलियस और रास ई दी (लदन, १९९५ ई०')
- १७ वरताल्द, व. व. ओचेर्क इस्तोरिड तुर्कमन्स्कओ नरोद (१९२८ ई०)
- १८ वेगमान, एफ० जी०, ले सित, (हाल्स, १८६० ई०)
- १९ ए हिस्ट्री आफ दी यू० एस० एस० आर० ३ जिल्द (मास्को, १९४८ ई०)
- २० दमोगन जेक, लु' मानिते प्री-इस्लामिक (पेरिस, १९२४ ई०)
- २१ मापेरो, जी. इस्त्वार आसियान दे प्यूल दे लोरिया (पेरिस, १९०५ ई०)
- २२ तान, डब्ल्यू, डब्ल्यू, द ग्रीक्स इन बैक्ट्रिया एंड इडिया (कैम्ब्रिज, १९३८ ई०)
- २३ पीगुलेवस्कया न सिरिइस्किये इस्तोचनिकी प' इस्तोरिड नरोदोफ एस० एस० एस० एर (मस्क्वा, १९४१ ई०)
- २४ त्रेवेर, क. व. पाम्यात्निकी ग्रीको-वाख्त्रिइस्कवो इस्कुस्त्वा (मस्क्वा, १९४० ई०)
- २५ त्रेवेर कमीला टेराकोटाज फ्राम अफ्रासियाव, (मास्को, १९३४ ई०)
- २६ ई. अ ओवेली, ई० अ०, और त्रेवेर क. व. सासानिदुस्किई मेटल (मस्क्वा, १९३५)
- २७ ईरान्स्कये इस्कुस्त्वा इ आखेंओलोगिआ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
- २८ सत्यश्रवा, द शकाज इन इडिया (लाहौर १९४७ ई०)
- २९ पीगुलेवस्कया न व विजन्तिया इ ईरान (मस्क्वा, १९४६ ई०)
- ३० रोस्तोवत्सेफ, म० ई० एलिन्स्त्व इ ईरान्स्त्व ना युग रोसिइ (पेत्रोग्राद, १९१८)
- ३१ ईरान्स्किये यजीकि, (अकदमिइ नावुक मस्क्वा, १९४५ ई०)
- ३२ चाइल्ड, गोर्डन द ब्रौज एज (कैम्ब्रिज, १९३० ई०)
- ३३ चाइल्ड, गोर्डन, प्रोग्रेस एंड आर्कआलोजी (लदन, १९४१ ई०)
- ३४ हैडन, ए० सी०, हिस्ट्री आफ अन्ध्रापोलोजी (लदन, १९४५ ई०)
- ३५ टेलर, ई० बी०, अन्ध्रापोलोजी, २ जिल्द (लदन, १९४६ ई०)
- ३६ मार, न. य यजीक इ इस्तोरिया (लेनिनग्राद, १९३६ ई०)
३७. योवान चाउ बी. सी, अनुवादक कोजिन, स. अ. (मस्क्वा, १९४१ ई०)
- ३८ वेईमान व व इस्कुस्त्स्व त्रेदनेइ आजिइ (मस्क्वा, १९४० ई०)
- ३९ गिन्जवुग, व. व. गोर्निये ताजिकी (मस्क्वा १९३७, ई०)
- ४० इस्तोरिय दिप्लोमातिड, ३ जिल्द (मस्क्वा, १९४५ ई०)
- ४१ शुनकोफ, व. ई. ओचेर्क प इस्तोरिड कलोनिजात्सिइ सिविर (मस्क्वा, १९४६ ई०)
- ४२ मेरेदोनिन, स म. इस्तोरि चस्कया ग्योग्राफिया (पेत्रोग्राद, १८१६ ई०)
- ४३ द्मित्रीयेफ कफकाजस्की ल. ई, प त्रेदनेइ आजिआ जापिस्की खुशेजनिका (पीतरवुग, १८९४ ई०)
- ४४ इस्तोरिआ रुम्कइ लिनेरातुरि, अकदमी नाउक (मस्क्वा, १९४१ ई०)
४५. यागिच ई व, एन्सिक्लोपेदिया स्लाव्यान्स्कोइ फिल्लोलोगिया, (सा पीतेरवुग, १९०९) ई०
४६. यजीकोज्न निये इ इस्तोरिया लिनेरातुरि (मस्क्वा, १९१४ ई०)
- ४७ ग्रुम ग्रजीमाइलो, पुतेशस्त्वये व जापदनिइ किताई (पीतरवुग, १९०१ ई०)
- ४८ प्रजेवाल्स्को, न० म० मगोलिया इ स्थाना तुगतोफ (मस्क्वा १९४६, ई०)
४९. आज्जीआन्स्कया रोसिया (मस्क्वा, १९१० ई०)

- ५०, ग्रकोफ, व० द० कियेफ्स्कया रुस (मस्क्वा, १९४४ ई०)
- ५१, मावरोदिन, व० व०, ओबराजोवानिये द्रेव्न्-रुस्कवो गसुदास्त्वं (लेनिनग्राद, १९४५ ई०)
- ५२ देझ विन, न० स० इस्तोरिया बोल्गारिड्, (मस्क्वा १९४६ ई०)
- ५३ देझाविन, न० स०, स्लावियाने व् द्रेवनोस्ति (मस्क्वा, १९४५ ई०)
- ५४ स्वं निर्क मातेरियालोफ क-इस्तोरिड् जोलोतोइ ओर्दि, जिल्द २ (मस्क्वा, १९४१) ई०
- ५५ बोरोफकोफ, अ० क०, सपादक अलीशेर नवाई (मस्क्वा, १९४६ ई०)
- ५६ हिस्ट्री आफ दी सिविल वार इन दी यू. एस. एस० आर. २ जिल्द (मास्को १९४६ ई०)
- ५७ बोआस, फ्राज और दूसरे, जेनरल अन्थ्रापोलोजी (न्यूयार्क, १९३८ ई०)
- ५८ वर्किट, एम० सी० आवर अर्ली एन्सेस्टर्स (कैम्ब्रिज, १९२९ ई०)
- ५९ त्रेवेर कमीला, ए-सकवेशन्स इन नार्दर्न मगोलिया (लेनिनग्राद, १९३२ ई० १)
- ६० इस्तोरिया रसिड्, चित्रमय (पीतरबुर्ग, १९०४ ई०)
- ६१ केन-शेन-वेग, रसो चाइनिज डिप्लोमेसी (शाघार्ड, १९२८ ई०)
- ६२ चूइमची ए शार्ट हिस्ट्री आफ् चाइनिज सिविलिजेशन (लंदन १९४५ ई०)
- ६३ रिस्कुलोफ, तु. र वोस्तानिये १९१६ ग० व०, किर्गिजिस्ताने
- ६४ बेर्नस्ताम अ. , तुरोक (मस्क्वा १९४६ ई०)
- ६५ ग्रेकोफ, व० द० बोर्बा रोसी जा सोज्दानिये स्वीयेवो गसुदास्त्वं (मस्क्वा, १९४५ ई०)
- ६६ देझ विन, न० स० प्रोइस्खोज्दानिये रुस्कवो नरोदा (मस्क्वा, १९४४ ई०)
- ६७ लोगोफेत द० न० ना ग्रानित्साख स्नेदनेइ अजीइ (पीतरबुर्ग, १९०९ ई०)
- ६८ एफीमेन्को, प० प० पेर्वोवित्नीवे ओव् शेस्त्वा (लेनिनग्राद, १९३८ ई०)
- ६९ स्त्रूवे, व० व० इस्तोरिया द्रेव्नेओ वोस्तोका (लेनिनग्राद, १९४१ ई०)
- ७० शचनित्सर, या० व० इस्तोरिया पिस्मेन (पीतरबुर्ग, १९०३ ई०)
- ७१ बाचिन्स्की, न० म० आर्खिन्त्रोक्तुनिय पामेत्कि तुर्कमेनिइ (मस्क्वा, १९३९ ई०)
- ७२ अलेक्स्न्द्रोफ, व० अ० तुर्कमनिया इ येवो कूरोर्तनिये बगात्स्त्व (मस्क्वा, १९३० ई०)
- ७३ वेइमान, व० व० इस्कुस्त्व स्नेदनेइ आज़िइ (मस्क्वा, १९४० ई०)

## संग्रह और अनुसंधान-पत्रिकाये

- १ सोव्येत्स्कये वोत्स्तोको-वेदनिये जिल्द I-III
- २ सोव्येत्स्कया आर्खेओलोगिया
- ३ सोव्येत्स्कया एत्नोग्राफिया
- ४ वस्तनिक द्रेव्नेइ इस्तोरिड्
- ५ मतरियलि इ इस्स्लेदोवानिया प आर्खेओलोगिइ एस० एस० एस० एर०
- ६ कत्किये सोओव्श्चनिया
- ७ ताजिक्स्कया कम्प्लेक्सनया एक्सपेडिसिया १९३२ ई०
- ८ ताजिक्स्के-पामिर्स्कया एक्सपेडिसिया १९३५ ई०
९. कराकल्पकिया
- १० इस्तोरिचेस्किये जापिस्की
- ११ ओजेरो इस्सिक्कुल (मस्क्वा, १९३५ ई०),
१२. किर्गिजिया, अकदमि नाउक (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)
- १३ इजवेस्तिया रोसिइस्कोइ अकदेमिया (पीतरबुर्ग, १९२२ ई०)
- ७६

१४. नाउचनये इतोगी ताजिक्स्को-पामिर्स्कोइ एक्सपदिस्ति (मस्क्वा, १९३६ ई०)
- १५ उज्वेकिस्तान त्रदि इ मातरियलि पर्वोइ कन्फरन्सिइ प इजुचनियू प्रोजेक्टोदिस्तीख सील उज्व-  
किस्ताना देकाग्व्या १९३२ (लेनिनग्राद, १९३४ ई०)
- १६ मातेरियलि क. व्सेसोयुज्जोमु आख्ओलोगिचेस्कोमू सोवश्चेनीय (मस्क्वा, १९४५ ई०)
- १७ नासलनिये समरकदस्कोइ ओवलास्ति (लेनिनग्राद, १९२६ ई०)
- १८ एपिग्राफिका वोस्तोका

## नामानुक्रमणी

- अइगिर—२९७  
अइवुगिर—४८१  
(देखो एवुगिर भी)  
अउसकाकुल—' ?  
अकार—५६  
अककु गान—२८०  
अक-ओर्दू—१८ (श्वेत-ओर्दू),  
४२, ५०  
अककला—४८४  
अककामिश—४८३  
अककियक—३४९  
अककुयाश—३१०  
अकखोजा—५१  
अकताई खान—२०१  
अकताग—५९ (श्वेत-ओर्दू), ३६१  
अकत्यूबिन्स्क—४१५  
अकदमी—२६५  
अकनजर—६९  
अकवर—१११, ११६, १५४,  
१८०, १८१, १८३, १८८,  
२१९, २२४, ३१३, ३२१,  
३२४, ४४४, ५४६  
(—तुकसाबा वासमची)  
अकबास—३०२  
अकबुका—३२  
अकवेत—५१६ (उज्वेक)  
अकमस्जिद (पेरोव्स्की वदर)—  
३७८ (अकमेचेत), ३७९,  
४२६, ४३०, ४३२, ४७४,  
४७७  
अकयूर्त—१६६, २७५  
अकरमान—३६८  
अक-रवात—४९८  
अकराम—५२६ (मुफ्ती हाजी)  
अक-शक्काल—२१० (जेठ),  
४२५ (=अकसक्काल),  
४४५, ४७०  
अकसाई—३११  
अकसी—१७६, १८८, २८१,  
३०५, ३०७, ३०८, ४४२  
अक्सू—२९६, ३०२, ३०३,  
३०४, ३०७ (पू० तुर्कि-  
स्तान), ३०८, ३०९, ३१०,  
३३१, ४२५  
अक्कल (ओसी)—४८९,  
४९०, ४९२ (तेक्का), ४९९  
(में अश्कावाद)  
अक्त्वर-क्राति—५१०, ५१८  
(=बोल्शेविक-क्राति), ४२४,  
५२६, ५४९  
अक्त्वरी—४१०  
अक्युबिन्स्क—५३४  
अखताची—३०५  
अखताना—५१५ (उज्वेक)  
अखतूवे—५१  
अखलकला—३६८  
अखसू—१६६  
अखुन—३१६, ३५०  
अखुन्दजादा—४७५  
अखोत्स्क—२४० (शिकार-  
वाला), २४४, २७१, ३८१  
अख्तेखोजा—४७१  
अगतमा—४४५  
अगताई—२००  
अगरका—३१७  
अगस्तस्—१०९, २४९  
अगामइली—५१६ (उज्वेक)  
अगिर—५१५ (उज्वेक)  
अचकियान—४२६  
अचमइली—५१६ (उज्वेक)  
अज—५१६ (उज्वेक)  
अजक—५६ (अजक जेर्नुक),  
५९, ६०, ६२ (किमिया),  
६४, १५१ (=अजाक)  
अजीज—४३  
अजीम—२०५  
अजोफ—३५, ७४, ७७, २२९,  
२४७, २४८, २४९, २५१,  
२८९, ४०९  
अतवाश—२९७, ३०१, ३१०  
अतरक—४९४  
अतलातिक समुद्र—३७२  
अताकरागुई—५८  
अताकुर—२९७  
अताजान—४७८ (ओमुराद),  
४८५ (ओतेमूर, ओत्युरा)  
अतालीक—१४९, १९२, ४३९  
(मुख्य परामर्शक), ४४०,  
६६९  
अतावेग (अव्यापक, सरदरक)  
—३१२  
अतिक—११२  
“अतेचेस्तत्वेन्निये जापिरुगे”—  
३९२



अत्तार—१४७	अदराव—१३७, १७९, ४६०	अवखाजिया—३९
अत्तिला—७२	अदा—१३०, १३१ (परममित्र)	अवदावाद—४०
अत्लसोफ—२५२, २५३	अन्दिजान—५५, १५३, १६१	अवनोस्की—३९० (विकतर)
अदकली—२०० (सैनिक)	( फरगानामें ), १६४,	अवरकुन—१०४
अदल्फस—२२५	१७५, १७६, १८०, २८०,	अवलाई (मध्य-ओर्दू)—३३६,
अदामत—२९१	२८१, ३०२, ३०४, ३०६,	३४१, ३६१ (अवलइ)
अदाशेफ—१०७	३०८, ३०९, ३१०, ३१२,	अवलिन—२४१
अदेस्ता—३८०, ३८३, ३९१	३३६, ३९४, ४२१, ४२२,	अवलेक—१९६
अद्नोदेरेव्की—७७ (एकदास्क	४२७, ४३१, ४३५, ४३६,	अवलै—३१५ (० गिराई),
डोंगी)	४३७, ४९९, ५१९-२२	३३७ (० खान)
अद्रियातिक—६, २४	आन्द्रेइ—२७, ५१ (वेनेरिस),	अवादुल—२८५
अद्रियानोपोल—३४, ५९, ४११	९१, ३१८ (= आन्द्रेइ)	अवालक—११२, ११५
अधिकार-पत्र—९३	अद्रोनिकस्—३७	अविस्का—१२८
अनवर पाशा—५२६, ५४२,	अन्ना—८३, १०७, २५७,	अवीवर्द—१८५, १९९, २०१,
५४३, ५४४, ५४५	४६७ (रानी)	२०२, २०३, २०४, ४६७
अनस्तासिया—११५	“अन्ना करेनिना”—३९३	अबुल्खैर—१५६, १५९ (खान)
अनहाल्ट-ज्वर्स्त—२५८	अन्नादे—२५५	१६५, १९६, १९७, २७५,
अनाकरागुई—५८	“अपराध और दंड”—३९२	२९१, ३०९, ३१७, ३१८,
अनादिर—२५२	अप्पक—३२८ (खोजा),	३४३, ३४४, ४६७ (लघु-
अनाम—७	३३३	ओर्दू)
अनी—६	अफगान—१९२, १९४ ४२२,	अबुल्गाजी—१९०, २०६,
अन्नीम इमकदर—४१, ४३,	४४२, ४४६, ४९८ (वस्ती)	२०७ (इतिहासकार), २०८,
५१ (इस्कदर भी)	अफगानिस्तान—६, ३७, ४७,	२०९, २८१, ३५६, ३५७,
अनुशा—१९० (खान), २११	१२१, १३२, १३४, १३७,	४४०, ४६८ (द्वितीय खान),
(अनुशाह)	१४७, १५०, १५९, १७२,	४६९
अनोडवेंको—३७६	३०४, ३४७, ३७८, ३८८,	अबुल्फजल—१४७ (अकबरके
अन्त (जन)—७१-७३, ९३	३९०, ४०१, ४१५, ४५०	प्रधान मंत्री)
अनरोष्ट्रीयतावादी—५९३	(—युद्ध), ४५३, ४६२, ४७४,	अबुल्फतह—१६७
अन्तर्वेद—५५, १२१, १२२,	६८८, ४९७, ४९८, ५२०,	अबुल्-फेदा—४७
१२८, १३२, १३४, १६५,	५२५, ५२७, ५४१, ५४४,	अबुल्फैज—१९२, १९३, ३४९,
२७७, ३०६, ३५२, ५३६	५४५, ५४६, ५५१	४६६, ४६९ (खान)
(अन्-सिरका द्वावा, मावरा-	अफनासी—१०१	अबुल्मन्सूर—१६६
उन-नहर)	अफशर—४२५ (अफसर),	अबुल्मुहम्मद—२०३, ४६८
अनर्-मगोलिया—३२४	५६० (तुर्कमान)	अबूतालिब—१८७
अन्वनी—१२०	अफीका—१८१, ३७२ ४०८,	अबूवकर—६०, ६६
अधिकार-भूमि—३७, ७३, २४	४११	अबू-याकब-युसुफ—१२५
अन्दरुई—१३५ (अदखोई),	अवकस—२०९	अव-सईद—३३, ६३, १२१,
१८६, १९८, ४५१, ४८९,	अवका—८, २८, २९, ३१	१८५, १८७, १४९, १५९
१९१, १९२, १६१, ४६३	(नान), १३०, १३१, १३२,	(खान, वावरका दादा), १६०
(अदगुद)	१३८, १४३, १४४, २८५	१६५, १६६, १७७ १७८,

३०२ (मिर्जा), ३०३  
 अब्दाली—१९२  
 अब्दुर्रजाक—६४, (समरकदी),  
 १५०, १५६ १५७  
 अब्दुर्रशीद—२७८  
 अब्दुर्रहमान, मुल्ला—४९२  
 (तेक्का)  
 अब्दुर्रहमानोफ—५३३  
 अब्दुर्रहीम खान—४७२  
 अब्दुल अजीज—१९०, २१०  
 (खान)  
 अब्दुल अहद—४५३  
 अब्दुल्करीम—४७१, ४७२  
 अब्दुल-मोमिन—१८०, १८१,  
 १८२, १९४, २०४  
 अब्दुल्लतीफ—१५८, १५९,  
 १७९  
 अब्दुल्ला—१३६, १४६, १५९,  
 १६१ (खान), १६५, १७९  
 (प्रथम), १८० (२), १८२,  
 १८३ (द्वितीय), २०४,  
 २८१, ३३१ (तर्खनवेग),  
 ४७७ (खीवा), ४८६ (मेहतर)  
 अब्दुस्समद—४४६ (खा),  
 ४५० (नायब-), ५२६  
 (जदीद)  
 अब्बास—१८१, १८२, १८३,  
 १८५, १८६, १८७, २०७,  
 २०९ (प्रथम), ४९०,  
 (मिर्जा, शाह)  
 अब्बासी—१२१  
 अब्बामोफ (जेनरल)—४५३,  
 ४५७, ४५८  
 अमनगेलदी—४१५  
 अमलाकदार—४५३  
 अमस—१०४  
 अमामची—३०३, ३०४  
 (शैशी=अमासाजी)  
 अमीन—१७७ (मिर्जा),  
 १९६, ४७६ (वान)

अमीनियाना—४३३  
 अमीनेक—१९६  
 अमीर—११३, १४५, १४८,  
 १५०, ४२५, ५२३ (देखो  
 बुखाराके अमीर)  
 अमीरअली (तुर्कमान)—४७१  
 अमीरखली—५४, ५५  
 “अमीरुल् मोमिनीन”—४४६  
 मुसलमानोका प्रमुख)  
 “अमीरोका घोमला”—३९२  
 अमुरसना—२६३, ३३५,  
 ३३६, ३४६, ४६०  
 अमूर—३८१  
 अमेरिका—९, २४०, २५९, २६३,  
 ३६६ ३७२, ५०५ (युद्धमें),  
 ३९७  
 (सयुक्त राष्ट्र), ४००, ५५०  
 “अम्बन” (महामात्य)—३२४  
 अम्बर—७५  
 अयर्हेन—२४३  
 अयगुज—५३०  
 अरक—१६५  
 अरक्चेयेफ—३६५, ३७१, ३७४,  
 ३७५  
 अरखगेल्स्क—२२६, २६५  
 अरगन—५१४ (उज्बेक)  
 अरगन—४६ (खान), १३१,  
 १४३, ३८१, ५३० (नदी)  
 अरग—४६५  
 अरतक—१६७, २९८ (कुत)  
 अरपा—३६ (खान) १३२,  
 २९७, ३१० (-उपत्यका)  
 अरब—३१, ७४, ८१, ८९,  
 १०३, २०४, २०६, ३०१,  
 ४९३ (घोडे), ५१७, ५३६,  
 ५३९, ५४१, ५४८  
 अरब मुहम्मद—३३८  
 अरबशाह—१५३, ३१५ (शाह),  
 ३३८ (मुहम्मद),  
 अरवाजी—२००

अरवात—३०९  
 अरवी—१५४, ५१४ (उज्बेक)  
 ५२९  
 अरलत—१३५, ५१४ (उज्बेक)  
 अरसलन—१३८ (खान), २७९  
 (अर्सलन), २८९ (वेग)  
 अरसू—३२४  
 अरा—३२४  
 अराक तेमर—१६६  
 अराजकतावादी—५५०  
 अराजखान—४९० (किला-)  
 अराजान—२९८  
 अराल (सागर)—६, ६२, १९६,  
 २०६, २०९, २१०, २९०,  
 २९१, ३५२, ३८७, ४३०,  
 ४६४, ४६७, ४७३, ४८६,  
 ४८९, ५२८, ५३५, ५३७,  
 ५५५  
 अरालद्वीप—४७१  
 अराली—३५३, ४६१ ४६६  
 अराल्स्क—३५८, ३७९, ४०९,  
 ४३०, ४७६ ५३०  
 अरिकवुगा—८, १२८, १२९,  
 १४३ (=अरिगव का)  
 अरिखलार—३११  
 अरिग—३०८ (मुगोलिस्तान)  
 अरिदमियका—११३, ११४  
 अरिम—२७९, ५३०  
 अरिस्तनवेल्—४८२  
 अर्क—१६५ (=अरक), १९०  
 अर्जमस—२३७  
 अर्ज म—८, १०४, २०३  
 अर्दहान—३८६, ३८७  
 अर्ध-दास—९४, २१८, ३७६,  
 ३८५  
 अर्पचन (रक्त्तन)—३३१  
 ३५० (=अर्वतन भी)  
 अर्मनी—६, ३९, १२५, १०७,  
 १४१, १८५ (जर्मनिया),  
 २५१, २६३, ५१२ (गण-

राज्य), ५५१, ५५४  
 अरनि—२८, ३१, ३३, ५५  
 (६० काकेशसमें नगर),  
 १४१, १४५, १४६  
 अरई पहाड—४३७  
 अलक—१९६  
 अलकनन्दा—१५२  
 अलकमदरिया—१३५  
 अलकुसुना—५६  
 अलगू—८, १२८, १२०  
 अलचिन—५१६ (उज्बेक),  
 ५३०  
 अलची—२९  
 अलजई—३०  
 अरनिन-एमेल—३३१  
 अलतुन-क्युरगे—२९८  
 अलदल—२८०  
 अलवर्ट—९५  
 अलवाजीन—२४२, २४३,  
 २५५  
 अलवानिया—२३  
 अलमाती—२९९  
 अलश (खान)—५३५  
 अलमस्-लोरेन—४११  
 अलाउद्दीन—१३४, १४१,  
 १८८, १५७, १५८  
 अगडलमुल्क—१३५  
 अगकामक—१२७  
 अलाची (बहादुर)—३०७  
 (=अरची)  
 अगताउ—१२७, २७७  
 (=अगताग) ३११,  
 ५३५  
 अगान—१८१  
 अगनिवा—५६  
 अगवुग—३०१  
 अगस्त्या—१५६  
 अगिनुदर—१५९  
 अगिमन—२९६  
 अगी—१०३, १८३, २००, ३१५

(ओगलान), ५४४  
 (उराक)  
 अली—५७ (—बेक), १०३,  
 १३६ (—सुल्तान), १५०  
 (—मोतैयद), १८३, २००,  
 ३१५ (—ओगलोन), २५५  
 (—मुल), ४६८ (—कुल्ली),  
 ५४४ (—उराक)  
 अलेक्सान्द्र—३४ (त्वेर), ९५,  
 ९७, ३४९, ४७८ (जार),  
 २६८ (१), २७१, ३७०,  
 ३९३ (३), ४९५ (२)  
 अलेक्सान्द्र (उलियानोफ)—  
 ३९५  
 अलेक्सान्द्रोवयेन्स्क—४६५  
 अलेक्सी—९८, १०७, २३५  
 (अलेक्साद्र), २४१, २५१,  
 २५२, ४१९  
 अलेक्सी नेवस्की—२१, २७,  
 ९५, ९६ (=अलेक्साद्र)  
 अलेक्साद्रोवा-स्लवोदोवा—  
 १०८, १०९  
 अलेक्सेन्द्र (जारिना)—३९४  
 अलेप्पो—१८० (=हलव)  
 अलेफ—१०३  
 अलोई—२५४  
 अल्कोशिदना—२९७  
 अल्टीमेटम—५२२, ५२४, ५५२,  
 ५५४  
 अल्लन—३१५ (=सुवर्ण)  
 अल्लन खान—२२७, ३२१,  
 ३२८, ३२६, ३३८  
 अल्ला-ओर्दू—२९१  
 अल्लाई—१८, १२१, १३२,  
 २३८, २६४, २६७, २७१,  
 ३२१, ३२६, ३३८, ३७९,  
 ३८७, ४०१, ४८९, ५२८,  
 ५३०, ५३५  
 अल्लाकुल—११०  
 अल्ला—१०२ १८० (—कुतुक),

५३०, (अता)  
 अल्लून-कला—४२६  
 अल्ल्वीन—१०३  
 अल्लिशान—३२४  
 अल्पअसलन—३१८  
 अल्पमास—४८४  
 अल्वानिया—४११  
 अल्माअता—२९८, ३३४ (सेवका  
 वाप) ३६१, ३७९, ४१५,  
 ५३०, (वैनी), ५३२, ५३३  
 ५३४  
 आल्मालिक—५६, १२१, १२२,  
 १२५, १२६, १२८, १२९,  
 १३४, १३५, १३७, १३९,  
 १४९, २९६, २९८  
 अल्मौत—१३९  
 अल्लाकुल खान—४७३  
 अल्लावर्दी जौज़—४५९  
 अल्लामदार—१५३  
 अवरत—५१४ (उज्बेक)  
 अवशा—५४७ (तुर्कमान)  
 अवानेक खान—१७८, २००  
 अवार—२८४  
 अब्बाकुम—२९  
 अशगर—१८७  
 अशुरवेक—४६४, ४६५, ५४५  
 (=असुर वेक)  
 अश्कखाशी—५४४  
 अश्कावाद—३८८, ४९३, ४९८  
 ४९९, ५४५, ५५१, ५५५  
 असदुल्ला—४३२ (डाक्टर)  
 अममानक—३१८  
 अमह्योग-आदोलन—५१७  
 अमेन—६ (ओसेन)  
 अस्कोल्द—७५, ७७  
 अम्यावान—५१, १००, १०८  
 १६७, १८५, २०५, २२५,  
 २२६, २३६, २३७, २५०,  
 २८७, २८८, २९१, ३३८,  
 ३३९, ३६०, ३६९, ४०३

- ४२०, ४४४, ४६५, ४७३,  
४७४, ४७५  
अस्त्रावाद—१५४, १५६,  
१६१, १६८, १७६, २००,  
२०३, २०४, ४६५, ४७०,  
४९०  
अस्पहान—३, १०४, १५०,  
१५४, २०९  
अस्पेराई—२०० (अस्त्रावाद  
के समीप)  
अस्फन्दियार—२०४, २०६,  
२०७ (=इस्फन्दियार)  
अस्साकी—४३७  
अहमद—६७, १००, १२६,  
१३०, १४३ (-तगूदर), १४७,  
१५३ १६०, १९१ (२),  
२७६, ३०४-५ (-मिर्जा)  
अहमदशाह—१९४, ३४७, ४३९,  
४४१, ४४२ (अब्दाली)  
अहरार (खोजा)—१५३, १६१,  
१८३  
अहोम—१४  
अका—५५ (-तुरा), ६३  
अगा-त्यूरी—२९७, २९८  
अगारा—२३८, २७२, ३२१  
अगोरा—१५२  
अग्रेज—२२२, २४०, ३९०,  
४४४, ४९७ (से तनातनी),  
४९८, ५१९, ५२०, ५२२,  
५३०, ५४२, ५५१, ५५२,  
५५४  
आइतोफ (लेफ्टनेट)—४७६  
आइशा—२००  
आइने-सिकदरी—१६१  
आकचा—१९४  
आक्सफोर्ड—१५८  
आक्सू—५४४  
आगरा—१७७, ३१३  
आगाखान—१४०  
आगामुहम्मद—४४२ (तुर्कमान),  
४९० (काज़ारवश-मेस्थापक)  
आगा यूसुफ—४७२  
आगिस—२००  
आगूज़—५७, २८२ (तुर्क),  
४८९ (तुर्कमान)  
आजुरवाइजनि—३९, ५४,  
६२, १२१, १३१, १४५,  
१४६, १५०, १६०, १६४,  
१७२, १७६, ३०१, ३७२,  
३७७, ५१२, ५४८ (तुर्की),  
५५४,  
आतमन (सरदार)—११०,  
२२३, २३०, २३५, २६१,  
५२५ (=अतमन)  
आत्माराम दीवानवेगी—४६०  
आदमकिलगन—४८२  
“आधारिक राज्यविधान”—४०४  
आफतावचा अब्दुर्रहमान—  
४३४, ४३५  
आफदी—४७८ (मुल्ला)  
आफरीकद—२८०  
आवदरा—१७४  
आबुदन—४५८  
आवेल्दिन—५३७  
आवेसफेद—५३९ (गाव)  
आमिन-सधि—३६६  
आमू—१२१, १३०, १७३,  
१८९, २०५, ३३४, ४८२,  
४९९ (=वक्षु), ५३५,  
५५०, ५५५ (=आमूदरिया)  
आमूर—२४०, २४२, २७१,  
३८८  
आमूस्की—३८९ (ग्राफ)  
आमूल—१०३ (=चारजूय)  
आम्सटर्डम—२४८  
आयुका—२३५, २५३, ३३२  
(खान)  
आयुर्वलीभद्र—१५  
आरदोक—२०५  
आरजित्जान—१०८  
आरिस—५६  
“आरोरा”—५०९ (कूज़र)  
आर्क—२११, ५२६ (किला),  
५२७ (बुखारा)  
आर्कलैम्प—३९६  
आखेंगेल्स्क—३६५  
आर्थिक सकट—३९३  
आर्य—५१६, ५३६, ५४१,  
५४८  
आलक—३३० (अलाताउ)  
आलमखान—५२६ (अतिम  
अमीर बुखारा), ५४१, ५४८  
आलाखाना—५३९  
(यगनावमे)  
आलान—१८  
आलेस—१११  
आल्प—२७०  
आवक—६  
आवा—७ (वर्मा)  
आवार—७२, ७३  
आस—२८४  
आसफुद्दीला—४९० (खुरासान)  
आसाम—१४  
आसियावी—४६२  
आस्टैलिज (वोहीमिया)—  
३६६, ३६७ (चेकोस्लो-  
वाकिया)  
आस्ट्रिया—२४८, २५९, २६०  
२६३, २६६, २६९,  
३८०, ३८६, ४०७, ४११,  
४१२ (-युवराज), ४१३  
आस्ट्रेलिया—२४४  
आहगर—१२९  
आहनीदरवाजा—१७० (लीहदार)  
इइगदेर—५४७ (तुर्कमान)  
इइवे—५४७ (तुर्कमान)  
इक—५९ (शकमाराकी शाखा)  
इकान—३५३  
इकोनियम्—१४३  
“इखलाम”—१६०

इस्तिथार — ४१२ (तेक्का)

इगदी — ४८३

इगदेर — ५४७ (तुर्कमान)

इगलान — ५१५ (उज्वेक)

इगोल्स्वोमन — ३५५, ३५६,  
३५७

इगनातियेफ — ३८९, ३९०

४७८ (जेनरल)

इचनीबुचनी — २९८

इज्जतुल्ला — ४६० (इतिहासकार),

४६२

इज्जोवोस्क — ७५

“इज्जान्नया रादा” — १०७

इज्माइलोवो — २४६

इज्यास्ताव — ८६

इड्स — २५३

इनशकी — २००

इताली — ३९, २६६, २६८,

२६९, ३७३, ३७९, ३८२,

४११, ४१२

इतिहास — १५६, २०६-८,  
३०४

(-लेखक), ४२५ (-कार)

इन्तू — १२८ (इ-इ)

इतेल्मेन — २७१

इत्तिल (बोत्गा नदी) — २०,

२६, ३०, ३१, ७१, ७३,

७४, ७५, ७९, ८०

“इत्तिकाक” (=लीग) — ५१८,

५२१, ५२३

इदिक — ४९, ५६ (उज्वेक),

६२, ६३, ६४, २८६

इनकान — ५२०

इनारी — २८९ (नारी समान)

इन्तोनन — २६

“इम्पेक्टर जेनरल” — ३८८

इपविन — ६६ (निविर)

इपीर — ६३

इब्राहीम — ७३, १५६, १६६,

५३९ (सफर), ५४६

(-गल्लू वासमची)

इब्न-फजलान — ७९

इब्न वतूता — ३६, १३४, १३५

इब्न-यमीन — १४७

इब्न-हौकल — ७३

इमानीफ — ५३१ (अमनगेल्दी),

५३२

इमाम — १७४, १७७, १८१

(रजा), १८५, २०८

(-कुल्ली) ३०४ (-जाफर)

इमिल — २६, ३२७ (नदी)

इरवेक — ४६८

इरलात — ३०७

इरसारी — १९९, २००

इराक — ३३, ३७ (केइलखान),

१२४, १४७, १५०, ३०१,

३०३

इरिना — ११५

इरिवइ — ४८१, ४८२

इकुत्स्क — २३८, २४२, ३२४,

५३२

इरिच — ३४१

इर्जइ — ४५२

इर्ताशअली ईनक — ४८५, ४८६

इर्तिश (नदी) — ११०,

११२, ११३, ११४, ११५,

१३२, १३३, २३५, २५१,

२७१, २७९, २९६, २९८,

३१६, ३१७, ३१८, ३१९,

३२५, ३२६, ३२८, ३३०,

३३३, ३३६, ३३८, ३४५,

५३०, ५३४, ५३५

इल-अलरगू — १२५

इलखान — २८, ३२, १३०,

१३२, १३३, १३९, १४३,

१४७, २८५ (ईराती)

इलवक — ३१५

इलवर्स — १९३, १९६, १९०,

२०६, २०७, २०८

इला — १२५

इलाक — १६८

इलान्चुक — १८ (सर्वसदृश),

२७९

इलालवालिक — १२७

इलिकदई — १३४

इलिकमिस — ५६

इलिन — ३२७

इलिबै — ४८४

इलिमिश — ५६

इलिम्स्क — २४३

इलिया — ६४, ३९२,

इलियास — १३७ (खोजा), १४९

इलिश — १११

इली — १२१ (इली नदी), १२५,

१२७, १२८, १३२, १३३,

२६४, २९७, २९८, ३००

३०४, ३२५, ३२८, ३३१,

३३३, ३३४, ३३६, ३३७,

३४०, ३४१, ३४२, ३४७,

३६०, ३६०, ३७८

(देखो इलि भी)

इलेत्स्क — ३५७

इन्तजार — ४४४, ४७० (खान)

इल्तेइजे — ४८१, ४८४

इल्दिर नौयन — १२४

इन्वर्सखान — ४६७

इल्मन — ७५, ७७, ९३

इवान — ३९, ४२ (मास्को),

५२, ९७ (प्रथम, द्वितीय)

९९-१०० (तृतीय), १०६

(चतुर्थ), १०७, १०९, ११५

१३३, २२०, २२७, २३४,

२८८, ३३३ ३९२

इवान — २५० (-माजेपा), ३१६

(-म्यारजोइ), ३३१ (चेरदोफ)

इवानगोरद — १०० (इवान-

नगरी), ११६, ४१३

इवान सुसानिन — ३८५

“इवानोफ — २९२, ३८४, ४८६”

(लेफ्टनैंट), ४१७ (जेनरल)

इवानोवो-वोस्नेसेन्स्क — ५०८

- इवेंकी—२७१  
 इशकासिम—४६२  
 इशकिली—५१६ (उज्वेक)  
 इशवरदी—११३  
 इशमा—१११  
 “इशरतखाना—१६०”  
 इशिकली—५६१ (उज्वेक)  
 इशिम—११२, ११३, ११४, १८२, २८१, ३१५, ३१७, ३१८, ३१९, ३२५, ३२७ (खान), ३४१, ३५५  
 “इश्तेराक”—२८९  
 इसनबुगा—१६६, २७५ (=इस्सन बुगा)  
 इसायेफ—५२५, ५३३  
 इसुगोस्कोय—२२४  
 इसत—३१७  
 इस्कन्दर—१५८, १७९, १८० (-खान), ४५८ (-कुल, सरोवर)  
 “इस्का” (=चिनगारी)—३९७  
 इस्तखर—१६१  
 इस्तम्बूल—१०४ (समुद्र), ४७८  
 इस्त्रा—७३  
 “इस्फारा”—४२१  
 इस्मत—१५८  
 इस्माइलोफ—२५४  
 इस्माईल—१४९, १६३, १७१, १७२, १७३, १८३, १९४, १९९, २६३, ३०४, ३०९, ३२८  
 इस्माईली—१३९, १४०  
 इसराईली—१५७ (=यहूदी)  
 इस्लाम—३४, १२४, ३१६, ३४६, ४४६ (-खलीफा), ५२२  
 इस्सन—३२  
 इस्सिकुल—१२५, १३३, २७५, २९५, २९७, २९८ (सरोवर), ३०१, ३०२, ३१०, ३१३, ७७  
 ३३०, ३३१, ३३२, ४५२, ५३५  
 इस्सुन—१२६  
 इगलैंड—३९, २२५, २२६, २४८, २५६, २६३, २६९, ३६६, ३७७, ३८०, ३८७, ४०६, ४०७, ४०८, ४१२, ४१४, ४७५, ४९७, ५०३, ५५०, ५५४  
 इग्निया—२४९  
 इग्लिश-चैनल—२४  
 इजन—२६७  
 इवा—१०२ (यत्रा)  
 ईकान—२४६  
 ईगर—७८, ७९ (रूरिक-पुत्र), ८३, ८७, ८९, ९०  
 “ईगर सेना-गाथा”—८९  
 ईतल—२७  
 ईनक—१९७ (सरदार), ४६९ (प्रधान-मंत्री)  
 ईबक—३१५  
 ईरान—७, ३३, ५५, ७१, ७५, १००, ११०, १२१, १३२, १४१, १५०, १५९, १७३, १८३, २३६, २५१, २७१, ३७१, ४०५, ४०६, ४०७, ४६६, ४८९, ४९८, ५२०, ५२५, ५३५, ५५४ (का तुर्कमानियापर दावा), ५५५  
 ईरान-इराक—१३२, १४५  
 ईरानी—११० (शाह), १५३, १७७, १९२, ४८७ (क्रांति), ४५०, ४९४, ४९६, ५१६, ५१९, ५३९ (भाषावश), ५४१, ५४२, ५४८, ५५१  
 ईलक—४७८  
 ईवे—५४७ (तुर्कमान)  
 ईशान—१५३ (=पीर, गृह, आखन)  
 ईशा नकीव—४४३ (-कॉव), ५४३ (-औलिया, शेख, -सुल्तान), ५४४-४५ (सुल्तान, सुल्तान), ५५३ (-उराक, सद्दर)  
 ईसन येसी—३००, ३०१, ३०२  
 ईसाइकी सवोर—३७५  
 ईसाई—३८, ८३, १०४, १२५, ३१६, ३७२, ४४२  
 ईस्ट इंडिया कंपनी—११०, २६८, ४४९  
 उइगुर—९ (सिरियावाली), ३०, ५७ (लिपि), १२१ (डाडा), १२४, १६१, १६७, २०२, २०८, ४७०, ५१६ (उज्वेक), ५१५, ५२९, ५३०, ५४८ (चगताई तुर्क)  
 उइगुर नैमन—५१४ (उज्वेक)  
 उइची—५१५, (उज्वेक)  
 उइशुन—५१५ (उज्वेक), ५३० (उइसुन, वूसुन)  
 उइस्क—३४६  
 उई—३४३, ३५८  
 उकमेत—४६२, ४६३  
 उकाक—६१  
 उकाजे (=राजादेश)—३५७, ३६१, ४३७, ४५२, ४९९, ५३१  
 उकुर-कितची—२९८  
 उक्रइन—३९, १००, २२९, २३०, २३२-२३४, २४१, २५९, २८९, ३०२, ३७३, ३७५, ३७६, ३७७, ३९१, ३९९, ५१२, ५१९  
 उस्तोम्स्की—४०३  
 उगफेरमर—२९७ (पूर्वी तुर्किस्तान)  
 उगरी—६६  
 उगलान—५१४ (उज्वेक), ५१५  
 उगलिच—१०२, ११५, २१८  
 उगुजमान—१६८

उगेची खासाग—३००  
 उगताइ—५ (छिड-गिस्-मुत्र), २१  
 उगोलिन—२४  
 उग्रा—१००, ११४  
 उग्रिउमोफ—३३४  
 उचउचक—४८२, ४८३  
 उचकुगानि—४३५, ४३७  
 उचमा—४८१  
 उचाचर—१२८  
 उज—४५५, ४६०, ५१४  
 (उज्वेक)  
 उजतेमूर—१६६, ३०३ (यैची)  
 उजान—४०  
 उजियाक—२७८, ३५०  
 उजी—२९, ३०  
 उजुन—१०४, १६० (-हसन),  
 २८१ (-सुकाल),  
 ४९५ (आदा), ५२६ (कजाक)  
 उजकन्द—१२८, १६५, १८०,  
 ४३५  
 उजगद—१२९, २९७, ५३८  
 उज्जयिनी—१५८  
 उज्वेक—२६, ३१, ३३, ३४,  
 ३५, ३७, ४८, ५१, ६७  
 (दशते कियचक), ९७, १४५,  
 १५६, १५८, १५९, १६१,  
 १६५, १६९, १७४, १७७,  
 १७९, १९३, १९४, २०२,  
 २०७, २०९, ३७८, ४१५,  
 ४२१, ४३१ (कियचक),  
 ४४२, ४४३, ४५५ (कवीले),  
 ४५९, ४६४, ४६७, ४६९,  
 ४८६, ५१४, ५१६ (-जाति-  
 निर्माण), ५१७ (-भूमि),  
 ५२७, ५२९, ५४२, ५४४,  
 ५८८ (=चगताईतुर्क) ५४९  
 "उज्वेक-उलुस"—३१  
 उज्वेक-कजाक—२७५, २७६,  
 ३०३, ३०५, ३११, ३१३  
 उज्वेक खान—३१, २६, १३३,

१४६, ४६५, ५२९  
 उज्वेक सुल्तान—२७७  
 उज्वेकिस्तान—१२१, १६२,  
 ४५३, ४५९, ५१४ (में  
 काति), ५१७, ५२७  
 उज्वेकी—१८३ (भाषा)  
 उज्वोई—४८०, ४८३  
 उतखुर सूफी—४४३  
 उतरार—४६, ४८, ४९, ५५,  
 ५६, ६०, १६८, (=अतरार)  
 उताची—५१४ (उज्वेक)  
 उत्किया—३५२  
 "उत्तर तारा"—३७४  
 उत्तर प्रदेश—५२८  
 "उत्तरी सघ"—३९३  
 "उत्तरी सम्मिलनी"—३७४  
 उद्मुर्त—१०७, २३४, ३९०  
 उन्कोन्स्की—३३१, ३३३  
 उपा—२२१  
 उपुलेची—५१४ (उज्वेक)  
 उपेन्स्की—९१  
 उवसा (सरोवर)—३२६  
 उवान—२८४  
 उवैदुल्ला—१६० (-अहरार),  
 १७४, १७६, १७८, १८३,  
 १९२ (१), २०३, २८०,  
 ३०५, ३०९ (खान)  
 उमरगाजी—१७८, २०१  
 उमरशेख—५५, ५६, ५९,  
 १६०, १६३, २९७, ३०५,  
 ३०६  
 उयान—५१५ (उज्वेक)  
 उयुगली—५१६ (उज्वेक)  
 उयेज्द—५३१ (=जिला)  
 उयेमीत—५१४ (उज्वेक)  
 उरगज—५६, ६४, १३५,  
 १७८, १९६, १९९, २०१,  
 २०२, २०४, २०५, २०८,  
 २०९, २१२, २८१ (हवा-  
 रेज्म), ३३०, ४४०, ४४४,

४६८, ४७०, ४७३, ४७५,  
 ४७७ (-कुहना), ४७८,  
 ५२६ (मिर्जा-)  
 उरमानजोजिन—५३७  
 उरमिया—५५६ (रजाइया)  
 उरलुक—३१९, ३२१  
 उर-साग—३११  
 उरातिष्पा—१८२, ३०६  
 (उरातेपा), ४२२, ४२३,  
 ४३७, ४४४, ४४८, ४५२,  
 ४५८  
 उरानिया—२८९ (देवी)  
 उराल—२१ (ऊराल), ४९,  
 ९४, १००, १०१, १०७,  
 २०५, २०८, २३४, २३५,  
 २४४, २६१, २६७, २८६,  
 ३१७, ३२१, ३४४, ३५१,  
 ३७६, ४०५, ५०८, ४२०  
 उराल-अल्ताई—५४८ (भाषा-  
 वश)  
 उराल्स्क—२८९, ३५६  
 उराल्स्की—५५२  
 उरियानकुत—३२१  
 उरुस—१८, ५५, ५१५  
 (उज्वेक)  
 उरुसखान—४३, ४८, ५४,  
 ६१ (खान), ५० (-खोजा)  
 उरुसलन—३२१ (यैशी)  
 उरुसोफ—३४५, ४५७  
 उरेंगयार—२९७  
 उर्गा (अराल)—२४२, ३२४  
 (उरगा), ३२९ (-महालामा),  
 ४७८, ४८२,  
 उर्जाय—५१४ (उज्वेक)  
 उर्दा—१०२  
 उर्मितान—४५८  
 उर्लुक—३२६, ३३८ (तोर्गुत  
 राजा)  
 उलकुम दरिया—४८४  
 उलजइ—२९

उल-जै-तू—१५, ३३, १३३,  
(ईरान), १४५  
उलरिच—२५७  
उलाइओन्दलुग—५४८ (तुर्क-  
मान)  
उला इवोन्तली—५४८ (तुर्कमान)  
उलागचारलिग—२९७  
उलाञ्ज तुमान—३२१ (लाल  
ऊटवाले ओर्दू), ३३९  
उलाद—१४४  
उलानवातुर—३२४ (=उर्गा,  
ताहुरे)  
उलियस्सुतै—३२४  
उलियानोफ—३९२, ३९४,  
५१० (=लेनिन)  
उलियानोव्स्क—२३७ (समारा),  
३९४  
उलुक—६६ (-मुहम्मद), ६७,  
३१७ (-बरमा), ३४६  
(-ताग)  
उलुकची—२६  
उलुगताग—५७ (महापर्वत),  
१५१, १७०, २७९, २८०  
उलुग-तूवे-ताश—२०२  
उलुग-दुर्जी—१८  
उलुगवेक—६७-६८ (शाह-  
रुख-पुत्र), ६८, १५४,  
१५५, १५६, १५७, १५८,  
१६३, १६५, १७०, १९०,  
२९९, ३००, ३०२  
उलुग-मदरसा—१७१  
उलुस—२९, ३३ (मगोल,  
=वातू, खुलाकू, चगताइ  
और चीन), ५१, १२१,  
१२५ (-इपू), ३०९,  
(उलुसवेगी), ३२४ (-थैशी)  
उलेखातून—४९८  
उलेची—५१५ (उज्बेक)  
उलेमा—५१७ (धर्माचार्य,  
मुल्ला)

उल्जे-यू—१६, ३२ (खान)  
उश-तुफान—३३६  
उशाकोफ—२४१, २६३,  
२६९  
उशामला—४८०  
उसरी—३८९  
उसमानअली—१५२, १६४,  
१७९, २०७, ६१  
(०बहादुर), ५५३ (-कारी)  
उसा—१११  
उसिउन—५२९ (कज़ाक)  
उसुन—५१६ (उज्बेक)  
उस्तउर्त—१९७, २०४, ३५७,  
४६५, (चिकया इकित्स  
गिरि), ४८१, ४८२, ४८४  
उस्तकामेन्नेगोस्कर्कया— ३३३,  
३४९, ३६१  
उस्ती—५३०  
उस्मानी—१७८, १८१,  
५४८ (तुर्की)  
उडीसा—१२२  
उग—५१४ (उज्बेक)  
उगाचित—५१४ (उज्बेक)  
उगुत—५१४ (उज्बेक)  
ऊफा—३१९, ३५०, ३५१,  
३५६  
ऊ-हो-चे-यू—३२९  
एउफ्रेसिया—२२  
“एक शिकारीके पत्र”—३९२  
एकातेरिना—२५९, २६७ (१),  
३४७, ३४९, ३५४-५६  
३६१, ३६५, ३६६, ३७२  
(२)  
एकातेरिना-नहर—३६५  
एकातेरिनोस्लाव्ल—२६३, ४१४  
एगमन वातिर—४९६ (एगमन  
वातिर, सुमस्क)  
एचुवक—३५५  
एडवर्ड सप्तम—४०७

एडिसन—३९६  
एतियक—२८२  
एतिसन—३३९  
एदेनिया—३३७  
एदेस्सा—८, १४१  
एवट (कप्तान)—४७४, ४७५  
एवुस्किन—१२६  
एमिल—१२१, २९५, २९६,  
३३६  
एमिलगूचूर—२९८  
एम्पेरातोर—२५६  
एयागुज—३४९ (नदी)  
एरअली—३४५  
एरगस—५२० (शेख), ५२२,  
५२३, ५२४, ५४२  
(एरगेशलाम)  
एरगेना—१२७  
एरदेनी लामा वातुर खुञ्ज  
थैची—३३५  
एरमिताञ्ज सम्रहालय—५७  
(लेनिनग्राद)  
एरमिन—३७  
एरली—३५१ (-सुल्तान),  
३५६, ४६८  
एरसारी—५४७ (तुर्कमान)  
एरापतोफ—५५०, ५५१, ५५२,  
५५३  
एरेवान—५५४  
एरेंक—२१२ (औरग)  
एचिश—३३८ (डर्तिश)  
एर्ज़न—४८  
एर्तकईनक—४६८  
एर्दन-वआतुर—३२६  
“एर्देनी सूकितू वआतुर खुञ्ज-  
थैशी”—३३३  
एर्दवेर्ग (कर्नल)—४६७  
एलची—३३ (जनदूत, महादूत),  
१३९  
एलवा—२४  
एलातज़—६१



एलिजावेत—१९३, २५५, २५७,  
२६८, २९१  
एलिजावेतोपोल—३७१  
एलियोत—२४३, ३२६  
(ओइरोत), ३३२  
एलूतियान—३७२  
एलेथ्रोडिसिम—३८३  
एन्व—३७० (द्वीप)  
एल्वर्म—४८२  
एवज ईनक—४६९  
एवरदी—१३५  
एवैकी—२४४  
एन्० ए० (=समाजवादी  
क्रांतिकारी)—५१९, ५३८  
एसम्पन—६२  
एमाउल्लेको—५२५  
एमुन—१३३  
एसेन—३०७  
एसेन—३२, १३३, १३४  
(-बुगा), १६६ (-स्तान)  
एस्तोनिया—५२८  
एगम—३७८, ३८६, ३९२,  
३९३, ३९५  
एडर विनियस—२२६  
ऐगुन—२५५, ३८८, ३८९  
(-सधि)  
ऐचुव—३५३  
ऐदित—४८३  
ऐनी—८९३ (मदरहीन)  
ऐनक—१६१, १६७, १७९,  
१६० (=वईवक)  
ऐमुगिर—१७८, ४८४ (साडी),  
(=अमुगिर)  
ओइरोत—२१७  
ओइरोत—१९२, २७१ (मगोल),  
३०१, ३३७ (कन्मक), ३३८  
ओइरोतिया—२७१  
ओइरोत—१६६, ३२१, ३२५  
(=ओगियोत, देओ  
ओइरोत)  
ओका—२२, ५१, ७४, ८२,  
९०, ९२, ९६, ९८,  
१००, १०९, २३४, २४७,  
ओगलान—६, ५४, ५६  
(राजकुमार), ६१, १०२,  
१३६, १४४, १४५, १६५  
ओगिन्स्की—३६५  
ओगूज—१०३  
ओगोताइ—४ (छिड गिस्-पुत्र),  
२३, २५, ४७ (ओगोदाई),  
१२१, १२५, १२६,  
१२७, १३० (कंदूका  
पिता), १३३  
ओइ-खान—१८  
"ओचाकोफ"—४०२  
ओजेरो—११४  
ओजेनया—३५१  
ओडेर—६, २३  
ओडेर-यर फ्राकफोर्त—२५८  
ओडोनोवेन—४९१, ४९२  
ओतकची—५३०  
ओतरार—५६, १२७, १२९,  
१५३, १६८, १६९, २७७,  
३४६, ३५३ (-उतरार)  
ओस्तेपयेफ—२१८  
ओतामिश—४९१ (तुर्कमान,  
तेक्का)  
ओतियक—६  
ओडुलियो—२३८  
ओदूल—२७१  
ओनेगा—९४  
ओपेरा—३२४, २६६  
ओपेलन—२७  
ओपेचनिना—१०८, १०९  
ओव—११४, २२७, २३८,  
३१६, ३१७, ३१८, ३१९,  
३२४, ३२६, ३३३, ४८९  
(ओनलास्त=तहसील)—५३१  
ओम्स्क—२५१, ५३०  
ओवम्क्या क्रेपोस्त—३३३  
ओयरोत—२४३ (=ओइरोत)

ओइरोद)

ओरखोन्—५ (मगोलियामें)

ओरगान—१२८

ओरगाना—१२७, १२८, १३९

ओस्ताग—५७ (उच्च पर्वत)

ओरदा—१८, २०, ४५, ४६,  
५० (-उलुस), ५१, १५७  
(जूछि-पुत्र), १६५, २८७,  
३४३ (=ओर्दा)

ओरदिन्-नाश्चोकिन्—२४१

ओरनाक—२९७ (=ओजनाक,  
ओरतक)

ओरमुज्द—१०३, १५७

ओरलोफ—२५९, ५२५

ओरसोवा—२३

ओरी—३४३, ३५१, ३५९  
(नदी)ओरेन्त्रा—२६ (दुनियेपर दक्षिण-  
तट)ओरेन्चुर्या—२६१, २६२, २७१,  
२९१, ३४४, ३४५, ३४८,  
३५१, ३५२, ३५४, ३५५,  
३५६, ३५७, ३५८, ३७८,  
३७९, ४२५, ४३१, ४३२,  
४३५, ४४५, ४४६, ४४८,  
४५२, ४६८, ४७३, ४७४,  
४८१, ४८४, ४८५, ४९५,  
५१८, ५२२, ५२५, ५३०,  
५३२, ५३५, ५४४, ५४९,  
५५०

ओरेल—११०, ४०९

ओर्जोनीकिद्जे—४०५

ओर्तुक—४८०

ओर्ताकिया—४८३

ओर्दाशेख—४२

ओर्दू—४२ (अक्-), ५३० (मध्य,  
महा-)

ओर्दू-वालिक—५ (कराकोरम्)

ओर्मुज—१०३

ओस्क—३४१, ३७८, ४४८

ओ-ला-पू-छू-योर—२५३

ओलिगर्द—९८

ओलिओत—३२४ (ओरिओत्)

ओलेकमा—२४२  
 ओलेग—७७, ७८, ८३  
 ओल्सिये—५०८  
 ओल्गा—८२, ८३  
 ओल्गर्द—३८, ५२  
 ओल्जे—१४८, १४९ (=ओल्जइ)  
 ओल्मुत्ज—२४  
 ओश—३०५, ४२१ (अजीवी),  
 ४२२, ४२५, ४३१, ४३५,  
 ४३६, ५३८  
 ओशुन—५२९ (उज्वेक)  
 ओसतेइ—५२  
 ओस्तियाक—११०, ११२, ११३,  
 ११४, ११५, ३१६  
 औरगजेव—११६, १९१, १९४,  
 २११, २१२, २४१, २४६,  
 २४७, २४८, २४९, २५२,  
 ३२८, ४६४  
 औरग तेमूर—५०  
 ओल—३५८, ४२९ (गाव),  
 ४७८, ४९३ (तुर्कमान  
 गाव), ४९५  
 औलियाआता—४२९, ४३२,  
 ५३०, ५३३, ५३४, ५३६,  
 ५३७  
 औहदी—१४४, १४५  
 कआन—१२१, १२६, १३२,  
 १३५ (चीन-सम्राट्), १३९,  
 (=कगान, खाकान)  
 ककमा-बुरुजी—२९८  
 ककाई—१९२  
 कखोस्क—३७५  
 कगान—५५०, ५५१, ५५४  
 (=कआन)  
 कगानोविच—४१४, ५०८  
 कचर—६  
 कचाई—५१५ (उज्वेक)  
 कजखोफ—५२१  
 कजगन—१३६, १४८  
 कजनची—४९  
 कजलोफ—५४९  
 कजवीन—१८१, २००  
 कजाक—११०, १५६, १६८,

१६९, १७२, १८०, १८७  
 २०९, २६१ (एसियाई),  
 २७६, २७७, २९३, ३०७,  
 ३११, ३१३, ३१७, ३२१  
 ३२६, ३३१, ३३७, ३४३  
 (उज्वेक-कजाक), ३४७,  
 ३४८, ३७८, ४१६, ४१५,  
 ४३३, ४६४ ४६७, ४६९,  
 ४७१ (चेकली, तुर्त-नारा,  
 चूमे, जलैर), ४७३, ५१७,  
 ५२४, ५२५, ५२८,  
 (जातिका निर्माण), ५२९,  
 ५३१, ५४९  
 कजाकखाना—२९१  
 कजाकस्तान—१२१, १५७,  
 ३६१ (गणराज्य), ४५३,  
 ४८९, ५१२, ५२८ (में  
 क्रांति)  
 कजची—५२५  
 कजान—२७, ३७, ६८, १००,  
 १०२, १०३, १०६, १०७,  
 ११०, ११२, २३४, २६२,  
 ३१५, ३५०, ३५१, ३५४,  
 ३६६, ४०१, ४६५, ५४८  
 (तारतार)  
 कजाला—४३०, ४८२  
 कजालिन—५३३, ५३४  
 कजालिन्स्क—४८१  
 कजुलई—६५  
 कतक—२९६  
 कतगन—४६०, ५४९ ५१४,  
 (उज्वेक)  
 कताई—४९, ३६५,  
 कताकुल—१०  
 कतापुलत—२५  
 कतुजोज—३६६, ३६८, ३६९,  
 ३९८  
 कत्ताकुर्गान—४७७, ४५८  
 (कता), ५१८, ५१९,  
 ५२०, ५२४  
 कनली—५१६ (उज्वेक)  
 कनवान—१६६  
 कनाई—३२१  
 कन्जुर—१३ (बुद्ध-वचना-

नुवाद)  
 कन्दहार—१७२, १९२, १९३,  
 ८९९ (कधार), ५४३  
 कंदुर्च—५९  
 कन्फूसी—१२  
 कन्स्तन्तिनोपोल—२९, ३६,  
 ३७, ७५  
 “कप्तान-कन्या—२६६, ३८४”  
 कफफा—५६, १०४ (कफा)  
 कबक—३०  
 कबतेरून—३२१  
 कबाका—३००  
 कबात—५१४ (उज्वेक)  
 कवादियान—१७७, १९२, ५२६  
 कबिलककला—३१०  
 कबीकलर—३१०  
 कबूल—१९०  
 कमकर-प्रतिनिधि-सोवियत—  
 ४१७  
 कमचत्का—२५३  
 कमचादल—२५३  
 कमारोफ—४९७ (महाराज्य-  
 पाल), ४९८ (जेनरल)  
 कमाल—५५, १४७  
 कमालुद्दीन—१३८, १४४, १६२  
 कमिस्ती—४८४  
 कम्युनिस्ट—३७९ (—पार्टी,  
 लीग), ५५०, ५५३  
 “कम्युनिस्ट घोषणा”—३७९,  
 ३९३  
 कम्युनिस्ट सरकार—३९१, ३९२  
 कम्स्चदाल—२७१  
 कयान—५१५ (उज्वेक)  
 कयालिक—१८, १२५, १२७  
 करडत (केरगुदी)—३२५  
 करकर—३३४  
 करकी—४५३ (=केकी)  
 करकुल—१२८  
 करगालचेन—३१४  
 करगोपोल—२२१  
 क—५७ (गदा पर्वत),

१८७	५१६	कराशर—१५२, २९८, ३०४, ३०९, ३३२
करदाखली—५४७ (तुकुमान)	कराकुल—१६८, १७०, १७१, १७६, १९३, २१०, ४५६, ४७२, ४९९, ५३३, ५३४	करासू—१४३
करखला—१७७	कराकेचिन—५३७	कराहुलाकू—१२६
करमझिन—२५, ३५, ६३, (करमाझिन), २६६, २७१, ३१८	कराकोरम—५, ६ (मगोलिया में), ७, २६, १२७, १२८, १३५, १४५, ५३०	करी—५१४ (उज्वेक)
‘करमाजोक भाई—३९२		करीमवर्दी—६५, ३०५ (दोगलत)
करमीना—१२४, १९०, २११, ८८७, ५२६	कराखानी—१२४	करेला—११६, २२२
करमी—१२९, १३२, १३४, १३६, १४८, १४९, १५०, १६२, १७०, १७४, १७५, १७६, २१०, ३००, ४३९, ८८६, ८४७, ४५१, ४५३, ८५६, ४५९, ४७१, ५५२	कराखिताई—२१, १२४, २९३	करेलिया—२५१
करमी-नधि—२३४ (करमी०)	कराखोजा—२९७	करोपत्किन (राज्यपाल)—५३७
करमागलेन—३२७	करागन—४६५	कर्त—१३५, १४८ (खुरासान)
कर मावरान—५५	करातगिन—५२७	कर्तू—५१४ (उज्वेक)
करस्तचिक—८८८	करागुचुर—२९७, २९८	कर्मकची—४३०
करा—१२७, ४८९	कराचा—११३, ११५	कर्मिनिया—४४१
कराअममन—२७९ (करासामा)	कराचार—१४८	कर्मीना—१७६
कराखलू—२०३	कराचिन—११२	कर्स—३८६, ३८७
करा-इतिश—३२६	कराचिनवग—१६७	कलकत्ता—३७७
कराउजियक—४३०	कराची—१९६	कलखान—१८९ (महासेनापति), १९१, २०३ (युवराज)
कराकल्पक—६२ (=काली टोपी), २८०, २९०, २९२, ३४६, ३८८, ३५०, ३५१, ३५३, ३५६, ३७८, ४६६, ४६९, ४७०, ४७३, ४८६, ४८६, ५१५ (उज्वेक), ५४८ (तालाद-भाषा)	कराचुक—५७	कलगन—२२७, २४२
कराकल्पक-कुस्तमगली—५१५ (उज्वेक)	करातगिन—४२६, ५२७, ५४५, ५४६	कलगा—१७३, १७६
कराहन्नी—२१०	कराताउ—१८०, २७९, ४३२, ४८१ (पहाड)	कलाखम्ब—५४३ (दरवाज), ५४५, ५४६ (किला खुम)
करा-तनमत—२१७	कराताग—५० (=कराताउ)	कलिनतई—१४४
करातिन—८८४	कराताल—५०, ५१, २९८, ३३१, ३६१	कलिनिन—९६, ४०६
करातिगि—६२८	करातुकाई—३०४, ३१२	कलियान (हक्का)—४४०
करागुमि डेरि—३६०	करातुरगई—५८	कलीम (भेंट)—४२९
करागुम (राजा मातू)— १२७, १९९, २९६, ६७३, ६८०, ६८१, ६८८, ६८९, ७९१, ७९५	करातेपे—३३९	कलगा—२२०, २२२, ३७८
करागुमक—११५ (उज्वेक),	करावत—५५४	कलेची—५१४ (उज्वेक)
	करावाग—५५, ६७ (ईरान), १४६	कलेगियो (=परिपद्)—५५१
	कराबुरा—५१५ (उज्वेक)	कलोम्ना—२२, ५२, ६१, ९६, ९७, २२०, २८९
	कराबुलात—३५८	कल्पक—४९४ (=टोपी)
	करामुहम्मद—५५	कल्परोत—२८९
	कराम्स्की—३९३	कल्मक—११४, १५९, १६६, १८७, १९६, २०६, २०८, २०९, २१०, २१२, २३५, २३७, २६१, २८०, २८२ (मगोल), २९१, २९६, ३०४, ३०५, ३०८, ३१०, ३१६, ३१८, ३१९, ३२१, ३२४ (जुगर), ३२५, ३२६, ३२७, ३३०, ३३५,
	करायुयुक—५४७ (तुकुमान)	
	करायेवली—५८७ (तुकुमान)	
	करागकका—३४५ (काली दाडी)	

३३७, ३३८, ३४०, ३४१,  
३५१, ३५२, ३५४, ३५७,  
३६८, ३७२, ३८५, ४६४,  
४६७, ४८०, ४९०, ५१४  
(उज्वेक), ५४८  
कल्मक-थैची—३०७, ४६५  
(आयुका)  
कवामुद्दीन—१५७  
कवि—१७५, १९०  
कशलतिन—५३७  
कश्क—४५८ (-उपत्यका)  
कस्तुत—४५७, ४५८ (-डाडा)  
कश्मीर—२९९, ३११, ३१८  
४२६  
कसतिमूर—४८  
कसलोफ—२१७  
कसाक—३९, १०८, ११०,  
२०६, २०८, २२४, २३०,  
२४३, २८८, ३१७, ३४१  
(खसी-), ३४४, ३५७,  
३७८, ४०१, ४०७, ४२४,  
५०६, ५०९, ५१०  
कसाकान—३३५  
कसिमिर—३८, ३९  
कसीवी—८२ (चिरकास)  
कगली—५१४ (उज्वेक-किपचक)  
कस्तेक—२९७  
कस्त्रोमा—६३  
कस्साव हैदर—१५०  
कहेत—५१५ (उज्वेक)  
ककली—२१, ४७१ (तुर्कमान)  
ककुरत—१८, २०, ३०, ४७,  
५१, १९२, ४५९, ४६४,  
४६९ (कुनगरद), ४७१  
(तुर्कमान) ककुरत वश—  
४७०-८७ (वश)  
ककोर—११०  
कग—५१७, ५३० (=ककली,  
कगली), ५४८  
कगरबेइन—३४१  
कग-ली—२६, २०७, ४६१,  
५१७, ५२८, ५२९, ५३०  
(कजाक), ५४१  
कगडा—५२८

कगुल—१६६  
कचुवार—३१९  
कजिगली—५१६ (उज्वेक),  
५३० (कजाक)  
कदुरता—६०  
काइइ—५४७ (तुर्कमान)  
काइड—६  
काइतक—६१  
काइप—३५०, ३५३ (द्वितीय),  
३५५, ३५६  
काउ-चुङ्ग—२६४, ३३४, ३४७,  
४२१  
काउट वित्ते—४०४  
काउ-ताउ—४२१ (दडवत्)  
काकेशस—५१, ६१, १०१,  
१४१, १५०, १५१, ३६७,  
३८३, ३९९, ४१३, ४५३,  
४७२, ४८४, ४९४, ४९६,  
४९७, ५०८  
काखोव्स्की—३७६  
काजान—१३६ (-कजान)  
काजार—१०७, ४४१, ४४२,  
४७२ (ईरानी), ४९०  
काजी—१५७  
काजी अख्तियार—१७२  
काजी कुरगान—५४४  
काजी पायन्दा—१८३  
काजीबेग—५५३  
काजी मुल्ला—३७७  
कात—३२, ५३, ५४, ५६,  
१९९, २००, २०१, २०२,  
२०३, २०४, २०६, २०८,  
३००, ४८५  
कादिर कुलोफ—५५२  
कादिर नदी—३५३  
कादिर बर्दी—६९, २८६  
कादेत—४१०, ५०८, ५११  
कानियेफ—२६  
कानून—१५४  
कातन—३७४  
कास्तन्तिन—७३, ८७  
कास्तन्तिनोपोल—१०, ११, ७२,

७७, ७८, ७९, ८३, ८४,  
१०१, १०५, १०६, ११६,  
१५९, २३०, २६०, २८४,  
३६७, ३७७, ३८०, ३८६,  
४३४, ४७८, ४७९, ४९५,  
४९७  
कापबहादुर—५०  
काफमान (जेनरल)—३८७,  
४३५, ४३६, ४५२, ४५७,  
४७९, ४८०, ४८१, ४८२,  
४८५, ४९४  
काफिर (बौद्ध)—३१३, ३२४,  
३३५, ५२३, ५४९  
काफिरनिहा—४५५  
काफिर-रवात—४४०  
काफिर-यारिग—३१०  
काफिरिस्तान—३११ (लदाख)  
काबिलशाह—१३७, १४९  
काबुल—१५१, १६६, १७२,  
१७६, १८०, १८९, ३०७,  
३०८, ३०९, ३१३, ४४१,  
४४२, ४४७, ४४८, ४४९,  
४५०, ४५९, ४६०, ४६३,  
४७५  
काबूशान—१५०  
कामचत्का—२५६, ३७२, ३७३,  
३८१  
कामरान—१७९  
कामा—७३, १०९, ११०, १११,  
२३४, २८७, २८९, ३६५  
कामिल (हामी)—३०८  
कामेनेफ—५०६  
काम्बालू—११ (पेकिङ्ग,  
खान-बालिग)  
कायिप—४६८, ४६९ (=काइप)  
कार—२६२  
कारकिन—५४८ (तुर्कमान)  
कारपीनी—२४, २६  
कारपेथीय—२३  
कारवासराय—५५२  
कारा—५१५ (उज्वेक)  
काराई—१८५, १८६  
कारासमन—५७

कारिक—५४८ (तुकमान)  
 कार्ल नावर्स—७७, ९५, ३७०,  
 ३८२ (नावर्स)  
 कार्ल पीतर—२५७  
 कार्सिका—२६९  
 काट—२०१  
 कालासागर—७२, ७८, १०१,  
 १०४, १०७, ३६५, ३७७,  
 ३८०, ३८६, ४००, ४०२,  
 ४१३  
 कालिदास—१६०, ३८३  
 कालीकट—१०३  
 काली हड्डीवाले—३५८  
 (माधारण जनता)  
 काले—९४, ४२५ (कालेखोजा)  
 काले पहाड़ी—३३२  
 कालाजोक—११३  
 काशकुपिर—४८५  
 काशगर—३२, १२१, १२४,  
 १२८, १४४, १४८, १६९,  
 १६१, १६४, १७६, १८०,  
 २७५, २९३, २९५, २९७,  
 २९८, ३०२, ३०३, ३०७,  
 ३०८, ३१०, ३१३, ३२५,  
 ३२८, ३३२, ३३३, ३३५,  
 ३६७, ६२२, ६२६, ४२५,  
 ६६०, ५२०  
 काशगरिया—३०२, ३०९  
 काशान—१०६, १५३, १५७  
 कानिम—१०२, १७२, १९०,  
 ३०९, ६२९  
 कानिम गान—६९, २७७ (जानो-  
 बेग-पुय)  
 कानिम गुलान—११०  
 कानिमोऊ—१०३, ३१८, ३५८  
 कानियन—३८, ७२, १०८,  
 ११६, १३१, १३७, १९६,  
 २०३, २०५, २३३, २८६,  
 ३३४, ३६२, ३५२, ३७१,  
 ३७०, ६६६, ६६५, ६७२,  
 ६८८ (नै ३.३), ६८९,  
 ६९६, ६९८, ६९९, ५००,  
 ५३१, ५३७, ५६८, ५५०  
 केराला—६८६ (नदी)

किचिक खानिम—२९८ (छोटोरानी)  
 किजिनजिली—७१६ (उज्वेक)  
 किजिल—१७४  
 किजिल अगिर—४८४  
 किजिल अयाक—५५१  
 किजिल अर्बत—४८०, ४८९,  
 ४९०, ४९५, ४९९  
 किजिल-ओर्दा—५१८, ५३३  
 (पेरोव्स्की), ४३४  
 किजिलकाक—४८१  
 किजिलकिया—५२०  
 किजिलकुम—१७४, १९६,  
 ६१५, ४८०, ४८१,  
 ४८२, ४८६  
 किजिलजार—४२४  
 किजिल तेपे—५२४  
 किजिलपू सइस्सन—३२८ (झील)  
 किजिलवास—१९१, २०२ (शिया),  
 २११, ४७२, ४७४ (ईरानी)  
 किजिल-वुर्कोव्स्की—५३१  
 किजी—३८१  
 कितकी—४२४  
 कितकी कराकल्पक—४२३  
 किताई—४८४, ५२९ (कजाक)  
 किताई-किपचक—३२१, ३३९  
 किताव—४५६, ४५७  
 कितू-चुका—७  
 कित्तन—४ (राजवश)  
 कि सु—४७७  
 किदेरो—४८१  
 किन्—५ (चीन)  
 किनगिज—५१५  
 किनवर्न—२६३  
 किनिर—४८४  
 किन्देली—४८४  
 किपचक—६, १३, १८ (वर्तमान  
 कजाकस्तान), ३६ (सुवर्ण-  
 ओर्दू), ६९, ५०, ५२, ५४,  
 ५५, ५६, ६०, ९७ (मंगोल),  
 १२१, १३०, १३१, १३२,  
 १४३, १५६, १६५, १९१,

२७५, २८४, ३४३ (जूछि-  
 उलुस), ४२७ (तुर्क) ४२९,  
 (कजाक), ४३१, ४३३,  
 ५१४ (उज्वेक), ५१६, ५२९  
 किपचक ओगलान—१३०, १३१  
 किपचक-कजाक—४२७  
 किपचक खान—१४४ (तोकिताइ)  
 १४५  
 किपचक-तुर्क—२७७  
 किपचकभूमि—४१, ५२८  
 किबत मिर्जा—३३६  
 किवित्का—२८२, ३३८, ४२९  
 (=तबू, परिवार), ४९२,  
 ४९४, ४९६  
 किविरली—३१८  
 किवेक—६६  
 कियाविक—११४  
 कियेफ—५ (-रूम), ६, २२  
 (विजय), २३, २६, ६२,  
 ६३, ७३, ७५, ७७, ७८,  
 ८२, ८३, ८४, ८५, ८६,  
 ८७, ८८, ९२, १००, १८३,  
 २१८, २२९, २३०, २४१,  
 २४६, ३७५  
 किरकिन—५१५ (उज्वेक)  
 किरकिपी—२१७  
 किरगिन—१६६, २७१, २७८,  
 २८२, २९३, ३०७, ३०८,  
 ३१०, ३११, ३१३, ३२४,  
 ३२५, ३२६, ३३०, ३३६,  
 ३३७, ३४१, ३५८, ३७८,  
 ३७९, ४०५, ४२४,  
 ४१४, ४१५, ४२७,  
 ४३४, ५१७, ५१९, ५२१,  
 ५२९, ५३०, ५३४,  
 ५३५ (पुराने कबीले),  
 ५४४, ५४८ (तारस्तार  
 भाषा)  
 किरताम—२०३  
 किरदार—५१५ (उज्वेक)

किर-मगिशलक—२०१  
 किरमान—१०४, ४४७ (-शाह)  
 किरिलोफ—३४४, ३४५,  
 ३५१, ३५२  
 किरैइत—५१४ (उज्बेक)  
 किरोफ—३९९, ४१४, ५०८  
 किर्क—५१४ (उज्बेक)  
 किर्गिज-कजाक—३१३, ३३२,  
 ३४१, ३४४, ३५३, ५३८  
 किर्गिज-जाति—५३६  
 किर्गिजिस्तान—१२१, ४०५,  
 ४५३, ५३५ (किर्गिजिया),  
 ५३८  
 किलदीवेग—४२  
 किला—१२१, १९०, २०६,  
 २११, ४६२  
 किला-अफगान—४६१, ४६२  
 किलिज नियाजबी—४८४, ४८५  
 किशलिक—५१५ (उज्बेक)  
 किशिनेफ—३८३  
 किश्म—४६२  
 किस्लेफ—१०२  
 कीतू-वुगान—१४०  
 कीनिन—५४७ (तुर्कमना)  
 कीनिख—५४७ (तुर्कमान)  
 कीसलप्-नोर—३२७ (सरोवर)  
 कीसिम—१३१  
 कुइलवाइन—२९२  
 कुइलुक—१३२  
 कुइबिशेफ—२३७, २९१, ५०८  
 कुउक—५१५ (उज्बेकिस्तान)  
 कुइ-सुई—३०२  
 कुकचा-तेङ्गिज—२९६  
 कुकिलताश—५५  
 कुकेर्दलिक—२१०  
 कुकुरगान—१६५  
 कुझको—३८९  
 कुक्रियान—५२  
 कुचुक—१३१, ३१९  
 कुचका—९१  
 ७८

कुचुम—११०, १२, ११४,  
 २८९ (खान), (=कूचुम)  
 कुचेई—३०९  
 कुजमा—२२४  
 कुजदूर—५१५ (उज्बेक)  
 कुजाश—१९७  
 कुतन कुनचेक—५१  
 कुतुगाई—१११  
 कुतुबुदीन—१२५, १४४  
 कुतुलुक—५७, ६२, ६४, १४५,  
 १५६, ३१० (मुगोलिस्तान)  
 कुतुलुकवुगा—४९  
 कुतुलुक मुराद—४७०, ४७१,  
 ४७७ (खीवा खान)  
 कुतुलुग निगार—३०४  
 कुतेबेरोफ—३५८  
 कुतैसी—३७१  
 कुदुक—४८२  
 कुनग्रद (कीयेत)—५१६  
 (उज्बेक)  
 कुनचुकताग—५७  
 “कुती”—८६ (चर्म)  
 कुनेगज—५१४ (उज्बेक)  
 कुन्दुज—५६, ४६०  
 कुपरुकी—२००  
 कुवकसरी—३२७  
 कुवरा—२७  
 कुवलुक—४७ (वयूलुक)  
 कुवान—१२१, २९१, ३३९  
 (-स्तेपी)  
 कुविले—७, १३, १२१, १२८,  
 १२९, १३०, १३१, १३२,  
 १३९  
 कुवी—४७  
 कुबुलुक—४७, ४८  
 कुम—१०४  
 कुमकद—२०१  
 कुमा—३३९  
 कुमासिया—२३  
 कुरगान—४५९

कुरगानतेप्पा—४६०  
 कुरचाकिश—३१९  
 कुरतुगी—५१५ (उज्बेक)  
 कुरतुत—३२१  
 कुरमीतान—४२४  
 कुरसेवे—१३३  
 कुरा—६ (काकेशसमें नदी),  
 २८, ३३  
 ५५, ६१, ७९, १४३, १४६  
 कुरान—१४८, १७२, १७९,  
 ३४५, ३५२, ४७९  
 कुरामा—४३६  
 कुरालस—५१४ (उज्बेक)  
 कुरी—३२१  
 कुरुक—१७२  
 कुरेन—२०४  
 कुरोपत्किन (जेनरल)—३९८,  
 ४१५, ५३७  
 कुर्द—४५०, ४९०  
 कुर्बान बेक—४४८  
 कुल—५१५ (उज्बेक)  
 कुलबवी—५१५ (उज्बेक)  
 कुलक—४०५, ४१४, ५३०  
 (धनी किसान)  
 कुलजा—१२१  
 कुलपति—३९० (रेक्टर)  
 कुलफा—४२  
 कुलमलिक—१७४  
 कुलमुराद—४६९  
 कुला थैची—३२६  
 कुलाब—५४ (-दर्वा,  
 =कुल्याब)  
 कुलारचोक—११४  
 कुलारेप्स्कया—११३  
 कुलिकोवो—९८  
 कुलिबिन—२६७  
 कुली—१५१  
 कुलीन—३३१  
 कुलेसालार—१८५

कुजा—२९५, ३२५  
 कुदाली—५१५ (उज्वेक)  
 कुलाव—४२६, ४५९ (कुलाव),  
 ८६१, ५२७  
 कुलरा—११८  
 कुवान—४८०  
 कुशवेगी—४२३, ४२६, ४८६  
 (प्रधान नैनापति), ४८७,  
 ४७४, ४७८, ४८१  
 (कोशवेगी)  
 कुश्न—३८८, ४९९, ५५१  
 कुषाण—४९२, ५४१, ५४८  
 कुसल—१५  
 कुमान—३०८  
 कुसियकवी—४२२  
 कुत्सू—३६१  
 कुकुर्त—५३० (=कुग्राद)  
 कुग्राद—२९२, ४१६ (उज्वेक)  
 ४७८ (राजधानी), ४८२,  
 ८८४, ५१५, ५१६, ५२६  
 (कजाक), ५३०  
 कुचोक—१५३  
 कुजी जागलान—५६  
 कुजेक—१३३  
 कुजुकुयल—१४३  
 कुजीनगर—२५०  
 'कुनुर् मजानी'—१४५  
 कुदु—१३६, ११७, १४९,  
 १६३, १७३, १७४, १८६,  
 १८२, ३०९, ४४२  
 कुदोन्ग ताउंगी—२८२  
 कुना—२१५  
 कुची—३१०, ३११  
 कुचुनग—१५१ (उधुपवंत)  
 कुचुनगी—१६६, १२९, १७३,  
 १७६, १८३  
 कुचुन—११०, ११०, ११६,  
 २०१, २०२, २८१, २८२  
 (गान), २१५, ३१७, ३२६,  
 ३३८  
 कु—१

कुञ्जालिक—५१५ (उज्वेक)  
 कुन्तन—५  
 कुनिश—२०२, ४२९ (-कुर्गान),  
 ४३०  
 कुन्यत—२०२ (=कुकुर्त,  
 कुग्राद)  
 कफा—३१८  
 कफी—१५४  
 कुवा—३७१, ५१६ (उज्वेक)  
 कुवान—३६, ६२  
 कुवेक—१४२ (ओलेज)  
 कुमिस—२१, २५३  
 कुयाश—१२५ (सूर्य)  
 क्यूक—१२६  
 कूरलड्, ड्यूक—२५६  
 क्रिल—३७२  
 कूरिताई—३, ४, ५ (महा-),  
 ७, ८, १४, २१ (महासद्),  
 २९, ३०, १२६, १२७, १३०  
 (महापरिपद्), १३३, १३७,  
 १३९, १४९, १५०, ३२५  
 कुलन—५१६ (उज्वेक)  
 कुली खुलाकू—४६  
 कुलेसालार—१८२  
 कुसउली—५१६ (उज्वेक)  
 कसिम-तुरा—११५  
 कुसहोलम—१२२  
 कुगेन—३३१  
 कुजेक—१३०  
 कुतेनेन—३३१ (पहाड)  
 कुताक—१०२  
 कुतात्युरा—४५७  
 कुतेकुसर—५१६ (उज्वेक)  
 कुनिगेज आइम—४५६  
 कुनेगुज—५१६ (उज्वेक)  
 कुनेसरी कामिमोफ—३७८  
 कुन्दरलिक—२७९ (नदी)  
 कुपेक मङ्ग गुत—४९  
 कुवदिली—५४७ (तुर्कमान)  
 कुवेन—१३३, १३४

केरइत—१८  
 केरगेदान—११०  
 केरमान—१४५, १५७  
 केरमारोन—३२  
 केहलोन—३२१, ३२९, ३३०,  
 ५३० (नदी)  
 केरेन्स्की—४१८, ५०३, ५०५  
 (समाजवादी क्रांतिकारी),  
 ५०६-१०, ५१९-२१,  
 ५२५, ५४९ (=करेन्स्की)  
 केर्की—५५०-५४ (-काड)  
 केर्कीवेग—५५४  
 केर्च—२६०  
 केलमिश—३०  
 केलार—३१  
 केलायस्त—७३  
 केलेमा—३१७  
 केश (=शहरसब्ज)—४९,  
 ५४, १३६, १४८, १४९,  
 ४५०  
 केसलोप—२१८  
 कैखुसरो—१५०  
 कैगली—५१६ (उज्वेक)  
 कैजर—१०७  
 कैयलिक—३८, १०१, १३४,  
 २३०, ३८० (घर्म)  
 कैङ्ग—१४ (मंगोल खान),  
 २३, २४, २९, ४७, १२८,  
 १२९, १३०, १३१-३३  
 (=काइद्)  
 कैदोल—११५  
 कैरोली—४५५  
 कैलन—३२१  
 कैसर—१०७, ३९७ (जर्मन)  
 कोइचरी—३११ (भेडोवाला)  
 "कोइतुल"—१०२, १०३  
 कोइविन—३३१  
 कोइरिबक—६१, ६२, ६३, ६६  
 कोइमुइ—३०१  
 कोइसू—३३१

कोक-ओर्दू—१८ (नील-ओर्दू),

४९

कोक-काशाना—१६६

कोकताल—३३१

कोकताश—१२५

(नीलपाषाण)

कोकतुनगुलु—५३०

कोकतुनचुई—५३०

कोकतेपे—२९७, (पर्वत) २९८,

५३९ (गाव)

कोकतेरेक—३३१

कोकपताश—४२१

कोकलताश—१८१, १८३, १८६,

३०० (नीलपाषाण), ४४७

कोकशुल—३१९

कोकाजू—१३०

कोकोनोर—३२८, ३२९, ३३२

कोगिलदे—३५९

कोचकर—२९७, ३१०

कोजिन—४६५ (लेफ्टनेट)

कोजुकोफ—२४७

कोज्रल्स्क—२२

कोतियक—२२

कोतो—२४१, ३७४

(साष्टाग दडवत्, काउ-  
ताउ भी)

कोनिचि—४६, १४४

कोनु ग—७५ (राजकुमार)

कोनुर-उलेन—३१०

कोनोवलोफ—४१८

कोनोली—४२६, ४५० (अर्थर),

४७६ (कप्तान)

कोन्या—१४३

कोपी—५२०

कोपेतदाग—४८९, ४९०, ४९२

४९५, ४९९, ५०३

कोपोरये—११६

कोबलेफ—३८२

कोबुक—१३३

कोव्दो—३२४ (पश्चिमी

मगोलिया)

कोमानिया—२६

कोमी—९४, ९८, ५२८

(-गणराज्य)

कोयनिगसवर्ग—२५८

कोरकान—१४८

कोरचिन—३२९

कोरफू—२६९

कोरिया—३, ५, ३९७, ३९८,

४००

कोरुक—५९ (सूखा)

कोर्ट—४४६ (अग्रेज चर)

कोर्ट मार्शल—४०२

कोर्दक—११४

कोर्निलोफ—५०५, ५०६

(जेनरल), ५०७

कोर्याक—३८, २७१ (=कोरिअक)

कोर्साकोफ—३८८

कोलचक—५३४

कोलुमा—२४०

कोलेसोफ—५२५

“कोलोकोल”—३८२ (कलकल)

कोलोम्ना—६

कोल्चकली—३४७ (नदी)

को जोफ—१११, ११२, ३१७

(=मोसाल्स्की)

कोल्त्सोफ—३८२, ३८२ (कवि)

कोवालेव्स्की—४४८ (कप्तान)

कोशकुर्गान—४३०

कोशुर—३१९

कोशोत—२१०

कोसका—६४

कोस्त्रोमा—३५, ५१, १०२

(त्वैर)

कोस्मेस—११०

कोस्सागोल—३२१ (झील)

कोहक—१५७, १५९ (नदी)

कोहिस्तान—३०४, ४२६, ४५८

कौतू—२५३ (=काउ ताउ)

कौनदी—४८४

कौरदक—३१७

कौरोश—५५४

क्याज—२२, ३१७

क्याउ-चाउ—३९७

क्याड—४८८ (जगली गदहा)

क्याड-नान्—५

क्यास्ता—२५५, २५६, २५७,

३८९

क्योरिग—३५७

क्राइ—५२४ (=प्रदेश)

क्राको—६ (=क्राकोफ), २३,

२६, २७, २१८, २३४,

४१०

क्राति (१९०५ की)—३९८—

४००

क्राति-विरोधी—५२२

“क्रामवेल”—३७०

क्रास्नोयास्क—२३८, ३५७,

४०३

क्रास्नोफ—५१० (जेनरल)

क्रास्नोवोद्स्क—४६५, ४७२,

४८०, ४८१, ४८३, ४८६,

४८८, ४९४, ४९५, ४९६,

४९९

क्रिम—३०, ८३

क्रिमिया—३६, ३९, ५१, ५६,

६०, ७२, ८३, ९६, १००,

१०१, १०६, १०७, १०९,

११६, १५१, २२५, २३०,

२३१-२३२, २३३, २३५,

२४६, २४७, २४८, २५०,

२५७, २६०, २६१, २६२,

२६३, २८७, ३१८, ३३९,

३४०, ३५४, ३८० (-युद्ध),

३६५, ३६८, ३८६, ४५३

क्रुजेन्स्तर्न—३७२, ३७४

क्रैमलिन—३५, ९८ (दुर्ग),

१०५, १०६ (=क्रैमल),

१०९, २१९, २२०, २२४,

३६९, ५१०



क्रोन्स्ताट्—२, २५९, ४०२

क्रोपत्किन—३८८, ४९८

(जेनरल)

क्रोपोतोफ—२६४

क्रोवात—३६८

क्रोमी—२१८, २२०

क्रोमोफ—५०७ (जेनरल)

क्रोनिया—६ (युगोस्लाविया)

क्लपकोफ—३२७

क्लाइव—३९०

क्लुगिनो—२२२

क्ल्याज्मा—९०, ९१

क्विट्शिथेफ—४१४ (कुइवि-  
शिथेफ)

क्विनलन—३३४

क्वेटा—४९९

खकास—२७१, ५३५

खताई—१३०

खवारोफ—२४२, २७२, ३७४,

३८०, ३९०, ४१७

खराखुल—३२१, ३२४, ३२५

(चोरोस)

खकिर—३३१

खकाफ—३६६, ५५०

खगोश—३३१

खलखा—३२१, ३२४, ३२६,

३२८, ३२९, ३३८, ५४८

(मगोल)

खन्ता—४८२

खन्वा—३२१ (इलवा)

खलीता—३४, ९७ (पैसेका  
धैला)

खलीता—१२१, १८०

खलीत—३३, १३५, १५६, १५५

खलीत मिर्जा—१५८

खलीतवेग—१०२

खलीत—५५५ (उज्बेक)

खलीत—२२१

खलीत—२२३

खलीत—१०५

खज्जगीर—९५

“खम्सा”—१६१, १६२ (पचक)

खस्तमीनारेसी—२०८

खकिरिन—१२७ (खूकिरान)

खाइत—३००

खाइकानाक—३०८

खाकान—७४, १३९ (=कआन,

कगान)

“खाकानेजहा”—१७९ (दुनिया

का राजा)

खाइसी—२४३, २५३, २५४,

३२४, ३२८, ३२९, ३३१,

३३२, ३४० (चीन-सम्राट्)

खाजार—२० (खजारदरवन्द),

७३, ७४, (बहीरा खाजार),

७५, ८३

खाजासलीम बी—५४५ (सामी

पाशा)

खानून—२९

खान—५३, ५४, १००, १३२,

१९७, २३२, २७५, ३७८

(राजा)

खानकाह—१९३, ४६७

(ख्वारेज्म)

“खानकाह-शफाइया”—१६१

(सार्वजनिक अस्पताल)

खानजादा—१७१, १७३,

(वेगम)

खानतिद्धरी—५३५ (शिविर)

खानजादा नोगाई—२८४

खानपुलाद (बुलात)—३४३

खानबालिग—११, १३ (पेकिङ्ग)

खानम—१८५

खान-वश—६८

खान्स्की—५५२

खानावाद—१९१, १९२

खाप—१८१

खामिल—३२८, ३३०, ३३१

खार्कोफ—५०८ (=नार्काफ)

खानद—१२८

खाविद-तुहर—३०६

खाविद विकी—१६०

खिज़िर—४२, ४८, ६५, १३३,

२०१, ३१५

खिताई—१०३, ५१४ (उज्बेक),

५१६

खियाली—१५८

खिंगन—५३० (पर्वतमाला)

खीवा—५३, ५६, १३७,

१६९, १७८, १९१,

१९६, १९९, २०१,

२०४, २०८, २१०,

२११, २५१, २७१,

३०५, ३५१, ३५२,

३५३, २५८, ३७८

(ख्वारेज्म), ३७९,

३८७, ४२६, ४३१,

४३२, ४४४, ४४८,

४५०, ४५१, ४९०,

४९२, ४९४, ५१७

५२५, ५३५, ५५५

खीवा-खान—१९६, ४६४-८७

(-खान), ४८६ (-सधि-मय)

खुई—४०

खुइ यैची—३२७, ३२८,

३३१, ३३३ (=महाराजा),

३५३

खुतकताई—३३८

खुतुलुन—१३२

खुतल—५६, १७३, १७४

(खुतलान)

खुदादाद—१५५

खुदावदा—१३३, १४५

खुदायार बी—४५५ (बी),

४५१

खुदायेफ—५३३

खुन-यैची—३२५ (=खुइयैची)

खुनबुका—५

खुविले—३ (कुवले), २९

खुम्बान (चश्मेसब्ज) — ४९९  
(डाडा)

खुम्स — १०३

खुरासान — ६, ५६, १०४,  
१३०, १३३, १४३,  
१४५, १५४, १७३,  
१७६, १९६, १९९,  
२७७, ४४३, ४५०,  
४६७, ४७२, ४८२,  
४९१, ४९२, ५३९

खुर्रमसराय — ४२०

खुलफा — ४८

खुलाकू — ३, ६, ७ (हुलाकू),  
८, २७, २८, २९,  
३१, ३६, ३८, ४७,  
५४, १२१, १२७, १३९  
(खुलागू)

खुल्म — १७९ (खुल्म), १९४,  
४४९, ४६०

खुसरो — ७, ११४, १४६  
(अमीर), १६१

“खुसरो-व-शीरी” — १६१

खू-जिन खातून — २०

“खूनी रविवार” — ३९९, ४००,  
४१०, ४१२, ४१४, ४१५

खूरियानी — १५८

खू-लुग — १४, १५

खेसॉनिस — ८३

खैरतुल्-अतरार — १६१

खैयाम — १३९

खैर हाफिज — १८३

खैराबाद — ४९९

खोकद — १६३ (फरगाना),  
१८०, ३३६, ३३७,  
३४७, ३५८, ३६०,  
३७८, ३७९, ३८७,  
३८८, ३९४, ४२१,  
४४०, ४४८, ४५०,  
४५१, ४५५, ४५९,  
४७६, ४७७, ४७८,

४८६, ५११, ५१७,  
५१८, ५१९, ५२०-२३  
(स्वायत्ततावादी), ५२४,  
५२५, ५२६, ५३५, ५४०,  
५५०

खोजकी काशानी — १८३

खोजद — २७, ३२, ५६,  
६७, १२२, १२८,  
१३०, १३८, १४८,  
१५९, १८०, २००,  
२११, २७९, २८०,  
३०७ (-नदी), ३४३,  
४२२, ४२५, ४३१,  
४३२, ४३३, ४३६,  
४४२, ४४४, ४४७,  
४५१, ४५५, ५१८  
(=लेनिनाबाद), ५२०

खोजम्बाज — ५५३ (गाव)

खोजर — १७४

खोजा — १४९, १६१, १६६,  
१६९ (-यहिया), १८३,  
२९१, ३३३ (-अहमद),  
३३६, ३३७ (=सत),  
४५५, ४६७ (=सैयद)

खोजा दानियल — ३३२

खोजा नियाज — ४७७

खोजा — १७७ (-दीदार), १८३  
(-बहाउद्दीन), २०६ (-कुल),  
३३२ (-दानियाल), ३३५  
(-यूसुफ)

खोजार — १७०, १७५

खोजेइली — ४८४

“खोजेनिये जा-त्रि-मोर्पा” —  
१०१ (अफनासी यात्रा)

खोतन — १८०, ३६८, ४२५

खोदमीर — १६१

खोन्दा — ३५७ (नदी)

खोयेत — ३३५

खोरवात — ७१ (क्रोवात्)

खोरसोन — ८३ (खोरसुन)

खोरोत — ३२५ (चोरोस)

खोरोशिन — ४८६

खोर्तित्सा — २३०

खोलोपगोरोदक — ३५

खोल्मोगोरी — २६५

खोशकुर्गान — ४२९

खोशोत — १६६, २८२, ३००,  
३२८, ३३२ (खोसोत्)

ख्मेल्नित्स्की — २३१

खिसोवेर्द — ८३

ख्वाजा — १४३, १५३, १५६,  
४९८ (=खोजा)

ख्वारेज्म — १८, २१, २७, ३२,  
३६, ३८, ४१, ५१, ५३,  
५४, ५५, ५६, ६४, ६५,  
६६, ७१, ७४, १४५,  
१५०, १५६, १५७, १५९,  
१६६, १६७, १६८, १७८,  
१८१, १८२, १९०, १९३,  
१९६, २०४, २०९, २१०,  
३०८, ३१५, ३२५, ३३८,  
४४२, ४६४, ४६७ (गुलाम-  
मडी), ४९८, ५३९, ५४८  
ख्वारेज्मशाह — १२५

गगरिन — ३३३

गज्जन — ३१, ३९, ४६ (खान),  
६४, ६५, १०३ (गज्जान),  
१३२, १४४ (=गज्जान)

गज्जनी — २८, ४७, ४८  
(गज्जना), १३४

“गज्जा” — ५४४ (=धर्मयुद्ध)

गज्जारिन — २५३

गटफिड ग्रेगोरी — २४१

गत्चिना — २६८, ३९० (-वदी),  
५१०

गदुनोफ — ११५, ११६, २३८,  
३१८

गन्दन — २८२, ३२९, ३३०,  
३३१, ३३३ (-छेरिङ्ग),  
३४३, ३४६, ३५९, ३६०

(कुत्तिमन), (=गल्दन)

गपेवेक—५२५

गपोन (पादरी)—३९९

गपफारी—४८, ६४, ६५

गयतोन्—१२७

गयामुद्दीन—१४६, १५६, १५७,  
१६१

गरवीन—३२

गरम—५४६

गरविलोन—२४४

गरसरदार—५५२

गराव—५३९ (गाव)

“गरोद्दिनीची”—२६२

गलवाचेक—४३६ (जेनरल)

गल्दन—१६६, ३२८, ३३४  
(गदन), ३४५ (छेरिञ्ज)

गलिसिया—३८, २६०, ४१३

“गसूदर”—१०० (=स्वामी)

गगा—४३०, ४९९

गघार—१४ (पूर्व-युद्धन्)

“गाजी”—५४४ (धर्मयोद्धा)

गाय—७२

गालिच—८३ (हालिज),

८४, ८८

गालिच-वोलोहुन्स्क—९२

गालित्स्न (राजुल)—४६५

गालित्स—८२

गाले—५१५ (उज्वेक)

‘गादीवानोके गीत’—३८४

‘गायके गरीवोन्ति’—३९७

गिम्बुवान—१५५, २११

गियाउर—४८९, ४९७,  
(उपत्यका)

गिरतो—२०५

गिरदे—१६७ (वेग),

२७७, ३०३

गिम्बेक—११०

गिम्बित—३११

गिम्बेक—२८०, २७१, ३८१

गिम्बे (अकगान)—१९३,

१९४, ४४०

गिज्वुर्ग—५२५

गीलान—१०३ (गेलान)

गुइउक—२८५

गुइगुदार—२४२

गुचकोफ—४१८, ४१९

गुजार—१७२, ५२६

गुवर्निया (=प्रदेश)—२५१,

२६२, ३७०, ४०४, ४३२,

५०३, ५१२

गु-युक—२६

गुयेदिक—४७५

गुरजोफ—१०४

गुरलान—४८४

गुरलेत—५१५ (उज्वेक)

गुरियेफ—४६५

गुर्जिस्तान—३३ (जाजिया),  
१४४

गुर्जी (जाजिया)—६, ६०,

९२, १४५, १८१, १९२,

२५१, २७१, २७२, ३६९,

३७१, ३९५, ३९९, ४०५,

४७२, ५१२

गुलिन्स्क—३५१

गुलवाग—४२५

गुलाम—४९१

“गुलामान”—४९३

“गुलिस्ता”—४१, १४३

गुलिस्तान सधि—३७२

गूज—२०७, ४८९ (तुर्कमान)

गूनिब—३७७, ३७८

गूनेजी ओगलान—५६

गूरगान—१४८, ४२०

(कूरकान), ४७०, ४८९

(नदी), ४९०

गु-युग—६, १३१ (गूयुक)

गूशी (गथी)—३२८

गेगेन्—१५

गेदोई—५१५ (उज्वेक)

“जेनरलिस्सिमो”—२७०

(महा-महासेनापति)

गेनादी—१०२

गेनोवा—११, ३५, ३६

(गेनोवा), ३९

गेरेतू—३२४

गेरेवाल—३२४

गेरेसजा—३२४

गेविलोन—३२९

गेलन—१९२

गेलेसिया—३९ (=गिलि-  
सिया)

गैखातू—१४४

गैरतशाह—५४५

गैरमुल्की—१२९

गैरिसन (छावनी)—५२४,  
५५२गोकलान—२००, ४७२, ४९०,  
४९४, ५४७ (तुर्कमान)

गोगलन—३८४, ३९२

गोनजालेज—१५२, १५३

गोवी—३४२

गोयेज—३१३

“गोयेवेन”—४१३

गोरदेत्स—६३

गोरलाने—२९२

गोरलोव्का—४०३

गोरियान—१७६, १८१

गोरिल्ला-युद्ध—२२१

गोरी—१७६, १७९, ४६०

“गोरे-अमीर”—१५४

गोरेलोफ—५२५

गोर्की—९२, २६७, ३९६,  
४१७, ४४६

गोर्डन—२४६, २४९

गोर्दयेक—२९१

गोर्लिच—४१३

गोर्लिस्न—२४६, २५६

गोलोफ—४८१

गोलोवात्सोफ—४८१ (जेनरल)

गोलोविन—२३९

- गोलोव्किन—३७४  
 गौहरशाद—१५७, १६०  
 गेज्दा—९२ (कुलाय, धोसला)  
 ग्योक्तेपे—३८८, ४९३, ४९५, ४९७  
 ग्रह-कक्षा—१५८  
 ग्रानोवितया ग्लाता—१०५  
 ग्रिगोरी—१०, ११०, २१८ (ग्रेगरी)  
 ग्रिवोयदेफ—३८२, ३८३ (कवि)  
 ग्रिवना—८५  
 ग्रीक—३६, ५३, ७४, ७८-७९ (-अग्नि), ८२ (पूर्वी रोम), १०५, २२९, २४०  
 ग्रीक चर्च—३४, ८३, २३०, २५९  
 ग्रीफ्स—१५८  
 ग्रोवेन्स्क—४६५  
 ग्रीस—३९, ८३, ४११  
 ग्रोजनी—१०९ (क्रूर)  
 ग्रोद्नो—४१३  
 ग्रोसा—१११  
 ग्लादिस्येफ—२९१, २९२, ४६७  
 गिलन्का—३८४, ३८५  
 गिलन्स्की—१०७  
 गिलन्स्कया—१०७  
 ग्लव—८४  
 ग्वोय्देफ—२५६  
 घग्घर—१४१  
 घटना-लेखक—१५६ (=वका-यानवीस)  
 चगताइ—१४ (खान), १७, ३२, ४९, ५६, १०३, १०४, १२१ (-वश), १२२, १२४, १२५ (खान), १२७, १३०, १३३ (-उलुस), १३७, १६१, १६२, १७४, २७८, २९३, २९५, ३१२, ३१३, ५४८ (तुर्की भाषा)  
 चगन—५४३ (गाव)  
 चगान खान—२६४ (इबेत राजा),  
 चगानतारा (एम्मे=वेत तारा)  
 चचकली—५१६ (उज्वेक)  
 चदो—४७१, ४७८ (तुर्कमान)  
 चपकुल—५२०  
 चपची—५१४ (उज्वेक)  
 चपराच—१३०  
 चपलेती—५१६ (उज्वेक)  
 चवी—३०, ३१  
 चमगुल—३१७  
 चमन—४९९  
 चरवा—६९३ (वस्तीवासी तुर्कमान)  
 चरापेन—३६१  
 चर्चिल—५२५, ५२६  
 "चदमये फौज"—१४५  
 चश्मी—२०८  
 चहार देह—१९९  
 चहार-राह—१६९, १७०  
 चाड—१४१  
 चाउ-हाइ—३३६ (जेनरल)  
 चाउ-हो-येइ—६२६  
 वाङ-काइ-शेक—१२  
 चाङजू—५  
 चाङ-ते—१२८  
 चागन—५ (चगन)  
 चागा—१३२  
 चाणक्य—१३९, ३२६  
 चाता—३१८  
 चादिस्कूल—२९८, ३१०  
 चापर—१४, ४७, १३२, १३३  
 चापररगिर—२९७  
 चावुकोफ—३१६  
 चारजूय—१९३, २११, ४४२, ६५६, ४५८, ६६७, ४६८, ६७३, ४९५, ४९९, ५२०, ५५०, ५५३ (चारजूइ)  
 चारबेकर—४६७  
 चारयक—८३३  
 चारिन—३००, ३३१  
 चारुनचलाक—३०८  
 चार्ल्स—२२२, २३४, २४९, २५०  
 चार्लोत—३७४  
 चालिश—२९८, ३०४, ३०८ (कराशर)  
 चिकिसलर—४८१, ४९५  
 चिङ-गिस्—६५, ४६०, ४६४ (छिङ-गिस्)  
 चिङ-माङ्ग—१६६ (उपराज)  
 चिङकला—३९३  
 चित्राल—४६०, ४६२ (-मेहतर)  
 चिन्नरन—४४३  
 चिनास—१६९  
 चिमकन—४२८, ४२९, ४३२, ६३५, ४५१, ४६०, ५३०, ५३६  
 चिमकुर्गन—४२९, ४३०  
 चिमताई—४२, ६८  
 चियान-लुङ्ग—३४७  
 चि-येन-लुङ्ग—३३४  
 चिर—१६६, १६८  
 चिरचिक्—१६८, ४२८ (नदी)  
 चिरागकुश—३०४ (दीपबुद्धाव सम्प्रदाय)  
 चिरागची—४५७  
 चिलकेस—५१५ (उज्वेक)  
 चिलिक—३१७ (झील), ३३१ (-उपत्यका)  
 चिह काका—५४३  
 चिह न-दरा—५४४, ५४५  
 चिंगीज—३११, ३१६, ४६९ (खान), ४८८ (छिङ-गिस्)  
 चीचक—५१४ (उज्वेक)  
 चीचिहार—२५३  
 चीता—४०३  
 चीन—३, ९, १६, ३८, ७१, ७५, १०३, १२१, १३३,

१४५, १८३, २४०,  
२८१, २५४, २६३,  
२६४, २७३, ३२२,  
३०४, ३२७, ३४१,  
३६७, ३८८ (-भापा),  
३८९, ३९७, ३९८,  
८०८ (-त्राति), ८२१  
(-सन्त्राति), ८२५, ४९८, ५३७

चीन-कन-सन्नि-३९०

“चीनीखाना”—१५८

चीनी तर्किस्तान—४२४

चुहचो—२७१

चुकेस्त्र—२५६, ३७३

चुपसुन तन्मा—३१८ (जे-चुन-

तन्-पा), उर्गाका लामा

चुवुरगान—५१५ (उज्वेक)

चीमिर—५३०

चुरान—५१५ (उज्वेक)

चुरियोइ—३६१

चुलपान—५६ (मलिक)

चुल्लिक—५१५ (उज्वेक)

चुवाक—३१५

चुवाद—१३०

चुवाश—७१, १०७, ११२,  
२२०, २३४, २३७, ३१६,  
३७७, ४०१

चु-मिमा—९, ८०० (चुशिमा)

नगोत्रया—१०९, ११०

१—१२५, १२८, १३२,

१३१, २७५, ३००, ३०९,

३७९ (-उपत्यका), ४३२,

५३०, ५३१ (-नदी)

चुतो—३३८

चुतो—३३१

चुतोइ—३१९

चुतो—३३३

चुतो—३३३

चुतो—३३३

चुतो—३३३

चुतो—६२३, ६२८

चुतो—७१३

चेक—२४

चेकली—४७१

चेका—४३३

चेकोव्स्की (सगीतकार)—३९६

चेखोफ—३०६

चेगेन—३३४

चेचन—३७७

चे-ताइ—३३०

चेन्-दू—११ (सदा)

चेवनी—५४८ (चुर्मान)

चेरकास—२२ (राजा), ३३,

३९, ४२ (वेग) ५६, १४५,

२०९, ३१७, ३३९

चेरदिन—११३

चेरमिस—११०

चेरेन सन्लुप—३११ (छे-  
रिऊ-सन्-डुप.)

चेरेमिसी—२२१, २३४

चेर्यायेफ—३८६, ३८७

चेर्नीवाशी—४३४

चेर्नीकलोवुक—८२ (करा-  
कल्पक)

चेर्निगोफ—७२, ८४, ८६, ८८,

९१, १००, २२५, ३७१

(=चेरनीगोफ)

चेनियेफ—३८६, ३८७

(चेन्यायेफ), ४३२,

४५१

चेर्नीशेव्स्की—३८५, ३८६, ३८७

चेल्खान—९७

चेल्याविन्स्क—३४९

चोका—३३९

चोगा—७९

चोफोफ—५२१ (मुस्तफा)

चोन्मी हाई—३३१ (गदन्-

पुत्री)

चोपचाक—५४६ (गाव)

चोपान-अता—१५८

चोवान—३३, ३९, १४५,

१७७, ११०

चोमरी—४९३ (घु।न्तु तर्क-  
मान)

चोरोस—३००

चोनिये—९४

चोयान—२७९

चौदार—५४७ (तुर्कमान)

च्यान-लुङ्ग—४२१ (=चियान्-  
लुङ्ग)

च्वाङ्ग-चिन्-वाङ्ग—३३६

छग्दोर—३२९

छङ्ग-अन्—५ (सि-यन-फू,  
शेन्सीमें)

छनगर—३३३

छलनी—१२२

छिङ्ग-गिस्—३, १०, १३, ३२,  
४०, ५४, ५८, १२१, १२६,  
१३७, १३९, १४०, १४४,  
१४८, १५३, १६३, १६६,  
१७७, १८०, १९६, २००,  
२८०, ३००, ३०९, ३३०,  
३५८, ४२०, ४३९, ४७०  
(=चिगीज)

छ-मिश—३२४

छेर्तन पल्जोर—३३१

छेरिङ-डोण्डुव—३३१ (=दीर्घायु  
सिद्धार्थ, ०ममडुव), ३३३,  
३३४, ३३५

छेवङ्ग-अर्पचन—२८२, ३२९

(=अवर्तन्), ३३०, ३४०

(-रव्तन), ३३१, ३५३

(०दोर्जे)

जकात(=शुल्क)—४२९, ४३३

जगताइ—८, ५३, १२१, ५१६

(उज्वेक)

जगात—१४२, १४३

जजीरुत्—८ (मेसोपोतामिया)

जदीद—४५३, ५२६ (नवी-

नतावादी)

जदा—१०३

जन-कमीसर—५१०, ५११,

- ५२३, ५२५ (मन्त्री)  
 जनतन्त्रता—३५१  
 “जनता मक.प.”—३८७  
 “जनतात्रिक समाजवादी पार्टी”  
 —५०४ (कम्युनिस्ट पार्टी,  
 बोल्शेविक)  
 जनदूत—१३९  
 जनयुग— ८३ (कबीलागोही),  
 ८५  
 जनवादी—३८७  
 जनसमाजवादी दल—४१८  
 जनसीमा (गुप्तचर)—४७८  
 जनेवा—३९३ (स्त्रीजर्लैण्ड)  
 जब्बा—४९४ (चोगा)  
 जब्बारबदी—६५, ६६, ३०७,  
 ३०८ (-वर्दी)  
 जमजम—१८०  
 जमशेर—३२  
 जमशेद—१५७, ३१३ (जमशेद),  
 ३७६ (ईरानी)  
 जनानसरतोफ—५३७  
 जनायतुल्लेना—५१७  
 जनाल—१२९  
 जमालुद्दीन सिताजी—१३८  
 जमीन—१८०, १८२, १८३  
 जम्बुल—५२८, ५३०  
 (=भौलियाअता), ५३४  
 जमालान—३३१  
 जमफशा—१३१, १४१ (सोद्),  
 १७५, ४५२, ४५७, ४९९,  
 ५३५, ५३९  
 जमलिंग—२९२  
 जमलाद—४९१  
 जर्मन—३८, ९४, १००, १०९,  
 २२२, २४०, २५६, २७०,  
 ३४० (-उपनिवेग), ३६८,  
 ३७२ (-पवासी), ३९२  
 (भाषा), ३९६  
 जर्मनी—२३, २४, ३९, ७४,  
 ३६६ (बवेरिया), ४०६,  
 ७९  
 ४०८, ४११, ४१२, ५०३,  
 ५०४, ५०५, ५०७  
 जलाना—८० (मुर्दा-)  
 जलायर—१४७, १४८,  
 १५० (=जलैर)  
 जलाल—१५६  
 जलालुद्दान—६४, ६५, १४३,  
 १६५  
 जलियावाला बाग—३९९  
 जलील—१५७  
 जलेरताड—१३१  
 जलैर—५१४ (उज्जेक),  
 ५३० (कजाक, उज्जेक)  
 जवात—१३१  
 जस्सकतु खान—३२१  
 जहाद (=धर्मयु) —३४७, ५२१,  
 ५२६, ५३६  
 जहादी—४४३ (=धर्मयोद्धा)  
 जहानशाह—१०४  
 जहागीर—५३, ५४, १५०,  
 १५५, १८७, १८८, १८९  
 २०६, २९७  
 जहागीर खोजा —४२४  
 जहीरुद्दीन—१५८ (बाबर)  
 जगली ऊट—३००  
 जगी अता—३६  
 जजीरा —१४१  
 जद—४८  
 जाइच्चेव्स्की—३८५  
 जाइसन—२३५, ३२५  
 जाउलदुर—५४८ (तुर्कमान)  
 जाकास्पी—५४९ (पारेकास्पी-  
 यन)  
 जागन नोमेन—३२६  
 जागिलो—९८  
 जाता—३१२ (सीमाती)  
 जाति-व्यवस्था—१२  
 ‘जातिक सदन’—५१३  
 (सोवियत)  
 जातियोका अधिकार—५११  
 जाते—१४८  
 जादहम—१५७  
 “जा-दुनाइस्की”—२६० (दन्त्य-  
 बवाला)  
 जान—६४  
 जान मुगद—४७१  
 जानीवेग—३८, ४०, १६६,  
 १६७, १७३, १७९,  
 १८५, ३०३,  
 ३०९, ५३० (-वेग)  
 जापान—८, ९, १४०,  
 ३७२, ३९७, ३९८,  
 ४०० (सधि), ४०६,  
 ४०७, ४१० (-युद्ध)  
 ४१२),  
 जापोरोज्ये—२२१, २३०,  
 २३१ (=जापोरोजे)  
 जापोरोशियान—३९  
 जावतु—१०, १०३ (जावा)  
 जाम—१७७, १८१  
 जामा मस्जिद—४५३  
 जामी—१६१, १६३  
 जामुकशिर—४८३  
 “जामेउत्-तवारीख”—२६, १४५  
 “जामेजम”—१४६  
 जामोस्तये—२३२  
 जायित्सेफ—५२५  
 जार—१०७, १८८, २०६,  
 २१७, २३३, २३४, २५५,  
 २५६, २८१, ३९९, ४५२  
 जारकद—५३३, ५३७  
 जारग्राद—७९ (राजनगरी)  
 जारशाही—५१४  
 जारिना—४१६, ४१७  
 (=जारपत्नी)  
 जारित्सन—२३६, २६२,  
 २८८ (=स्तालिनग्राद)  
 जारुत्स्की—२२३, २२५  
 जार्ज—२१, २२, ३४  
 जजिया—६२, १०३, २६३,

४४३, ४४६ (गुर्जी)  
 आस्कॉनोसेलो—३८३, ४१७,  
 ५१० (=गुश्किन)  
 जाउ—१५३  
 जालेन्की—६३  
 जावा—१० (=जावत्), १०३  
 जामी—२९७  
 जाम्नान्की—३९१  
 जाहिरोफ—५७३ (कराउल  
 बेगी)  
 जिगिन—४९२ (=बहादुर)  
 “जिजे इरखनी”—१४२  
 (इरखानी नक्षत्र-सूचि)  
 “जिजे-उरुगवेग”—१५८  
 (उरुगवेगी नक्षत्र-सूचि)  
 जिद—५११ (उज्वेक)  
 जिपी—८३३ (=रोमनी,  
 निगान्)  
 जिमायेटाफ—२६१  
 जिम्निट—३३४  
 जिगियानी—१११  
 जिगिचिन—२७९  
 “जिगो नचालनया त्रोंइजा”—  
 १०२ (नीपिन-प्रणयन  
 निमित्त)  
 जिगि—३४० (=उड्क-गिम्,  
 चर्माज)  
 जीउट—१६६, १६७, १७१,  
 १८३, ४१५, ४०६, ४२६,  
 ४३१, ४३२, ४३३, ४५२,  
 ४५५, ४६१, ४२०, ५०४,  
 ५२५  
 गिगासंद—३७३  
 गिलागुशक—१०३  
 गिलागुशिन—१८०  
 गिरा—७७  
 गिरा—१११ (उज्वेक)  
 गिरा—११०  
 गिरा—२२१ (गिराशिन)  
 गिरा—२७, २७

जुजिली—५१६ (उज्वेक)  
 जुवान—५४४  
 जुवेनी—१२८, १३१ (जुवेनी)  
 जुरजान—२०३  
 जुराकल तोक्सवा—५३३  
 (मुल्ला)  
 जुरावयेफ—५१९  
 जुरा वेक—४५७  
 जुल्फा—५५४  
 जुलियन—२१, १५२ (मचाग)  
 जुलून—५१४ (उज्वेक)  
 जुल्फिकार—४९८ (डाडा)  
 जुवाल्दर—५४८ (तुर्कमान)  
 जुगर (कलनक वामल)—  
 २६३, ३२५, ३२६, ३२८,  
 ३३०, ३३३ (जश), ३३४  
 (मेना), ३३६, ३३७, ३४३,  
 ३४४, ३४५, ३४६, ३४७,  
 ३४८, ३५०, ३५२, ३५९,  
 ३६०, ४२०, ४२२  
 जुगारिया—२३५, २८२,  
 २९१, २९६, ३१९, ३२८  
 (कलनक-भूमि), ३२९,  
 ३३४, ५३०  
 जूके—३०  
 जूकोव्स्की—४१०  
 जूजी—३० (=जूछी, तूशी),  
 जूजीयुता—३१५  
 जूठि—१७, १८ (=पयका),  
 ३९, ४३ (नश), ४५  
 (जूशी), ४९, ५१, ५४,  
 ६९, १२१, १२२, १२८,  
 १२९, १३०, १३१, १३२,  
 १३३, १३४, १३५, १३६, १३७,  
 ३०३, ३१५ (जूजी मी)  
 जमा—५२४  
 जूमान—५३९ (गाव)  
 जूयन—५१४ (उज्वेक)  
 जूयन (चित्र)—५१८ (उज्वेक)  
 जूयेश—२११

जूलक—४२९  
 जूलगन—५१७ (उज्वेक)  
 जेगुर—२०५  
 जेग्यात्—४७  
 जेद गिन कुम्जी—१२४  
 जेचुन तग्या—३२९ (उर्गा लाना)  
 जेजेह—१९९  
 जेते—१४९, १५०, १६९  
 (मुगोमिस्तान खानकी  
 सेना), २९६  
 जेनेवा—४०२  
 जेन्किन्सन—२०५, २०६,  
 २८७, ३१३  
 जेद—२७  
 जेवक—४६२  
 जेवनी—५४८ (तुर्कमान)  
 “जेम्ला-इ-वोत्या”—३८७  
 जेम्स्की सवोर—१०८, ११६,  
 २१७, २१९, २२४, २२६  
 (राष्ट्रीय सभा), २२८,  
 २३३  
 जेम्स्चिना—१०८ १०९  
 जेम्स वाट—२६७  
 जेया—२३९, २४०, ३८८,  
 ३८९  
 जेरेवो गोरोदची—११५  
 जेरेमिया—११६  
 जेजिन्स्की—४१७  
 “जेल-जामे-उत्तवारीस”—३२  
 जेलेर—५१६ (उज्वेक)  
 जेसाउल मामित—४८४  
 जेसुइत—३२९ (ईसाई)  
 जेकिग—१३५ (जिकशी),  
 १३६  
 जेकिन्स—१९०  
 जेक्रिया—२८६  
 जेगिर-मराय—५५  
 जोद-सान ताउ-फ—१२५  
 जोकी—६८  
 जोचोकवालिङ—१३२

जोरकुल--४९८ (विक्टोरिया झील)	४१, ४३, ५४, १०४, १३९, १४१, १४४, १५०,	१३०, १३२, १३३, १८०, २७८, २७९,
जोहरा--१८५, १८७ (ब्रान्)	४४६, ५५४ (=तबीज)	२४९, ४३२, ५३५
जोहाव--३१३	तबोल--५१, २३४, ३१७,	(नदी)
ज्दानोफ--४१४, ५०८	३१८	तलिकू--१३३
ज्योतिषशास्त्र--२६५	तबोलस्क--११२, २१९	तलिलन--१०८
ज्वालामार्ग--१०३	तमगाज चुरा--२०१	तलेउ--५१५ (उज्बेक)
ज्वेज्दा--४०९ (सितारा)	तमगीर--५४८ (तुर्कमान)	तले७ वेदिन--५३७
ज्वेनीगोर्द--५२, ९६	तमता--६	तवकल खान--१८०, २७९,
ज्वोइकोफ--३८८	तमदी--४८१	३२४, ३२५, ३५०
ज्वोरोफ--२३२	तमन--८४	तवाची--५६
टर्की--१७७	तमातोक्त--३०	“तवारीखे-नासिरी”--२०
टाड।मेजर)--४७४, ४७५, ४७६	तमूतरकान--८४	तवील-दरा--५४४, ५४६
टामस हाइड--१५८	तम्बोफ--२२	तस्ली-यामिश--२०७
टिमरमान--२४७	तम्मेरफोर्स--४०२	तहमास्प--१७६, १७७, १७८,
टुल्कू--३४० (अवतारी)	तरकू--३०	१८१, १८३, २००, २०२
टेम्स--२४८	तरखन--५९, २३४, ३१६	(शाह-)
डच--२४०	(तर्खन-राजकुमार)	तका--४३३ (=छ आना),
डन्जिग--२६०	तरखन्स्कोये ओस्त्रोग--३१६	४७८ (=तगा)
डेनमार्क--१०८, २५६	तरतू--८४	तगिदीवान--१९२
डेन्स्टरविल--५५४ (जेनरल)	तरनोफ--४१३	तगुत--३, ३३१ (अगदू)
डेप्टफर्ड--२४८	तरबगताई--२९७	ततसीला--३३१
डोम--२०३, ४३३ (रोमनी, जिप्सी)	तरबू--२९	ताइ-चुङ्क--४ (मगोल)
ड्रेडनाट--४११	तरस--४६, १२७	ताइगा--२७१
ड्रेसडन--३६८	तरानचिन--२९६	ताइ-न्याउ--८ (धर्मशाला)
तकफीर--३७ (सम्राट्)	तरानविन्स्की--२९६	“ताइ-युवान्-तोङ्क-शी--१५
तकमक अता--४८४ (द्वीप)	तरिम--१२४, १४१	(मगोल-महाविधान)
तकात--१०४	तरी-उइगुर--५२९ (कजाक)	ताइ-चू--३२४
तख्तवाजार--५५१, ५५३	तरुण कम्युनिस्ट कांग्रेस ५३३	ताउ--१२
तख्त-मुलेमान--४३१	तरुण तुर्क--४०७, ४०८	ताउरा-अतलस--२९७
तगनरोग--३६५, ३७४ (तगनूरक)	तर्खन जारुकतू--३३४	तागबुई--१९९, २०३
तगिल--१११	तर्गुत कलमक--२५३	ताज--५१६ (उज्बेक), ५२९
तजलर (कजाक)--५२९	तर्तुगू--५१६ (उज्बेक)	ताजन्द--४८८, ४९० (उप- त्यका)
तजीमारी--३०	तर्मा छेरिङ्क--२० (=तरमा शेरिन), १३४, १३५	ताजमहल--१५७
तनजुर--१३ (शास्त्रानुवाद)	तलजियान--४९	ताजिक--५६ (=सर्त), १३५,
तनाव (भूकर)--४३३	तलतगा--३४६ (जेनरल)	१९४, ३०५, ३७८,
तवी नूस--४८१	तलदिक--४८०	४२७, ५१७, ५३६,
तब्रेज--३२, ३३, ३९, ४०,	तलदी बुलाक--५३७	५३९ (सोमदी), ५४४
	तलस--२६ (तरस), १२७,	ताजिकिस्तान--१२१, १७१,



३०६, ४५३ ४५८,	तानोपोल—५०५	तिङ्ग री—१५३
५१७, ५२७ (पू०	तालिकान—१३१, १७९, ४६०,	तिखविन—२६५
बुत्ताग), ५३०, ५६०,	४६२	तिफलिस—२८, ३९६, ४८०
५६१ (नगरराज्य)	तालिश—१४५	तिव्वत—७- ९, १६, १३५,
तजिकी—५३० (भाषा फारसी)	ताले—३२४	३०९ (लदाख), ३१३,
ताजुद्दीन—१३८	ताल्की—३२८ (डाडा)	३२७, ३२८, ३३३
तानातुगा—१२२	तावदा—१११, ११३, ११४	(हस्तलेख), ३३४ (भाषा),
तानार—२३४ (तारतार),	ताज—५२५	३४० (थिबोत)
२३७, २०८, ११८,	ताशकद—५५, ५७, १३२,	तिमिरियाजोफ—३९२
(मंगोलायित) ५१९,	१४९, १५०, १५९,	तिमुर कब्रुक—४८१
ततिश्चेक—३४५	१६१, १७१, १७२,	तिमोवियेज—११०, ५४२,
तानीशेफ—३५२	१७६, १७४, १७८,	(कर्नल)
तान—३०	१८०, १८२, २०९,	तियान्सिन—३८९
ताना—३८	२७८, २८०, २८१,	तिर्किश—५१६ (उज्बेक)
तानिफे—३५२, ५२२	२९१, ३०२, ३०५,	तिसं—५१६ (उज्बेक)
ताविन—५५ (उज्बेक)	३०७, ३२४, ३२५,	तिला—४३३, ४७८ (मिक्का)
तामा—५१५ (उज्बेक)	३३१, ३४३, ३४७,	तिल्जित—३६७, ३७०
ताम्र-यग—५०९	३४८, ३४९, ३५०,	तिसिया—७२
तायगा—१४ (=ताडगा)	३५१, ३५९, ३६०,	तीकासगरुल्कू—३०५
तायनमान—३०१, ३२२, ३०४,	३७८, ३८७, ४१५,	तीबेची—२००
३२५	४२०, ४२२, ४२३,	तुईखाजा—४९
तारतार—२८, ५१, ९३ (मंगोल,	४२८, ४३९, ४४४,	तुकातेमुर—२०, ४९
तुर्त), १६७, २२४, २८४,	४५२, ४५५, ४८१,	तुकान—२२
३१६, ३६८, ३७२,	४८६, ५११, ५१७,	तुकावेक—३१५
६०६, ५१०, ५१५	५१८, ५१९, ५२१,	तुकाल—१४३
(उज्बेक), ५१८ (मंगो-	५२०, ५२३, ५२४,	तुखार—४४२, ५१६ (देश)
लिया), ५१९, ५८८ (भाषा)	५२५, ५३०, ५३३,	तुखारिस्तान—१९१
तारतारी—३८८ (नवाडी),	५३७, ५३८, ५४४,	तुगराई—१४५
५८८ (नगरराज्य तुर्की)	५४९, ५५३	तुगलक—२०, १३४, १३५,
तारा—३१७ (नगर) ३१९,	ताश-कुपुर्क—२०८	१४८, १४९
३२६, ३३३	ताशकुर्गन—४२९	तुगलक तेमूर—१३७
तागव—१००	ताशगपरी—५५१	तगाई—१४८, ४२२, ४२३
तागो रेगुजीदा—१४६	ताश तेमूर—२०६	तुगाचार—२८
तागो रेगुजीदा—१२०	ताशदकान—११६	तगागी—१२६, १२७
तागी—१०१—१०३, १०५,	‘ताश-गवाद’—२९९	तगुम—३६१
१०७, ३००, ३०८	तामयगा—३४ (तागवेग)	तुङ्ग-कुङ्ग-बुङ्ग-फू—७ (गेन्सी)
तागी रेगुजीदा—१४६	ताहिर तान—३२४, ४६८	तुङ्ग-गुम्—२७१
तागी रेगुजीदा—१०७, ३९	ताहिरी—१३३	तुङ्गुक—१५४
तागी रेगुजीदा—३१	ताहुरे—३०८ (=उलान-	‘तुङ्गुक-जहागीरी—१६३’
तागी रेगुजीदा—१००	सातुर)	तुङ्गुकान—१४९
	निउङ्ग—३५०	

“तुजुकात-तेभूर”—१४८

तुतार—२८ (ततार)

तुतवेगा—२७

तुदा-गड-गू—२९

तुपकारा—५१५ (उज्जेक)

तुवेदा—११४

तुमाई—५१४ (उज्जेक)

तुमान—३०, ६३, ४४५

तुमूलाड—५ (मगोल)

तुमेत—३२१

तुमेनेत—२२७

तुरका—१४८

तुरखन—१११

तुरगाद—१३७, १४८, ३४१,

३५८, ४१५, ५३१, ५३२

तुरगुत—२६४, ४५७, ४५८

(मगोल)

तुरतेस—११४

तुरसुन—१८७, २०९, २८१,

३४५ (खान)

तुरा—१११, १५४, १७६, २८०,

३०० (=यासाक, यास्ता),

३१६, ३१७, ३२१, ३२८,

४३५ (-कुर्गान)

“तुरावी”—१८७, १८८

तुरा मुराद—४७२

तुराश—३१७

तुरा सूफी—४६९, ४७०, ४७१

तुरी—३१

तुरे कुतुलुक—२९

तुरेव्स्की—७३

तुरोफ-पिन्स्क—८८

तुर्क—५६, ७१, १००, १०२,

१०५, ११६, १६१,

१७२, २८४, ४६८ (-जाति),

५१७, ५२६, ५२९,

५३६, ५४१, ५४२,

५४८ (-भाषा), ५४९

तुर्कमान—५४, ५५, १५८,

१६४, १७५, १७६

(इस्माईलके सैनिक), २००,

२०३, २०४, २०५,

२०७, २०९, २८७,

३२१, ३३८, ३४८,

३४९, ३५५, - ३५७,

३७८, ३८८, ४१५, ४५०

४६३, ४६७, ४७०, ४७१

(तेक्के, यामूद, सलार,

चदोर, अमीरअली, वूजजी,

ककुरत ककली, मगित),

४८३, ४८४, ४८६, ४८८,

४८९ (-कवीले, -वज, आगूज)

४८९-९३ (तेक्के, सारिक,

सलोर), ४९४ (-हूससे

युद्ध), ४९३ (पोशाक),

रूपरेखा), ५१५ (उज्जेक),

५१७, ५४७ (कवीले),

५४८ (जाति-निर्माण

चगताई तुर्की), ५४९-

५५३, ५५५

तुर्कमानिया—५४९

तुर्कमानिस्तान—१२१, ४५३,

४८९, ४९७ (गणराज्य)

५१९, ५२१, ५४७, ५५०

तुर्कमानी—५५२ (भाषा)

तुर्क-वश—१७२

तुर्किस्तान—३७, ३८, ५७,

१२१, १२८, १३४

(पूर्वी), १४१, १६५,

१६६, १६८, १६९,

१७४, १८०, २६१,

२७७ (सिर-उपत्यका),

२७८, २८०, ३०२,

३०४, ३४८, ३५०,

३७८, ४३२, ४४२,

४५१, ४७९, ५११

(-सोवियत सरकार), ५१२

(-गणराज्य), ५१७, ५१९,

५२०, ५२७, ५३४, ५५२

तुर्किस्तान कमेटी—५१७, ५१८

तुर्किस्तान प्रदेश—३०४ (सिर-

दरिया)- ४३५, ५३६,

४५२ (गुर्वनिया), ५५०

तुर्किस्तान शहर—१८२, २७५,

२८२, ३१०, ३३१, ३२५

(निम्न सिर-उपत्यकामें),

३४३, ३४५, ३५३, ३६०,

४२०, ४२३, ४२९, ४३२,

४८१, ५२८, ५३०-३४

तुर्की—८२, १००, १०३, १५४

१५९, १८३ (भाषा),

२०३, २२०, २२६, २३१,

२३३, २४७, २४८, २४९,

२५०, २५१, २५७, २५९,

२६०, २६४, २६९, ३४०,

३५६, ३६७, ३६८, ३७१,

३८६, ४०६, ४१२, ४५०,

४९५ (युद्ध), ५२६

(सुल्तान), ५४३, ५४५, ५४९

तुर्गनेफ—३९०

तुर्तकारा—४७१

तुफनि—२९७ (तुरफान), ३००,

३०२, ३०४, ३०८, ३०९,

३१०, ३१३, ३२८, ३३०,

३३१, ३३२, ४२५

तुलचिन—३७३

तुलचिन्स्की—४१०

तुलसी—२६६

तुला—५ (मगोलियामें नदी),

२२१, २३५, ३२१, ३३०, ३८१

तुलार—११३

तुलिशिन—२६४

तुलीखाजा—४९

“तुलुगमेह”—१७१

तुशिने—२२१, २२२ (चुशिमा)

“तुशिनी जार”—२२१

तुशियेत—३२८

तुगर—३८१

तुगान—५३७ (चीनी

मुसलमान)

तुगुत्—१० (अम्बू)  
 तुगुत्—२३०, ५८८ (मचू भाषा)  
 तदा-जेव—९४  
 तुम—२०६  
 तुके किला—२०३  
 तुके गवाद—१७३  
 तुची—९ (=जू-छी)  
 तुज—२१०  
 तुनिगा—५४७ (तुर्कमान)  
 तुफाङ्ग—१२ (तिब्बती)  
 तुमे—५१५ (उज्बेक)  
 तुमेन—३२४  
 तुरातू—६१  
 तुगन—१४१, १७३, २८६  
 तुगाना-अधित्यका—१६५  
 (किरगिज-स्तेपी)  
 तुगान-मुल्तान—५८  
 तुगिन्क—३१६  
 तुग मेहमत—३१८  
 तुला—१५  
 तुन्दी-शिशु—२५३  
 तुन्दु—३ (छिङ्ग-गिस्-पुत्र),  
 १, ६, (गो-लोइ), १७, १२१  
 उलुन), १३०, १३९  
 तुगि—१८ (ज-छि)  
 तुगियेत् खान—३२१, ३२९,  
 १३—१३, १५०, १७६  
 तुनाय विभाग—३८५ (बुफिया-  
 विभाग)  
 तुनरा—३५०  
 तुनरा—६३३  
 तुनराचिन्—३३१  
 तुनरा—१०५, ३३८  
 तुनरा (तुर्कमान)—२००,  
 २०६, २०७, २०९,  
 २१३, ३८८, ६३१,  
 ६३२, ६३६, ६८३,  
 ६८७, ६९०, ६९१-९२,  
 ६९३, ६९९,  
 ७००

तेपियर—३५४  
 तेवेन्दा—११४  
 तेमिर—५३०  
 तेमिरलिक—३३४  
 तेमूर—५०, ५४, ५५, ५६,  
 ५७, १००, १२१, १२९,  
 १३१, १३४, १४५, १४८,  
 १४९, १५३, ४४७  
 तेमूर अद्दाली—४४२  
 तेमूर एजवेक—४९  
 तेमूर कआन—३२ (चीन),  
 १३२  
 तेमूर कुतुलुक—५६, ६२  
 तेमूर खान—६४, १४४  
 तेमूर खोजा—४३  
 तेमूरताश—३९  
 तेमूर यैशी—१६६  
 तेमूर वेग—५०, ५८, ४८१  
 तेमूर वेग नोगाई—१६७  
 तेमूर मलिक—४९, ५६ (खान)  
 तेमूर लग—१३, ४९, ५३, ५४,  
 १६-१३७, १४१, १४८  
 (वश), २८६, २९०, २९८,  
 ४७०, ४९३ (=तेमूर)  
 तेमूरशाह—१३६, १९४, ४४१  
 तेमूर सुल्तान (खीवा)—  
 ४६६, ४६७  
 तेमूरी—१६३  
 तेमूरी साम्राज्य—३१६  
 तेयेन—२१०  
 तेयेन्कू—३३०  
 तेरक—२८  
 तेरमिज—५४, १३०, १३६,  
 १३५, १८३, १७७, ५५२  
 (=तेमिज)  
 तेरनेक—१९१  
 तेराज—१५१  
 तेरेक—६१, १०८, १४५  
 तेरेदचको—८१८  
 तेलेगुन—३१९

तेवकेलेन—३५१  
 तेवल—२८४  
 तेहरान—१५७, १८१, ४९२  
 तेंगरी—५  
 तैलम्बार—५६  
 तोइरिन—३३०  
 तोकताई—१३२ (सुवर्ण-ओर्द-  
 खान), १४४, १४५, २८४  
 तोकतामिश (खान)—४३,  
 ४९, ५०, ५१, ५२, ५३,  
 ५४, ५५, ५६, ५७, ६३,  
 ६८, १५०, १५१, १५८,  
 १६५, ४९१ (तुर्कमान)  
 तोकमक—२८१, ३७९, ४३२,  
 ५३७  
 तोकसावा—५५३ (तुर्कमानावा)  
 तोका—१३१  
 तोकाजी—१३३  
 तोकारेफ—५२५  
 तोगताइ—२९, ३०, ४७,  
 (तुगताइ भी)  
 तोगताकिया—५०  
 तोगतागू—१३२  
 तोगान तेमूर—१६, १९०  
 (०तिमुर)  
 तोदा—३१७  
 तोप—६३, १०१ (खाना)  
 तोपचीबाशी—४४७ (तोपखाना  
 का जेनरल)  
 तोपियातान—४८३  
 तोवोल—५८, ११०, ११६,  
 ११३, २७१, ३१६, ३१९,  
 ३२४, ३२६, ३३०,  
 ५३५  
 तोवोलस्क—२२७, २५३, ३१६  
 ३१७, ३१८, ३२१,  
 ३२६, ३३१, ३३३, ३३८  
 तोम्—३२७  
 तोम्स्क—३२७  
 तोरगुत—२१०, ३००,

३१९, ३२१ (तोरुत)  
 तोरिदा—२६२  
 तोरोपेत—२४९  
 तोरोवोलोद—३२४  
 तोरुत—२१०, ३००, ३१९,  
 ३२१, ३२६, ३३८, ३३९,  
 ३४० (वोल्गाकल्मक),  
 ३४१, ३४२, ३४३, ३४८,  
 ३४९, ३५०, ३५५,  
 ३६० (तोरुत)  
 तोरुत—३०९ (डाडा)  
 तौकेल खानम्—१५१  
 तौकेलेफ—४६५ (=तवेकलेफ)  
 त्यानशान—३२५, ३२६,  
 ३२८, ३४१, ३७८, ४२५,  
 ५३५-३७  
 त्युकमे—१३३  
 त्युकेर—५४८ (तुकमान)  
 त्युतोनिक्—९५  
 त्यूपा—३३१  
 त्यूपेलिक करक—२९७  
 त्यूमेन—१११ २८६, ३१५,  
 (५० साइवेरिया), ३१७,  
 ३१८, ३१९, ३२१,  
 ३२६, ३३८  
 यूलेस—२९८  
 योन्नी—९९ (अघ)  
 याउवेन्वर्ग—२६१, ३४१  
 यान्सिल्वनिया—२३  
 त्रिगुट—४०७  
 त्रिपोलितानिया—४०८  
 त्रुदोविकी—४१०  
 त्रुवेत्स्की—२२३, ३७५  
 त्रुवोर—७५  
 “त्रूतेन”—२६८  
 त्रेपोज़न्द—१०४  
 त्रोइत्सा—९९  
 त्रोइत्स्क—३४८, ३४९, ३५५,  
 ३७८, ४४६ (=त्रोयत्स्क)  
 त्रोइत्स्क सेर्गियेफ—२२१, २४६

त्रोक—६२  
 त्रोत्स्की—५३७ (जेनरल),  
 ५०६, ५०८  
 “तृतीय भाग”—३७६  
 त्वेर—२२, ३४ (कलिनिन),  
 ९६, ९७, ९८, १००, १०१,  
 १०२, ४०१  
 त्वेरत्सा—९६  
 त्सित्सियानोफ—३७१  
 थाइ—७, १४ (=स्याम)  
 थाइ—१४ (-वश)  
 थामस—१३५  
 थुबु थेमुर—१४  
 थेओगोनस्—३७  
 थेगन-थेमुर—१६  
 थैची—३२६ (तालेह), ३६०,  
 (उबासा)  
 थैशी—३०४, ३१९ (राजा),  
 ३२५ (थैची)  
 थोर्न—२६०  
 थ्रेस—३४  
 दक्षिणपक्ष—५१९  
 दन्यूब—५९, ७२, ७३, ८२,  
 ८३, ८८, २५०, २६०,  
 २६३ (डुनाइ), २८४,  
 ३६७, ३८६, ४१२  
 दन्दुर—४८३  
 दवूसिया—१६९, १७१  
 दमिश्क—१०३, १४०, १५२  
 दरकद—५२७  
 दरखन—३२९ (तारखन,  
 तखन)  
 दरबन्द—२२, २८, ३०, ३३,  
 ४१, ५१, ५४, ५५, ६१,  
 ६२, १०२ (कास्पियन),  
 १३१, १४१, १४३, १४४,  
 १५१, १७४, २५१, ४५९,  
 ५५४  
 दरबदे-आहनी—१७४ (लौह  
 द्वार)

दरवाज़—४२६, ४५९, ५२७,  
 ५४४  
 दरवेश—१५३, ४२३, ४७९  
 दरवेगखाना—४३४  
 दराज़—५४३  
 दरा-जू—५४३  
 दरेदानियाल—२६० (दर-  
 दानेल्स), ३६७, ३७७,  
 ३८०, ४०७, ४०८, ४११,  
 ४१३, ४९७  
 दर्वेत—३२६, ३४०  
 दर्विस—६६  
 दरगिज़—४६०  
 दरकिोह—४२३  
 दलननोर—१४४  
 दलनी—४००  
 दलमासिया—६  
 दलाई लामा—३२४, ३२८,  
 ३२९, ३३२, ३३३, ३३४,  
 ३३५  
 दस्त—१५६ (भैदान), २९३,  
 ३५८ (स्तेपी), ४१५  
 (निर्जन भूमि), ४८०  
 दस्ते-कज़ाक—३७८, ४४५,  
 ४६७, ४७६  
 दस्ते-किपचक—३३, ३६, ४९,  
 ५०, ५५ (कज़ाकस्तान),  
 ५६ (तोकतामिशका  
 राज्य), १५६, १६६, १६८  
 १६९, १७६, १८०, २७७,  
 २८०, ३०३, ३०९, ३५१,  
 ४४५, ४८१, ५२८  
 दस्ते-किर्गिज़—३७९  
 दस्ते-कुलाक—१७३  
 दस्ते-खाज़ार—३३, १४६  
 (-दस्तेखिज़र)  
 दसेया—२४०  
 दहयक (दशाश)—४४५, ४५३  
 दहित-स्तान—१४५  
 दगिल—४९६ (-गोल)

रगिल लेप्चे—४१५, ४१६,

४१७

दाइशिंग—३२१

दाड-नोथन—१८

दागिस्तान—३७१, ३७७,

८६८, ५५४

दाजवग—७३ (सूर्य, स्वारोग-  
पुत्र)

“दादखाह”—४५७, ४७१

(बुखारी), ५२६ (हाजी)

दानियल—१६, १३७, ५४६

(वाममची), ४३९, ४६९

(-त्री),

दानिशमन्द—१३६

दाबुल—१०३

दारयोश—५५४

दरोगा—१२, १६८, १७८

दालय—३२१

दावा—१४ (मान), ४७,

१३१, ३८६

दाविद—८७

दाविदोफ—३७३

दाशा मेवस्तापोल्स्कया—३८०

दाम—८५, ८६, ३०५, ४८६

(-प्रया)

दिदेरो—२५९, २६७, ३७३

दिनोत्रेक—३३, ३८

दिमित्रि—३४ (लेर), ५१,

५२, ५३, ९८, २१८ (१),

२२१ (२), २२५, ३९२

दिमित्रियेक—५२

दिमित्रोफ—६३

दिगारवेनर—५, ७, ८, १४१

दि—५५, ७७

“दिउगा”—२५१

दिनेरो—५१५ (उजवेक)

दिगवर घाट—५५५

दि—५, ५५, ६२, १६४,

१०५, १०७, १६३, १८१,

१०३

दिसवरी—३८२ (वीर)

दीन अहमद—११०

दीन मूहम्मद—१७८, १७९,

१८१, १८५, २००, २०१

दीनार—५८

दीनू—२०१, २०३

दीनवेइ—३२१

दीपालगु—१४४

दीर्घगह—९०

दीवान—१९० (कविता-संग्रह)

दीवानवेगी—१८७, ४२३,

४७८ (प्रधानमन्त्री), ४८०

दुचात—११

दुदुरगा—५४७ (तर्कमान)

दुनाई—२४ (दन्पूव), २५०

दुनायेफ—५२५

दुरांनी—१९४

दुर्मेन—५१५ (उजवेक), ५१६

दुलानोफ—५३१

दुलियाना—३८

दुवा—१३१

दुश—२६

दुशाम्वे—५२७ (स्तालिना-

वाद), ५४४

दुसतनिक—५१५ (उजवेक)

दुतोफ—५२२, ५२५ (आत्-

मन), ५३२, ५४९ (सफेद

जेनरल), ५५०

दुमा—१०८, २२०, २२८,

३७०, (=ससद्), ४१६,

५१७, ५२३

दे कलावियो—१५३

देशन्येफ—२४०, २५६ (दे

जनिओफ)

देनिकिन (जेनरल)—५०७,

५५२

देनिसोवका—२६५

देमावद—१०३

देमियान्का—११३

देमियान्कोय—३१६

देमेसोन—४४८ (डाक्टर)

देरवेत—३२५, ३२६ (मगोल)

देरून—१७८, १९९, २०१,

२०४

देर्जाविन—२६६ (=दर्जाविन)

देलनोई—२९१

देलागारदी—२२२

देलाग—२५४, २५५

देवकेसकेन—२०४

देवा—७३

देवोत्तर-सम्पित्त (क्वफ)—४५३

देसियातिन—३७२ (=अस्सी

एकड़)

देहकान (=किसान)—५१८,

५१९, ५२३

देहनौ—४५९

देहविद—१८३

देहवुलन्द—५३९ (गाव)

देहरादून—१५१

देहलवी—१४४

दै-शिङ्ग—३३८

“दोस्तरखाना”—५२७

दोगलत—२९५, ३०२, ३६१

(=दुलत)

दोण्डुव् यैची—३५२, ३५४

दोन—२२, ३९, ५१, ६१,

६२, ७१, ७२, ७५, ९०,

९८, ११०, १५२, २१७,

२२०, २२५, २३०, २४७,

२६१, २३५, २३६, २३७,

२८४, २८७, २८८

दोन-कमाक—२७१, ३५४,

४८०

दोनेत्स—२३२, ४०३, ५८०

(=उपत्यका)

दोनेत्स-उपत्यका—४०९

“दोन्स्की”—९८ (दोनवाला)

दोवरोनीची—२१८

दोमनिकन—१३५

दोमोशेरोफ—३१७

दोरपत — २४९, ३६६  
 दोर्जे (दर्शा) लामा — ३३५  
 दोलोन्-नोर — ३२४ (द०  
 मगोलिया), ५३०  
 “दोलगोल्की” — ९१, २५६  
 दोस्त खान — २०२  
 दोस्त मुहम्मद — ४४७ (खान),  
 ४६१  
 दोरतोयेव्स्की — ३९२  
 दौग — ४६२  
 दौर — २७२  
 दौरिया — ५३०  
 दौरी — २४०  
 दौलत गिराड — १०९, ३१५  
 दौलत बर्दी — ६९  
 दुकर — ५४८ (तुर्कमान)  
 दुनियेपर — २२, २९, ३९,  
 ६३, ७४, ७५, ७७, ७९,  
 ८३, ८५, ९३, २१८,  
 २३०, २५७, २६०,  
 २६३, २८४  
 दुनियेपरोपेत्रोव्स्क — २६३  
 दुनियेस्तर — ५१, ७१, ७२,  
 २६०, २६३  
 दुमित्रोफ — ९२  
 दुविड — ५१६, ५२८, ५४८  
 द्रागोमिरोफ — ५२०  
 द्रेव्ल्यान — ७७, ७८, ७९  
 (दीहाती), ८३  
 द्रेश्चेर्न (कर्नल) — ४८२  
 द्विना — ७४, ७५, ९५, ३६५  
 धनुर्धर — २२४  
 धर्म-छे-रिङ्ग — १३४ (तर्मि-  
 शेरिन्)  
 धर्मपाल — ३३९  
 धर्मशास्त्र — १२४  
 धर्मचार्य — ३५४  
 धातु-उद्योग — ३७६  
 “धुआ” — ३९२  
 ध्रुवीय — २४०, २६५, ४०९

(कक्षा), ४८९ (महासागर)  
 नई सराय — ४१  
 नक्षबदी — १५३  
 नक्षत्र (तारा)-भूची — १५८  
 (=जिज)  
 नक्षबदी — ४४०, ४४५  
 नखचेवान — ३७७, ५५४  
 नखजवान — ५५  
 “नखली” — १८७  
 नखशेव — १३४, १४८, १८७  
 नखिमोफ — ३८०  
 “नचलनया लेतोपिस्” — ८५  
 नचार — ५१५ (उज्वेक)  
 नजर — १८७, १८८ (दीवान-  
 बेगी)  
 नजारोफ — ४२४  
 नजिमोर — ४६७  
 नतालिया — २४७  
 नदेजदिन्स्क — ४१०  
 नमगान — ४२२, ४३५, ४३६,  
 ४३७, ५१९, ५२०, ५२१  
 नमिश्का — ३३४  
 नम्दारोहण — ८० (सिंहासना-  
 रोहण)  
 नया ओर्दू — ४१  
 नया गुलिस्ता — ४१  
 नये किर्गिज — ३४८  
 तरगिल — ५१५ (उज्वेक)  
 नरनुते — ४५५  
 नरिन — ३०७, ४३७  
 नरोद्नये — ३७३ (बेचे, लोक-  
 सभा)  
 नरोद्निक — ७३, ३८७, ३९१,  
 ३९३, ३९५  
 नवगोर्द — २२, ३५  
 नवपाषाण-युग — ५२८  
 नव-ताम्र-युग — ३३४  
 नवसिवेरीय — ३७२  
 नवाई — १६०, १६१, १६३  
 नवावाद — ५३९

नवीन तुर्क — ५२६  
 नवोअलेक्सान्द्रोव्स्की — ३५८  
 नवोगोरद — ७५, ७७, ८२,  
 ८३, ८४, ८५, ८६, ८८,  
 ९१, ९३, ९६, ९९, १०९,  
 २१८, २२३, २२५, २२८,  
 २४९, २६२, २६३  
 नवोग्राद — २१, २७ (गोरद),  
 ३९  
 नवोशेस्मिन्स्क — ३५०  
 नवोसिविर्स्क — ४०३, ५३०  
 नसहल्ला — ४२४, ४२६ (अमीर  
 व्खारा), ४४७, ४६८,  
 (-मिर्जा), ५२६ (कुशबेगी)  
 “नस्ख” — १५५  
 “नस्खजहानारा” — ४८  
 “नस्तालीक” — १५४  
 नस्तरोफ — ५५१  
 नस्तोरी — २९६  
 नाईटिंगल — ३८०  
 नाट्य-कला — १४, २४१, २६६,  
 ३९३  
 नाट्यशाला — १६१  
 नादिर — १८५ (नासिर), १८७,  
 (वजीर), १९०, १९२  
 नादिर मुहम्मद — १८९, २१०  
 नादिरशाह — १९२, ३५२,  
 ३७८, ४४२, ४६७,  
 ४७०, ४९० (तुर्कमान)  
 नान्सेन — २६५  
 नारवा — १००, २४९  
 नारिन — २९९  
 नारी (नारिन) — १७९ (डाडा)  
 नार्थब्रुक (वायसराय) — ४८१  
 नावे — ८४  
 नासमेन — ७५  
 नाविकशास्त्र — २६५  
 नासिर — ७, ३६  
 नासिह्दीन — १०, १३, २०,  
 २७ (मुहम्मद), १२७, १४२,

१४४, १५१, ४९३ (शाह),  
 ५५१ (कगडलवेगी)  
 निदवेई ओगल—१३०  
 निदिना—२१७  
 निदिनिच—६८, ११०  
 निदिनिन—१०१  
 निदिफोरोफ (कतान)—८७६  
 निदर—१३०  
 निकोन—२२९, २३८, २४१  
 निकोलम—८८२ (जेनरल)  
 निकोआइ—८३, १३५, ३९२,  
 ३७३, ३९५, (२), ३९८,  
 ८०६, ४७३  
 (१), ५३१ (२)  
 निकोलाड स्याथेरी—२४२  
 निकोलायेवक—३८१  
 निकोलायको—५२०  
 निगपई—१३१  
 निगार दानम्—२७७  
 निजामी—१६१ (कवि)  
 निजामुल्ल—१३१  
 निजार-अपत्यदा—३१६  
 निजनीनवोगोद—५१ (निजला  
 नरीन नगर), ५२, ६३,  
 १०, ७८, ९०, १०२,  
 १०१, २२३, २६२,  
 २६७, ८१६, ८८६,  
 ८७३  
 निध—२८३  
 निमिअन—०७१  
 निपाज तुलमात्रा—५८८  
 “निर्दीन-ना”—५  
 निपार—१०५  
 निपा—११५, ११७, २०१,  
 २०२, २०३, २०४  
 निपि—८, १११  
 निपि—१११  
 निपि—१११  
 निपि—१११

नीमा—३४६  
 नीमेन—९५, ३६८ (नदी)  
 नीवखी—२७१  
 नूजी—६२  
 नूरअगी—३३७, ३८१, (लय-  
 ओई), ३८५, ३४९, ४८६,  
 नूरजहा—१५५  
 नूरनुकाई—१६६  
 नर मुहम्मद—२०३  
 नरखदी खान—४९२ (तेवका)  
 नूरहाचू—३२४  
 नूतदीन निराखुर—५५१  
 नेकासोफ—३९२  
 नेस्ती—१४, १०१, २३८  
 नेन्मुकान्स—२५०  
 नेन्मवेगे—५२१  
 नेपत्स—२४, २६९  
 नेपाळी—५४६  
 नेपोलियन—७८, २६९,  
 २७०, ३६६, ३६७, ३६९,  
 ३७०, ३७१, ३७२, ३७४,  
 ४२०  
 नेप्रवादा—१८  
 नेप्टुइयेक—३५२, ३५३, ३५४  
 नेमत—२६, १९६, २०२, २०६  
 नेरेजेम—२११  
 नेचिन्क—२४३, २५३, ३८१,  
 ३८६  
 नेवा—९४, ९६, २५०, २६७,  
 ३७५, ४१६ (नदी)  
 नेवेल्स्की—३८१  
 नेगापोर—१३१, १८३ (नुरा-  
 सान), १५०, १८१  
 नेन्तोरी—१२५  
 नेन्तोरीय—१३६  
 नेन्तोरोक—११२, ५५८  
 नेगरी—८८५  
 नेपाळ राजा—१२०  
 नेमत—२१, २०८, ३६७, ३८२,

३५३, ५१४ (उज्वेक),  
 ५१६, ५२९ (कजाक),  
 ५३०  
 नीकन मगित—५१४ (उज्वेक)  
 ५१६  
 नीवस—५१६ (उज्वेक)  
 नीगाई—२७, २८, २९, ३०,  
 ३१, ११०, १४१, १४५,  
 १६७, १६८, १९७,  
 २०१, २०८, २०९,  
 २७७, २७८, २७९,  
 २८७, ३१० (मगीत),  
 ३१६, ३१७, ३१८,  
 ३२१, ३२४, ३३८,  
 ३३९, ३४३, ४६५,  
 ५१५ (उज्वेक), ५१६  
 नीयन—६१, १०३, १४३,  
 १४८  
 नीविकोफ—२६८  
 नीकर—६८ (अफनर)  
 “नीजवान विद्यार्थी सघ”—  
 ५३२  
 नीरोज अहमद—३२४  
 नीरोजवेग—४२  
 नीरोज मुहम्मद—१७९  
 न्यस्टाट—२४, २५  
 पगनुये—११४  
 पचिमान—२२  
 पजास्की—२२३  
 पत्चीमन—६  
 पय-नाटक—२२४, २६६  
 (ओपेरा)  
 पपाइ—३५२  
 पपोफ—३९६ (वेतार-आवि-  
 प्कारक)  
 पयार—३४६  
 परनाल—३०६ (रमद)  
 परमाणु-विदरण—२६५  
 परमानेनी—१८८

- परशैन्निकोफ—२४१  
 पराक—३०६  
 परिषद्—२२८, ३३३  
 पर्लाविका—५२०  
 पलासी—१६, २५८, ३३६,  
 ४२०, ४५२  
 पलियोलोगस्—२८४  
 पवित्र-सन्धि—३७०  
 पचक—१६१  
 पचवर्षीय योजना—५३४  
 पचायत—४०१  
 पज—५२७ (वक्षु), ५४६  
 पजकद—१७५, ४५८  
 पजदेह—४९१, ४९८  
 पजाव—१३४, ४१६, ४४८  
 पातर—३२७  
 पानिखेर—२७०  
 पामीर—१०, १७४, १९२,  
 ३०४, ३३४, ३७८,  
 ४५०, ५३६, ५३९,  
 ५४१  
 पारस—११ (खाडी), १४५,  
 १५०  
 पारेकास्पियन—५४९ (जा-  
 कास्पी), ५५०, ५५५  
 पार्लियामेंट (ब्रिटिश)—४९८  
 पावल—२६८ (१), ३४९,  
 ३५७ (जार), ३६५  
 पावलोफ—३९६  
 पाषाणपुल—२०८  
 पाषाण-युग—५२८ (मध्य-  
 पुरा-नव-), ५४१, ५४८  
 पासख—१०४ (ईस्टर)  
 पिलोतेइ—१०६  
 पाषाण-युग (मध्य)—५४१,  
 ५४८  
 पित्तल-युग—५२८, ५४१, ५४८  
 पित्रुस्का—३९१  
 पिल्याव्का—२३२  
 पिशपेक (फ्रु जे)—३७९, ४३२,  
 ५३३, ५३७, ५३८, ५३९  
 पिशागर—४४७  
 पिशिमा—३१७  
 पिसारोफ—३९२  
 पीतर—६४, ९७, ११६,  
 २१२, २४६, २४७,  
 २४८, २६५, ३३३,  
 ३३९, ३७५, ४४८,  
 ४६५, ४६६, ४९३,  
 ४९५ (१), २५५,  
 २५८ (२), २६१ (३)  
 पीतर-पावल-दुर्ग—२५२, ३८५,  
 ३९२, ५०८, ५१०  
 पीतरबुर्ग—२१२, २५०, २५२,  
 २५७, २६६, २६८, २७१,  
 २९१, ३३७, ३४८, ३५०,  
 ३५१, ३५३, ३६५, ३६६  
 (=लेनिनग्राद), ३७०,  
 ३८८, ३७४, ३७५, ३७७,  
 ३७८, ३९०, ३९१-९५,  
 ४०१, ४०२, ४०९, ४१२,  
 ४२६, ४३२, ४४४, ४४८,  
 ४५०, ४५३, ४६४, ४७५,  
 ४७६, ४८६, ४९५, ४९८,  
 ३९७-९९  
 “पीतरबुर्गसे मास्कोकी यात्रा”—  
 २६७  
 “पिता और पुत्र”—३९२  
 पीर मुहम्मद—१५१, १५४,  
 १७९, १८२, २८१  
 पीरअली—३५५  
 पील—२००  
 पुगाचेफ—२६०, ३६१, २६२,  
 २६८, ३५५  
 पुतियातिन—३८९ (अदमिरल)  
 पुतिलोफ—३९९, ४१६  
 पुतिवल—२१८, २२०  
 पुरगस—९२  
 पुराना पचाग—४०१, ४१७  
 “पुराने वर्षोंका इतिहास”—८५  
 पुलकोवो—५१०  
 पुलाद—५४ (—ब्रेक), ६३,  
 ६४, १०२ (—ब्रेग), १३६,  
 १५६, १९६ (खान), २९५  
 (ची)  
 पुलकेश्ती—४९८  
 पुलसिरात—४२३  
 पुश्किन—२३८, २६६, ३७१,  
 ३७३, ३७७, ३८२, ३८३  
 (कवि), ३९२  
 पुश्किन—५१० (जास्कोपिपेलो)  
 पुस्तोजेस्क—२२९  
 प्द (=१६ सेर)—३७, ४८४  
 “पूजी” (मावर्स)—३९३  
 पूजीपति—४०८, ४०९  
 पूजीवाद—३६५, ३७६, ३९३  
 पूजीवादी—३९२ (युग), ४०६  
 (व्यवस्था)  
 पेइ-हौ—३८९  
 पेकिङ्ग—४, ८, १०, ११, १६,  
 २२७, २५३, २५४,  
 ३२९, ३३७, ३४७, ३५४,  
 ३६१, ३७४, ३८१, ३८९,  
 ४२१  
 पेचेनेग—७५, ७९, ८२, ८३,  
 ८४, ८६, २८४  
 पेचेनेत—५४८ (तुर्कमान)  
 पेचेस्क—८४, ८५  
 पेचिङ्ग—२५५, २६३, ३८८  
 (पेकिङ्ग)  
 पेचोरा—१११  
 पेन्नोग्राद—४१६, ४१७, ४१९,  
 ५०४, ५०५, ५०६, ५०७,  
 ५०८ (पर वोल्गेविक अधि-  
 कार), ५०९, ५११, ५१७  
 पेन्नोग्राद सोवियत—५०८  
 पेन्नोपावलोव्स्क—३४७, ३४८,  
 ३४९, ३८०, ३८२  
 पेन्नोफ—२२७, ३८३, ३८५  
 पेन्-किङ्ग—५ (नानकिट)



पेन्जा—२२	पोनोमारेफ—५२५	(देर्झान्स्काद्वारा)
पेन्दा—५२५	पोप—१०, २४ (ग्रेगरी), १०१	“प्राब्दा” (अधिकार, सत्य)—
पेपच—१११ (पस)	पोषार्कोफ—२३९, २४०	८५, ४१०, ५०४, ५०५,
पेरियेम्लाव—६३	पोर्ट आर्थर—३९७, ३९८, ४००	५०६ (वोन्शेविक
पेरिस्किन—३९६		पत्र), ५०८
पेरिम—२६९ ३७०, ३७४, ३७९, ३८०, ३८२, ३९०, ३९७, ४००, ४०६, ४१०, ४१२, ४१३, ५५४	पोट्समथ—४०० (-सवि), ४०६	प्रासादी क्रांति—२५५
“पेरिम फ़मन”—३९१, ५०४	पोल—५३, १९०, २१९, २३२, २३६, २६०, ३१७, ३७७	प्राहा—४०५, ४०६ (प्राग)
पेन्न—७३, ७६, ८६ (देव)	पोलकसाक—३१७	“प्रकाजी”—२२८
पेरेइम्लाव—५२	पोलव—३, १०, ३६, ३८, ५३, ८४, ९२, १००, १०९, २१८, २२७, २३३, २५९, २७२, ३६७, ३७०, ३९९, ४०२, ४०५, ४१३	प्रिस्तोफ—३४० (किशिनकी), ३६१
पेरेया—८२	पोलाद-तेमूर—३१५	प्रुय—२५० (नदी)
पेरेया-लाव—८७	पोलेयान—८३	प्रुजिया—२५८, २५९, २६०, ३५४, ३६५, ३६७ (जर्मनी), ३६८, ३७४, ३७९, ३८०
पेरेया-लाव—८२, २३३, २६६, २६७	पोलेत्स—८२	प्रैयोत्रजेन्स्त्रोये—२४१, २४६, २४९
पेरे-वोटोग—२८८ (प्राग्-बोन्गा)	पोलोत्स्क—८८	प्रोकोपी—२२३
पेरोफ—३९३ (चित्रकार)	पोलोत्स्की—२४१	प्रोदृगोल—४०८
पेरोन्स्की—३७८, ३७९, ४३०, ४३१, ४५०, ४७३, ४७६, ५१८ (किजिल-जोर्दा)	पोलोव्मी—८७, ८९, ९०	प्रोदमेत—४०८
पेफिन्गियेफ—२४१, ५२५ (पेफिन्गेफ)	पोलोविना—९४	प्रोद्व सेंडीकेट—४०९
पेर्म—१००, ५०३	पोल्जुनोफ—२६७	प्रोलेतारी—५५२ (-सर्वहारा)
पेनिन—५१८	पोल्तरोत्स्की—५१८, ५२६, ५२५	प्रुजेमिस्ल—४१३
पेरेपेन्जिन—११३	पोल्तावा—२५०, २५२	प्रुझेवाल्स्की—२९४, ५३७, ५३८
पेलोन्गी—८६	“पोल्थान्स्का स्वेचदा” (ध्रुव-तारा)—३८२	प्रुयाज्नुखा—३३३
पेनाय—१९३, ४४७, ४६०	पोशारोफ (लेफ्टनेट)—४८६	प्रुयाज्नुये ओजेरो—३३३
पेन्—६, २३ (बुदापेस्त), ७६	प्याचिये—२२८ (निम्न लेखक)	‘लातेन—२३
पेन्ने—३७३, ३७५, ३७६, ३८२	प्योत्र अडेविमयेफ—३९१	प्लातो—१०४
पेस्पेलोफ—५२५	“प्रतिनिध-मदन”—५१३ (मांवि-यन)	प्लेखानोफ—३९३, ३९७, ४०३
पेसा—२६२	प्रगात—३७२, ३७८, ३८१, ३९०	प्लेग (महामारी)—३८
पेननिन—२०७	प्रगात-महामार—२५२, २७२, ३०७	प्लेइचेयेफ—२२७, २२८
पेनिय—२३		प्लादिक—९१ (नगरपाल)
पेनता—१९०	प्रगातन-मस्या—३७३	प्लोल्स्की प्रिकाज—२२८
पेनतर—१३७		प्लेक्विच—३७९
पेनतिन—(मुद्रात)—६००		पकोफ—३९, ९६, ९७, १०६, १०९, २१८, २२५, २२८, २२९, २६७ (-प्रासाद), ४१७, ४१९
		प्लालि—१३५
		फग्-पा—८९, १३ (लिव्वी लामा), १५ (फग्-पा=आर्थ)

फगफूर—३७ (भगपुत्र, देवपुत्र)

फजल—४५५

फजलान—७४

फजलुल्ला—१४५

फतेह अली—४९० (काजार)

“फतेहनामा-कुचुक”—६०

फना (खान)—४७९

फरगाना—१६७, १७६, १८०,

२८०, २९६, २९८, ३०४,

३०५, ३०७, ३३०, ३८८,

४१५, ४२०, ४५१, ५१८,

५२०, ५२१, ५२२, ५२३,

५२४, ५३५, ५३६, ५४४,

५४६

“फरहाद-ओरी”—१६१

फराखर—४६२

फरास—२०८ (झाऊ),

४२९ (सक्सौल), ४८८

फरिश—४८१

फरीदुद्दीन—१४७

फरीदून मिर्जा—४७६

फर्बरी क्रांति—५०३, ५११,

५१७, ५१९, ५२६, ५३२

फलगर—४५७, ४५८

फान—४५८

“फानी”—१६१ (नाममान)

फायनका—२४

फारसी—१५४, ५३९

फाराव—४५७, ४५८

फितनियेफ—४७७

फिन (सुओपी)—७१, १००,

५४८

फिनलन्ड—७४, ७५, ९४, ११६,

२२३, २२५ (खाडी), २५०,

२५१, ३६७, ३९९, ४०२,

४०५, (=फिनलैंड), ५०४,

५०७

फिनो-ब्रिडिड—५१६, ५२८,

५४१, ५४८

फिलस्तीन—९५, ३८०, ३८४

४११

फिलारेत—२१७, २२४

फिलिपोफ—१०४

फिशर—३१६

फीरोज—१४०, १४१

फीरोजा—१७०

फुजैल मरुदम—५४४-४६

(बाममची)

फुनछोक्—३३४

फत्ते—३३६

फसड—१८१

फेदेरोफ—५३२, ५३३

फेदोतोवा—३९३ (अभिनेत्री)

फेदोर—६४

फैजाबाद—४२५, ४५९, ४६२

फोक—७३

फोनविजिन—२६६

फोलवौम—५३१, ५३७

फयोदोरोफ—२५६

फयोदोसिया—३६५, ४१३

फयोरात्रेन्ते—१०५

फाकोन्वर्ग (मेजर)—४६५

फास—२३, ३९, ८४, १६०,

२५९, २६३, २६९, ३६६,

३८०, ३८२, ३८८, ३९०,

३९६, ३९७, ४०६, ४०७,

४०८, ४१४, ५५०

फास-वेकोफ—२४२

फासिस—३६६ (१)

फामिस्कन—१३५

फ्रीडलैंड—३६७

फुजे—४०५, ४१४, ५०८,

५३३ (पिश्पेक)

फ्रेंच—२४, १९१, २२२, ३७३

(भाषा), ३८९, ३९४, ५५२

फ्रेंच-क्रांति—१६५, २६७, २६८,

२७०, ३६५, ३७०, ३७३

‘फ्रेंच महाभारी’—२६७

फ्रेडरिक—२४, २५८, २६०,

३६८-६९ (२)

फ्योदोर—२२, ११५, २०६,

२१७, २१८, २१९, २८१,

३१७, ३२५ (ज़ार)

फलोरेन्स—३८०

वइकेचर—१३३

वकलान—१७९

वकसी—१६२

वकुनिन—३९१

वक्सी (भिक्षु)—१६२, ३२६

वक्सीगिर—३३४

वखरिन—५१५ (उज्वेक)

वखसमवी—१६५ (मगत)

वख्तियार—१६५

वख्तियारी—५५४

वगचतोफ—४६५

वगजले—६४

वगदाद—३१, ५६, १३२,

१४५, ५५४

वगाबाद—१९९, २०१

वगदान—२३१

वगरातियोन—३६६, ३६८,

३६९

वगोल्यावोन्स्की—९१

वतपकरा—४१५ (वत-

वकरा), ५३२

वतरेक—५१४ (उज्वेक)

वतलान—५६

वतानियेफ—४५०

वतुमसी—३३४

वतूता—३८, १३५

वत्का—२३६

वथोरी—१०९

वदरुशा—५६, १२१, १३१,

१५०, १६६, १७७, १७९,

१८१, १९१, १९४, २९७,

३०४, ३१०, ३१३, ४६०,

४६१

वनीकन्त—१४७

वन्दर—१०३, ३६८

वदुक—१७७

ववायेफ—५५१  
 वयन्तु—१३३  
 वयात—५८७ (तुर्कमान)  
 वरका—२०, १८१, १९६,  
 (वेरेका)  
 वरुता-नराय—२१ (सुवर्ण-  
 ओर्द)  
 वरनियारोफ—६१  
 वरकुल—१३३, २९६  
 वरगडी—१३५  
 वरगत—३२१  
 वरचिन—४१  
 वरजाव—५३९ (नदी)  
 वरदजा—७९  
 वरदजा—२११  
 वरदी—८१, ८२ (वेग)  
 वरन्ली—२६५  
 वरन्दा—१११  
 वरमन—५१५ (उज्बेक), ५१६  
 वरमा—३१७  
 वरमन—१८८, ३१३, ५१८  
 (उज्बेक)  
 वरमाया (पोलद)—३६७  
 वराविन—३१७, ३१९, ३४७  
 वरानिग्ली—३८२  
 वरेकेजाम—१०२  
 वरुन—५२५  
 वरग—९५  
 वरानाफ—५५१, ५५४  
 वरनोद—२६७, ५३०  
 वरमा—३, ९ (मी-यन), १०,  
 १३, १८  
 वरान लेमन—१६६  
 वरान—२५८, ३६७, ६०७  
 (तामेन), ६११, ६९६  
 वरमान—१०८, १५९ (युरोप)  
 वरमाया तियात्र—५६६  
 वरमान—६८, १२७, २६८,  
 २६९, ३००, ३०१, ३०३,  
 ३०४, ३०५, ३०६

(=बलखाश)  
 बलख—१३, ५६, १२१, १३५,  
 १४३, १४४, १४९, १५०,  
 १५१, १७१, १७६, १८१,  
 १८६, १८७, १९१, १९४,  
 २११, ४४२, ४५१, ४६०  
 (बली), ५६१  
 बलखान—१९९, २०९, ४६८  
 (पहाडी), ४८०  
 बलगली—५१६ (उज्बेक)  
 बलजुवान—५२७, ५४३  
 बलदुमाज—१९९  
 बलवर्म—१९९  
 बलम्वर—७२  
 बलाकिरेफ—३९३ (सगीतकार)  
 बलाचिया—३६७  
 बलाजर—७४ (दक्षिणी  
 दागिस्तान)  
 बलिकची—४३६  
 बलिकली—५१६ (उज्बेक)  
 बलिजक—५०  
 बलोमदा—४०६  
 बलोचिस्तान—१५० (=बिलो-  
 चिस्तान)  
 बलूची—१४९  
 बलोत्तिकोफ—२२०, २२१  
 बल्कान—३७३, ३८६, ४०७,  
 ४११, ४१२, ४९५  
 बलजुवान—४५९  
 बल्लासदिर—४८१  
 बल्ली-बालूर—३११  
 बल्लोड तियात्र—३८५ (महा-  
 नाट्यशाला)  
 बशोकुजी—२७५  
 बश्किर—१८, २६२, ३१५,  
 ३१६, ३२१  
 बमकाही—०३  
 बममानोद—२११  
 बमनफ—५१८ (उज्बेक)  
 बमन—३३८

बहमनी—१५७  
 बहराम अली—४४१  
 बहरैन—१०३, १०४  
 बहाउद्दीन—१२६, १२७  
 बहादुर—१८७, २३४  
 बहावलपुर—१९४  
 बगाल—१०, १३  
 बदे-हरम—१९२  
 बाइतक—२९७  
 बाइवल—८५  
 बेगीजान—४४३ (शाह मुराद)  
 बाइवेगिस—३१९  
 बाइलियर—४८४  
 बाइसून—४५९, ५२७, ५४४  
 बाइ—३१०  
 बाइ तुर्सुनोफ—५३१  
 बाउलिन—३५७  
 बाकिन—५३७  
 बाकी मुहम्मद—१८६  
 बाकू—१०३, २५१, ३७१, ४१२,  
 ४१६, ४६५, ५५०, ५५४  
 बाक्सर (-विद्रोह)—३९८  
 बागी—४९८ (उपत्यका)  
 बागलू—५१६ (उज्बेक)  
 बागेनी—१६९  
 बाक्तेयारोफ—२३९  
 बाज़नोफ—२६७  
 बातुर—२३०, ४६८ (वातिर)  
 बातुर खुद-बैची—२८२ (खुद-  
 बैची), ३२५ (बैची)  
 बातू—५ (छिद-गिस्-मोत्र),  
 ६, १८, २०, ३२, ४९, ६३,  
 ९२, ९५, १००, १२६,  
 १२७, १२८, १४५, १६५,  
 २८६, ३१५, ३७७  
 बातूम—३८७  
 बातूसराय—२१, २६, २७,  
 २९, ३१, ३७  
 बादगी—१९२  
 बादकुल—३१५

- बापू—२३६  
बाबर—६८, १०६, १४७,  
१५४, १५८ (-मिर्जा), १५९,  
१६०, १६३, १६५, १६७,  
१६९, १७०, १७१, १७२,  
१७३, १७४, १७५, १७७,  
१७९, १८३, ३०२, ३०४,  
३०५, ३०६, ३०७, ३०८,  
३१३, ४२१, ४३७, ४६२  
“बाबरनामा”—१७२  
बाबा—३२, १४५, १८० (खान,  
जान), २७८ (-सुल्तान),  
४५७ (-बेक)  
बाबुशिकन—५१८, ५२२  
बाबुल—१०३  
बामियान—४७, ४८, १२६,  
१९४, ४६१  
बामिर—४९६  
बामे-दुनिया—२१०  
बाय—५३१ (सामत)  
बायज़ीद—१७३, ३८७  
बायन—९, ४७, १३२ (खान),  
१३६ (-क़ल्ली, -मुल्हज़),  
२१  
बायर—३५ (अमीर), ४३,  
५१, ५२ (सामत), ८५,  
१०४, १०६, १०९, २१९,  
२२०, २२४  
बारकुस—५२५  
बाराविन—३१६  
बारोन—५०३ (बैरन)  
बार्नेस—४५०, ४४८  
(कप्तान) ४७३, ४९०  
बालबलोफ—१०४  
बालिकची—४३४, ४३५  
(बालीकिची)  
बालिगू—१३०  
बालुका वृष्टि—२९३, २९६  
बालुका-समुद्र—२९४  
बालूर—३११ (बाल्ती)
- बाल्तिक—७४, ७५, ८४,  
९४, १००, १०८, ११६,  
२२५, २३४, २४८, २६५,  
३९९, ४१२, ४१३, ५०८  
बाश्किर—२१ (तातार), २३,  
३१, ५६, १०७, ११०, २३४  
(तुर्क), २३५, २३७,  
२५०, २६१, २८४, ३१७,  
३२४, ३३९, ३४३, ३४४,  
३४५, ३४७, ३४९, ३५१,  
३५२, ३५४, ३५५, ३५७,  
३६८, ३७२, ३७८, ४०१,  
५१२, ५४८ (तारतार  
(भाषा, बाश्किर)  
बासफोरस—४११  
बासमची—५२३ (डाक),  
५२७, ५४२, ५४३, ५५०  
बाह्य-धर्मी—३४० (रूसी)  
बाह्य-मगोलिया—३२१, ३२४  
बाह्य राज्य-विशेषाधिकार—  
५५४  
बित्तल—६३  
बिल्कोविच—४५०  
बिन सब्वाह—१३९ (हसन-)  
बिपुरी—२५१  
बिरकुलक—५१६ (उज़्बेक)  
बिरलस—१३६, १३७ (तेमूर-  
वश), १४८ (बरलस)  
बिलकैलिक—५१५ (उज़्बेक,  
बिलिकची—२९  
बिलुक-अकची—१८६  
बिशअकित—४८१, ४८४  
बिशकद—१७५  
बिशचगन—४८१  
बिशबालिग—१३५, ५३०  
बिशबाला—५१५ (उज़्बेक)  
बिस्मार्क—३९० ४०६  
बीज़ने—५४८ (तुर्कमान)  
बीतेइ—३३७,  
बीदर—१०१, १०३
- बीनाई—१७५  
बीनीतर—७२  
बीबी खानम्—१५४  
बीबीजेह—२०३  
बीरेन—२५७  
बुआल—२८ (मोवाल)  
बुइदश—२७८  
बुइमोत—५१४ (उज़्बेक)  
बुकन्द—४८१ (पहाडी)  
बुका-बोशा—१२५  
बुकान—४८० (दवंत)  
बुकेइ—३५७, ५३२ (खानोफ)  
बुकइबेफ—३५८  
बुकोविच चेकस्की—४६५  
(राजुल)  
बुखारा—२६, ४९, ५४, ५५,  
११०, ११२, ११३, ११४,  
११५, १२२ (-विद्रोह),  
१२४, १२९, १३२, १३४,  
१३५, १३७, १४३, १५४,  
१५८, १६३, १६७, १६९,  
१७४, १७६, १७८, १८०,  
१८१, १८५, १८८, १९०,  
२०१, २०३, २०४, २०९,  
२१०, २११, २२७, २७१,  
२७८, ३०७, ३१५, ३१८,  
३१९, ३२५, ३३०, ३३६,  
३५३, ३५६, ३७८, ३७९,  
३८७, ४२१, ४२२, ४२४,  
४२६, ४२७, ४२८, ४३२,  
४४०, ४४१, ४४३, ४५३,  
४५४, ४५५, ४६४, ४६५,  
४६६, ४६९, ४७०, ४७१,  
४७२, ४७५, ४७६, ४८४,  
४८९, ४९०, ४९३, ४९४,  
४९८, ४९९, ५१७, ५१८,  
५१९ (नवीन), ५२५  
(अमीराका भागना), ५२७  
(पूर्वी), ५३५, ५४१, ५४२,  
५४३, ५४४, ५५०, ५५१,

५५२, ५५४  
 जुगारेस्त—३६७, ३७१, ४११  
 (-सिनि)  
 जुगोल्ज—३३३  
 जुग—७८ (नदी), ८४, २६०,  
 २६३  
 जुगर्—३१९  
 जुगर्नी—४८३  
 जुगान—२७९  
 जुजान—१०२, १३५, ५१५  
 (-जुजान उपवेक)  
 जुजुगा—२००  
 जुद-जेन—६  
 जुदग्—१६६, १६७ (जुदग)  
 जुम्मक—२९७  
 जरन्दक—१५८  
 जरलक—६७  
 जुगक—१५६ (खान), १६५  
 जुरी—१२७, १३०, १३३,  
 २९७ (-बाशी)  
 जुस्त—२७८, ३३०, ३३२  
 (काते किर्गिज),  
 ३४७ (जगली किर्गिज),  
 ३४८, ३५८ (करा-किर्गिज),  
 ३४९, ३६०, ४२१  
 जुर्जेजरी—१४०  
 जुर्ने-फजिन्—१८  
 जुयंत (मंगोल)—२३८, २७२,  
 ४०१, ५८८  
 जुयुत्तुजे—५३०  
 जुुरकि—३४५, ३४६, ३५३  
 (=जुगक)  
 जुांघोल—३२८  
 जुन्दुम—१६८  
 जुय्या—२३०  
 जुआयगर—१६६  
 जुलान्—३३, ४३, ५१, ५६,  
 ११ (कजाक), ८२, ८३,  
 १०  
 जुलानिया—२७ (जुलानी),

८३, २८४, ३८६, ४११,  
 ४१२  
 जुस्तू खान—३२८ (बोघिसत्तव  
 राजा)  
 जुस्ताग—४८४  
 जुअली सेना—१९२  
 जुकजली—५१६ (उज्वेक)  
 जुकेइ—३४९  
 जुजाची—५१५ (उज्वेक)  
 जुजेजी (तुर्कमान)—४७१  
 जुतुर्लिन—३५०  
 जुवर—३६६, ३७०  
 झुरीची—२०६  
 झुस्त (किर्गिज)—३३७  
 झुसज ओगलान—३०५  
 झुर्वा (पृजीवादी)—४०५,  
 ५२१, ५२५  
 झुर्वाजी—३७०, ५२१, ५२५  
 झेइनेम्स—२८९  
 झेइसखान—२९९  
 झेउलिन—३५५, ३५६  
 झेक—३२४, ४५३, ४५७  
 (ठाकुर)  
 झेकतिली—५४७ (तुर्कमान)  
 झेक पुलाद—४७०  
 झेकेचेर—१३२  
 झेकोविच—२५१, ३५१, ४६४-  
 ६६, ४८४ (राजुल)  
 झेग—५५१, ५५३ (=राज्य-  
 पाल)  
 झेगचिक—१६७  
 झेगउज्वेग—२०९  
 झेगन्तम्—१३०  
 झेगफुआन—११३  
 झेगातकिरी—१७८  
 झेगीवान—१९८  
 "झेचारी लीजा"—२६६  
 झेनलहेम—३८०  
 झेनाच—५१५ (उज्वेक)

वेदिलोफ—५१९  
 वेन्देसेन—४९५  
 वेरकुत—५१४ (उज्वेक)  
 वेरेकेइ गुर्यानी—२९७  
 वेगातवोजा—५५  
 वेरिग—२४० २५६, २७२,  
 ३७३  
 वेरियोजोफ—२५६ (माइ-  
 वेरिया)  
 वेरेक—८, २२, २६, २८,  
 १२८ (-खान), १४१  
 वेरेकचर—१२९, १३०  
 वेरेकसराय—५१, ५५  
 वेरेजिना—३७०  
 वेरेदक—१६८  
 वेरेफकिन (जेनरल)—४८९  
 ४८४, ४८५  
 वेरेस्त—२३२  
 वेरोइ—५१५ (उज्वेक)  
 वेर्ग—५२५  
 वेर्दव्स्की—५०६ (एडमिरल)  
 वेर्दस्कोइ—३५१  
 वेर्दीकुलियेफ—५४९  
 वेर्व—७७  
 वेल—२९१  
 वेला—२३  
 वेलिन्स्की—३८२, ३८३ (कवि)  
 "वेलीकी गमुदार"—२२५,  
 २२९  
 वेलो—(=श्वेत)  
 वलोअम्योफ—५०४  
 वेलोगोर्स्क—११५  
 वेलोजेरोफ—४०९  
 वेलोरुमिया—२३०, २६०,  
 ३७७, ५१२  
 वेलोरुमी—९८, १००, २३४,  
 २५९  
 वेलिजयन—३०४  
 वे-को—२९३

बलोवदस्क—५३७	बोरोशिलोफ—४०३, ४०६,	३२८, ३३३ (-बिहार),
बसकाउन-द्रोणी—३१०	५०८	३४६
बेसराविया—३६७, ३६८	बोर्गा—३६७	व्येलोओजेरो—७५ (इवेत सरोवर)
बेम्तुजेफ-र्यूमिन—३७६	बोलोस्त (पर्गना)—३७०	व्योर्क—४०६
बेहजाद—१६२ १७२	बोल्लगार—६, १८, २०, ७३	ब्रन्सविक—२५७
बैकाल—२३८, २७१, २७२,	बोल्लगारी—१६६	ब्राडेनवर्ग—२६०
३२१, ५३०	बोल्लशेविक (बहुमतीय)—	ब्रातिस्लावा—३९
बैचगिर—४८४	१८५, ३९७, ३९८,	ब्रियास्ना—१११, ११४
बैदू—१४४	३९९, ४०३, ४०४, ४०५,	ब्रिटिश चैनल—३६६ (-चेनेल)
बमनतली—४८२	४१३, ५०४, ५०५, ५०६,	३८९, ५५५
बैराम अली—१५० (मेर्व),	५०७, ५०८, ५१८, ५१९,	ब्रूलोफ—३८४
५५१	५२०, ५३८, ५४९, ५५०,	ब्रेस्त—२३०
बैमु कर—१५६, १५७, १६२	५५१, ५५३, ५५५	ब्रेस्त-लितोव्स्क—४१३
बोइत्कोविच—५५४	बोल्लशेविक-कमीटी—४१६	“ब्रेस्ला”—६, ४१३
बोकल—५२०	बोल्लशेविक क्रान्ति—२५०, २५२,	ब्रौनो—३६६
बोकल-वेर्दगन—१२०	३५८, ३६१, ३८५, ३९२,	ब्यास्क—२१७
बोग—७२	३९६, ४०१, ४१५, ४१७,	ब्लाकेननागेल (मेजर)—४६९
बोगुन—२३२	४३९, ४४२, ४५३, ४७३,	ब्लित्जक्रीग—२५८
बोगोल्युवोवो—९१ (भगवत्-	४८६, ४९७, ५०१, ५०६,	भागीरथ—१५२
प्रिय)	५०७ (तैयारिया), ५०९,	
बोग्दाउला—३२५	५१२, ५१७ (तुर्किस्तानमें),	भारत—३५, ३७, १५०, १५३,
बोतपाई—५३० (खित्तन)	५२१, ५३२, ५३५, ५३६	१५७, १६३, १७४, २७१,
बोदी तायन—३२४	बोल्लशेविक नेता—५०८	३५१, ३५७, ३६६, ३८४,
बोनद—१०४	बोल्लशेविक पार्टी—४०५, ४१७,	३८७, ३९६, ४२६, ४४४,
बोयकोफ—३१७	५०६, ५०८, ५२१ (-पार्टी),	४६७, ४७४, ४९७, ४९८,
बोयन्-थू—१५, ३३	५२६	५२१, ५२८, ५३०, ५४२
बोरक—८, ६६, ६७, ६८,	बोशोक्त्त (कुश्त)—३२८	भारतीय—७४, २२६, २२७,
६९, १४३	बोस—२५४, ३९६ (जगदीशचन्द्र)	२९५, ३३१, ३७४, ४१२,
बोरकचीन—२९	बोसनिया—३८६, ४०७, ४०८,	४३३, ४६५ (व्यापारी)
बोरकचिन खातून—२६	४११	भापातत्व—५२८
बोरका—१८०	बोसफोरस—४०७	भिक्षु—१६२
बोराक—१२९, १३०, १३१,	“बोस्ताने मुजक्करीन”—१३८	भूमध्यसागर—२६९, ३८६,
१५८, १६७	“बोस्ता”—१४३	४१३
बोराविन—४६५ (इतालियन)	बोस्ताम—१७६, २०९	“भूमि-घोषणा”—५१०
बोरिस—८४, ११५, २२६	बौद्ध—३०, ३४, १२७, १३५,	भौगोलिक अभियान—३७२
“बोरिस गदुनोफ”—३८४	२९६, ३०० (-कल्मक),	मगोल—३१९ (पूर्वी-)
बोरोदिन—३९३ (सगीतकार)	३२४, ३२८	मई-दिवस—३९७
बोरोदिनो—३७३	बौद्ध-धर्म—८, १५, २०, ३१,	मकदूनिया—४०७
बोरोन मेयेदोर्फ—४४५	४१ (मदिर), १३३, १३५,	मकरियेफ—४४६
बोरोलदार्ताउ—४३२	१३८ (सत), १४५, ३२७,	मकरी—१०७
		मक्का—१०४, १४३, १८०,

१८५, २०३, २०७, ३५८,  
४३४, ४४९, ४५२  
मत्तचक्रा—७४  
मत्तद्वम—१५३, ४९२ (कुल्ली,  
तेक्का)  
मत्तवेचको—१९२  
“मत्तजनुल्-असरार”—१६१  
मग्यार—२१, २२, २४  
(हुगेरियन), ३७९, ५४८  
मगरदी—१४७  
मग्ज—२०९  
मद्द किरमान—६१  
मद्द विशालक—१३०, १७८  
(मद्दगिशलक)  
मद्दगू—६, ७, २१, २९,  
१२७, १२९, १४७ (खान),  
२९० (चिपटी नाकवाला)  
मद्दगू तेमूर—२९, १३०, १४३  
“मजदूर इतिफाक”—५१८  
(मजदूर लोग)  
मजदूर-प्रतिनिधियोंकी मोवि-  
यत—४०१, ४०३  
“मजन्-लैला”—१६१  
मजार—५६६ (गाव)  
मजीदुद्दीन—१२६  
मतनियाज—८८६ (दीवानवेगी)  
मतमुराद—४८५ (दीवानवेगी)  
‘मत्तलउम्-नादेन’—१५६, १५७  
“मत्तलउल-अनवार”—१६१  
मत्तलुन्स्—६८  
मत्तलुन्याय—६०९  
मयूरा—१५६  
मदरसा—१७०, १९३  
‘मदरसा-नुसरमिया’—१६६  
‘मदरसा निजामिया’—१६६  
“मदरसा-जेरदिद”—१२८  
मदरसा-तान—५६०  
मदरसा—५६६, ५७८  
मदरसा—१३०  
मदरसा—१८५, १९०

मध्य-एशिया—१०३, ४०५, ५११  
मध्य-ओर्दु—३३२, ३३७,  
३४३, ३४७  
मनाप—५३७ (सरदार)  
मनाहदान—१६५  
मनोमाख—७, १०५  
मन्तजोला—१३५  
मनलुक—१४०, १४१, १५२  
ममाई—५०, ५१, ९८ (खान)  
मरकित—१८  
मरगा—१४१  
मरगिनान—१७६  
मरगा-जगात—२८  
मरागियान—४१  
मरिगोरोफ—३३३  
मरियतवुर्ग—२४९  
मरिया—११५ (नगाया), २८४  
मरीना—२१९, २२५  
मरुन्स्क—३८८  
मार्कोजोफ (कर्नल)—४८०, ८८३  
मर्गिलान—१७६, ३०५, ३०६,  
४२१, ४२४, ८२८, ४३१,  
८३६, ४३७, ४४८, ४२०,  
५१८, ५२० (मर्गिलान)  
मलदाविया—६  
मलिक—३६  
मलिक अशरफ—३९, ४०, ४१  
मशहद—१५८ (खुरासान),  
१०३, १०६, १७७, १७८,  
१८६, १८२, १८७, १९१,  
२०३, २११, ४४२, ४४४,  
४६१, ४६६, ४७६, ४९१  
मशहदी—१८५  
ममजदवेग—१३०, १३२ (वेग),  
१५०  
ममजदी—७३  
ममद—५१८ (उज्बेक)  
ममूरी—८६२, ८९९  
ममूरी शील—८१३  
ममोतामिया—५, ८११

(इराक)

मस्कत—१०४  
मस्क्वा—१० (मास्को)  
मस्वी—४८२  
मस्जिद—१८३  
“मस्नवी”—१४३ (कथाकाव्य)  
महमतकुल—११०, ११२,  
११३, ११४, ३१८  
महमूद—६९, १२२, १२३,  
१९२, २७५  
महमूद काश्गरी—५४७  
महमूद—१६८-६९ (खान),  
१९१, २११, २१६,  
(जी अतालीक), २७७  
(मिर्जा)  
महमूद मिर्जा—२७७  
महम्मद—(देखो मुहम्मद,  
मोहम्मद)  
महरम—४३४ (एक अफसर)  
महाओर्दु—३४३, ३४९, ४२५  
महाकेविन—३३१  
महाखान—१२१  
महा-गाडी—३ (नगर)  
महाचीन—१०३  
महादूत—३२  
महानोगाई—३३९  
महामघराज—३५, ११६, २२९  
महाराजुल—३४, ७७, ९३,  
९६, ९७  
महामागर—३७२  
महीने—१९९  
मगजेना—२३८  
मगलइ सूयाह—३०२  
मगला—२९५  
मगलाई-सूवे—२९५, २९६  
मगलिक—३३८, ३४६  
मगित—१६७, १६८, १६९,  
१८५, १९२, १९४, २०९,  
२७९, २८९, २९१, ४२०,  
४७१ (तुर्कमान), ४३९

- (वश), ४८४, ५१६  
(औगुत, उज्जेक), ५२७  
(=मगीत)
- मगिशलक—१६८ (कास्पियन  
तट), १८५, १९९,  
२०३, २०५, २०७, २०९,  
४६९ (तुर्कमान), ४७२,  
४८१, ४८९ (=मकिशलक)
- मगुत—२८७, २९१, ३१८  
मंगुत (मगीत)—५१४ (करगी  
बुखारामें)
- मगुशलक (मगिशलक)—३५८  
मगू तेमर—३१५ (मङ्गू-तेमूर)  
मगोल — ३ (-खाकान),  
१३ (भाषा), ३१, ९२,  
१००, ११४, १२९, १४१,  
१४२, १५४, १९६, २१०,  
२२७, २६३, २७३, ३००,  
३१३, ३१६, ३४० (तोगुत),  
५१७, ५२९, ५३०, ५४१,  
५४८
- “मगोल-उन्निगुचा”—१३  
(तोपची)
- मगोलायित—२८४, ३०५, ४८६,  
५२८, ५३९
- मगोलिया—१२४, १४५, २३८,  
३२२, ५१२ (बाह्य), ५३०
- मगोलिस्तान—२९५
- मंगोलिस्तानी—१४९
- मचू (छिङ्ग)—३२४, ३२९,  
३३७, ३८९
- मंचूरिया—३९७, ४०२
- मचूरी—३८९
- मदारिन—२५३ (अफसर)
- मदोफ—२२७
- मसी—२३५
- मसूर—१६९
- माखिम—११०
- मागियान—१८७, ४५७, ४५८
- माचा—४५७, ४५८
- माचीन—१३०
- माजन्दरान—६३ (ईरान),  
१०३, १४५, १५४, १५७,  
माजूर—४६०
- मानी—१६२
- मामियान—१८७
- मार—३१५
- मारमोरा—३८६ (समुद्र)
- मारी—१०७, २२१, २२४,  
२३४, २३७, ४०१
- मारोइन्स्क—३६५
- मार्कोनी—३९६
- मार्को पोलो—७, १०, १२,  
१३, ४६, ४८, ६६, १२५,  
४६२
- मार्क्स—३७९, ३८६, ३९१,  
३९३ (कार्ल मार्क्स), ३९५
- मार्क्सवाद—३८७, ३९३, ५०७
- “मार्क्सवाद और राष्ट्रीय  
प्रश्न”—४११
- मार्क्सवादी—४१०
- “मार्कोपोलोकी यात्रायें”—११
- मार्शल-ला—४१७
- “माली तियात्र”—३८५
- माल्ता—२६९, २७०
- माल्ता-धार्मिक-संगठन—२६९
- मावरा-उन्-नह—१२१  
(=अन्तर्वेद)
- मासूम—१९४
- मास्को—६, २२ (मकस), २६,  
३५, ४३, ५१ (-ध्वस), ५२,  
५३, ६१, ९१, ९२, ९६,  
९७, १०१, १०५, ११४,  
१५१, २०५, २१७, २१८,  
२१९, २२०, २२२, २२४,  
२३३, २३७, २४०, २४१,  
२४६, २४७, २४८, २४९,  
२५२, २६६, २८९, ३१७,  
३१८, ३२५, ३२७, ३३८,  
३६५, ३६६, ३६८, ३६९,  
३७३, ३७७, ३८३, ३८५,  
३८९, ३९८, ३९९, ४१६,
- ४४४, ४९३, ५०७, ५०८,  
५१०, ५११, ५३३, ५५०,  
५५४ (मस्क्वा, मास्क्वा)
- मास्को राजुल—३४
- मास्को-विजय—२२
- मास्क्वा—१०१ (नदी), २२१
- मिकादो—१४०
- मिखाइल—३४, ९६, ९७, १०२,  
१३५, १८८, २२४, ४०५,  
४१९, ४८० (महाराजुल)
- मिखाइल रोमानोफ—४१९
- मिखाइलोफ—२४८, ५२५
- मिखाइलोव्स्कया—३८३
- मिखाइलोव्स्की—३९२, ४८८  
(खाडी)
- मिङ्ग-वश—१६ (=प्रकाश)
- मितन—५१६ (उज्जेक)
- मित्र-शक्तिया—५०३, ५०६
- मित्रासोफ—३४१
- मितिल्न्स्कया—३८५
- मिनुसिन्स्की—३९५
- मिन्जान—४६२
- मिन्स्क—३९५
- “मिन्हाजुल्-मज्जकरीन”—१३८
- मियानकुल—१६३, १७०, १७६,  
१८२
- “मिरातुल्-मफतूह”—१४५
- मिर्जा—११३, १६५, २८७
- मिर्जा अस्कन्दर—२९८
- मिर्जा खोजा—५५३
- मिर्जा रहीम—५४३ (ईशान  
औलिया)
- मिर्जा शम्स—४२५
- मिर्जा शहवाई (बुखारा)—५२६
- मिल—३६५
- “मिलियनी”—११ (=करोडी)
- मिलोरदोजिच—३७५
- मिलोस्लाव्स्की—२२७
- मिल्की खिराज—४५३
- मिल्तेक—५१५ (उज्जेक)
- मिल्युकोफ—४१८



मिन्न—३१, १०३, १३०,  
१४०, १४१, १४२, १४४,  
१४५, १५२, २६९, ४११  
मिग्—१११, ५१४ (उख्वेक),  
५१६, ४२१ (कवीला)

मिग्लक—३००

'मिग्वायी'—१४८, ४२८  
(वजीर)

मिग् बुलान—४८०, ४८१,  
८८२

मीनारकला—४५३

मीनित—२२४

मीर ज़रद—१८३, १९३

मीरअली—१५४ (तन्नेजी),  
१६२ (मजन्)

मीर अलीशेख—१८१

मीर आबुर—५५२, ५५३

मीरखोजन्द—१३६

मीर नजीम—१७५, १७६

मीरगव (कोतवाठ)—४४९

मीरागाह—५६ (तेमूर-मुत्र),  
६१, ६६, १५०, १५९

मुगानोक्र—५४२

मुहीम—१११ (खान), ११२

"मुत्तिन-नघ"—३७३

मुगजर—३५५

मुगल—१८८, ३०५, ३११,  
३१३

मुगल-नाग्राज्य—१८७

मुगोद—५१५ (उख्वेक)

मुगोलिस्तान—४९, ५५, ५६,  
६१, १२१, १३८, १३७,  
१४८, १५५, १६६, १६८,  
१७१, १७३, १७४, १७५,  
१७७, २०१, २०७, २३८,  
२५३, २७८, ३०५, ३०७,  
३०८ (मजन्)

मुगोलिस्तानी—१७१

मुगोलिस्तानी—१७१, १७३, १७८  
(मजन्)

मुजफ्फर—१७२, ४३१, ४३२  
(अमीर, बुलारा)

मुजफ्फरी—१४७, १५० (वश)

मुजार्त—३३६ (डाडा)

मुजाहिद—४४३ (धर्मयोद्धा)

मुद्रा-स्फीति—५०६

मुवारक—८, ४८, ६६, १२९  
(शाह)

मरगाव—१४१, १७२, २०३,  
४७७, ४८८

मुरमो—८२

मुरश्किन—२८८

मुराद—४६०, ४८९ (अमीर)

मुराविन—४६७

मुराव्येफ—२७२, ३७३, ३७४

मुरावेफ—३७४, ३८०, ३८१,  
३८८, ३८९, ३९०, ४७२

मुराव्योफ-अपोस्तोल—३७५,  
३७६

मुरीद—४३, ३७७ (वाद)

मुगवि—४४१, ४८९, ४९८  
(वाला), ४९१

मुर्जा—५३ (मिर्जा), २८७

मुर्तुजा—३१५, ३१६

मुलर—३१६

मुल्तान—७, १८, १४८, १५१

मुल्ता कारी—४९५

मुल्ला नीरक—१८३

मुल्ला मुशफिकी—१८३

मुल्ला सम्बुद्दीन—१२२

मुगलिफुद्दीन—१४३

मुनलमान—३०

'मुनलमान कमकर सत्र'—५२३

मुनलमानकुड चूलाक (लुज)—  
४२७, ८२९

मुगिको यद्द-कि—५६

मुम्बेवी—१३५

मुन्नाफा रनाद—५६३

मुन्नाफा नान—१६५

मुन्ने—५१६, ५२८

मुहम्मद—६९, १०३ (पैगम्बर),  
१२५, १३५, १३६, १४२,  
१४४, १४५, १५९ (२),  
१६१, १६६, १६७, १६८,  
१९०, १९१, २०१, २०४,  
२०६ (देखो मुहम्मद भी)

मुहम्मद अमीन—४६९ (ईनक),  
४९० (खान)

मुहम्मद अली—३९४

मुहम्मद उसमान—११६

मुहम्मद किर्गिज—३१०, ३१२

मुहम्मद खान—६७

मुहम्मद गूरगान—३०६

मुहम्मद जहूर—४२३ (दीवान-  
वेगी)

मुहम्मद जौकी—१५६

मुहम्मद तर्खन—१६०

मुहम्मद तेमूर—१६९

मुहम्मद नियाजवी—४७१, ४८२  
(दीवानवेगी)

मुहम्मद रजा वेक—४७१

मुहम्मद रजावेक—४२३ (तुगाई)  
४७१

मुहम्मद रहीम खान—४७१  
(खीवा)

मुहम्मदशाह—३११, ४७४  
(ईरान)

मुहम्मद शिकावी—१६२

मुहम्मद शैवानी—१६३, १६५,  
१६७, १६८, १६९, १८०,  
१८३, १९७, २७७, ३०६,  
३०७ (शाहीवेग)

मुहम्मद सालेह—१८३

मुहम्मद सुल्तान—५८

मुहम्मद हैदर—३०२

मुगल नोगाई—२८६

मुगा—१९७

मू-चुद—२२७

मूजातिच—५५२

मूजार्त—३३१

मूजिक—२२८, ५३०, ५३१

मूमिन—५१५ (उज्वेक)  
 मूरक्राफ्ट—४६०, ४६२  
 “मूर्ख”—३९२  
 मूलर—१११, ३४५, ३५९  
 (मुलर भी)  
 मूसा—१५०  
 “मूसी”—४२५  
 “मृत आत्मायें”—३८४  
 “मृतक गृहके सस्मरण”—३९२  
 मेकआर्यर—१४०  
 मेक्नेल—४४९  
 मेक्सिको—४७३  
 मेगलान वुका—१४३  
 मेचनिकोफ—३९६  
 मेज़मिर—७३  
 मन्—१५३  
 मेन्दली—४८४  
 मेन्देलेयेफ—३९२  
 मेन्शेविक—३९७, ४००, ४०,  
 ४१०, ४१६, ४१७, ५०५,  
 ५०६, ५०९, ५१७, ५१९,  
 ५२१, ५३८ (अल्पमतीय)  
 ममक—५०  
 मेमना—१९१, ४५१, ४८९  
 मेयाफरकिन—७  
 मेरकेंद—४३४  
 मरकुत—५१४ (उज्वेक)  
 मरेगन—३२१, ३२४  
 मरगास—१४२  
 मेरगुल—१३१  
 मेराउरिक्—१२५  
 मरिया—७७, ९०  
 मर्कुलोफ—५४४  
 मर्गलानी—१२६  
 मेर्व—१३, १३१, १५४,  
 १६१, १६७, १७०, १७३,  
 १७६, १८१, १८५, १८९,  
 २०३, २०४, ३०९, ३८८,  
 ४४०, ४४१, ४४२, ४४४,  
 ४७३, ४७६, ४८९, ४९१,  
 ४९२, ४९७, ४९९, ५००,  
 ५४८, ५५०, ५५५

मशकरी—३५५  
 मेश्केरियक—३५४  
 मेहतर—४३४, ४३५, ४६०,  
 ४७२ (वित्त-मन्त्री), ४७५  
 ४७७, ४७८  
 मेहमानखाना—५४० (सामूहिक  
 घर)  
 मेहरवान खानम—१७७  
 मेहरानरूद—४०  
 मेहीन—१९९  
 मेंगली गिरार्ड—१००  
 मेंगू—८  
 मेंशिकोफ—२५५, २५६  
 मैमना—१९४  
 मैमाचेन—२५६, २५७  
 मैलवाश—३२१, ३३९  
 मोइसेचेको—३९३  
 मोक्सी—४१  
 मोगक—१८३  
 मोगल—३१२  
 मोगाकपुल—१७०  
 मोगिलेफ—५०३  
 मोजाइस्क—५२, ९७, २२१,  
 ३६९  
 मोजेर—४९४  
 मोतिनान—५४६ (गाव)  
 मोतुगान—१२६  
 मोन्तेनिग्रो—३८६, ४११  
 मोन्तेस्को—२५९  
 “मोरगू”—२५४  
 मोरान—१३३  
 मोराविया—२३  
 मोरोज़ोज़—२२६, २२७,  
 २२८, ३७६, ३९३  
 मोर्दवी—३७२  
 मोर्दावी—९०, ९२  
 मोर्द्वा—१०७  
 मोर्द्विन—२२, २२१ (मोर्द्वी-  
 वीन)  
 मोर्द्विनी—२३४, २३७  
 मोलियेर—२६६  
 मोलोगा—३५  
 मोलोतोफ—४०६, ४१६

मोल्दाविया—२३, ३९, ३८०  
 ३६७, ३८०  
 मोसली—१४४  
 मोहम्मद ओगलान—४९  
 (सुल्तान), ५० (ओगलान),  
 ६५ (खान), १६६ (मिर्जा)  
 मोहीउद्दीन—३९ (बुरदइ),  
 १५७  
 म्निस्ज़ेफ—२१८  
 म्स्तिस्लाव—८४  
 यउज़ा—२४६  
 यक्सा—२४३  
 यग्नान—४५७, ४५८  
 यग्नान—५३९ (गाव, नदी)  
 यग्नानवी—५३९ (भाषा, गलचा)  
 यङ्गगी—१३५, ३०२  
 यज्द—१०३, १०४, ३०१  
 (ईरान)  
 यतीकद—३०८  
 यतीकुदुम—१७४ (सप्तकूप)  
 यदकू—४९  
 यदा-तासी—१८३  
 यनकुरु—१५२  
 यमागुरची—१६७, २८६  
 यमासोफ—५३३  
 यमीशफ—३३३ (यामीशेफ)  
 यम्बा—२०५, २०८, २८४,  
 २८६, ३२१, ३३९, ३५०  
 (नदी), ३५६, ४६५, ४७८  
 यलानतुश—२८२  
 यवन—२६९  
 यशमुत—१४३  
 यस्सू-मड-गू—२९  
 यस्सी—५६ (तुर्किस्तान),  
 ५७, १५९, १६५ (तुर्कि-  
 स्तान शहर), १६८, १६९,  
 १८०, २७९, ४३२  
 यसाउर—१३४, १३५  
 यहिया करती—१५०  
 यहूदी—३६, ७४, ८३, ३९०,  
 ४४२, ४४५, ४४६, ४५०,  
 ४५२

- यगी आरिक्त—४८५  
 यगी कला—४९६  
 यगीनहर—१९९  
 यगी-हिसार—३०९, ४२५  
 यजील—१६०  
 याडची—२११  
 यादलक—३० (याडलग),  
 १३० (गरम चरागाह)  
 याहुस्क—२३८, २४४, ३९१  
 याकूगिर—२३८  
 यारून—७१ (नादवेरियामे),  
 २३८, २७१, २७२, ८००  
 याकूतिया—३९१  
 यारूव—११०, ४६२४, ७६  
 (मेहनत)  
 याकोन—३४८  
 यारोवी—३८३  
 यागन्नी—५१५ (उज्वेक)  
 यागलान—६०  
 यागलिनी—६१  
 यागेलोन—६१  
 यागीमन्त—२९२  
 याद्र-चाउ—१०  
 याद्र-ची—५, १६ (याद्र ची)  
 याचिगरी—५८८ (तुर्कमान)  
 याउगद—५४३-८५  
 याउगिर—५८३ (तुर्कमान)  
 याजिर—५८७ (तुर्कमान)  
 याउज—२८०  
 याउगार—१०६ (महम्मद),  
 (यान), १०८, ११० १६०,  
 १६६, १९६, ३१६  
 यान—२०१  
 यान तुगान—५६३ (गाव)  
 यानीन—६८६  
 यानी तागा—४८१  
 यानी-तिगि—३१८  
 यानी तुगान—१२० १३१,  
 १३२  
 यानी—६६ (तिगि)  
 यानी—१२० (यान)  
 नदी), ४८०, ४८१  
 यावू—५१५ (उज्वेक)  
 याम—११६  
 यामच बी (वावर)—४२१  
 यामिश—३२६ (सरोवर),  
 ३३३  
 यामन (तुर्कमान)—२००, २०७,  
 ४६३, ४६८, ४६९, ४७०,  
 ४७१, ४७७, ४८४, ४८७,  
 ४९०, ४९४, ५४७ (यामद)  
 यायिक—२१, ४९, ५८  
 (उगल), ७५, २०५,  
 २०६, २३५, २३६, २६१,  
 २८४ (उराल), २८५, २८६,  
 २८७, ३१८, ३१९, ३३८,  
 ३३९, ३४०, ३४१, ३४३,  
 ३५०, ३५४, ३५५, ३५६,  
 ३५७, ३५८  
 यायिस्क—२३६, २६१  
 यागकद—१६४, ३०३, ३०७,  
 ३०९, ३१३, ३२८, ३३२,  
 ३३३ ३४७, ४२५, ४६४,  
 ४६५  
 यार मुहम्मद—१७५, १९५  
 यार मुहम्मदोफ—५३३  
 यारलिक—२६ (शामन-पत्र),  
 २९, ३३, ५१, ६०, ९३  
 (अधिकार-पत्र, शासन-पत्र),  
 १८३  
 यारलिक तुरावान—८७७  
 यारोसोफ—८३  
 यारास्लाव—२६, ५२, ८८  
 (?), ८१, ९२, २२३, ३१८  
 "यारेम्लास्की-प्रावरा"—८४  
 यालन—१३०  
 यालनुग—१०२  
 यालीनिग—३१६  
 यालीमेक—२०५  
 याल (उरुवता)—३०८  
 यालीनिग—३०६ (मिजकी  
 दीप शक्तिगणक)  
 याना—१२१ (यास्ता), १५४,  
 १६३ (विधान)  
 याभी—८२ (ओसेनी), २९७  
 यास्माक—१७६ (कानून,  
 यामा)  
 यास्मी—२६३  
 याहक पश्ते—५४३, ५४४  
 यिदिमे—३४९  
 यिपु-येमुर—१५  
 यु-अन—९  
 युलिक—५५  
 युक्त राष्ट्र (अमेरिका)  
 —४०८, ४१२, ४१४  
 युग—१५८  
 युगक्रमिक पद्धति—३९२  
 युगुर—३१६ (उइगुर)  
 युग्रा—२४  
 युङ्गचेन—३३२  
 युज—५१४ (उज्वेक)  
 "युद्ध और शांति"—३९३  
 युन्नन—१४  
 "यूनी कमनिस्त" (युवक कम-  
 निस्ट)—५३३  
 युरेकिर—५४७ (तुर्कमान)  
 यरेकी—५४७ (तुर्कमान)  
 युर्ची—८५९  
 युर्त—३०५ (आर्दूवाले देश),  
 १३२  
 युलदुज—१३३, २९८, ३००  
 युल्दाश—४५७ (परमाची)  
 युवान-मिझ-युवान—३८९  
 युसकुदुक—४८१  
 युकागिर—२७१  
 "यूगेनी-ओनेगिन"—३८४  
 यूजक—५१५ (उज्वेक)  
 यूदेनिच—५५२  
 यूनस—१६६ (खान), २०२,  
 २७७, २९३, ३०५, ३०६,  
 ३१२, ४२१ (खोजा)  
 यनिया—२६९  
 यूफियोसि—२८८

यूरियेफ—५२, ८४, १०८  
 यूरी—९० (१), ९२, ९६ (३),  
 ९७, ९९, २३७ (सेनापति)  
 “यूरोपा”—२४१  
 यूति—३१९  
 यूलर—२६५  
 युसुफ—४२ (-मिडबाशी), ५३  
 (सूफी), ५४, १५७, २७८  
 (अमीर)  
 येइयुर (तुर्कमान)—५४७  
 येकाजुखोर—२४१  
 येज़द—१०३ (उयेज़द), १०४  
 येदेची—११६ (मत्र द्वारा वर्षा  
 करानेवाला)  
 येदिस्सन (एतिसन)—३२१  
 येनिसेइ—२३८, २७१, २७२,  
 ३७६, ३९५, ४८९  
 येनिसेइस्क—२३८  
 येपचिन्स्की—११५  
 येम्बा—३४३ (यम्बा)  
 येयेमयुर—५४७ (तुर्कमान)  
 येरेवान (अरमनी)—३७१,  
 ३७७ (येरिवान)  
 यरोफेइ—२४२  
 येमंक—१०९, ११०, १११,  
 ११२, ११३, ११४, २३५,  
 २३८, २७१, २७२, ३१५,  
 ३१६, ३७४, ३८०, ३९०  
 (-एरमक)  
 येमंकोवो-गोरोदिची—११०  
 येमंकोवा पेरेकोफ—११४  
 येमोलार्ड—११०  
 येमोलोवा (अभिनेत्री)—३९३  
 येलचिन—५१४ (उज़बेक)  
 येलिगइ—११४  
 येलदेइ—३२१  
 येलिज़की—३१७  
 येली—४८९ (तुर्कमान), ४९०,  
 येलेना—१०६  
 येल्तन—३५१  
 येल्दिङ्ग—३३८  
 येल्यु—५

येल्यु चुत्साइ—४ (मगोल)  
 येवेंकी—२३८  
 येस्सु-मुङ-खे—१२६ (-येस्सु मङ्गू)  
 येस्केल्विनियान—११३  
 येस्सुन—१३६  
 येस्सु मङ्गू—१२६, १२७  
 योदोकिया—२५१  
 योव—११६  
 योरोशिलम—३८०  
 योलेतान—४९०, ४९१, ४९७  
 (उपत्यका)  
 योलोतेम (किला)—४७६  
 योसफ—२६७, ३९६  
 (=स्तालिन)  
 योहन—१३५  
 योज़ा—२४१, २४६  
 “रईस शरीयत”—४४३ (धर्मा-  
 धिकारी)  
 रगूसा—२४  
 रजव कराजार—४२४  
 रज़ाइया—५५४ (उर्मिया  
 सरोवर)  
 रज़ाकुल्ली—१९३  
 रज़ीमखान—४६६  
 रणजीतसिंह—४४८, ४५०  
 रतिवर—६, २३  
 रवात—१६१ (धर्मशाला),  
 २९८ (पाथशाला)  
 “रबोचया ज़ार्या” (कमकरो  
 की उषा)—३९१  
 “रबोचीपुत”—५०८ (बोल्शेविक  
 पत्र)  
 रबोचेयोदेलो—५१८  
 रबूतन—३३२, ३३३  
 रमजन—५१  
 रशीद खान—२७७  
 रशीदुद्दीन—२६, ४६, १३३,  
 १४५, ५४७  
 “रस्कोल्निकी—२२९”  
 रस्तिसियन-द-पीसा—११  
 रस्तोफ—८२, २२४, ४०२

रस्पुतिन—४१५, ४१६  
 रहमतुल्ला—५४६  
 रहीम—१८८  
 रहीमकुल खान—४७६  
 रहीम बी—१९२ ४५५  
 (मगित)  
 रा—७१ (वोल्गा नदी), ७३  
 राइ—८१ (स्वर्ग)  
 राइन—४११  
 राइम्सक—३५८, ४२९, ४७६  
 राग—४६२  
 राजकुमार द्वीप—३१९  
 राजा (वाङ्ग)—३४७  
 राजादेश—३५७ (उकाज़े)  
 राजिन—२३६, २३७, २३८,  
 २६१  
 राजुल—५ (कन्याज), ७५  
 २५३, ३१७  
 राजुल उरुसोफ—३५२  
 राजुल गागरिन—४६४  
 राजुल ल्वोफ—४१७  
 राज्यदूमा—३७०, ४०४  
 (ससद्), ४१०  
 राज्यपाल—१६८, १७८, २१७  
 राज्य-परिषद्—३७०, ५०६,  
 ५०७  
 “राज्य-विधानोका सहित्ती-  
 करण”—३७०  
 रादा—२३२  
 रादिमिची—७७  
 रादिश्चेफ—२६७, २६८  
 रानी—२५५ (एकातेरिना),  
 ३४४, ३५१, ३५२ (अन्ना)  
 राबर्ट (जेनरल)—४९८  
 रायन—५३३ (=जिला)  
 रायमुन्दर—१३५  
 रावर्लपिडी—३१३  
 राष्ट्रीय परिषद्—११६, २१७  
 राष्ट्रीय सभा—१०८  
 रिचार्ड—१३५

रिनदान—५१५ (उज्बेक)

रिदाल्फो—१०५

रिन्-छेन्-गल्—१६

रिन्-छेन्-गल्—१५

रिपेन्स्की—३५७

रिलेवेफ—३७८, ४७५, ३८२,  
३८३ (कवि)

रीना—१५, १०८, २५१, ५०७

रदकोफ—५०६

रयेनिया—२३

रवरिक—७, ८, १०, १२५,  
१२७

रमानिया—३८६

रम्यानसेफ—२५८, २६०

‘रस्कया प्राव्दा’—८५, ३७३,  
३७४

रस्की अकदमी नाउक—२६४

रस्तम—१५८

रुजवेल्ड—४०० (अमेरिकन)

रुजा—१६

‘रुदिन’—३१२

रुवल—२५५

रुम—१८३

रुमानिया—१०३, २२९, ४००,  
८१२

रुमी—१८३, १८७, १५२

रुरिक—५५, ३७२

रुगि-यम—११५, २७८

रुन—५, १६, २९, ६८, ७१

७३, ७७, ७८, ८३, १०३,

१०५, १५३, १६७, २०६,

२०७, २१०, २३३, २६९,

२९६, ३२१, ३२८, ३२९,

३३०, ३४७, ३६६, ३९८,

४०७, ४०८, ४१०, ४१६

(रुडिमानयुद्ध) ४२९,

४०६

रुम-नाम-मुद्र—३९७

रुम-म-प्रति—५०३, १०१

१०२, १०९)

‘रुम-नाम-मुद्रा-प्रति’—

३९५

रुमी—५६, ७२, ७४, २४३,

२४४, २५३, २७०, २७९,

३१६, ३२६, ३७६, ३८९,

४९३, ५२२ (सफेद),

५३५, ५३६, ५५२

रुसी अभियान—४७४, ४८०

रुसी-एमियाईवक—४०९, ५२३

रुसी कितान सघ—४०१

रुसी गणराज्य—५१२

रुसी गुलाम—४६५-६६

रुसी-चीनी—४०९

‘रुसी तियात्र’—२६६

रुसी भाषा—३९२, ५५६  
(और भारत)‘रुसी मजदूरोका उत्तरी सघ’—  
३९१

रुमी विज्ञान अकदमी—२६४

रुसी सत्य-अधिकार—३७३

‘रुसी समाजवादी जनतांत्रिक  
मजदूर पार्टी’—४०५

रुसी—२६७, ३७३

रुस्तक—४६२

रे—१०३ (तेहरान)

रेगिस्तान—४४९

रेडियोग्राम—५५०

रेतेनकाम्फ—४१३

रेनाड—३३१

रेपिन—३९३ (चित्रकार)

रेल-इजन—३७६

रेल-निर्माण—८९९

रेव-कम—५२८ (रेवन्थशनरी  
कमिटी, क्रांति-समिति)

रेवेड—१०८

रेगड—३७३

रोज खान—४७०

रोजिम्की—२२१

रोम—७३, १०६, १४१,

१४५, ११०, २६९, ४३३

रानन—६ (देग-पुत्र), २२,

१३, ७३

रोमन-मोप—२२९

रोमनोफ—११५, २१७, २५६

रोमनोवा—११५

रोमनी—२०३, ४३३, ४३४  
(=जिप्सी)रोमानोव्स्की—४३२, ४५२  
(जेनरल)रोयरिक—७५ (=रोइरिक,  
रोरिक)

रोरिक—७५

रोरिक-वश—५१७

रोलेट कानून—५२१

रोस्तोफ—३५, ६३, ८६, ८८,  
९०

रोस्तोव्स्वेवो—५२५

रोहा—८, १४१

रूर्यादनीप्रिकाज—२२८

रुयजिन—२२, ३४, ५१, ५२,  
६४, ६८, ८२, ८८, ९१,  
९२, ९८, १००, १०६,  
२२०, २२३

लगोदा—५५३

लघु-ओदू—२७८, ३३७, ३३९,  
३४३, ३४९, ४६७, ४६९

लत्त्विया—४०१

लत्त्वियन—५१९

‘लताफतनामा’—१५८

लतीफ—१६६

लदोगा—९४, ११६, २४९  
(सरोवर), ५५१

लश्करवाशी—५४५

लका—१०, १०३

लग—१४९ (लगडा)

लदन—३९, ३८२

लाइप्जिक—२६७, ३७०

लादा—७३ (=ह्लादा)

लादिगिन—३९६ (विजली-  
आविष्कारक)लादिस्लाउस—५३ (=ह्ला-  
दश्वा)

लामा—१२ (सावु), १३८  
 लायक पसद (बासमची)—५४४  
 लायोस कोमुन—३७९  
 लार—१०३, १०४  
 लारगा—२६०  
 लाल गारद—५४९  
 "लाल जेनरल"—४०६  
 लाल सरोवर—४१५  
 लालसैना—५३३, ५४६, ५४९  
 (तुर्कमानियामें निर्माण),  
 ५५५  
 लावाजिये—२६५  
 लाव्रेन्तोफ (जेनरल)—५३१  
 लाभ—८०  
 लाहार्प—३६५, ३६६, ३७०  
 लाहौर—७, २८, १४४, ३१३  
 लिखारेफ—३३३  
 लिगनित्ज—६, २३, २५  
 लिङ्ग-अन्—९  
 लिन्वा—३१९  
 लिस्के—३७३  
 लियुवन—९८  
 लियुवानिया—३४, ३८, ५३,  
 ६०, ६८, ९७, १००,  
 १०८, २२९, २३४, ३७७,  
 ४१३  
 लियुवानी—५२, ६२, ८३,  
 ९५, ९८, १००, २२१,  
 ३१७  
 लियो—१५५  
 लिपि—९  
 लिफ्लेंदिया—२४९  
 लियागर—४२५  
 लिवोनिया—७८, ९४, ९५  
 (बाल्तिक-तट), १००, १०८,  
 १०९, ११६  
 ली-चुङ्ग—८, ९  
 लुई—२३, २६७, ३७० (अठा-  
 रहवा)  
 लुगान्स्क—४०३, ४०६  
 लुगुई—३१७

लुत्स्क—६३  
 लुवलिन—६, २७, २३४  
 लुवा—३१७  
 लूओरावेतलन—२७१  
 लूकस—११०  
 लूलु—४०  
 लेप्कोइ—३१७  
 लेन—२३८, २३९, २४०,  
 २७१, २७२, ३७३, ३७६,  
 ४०९  
 लेनिन—३७६, ३८७, ३९२,  
 ३९४-९६, ३९७, ३९९,  
 ४०२, ४०३, ४०५, ४०६,  
 ४१०, ४११, ४१३, ४१९,  
 ५०३, ५०९ (प्रथम राजकीय  
 घोषणा), ५१०, ५१३  
 (देहान)  
 लेनिनग्राद—५७, १६२, २५०,  
 ३९२, ५३३  
 लेनिन-गर्वेत—१०७  
 लेनिन पुस्तकालय—२६७  
 लेनिनावाद—४३१, ४५१,  
 ५१८ (खोज द)  
 लेनिन्स्क—५३५ (गिखर)  
 लेपेस—३४९  
 लेप्सा—३३१  
 लेबाउष्की—३१६  
 लेम्बर—२३  
 लेर्मन्तोफ—३८२, ३८३  
 (कवि), ३६९, ३८४  
 लेव ताल्स्त्वा—१८०, ३९२  
 लेवितन—३९६ (चित्रकार)  
 लेंडसेल—२९९  
 "लैला-मजनू"—१६१  
 लोवा (सावेरिया)—३३५  
 लो-डो-ग्य-छेन—८  
 लोपुखना—२५१  
 लोव्—३००  
 लोबनोर—२९७  
 लोवाचेव्स्की—३८२  
 लोब्जाङ्ग—३२१

लोब्जाङ्ग जाजेर—३४०  
 लोब्जुङ्ग—३३८  
 लोमकार्ट—५५२  
 लोमनिदज्ज—२४  
 लोमाकिन—४८१, ४८४, ४९५  
 (जेनरल)  
 लोमोनोसोफ—२६५, २६७  
 लोयाङ्ग—५ (होनान्में)  
 लोली—२०३, ४३४ (जिप्सी)  
 लोवात—७५  
 लोसवा—१११  
 "लोह-पुरुष"—२७१  
 लीह-युग—५२८  
 ल्याउ तूङ्ग (प्रायद्वीप)—३९७  
 ल्याखोफ—४०७  
 ल्यापुनोफ—२२३  
 ल्यूप—३३१  
 ल्यूोन-परिषद्—६  
 ल्यूोनहार्ड—२६५  
 ल्यूोन्ति—२२७  
 ल्यूोपोल्द—२५७  
 ल्वोफ—२३२, ४१३, ४१८  
 ल्हचन खान—३३२  
 ल्हासा—३३२, ३४२  
 "वकाया"—६७ (घटना),  
 १५६, १५९  
 वकुलिचुक—४००  
 वक्षु—६ (आमू दरिया), ७,  
 १३०, १३१, १३४, १३७,  
 १३९, १५४, १७३, १८६,  
 १९४, २०५, २०८, ४३९,  
 ४४२, ४६५, ४६७, ४८०,  
 ४८८, ४९०, ४९९, ५२७,  
 ५३९, ५४१, ५५१  
 वखान—४६१, ४६२  
 वखेया (इलाका)—५५६  
 वज्जीर—१२५, १२६, १२७,  
 १३१, १३७ (अमात्य),  
 १८३, १८६, १८७, २०८,  
 ४४५  
 वज्जीरक्षेत्रम—१३६ (महामन्त्री)

वत्शिर—३२४  
 वदगिस—६७  
 वरगी—७५, ७६  
 वरनामिनार—४५८  
 वरमावा—२३४ (वारसा)  
 वर्गचेतना—३९१  
 वर्णमाला—९  
 वर्स्त—१११, ४२५ (= ८३  
 फर्मन्)  
 वस्तुवाद—२४१  
 वस्साफ—१२७, १२९, १३३,  
 १४५  
 वहीउद्दीन—१५३  
 वर्षपत्र—१६  
 वलाचिया—३९, ३८०  
 “वलायत-उक्त्रेक”—१५६  
 वली—३०४  
 “वली-निजम”—४४२, ४५६  
 वली निषाज—५३३ (मुल्ला)  
 वली मुहम्मद—१८६  
 वमी कुरजी—१८८  
 वाटरल्—३७०  
 वादाचा—४५६  
 वामपक्ष—५१९  
 वामपक्षा—४०५  
 वाग्नेरी—१७२, ४७६, ४७८,  
 ४७९ (वग्नेरी)  
 वायजोद—१४८, १६५  
 वायान्दुर—५४७ (तर्कमान)  
 वारजद—८८  
 वारमा—२३४, ४१३ (वरमावा)  
 वालरन—२४०  
 वाय स्टार्ट—६ (मुद्रक्षेत्र), २३  
 वात्राफ—२६३  
 वाप्नेर—५५२  
 वाट—१७४  
 वागम रो—५२०  
 वागिगि रवेन्को—३९२, ५५१  
 वागि रो—८० (वोर-), ५२,  
 ५३, ६२, ६३, ६४, ९२  
 (१, २), १०३, १०६,  
 १०९ (३), ११०, ३१६

वासिली—२१९ (गुइस्की),  
 ३९१ (गेरासिमोफ)  
 वासिल्को—८७  
 वास्को-द-गामा—१०१  
 वाह्लीक—१४९, ४४२  
 विज्ञान—३९६  
 विजन्तीन—७३, ७५, ७७  
 (पूर्वी रोम), ८४, १०५  
 विजिक—११२  
 विजयनगर—१५७  
 वितुत—६० (वियोल्द)  
 वित्कोविच—४४८  
 विधान-सहिता—८५  
 विनिक—२८  
 विम—१११ (नदी)  
 विमान-विद्या—४१२  
 “विरा”—८५ (अर्थदड)  
 विलनास्—५३, २३४ (विलनो),  
 ४१३  
 विलायत (अन्तर्वेद)—३०८  
 (= वलायत)  
 विलियनोफ—३३३  
 विलियम—४११ (विल्हेल्म)  
 विलियामुवर—१४३  
 विल्गुइन्स्क—३८६  
 विल्हेल्म—३७५ (३), ४०६  
 (२)  
 विशवालिग—१२७, ३०१  
 विशचेरा—१११  
 विशिलष्ट—९३  
 विश्वयुद्ध—५२०  
 विस्तुला—६, २७, २५९  
 वोद्स वेरिग—२५६  
 वोना—१०१, २४९, ३७०,  
 ३७९ (आस्ट्रिया)  
 वोनागं—४१७ (विपुरी)  
 युचेगदा—१११  
 रुतिगुन—३२४  
 यू-चाथ—१११  
 युद्ध—४६१  
 येद-हाद-वेद—३९०

वेगुइश—११४  
 वेगुइशेव्स्कोये—११४  
 “वेचे”—८९ (पचायत), ९३,  
 ९४, ९६  
 वेजिर—१६८, १७८, १९६,  
 १९७, १९९, २०१, २०२,  
 २०३, २०४, २०५, २०७  
 वेतुल्गा—२३४  
 “वेदोमोस्ती”—२५२  
 वेवशाला—१५७  
 वेनिद—७१ (वेद)  
 वेनिस—१०, ३६, ५१  
 वेनिसी—३८  
 वेनीउकोफ—३६१  
 वेनेविनिनोफ—३८२, ३८२  
 (कवि)  
 वेनेवेनी (इतालियन)—४६६,  
 ४९३  
 वेन्द—७१  
 वेन्चुकोफ—५३३  
 वेम्बरी—१२४, १८३, २९२  
 वेरदआ—५५  
 वेरेन्दे—८२  
 वेर्खोव्स्की (जेनरल)—५०६  
 वेर्खोव्स्की सवोर (उच्चतम  
 सभा)—३७४  
 वेस्नेमउरात्स्क—३४९  
 वेस्ने-निजिन्सकाया—३१९  
 वेर्दगन—५२०  
 वेर्नी—२९९ (अलमाअता),  
 ३७९, ४१५, ५३०, ५३१,  
 ५३७  
 वेर्नीये—२७७, ३६१ (अद्धा),  
 ३७९, ४३२ (अलमाअता)  
 वेर्स्त—५५१ (वर्स्त)  
 वेला—२४  
 वेन्जली—३९०  
 वेल्लोर—४५२  
 वेल्यानोफ—३३१  
 वेल्स्की—१०६  
 वेवोद—१०९ (राजपुरुष)  
 वेमिफ—७३  
 वेसिर—१६८, १९६, ११७

वेसी—७७, ९०  
 वेस्ना—७३ (=वसत)  
 वैदिक—५३  
 वैद्व—१४३  
 वैधानिक जनतांत्रिक—५१७  
 वोगोल—११०, १११, ११२,  
 ११३, २३५  
 वोत्याक—२३४  
 वोद्का (शराव)—४३६  
 वोयकोफ—३१८  
 वोयवोद—२१७, २२३  
 (=राज्यपाल), २२८,  
 २३८, ३२७  
 वोरोदिनो—३६९  
 वोरोनेज—२४७  
 वोरोव्योवो—१०७  
 वोस्कीला—२५०  
 वोल्किस्क—८२  
 वोलेस्लाउस्—८४  
 वोलोस्त (=जिला)—४०४,  
 ५२०  
 वोल्खोफ—२२१  
 वोल्खोव्स्की—११४  
 वोल्गा—२०, २९, ६०, ६१,  
 ७१ (=रा, इत्तिल), ७७,  
 ९०, ९२, ९६, १०२, १९६,  
 २०९, २१०, २३५, २३६,  
 २४७, २४८, २६१, २६४,  
 २८७, २८८, ३२१, ३२५,  
 ३३९, ३४०, ३४२, ३४८,  
 ३५५, ३५७, ३६०, ३७२,  
 ४०१, ४२०, ४६९, ४८०,  
 ५०८ (प्रदेश)  
 वोल्गा-कलमक—२३५, ३१९,  
 ३३८, ३४५, ३५२, ३५५  
 वोल्गार—५, २१, ७३, ७४,  
 ७५, १५१ (वोल्गार)  
 वोल्गारी—७१  
 वोल्ताइक आर्क (प्रदीप)—  
 ३८३  
 वोल्तेर—२५९, २६६, २६७,  
 ३७३

वोल्ना—६२  
 वोल्फ—१५३, ४९१, ४९२,  
 ४९३, ४५० (डाक्टर)  
 वोल्हूनिया—२६, ३८  
 वोस्ताम—२०४  
 व्यत्का—२३४  
 व्यातिची—९०  
 व्युकद्युज—५४७ (तुर्कमान)  
 वूनवोल्ड—१०८  
 व्लादिमिर—६, २१, २२, २४,  
 ३५, ५२, ६१, ७८, ८३,  
 (स्व्यातोस्लाव-पुत्र), ८४,  
 ८७, ९१, ९३, ९७, १०५,  
 २५२  
 व्लादिमिर मनोमाख—९०, ९४  
 व्लादिस्लाव—२२२  
 व्लास्वर्ग—४३०  
 व्सेवोलोद—४१ (खोल्म), ८६,  
 ८७, ८८, ९१, ९४  
 व्सेस्लाव—८६  
 शक—७१, २८४, २८९  
 (=सिथियन), ३३४, ४५९,  
 ५१६, ५१७, ५२८, ५२९,  
 ५३६, ५३९, ५४१, ५४८  
 शकलाओ—२७  
 शकार्य—५२८, ५४१  
 शगनान—४५९  
 शगिन—२६२  
 “शञ्जतुल्-अतराक”—१८, २६,  
 २९, ३६  
 शतरज—४९४  
 शफी—२०९  
 शविनादावेग—२५५  
 शमसमान—२८५  
 शमसा—११४  
 शमाजहान—२९८  
 शम्बेगाजानी—४०, ५४  
 शम्शुद्दीन—१३१, १४३,  
 १४४, १५०, १५३  
 शम्शवान् आइम—४३९  
 शम्सिन्स्की—११३  
 शरफुद्दीन यज्दी—३०१, ३०४

शरवान—१५६  
 शरातजिन—३३४  
 शरावखाना—२८० (ताश्कन्द  
 इलाकेमें)  
 शरावखानी—२७९  
 शरीकाना—४३४  
 शरीयत—१३७, ४४५, ५२६  
 “शरीयत-शरीफ” (सद्धर्म)—  
 ५२६  
 शर्श-उसुन—३४१  
 शहवाई—५२६ (मिर्जा)  
 शहरसब्ज—१४८, ४२४  
 (=किश), ४२७, ४३९,  
 ४४२, ४४९, ४५१, ४५२,  
 ४५३, ४५६, ४५७, ४६२  
 (दक्षिणी)  
 शहरेखान—४३७  
 शाङ्ग-तु—८ (कै-पिङ्ग-हू)  
 शादमुल्क—१५५, १५६  
 शादीवेक—६३, ६४, ६९  
 शान—१४ (बमर्ग), ३८९  
 शान्ति-घोषणा—५१०  
 शापूरगान—१३१, १३५, १८६,  
 १९३, १९४  
 शाविरगान—४६३  
 शाम—३३, ३९, १२१, १४०  
 शामिल—३७७  
 शावकान—३२  
 शाह अब्बास (१)—२०४  
 शाह इरमाईल—१७४, १७६  
 शाहजमा—१९४, ४४६  
 शाहजहा—१५७, १८७, १८९,  
 १९०, २०७, २२६, २२८,  
 २४०, ३२५  
 शाहजिदा—१५४  
 शाहतेमूर—४४२  
 “शाहनामा”—१५७  
 शाह फखरुद्दीन—१३८  
 शाहवेग—१०२, १८६  
 शाह वूदग—१६६  
 शाह महमूद—१९४



- शाहमातोफ—७१  
 शाहमराद—४२१, ४६०  
 शाह याकुब—५४३  
 शाह राजीउद्दीन—३०४  
 शाहखान—६६, ६८, ६९,  
 १५८, १५९, १५७, १५८,  
 १६३, १६५, १९४, २९८,  
 २९९, ३०१  
 शाहखिया—६७, १६७, १७१,  
 २८०, ३०५  
 शाह गुजा—४८८, ४४९  
 शाह सफर—४४०  
 शाह हुसेन (ईरान)—४६५  
 शाही (सिक्का)—४७८  
 शाहीवेग—३०६, ३०७, ३०८  
 (मुहम्मद शैवानी),  
 ३०९  
 शाघई—३८९  
 शिकतुर—१८३  
 शिगाई खान—३८६  
 शिक्का—२३९  
 शिमला—८९९  
 शिया—१४५, १५३, १७३,  
 १७४, १७७, १८९, १९९,  
 ४४१, ४४२, ४७२, ४९२  
 शिरवान—२८, ३३, ३९, १०२,  
 १८८, २०३  
 शिरामून—२८  
 शिरियानेत्स—५५३ (शिर्या-  
 नेत्स), ५५४  
 शिन्—११५  
 शिम्नमा—११५  
 शी-नु—३३२  
 शी-नु—३६१  
 शोगा—३०, १०३, १०६,  
 १५६, १६३, ३०१  
 शोगा—१८६, १८६, १५०  
 शीरीन—५१५ (अरब)  
 शीरीन—१६१  
 शीरी खोजा—१८३  
 शुइस्की—१०६, २२२  
 शुगनान—४२६  
 शुमिलोक—५१८  
 शुलगिन—४१९  
 शुलदुर—५१५ (उज्बेक)  
 शुशेन्कोये—३९५  
 शुस्तर—१५४  
 शुस्तोक—५२५  
 शकर—३२८  
 शूरखाना—४८२, ४८३  
 “शूरा इस्लामिया”—५१७,  
 ५१८, ५२४ (इस्लामीलीग)  
 “शूरा उलेमा”—५१७  
 शूलज—४२९  
 शेक्सपियर (लेफ्टनैट)—४७५  
 शेख—१६९  
 शेख आरिक—४८३  
 शेख जलील—२०६  
 शेख नूरुद्दीन—१५५  
 शेख मस्लहत—५७  
 शेख मिर्जा—५४३  
 शेखहंदर—१६७  
 शेखुल्-इस्लाम—५९ (इस्लाम  
 के महागुरु), १६६, १६९  
 शेङ्च—२४३, ३२४  
 शेदरिस—५६  
 शेन्सी—५ (चीन), ३४०  
 (शेन्शी)  
 शेवास्त—१०३  
 शेमास—१०३  
 शेमीभका—३४४, ३४५ (पुलाद)  
 शेम्पाका—९९  
 शेखली—८६१  
 शेखुली—१२५  
 शेखगजी—२०१  
 शेखपुड—१९८  
 शेखमत—५८५  
 शेख मुहम्मद—५४५  
 शेखात—२०४  
 शेखाद—४५०  
 शेरेमैतोफ—२४९, २५०  
 शेलगुनोफ—३८५, ३९४  
 शैवान—६९, १६५, ३१५  
 शैवानी—१६३, १६७, १७०,  
 १७३, २७५, २८१, ३२१  
 “शैवानीनामा”—१८३, १९६  
 शैवानी-वश—१६५  
 शोकुर—१११  
 शोनग्रावेन—३६६  
 शेचेफिन—५१७  
 शमाइलर—३५८  
 “श्रम-वेतन”—३९३  
 “श्रमिक मुक्ति”—३९३  
 श्रीनगर—१५२  
 शिल्ट—९३  
 श्लुशेल्बर्ग—२५०, २५७  
 श्वेत-ओर्दू—४५ (अक-ओर्दू),  
 ५०, ५१, ५६, ६८, १६५,  
 १६७, १६८, ३४३  
 श्वेत-मेश—१७२  
 सइकुयु—४८४  
 सइसान झील—३१८ (नोर)  
 सइस्सन—३२९, ३३३  
 सईदावाद—४०  
 सकसिन—२१ (निम्न वो.गा-  
 उपत्यका)  
 सकसीनत—१८  
 सकया पण्डेन्—८  
 सखसील (फरास)—४२९  
 सखालिन—३७२, ३८०  
 सगस्का—३२७  
 सगीरदस्त—५४५  
 सङ्गजी—३३४  
 सजोनोफ—५२२  
 सतलुज—१५१  
 मती—८२  
 सदखदीन अश्वेली—३९  
 सदरे जहान—१२३  
 सदोस्की—३९३ (अभिनेता)  
 सद्दे-सिकदरी—१६१  
 सान्जक—३३४  
 सन्तिसत-चापू—३३२

- सपिण्हा—२२१  
 सपिक्रोफ—३७२  
 सप्तनद—१२१, १२५, १३२,  
 १३४, २९५, २९७, ३२४,  
 ५१९, ५२८, ५३१, ५३२,  
 ५३३, ५३६, ५३७, ५३८  
 सफर बी—४२८  
 सफरबीज—५१५ (उज्ज्वेक),  
 सफावी—१७२ (वश), १७३,  
 १७७, १७९, १८१, १९४,  
 १९६  
 सफेद खोजा—४२५  
 सफेद गारद—५५०-५२, ५५५  
 सफेदरान—५४३  
 सफेद हड्डी—३५८ (पुराना  
 राजवश)  
 "सबका थोडा"—२५९  
 सवा—१०४  
 सव्ववार—१५०, १५४, १७८,  
 १८२, ४९९  
 "सब्रेमेन्निक"—३८५ (सम-  
 कालीन)  
 समद—४४८  
 समय-माप—१५८  
 समर—५१९, ५२१, ५२५  
 समरकद—२७, ३२, ४९, ५४,  
 ५६, ५७, ६०, ६८, १२१,  
 १२२, १२५, १२७, १२८,  
 १२९, १३४, १३५, १३९,  
 १४८, १४९, १५०,  
 १५२, १५३, १५४,  
 १५५, १५७, १६०, १६३,  
 १६५, १६६, १६८, १६९,  
 १७२, १७४, १७६, १७७,  
 १७८, १७९, १८०, १८२,  
 २०८, २७७, २७९, २८०,  
 २८१, २९६, २९८, ३०२,  
 ३०५, ३०७, ३३०, ३३६,  
 ३४३, ३८७, ३९०, ४१५,  
 ४२७, ४४७, ४५१, ४५५,  
 ४५७, ४५८, ४६१, ४६२,  
 ४६५, ४९९, ५१७, ५१८,  
 ५१९, ५२१, ५२४-२५  
 (-विजय), ५२५  
 समरकदी—६७, १५९  
 समसामुस्-सस्तनत -- ५५४  
 (ईरान)  
 समसोनोफ—४१३, ५५२, ५५४  
 समची—४२९  
 सगदर—७४  
 समाजवाद—५०४  
 "समाजवाद और राजनीतिक  
 सघर्ष"—३९३  
 समाजवादी क्रांतिकारी—३९७,  
 ४१६, ४१७, ४१८, ५०५  
 (करेंस्की दल), ५१८, ५१९,  
 (एस्० एर्०), ५२१, ५५०  
 समाजवादी जनतांत्रिक पार्टी—  
 ४०४, ५१८ (०मजदूर पार्टी)  
 समानोफ—४६४, ४६६ (राजुल)  
 समारा—२३७, २९१, ३५१,  
 ३५८  
 समयद (भाषा)—५४८  
 समोयित—९४  
 "समृद्धि-सघ"—३७३  
 सगडुव वआतुर—३३४  
 सरकश—५५  
 सरकेर—७४  
 सरखावा—४३७  
 सरखा—४७३, ४७६, ४९०,  
 ४९७  
 सरतक—२६, २७  
 सरदावाकुल—४८३  
 सरबाज—४३३, ४४८ (सिपाही)  
 सरमात—७१  
 सरवान—१३०, १३२, १८०  
 सरस्वती—१४१, ४८८  
 सरातोफ—२३७, २६२, ३७२,  
 ३८६  
 सराय—१३, ३०, ३७, ३८,  
 १०२, १५१, ५१४ (उज्ज्वेक,  
 महल)  
 सराय ओर्दा—२९८  
 सराय चिक—२९  
 सराय चुका—२८८  
 सराय तेमूर—४१  
 सराय वरका—३९, १८५  
 सराय वातू—३२  
 सराय वेरेक—६२  
 सराह—४०  
 सरिक—५४७ (तुर्कमान)  
 सरिकामिश—४१३  
 सरिकौल—४९८ (पर्वतमाला)  
 सरी—२०१  
 सरीखाना—४३६  
 सरीदुगान—५००  
 सरीपुल—१७१, ४६१, ४६३  
 (सरेपुल)  
 सरीदागिसेफ—५३७  
 सरीसू—५७  
 सरूकउज्जेन—५७  
 सरेजूय—४५९  
 सरोग—७३  
 सरोवर—११३, १२५, १८६  
 सर्गि—३३३  
 सर्त (फारसी भाषी)—  
 १९९, २०२, २०४, २०७,  
 २०८, ३३१, ३६०, ४२७,  
 ४२८, ४३१, ४५२, ४६९,  
 ४८६, ५१८ (ताजिक)  
 सर्व—७१ (मकदूनी)  
 "सर्वरुस महाराजुल"—३९  
 सर्वदारी—१४७  
 सर्वहारा—३८७, ३९३, ३९९,  
 ५०४ (प्रोलेतारी)  
 सर्वियन—३८६  
 सर्विया—३८०, ३८६ (वोसे-  
 निषा), ४११  
 सर्वेदार—१५०  
 सलगुर—५४७ (तुर्कमान)  
 सलजीदइ—३०  
 सलजूक—२०७  
 सलवर—३१९  
 गलार (तुर्कमान)—४७१,  
 ४७३, ५४७  
 सलाहुद्दीन—१५७

मलूरी—२००  
 मगोर (तुर्कमान)—२००, ४९०,  
 ४९१ (मलूर)  
 मज्जिनी—१२३, ४९९  
 मल्लानिया—३२१, ३३८  
 मल्लिकोफ-ज्जेद्दिन—३९२  
 मनीवगा—८८  
 मगीत—१५६, २६६, ३९३  
 (बला)  
 मजराज—९७, ९८, १०७,  
 ११६, २२३  
 मजर—१२३, १६६, ४८९  
 मत जार्ज—१२०, ४८२  
 मत-महत—२११  
 मत मिमाडल—३५  
 मति—३८६  
 “सयन्त स्लाव सम्मिलनी”—  
 ३७५  
 मविधान-सभा—८०१, ५१८  
 ममद—१०८, २२०, ५१३  
 मस्कून—२३  
 मस्कृति—३९६  
 माउवेरिया—६, ४६, ४७, ६३,  
 १०१, १०८, १०९ (विजय),  
 १११, २१८, २१९, २२७,  
 २२०, २३५, २४४, २६८,  
 २८०, ३१५, ३१७, ३२६,  
 ३२७, ३३३, ३३८, ३४६,  
 ३६८, ३६१, ३७९, ३८८,  
 ३९५, ३९७, ३९९, ४०९,  
 ४०८, ४०९, ५२८, ५२५,  
 ५२८, ५३५, ५८८ (मिने-  
 रिया)  
 माइन नोयन—३२१  
 मादात-सगेयर—३३२  
 मादेन—३०५  
 माइमोफनी—११२  
 मागिब—३५५  
 मागिर दस्त—५४३, ५४४  
 माइन्—८०  
 माइ अमर मानत—२०२  
 मा—१६०, १६१

सादुमान—५६  
 सान् स्तेफानो-सवि—३८६, ३८७  
 सावरान—४९, २७९ (नदी)  
 माम—६४  
 सामत—८५ (युग), १०९,  
 ४०६ (बादी)  
 सामानी—४५३, ५१७, ५४१  
 सामी पाशा—५४५, ५४६  
 साम्प्रदायिक नेता—५१८  
 साम्यवाद—५२४, ५४९ (देखो  
 कम्युनिस्ट, कम्युनिज्म भी)  
 सायन—२६ (भला राजा)  
 सायत—५१६ (उज्जैक)  
 सायव इम्पहानी—१९०  
 सायो—२४  
 सारउम—२४८  
 सारणी—१५७  
 मारा—१०३  
 सारिक—२००, २०७, २१०,  
 ४७६, ४९१ (तुर्कमान),  
 ४९२  
 सालार—११४  
 सालिन्स्क—३१७  
 सालीमराय—१४९, १५०  
 सावरान—८८, ५६, ५७, ६०,  
 १६७, १६८  
 सावजी—१४७  
 सावा व्लादिस्लाव—२२५  
 माप्टाग प्रणिपात—२४१ (कौ-  
 तो)  
 मामानी—७३ (ईरानी)  
 माहेव गिगई—२८७  
 साहित्य—१३७, १४७, ३९६  
 मिकदर (ग्रोक)—५४३ (अलि-  
 कमुन्दर)  
 “मिकन्दगनामा”—१६१  
 मिगनक—४६-४९, ५०, ५५,  
 १६५, १६६, १६८, २७५,  
 २८०, ३४६, ४५३  
 मिगाई—१८०  
 मिगान—३८८, ४३३, ४६१

(रोमनी, जिप्सी, लोली)  
 सिगवा—१११ (लपिना)  
 सिगस्मिन्द—१०९, २१८, २२२  
 (३)  
 सिङ्ग-क्याङ्ग—१८३, ३३५  
 (चीनीतुर्किस्तान)  
 सिताजी—१३८  
 सितारा-मुखासा—५२६  
 (बुखारामें)  
 सिय—७१  
 सिद्दी अहनद मिर्जा—१५८  
 सिनेउस—७५  
 सिन्ताव—४८१  
 सिक्को—५२५  
 सिमओन—३८, ३९, ५२,  
 ११०, २४१  
 सिम्बिर्स्क—२२, २३७, ३९४  
 सियाङ्ग-याङ्ग—५, ८ (सियाङ्ग-  
 फू), ११  
 सियानोफ—५२५  
 सियापोश (काफिर)—४६०  
 सिर(नदी)—४९, १२७, १५३,  
 १७४, ३५२, ४३७, ४८४,  
 ५१६, ५२०, ५३८, ५४१  
 (सिर-दरिया, यक्जर्त)  
 सिरगिली—५३०  
 सिरदरिया—६, ५५, १२१,  
 १२९, १४९, १५०, २७९,  
 ३०५, ३५१, ३५७, ३६०,  
 ४२५, ४६७, ४७६, ४७८,  
 ४७९, ४८०, ५२४, ५२८,  
 ५३०, ५३५, ५३९, ५४१  
 सिरनाग—५१  
 मिरवान—५४ (शिरवान)  
 सिरिम(वातिर)—३५५-५७  
 सिरिया—३९ (शाम), १३०,  
 १४०, १४५, १५१, २८९  
 मिर्दजान—१०३  
 मिल्जीबुल—७२  
 मिल्ड बरगर—६६  
 सिल्वा—११०  
 सिवालिक—१३२

- सिवास—१५२  
 सिविर—११२-१४, ११६,  
 २३५, २३८, २७९, २८७,  
 २८९, ३१९  
 सिविरखान—२८१  
 सिबोरगान—१३५  
 सिसिली—२४  
 सिहतिथान—५१५ (उज्ज्वेक)  
 सिधु—१५१, २७१, १९४,  
 ४४२ (सिधु)  
 सिविस्कर्—३९२  
 सिंहल—१०३  
 सी-खिम्—५३०  
 सीनिङ्ग-फू—३३२  
 सीनोप—३८०  
 सीमा कमीशन—४९८  
 सीला—३४६  
 सीलैंड—२९९  
 सीमाती—१४८  
 सीस्तान—१४९, १५०, १५४  
 सुइजनिच—१६६, १६९, २१०  
 (-बाला)  
 सुओमी—५४८ (फिन भाषा)  
 सुक—४३५  
 सुकलेन—११३  
 सुङ्ग-ताइ—२१  
 सुङ्ग-वश—५ (चीने), ७, ८  
 सुज्जदल—२२, ३५, ८२, ८६,  
 ९०, ९४, ९८  
 "सुदूर" (अध्यक्ष)—५४४  
 सुन्ताइ—५ (मंगोल)  
 सुन्नी—१४५, ४४२, ४७२,  
 ५२६  
 सु-वो-ताइ—२१, २३ (-सुवोदाइ)  
 सुभानकुल्ली—१९१, २११, ४६६  
 (दूत)  
 सुमारोकोफ—२६६  
 सुखाव—१७४, ४५९, ५४४  
 सुरा—२३४  
 "सुरिम"—५८  
 "सुरून"—४९  
 सुलेमान—५६, १४७, १९४  
 सुल्तान—१४१, १४४, १४७,  
 १५४, १५६, १५८, १६५,  
 १६८, १८०, १९१, १९९,  
 २००, २०१  
 सुल्तान अली—१६२ (मशहदी),  
 १६३, १७२  
 सुल्तान अबुल्फैज—३४८  
 सुल्तान—१६० (हुसैन), १६२  
 (-मुहम्मद), १६६ (-गिराई),  
 २७८ (निगारखानम्),  
 ३०४ (महमूद), ४४१  
 (-सजर)  
 सुल्तानिया—३३, ५५, ६०  
 (ईरान), १०४  
 सुवर्ण-ओर्दू—३, ८, १८, ३८,  
 ५१, ९८, १००, १०६,  
 १२१, १२८, १३३, १४२,  
 १६५, १८५, ३१५, ५१४,  
 ५२९  
 सुवाइत—३२१  
 सुवारोफ—२६०, २६३, २६९,  
 ३६८, ३६९, ३८२, ३९८  
 सुसगन—११२  
 सुगारी—२४२, २४३  
 सुइरमान—३३०  
 सुइलहि—३३०  
 सूकिन—३१६  
 सूक्ष्मचित्र—१५७  
 सूचाउ—५, ३१३ (चीन)  
 सूजक—१६५, १६८, ४३५  
 सूनित—३२१  
 सूफी—५६, १२४, ३०५ (सत),  
 १३८, ४३४ (मुअज्जिन)  
 सूवुइ—१९९  
 सूयुन्जिक—१७६  
 सूयुनजी—१९६  
 सूर—२६६  
 सूरिकोफ (चित्रकार)—३९६  
 सूर्यदेवी—१४०  
 सेइरामं—३२८  
 सेकिज-इगाचे—२९७  
 सेगोन-गर—१६६  
 सेङ्गो—३२८ (सेत्सेन खान)  
 सेच—२३०  
 सेचक—३१९ (यैशी)  
 सेचेनोफ—३९२  
 सेतजुलेत सराय—६६  
 सेत्सेन खान—३२१, ३२८  
 सेनेकसे—४८४  
 सेपूकोफ—५१  
 सेप्तेन बल्जुर—३३१  
 सेवल—३७  
 सेवान—२१  
 सेमरेक—३६१ (सप्तनद)  
 सेमारचिम—५१४ (उज्ज्वक)  
 सेमियोन—५२, ११४  
 सेमीप्लातिन्स्क—२५१, ३१९,  
 ३३३ (सप्तप्रासाद), ३४७,  
 ३४८, ३७९, ५३०  
 सेमी-वायर-स्विना—२२२  
 सेमीरेचिन्स्क—४५२  
 सेमीरोद्स्क—३५५  
 से-मू—१२ (तुर्क मुसलमान)  
 सेमूर—५९  
 सेमेओन—९७  
 सेरख्स—१६१, १८१ (सरख्स)  
 सेरपूकोफ—६३, २२०, २८९  
 सेराब्रेका—१११  
 सेराय—४९, ६० (सराय)  
 सेरायचुक—६० (सरायचुक)  
 सेराय सोलकुल—५०  
 सेरेनइका—४०८  
 सेरोफ (चित्रकार)—३९६  
 सेर्गेयफ—५०८ (अत्योर्म)  
 सेलिगोर—२२  
 सेलिगिन्स्की—२५३, २५४  
 सेलीजर—२०५  
 सेली-त्रेन्नोय—५१  
 सेलेसिया—६  
 सेलदूज—१३७  
 सेल्गा—११०  
 सेल्वेस्तर—१०७  
 सेबक्रून—१३३

नेवदिनो—३६१  
 नेवलरी—२५  
 नेवस्तापोल—३८०  
 “नेवस्तापोलकी कथाएँ”—३८०  
 नेविनवेड—५३, ५४ (नानजादी)  
 नेवेर—८२ (निवरि)  
 नेवेन्यात—७७  
 नेवेर—८४, ८९, १००, २१८,  
 २२५  
 नेहन—१२९  
 नेडीफेट—६०८  
 नेकाकी—१२५  
 नेकी केसेम—३११  
 नेदान (गाव)—५४३  
 नेदिक—१६७  
 नेदियत—११३, ११५  
 नेफुदीन—२७ (बामगी), ६०,  
 १३३, १८०  
 नेयद अबुल्गाजी—११८  
 नेयद उमामकुल्ली—१८७  
 नेयद उबैदुल्ला—१९४  
 नेयद—६९ (नान), १५०  
 (-वरका), १५९ (यवका),  
 १६६ (बावा), २३५  
 (-मादिर), १७७ (-मुहम्मद  
 गान), ४७९ (-मुवहम्मदगान)  
 नेगान—६९  
 नेगाम—५५, १६६, १७६,  
 १८०, २१७, ३०२, ३०७,  
 ३०९, ३१०, ३३०, ३३१,  
 ३६३, ३५०  
 नेगामकामिज—५०  
 नेहन शीत—३३३  
 नेगी—६३८  
 नेगद—५५ (देन), १७०,  
 ६०८, ५१६  
 नेगरी—५०६, ५१७, ५३६,  
 ५३७, ५६१  
 नेगी—६०६  
 नेगरी—३३६  
 नेगुर (नेगा)—६७३

मोफिइस्कया—९३  
 मोफिया—८५ (-गिर्जा), १०६  
 २४६, २४७, २४९  
 मोफिया पालेओलोस—१०१  
 मोफियान—११९, २२०  
 सोलमदर्स—३३४  
 सोलोवेत्स्क—३८०  
 मोवियत—१२१, ५०३, ५०५,  
 ५०८ (कायेम), ५१२,  
 ५२२, ५६९  
 मोवियत-गामन—४९३, ५२३  
 ५३९  
 सोवियत समाजवादी गणराज्य-  
 मव—५१२, ५१३  
 सोवित मयुक्त समाजवादी गण-  
 राज्य—५१२  
 मोमकान—११४  
 मोमवा—१११  
 म्कदनेविया—३९, ७४, ७५  
 (स्कोडनेविया)  
 स्किफिया—७३ (नकस्तान)  
 “स्कोत”—८६ (पशु)  
 स्कोवेलेफ—४३७ (जेनरल),  
 ४८४, ४९५, ४९६, ५१८,  
 ५२२  
 स्कीन—४९७  
 स्टाकहोम—४०४  
 स्टुडेंट—४२६  
 स्टोडेंट—४८८, ४८९, ४७४  
 (कनल)  
 स्तानिस्ता—१०८ (बाना)  
 स्तानिस्ताउस—२५१  
 स्तारु—३९८ (अदमिरल)  
 स्तालिन—२६७, ३९६, ४०२,  
 ४०५, ४१०, ४११  
 स्तालिनवाद—५१, २३६, २६२  
 स्तामोफ—३९३ (मार्गकर)  
 स्मिक्तन—१०१  
 स्मोपान—२३५, २३८  
 स्मोपान मयुक्त—३८७, ३९०  
 स्मोपानोफ—१२५, ५५२

स्नेगी—३१९, ४८० (दश,  
 मैदान, मरु)  
 स्नेकन बायोरी—२३०  
 “स्नेरेगुशी” (द्वसक गीत)—  
 ३९८  
 स्तेलमाशेस्की—५३३  
 स्तेल्पिन—४१०  
 स्तोडोवो—२२५  
 स्वान्दमान—३४९  
 स्त्रूवे—४३२  
 स्त्रेकेस्की—२२४, २३७, २४६,  
 २४९ (गारद सैनिक),  
 २३६ (राज-सैनिक), २५२,  
 ३१७  
 स्त्रेकेस्की—२२८  
 स्त्रोगोन—११० (पीटन)  
 स्त्रोगोफ—१०९, ११०,  
 १११, ११३  
 स्थानीय बोर्ड (जेम्स्टो)—  
 ४०४  
 स्पा—१०२ (बाता)  
 स्पाल्गो—२३  
 स्तेरिदोन—१०९, ११०  
 स्तेन—१५२, २४८, ३७३  
 स्तेनिश—१३५, ३६८  
 स्तेरिन्स्की—३७०, ३७२  
 स्मोकेत्स्क—५, ७७, ८२,  
 ८८, ९१, १०१, १०६,  
 २१८, २२२, २२३, २२५,  
 ३६८, ३९१  
 स्मोडोनी—५०८, ५०९, ५११  
 स्पाहकुलाह—२३  
 स्पाहवाह (अवहूप)—४४९  
 स्लाव—३९, ७१, ७५, ८४,  
 २३०, ३८६, ४०६ (वाद)  
 स्लावानिक—२५२ (अक्षर),  
 २६५  
 स्त्रावित्स—८२  
 स्त्रिकी—५२५  
 स्त्रेड—१४

स्लोवोदा—११३  
 "स्वतंत्र रूसी प्रेस"—३८२  
 स्वायत्त समाजवाद — ३९१  
 (उद्योगियन)  
 स्वायत्ततावादी (खोकद)—  
 ५१९, ५२०  
 स्वारोग्—७३, ७६ (देवता)  
 स्वारोजिक—७३ (स्वारोचिप)  
 स्वित्जरलड—२७०, ३६५  
 (स्वीजर्लैण्ड), ४१२, ४१३,  
 ५०४  
 स्वीड्—९४, ९६, १००, २२२,  
 ४६५  
 स्वीडन—१०८, १०९, ११६,  
 २२२, २३४, २४८, २५०,  
 २५३, २५६, २५९, २६३,  
 ३१८, ३३१, ३६६, ३६७,  
 ४३०, ५०३  
 स्वीयाज्रेस्क—१०७  
 स्वातोपोल्क—८३, ८४ (१),  
 ८७ (२)  
 स्वातोस्लाव—७८, ८२ (१),  
 ८४, ८६, ८७, ८८  
 स्वेन्-चाड—२९३, ४५९  
 स्वेर्द्लोफ्—४०५, ५१८  
 हकीम—१२६  
 हगान—३ (कआन, खाकान,  
 खआन, खान)  
 हङ्ग-वाउ—९  
 हचवेवा—५१५ (उज्वेक)  
 'हज्जरत'—४४६  
 हज्जरत-इमाम—४६०, ४६१  
 हज्जार—१९४  
 हज्जारजमीन—३२  
 हज्जारो—१४७, १७२  
 हज्जारास्प—३२, १७८, १९६,  
 १९९, २०१, २०२, २०३,  
 २०४, २०६, २०७, २०८,  
 २१०, २११, ४६७, ४६९,  
 ४७५, ४७६, ४८३, ४८५  
 हनफी—३२५  
 हनीफा—३२५  
 "हफ्त-किस्वर"—१६१  
 ८३

"हफ्त-नैकर"—१६१  
 हवश आमिद—१२६, १२७  
 हमदान—३३, १४०, २०९  
 'हमारे मतभेद'—३९३  
 हम्दुल्ला मुस्तौफी—१४६  
 हम्माम—१६१ (स्तानागार)  
 हरावल—२९५  
 हरिद्वार—१५१  
 हरिनोको नरकट—५०  
 हरील्द—४९१, ४९८  
 हर्विन—३९७  
 हर्मोर्गन—२२३  
 हर्शल—२६५  
 हलव—८ (अप्पो), १४०  
 "हस्त-वहिस्त"—१३१  
 हस्तरूद—४० (अष्टनद)  
 हमजा—१७५  
 हसन—१०२-४ (-वेग), १३९,  
 १४४, १९९ (-कुल्ली), १५०,  
 (-दमगानी), २००, ४७१  
 (-मुराद)  
 हडताल—४१४  
 हसीय—९४  
 हसे—९४  
 हाकिम—५४३  
 हाकिमवेग—३३२  
 हागान—१३९ (हगान भी)  
 हाजिम—२०३, २०५  
 हाजी—४३ (खा), ६०-६२  
 (-तख्त-अस्त्राखान), १३६,  
 १३७, १५७, १९१, २०२-३  
 (-मुहम्मद), ५२६ (अकर म,  
 -दादखाह)  
 हाजी विरलस—१३७, १४८  
 हान्स-सघ—३५  
 हाफिज—१४७, १९१, ५१५  
 (उज्वेक)  
 हामी—३१० (चीन), ३३०  
 हालैड—२२५, २४८, ३६७  
 हावडा—३७७  
 हागकाग—३९७  
 हिटलर—१०१, २५८, ३६८,

४०६  
 हिद-चीन—३, १०, ३९७  
 हिदी-युरोपीय—५३९  
 हिंदुस्तान—१०३, १०४, १४४,  
 १७६, १८३, २०३, ३५५,  
 ४२६, ४४२, ५३६  
 हिंदू—१०३, १८८, ४४२  
 हिंदूकोह—१५१, १७२, १८९,  
 १९०, ४४२ (हिंदकुश),  
 ४६१ (हिंदूकुश)  
 हिंदू मंदिर—२९९  
 हिंदू-विहार—२९९ (बौद्ध)  
 हिप्पोक्रेत—१९२, २८९  
 हिदी आग्लियन—२६६  
 हिमानी—५३५  
 हिरात—६६, ६९, १५०, १५४  
 (खुरासान), १५४, १५५,  
 १५७, १५८, १५९, १६१,  
 १७२, १७३, १७६, १७८,  
 १७९, १८१, १८२, १८५,  
 १९३, ३०३, ४४१, ४४२,  
 ४४९, ४५५, ४६१, ४७४,  
 ४९०, ४९७, ४९८, ४९९,  
 ५२७  
 हिल्ला—१४४  
 हिमार—५६, १६७ (ताजि-  
 किस्तान), १७१, १७३,  
 १७४, १७६, १७७, १७८,  
 १८६, २११, ३०६, ३०९,  
 ४३९, ४५९, ५२७  
 हिसार कुदुज—३०४  
 हुगली—३७७  
 हुमायू—१०६, १७७, १७९,  
 १८३, ३०८, ३१३  
 "हुरियत" (=स्वतंत्रता)—५२६  
 हुलाकू—८ (वश), १०, १७,  
 १२५, १२६-३०, १३९,  
 १४०, २८४  
 हुलीजन हान—३३२  
 हुसेन—३३ (चोवान), १०३,  
 १३५, १४८, १५०, १५७,

१७७  
 हेने सूफी—५३ (सूफी),  
 १६० (-मिर्जा), १७१  
 (-बेकरा), ३०४  
 हुगर—६ (मगयार)  
 हुगरी—२३, ३९, ७८, ८४  
 (मगयार), ५४८  
 हुगेनियन—१०९  
 हु-कृङ्ग—५  
 हु-तुकतू—३२४  
 हुण—२४, २८४, ३३४, ३४३,  
 ५१७, ५२८, ५२९, ५३६,  
 ५४१, ५४८  
 हेक्टर—५३६  
 हेजिर—१२५, १२६  
 हेतमन—२२१, २३०, २३१,  
 २३४ (प्रधान), २५०

(अतमन)  
 हेदविग—५३  
 हेदेनस्त्रोम—३७२  
 हेनरी—६, १५२  
 हेरुताल—७२, ५१७, ५३९,  
 ५४१, ५४८  
 हेमन्तप्रासाद—२५७, ३८७,  
 ३९९, ५०९ (पेत्रोग्रादमें),  
 ५१०  
 हेया—५१७  
 हेरमोलोस—११०  
 हेराकिल—७३  
 हेरात—१३१, १३५  
 हेर्जन—३८२ (एर्जन)  
 हेर्जोगोविना—३८६, ४०७,  
 ४०८, ४११  
 हेनगियोस्—४४८ (कप्तान)

हेलमन्द—१७२  
 हेलसिक्की—५०७, ५०८  
 हेलेना द्वीप—३७०  
 हेस्टिंग्स—३९०  
 हैदर—६८, ११६, १७३, १७५,  
 १७९, २९९, ३०५, ३०७,  
 ३०८, ३११, ३१२, ३१३,  
 ४२३, ४५८ (अमीर बुखारा),  
 ४७१  
 हैदर मिर्जा—३०३ (इतिहास-  
 कार), ३०५  
 हैरत शाह—५४५  
 हो—३४६ (चीन सेनापति)  
 होनात्—५ (चीन), ७  
 होर्द—२८७  
 हो-लो-लो-कि-या—२९३  
 होल्स्टाइन—२५७  
 ह्वाङ्ग-हो—९ (पीत नदी)



